Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080261

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

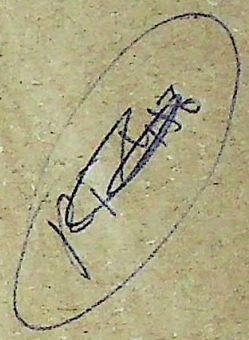

080261

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080261

सचित्र

# पंचतंत्र

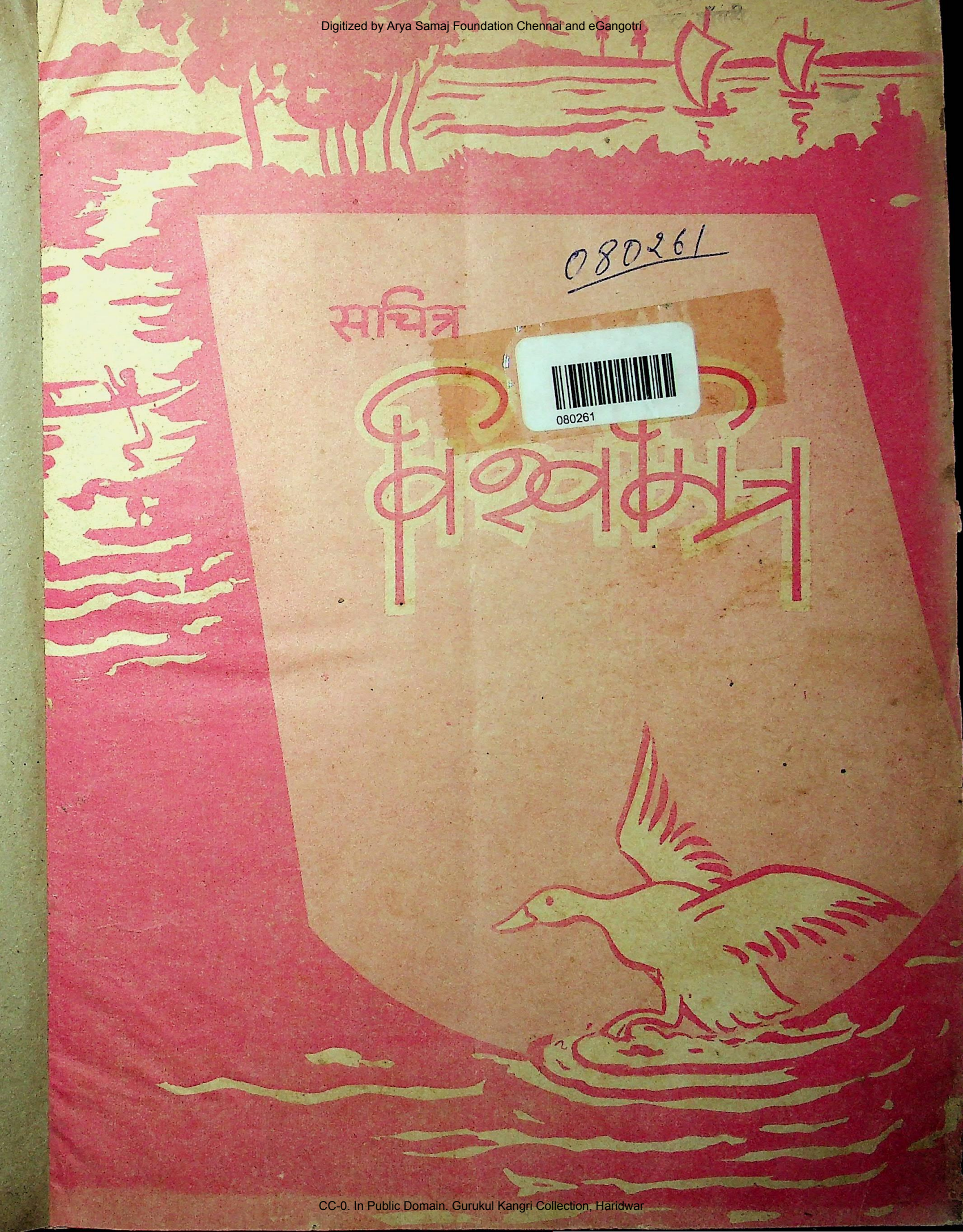

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# वि ज्ञा न

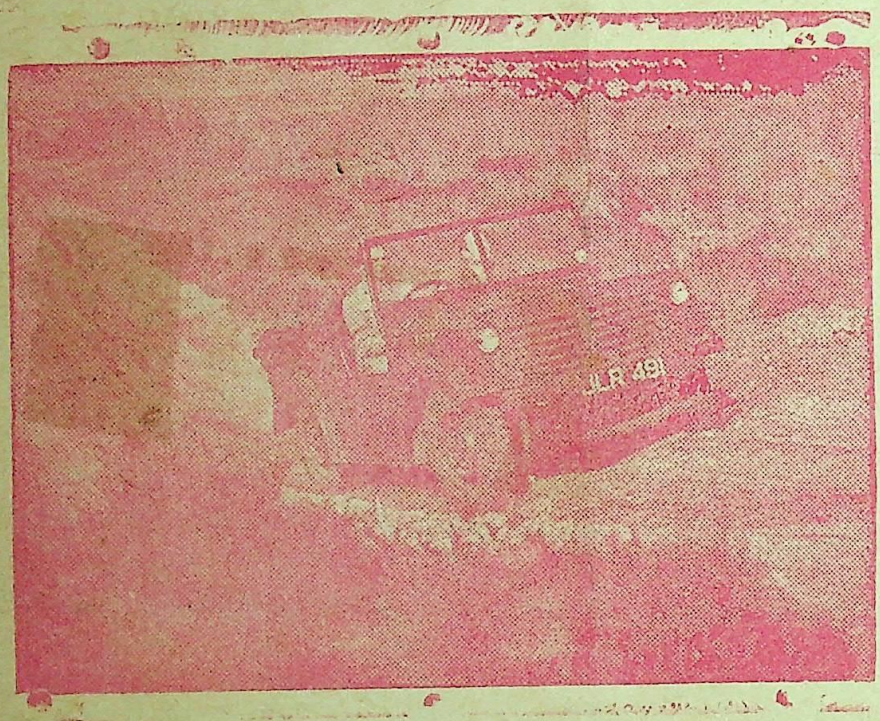

'जीप' का सुधार किया हुआ नया स्वरूप ।

जीप युद्धमें तथा युद्धोत्तर कालमें बड़ी ही उपयोगी साबित हुई है। अब इन जीपों द्वारा भी खेतोंमें भी काम किया जा सकेगा। चित्रमें एक नयी जीप चलाकर देखी जा रही है ।

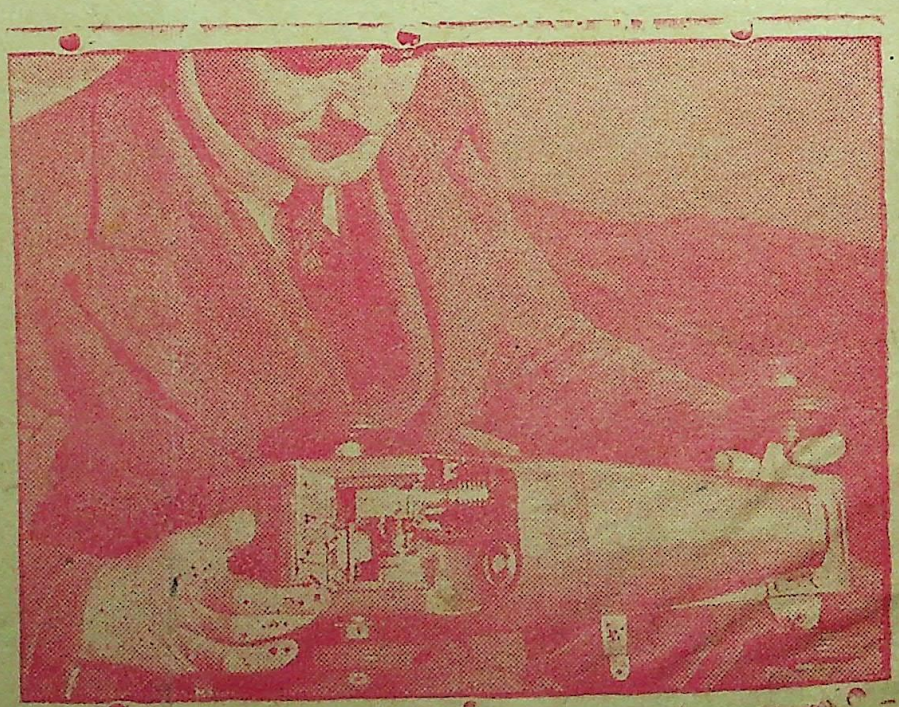

मोडेल गाड़ियों की दौड़ ।

अंग्रेजी कारखानों द्वारा प्रस्तुत की हुई यह छोटी सी गाड़ी मोडेल गाड़ियोंकी दौड़में भाग लेगी। यह छोटीसी गाड़ी ४१ मील प्रति घण्टा चल सकती है ।

CC-0..In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वमित्र

सम्पादक—
देवदत्त मिश्र

वर्ष—३१ संख्या २० ता० ९ जन १९४८ | June 9 1948 | मूल्य =), वार्षिक ६)


# सांत्वना

( श्री बच्चन )

यह ठीक, कि गावों नगरों का संहार हुआ,
यह ठीक, कि लाखों पर अति अत्याचार हुआ,
यह ठीक, कि बापू पर गोली का वार हुआ,
लेकिन फिर भी
मत आने दो
मन में पस्ती !

जब कभी जमाना सोया करवट लेता है,
जग को दहशत के वहशी धक्के देता है,
यह डोल-दहल क्षण-भंगुर है, मत व्यर्थ डरो,
सौ बार उजड़ने
पर भी है
दुनिया बसती !

यह दौर जमांका दुश्मन सदा हमारा था,
लेकिन भारत कब इसके आगे हारा था,
ठंडे दिल से उन कुछ बातों पर गौर करो,
मिट नहीं सकी
जिनके कारण
अपनी हस्ती

* सतकी माला से ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# री कोयलिया ?

कोकिले फिर से सुनादे
गीत जो तू गा रही थी ।

घाटिका के छोर वाले
कुंजमें यमुना किनारे ।
झांकती आयी उषा थी
जा रहे थे घर सितारे ।
जाग्रति के उन क्षणों में
माधवी की ओट से गा ;
चिर-विरह का क्या नया
प्रतिकार करने जा रही थी ।

कोकिले फिर से सुनादे
गीत जो तू गा रही थी ।

एक दिन मैंने सुना था
यह प्रणय-संगीत प्यारा;
प्रियतमा के कंठ-स्वर से
थी बही पीयूष-धारा ।
आ गये फिर युग दुखों के
छा गया ऐसा अंधेरा;
हो न पाया हाय अबलों
फिर मिलन-सुख का सबेरा ।
पर न जाने किस समय तू
सीख यह संगीत आयी;
चिर-प्रतिक्षित गान स्वर्गीय
दे गया फिर से सुनाई ।
मौन हो मत बैठ अब तू
मैं न यह दुख सह सकूंगा;
मानिनी इस गीत से तो
सुधि प्रिया की आ रही थी ।
कोकिले फिर से सुना दे
गीत जो तू गा रही थी !

कल्पतरु की कल्पना-सा
था मनोहर गीत तेरा;
सात्वना के स्वर भरे थे
था अमिय रस भी घनेरा ।
भग्न डर की भावनाएं
जी रही इस गीत में हैं;
स्वप्न सुन्दर स्नेह के वे
बस रहे इस गीत में हैं ।
दो व्यथित के रो न पाने
की व्यथा इस गीत में है;
दो हृदयके एक होने
की कथा इस गीत में हैं ।
मौने के अति क्रूर बन्धन
से न इसको बांध कोकिल;
छेड़ दे वह रागिनी फिर
जो हृदय पर छा रही थी ।
कोकिले फिर से सुना दे
गीत जो तू गा रही थी !

(अ० भिक्षुस्वामी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

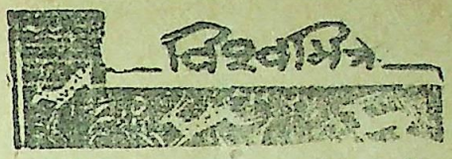

विश्वमित्र

पर हित बस जिनके मनमाहीं।
तिन कहजग दुर्लभ छ नाहीं।

विश्वमित्र

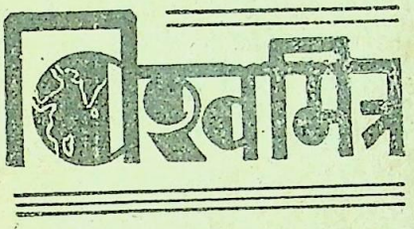

# आखिरी रोड़ा

हैदराबादके भविष्यके सम्बन्धमें भारत सरकारकी ओरसे जो अन्तिम प्रस्ताव निजामको दिये गये हैं उन पर शनिवारसे पुनः दिल्लीमें वार्तालाप आरंभ होने जा रहा है। निजामके वजीरे आजम मीर लायक अली उसी दिन हैदराबादसे और उनके वैधानिक सलाहकार सर वाल्टर मौकटन सीधे लन्दनसे दिल्ली पहुंच रहे हैं। भारत सरकारके नये प्रस्तावोंको लेकर मीर लायक अली को दिल्लीसे गये प्रायः एक सप्ताह हो रहा है। इस विलम्बके सम्बन्धमें यह कैफियत दी गयी है कि यह समय कतिपय बातोंके स्पष्टीकरणमें लगाया गया है। यह भी सुझाया गया है कि मीर लायक अलीकी दिल्ली वापसी और सर वाल्टर मौकटनका इंगलैण्डसे फिर वापस आना बातका द्योतक है कि वार्तालाप सफल समाप्तिकी स्थितिमें आ रहा है। भारत सरकारके नये फारमूला पर निजामके विचारोंसे अवगत होकर ऐसा समझा जाता है कि इस बार हैदराबादका प्रधान मन्त्री पूरे अधिकार लेकर आ रहा है और वह जो कुछ कर जायेगा उसका उत्तरदायित्व राज्य का समझा जायेगा।

इस सम्बन्धमें हम एक नहीं अनेक बार यह कह चुके हैं कि हैदराबाद विदेशी शासनकी आखिरी जहरीली देन है और इस देनसे जहां तक शीघ्र संभव हो देशको मुक्त किया जाना चाहिये। हम हैदराबादको सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रगतिके मार्ग पर सबसे बड़ा अन्तिम रोड़ा भी समझते हैं। हमें इस रोड़ेको भी हटाना पड़ेगा। प्रायः एक वर्षसे हम इस रोड़ेको हटाने और न हटाने देनेकी रस्साकसी देख रहे हैं। किन्तु यह रस्सा कसी कब तक चलती रहेगी, सवाल यह है। हम तो इधर इस रस्सा कसीका तमाशा देख रहे हैं उधर हमें असावधान या तमाशा देखनेमें मशगल समझ हैदराबादी दानव अपना काम रजाकारोंके आक्रमणका संवाद भी आया है। नागपुरसे एक जूनका यह समाचार है कि हथियारबन्द रजाकारोंके भारतीय प्रदेश पर हमले जारी हैं। इन घटनाओंसे चिन्ताका बढ़ना स्वाभाविक है और खास कर जब हम मध्यप्रांतीय सरकार द्वारा प्रेषित विज्ञप्तिमें यह देखते हैं कि इसका परिणाम यह हुआ है कि हजारोंकी तादादमें प्रांतमें शरणार्थियोंके आनेका तांता बंधा हुआ है। हैदराबाद राज्यके कतिपय नेताओंने भारत सरकारके प्रधान मंत्री और उप-प्रधान मन्त्रीके पास इसआशय का तार भेजा है कि हैदराबाद और भारतीय संघके बीच में तत्काल समझौता हो जाना आवश्यक है विलम्ब खतरनाक है और तनातनीका बढ़ना अनिवार्य है, फलस्वरूप पहले ही से निराश हुए लोगोंकी यंत्रणाका ठिकाना न रहेगा। दिन प्रतिदिन हालत बिगड़ती जा रही है। जीवन और सम्पत्तिकी रक्षा का कोई भरोसा नहीं है। संगठित लूट अग्निकांड, हत्या और निहत्थे ग्रामवासियों पर हमले राज्य भरमें धुंआधार हो रहे हैं .....रजाकारोंके संगठनको दबाये बिना कोई सरकार टिक नहीं सगती।" उधर रजाकारोंके नेता, हैदराबादका, बौना तानाशाह रिजवी कहता है कि उत्तरदायी सरकार कैसी? इस प्रश्न पर कोई समझौता नहीं हो सकता। मुसलमानोंका राज्य है वही यहां शासन करेंगे। शासनमें किसीकोहिस्सा नहीं दिया जा सकता। यह राज काज है, कोई व्यवसाय वाणिज्य नहीं है जो किसीको हिस्सेदार बना लिया जाय। हैदराबादका एक कठमुल्ला मि० अब्दुर रहमान एम० एल० ए० कहता है कि उत्तरदायित्वपूर्ण राज्यका अर्थ है कि हिन्दू राज्य जो मुसलमान कभी स्वीकार नहीं कर सकते। इस 'भले' आदमी की समझमें यह नहीं आता कि यदि १५ प्रतिशत मुसलमान हिन्दू राज बर्दाश्त करनेको तैयार नहीं तो ७५ फी सदी हिन्दू मुसलिम राज्य कैसे बर्दाश्त करेंगे। बात यह है कि ये कठमुल्ले जो भाषा समझते हैं जबतक उसका प्रयोग नहीं किया जा रहा तबतक ये हैदराबादमें उत्तरदायित्व पूर्ण शासनकी बात सुननेको तैयार नहीं होंगे। रहमान एम० एल० ए० कहता है कि "मैंने हिन्दुओंसे साफ-साफ कह दिया है कि यह प्रश्न वैधानिक बिलकुल नहीं है। यह तो दो सम्प्रदायोंके बीचमें अधिकारकी लड़ाई है। हिन्दू अधिकारारूढ़ मुल्लमानोंको रहनेकी अपेक्षा शाहजहान पर आना बेहतर समझते हैं। जनमतगणनाका कैसा सवाल। हैदराबादमें यह नहीं हो सकता। यह तो दो सम्प्रदायोंके बीचमें राजनीतिक समझौतेका प्रश्न है।" उत्तरदायित्वपूर्ण शासन ये मानते नहीं हैं, जनमतगणनासे इनका कोई मतलब नहीं तब राजनीतिक समझौता किस बातका होगा? यही न कि हम मुसलमान हैं इसलिये तुम हमें यह भी कोई दलील है। लेकिन तलवारकी दलील माननेवालेको दूसरी दलीलसे क्या वास्ता।

काश्मीर के सम्बन्धमें कार्यवाही करनेके बाद भारतके प्रधान मन्त्रीने कहा था कि यदि २४ घण्टे और देर हो जाती तो काश्मीर हाथसे निकल जाता। लिहाजा इससे समझा जा सकता है कि समयका कितना महत्व है। यह समय चुरानेके इरादेसे ही निजाम भारत सरकारको वार्तालापोंके जालमें फंसाये हुए है। उस दिन डा० पट्टाभि सीतारमैयाने कहा था कि हम हैदराबादके प्रश्नको हल करने पर तुले हुए हैं और यदि सम्भव होगा तो शान्तिसे ही यह काम किया जायेगा किन्तु यदि इस प्रकार सम्भव न हुआ तो अनिवार्य समझकर युद्धके द्वारा भी हम हल करनेको प्रस्तुत हैं। हैदराबाद युद्धकी तैयारी कर रहा है, इस आशयके समाचार आये दिन आते ही रहते हैं। किन्तु चिन्ताकी बात तो यह है कि भारतमें भी पंचमांगी पाकिस्तानी मुसलमान हैदराबादकी सहायतामें भारतके खिलाफ हथियार उठानेकी गुप्त तैयारी कर रहे हैं। मध्यप्रान्तमें अभी उस दिन भण्डारामें दो मुसलिम व्यवसायी मजिस्ट्रेटके सामने दिये गये अन्य पांच मुसलमानोंके वक्तव्यके आधारपर गिरफ्तार किये गये हैं। कहते हैं कि महम्मद हनीफ और उसके साथीने भण्डारामें मुसलमानोंकी एक गुप्त सभा की और इस सभामें हनीफने मुसलमानोंसे भारतीय संघके खिलाफ विद्रोह करनेको कहा। उसने यह भी कहा कि हैदराबाद और पाकिस्तानकी सेनाएं भारतपर आक्रमण करनेवाली हैं। हनीफने यह आश्वासन भी दिया कि समय आनेपर हैदराबाद सरकारकी ओरसे हथियारों और पैसेकी मदद मिलेगी। यह महम्मद हनीफ भण्डारा हीका रहनेवाला है किन्तु कुछ समय पहले ही इसने अपने परिवारको हैदराबाद पहुंचा दिया और हैदराबाद तथा पाकिस्तानमें व्यवसाय आम्भ कर दिया। अभी हालमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर निगाह रखनेकी आवश्यकता है। इस प्रसगमे यह स्मरण रखनेकी बात है कि दूसरे विश्वयुद्धके दौरानमें न जाने कितने जर्मन सैनिक व्यवसायीके रूपमें ईराक पहुंचा दिये गये थे। भारतसे गये मुसलमानोंके नामपर दूसरे अथवा स्वयं वही सैनिक शिक्षा प्राप्त करके दुरभिसन्धिवश भारत वापस नहीं आ रहे, इसका निर्णय है तो कठिन किन्तु जितना भी कठिन हो आवश्यक है। इन सब दृष्टियोंसे हैदराबादकी अनिश्चित स्थिति अब जल्दीसे जल्दी किसी निश्चित और स्पष्ट रूपमें सामने आनी चाहिये। भारतीय संघमें प्रवेश या उत्तरदायी शासन यह शान्तिका मार्ग ह। किन्तु यदि इनमेंसे एक भी सम्भव न हो तो डा० पट्टाभिके शब्दोंमें अनिवार्य मार्गका अवलम्बन करनेमें आवश्यकतासे अधिक विलम्ब न लगाना चाहिये ताकि यह कहनेकी स्थिति न आये कि २४ घण्टेकी देरने मामला सब चौपट कर दिया।

# प्रांतीय विद्वेष

सोय हुएको जगाया जा सकता ह किन्तु सोनकी मुद्रा बनाकर खरीटे लेने वाले जागर व्यक्तिको नहीं जगाते जा सकता। यही हाल इस सयम प्रांतीय विद्वेष फैलाने वालोंका है। यह बात नहीं है कि वे इसकी बराइयोंको नहीं जानते हैं, समझते हैं फिर भी फैलाते हैं क्योंकि इससे देशका अनहित होगा पर उनका अपना भला होगा। अधिकार-राजनीतिका यही मूल मंत्र है। हम जीते हैं तो कोई मरे परवाह नहीं पर हम मरें और जग जीये यह नहीं हो सकता। कमसे कम पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा और आसाममें प्रांतीयताका आन्दोलन इसी आधार पर चल रहा है। कांग्रेसके प्रधान मंत्री श्री शंकर व देव कहते हैं कि "यदि गांधीजी आज जीवित होते तो कांग्रेसप्रांतोंमें जो भ्रातृघाती द्रोह प्रचण्ड पड़ रहा है उसीसे उनके प्राण निकल गये होते। लेकिन जीवित होते और प्राण निकल गये होते, इसका क्या अर्थ ? उनके प्राण निकले कैसे ? गांधीजी स्वाभाविक मौत नहीं मरे। भ्रातृघाती द्रोहने ही उनकी हत्या की। हां, इतना फर्क, धर्मकी दृष्टिसे अवश्य माना जा सकता है कि वह सौते ले भाइयोंका द्रोह था यह सगे भाइयोंका द्रोह है। सचमुच यह स्थिति नितान्त लज्जाजनक है। अंगरेजोंको भारतसे गये अभी जुम्मा-जुम्मा आठ दिन नहीं हुए और हम भाई भाई, बाप बेटे, चचा भतीजे, मामा भांजे कहनका तात्पय यह ह कि हम सभी आपसमें ही लड़ कट रहे हैं। हमें इस बातकी ग्लानि भी नहीं होती कि ब्रिटिश शासन कालमें हम जिन चर्चिल, एमरीको विद्रूप कटेर थे और कहते थे कि आप मेहरबानी कीजिये, अपना बोरिया बसना बांधिये हम अपना घर आप संभाल लेंगे वे आज मूछों पते ताव देते होंगे औते कनखियोंसे मुसकराते हुए कहते हे कि क्यों आखिर हुआ न वही। हम कहते थे कि हमारे चले आते ही तुम लोग दरिन्दोंकी तरह आपसमें लड़ मरकर कट जाओगे। हम महात्मा गांधीका बलिदान दे चुके फिर भी क्या खूनकी हमारी ब्यास नहीं बुझी। मनुष्योंको मार कर गृद्ध, श्वान और शृगालोंके पेट भरनकी अघोर लीला भी तो कम नहीं हुई। तब, फिर यह पशाचिक काण्ड क्यों ?

यदि प्रांतीयताका आन्दोलन दबाया न गया और यह विद्वषाग्नि भड़कती रही या भड़कायी जाती रही तो पश्चिमसे पूर्व और उत्तरसे दक्षिण तक उसकी सवग्रासी लपटें न जान कितने मासूम, निरीह नरनारियों, बालक बालिकाओंको चाट जायंगों। अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। स्थिति अभी काबूमें लायी जा सकती है, बशर्तेकि प्रत्येक प्रान्तमें रहने वाले वे लोग जो अधिकार राजनीतिके दलदलसे बाहर, कांग्रेस आदर्शों पर बिश्वास करते हैं और एक भारतके नारेके प्रति केवल जबानी, जमाखर्च नहीं कराते आज भी इस विद्वेषको फैलाने वाले कुत्सित आन्दोलनको दबानेके लिये कटिबद्ध हो जायं। उनको यह स्मरण रखना चाहिये कि अभी केवल राजनीतिक स्वतंत्रता मिली है, अभी तो देशके सामने असली मौलिक काम आर्थिक स्वतंत्रता और अभावसे स्वतंत्रता प्राप्त करनी बाकी ही है। देशवासियोंको समझना चाहिये कि निहित स्वार्थोंका हित इसीमें है कि देशका ध्यान जिस तरह हो इस मौलिक आवश्यकताकी ओरसे हटा रहे। यही कारण ह कि प्रतिदिन नकली नयी समस्याओंकी सृष्टि की जाती है। प्रांतोंके पुनर्संगठनका प्रश्न भी ऐसा ही है। आर्थिक स्वतंत्रता और अभावसे स्वतंत्रताके प्रश्नको पीछे रखकर गौण प्रश्नों पर देशकी शक्ति व्यर्थ नष्ट की जा रही है। तिलको ताल बनाया जा रहा है। आज जब देशके सभी वर्गों और दलोंको कांग्रेस सरकारको अपना सम्पूर्ण सहयोग देना चाहिये तब देखा जाता है कि सहयोग तो दूर उलटे उसका काम कठिन बनाया जा रहा है। एक तरफ चोर बाजारी शाह बेजा मुनाफा खोरोंने अपना मोर्चा सरकारके खिलाफ संगठित किया है तो दूसरी तरफ उग्रवादी प्रांतवाद और साम्यवादके नाम पर अलग मोर्चा बांध रहे हैं। ये दोनों मोर्चे आज देशका कितना अपकार कर रहे हैं, क्या यह किसीसे छिपा हुआ है। उत्पादन जो हमारी पहली समस्या होनी चाहिये उसे गौण बना दिया गया है। इसलिये यदि हम सचमुच चाहते हैं कि खेतों और कल कारखानोंमें काम करने वाले श्रमजीवी राजनीतिक स्वतंत्रताका लाभ उठायें तो जो गौण है उसे गौण और जो मुख्य तथा प्रथम है उसे मुख्य समस्या मान कर चलना पड़ेगा। देशका धन सम्पद अधिक उत्पादनसे ही बढ़ाया जा सकता है, यह ध्यानमें रखना चाहिये। किन्तु हम प्रांतीयता और इसी तरहके दूसरे प्रश्नों में यदि फंसे रहेंगे तो यह निश्चित है कि हमारी जो जनशक्ति उत्पादनके काममें लगती उसका अन्यत्र अपव्यय किया जायेगा। इसीसे भारतके प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू कहते हैं कि हम मानते हैं कि कांग्रेसने भाषाके आधार पर प्रांतोंके पुनर्संगठनका सिद्धान्त माना है लेकिन जब सरकारके सामने उससे अधिक गम्भीर प्रश्न उपस्थित हों जिन पर तत्काल ध्यान देनेकी आवश्यकता ह उस समय प्रांतोंके प्रश्नको जोरसे सामने लाना सर्वथा निन्दनीय है। हम नहीं चाहते कि अन्य जोरदार सवालोंके सामने पृथक्करणकी इस मनोवृत्तिको प्रमुखता देकर देशकी एकताको छिन्न भिन्न किया जाये। मौजूदा सकमयमें भारत एकताका सवाल सर्वोपरि है। यदि हम सावधानीसे काम न लेंगे तो यह दरार पैदा करनेवाली अलगावकी मनोवृत्ति हमारा बहुत बड़ा नुकसान करेगी। अतः इस समय ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जो भारतकी एकताकी जड़ पर कुठाराघात करता ह और इस समय प्रांतोंके पुनर्संगठनका प्रश्न उठाना ऐसा ही काम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# जैन धर्मकी देनपर विनोबाजी

आज हम महावीर स्वामीका दिन मना रहे हैं। ढाई हजार वर्ष पहले उन्होंने इस भूमि पर अवतार लिया था। उन्होंने जो विचार दिया, वह नया नहीं था। महावीर स्वामी तो जैनोंके अंतिमके, यानी चौबीसवें तीर्थंकर माने जाते हैं। उनसे हजारों साल पहले "जैन विचारकार" का जन्म हुआ है। ऋग्वेदमें भगवान्‌की प्रार्थना में एक जगह कहा है "अर्हन् इदं दयम विश्वं अभवम्"—हे अर्हन्! तुम इस तुच्छ दुनिया पर दया करते हो। इसमें 'अर्हन्' और 'दया' दोनों जैनोंके प्यारे शब्द हैं। मेरी तो मान्यता है कि हिन्दू वेद धर्म जितना प्राचीन है, शायद उतना ही जैन धर्म भी प्राचीन है। लेकिन किसी धर्मका प्राचीन होना ही बड़ी बात नहीं है। अगर कोई धर्म अर्वाचीन ही है, लेकिन उसमें सार बातें हैं, तो उसकी कीमत है; और कोई धर्म अति प्राचीन है, लेकिन उसमें सही बात नहीं, तो उसकी कोई कीमत नहीं। वास्तवमें कीमत सही विचारकी है। और सही विचार जैनोंने बहुत दिया है -

जैनोंका मुख्य विचार मशहूर है—प्राणियों पर दया भाव रखना। उनका दूसरा एक विचार है, जो पहले-जैसा प्रसिद्ध तो नहीं, लेकिन उतने ही महत्वका है। वह है हर बातमें मध्यस्थ वृत्ति रखना, यानी किसी बातका आग्रहन रखना। आग्रह से हम एकांगी बन जाते हैं। जैन धर्म सर्वांग दृष्टि रखनेको कहता है। उसे वे 'सम्यक्त्व' कहते हैं। यह जैन विचारकी विशेषता है। हिन्दू धर्ममें जन्म लेकर आग्रह रखे बिना अपने विचारोंके प्रचार करनेका यह नतीजा है कि आज जैनी लोग तादादमें बहुत कम हैं। लोग पूछते हैं—जैनोंकी तादाद इतनी कम क्यों है?"मैं कहता हूं कि अगर उनकी तादाद ज्यादा होती तो, मैं उनको अपने काममें नाकामयाब गिनता। उनकी तादाद कम है, इसीमें उनकी कामयाबी है। जैनोंको हिन्दू धर्मसे अलग कोई दूसरा धर्म स्थापन करना नहीं था। उन्हें तो हिन्दू धर्ममें ही सुधार करना था। उन्हें हिन्दू धर्ममें ही शुद्धि करके मिट जाना था। अगर हिन्दुस्तानके तीस करोड़ लोगोंमें दयाका भाव और मध्यस्थ दृष्टि आ गयी, तो समझिये कि जैनोंने जीत लिया। 'जैन शब्दका अर्थ ही जीतना है। जो अपनेको जीतता है, जिसने आत्मजय प्राप्त की है, वही सच्चा जीतनेवाला है। जीतता है। लेकिन महावीर वह है, जिसने अपने ऊपर जय पायी, और दुनियाके हृदय में ऐसे मिल गया, जैसे दूधमें शक्कर।

भारतके मध्य युगीन इतिहासमें हम देखते हैं कि शिक्षादेनेवाले गुरु जैन थे, और शिक्षा पानेवाले अनेक विद्यार्थी हिन्दू थे। बचपनमें हमारी पढ़ाई शुरू हुई तबकी मुझे याद है कि 'अ', 'आ', 'क', 'ख', वगैरा वर्ण पढ़ानेके पहले विद्यार्थियोंको "श्रीगणेशाय नमः, ऊं नमः सिद्धम्" सिखाते थे। मैं महाराष्ट्रकी बात कहता हूं। यहां कैसे सिखाया जाता है, मुझे मालूम नहीं। उसमें "श्रीगणेशाय नमः" शिष्योंके धर्मको लक्ष्य करके रखा है, क्योंकि हिन्दू धर्ममें गणेशजीको पहले नमन किया जाता है। "ऊं नमः सिद्धम्" यह जैन धर्मको लक्ष्य करके रखा है। वह जैन गुरुओंका सिक्का है। लेकिन जैन गुरु इतने नम्र थे कि "ऊं नमः सिद्धम्" को उन्होंने 'श्री गणेशाय नमः' के बाद रखा। जैनोंने अपने अपने लिये स्वतन्त्र अधिकार भी नहीं मांगे। वे अपने को सिर्फ सुधारक मानते थे, यही उनकी विशेषता थी। और उन्होंने सुधारकका बहुत काये किया। वही अब आगे चलाना चाहिये। इसके लिये अब उन्हें गुरु बननेकी जरूरत नहीं है। उन्हें तो सेवक बनना चाहिये। वे सेवक बनेंगे, तो उनके विचारोंका सहज प्रचार होगा।

जैनोंने भी अहिंसाका नाम लिया, और गान्धीजीने भी लिया। लेकिन हमने देखा कि गांधीजीकी अहिंसासे जो शक्ति पैदा हुई, वह जैनोंकी साम्प्रदायिक अहिंसा से नहीं हुई; क्योंकि उन्होंने उसका अर्थ संकुचित कर लिया। अहिंसाका अर्थ इतना संकुचित किया गया कि उसमें खेती करना भी गौण माना गया है, क्योंकि खेतीमें कीड़ों की हिंसा होती है। अहिंसकको व्यापारकी मनाही नहीं है। लेकिन खेतीमें पैदा हुए मालका तो व्यापार होता है। आचार्योंने "कृत, कारित, अनुमोदित" तीन प्रकारकी हिंसा बतायी है। कृषिमें पैदा हुए अनाजका व्यापार करना उस हिंससाका अनुमोदन ही हुआ। कई जैन ऐसे हैं, जो चीटियोंको शक्कर खिलाते हैं। हमारे वर्धामें एक दयालु पुरुषको देखा है, जो गांवसे बाहर दूर तक घूमनेको जाते और इधर उधर शक्कर डालते। एक वक्त वे शक्कर डाल कर गये। काफी चीटियां जमा हो गयीं आया, जिसका पांव उन चीटियों पर पड़ा और सैकड़ों चीटियां खत्म हो गयीं। अगर वह भला आदमी चीनी डालकर न डालता, तो यह सब हिंसा टलती। जीव जन्तुओंको पालना हम अहिंसा समझते हैं। लेकिन यह गलत विचार है। जिसने पालन करनेकी जिम्मेदारी उठायी, उसको संहारकी और जन्म देनेकी भी जिम्मेदारी उठानी चाहिये। मनुष्य इतनी भारी जिम्मेदारी नहीं उठा सकता। वह तो ईश्वरका ही काम है। इस तरह दया करने जाते हैं, तो हिंसा ही अधिक होती है।

इसलिये गांधीजीने सिखाया कि अहिंसा की शक्ति मानव मानवके बीचका वैर-भाव मिटानेमें लगा दें। चित्तमें मत्सर, क्रोध, आदि निकालकर चित्तवृत्ति शुद्ध करें। मनुष्य मनुष्यके साथ ही मत्सर करता, बैलके साथ तो कोई मत्सर नहीं करता। मानवोंके व्यवहारमें ही हमारी अहिंसाकी कसौटी होती है।

अहिंसाके साथ सत्य जुड़ा हुआ रहता है। अहिंसाके बराबर ही जैन आगमोंने सत्यकी महिमा गायी है। लेकिन कितने ही जैन ऐसे हैं, जो व्यापारमें बेखटके असत्यका उपयोग करते हैं, और मानते हैं कि हम खेती नहीं करते, बल्कि व्यापार करते हैं, इसलिये हिंसासे बच अये हैं। हिंसासे बचनेका यह तरीका नहीं है। अगर सत्य नहीं रहा, तो अहिंसाकी भी रक्षा नहीं हो सकती।

इसलिये मैं आपसे बिनती करूंगा कि महावीर जयन्तीके इस शुभ अवसर पर आप सत्यका व्रत लीजिये और दुखी मानवोंकी सेवा निश्चय कीजिये। अपने चारो ओर नजर डालिये। आपके कितने ही भाई दुखमें पड़े हैं। उदाहरणके लिये आजकल ये शरणार्थी हैं। सरकार उनके दुख दूर करनेकी कोशिश कर रही है। लेकिन उससे हमारा धर्म पूरा नहीं हो जाता। हमें अपने दिलमें भी दयाभाव रखना चाहिये, और उनके लिये कुछ न कुछ करना चाहिये। अगर जैन लोग ऐसा करेंगे, तो अपने धर्मकी बहुत सेवा करेंगे।

( इस व्याख्यानके बाद कुछ भाइयों ने विनोबाजीसे मांस भक्षणके बारेमें अपने विचार बतानेके लिये कहा। इसके उत्तरमें उनका नीचे लिखा भाषण हुआ। )

मैं समझता था कि अभी मैंने जितना कहा, वह काफी था। लेकिन कुछ भाइयोंने ऐसी इच्छा प्रकट की है कि मांसभक्षणके विषयमें भी मैं कहूं।

बात यह है कि जैन लोग जब दया भावकी बात सोचते हैं, तो मांसाशनसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विश्वमित्र

# अमेरिकाकी पाठ्य प्रणाली

लेखक—श्री आनन्दी प्रसाद मिश्र "निर्द्वन्द्व"

प्रायः सभी देशोंकी सरकारेंने शिक्षा प्रचारको अपना मुख्य ध्येय समझ कर उनके लिये अनेकानेक सुविधायें कर रखी हैं। उनके द्वारा शिक्षाका विस्तार बड़ी सुगमताके साथ होता रहता है। इन पंक्तियोंमें संयक्त राज्य अमेरिकाकी पाठ्य प्रणालीका वर्णन करके हम प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालनेकी चेष्टा करेंगे।

### व्याकरणके स्कूल

प्रारम्भिक शिक्षा हां अनिवार्य है और उन स्कूलोंमें प्रत्येक बालक बालिकाको आठ वर्ष पर्यन्त पढ़ना पड़ता है। जो विषय वहां पढ़ाये जाते हैं, वह भारतीय वर्नाक्यूलर स्कूलोंकी पांचवीं कक्षाकी पढ़ाईसे कुछ अधिक होते हैं। ऊपरी चीजोंमें बढ़ाई गीरी और चित्रकारीका काम सिखलाया जाता है। शिक्षा मुफ्त दी जाती है, एक आना तक भी खर्च नहीं करना पड़ता, उनको पुस्तकें कागज, पेन्सिल, कलम, आदि सब पाठ्य सामग्री मुफ्त मिलती है। विद्यार्थियोंके माता पिता, अथवा अभिभावकोंसे एक पैसा तक नहीं लिया जाता। इन सुविधाओंके अतिरिक्त यदि विश्रार्थी निर्धन हैं, उसे किसी प्रकारका अवलम्ब नहीं है, तो उसको भोजन, वस्त्र भी दिये जाते हैं। इन समस्त खर्चोंकी पूर्ति शिक्षा सम्बन्धी टैक्ससे की जाती है। यह टैक्स प्रत्येक मनुष्यको देना पड़ता है, जिसकी कोई जमींदारी है, नौकरी या किसी रोजगारका सहारा है, उससे यह टैक्स एक वर्ष लिया जाता है। यह रकम शिक्षा विभाग के कामोंके अतिरिक्त अन्य किसी विभाग पर खर्च नहीं की जाती। स्कूल ९ बजेसे ३ बजे तक लगता है, तीन बजेके पश्चात् से विद्यार्थी सात बजे तक काम करके धन संचय कर सकता है, और सात बजेसे दस बजे तक पढ़ सकता है। ऐसा काम किसी गृहस्थके यहां यह होटलमें, अथवा क्लब आदि में किया जा सकता है, और इसके लिये उसे ५ डालर अर्थात १५ रुपये रोजाना तक मिल सकता है। इसके अतिरिक्त उसे वहांसे खाना खुराक और निवासके लिये स्थान मुफ्त मिलता है। लड़के, प्रायः पोस्ट आफिसकी डिलीवरी यानी डाक बांटने तथा अखबार बेचनेमें अपना खाली समय हैं, और दवाई मुफ्त दी जाती है। यदि किसी विद्यार्थीकी आंखें कमजोर हुई औह उसके लिये चश्मेकी आवश्यकता समझी गयी तो वह भी मुफ्त दिया जाता है।

शिक्षा प्रणालीमें एक खास बात यह है कि लड़के और लड़कियां स्कूलोंमें एक साथ ही पढ़ते हैं। एक ही जगह दर्जेमें बैठना पड़ता है, आराम करनेके लिये आराम कुर्सियां, हैं, जिनमें डेस्क भी लगे रहते हैं। अधिकांश स्त्रियां अध्यापक का काम करती हैं, पर क्या मजाल, जो किसी प्रकार कहीं पर किसीको शिकायत करनेका मौका मिले। जिस प्रकार घरमें माताये अपने बालकोंके शिक्षा देती हैं, उसी भांति स्कूलों में भी पाठ्य विषय पर सारा काम हुआ करता है। बालक जानते भी नहीं कि वह स्कूलमें हैं अथवा अपने घर पर।

### हाई स्कूल

आठ वर्षमें ग्रामरस्कूल अर्थात् व्याकरणकी पाठ शालाओंकी पढ़ाई पूरीकर चुकनेपर विद्यार्थीको हाई स्कूलमें प्रवेश करना पड़ता है। इन हाई स्कूलोंकी पढ़ाई चार वर्षकी है। यहांपर जो विषय पढ़ाये जाते हैं, वह भारतवर्षके मेट्रीकुलेशन क्लाससे कुछ अधिक होते हैं, विषब यह हैं— प्रारंभिक त्रिकोण मिति, प्रारंभिक पदार्थ विज्ञान —प्रारंभिक रसायन शास्त्र, पूर्ण रेखा गणित, और व्यावहारिक शिक्षा, जसे— बढ़ईगिरी, चित्रकारी और इस प्रकारके लाभदायक काम पढ़ाये और सिखाये जाते हैं। यहां भी फीस कुछ नहीं देनी पड़ती। पढ़ने-लिखनेका सामान भी मुफ्त मिलता है। स्कूल ९ बजेसे २॥ बजे तक रहता है।, बाकी समयमें विद्यार्थी किसी गृहस्थके यहां काम करके आसानीसे ४—५ डालर यानी बारह पन्द्रह रुपये पैदा कर सकता है।, रहनेके लिये स्थान और खानेके लिये भोजन बिना मूल्य मिलता है। सप्ताहमें ५ दिन स्कूल लगता है, शनिवार और रविवारकी छुट्टी रहती है।

### कालेज

हाई स्कूलकी चार वर्षकी पढ़ाई पूरी करके विद्यार्थी फिर विश्वविद्यालयमें भरती होता है, यहांपर भी बहुतसे विषय डाक्टरी, पत्रसंपादन, कानून, विद्युत इत्यादि। इन समस्त विषयोंमें प्रत्येकके लिये चार वर्षका समय देना पड़ता है। कानून और डाक्टरीके लिये ६ वर्षका समय है। कालेजकी पढ़ाईका समय सितम्बर और फरवरीसे आरम्भ होता है अर्थात् पढ़ाईका वर्ष दो भागोंमें विभक्त है, जब कि लड़के यूनिवर्सिटीमें दाखिल हो सकते है।

यद्यपि कालेजकी शिक्षा मुफ्त नहीं दी जाती, तथापि वह बहुत सुलभ मूल्यकी अथवा थोड़े दामोंपर मिलती है। कालेजकी फीस १ वर्षकी ५ डालर यानी १५) बराबर है। कालेज आठ बजेसे ५ बज तक लगता है, दोपहरको १२ बजेसे १ बजेतक छुट्टी रहती है। ऊपर जिन शाखाओंका वर्णन किया गयाहै, उनकी शिक्षा काल्पनिक और व्यावहारिक ढंगपर दी जाती है। इसके अतिरिक्त व्यायाम आदि का शिक्षाका पूरा प्रबन्ध है। शिक्षा विभाग के कार्यकर्त्ताओंको पूरा विश्वास दिलाया जाता है कि मानवी गुणोंको विकसित करनेके लिये अन्य बातोंके साथ ही साथ स्वास्थ्यको बनाये रखना बहुत जरूरी है, और यह भी संभव है कि जब व्यायामकी शिक्षा अनिवार्य ढंगसे दी जाये। वहां विश्वविद्यालयका पुस्तकालय सब भांतिकी पुस्तकोंसे परिपूर्ण रहता है। प्रत्येक विद्यार्थी आठ बजेसे रातके १० बजे तक वहां अध्ययन कर सकता है। पुस्तकालयकी पुस्तकोंको १५ दिनके लिये बाहर ले जानेकी आज्ञा है, इसके पश्चात् पुस्तकाध्यक्षको पुस्तक लौटा देनी पड़ती है।

यहांके प्रोफेसरों और विद्यार्थियों में जो प्रेम, सद्भावका संबंध रहता है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, वह अकथनीय है।

### योग्यता

योग्यताका सर्टीफिकेट यानी हाई स्कल अथवा कालेजकी सनदें रत्तीभर भी जरूरी नहीं समझी जातीं। हां, विद्यार्थी को उन विषयोंका जानना आवश्यक है, जिनकी जरूरत पड़ा करती है, क्योंकि कालेजमें प्रवेश करते समय परीक्षा देनी होती है, और तब वह दाखिल किया जाता है। परीक्षाका कायदा अमेरिकामें भारतवर्षसे बहुत नर्म है। अमेरिकामें विद्यार्थियों की परीक्षा लेने वाले बाहरी पुरुष नहीं होते, किन्तु विश्वविद्यालयके अध्यापक ही परीक्षा लेते हैं। यदि किसी विषयमें विद्यार्थी अनुत्तीर्ण हुआ, तो उसे केवल उसी विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं सहायक विद्यार्थी

ग्रामर और हाई स्कूलमें कुशाग्र बुद्धि व परिश्रमी युवक अपना काम पूरी कामयाबीके साथ कर सकता है। उसे एक सैंट अथवा एक आना भी पाससे खर्च करनेकी जरूरत नहीं पड़ती। विश्वविद्यालयमें स्वयं कमाकर पढ़ने वाला लड़का एक वर्ष पर्यन्त खूब मेहनत और मितव्ययताके साथ काम करके २५० डालर जमाकर सकता है। नाम लिखने वालेको चाहिये कि जबतक उसके पास इतनी रकम न हो, तबतक वह नाम न लिखाये, कालेजका खर्च, जिसमें फीस, कपड़े, मकानका किराया, और फुटकर खर्च शामिल है, सब मिला कल लगभग १५० डालर तक पहुंच जाता है, अतः एक वर्षमें २५० वर्ष डालर कमाकर दो वर्षतक बखूबी पढ़ सकता है। कालेजके पश्चात् ३ घंटेका समय खाने पीने में खर्च कर चुकने पर भी इतना अवकाश मिल जाता है, कि वह कोई काम पैसा कमानेके लिये कर इसमें जरा भी दिक्कत नहीं पड़ती और ऐसा काम किसी गृहस्थके घर करनेके लिये मिल जाता है। गर्मीकी तीन महीने की छट्टीमें अर्थात् १५ जनसे १५ सितम्बर तक एक युवक काम कर सकता है, और फिर दो वर्ष पढ़कर एक वर्षके लिये परिश्रम करके जो धन इकट्ठा कर लेगा, उससे फिर दो वर्ष पढ़कर अपनी पढ़ाई पूरी कर सकता है, अर्थात अमेरिकाके विश्वविद्यालयमें पढ़ने वाले किसी भारतीय विद्यार्थी जो अपने पास से एक कौड़ी भी खर्च न करके पढ़ना चाहता है, ६ वर्षमें शिक्षा प्राप्ति अच्छे मजेमें कर सकता है।

सहायता प्राप्त विद्यार्थी

ऐसे विद्यार्थी, जिन्हें घर से कुछ सहायता मिलती है, अर्थात ४०–५० रुपये मासिक खर्च मिलता है, वह अपनी पढ़ाई चार ही वर्षमें पूरी कर सकते हैं। उन्हें केवल गर्मीके तीन महीने की छट्टियोंमें मेहनत करनी पड़ेगी, परन्तु उन विद्यार्थियोंको जिन्हें घर से ६०–७५ रुपये मासिक व्यय मिले, उन्हें किसी प्रकार कष्ट करनेकी जरूरत नहीं पड़ती। वे बिना किसी प्रकार का कष्ट सहन किये अपनी पढ़ाई चार ही वर्षमें पूरी कर सकते है, क्योंकिइतनी रकम में प्रायः सभी प्रकारके खर्च शामिल हैं।

अमेरिकन शिक्षा विभागके अधिकारी वर्ग की कार्य शीलता और उनके द्वारा मिलने वाली सुविधाओंके कारण संयुक्त राज्य अमेरिकामें शिक्षा ग्रहण करने वाले व्यक्तियोंको बहुत बड़ी सहायता मिलती है। वे दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते रहते है, उन्हें किसी प्रकारकी विपत्तिका सामना नहीं करना पड़ता, प्रत्युत उन्हें जैसी सहायता मिलती रहती है।

कहानी।

# मन्दिर-प्रवेश

लेखक श्री रामचन्द्र पाठक बी० ए०

बहुत दिन की बात नहीं, अभी हाल की घटना है। आप इसे गल्प न कह कर सत्य कथा भी कह सकते है। क्योंकि कहानी पढ़नेके पश्चात यदि आप समाजका निरीक्षण करेंगे, तो आपको एक नहीं, ऐसे कई लोगोंके उदाहरण मिलेंगे, जिनका आचरण भ्रष्टसे भ्रष्ट होते हुए भी समाजमें प्रतिष्ठित, भद्रलोग और नेताबन कर पूज्य कहलाते हैं।

महंत शकटानन्द एक बड़े भारी मठ के संचालक हैं। प्राचीन काल से यह मठ वैष्णव धर्म परंपराके लिये प्रख्यात है। किसी कालमें इस मठने हिन्दू धर्म और विशेषतः वैष्णव पंथ की बड़ी सेवा की, और उस सेवाके अनुरूप बड़े बड़े राजा महाराजा और जमींन्दारोंने उसके लिये बड़ी बड़ी जागीरें लगा दीं। आज इसकी संपत्ति देखी जाय तो एक छोटी सी रियासत से कम नहीं है।

लोग कहते हैं कि किसी कालमें यह संस्कृत शिक्षाका बड़ा भारी केंद्र था। यहां सैकड़ों ब्रह्मचारी दूर दूर से आकर, वैष्णव धर्म की शिक्षा लेकर, अध्ययन किया करते थे, और पंथके प्रचारके लिये दूर दूर निकल जाया करते थे। मुसलमानों से पीड़ित हिन्दुओंको आश्रय मिलता था। गरीब निराश्रितोंको खाना कपड़ा मिलता था। हजारों तरूण ब्रह्मचारी हिन्दु धर्मकी रक्षाके लिये एक बलाढय सेनाके रूपमें तैयार रहते थे।

कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि मठाधीश, जिसकी उपाधी महंत है, एक महान तपस्वी, विद्वान ब्रह्मचारी रहता था। मठाधीश बननेके पहिले इच्छुक ब्रह्मचारी कोई कोई घोर तपस्याओंमें से निकलता पड़ता था, और जब वह परिपक्व हो जाता था तब कहीं वह उस गद्दीके योग्य होता था।

पर आज इसकी परिस्थिति क्या है इसका अन्दाज स्वयं देखने से हो सका है। कि बहना बंश परंपरा आज भी वैसी ही है जैसे कि पहिले थी। आज भी मठाधीश ब्रह्मचारी कहलाता है। हजारों नहीं तो पांच पच्चीस निस्तेज ब्रह्मचारियोंके कंकाल भी पड़े रहते हैं। थोड़ा बहुत सदावन भी बांटा जाता है। कभी कभी कथा कीर्तन भी हुआ कहते हैं। पहिले सरीखा भगवान का रथ खींचनेके लिये [illegible] रहना है। और हिन्दुधर्म की सेवा भी कई रूप से होती है।

ऐसे प्रख्यात और धार्मिक मठके संचालनका भार महंत शकटानन्दके सिर पर आ पड़ा। उस समय इनकी उम्र कोई ज्यादा नहीं थी। अभी भी चालीसके भीतर ही होंगे। समाधिस्थ महंत को उस समयके ब्रह्मचारियोंमें शकटा नन्द से अधिक कोई तेजपुंज वयोवृद्ध न मिला, इसलिये, गद्दी का उत्तराधिकारी इन्हीं को बनाया।

बड़े महंतके समाधिस्थ होते ही शकटा नन्द जी अटूट संपत्ति के अधिकारी बन गये। उस समय उनकी आयु केवल अट्ठाईस या उन्तीस साल की थी। देखने में महंत जी अति सुन्दर थे, और वयके अनुसार आज भी हैं। गठीला शरीर, ऊंचे पूरे, आंखे सतेज गोया सब प्रकार से बड़े आकर्षित हैं। इनके जन्मका रहस्य अंधकारमय है, फिर भी कोई कहता है कि ये गौ शालामें पड़े मिले, तो कोई कहता है कि पीपलके पेड़ के नीचे पड़े मिले। उनके शिष्य कहते कि ये स्वयंभू हैं। इनके शिक्षा की ओर दृष्टि डाली जाय तो वह भी एक गूढ़ समस्या है। उसके विषयमें भी कोई कुछ कहता है तो कोई कुछ, पर हां उनकी बोल चाल से ऐसा अवश्य मालूम पड़ता है कि उनमें शिक्षाका प्रमाण यथा तथा ही है।

एक मात्र प्रख्यात मठ होनेके कारण महंतजी का मान सम्मान शहरमें काफी है। कई संस्थाओंके वे सदस्य हैं। कई सामाजिक संस्थाओंको बड़े बड़े दान भी देते हैं, और विधवाश्रम तो केवल इन्ही की उदारता से चलता है।

मठके अन्दर एक सुन्दर मन्दिर है। इस मंदिरमें लक्ष्मी नारायण की करीब करीब सात आठ फुट ऊंची अति मनोहर मूर्ति है। यह मूर्ति शुभ्र पाषाण की है, और सिर से पर तक अनमोल सोने के आभूषणों से लदी है। मंदिर की बनावट हेमाड़ पंथी है। पहिली शिला से लेकर तो कलश तक सारा मंदिर पौराणिक कथाओं से संबंधित मूर्तियोंसे खुदा हुआ है। कहने का तात्पर्य कि सारा मंदिर अप्रतिम और हिन्दु संस्कृति का उच्च कोठिका प्रतीक है।

ऐसे अद्वितीय मठके महंत-शकटा नन्द, एक दिन प्रातःकाल अपने पिछवाड़े [illegible] ले ५ १० के पास पर [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वमित्र

# इस रोगकी दवा नहीं

विनायक नोनकर

क्या आपसे भूल नहीं होती ? आपकी क्या, संसारमें ऐसा कोई नर है जो दावेके साथ कहे, "मुझसे भूल कभी नहीं होत?"

हर इन्सानसे भूल होती है। भूलीर्फ उसीसे नहीं होती जो संसारमें कोई व्यवहार ही नहीं करता। मगर वह मनुष्य ही कहां रहा ? वह तो जड़ है। किसीने कहा है, "क्या आप कहते हैं कि आपसे कभी भूल नहीं होती ? क्या आपका विश्वास है कि इस संसारमें आपका कोई दुश्मन नहीं है ? यदि यह सत्य है तो आप संसारमें एक मृतक का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यदि आपने संसारमें अपनी भूल पर पछतावा नहीं किया है तो आप जीवन संग्राममें एक डरपोकका जीवन बिता रहे हैं।

भूलना मनुष्यके पीछे उसकी मौतकी तरह निश्चित है। बड़े बड़े ओहदेवाले, उंची से उंची विद्या प्राप्त और अक्लमंदसे अक्लमंद आदमियोंसे भी संसारमें भूल होती है। इसी कररण लोगोंको कहते सचा जाता है कि सब रोगोंकी दवा है परन्तु, भूके लिये कोई दवा नहीं है। कांग्रेससे भूल हुई और देशका बंटवारा हो गया, पृथ्वीराज से भूल हुई और देश गुलाम हो गयापृजयचन्द से भूल हुई और उसके मुंह पर कालिख पुत गई, नन्दसे भूल हुई और उसका मस्तक धूल चाटने लगा; मरहठोंसे भूल हुई और तीन चौथाई हिन्दुस्थानका साम्राज्य खोकर विदेशियोंके आश्रित बन गये। औरंगजब से भूल हुई और उसका कुल मिट्टीमें मिल गय और कौरवोंसे भूल हुई और राजपाटको साथ वे तबाह हो गये। जब इन बड़ोंको भी भूल नेनहीं छोड़ा फिर जनसाधारण की क्या विसात है, एक सर्व शक्तिमान ईश्वरके सिबाय सबसे भूल होती है।

जानबझकर कोई भूल नहीं करता। अपन हाथों अपन पैरों पर कुल्हाड़ी कौन मारेगा ? बेवकूफ बनना पसंद कौन करेगा ? मगर कभी कभी मनुष्योंसे ऐसी हरकते हो जाती हैं कि उनकी बुद्धि काम नहीं देती और लोग कहने लगते हैं "विनाश काले विपरीत बुद्धि'। भूल की नहीं जाती, भूल हो जाती है। भूल होना एक खतरे की छंटी है जो मनुष्यको होशियार करती है। यह एक मजेकी बात है कि भूल न हो तो मनुष्य मदमें भूलन लगता है और जो घमंडी होता है उससे ऐसी जबरदस्त भूल होती है कि वह जिंदगी भर के लिये उसे नहीं भूलता। ऐसी भूलें होती है यातो प्रतिष्ठाके मदमें या सत्ता के मदमें या शक्तिके मदमें। मरहठोंसे साम्राज्य के मदमें भूल हुई और तृतीय मरहठा युद्धमें उनका नशा उतर गया, राजपूतोंसे युद्धमें उनका नशा उतर गया, राजपूतोंसे शक्तिके मदमें ऐसी भूल हुई कि बाबर से जीती बाजी हार बैठ, नोपोलियन सारे-खे निर्भीक पुरुष से ऐसी भूल हुई कि उसे बिना भाड़की कोठरीमें आश्रय लेना पड़ा, हिटलर से ऐसी भूल हुई कि वह कहींका न रहा; अंग्रजोंसे सत्ताके मदमें ऐसी भूलें हुई कि आज वह तीसर दर्जेका राष्ट्र बन गया है; पोरससे प्रतिष्ठाके मदमें ऐसी भूल हुई कि पराजयका दाग देशको लग गया।

भूल होनसे मार पड़ती है--किसीको पैसे की, किसीको बेत की और किसीको शब्द बाण की। मार पड़ना ही चाहिये क्योंकि जिस तरह इनामके सिवाय उत्साह नहीं आता उसी तरह मारके सिवाय मनुष्य चैतन्य नहीं होता। इसलिय निराश नहीं होना चाहिये, बुरा नहीं मानना चाहिय क्योंकि भूल करन वाले आप अकेले ही नहीं है। भूल सबसे होती है। सबको जिंदगी में नीचा देखनकी नौबत आती है। भूल हुई है --कोई बात नहीं। विचार करो। भूलका मूल ढूंढो और दुबारा ऐसी भूल न होन पाये इस बात की खबरदारी रखो। भूल होनसे डरना या शर्माना नहीं चाहिये क्योंकि भूल मनुष्यको होशियार बनाती है, हृदयको पवित्र करती है, आत्म निरीक्षण की बुद्धिको सतेज करती है। भुल ही मनुष्य को अनुभवी और निडर बनाते है। जिस तरह अंधकारके बिना प्रकाश की, श्रमके बिना विश्राम की, बिरहके बिना मिलन का महत्व नहीं है उसी तरह भूल से बिना ज्ञानका महत्व नहीं है। भूल ज्ञानको परखन की कसौटी है।

एक अंग्रेज कविकी सलाह है, "उससे ब्याह न करें जो निर्व्यसनी है।' कारण यह है कि निर्व्यसनी मनुष्य गर्वाष्ठ होता है। वह थोड़ी थोड़ी बातोंमें दूसरोंको दोष देने लगता है। वह धीरे धीर कृपणता पर आने लगता है। वह समझता है कि व्यसनी मनुष्य एक भूल कर रहे है परन्तु वह बखबर है कि उससे ऐसी भूल हो रही है कि उसका जीवन नीरस होते जा रहा है। वह हमेशा पत्नि पर रोष गांठ रहता है और बात बात में उसे कोसता रहता है। कृपणता और कठोर व्यवहारके कारण वह अपनी अर्धांग के मनमें अपने पति तिरस्कार उत्पन्न कर लेता है।

उसी प्रकार स्त्रियां भी ऐसी भूलें कर बैठती हैं कि पीछे उन्हें पछतानें की नौबत आ जाती है। अपने हठ के कारण कई स्त्रियां घर की परिस्थितिका ख्याल न कर साड़ी, गहनके लिय पतिका पींड पकड़ लेती हैं और आप चलकर वे अपना जीवन उदास बना लेती हैं। जब उनकी मांग पूरी नहीं होतीं तो वे बच्चों और घर के बर्तनों पर अपना रोष उतारने लगती ह जिसके कारण वे अपन मनका नियंत्रण खो बैठती हैं और फिर उनसे भूलें होने लगती हैं। कभी सागमें नमक डालना ही भूल जाती हैं तो कभी दुबारा डाल देती हैं। दाल मांगी जाय तो साग परोसती हैं और भात मांगा जाय तो रोटी देती हैं।

मनुष्य स्वभाव बड़ा स्वार्थी होता है। वह अपनी बड़ी से बड़ी भूलको देख नहीं सकता परन्तु दूसरोंकी छोटी सी भूलका बवंडर बना देता है। मनुष्यकी प्रवृत्ति ही ऐसी होती है कि अपनी पहाड़ तुल्य भूलको राई तुल्य समझता है और दूसरोंकी राई तुल्य भूलको पहाड़का रूप देता है।

रास्ते पर चलते चलते यदि किसीका भूलसे केलेके छिलके पर पैर पड़कर वह साष्टांग नमस्कार करनेलगे तो लोग उसकी गिरती दशाको देख कर दांत निकालने लगते हैं मानों उनके जीवनमें ऐसे मौके कभी आते ही नहीं। मनुष्य स्वभावका एक भद यह भी है कि वह भूल करता है परन्तु कबूल नहीं करता बल्कि उसका दोष दूसरों के माथ मढ़ने लगता है। भारतवासियोंने अपनी आपस की फूटके कारण देशका स्वातंत्र खोया परन्तु दोष देते हैं पर देशियों-को। पहरेदार की थोड़ी सी भूलके कारण बैंकका दीवाला निकलता है परन्तु दोष दिया जाता है चोर को। जनताकी साधारण भूलके कारण शहर बंदर होता है मगर दोष दिया जाता है म्युनिसीपाल्टीको। सिनेमा देखकर अच्छी बातोंकी जगह बुरी बातें अपनाने की लोग भूल करते ह परन्तु दोष दिया जाता है सिनेमा को।

मनुष्य जब अपनी समझ शक्ति की तराजके पल्लें बराबर रखने में डावडाल हो जाता है तब उससे भूल होती है। अच्छे विचार ही अच्छ कर्मोंको जन्म देते हैं, और अच्छ विचार तभी उठते हैं जब मनुष्य में अच्छ और बुरें सच्च और झूट का निः-पक्ष होकर निर्णय करनेकी समझ बूझ विद्य-मान होती है। जैसे ही वह एक पक्षकी ओर झुका, उससे भूल निश्चय ही होती है। अज्ञानलके कारण भी भूलें होती हैं क्योंकि कहा भी है,

बिना विचार जो सो पीछे पछताय।
काम बिगारे आपनो जगमें होत हंसाय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# उपजाओ और खाओ

( ले० श्री हरि )

सन् १९४३ के बाद हमारे देशकी खाद्य समस्या कभी भी संतोषजनक नहीं रही। इसके कारण कुछ तो प्राकृतिक तथा कुछ अप्राकृतिक। प्राकृतिक कारणोंमें हम मिदनापुर तथा बंगालके दैवी कोपको नहीं भुला सकते जहां खड़ी फसलें बरबाद हो गयी थीं। अप्राकृतिक कारणोंमें बर्मा पर शत्रुओंका अधिकार, प्रांतीय सरकारकी अयोग्यता तथा राजनैतिक चालें गिनी जा सकती हैं। भारतवर्षको कुछ अंशोंमें बर्मा के भेजे हुए चावल पर निर्भर करना पड़ता था पर शत्रु अधिकारके साथ यह रास्ता भी बन्द हो गया। हम बंगालके अकाल को भी नहीं भूल सकते जिसमें अन्नाभावके कारण लाखों निरीह प्राणी भूख की ज्वाला में जल गये। दूसरे वर्ष कुछ तो फसल अच्छी हुई और कुछ केन्द्रीय सरकारके हस्तक्षेप के कारण खाद्य स्थिति सभली। पर फिर भी हमारा पेट अपनी मांगे पूरी करने लायक न हो सका। तब से हमारी खाद्य स्थिति बराबर ऐसी ही चली आ रही है। कंट्रोल आदि कई उपायोंसे हमने खाद्य स्थिति संभालनेकी चेष्टा तो की पर फिर भी असफल रहे। लोगोंको बराबर जरुरत से कम तथा वह भी गंदा तथा अस्वास्थ्यकर भोजन कंट्रोल की दूकानोंसे मिलने लगा। इसके कारण देशके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा। हमारे अन्न उत्पादन में भी किसी प्रकारकी उन्नति नहीं हुई। इन सब कारणों से हमें अपने खाद्य पदार्थोंके लिये बाहरके देशोंका मुंह देखना पड़ता था। भारतमें स्टर्लिंग पावनेके बदले में बराबर खाद्य आयात किया जाने लगा। इसके अलावा भी निर्यातोंके बदले में हम बराबर खाद्य पदार्थ ही आयात करते गये। विदेशी हमसे मनमाना दाम वसूल करते थे। कुछ मामलों में देखा गया कि अपने देशमें प्रचलित दामों से उन्होंने दुगुने या तिगुने दाम पर भारत-वर्षको माल भेजा इसका हमारे वैदेशिक व्यापार पर बड़ा ही बुरा असर पड़ा। फिर यदि हम अपने खाद्य पदार्थोंके लिये दूसरों पर निर्भर करते हैं तो यह किसी भी हद में उचित नहीं है। मान लीजिए कल तीसरा महायुद्ध छिड़ गया और विदेशोंसे माल आना बंद हो गया तो हमारे तो जानके लाले पड़ जायेंगे।

हमें खुशी है कि इन सब कारणों को तथा अनेक फलोंको दृष्टिगत रखते हुए भारत सरकारने पिछले सितम्बरमें एक कमेटी खाद्य पदार्थोंके संबंधमें विचार करनेके लिये बनायी थी जिसका निर्णय हालमें ही प्रकाशित हो गया। यह नयी रिपोर्ट पांच भागोंमें विभक्त है। पहले भागमें १९४३ से १९४७ तक जो योजनाएं खाद्य उत्पादन बढ़ानेके लिये काम में लायी गयी थीं उन पर प्रकाश डाला गया है। दूसरे भागमें अगले पांच वर्षों में उत्पादन किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है इस पर विचार किया गया है। तीसरे भागमें समुचित रुपसे नयी खाद्य नीति पर विचार किया गया है तथा बताया गया है कि इसके लिये क्या क्या साधन जरूरी पड़ेंगे। चौथे भाग में और क्या खाद्य पदार्थ काममें लाए जा सकते हैं इस पर विचार किया गया है तथा अंतिममें अगले पांच वर्षों की खाद्य नीति पर विचार किया गया है।

कुछ प्रान्तोंमें यह नीति अख्तियार की गयी कि जूट, रुई आदिकी जगह खाद्य पदार्थ उपजाए जाएं यह नीति सफल न हो सकी। रिपोर्टमें इस बात पर आशा प्रकट की गयी है कि खाद्य पदार्थोंका इसी प्रकारसे उत्पादन चलायाजाय तथा केन्द्रीय सरकार इसमें उन्नति करे। पुरानी तथा उसर जमीनोंको काममें लाया जाय तथा खेतोंको जिसमें अभी खेती होती है सिंचाई आदिसे समुन्नत किया जाय। इसमें अच्छी सिंचाई, बढ़िया खाद तथा बीज आदि आते हैं।

जन संख्याके ख्यालसे भारतका अनाज उत्पादन पूरा नहीं पड़ता है। इसलिये कुछ हिस्सोंमें जिनको अकाल पीड़ित हिस्सा कहा जाता है नदियों पर बड़े बड़े बांध बांधना होगा जिससे चतुर्मुखी विकास हो सके। ऐसी कई योजनाएं हमारे सामने है जिनमें हीराकुंड तथा दामोदर नदी की योजनाएं प्रसिद्ध हैं। इनके अनुसार हमें कई लाख टन खाद्य पदार्थ ज्यादा मिल सकेंगा, बिजली बनायी जा सकेगी तथा ग्राम सुधार किये जा सकेंगे।

अपनी अपनी खाद्य दशा सुधारनेका भार प्रांतो तथा राज्यों पर ही रहेगा पर केन्द्रीय सरकार उनको आपसमें सहायता पहुंचानेके लिये काम करेगी। केन्द्रीय सरकारके हस्तक्षेप से ही उन टुकड़ोंमें खेती हो सकेगी जो बेकार पड़े है। प्रांतोको तथा राज्योंको जो सहायता केन्द्रीय सरकार पहुंचायेगी उसपर तीन वर्षके उपरांत एक बार विचार करना पड़ेगा। प्रांतोकी इस दिशामें सफलता तथा असफलता पर ही अगले पांच वर्षोंकी जो सहायता दी जायेगी उस पर विचार किया जायगा। प्रांतो तथा केन्द्रोंमें दो बड़े बड़े मंच खोले जाएंगे जिनमें आपसमें विचार विनिमय होगा।

आलू, केला, तथा शकरकंद आदिका उत्पादन भी बढ़ाया होगा। मछलीके व्यवसाय को भी इस योजनाके अनुसार सहायता पहुंचायी जायेगी। इस रिपोर्टमें बताया गया है कि इस योजनाको काममें लानेमे देर लगेगी पर तब तक के लिये बन्दर से खाद्य मंगाना पड़ेगा। पर यह आयात किसी भी हालतमें पांच वर्षोंसे ज्यादा का नहीं होना चाहिये। केंद्रीय सरकारको ही आयात का पूर्ण अधिकार होना चाहिये। केंद्रमें हमेशा १ लाख टनका अनाज चावल तथा गेहूंके रूप में सुरक्षित रखा जाय।

कुछ जानकारोंका विचार है कि उसर भूमिको जोतनेसे ज्यादा श्रेयस्कर होगा कि हम जो भूमि अभी जोती जाती हैं उसीमें सुधार करें। आर्थिक दृष्टिसे ज्याद उपयुक्त होगा तथा इसके लिये केंद्रीय भूमि सुधार बोर्डकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। प्रांत इस कामको संभाललेंगे। सर श्री रामने चीना बादाम तथा मीठे आलूके उत्पादन पर जोर दिया है। आपने बताया है कि इनको पीसकर आटेमें पिलाया जा सकता है। इनके उत्पादनका खर्च कहीं कम पड़ेगा क्योंकि ये हर जगह उपजाये जा सकते हैं।

हमें आनन्द है कि हमारी केंद्रीय सरकारने भारतके इस खाद्य संकटको दूर करनेके लिये निश्चित कदम उठाया है। हमें आशा है कि जल्द से जल्द खेतोंकी भीतरी हालत सुधारनेकी चेष्टा की जायेगी। इसके लिये आवश्यक है कि किसानकी हर मांग पूरी कर उसे मजबूत बनाया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सातवें पृष्ठका शेषांश

की फुलबाड़ीमें टहल रहे थे, कि नित्य क्रमानुसार चंपा बगलमें टोकरी, उसमें झाड़ू और एक हाथमें बालटी लेकर, बड़े बड़े नखेरके साथ वहां से निकली। दोनोंकी आंखे चार हुई। चंपा एक घने वृक्षके नीचे ठिठक कर खड़ी हो गई, और अपनी बालटी और टोकरी रखकर आंचल सम्हालने लगी। महंत जी भी यहां वहां देखते चले, और किसी की आहट न पाकर चंपाके समीप आकर खड़े हो गये। चंपा सकुचाते हुए नीचे देखने लगी। महंत जी मुस्कराते हुए आगे बढ़े और ज्योंही उसके कपोल पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया त्योंही उसने एक कदम पीछे हटकर, बड़ी नजाकतके साथ, कहा—

"हं ! हं ! आपने तो नहा लिया होगा न।"

"ऊं ! फिर नहा लूंगा, क्या बड़ी बात है।"

"कोई देख लेगा।"

"पगली ! अभी कोई सोकर भी न उठा होगा. और उठा भी होगा तो यहां क्यों मरने चला ?" इतना कहते हुए महंत जी आगे बढ़े और उसे अपने बाहुपाशमें जकड़ लिया, चंपाने कुछ चुल बुल की किंतु चुंबन लेने में कोई बाधा न डाली। यह तमाशा चल हीं रहा था कि दूर से पत्तोंकी खरखराहट हुई। महंत जी एकदम दूर हट गये और —"तो फिर शामको यहीं" कहते कहतेदूसरी तरफ से अदृश्य हो गये।

चंपा एक हरिजन की लड़की थी। उम्र भी कोई उन्नीस बीस के लगभग थी। दुबली पतली, नपा तुला शरीर, गौर वर्ण, चपल नेत्र, धनुष्याकर भौंरों, विशाल ललाट, तारुण्य की मादकता, अर्थात् सिर से पैरे तक वह इतनी आकर्षक थी, कि वह हरिजन हैं, ऐसी कोई कल्पना भी न कर सका था। बरन् उसको देखनेसे यही प्रतीत होता था कि उसमें अवश्य किसी अच्छे वंशका अंश होगा। और यह कल्पना निराधार भी न थी। क्योंकि कुछ लोगोंका कहना था कि उसका चेहरा मोहरा सेठ सरीखा है, तो कोई कहता था, नहीं ! उसकी आंखें, नाक और चेहरे की छटा म्यनिसिपल मेंबर से मिलती जुलती है। अस्तु; जो हो, पर इतना अवश्य था कि वह बहुत लावण्यवती और आकर्षक थी।

सूर्य स्त होते ही, शक्तिनुरुप शृंगार कर वह उसी स्थान पर आ पहुंची। महंत जी पहिले से ही उसकी राह देखते आतुर खड़े थे। पत्तों की खरखराहट हुई, फिर धुंधली सी आकृती दिखी, और थोड़े ही क्षणोंमें चंपा लज्जित सी, सकुचाते हुई महंत जी के सामने आ खड़ी हुई। वे उसे देख खिल उठे और समीप जाकर उसे हृदय से लगा लिया। उसने भी इन्कार न किया। और करती भी क्यों ? महंतजी की सुंदरता पर, उनके यौवन पर, और संपत्ति पर वह भी अपने को न्यौछावर कर चुकी थी। वह उनकी ओर इस प्रकार खिंच चुकी थी जैसे कि लोहा चुंबक की ओर। थोड़ी देर वहीं पर कुछ प्रेम चेष्टाएं कर महंत जी ने उसका हाथ पकड़ा और उसे पिछले दरवाजे से अपने अंतपुरमें ले गये।

महंत जीके अन्तपुरकी शा नभी विलासी राजाके रंग महल से कम न था, किंबहुना कुछ अंशों में अधिक ही था। और हो भी क्यों न ?। महंत जी के पास किस वस्तु की कमी थी, रुप था, तारुण्य था, रसिकता औ अटूट संपत्ति भी।

चंपा ने कहा—"अब मैं जाती हूं।"

"कहां जायगी ? चंपा ! अभी तो दो ही बजे हैं।" इतना कहते हुए महंतजी ने उसका हाथ पकड़ा और फिर उसे अपने पास बिठाल लिया। यहां वहां की बातें होने लगी। कुछ समय और बीता कि चंपाने कुछ मुस्कराते हुए, कुछ सकुचाते हुए फिर कहा —

"क्या मैं कुछ पूंछूं ?"

"हां ! हां ! जी चाहे सो पूछ। तेरे लिये किस बात की मनाही है। तूने तो मेरे हृदय को इस प्रकार चुरा लिया ह कि फिर वापिस मिलना कठिन। बोल ! बोल ! क्या कहती ह।"

"कहूं ! आप नाराज तो न होंगे ?"

"नाराजी की क्या बात।"

वह बड़े संकोच से डरते डरते बोली—"क्या मैं भगवान के दर्शन कर सकती हूं ? सुना है कि भगवान की मूर्ति बहुत सुन्दर ह और न जाने कितने प्रकारके गहने पहिने हैं। हम लोग तो सरे आम दिन में कभी भीतर पैर ही नहीं रख सके।"

"बस ! इतनी सी बात ! मैं समझा कि कोई बड़ी इनाम मागने वाली है। अच्छा, तो चल। अभी सब लोग गाढ़ी निद्रामें भी हैं। थोड़े ही देर में, चार बजते ही पुजारी जाग भी पड़ेगा।"

महंत जी ने उसका हाथ पकड़ा और धीरे धीरे दबे पैर मंदिरके द्वार पर आये। धीरे से पट खोले। दीपक मंद मंद जल रहा था। एकादशी का दिन था। भगवान लक्ष्मी नारायण पूर्ण शृंगार किये हुए थे। उनके मुख पर आश्चर्य भरी मंद मंद मुसकान थी, मानों कि वे दो विलासियोंके आचरण और श्रद्धाको संदिग्ध दृष्टि से देख रहे हों।

चंपाने भगवानको देखा, भगवानने चंपा को। भगवानकी मुस्कराहटमें आश्चर्य था। चंपा के नेत्रोंमें आंसू थे। वे आंसू ग्लानि के थे या श्रद्धा के, भगवान जाने ! पर हां इतनी बात अवश्य थी कि उस दिनके पश्चा चंपा न तो महंत जी के बाग में दिखी, उस शहरमें।

आज कांग्रेसके सारे सदस्योंने हरिजन के साथ नगरके मंदिरोंमें प्रवेश करनेक निश्चय कर लिया था। कई स्वार्थी और स्वेक्षछाचारी पंडों और महंतों ने उसक प्रतिकार करनेकी योजना भी तैयार क ली थी। सारे शहर में इस की चर्चा थी कुछ लोग पक्ष में थे, तो कुछ उसे कांग्रेसकी ज्यादती कहते थे। बूढ़े पुराने तो कहते थे कि "भाई, इसमें किसीका दोष नहीं, कलि की महिमा है, जो हो सो थोड़ा है। यदि ईश्वर अधर्म बढ़नेके पहिले हमें उठा ले तो अच्छा है।" सारे शहरमें सनसनी सी फैल गई थी।

चार बजे शामको कांग्रेस भवन से जुलूस निकला। जुलूसमें कांग्रेसके सदस्यों के अतिरिक्त शहरके कुछ प्रगतिशील भद्र पुरुष भी थे। हरिजन तो थे ही। तमाश बीन भी थे। आगे आगे पुरुषोत्तम मेहतर राष्ट्रीयध्वज लिये जा रहा था। उसके पीछे सब हरिजन थे, और उनके पीछे दूसरे लोग। नाना प्रका के नारों से आकाश गूंज रहा था। हरिजन बड़े प्रफुल्लित थे। आज उनमें एक अलौकिक स्फूर्ति थी।

धीरे धीरे जुलूसने शहरके कुछ मंदिरों में प्रवेश किया। कहीं कहीं कुछ प्रतिकार हुआ भी, पर मनुष्योंकी संख्या देख उग्र स्वरूप करनेका पंडोंका साहस न हुआ। कहीं कहीं तो पुजारियों और मंदिरोंके संस्थापकोंने बड़े आदर और प्रेमके साथ हरिजनों का स्वागत सत्कार भी किया। इस प्रकार शहरके सब मंदिरोंका दर्शन करते हुए संध्या समय जुलूस शकटानन्दके मठ पर पहुंचा। इस मठ में प्रवेश कर भगवानके दर्शन करना तो हरिजनोंका ध्येय था। क्योंकि प्राचीन मठ, सुंदर मूर्ति, मठका महत्व और शकटानन्द के प्रति विरोधाभाव ऐसे कई कारण थे। महंत जी यह सब जानते भी थे। पर उन्हें अपने को कट्टर सनातनी, हिन्दू धर्मके अधुवर्यू, शुद्ध ब्रह्मचारी और वंश परंपरा के मान मर्यादा पर मिटने वाले, सिद्ध करना था न। अतएव उन्होंने भी चुनौती स्वीकार कर दो सौ गुंडे जमा कर रखे थे।

आखिर जुलूस वहां आ पहुंचा। हरिजन स्फूर्तिपूर्वक बड़े आवेशके साथ आगे बढ़े और मंदिरके सिंहद्वार तक जा पहुंचे। तबतक किसी ने भी कोई प्रतिकार न किया। सर्व प्रथम पुरुषोत्तम मेहतर ध्वज लिये सिंहद्वार पर आया और उसने बड़े भक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव से द्वार को प्रनाम किया। पीछे पीछे आने वाले हरिजनोंने --"महात्मा गांधी की जै" "हिंदु धर्म की जै" का घोष किया। पुरुषोत्तमने द्वार के भीतर पर रखा, और उसके पीछे पीछे कुछ हरिजनों ने भी। प्रांगणमें पहुचते ही चारों तरफ से--" सनातन धर्म की जै," --"महंत शकटानन्द की ज" के नारे लगाते हुए गुंडे उन पर टूट पड़े। लाठियोंके प्रहार होने लगे। छोटा सा रण क्षेत्र उपस्थित हो गया। उन धर्म वीर हरिजनोंने हाथ नहीं उठाया। शांति पूर्वक लाठियोंका प्रहार सहन करते हुए एक के बाद एक प्रांगणमें गिरते गये। कुछ ने तो भगवानके चरणों पर 'हे राम' कहते कहते प्राण विसर्जन भी कर दिये।

भीतर यह कांड प्रारम्भ होते ही बाहरके वीर एकके बाद एक खिसक गये सारे शहरमें आंधीके समान यह घटना फैल गयी। शांति स्थापित होते ही पुलिस आ पहंची। सरकारी अस्पताल से रुग्ण गाड़ी आकर घायल हरिजनोंको ले गई।

रातको गांधी चौकमेंबृहत् सभा हुई। कांग्रेसियोंने इस पाशविक घटनाका निषेध किया। कुछ लोगोंका हृदय विदीर्ण हुआ। कुछ लोग घर जाकर नित्यानुसार घोर निद्रा में खुर्राटें मारने लगे।

घायल व्यक्तियोंमें पुरुषोत्तमको बहुत ज्यादा चोट लगी थी। वह मरण-सन्न ही था। जिन्हें कम चोट लगी हुई थी उन्हें मरहम पट्टी करके घर भेज दिया गया। जिन्हें ज्यादा औषध उपचारकी आवश्यकता थी, उन्हें अस्पतालमें ही रख लिया। पुरुषोतम भी वहीं था। उसके पास उसकी एकलौती लड़की चंपा बड़ी व्यथित उदास और चिन्तित बैठी थी। अपने वृद्ध पिताको देख कर रो रही थी। और मन ही मन महंतजी पर संतप्त हो रही थी। आज उसे उनके दाभिक स्वरूपका पूर्ण ज्ञान हो गया था। वह मन ही मन सोच रही थी कि इस महंतके दुष्कर्मोंको सारे संसारके सामने क्यों न प्रकट करूं?

ऐसे कुछ चल विचल विचारोंमें वह अचेत सी बैठी हुई थी कि उसके पिताने धीरेसे करवट बदली और उसकी ओर स्नेह सहित अश्रु भरे नेत्रोंसे देख कर कहा--"बेटी! अब मैं बहुत समय तक तक जीवित नहीं रहूंगा, बड़ा कष्ट है, बोल नहीं सका, इच्छा है कि भगवानके चरणोंके पास रहता" इतना कहते कहते वह मूछित हो गया।

पिताके इन करुण और श्रद्धा भरे शब्दोंने चंपाके हृदय पर बड़ा आघात किया। वह व्याकुल हो गयी और सोचने लगी--"क्या मैं अपने मरणोन्मुख पिताकी अंतिम इच्छा पूरी न कर सकूंगी?"

इतना सोच ही रही थी कि --गांधी जी की जय हिंदु धर्मकी जय--महंतोंका नाश हो"की ध्वनि उसे सुनाई दी। वह झट उठी और देखा कि बड़ा भारी जुलूस जिसम हरिजन भी थे, चला जा रहा है। पूछने पर उसे मालूम हुआ कि आज फिर हरिजन मठ प्रवेश करने जा रहे है, और प्रवेश न करने दिया गया तो सत्याग्रह भी करेंगे।

बस! फिर क्या था! चंपाको जो अवसर चाहिये था वह मिल गया। उसने धीरेसे अपने पितासे कहे--"दादा आप चिंता न करें, मैं आपको भगवानके चरणों तक ले जानेका वचन देती हूं" इतना कह कर वह वहांसे निकली और जुलूसके पीछ पीछे हो गयी।

जुलूस मठ पर आया। चंपा दूर एक वृक्षके नीचे जा खड़ी हो गयी। आजका जुलूस बहुत बड़ा था। उसमें शहरके बड़े बड़े प्रतिष्ठित लोग भी सम्मिलित थे। आस पास पुलिस भी थी। वृद्ध थे स्त्रियां थीं और बच्चे भी।

महंतजीको अपनी पहली विजय पर बड़ा अभिमान था। उन्हें विश्वास भी हो गया था कि फिर यदि हरिजनोंका जुलूस आया तो उसी प्रकार किंबहुना और भी ज्यादा कठोरताके साथ उसे ध्वस्त कर देंगे। उन्होंने प्रतिकारकी सब योजना कर ली थी और आज स्वयं भी प्रतिकारमें भाग लेने वाले थे।

जुलूसके नेताने महाद्वारको प्रणाम किया और जोरोंके साथ भगवानकी जै जै कार की। सब लोग आगे बड़े, और भीतर घुसने वाले ही थे कि महंत जी स्वयं द्वार पर आये और बीचों बीच खड़े होकर गरज उठे--"मूर्खों! थोड़ा विचार करो और फिर पवित्र स्थान को भ्रष्ट करनेका साहस करो।" इतना ही कह पाये थे कि चंपा, जो दूर वृक्षके नीचे खड़ी थी और महंतजीको देखते ही जुलूसके पीछे आ गई थी, एक दम आवेशके साथ उस मनुष्यके पास आ खड़ी हुई, जिसके हाथमें राष्ट्र ध्वज था। उसने आवेशसे उस व्यक्तिके हाथसे ध्वज छीन लिया और महंतके सामने जाकर खड़ी हुई। दो क्षण उनकी ओर देखा और तन कर खड़ी हो गई और बोली --"कौनसा पवित्र स्थान है? और यह पवित्र ब्रह्मचारी!"

चंपाको देखते ही महंतजीका जोश एकदम खिसक गया। वे पीले पड़ गये और आंखें मह फाड़ कर चंपाकी ओर टकटकी-लगाकर देखने लगे। चंपाने मुड़कर महंत की ओर फिर देखा और बड़ी अवहेलना करती हुई उन पर टूट पड़ी--"पापी! नराधम!! किसे पवित्र स्थान कहता है? इसे! जिसे तूने अपने पाप कर्मोंसे अपवित्र किया। नीच! दुराचारी! क्या वह दिन भूल गया, जब तूम स्वयं मेरा हाथ पकड़ कर, मुझे भगवानके चरणों तक ले गया था। उन दिन कहां गई थी तेरी पवित्रता और तेरा पवित्र स्थान? क्या उस दिनके भगवान दूसरे थे? क्या उस दिनका स्थान भिन्न था? और आज पवित्रताकी इतनी डींग मार रहा है। पापी निर्लज्ज! शर्म नहीं आती तो तुझे जो हजारों अबलाओंको भ्रष्ट कर अपने ब्रह्मचारी और पवित्र कहता है! चल! दूर हट! वर्ना इसी समय यह बिछुआ तेरे कंठका रक्त प्राशन करेगा।

यह कह कर वह जुलूसकी तरफ मुड़ी और ललकारकर कहा--"भाइयो, आइये मेरे साथ! अब हरिजनोंको मंदिर प्रवेश करनेसे कोई नहीं रोक सकता। क्योंकि मैं! चंपा! हरिजनकी बेटी! पुरुषोत्तमकी लड़की! पहिले ही भगवानके चरण छू आई हूं। मैंने भगवानको देखा। भगवान बड़े प्रसन्न थे। हंस रहे थे। उनके मुसकानमें बड़ा प्रेम था। उनकी पवित्रताका तेज सारे मंदिर पर छिटक रहा था। उन्होंने मुझे देखा। उनकी दृष्टिमें क्षमाका अनोखा प्रकाश था। मैं पावन हो गयी थी। आईये भगवानको कौन अपवित्र बना सकता है। अवित्र तो यह पापी महंत है, जिसने इस स्थानको अपवित्र बना रखा है। भगवान सदैव पवित्र हैं और अपवित्रोंको पावन करनेवाले हैं। आज तक भगवानसे हम लोग दूर रहे इसका कारण शकटानंद सरीखे धूर्त! पापी! स्वार्थी! लोग हैं, जिन्होंने हमें भुलावेमें रखा और अपना उल्लू सीधा किया। अब ऐसे लोगोंसे डरनेका कोई प्रयोजन नहीं। भगवानके सामने हम सब एक बराबर हैं। हमारा भगवान एक है और हम सब उसके जीव हैं। आइये --।

चंपाकी ललकार सुन कर सब लोगों में एक अजब जोश आया। वे तरह तरह की जै जै कार करने लगे, और कुछ तो आगे मंदिरमें प्रवेश करने ही वाले थे कि चंपाने फिर सबको ठहराते हुए कहा--"भाइयो! जरा ठहरिये! मेरी एक प्रार्थना है कि मेरे पिता और आपके कलके अगुआ अस्पतालमें मरणासन्न है। उनकी अंतिम इच्छा है कि मरनेके पहिले वे भगवानके दर्शन करलें।"

सारी भीड़ने जोरोंसे एक स्वरके साथ कहा--"अवश्य! भाई पुरुषोतमको अवश्य लाया जाय, तब तक हम लोग यहीं राम धुन कहते रहेंगे।"

कृप २२ वें पृष्ठपर देखिये

CC-0. In Public-Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५वें पृष्ठका शेषांश)

छुटनेका विचार ही उनके सामने प्रथम आता है। मांसाशनका त्याग करना चाहिये, इस बारेमें विवेकी पुरुषोंमें दो मत हो ही नहीं सकते। लेकिन उसका सार्वात्रिक अमल कैसे होगा, यह सोचनेकी बात है।

प्राचीन कालमें सारी प्रजा मांसाहार करती थी और ऋषिमुनि भी मांसाहार करते थे। विचार करने पर ऋषियोंको सूझा कि पशुहत्या करके हम जियें, यह मानवताके लिये शोभा देनेवाली बात नहीं है। फिर वे उससे छूटनेके लिये शोध करने लगे। तब खेतीकी शोध हुई। खेतीमें अनाज पैदा करके मनुष्य मांसाशन कम कर सकता है यह बात उनके ध्यानमें आयी। तबसे इस क्षेत्रमें अहिंसाका आरम्भ हुआ। साथ ही जब गायके दूधका उपयोग सूझा तो मांसाशनसे मुक्त होनेकी युक्ति हाथ आ गयी। वेदमें गायके विषयमें वचन आया है, "गोभि तरेम अमतिं दुरेवाम्"—हमें गौसेवा मिली, तो मांसासनरूपी दुर्बुद्धिमेंसे मुक्त होनेका रास्ता दिखायी दिया। क्योंकि काम लेते हैं, और दूध मिलता है, तो मांसाहारसे छूट जाते हैं। सामुदायिक मांसाहार निवृत्तिका सबसे पहला श्रेय शायद जैनोंको ही है। बादमें वैष्णव, ब्राह्मण आदिने भी उसको स्वीकार किया। आज करीब तीन करोड़ लोग ऐसे होंगे, जो मांसाशन बिलकुल नहीं करते, और दूसरे जो मांसाहार करते हैं, वे भी उसे अच्छा समझ कर नहीं करते हैं। यह जैनोंके विचारकी विजय है।

अगर हम चाहते हैं कि सारी प्रजा मांसाहारसे छूट जाय, तो केवल मांसत्याग का विचार उसके सामने रखनेसे वह बात होनेवाली नहीं है। उसके लिये देशमें दूध, फल और तरकारी काफी मात्रामें पैदा करनी होगी। जब गरीबोंको ये चीजें पूरी मात्रामें मिल सकेंगी, तभी मांसाहार छूटेगा। पवनारके आश्रमके सामने ही नदी है। वहां रोज मच्छी मार आते हैं। वे दिन भर मेहनत करके कुछ मछलियां जमा करते हैं, और उन्हें बेच कर जैसे तैसे अपना गुजारा कर लेते हैं। मेरी नजरके सामने ही यह चलता है, लेकिन मैं उनको रोकता नहीं। क्योंकि मैं जानता हूं कि मांसके बदले गरीबोंको हम कोई दूसरी चीज देंगे, तभी उनको मांसाहारसे छुड़ा सकते हैं। आज तो अनाजका भी अकाल है। मछलियों वगैराका उपयोग करके लोग अकालसे किसी तरह अपना बचाव कर लेते हैं। इससे हम छूटना चाहते हैं, तो जैसी कि उपनिषदोंने आज्ञा दी है, हमें अन्न अधिक मात्रामें पैदा करनेका व्रत लेना होगा—"अन्नं बहु कुर्यात् व्रतम्"। बंगालमें गरीबोंको चावलके सिवा और कोई चीज नहीं मिलती। उसके साथ मच्छी खाकर वे कुछ पोषण पा लेते हैं। उनको अगर हम मच्छी छोड़ने के लिये कहेंगे, तो उसके बदलेमें कौनसी चीज दे सकेंगे?

हममेंसे जो लोग आज मांसाहार नहीं करते, उन्हें अहंकार रखनेका कोई कारण नहीं। मांसाशन तो हमारे पूर्वजोंने छोड़ दिया था। उनको उसे छोड़नेमें त्याग करना पड़ता था, तपस्या करनी पड़ती थी। हमें तो वह चीज विरासतमें मिली है। हम मांस खा ही नहीं सकते, हमें उससे घृणा होती है। इसलिये हम मांसाहार नहीं करते, इसका श्रेय हमारे पूर्वजोंको है। हम मांस खा ही नहीं सकते, हमें उससे घृणा होती है। इसलिये हम मांसाहार नहीं करते इसका श्रेय हमारे पूर्वजोंको है। हम मांस नहीं खाते, लेकिन उसके बदले में ऐसी चीजें खाते हैं, जो गरीबोंको नहीं मिल सकतीं। और बीमार पड़ने पर डा० जब इंजेक्शन देता है, तब वह उसमें क्या चीज दे रहा है, इसके बारेमें हम सोचते तक नहीं हैं। मांस मुंहसे खायेंगे, तो उसका कुछ हिस्सा हजम होगा, और कुछ तो बाहर जायगा। लेकिन इंजेक्शनके जरिये मांस जन्य वस्तु खाते हैं, तो वह पूरीकी पूरी खूनमें चली जाती है। मांस खानेका वह असरीला तरीका है। हम उसको कबूल करते हैं और सिर्फ मुंहसे नहीं खाते, तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। इसलिये मैं तो कहूंगा कि सबसे मांस छुड़ानेकी बड़ी बात करनेके लिये पहले हम मानव मानवमें जो झगड़े हैं, स्वार्थ-बुद्धि है, झूठ है, उससे मुक्त होनेकी कोशिश करें। साथ साथ दूध, फल, तरकारी वगैरा पूरी मात्रामें पैदा करें। इसके बाद समाजको मांसाशनसे मुक्त करनेकी कोशिश की जा सकती है।

एक बात और। ऊंच नीचके भावको हम अपने दिलसे निकाल दें। जो मांस खाता है, वह नीच है और जो नहीं खाता, वह ऊंच है। ऐसी भावना रखनेसे हम अवनतिकी ओर जा रहे हैं। मैं तो उस आदमीको पसन्द करूंगा, जो आदतसे या लाचारीसे गोश्त खाता है, लेकिन नम्र रहता है, दयाभाव रखनेकी कोशिश करता है, और मांसाशनसे मुक्त नहीं है, इसलिये अपनेको दोषी मानता है। ऐसा आदमी उसके बनिस्बत अच्छा है, जो मांस तो नहीं खाता, लेकिन असत्य बोलता है, ऐश आरामसे रहता है, खुदको दूसरोंसे ऊंचा समझता है और दूसरोंके हाथ अन्नपानी लेना हीन समझता है। इसमें तो अहंकार है। जहां अहंकार है, वहां आध्यात्मिक विकासकी बात ही कहां रही?

अभी मेरे पास और भी एक चिट्ठी आयी है, जिसमें पूछा गया है कि कंद, मूल, बीज आदि खाना चाहिये, या नहीं? फलका बीज खानेसे फल निर्वंश होता है, इसलिये फलका रस खाना चाहिये, और बीजको बचाना चाहिये, वगैरा। सूक्ष्म बातोंकी चर्चा शास्त्रोंमें होती ही है। हर बातका बारीकसे बारीक विश्लेषण करना, शास्त्रों का काम ही है। लेकिन हमको अपनी हैसियत जाननी चाहिये। इन बातोंको एक दृष्टिसे मैं गौण मानता हूं। जीवनकी मुख्य बातोंको छोड़ कर हम इन्हींमें फंसते हैं, तो जीवनकी असलियतको खो बैठते हैं। दूसरी दृष्टिसे ये बातें बहुत आगेकी हैं। कालेजमें पढ़नेके योग्य हैं। अभी तो हम प्राइमरी क्लासमें भी दाखिल नहीं हुए हैं। क्या खाना चाहिये, इससके बजाय कितना खाना चाहिये, यह चीज आध्यात्मिक दृष्टिसे अधिक महत्वकी है। एक आदमी मामूली दाल रोटी खाता है—जो कि शायद राजस अन्न समझा जायगा—लेकिन ठीक मात्रामें खाता है, जबान पर काबू रखता है, और स्वादकी वृत्ति नहीं रखता, तो आध्यात्मिक दृष्टिसे उसकी योग्यता उस आदमीके बनिस्बत अधिक है, जो कि सात्विक आहार करता है, लेकिन परिमाणमें अधिक खा लेता है, और स्वादकी वृत्ति रखता है।

मैं मानता हूं कि जैनोंमें क्या खाना चाहिये, क्या न खाना इसका विचार अधिक चलता है। लेकिन मेरे विचारमें अस्वाद-वृत्ति और परिमित अहारका ही अधिक महत्व है


फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा की दुनियां का असल रहस्य जाननेके लिये 'फिल्मी दुनियां' पुस्तक आज ही मुफ्त मंगाइये।

पता—मधुर मन्दिर हाथरस यू० पी०


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हिन्दू धर्मकी रक्षा

माननीय बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन उन मनीषियोंमें हैं जिनके हृदयमें हिन्दुत्वकी आग बराबर धधकती रहती है। इस आगमें वह साम्प्रदायिक विद्वेष नहीं है जो पिछले रक्तपातके लिये उत्तरदायी है, वरन् इसमें वह उत्ताप है जो अपनी रक्षा-भावनामें निहित होता है। हमें निजको बचाना हो तो हम किसीको मार कर अपना जीवन निष्कंटक कर सकते हैं अथवा अपने को शक्ति शाली बना कर, पिछले प्रकारकी भावना ही टंडनजीके हृदयको जलाती रहती हैं क्योंकि आज हिन्दू धर्म के जीवित रहने न रहनेका सवाल पेश है।

'हिन्दू धर्मके सामने आजसे हजार वर्ष पहले ही यह सवाल आया था। इस दीर्घकालके तीन भाग कर सकते हैं-पहले में प्रगट प्रहार था, दूसरेमें विराम और अब ह्रासकी प्रक्रिया आरम्भ हो गयी है। यह 'सम्हालेकी' अवस्था है-अगर कहीं हम सम्हल गये तो बचे। टंडनजीनेंउसदिन हिंदू जातिकी रक्षाके लिये उसे संगठित होनेंका उपदेश दिया है। हम उसमें इतना और जोड़ेंगे कि संगठित होनेंके लिये उसे अपनी भावनाओंको व्यवस्थित भी करना चाहिये।

भारत विभाजन हिन्दू धर्मपर भारी आघात है। इस विभाजनका राजनीतिक महत्व यह है कि विभाजन असम्पूर्ण हुआ है। भाई भाई अलग होते हैं तो अलग होनेवाले भाईके बेटे पोते इजमालके घरमें डेराडाले नहीं रहते, वे भी चले जाते हैं। मगर पाकिस्तानियोंके पुत्र-कलत्र सभी पाकिस्तान नहीं गये। वे रह गये अपने साबिक घरमें। यह भारी गलती हुई कि जब बंटवारा होना था तो सम्पूर्ण रूपसे नहीं हुआ। भाईको अपनी निजकी जायदाद मिल गयी तो अब उसे दूसरे भाईकी जायदाद पर पांव जमाये रहनेके लिये क्यों छोड़ दिया गया? मुसलमानोंकी जब दूसरी संस्कृति थी और जब उस संस्कृतिकी रक्षाके लिये उन्हें पृथक राज्य-प्रदेशकी आवश्यकता थी तब सभी मुसलमानोंको पाकिस्तान भेज देने और सभी हिन्दू-सिखोंको वहांसे बुला लेनेकी पहले ही क्यों व्यवस्था नहीं की गयी? यह ऊंचे महलके लोग जानें

अब अवस्था इस पर आकर टिकी है कि पाकिस्तानसे गैर मुसलमान निकले या निकाले जा रहे हैं, मगर भारतखंडमें वे विद्यमान नहीं हैं, पाकिस्तानसे लौटे भी आ रहे हैं। खबर है कि संघके सभी अल्पसंख्यक भाग कर आ चुके। पश्चिमी पंजाब में सबका सफाया हो गया और सीमा प्रांतमें भी। एक पूर्वी बंगाल है पर वहांसे भी हिंदू रह न सकेंगे। उन्हें भी भारत लौट आना ही पड़ेगा। इस तरह तीनों प्रदेश विशुद्ध मुस्लिम प्रदेश हो जायेंगे। यह तो पाकिस्तानका बयान हुआ। इधर हिन्द में क्या होगा? मुसलमान भाई यहां डटे रहेंगे, साम्प्रदायिक शांति स्थापित हो जाने के बाद इनकी फिर कोई १४ शर्तें होंगी और उनके न माने जाने पर फिर दूसरे पाकिस्तानकी मांग की जायगी। हिन्दुस्तानके भीतर ही दूसरा पाकिस्तान फिलस्तीन और डेंजिग तैयार होगा।

इस डेंजिगसे राष्ट्रको खतरा हो सकता है, जैसे पोलैण्डको हुआ। पोलैण्ड एक धार्मिक राज्य वैसे ही था जैसे हिन्दुस्तानको बनाये जानेकी बात है। फिर भी पोलैण्ड स्थित जर्मनोंने पोलैण्डके पीठमें छुरा मारा। हिन्दुस्तानमें शासन-भक्त प्रजाकी तरह बस जानेकी अपनी नीयतका एलान करने वाला मुसलमान समाज भी, न सही धार्मिक किसी राजनीतिक अथवा आर्थिक कारण से ही राष्ट्रके प्रति विद्रोह करनेको तैयार हो जा सकता है। उसे सहानुभूति है पाकिस्तानसे हिंदसे नहीं। अवसर देख कर अपनेको जिन मुसलमानोंने मोड़ लिया है, वे अवसर आया देख अपनेको तानेंगे ही नहीं यह कैसे कसा जाय? मुसलमान पहले मुसलमान है, तब और कुछ। भाषाके लिये रीति रिवाजोंके लिये, व्यवसायके लिये नौकरीके लिये, सीटोंके लिये, शुद्धिके लिये, प्रचारके लिये, मस्जिद और बाजेके लिये, मुहर्रमके लिये, धार्मिक छुट्टियोंके लिये-अगणित कारणोंसे वह आपसे रूठ सकता है। आप यह गारण्टी नहीं कर सकते कि उसे सभी वक्त सभी विषयोंमें सन्तुष्ट करके रख सकेंगे।

मुस्लिम धर्मका अस्तित्व हिन्दू विद्वेषपर आश्रित है। हजार साल पहले मुसलमान लुटेरे देशमें धन लूटने आते थे। धनके साथ वे औरतें भी लूट कर ले जाते थे। देशके विगत दंगोंमें वही बात देखनेमें आयी। एक और बात देखनेको मिली। बलात् धर्म परिवर्तनके लिये घनघोर प्रयत्न भी इन दंगोंका एक प्रधान स्वरूप रहा है। हिन्दू-सिखोंने जानोंके बदले जानें लीं, मालके बदले माल और महिलाओंके बदले महिलायें भी भगाई गयीं। पर चौथी वे नहीं ले सकते थे। हिन्दू अपना धर्म दे सकता है, ले नहीं सकता। लेनेकी ताकत नहीं है उसमें। हिन्दू धर्मकी यह कमजोरी है जिसके कारण वह छीजती ही जायगी-कभी उभड़ेगी नहीं। अगर हिन्दू धर्मको बचाना हो तो यह लेनेकी विद्या भी सीखनी होगी।

हिन्दू धर्म वास्तवमें बड़ा कमजोर धर्म है क्योंकि इसकी आस्था किसी एक सिद्धांत पर नहीं है। उदाहरण लीजिये। राम पकड़ कर रहमान बनाया गया; उसका बाहरी रूप परिवर्तित किया गया। उसे वर्जित भोजन खिलाया गया, पानी पिलाया गया मगर उसने हिन्दू धर्मकी आस्था हृदयसे जाने न दी। पर वह मुसलमान हो गया यहां पर धर्म परिवर्तनमें बाहरी उपकरण ही आधार माने गयेआचरण और आहार। उधर रहमान है, हिन्दू बनानेके लिये उसके आचार व्यवहार बदल दिये गये। क्या वह हिंदू हुआ, ? शायद नहीं क्योंकि क्योंकि उसकी आस्था तो नहीं बदली: अब यहां आस्था प्रधान चीज हुई। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह कहीं आचार व्यवहार प्रधान कहीं आस्था प्रधान। हिन्दू धर्मके ऐसे ही उलझन सिद्धान्तोंमें उसकी हार छिपी है। अगर अन्तर प्रधान हो तो फिर आचार और भेष बदलनेसे धर्म परिवर्तित नहीं होना। इसलिये जो हिन्दू बलात् गुंहमें गोमांस ठूंस कर कलमा पढ़ा कर चुटिया काट कर मुसलमान बनाया गया, वह अगर अन्तरसे मुसलमान धर्म माननेवाला नहीं हुआ तो वह मुसलमान नहीं हुआ। अगर हम उसे भ्रष्ट हुआ मान लेंगे और हमारी मान्यता देख कर वह स्वयं भी अपनेको धर्मच्युत मानने लगेगा। अगर कहें कि आचरण और आस्था दोनोंका विचार करेंगे तो भी किसीको प्रधान किसीको गौण मानना पड़ेगा हमारे गांवका एक व्यक्ति है कुछ दिन तक एक मुसलमान स्त्री के प्रेममें पड़ा हुआ था। अन्तमें वह मुसलमान स्त्री मर भी गयी पर वह व्यक्ति फिर हिंदू धर्म में नहीं लौटा। वह हमारे यहां होली दिवालीमें आता है। देवी देवता पर श्राद्ध करता है, रोजा नमाज कुछ नहीं करता पर लुंगी लगाता है चारखानेवाली और अब उसने दाढ़ी भी बढ़ा ली है। अपने ही घर पर आकर वह अलग मांग कर खाता पीता है, छूत रखता है। वह अपनेको मुसलमान समझ रहा है। और यह मानता है कि वह अबभफिर हिन्दू नहीं हो सकता। यह भावना ही हमारे ह्रासका कारण है।

इस तरह हम हिन्दूकी संख्या बढ़ा नहीं सकते। यदि प्रकृति देवी की कृपा हो और हर एक हिन्दू आजसे अधिक सन्तानोत्पत्तिमें सशक्त हो जाय, तभी शायद हिन्दू धर्मका विकास हो सकता है, अन्यथा नहीं। अपनी संसारी विशेषताओंको लिये हुए भी हिन्दू धर्म आज संख्या बलमें कम है। इससे अधिक हैं, मुसलमान, ईसाई। इस तरह हिन्दू धर्मके बढ़नेका सवाल समाप्त हो जाता है। जो हिंदू हैं, वे ही हिन्दू रहेंगे या उनके बेटे पोते हिन्दू होंगे। अजीब यह हिन्दू धर्म है जिसमें घटनेकी यथेष्ट गुंजाइश है मगर बढ़नेकी एकभी नहीं। तब हमारा विकास कैसे होगा? हिन्दू जातिके सामने विकास सम्बन्धी यह समस्या पेश है। जिन्हें हिन्दू जाति के विकासके लिये चिंता हो, उन्हें चाहिये कि इस समस्याका समाधान बतावें और उसका प्रचार जनसाधारणमें करें, अन्यथा विकास की बात ही नहीं आती, केवल रक्षाका प्रश्न रह जाता है। हिन्दूकी परिभाषाको विशाल करके, उनकी रूढ़ियोंको ढीला कर, उसमें संख्या और वृद्धिकी गुंजाइश बनाकर ही इस जातिका विकास किया जा सकता है, नहीं तो ह्रास निश्चित है। तब तो अब यही बात रह जाती है कि संख्याके बढ़ानेकी चिंता भगवानके हाथमें छोड़ कर जो हिन्दू हैं उनकी सुरक्षाकी चिंता की जाय। यह सोचा जाय कि कैसे हिन्दू, जितने अभी हैं, उतने ही और उनकी आनेवाली संतति सुरक्षित रह सके। हिन्दू जातिकी रक्षाके विषयमें भी हम निश्चिंत नहीं हैं। क्या वह जमाना आनेवाला है जब हिन्दू जाति एक जातिके रूपमें नष्ट हो जायगी?

हिन्दू राजनीतिक दृष्टिसे बहुत कमजोर हैं। अभी अभी हम स्वाधीन तो हुए हैं पर हममें अपने पैरों आप खड़े होनेकी ताकत का अभाव है। पांव कमजोर हैं ही, समाजकी बुराइयोंके दुर्गुण उस पर बोझा हैं और अन्य जातियोंकी दुश्मनी उसे धक्के देनेको तैयार। कैसे रक्षा होगी? हिन्दू हिन्दुस्तान छोड़ कर अन्य जगह नहीं हैं। संसारके सभी भागोंमें प्रायः सभी जातियां मौजूद हैं। ईसाई राष्ट्र बहुतसे हैं, मुसलमान राष्ट्र भी बहुत हैं, बौद्ध राष्ट्र भी कुछ हैं, पर नेपाल छोड़ कर भारत अकेले हिन्दू राष्ट्र है। किसी प्रश्न पर अन्य राष्ट्र मिल जाते हैं। अरब यहूदियोंके झगड़ेमें सभी मुसलमान राष्ट्र अरबी मुसलमानोंके साथ हैं। पाकिस्तानने इसराइल राज्यको नहीं माना, पाकिस्तानसे यहूदियोंके विरुद्ध मोर्चा लेनेको फौज जा रही है, रुपये भेजे जा रहे हैं। कोई स्वार्थ या सम्पर्क अरबी मुसलमानोंका पाकिस्तानसे नहीं है। फिर भी केवल धर्मके नाम पर सभी मुसलमान यहूदियोंको दुश्मन मान बैठे हैं। यही मुस्लिम मनोवृत्ति है। अपने सम्प्रदायका ख्याल, उचित अनुचित सभी रीतियोंमें अपने सम्प्रदायका समर्थन, यही मुसलमानी प्रवृत्ति है। उसके सामने राष्ट्रीयता का विचार गौण हो जाता है। भारतसे भी अगर पाकिस्तानका कभी छिड़ा तो उसके विरुद्ध भी सभी मुस्लिम देश हो जायेंगे। ऐसी दशामें हम कितने अरक्षित हैं यह सहजमें ही अनुमान किया जा सकता है। हमारी राजनीतिक आजादीको बहुत डर है।

जो कुछ हो यही हिन्दू जातिकी अवस्था है। इस अवस्थामें संसारमें अकेली, भीतरी भेद-भावोंसे विच्छिन्न, विकासकी प्रवृत्तिसे हीन, हिन्दू जातिकी रक्षा कैसे होगी, जिसने अपने पड़ोसमें भी एक दुश्मन खड़ा कर लिया है, और जिसके घरके भीतर भी दुश्मनोंके जाति भाई मौजूद हैं! यह एक विकट सवाल है।

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE RS. 30/- Postage As. 12. Free to 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

T.B टी.बी. "तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जबरीका नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगीकी जान बचाने वाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु०। नमूना १० दिन २०) रु०। जबरी नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगीकी जान बचावें। तारका पता-Jabri-Jagadharikaफी है।

पता—रायसाहब, के०एल० शर्मा, रईस (६०) 'जगाधरी' (E.P.)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समाज दर्पण

# रमण-शकुन्तला कांड-

प्रायः एक महीना पहलेकी बात है। एक दिन केन्द्रीय सरकारके खास सेक्रेटेरियटमें ही रिवाल्वरकी आवाज ठांयसे गूंजी और खाद्य विभागके एक कर्मचारी सी० बी० रमण टेबिलके नीचे छिपते नजर आये। साथ ही नजर आयी रिवाल्वर लिये खड़ी एक नवयुवती। वह पकड़ी गयी और ज्ञात हुआ कि उसका नाम शकुन्तला है। उसने कहा कि उसने किसीको मारनेके इरादेसे गोली नहीं चलायी थी। उसका इरादा गोलीकी आवाजसे सबका ध्यान आकर्षित करनेका था कि उसके साथ दगाबाजी की गयी है। उसने कहा कि उसने पहले भी अपनी फरियाद लोगोंको सुनायी थी पर किसीने सुनी नहीं, लाचार, सुनानेका यह तरीका उसे अपनाना पड़ा। उस पर हत्या करनेकी चेष्टाका अभियोग लगाया गया। उसने इस अभियोगकी सफाईमें कहा कि रमणने उसके साथ दगाबाजी की है। उसने पत्नी बना लेनेके बादेपर उसके साथ पत्नीवत् व्यवहार किया था पर अब वह उससे भागता है। उसके इस आचरणकी शिकायत उसने सबसे की पर किसीसे कुछ सहायता न हो सकी।

गोली चलानेके लिये शकुन्तलाने जो कारण बताया, हो तो, वह कानून की पकड़से बचनेके लिये ही कहा गया होगा, पर मुकदमेके दौरानमें जो बात प्रकट हुई हैं उनसे ही हमारी आंखें खुल जानी चाहिये। शकुन्तलाकी फरियाद भगत-सिंहके बमकी आवाजकी तरह गूंजनी चाहिये। समाजमें रमण-शकुन्तला जैसे कांड रोज हुआ करते हैं पर उनकी ओर समाज कहां ध्यान देता है? अगर कहीं शकुन्तलाका अपराध-बोध भी साधारण होता तो हम भी गोलीकी आवाज नहीं सुन पाते। रण जैसा जवानीका दीवाना दीवानगी कर गुजरताऔर फिर हंसता रहता। मगर अब वह हंस नहीं सकता। कुमारी शकुन्तलाको यद्यपि अदालत उठने तककी कद औरएक सालका नेक-चलनीका मुचलका देनेका हुक्म हुआ है और रमणको कुछ नहीं हुआ, पर रमणका मुंह काला हो गया है। अगर उसमें हया होगी तो वह किसीकोसूरत न दिखायेगा। मगर रमणकी बात, रमण जाने हमें अपनी बात सुनानी है।

यह बात हैकि शकुन्तला एक पढ़ी-लिखी १६ सालकी नव-युवती है। वह कालेजमें पढ़ रही है। यह संभ्रांत परिवार की शिक्षिता महिला गुंडईका शिकार कैसे हो गयी, हमें यही सोचनाहै। इसमें उसका और उसके परिवारका दोष भी है। या केवल रमणका यह सच है कि पुरुषकी प्रवंचकको शिकार सरला रमणियां आसानीसे हो जाती हैं, पर यहांपर हम उस प्रवंचनाको कुछ कहना नहीं चाहते जिसने मानव स्वभावसिद्ध दुर्बलताके वशीभूत हो वह प्रवंचना की अथवा प्रवंचा उसकी इच्छा न रही हो, मगर परिस्थितियोंने लाचार कर दिया हो कि वह ऐसा आचरण करे जोप्रवंचना सा दिखे! शायद प्रणय को वधरूप देनेके पूर्व ही दोनोंके पैरफिसल चुकें थे। और पीछे पता लगा कि ध वह हो नहीं सकता। मगर उस समाजमें ऐसा होता है जहांस्त्री-पुरुषोंका अबाध मिलन वर्जित नहीं। कुमारी शकुन्तला है जो इसे सह न सकी। शकुन्तला तो बताती ही है कि रमणने उसके साथ पत्नीवत् व्यवहार किया। रमणने यद्यपि यह बात अस्वीकार की है पर उसनें भी जिरहमें स्वीकार किया है कि शकुन्तलासे उसकी जान-पहचान थी और एक रात उसके घर वह सोयी थी यद्यपि उसने कहा कि वह कमरेके बाहर सोया था। हमको इस परसे यही कहना है कि जिस परिवारमें नवयुवतियां गैलर मर्दोंसे दूध तरह मिल-जुल सकती हैंवहीं ऐसे काण्ड संभव हैं। शकुन्तलाके परिवारकी आन्तरिक अवस्था अथवा उसके परिवारके लोगोंका पूरा-पूरा साहिबाना ठाट ही इसके लिये जिम्मेवार है कि शकुन्तला रातभर बाहर रह गयी।

शकुन्तला काण्ड हमारे उस मनः स्थितिके कारण-संभव हुआ जिसमें हम आधा तीतर और आधा बटेर बनकर रहते हैं। नये जमानेकी हवा और पुराने संस्कार की वायु दो किनारोंसे आकर जिस आवर्त बवंडरकी सृष्टि करते हैं उसीमें नारी मर्यादा ऐसी चूर-चूर होती है हम नारी स्वाधीनता, स्त्री-पुरुष मैत्री, प्रेम-विवाह आदिके जितने नय-नये आदर्श सुनते हैं, हमको चिन्ता होती है। चिन्ता इसलिये नहीं होती कि ये चीजें अच्छी या बुरी हैं। चिन्ता इसलिये होती है कि ये चीजें नकल हैं और नकल असलकी तरह हानि रहित नहीं होती। असल फिट बैठता है, नकल फिर नहीं बैठ सकती।

हम विदेशी ढंग अपनाना चाहते हैं, तो आधा अपनाकर हम चैन न पा सकेंगे। नारी शरीरकी पवित्रताका हमारे यहां जितना ध्यान रखा जाता है पश्चिममें नहीं है। स्त्री-पुरुषोंका सम्मिलन पश्चिममें भी निमंत्रित ही है पर यदि दववशात कभी पदस्खलन हो गया तो यह कोई भारी बात नहीं मानी जाती। खासकर सतीत्व की कीमत पश्चिममें विवाहोपान्त मानी जाती — उसके पहले शायद यह भावना ही वहां स्थान नहीं पाती। कुमारी शकुन्तलाने जिस अवस्थामें गोली चला दी आगे उसीमें कोई पश्चिमीय कुमारी पड़ जाती तो शायद रमणको कोस करे ही वह चुप हो जाती और फिर दूसरा शिकार ढूंढ़ती। पर हम इस कल्पनासे ही सिहर उठेंगे! नारी पवित्रताका इतना जबर्दस्त विचार हमार हिन्दू समाज रखता है कि पंजाब और काश्मीरकी वे अपहृता अभागिनी बहनें भी अबतक अपने परिवारोंमें सबकी सब वापस न जा सकीं जिनके विषयमें महात्माजीने कहा था कि वे गंगाजलकी तरह पवित्र हैं। हमारी यह भावना कैसी उग्र है यह भारतीय नारीके उन उद्गारोंसे प्रकट होता है जब वे कहती हैं कि हमने सपनमें भी किसी पर-पुरुषकी छाया नहीं स्पर्श की। हमारी इस मर्यादा-पर नये जमानेकी चाहे जितनी भी बौछारें चलीं हों पर वह ढीला ही होकर रहा है, टूटा नहीं। टूटेगा भी नहीं।

हम पर्दा, स्त्री स्वच्छन्दता, स्त्री-पुरुष परिचय आदिविषयोंपर इतना ध्यान नहीं देते अगर यह नहीं देखते कि सब गड़-बड़ हो रहा है। नारी शरीरकी पवित्रताका जितना ध्यान हिन्दूभावनाको है और उसमें वह जितना असहिष्णु है, वह ठीक है कि नहीं, यह विवेचना निरर्थक है। जातियोंके अपने-अपने संस्कार होते हैं और संस्कार बनाता है — बनाया नहीं जाता। जब यह नियंत्रणसे ऐसे मुक्त हैं तब उसपर विचार वथा कीजियगा! आप पीछ चलकर, अपने दिमागकी कूवतसे उस संस्कारके विरुद्ध विद्रोहका झंडा ऊंचा करें तो कर सकते हैं, फिर भी आप उसे छोड़ नहीं सकते आपके हठपूर्ण कार्यों और कथनोंसे झांक-झांक जाया ही करेंगे और यों आपके विषयमें इशारा करकर जायगे कि 'अधकचरा है- न इधर न उधर"! इसलिये संस्कार--बद्ध विषयोंके विषयमें सोचना-विचारना व्यर्थ। यही सतीत्व और

=

नारी मर्यादाकी बातलीजिये अथवा पर्दा और प्रेम-प्रदर्शनकीचर्चा कीजिये। पाश्चात्य देशोंमें खुले आम चुम्बन आदि

(शेष १८ वें पृष्ठपर देखिये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# महात्मागांधीका दाम्पत्य-विवेचन

( ले० श्री मती दुर्गा वंजल, प्रयाग )

युगाधार तथा युग प्रवर्त्तक महात्मा गांधीने भारतकी राजनीतिमें तो क्रान्ति मचाई ही थी, उन्होंने अपने देशवासियों की व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं को नैतिक रूपसे हल करनें की ओर भी यथेष्ट ध्यान दिया था। हमारा असंयमपूर्ण जीवन, हमारी भोग विलासकी वृत्ति और हमारे विषयी समाज की सन्तति निरोध के कृत्रिम साधनों की ओर द्रुतगति इत्यादि महात्माजी से नहीं देखी गयी। न केवल उन्होंने समय समय पर "नवजीवन" और "यंग इन्डिया" में स्त्री पुरुष संबंधी लेख ही लिखे वरन् अपना अमूल्य समय लगाकर तत्सम विषयों पर अनूठी पुस्तकें भी लिखी हैं।

महात्मा गांधी को ५० से अधिक वर्षका ब्रह्मचर्यानुभव था। जो कुछ उन्होंने लिखा है अपने निजी अखण्डित अभ्यासके बल पर लिखा है। उनके विचार जिन्हें पढ़नेसे हृदय गद् गद् हो जाता है भ्रामकता से हटाने वाले और आत्मोन्नत्ति की ओर ले जाने वाले हैं।

विवाहको जीवन पर्यन्त साहचर्य धार्मिक संसकार तथा धर्म संबंध बतलाते हुए उन्होंने कहा है कि विवाहके नाम पर किये जाने वाले विलासमय असंयमपूर्ण कार्य कदापि क्षम्य नहीं। विवाहकी अखण्डताकी नियम भी सामाजिक एवं शिक्षा संबंध महत्व रखता है। एक पत्नीव्रत से अच्छा दूसरा जीवन नहीं और वही मनुष्यके सामाजिक जीवनका केन्द्र है।

आपने कहा है कि यदि हम विवाह बन्धनकी पवित्रता स्थिर रखना चाहते हैं तो भोग नहीं, आत्म संयम ही जीवनका धर्म समझा जाना चाहिय। नर और नारी के मध्य स्वाभाविक संबंध वह है जो भाई और बहन में, माता और पुत्र में, पिता और पुत्री में लेता है। अपनी सारी शक्ति लगा कर मुझे कहना पड़ेगा कि पति और पत्नी के मध्य भी कामका आकर्षण अस्वाभाविक और अप्राकृतिक है। विवाहका उद्देश्य दम्पति के हृदयों से विकारों को दूर करके उन्हें ईश्वर के निकट ले जाना हैं।

सन्तति निरोधके बनावटी उपायोंकी, गांधीजीके अनुसार कम से कम भारतवर्ष के लिये कोई आवश्यकता नहीं। सबसे ऊंचे सिद्धान्त की दृष्टिसे कृत्रिम गर्भ निरोध को क्यों स्थान ही नहीं कारण कि विषय भोग केवल सन्तानोत्पत्ति की इच्छा से ही करना चाहिये जैसे कि भोजन केवल शरीर रक्षाके लिये ही करना चाहिये। द्वितीयतः यह इसलिये निषेध है कि इन उपायोंके कारण मनुष्य आचारभ्रष्ट और व्यभिचारी हो गये हैं और कृत्रिम गर्भ निरोध केवल अपनी स्वास्थ्य रक्षा अथवा गृहस्थियों की आर्थिक दशाको ठीक रखनेकी इच्छा से ही नहीं किया गया वरन् अपनी कुचेष्टाओं की पूर्तिके लिये किया गया है। तीसरी श्रेणीके मनुष्योंके कथन कि नैतिक आचार विचार सब व्यर्थ हैं और खूब विषय भोग किया जा सकता है के विरोध में इतना कहना ही पर्याप्त है कि केवल सच्चरित्र जातियों का ही भविष्य उज्ज्वल होता है।

कृत्रिम उपायों से न लुक छिप कर गर्भपात का होना रुक सकता है और न भ्रूण हत्या बचती है। सन्तति निग्रहकी एक मात्र अचूक ओषधि आत्म संयम ही है।

विवाहित पुरुषोंमें भ्रष्टाचार पर लिखते हुए महात्माजीने लिखा है कि विवाहित स्त्री पुरुषोंका ब्रह्मचर्य द्वारा गर्भ निरोध करना एक बात है और उसके लाभ ही लाभ हैं, विषय भोगके साथ साथ तथा उसके परिणामसे बचाने वाले साधनों की सहायता से सन्तान निग्रह करना पूर्णतया दूसरी बात है और उससे हानि ही हानि है। जन्म संख्याका इस प्रकार निश्चय बास होता है और एक दिन राष्ट्र की सैनिक शक्ति घटने, जातीय संख्या कम होने देशकी भाषा और सभ्यताके अन्त होनसे घातक परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है।

भ्रष्टाचारके अनेक रुपोंसे व्यक्ति, परिवार तथा समाज की अपार हानि होती है। मनुष्योंके गुप्तसे गुप्त कार्योका भी प्रभाव दूर तक पड़ता है। पाप का विष बढ़ कर एक दिन सम्पूर्ण समाजमें व्याप्त हो जाता है और कोई नियम व विधान उसे नहीं रोक सकते। अतएव आत्म संयम ही एक उपाय है और इस पक्षमें लोकमत तैयार करना अत्यन्त आवश्यक है कि मनुष्य, विवाहित, अविवाहित तथा विधर होकर ब्रह्मचर्य पूर्वक रहे। ब्रह्मचर्य से न स्वास्थ्यको हानि पहुंचती है और न व्यक्तिगत स्वतंत्रतामें बाधा पड़ती है। काम वासना का विवेक से अवश्य दमन किया जा सकता है। विषय की इच्छा और सोने खोनेकी इच्छाओंमें बहुत अन्तर है। न खाने और न सोनेसे हम निर्बल हो जायेंगे पर विषय की इच्छाको रोकने से उल्टा ही परिणाम होगा।—डाक्टर फ्रैन्कका मत है—"काम इच्छाके ऊपर मन और इच्छाका पूर्ण अधिकार है क्योंकि यह कोई अनिवार्य शरीरिक आवश्यकता अथवा हाजत नहीं है। यह तो केवल एक इच्छा मात्र है जिसका पालन हम जानबूझ कर अपनी प्रसन्नता से ही करते हैं। स्वभावके वश होकर कभी नहीं करते।" आजीवन ब्रह्मचर्य योगियों की ही वस्तु नहीं, वह उसके लाभोंके कारण जन साधारण की वस्तु है। पाल ब्यूरो का सार पूर्ण कथन—"भविष्य संयम शील व्यक्तियों के हाथ है"—आजीवन ब्रह्मचर्य से ही सार्थक हो सकता है।

महात्माजीके ब्रह्मचर्य पालनके सीधे सीधे नियम निम्नलिखित हैं।

(१) बालकोंकी पवित्रतामें सन्देह न होना चाहिये और उनका पालन इस विश्वास पर होना चाहिये कि वे पवित्र रह सकते हैं। माता पिता तथा गुरुओंका यह परम कर्तव्य है।

(२) गर्म और उत्तेजक आहारों, अचारों तथा बहुत से मसालोंसे सबको बचना चाहिये। हमारे भोजनका हमारे अवयवोंके विकासके साथ घनिष्ट संबंध है।

(३) पति पत्नीको अलग कमरामें रहना और एकान्तसे बचना चाहिये। विवाहका उद्देश्य जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है, काम वासनाकी तृप्ति नहीं वरन् उससे कहीं अधिक उच्च है।

(४) शरीर और मन सर्वथा और सर्वत्र अच्छे कामोंमें लगाये रहना चाहिये। ठाली मस्तिष्कको ही व्यर्थके भोग सूझते हैं।

(५) शीघ्र सोना और शीघ्र उठना चाहिये। इस उपायसे स्वास्थ्य, धन और बुद्धि तीनोंको लाभ होता है।

(६) आजकलके बढ़ते हुए गंदे साहित्य से दूर रहना चाहिये। बुरे विचारोंकी ओषधि भले विचार हैं।

(७) सिनेमा नाच रंग इत्यादि तमाशोंसे सदैव भागना चाहिये। यह सभ्यता के शाप हैं और विकारोंको उत्तेजना देने वाले हैं।

(८) स्वप्न दोष यद्यपि किसी भी अवस्थामें ठीक नहीं परन्तु उससे डरनेकी आवश्यकता नहीं है। स्वस्थ्य व्यक्तियोंके लिये हर बार डन्डे जलसे स्नान कर लेना ही स्वप्न दोशकी सर्वोत्तम ओषधि है।

(९) पति पत्नीके मध्य भी ब्रह्मचर्य की बड़ी भारी आवश्यकता है। न यह असं-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदन के राजपरिवारका एक नवीन तम चित्र। यह राजाके विवाहके रजत जयंती अवसरपर लिया गया था।

भव है और न किसी प्रकार कठिन। ब्रह्मचर्य तो जीवनका स्वाभाविक और साधारण अभ्यास है।

(१०) पवित्रताके लिये सच्चे मनसे नित्य प्रति प्रार्थना करनी चाहिये। प्रातःकालकी दैनिक प्रार्थना बड़ी प्रमुख और महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

काममुग्ध स्त्री पुरुषों और बालक बालिकाओंको गांधीजीने बिल्कुल पागल बनते हुए देखा था और स्वयं उनका अनुभव भी उससे भिन्न नहीं था। उन्होंने कहा है कि एक रत्ती भर रति सुखके लिये मन भर शक्ति क्षण भर में खो बैठना अनुचित है। ब्रह्मचर्य ही आरोग्य की सर्व श्रेष्ठ कुन्जी है। महात्माजीके ब्रह्मचर्य पालनका यह अर्थ नहीं कि वे किसी स्त्रीको स्पर्श न कर सकते थे। उनके अनुसार यदि स्त्रीका स्पर्श करने से भी मन में किसी प्रकारका विकार उत्पन्न न हो वही सच्चा ब्रह्मचर्य है। यदि महात्माजी अपना कर्तव्य समझ कर जनता की सेवा करनेकी भावनासे अपने अनुभव की कुछ अमूल्य बूदें पाठकोंको अर्पण करते थे और कुछ दार्शनिक और वैज्ञानिक सत्यों को रख कर वे इस युगके लोगोंमें स्त्री पुरुष के संबंध को शुद्ध करनेमें सहायता देना चाहते थे तो हमें उचित है कि हम उनके उपदेशको अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए ग्रहण करें।

---

## पाकिस्तान सरकार भारत बिभाजन का इतिहास पैयार करेगी

कराची, ३ जून। मालूम हुआ है कि पाकिस्तान सरकार ने भारतके विभाजन के इतिहास को तैयार करने का निश्चय किया है, जिसमें कांग्रेस और मुस्लिम लीग स्वीकृत ३ जून की योजना का भी विवरण हैं।

तदनुसार सभी सरकारी बिभागों को इसका आकड़ा एकत्रित करके भेजने क आदेश दिया गया है। ए० प्रे०


१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

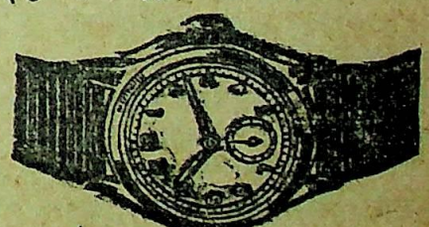

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २९)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ९९)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १९ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो शेप
क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पेस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।
एच० बेमीह० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

( १५ वें पृष्ठका शेषांक )

होता है । हर्ज है कोईइसप्रकाश्यपरिदर्शनमें? पाश्चात्य सभ्यताकी नकलपर हममेंसे कुछ नीम साहब लोग भी यह अभिनय करते हैंपर वह अभिनय सम्पूर्ण नहीं होता । फलतः उसमें पूरा रस नहीं मिलता । दोनों मेंसे किसी ओर झिझक होती है, वे उतने निर्द्वन्द्व नहीं हो पाते । यही हाल सतीत्वकी भावना का है । पाश्चात्य देशोंमें स्त्री-पुरुष मिलनकी यौन सुखकी मान्य व्यवस्था पहले मानते हैं, और कुछ बादको । हम "संतानार्थे क्रियते भार्या" के माननेवाले हैं, इसीलिये वंशरक्त की पवित्रता रक्षाके सिलसिलेमें हम स्त्री-मर्यादाके संबंधमे इतने कर हो गये हैं । यह चीज बदल नहीं सकती । शकुन्तला भ्रष्टकी गयी या नहीं पता नहीं पर उसने अपनेको पतित माना और इसके लिये जिम्मेवार पुरुषको वह मारने गयी । अपहृता हिन्दू बहनें पाकिस्तानसे वापस आना नहीं चाहती अपनी इसी मर्यादा--बोधके कारण और जो आयी भी हैं वे समाजमें खुदबखुद सिहरी-सिहरी रहती हैं । हम मर्द हैं,-आदर्श स्थापनाके उद्देश्यसे अथवा अपनी जवांमर्दी दिखानेकी गरजसे इन बहनोंसे ब्याह करनेको तैयार हो जाते हैं, पर यह अति पराक्रम-प्रदर्शनअका व्यापार ही है । यह हमारे पसंद नातपसंद की स्वाभाविक प्रतिक्रिया नहीं । हां, तो नये जमानमें अपनेको बिलकुल ढाल देनेकी कोशिश अगर करें तो चाहिये कि अपने संस्कार भी बदल डालें । अगर हम ऐसा कर सक तो फिर शकुन्तला-रमण काण्ड जसी कहानियां सुननेको नहीं मिलेंगी । सब कुछ स्वाभाविक अथच सहज हो जायगा । हिन्दू भिन्न जातियोंमें सतीत्वका आदर्श एक पुरुष -रता होता नहीं, वहां उसका अभिप्राय वतमान पतिरता होन है ?। पतिको अगर कानूनी ढंगसे बदल डाला जाय तो फिर महिलाका सजातित्व अक्षुण्ण रह गबया । पर हम नारी-यमर्यादा को एकके साथ बंधी हुई माननेके आदि हो गये हैं--उससे भिन्न चाहे हम कर ल, पर उस कार्यसे हमारा प्रम नहीं हो सकता । जब यह बात ह तब स्त्री स्वच्छन्दता यौन विवाह, अबाध सम्मिलन, लिंग विभद मैत्री आदि विषयोंके सम्बन्धमें भी हमें अपने उन विचारोंको बदलना पड़ेगा जो उसी प्रकार बरुहुजन सुलभ अथच सस्ते ही हो गये हैं अगर हम एसा न करेंगे तो हमारी संस्कृति भ्रष्ट होगी और फिर , "संस्कृति भ्रष्टः विनश्यति" होकर रहेगा । अब समय आ गया ह कि हम पश्चिमसे आयी हुई विचार-धाराओंपर इस दृष्टिसे विचार कर अपनी खलमलाई हुई विचार--सरणीमें स्थिरता लावें ।

# पौंड--पावना

( ले०—श्री हरि )

युद्ध छिड़नेके पहिले भी भारतके हिस्से में पौंड पावना था इनको हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं। (१) कुछ ऐसे भारतीय व्यापारी या और लोगथे जिनके पास लंदनमें स्टर्लिंग मुद्राएं थीं (२) कुछ भारतीय बैंकोंके पास भी स्टर्लिंग थे। (३) रिजर्व बैंकके पास कुछ स्टर्लिंग सुरक्षित थे जिनके ऊपर रिजर्व बैंक नोट चलाया करता था । युद्ध छिड़नेके बाद स्टर्लिंग बहुत बड़ी संख्यामें जमा होने लगे जिन्हें कि रिजर्व बैंकके नाम स्थानान्तर दिया गया। इस विशाल स्टर्लिंग कोषके बदले में रिजर्व बैंकने जोरोंसे नोटोंका प्रचलन प्रारंभ कर दिया। सकोषके बढ़नेके कारण निम्नलिखित हैं (१) भारतके हिस्सेके तमाम डालरोंको ले लिया गया और उसके बदले भारतको स्टर्लिंग दिये जाने लगे । (२) भारतवर्षसे बड़े परिमाणमें चांदी खरीदी गयी थी । (३) युद्ध जनित सामानों की भारतसे बड़ी संख्यामें निर्यात हुआ जिससे क व्यापारका पलड़ा हमारे हिस्सेमें भारी रहा । (४) भारत ब्रिटिश सरकार तथा उनके साथी राष्ट्रों द्वारा युद्ध क्षेत्र बनाया गया था । ऐसा करनेके लिये लाखों रुपयोंके खर्च होनेकी संभावना पड़ी । इन देशोंने हमारे रिजर्व बैंकको स्टर्लिंग दिया जिसके बदलेमें रिजर्व बैंकने इनके कामों को रुपये खर्च कर पूरा किया । इस तरहसे भारतके पास एक बहुत ही विशाल कोष एकत्रित हो गया । १९४४ तक भारतका जितना कर्ज था जिसकी संख्या लगभग चारसौ करोड़ रुपयोंकी थी मिटा दिया गया ।; इसके उपरांत भी युद्ध खत्म होते होते हम लोगोंके हिस्सेम करीब १४०० करोड़ रुपया पावना रह गया ।

अब हमारे सामने यह विकट प्रशन उपस्थित हुआ कि हम इतने बड़े कोषक उपयोग कैसे कर ? ब्रिटिश सरकार लगातार इस पावनेकी संख्याको कम कर देना चाहती थी । अपने पक्षम इनके बहाने में थे । (१) पौंड पावना चुकती करनेमें ब्रिटिश सरकार की असमर्थता (२) अंग्रेजी तथा भारत सरकारका युद्धमें समान त्याग (३) इनका कहना है कि युद्धके समय भारत सरकार ने महंगे दामोंमें मालोंको बेचा था पर अब उनकी चुकती उसी दामम नहीं की जासकती । इनका यह वक्तव्य सर्वथा निराधार है क्योंकि भारतने भी युद्धमें बहुत बड़ा त्याग किया था । नोटोंके बहुत अधिक प्रचलन के कारण भारतीय बाजारोंमें बहुत बड़ी अस्थिरता आ गयी तथा इसका दामों पर बड़ा बुरा दबाव पड़ा । हमारे घरेलू दाम कहीं ऊंचे थे पर हमने मालोंका निर्यात हमेशा नियंत्रित मूल्य पर ही किया था । भारतवर्षने अकालों तथा कमीके रहते हुए भी युद्ध जनित मालोंका बराबर निर्यात किया । एग्लों-अमेरिकन अभिसंधिके अनुसार इस कोषके एक हिस्सेको ऐसा बना दिया गया ताकि वह किसी भी देशके चल द्रव्योंमें बदला जा सके । १९४७ के मध्यमें एक अन्तरिम समझौता हुआ जो कि ३१ दिसम्बर तक चला । इसके बाद एक और नया समझौता छै महीनेके लिये किया गया जो कि ३०--६--४८ को समाप्त होने वाला है । हम इस कोषके संबंधमें इस तारीख तक अपनी आखिरी नीति निर्धारित कर लेनी होगी । अभीतक इसके बारेमें आखिरी फैसला नहीं हुआ है पर ऐसा निश्चित किया गया ह कि इसका एक हिस्सा कोई दो सौ करोड़ से ढ़ाई सौ करोड़ रुपये नोट प्रचलन करनेके लिये रखना चाहिये (ख) कोई ११० करोड़ रुपयोंका हम कड़ा माल ला सकते हैं जिससे हमारे देशके औद्योगीकरणमें सहायता पहुंचेगी ।(ग) थोड़ा रुपया बादमें खरीददारोंके समान खरीदनेके लिये रक्खा जा सकता है । (घ) इसका एक बड़ा हिस्सा हमारे देशकी अंग्रेज कंपनियोंको खरीदनेके काममें भी लाया जा सकता है । (ङ) कुछ रुपया भारतमें अवसर प्राप्त अंग्रेजी अफसरोंकी पेन्शन एक बारगी दे दिये जानेम भी काममें आ सकता है ।

बाकी बचा हिस्सा हम वहां रख सकते हैं जो कि वार्षिक हमें छोटे छोटे हिस्सोंमें दे दिया जाय तथा उस पर हमें उचित सूद भी मिलना चाहिये ।

आखिरी समझौतेके लिए वार्तालाप करनेके लिये भारतीय शिष्ट दल अर्थ मंत्री श्री षड़मुख म चेट्टी के नेतृत्वमें लंदन पहुंच चुका है । हम आशा है कि आखिरी समझौता हो ही जायेगा । चुकतीमें कमीके किसी भी प्रस्तावको स्वीकार न करना पड़ेगा । चेट्टी साहबने भी कह दिया हकि यह किसी भी प्रकारका युद्धका कर्जा तो था नहीं यह तो भारतकी संपत्ति थी जो कि रिजर्व बैंकने बैंक अफ इंगलण्डके नाम कर दी थी । हमें इस पर पूरा भरोसा था । अब हमें यह वापस मिलना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

# खिड़कीका दरवाजा

श्री राम शर्मा 'राम'

बाबू राधेमोहनने जीवन बिता दिया, वकालत करते हुए। जिस समय वह वकालत पास करके अपने कामपर चले, तो जाने कितनी अकल्पनीय आशंकाएं उनके मनमें उठ रही थीं। आशा ही नहीं थीकि वे सफल होंगे। परन्तु भाग्यने साथ दिया। प्रतिभा चमकी और जल्दी ही बाबू राधेमोहनकी वकालत जिलेभरमें प्रसिद्ध हो गयी। जाने कितने झूठे और सच्चे मुकदमे उन्होंने लड़े! अधिकांशतः सफल ही रहे। वह! गरीब और छोटमप्पे वकीलके रूपमें वह कचहरीके अन्दर प्रविष्ठ हुए और जब वृद्ध हो गये, काम करनेसे थकान अनुभव करने लगे, तो केवल उन्होंने लाखों रुपया ही नहो कमाया, अपितु अपने साथी वकीलोंमें भी अग्रणी बन गये, उनकी प्रतिष्ठाके केन्द्र। सम्भवतः यही कारण था कि बाबूराधेमोहन नगरके समाजमें भी एक इकाईके रूपमें समझे जाने लगे। क्या आर्य समाज, क्या सनातन धर्म और क्या हरिजनोंका आन्दोलन; सभी जगह तो बाबू राधेमोहन दीखते थे। वकीलोंकी सभा जिलेके अधिकारियोंकी बैठकमें बाबू राधे मोहन न पहुंचे,न बुलाये जायें, यह केवल आश्चर्यका ही विषयकहा जा सकता था। और इसपर यह हुआ कि देशकी बदलती हुई हवाके साथ, बाबू राधेमोहनने भी पैंतरा बदला। कोट, पैंट, नकटाईको उतार रखा। खद्दरका कुरता, अचकन और और खद्दरका पाजामा ही उनकी भेष-भूषा बन गया। सरकारी अधिकारियोंसे मिलना-जुलना उनका अब भी रहा, परन्तु अब तो देशके साथ अविश्वासका कोई प्रश्न ही नहीं था, इसलिये शहरकी कांग्रेस कमेटीकी मेम्बरीका भी कार्य कर दिया और एक दिन लोगोंने देखा कि बाबुराधेमोहनको नगर-कांग्रेस कमेटीका सभापति भी चुन लिया गया। उसपर लोगोंने बधाइयां दी और कहा– बाबूजी, आपने सुन्दर निर्णय किया। इससमय आपको यही शोभनीय था। बुजुर्ग और काबिल व्यक्तिको हीइस आसन पर बैठना था।'

सुनकर, बाबू राधेमोहन मुसकराये– हां, भाई! मित्रोंने विवश किया। इस बुढ़ापेमें यह बोझ भी कन्धोंपर लेना पड़ा।'

एक व्यक्तिने कहा–'हां', हां, क्यों नहीं! आपके लिये यही शोभनीय था।'

बाबूजी बोले–'भाई, जिन्दगी भर लड़ा,– संघर्ष ही करता रहा मैं, तो इस बुढ़ापेमें,–मौतके दरवाजेपर जाते-जाते इस ओर भी पैर बढ़ा जाऊं, यही मनमें आया।'

और बाबू राधेमोहनके कांग्रेसमें जानेका प्रभाव यह हुआ कि उनका परिवार तो खद्दरपोश हुआ ही, साथ ही, उनके वे मित्र जो सम्पन्न और समाजके विशिष्ट व्यक्ति कहे जाते थे, उन्होंने भी अपना रूप बदल दिया।

यह देख, कुछ व्यक्तियोंने आलोचना और ईर्ष्या करते हुए कहा–'यह ढोंग है। जिन्होंने पहिले अंग्रेज बहादुरके साथ मिलकर समाजका शोषण किया, वही अब कांग्रेसी सरकारके साथ अपना चोंले बदल कर चल पड़े हैं,– समाजको ठगने और मूर्ख बनानेके लिये।!'

किसीने कहा–'सरकारको मूर्ख बनाने के लिये ही,यह रास्ता अपनाया है, इन व्यक्तियोंने!

परन्तु सचाई जो हो, ऐसे व्यक्तियोंमें वे हीलोग अधिक थे कि जो मध्यम वर्ग होनेके नाते, जिस प्रकार पहिले कोई स्थान नहीं बना सके, उसी प्रकार अब भी कोई अवसर नहीं पा सकते थे। वे जिन व्यक्तियोंको अवसर कहते, यदि अवसर उनको मिल जाय, तो निश्चय ही उसे ले सकते थे।

लेकिन उस दिन जब जनताने यह समाचार सुना कि बाबू राधेमोहनके पुत्र सरकारके एक उच्च अफसर बन गये, तो बलात, इस भावनाने जोर पकड़ा कि उड़ढ़ेने जो जीवन भर किया और पाया; वह इस नयी सरकारके आगमनपर नहीं भुलाया लोगोंने कहा–स्वार्थी और खुदगर्ज ही रहा, राधेमोहन! अब लड़का भी आगे बढ़ा दिया। जिस लिये कांग्रेसमें आय था, वह पा लिया,– धूर्त!'

जो हो, बात चली और दब गयी। लड़का दूर देशका हाई कमिश्नर बन गया। नगरमें सरकारकी ओरसे जो व्यवस्था सम्बन्धी समिति बनायी गयी, बाबू राधो मोहनको कांग्रेसका सभापति होनेके नाते उसका भी सभापति बना दिया गया। यों, शहरका नियंत्रण उनके नाते हाथमें आ गया। नगरके अधिकारियोंके अधिकार यद्यपि स्वतंत्र थे, वे सीधे सरकारसे सम्बंधित थे, परन्तु चूंकि वह समिति भी सरकार से संबंधित थी., इसलिये सरकारी व्यक्तियोंको उस समितिके भी आधीन रहना पड़ा।

संध्याका समय था। बाबू राधेमोहनने अपने बंगलेके बाहर बागमें आराम कुर्सीपर पड़े हुए, जब धूमिल आकाशकी ओर देखा, तो पाया, कुछ परिन्दे थे जो उनके ऊपर ठीक आकाशके नीचे उड़ते हुए कहीं दूर चले जा रहे थे। निश्चय ही, वे अपने घर जा रहे थे और पंखोंके सहारे हवापर तैर रहे थे, वह अवस्था तो थी नहीं कि जिसमें वेग हो, उल्लास हो और जीवनका मर्म हो। वे थके थे। मानो उत्साहहीन।

उसी समय एकाएक बाबू राधेमोहन चौंक पड़े। उनके मित्र, शहरके धनिक ला० रामजीवन एकाएक वहां आये। आते ही बोले– बाबूजी–

बाबूजीने कहा–आओ, लालाजी!

लालाजी कुर्सीपर बैठगये। बोले– किसविचारमें हैं आप। किसी गहरी बातमें

बाबू राधेमोहन सीधे बैठ गये। बोले– न, कुछ नहीं। – तब कहा उन्होंने– आज व्यापार मंत्रीके पास गया था।नगरके उद्योगके विषयमें कुछ सलाह-मशविरा करना था।

लाला रामजीवननें ताना देकर कहा– हां, हां, जीं! आज आप व्यापार मंत्रीसे मिले हैं, कल प्रधान मंत्रीसे! परसोंगवर्नर जनरल–

अरे, भाई, बोझ तो तुम्हीं लोगोंने डाल दिया है!

जी, जहां गुड़ होगा, चींटे वहीं आयेंगे।'

सुनकर, बाबू राधेमोहन हंस दिये। बोले–'पीजिये?'– उन्होंने कहा– 'मैं पी चुका हूं।'

लाला रामजीवनने कहा–' मैं पी आया हूं।'

हां, तभी तो, आंखोंमें कीरा दीखता है।'

आज थक गया हूं। पुराना हिसाब भी देखना था। –' ला० रामजीवननें तब तक अपनी बात लेकर कहा–' हां, यह तो बताइये, उस बातका जिक्र अनायास।'

बाबू राधेमोहनने कहा–' आया था बात चली थी, परन्तु अधूरी रह गयी। उसी समय एक फोन आया और उन्होंने मुझसे छूटनेके लिये कुर्सीको छोड़ दिया।'

तो आशा क्या है? काम होगा?'

बात सुनकर, बाबू राधेमोहन सीधे बैठ गये। बोले–'क्यों न होगा।जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधेमोहन हैं, तो काम न होगा।'– उन्होंने कहाअपनी सफेद और नोकीली मूछोंपर बल देते हुए कहा–'ला० रामजीवन, जब अंग्रेजोंके बीचमे बैठकर यह राधेमोहन अपने उद्देश्योंमें सफल रहा, तो इन कांग्रेसियोंको न बना सकेगा कि देशका हित किस बातमें है।' वह फिर कुर्सीपर पीछे हो गये और बोले–' उद्योग ही देशके प्राण हैं।'

ला० रामजीवनने कहा–'कम्पनीके लिये स्टाफ रखना आरम्भ कर दिया है। दो हजार रुपये मासिक पर एक मैनेजर रख लिया है! डायरेक्टरोंमें एक आप–'

अच्छा, अच्छा, तुम्हारी इस बातको भी मानना पड़ेगा, भाई।' 'आपके दो लाख रुपयेका चेक बन गया है, कल आ जायगा।' 'उसे बैंकमें भेज देना।'

और यह तो बताइये, आपका यह शेयर कम तो नहीं रहा।'

लाला रामजीवनने कहा–'भाई, दस लाखका मुनाफा हुआ। साथियोंके साथ, दो लाख मुझे मिला।'– वह बोले–' एक साथीका मत था कि आपको कम दिया जाय, क्योंकि रुपया उन्हींका लगा। परन्तु मैंने उन्हें बता दिया कि भाई, बाबू राधेमोहनने रुपया तो नहीं लगाया, परन्तु सरकारके उच्च अधिकारियोंसे मिलकर जो काम दिलाया, उसकी कीमतको रुपयों से नहीं आंकाजा सकता।'

सुनकर, बाबू राधेमोहन हंसे और बोले–'अजी, जाने कितने फिर रहे थे। यह तो मेरा ही काम था कि इतना बड़ा काम पा लिया।'

ला० रामजीवनने कहा–'बेशक।'

लाला रामजीवन फिर बोले–'इसीलिये तो आपको इस कम्पनीमें खेंचा है। अब आपको सक्रिय बनकर ही अपना पार्ट अदा करना पड़ेगा। बड़ा कामहोतो बड़े रास्तोंको ही अपनाया जा सकेगा।'

राधेमोहनजीने फिर मूछोंपर बल दिया और कहा–'विश्वास रखे, सरकार की ओरसे आपको पूरा सहयोग मिलेगा। इस राधेमोहनने जिन्दगीमें जितने हथकंडे पा लिये हैं, इस बुढ़ापेमें, सभीसे काम ले सकेगा।'

लालारामजीवनने कहा–'मेरा विश्वास है, कम्पनीका एक वर्षका लाभ प्रत्येक डायरेक्टरको लाखोंमें मिलेगा।'

'लेकिन जमीन ?'

'हां, इसी समस्याको सुलझानेके लिये तो यहां आया हूं। आप इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं कि जगतपुर गांवको खरीद लिया जाय। सरकारी सहयोग पाकर गांवके व्यक्तियोंको मुआवजा दे दिया जाय।'

'पर वे जायेंगे कहां ?'

सुनकर ला० रामजीवन हंस पड़े–' वाह, बाबूजी! वकीलका दिमाग लेकर इस समस्याको भी नहीं सुलझाया गया।' वह बोले–'गांववालोंको रुपया मिलेगा, तो कहीं भी अपना घर बना लेंगे। जब साठ लाख शरणार्थी हममें समा गये, तो क्या एक छोटेसे गांवके व्यक्ति कहीं न टिक सकेंगे।'

परन्तु वे करेंगे, क्या ? उन्हें खेत कहां मिलेंगे ?'

सब मिल जायेंगे, बाबूजी! खेती न करेंगे, कोई और काम कर लेंगे। हमारे कारखानेमें नौकर हो जायेंगे। हमें आदमी भी चाहिये, वह इसी प्रकार मिल सकेंगे। हम उनकी बेकारीसे इसी प्रकार लाभ उठा सकेंगे।'

तभी, बरबस, ला० राधेमोहनने कहा–'लाला रामजीवन–'

तुरन्त ही रामजीवन बोले–'हम लोगोंने निश्चय किया है कि इस कामके लिये भी आपको पचास हजार देंगे।'

सुनकर बाबू राधेमोहनने मत नहीं दिया। मानो, उन्होंने उस पचास हजारकी बातको गलेके नीचे उतार लिया।

लाला रामजीवन खड़े हुए और की एक बड़ी गांड्डी देकर बोले–'अच्छा, यह रखिये, पचास हजार रुपये!' कहते हुए उन्होंनें नोट मेजपर रख दिये। वह नमस्कार करके चले गये।

उसी समय, ला० लाला रामजीवनके जाते ही, बाबू राधेमोहन चौंक गये। वह खड़े हुए और नोटोंकी गड्डीको हाथमें दबाकर कोठीके अन्दर गये। वहां जाकर वह जैसे ही अपने विचारोंमें उलझे हुए कमरेमें दाखिल हुए तो तभी, चौखटमें ठोकर लगी। वह कमरेके फर्शपर गिर गये। नोटोंकी गड्डी टूट गयी। उसका कच्चा बंधा हुआ डोरा खुल गया और और नोट कमरे भरमें छितरा गये। कठिनाईसे बाबू राधेमोहन उठकर तो बैठ गये, परन्तु उनके मनमें, जाने किस शक्ति द्वारा यह बात उठ आई कि यह पाप है..... या अन्याय! पेट उन किसानोंका भी है। उनके घर छीनना, उन्हें दर-दरका भिखारी बनाना, भला कहां शोभता है। कुर्सीपर बैठ गये बाबू राधा मोहन। उन्होंने छितरे हुए नोटोंको देखा, तो लगा मानो एक-एक नोटपर एक-एक ग्रामीण –बाल, युवक और वृद्ध,– वहांकी नारियां– कुमारियां और बहू– उन नोटोंपर अंकित थीं। वे चिल्ला रही थीं–'हम कहांजायें.. जमीन हमारी छिन गयी, हम क्या खायें...

यों, सचमुच ही, बाबू राधेमोहनके पैरमें ठोकर क्या लगी, उसकी चोट उनके हृदयपर भी आ पड़ी। हृदय तड़प गया। जिस आत्माकी वाणीको बाबू राधेमोहनने जीवन भर नहीं सुना, उसे तब सुन पाया। उस समय वह उन्नतिके शिखर पर थे। शहरके उच्च अधिकारी और सम्माननीय व्यक्ति! लक्ष्मीने भी उनके पैरोंको चूम लिया था। परन्तु, यह क्या कि बाबू राधेमोहन ने स्वतः ही, सन्ध्याके उस धूमिल आवरणमें,–कमरेके प्रकाशमें –एकाएक वेदनापूर्ण स्वरमें कहा–'अरे, राधेमोहन! तू धूर्त और लोभी ही रहा..... समाजको ठगता ही रहा तू। आज तक दूसरोंकी मूर्खता और हीनताका लाभ ही उठाया तूने! निरा भोगी....निरा कामी.....

सचमुच, बाबू राधेमोहनके सामने जैसे जीवन भरका लेखा आ गया था। वह चीखकर कह रहा था–' हां, सदा झूठ ही बोला तुमने! पाप ही किया। पैसोंके लिये सभी कुछ किया।'

बाबू राधेमोहनने अपना सिर हाथ पर रख लिया। वह दुखने लगा। वह उन क्षणोंमें ऐसा किनारा पाना चाहते थे कि जहां शान्ति हो, सुख हो। पर, वही उनसे दूर था। उन्हें लगा कि जब वह निर्धन थे, तो सुखी थे, वह सुख मानो अब कल्पनाका विषय हो गया।

उसी समय, पत्नी कमरेमें आयी। फर्शपर नोट बिखरे देख, वह चौंक गयी। पतिको उस अवस्थामें पाया, तो सहम गयी। पास आकर बोली–'यह क्या... ....क्या ?' –'उसने कहा–' पंखा बन्द है। मुंह पसीनोंसे भींग रहा है, खिड़कीका दरवाजा बन्द!' कहते हुए उसने सामने खिड़कीका दरवाजा खोल दिया। पूरबकी ठंडी हवा आयी। वह बाबू राधेमोहनको लगी। तभी उन्होंने संतोषकी सांस लेकर कहा–'मालतीकी मां, अच्छा ही हुआ, तुम आ गयी। खिड़की खोल दी। मुझे हवा मिल गयी।.....वह तब संतोषकी एक गहरी सांस लेकर बोले–'दीखता है, आज ही खुला मेरे हृदयकी खिड़कीका दरवाजा। यह आजतक बन्द ही रहा।

पत्नीने कहा–'क्या——?

'इन नोटोंको उठा लो। इन्हें रख दो। सुबह होते ही ला० रामजीवनके पास भेज दो।'

और सचमुच जब प्रातः हुआ, तो न केवल बाबू राधेमोहनने ला० रामजीवनकी रकम ही वापिस कर दी, अपितु, नगरकी समिति, कांग्रेसका सभापति पद भी त्याग दिया।

मित्रोंने सुना और उनके लिये यह केवल अचरजका ही विषय रह गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080261

# आजका करांची

विश्वमित्रके विशेष प्रतिनिधि द्वारा

पाकिस्तान की राजधानी करांची की दशा आज जानने योग्य है। करांचीसे हिंदुओंके चले जानेसे यहां सर्वत्र उदासी तथा सुस्ती छा गयी है। यहांका जीवन निर्जीव सा हो गया है। एक भी रेशनकी दुकान हिंदू द्वारा नहीं चलायी जा रही है, एक भी रेस्तारां, बाल काटने, कपड़ा धोने या पान बीड़ीकी दुकान, हिंदू द्वारा परिचालित नहीं की जा रही है। रास्तेमें आपको मुश्किलसे कोई हिंदू राहगीर या हाकर मिलेगा। काम करने वालोंमें आपको एक या दो डाक्टर कुछ वकील तथा एक कारीगर मिलेगा। नौकरियोंमें सरकारी तथा प्राइवेट जगहोंमें इधर उधर आपको कुछ हिंदू मिलेंगे। श्मशान घाट तक ले जाने के लिये एक मुर्देको आपको चार आदमी भी न मिलेंगे। पांच लाख की जनसंख्या में पहले जहां दो लाख ६० हजार थे अब मुश्किल से कुछ हजार रह गये हैं जो कि चोरी चोरी जिन्ना टोपी पेशावरी सलवारों, तथा अलीगढ़ी शेरवानियोंमें घूमा करते हैं। सिर्फ कुछ हरिजन जो कि सबसे पहले भाग गये थे थोड़ी थोड़ी संख्यामें लौट र हैं

### सुन्दर शहर एक कूड़ा खाना

करांची जिसको कि पहले पूर्वका एक सुंदर शहर कहलानेका गौरव था अब हाकरों तथा खोमचेवालों द्वारा फुटपाथों पर जबरदस्ती कब्जा जमा लेनेके कारण एक गंदे शहरमें परिवर्तित हो गया है। शहरका स्वास्थ्य बिलकुल खराब हो गया है तथा बर्गीचोंकी दशा भी बुरी हो गयी है। इस तरह से यह सुन्दर शहर अब कूड़े-खानेकी तरह लग रहा है।

### स्वामीनारायणशरणार्थी कैम्प

प्रसिद्ध स्वामीनरायण का मंदिर जिसमें कि पहिले हजारों हिंदू दर्शनके लिये आया करते थे अब ६ जनवरीसे शरणार्थी कैम्पको तरह काममें लाया जा रहा है। यही एक जगहकी जिसमें कि शहर बचे हुए हिंदू हजारोंकी संख्या में सुरक्षा-पूर्वक रह सकते थे। किंतु हालमें ही प्रांतीय सरकारने अपने आश्वासनके विपरीत मुसलमानोंको एक दर्जन प्लेट दे दिये हैं। इससे यहांके हिंदुओंमें आतंक फैल गया है।

### स्कूल

यहांके हिन्दुओंके हाथमें एक भी शिक्षा संस्था नहीं रह गयी है। प्रसिद्ध शारदा मंदिर जिसकी स्थापना गांधी जी ने की थी अब एक मुल्ला साहबके हाथमें है। महात्मा हंसराज द्वारा स्थापित एल० आर० डी० ए० भी० हाई स्कूल, थरिया हाई स्कूल सनातन धर्म हाई स्कूल, कन्या-महा विद्यालय तथा अन्य जितने भी स्कूल कालेज हिंदुओंके हाथमें थे अब मुस्लिम शरणार्थियों द्वारा कब्जा कर लिये गये हैं। मुस्लिम शरणार्थियोंने सिंध कांग्रेसका ऐतिहासिक स्वराज्य भवन भी नहीं छोड़ा है।

### नया मेयर

इस वर्षके मेयर के चुनावमें यह स्थान पारसी या ईसाई द्वारा भरा जाना चाहिये था। गैर-मुस्लिम सदस्योंके प्रस्थानका जानेके कारण इस वक्त मुस्लिम लीग पार्टी का यहां बहुमत है। इन्हें अपनी उदारता का परिचय देना चाहिये था पर ऐसा न कर इन्होंने एक मुस्लिम सदस्यको मेयर चुन लिया। म्युनिसपल मुस्लिम लीग पार्टीके सहकारी नेता श्री० जी० अललाना उस वक्त जब कि करांची केन्द्रके अधिकार में आ रहा है निर्विरोध मेयर चुन लिये गये हैं। मि० अल्लाना प्रथम गवर्नर जनरल मि० जिन्नाके खोजा सम्प्रदायके ही सदस्य हैं। पूर्ण बहुमतमें पहुंचकर मुस्लिम लीग पार्टीका प्रथम कार्य अल्पसंख्यकोंमें से बारी बारी मेयरके चुने जानेकी परम्परा को मिटाना हुआ। इस तरह से अल्प संख्यकों को मेयर की जगह प्राप्त करने से निस्तेज कर दिया गया है।

### गैर-मुस्लिम शरणार्थियोंके बारे अनुमति पत्र आवश्यक

अभी तक गैर-मुस्लिम शरणार्थियों के लिये सिंधसे जानेके लिये अनुमति पत्र की आवश्यकता पड़ती है। उन्हें जिलेके कलक्टरके पास अभीतक अनुमति पत्रके लिये आवेदन करना पड़ता है यद्यपि इसके विरुद्ध बहुत शिकायतें की जा रही है। इस तरह जो गैर-मुस्लिम सिंध छोड़ कर जाना चाहते हैं नहीं जा पाते हैं। इस पर भी बहुत से लोग लगातार सिंध छोड़ रहे हैं। हैदराबाद (सिंध) जिलेके कैम्पमें इस वक्त दस हजार शरणार्थी बाहर जानेके लिये अपेक्षा कर रहे हैं। इनकी दशा यहां बड़ी चिंताजनक है क्योंकि हैदराबादसे मारवाड़ जाने वाली समस्त ट्रेनें बन्द हो गयी हैं तथा करांचीसे बंबई जानेवाले स्टीमर भी मौसम की खराबी की जड़से बन्द हो गये हैं।

### खान कलातके साथ मि० जिन्नाका साक्षात

खान कलातके साथ मि० जिन्नाके वार्तालापको यहां काफी महत्व दिया जा रहा है। कलात पाकिस्तान की सबसे बड़ी देशी स्टेट है। यद्यपि अधिकृत क्षेत्रों में इसे केवल शिष्टाचार बताया जाता है पर राजनैतिक क्षेत्रोंमें इसको काफी महत्व दिया जा रहा है क्योंकि खानके भाई जो कि कलातके पाकिस्तानमें योग देनेके विरोधी थे कलात से भाग कर अफगानिस्तान जा पहुंचे जहां वे "आजाद कलात" का प्रचार कर रहे है। मकरान क्षेत्रके कलक्टर हो के कारण अधिकारियों पर इनका काफी प्रभाव था।

### चर्खेका प्रचार

पाकिस्तान धीरे धीरे गांधी विचारों वाला बनता जा रहा है। लियाकत अली खान के 'पाकिस्तानके बने कपड़े खरीदो' के प्रचारके फलस्वरूप मुस्लिम शरणार्थी विधवाओंमें चर्खेके लिये क्या द्वंद सा मचा हुआ है। पांच चर्खेकी पहुंचके साथ हाजी कैम्पमें जहां दस हजार शरणार्थी रह रहे हैं। एक हलचल सी मच गयी। अधिकारियों पन्द्रह और चर्खोंका इन्तजाम किया है जहां कि सैकड़ों चर्खे की आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बम्बईके मारवाड़ी समाजमें आदर्श विधवा विवाह

समाज, रूढ़ियों एवं बंधनोंके थपेड़े में पड़ कर न जाने कितने अपकार कर चुका ह । न जाने कितनी मां बहनोंकी आर्तवाणी और मौन पुकार समाजके ठेकेदारोंके आंख खोलनेमें आज सहायक हुई हैं । जिससे सचेत होकर आजके सच्चे समाज सेवक एवं समाज विज्ञान के विशेषज्ञोंने इस ओर अपना अपना कदम दृढ़ता से बढ़ाया ह । अभी हाल ही में बम्बई जसी महानगरीमें और मारवाड़ी समाजमें एक ऐसी ही घटना हुई ह जो इस जाति देश एवं कालके अनुसार अभूतपूर्व हं । वहांके प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित व्यापारी श्री विश्वेश्वर लालजी देवड़ाकी विधवा पुत्री श्रीमती परमेश्वरी देवीका शुभ विवाह कलकत्तेके श्री बुद्ध रामजी अग्रवालके सुपुत्र श्री फतेह चन्द जी अग्रवाल के साथ सम्पन्न हुआ हैं । इस खटनाका खास कर बम्बईके मारवाड़ी समाज पर बड़ा ही व्यापक प्रभाव पड़ा हैं । जिससे आज सभी वर्गोंकी आंखें इस ओर मुड़ गयी हैं । वर-

( ११ वें पृष्ठका शेषांश )

कुछ स्वयं सेवक तुरन्त गये और एक खाट पर पुरुषोत्तमको ले आये । पुरुषोत्तमको देखते ही सब लोगोंमें एक अलौकिक स्फूर्ति आयी । तरह तरहके नारोंसे आकाश गूंज उठा । चंद्रमाका उदय हुआ । उसका प्रकाश सारे वातावरण पर इस प्रकार छा गया मानोंकि जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम ही स्वयं अपने तेजसे प्रसन्नता पूर्वक सबको दर्शन देनेका आह्वान कर रहे हों । कुछ तारे हंस रहे थे, कुछ महंत शकटा नंदकी ओर दांत दिखा कर उसकी अवहेलना कर रहे थे ।

पुरुषोत्तमकी खाटको कुछ लोगोंने उठाया और भगवानके नारे लगाते हुए मंदिरमें प्रवेश किया । खाटको भगवानके बिलकुल निकट चरणोंके पास रख दिया । फिर सब हरिजनोंने प्रेम पूर्वक और शांतिपूर्वअ नेत्र भर कर भगवानके दर्शन किये । सबके नेत्रोंसे प्रेम और श्रद्धाकी अश्रुधारा बहने लगी । कुछ तो परमानंदसे प्रेरित हो वहीं मूछित हो गये ।

पुरुषोत्तमने मर्यादा पुरुषोत्तमके नेत्रोंमें नेत्र मिला कर एक बार देखा और उसी अप्रतिम मूर्तिको अश्रुभरे नेत्रोंसे देख सदैवके लिये बन्द कर लिये ।

वधूके इस अनुकरणीय सम्बन्धको समाजके लिये आदर्श एव उदाहरणप्रद बनानेकी प्रेरणासे स्थान स्थान पर स्वागतकी तयारी की जा रही ह । विधवा विवाह सहयक संघ कलकत्ताकी प्रेरणा एवं सफल उद्योग द्वारा ही यह पुनीत प्रथम सम्बन्ध बम्बई नगरमें मारवाड़ी समाजमें सानन्द सम्पन्न हुआ । इस समारोहमें भाग लनेके लिये संघकी ओरसे श्री पुरुषोत्तमजी केजड़ीवाल जगदीश प्रसादजी गुप्त तथा लक्ष्मण दासजी उबराई प्रतिनिधि रूपमें उपस्थित थे ।

श्री पुरुषोत्तमजी केजरीवालने विवाह मंडपमें वर-बधूको अपना शुभ आशीर्वाद देते हुए कहा कि संघ द्वारा इस प्रकारके सुन्दर एवं प्रत्येक दृष्टिसे अनुकूल विवाहोंकी व्यवस्था बराबरसे होती चली जा ररही ह । और संघके लिये यह कोई नवीन सम्बन्ध नहीं बल्कि इस प्रकारके कई विवाह कलकत्ते एवं अन्य स्थानोंमें सम्पन्न कराये जा चुके हैं । पर आज मुझे नगरमें इस विवाहको होते देख असीम प्रसन्नता हो रही ह कि अब धीरे धीरे यहांका समाज भी नवीन विचार धाराओंका पोषक हो रहा ह और खास कर इतनी बड़ी उपस्थिति देख कर मेरे हर्षका ठिकाना नहीं कि समाज के कमसे कम ५-६ सौपरिवारोंको प्रतिष्ठित बन्धुओंकी शुभ कामना एवं सद्भावना हम सभी बन्धुओंके साथ ह और यह साबित करता ह कि इसे एक प्रकारका सम्बन्ध समाज एवं देशके लिये पूर्ण लाभकारी एवं स्त्री जाति के लिये नवीन जीवन देन वाला कार्य ह । पर इस स्थल पर हम देश एवं समाजके समस्त बन्धुओंसे अपील करेंगे कि वे इस बातके लिये सर्वदा दृढ़ प्रतिज्ञ रहे कि विधुर विधवा से ही शादी कर सकें । अगर ऐसा ककरने एवं करानेमें लोग समर्थ हो सके तो शीघ्र ही देशसे विधवा विवाहका प्रश्न ही लुप्तनहो जायगा और आज जो हम समाज सुधारक बन्धुओंको तरह तरहकी यंत्रणायें एवं अपमान बर्दाश्त करने पड़ते हैं उससे सभीको त्राण मिलेगा और देशका यह कलंक सदाके लिये मिट जायगा ।

श्री जयदेवजी सिंहानिया बम्बईने कहा कि समाजके इस भीषण कोढ़ की दवा बहुत दिनोंसे ढूंढ़ी जा रही थी पर आज ही हमें यह कहनेका सुअवसर इस समारोहमें मिला कि रूढ़िग्रस्त एवं दकियानूसी मनोवृत्तिवाले व्यक्तियोंके मुंह पर इसी प्रकारका तमाचा जड़ने से ही हम बन्ध इसी नहींबंध द्वारा समाजका कल्याण कर सकते हं । आज यहांके मारवाड़ी समाज में यह एक नयी बात हो रही ह । और इस कार्यको देख कर हमें बेहद खुशी हुई और हम यह कह सकते हैं कि समयके साथ मारवाड़ी समाज भी बदल रहा ह ।

श्री बाबू लाल जी माखरियाने कहा कि स्वतन्त्र भारतमें किसी भी वर्ग की उपेक्षा नहीं की जा सकती । समाज बन्धन के कारटण अब तक विधवा विवाह नहीं हो पाता था लेकिन अब यंयह समय आ गया ह कि हम कुरीतियोंको त्याग कर समाजमें नयी रीतियोंका संचार करें । बादम अन्य कई व्यक्तियोंने भी अपने अपने सुन्दर विचार प्रकट किये इसके पश्चात् कई व्यक्तियोंके प्राप्त शुभ संदेश पढ़े गये जिनमें सर्वश्री हरदत्तरायजी सुरला, सभापति विधवा विवाह सहायक संघ कलकत्ता । प्रभुदयाल डवडीवाला, मंत्री वि० वि० सहायक संघ कलकत्ता । बाबू मूलचन्द्रजी अग्रवाल संचालक विश्वमित्र , पण्डित राम शंकरजी त्रिपाठी , डा० राममनोहर लोहिया, श्री ईश्वर दासजी जालान, स्पीकर बंगाल व्यवस्थापिका परिषद बसन्त लालजी मरारका, सीताराम सेकसरिया, तुलसीरामजी सरावगी, बजरंगलालजी लाठ , भागीरथजी कानोड़िया, गंगा प्रसाद जी भौतिका, माननीय ब्रिजलालजी बियाणी, श्रीमती राधादेवी गोयनका ।

इस अवसर पर बम्बईके मारवाड़ी समाजके अनेकों लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे । जिसमें सर्व श्री नारायण दासजी रूंगटा, शिवप्रसादजी रूंगटा राधाकृष्णजी माखरिया, बाबू लालजी, माखरिया, विश्वनाथजी सेकसरिया, राजा बहादुर नाराधणलालजी पित्ती, मातादीनजी खेतान, राधाकृष्णजी खेतान, पशुपतिनाथजी कानोडिया, राम निरंजनजी केडिया, मनोहरदासजी भरामल, गौरीशंकरजी केडिया, केशरदेवजी गनेड़ीवाला, आतिके नाम विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं । इन लोगोंने वरबधूको आशीर्वाद देकर इस पुनीत कार्यमें अपनी सहमति और सहयोग देनेकी उदारता दिखायी । इस घटनाका खास कर बम्बईके मारवाड़ी समाज पपर विशेष प्रभाव बड़ा ।जिससे सभी वर्गोंकी आंखें इस ओर मुड़ गयी हैं । वर बधूके इस अनुकरणीय सम्बन्धको समाजके लिये आदर्श एवं उदाहरणप्रद प्रेरणासे प्रेरित हो बम्बईका मारवाड़ी मित्र मंडल शीघ्र ही वर बधूका सार्वजनिक रूपसे स्वागत करनेकी व्यवस्थामें तल्लीन ह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# समाजवादी पार्टी किधर ?

सत्यदेव एम० ए०

समाजवादी पार्टीके भावी कार्यक्रमके विषयमें अभी कुछ कहना संभव नहीं है। इसने अब तक हमारे सामने कोई वैधानिक तथा आर्थिक योजना नहीं प्रस्तुत की है। यह तो स्पष्ट ही है कि समाजवादी पार्टीका लक्ष्य है समाजवादकी स्थापना। लेकिन मुझे शंका है कि समाजवादी मेरे कथनको पूर्ण रूपसे स्वीकार नहीं करेंगे। ये कहेंगे कि हमारा लक्ष्य है प्रजातांत्रिक समाजवाद—केवल समाजवाद नहीं। यह तो मानना ही पड़ेगा कि समाजवादी क्षेत्रोंमें 'प्रजातन्त्र' शब्दका उपयोग आज पहलेकी अपेक्षा अधिक किया जा रहा है। एशिया युवक अधिवेशनमें कम्युनिस्ट पार्टीने भी 'प्रजातन्त्र' शब्दका बड़े ही आकर्षक ढंगसे प्रयोग किया है। मेरे कहनेका तात्पर्य यह नहीं कि वामपंथी 'प्रजातन्त्र' शब्दका व्यवहार नहीं कर सकते हैं, अथवा ऐसा करनेका उन्हें अधिकार नहीं है। प्रश्न तो यह है कि क्या वामपंथियोंने प्रजातन्त्र और समाजवादका सामंजस्य कर लिया है? यही इस युगकी महानतम समस्या है। यदि जय प्रकाशजीने इस समस्याको हल कर लिया है तो संसार भरमें खुशीकी लहर फैल जानी चाहिये। मेरा विचार है कि समाजवादी पार्टीके नेता जयप्रकाश जी द्वारा समस्याका समाधान नहीं किया गया है। स्पष्ट शब्दोंमें, समाजवादियोंने प्रजातन्त्रका बिल्लामात्र चिपका लिया है। आज भी कोई दिन खाली नहीं जाता है कि समाजवादी नेता 'किसान-मजदूर राजका' नारा नहीं लगाते हैं। इस सम्बन्धमें किसी समाजवादीके भाषण का उद्धरण देना मैं अनावश्यक समझता हूं। अभी हालमें जयप्रकाशजीने पटना मैदानमें कहा था कि किसान-मजदूर राज्य स्थापित होने पर किसी प्रकारकी गड़बड़ी नहीं रह जायेगी। सामाजिक तथा आर्थिक संकट दूर करने और साम्प्रदायिकताका भी उन्मूलन करनेके लिये किसान-मजदूर राज रामबाणका काम करेगा।

वर्तमान संस्कृतिसंकटके हल करनेका दावा करनेवाले समाजवादी नेताओंके छिछलेपन पर यहां बिना प्रकाश डाले मैं मैं यह प्रश्न पूछना चाहता हूं, कि 'किसान मजदूर राज' वर्ग विशेषका राज नहीं होगा सोवियत रूसमें भी तो वर्ग-विशेष का ही राज है। यह समझनेमें किसीको कठिनाई नहीं होनी चाहिये कि एक वर्गके राज होनेका मतलब है वर्ग विशेषका अधिनायकत्व। वह अधिनायकत्व भले ही अल्पसंख्यकोंका नहीं हुआ, लेकिन है तो अधिनायकत्व ही। जर्मनीमें अल्प संख्यक पूंजीपतियोंका अधिनायकत्व था और सोवियत रूसमें बहुसंख्यक श्रमिकोंका है। प्रश्न है कि क्या वर्गवाद, वर्ग-संघर्ष और वर्ग अधिनायकत्व प्रजातन्त्र विरोधी नहीं है? अपने प्रश्नको स्पष्ट करनेके लिये मैं प्रजातन्त्रका अर्थ स्पष्ट कर देना चाहता हूं। कई कारणोंसे आज जनसाधारण ही नहीं, पढ़े लिखे लोगोंका भी मानसिक संतुलन गड़बड़ हो गया है। मौजूदा हालतसे नाजायज फायदा उठा कर समाजवादियों ने प्रजातन्त्रका उल्टा सीधा अर्थ समझाना शुरू कर दिया है। विरोधी दलोंके कायम रहने पर ही अथवा निर्वाचन पद्धति मात्र पर प्रजातन्त्रकी नींव नहीं खड़ी है। यह साथ साफ समझ लेना चाहिये कि कांग्रेससे अलग हट कर एक विरोधी दल बनाना अथवा चुनावमें उमेदवारोंको खड़ा करना और सीटें जीतनेमें तत्परता दिखाना अधिनायकवादीकी पार्टीके भी लक्षण हो सकते हैं। समाजवादी नेताओंके भाषण पर जिसने ठीकसे गौर किया होगा उसे पता होगा कि ये भी कृत्रिम अर्थमें प्रजातन्त्रका प्रयोग करते हैं। प्रजातन्त्रकी आधार-शिला है है व्यक्तिकी स्वतन्त्रता। यदि किसी देशके वयस्कोंको वोट देनेका अधिकार मिल जाय अथवा बहुसंख्यकोंका सरकार पर अधिकार हो जाय तो कोई जरूरी नहीं है कि उस देशमें प्रजातांत्रिक सरकारकी भी स्थापना हो जायेगी। वोट देनेका अधिकार तो रूसकी जनताको भी प्राप्त है लेकिन वहां वैयक्तिक स्वतन्त्रताका उपहास मात्र ही देखा जा सकता है। विषयान्तर हो जानेके भयसे हम यहां इतना ही कहेंगे कि वोट देनेका अधिकार होना अथवा बहुसंख्यकोंको सरकार बनानेका अधिकार प्राप्त होनाही प्रजातन्त्र नहीं है। एक शब्दमें, पद्धति विशेष को प्रजातन्त्रका नाम देना सरासर भूल है। प्रजातन्त्रका लक्ष्य है वैयक्तिक स्वतन्त्रता—व्यक्तिकी चेतनामें विश्वास। प्रजातन्त्र इस सिद्धांतका विरोधी है कि पद्धति अथवा संस्था मात्र द्वारा व्यक्तिका कल्याण हो सकता है। 'प्रजातन्त्र' और 'समाजवाद' दो भिन्न दृष्टिकोण हैं। पहला व्यक्तिकी चेतनामें विश्वास करता है और दूसरा संस्था (सामाजिक पद्धति) में यही कारण है कि एकको वैयक्तिक स्वतन्त्रतावादी कहते हैं और दूसरेको भौतिकवादी।

युग इतना आगे बढ़ चुका है प्रजातन्त्रका खुल्लमखुल्ला विरोध करनेका कोई साहस नहीं करता है। गत विश्व युद्धके बाद अचानक ही सोवियत रूसने देखा कि उसका नेतृत्व प्रजातन्त्रवादियोंके कारण खतरेमें पड़ गया है। संकटसे त्राण पाकर कम्युनिस्टोंने प्रजातन्त्रका बिल्ला लगाया, लेकिन यूरोपकी मौजूदा घटनाओंने आज स्पष्ट कर दिया है कि यह सब ढोंग मात्र था। कम्बल उजला नहीं हो सकता है। आज प्रजातन्त्रके उन्नायकोंको काफी सावधानीसे समाजवादी पार्टीके सिद्धांतोंकी जांच करनी चाहिये। प्रजातन्त्रका नाम सुन कर धोखेमें आना ठीक नहीं है। खैर धोखा भी तो वे ही खा सकते हैं जो 'बादों' को रोमांसके लिये ग्रहण करते हैं। भले ही समाजवादी नेता जयप्रकाशजी कहें कि हम लोग रूसी समाजवाद नहीं चाहते हैं, लेकिन यह हमारा दृढ़ निर्णय है कि समाजवादी पार्टी वर्ग विशेषका अधिनायकत्व स्थापित करना चाहती है। जब तक ये वर्गवादका नारा लगाते रहेंगे तब तक हम कहेंगे ही कि समाजवादी पार्टीने प्रजातन्त्रका बिल्ला चिपका लिया है।

( २

आतंकवादियों और वामपंथियोंमें एक बातकी समानता है कि दोनों अधिकार ग्रहणके लिये शक्तिका प्रयोग करते हैं। यह तो दूसरी बात है कि अधिकार ग्रहणके पश्चात् वाम पंथी समाजकी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन लाते हैं। इन्हें समाजके क्रमिक विकासमें विश्वास नहीं है। इनका विचार है कि परिवर्तन आकस्मिक ही होता है और अधिकार ग्रहणके लिये शक्तिका प्रयोग करना उचित ही माना जाता है। अराजकता फैलाने तथा हिंसात्मक साधनों द्वारा सरकार पर अधिकार करना इनका प्रमुख कार्यक्रम है। जब परिवर्तन आकस्मिक होता है और परिवर्तनके लिये शक्ति का प्रयोग भी जरूरी हो जाता है तब साधन और साध्यके सम्बन्धको स्वीकार करनेकी गुंजाइश नहीं रह जाती है।

महात्मा गांधीकी मृत्युकी भयानक दुर्घटनाके बाद ही जयप्रकाशजीने केन्द्रीय सचिव मंडलमें रद्दो बदलकी मांग की। इनकी मांगकी चर्चा करते हुए संयुक्त प्रांतके एक प्रमुख कांग्रेसी नेता श्री मोहनलाल गौतमने अपने एक वक्तव्यमें कहा था कि आजाद सरकारमें स्थान नहीं मिलनेके कारण समाजवादियोंमें क्षोभ फैल गया है। आगे आपने कहा कि अधिकार नहीं पा सकनेके लिये समाजवादी स्वयं दोषी हैं। जिस समय कांग्रेस विधान परिषदमें

(शेष २६ वें पृष्ठपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थानका एकीकरण

## भारत संघको सुदृढ बनानेके लिये अत्यन्त आवश्यक

'विश्वमित्र' के किसी गतांकमें मैंने राजस्थानके एकीकरणके सम्बन्धमें कुछ चर्चा की थी। उसके बाद इस सम्बन्धमें राजस्थानी एवं अन्य प्रान्तवासी राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता मित्रोंसे काफी विचार विमर्श करनेका मौका मिला। इस बातमें तो सभी एक मत मालूम होते हैं कि राजस्थान जो आज भिन्न-भिन्न टुकड़ोंमें बंटा हुआ है उन्हें जोड़कर उसकी एक इकाई बनायी जाय। भारतीय इतिहास पर एक विहंगम दृष्टि डालनेसे भी पता लगता है कि राजस्थान की कमजोरी ही भारतीय गुलामीका कारण हुई है। क्या हम इस कमजोरीको इसी रूपमें रहने देना पसन्द करेंगे। विशेष कर उस हालतमें जब आज भारतवर्षकी सीमा हिमालयकी चोटीको छोड़कर राजस्थानकी मरुभूमिके किनारे आ गयी है।

किसी देशकी भीतरी मजबूतीके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसका सीमाप्रान्त काफी मजबूत हो और उसकी सीमाएं सुदृढ़। जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर इत्यादिकी अलग इकाई रखते हुए क्या हमारे लिये इस ध्येय की प्राप्ति करना सम्भव है। और फिर उस हालतमें जब इन सभी राज्योंके भिन्न-भिन्न स्वार्थ हों जो समय और शासनकर्त्ताओंके उलट फेरके साथ बदलते रहते हों। मैं पाठकों का ध्यान लोकमान्यके गत २९-५-४८ के अंकमें प्रकाशित एक छोटेसे समाचार की ओर आकर्षित करना चाहता हूं जिसमें यह खबर दी गयी थी कि जिस समय जोधपुरके प्रधान मन्त्री पं० जयनारायणजी व्यास दिल्लीमें स्टेट मिनिस्ट्रीसे जोधपुर राज्यके सम्बन्धमें बातें कर रहे थे उसी समय जोधपुरके महाराज अपने सामन्तों के साथ भारत और पाकिस्तानकी सीमा पर मियां जिन्नासे मुलाकात कर रहे थे। अब आप ही यह बताइये कि क्या यह समाचार किसी भी राष्ट्रीय कर्मीकी बेचैन बना देनेके लिये काफी नहीं है। जैसलमेरके सम्बन्धमें भी कुछ ऐसी ही बातें सुननेमें आयी थीं जिसके फलस्वरूप हिन्द सरकार को बाध्य होकर वहांके सैनिक बचाव का सारा प्रबन्ध अपने हाथमें लेनेकी व्यवस्था करनी पड़ी।

मैं नहीं समझता हूं कि भारत सरकारके लिये यह कहां तक उचित है कि वह सीमा पर इन छोटे-छोटे राज्योंको रखते हुए बेकारका सिर दर्द मोल ले। भारतीय सीमाकी सुरक्षाके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि इन राज्योंका एक सुदृढ़ संघ बनाया जाय जिसमें जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर इत्यादि राज्योंके निवासी अपना अलग-अलग अस्तित्व न रख अपनेको भारतीय संघका एक अभिन्न अंग समझें। किन्तु जब तक राजस्थान निवासी एकीकरण नहीं चाहते तब तक भारत सरकार अपनी पूर्व घोषित नीतिके अनुसार किसी भी देशी राज्यको किसी संघमें मिलनेके लिये बाध्य नहीं कर सकती।

भारतवर्षके बृहत्तर स्वार्थके लिये राजस्थान के बच्चे-बच्चेका कर्त्तव्य है कि वह राजस्थानके एकीकरणका समर्थन कर भारत सरकारके हाथ इतने मजबूत बना दे कि वह इन राज्योंको एक बृहद संघमें सम्बद्ध कर एक कर सके।

सैनिक दृष्टिसे आज राजस्थानके इन छोटे-छोटे राज्योंका महत्व बहुत बढ़ गया है। जहां पहले भारत सरकार अपनी सैनिक लक्तिके लिये पंजाब और उसके आस पासके पहाड़ी इलाकों पर निर्भर करती थी वहां अब उसे अपना सारा दारमदार राजपूतानेकी इन रियासतों पर ही रखना पड़ेगा। क्योंकि राजपूताना ही भारतवर्षमें एक ऐसी जगह है जहांसे सच्चे अर्थोंमें भारतके लिये सैनिक शक्ति प्राप्ति हो सकेगी। इस दृष्टिसे भी इन रियासतोंका एकीकरण होना अत्यन्त आवश्यक है। भारतवर्षकी सुरक्षा का तकाजा है कि राजस्थानकी इन सभी रियासतोंको मिलाकर उनका एक मजबूत संघ बनाया जाय जो वास्तविक अर्थमें उसके सच्चे पहरेदारका काम कर सके।


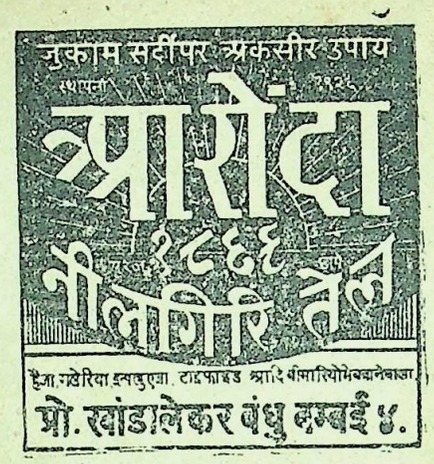


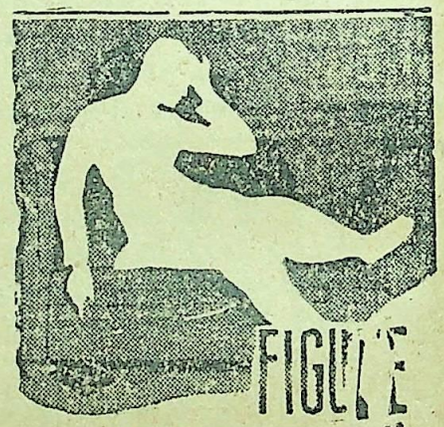


प्रशंसनीय रक्त परिष्कारक दूषित रक्तसे उत्पन्न होनेवाली सभी बीमारियोंकी अचूक दवा तथा टानिक। सूजन, बात, गठिया चर्मरोग, दुर्बलता घाव, फोड़ा फुंसी, गांठोंकी सूजन जो रक्तकी कमी या दूषित रक्तसे उत्पन्न होता है

AMRITABALLI KASAYA
restores vitality & strength
KAVIRAJ N.N. SEN & CO. LTD CALCUTTA

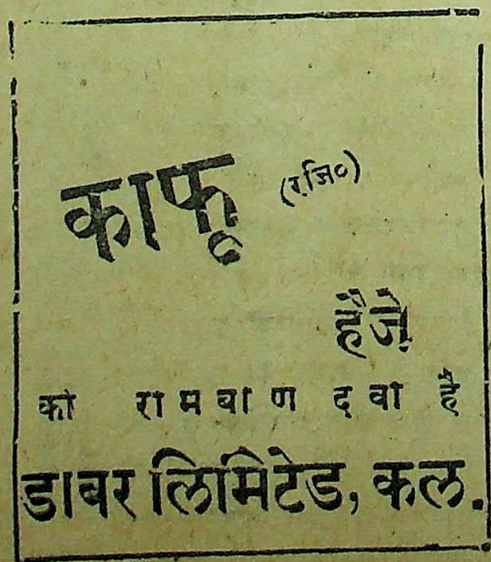



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# मधु-संचय

पढ़ कर आपको आश्चर्य निश्चय होगा पर यह सत्य है कि मोगलसरायके कुछ पुराने विचार वाले सर्वण हिन्दुओंने चायत कर यह निश्चय किया कि हरिजनों के साथ आचार विचार रखने वालोंको पुरस्कार स्वरूप इनकी तरफसे ५० जूते तथा ५००) रु० जुर्माना देना पड़ेगा। हाल ही में कुछ उन्नत विचार वालोंने एक सभा कर सर्व सम्मतिसे यह निश्चय किया था कि हरिजनोंका पूर्ण उद्धार किया जाय। इसके उपरांत हरिजनोंके साथ खान पान हुआ। इस पर गांव वाले बिगड़ खड़े हुए तथा उन्होंने उपरोक्त दंड की व्यवस्था की।

### नया रेकार्ड।

लंडज (पौलेण्ड) ) की एक खबर है कि यहां रेलवे में काम करने वाले एक अफसर की स्त्री ने बच्चे पैदा करनेका रेकार्ड स्थापित किया है। दो वर्ष पहले इस स्त्रीने केवल दो बच्चोंको जना। दूसरे वर्ष यह संख्या तीन तक पहुंची। इस बार पिछले समस्त रेकार्डोंको तोड़ते हुए इसने चार बच्चे जने हैं।

### दो बर्षोंमें नौ बये

यहांके एक अवसर प्राप्त डाक्टरने अखबारों द्वारा यह जनाना चाहा था कि वे ही ब्रिटेन के सबसे पुराने मोटर चालक हैं। आप सन् १९१७ से बराबर मोटर चलाते आ रहे हैं। इस वक्त आपकी उम्र ९२ वर्ष है। इसके जबाबमें आपके एक प्रतिद्वन्द्वी ने सूचित किया है कि मैं १९११ से बराबर मोटर चलाता आ रहा हूं तथा मेरी उम्र भी आपसे तीन मास ज्यादा है। ब्रिटेनके मोटर चालकों ने आशा प्रकट की है कि ये दो महानुभाव अपने जीवन कालके सौ वर्षों तक इसी प्रकार गाड़ी चलाते रहेंगे।

### आजकी पाताल पुरी

अभी तक यही समझा जाता था कि लोग बमबाजी के भयसे जमीनके अन्दर छिप कर रहना पसंद करते हैं पर यह बात नहीं है। ट्रिपलीटेनियामें ट्रोगलोडाइट्स नामक एक जाति जमीनके भीतर खोदे हुए खंदकोमें निवास करती है। ऊपरी जमीन से नीचेकी ओर एक अन्तमार्ग सा चला जाता है जो कि नीचे जाकर इक बड़े दालानके रूपमें परिणत हो जाता है। इसके चारो तरफ खुदी हुई कोठरियां दिखाई पड़ती हैं जिनमें कि लोग सैकड़ों वर्षों से रहते चले आ रहे हैं। हाल में ही बी० बी० सी० के एक प्रतिनिधि ने इस जगहकी छान बीन की। यहां यहूदी तथा अरब दोनों प्रकार के लोग रहते हैं। इनके रहन सहनमें आपस में काफी भेंद होने पर भी काफी प्रेम है। यहांके शेख न इस प्रतिनिधिका स्वागत शराब से किया उसने बताया कि हम यहां किसी प्रकारके भय से नहीं रह रहे हैं। गर्मी में ये जगहें ढंडी रहती हैं और जाड़े में गर्म उस पर से ये सस्ती पड़ती हैं। इसलिये हम इसी पें रहना पसंद करते हैं।

### तिब्बतमें विदेशी मना

हिमालयके उस पार की तिब्बती सरकारने अपने राज्यमें आने वाले तमाम विदेशियों के अनुमति पत्र को रद्द कर दिया है। यह रोक १९५१ के अन्त तक रहेगी। तिब्बती सरकारको भय है कि अगले तीसरे महायुद्धमें विदेशी ताकतें तिब्बतको अपना युद्ध क्षेत्र बनाना चाहती हैं। इसीको रोकने के लिये यह निर्णय किया गया है। दूसरे तिब्बती सरकारको यह भी मालूम हुआ है कि वर्तमान लामा कि जन्मपत्रीमें लिखा हुआ है कि किसी विदेशी द्वारा उनकी हत्या होगी।

### सरकारी मेहमानोंके लिये नयें होटल

सरकारको अपने विदेशोंसे आये हुए मेहमानोंको ठरानेके लिये बड़ी भीषण असुविधाका सामना करना पड़ता था क्योंकि लन्दनके होटलोंमें जरा भी जगह खाली नहीं रहती है। इसलिये सरकारने बहुतसे मजूरोंकी सहायतासे कई स्टेटोंको जो कि अब तक औपनिवेशिक विभागके कर्मचारियों द्वारा काममें लाये जाते थे। आराम देह रहने लायक फ्लाटों में परिववर्तित कर दिया है। ये होटल सर्व प्रथम पाकिस्तान तथा भारतसे उन प्रतिनिधियों द्वारा काममें लाये जायेंगे जो कि पौंड पावना वार्त्तामें हिस्सा लेने आ रहे हैं। इनमें एक बड़ा हाल भी है जिसमें सम्मेलन हो सकेगा। इसमें इनको किसी भी वेस्ट एण्ड होटलकी तरह आराम मिल सकेगा।

### रेशनिग का उल्टा असर —

### अंग्रेज और ज्यादा मोटे तथा लम्ब —

लन्दन, ३१ मई। बने बनाये कपड़े बेचनेववालोंका कहना है कि युद्ध पूर्व कालकी अपेक्षा एक औसत अंग्रेज आज अधिक मोटा तथा लम्बा हो गया है। देखा जाता है कि युद्ध काल में चलनेवाली रेशनिंग का उल्टा असर पड़ता है। युद्धके पहले नौ आदमियोंमें से सिर्फ एक व्यक्ति ३१ इंचके साइजका कपड़ा मांगता था पर आज यह औसत अढ़ाई व्यक्तियोंका है। लम्बे होनेके अतिरिक्त अंग्रेजोंकी छाती तथा कमरकी साइज पहलेसे और ज्यादा बढ़ गयी है।

### प्रकृति का चमत्कार

### सूअर के गर्भ से हाथी उत्पन्न —

सारनका एक विचित्र समाचार है। यहां एक डोमके घर एक सूअरको आठ बच्चे पैदा हुए। इनमेंसे एक बच्चोंकी मुखाकृति हाथीसे मिलती थी इसके छोटी सी सूढ़ भी थी। शरीरके दूसरे अंग जैसे कि कान मुंह आदि भी हाथीकेसे थे। पैदा होने के कुछ देर बाद बच्चा मर गया। डोमने बच्चेका प्रदर्शन मरनेके बाद भी जारी रखा।

### हाथियोंका कृत्यज्ञता-ज्ञापन

चंदाके विलियमका विचार है कि हाथी कभी भी लोगोंको भूलते नहीं हैं। कुछ दिनों पूर्व कलनल साहबने इस हाथीके जख्मोंका इलाज किया था। कुछदिनों बाद आप कैम्पमें इस हाथीको देखने गये। आपने जैसे ही महावतको आववाज दी हाथी दौड़ कर आपक सामन आया और आपक पावों पास लोट गया। उसन खुद ही उन्हें अपन जख्म दिखाय आपका विचार है कि यदि हाथो नाराज हो जाय तपो उस ठंड लिय उसक सामन घुटनोंके बल बैठ जाना चाहिय। पर आपन कहा है कि यह सिर्फ सिद्धांत धर ही है। जब हाथी दौड़न लग जाता है तो मैं खुद भी उसक साथ भागन लगता हूं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



{२३ पृष्ठका शेषांश}

शामिल होकर देशके शासनका भार अपने हाथमें ले रही थी उस समय समाजवादियों ने कांग्रेसी नेताओं 'समझौतावादी' कह कर खिल्ली उड़ायी । यहां तक प्रचार किया गया कि कांग्रेसी नेता अंग्रेजोंकी चालबाजी समझ सकने की क्षमता नहीं रखते हैं । आगे गौतमजी कहा कि अपनी अदूरदर्शिताके कारण जयप्रकाशजी केन्द्रीय सरकारमें स्थान नहीं पा सके । हमारा विचार है कि मानसिक संतुलन खोकर, तो समाजवादियों केन्द्रीय सरकारमें अधिकार पाने की मांग अवश्य की लेकिन यह समझना भूल है कि गवर्नरोंको कैद करने की योजना जयप्रकाशजी अपनी अदूरदर्शिताके कारण तयार की थी । छोटे मोटे समाजवादी

दी भले ही वास्तविकता नहीं समझ सकते हों लेकिन जयप्रकाशजी ऐसे पढ़े लिखे आदमीको अज्ञानी मानना सही नहीं होगा । राजनीतिका प्रत्येक गंभीर विद्यार्थी समझ चुका कि लड़ाईके बादकी दुनियामें ब्रिटिश साम्राज्यवादका टिकना असंभव है । वस्तु स्थितितो यह थी कि जब एक ओर कांग्रेस शासन-भार हाथमें ले रही थी तब नेतागिरी कायम करनेके लिये मृतक बृटिश साम्राज्यवादकी ठठरियोंसे लोगोंको आतंकित करना और जमानेसे फैली हुई ब्रिटिश विरोधी भावनाका शोषण करना इन लोगों ने शुरू किया । उस समय कई बार पण्डित नेहरू और अचार्य कृपलानीको कहना पड़ा था कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद मर चुका है और अब हमें अपनी नयी नयी समस्याओंको हल करनेमें समय लगाना चाहिये । अदूरदर्शिताके कारणं नहीं, नेतागिरीके लिये समाजवादी नेताओंने यह रास्ता पकड़ा था । स्मरण रहे कि उस समय तक कांग्रेसी सचिवमंडलोंकी बदनामी शुरू हो चुकी थी ।

समाजवादियों इस बातको स्वीकार भी कियाहै कि कांग्रेसकी तागिरी उनकी मुट्ठीमें नहीं आ सकी ।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अवसान के अवसर पर भी समाजवादी कोई खास लाभ नहीं उठा सके । महात्मा गांधीजी की हत्याके बाद इन्होंने दूसरी बार प्रयत्न किया । इस बार इनकी अधिकार-लोलुपता का परिचय अच्छी तरह लोगोंको हुआ । आक्षेपोंका उत्तर देते हुए जयप्रकाश जीने कहा कि हम पद नहीं चाहते हैं और चाहते तो कोई बड़ी बात भी नहीं थी । बार-बार इनकी हरकतों से ऊबकर श्री पटेलको कहना पड़ा कि जो कांग्रेसका मुकाबिला भी साहस होना चाहिये । मजबूर होकर कांग्रेसको तय करना पड़ा कि समाजवादी अपना रास्ता नापें । अब तो यह प्रश्न रहा नहीं कि देशके हितके लिये, समाजवादी पार्टीके लिये अथवा प्रजातंत्रकी रक्षाके लिये समाजवादियोंका इस्तीफा देना आवश्यक था । ये प्रश्न तो तब खड़े होते जब ये स्वेच्छासे हटनेके लिये तैयार दिखाई पड़ते । यह नग्न सत्य है कि इन्हें कांग्रेससे हटनेके लिये मजबूर किया गया । आचार्य नरेंद्र देवने खिन्न होकर कहा थाकि गांधीजी समाजवादी पार्टीके लिये कांग्रेसका दरवाजा नहीं बन्द करना चाहते थे । गांधीजी महान व्यक्ति थे आप तो इनके रुखको जानते हुए भी कोई कड़ी कारवाई नहीं करना चाहते थे । उनका सिद्धांत था कि घृणा अथवा क्रोधमें मनुष्यकी हार छिपी है । महात्मा जी का सिद्धांत अपने स्थान पर ठीक है, लेकिन व्यवहारिक दृष्टिसे देखा जाय तो समाजवादियोंमें अधिकार-ग्रहण की भावना चरम सीमा पर पहुंचते देखकर कांग्रेसी नेताओंको भी अपना रास्ता साफ करना जरूरी था । कांग्रेससे संबंध-विच्छेद करने के बाद ही समाजवादियोंने संयक्त प्रांतके जिला बोर्डके चुनावमें सरगर्मी दिखाई है । क्या इससे भी स्पष्ट हुए बिना नहीं रहा कि समाजवादियोंके संबंधमें कांग्रेसी नेताओंकी राय करीब-करीब ठीक ही थी ? मेरे कहनेका यह तात्पर्य नहीं है कि समाजवादी नेता अवसर वादी हैं । किसीकी नीयतमें शक रखनेका अधिकार मुझे नहीं है । पर असल बात तो यह है कि एक समाजवादी की दृष्टिमें अधिकार-ग्रहण द्वारा ही क्रांति संभव है । यह दूसरी बात है कि अधिकार-ग्रहण करनेवाले स्वयं क्रांतिके आदर्शसे प्रेरित हों अथवा लेनिन या स्तालिन या जय प्रकाश जी ही क्रांतिका नेतृत्व करेंगे । इस बातकी चर्चा किये बिना कि क्रांति-लक्ष्यकी सफलताके लिये नेता विशेष अंध-विश्वासके अतिरिक्त कोई गारंटी नहीं है, मैं जोर यह देना चाहता हूं कि वामपंथी पद्धति विशेष अथवा अवस्था विशेषको देना ही क्रांति मानते हैं और ऐसे परिवर्तन के लिये तत्कालीन सरकार पर किसी तरह कब्जा करना ही क्रांतिका एकमात्र रास्ता समझते हैं । अगर समाजवादियोंकी क्रांतिके विचारको ठोकते बजते लिया जाय तो इन्हें अवतरवादी से अधिक उपयुक्त अधिकारवादी ही कहनाउचित होगा ।

समाजवादी अधिकार चाहते हैं और इसका बड़ा सबूत यह है कि कांग्रेससे अलग होते समय इनकी शिकायत यह नहीं रही कि कांग्रेस [illegible] भयंकर चीज है । राष्ट्रीयकरणकी योजना को कांग्रेसने स्वीकार ही कर लिया है । श्री गाडगिलने चलेंज करते हुए कहा कि मौजूदा आर्थिक व्यवस्थामें हिन्द सरकार जो आर्थिक सुधारकी योजनायें पेश कर रही है उससे अधिक क्रांतिकारी योजनायें संभव नहीं है । जब समाजवादी इस बातको स्वीकार करते हैं कि देश संकट-कालसे गुजर रहा है और राष्ट्रको सुदृढ़ करना सरकारका सर्वप्रथम कार्य होना चाहिये तो कांग्रेस सरकारकी नीतिसे अपना मतभेद जाहिर करनेकी चेष्टा उचित नहीं है । जब सरकार संकटकालमें राष्ट्रीय आयका अधिकांश खर्च करना उचित समझती है और समाजवादी नेता उसका पूरा-पूरा समर्थन करते हैं तब घूसखोरी, भ्रष्टाचार और कुव्यवस्था के कारण कांग्रेससे अपना मतभेद बताना समझदार लोगोंके मनमें समाजवादी पार्टी के नये आधारके ठोस होनेमें शंका पैदा कर सकती है । घूसखोरी और भ्रष्टाचारको कोई सहन नहीं कर सकता है लेकिन केवल इसीको पूंजी बनाकर अपनी पार्टीके प्रचार का साधन बनाना राजनीतिक ईमानदारी नहीं है । अधिकार प्राप्त करनेकी लिप्साके कारण मनुष्यका नैतिक, पतनस्वाभाविक हो जाता है । खैर, "नैतिकता' तो बुर्जुवा शब्द है !

यह बताना मुश्किल है कि अधिकार प्राप्त करनेके लिये समाजवादी हिंसात्मक साधनोंका उपयोग करेंगे अथवा नहीं । अगर ये करेंगे भी तो सफल नहीं हो सकेंगे । इस मामलेमें कम्युनिस्ट अधिक साधन-संपन्न हैं और दक्ष भी, लेकिन यह बात साबित हो चुकी है कि हिंसात्मक तरीकेसे सरकार पर कब्जा करना आधुनिक युगमें संभव नहीं है । वामपंथी भी समझ चुके हैं कि रूसकी क्रांतिका जमाना अब रहा नहीं और क्रांतिका पुराना टेकनिक उपयोगिता खो चुका है । मजबूरीकी हालत में चुनाव जीतना ही इनलोगोंने अपना नारा बना लिया है । यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि समाजवादी चुनाव 'लड़ते' हैं, चुनावके जरिये जनतामें शिक्षाका प्रचार नहीं करते । अलेम्बलीके अगले चुनावके लिये समाजवादी सभी साधनोंके जुटानेमें आज दिन-रात एक कर रहे हैं लेकिन क्या यह आश्चर्यका विषय नहीं है कि अबतक समाजवादी पार्टीने पढ़े-लिखे लोगोंके लिये, कांग्रेस तथा अन्य राजनीतिक पार्टियोंसे भिन्न तथा अधिक स्पष्ट कार्यक्रम पेश नहीं किया है ? आखिर जयप्रकाश जी को क्यों लोग वोट देंगे ? हो सकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सीटें मिल जायें। अशांत तथा क्षुब्ध वातावरणमें कुछ स्थान पा लेना असंभव कहा जा सकता है। असेम्बलीमें जाकर ये सरकारकी आलोचना कर सकते हैं, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिये कि असेम्बली को अपने प्लैटफार्मको लिये काममें लाना समाजवादी पार्टीके प्रजातंत्रमें विश्वासका सूचक नहीं है। चुनाव लड़कर ही कई यूरोपीय देशोंमें कम्युनिस्ट बहुमत भी प्राप्त कर चुके थे। ऐसा इनलोगोंने इसलिये किया था कि अनुकूल मौका देखकर विरोधियोंका गला दबोच दिया जायेगा। प्रेग की दुर्घटना और जान मसरिककी हत्या अभी आप भूले नहीं होंगे।

अगर समाजवादी कांग्रेससे मतभेद रखते हैं तो जनताके सामने क्यों नहीं अपनी योजनायें पेश करते हैं? श्री पटेल या श्री चेट्टीको केंद्रीय सरकारमें नहीं रहने देनेकी मांग और कांग्रेसकी योजनासे भिन्न अपनी योजना पेश करना, दोनों एक ही बात नहीं हैं। सच पूछा जाय तो समाजवादियोंके व्यक्तिविशेषसे झगड़ा है— कांग्रेसकी नीतिसे मतभेद दिखानेकी कोई गुंजाइश तो है नहीं। समाजवादके अनुसार क्रांति करनेका एकमात्र जरिया है, सरकार पर कब्जा करना। यह तो स्पष्ट है कि ये कांग्रेसका नेतृत्व अपने हाथमें ले न सके और अपनेप्रयत्नमें सफल नहीं होनेके कारण क्षुब्ध हैं। विफलता से क्षोभ उत्पन्न होता ही है। ऐसी स्थितिमें लोग मानसिक संतुलन खो ही दिया करते हैं और हरेक आदमीको अपना शत्रु समझकर असंस्कृत शब्दोंका प्रयोग करते हैं। 'इंडिया' में श्री कुसुम नायरने कहा है कि कांग्रेससे अलग हटते ही चुनावमें भाग लेनेकी उत्सुकता समाजवादियोंके अधिकार-ग्रहणकी भावनाका द्योतक है। अपने पिछले इतिहास के अनुरूप ही, समाजवादी पार्टीने आज अपनेको स्वतंत्र पार्टीके रूपमें संगठित भी किया है तो अधिकार प्राप्त करनेकी भावना से ही प्रेरित होकर। हां, यह मैं मानता हूं कि कांग्रेसके अतिरिक्त कोई स्वतंत्र दल बनाना ही जुर्म है अथवा राष्ट्र-विरोधी कार्य है। समाजवादी पार्टीके स्वस्थ विरोधी दल होनेकी जांच कालकी गति ही अच्छी तरह कर सकेगी। लेकिन सचाई आज भी निष्पक्ष आलोचकोंकी आंखसे छिपी नहीं है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विश्वामित्र

# राष्ट्रोत्थानका मूलाधार--'श्रेणी-संघर्ष'

लेखक-श्री अभय साहित्यरत्न

आज देशका राजनैतिक वायुमंडल श्रेणी-संघर्ष की ओर बड़ी तीव्रगति से बढ़ता जा रहा है। देशको राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो गई, फिर भी बहुजन समाज आर्थिक परिस्थितियोंसे इतना जकड़ा हुआ है कि जिसकी इन्तहा नहीं। जब हम इस पहलू पर शीतल अन्तस्तलसे विचार-विमर्श करते हैं तब ज्ञात होता है कि देशका एक बहुत बड़ा भाग पूंजीके कठोर बंधनसे जकड़ा हुआ तिलमिला रहा है और वह अपनी मुक्तिके लिये तरह तरहके प्रयत्न भी कर रहा है। इस वर्गका नाम है--श्रमिक वर्ग, जिसका एक युग है, एक इतिहास है और उस इतिहासके उज्ज्वल पृष्ठों में इसका वर्णन बड़ी खूबीके साथ लिखा हुआ है। और इसी इतिहासके काले पृष्ठों में एक दूसरे वर्गका भी इतिहास है जिसका नाम है--पूंजीवाद वर्ग। आज एक वर्ग राष्ट्रोत्थान में तल्लीन है तो दूसरा वर्ग राष्ट्र एवं समाजको पतनोन्मुख करनेका षड्यन्त्र कर रहा है।

### देशमें पूंजीका केन्द्रीकरण

आज देशमें गरीबी, दरिद्रता का जो प्रभाव बढ़ता जा रहा है उसका एकमात्र कारण, आधार पूंजीका एकीकरण है। पूंजीवादी दलने समाजका इतना गहरा शोषण किया है जिसकी इन्तहा नहीं। एक दल गरीब दूसरा दल मालदार इतनी विषमता क्यों? जो वर्ग मेहनतको, वही आज इस तरह भूख से तड़पतड़प कर मौत की प्रतीक्षा करे यह आश्चर्य तथा महान दुख की बात है। श्रमिक वर्ग का इतना भीषण शोषण किया गया है कि वह एकदम निकम्मा तथा खोखला हो गया है। आज देशकी पूंजी कुछ सीमित लोगोंके हाथोंमें आ गई है। पूंजीवादी अपनी पूंजीका नफा उठाते हैं, लेकिन श्रमिकवर्ग अपने श्रमका लाभ नहीं उठा पाता। आज मिल-मजदूरों का उदाहरण हमारे सामने है। मजदूर अपनी मजदूरी लेता है, मिलके मुनाफेका हकदार नहीं। वह अपनी मजदूरी लेनेमें भी स्वतंत्र नहीं। वह अपनी इच्छा एवं स्वतंत्रतासे कार्य करनेके लिये नहीं पैदा हुआ है। उसे नित्य ही अपने काम पर आना ही चाहिये।

### मेहनत करे मुर्गा अन्डा खाय फकीर

इस तरह हम देखते हैं कि जो वर्ग दिन भर अपनी हड्डी एवं खून सुखा कर गाड़ी है, चिन्तित है, क्षुब्ध है। उसके हृदय पर न जाने कितने घावोंके दाग अभी भी बने हैं। श्रमिकवर्गके बलबूते पर चलने वाले आज सुख की नींद ले रहे हैं, मीठे सपने देख रहे हैं। उनके शौकेके बहार की बात ही क्या? मेहनत करे मुर्गा और अन्डा खाय फकीर वाली कहावत ठीक इसके ऊपर चरितार्थ हो रही है। यह रोग तभी हमारे श्रमिक वर्गका पीछा छोड़ सकता है, जब पूंजीका समान बंटवारा श्रमके अनुसार किया जाय। मिलोंको वैयक्तिक संपत्ति न मान कर राष्ट्रीय सरकारकी संपत्ति माना जाय और श्रमिक वर्गको पारिश्रमिक के अतिरिक्त मुनाफे की भी रकम दी जाय। यह संक्षेपमें हम मजदूर वर्गके पहलू पर दृष्टि पात कर रहे हैं। श्रेणी संघर्षकी अनिवार्यता विशेष महत्व रखती है। अगर सचमुच स्वराज्यके स्थानपर हमें 'रामराज्य' की स्थापना करनी है तो श्रेणी-संघर्षका आधार लेना ही होगा।

### श्रेणी-संघर्षका आधार आर्थिक है

यह तो निश्चित है कि देशके अन्तर्गत श्रेणी संघर्ष हो कर रहेगा। आज नहीं तो कल यह चीज आने ही वाली है। श्रेणी-संघर्षके अतिरिक्त और कोई दवा नहीं जो देशके आन्तरिक रोगको मिटा सके। इसमें पूंजीपतियोंका अवसान न होगा बल्कि उनकी पूंजी का राष्ट्रीयकरण होगा और इसके होते ही पूंजीपति अपनी स्वार्थ नीतिका परित्याग कर समाजको स्वस्थ बनानेमें लग जाएंगे। अब सवाल यह उठता है कि क्या सरकार पूंजीपतियोंसे टक्कर लेगी या पूंजीपति स्वयं सरकारको आत्म-समर्थण कर देंगे। पर इतना तो कटु सत्य है कि अगर सरकारने भी इसकी उपेक्षा की तो उसे मजदूरोंमें अपनी लोकप्रियता खोनी पड़ेगी। सरकारको पूंजीपतिके उत्पादन के अनुचित तरीकोंको बन्द करना होगा उनकी पूंजीका निर्धारित भाग सरकारी कोषमें लेना होगा जिससे श्रेणी-संघर्षके लिये हिंसात्मक तरीकोंका उपयोग न करना पड़े। आज हम देखते हैं कि भारतीय सरकार श्रमिकोंके प्रति अनुदार तथा शोषकोंके प्रति उदार होती जा रही है। पूंजीपतियोंने सरकारको इस परिस्थितिमें लाकर डाल दिया है कि सरकार पूंजीपतियों को छोड़ कर एक कदम भी नहीं चल सकती। आज पूंजीपति गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। इसलिये आवश्यकता उस बात की है कि सरकार सर्वप्रथम आर्थिक रूपमें पूंजीको अपने हाथोंमें लेकर उसका राष्ट्रीयकरण करे।

### जमींदार और किसानोंका संघर्ष

जहां एक ओर मजदूरवर्ग शोषित होनेके कारण संघर्ष करनेके लिये व्यग्र है, वहां उन्हींके छोटे भाई किसान भी जमींदारोंके अत्याचारोंसे पीड़ित हो उठे हैं। सरकार और किसानोंके बीच गहरी खाई पैदा करने वाले ये जमींदार आज भी बने हुए हैं। जमींदारीप्रथाका अन्त अब अपनी चरमावस्था तक पहुंच चुका है। किसान खेती करता है, अन्न पैदा करता है और लगान (मालगुजारी) भी सरकारको देता है। किसानका संबंध सीधे सरकारसे न होने के कारण वे अपनी आवाज सरकार तक नहीं पहुंचा पाते। जमींदार लगानका कुछ निर्धारित भाग ही सरकारी खजानेमें जमा करता है और कुछ उसके निजी खजानेमें जमा होते हैं। जमींदार किसानोंसे निर्धारित लगान से भी अधिक वसूल करता है। जो सरकार अपनी प्रजाके दुख-सुखका अनुभव नहीं करती वह अधिक दिनोंतक चल नहीं सकती। इसलिये भारतीय सरकारने इन बीचके दलालों (जमींदारों) को हटाना ही उचित समझा। जमींदारी प्रथाका अन्त इसका जीता जागता उदाहरण है।

### जब श्रेणी-संघर्ष होगा

आज देशका निर्माण होने जा रहा है। सिर्फ निर्माण कर देनेसे तो कोई लाभ नहीं, निर्माणके पश्चात देशको उत्थान में लगना पड़ेगा। इसलिये देशके उत्थान में श्रेणी-संघर्ष की उपयोगिताका विशेष महत्व आ जाता है। जब ये सभी वर्ग समाप्त हो जाएंगे तब एक ऐसे समाजवर्गका निर्माण होगा जिसमें न तो कोई दुखी रहेगा न अत्याचारी। वस्तुतः श्रेणी-संघर्षके पश्चात ही सच्चा 'रामराज्य' स्थापित हो सकेगा। बापूने जिस रामराज्यका सपना देखा था और उसमें जिस समाजके निर्माणके लिये अपना जीवन लगाया था, उसमें यही था। जातीयता, साम्प्रदायिकता, ऊंच नीचका का भेदभाव मिटा कर 'समाजवाद' की स्थापना ही उनका लक्ष्य था। जब देशके अन्दर से यह विषमता समाप्त हो जाएगी तो सभी वर्ग यह समझने लगेगा कि हमें स्वराज्य मिल गया। एक वाक्य में अगर कहा जाय तो यही कहना पड़ेगा कि राष्ट्रोत्थान तथा इनका मूलाधार श्रेणी-संघर्ष ही है जिसकी ओर कदम बढ़ाना राष्ट्रके पिछड़े, शोषित वर्गका प्रमुख कार्य है। यह युग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



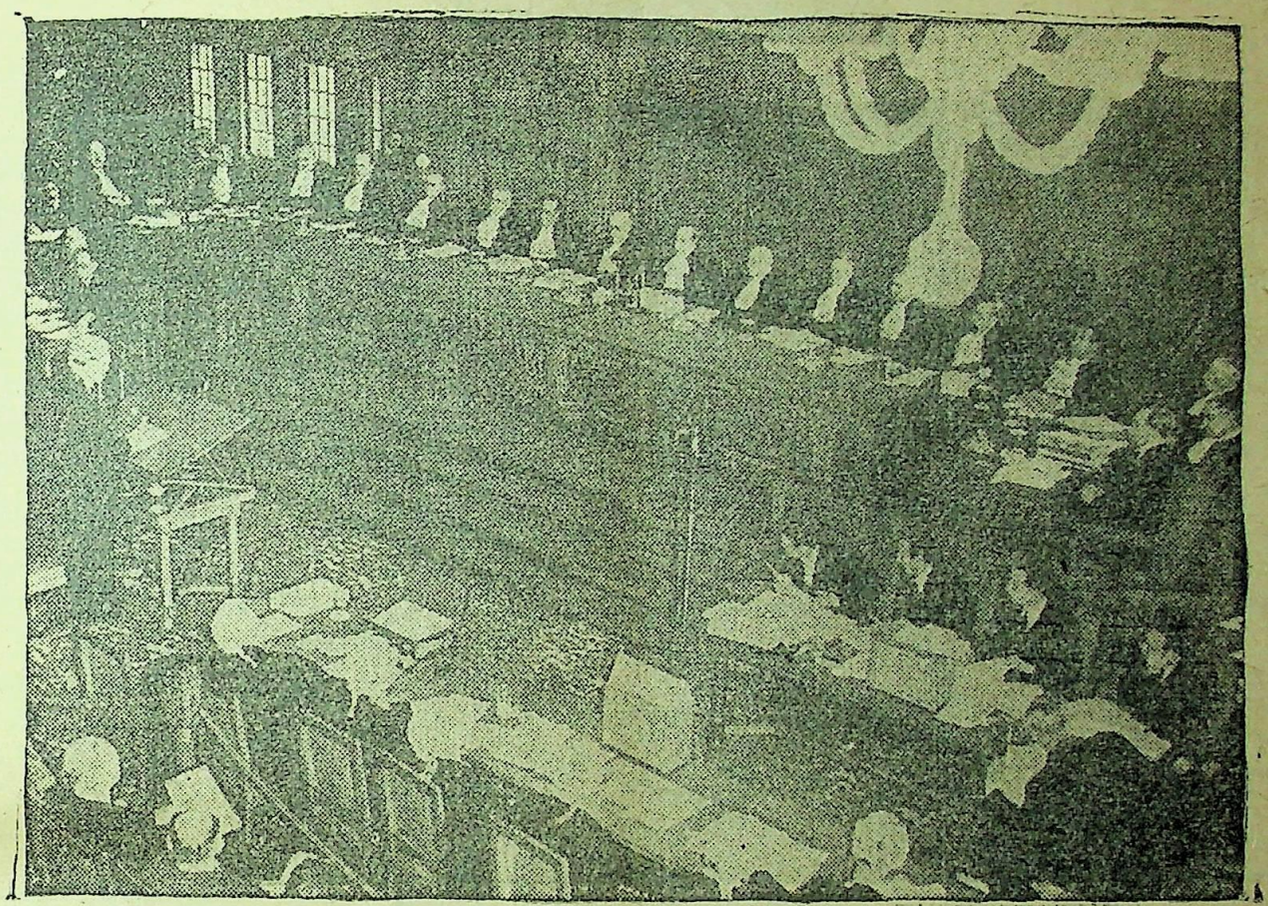

अल्बानिया द्वारा, २२-१०-४६ को सुरंग लगाकर दो ब्रिटिश जहाज, डुबा देने का मामला अन्तर्राष्ट्रीय अदालत हेगमें, उपस्थित होने, अल्बानियासे, क्षतिपूर्ति, और क्षमा याचना, की मांग की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



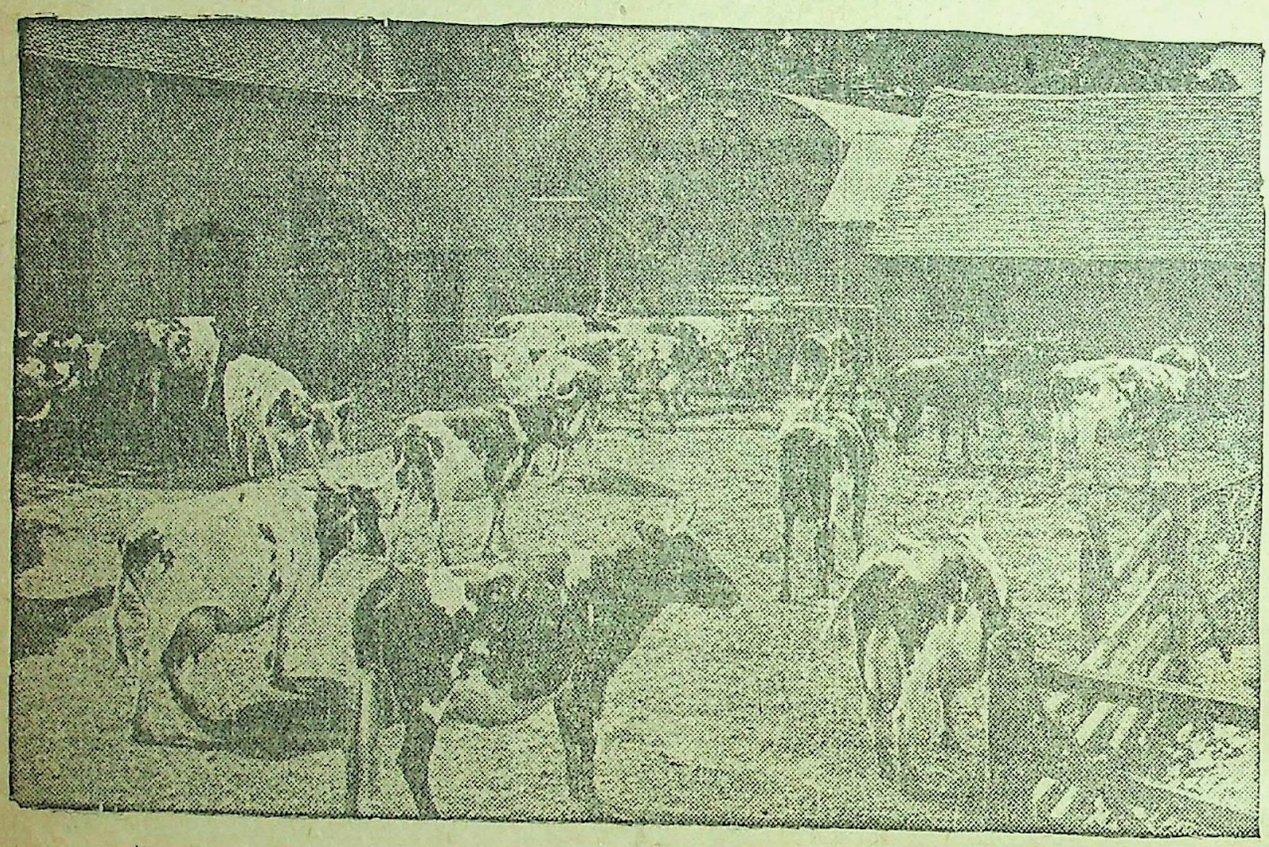

इंगलैंडकी एक गोशालाका दृश्य। आयर शायर श्रेणीकी कुछ उत्तम गायें। गोशालामें पालते समय अक्सर इनकी सींगे काटकर छोटी कर दी जाती है।

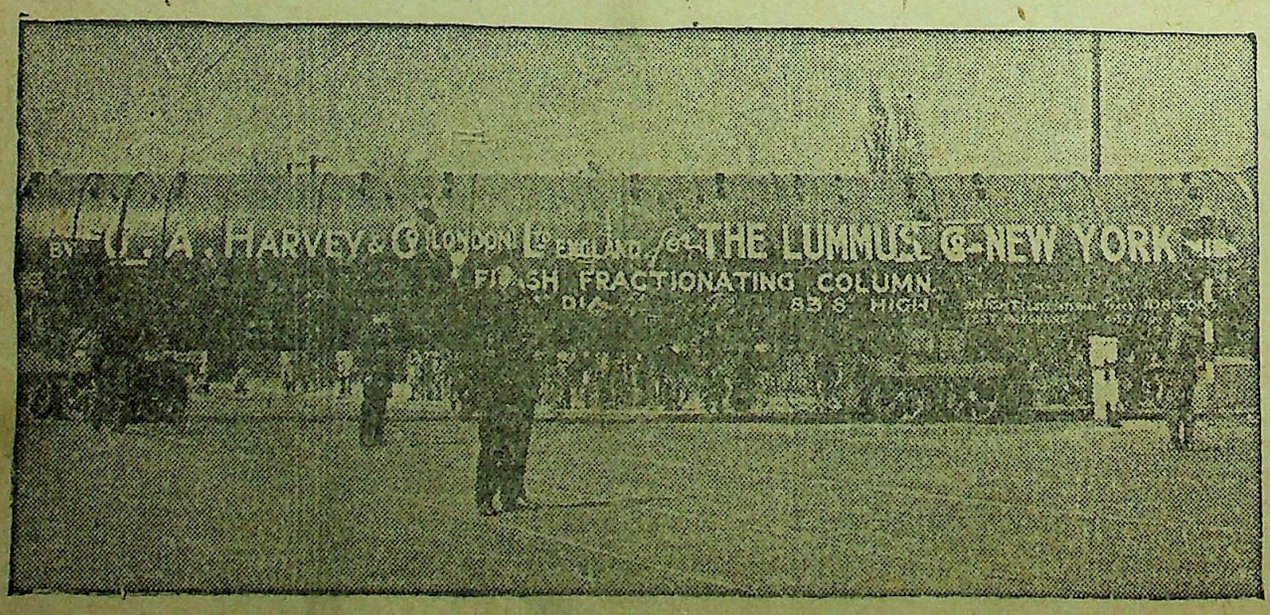


तेलके कुपेका ऊपरी भाग यह ८३ फीट लम्बा और ३००० मन भारी है। कारखानेसे बंदरगाह ४ मीलकी दूरी तय करनेमें इसको लंदनकी सड़कोंपर ३८ मील [illegible] भेजा गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# आजका बिहार

बिहार असेम्बलीका बजट और राजनीका वर्तमान अधिवेशन समाप्त हो गया। अब इसका अधिवेशन छोटा नागपुर के अंचलमें रांचीमें होगा। यह रांची प्रवास यद्यपि पहले लाट हबी विलासितामें परिगणित होता था और सरकारी फजूलखर्चीके उदाहरणोंमेंसे एक था, पर वही अब आवश्यक हो गया है। पटनेकी गर्मीसे देह और मन दोनोंको बचानेके लिये रांचीके ठण्डे पहाड़ोंकी हवा उपयुक्त होती है---ऊंचे पर जाकर शायद मन भी कुछ ऊंचा हो या हाथ ऊंचे हों---कमसे कम सितारा ही ऊंचा हो जाय। उधर छोटा नागपुरको भी गौरव मिलता है कि सालके कमसे कम तीन महीने सरकार उसके यहां अतिथि होती है। अब ये बातें सहसा ध्यानमें आने लगी हैं। पहले ही अगर इस प्रवासका यह रहस्य खुलता तो शायद सरकारकी आलोचना कम होती।

असेम्बलीके इस अधिवेशनकी प्रधान कीर्ति जमीन्दारी-उन्मूलन-कानून है। पहले तो इस कानूनको जमीन्दारी प्राप्तिके कानूनका नाम दिया गया था जिससे केवल यह आभास निकलता था कि जमीन्दारोंके बजाय सरकार खुद लगान वसूलने का काम हाथमें ले रही है, क्योंकि जमीन्दारी प्राप्तिमें लगान वसूलनेके अधिकार के सिवा और क्या है? जमीन्दारी बिलसे बिहारी जमीन्दारोंकी कमसे कम हानि होने वाली है फिर भी उसका विरोध कस कर किया जा रहा है इसलिये कि लगान वसूलनेके हकके सिलसिलेमें ही उन्हें अपने रैयतों पर अपना स्वाभीत्व जमानेका मौका मिलता था। रैयत आर्थिक दृष्टिसे तबाह होते थे इस कारण जमीन्दारोंसे दबते थे और उनकी हुकूमत बजा लानेको उन्हें तैयार रहना पड़ता था। लगान वसूलीके हकसे ही वे रैयतोंको दबाकर सलामी, मालगुजारी नजराना, बेदखली एवं बेगार और गुलामी कराते थे। किसी किसी जमीन्दार महाशयके यहां रैयतों द्वारा दिये जाने वाले पदार्थोंका पुश्त दर पुश्तसे चली आती हुई, दर भी नियत है जो अभी भी सम्पूर्ण रूपसे बदला नहीं। जमीन्दार महाशय रुपये सेर घी और इसी प्रकारकी अन्य चीजें पाते थे। उनके खेतोंके लिये सस्ते मजदूर, उनके लिये सस्ते खिदमतगार तथा उनकी स्त्रियोंके लिये सस्ती नौकारिनियां मिल जाती थीं। जो गुलाम इस अर्थम न थे कि उन्हें खरीदा गया हो मगर फिर भी गुलामसे बेहतर न थे। जमीन्दारी जानेके साथ ही ये सुविधायें चली जायेंगी यही सोचकर बिहारके जमीन्दारोंने बिलका विरोध किया था। पर बिल पेश हुआ और पास भी हुआ। जमीन्दारोंकी वकालत करते थे श्री चन्द्रेश्वर नारायण सिंह और श्याम नन्दन सहाय किन्तु अन्तिम दिन उन्होंने स्वीकारा कि वे जमीन्दारोंकी तरफसे अच्छी तरहसे न बोल सके। क्या कोई बाहरी कारण चन्द्रेश्वर बाबूकी इस कमजोर-बयानीका था? नहीं। चन्द्रेश्वर बाबू प्रान्तीय असेम्बलीके सबसे ठोस वक्ता हैं और अगर बिहार असेम्बलीकी कार्यवाही किसीको जाननेकी इच्छा हुई तो चन्द्रेश्वर बाबूका भाषण सुननेके लिये वह अवश्य उद्यत रहता है, चाहे वे बोलें विरोधी ही पक्ष से। सो वही चन्द्रेश्वर बाबू सारयुक्त दलीलोंसे जमीन्दारी-नाशकी उपयोगिताको सिद्ध करनेमें नाकामयाब रहे, वह इस कारण कि वे अपनी दलीलोंमें ताकत नहीं पा रहे थे, और उनका हृदय इस विषयकी आवश्यकतासे अभिज्ञ हो चुका था।

'तोको न मोको' वाली नीति पर चन्द्रेश्वर बाबूके ही सहोदर श्री महेश्वर प्रसाद नारायण सिंहने बिहारकी कौंसिलमें यह प्रस्ताव पेश करनेकी सूचना दी कि लगान कम की जाय। जमीन्दारी गयी तो ठीक, जमीन्दार घाटेमें रहे तो रहे, कमसे कम रैयतोंको भी तो लाभ हो जाय इस प्रस्तावका यह मकसद था। इस चाणक्य नीतिमें यह स्पष्ट परिलक्षित होता था कि महेश्वर बाबू ईसप साहबकी उस लोमड़ीका पार्ट अदा कर रहे हैं जिसने अपनी दुम कट जाने पर लोमड़ियोंकी सभा करके यह प्रस्ताव रखा था कि दुम फजूल सी चीज है, चाहिये कि इसको सबके सब कटवा दें। लोमड़ियां जैसे नहीं मानी, बिहार सरकार भी वैसे ही नहीं मानी और यह भी अफवाह है कि उसने अपने लगान अफसरोंको गुप्त आदेश यह भी दिया कि लगान-कमी-करणके मकदोंमें अधिक तत्परता न दिखायें। सरकारके लिये क्या यह यशकी बात हुई? मगर आज तक बिहार सरकारकी ओरसे न इस आक्षेपका उत्तर दिया गया है और न इससे इनकार ही किया गया है। ज्ञात होता है कि आक्षेप सही है और अगर अनुमान ठीक हो तो इसके लिये कृष्ण बल्लभ बाबू ही बदनाम होंगे।

इस कौंसिलमें पेश होनेसे पहले सरकारने समझ लिया था कि जमीन्दारी प्राप्ति कानूनका नाम देनेमें क्या कमजोरी है। भीतर ही भीतर उसका नाम 'जमीन्दारी उन्मूलन बिल' किया गया। पता नहीं यह कारवाई कानून सम्मत हुई या नहीं। कौंसिलने इसी नामसे यह बिल स्वीकृत किया जिससे सरकारकी नीयत पर अब कोई शंका नहीं उठ सकती।

बिहार असेम्बलीने इस अधिवेशनमें महत्वका और कोई विषय नहीं लिया। शिक्षा, स्वास्थ्य, पंचायत राज आदि विषय यथा स्थितिमें रहे। मद्यनिषेधके विषयमें भी बिहार सरकार दामन बचा कर निकल भागनेकी ही फिक्रमें थी कि एक आदिवासी सदस्य श्री बुन्दीराम उड़ाव ने उसका दामन खींचा। "मेरी सरकार, आप साकी कब तक बनी रहेंगी?" पूछा उंड़ाव महोदयने! आखिर मद्य-निषेध कबसे लागू होगा उस बिहारमें जो 'महात्माजीका सबसे निष्ठावान भक्त था और जहां उस बार सबसे पहले यही चीज अमलमें आयी थी! जवाब दिया अनुग्रह बाबूने कि "होगा, होगा, कुछ दिन और सब्र! अभी भारी तंगदस्ती है।" मगर उड़ांव साहब थे कि अड़ गये और अपनी ओर सभी सरकार परस्तोंको फोड़कर उसके शिर पर छोटा नागपुरमें पहले शराबबन्दी हो, यह तजबीज लाद ही दी। मगर सरकार है, सरकार। उसको "सौ सौ बहाने आते हैं हर बहानेके एक हजार तरीके!" सो किसी न किसी तरह कुछ दिन तो कट ही जायेंगे। जबतक प्रीमियर मंत्रियों एवं पार्लमेन्ट्री सेक्रेटरियों के बंगले भी बन जायेंगे।

असेम्बलीमें बिल तो महत्वके यहीं पेशापास हुए। कई घारे ही रह गये जिनमें देवोत्तर संपत्ति-सुधार, दुधारु पशुओंकी हत्या पर प्रतिबंध आदि मुख्य थे। शायद ये अगले अधिवेशनमें निकल जायेंगे। बिल तो नहीं पर प्रश्नोत्तर खासे हुए और इनसे काफी ज्ञान-वृद्धि हुई। प्रश्नोत्तरके सिलसिलेमें यह भी ज्ञात हुआ कि बिहारमें जाति-पांतिका प्रश्न भीतर-ही-भीतर सुलग रहा है। प्रधान मंत्री श्रीकृष्ण बाबू गरजते तो बहुत हैं पर इस जहरको मारनेकी वैसी अच्छा चेष्टा अभी भी बिहार सरकार नहीं कर रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है। जैसी कि अन्यत्र की जा रही है। आगामी चुनावमें बिहारकी राजनीतिके पर्देकी डोरी होगी जातीयता, यह स्पष्ट है। ल भी उधर बिहार सरकारका मंत्रिमंड पुष्ट नहीं ज्ञात होता। डा० महमूद जाने जानेको होते हैं। अफवाह उड़ती है कि उन्होंने त्याग-पत्र दिया पर वे फिर रुक जाते हैं। एक राजनीतिका विद्यार्थी हैरान होता है कि आखिर इस खिसकनेवालेको कौन रोक-रोक लेता है। डा० महमूद जन-साधारणको खुश नहीं कर सके हैं, इसलिये अगर वे जाना चाहते हैं तो उन्हें जाना चाहिये। मंत्रित्व कोई बहिश्तकी गद्दी नहीं है कि उसके लिये दुनियाकी लानत सही जाय। मगर उन्हें कोई ह जो जाने नहीं देता। इस बार तो इस्तीफेके संबादमें काफी सरगर्मी थी और उनकी जगहपर जो लोग आ सकते थे उनके खूनकी रफ्तार भी बढ़ गयी थी! प्रान्त भी सजग हो गया था यह देखनेको कि पिछड़ी जाति संघवालोंको आन्दोलन करनेका कोई नया मसला तो नहीं हाथ लगता है। मगर सुनते हैं कि महमूद साहब सलामत रह गये और इस तरह मुल्तबी हो गयी बिहार सरकारकी वह जांच कि पिछड़ी जाति संघके बढ़ते हुए प्रभावको देखकर घबराती है कि बे परवाह रहती है।

प्रश्नोत्तरने फिर इस बार छोआकांड का पुनरावतवण किया। पता लगा कि कि सरकारको छोआके परमिटमेंठगाही नहीं गया, लूटा भी अगया। गाड़ीकी गाड़ी छोआ पाकिस्तानको रवाने। अब सरकारको क्या? वह तत्संबंधित व्यक्तियोंकी गर्दन नापनेका उपाय करने जा रही है। प्रश्नोत्तर सब हुए और सभी तरहके हुए मगर एक खास सवाल जो सरकारसे पूछा जाना चाहिये था वह न पूछा गया। प्रान्तमें खाद्यान्नोंकी मंहगी, अतिशय मुनाफाखोरी और पाकिस्तानकी जोअवैध निर्यात होता है उसको रोकनेका क्या उपायसरकार कर रही है यह जनता जानना चाहती है। जन-साधारण खाने-पहननेके विषयमें युद्धकालसे भी अधिक दुखी हो गया है। संतोष इतना ही है कि कंट्रोलके जमानेमें चीजें गायब हो जाती थीं, अब नहीं होती। मिल जाती हैं, महंगी चाहे सस्ती। सरकार क्या इन चीजोंको उचित मूल्यपर बिकवानेका उपाय नहीं कर सकती है। सरकारने इस ओर कुछ ध्यान नहीं दिया है न किसी सदस्यने ही इस ओर उसका ध्यान खींचा इसलिये असेम्बलीमें तजवीजें तो बहुत सी पेश और पास हुई मगर जनताकोकुछ [illegible] ऐसी कोई तजवीज

आई, न कोई चर्चा ही हुई इसकी। इस दृष्टिसे असेम्बलीका यह अधिवेशन जन-साधारणके लिये जरा भी आकर्षित करने वाला न हुआ। हां, विकर्षित अवश्य किया इसने, क्योंकि, इसने सदस्योंका भत्ता दस रुपये रोजसे बढ़ाकर साढे बारह रुपये रोज कर दिया। उधर सरकारी कर्मचारी वृद्धिके लिये चिल्लाते ही रहे और इस चिल्लाहट पर ध्यान दिये जाते हुए न पाकर रिश्वतसे अपनी खीझ कम करते रहे। रिश्वत, महंगी और जातिवाद तथा सरकारकी निस्पृह उदासीन नीति—बस इन्हीं कई शब्दोंमें बिहारका आजकल चित्रित किया जा सकता ह।

बिहार औद्योगिक योजनामें किसीसे पीछे रहनेके लिये तैयार नहीं। धड़ाधड़ मिलें खुल रही हैं। जमींदारी-नाशके बाद जमींदार तो नष्ट नहीं होंगे? वे अब पूंजीपति बननेका प्रयास कर रहे हैं। सबसे पहले महाराजा दरभंगा हैं। वे दरभंगेमें कई मिलें खोलने जा रहे हैं। खबर है कि एक सूती मिलभी खोलेंगे और इन्हींसब उद्याग-धंधोंमें वे अपने उन सभी कर्मचारियोंको लगा देंगे जो उनकी जमींदारी स समाप्तिपर बेकार हो जानेको थे। अन्य जमींदार भी ऐसी-ऐसी विभिन्न योजनाएं मिलजुलकर बना रहे हैं। जमींदारी जानेसे किसान-आन्दोलन कमजोर पड़ गया है। पर मजदूर आन्दोलन बढ़ती पर है। यह और बढ़ेगा। पटनेमें इस समय फिल्म-वितरक संस्थाओंका जोर है। हर सड़कमें एकाधका आफिस खुल गया है। जो अपनी तस्वीर तो कम ही बनाते हैं, अन्य स्थानोंपर बनी हुई तस्वीरें लाकर उसे प्रदर्शित करा-कर भाड़ा कमाते हैं। खैर, बिहार इस व्यवसायमें भी आगे बढ़ा। बिहारकी दूसरी पनपती हुई जिविका लारी-बसोंकी सर्विस है। सरकारने प्रान्तके कोने-कोनेमें यातायात की सुविधा बढ़ानेके विचारसे इसे जारी किया था, पर फिलहाल तो इससे परेशानी बढ़ ही गयी है। सड़कें बहुत खराब हो गयी हैं इनके मारे। तमाशा इस संबंधमें यह है कि लारियांतो चलें डिस्ट्रिक्ट बोर्डकी सड़कोंपर और सड़कें उसकी खराब हों पर लारियोंका लैसंस देते हैं जिला मजिस्ट्रेट। मजिस्ट्रेट साहबको सड़कोंका क्या पता। लैसंस दे दिए जानेके बाद कभी-कभी तो सड़कोंकी खराबी और कभी-कभी उस खराबीके कारण लारियोंकी दुर्दशा — इन दो वजहोंसे यातयात अनिश्चित ही हो गया है।

बिहारके सभी नगरोंमें मकानोंकी [illegible] पंजाबीऔर सिंधी शरणार्थी पहुंच गये हैं। कहीं-कहीं हैदराबादी भी आने लगे हैं इन लोगोंने मकानोंका भाड़ा चौगुना कर दिया है अवैध निर्यात भी इनके कारण चौगुना हो गया है। अन्तर्प्रान्तीय सम्पर्क रखनेके कारण ये इस विषयमें विशेष सक्षम दीख पड़ रहे हैं। शरणार्थी होनेके नाते, शोर-गुल मचाकर, रो-गाकर इन्होंने सरकारसे सुभीते भी बहुत पा लिये हैं जिनका दुरुपयोग भी खूब हो रहा है। कभी-कभी शान्ति व्यवस्था भी इनके कारण खतरेमें पड़ने लगती है। चोरबाजारी और अतिरिक्त मुनाफाखोरीके नये साहसी वाहक मिल गये हैं। बिहारमें फिर पंजाबकी नकल पर नये प्रकारके फैशनकी नयीबाढ़ आयी है। सलवार सीनेके लिये अब हर दर्जीको तकाजे हो रहे हैं। लिपस्टिक, रूज एवं अन्य प्रसाधन द्रव्योंकी बिक्री फिर बढ़ी है। और नारी स्वच्छन्दताकी भावनाको नया बल मिल गया है।

पटनाकी तरक्की होने को है और मोकामाके बीच गंगापर पुल बनाये जानेकी चर्चा जोरोंसे है। जनताको यह चर्चा अच्छी लग रही है। इससे प्रान्तके जीवनमें नयी सरगर्मी पैदा होगी। प्रान्तमें नये-नये कई कालेज खुले ही थे अब नये-नये महाकालेज विश्वविद्यालय स्थापित होनेकी भरपूर चेष्टा हो रही है। वैशाली विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुरमें बनेगा मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगामें। ये विश्वविद्यालय स्थापित होकर ग्रेजुएट यानी नौकरीभिक्षुक पैदा करनेका काम ही करेंगे या और कुछ पता नहीं। शायद विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिये प्रयत्न करनेवाले अभी केवल अपने नामके लिये ही कोशिश किये जा रहे हैं, काम पीछे होगा ही। आदर्श हैं वर्तमान कालेज और विश्वविद्यालय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वामित्र

# श्रीमती नायडूका अभिनंदन

[ हैदराबाद (हिन्द) , ४ जून । युक्त-प्रान्तकी गवर्नर श्री मती सरोजनी नायडू को १३ फरवरी, १९४९ को उनके ७०वें जन्म-दिवसपर एक अभिनन्दन ग्रंथ समर्पित किया जायगा । इस उद्देश्यके लिये एक समिति नियुक्त की गयी है, जिसके सदस्य राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद, श्री आसफअली तथा डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् हैं ।

इस ग्रंथमें श्रीमती नायडू संबंधी उन लेखोंका संकलन होगा जो विभिन्न सुविख्यात लेखकों द्वारा लिखे जायेंगे । इस ग्रंथके संपादक मंडलने , जिसमें डा० रमण, प्रो० अमरनाथ झा, श्रीमुल्कराज आनन्द और श्री बी० एम० अग्रवाल हैं, लेखकोंसे लेख आमंत्रित किये हैं ।


## अत्यधिक सस्ती कीमतों में

ऊंचे दर्जे की ठीक समय देने वाली,आधुनिक आकार की घड़ियां । प्रत्येक घड़ी की गारण्टी २ साल । गोल या चौकोर आकार की क्रोमियम केस १८), सुपीरियर २०), बेस्ट २२), सेंटर सेकंड २४) रेक्टेंगुलर क्रोमियम केस ४०), १५ जुवेल ६०) रोल्ड गोल्ड ५५), १५ जुएलकी ८०) । डाकखर्च माफ ।

**प्रेमशङ्कर एण्ड कं०**
(V.C.) ऐशबाग, लखनऊ ।

## प्रतिसप्ताह ६आ. खर्च करने पर भी ऐसे क्यों दिखते हैं ?

● अधिकांश व्यक्ति हफ्ते में नाई से केवल तीन ही हजामत बना सकते हैं । इसमें ६ आना तक खर्च हो जाता है और फिर भी वे सात दिनों में से चार दिन इस व्यक्ति की तरह दिखते हैं—हजामतविहीन और खुरदरे !

## पैसे बचाते हुये आप ऐसे कब दिखेंगे ?

● बुद्धिमान व्यक्ति जो प्रतिदिन स्वयं "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड से हजामत बनाता है उतनी ही कीमत में अनेक हजामतें बना लेता है जितने में दूसरा व्यक्ति तीन बनाता है । इन ब्लेडों का एक पैकेट हफ्तों चलता है ।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड तीन स्तरों में सर्वश्रेष्ठ इस्पात से बनाये जाते हैं ! कोई भी दूसरे ब्लेड न तो इतने चलते हैं और न इतनी चिकनी हजामत बनाते हैं ।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

**7 o'clock**
**SLOTTED BLADES**

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस
ब्लेड जो ज्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं

पांच के ६ आने
१० के १२ आने


७४ चमनला स्ट्रीट स्थित इलेस्ट्रेटेड इंडिया प्रेसमें गोविन्द चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGD. NO. C 2229.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रुमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और मोनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २


# प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थ स्त्री हूं। विवाहके एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं सिल-कोरिया, (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्मके दुष्ट रोगोंमें फंस गई थी। मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्दके साथ, जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिकजानेकेकारण मैंप्रतिदिनकमजोर होती जा रही थी, चेहरेका रंग पीला पड़ गया था, घर के काम काम से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेवने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराई, परन्तु किसी से रत्तीभर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य सेएकसन्यासीमहाराजहमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है जो इस आयुमें ही चेहरेका रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पतिको अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिनके सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगोंका नाश हो गया। ईश्वर की कृपासे अब मैं कई बच्चोंकी मां हूं। मैंने इस नुस्खेसे अपनी सैकड़ों बहनोंको अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधिको अपनी दुःखी बहनोंकी भलाईके लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वरने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहनके लिये १५ दिनकीऔषधि तैयार करने पर २।।।=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोगमें फंस गई होतो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथसे औषधि बना कर बी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यहमेराप्रण है कि मैं किसी बहन से दवा की कीमत अपनी असल लागतसे एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

जरूरी सूचना —मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है इस लिये कोई बहन मुझे किसी और रोगकी दवाईके लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल नं० ५१ बुडलाडा जि० हिसार, पंजाब।


WHY BUY A PEN WORTH RS. 85/- or 100/-

When you can get a most similar U. S. A. DELUXE Fountain Pen of world-wide reputation at thrilling low price RS. 10/- by V. P. P. at your door with a PARKER ink bottle and an extra 14 ct. nib, Not more than one or out of Hindusthan orders will be accepted. Very limited stock. Order today to avoid disappointment,

DELUXE 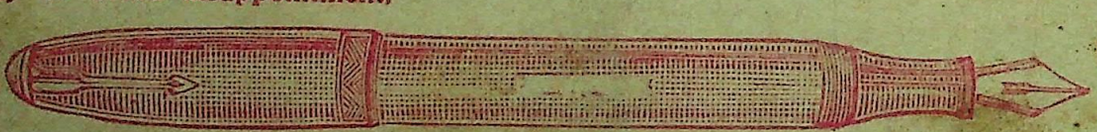 Rs. 10/- Post free

- Shape very attractive
- Colour black or other
- Pocket Clip Rolled Gold

Rs. 10

- Writes very smoothly & freely
- Dries as Writes
- Nib semi gold life guarantee
- Self ink filling very easy takes 15 seconds.

Apply: ORIENT TRADERS, V.W. BALDEO BUILDINGS, JHANSI, U.P.


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अन्तर्राष्ट्रीय

## फिलस्तीन-शैतानका आंत

शैतानकी आंतकी तरह पता नहीं चलता कि फिलस्तीनकी समस्याका कभी कहीं अन्त है या नहीं। विभाजनकी योजना के संबंधमें अमेरिकाने जो रुख आज अख्तियार किया है यदि पहले ही दूरंदेशीसे वह काम लेता तो स्थिति आज जैसी भयंकर न होती। फिलस्तीनका भविष्य क्या होगा यह तो निश्चय पूर्वक अभी कह सकना सहज ही नहीं है, पर निकट भविष्यमें हिंसा जोर पकड़ेगी, यह साफ दिखायी दे रहा है यहूदी, यद्यपि कुछ हतप्रभसे हो गये हैं किंतु इनमें इसकी प्रतिक्रिया प्रतिहिंसाका रूप ले रही है और वे यह कह रहे हैं कि हमें अपनी ताकतपर भरोसा है यहूदी राज्य बन कर रहेगा। ताकत पर भरोसा, इसका अर्थ समझानेकी आवश्यकता शायद नहीं है। १५ मई को ब्रिटिश शासनकी अन्तिम अवधि है और ब्रिटिश सरकारने पार्लमेंट की स्वीकृतिके लिये कामन सभामें बिल पेश कर दिया है। हाउसके नेता मि० मारिसनने फिलस्तीनमें ब्रिटिशका अन्त करनेका बिल पार्लमेंटमें पेश करते हुए कहा कि इस संबंध म अमरिकाके रुख बदल जाने से हमारी स्थितिमें कोई अन्तर नहीं होगा। ब्रिटेन और अमेरिकाके इस रुखसे रूस निश्चय ही फायदा उठाना चाहेगा और यहूदियोंको उसकी शह मिलेगीऐसा समझना कदाचित आसंगत न होगा। फिलस्तीनकी मौजूदा स्थितिसे एक बात और निकलती है, जो यह है कि अरब और यहूदी दोनों यह समझने लगे हैं कि उनके भाग्यका फैसला उनकी अपनी ताकत कर सकती है, किसी के सहारे अब काम नहीं चलता।

## ट्रीएस्टका भविष्य

रूस और अमेरिकाका विरोध प्रत्येक क्षेत्रमें प्रकट हो रहा है। यह विरोध कब युद्धका रूप धारण कर लेगा, आज सर्वत्र यही चर्चा है। इटालीके साथ हुई संधिपर पुनः विचार और ट्रीएस्ट इटलीको दे देने का जो प्रस्ताव ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका ने रखा है युगोस्लावियाने उसका जवर्दस्त प्रतिवाद किया है। युगोस्लाव परराष्ट्र सचिव मि० सिमिकने उलटे यह अभियोग लगाया है कि ये तीनों राष्ट्र इटली और युगोस्लावियाके समझौतेको असंभव बनाने में लगे हैं। इस प्रस्तावसे एक बात और अधिक स्पष्ट हो गयी कि अब पांच महान दो गुटोंमें विभक्त हो गये। किसी मामलेमें कोई नया कदम उठानेके पहले एक दूसरेसे मामले पर विचार विनिमयकी आवश्यकता हीं समझी जाती है। इस मामलेमें ब्रिटेन फ्रांस और अमेरिका के खिलाफ रूसका यह आरोप है कि इटालीकी संधि रूससे सलाह किये विना ही बदलनेकी कुचेष्टा के पीछे पश्चिमी राष्ट्रोंकी दुरभिय संधिका कर रही है। आगामी महीने इटालीका साधारण प्रस्ताव इटालीके प्रतिगामी दलों की ताकत बढ़ानेके इरादेसे सामने लाया है। युगोस्लाव सरकारने उक्त प्रस्तावके उत्तर में यह सुझाव दिया है कि गोरिजियाके बदले ट्रीएस्ट इटालीको दिया जा सकता है। पेरिस संधि सम्मेलनके सामने यह प्रश्न कई महीने पहले ही लाया गया था कि गोरिजिया युगोस्लावकी सीमामें रखा जाये या इटाली में। अमेरिकाका कहना है कि युगोस्लाविया के इस सुझावका अर्थ यह है कि वह जो चहता है उसके लिये ऐसी वस्तु देता है अर्थात् गोरिजियाके बदले ट्रीएस्ट नहीं है। स्थिति बिगड़ रही है। कोशिशें सुधारनेकी नहीं बिगाड़नेकी ही हो रही हैं।

## बर्लिनका संयुक्त नियंत्रण

युद्धोपरांत जर्मनी ब्रिटिश, फ्रेंच, अमेरिकन और सोवियट–चार अंचलोंमें विभक्त किया गया था। इन चारों अंचलोंमें समान विषयोंपर नियंत्रणके लिये उक्त चारों राष्ट्रोंकी एक संयुक्त नियंत्रण समिति है, किंतु रूसने अनिश्चित कालके लिये इस समितिको स्थगित कर दिया है। गत सप्ताह शनिवारको समितिकी बैठकसे सोवियट प्रतिनिधिके उठकर चले आनेका परिणाम यह हुआ कि बर्लिनमें इस समय सर्वोच्च नियंत्रण समिति कोई काम कर सकनेकी स्थितिमें नहीं रह गयी। जर्मनीकी ब्रिटिश, फ्रेंच और अमेरिकन फौजी सरकारोंने रूससे यह कैफियत तलब की है कि 'चार महान जर्मन नियंत्रण समिति' से रूसी प्रतिनिधि के उठ जानेका क्या अर्थ समझा जाय? यह समिति रहेगी या नहीं इस प्रश्नका फैसला रूसके उत्तरपर निर्भर करता है।

---

**लन्दनमें प्रथम भारतीय जहाज––**

लन्दन बन्दरगाहमें प्रथम बार भारतीय संघके झण्डेको एक भारतीय जहाज पर लहराते हुए देखा गया। यह सिन्धिया कम्पनीका 'जलबाला' नामक जहाज है। विभाजनके बाद प्रथम बार ही एक भारतीय जहाज यहां देखा गया है। इस जहाजमें भारतसे बहुत-सा सामान लाया गया है। यह भारत अप्रैलके मध्य तक लौटेगा। यह जहाज ब्रिटेनमें बना है और सिन्धिया कम्पनीने इसे खरीद लिया है। अभी तक सिन्धिया कम्पनी भारतीय समुद्री तट, बंगालकी खाड़ी तथा अमेरिकामें ही सामान अपने जहाजोंमें भेजती थी। अब अब "जल बाला" ने ब्रिटेन तक व्यापार करना आरंभ कर दिया है। निकट भविष्यमें ही आशा की जाती है कि तिरंगा ध्वज ब्रिटेन और निकटवर्ती प्रदेशोंमें चक्कर लगायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चयनिका

**महानाशकारी बादल--**

न्यूयार्कमें विमान निर्माता मि० ग्लेन एल० मार्टिनने बताया है कि अमेरिकाने एक रेडियो प्रवाहित बादलका अविष्कार किया है और वह बादल जिसको छू जायगा, उसकी तत्काल मृत्यु हो जायगी । परमाणु बमकी अपेक्षा यह और भी सुविस्तृत इलाके पर विनाश कार्य कर सकता है और जिसके सम्पर्कमें यह आयेगा,उसको अनिश्चित काल के लिये रेडियो प्रवाहित बना दे सकता है । इस बादलको हवासे फैलाया जायगा और इसके लिए आवहवाकी अवस्थाका निश्चित ज्ञान आवश्यक है, अन्यथा यह वापस लौटकर अपने चालकको ही आघात कर सकता है । अमेरिकाने ऐसे परमाणु बमका भी निर्माण किया है, जो जापान पर गिराये गये परमाणु बम की अपेक्षा अत्यधिक शक्तिशाली और विनाशक है। समुद्रमें जहाजको स्वयं ढूंढ कर बिनष्ट कर देनेके लिये अमेरिकाने स्वयं चालित बम का भी निर्माण किया है । बीच महा सागरके जहाजोंको भी इस प्रकार जलमग्न कर दिया जा सकता है, किन्तु इसके पूर्व अपने सभी जहाजोंको हटा लेना आवश्यक होगा । मि० मार्टिनने यह भी बताया कि अमेरिका ने ऐसे कीटाणु अस्त्रोंका भी अविष्कार किया है, जो कुछ काल तक प्रभावशून्य रहेंगे, किन्तु उसके बाद लोगोंको ऐसा रोग हो जायगा, जिससे वे कभी भी छुटकारा नहीं पा सकेंगे । इन आधुनिकतम शस्त्रों से ६० दिनोंके अन्दर युद्धकी अंतिम गति निर्द्धारित हो जायगी । इसके बाद शत्रुको परास्त कर देनेके संबंधमें अपनी नीतिके अनुसार निर्णय किया जायगा ।।

**समाजसेवी कार्यकर्त्रीको सजा--**

बम्बईकी सुविख्यात समाज सेवी कार्यकत्री और म्युनिसिपल कौंसिलर डा० (श्रीमती) मालिनी बाई सुखतनकरने अपने मकानमें एक फ्लाट १० हजार रुपये 'पगड़ी' स्वरूप लेकर भाड़ा दिया था । इसके लिये उनको दो महीनेकी सादी कैद और एक हजार रुपये जुर्मानेकी सजा दी गयी है । सजा मिलनेके पूर्व श्रीमती सुखतनकरके वकीलने उनकी सामाजिक स्थिति और समाज सेवाओंका उल्लेख करते हुए जब क्षमा दानकी प्रार्थना की तो सरकारी वकील ने विरोध कर कहा कि अभियुक्ता की समाज सेवाओंको यद्यपि भुलाया नहीं जा सकता फिर भी कानूनकी नजरोंमें सभी व्यक्तियोंकी स्थिति एक समान है । औरअपराधी चाहे कोई भी हो,अवश्य दण्डित होगा । इस्तगासेके अनुसार श्री मतीसुखतनकरने एक डा० से उस फ्लैटके लिये १० हजार रुपये पगड़ी स्वरूप चाहा था । वह रकम ४ जुलाई १९४७ कोउन्होंने ली थी । पुलिसने उनके मकानकी कुछ देर बाद तलाशी ली किन्तु वे रुपये बरामद नहीं हुए । उस रकमको तत्क्षण दो बैंकोंमें जमा कर दिया गया था । अभियुक्ताने अपनेको निर्दोष बताया । श्रीमती सुखतनकरको जमानतपर रिहा किया गया है और वह हाईकोर्टमें अपील करने जा रही हैं ।

**भारतके राष्ट्रदूत व प्रतिनिधि--**

भारत सरकार शीघ्र ही ट्रांसजोर्डन, मारीसस और ब्राजीलके साथ प्रत्यक्ष कूटनीतिक सम्पर्क स्थापित करने जा रही है । ब्राजीलमे भारतके दूतके रूपमें श्री एम० आर० मसानीका नाम ब्राजील सरकारके समक्ष अनुमोदनके लिये पेश किया जा चुका है । भारतका अब २२ देशोंके साथ प्रत्यक्ष कूटनीतिक सम्बन्ध कायम है । अफगानिस्तान और तुर्कीमें राष्ट्रदूतोंकी नियुक्ति की घोषणा की जा चुकी है । विदेशोंमें भारत के प्रतिनिधियोंमें सात राष्ट्रदूत, एक असाधारण प्रतिनिधि (स्वीजरलैण्ड में) एक भारतीय सम्पर्क प्रतिनिधिमण्डलका नेता (जापानमें) तीन व्यापार दूत, पांच हाई कमिश्नर, दो कौंसिल जनरल, दो कौंसुल और एक विशेष प्रतिनिधि (मलायामें) हैं । अन्य सभी देशोंमें ब्रिटेन द्वारा भारतका प्रतिनिधित्व किया जाता

**चार हजार वर्ष पुरानी अर्थी--**

देहरादूनकी वन्य अनुसंधानशालामें एक मिट्टीके डले पर एक लकड़ीके तख्तेका चिन्ह है जो चार हजार पूर्व दफनायी हुथी किसी रानीकी अर्थीका भाग था । बड़े धैर्य और सावधानीके साथ काष्ठके तन्तुओंको अलग किया गया है । परीक्षण यन्त्रों द्वारा यह अनुमान किया गया है कि राजकीय अर्थीका कमसे कम एक भाग पंजाब प्रदेशमें उत्पन्न किसी वृक्ष विशेष की लकड़ीका बना हुआ था ।

**प्रति वर्ष दो बच्चे--**

अमेरिकामें श्रीमती जान वाल्सने प्रतिवर्ष अक्टूबरमें दो जुडवा बच्चोंको जन्म देकर एक नया रेकार्ड कायम किया है । पिछले तीन वर्षोंसे प्रति वर्ष वह अक्टूबरमें दो दो बच्चे जनती आयी हैं । आगामी अक्टूबरमें भी उनके दो बच्चे पैदा होने की आशा की जाती है ।

**रहस्यमय प्रकाशमान गोले--**

इटली और स्वीजरलैण्डमें गत सप्ताह अनेक प्रकाशमान गोले अत्यन्त तीव्र गति से आकाश मार्गसे गुजरते हुए दिखायी पड़े हैं । फ्लारेन्सकी खबर है कि एड्रियाटिककी दिशासे केरारा पर प्रातःकाल ४ बजे सात प्रकाशमान गोले अत्यन्त तेजीसे उड़ते हुए गुजरे । उक्त गोले दक्षिण पश्चिम दिशाको बढ़ते हुए दिखायी पड़े उनसे अत्यन्त भीषण शब्द हो रहा था । टूरिन और रोमके बीच रेलगाड़ीसे यात्रा करते समय रायटरके एक संवाददाताने अपनी आंखोंसे एक ऐसे ही प्रकाशमान गोलेको देखा । उसको वह गोला एक धूमकेतुके समान दिखायी पड़ा । स्वीजरलैण्डके वीनफेल्डेन गांवकी जनताने दिनके के तीसरे पहर एक विशाल प्रकाशमान गोलेको आकाश मार्गसे दक्षिण दिशाको अग्रसर होते देखा । मध्य स्वीजरलैण्डके एक गांवपर भी ऐसा ही एक गोला पश्चिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर हित बस जिनके मन माहीं ॥
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

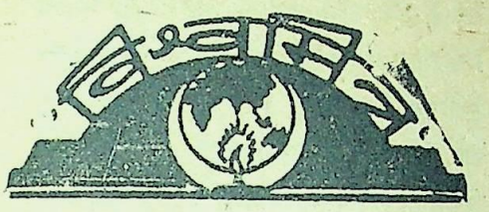


# भारतकी औद्योगिक नीति

यह आवश्यक है कि भारतकी औद्योगिक नीति निर्धारित हो जानी चाहिये। इस संबंधमें तरह तरहकी सहज और उत्पन्न की गयी आशंकाएं देशके स्वस्थ विकास और उन्नतिके लिये बाधक हैं। हर्षकी बात है कि भारत सरकारने इस आवश्यकताको महसूस किया है और ७ अप्रैलको वह अपनी आर्थिक और औद्योगिक नीति पार्लमेंटके सामनें उपस्थित करने जा रही है। यह नीति क्या होगी इसका आभास कांग्रेस द्वारा नियुक्त आर्थिक योजना समितिकी सिफारिशोंसे हमें कुछ मिल चुका है। कांग्रेस समितिने यह सिद्धांत स्थिर किया है कि देश के तमाम मौलिक और मुख्य उद्योगधंधे राष्ट्रीय नियंत्रणमें लाये जायें। ऐसा समझा जाता है कि भारत सरकारकी आर्थिक नीतिका अन्तिम लक्ष्य तो यही रहेगा किंतु फिलहाल तात्कालिक आवश्यकताका ध्यान रखते हुए सरकार उत्पादन बढ़ानेकी समस्या को तरजीह देना चाहती है। इसलिये वह आमूल राष्ट्रीय करणकी योजना तत्काल कार्यमें परिणत करेगी, इसकी संभावना कम है और यह संकेत पं० नेहरू के इस वक्तव्यसे मिल चुका है कि "जिनका राष्ट्रीय करण नितान्त आवश्यक है उनको छोड़कर अन्य मौजूदा उद्योगधंधोंके राष्ट्रीयकरणमें हम अपनी शक्ति और साधन नष्ट नहीं करना चाहते, हम अपने साधनोंको अन्य कतिपय नये उद्योगधंधोंमें लगायेंगे।" किंतु कौन धंधे व्यक्तिगत नियंत्रणमें रहेंगे और कौन राज्य नियंत्रणमें इसका स्पष्टीकरण कर दिया जायेगा। भारत सरकार ऐसा समझती है कि उत्पादन बढ़ानेके लिए उद्योग पतियोंको सन्तुष्ट रखना आवश्यक है और हमारा ऐसा ख्याल है कि इसीलिये ही यह आवश्यक समझा गया कि सरकारकी औद्योगिक नीतिकी घोषणा जितना शीघ्र संभव हो कर दी जाये ताकि उद्योगपति यह न समझे कि भारत सरकारकी "दो-आवाजें" हैं। प्रश्न यह है कि क्या एक तरफा आश्वासनसे उत्पादन बढ़ानेका प्रश्न हल हो जायेगा। मौजूदा उद्योगधंधोंका राष्ट्रीय करण तो होगा ही नहीं, यह आश्वासन भी दिया जायेगा कि राज्य नियंत्रणकी परिधि में आनेवाले जो उद्योगधंधों पहले ही से व्यक्तिगत संचालनमें चल रहे हैं उनमें भी कोई हस्तक्षेप नहीं होगा, उलटे उनके विकासके लिये सरकारकी ओरसे पूरी सुविधाएं दी जायेंगी। हम समझते हैं कि उत्पादनके लिये आवश्यक श्रमको भी सरकारकी ओरसे ऐसा ही आश्वासन दिया जाना चाहिये। उद्योगधंधेके लाभ पर यदि किसी तरहका नियंत्रण न रखा जायेगा, दूसरे शब्दोंमें श्रमिकोंके साथ साथ जन साधारणकी उद्योगपतियों द्वारा लूटका रास्ता बन्द न किया जायेगा तो सीमित दायरेमें सन्तोष भले ही दिखायी दे किन्तु असंतोषका दायरा इतना व्यापक और विस्तीर्ण होगा कि सरकारको उसे दबानेके लिये फासिष्ट उपायोंकी शरण लेनेके सिवा दूसरा रास्ता नहीं रहेगा। देशके तमाम प्रतिगामी एवं प्रतिक्रिया शील शक्तियां इस तरहकी स्थितिको अपने लिये स्वर्ण सुयोग समझकर सदा ऐसी स्थिति उत्पन्न करनेकी ताकमें रहती हैं। यह काम हो रहा है। वर्तमान लोकतंत्रीय जन सरकार को बदल कर उसके स्थानमें फासिस्ट पूंजीवादी सत्ता कायम करनेके षड्यंत्रको विफल बनानेमें सहायक अर्थ नीतिका आधार समाजवाद ही हो सकता है। देशके बड़े बड़े उद्योगपति इसे समझते हैं और इसी लिये गांधी भक्त बनकर पहले वे कांग्रेस में घुसे और अब समाजवादी बन रहे हैं। इन समाजवादी उद्योगपतियोंसे सावधान रहनेकी आज सब समय से अधिक आवश्यकता है, नेहरू सरकार इसे नहीं समझती, ऐसी बात नहीं है। किंतु जिन परिस्थितियों और प्रसंगोंमें सरकारका संगठन हुआ है उनको देखते हुए ऊपर कही गयी स्थितिका उत्पन्न होना अनिवार्य है, यदि जनसाधारण स्वयं सतर्क न रहेंगे और प्रतिगामियों की चालोंको व्यर्थ करनेके लिये किसी आकस्मिक संभावनाका सामना करनेको सदा प्रस्तुत न रहेंगे। यह सतर्कता कांग्रेस का काम है। प्रश्न यह होता है कि वर्तमान रूपमें क्या कांग्रेस इस उत्तरदायित्वको ले सकती है। कांग्रेस संगठनमें इस समय सभी तरहके सुविधावादी एवं प्रतिगामी घुस गये हैं। कांग्रेसको किसानों और श्रमिकोंका संगठन बना कर ही हम बढ़ती हुई प्रतिक्रियाको रोक सकते हैं। सरकारकी आर्थिक नीतिको सफल तभी बनाया जा सकता है जब कांग्रेसके भीतर जो अनाचार आ गया है उसे जड़से मिटाया जायेगा और कांग्रेसकी शक्ति देशके हित साधनमें लगायी जायेगी।

# बंगाल किधर ?

वैसे तो भारतीय और पाकिस्तानी दोनों बंगालकी हालत इस समय शोचनीय है और यहांके नागरिकोंका जीवन अतिशय कष्टप्रद है, किन्तु हम यहां पश्चिम बंगाल की चर्चा कर रहे हैं। देशबंधुदासके निधन के बाद नेतृत्वकी लड़ाईने बंगालको दलबंदी के ऐसे दलदलमें फंसाया कि उत्तरोत्तर वह दुर्बलताके गर्तमें धंसता ही चला गया। आज बंगाल नेता विहीन हो रहा है! प्रांतीय कांग्रेसका संगठन जिन लोगोंके हाथमें है उनमें नेतृत्व के लिये जिन शक्तियों और गुणोंकी आवश्यकता होती है वे पर्याप्त मात्रामें नहीं हैं यदि यह कहा जाये तो किंचित अत्युक्ति न होगी। यही कारण है कि यहांका सार्वजनिक जीवन सेवा, आत्म त्याग और सहिष्णुताका क्षेत्र न रह कर छल-प्रपंच, दुरभि-संधियोंका अखाड़ा बना दिया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसका जो परिणाम होना चाहिये था वह स्पष्ट दिखायी देने लगा है। साम्प्रदायिकताके साथ साथ प्रांतीयताकी भावना को व्यापक बनाया जा रहा है। कांग्रेसके उच्च सिद्धांतों और आदर्शोंके अनुसार चल न सकने वाले व्यक्तियोंको नेतृत्व बनाये रखनेके लिए कोई सहारा तो चाहिये। डा० प्रफुल्लचन्द्र घोषके मंत्रिमंडलमें अनाचार का प्रतिकार करनेका साहस और नैतिकता दोनों गुण पाये जाते थे। फलतः यहांके नेतृ स्थानीय व्यक्तियोंने इसे अपनी सुविधाके मार्ग में वाधक समझा उसे उलटनेमें जिन कुत्सित उपायोंसे काम लिया गया उनकी प्रतिक्रिया यह हुई कि प्रांतमें अनैतिकता स्वैराचार बढ़ रहा है। कानून और व्यवस्थाके प्रति सम्मानकी भावना का स्थान उच्छृंखलता और स्वेच्छाचार ले रहा है और सरकारी कर्मचारी खास कर पुलिस विभागसे इसे प्रोत्साहन मिल रहा है। अधिकांश सरकारी कर्मचारियोंके भीतर कांग्रेसी शासनके प्रति आस्था नहीं है और प्रांतीयताका भाव फैलानेमें वे सबसे अधिक सहायक है। कांग्रेस विरोधी भावनाएं जोर पकड़ती जा रही है और प्रांत का दुर्वल एवं अशक्त नेतृत्व इसका प्रतिकार करनेमें असमर्थ है। होलीके अवसर पर कलकत्तेमें दिखायी गयी उच्छंखलता, अशिष्टता और अभद्रता उस भयंकर विस्फोटका मात्र सूक्ष्म संकेत है जो अराजकताके रूपमें फूटने वाला है। होलीके अवसर पर कलकत्तेमें यह दिखाया गया है कि राष्ट्रपतिके आदेश की कैसी उपेक्षा एवं असम्मान किया जाता है। प्रांतीय कांग्रेस संगठनकी दुर्वलता इस स्थितिके लिये जिम्मेदार है। राष्ट्रपतिका आदेश निकल जाने पर भी कि इस वार राष्ट्रपिताके शोकमें होली न मनायी जाये, प्रांतीय कांग्रेस एवं प्रांतकी सरकार दोनों की ही ओरसे इस बातका कोई प्रयत्न नहीं किया गया कि राष्ट्रपतिके आदेशका सम्मान किया जाये। यह स्थिति काले भविष्यकी सूचक है। हम अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और नेहरू सरकार दोनोंका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं। "यह नेहरूका देश नहीं है" "यह पटेलका देश नहीं है" इस तरह की भावना आज बंगालके घर घरमें, छोटेसे बड़े तक व्याप्त दिखायी दे रही है। यह प्रांतीयता साम्प्रदायिकता से भी अधिक भयंकर है। हमें भय है कि प्रांत की सरकार इस स्थितिका सामना करने में, नेतृत्वखो देनेकी आशंकासे, इतस्ततः करेगी। बंगाल भारतीय संघका एक अंग है। यहांकी प्रतिक्रिया यहीं तक सीमित नहीं रहेगी। दुष्टाभिलाषी किसी न किस तरह उपद्रव कराने पर तुले हुए हैं। अतएव भारत सरकारका कर्त्तव्य है कि सम्पूर्ण देशमें शांति का ध्यान रख कर वह इस मामलेमें उचित छानबीन करे।

## रूस युद्ध नहीं चाहता—

एक ही पीढ़ी (पुश्त) में दो दो विश्व युद्धोंने मानव जातिका संहार किया, शान्तिपूर्ण प्रगतिका मार्ग अवरुद्ध किया एवं लोकतंत्रीय जीवनके सामने घोर संकट उपस्थित कर दिया है। सभ्यता और मानवताका रूप विकृत और विनष्ट किया जा रहा है। इस ह्रासका क्रम जारी है। यह बात सही है कि संसार के बहु संख्यक आदमी युद्ध नहीं चाहते शांतिके साथ काम करना चाहते हैं किन्तु उनको कतिपय व्यक्तियोंके स्वार्थ या महत्वाकांक्षाएं जबर्दस्ती युद्धमें घसीट लाती हैं। आज फिर फिर वही चर्चा चल रही है। पश्चिमी राष्ट्रोंके नेता अमेरिका और ब्रिटेन रूसको दोषी ठहरा रहे हैं। उधर रूस युद्धकी स्थिति उत्पन्न करनेकी जिम्मेदारी अमेरिका और ब्रिटेन पर लाद रहा हैं। वह कहता है कि रूस अमेरिका और दूनियाके साथ मिल कर शांतिके साथ रहना चाहता है। अमेरिका स्थित रूसी राजदूत मो० पन्यूशकिनने अपनी १६ सौ शब्दों की वक्तृतामें ग्यारह बार यह दुहराया कि रूस अमेरिका और दुनियाके साथ शांतिपूर्वक रहना चाहता है। इस प्रसंगमें एक वात स्मरणीय है कि अमेरिका इस समय किसी वजहसे हो संसारके तमाम प्रतिगामी तत्वोंको प्रोत्साहन दे रहा है। पश्चिमी यूरोप एवं अन्यदेशोंके यह शक्तियां पिछले तीन वर्षोंके भीतर कैसे इतना प्रवल पड़ीं, इसका जबाव अमेरिका और ब्रिटेनके पास नहीं है। इन दोनोंका नेतृत्व इस दृष्टिसे अवश्य ही सदोष समझा जायेगा। हमारा ख्याल है कि संसारको तीसरे युद्धकी विभीषिकासे अब भी बचाया जा सकता है वशर्ते कि अमरिका और ब्रिटेनका नेतृत्व बदला जा सके। रूसके समाचार पत्रोंकाकहना है कि अबभी सोवियट रूस और अमेरिका के सहयोगसे युद्ध रोका जा सकता है किन्तु यह काम ट्रूमैन और मार्शलके रहसे संभव नहीं है। इस कथनमें तथ्य है। इन दोनों की योजनाओंने संयुक्त राष्ट्र संघको दुर्वल एवं रूसको अन्य मित्र राष्ट्रोंसे अधिक दूर किया है। ऐसी हालतमें यदि इस समय सही रास्ता न पकड़ा गया तो युद्ध अवश्यम्भावी है। ब्रिटिश पार्लमेण्टके १६ सदस्योंने इसी बातका ध्यान रख कर यह प्रस्ताव पार्लमेण्टके सामने भेजा है। कि "जितना शीघ्र संभव हो मार्शल स्टालिन प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन, मि० एटली एवं फील्ड मार्शल स्मटस, लार्ड माउण्ट बैटन जैसे ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलके राजनेताओंके बीचमें सम्मेलन होना चाहिये। स्थिति जिस तरह बिगड़ती जा रही है किसीकी व्यक्तिगत प्रतिष्ठाका प्रश्न इस कार्यमें वाधक नहीं होना चाहिये। अमेरिकामें ही स्टालिन आवें तो ट्रूमैन साहब मिलें या ट्रूमैन मास्को जायें तो स्टालिन मिलें इस तरहके वक्तव्य राष्ट्र पतियोंको शोभा नहीं देते।

## कम्युनिष्ट पार्टीपर रोक—

पश्चिम बंगाल सरकारने कम्युनिष्ट पार्टी और उसके स्वयंसेवक संगठनोंको गैरकानूनी घोषित कर दिया है। प्रान्तके प्रायः सभी प्रमुख कम्युनिष्ट नेता गिरफ्तार कर लिये गये हैं और पार्टीके दफ्तरोंपर पुलिसने कब्जा कर दिया है। देशकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वर्तमान संकटापन्न स्थितिमें राष्ट्रीय सरकारको सभी दलोंका सहयोग जरुरी हैं, लेकिन कम्युनिष्ट हमेशा ही अड़ंगा नीति से काम लेते आये हैं। इसके अलावा स्वदेशके स्वार्थको दरकिनार रख कर उन्होंने हमेशा रूसने प्रेरणा ली है। हालमें ही विजगापट्टममें प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूने कम्युनिष्टोंके बढ़ते हूए हिंसात्मक कार्योंसे उत्पन्न समस्या का उल्लेख कर कहा था कि शांति पूर्वक अपने सिद्धान्तोंका प्रचारकरने में कम्युनिष्टों को सरकार कोई वाधा नहीं देगी,लेकिन हिंसात्मक कार्योंको वह कदापि वर्दाश्त नहीं करेगी। कम्युनिष्टोंने हर मौके से लाभ उठाकर अशान्ति उत्पन्न करने और अपनी धाक जमानेकी घृणित चेष्टाकी है। ऐसी अवस्थामें सरकारने उस पर प्रतिवन्ध लगाया है, और सरकारकी इस कार्यवाहीको हम देश हितकी दृष्टिसे वांछनीय समझते हैं।

## राष्ट्रसंघमें काश्मीरका मसला—

काश्मीरके मसले पर राष्ट्र संघमें एक लम्वे असंसे विचार विमर्श जारी है, लेकिन उसके समाधानका अबतक कोई आसार नजर नहीं आ रहा है। राष्ट्र संघ के नये चीनी अध्यक्ष डा० टी० एफ० सियांग ने भारत और पाकिस्तानके प्रतिनिधियों से पृथक रुपसे विचार विमर्श करनेके वाद राष्ट्र संघकोओरसे एक नया प्रस्ताव उपस्थित किया था, लेकिन उसका भी भविष्य पूर्ण आशाप्रद दृष्टिगोचर नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि काश्मीर से भारतीय फौजोंको पूर्णतया हटालेने और वर्तमान शासन व्यवस्थाको मुअत्तिल करने के विना पाकिस्तानको सन्तोष नहीं होगा। ऐसी अवस्थामें राष्ट्रसंघकी अबतक की सारी चेष्टाएं व्यर्थ हो रही हैं। काश्मीर में जनमत संग्रहके लिए पाकिस्तानकी अनिच्छासे स्पष्ट प्रकट होता है कि पाकिस्तानके अधिकारी जनमत संग्रहका मुकावला करनेका साहस नहीं रखते यही यही कारण है कि वे भारत से कुछ ऐसी शर्तें स्वीकार कराना चाहते हैं, जो भारतके लिए कदापि स्वीकार्य नहीं हो सकतीं। भारतके लिए राष्ट्र संघके वाग्युद्धमें विजय प्राप्त करनेकी अपेक्षा काश्मीर के मोर्चे पर वास्तविक युद्ध में अपनी शक्ति का उपयोग करना वांछनीय है। काश्मीर आक्रमणकारियोंको हटानेके लिये राष्ट्र संघकी अपेक्षा अपनी शक्तिपर निर्भर करना श्रेयष्कर है।

## सख्तीकी जरूरत—

भारत और हैदराबादके बीच पिछले कई महीनोंसे जारी समझौता वार्ताके भंग हो जानेके आसार नजर आ रहे हैं। हैदराबादके प्रधान मंत्री मीर लायक अली मार्च के अन्तमें पुनः बातजीत आरम्भ करनेके लिये नयी दिल्ली पहुंचने वाले थे, लेकिन उनका कार्यक्रम भी रद्द हो गया है। भारत का रुख भी क्रमशः सख्त होता जा रहा है। श्री गडगिल और श्री षण्मुखमचेट्टीने भारतीय पार्लमेंटमें हालमें जोवक्तव्य दिया है, उससे भी यही प्रकट होता है कि हैदराबाद आसानीसे सीधे रास्ते नहीं आयेगा। रियासत कार्यालयके सेक्रेटरी श्री मेननने बताया है कि भारत सरकार निजामके साथ कुछ विषयोंके स्पष्टीकरणके संबंधमें लिखा पढ़ी कर रही है और निजाम का उत्तर मिल जाते ही फिरसे बातचीत आरंभ हो जायगी। श्री मेननने एक-दो सप्ताहोंमें स्पष्टीकरण प्राप्तहो जानेकी भी आशा प्रकट की है। भारत सरकार चाहे जिस बात का स्पष्टीकरण चाहती हो, इत्तेहादुल मुसलमीनके नेता कासिम रिजवीके वक्तव्य और रजाकारोंकी कार्यवाहीसे हवाका रुख समझा जा सकता है। इत्तेहादुल मुसलमीन ने हैदराबादके भारतमें योगदानका अन्त तक प्रतिरोध करनेकी पूरी तैयारी कर रखी है और सीधी लड़ाईका कार्यक्रम भी तैयार हो गया है, साथ ही हैदराबादमें विशाल परिमाणमें शस्त्रास्त्र एकत्र किये जा रहे हैं। भारत सरकार इन बातोंसे अवगत है और हैदराबादमें यदि यह अवस्था अधिक समय तक कायम रही तो सम्पूर्ण दक्षिणी भारत पर खतरा उपस्थित हो जायगा। हतेहादुल मुसलमीनके षडयंत्र सारे भारतके लिये खतरनाक हैं और भारत सरकारको इस खतरेका दृढ़तापूर्वक सामना करनेका अविलम्व तैयार हो जाना चाहिये। हैदराबादके साथ नरमीका वर्ताव करने का अब समय नहीं रहा।

## पूर्व पाकिस्तानके हिन्दू—

पाकिस्तानके गवर्नर जेनरल कायदे आजम मोहम्मद अल्ली जिन्नाने पाकिस्तान की स्थापनाके बाद प्रथम बार पूर्व पाकिस्तानका दौरा किया है, लेकिन इस बार वे मुस्लिम लीगके नेताकी हैसियतसे नहीं वरन् पाकिस्तान राष्ट्रके गवर्नर जेनरल की हैसियतसे इधर आये हैं। पूर्व बंगालके अल्पसंख्यक इस आशामें थे कि कायदे आजम उनको आश्वासन देंगे, उनकी अनिश्चित अवस्थाको दूर करनेका प्रयत्न करेंगे किन्तु कायदे आजमके भाषणसे अल्पसंख्यकोंको अवश्य निराशा हुई होगी। कायदे आजमने बताया कि 'पूर्व बंगालसे १० लाख हिन्दुओंके स्थान त्याग की खबर भारतीय पत्रोंमें प्रकाशित हुई है, किन्तु पाकिस्तान सरकारके आंकड़ों के अनुसार २ लाखसे अधिक हिन्दुओंने स्थान त्याग नहीं किया।' मि० जिन्नाने यह भी दावा किया है कि पाकिस्तानमें अल्पसंख्यकोंकी अवस्था भारतकी अपेक्षा अच्छी है। पूर्व बंगालसे हिन्दुओंके हटनेका कारण मि० जिन्नाके कथनानुसार यह है कि 'भारतके युद्ध प्रचारक नेताओंने अपने प्रचारों द्वारा पूर्वी बंगालके हिन्दुओंमें अरक्षा और भयकी भावना पैदा कर दी है तथा भारतमें मुसलमानों पर होने वाले अत्याचारोंका बदला पूर्वी बंगालके हिन्दुओंसे लिये जानेकी आशंकासे अल्पसंख्यकोंने पूर्वी बंगालका त्याग किया है। मि० जिन्नाकी पाकिस्तानके अल्पसंख्यकोंके जिन्नाकी पाकिस्तानके अल्पसंख्यकोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय पार्लमेंट--

# कुत्तेकी दुम सीधी नहीं होती

भारतीय राष्ट्रको संसारके प्रगतिशील एवं समुन्नत राष्ट्रोंके समकक्ष ऊपर उठानेका प्रयत्न हमारी सरकार जिस तत्परताके साथ कर रही है, यदि देशके सभी वर्गोंका सहयोग देशके स्वार्थ को सर्वोपरि मानकर उसें मिलता रहा तो, भारत अधिक दिन किसी समुन्नत राष्ट्रसे पीछे नहीं रहेगा । भारतीय पार्लमेण्टके अधिवेशनमें ऐसा कोई दिन नहीं जाता जिस दिन राष्ट्रके विकासकी कोई न कोई सुन्दर योजना सामने न लायी जाती हो । विज्ञानके नवीनतम आविष्कारोंने यह सिद्ध कर दिया है कि कोई समुन्नत देश परमाणु शक्तिकी उपेक्षा नहीं कर सकता और समाजकी रक्षा एवं सर्वविध विकास के लिये उस शक्तिकी साधना नितान्त आवश्यक है । इसी बातको दृष्टिगत रख कर प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूने गत सप्ताह पार्लमेण्टमें परमाणु शक्ति बिल उपस्थित किया । भारतमें परमाणु तत्वोंके विकास एवं तत्सम्बन्धी कच्चे पदार्थोंके नियन्त्रण का अधिकार भारत सरतरके हाथोंमें रखनेके हटानेसे यह बिल उपस्थित किया गया है ताकि इन सबका उपयोग सम्पूर्ण देशके हितार्थ किया जाये । पंडित नेहरूके शब्दोंमें इस तत्वके सैनिक रूपोंने दुर्भाग्य वश इसके शान्तिपूर्ण स्वरूपोंको आच्छादित कर लिया है लेकिन इतिहासकी प्रगति यह बतायेगी परमाणु शक्तिके विकास एवं प्रयोगका आविष्कार करके मनुष्यने अपने इतिहास में एक बहुत बड़ा उन्नतिका कदम आगे बढ़ाया है । क्योंकि इसने जीवनकी प्रगति को जिन जटिलताओंने अवरुद्ध कर रखा था उन्हें समझने और उनको सहज बनानेके प्रबल शक्तिशाली साधन दिये हैं,रोगसे लड़नेके लिये इसने हमें नये अरम्भ और औजार दिये हैं, मानवकी पीड़ा दूर करनेके उपाय दिये हैं एवं इसने शान्तिपूर्ण उद्देश्योंके लिये हमारे हाथोंमें प्रचुर, समाहित,केन्द्रित शक्तिका स्रोत दे दिया है ।

इस तरहकी शक्ति जिसमें निर्माण और विनाशकी एक समान अमित क्षमता हो निस्सन्देह सरकारके नियंत्रण में रहनी चाहिये अन्यथा समाजके कल्याणकी जगह अकल्याणके लिये इस शक्तिका उपयोग न किया जायेगा, यह कौन कह सकता है ?

## हैदराबादकी तैयारी

पार्लमेण्टकी बैठकमें प्रश्नोंत्तर कालमें एकसे एक तथ्य बातोंपर प्रकाश पड़ता है । मसल है कि कुत्तेकी दुम लाख कोशिशकी जाये टेढ़ी ही रहती है । हैदराबाद इस कहावत को अक्षरशः चरितार्थ कर रहा है । भारत सरकारके निरन्तर निजामको सीधे रास्ते लानेके प्रयत्नोंका उसपर कोई असर नहीं हो रहा और पाकिस्तानकी पुरोचना से एकवार भारतसे लोहा लेनेके अपने मनसूबोंसे वह बाज नहीं आ रहा । पंडित नेहरूने एक प्रश्नके उत्तरमें बताया कि इस आशयकी रिपोर्टें सरकारको मिली हैं कि निजाम सरकारकी सहायतासे हैदराबादमें कुछ फर्म कुछ दिनोंसे पिस्तौल राइफल एवं गोली बारूद तैयार करनेमें लगे हैं । हैदराबाद स्थित भारतीय एजेण्ट जेनरलको निजाम सरकारसे इसकी कैफियत लेनेको निर्देश दिया गया है । उनकी रिपोर्टकी भारत सरकार प्रतीक्षा कर रही है । सवाल यह है कि हैदराबादके मामलेमें कब तक इस प्रतीक्षा नीतिसे काम लिया जाता रहेगा ? उसके अबतकके काम यह बताते हैं कि वह अपना रास्ता छोड़नेको तैयार नहीं है । इस वास्तविकता के आधार पर विचार करनेका समय बहुत पहले आ चुका है । अब अधिक बिलम्ब भारतके हितके लिये घातक सिद्ध हो सकता है, आशा है कि हमारी सरकार लोगोंको यह कहनेका अबसर न देगी कि हैदराबादके मामलेमें यह गफलत क्यों ?

आज हमारे देशमें जितना आर्थिक बैषम्य और असमानता है शायद ही किसी देशमें हो । करोड़ों व्यक्ति पेट भर खा नहीं पाते,पर्याप्त कपड़े नहीं पहन सकते और

---

सम्बन्धमें स्पष्ट उक्ति सुननेके बाद भी कुछ लोगोंने आशा की थी कि अपनी दुःख-गाथाओंका विवरण देने पर कायदे आजम अवश्य कुछ द्रवित होंगे और इसी आशासे अल्पसंख्यकोंके एक प्रतिनिधि मण्डलने उनसे मुलाकात की और मानपत्रके साथ अपने कष्टोंको भी उनके सामने रखा । लेकिन इस बार भी कायदे आजमका स्वर नहीं बदला, उलटे उन्होंने अल्पसंख्यक प्रतिनिधियोंको कुछ ऐसी बातें कहीं, जिसकी किसी राष्ट्रके सर्वोच्च शासक से कदापि आशा नहीं की जा सकती । उन्होंने उनको आश्वासन देनेके बदले कहा कि "पाकिस्तानके अल्पसंख्यकोंकी स्थिति भारतकी अपेक्षा सहस्र गुणा अच्छी है । इसके अलावा यदि उनको वास्तवमें कोई कष्ट हो तो वे नजीमुद्दीन सरकारकी शरण में जायें । मानपत्रमें उल्लिखित दुःख कष्टों की ओर ध्यान देनेका मेरे पास समय नहीं है ।" ढाका विश्वविद्यालयमें भाषण करते हुए कायदे आजमने कहा कि पाकिस्तान में पंचम वाहिनीका षड्यन्त्र जारी है और 'कुछ मुसलमान' भी उसमें लिप्त हैं । मि० जिन्नाकी इस उक्तिसे अल्पसंख्यकोंके मनमें आशंकाका संचार होना स्वाभाविक है । मि० जिन्नाका अल्पसंख्यकोंके प्रति यह मनोभाव बिलकुल अवांछनीय है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे लोगोंकी तादाद भी कम नहीं है जिनको राह, घाटमें शीत, वर्षा और तापके दिन बिता देने पड़ते हैं, क्योंकि निराश्रय गृहहीन हैं। इस आर्थिक असमानताको दूर करके प्रत्येक भारत वासीके जीवनको सहज और स्वच्छन्द बनाने वाली अर्थनीतिकी प्रतीक्षा देश उद्विग्नता और आतुरताके साथ कर रहा है। इस दृष्टिसे यदि देखा जाये तो भारत सरकारके अर्थसचिव श्री षम्मुखम चेट्टी का कार्यक्रम देशकी आवश्यकता पूरा नहीं करता। अर्थ बिलपर विचार करनेके लिये नियुक्त सेलेक्ट कमेटीनें अपनी रिपोर्ट पार्लमेण्टके सामने पेश की है। इसमें टैक्स सम्बन्धी प्रस्तावोंमें कुछ परिवर्तन करनेकी सिफारिश की गयी है। व्यक्तियों, हिन्दू अविभक्त परिवारों एवं रजिस्ट्री न कराये गये व्यापरिक फर्मों एवं एसोसिएशनोंकी टैक्स लगानेकी कमसे कम अमदनीसर २५ सौ से तीन हजार कर देनेकी सिफारिश की गयी है। वनस्पति तैलोंपर निर्यात ड्यूटी २ सौ रुपये प्रतिटनके बदले १६०। की जानी चाहिये एवं वनस्पति तैलों चाय और काफीपर चुंगी कम करनेकी सिफारिश करते हुए यह प्रस्तावव प्रस्ताव किया गया है कि चाय और काफीकी ड्यूटी दूनी नहीं५० प्रतिशत बढ़ायी जाये एवं वनस्पति तैलोंकी ड्यूटी साढ़े सात रुपयेकी जगह सात रुपये हण्डर कर देनेसे पौण्डपर एक आना ही बढ़ेगा। इसी तरह के यत्र तत्र संशोधन कमेटीने सुझाये हैं जिनको समाजके आर्थिक एवं रहन–सहनके स्तरपर कोई अन्तर नहीं पड़ता।

हमारे अर्थसचिव श्री षम्मुखम चेट्टी अर्थशास्त्री ही नहीं राजनीतिज्ञ भी हैं। इसीलिये समाजके स्वार्थकी चर्चा करते समय जवानी जमाखर्च द्वारा ही वे अपना काम साधना चाहते हैं। यह बात कहते वे नहीं थकते कि मौजूदा पूंजीवादी प्रणाली समयको देखते पीछे पड़ गयी और इससे काम नहीं चल सकता। किन्तु उन्होंने आजतक यह साफ-साफ नहीं कह कि इस प्रणालीका स्थान किसे दिया जायेगा दर असल चाहते तो वे यह हैं कि पूंजीवादी अर्थ-अवस्थाको दूसरा कोई सुन्दर रूप देकर बना रखना चाहिये। इतना ही नहीं वे इससे भी अधिक कुछ चाहते हैं। वे चाहते हैं कि राज्य नियंत्रण या शासन सूत्र उन लोगोंके हाथमें न रही जन कल्याण जिनका आदर्श है और जिनकी राजनीति एकमात्र इसी भावनासे अनुप्राणित होती है। उनके उद्देश्यको व्यर्थ करनेके लिये आज व्यवसाय या वाणिज्य का संचालन राजशक्तिपर कब्जा करनेकी दृष्टि रखकर किया जाता है। इसीलिये तमाम आज अर्थ जगतमें, व्यवसाय और वाणिज्य जगतमें बराबर युद्ध और संघर्ष जारी है। इन सबगतिविधियोंका उद्देश्य केवल व्यवसाय वाणिज्य उत्पादन, कम विक्रय नहीं है, यहां तक कि केवल मुनाफा ही इसका उद्देश्य नहीं है। राष्ट्रकी राजसत्ता को पूंजीवादी वर्गकी मुट्ठीके भीतर जिस तरह हो लाया जाये और राज्य यन्त्रका संचालन उसके हाथमें रहे आजके पूंजीवादियोंकी अर्थनीति यही दांवपेंच खेलरहीहै।

---

# भारतकी होली

होली आज मनाने निकले।
मानवताको आजादीकी मानव भेंट चढ़ाने निकले।

(१)

लौह लेखनी कुंठित कविकी — रुंधी हुई है कविकी वाणी।
विश्वास हृदय ही खो बैठा — है छुब्ध मना अब कल्याणी।
नत मस्तक आज हिमालय है — सूखी सुरसरि धार पड़ी है।
विलख विलख सागर रोता है — शक्ति बिना आधार खड़ी है।
उपवनकी पिकका वध करके — हम मधुपर्व मनाने निकले।
होली आज मनाने निकले।

(२)

रक्त रंजिता उषा पारोती — रोती संध्या नभमें काली
मुक्त हिद की गलियांरोतीं — पग पग पर लाशोंकी जाली।
शंकाकी ईंटोंसे हमने — हाय घृणा मीनार उठाली।
अपनी ही कमजोरी से तो — आंगनमें दीवार उठाली।
अपनी लाश लाद कंधों पर — खुदको राह दिखाने निकले।
होली आज मनाने निकले।

(३)

हाय हिमालय क्षत विक्षत है — हिंद स्वर्गमें आग लगी है।
अपनी ही छातीके ऊपर — आज नई दीवार उठी है।
किन्तु हिंदके ही सेनानी — अपना अपना राग लिए हैं।
एक राष्ट्रका एक मार्ग हम — साथी आज बनाने निकले।
होली आज मनाने निकले।

(४)

आह शिथिल पंजाव पड़ा है — टुकड़े टुकड़े खून सना है।
हम सबके हाथोंको द्वारा — भारतका दुर्भाग्य बना है।
बंग भंग रोता है अपना — देख रहे हो तुम बरवादी।
अब तुमको ही जीवित रखना — मिली हूई अपनी आजादी।
घन विजली अम्बर पर लेकर — धरकी आग बुझान विजले अम्बर
होली आज मनाने निकले

(५)

आजादीकी बलि वेदी पर — पहिले भारत बलिदान किया
फिर मुक्ति पर्वके अवसर पर — सेनापतिको कुरवान किया।
कमजोरी द्वेष घृणा तँष्णा — अबआज जलाना है तुमको।
अपने अपने सपने मूलो — ए राष्ट्र चलाना है तुमको।
युग युगके सोए भारतको — हम फिर आज जगाने निकले।
होली आज मनाने निकले।

श्री विष्णुचन्द्र सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# यत्रतत्र

## हैदरावादमें युद्धकी तैयारी–

भारतीय पार्लमेंटमें पं० नेहरूने कहा है कि सरकारको मालूम हुआ है कि हैदराबाद स्थित विभिन्न फर्मों निजामकी सहायता से पिस्तौल, राइफलें तथा गोला बारूद आदि बनानेमें संलग्न हैं। इसकी जांचके लिय भारतीय एजेंट जेनरलको आवश्यक निर्देश दिया गया है। भारत सरकार उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

## निजामके विरुद्ध तैयारी–

भारतीय कमांडर ब्रिग्रेडियर ठा० शिवदत्तने कहा है कि बरारकी सीमापर निजामकी ओरसे होने वाली घटनाओंसे हम पूर्ण परिचित हैं और उसका सामना करनेको प्रस्तुत हैं। भारतीय सेना युद्ध, कौशल, बुद्धि और साहसकी दृष्टिसे निजाम की सेनाओं अच्छी तथा अनुशासित हैं। यदि निजामने हमारे विरुद्ध कोई कार्रवाई की तो हमारी सेना स्थितिपर विजय पा जयगी।

## कल्याणका 'अकल्याण–

ज्ञात हुआ है कि पूज्य बापूके विरुद्ध 'कल्याणने' अत्यधिक लेख लिखे थे। उसमें ऐसे लेख पाये गये हैं जिससे अनुमान होता है कि बापूकी हत्या करने वाले दलसे 'कल्याण का भी संबंध था। प्रांतीय सरकार और भारत सरकारसे जांच करनेकी मांगकी गयी है।

## शिक्षा सम्बन्धी महत्वपूर्ण निर्णय-

पूर्वी पंजाबके प्रधान मंत्रीने घोषणा की है कि प्रांतमें हिंदी और पंजाबीको शिक्षा माध्यम बनाया जायगा। पढ़ाईमें पाठ्य पुस्तकोंके साथ-साथ सदाचार नीतिकी भी शिक्षा दी जायगी। तीन मीलके अन्तर विद्यालयोंकी स्थापना होगी। ग्राम पंचायतके द्वारा बालकोंको पढ़ोये जानेपर जोर दिया जायगा। विद्यालयोंमें व्यायाम और बालचर शिक्षा अनिवार्य हो जायगी।

## गलियारेका दावा–

यह मालूम हुआ है कि अफगानिस्तानने पाकिस्तानसे करांचीकी मांगकी है। अफगानिस्तानने पाकिस्तानसे जानेके लिये एक गलियारेका भी दावा किया है। अफगानिस्तान सरकारने कहा है कि यदि करांची बन्दरगाह तथा उक्त गलियार-पाकिस्तान सरकार दे देगी तो उसके साथ हमारा मित्रोचित व्यवहार रहेगा तथा अफगानिस्तान पठानिस्तानका आंदोलन बन्द कर देगा।

## अंग्रेजीकी विदाई–

इलाहाबाद विश्वविद्यालयकी बैठक में यह निश्चिय किया गया है कि बी० ए० की परीक्षामें जिन छात्रोंने हिंदी तथा संस्कृत लिया है वे प्रश्नोंका उत्तर अंग्रेजी की जगह हिंदीमें दे सकते हैं।

## पूर्व बंगालकी परिस्थिति–

भारतके प्रधानमन्त्री पं० नेहरूने पूर्वी बंगालके प्रधान मन्त्री तथा पाकिस्तान के प्रधान मन्त्रीके पास एक तार भेजा है कि पूर्वी बंगालके हिन्दुओंकी रक्षा की जाये। वहां हिन्दुओंपर इस तरहके अत्याचार हो रहे हैं जिससे उनका रहना भी खतरनाक हो रहा है। वहांकी स्थितिको और भी भयंकर होनेसे बचा लें। आशा है कि पाकिस्तान सरकार वहांके हिन्दुओंका उत्पीड़न बन्द करेगी।

## आयात निर्यातकर बिल स्वीकृत-

भारतीय पार्लमेण्टमें एक आयका बिल स्वीकृत हुआ है। सिलेक्ट कमिटीने जो रिपोर्ट पेश की थी उसमें बहुत संशोधन किया गया है। स्वीकृत बिल निम्नलिखित है—व्यक्तिगत हिन्दू संयुक्त परिवार बिना रजिस्टर्ड फर्मों तथा एसोसिएशनके मामले में ढ़ाई हजारके बजाय तीन हजारकी आय पर कर लगाया जायगा। निर्यात करके सम्बन्धमें सिलेक्ट कमिटीने प्रस्ताव किया कि बनस्पति घीपर दो सौ रुपया प्रति टन कर होना चाहिये। वनस्पति घी, चाय तथा काफीपर चुंगी साप रुपये प्रति हण्डरके हिसाबसे स्वीकृत किया गया है। चाय तथा काफीके लिये वर्त्तमान चुंगीके लिये दो गुना करनेके बजाय पचास प्रतिशत बढ़ाने की सिफारिशकी गयी है।

## समाजवादी कार्यक्रम–

समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशने बताया है कि रचनात्मक कार्य में राजनीति का कोई स्थान नहीं। समाजवादी आवश्यकतानुसार रचनात्मक कार्यमें कांग्रेसियोंसे हाथ बटायेंगे। पर भविष्यमें वे स्वतन्त्र रूपसे काम करेंगे। गांधीवादी तथा मार्क्सवादी दोनों एक पथ पर हैं। दोनोंका लक्ष्य एक ही है। समाजवादी भारतके प्रति वफादार समस्त बामपन्थियोंसे सहयोग स्थापित करेंगे पर कम्यूनिस्टोंसे सम्पर्क असम्भव है क्योंकि उनका दृष्टिकोण भिन्न है।

## अणुशक्तिका परीक्षण–

भारत सरकार अणुशक्ति संबंधी अनुसंधान तथा परीक्षणके लिये एक उपयुक्त स्थानका निर्णय कर रही है। संभवतः राजपूतानाके रेगिस्तानोंमें इसका परीक्षण किया जायगा—ऐसा विशेषज्ञोंको अनुमान हो रहा है।

## पठान विदेशी हैं–

ज्ञात हुआ है कि उत्तर पश्चिम सीमाप्रांतके पठान जो अबतक भारतीय नागरिक समझे जाते थे, आगामी अप्रैल से विदेशी समझे जायेंगे। सभी प्रांतोंको सूचित किया गया है कि सीमाप्रांतके किसीभी नये पठान को भारतमें आनेकी अनुमति नहीं है। किंतु जो भारतीय पठान कार्यवश सीमाप्रांत गये हैं उन्हें लौटनेकी अनुमति दी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## भोपालके नवाबकी चाल--

भोपालके नवाब अपने पड़ोसी राज्यों से सम्बन्ध स्थापित करना नहीं चाहते। कई बार उन्होंने राज्यमें घोषणा भी की है कि भोपालका स्वतन्त्र अस्तित्व रहेगा। इधर भोपाल बैंककी मार्फत वे अपनी सम्पतिको पाकिस्तान भिजवा रहे हैं। भोपाल बैंकको भारत सरकारने शिडयूल बैंक मान लिया था, जिससे भारत और पाकिस्तान दोनों राष्ट्रोंके बीच रकमकी अदला-बदली होती थी लेकिन भोपाल नवाबने इस सुविधासे अनुचित लाभ उठानेकी चेष्टा की है। हाल ही में भारत सरकारको भोपाल नवाबकी यह चाल मालूम हुई है। भारत सरकार इसके लिये जांच कमिशन की नियुक्त करने जा रही है।

## अल्पसंख्यकोंकी रक्षा–

भारत और पाकिस्तानके प्रधान मन्त्रियोंने एक संयुक्त वक्तव्य दिया है जिसमें कहा गया है कि हम अल्पसंख्यकोंकी रक्षा यत्न पूर्वक करेंगे। उन्हें अपने मकानमें बसानेके लिये हमारा प्रयत्न होगा। फिर भी वे अपनी इच्छानुसार कोई उपनिवेशमें रह सकते हैं।

## पं० नेहरूकी योजनाका ममर्थन--

अमेरिकन राजदूत डा० ग्रेडीने बताया है कि मार्शल योजना द्वारा एशिया और सुदूर पूर्वको यंत्रों और पूंजीगत मामलोंको दूर करनेमें असुविधा न होगी। मार्शल योजना की व्याख्या करते हुए जिसका आधार सहयोग और पारस्परिक है, पं० नेहरू की योजनाका उल्लेख किया।

## कम्यूनिस्टोंका आतंक--

चीनमें कम्यूनिष्टोंका भीषण आतंक छाया हुआ है। अनेक षड़यंत्रोंके अतिरिक्त वे अग्निकांड तथा रेलवे विध्वंस कार्य कर कर रहे हैं। वहांके मजदूरों तथा छात्रोंको वर्तमान शासनके विरुद्ध भड़काया जा रहा रहा है। कालेजों तथा युनिवर्सिटियोंमें उभाड़नेवाले पर्चे बांटे जा रहे हैं। सरकार स्थिति को काबूमें करने पर विचार कर रही तथा अन्य छात्रोंसे शांतिकी अपीलकी है।

## मद्रासके बन्दरगाहोंकी विकास-योजना--

मद्रासकी सरकारने मद्रास विस्तृत योजनामें साढ़े पांच करोड़ रुपये खर्च करने का निश्चय किया है। योजनाके पूर्ण होने पर मद्रास बन्द्रगाहोंमें वर्ष भर बड़े बड़े जहाज सुरक्षित रूपसे प्रवेश कर सकेंगे। इस विभागके मंत्रीने बताया है कि भारत की सुरक्षाके लिये ही नहीं वल्कि सामुद्रिक व्यापार और यातायातके लिये छोटे-बड़े बन्दरगाहोंका विकास आवश्यक है।

## कम्युनिष्टोंपर प्रतिबन्ध–

पश्चिम बंगाल सरकारने अपने प्रांतमें कम्युनिष्ट पार्टी तथा उसके स्वयंसेवक संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया है। गत सप्ताह कलकत्ता और आसपासके इलाकोंमें कम्युनिष्ट दफ्तरों, मकानों और कार्यकर्ताओं के निवास स्थानोंकी पुलिसने तलाशी ली और दर्जनों व्यक्तियोंको गिरफ्तार किया। कम्युनिष्टोंकी विध्वंसात्मक कार्यवाहियों के कारण सरकारको ऐसा रुख अख्तियार करना पड़ा है।

## निकट भविष्यमें युद्ध नहीं--

सशस्त्र सैनिकोंको सम्बोधित करते हुए पं० नेहरूने कहा है कि भारतीय सेना का उद्देश्य प्राप्त स्वाधीनताकी रक्षा करना है। सैनिकोंको चाहिये कि वे जनताकी रक्षा करें क्योंकि वे जनता द्वारा ही संगठित हैं। सैनिक जनताके सेवक हैं। मुझे विश्वास है कि निकट भविष्य युद्ध नहीं होगा। भारतीय सेना अपने कर्त्तव्यका पालन कर प्रशंसा प्राप्त कर चुकी है। हम आज स्वाधीन हैं अतः हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ गयी है। देशके ३५ करोड़ नागरिकोंकी रक्षा आसान काम नहीं है। इसलिये हर नागरिकका परम कर्त्तव्य है कि वह अपनी स्वाधीनताकी रक्षा करे, पर सबसे अधिक उत्तरदायित्व हमारी सशस्त्र सेना पर ही है। हमारा उद्देश्य किसी देश पर अधिकार स्थापित करना नहीं अपितु समस्त विश्वमें शान्ति कायम रखना है। यदि किसी देशका सैनिक दल जबरदस्त है तो वह समृद्धशाली अवश्य होगा। दुर्बल राष्ट्र कदापि उन्नत नहीं हो सकता। अतः हमें उन्नत होनेके लिये सैनिक बलको दृढ़ बनाना होगा।

## सैनिक गांधीवादी बनें–

युक्त प्रांतकी गवर्नर श्रीमती सरोजनी नायडूने लखनऊमें सैनिकोंके बीच कहा कि आपका क्षेत्र वर्दी पहनने तथा हथियार उठाने तक ही सीमित नहीं है। आपका धर्म विनाश और हिंसा नहीं है। आपको गांधीजीके सिद्धांतोंका प्रचार करने योग्य बनना है। गांधीजी न वर्दी धारण करते थे और न अपने अस्तित्वकी रक्षाके लिये हथियार ही रखते थे। आपको उनके आदर्शसे शिक्षा लेनी चाहिये। आपका काम देशमें शांति स्थापित करना है। मैं नहीं कहती हूं कि आप वर्दी न पहनें। आप वर्दी पहने पर सिपाहियोंकी तरह न हीं। आवश्यकतानुसार आपको अस्त्र भी उठाना पड़ेगा। अतः हर तरहसे आपको शांति उद्देश्यकी तैयारीमें रहना चाहिये।

## पेरिसमें औद्योगिक सम्मेलन–

पेरिसमें विश्व औद्योगिक सम्मेलन होने जा रहा है। बिहारके स्वायत्त शासन विभागके मन्त्री श्री विनोदानन्द झा भारतीय संघके प्रतिनिधि बनकर सम्मेलनमें भाग लेने जायेंगे।

## पाकिस्तानमें खद्दर-प्रचार--

पाकिस्तानमें सूती कपड़ेकी अत्यन्त कमी हो गयी है। अतः पाकिस्तानी अधिकारी इस कमीकी पूर्तिके लिये खद्दरको अपनाने पर विचार कर रहे हैं। खद्दरको राष्ट्रीय पोशाक बनाने पर भी गम्भीर विचार किया जा रहा है। पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तानमें कुल मिलाकर ४ लाख कर्घे हैं जो सूत की कमीके कारण बेकार पड़े हैं।

## पाकिस्तानकी राष्ट्रभाषा उर्दू--

ढाकामें दीक्षांत भाषण करते हुए कायदे आजम जिन्नाने कहा कि पाकिस्तान की राज भाषा उर्दू ही हो सकती है। छात्रों को चाहिये कि पाकिस्तानकी स्थापनासे उत्पन्न परिस्थितिको ध्यानमें रखें। हमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलामीकी जंजीर तोड़ दी है। आप लोग लड़नेकी अपेक्षा रचनात्मक कार्य करें। रचनात्मक कार्यकी प्रवृति सैनिक प्रवृतिसे कठिन है। राज्य चलानेके बजाय स्वाधीनताके लिये लड़ना या जेल जाना अधिक सुगम है। मुझे पाकिस्तानकी स्थापना में बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा है। हमारे विरुद्ध लोगोंने अनेक षड़यन्त्र किये लेकिन पाकिस्तान एक नया राष्ट्र बन ही गया! इसमें न जाने कितने ही बच्चोंकी नृशंस हत्याएं कर दी गयीं। इन सब कठिनाइयोंके अलावा अन्य कठिनाइयोंका भी सामना करना पड़ा है। अतः आपलोगोंको चाहिये कि उत्पन्न परिस्थितियोंका ध्यानमें रखकर रचनात्मक कार्यमें लगें। आप हमारे कार्यको सतर्कतापूर्वक देखते जायें।

## मि० जिन्नासे निराशा—

पूर्वी पाकिस्तानमें मि० जिन्नाके व्याख्यानसे पूर्वी बंगालके हिन्दुओंमें काफी असंतोष हुआ है। उन्हें विश्वास था कि इनके आगमनसे उत्पन्न स्थितिमें सुधार होगा लेकिन ऐसा मालूम पड़ा कि ये पाकिस्तानके गवर्नर नहीं बल्कि एक मुस्लिम नेता हैं। मि० जिन्नासे जिन छात्रोंने मुलाकात की वे सभी मुस्लिम छात्र ही थे। हिन्दू छात्रोंको उसमें भाग लेनेके लिये नहीं दिया गया।

## जिन्ना साहबकी व्यापकता—

हाल ही में पाकिस्तानी गवर्नर जेनरल मि० जिन्नाने कांग्रेसजनोंसे कहा है कि आप अतीतकी घटनाओंको भुला दें। अब नवीन प्रणालीसे कार्यक्रम अपनावें। आप अपनेको हिन्दू या मुसलमान न समझें वरन् पाकिस्तानी समझें। आप पाकिस्तान के नागरिक हैं। यदि आपको कोई कष्ट हो तो स्थानीय अधिकारियोंसे कहें, वे आपकी तकलीफोंका अन्त करेंगे।

## जमीन्दारोंको मुआवजा नहीं—

किसान नेता श्री स्वामी सहजानन्द ने बिहार सरकारसे मांग की है कि जमींदारोंको मुआवजा दिये बिना ही जमींदारी प्रथा उठा दी जाय। जमीन किसानोंमें बांट दी जाय। एक व्यक्तिके पास ५ एकड़ से अधिक भूमि न रहे। जमीनें असली किसान को ही दी जायें।

## कलकत्ता कार्पोरेशन मुअत्तिल—

पश्चिम बंगाल सरकारने कलकत्ता कार्पोरेशनको एक कानून पास कर २४ मार्च १९४८ से ३१ मार्च १९४९ तक एक वर्षके लिये मुअत्तिल कर कर दिया दिया है। गवर्नरने ४८ की तीसरी धाराके अनुसार बंगाल सरकारको उक्त आज्ञा दी है। कार्पोरेशनके नये शासक श्री एस० एन० राय चुने गये हैं।

## रिजर्व बैंक कायम रहेगा—

ज्ञात हुआ है कि पाकिस्तान सरकार के अनुरोधपर रिजर्व बैंक आगामी ३० जून तक पाकिस्तानमें पूर्ववत् कार्य संचालन करेगी। वर्त्तमान समयकी भांधत उसका कार्य जारी रहेगा।

## भारतमें समाजवादकी स्थापना—

समाजवादी नेता आचार्य नरेन्द्र देव ने कहा है कि हमारा ख्याल है कि कांग्रेस के रास्तेपर चलकर हम समाजवादी राज्य की स्थापना नहीं कर सकते हैं। समाजवादियोंने कांग्रेसका अबतक साथ इस हेतु दिया कि उनका विश्वास था कि समाजवादके विना स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो सकती। अब स्वतंत्रता मिल गयी है और हमें समाजवादकी स्थापना करनी है। कांग्रेससे यह कार्य नहीं हो सकेगा। अतः यह कार्य हमें करना है। हमारा पथ संगत और आवश्यक है।

## रचनात्मक आलोचना आवश्यक—

सीमाप्रांत असेम्बलीके विरोधी दल के नेता डा० खां साहबने कहा है कि गुलामी की मनोवृतिने हमारे अन्दर ऐसी कमजोरी उत्पन्न कर दी, जिसने हमें विनाशकारी आलोचना द्वारा एक दूसरे पर कीचड़ उछाल कर झूठी मर्यादा स्थापित करनेको प्रेरित किया है। हमें मित्रोचित तथा स्वस्थ रचनात्मक आलोचनाओं द्वारा संयुक्त रूपसे जनताकी सेवा करनी चाहिये।

## यूसाको फांसीकी सजा—

बर्माके भूतपूर्व प्रधान मंत्री यू अंगसाग और उनके मंत्रिमंडलके छः सदस्योंकी हत्या के अभियोगमें यूसाको आगामी ९ अप्रैल को फांसीकी सजा दी जायगी। सरकारी विज्ञप्तिसे ज्ञात हुआ है कि यूसाकी अपीलको ब्रिटिश साम्राज्यके सर्वोच्च न्यायालय में उपस्थित करनेकी चेष्टाकी गयी थी लेकिन ४ जनवरीको बर्माके स्वतंत्र हो जानेसे उसका अधिकार सीमित हो गया और कोई विचार न हो सका।

## पाकिस्तान दस वर्षोंकी तपस्या का फल—

कयदे आजम मि० जिन्नाने कहा है कि पाकिस्तान दस वर्षोंके कठिन परिश्रम का फल है। पाकिस्तानके हर नागरिकका परम कर्त्तव्य है कि वह पाकिस्तानकी सहायता हर प्रकार से करे। जो लोग पूर्वी बंगाल को भारतीय संघमें मिलानेका प्रयत्न कर कर रहे हैं वे स्वप्न देख रहे हैं! पाकिस्तान में कम्युनिष्टों तथा पंचमांगियोंको कोई स्थान नहीं मिलेगा। उनके प्रति कठिन कार्रवाईकी जायगी।

## दोनों बंगाल एक होंगे—

बंगालके गवर्नर श्री राजगोपालाचारीने कहा है कि यदि बंगालके लोग महात्मा गांधीजीके आदर्शों पर चलें तो निश्चय ही दोनों बंगाल एक हो जायेंगे।

## विहारमें २० वर्षीय शिक्षा योजना-

बिहारके शिक्षा मंत्री आचार्य बद्री नाथ बर्माने प्रांतके लिये २० वर्षीय शिक्षा योजना तैयार की है। आपका कहना है कि शिक्षाका उद्देश्य पढ़ाकर केवल क्लर्क बनाना नहीं बल्कि ऐसा बनाना है जिससे लोग अपना उत्तरदायित्व समझ सकें।

## भारतमें अणु शक्तिका विकास-

भारतीय पार्लमटमें पं० नेहरूने एक विल पेश किया है जिसमें अणुशक्तिके विकास तथा नियंत्रणकी योजना है। विलके अनुसार सरकारको अणुशक्तिके विकास पर नियंत्रण संबंधी अधिकार प्राप्त होगा यह संबंधित अन्य वस्तुओं पर जिनका अणु कर शक्तिके प्रयोगके लिये उत्पादन संभव होगा, विशेष रूपसे नियंत्रण किया जायगा। जिससे उसका उपयोग देशकी सारी जनता कर सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

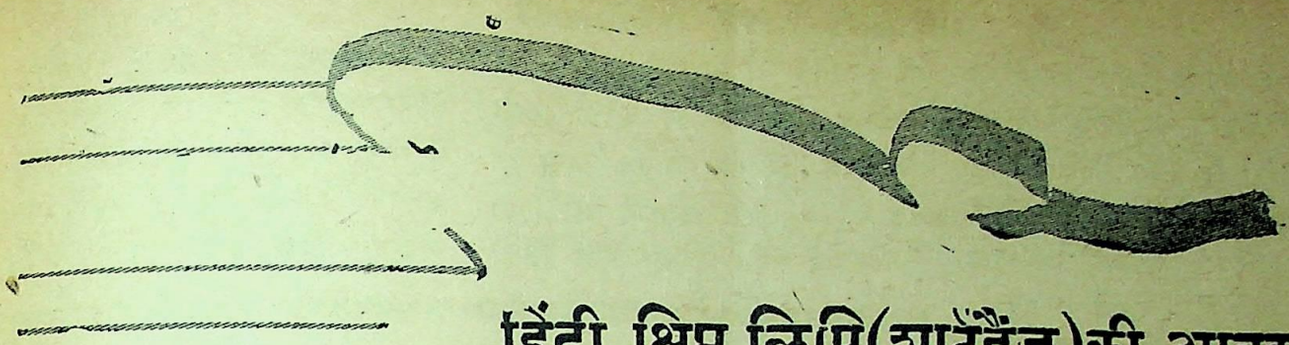

# हिंदी क्षिप्त लिपि(शार्टहैंड)की आवश्यकता

लेखक—श्री लालचन्द्र जैन

आजके प्रगतिशील स्वतंत्र भारत में हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है। ऐसे समय में हिन्दी और राष्ट्रीय प्रवृतियोंको उत्थान देना प्रत्येक भारतीयका परम कर्त्तव्य हो जाता है। इसके उत्थानमें इसका सबसे प्रधान अंग हिंदी क्षिप्तलिपिहै। बिना क्षिप्त लिपिके हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी सर्व्वांग पूर्ण नहीं बन सकती।

भारतके राजनैतिक क्षेत्रोंमें जब अंग्रेजी का बोल बाला था उस समय कौंसिलों आदिकी रिपोर्ट लेनेकी पिटमेनशोर्ट हैण्ड प्रणालीने पूर्ति की। परन्तु अब हिंदी युग में हिन्दी क्षिप्त लिपिकी आवश्यकता है।

भारतीय विशेषज्ञोंने इसकी तरफ कभी ध्यान ही नहीं दिया हो यह बात नहीं। सर्व प्रथम सन् १९०७ में बंग भंगके समय श्रीमान् श्रीश्चन्द्रजी वसु सबजज इलाहाबाद और श्री निष्कामेश्वरजी मिश्रने मिलकर एक हिंदी शोर्टहैंड नामक पुस्तक लिखी। सन् १९२१ में पं० निष्कामेश्वरजी मिश्र ने हिंदी शोर्टहैण्ड अर्थात् हिंदीकी संक्षेप लेख प्रणाली नामकी एक पुस्तक लिख कर प्रकाशित की थी। इसके बाद सन् १९२५ में श्री राधेलालजी त्रिवेदी संयुक्त प्रांत पुलिस रिपोर्टरने 'ब्रह्माक्षर प्रकाश' नामकी एक पुस्तक प्रकाशितकी इसके पश्चात् पं० ऋषिलालजी अग्रवाल, डा० सिन्हा आदि नमिहानुभावोंने हिंदी क्षिप्तलिपिकी पुस्तकें निकाली।

उपरीक्त बतलायी गयी प्रणालियोंमें में परस्परभिन्नता तो जरूर थी लेकिन उन सबका आधार स्तंभ पिटमेन शोर्टहैण्ड ही था। यही कारण है कि जो अड़चनें पिटपेन प्रणालीमें थी-वे सारी अड़चने उपरोक्त प्रणालियोंमें भी ज्योंकी त्यों पाई जाती हैं।

वर्ण व्यवस्था करते समय इन प्रणालियोंमें मोटे और पतलेपनपर अधिक ध्यान रखा गया है। अगर मिश्रजी का 'क' कुछ मोटा हो जाय तो 'ग' पढ़ा जायगा। इसी तरह उनका हरेक संकेत दो वर्णोंके के लिए काम आता है। जिसमें मिलता सिर्फ मोटे और पतलेपनकी है। इसी तरह त्रिवेदी जीने अपने शोर्टहैण्डमें चार चार संकेत एकही तरहके बना दिये हैं। उन्होंने अंग्रेजी शैलीपर 'क' का 'ख' 'क' में ह' जोड़ कर बनाया है। और क, ख, ग, घ, चारोंके लिये एक ही संकेत रखा है। सिर्फ लंबाई में अन्तर कर दिया है 'क' एक सीधी आडी छोटी लकीर है। 'ख' उसको एक खड़ी लकीरसे काट दिया है। जो कि 'ह' का निशान है। 'ग' क के निशानके समान ही है परन्तु लंबाई में उससे दुगुना है। और ग के घ बनानेके लिए क से ख बनानेके नियमको काममें लिया गया है।

शीघ्र लिखते समय पतलेपन, मोट पन और लंबाईका ध्यान रखना कहां तक संभव है—यह पाठक स्वयं विचार सकते हैं। और खास कर अंग्रेजी पिटमेन शोर्टहैण्ड राइटर सो स्वयं इन कठिनाइयोंको खूब अच्छी तरह समझ सकते हैं। जब कई एक संकेत दूसरे संकेतोंके साथ मिलाये जाते हैं उस समय तो यह संकेत बिल्कुल एक तीसरे ही सकेतका रूप धारण करते हैं। जल्दी लिखते समय लंबाई-छोटाई का ध्यान रखना कठिन बात है। अतः खर का घर और घरका खर बन जानेमें कुछ देर नहीं लगती। प्रत्येक लिपिके लिये यह आवश्यक है कि उसके वर्ण एक दूसरे से भिन्न रूप रखते हों और एक दूसरेसे मिलने पर अपना व्यक्तित्व नहीं छोड़े। तबही वह लिपि सफल होनेकी अधिकारिणी है।

दूसरी बात नियमों की है। पिटमेन शोर्ट हैण्ड बहुत अधिक नियमों और अपवाद है। जिनका एक व्यक्तिके लिये याद रखना अति कठिन कार्य है। अब विचारने का स्थल है कि एक शोर्ट हैण्ड लेखक के सिर पर कितना भारी काम रख दिया जाता है। जो मामूली मनुष्यके लियें संभव नहीं। अतः नियम बहुत थोड़े और संक्षेप में होने चाहिये।

अंतिम बात जिसकी तरफमें आपलोगोंका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं वह यह है कि उपरोक्त प्रणालियोंमें शब्द संकेत और वाक्य संकेत रखे गये हैं जिस तरह पिटमेन प्रणालीमें ग्रामो लोगज और लोगों ग्रामज है। ये कई हजारकी संख्यामें है।

इन अत्यधिक संकेतोंके होनेसे इसमें एक बहुत बड़ी कठिनाई पैदा होती है। जो मनुष्य एक विभाग का ज्ञात है वह दूसरे विभागमें कार्य नहीं कर सकता। एक व्यापारिक संस्थाका शोर्टहैण्ड राइटर राजनैतिक विभागमें कार्य करनेमें बिलकुल असमर्थ हो जाता है। वैसे ही राजनैतिक विभागका शोर्टहैण्ड राइटर अन्य विभागमें कार्य नहीं कर सकता यह बात पिटमेन प्रणालीके ज्ञाता खूब अच्छी तरह जानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सब बातोंसे पाठक समझ गये होंगे कि एक सफल शोर्टहैण्डके लिये यह आवश्यक है कि (१) उसके संकेत इतने साफ हो कि वे किसी भी दूसरे संकेतों से मिलने पर अपना व्यक्तित्व बनाये रखने में समर्थ हों। (२) संकेत बहुत कम हो परंतु सब ध्वनियों को व्यक्त कर सके। (३) स्थान और लाइनको महत्व न दिया जाय। (४) पतले पनको विशेष स्थान न हो। (५) अत्यधिक शब्द संकेतोंसे विद्यार्थियोंका मस्तिस्कपर अधिक भार नहीं लादा जाय (६) नियम बहुतकम हो (७) इतने पर भी काफी तीव्र गतिसे लिखा जाय।

अब मैं आपका ध्यान हिंदी भाषाके एक नये शोर्ट हैण्डकी तरफ आकर्षत करूंगा। जो कि ब्यावर-से अविष्कृत और प्रकाशित हुआ है। इसके आविष्कर्ता और प्रकाशक एल० पी० जैन है। और यह शोर्ट हैण्ड भी एल० पी० जैनकी संकेत लिपि के नामसे प्रचलित है।

इस लिपिका जन्म सन १९३१ के नवम्बर मासमें हुआ है। इसमें स्वर व्यंजन और मात्रा आदि मिलाकर कुल ३७ संकेत हैं। इससे कुछ शिक्षार्थियोंको अधिक भी याद रखनेकी आवश्यकता नहीं है। हरेक संकेत परस्पर एक दूसरेसे भिन्न ह। लाइनके ऊपर नीचे लिखने आदिका कोई झंझट नहीं है। मोटेपन पतलेपन लंबाई और छोटाई आदि लिखनेका कोई विशेष उल्लख नहीं है। संकेत परस्पर एक दूसरेसे मिलने पर कोई भ्रम उत्पन्न नहीं करते हैं। नियम बहुत कम है। शब्द संकेत नहीं रखे गये हैं। लिखते समय स्मृतिपर कुछ भी दवाब नहीं पड़ता है। पिटमेन या अन्य किसी शोर्टहैंड प्रणालीसे सहायता नहीं ली गयी है। और यह ध्वनि के आधारपर बनी हुयी विल स्वतंत्र खोज है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि फिर इसमें गतिपूर्वक कैसे लिखा जा सके। मैं अपनी बुद्धि अनुसार जहां तक इस विषय को समझ सका हूं समझ कर खूब अध्ययन कर इस विचारपर पहुंचाहूं कि एल० पी जैनने अन्य प्रणालियोंकी अपेक्षा अपनी प्रणाली में चिन्होंको अति सरल बना कर कर ही अपनी गति का कार्य सिद्ध किया है जो वर्ण संकेत प्रत्येक भाषामें जितने समयमें लिखा जा सकता है वही संकेत अपनी प्रणालीमें कमसे कम चौथाई समय में लिखा जाय इसका आविष्कर्तानें संकेत बनानेमें पूर्ण प्रयत्न किया है। यही इसका गति पूर्वक लिखे जानेका मूल मंत्र है।


प्रभावशाली व्यक्ति

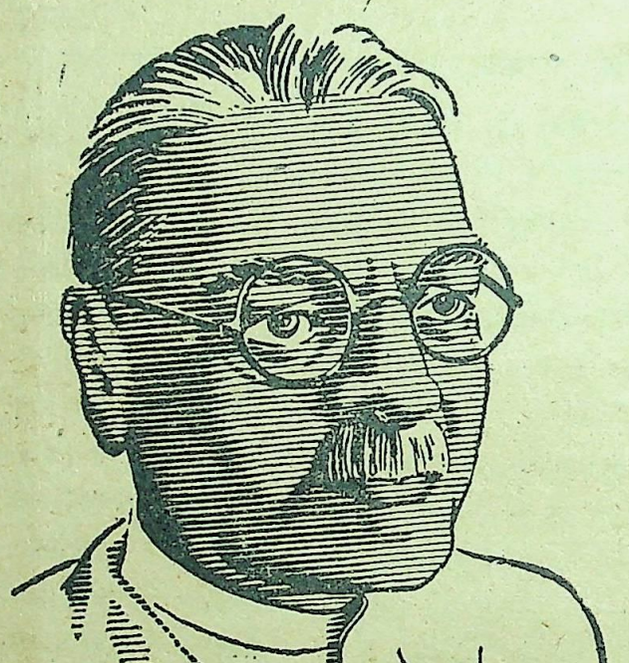

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

जिन व्यक्तियों को आप आदर देते हैं वे वास्तवमें वे व्यक्ति हैं जिन्होंने सफलता के इस सरलतम नियम का पालन सीख लिया है—एक सुव्यवस्थित, सुसज्जित आकृति। प्रभावशाली व्यक्तियों की बुद्धिमता से लाभान्वित होते हुये जिलेट पर विश्वास रखिये जो आपको इतने अल्प व्यय में प्रतिदिन जीवन की सर्वोत्तम और सब से स्वच्छ हजामत देता है।

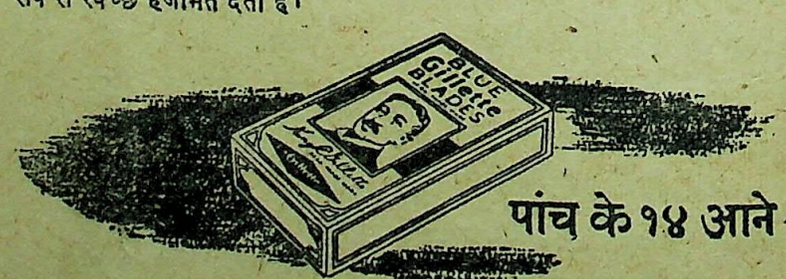


पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्लू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

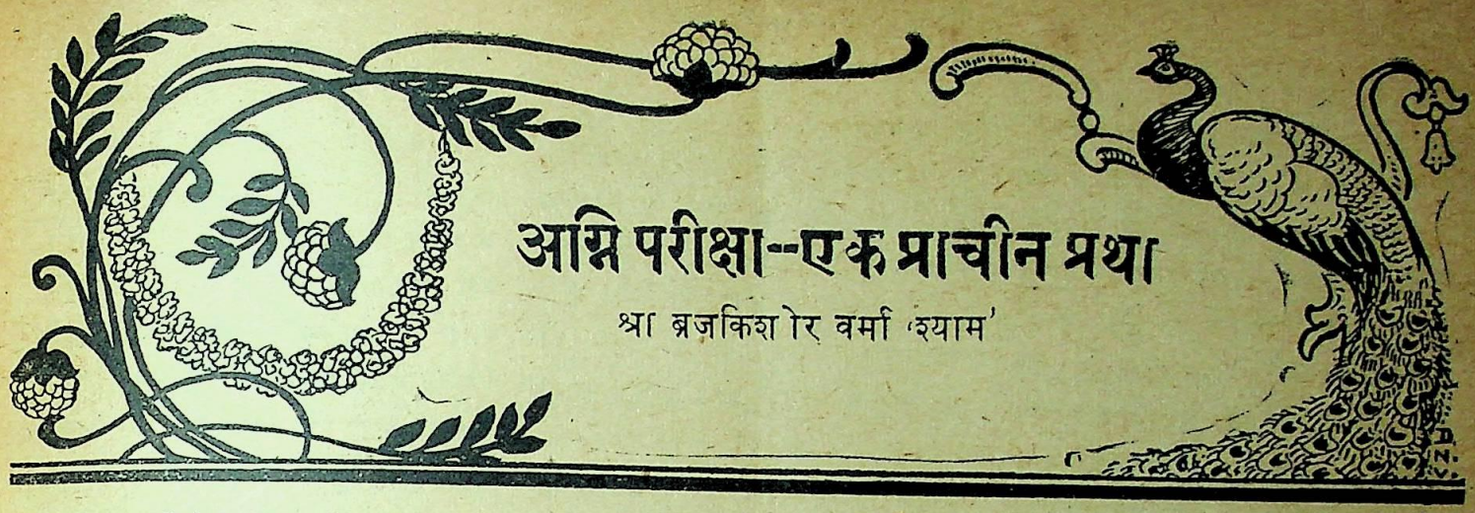

# अग्नि परीक्षा--एक प्राचीन प्रथा

श्री ब्रजकिशोर वर्मा 'श्याम'

इस पर मिले प्रशंसा पत्रोंसे व प्रतियोगितासे इसकी प्रमाणिकता भी सिद्ध हो जाती है।

सन १९३८ के अजमेर मेरवाड़ा राजनैतिक परिषदके पंचम अधिवेशन शोर्टहैण्ड प्रतियोगितामें जैन प्रणालीके ज्ञाता एक महाशय सर्व प्रथम रहे और हिंदीमें इस पद्धति द्वारा १४० शब्द प्रतिमिनटकी गतिसे लिख कर हिंदी संकेतलिपिकी स्पीडकी प्रथम रेकार्ड स्थापित किया। जिसकेउपलक्षमें श्री माननीय भूलाभाई देसाईने उन्हें स्वर्णपदक प्रदान कर सम्मानित किया।

अभी थोड़े समय पहले ग्वालियर हाईकोर्टके तीन स्थानोंके लिये श्रीमान माननीय चीफ जस्टिस श्री जी० के सिंघ साहिब की अध्यक्षतामें हिंदी शोर्टहैण्ड पद्धतिका कम्पिटिशन हुआ। इस कम्पिटिशनमें भिन्न भिन्न शोर्टहैण्डके जाननेवाले सात उम्मेदवार सम्मिलित हुए। जिनमेसे तीन उम्मेदवार जो कि जैन प्रणालीके जाननेवाले थे सफल हुए।

इस पद्धतिके ज्ञाता शिक्षार्थियोंने हिंदी साहित्य सम्मेलन दिल्ली, पूज्य म० गांधी जीकी अध्यक्षतामें हिंदी साहित्य सम्मेलन इन्दौर, लेजिस्लेटिव कौंसिल इंदौर, सी० पी० बरार लेजिस्लेटिव कौंसिल नागपुर, सेंट्रल एडवाइजरी बोर्ड जयपुर, जोधपुर और उदयपुर आदि अनेकों जगहकी कार्यवाहीकी संतोषप्रद रिपोर्ट लेकर ख्याति प्राप्त की है। इससे मेरे कहनेका मतलब आप यह न समझेंकि जैन प्रणालीमें कोई आक्षेप नहीं किया जा सकता। इसमे भी अवश्य आक्षेपकी स्थान होगा। भविष्य

अग्नि परीक्षाकी प्रथा बहुत पुरानी है। वह संसारके प्रायः सब देशोंमें प्रचलित रही है। हिंदू धर्म शास्त्रमें तो उसका विस्तार उल्लेख मिलता है। किसी एक व्यक्तिके विषयमें इस बातका निर्णय करनेके लिये कि वह सच बोलता है या झूठ अथवा वह सचमुच अपराधी है या निरपराध, उसके हाथपर आगका दहकता हुआ गोला रखते थे, उसे जलमें डुबोते थे या विष पिलाते थे, और इन सबका प्रभाव उसपर देखते थे। प्राचीन देशोंकी व्यवहार वन्या पद्धति में अभियोग निर्णयके लिये इस प्रकारकी बहुत सी परीक्षाओंका उल्लेख मिलता है।

## दिव्य साक्षी

हिन्दू-स्मृतियोंमें उनको दिव्यसाक्षी का नाम दिया गया है, क्योंकि इनमें अभियुक्त किसी एक दैवीशक्तिको साथी मान कर अपने निर्दोष या सत्यवादी होनेका शपथ लेता था और विश्वास करता था कि असत्य भाषणसे वह शक्ति परोक्ष या प्रत्यक्ष उसके अमंगलका कारण बनेगी। देशकाल भेदसे उनके भेद रहे हैं, किंतु मूलरुपमें वे एक थीं।

हमारे धर्मशास्त्रोंमें नौ प्रकारकी दिव्य साक्षियोंका उल्लेख मिलता है--तुला, अग्नि, जल, विष, कोश, तण्डुल, तप्तभाषक, काल और धर्मज। इनमें पहले पांचका विवरण याज्ञवल्क्य स्मृतिमें पढ़नेको मिलता ह। तुला-परीक्षामें अभियुक्तको बड़े तराजू पर बैठा कर दो बार अदल बदल कर तोलते थे। दूसरी बारकी तौलमें यदि वह बढ़ जाता तो शुद्ध और यदि बराबर उतर गया या घट गया तो दोषी समझा जाता था। अग्नि परीक्षामें तपाये हुए लोहेको अंजलीमें लेकर सात मंडलोंके भीतर धीरे धीरे चलना पड़ता था। जल-परीक्षामें अभियुक्तवो एक निश्चित समय तक जलमें डुवो कर रखा जाता था। गोता लगानेके समय तीन वाण छोड़े जाते थे। तीसरा वरण ठीक उसी समय छूटता था, जब अभियुक्तको जलमें डुबोते थे। वाण छूटते ही एक आदमी वेगसे उस स्थान पर दौड़ जाता था, जहां वाण गिरता और एक दूसरा आदमी उस वाणको लेकर तुरंत उस स्थान पर दौड़ आता था, जहां से वाण छूटता था। इतने समय तक यदि अभियुक्त जलमें बना रहता, तो वह निर्दोष समझा जाता था। विष परीक्षामें अभियुक्त को विशेष मात्रामें विष खिलाया जाता

---

त्रुटियोंको पाकर उन्हें निकाल बाहर फेंकेगा। पूर्ण तो सिर्फ एक परमात्मा है जिसे उन्नति की आवश्यकता नहीं। बाकी सब अपूर्ण हैं। और उन्नतिकी आकांक्षा रखते हैं। मेरे कहनेका मतलब यह है कि अभी तक जितनी हिंदी शोर्टहैण्ड प्रणालियां है। उन सबमें यह एक ही ऐसी प्रणाली है जो अपने प्रणालियोंकी बहुतसी त्रुटियोंको अपने में नहीं रखती है। और साथमें भविष्य भी उज्जवल रखती है।

अशा है हिंदी विशेषज्ञ हमारी राष्ट्र भाषाको सर्वांगपूर्ण बनानेके लिये प्रचलित शोर्ट हैण्ड प्रणालियोंकी निष्पक्ष रूपसेसे पूर्ण परीक्षा करके एवं प्रतियोगिता करके जो सबसे सरल और उपयोगी प्रणाली साबित हो उसे शिक्षा विभागमें कायम करायेंगे।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। यदि विषका कोई प्रभाव न होता, तो वह निर्दोष माना जाता था। कोश-परीक्षा में किसी देव-मूर्तिके स्थानका तीन अंजली जल पिलाया जाता था। यदि सात या चौदह दिनके भीतर उक्त देवताके कोपसे अभियुक्तको कोई बड़ा दुख न हो होता तो वह निर्दोष माना जाता था। इन सब परीक्षाओंका बड़े अपराधोंमें प्रयोग होता था। साधारण चोरीके लिये तण्डुल और बड़ी चोरीके लिये तप्त माषकसे काम लेते थे। तण्डुल-परीक्षाओंमें अभियुक्तको किसी देवताके स्नानके जलमें भिगोए चावल चबानेको दिये जाते थे और फिर उससे थूकने कहते थे। थूकके साथ यदि लोहू गिरा, तो फिर उसे दोषी मान लेते थे। सप्तमाषक-परीक्षामें खौलते हुए घी या तेलमें स्वर्ण या तावेकी उर्दके बराबर बनी छोटी-छोटी गोलियां डाल देते और उन्हें अभियुक्तसे उठानेको कहते थे। मनुस्मृति में भी जो कि याज्ञवल्क्यसे बहुत पहले की है, अग्नि और जल परीक्षाका विधान मिलता है। लिखा है कि शील विधिके अनुसार अभियुक्तसे अग्निमें तपाकर लाल किया गया लोहेका गोला उठावे या जलमें डुबकी लगाये। यदि वह आगके गोलेसे न जले और जलमें न डूबे तो उसकी शपथ सत्य समझने योग्य है।

## सीताका अग्नि परीक्षा

हमारे प्राचीन साहित्यमें अग्नि परीक्षा सबसे प्रसिद्ध उदाहरण सीताका है। लंका विजयके पश्चात राम जब सीताके चरित्र पर संदेह करके उन्हें ग्रहण नहीं करते तो वे निराश व दुखी होकर अग्नि-प्रवेशकी तैयारी करती हैं। बाल्मीकि रामायणमें इसका सुन्दर वर्णन है। सीताके आग्रहसे लक्षमण उनके लिये चिता तैयारकर देते हैं और सीता धधकती आगकी लपटोंके सामने आकर हाथ जोड़ कहती हैं--जिस प्रकार मेरा मन कभी राघवसे अलग नहीं हुआ, उसी तरह यह सतिसाक्षी अग्नि चारों ओरसे मेरी रक्षा करे। कर्म, वाणी और मनसे यदि मैं सर्व धर्मज्ञ राघवको छोड़ कर दूसरेको न जानती होगीं, तो यह अग्नि मेरी रक्षा करो।

यूरोपकी प्राचीन किम्वदंतियोंमें भी सीताके अग्नि प्रवेशकी तरह की एक घटनाका वर्णन मिलता है। कहा जाता है कि फ्रांसके बादशाह चार्ल्सकी रानी रिवार्डिसने लोगोंकी दृष्टिमें अपने को शुद्ध और सदाचारणी सिद्ध करनेके उद्देश्य से अपने सारे बदनको मोमसे लपेट कर अग्निमें प्रवेश किया था। यह कथा सीता के आख्यानसे प्रभावित जान पड़ती है। स्कैण्डीनेवियाके व्यवहार शास्त्रोंका कुछ प्राचीन संबंध जान पड़ता है।

ग्रीसके साहित्यमें भी अग्नि परीक्षा की प्रथाके चिन्ह मिटते हैं। जब परीक्षाके लिये यूरोप में अभियुक्तके हाथ पैर बांध कर जलमें डुबो देते थे। एक निश्चित समयके के भीतर यदि वह अपने आप ऊपर न आया तब तो उसे निर्दोष और यदि ऊपर आ गया तो दोषी मान लेते थे। लोगोंका विश्वास था कि जो निर्दोष है; उसे जल ग्रहण नहीं करेगा। इस प्रथामें आगे चलकर कुछ संशोधन किया गया। अभियुक्तकी कमरम एक रस्सी बांधी जाने लगी, ताकि उसे बिल्कुल डूबनेसे बचा लिया जाय। इसी प्रकार प्राचीन बेबीलोनियामें भी जल द्वारा स्त्रियोंकी परीक्षा ली जाती थी। मालूम ऐसा होता है--कि ये सब विधियां भारत या मध्य एशियाके किसी स्थानमें उद्भूत हुईं और वहांसे सर्वत्र फैल गयीं। समान कारणोंके उपस्थित होनेसे दो विभिन्न देशोंमें स्वतन्त्र रूपसे भी एक सी प्रथाओं का उद्भव होना बहुत सम्भव है। भारतीय शास्त्रोंकी तप्तमाषक प्रथामें उबलते हुए घी या तेलका उल्लेख है। अरबमें इसके स्थान पर पिघलते हुए गरम शीशेका प्रयोग करते थे! अफ्रीकाकी जंगली जातियोंमें भारतीय विष परीक्षा अब भी प्रचलित है।

आधुनिक सभ्यताके विकासके साथ-साथ इन सब प्रथाओंका अब लोप हो गया है, किन्तु उनके अवशेष तो अब भी हमारे समाजम मौजूद ह। प्राचीन कालकीतण्डुल चबानेकी प्रथामें अब भी हमारे ग्रामीणों का विश्वास है। छोटी मोटी चोरी हो जाने पर ग्रामीण कहते हैं कि शाहजहानी रुपये से चावल तौल कर खिला दो जिसने चोरी की होगी, उसके मुंहसे लोहू गिरने लगेगा और इस तरह चोरका पता लग जायेगा। यहां शाहजहानी रुपयेकी बात बड़ी मनोरंजक है। स्मृतियों आदिमें किसी देवताके स्नानके जलमें चावलोंको भिगो कर अभियुक्तको देनेकी बात लिखी है। उस जलका स्थान शाहजहानी रुपयेने कब और कैसे ग्रहण किया, कहा नहीं जा सकता। यूरोप के प्राचीन न्यायालयोंमें अभियुक्तको मंत्र पूत रोटी और पनीर खानेको देते थे। उससे कहा जाता था कि अगर तुम झूठ बोलोगे तो देवता तुम्हारी गलेको रूंध देंगे। यह प्रथा ताण्डुल परीक्षाका भी एक रूप है।

ग्रामीणोंके मुखसे अक्सर एक शपथ सुनी जाती है--यदि हम झूठ बोलें तो हमारे मुंहसे लोऊ (लोहू) गिरे। यह शपथ हमें प्राचीन कालकी उस प्रथाका स्मरण कराती है, जिसके अनुसार हमारा यह विश्वास था कि किसी झूठे आदमीको यदि चावल चबानेको दिये जायं, तो उसके मुंहसे लोहू गिरने लगेगा। इसी प्रकार और भी बहुत सी शपथें देहातोंमें प्रचलित हैं, जैसे--यदि हमने चोरीकी हो अथवा अमुक बुरा कर्म किया हो तो हमारा नाश हो जाये। हम मर जायं आदि।

शपथ भी दिव्य साक्षीका एक हल्का रूप थी। बड़े अपराधोंके लिये दिव्य साक्षी का प्रयोग होता था। और छोटोंके लिये अभियुक्तसे किसी देवता या आत्मीय जनकी शपथ लिवाई जाती थी। वर्तमान न्यायालयमें गवाहीसे पहले गीता या कुरान उठाने को कहा जाता है, फिर उससे गवाही ली जाती है। यह दिव्य साक्षीका एक प्रकार है।

ग्रामोंकी साधारण जनता अग्नि परीक्षा की सचाईमें आज भी विश्वास करती है। वह आज भी यह समझती है कि अग्निके द्वारा किसी एक व्यक्तिके पुण्य पाप की परीक्षा ली जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# महापण्डित सायणाचार्य

लेखक--श्रीकृष्णाचार्य एम० ए०

भारतकी सांस्कृतिक परंपरामें महापण्डित सायणाचार्य शास्त्रीय ज्ञान और व्यवहारिक तथा लौकिक अनुभवके प्रतीक थे। भारतीय वाङ्मयमें महर्षि बाल्मीकि, व्यास 'पाणिनी' पतंजलि आदिको काव्यकार और पांण्डित्यकी दृष्टिसे उच्चतम स्थान प्राप्त है। भारत ही क्यों, संस्कृत साहित्य प्रेमी विश्वका ऐसा कौन सा लेखक या अलोचक है जो इनकी प्रतिमासे चमत्कृत न हो। लोकने इन महा-पुरुषोंको ऋषि और मुनिकी श्रेणीमें रखा है। इतना होते हुए भी आंध्रदेशको धन्य करनेवाले महा पं० सायणाचार्यसे इन महापुरुषोंसे तुलना नहीं हो सकती। ऋषिओं और मुनियोंकी कोटि तक न पहुंचते हुए भी सायणाचार्य में कुछ ऐसे विशिष्ट गुण थे जो अन्यत्र दुष्प्राप्य हैं।

दिव्य साक्षीकी ये सब प्रथाएं मानव जातिकी उस प्राथमिक अवस्थाका स्मारक हैं जब कि मनुष्य विवेक बुद्धिसे काम लेने की अपेक्षा दैवी चमत्कारोंमें अधिक विश्वास रखता था और समझता था कि देवी-देवताओंकी शक्तियां अथवा जादू टोना झूठ के निर्णय या किसी अभियोगका न्याय करनेके विषयमें सचमुच ही उसके सहायक हो सकते हैं। शपथों, नाना प्रकारकी धमकियों और अभिशाप रूप वचनोंके रूपमें उनके अवशेष अब भी हमारे समाजमें वर्तमान हों, अब भी किसी न किसी किसी रूपमें दिव्य साक्षियोंकी प्रथामें हमारा विश्वास हो तो इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं। हम अपनेको भले ही सभ्यत की चरम सीमा तक पहुंचा हुआ समझें, भले ही हमने अपने हानिका यथेष्ठ विकास कर लिया किन्तु अपनी स्वाभाविक वृत्तियों को हम अभी तक नहीं बदल सके हैं। आज नरसंहार, लूट-पाट और अमानुषिक व्यवहारोंका जो भीषण चित्र हमारे सामने हैं उससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि सभ्यताओं और संस्कृतियोंका भले हीं उत्थान और पतन होता रहा हो, पर स्वयं मनुष्य लाख दो लाख वर्ष पहले जैसा था वैसा ही आज भी है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। हम कह सकते हैं कि गत ५-६ हजार वर्षोंके भीतर सभ्यता यदि सौ कदम आगे बढ़ी है, तो स्वयं मनुष्य मुश्किलसे एक इंच आगे बढ़ा है।

---

आज वेदोंका अनुशीलन करनेवाले विद्वान तथा साधारण पढ़े लिखे या अन्य विषयोंके पण्डित भी इतना तो जानते ही हैं कि सायणार्यने वेदोंपर भाष्य लिखा है। यों भाष्यकार या टीकाकार होना भारतीय अनुश्रुतियोंमें कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं है। क्योंकि पचासों श्रेष्ठ भाष्यकार और टीकाकार भारतमें हो गये हैं,और उन टीकाकारोंमें महत्व भी उतना ही जितना मूल लेखकका। व्याकरण (पाणिनीकृत) पर प्रसिद्ध भाष्य लिखकर पतंजलिकी अत्यधिक प्रसिद्ध हुई है। ठीक इसी प्रकार वेदपर भाष्य लिखकर सायणाचार्यने ख्याति प्राप्त की। एक तरह से सायणाका काम पतंजलिसे कठिन था। पाणिनीने जिस व्याकरणको जन्म दिया उसकी परंपरा देशमें थी। पतंजलि पाणिनीसे अधिक से अधिक ३०० या ४०० वर्ष पूर्व हुए थे। दूसरे रूप में हम यह कह सकते हैं कि पतंजलिने समकालीन भाषा और व्याकरणको अपने अध्यवसाय का विषय बनाया। लेकिन सायणाने वेदोंकी उस भाषाकी छानबीन की जो हजारों वर्ष पुरानी थी, जो पाणिनी की भाषा और व्याकरणसे भिन्न थी, जिसका अच्छेसे अच्छे संस्कृतज्ञ भी समझनेमें असमर्थ थे। संक्षेपमें सायणने उस भाषाके पुनरुद्धारका प्रण किया जो देशसे लुप्तसी हो रही थी जिसके अर्थोंके संबंधमें नाना प्रकारके अर्थ-अनर्थोंका दौर-दौरा था। यह वह समय था कि जबकि एक ओर तो यह कहा जाता था कि वेदोंका अर्थ हो ही नहीं सकता ! क्योंकि वह श्रुति हैं-अनिर्वचनीय हैं, दूसरी और निरुक्तकारके उस वचनके समर्थक भी थे जो यह कहा करते थे कि "जो मनुष्य वेदोंको बिना समझे स्मरण करता है वह केवल गदहेके बोझ लादनेके तुल्य है।"

---

वेदोंपर भाष्य लिखनेका संकल्प ही सायणके पांडित्यका दिग्दर्शक है। भारतीय वाडमयमें जब हम रचनाकारोंके जीवन चरित पर विचार करते हैं तो हमें बड़ी विचित्र बातें परंपरासे ज्ञात होती हैं। वाल्मीकि प्रसिद्ध डाकू थे,फिर महान् ऋषि और आदि कवि माने गये। व्यासकी उत्पत्तिके संबंध में भी विचित्र अनुश्रुति है। कालिदास प्रसिद्ध मूर्ख थे या यह कहिये कि उनके जीवनके बारेमें कुछ पता नहीं ! कोई उन्हें शुकालमें बतलाता है तो कोई उन्हें गुप्त समृट चंद्रगुप्त द्वितीयका आश्रित कवि। भगवान् पाणिनी और पतंजलिका का भी ठीक ठीक पता नहीं लगा है। लेकिन सायण मध्ययुगकी विभूति हैं ! अतः उनके बंश, तिथि तथा कुटुंबके संबंधमें हम बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ जानते हैं। सायण अपेक्षाकृत अर्वाचीन लेखक थे, अतः किंवदंतियोंके आवरणने ढंककर उनके जीवन चरितको दुर्बोध नहीं बनाया है।

भारतसे अन्तिम ब्रिटिश पल्टनकी स्वदेश-यात्रा

भारतसे ब्रिटिश फौजोंका हटना गत २८ फरवरीको पूर्ण हो गया जबकि प्रथम सोमर्सेट लाइट इन्फैण्ट्री ने बम्बईसे प्रस्थान किया। बम्बईके गवर्नर राजा सर महाराज सिंह ब्रिटिश सैनिकोंको विदाई दे रहे हैं।

## जन्म

विक्रमी संवत् १३७२ में सायणाचार्य ने उत्पन्न होकर आंध्र देशको धन्य किया! आपने एक जगह लिखा भी है कि 'आस्माकमान्ध्राणाम्।' आपके पिताका नाम मायण और माताका नाम श्री मायी था। भारद्वाज गोज, कृष्ण यजुर्वेदके तैत्तिरीय शाखाके ब्राह्मणमें इनका मूल था। आपके बड़े भाई माधवने भी विजय नगर साम्राज्यके मंत्रीपदको सुशोभित किया तथा दर्शन-शास्त्र के प्रसिद्ध पंडितोंमें इनका नाम गौरवसे लिया जाता है। छोटे भाई भोगनाथभी अपने समयमें प्रसिद्ध कवि थे।

सायणके बाल्यकालका वृत नहीं मिलता है। किंतु इतना जाना जा चुका है कि इनके तथा भाईके गुरु श्रृंगेरीमठके पादाधिष्ठित आचार्य स्वामी विद्यातीर्थजी थे। विद्यातीर्थकी विद्वता उस समय अतुलनीय थी। विजय नगरके सम्राट भी उनके त्याग और ज्ञान संपन्नतासे प्रभावित होकर अपने आपको शिष्य मानते थे। श्री विद्यातीर्थजी के उपरांत मठके प्रतिष्ठाता भारतीतीर्थजी हुए। वह भी दर्शनके प्रतिभाशाली पण्डित थे। तीनों भाइयोंने इनसे भी शिक्षा प्राप्त की। इस परिवारके तीसरे गुरु श्री कंठाचार्य थे।

## कंपराजके प्रधान

सायणके जीवनकी स्पष्ट रेखा ३१ वें वर्षसे मिलती है। उस समय वह महाराज हरिहरके अनुज कंपणके मंत्री थे। सायण नौ वर्ष तक 'कंपराज महा-प्रधान' कंपण के मंत्री थे। सायण नौ वर्ष तक 'कंपराज-महा प्रधान' रहे। इस जीवन सूत्र से स्पष्ट है कि सायण अवश्य ही विजयनगर के सम्मानित तथा सुसंस्कृत ब्राह्मण कुल-दीपक थे। तीस वर्षकी अवस्थामें उन्होंने यथेष्ठ विद्या संपन्न होनेके साथ मंत्री पद के लिये अपेक्षित राजनीति तथा व्यवहार कुशलताका पाठ भी पढ़ लिया होगा। सायण के प्रारंभिक जीवनमें पदोन्नतिका कारण संभवतः बड़े भाई माधव थे, वह राज्यके प्रधान मंत्री थे। बादमें तो सायणने अपनी प्रतिभासे अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त कर लिया। सूर्यको भी भला कभी दीपककी आवश्यकता है?

कंपणके महा प्रधान पर सायणने नौ-वर्ष तक कार्य किया। पुनः वि० सं० १४१२ में कंपण महाराजके पुत्र संगम द्वितीयके संरक्षक नियुक्त हुए। संरक्षक होनेका मतलब यह था कि सायण धीरे धीरे राज्यके विश्वासपात्र और प्रतिष्ठित अधिकारी हो गये। अलंकार सुधानिधिसे संगमके साथ संपर्क स्पष्ट है।

"सम्यक् शिक्षां सचिव गमितः शैशवे
सायणा चार्य.
प्रौढ़ि गाढ़ां प्रकटयति ते संगमेन्द्रः प्रयोगे।"

## संगमके शिक्षक और सेनापति

४० वर्षकी अवस्थामें सायण राज्य के प्रधान अधिकारियोंमें गिने जाने लगे! वह संगमके संरक्षक केवल वाक-परामर्श देनेके लिये नहीं बने थे। आपत्ति आनेपर सायणाचार्यने चोलदेशके राजा चम्पके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विरुद्ध सैन्य संचालन कर युद्ध किया तथा उसे पराजित कर अक्षय कीर्ति की। संगम के समय सायणकी सैन्य-संचालन शक्ति का परिचय हमें कुरु-पांडवोंके युद्ध शिक्षा दाता दोणाचार्यका स्मरण हो आता है। यहां प्रसंगवशात् कौटिल्यका स्मरण भी हो आता है। कौटल्यके अर्थशास्त्रका उद्धार १५ वर्ष पहिले ही हुआ था। उस ग्रंथ पर एक विदेशी विद्वानने टिप्पणी करते हुए लिखा है कि अर्थशास्त्रकौटिल्य रचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि वह ब्राह्मण था और अर्थशास्त्र युद्ध और राजनीतिकी बारीक विचार धारोंसेसे ओत प्रोतः है। ऐसी निर्मूल धारण स्थापित करने वाले आलोचकोंके संमुख सायणका उदाहरण यथेष्ट है जिसने कलम लेकर वेद-भाष्य लिखा तथा शस्त्र लेकर युद्धमें विजयघोषसे शत्रु के हृदयको भी कंपायमान किया। सायणने ने गरुड़नगरके राजा पर भी आक्रमण किया था।

## बुक्क प्रथमके मन्त्री

बुक्कराजके यहां ४२ वर्षकी अवस्था में सायणने मंत्रिपद स्वीकार किया तथा सोलह वर्षों तक शासनके व्यस्त और कठोर कर्त्तव्यपूर्ण आदर्शका पालन करते रहे। सायणकी कीर्ति या कहिये प्रति भी उस समय चरम सीमा तक पहुंच गयी थी। सायणने वेदोंके भाष्यका श्री गणेश बुक्कराजके मंत्रित्व कालमें ही किया। सुभाषित सुधानिधि, प्रायाश्चित सुधानिधि, आयुर्वेद सुधानिधितथा अलंकार सुधानिधि आदि ग्रंथ सायणने संगमके मंत्रित्व कालमें लिखे। इनके अतिरिक्त धातुवृत्ति, पुरुषार्थ सुधानिधि और यज्ञतंत्र सुधानिधि नामक पुस्तकों की रचना भी सायणने की। वेदोंके अनुशीलनमें सायणने विशेष समय लगाया।

## वेदोंका अनुशीलन

ऋगवेदपर सायणने अपपने विचार सं० १४२० से १४४४ तक मध्यमें स्थिर किये चारों वेदों पर सायणने अपने विचार प्रगटि कये ही, साथमें ब्राह्मण तथा आरण्यक साहित्य पर भी बहुत कुछ लिखा। ऋगवेदके ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण और आरंयक, एतरेय ब्राह्मण और आरंयक पर इस मेधावान विचारक ने जमकर लिखा शतपथ, उपनिषद, चजुर्वेद ब्राह्मणों पर भी सायणने लिखा। सायण और माधवकी जीवनी लेखक श्री बलदेव प्रसाद उपाध्यायका मत है कि 'जहां तक पता चलता है सायणने ज्ञान कांडकी व्याख्यामें किसी ग्रंथको नहीं लिखा। संक्षेपमें-इसमहा पं०की प्रतिभाका परिचय प्राप्त करनेके लिये इतना जान लेना अलं है कि उसने रस अलंकार, आयुर्वेद धर्मशास्त्र आदिके साथ साथ वेदों और वैदिक साहित्य पर भी लिखा! अब प्रश्न उठता है कि सायणको, जो चार चार राजओंका संरक्षक, मंत्री या सचिव रहा हो उसे पचीसों ग्रथोंके लिखनेके अवकाश कहांसे मिल गया। केवल मंत्रित्वका, पुनः घरपर आकर पुस्तकें ही लिखीं हो ऐसी बात नहीं है। हमारा आश्चर्य तो यह जानकर और भी स्तंभित हो जाता है कि सायण युद्ध कला में भी प्रवीण थे उन्हें सैन्य संचालनकी पूरी योग्यता थी। तात्पर्य यह कि इस पण्डित का जीवन कोरा पण्डितका ही जीवन तो था नहीं, कहीं विद्वान होने के कारण परामर्शदाताके रूपमें महामंत्री पदको संहालना, कहीं रणनीतिमें कुशल होनेके कारण सेवाके संगठनमें योग देना! इतने संघर्षमय जीवनमें भी गंभीर विषयोंका मनन और उनपर व्यवस्थित रूपसे लिखना भी!

इस कौतूहलका एक मात्र उत्तर तो यह है कि सब प्रतिभाका खेल है! प्रतिभाशाली मानव सब कुछ कर सकता है। ऐसा मनुष्यमें छिपी हुई अपार शक्तिको पहचानता है तथा उस सामर्थके अनुसार बहुत कुछ कर भी डालता है। प्रतिभाके अतिरिक्त भी, सायणके जीवन चरितके अध्ययनसे ऐसी कई बातोंका पता लगता है कि जिससे हम उसके साधनोंका पता लगा सकते हैं। सायण एक प्रसिद्ध पण्डित कुलमें पैदा हुए थे, जिसके यहां राजा महाराजाओंका संरक्षक होना, या मंत्री पद सुशोभित करने की परंपरा बन गई थी! अतः सायणका बाल्यकाल व्यवस्थितमें अवश्य बीता होगा। राजसे संबद्ध होनेके कारण शस्त्रार्थ चलाने की निपुणता भी सायणने बाल्यकाल में प्राप्त कर ली होगी। रण विद्याका अभ्यास युवास्थामें ही संभव है। पुनः उस विद्याका महत्वपूर्ण पदों पर बने रहनेसे विकास होता ही रहा। मध्ययुगमें सब राजा महाराजोंको युद्ध की शिक्षा मिलती थी, फिर भला मंत्री, सचिव तथा उच्च अधिकारी वर्ग उस शिक्षासे अलग कैसे हो सकता था। आजकलकी तरह संसारके अधिकांश भागों में नागरिक और युद्ध शिक्षा अलग अलग नहीं थीं। सेनानायक (कमांडर) और गवर्नर पद एक व्यक्तिमें ही समविष्ट थे। भारतीय संस्कृतिकी यह विशेषता रही है कि ब्राह्मण परामर्शदाता महामात्र ही नहीं हुआ करते थे वरन वीरता पूर्वक युद्ध में लड़नेसे लेकर संधि और 'विग्रह' आदि सभी नीति विद्याओंमें भी निपुण होते थे। विजय नगर साम्राज्यका निर्माण भी संघर्ष की विशेष परिस्थितियोंमें हुआ था। पड़ौस के बहमनी बंशसे प्रतिक्षण युद्धकी आशंका रहती थी, अतः उस समय नागरिक मात्र को वैसी परिस्थितियोंका सामना करने के लिये अप्रस्तुत रहना ही पड़ता था। उस दृष्टिसे सायण ज्ञान और शक्तिके समन्वित प्रतीक थे। वे द्रोणाचार्य, विश्वमित्र, कौटिल्य हरिषेण द्वारा स्थापितकी हुई परंपराके अंतिम स्तभ थे। ब्राह्मणमंत्री तो बादमें भी हुए। विद्वत्ता और वीरता; आचार्यत्व और कलाकार वह समन्वय फिर कहां देखनेको मिला।

सायण इतने व्यस्त जीवनम इतना लिखसके उसके और कई कारण भी हैं। बुक्कराज के उपरांत ६४ वर्षकी अवस्था में उन्होंने हरिहरका शासन सूत्र भी ग्रहण किया तथा ७२ वर्षकी अवस्था तक अदम्य उत्साह से शासन कार्य करते रहे। तात्पर्य यह कि सायणने दीर्घ जीवन पाया, वह वृहत जीवन जिसमें कर्मठताके अतिरिक्त और कुछ था ही नहीं। यहां तक वह कभी कभी छुट्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकर घर आते थे तो अपनी संततिके जीवन क्रमपर दृष्टि देकर उसे व्यवथित करनेकी चेष्टा करते थे । सायणके पुत्र थे—कंपण, मायण और शिंगण । अपने पुत्रोंके पालनमें सायणकी कैसी रुचि थी सो तो देखिये । तत् संव्यंजन कम्पण ! व्यसिन, संगीत शास्त्र तव प्रौढ़ि मायण ! रचना पाण्डित्य मुन्मुद्रय ।। शिक्षा दर्शय शिंगण ! क्रमजटाच चासु वेदेष्विति, स्वान् पुत्रानु पलालयन् गृह गतः सम्मोदते सायणः ।।

जेष्ठ पुत्र कम्पण संगीत शास्त्रका अभ्यास करते थे । सायण गद्यपद्य रचना में व्यस्त थे, और शिंगण वेदके क्रम-जटा आदि पाठोंका विज्ञान पढ़ रहे थे—यह सब देख विद्वान मंत्रीको कितनी प्रसन्नता होती रही होगी ?

सायण जैसे सर्वतो मुखी प्रतिभाशाली आचार्यके शिष्योंका एक दल अवश्य रहा आश्चर्य नहीं कि अपने समयके राजकीय विद्यापीठके निरीक्षक और प्रबंधक भी वह रहे हों । अतः सायणचार्यके लिये यह कोई आवश्यक नहीं था कि प्रत्येक ग्रंथको कलम लेकर स्वयं ही लिखते । अपनी विचार-धारा, दृष्टिकोंण आदिसे योग्य पंडितों या शिष्योंको अवगत करा देना भी यथेष्ठ था सायण के नाम प्रकाशित पुस्तकें पुनः संशोधनार्थ सायणके संमुख अवश्य आती रही होंगी ! अतः आर्थिक चिंताओं के पंडितोंका अभाव, अद्भुत प्रतिभा, सहयोग तथा दीर्घ आयुके कारण सायण इतना अधिक लिख सके थे तो इसमें आश्चर्य ही क्या ?

सायणकी जीवनी हमारे लिये कल्पना या अतीतका विषय होते हुए भी ऐसानहीं है जिस पर कालकी सुदीर्घताके कारण बाल्मीकि व्यास, कालिदास आदिके चरित्रों जैसे कपोल कल्पनाओंका रंग चढ़ गया हो । वह पूर्वकालीन कवियोंकी तरह संभवतः पूजनीय भी नहीं । फिर भी—क्या उन महा-पुरुषोंसे सायणकी तुलनाकी जा सकती है ? फिर भी सायण का गौरव उनसे कुछ कम है । वेद भारतीय संस्कृतियके स्तम्भ हैं सायणन उस लुप्त प्रण्य गौरवदान दिया । उप कालीन ऋषियोंसे कम अध्वसाय सायणने वेदोंके पुनरुद्धारके लिये नहीं किया होगा । जहां ऋषियोंने आत्मा परमात्माकी चर्चा की और स्वरूप ज्ञानमें अपना जीवन चुका दिया वहां सायणने भी भारतीय स्वरूप को, जो विस्मृत या जिसके कारण भ्रम की बनती महान श्रृंखला सबको आबद्ध कर लेना चाहती थी, संमुख रखा ।

विजय नगर सायणके लिये पुराना राज्य न था । अतः वहांके राजकीय पुस्त-कालयसे भी उन्हें यथेष्ठ सहायता न मिल होगी । माधव जैसे कितने पण्डित भाई भी उसकी सहायताको मिल होंगे ? फिर भी सायणने वेदोंके भाष्य करनेका व्रत लिया । आज बहुतसे पाश्चात्य और पूर्वीय विद्वान भी सायणके भाष्यको वेदोंके अर्थ के सम्बन्धमें विशेष प्रामाणिक नहीं मानते । किन्तु विद्वानोंका एक ऐसा भी दल है जो सायणका प्रबल समर्थक है । सायण भाष्य-कारोंकी परम्परामें अमर हैं । सायणका व्यक्तित्व ब्राहमणत्वके उस आदर्शका प्रतीक जिसके सम्बन्धमें यह कहा जाता है कि 'ब्राहमण क्या नहीं कर सकता ?'

सायणकी इस जीवनीके लिये मैं भी बलदेव प्रसाद उपाध्यायकी पुस्तक माधव और सायणका विशेष रूपसे कृतज्ञ हूं । सायणका पूर्ण परिचय प्राप्त करनेके लिये, हिन्दुस्तानी एकेडेमीसे प्रकाशित इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिये ।

---

# भक्तोंके भगवान

आ गयी होली धरापर तुम उतर आओ
आज तन सूना पड़ा है ।
आज मन सूता पड़ा है ।
गोपगण घबरा गये है ।
आज वन सूना पड़ा ह ।
व्यथित है टोली, धरापर तुम उतर आओ ।
आज कलियां रो रही है ।
तितलियां भी रो रही है ।
रो रही व्रजभूमि सारी,
गोपिकायें रो रही हैं ।
रिक्त है झोली, धरापर तुम उतर आओ
आज छाया खून जगमें ।
निर्बलोंका खून जगमें ।
आज नर दानव बना है,
खून करमें, खून पगमें ।
खूंनकी होली, धरापर तुम उतर आओ ।
तुमजगतमें प्यार भर दो ।
मधुसुधाकी धार भर दो ।
बीन के हैं तार टूटे,
तारमें झनकार भर दो ।
खेललो होली, धरापर तुम उतर आओ ।

श्री शिवनाथ दुबे ।

# वेदनाका भार

आज करुणा सेसना है
देख लो तुम गीत मेरा
रुठ क्यों मुझ से गया है
वह अनोखा मीत मेरा ।
खींचकर लाया मुझे है
प्यार अपने आप तेरा
खोल कर आंखे, कहो वह
क्यों बना अभिशाप मेरा ।
अज मे हूं करूण, मेरी
स्वास में आहें सनी है ।
वेदना मेरे हृदय की
आंख का आंसू बनी है ।
प्यार मेरा विवश, कातर
आसुओंमें प्राण मेरा
अढ़ूढ़ता हूं मैं कभी से
राह में अपना बसेरा ।
आज पलकों पर चला मै
वेदना का भार लिये
प्यार का मधुमास खोकर
आहका उपहार लिये ।

'अरुण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अमेरिका युद्धके लिये तैयार हो रहा है

श्री सम्पत्तानी

ऋतु परिवर्तनके साथ-साथ हवा बदल जाती है और ऋतुके अनुकल हवा सर्वत्र आपसे आप बहने लगती है। कुछ-कुछ ऐसी ही बात राजनीति परिवर्तनके संबंधमें भी लागू होती है। जब युद्ध चल रहा था, उस समयकी राजनीति कुछ दूसरी थी। सर्वत्र एकही हवा बह रही थी, फासिस्टवादका ध्वंस करके सच्चे लोकतंत्रकी स्थापना करनी के है। युद्ध समाप्त होते हीफिर राजनीति बदली और सर्वत्र शांतिका राग अलापा जाने लगा। इस शांतिको सुप्रतिष्ठित करनेके लिये संयुक्त राष्ट्र संघ जैसा आलीशान महल खड़ा किया जाने लगा पर बीच ही में राजनीतिने फिर करवट बदली और शांति स्थापन कार्य गौण हो गया। फिर सर्वत्र युद्ध की चर्चा। शांतिका महल अधूरा ही रह गया। पहले युद्ध हो ले तब न शांति। तब महल होगी ? तब पहले ही से महल बनाकर क्या होगा। उसमें किसे प्रतिष्ठित किया जायेगा, यह समस्या है। अतः शांतिकी चर्चा बन्द युद्धकी तैयारी आरम्भ हो गयी और वह भी बहुत बड़े पैमाने में। जितना बड़ा काम है उसकी तैयारीका आयोजन भी वैसा ही विराट होना चाहिय। फलतः आनद फानन अमेरिकाकी पार्लमेंटकी दोनों परिषदों का सम्मिलित अधिवेशन बुलाया गया। ऐतिहासिक अवसरोंपर ही पार्लमेंटका संयुक्त अधिवेशन बुलाया जाता है। इस वार विषयका महत्व इतना गम्भीर और गुरुत्वपूर्ण था कि अधिवेशनको बुलानेमे जिस आकस्मिकतासे काम लिया गया उसे देख सदस्य ही नहीं पार्लमेंटकी कांग्रेस के अध्यक्ष भी आश्चर्य चकित रह गय। संयुक्त अधिवेशन बुलानेकी घोषणा करने के मात्र आधा घंटा पहले उनको सूचित किया गया। वस्तु स्थितिके अतिरिक्त इन उपायों द्वारा भी राष्ट्रको यह बतानेकी चेष्टा की जा रही है कि विषय इतना गहन और महत्वपूर्ण है कि एक क्षणभी व्यर्थ बरबाद नहीं किया जा सकता।

राष्ट्रपति ट्रूमैन चाहते थे कि उनके पास जो सब बातें हैं वे बाहर फैलनेके पूर्व कांग्रेसके सामने वे स्वयं उपस्थित करें। संसारकी इस समयकी स्थितिकी तुलना १९४० के उस समयसे की जा रही है जब फ्रांसका पतन हो चुका था और प्रसिडेण्ट रूजवेल्टने उसे राष्ट्रीय संकटकी स्थिति बता कर राष्ट्रव्यापी तैयारीका कार्यक्रम पूरा करनेकी आवश्यकता बतायी थी। चेकोस्लोवाकियामें हुए आकस्मिक राज परिवर्तनकी तुलना फ्रांसके पतनके साथ की जा रही है और इस स्थितिका सामना करनेके लिये प्रेसिडेंट ट्रूमैनने पार्लमेंटके संयुक्त अधिवेशनके सामने अमेरिकामें कुछ समयके लिये अनिवार्य सैनिक भर्ती की आवश्यकता बतायी। इसके साथ-साथ व्यापक फौजी ट्रेनिंग आरंभ करने एवं यूरोपरक्षा कार्यक्रमके अनुसार शीघ्र से शीघ्र काम संपन्न होनेकी आवश्यकता भी आपने बतायी। किंतु दुनिया प्रेसिडेंट ट्रूमैनको युद्ध प्रचारककी संज्ञा न दे इसलिये आप कहते हैं कि ऊपर लिखी सिफारिशोंको शांति स्थापन और युद्ध रोकनेकी दृष्टिसे देखा जाये।

अमेरिका अपनेको संसारका परित्राता और सहायक समझने लगा है। निस्सन्देह वह संसारका सबसे अधिक संपन्न देश है और आज इस स्थितिमें है कि आर्थिक संकटमें फंसे हुए देशोंको वह इतनी सहायता दे सकता है कि वे संकटसे निकल सकते हैं। सहज ही यह प्रश्न उठता है कि अमेरिकाकी इस उदारता और सहृदयताके पीछे वास्तविकता क्या है ? अमेरिका इतना बड़ा खतरा क्यों मोल लेना चाहता है ? अपनी पूंजी वह क्यों खतरेमें डाल रहा है ? अवश्य ही प्रेसिडेंट ट्रूमैनकी घोषणामें ही इसका उत्तर दिया गया है। वे कहते है कि कम्यनिज्मसे लोकतंत्रके अस्तित्वको खतरा है क्यों कि रूस धीरे - धीरे यूरोप के स्वतंत्र राष्ट्रोंको अपने प्रभावकी परतंत्रता में जकड़ रहा है और इन राष्ट्रोंमें इतनी शक्ति नहीं है कि वे अपनी रक्षा कर सकें। अतः उनकी रक्षाका उत्तरदायित्व अमेरिकाको लेना होगा। अमेरिका यह उत्तरदायित्व तभी ले सकता है जब उसमें रूसका सामना करनेकी पर्याप्त शक्ति होगी। और इसीलिये प्रेसिडेंट ट्रूमैनने देशके सामने ऐसा कार्यक्रम रखा है मानो शीघ्रही अमेरिका युद्ध संलग्न राष्ट्र होने जा रहा है।

प्रेसिडेण्ट ट्रूमैनने वस्तु स्थिति पर जो प्रकाश डाला है उसमें अतिरंजनके साथ-साथ सुयोगसे लाभ उठानेकी भावना भी छिपी किन्तु प्रत्यक्ष दिखायी दे रही है। यूरोपका नेतृत्व और इस तरह संसारका अधिनायकत्व अमेरिकाकी महत्वाकांक्षा है। राजनीतिक और आर्थिक दोनों उद्देश्योंकी सिद्धि के लिये इससे अधिक स्वर्ण अवसर फिर नहीं आ सकता किन्तु इसके लिये युद्ध अनिवार्य है। राजनीतिक और आर्थिक दोनों क्षेत्रोंमें संसारका नेतृत्व अपने हाथमें लेने के लिये रूस और अमेरिका दोनों एक दूसरे के प्रवल प्रतिद्वंद्वी है। एक और लोकतान्त्रिक फासिस्ट पूंजीवाद है, दूसरी ओर जनतान्त्रिक कम्यूनिस्ट साम्यवाद है। स्थिति इतनी जटिल न हुई होती यदि ये दोनों देश अन्य राष्ट्रोंके सहज विकासमें सहायक हुए होते। दोनों देश अपने प्रभावान्तर्गत राष्ट्रोंको अपने ढांचेमें ढालना चाहते हैं, इसीसे संसार दूसरे युद्धसे शान्ति की ओर न घूमकर तीसरे युद्धकी ओर बढ़ रहा है। फलतः आज यूरोपकी स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



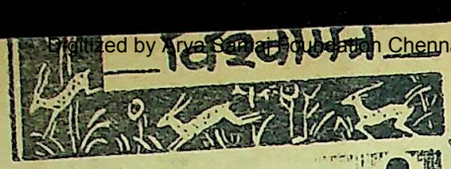

भारतके हाई कमिश्नर श्रीकृष्ण मेनन इंडिया हाउसके एक समारोहमें लार्ड हालके साथ।

इतनी जटिल हो गयी है कि समझौतेका रास्ता नहीं रह गया। यरोपमें परिवर्तन जिस रफ्तारसे हो रहे हैं उससे केवल यूरोप और अमेरिकाकी सुरक्षा ही खतरेमें नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण संसारकी और यह स्थिति उत्पन्न करनेमें अमेरिकाका उत्तरदायित्व सबसे अधिक नहीं तो किसीसे कम नहीं है क्योंकि उसने विश्वकी समस्या पर अमेरिकाको ही केन्द्र बिन्दु बना कर दृष्टि डाली है। आजसे नहीं प्रेसिडेण्ट विलसन के समयसे अमेरिका जन स्वतन्त्रताके साथ-साथ राष्ट्रोंके स्वभाग्य निर्णय, राजनीतिक स्वतन्त्रताकी बात कह रहा है। वह यह भी कहता है कि स्वतन्त्र और सार्वभौम राष्ट्रों का संघ ही प्रत्येक राष्ट्रकी इस स्वतन्त्रता की गारण्टी हो सकता है, किन्तु इतिहास यह बताता है कि प्रयत्न ठीक इसके विपरीत किया गया। इससे पहले राष्ट्र संघ (लीग आफ नेशन्स) की समाप्ति दूसरे युद्धमें हुई और अब मौजूदा संयुक्त राष्ट्र संघका अन्त तीसरे युद्धमें होने जा रहा है। इसका कारण यह है कि प्राथमिक सामाजिक और राजनीतिक सिद्धांतोंके सम्बन्धमें स्वार्थपरताने नेतस्थानीय राष्ट्रों की विवेक दृष्टिको मोहाच्छन्न कर रखा है। अपने स्वार्थके आगे दुनियाके भविष्य को वे देख नहीं पाते और यह बात संयुक्त राष्ट्र संघके सामने उपस्थित राष्ट्रकी स्वतन्त्रताके प्रश्न पर, उदाहरणार्थ यूनान, फिलस्तीन, दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयों का प्रश्न, हिन्देशिया, हिन्दचीन और काश्मीर के मामलेमें जिस कर्मपंथका अवलम्बन किया गया उससे स्पष्ट है। आजकी दुनिया में राष्ट्रका स्वभाग्य निर्णय अथवा नागरिककी स्वतन्त्रता कोई अर्थ नहीं रखता। किसी जमानेमें यह सिद्धांत भले ही व्यवहारिक रहा हो क्योंकि उस समय दुनिया इतना निकट एक दूसरेके नहीं आ गयी थी। आज इस सिद्धांतकी दुहाई देकर प्रत्येक राष्ट्र मनमानी घर जानी करने पर तुला है भले ही उसकी प्रतिक्रिया दूसरेके लिये कितनी ही भयंकर क्यों न हो। आज यह स्वभाग्य निर्णयका सिद्धांत छोटे-छोटे यूनिटों को अलग-अलग खण्डोंमें देशको विभक्त करनेका पवित्र अधिकार प्रदान करता है। भारत उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। स्वभाग्य निर्णयके नाम पर क्या लोकतन्त्रीय पूंजीवादी और साम्राज्यवादी देशोंने ही इस विषवेलिको अपने आशीर्वाद, सहयोग और सहायताके स्वातिजलसे नहीं सींचा? संसारको एक दूसरेसे विभक्त करनेका उत्तरदायित्व किस पर है? पिछले पचास वर्षोंसे कौन संसारका नेतृत्व कर रहा था। ब्रिटेन और अमेरिकाके गुटने ही तो अब तक संसारका नेतृत्व किया है और उसका परिणाम संसार देख रहा है। संघर्षकी ज्वाला आज शान्तिकी शीतलताकी अपेक्षा कहीं अधिक है। अपनी इस भयानक असफलताको छिपानेके लिये बराबर युद्धका आश्रय लिया गया है और प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन भी उसी रास्ते संसारको ले जानेके लिये कमर कसकर आगे बढ़ रहे हैं। संसार इनके नेतृत्वसे मुक्ति चाहता है। युद्धके द्वारा ही युद्ध रोकनेका महामन्त्र तो पहले ही से है। इस मन्त्रकी दुनियाको आवश्यकता नहीं है। जो नेतृत्व विना युद्धके संसारमें शान्ति स्थापित कर सकता है उसके लिये आजके नेताओंको, वे चाहे ट्रूमैन हों, एटली हों या स्टालिन, अपना स्थान रिक्त कर देना चाहिये। शान्तिका मार्ग युद्ध नहीं हो सकता। जो नेता शान्तिके लिये युद्धकी चर्चा करता है वह अपनी असफलताको छिपानेके लिये या अपने नेतृत्वको लादे रहनेके लिये कोटि-कोटि मानवोंके जीवनको मौतका कलेवा बना रहा है।

---

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पिंटू होटलकी दावत

.....त्रिदण्डी

## चक्कानी

बलदेव मिश्र अभी-अभी नया विवाह करके लौटे थे। यारोंमें जब बठक जमती आप बड़े उमंगसे बीबी-पुराणका पारायण कर चलते। अभी सिर्फ सत्ताइस सालकी की वह है ...गयी न शिशुताकी झलक. जब वह कालेजमें रंगीन तितलीकी तरह उड़ती फिरती थी तब छात्र गणके साथ प्रोफेसर वर्गके व्याध भी कम्पा लगा उसे पकड़नेको ललच उठते थे...मगर वह किसी के हाथ लगती कहां थी ! जैसे दबे पांव पेड़के नीचे पहुंच..बहेलियाके कंपा लगाते ही चंचल खंजरीट फुर्रसे, इस डालसे उस डाल; वही हाल मेरी 'बिक्को' का था। ...नाम तो है उसका विकासवती किंतु मारे प्यारके घर बाहर सभी उसे बिक्को कह कर पुकारा करते हैं। जब वह क्लास में पहुंचती तो जान पड़ता मानो महफिल में शमा जल उठी...सारा हौल प्रकाशसे दप-दप कर उठता...ऐसी है वह हमारी विकासवत्ती !"

हर मित्र मंडलीमें एकाध चिलिबल्ले तो रहतेही हैं ! हमारी मंडलीमें भी परभू-महाराज इसी तरहके एक चिबिल्ला सशरीर विद्यमान थे। जब बलदेव मिश्र पूरे मूडमें पत्नी-गुण गानपर गला फाड़ रहे थे तब गाड़ीके आगे काठ डालते परभू महाराज मुंह बिचका कर बोले:—

"अजी पण्डितजी आप नानीके आगे ननिहालका बखान धूथा ही करने बैठ गये ! मैं सब जानता हूं। डेढ़ सौ घरकी आबादीका महज छोटा-सा गांव तो है आपका ससुराल, एक फूसकी दालानमें प्राइमरी स्कूलके सिर्फ चार दरजे लगते हैं उसमें...वही, बहारूपुरकी बात कह रहे हैं न आप ? वहां भला कालिज कहां ? हर जगह आप दूनकी न हांका करें...यह आदत भले आदमियोंकी नहीं.....

"तुम कमीने ...तुम्हारे बाप कमीने.." —बिगड़ चले बलदेव मिश्र आग बगूला बन कर—"तुम्हें कुछ गाल-गरदनकी की खबर भी है ! बहारूपुरमें एक अच्छा-सा इण्टर कालेज है जो अब विश्वविद्यालय के रूपमें तत्काल परिणत होने जा रहा है... मेरे ससुरजी ही तो उसके संचालक, संरक्षक और सर्वेसरवा हैं। तुम परभू, रह गये बस पूरे 'चेगैन' तुम, बोहारीपुरके इंटर कालेजका अस्तित्व मिटा कर मेरे ससुर...और उनके व्याज मेरी सगी श्रीमतीजीका घोर... घोर ही नहीं घनघोर अपमान कर रहे हो ! कलके बच्चे !...अभी मुंहसे दूधकी महक तो गयी नहीं, पर मुंह लगने लगे बड़े बड़ों के।"

"पण्डितजी, आप तो व्यर्थ ही इतना रुष्ट हो रहे हैं"—मुंहके भीतर ही मिन-मिनाये परभू महाराज—"आपकी आदत तो मैं जानता हूं...कितना भी बहकें-बमकें आप झूठ-सच किंतु जरा भी विरोधी आलोचना सुनते ही खिसियानी बिल्लीकी तरह खंभा नोचने लगते हैं। बदियेगा। बाजी,.. मेरी बात झूठी हो तो मैं एकलव्यकी तरह अपना ठेंग (अंगूठा) कटवा लूं और आप झूठे निकले तो सिर्फ खरपत मोचीकी डिबिया में बचा हुआ ब्लेक-पैरेट और आपका मुच्छ-मुण्डित मुख एक कर दिया जाय !....हा-हा-हा-हा ! आ...हा-हा-हा-हा-हा !.... न आप किसीको अपना मुख दिखायें और न मैं किसीको अपना अंगूठा। समझे !"

जिस तरह 'जालौन' की चर्खीमें आग लगा देने पर वह रंग बदल-बदल कर चक्कर खाने लगती है उसी तरह चेहरेका उतार-चढ़ाव बिगाड़-बिगाड़ कर..रंग बदल-बदल कर बलदेव मिश्र घिर्री खाने लगे...उठा कर अपना ब्याह वाला कामदार जूता, दौड़े परभू महाराजकी ओर, आंखें लाल किये हुए। यह भी परभू महाराजके सौभाग्य की बात थी कि पुरजर-दिल्लीवालका देव दुर्लभ उपहार श्रीमान पण्डित बलदेव मिश्र सर्व प्रथम उन्हींके लिये तजबीज.. किया यह तो कहिये कि वहां हमसब सहकर्मी मित्र-वर्ग उपस्थित थे, बलदेव मिश्रके हाथों वह चमचमाता सोना छीन कर उन्हें हलका बना देनेके लिये अन्यथा बलदेव मिश्र अवश्य ही एटम बम भड़का देते...और उस हालत में आप विश्वास करें कि परभू महाराजके अंगनगरकी अवस्था हिरोशियाके समान ही हुई दाखिल थी।.....हथियार छिन जाने पर बनारसकी घृत चौरिणी कचौड़ीकी तरह बलदेव मिश्र के दोनों गाल फूल गये लाल-लाल !

मित्रोंने देखा कि अब सारा गुड़ गोबर हुआ चाहता है...हाथमें आयी हुई चिरई फुर्र हुआ चाहती है...तब तो उनके सारे हौसले ही पस्त हो जायेंगे ! बना बनाया मानसी महल मिसमार हो जायगा...झट गोनूझा के झखमार भतीजे तिनकोनू झा आगे बढ़े और परभू महाराजकी काछ पकड़ पीछेको खींचा ..."बड़े अहमक हो जी तुम परभू महाराज, देखते नहीं हमारे मित्र बलदेव मिश्रके हल्दीसे रंगे पीले हाथ महावर से सने करौंदिये पांव ! यह पुरजर उन रक्तोत्पल चरणोंमें ही फबते हैं, पीत करमेंकंज नहीं...तुम्हारे काले कपालपर भी वे शोभा विखेरनहीं सकते ! चलो...हटो यहां से..!

"आप भी लौंडोंके मुंह क्या लगते हैं पण्डितजी"—लिया बलदेव मिश्रको आड़े हाथ तिनकोनू झा ने—"बरें बालक एक सुभाऊ.." आप अपनी ओर देखिये.. अपने मुंहकी ओर देखिये...देखिये विवाह के सौरव्य-अनुरागसे दमकते पुरजर दिल्ली वालकी ओर और बाह्मणोंके वेद मंत्र द्वारा अनुरंजित पीले-पीले अपने कोमल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथोंकी ओर...आपको यह मर्कट लील न सुहाती है, न आपकी विद्वत्ता को यह सहन ही हो सकती है...राम-राम !

"अपनी इस नादानीका अब प्रायश्चित्त करना पड़ेगा...जबतक आप मै परभूके हमारी पूरी मण्डलीको पिंटू-होटलकी रस मलाई खस्ता कचौड़ी, समोसे और पन्तुओंसे आकण्ठोदर परिपूर्ण कर न देंगे...

"और हां, ब्याह की दावत तो तब भी हम लोगोंकी बाकी ही रह जाती है...खैर, देखा जायगा, उसके लिये फिर कभी आपको कष्ट करना पड़ेगा, किन्तु अभी तो यह व्यवस्था केवल पर भू पीड़न-प्रायश्चित्तके लिये ही है...!"

जोरका ठहाका लगा। यारोंने ताली पीट कर 'हीयर-हीयर' की ध्वनिसे कमरे को कम्पायमान कर दिया । बलदेव मिश्र सिरमें 'जूएं' टटोलने लगे । पा० ना० सिंह ने कसी एकफड़कती-फबती बलदेव मिश्रपर "तो हमारे पण्डितजी हटते कब हैं, मित्रों की एक छोटी-सी जायकेदारके मनुहारसे !. आपके दिलके दलदल में मित्रोंके खाने-खिलाने की माद्दा ईसाकी सातवी शतीके पहलेसे ही कुलांच मारती चली आ रही है ।...तबतक आपके वैवाहिक शारखोच्चरके प्रथम-पुरुष भी भूमिष्ट नहीं हुए थे । ...क्यों पंडित जी, ठीक है न ? तो फिर–'काल करन्ते आज कर, आज करन्ते अब पलमें परलय होयगा, फेर करेगा कब ?'.....रही पक्की पंडितजी न तो—'अब विलम्ब केहि कारन कीजै, तुरत कपिन्ह कहं आयसु दीजै,....

लगा ठहाका फिर जोरोंका मित्र-मंडलीमें । बलदेव मिश्र पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा । कदली स्तम्भ की तरह आप तन कर खड़े हो गये...हम सब भी प्रसन्न-पाद प्रहारसे चौकीका कचूमर काढ़ते चौचक्क खड़े हो गये । जान पड़ता था कि चौकी बिहार के गत भीषण भूकम्पका फिल्म उलट रही है।

अपनेको बन्दर कहना तो अपना घोर अपमान है...हम कुल एकादश महारुद्र थे । डट गये पिंटूकी कुरसियों पर । पटापट प्लेट पड़ने लगीं...गटागट गले गटकने लगे । हममें एकसे एक धुरंधर थे... हिजहाइनेस सबसे आगल । उसके बाद प्रूफरीडर...ठाकुर, उसके बाद मैं अजखुद.. कोई किसीसे कम नहीं । लंकामें सब ऊंचास हाथ । खा-पी लेनेके बाद जब बलदेव मिश्र के सामने बिल नजर आया तब उनकी आखें आसमानके तारे तोड़ने लगीं...एकदम चवालिस रुपये..सिर्फ ! क्या करें बेचारे । पोजीशनका ख्याल तो था ही, निकाला किस किसी तरह कांखकूंख कर रेशमी कुरतेकी जेबसे कागजी कलदार...और पटक दिया मैनेजर बोंगाली मोशायके टेबूलपर पटाक से...पांच दस-दस के ! छ वापस पाकर आदान प्रदानकी रीतिका पूर्ण रूपसे निर्वाह कर डाला पण्डित जीने । चल चले अब हमलोग वहांसे अंफरते डकारते डेरेकी ओर..'आलू-चना' जोरसे चल रही थी दुर्विपाक दावत की । सब तो छक चुके थे पूरी तरह पर हमारे हिजहाइनेस साहबकी उदरदरी में अब भी काफी गुंजायश बाकी ही थी । यद्यपि उन्होंने औरोंसे दो-चार प्लेट अधिक ही मार दिया था फिर भी कोई कोना अभी कुरेद ही रहा था । तिनकोनू झा के बाहर होते ही होटल से, उनके मुंहसे रस मलाई बाहर बहने लगी...और कचौड़ियां...और रसगुले...और समोसे...और जाने क्या-क्या अल्लम-गल्लम । अलल्ल, अलल्ल । छी, छीटे बलदेव मिश्रकी महावरसे रंगी सुपेली और दपदपे पुरजरपर भी पड़े...वे तिनकोनू के आगे-आगे ही जो थे। बादामी रेशमी कुरता भी तिनकोनूके फूत्कारसे बचा रह न गया । क्या करते बेचारे वे ! मन मसोस कर रह गये ।...फिर भी मुंहसे निकल ही पड़ा--"बड़े घमोच हो जी तिनकोनू तुम । हमारे पुरजर और कुरतेकी बाततो कुछ हकीकत नहीं रखती...अफसोस सिर्फ इस बातका है कि ये चीजें ब्याहके सगुनकी हैं । तुमने अपवित्र कर डाला इन्हें । सबसे अधिक अफसोस तो मुझे बेचारे कच्छपजी के ऊपर हो रहा है जिन्हें तुमने वमनसे नहला कर सरोतर वीभत्स बना डाला.. खैर, कोई चिंता नहीं...होलीका सीजन है । ...कच्छपजी कट रहे थे मारे क्रोध के । भीतर ही भीतर मसमसा कर रह गये ।

तिनकोनूझा । तबतक अंगोछेसे मुंह पोंछ सम्हल चुके थे...मरुभूमिमें पसरी सुरसरि धाराकी तरह हमारी अनोखी मंडली आगेको सरकी । सड़ककी पटरीपर खरबूजे बिक रहे थे...हिजहाइनेसने ढाई सेर वजनके दो खरबूजे खरीद कर खड़े-खड़े उदरस्थ कर लिया । खरबूजोंका दाम देने में पहले तो बलदेव मिश्रने निहायत ननुनच किया किंतु झखमार चुकाना ही पड़ा ।

बनारसके जीव जहां...चाहे जिस शहर में रहते हों, बनारसी पान सजाने वाले तम्बोलीकी दूकानका पता लगा ही लेते हैं.. हमें भी एक ऐसी दूकानका पता था । राहमें ही पड़ती थी वह । जब हम उस दूकानके पास आये...सर्व प्रथम कच्छपजीने प्रस्ताव किया--"यार, अब तो हमारे कल्ले बनारसी बीड़ों के बिना जोरसे कलबला रहे हैं । जमन जांय अब यही ।" बलदेव मनही मन कुढ़ रहे थे--"कमवक्तोंने पूरी हजामत बनाई.. पांचो साफ हुआ चाहते हैं । जान पड़ता है पचासमें एक भी बच न पायेगा ।" पत्तीके बत्तिस-बत्तिस बीड़े गलफरमें दबोच... जरदा-सोपारी जमा कर जब हम ऊंटकी तरह अस्फुट बल बलाने लगे तब बलदेव मिश्र दो रुपये बारह आने पानका दाम खीज कर तम्बोलीको सहेज रहे थे । डेढ़ रुपये हिजहाइनेसके खरबूजेमें पहलेसे ही निकाल चुके थे । बैलन्स बचा सिर्फ एक रुपया बारह आने । बलदेवके मुख पर बिखरी हुई अनु-सोचनाको हमसब हृदयंगम कर रहे थे मुखर तिनकोनू झा से भला विना बोले रहा जा सकता था ?--"पचासमें अब कितने बच रहे मित्र"--दिया पोचारा, बलदेव मिश्र के पास आजाने पर तिनकोनू झाने लगा ठहाका जोरोंका । बलदेव मिश्र ठीक कच्छपजीके सामने पड़ते थे । कच्छपजी अपने कहकहेको सम्हाल न सके । मुंहका सारा पीक फुहारा बनकर फट पड़ा । बलदेव मिश्रका मुख, रेशमी कुरता, धोती, पुरजर घायल योद्धाकी तरह आरक्त... बलदेव मिश्र पुरजर हाथमें ले कच्छपकी ओर झपटे । कच्छपने जरा पीछे हटते हुए कहा--"पण्डितजी, आप इतना उत्तेजित व्यथ ही हो रहे हैं....आपने जिस सीजनका हवाला मेरे लिये दिया था वह सीजन क्या आपके लिये बदल गया ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# 'कल्याण'से अकल्याण

श्री महाबीर प्रसाद पोद्दार

कल्याणके द्वारा राष्ट्रका जो अकल्याण किया जा रहा है उसकी ओर युक्त प्रांतके प्रधान मन्त्री पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त का ध्यान आकर्षित करते हुए श्री महाबीर प्रसाद पोद्दारने कल्याणके जिन उद्धरणोंको संकलित किया है पाठकोंकी जानकारीके लिये हम उनको यहां प्रकाशित कर रहे हैं । श्री पोद्दारजी लिखते हैं:—

"कल्याण" वर्ष २१ संख्या १ पृष्ठ ६६५ "सच्चा राष्ट्रवाद" शीर्षक लेख, दूसरा कालम बीसवीं लाइन से "भारतीयत्वकी चरम अभिव्यक्ति तो गीताके बाद उस अर्जुनमें हुई जो कि सामने पड़ने पर पहिले प्रणाम करके गुरुजनों पर भी वाण वर्षा करके अपनी आत्म रक्षा कर सका । पराक्रमसे पीछे पैर न खींचने वाला, धर्म-अधर्म, कर्म-अकर्मका सच्चा ज्ञान रखने वाला अर्जुन सदैव भारतके कर्मयोगियोंका आदर्श रहा ।

इसी अंकका पृष्ठ ६७० "राष्ट्रीयता का मोह" शीर्षक लेख पहला कालम १५ वीं लाइनसे "आज श्री राजगोपालाचारी (राजाजीको शायद नीचे गिरानेकी दृष्टिसे उनका नाम लिया गया जान पड़ता है । तथा राजा महेन्द्र प्रताप भी शायद मुसलमानोंसे मेल करके स्वराज्य प्राप्त करने के लिये ही उन्हें बेटी देनेकी बात कहते हैं यह राष्ट्रीयताका मोह नहीं तो और क्या है ?"

इसी लेखमें दूसरी कालम ८ वीं लाइन से "कर्तव्यपालनमें, आवश्यकतानुसार कभी उसे पुष्प चन्दनसे पूजा करनी पड़ती है तो कभी योद्धा सजकर शत्रु बने हुए अपने स्वरूपसे संग्राम करना पड़ता है ।"

इसी लेखमें पष्ठ ६७२ पहला कालम दूसरी पंक्तिसे दूसरे कालमकी दूसरी पंक्ति तक "ऐसा महानुभाव पापीको नहीं मारता उसके पापको मारता ह और इसके लिये कभी पापका आश्रय देने वाले पापी शरीरसे उसका वियोग करना पड़े तो उसे भी वह सानन्द करवाता है । अर्जुनको यही तो मोह था कि वह द्रोण, भीष्म, कर्णादिको कैसे मारे ? भगवान श्रीकृष्णने उसका मोह दूर किया । जिन भीष्म, द्रोण, कर्णादिके सहारे दुर्योधन रूपी पाप-वृक्ष फूलता फलता और उत्तरोत्तर बढ़ता है, उन भीष्म, द्रोणादिके शरीर भी नाश करने योग्य हैं और वे यदि सीधे संग्राममें नाश नहीं किये जा सकते तो "विषस्य विषमौषधम्" की भांति उन्हें कौशलसे शिखण्डीको सामने रखकर अश्वत्थामाके मरणकी सूचना देकर, पृथ्वीमें रथके पहिये धंसने पर नष्ट करना होगा । और ऐसा करते समय भी भीष्म, द्रोणादिके प्रति भक्ति-श्रद्धा अक्षुण्ण बनाये रखना होगा । उनसे द्वेष तथा बैर तो होगा ही नहीं । उन्हें मारते समय भी उनके चरणोंमें वाण मारकर प्रसंगानुसार, वाणोंके द्वारा पदवन्दना करनी होगी, और बदलेमें मस्तकोंमें बाणों का प्रहार सहकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करना होगा; परन्तु वे जब आपको पाश्रय देते हैं तब उनके पाप बढ़ाने वाले शरीरको पाप-नाश तथा धर्मके संस्थापनके लिये छल, बल और कौशलसे भी नाश करना होगा । अर्जुनने यही किया , पर किया लोक संग्रहार्थ- -भगवत्प्रीत्यर्थ, किसी और आकांक्षा कमाना नहीं, किसी द्वेष या वैर से नहीं । इसलिये भगवानने उसको पहले ही समझा दिया था कि तुम अध्यात्मचित्त से समस्त कर्मोंको मुझमें निक्षेप करके निराशी, निर्मम और विगत संताप हो कर युद्ध करो ।"

( गीता ३।३७ )

अन्दर कोई शत्रु न रहे, अतः बाहर भी शत्रु न रहे । धर्ममय रथ पर आरूढ़ रहा जाय और बाहरसे शत्रुताका व्यवहार करने वालोंके साथ सफल अभिनेता के रूपमें शत्रुका व्यवहार करके उसके कल्याणके लिये उसके शरीरको दण्ड दिया जाय ।"

इसी अंकमें "सफल राजनीतिज्ञ भगवान श्री कृष्ण" लेखमें ७०१ पृष्ठ पहला कालम २७ वीं लाइन "श्री कृष्णने जब यह देखा तो सोचा कि इस प्रकार काम नहीं चलेगा । कोई युक्ति पितामहको समाप्त करनेकी सोचनी चाहिये । आखिर उपाय सोच ही लिया और तदनुसार युधिष्ठिरको भीष्मजीके पास भली प्रकार सिखा-पढ़ा कर भेज दिया । युद्धिष्ठिरने पहुंचते ही शिष्टाचारके अनुसार पितामहको प्रणाम किया ।"

दूसरा कालम बीचका पैरा "दसवें दिन बड़ा घमासान युद्ध हुआ । पांडवोंने उस समय शिखण्डी नामके एक सैनिकको, जो पहले स्त्री था और फिर योनिपरिवर्तन होनेसे पुरुष हो गया था, भीष्मके सामने खड़ा कर दिया । भीष्मजीने अपनी प्रतिज्ञानुसार हथियार डाल दिये । अर्जुनने, जो पहले ही शिखण्डीके पीछे छिप कर खड़ा हो गया था, अवसर प्राप्त कर पितामहको बाणोंकी सेज पर सुला दिया ।"

इसी लेखके ७०२ पृष्ठमें पहला कालम ८ वीं पंक्तिसे "पहले तो युद्धिष्ठिरने धर्म का राग अलापा; परन्तु जब श्रीकृष्णने कहा कि आप धर्म-धर्म क्या कहते हैं, धर्म वह है जो मैं कहता हूं ।"

इसी पृष्ठके दूसरे कालमकी तीसरी पंक्ति "श्री कृष्णने कहा अधर्म कुछ नहीं । शत्रुको जब मौका मिले मार दे ।"

इसी अंकमें "हरिजन मन्दिर प्रवेश" लेखमें पृष्ठ ७१६ दूसरा पैरा "राजनीति और धर्म पृथक्-पृथक् रहें इसीमें देशका कल्याण है । भारतीय राजनीतिक जागृति के जन्मदाता लोकमान्य तिलकने यही समझा भी था, किन्तु जबसे भारतीय राजनीतिकी बागडोर श्री गांधीजीके हाथोंमें आयी, उन्होंने राजनीति और धर्मका संमिश्रण कर डाला और क्योंकि उन्होंने राजनीतिको धर्मसे पृथक् रखनेका उद्योग न किया, इसीलिये कांग्रेसके प्लेटफार्मपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाफत भी आयी और आज हरिजन मन्दिर-प्रवेश आन्दोलन भी ।"

इसी लेखमें पृष्ठ संख्या ७२० कालम पहला सातवीं पंक्ति "राष्ट्र गौरव सुभाष बाबूने भी वायनासे "अमृत बाजार पत्रिका" के सम्पादकके नाम एक पत्र लिखते हुए मन्दिर प्रवेश आन्दोलनका विरोध किया था ।

इसी अंकमें पृष्ठ ७२४ पहलाकालम १७ वीं पंक्ति "इस पर राष्ट्रवादी हिन्दू मोहावृत्त होकर कहता है-"अर साम्प्रदायिक हिन्दुओ ! तुम्हारी साम्प्रदायिकताकी अपेक्षा हमारी राष्ट्रीयता बहुत ऊंची और महत्वकी वस्तु है । हिन्दू-मुस्लिम एकतामें ही राष्ट्रका कल्याण है और स्वराज्यकी प्राप्ति है । तुम उन घटनाओंको भूल जाओ और प्रेमका हाथ बढ़ाओ । सहो और सहकर दूसरे सम्प्रदायकी प्रसन्नता और प्रीति प्राप्त करो । राष्ट्रीयताके लिये साम्प्रदायिकताका नाम मिटा दो । इस पर स्वाभाविक ही उत्पीड़ित और व्यथित मानवके हृदयको विदीर्ण करके ये वाक्य निकल पड़ते हैं—"महानुभावो ! तुम ऊंचे हो, ठीक है, भले तुम आकाशमें रहो, स्वर्गमें निवास करो । हम तो मिट्टीके पुतले हैं, हमारे शरीर हैं, व्याथाका ज्ञान है । हम व्यथा रहते व्यथाको कैसे भूल जायं ? यदि तुम हमारे कुछ हो तो इस उपदेशकी धाराको कुछ रोक कर हमारे आंसू पोंछनेका कोई अन्य सफल प्रयत्न करो । हम भी ऊंचे आकाश पर चढ़ना चाहते हैं, हम भी स्वर्गमें जाना पसन्द करते हैं, परन्तु मां, बहनोंका अपहरण करवा कर नहीं, अपने धर्मको गवां कर नहीं और अपने प्यारोंको कसाईकी छुरीसे कटवा कर नहीं ।'

(वर्ष २१ अंक दो पृष्ठ ७८५)

हमें लोभ देकर स्वराज्यका,
रोका जाति विकास ।
पिला-पिला कर व्यथा वारुणी,
किया शक्तिका नाश
खिला-खिलाकर मार मिटाया,
शौर्य - वीर्य - - विश्वास
हम से लेकर वोट हमारा, -
पलट दिया इतिहास
आज शासनारूढ़ हुए,
तब किये आंख - मुंह बन्द !
हमें कपट छल छद्म सिखाते,
स्वयं बने हरिचन्द !
जुल्म न सह, अपनी अवाज,
जब करने लगे बुलन्द !
रोके हमें दिखा नाना विधि,
रोब दाव छल छन्द !

वर्ष २१ अंक ३ पृष्ठ ७९३ पहला कालम दूसरा पैरा:—

"हिन्दू - सभ्यता संस्कृतिके विनाशक इन प्रवाहोंका यथा शीघ्र अन्त करनेके लिये अब सनातनधर्मीगण कटिबद्ध हो चुके हैं । इस धर्म सिंहासनसे हम इन आन्दोलनोंके प्रवर्तकोंको चेतावनी दे देना चाहते हैं कि उनका इस प्रकारका प्रयास हिन्दू समाजके लिये सर्वथा घातक है और यदि वे अपनी इस असत् प्रचार नीतिको शिथिल नहीं करते, तो प्रत्येक सनातनधर्मी हिन्दू अपने सनातन सिद्धांतोंकी रक्षाके लिये धर्म सैनिक बनेगा और शीघ्र ही उनके विरुद्ध संघर्ष छिड़ जायगा ।"

वर्ष २१ अंक ६ पृष्ठ १०३४ कालम २ तीसरा पैरा:—

"शिखण्डीको सामने रखकर श्री कृष्णने निःशस्त्र भीष्मको अर्जुनके द्वारा किस प्रकार मरवाया तथा सत्यवादी महात्मा युद्धिष्ठिरसे अनुरोध पूर्वक उनसे झूठ बुलवाकर किस तरह द्रोणाचार्यका प्राणांत किया , यह तो जगद्विख्यात है ऐसे ही श्री कृष्ण भगवानने निःशस्त्र कर्णको मारने के लिये अर्जुनको वाध्य किया और गदा-युद्धमें भीमसेनको युद्धका नियम तोड़कर दुर्योधनकी जांघपर शस्त्र प्रहार करनेके लिये प्रेरित किया ।"

चौथे पैरेमें ११ वीं पंक्तिसे "हमें यह कहना पड़ता है कि जिस अहिंसाका पाट आज हमें गांधीजी पढ़ा रहे हैं वह श्री और हिंदू-धर्मकी अहिंसा नहीं है । देशकी रक्षा करनेवाला पुरुष यदि गांधीजीकी अहिंसा अपनाता है तो वह न केवल [illegible] विनाश है वरन् हिंदू धर्म का भी [illegible] कर डालता है ।" इसी लेखके पृष्ठ [illegible] के दूसरे कालमकी तीसरी पंक्तिसे [illegible] की अहिंसा हिंदुओंका सर्वनाश कर [illegible] क्योंकि येही लोग इसके पीछे पड़े [illegible] इन्होंने ही अपने आपको इसका [illegible] स्थलबना रखा है ।"

वर्ष २१ अंक पृष्ठ ११०३ [illegible] १५ वीं पंक्ति "महात्मा गांधी [illegible] मेरी चिरकालसे श्रद्धा है; पर इस [illegible] कुछ कर रहे हैं और गीता हवाला [illegible] सिद्ध करते जा रहे हैं उससे हिंदुओंकी [illegible] हानि हो रही है और गीताका भी [illegible] हो रहा है ।"

वर्ष २१ अंक ८ पृष्ठ ११६ [illegible] कालम "किंतु बिना अत्याचारीको [illegible] अत्याचार न मिट सकता हो, तो ऐसे [illegible] अत्याचारीको भी मिटाना दोष-युक्त [illegible] समझा जाता । जब किसी रोगीका [illegible] अंग सड़ जाता है और उस पर [illegible] काम नहीं देता तो डाक्टर सारे [illegible] जोखिम आते देख कर उस दोषी [illegible] काट डालते हैं, उसी प्रकार बिना [illegible] के मारे अत्याचार न मिटता हो [illegible] जन-समुदायके हित एवं प्राण-रक्षा [illegible] अत्याचारीको मारा जा सकता [illegible] वह किसी संप्रदायका हो । यह [illegible] धर्म है ।"

वर्ष २१ अंक १० पृष्ठ १२१ [illegible] पंक्ति से:—

छिप-छिप कर जो घात [illegible]
उस व्रणका है मूल्य चुकाना,
अरिदलके प्राणोंसे [illegible]
अपने प्राणका है मूल्य [illegible]

वर्ष २१ अंक १२ पृष्ठ १३१ [illegible] कालम ६ वीं पंक्ति से:—

"पर हमारे सनातन धर्मकी [illegible] षताएं हैं, उनके विरुद्धमें जो [illegible] हैं वे अवश्य ही अनुचित और बहुत [illegible] कर है । विधावा-विवाह, [illegible] जाति पांतिको न मानना, [illegible]

(शेष २८ वें पृष्ठ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वैवाहिक-विधान

लेखक---रावी

स्वर्गलोककी विधान-निर्मात्री परि ने नियम बनाया था कि भूलोक पर म लेने वाली आत्माओंके लिये यह वश्यक नहीं है कि प्रत्येक ौतिक जन्ममें उसी आत्म-क्तिसे विवाह करें जिससे पिछले जन्ममें या हो---वे अलग अलग जन्मोंमें अलग लग-व्यक्तियोंसे विवाह कर सकती हैं। र इसमें कोई अचारिक या नैतिक ोष नहीं है।

इस नियमके बननेके पहले विधान रिषदके कुछ कट्टर-पंथी सदस्योंने इसका तीव्र विरोध किया था और इसे भ्रष्टाचा ताया गया। किन्तु उनकीइच्छानुसार यम बनानेमें सबसे बड़ी कठिनाई यह कि अलग अलग प्रकारके कर्म-फलों र प्रवृत्तियोंके कारण प्रत्येक आत्म-पतिको एकही समयमें और एक-सी रिस्थितिमें जन्म देना असंभव था, इसलिये वीलोकमें जन्म लेकर उनका बिछुड़ना र दूसरे आत्म-व्यक्तियोंसे ही विबाह रना अनिवार्य था। और दूसरी बातें ह भी थी कि विधान परिषदके दूसरे दल सदस्य इस बात को आवश्यकऔर श्रेय-कर समझते थे कि भिन्न भिन्न जन्मोंमें त्मायें भिन्न भिन्न व्यक्तियोंसे विबाह र भिन्न भिन्न प्रकारके संपर्क-संबंधी अनुभव र क्षमताएं प्राप्त करें।

भूलोकमें मनुष्योंकी विधान-निर्मात्री रिषद् जब पहली बार जुटी-उसके बाद अनेक बार उन प्रारंभिक विधानोंमें, तलके अलग अलग देशोंमें अलग अलग कारके उलट-फेर हो चुके हैं--तब विबाह का विषय आनेपर कुछ सदस्योंने प्रस्ताव खा कि प्रत्येक पुरुष और स्त्रीको अधिकार ना चाहिये कि वह जब चाहे एक विवाह संबंधका विच्छेद करके दूसरा स्थापित कर ले। ऐसा करनेसे वह भिन्न भिन्न प्रकार के सम्पर्क-संबंधी अनुभव और क्षमताएं भी अधिक शीघ्रतासे प्राप्त कर सकेगा। इस प्रस्तावके साथ यह भी कहा गया कि स्वर्गलोक वालोंने भी ऐसे ही विधानकी उपयोगिता स्वीकार की।

परिषदके कट्टरपंथी पण्डित-सदस्यों ने इसका प्रबल विरोध किया। उन्होंने कहा कि हमारा भूलोक पर प्रत्येक व्यक्ति एक पत्नीव्रत और पतिव्रतका निर्वाह करेगा। स्वर्गलोकमें तो धर्म-कर्म कुछ रह नहीं गया। वहां तो अविवाहित देवताओं और असराओं की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। हम उन भ्रष्टाचारियोंका अनुकरण क्यों करने लगे!

पण्डित-वर्गका ही विधान परिषद में बहुमत था। भूलोकमें प्रत्येक व्यक्तिके लिये आजीवन एक पति ओर एक पत्नीका नियम बना दिया गया।

ग्राह्य-अग्राह्य शुद्ध-अशुद्ध, ऊंच-नीच जाति-कुजाति के भेदभाव और धर्म-कर्म का उन दिनों भूलोकके चक्रवर्ती राज्यमें बोलबाला था; शासन और समाजमें पवित्र रक्त वाले पण्डितोंकी ही चल रही थी।

एक बार ऐसा हुआ कि पूर्वी गोलार्द्ध की राजधानीके एक बड़े सेठकी मृत्यु पर उसकी पतिव्रता पत्नीने उसके शवके साथ सती होनेका निश्चय किया। उसने कहा कि मैं प्रत्येक जन्ममें इन्हींको अपना पति बनाना चाहती हूं और कि जन्म में किसी दूसरे पुरुषकेसाथ विबाह करना असहय और अपने पतिव्रत-धर्मके विरुद्ध समझती हू।

कुछ लोगोंने उसे ऐसा करनेसे रोकना चाहा, किंतु राजधानीके पण्डितोंने उसका समर्थनन किया और उसके निश्चयकी स्तुति करते हुए उसे संसारकी सबसे बड़ी सती-साध्वी और आदर्श एवं अनुकरणीय नारी बताया। उन्होंने कहा कि हमारे समाजकी प्रत्येक नारीको अपने पतिव्रत-बलसे इस योग्य बनना चाहिये कि वह प्रत्येक जन्ममें अपने पूर्व जन्मके पतिको वरण कर सके। भूलोकके स्त्रीत्वका यही सबसे ऊंचा उद्देश्य होना चाहिये।

सेठ-पत्नी अपने पतिके साथ जल कर सती हो गयी।

इसके बादसे भूमंडल पर सती होने की प्रथा जारी हो गयी यह पिछले भारतीय सती-प्रथाके युगसे बहुत बहुत, हजारों बरस पहलेकी बात है; पिछला सती-प्रथा-युग तो उस युगकी एक छाया-मात्र ही था---और भूमंडलकी नारियां प्रत्येक जन्ममें उसी एक पतिको पानेकी प्रवृत्तिकी ओर अधिकाधिक संख्य में झुकने लगीं। पण्डित वर्गने इस प्रथाको पूरा सहयोग और प्रोत्साहन-दिया।

सेठ-पत्नीके सती होनेके लगभग सौ वर्ष बाद राजधानीके प्रधान पण्डितके-जो कि उस समयके प्रधान पण्डितके पौत्र थे---घर एक सुन्दरी कन्याका जन्म हुआ। वह इतनी संस्कारमयी थी कि तीन वर्ष की आयुमें ही उसने अपने पिछले जन्मका सारा हाल विस्तार पूर्वक बता दिया। आजकल भी कोई कोई बच्चे ऐसा करते हुए आजकलके शिक्षत समाजमें पाये गये हैं। पूर्व जन्ममें यही कन्या सेठ-पत्नी थी। इस विचित्र चमत्कार-पूर्ण घटनाका विवरण राजकीय पत्रालय (रजिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट) में भी लिखवाकर रख लिया गया। पण्डित परिवार उस सती-साध्वी देवीको अपने घरमें पाकर बहुत प्रसन्न हुआ।

जब कन्या सयानी हुई और उसके विबाहका समय आया तब उसके पिता ने अच्छे वरोंकी टटोल प्रारंभ की।

कन्याको जब यह बात ज्ञात हुई तब उसने पिताको कहलवा भेजा कि उसके वरके के लिये चिंता न करें, वह तो पहलेसे ही निश्चित है और अमुक नगरमें अमुक स्थान में अमुक नामके पिताका इकलौता बेटा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूत उस नगरको दौड़ाये गये। इधर विवाहके आयोजनमें बड़े समारोहके साथ पण्डितोंकी सभा वरके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगी।

दूतोंने एक रोग-ग्रस्त, दुबले-पतले, म्लेच्छ जातिके एक आठ वर्षके लड़केको, जोकि एक दरिद्र मांस-व्यवसायीका इकलौता बेटा था, पण्डितोंकी सभामें ला-उपस्थित किया। बालकका पिता भी उसके साथ आया था।

"यह मेरी कन्याका वर कदापि नहीं हो सकता! हटाओ इसे यहांसे मूर्खो, तुम किसे पकड़ लाये हो?" पण्डितने बिगड़ कर कहा।

बालकके पिताने एक मुहर बन्द पत्र पण्डितजीके हाथमें रख दिया।

पत्र पढ़ा गया। तीन वर्षकी आयुमें उस बालकने अपने पिछले जन्मका जो हाल बताया था उसका विवरण राजकीय पत्र-विभाग (रजिस्ट्रेशन विभाग) में लिखवा कर रख लिया गया था; उसी विवरण की यह राज-मुहर द्वारा प्रमाणित प्रतिलिपि थी। यह बालक पिछले जन्ममें राजधानी का वह सेठही था। अपने अपने कर्म-वश सेठको दरिद्री म्लेच्छ-पुत्रका और सेठ-पत्नी को राज पण्डितकी कन्याका जन्म मिला था।

राज-पण्डितकी कन्याका एक म्लेच्छ पुत्रके साथ विवाह—यह कैसे सहन हो सकता था। पण्डितने अपना माथा ठोंक लिया।

यह विवाह होना चाहिये या न होना चाहिये, इसी विवाहको लेकर पण्डित-सभा में दो दल हो गये। कन्याके पिताका कहना था कि यह विवाह न होना चाहिये; किंतु कन्याने बाहर आकर वर माला उस म्लेच्छ पुत्रके गलेमें डाल ही दी और उसे उसके उसके साथ जानेसे कोई रोक नहीं सका। कन्याके पिताको उन्हींके दलने जाति-च्युत करके राजपण्डित-पदसे हटवा दिया।

पण्डित-सभाके इस प्रकार छिन्न-भिन्न हो जानेसे पण्डित-वर्गका बल घट गया। विवाह संबंधी विधानमें परिवर्तनकी चर्चा सारे भूमंडल पर तेजीसे चल पड़ी। इस का परिणाम इतना दूर-व्यापी हुआ कि सारे भूमंडलका साम्राज्य दो खंडोंमें बंट गया। दोनों खंडोंकी अलग-अलग विधान परिषदें जुटीं और उन्होंने अलग-अलग अपने विधान बनाये और उसी समयसे भूमंडलके आगे खंडी-करणों और वैधानिक परिवर्तनों के क्रमका सूत्रपात हुआ।

---

(२६ वें पृष्ठका शेषांश)

अनुचित पक्षपात, स्त्रियोंकी अनुचित स्वतंत्रतायें अवश्य ही विरोध करने लायक हैं और इन मान्यताओंका विरोध समय-समय पर 'कल्याण'में मेरे लेखों द्वारा प्रायः किया जाता है। बात अवश्य है कि मैं किसी भी व्यक्तिका नाम लेकर उसका विरोध नहीं करता, क्योंकि ऐसा करना रागद्वेष की सृष्टि करना है तथा घृणा और द्वेषका द्योतक है। अतः मेरी समझमें यह सर्वथा अनुचित है। पर जो विचार सनातन धर्म के लिये घातक हैं उन विचारोंका विरोध में बरावर निस्संकोच भावसे करता आया हूं।

इसी अंकका पृष्ठ १३९९ पहला कालम दूसरा पैरा:—

"आपने "महात्मा" की पदवीके विषय में लिखा सो संसारमें जो किसी भी काममें साधारण आत्माओंकी अपेक्षा बढ़ा-चढ़ी हो, वही 'महात्मा' की पदवीका अधिकारी हो जाता है। बाल्मीकीय रामायणमें तो रावणको भी "महात्मा" विशेषण दिया गया है फिर औरोंकी बात ही क्या है? अतः आपको इस पदवीसे कोई द्वेष नहीं रखना चाहिये आपकी गांधीजीके व्यक्तित्व से भी द्वेष नहीं होना चाहिये। उनक विचार सनातन धर्मके जिस अंशमें विरुद्ध हैं उन्हीं का विरोध करना चाहिये, यही सनातन धर्मके अनुकूल है और इसीमें हमारी शोभा है। आपने पूछा, कि क्या इस अनुचित कार्य के लिये उनको पापका भागी नहीं होना पड़ेगा। सो इसका निर्णय तो भगवान ही कर सकते हैं क्योंकि पाप-पुण्यका भागी मनुष्य अपने नीयतसे होता है और नीयत कि क्या है, यह बात एक मनुष्य दूसरे मनु विषयमें पूर्णतया नहीं जान सकता। लिये इस विषयपर निर्णय देनेमें मैं अप असमर्थ समझता हूं। शेष भगवत्कृ प

---

## भारतका उजड़ाव

आया वसंत, खिल गये सुमन,
मन मगन मगर हो खिला नहीं,
वसुधाको मानो मिलकर भी
शृंगार नियतिका मिला नहीं
इस भरे स्वार्थके मेलेमें,
जग सूना - सूना लगता है,
घनघोर अंधेरी घाटी में,
मग सूना - सूना लगता है!
हमको पथ पर ला छोड़ दिया,
पर साथ हमारे चला नहीं!
हा! गया कहां वह युगमानव,
जिसकी यादें मन हिला रहीं!
आया वसंत, खिल गये सुमन,
मन मगन मगर हो खिला नहीं!
हमने खोजा पर मिला नहीं,
वह एक हजारों लाखों में
सुखके सपनोंको छिपा दिया,
जिसने दूरीकी आंखों में;
जिसकी आभा नक्षत्रोंके पीछे,
नभ में झिलमिला रही!
युगकी मानवता जिसके हित,
मनको मसोस तिलमिला रही,
आया वसंत, खिल गये सुमन,
मन मगन मगर हो खिला नहीं
छिन गया विश्वकी आंखों से,
वह तेज पुंज, निर्मल प्रकाश,
छिन गया मानवोंका सुभाग्य,
रो रहा सुसंस्कृतिका विकास,
पशुता ही आज मनुजताको,
निज घूंट जहरके पिला रही!
रोती, सिर धुनती, खिलती ऋतु,
मृतप्राय दुखों को जिला रही
आया वसंत, खिल गये सुमन,
मन मगन मगर हो खिला नहीं!

—"भृंग" तुपकरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्वतंत्रभारत और बढ़तीहुई जनसंख्या

लेखक—प्रो० पा० एस० नायडू

स्वतंत्र भारतकी ती हुई जन संख्या ने राजनीतिक विज्ञान और अर्थशास्त्रके कितने ही विचारशील विद्यार्थियोंका ध्यान आकृष्ट कर रखा है। हममें से कुछ ऐसे आशावादी लोगभी हैं, जो ऐसा कह कर कि यह समस्या उतनी गंभीर नहीं जितना कि हम सोचते हैं, क्योंकि हमारी भूमि और उद्योगोंकी उत्पादन शक्ति पर अबतक भी पूरा पूरा जोर नहीं पड़ सका है, अस्तु, किसी प्रकारकी चिंता भी करना व्यर्थ है, हमारा ध्यान इस दिशा से खींच लेना चाहते हैं। आशावादियोंकी हर ऐसी धारणाके मूलमें राष्ट्रीय सरकार का अस्तित्व में होना है जो अवश्य ही उत्पादन क्षमताको कई गुना बढ़ा देगी। किंतु वैज्ञानिक कृषि एवं खनिज विषयक पूर्ण जानकारी रखनेवाले विचारशील विद्यार्थियोंका ऐसा कथन है कि देशकी वर्तमान जनसंख्याको ध्यानमें रखते हुए यदि भारतकी तुलना हम रूससे सीमित हैं। इस प्रश्न पर यदि हम विशुद्ध आर्थिक दृष्टिकोण से विचार करने बैठें तो भारतीय जनसंख्यामें होनेवाली वृद्धि हमारे राष्ट्रीय जीवनमें तहलका मचा देने वाली बात है।

एक दशाब्दीमें ही जनसंख्यामें ७ करोड़की बृद्धि कोई गौरबकी बात तो नहीं। आजसे लगभग चार वर्ष पूर्व महिला सम्मेलनके बम्बई अधिवेशनमें 'प्रजनन नियंत्रण' के विषय पर विचार किया गया था। सम्मेलन की उपाध्यक्षा, श्रीमती रामराव ने 'बाम्बे क्रानकल' में एक बड़ाही सार गर्भित लेख लिखा था कि 'भारतमें 'प्रजनन नियंत्रण' की परमावश्यकता है। दीर्घकाल से 'प्रजनन नियंत्रण' एक त्याज्य विषय रहा है .....किंतु आज तो यह एक गंभीर सामाजिक और आर्थिक समस्याका रूप धारणकर चुका है, जिसका सुलझाना नितान्त आवश्यक है।' श्रीमती रामरावके इस कथनसे हम पूर्णरूपेण सहमत हैं, किन्तु इस संबंधमें हम एक बात और कह देना चाहते हैं कि 'नियंत्रण' के साथही साथ 'प्रजनन' भी एक निश्चत योजनापर ही होना चाहिये। 'प्रजनन' से संबंधित ऐसी योजनाका होना उन सभी राष्ट्रोंके लिये आवश्यक है जो कि अपनी जनसंख्याको सुसंस्कृत देखना चाहते हैं।

प्राचीन भारतमें हिंदुओंके आश्रमबद्ध जीवनमें 'प्रजनन नियंत्रण' के बड़े ही अच्छे परिणाम दृष्टिगोचर थे। व्यक्तिगत जीवन निर्वाहके इस क्रममें ब्रह्मचारीके लिये आत्म संयमका नियम बड़ाही कठोर था। गृहस्थ आश्रममें आये हुए व्यक्तिके लिये भी 'दाम्पत्य अधिकारों' का मनमाना उपयोग करनेकी स्वच्छंदता न थी। व्यक्ति को बैवाहिक जीवनमें प्रवेश कर सकनेका अधिकार तभी प्राप्त होता था जब कि उसकी बुद्धि और शरीर परिपक्वावस्थाको प्राप्त हो स्वाभाविक चैतन्यताको प्रांप्त हो जाते थे। इंद्रिय चेतनाओंको भी नाना प्रकार के धार्मिक कृत्यों अथवा आत्मसंयमके कठोर विधानोंको अपनाकर निजवशमें रखा जाता था। दाम्पत्य सुखका उपयोग करनेके लिये कुछ निश्चित अंतर और अवधिनिर्धारित थी। ऐसीदशामें हीनकाय अथवा तरा उपरी बच्चोंका ढेर लगना भी कठिन नहीं असंभव था। फिर गृहस्थाश्रामकी भी एक अवधि निर्धारित थी। इस अवधिके व्यतीत होतेही व्यक्तको वानप्रस्थ तत्पश्चात् संयास आश्रमसे होकर गुजरना पड़ता था। इस प्रकार जहां तक व्यक्तिके दाम्पत्य-जीवनका संबंध था उसमें प्रजनन क्रियाका एक विशेष अवस्थासे ही अंत हो जाता था। इस समूची योजनाको यदि हम संतानोत्पत्ति की वर्तमान स्थितिसे तुलना करते हैं तो न केवल राष्ट्रीय अर्थतन्त्रमें ही प्रत्युत जीवन के सभी अंगोंमें हमें प्रथमकी महत्ताका अनुभव होता है। इसमें संदेह नहीं कि यदि हम इस योजनाको वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल संशोधित और परिवर्धित कर लें तो हमारे देशकी बेकारी और बढ़ती हुई जनसंख्याकी सारी समस्याएं सुलझ जांय।

हमारे सामाजिक जीवन पर पड़े हुए पाश्चात्य सभ्यताके प्रभावने 'दाम्पत्य अधिकारोंके उपभोग पर लगाये गये सीमाबन्धोंको ढीला बनाया है। इसमें संदेह के रूपमें स्वीकार किया गया था, किंतु इसके साथ ही साथ इंद्रिय संयम तथा मानवजीवनकी उस अवस्थाका उल्लेख भी, जिसमें पहुंचनेके बाद लौगिक सुखको त्याज्य बताया गया था, धर्मके नामपर ही हुआ था। आधुनिक सभ्यताने समस्त पवित्र और धार्मिक क्रियाओंको उठाकर ताक पर रख दिया है, किंतु बिवाह और संतानोत्पत्तिकी मनमानी छूटको वह कोई बाधा बाधा नहीं पहुंचा सकी। आधुनिक सभ्यता की इस देनने इंद्रिय लोलुपताको इतना प्रोत्साहित किया है कि उसपर कठोर नियंत्रणकी आवश्यकता है। बालक, अतिवृद्ध और यहां तक कि नब्बे वर्षकी अवस्था वाले पुरुष भी शादी कर सकते हैं। कुछ व्यक्तियों ने तो गर्वसे यहां तक कह डाला है कि चाराचर जगत्में एकमात्र मानव ही में अपनी अंतिम स्वास तक लौकिल सुख भोगनेकी क्षमता है। कहना न होगा कि इसी प्रकारकी विचारधाराओं और कृत्योंका यह फल है कि हमारा देश क्षीणकाय व्यक्तियोंसे भरा पूरा बन रहा है।

जनगणनाका बुद्धियुक्त विश्लेषण करनेसे तो यही पता चलता है कि जनसंख्या में बृद्धि निम्नवर्गीय लोगोंकी ही ओर से हुई है। यदि हम एक गरीब श्रमिकको देखें जिसके कि ढंर भर क्षीणकाय और निष्प्रभ संतानें हों, तो यह दृश्य अवश्य ही हृदय विदारक होगा। किंतु यह और भी बीभत्स तो तब बन जाता है जब कि हमलोगोंको ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हुए सुनते हैं कि यह दोष उनका नहीं किंवा उस विधि विधानका है जिसने उनपर अनावश्यक ससंतानोंका बोझ डाल दिया है। श्रीमती रामरावने उसी सिलसिले में आगे लिखा है कि 'स्थानीय (बंबईके) अस्पतालोंका निरीक्षण करने पर इन दुखियारियों पर मुसीबतोंका पता चलता है। जन्म और मरण, अर्थहीनता तथा अत्यधिक संतानके बोझसे पीड़ित ये (नारियां) जीवनमें कुछ भी समझ सकनेसे पूर्वही जरायुको प्राप्त हो जाती है। इससे भी आगे, बच्चोंकी शारीरिक अवस्थामें सुधार हो सकनेके कोई लक्षण दृष्टिगोचर नहीं होते। यहां तक कि जो तगड़े और तन्दुरुस्त हैं भी उनकी आवश्यक देख भाल नहीं हो पाती तथा उन्हें भोज्य पदार्थ भी अर्धमात्रमें ही उपलब्ध हो पाते हैं। सर्वाधिक दुःख की बात तो यह है कि जबकि शिशुओंकी मृत्यु संख्या यहां विश्वमें सर्वाधिक है, अभागे मां-बाप संतानकी मृत्युको भावी आर्थिक बोझोंसे हल्का होनेका मार्ग मानते हैं।'

आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी दृष्टियों से ही नहीं सांस्कृतिक दृष्टिकोणसे भी निम्न श्रेणी वालोंकी ही जनसंख्यामें बृद्धि सर्वथा अवांछित है। एक बड़ी संख्यामें निष्प्रभ और कुविकसित संतानोंका होना तो वैसे भी घृणापूर्ण होता है, किन्तु जब यह दृश्य एक टूटी-फूटी झोपड़ीमें देखनेको मिलता है तो और भी घृणास्पद बन जाता है। एक समय था जबकि विवाह कर अधिकाधिक बच्चे पैदा करना उन्नत भाग्यका का द्योतक समझा जाता था किंतु आज वह समय गत बन चुका है। वर्तमान समयकी प्रमुख मांग तो यह है कि हम अपने देशकी बढ़ती हुई जनसंख्याको रोकनेका प्रयत्न करें। याद ऐसा न किया गया और देशमें संतानोत्पत्तिका वही क्रम चलता रहा तो प्रकृति रोगों, अकालों और युद्धोंके द्वारा ही बदला चुकायेगी। अस्तु, 'संतानोत्पत्ति विरोध' ही सबसे पहिली आवश्यकता है। निम्नवर्गीय परिवारोंको सीमित रखने की दिशामें जोरदार प्रचार किये जाने की आवश्यकता है, तथा हर श्रमिक और शिल्पीके घरकी विवाहिताकी युवतियोंको नवीनतम वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा बहुसंतान निरोध करनेकी शिक्षा प्राप्त करने तथा उन प्रयोगोंको कार्यरूपमें लेनेकी सुविधा पहुंचायी जानी चाहिये।

बढ़ती हुई जनसंख्याको रोकनेसे सम्बन्धित हम उपरोक्त जिस योजनाको रख रहे हैं उससे एक सर्वथा नये प्रकारके दोषके प्रारम्भ हो जानेकी सम्भावना है। ऐसी दशामें जब कि प्रजनन निरोधका ज्ञान व्यापक बन जायगा और इसके प्रयोग भी सहज सुलभ हो जायंगे तब इनका सबसे पहिले इस्तेमाल उन वर्गों द्वारा किया जायगा जिनको कि इन्हें न करना चाहिए, यथा ---सुशिक्षित और सुसंस्कृत वर्ग, किन्तु इसके सर्वथा प्रतिकूल, जिन्हें इनको काम में लेना चाहिय वे इनसे दूर भागेंगे। वे सुसंस्कृत और सुशिक्षित लड़कियां, जो अपनी अभागिनी बहनोंकी दुःख व्यथाओं से आर्द्र बन गन्दगी झोपड़ियों, कारखानों और दाईखानोंमें सेवा करनेका भार सम्भालेंगी, यहांके भयावने दृश्योंको देखकर ऐसा मानने लग जायेंगी कि नारियोंके लिये प्रजनन एक अभिशाप है। उनकी चेतना हीन मस्तिष्कमें अनियन्त्रित प्रजनन और अवांछित बहुप्रसवताके भयकारी दृश्य घर कर लेंगे। उनके ऐसे कटु अनुभव उन्हें लिंग और तद्सम्बन्धी समस्त भाव विभावोंको भी अनन्त दुःखका मूलाधार माननेकी प्रेरणा प्रदान करेंगे। विश्व युद्ध ने भी सुसंस्कृत-नारियोंके उरोंमें पैठे संता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नीत्पत्तिके प्रति घृणाके भावोंको घनीभूत बनाया है। वे सुसभ्य नारियां, जिन्होंने ज्ञान परिवर्धन और सौंदर्योपासनाको ही अपने जीवनका लक्ष्य माना है, संतानको जन्म देने और उनकी देख भाल करनेके पचड़ोंमें तो पड़ना ही नहीं चाहतीं। विद्या-प्रेमियों और सिद्धहस्त कलाकारोंके क्षेत्रमें तो चाहे वे पुरुष हों अथवा स्त्री, संतानको एक निरर्थक विषयके रूपमें ही स्वीकार किया जाता है। इन तमाम बातोंके पीछे विश्व व्यापी अर्थ समस्याका भी हाथ है। अर्थ संगक ग्रस्त मध्यम वर्गीयोंका तो ऐसा मानना है कि यदि वे संतानको सभ्यता-पूर्ण ढंगसे पाल-पोष नहीं सकते तो संतानोत्पत्ति भी एक पाप है। इस प्रकार धनवानों के लिये अधिक संतानोत्पत्ति निस्सार और मध्यमवर्गीयोंके लिये सर्वथा अवांछित है। अस्तु, एक ओर. . .जब कि समाजके ये श्रेष्ठ वर्ग 'सन्तानोत्पत्ति निरोध' करना प्रारम्भ कर देंगे, तब दूसरी ओर अज्ञानताके अन्धकारमें फंसे इंद्रिय लोलुप निम्नवर्गीय अपनी सन्तानोत्पत्ति में दस या बीस गुनी वृद्धि कर देंगे। तब क्या 'सन्तानोत्पत्ति निरोध' ही एक विधि है, जिसके आधार पर हम सुखप्रद भविष्य की कल्पना कर सकते हैं? अथवा, क्या वह उपाय हो सकता है जिसको आधार मान हम अपने राष्ट्रका समुचित विकास कर सकते हैं?

तर्कमें भावनाओंको प्रधानता देना उचित नहीं। हर तथ्यको उसके असली स्वरूपमें ही लेना ठीक होगा। मैं राष्ट्रीय जीवनसे सम्बन्धित एक गहन विषय पर, जिसको कि आधुनिक मनोविज्ञानने हमारे समक्ष ला उपस्थित किया है, विचार करने बैठा हूं। हर विचारवान व्यक्ति इस कथन से सहमत होगा कि स्वतन्त्र भारतको वैज्ञानिक औद्योगिक, राजनीतिक, शासन तथा सैनिकताके क्षेत्रमें एक बड़े पैमाने पर महान नेताओंकी सेवाओंकी आवश्यकता है। एक सफल नेता बननेके लिये धवल चरित्र, महान योग्यता और सत्साहस की आवश्यकता होती है। इन समस्त विशेषताओंकी आधारशाला बुद्धि है। अब हमें देखना चाहिये कि समाजके किस स्तरमें बुद्धिका वास होता है। इस प्रश्नका ठीक-ठीक उत्तर दे सकनेमें तो एक मनोवैज्ञानिक ही समर्थ है, और यही वह व्यक्ति है, जिसने विश्व युद्धके समय इस क्षेत्रमें चौंका देनेवाली कितनी ही खोजें की हैं। हो सकता है कि यह बात हमारे देशमें सर्वज्ञात हो कि प्रथम महायुद्धके समय अमेरिकन नौसिखियों की परीक्षा लेकर ही उन्हें उनकी योग्यतानुसार स्थान दिया जाता था। जब इन परीक्षाओंका अन्तिम परिणाम निकला गया तो ज्ञात हुआ कि:—

प्रथम श्रेणी—शिक्षा आदिके से आये हुए तथा अन्य बुद्धि जीवी लोभोंसे

द्वितीय श्रेणी—मैनेजर, किरानो व्यापारी आदि।

तृतीय श्रेणी.———कृषक, फुटकरग व्यापारी, शिल्पी, अर्धकुशल श्रमिक।

चतुर्थ श्रेणी.———मोटा काम करने वाले मजदूर, मिल मजदूर फुटकर मजदूरी तथा रोजाना मजदूरी—पर काम करने वाले लोग, तथा मछुये (मछुओंका नाम सबसे अन्तमें था।)

विभिन्न पेशे वालोंका यह वर्गीकरण स्वतः महत्वपूर्ण है, किन्तु इसका महत्व तब द्विगुणित हो गया जब कि स्कूलोंमें पढ़नेवाले बालकों एवं बालिकाओंकी परीक्षा की गयी और अपने मां बापके पेशे के अनुसार ही वे भी बुद्धि और योग्यताकी कसौटीमें वैसे ही ठहरे। विरोधी आलोचकोंको इससे भी सन्तोष नहीं हुआ। अस्तु मनोविज्ञानवेत्ताओंने नये जन्में-शिशुओं की भी परीक्षा की और यह सिद्ध कर दिखाया किवे भी कसौटीमें वैसे ही ठहरे। राष्ट्रमें वृद्धिका केन्द्र विन्दु कहां रहता है, इस विषय की शंकाओंका हमेशाके लिये तिरोधान हो गया।

वयस्क व्यक्तियों और साथ ही बच्चों की बुद्धिकी परीक्षा हमारे देशमें बड़े पैमाने पर नहीं की गयी है। पिछले कुछ ही वर्षों के भीतर फौजी अधिकारियोंने इमर्जेन्सी कमी वालोंके लिये उम्मेदवार व्यक्तियोंकी बुद्धिकी परीक्षा करनेकी आवश्यकता अनुभव की है। लेकिन कुछ मनोविज्ञानवेत्ता व्यक्तिगत रूपसे स्कूल जाने वाले बालकों और बालिकाओंकी बुद्धिकी परीक्षा करने और उनका वर्गीकरण करनेकी दिशामें बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। प्रो० कामथ इस क्षेत्रमें अग्रणी हैं। और उनकी पुस्तक 'भारतीय बालकोंकी बुद्धिकी माप समस्या'। (आवज फोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस १९४०) बुद्धि परीक्षण विषयक साहित्यको अति न महत्वपूर्ण देन है। प्रो० कामथके परीक्षणोंके आधार पर जो २२ लड़के मेधावी और निकटतम मेधावी सिद्ध हुए, उनमें से १८ बुद्धि जीवी मां-बापकी सन्तान हैं और अवशिष्ट व्यापारी वर्गके मां-बापकी सन्तान। मजदूर वर्गका एक भी लड़का मेधावी नहीं निकला। और जोड़ा लड़के मंद बुद्धि निकले उनमेंसे सिर्फ एकका पिता एक रिटायर्ड सरकारी नौकर था। बाकी सभी मजदूर वर्गके लड़के थे।

हम देखते हैं कि समस्त विश्वमें बुद्धि जीवी वर्गके ही व्यक्तियोंमें जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें भावी नेतृत्व ग्रहण करनेकी क्षमता है। इसलिये इस वर्गके दम्पतियोंको अपने पीछे काफी संतति छोड़ जानेके लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। जन संख्याके बढ़ते हुए प्रवाहको नियन्त्रित करने और उसे ठीक दिशामें ले जानेके लिये यह परमावश्यक है कि हम मनोविज्ञान और जीव विज्ञानकी शिक्षाओंसे लाभ उठायें। यदि हमें यह मंजूर नहीं है कि हमारे देशमें भावी युद्धोंकी भट्टीमें झोंकनेके लिये अनापसनाप सन्तानोत्पत्ति हो तो मनोविज्ञान और जीव विज्ञानवेताओंको सभी राष्ट्र निर्माण कमेटियोंमें महत्वपूर्ण स्थान देना होगा। अन्तमें मैं जन संख्या वृद्धिकी लहर को ठीक ढंगसे नियन्त्रित करनेके सिलसिलेमें कुछ आवश्यक बातें बताना चाहता हूं:—राष्ट्र व्यापी पैमानेपर संतानोत्पत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ का वाहन

लेखक – श्रीभारत पाथिक

आधुनिक बैंकिंगको जिस हम विकसित रूपमें देख रहे हैं उसको वह रूप प्रदान करनेका श्रेय एक मात्र चेकको है। बल्कि सच तो यों है कि बैंकिंग के रथको आगे बढ़ानेमें चेक एक पहियाका काम करता है। चेक वह लिपिबद्ध परवाना है, जो धनी अपने महाजन अथवा थातीदारके नाम मांगके ऊपर एक निश्चित रकम भुगतान करने के लिये काढ़ता है। हुण्डी के समान न तो उसे कबूल करनेकी आवश्यकता होती है न नोटोंके समान उलट-पुलट अथवा प्रसार करने की। बल्कि थातीदारके सामने पेश होते ही उसका भुगतान हो जाना आवश्यक हो जाता है। चेकस्वरूप अर्थके इस वाहनको पहचाननेके निम्नाकित लक्षणहैं–(१) आज्ञा लिपिबद्ध हो ,(२) शर्त अथवा प्रतिबंध से रहित हो, (३) आज्ञाके रूपमें हो, आरजू के रूपमें नहीं, (४) सिक्केके भुगतान की आज्ञा हो अन्य वस्तु के लिये नहीं, (५) भुगतान की आज्ञा किसी व्यक्ति अथवा वाहकके लिये हो। यदि चेक के साथ किसी प्रकार की शर्त लगी हो, जैसे बारह बजे की गाड़ी पहुंचने पर रुपया दीजिये, तो वैसी दशामें शर्त पर ध्यान नहीं दिया जाता; क्योंकि प्रेषककी मांग के ऊपर ही रकमका भरपाया होजानाचेककी विशेषताओंमेंसे है। सारश यह कि भुगतानके लिये धनीकी उपरोक्तप्रकारकी आज्ञाका हम चेक कहेंगे।

चेकका अविष्कार इंग्लैंडके महाजनोंने किया था। जब नोट छापनेका अधिकर छीनकर बैंक आंव इंग्लैण्डको दे दिया गया था तब उन्होंने चेक-प्रणालीको जन्म देकर अर्थ एवं विनिमयके क्षेत्रमें क्रांति उपस्थित कर दी थी। व्यवसायी समाजने चेकके गुणोंको परखा और एक मत होकर स्वीकार कर लिया। चेकने अपने प्रतिद्वंद्वी नोटको मात दे दिया। जहां मोटी रकमों के भुगतानके लिये रुपयोंके बोझिल थैले और नोटोंके गठ्ठर ढोये जाते थे, वहां चेकके रूप में कागजके एक छोटे टुकड़ेसे काम चलने लगा–ढोने और गिननेके परिश्रमसे फुरसत मिली, खोटें-खरेके हिसाबमें माथा खपावे की आवश्यकता नहीं रही। सौदों कियाऔर दाम चुकाया, घर चले आये-समय और परिश्रमकी अपार बचत होने लगी। चाइल्ड और कम्पनी नामक गद्दी इस प्रणालीकी जन्मदात्री थी।

स्थान---

तारीख--

(थातीदार अथवा देनेवालेका नाम)

दीजिये (पानेवालेका नाम)---अथवा वाहको

रुपया (अक्षरोंमें)--

रु० (अंकोंमें--- हस्ताक्षर काटनेवालेका)

(चेकका नमूना)

चेकके संबन्मी

चेकसे तीन व्यक्तियोंका सीधा संबंध होता है–(१) काटनेवाला, (२) पानेवाला (३) देनेवाला। बैंकिंगकी बोलीमें काटने वालेको ड्राअर, पानेवालेको पेयी और भुगतान देने वालेको ड्रायी कहते हैं। उपरोक्त नमूने का चेक वाहक चेक अथवा बेयरर कहलाता है। इस प्रकारके चेकका भुगतान कोई भी थातीदार दूसरे शब्दोंमें देनदार के यहां प्रेषित करके ले सकता है; क्योंकि इसमें वाहकको भुगतान देनेकी आज्ञा है। इस प्रकार चेक प्रेषित करनेका नाम प्रेजेण्ट करना रखा गया है। चेकके कवच चाइल्ड और कम्पनी ने सर्व प्रथम जो चेक चलाया था वह बेयरर ही होता था। आगे चलकर चेकका कलेवर सुरक्षित रखनेके लिये क्रांस और अथवा आर्डर अथवा आज्ञा नामक कवचोंका अविष्कार भी हुआ। चेकके ऊपर अंकित वाहक को केवल काट देने अथवा काटकर आर्डर लिख देनेसे बेयरर चेक आर्डर चेक बन

(निरोधके पक्षमें प्रचार किया जाना चाहिये (२) प्रत्येक सरकारी अस्पताल और डिस्पेन्सरीकी मार्फत संतानोत्पत्ति निरोध की सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिये विशेष कर निम्नश्रेणीकी महिलाओंको इस बातके लिये (३) श्रमिक वर्गकी महिलाओंको इस बातके लिये प्रत्येक प्रकारसे तैयार किया जाय कि वे अपना परिवार बेहद न बढ़ायें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जाता है। उसका भुगतान बेयरर चेकके समान सब किसीको नहीं मिल सकता ।

आर्डरका असर

आर्डर चेकसे काटनेवाले की यह स्पष्ट इच्छा प्रकट होती है कि चेक की रकम प्रेषकको पहचान कर दी जाय । अतः ड्रायी यदि पेयीको नहीं पहचानता, तो उसे उसके सामने कोई ऐसा गवाह पहचानके रूपमें उपस्थित करना पड़ता है जिस पर ड्रायी का विश्वास हो और जो पेयी और हस्ताक्षर को पहचानता हो । यदि पेयी भुगतान लेने के लिये स्वयं ड्रायीके यहां उपस्थित नहीं होता है, तो उसका पहला कर्तव्य यह हो जाता है कि जिस हिज्जेमें चेक पर उसका नाम लिखा हुआ है उसी हिज्जेमें चेककी पीठ पर वह हस्ताक्षर कर दे । उदहरणार्थ चेक यदि रामचन्दर प्रसाद सिंघके नामसे है तो पीठपर रामचन्दर सिंघ ही लिखना पड़ेगा रामचन्द्र प्रसाद सिंह नहीं । यहां, शुद्ध अथवा प्रचलित हिज्जेमें उसे अपना नाम पीछे लिखना पड़ेगा । पृष्ठ भागके हस्ताक्षरको एण्डार्समेंट कहा जाता है । आंडेर चेकपर ठीक-ठीक एण्डार्न्समेंट करनेसे वह पुनः बेयरर बन जाता है। पेयी चेकको अन्य व्यक्ति के हाथ बेच भी सकता है । बिक्री करनेके लिये चेककीपीठ पर पेयी अपने हस्ताक्षर के साथ खरीदारको रकम पानेका अधिकार बना देता है । इस प्रकार वह चेक अितनी बार बिकेगा उसके पेइयोंकी संख्या भी उतनी ही वार बढ़ती जायगी ।

## क्रासकी करामात

चेकके किसी भागमें दो समानान्तर रेखायें खींच देनेसे उसका नाम क्रास्ड चेक हो जाता है । क्रास्ड चेकका भुगतान केवल बैंकर अथवा महाजनको ही मिल सकता है । बेयरर और आर्डर चेकोंके संबंधमें नहीं है । अतएव भुगतान लेनेवाले बैंकरके सर सारी जवाबदेही चली जाती है । उसे यह देखना पड़ता है कि रकम प्रेषक-पेयीके खातेमें ही जमा हो रही है । ड्रायीको देखना होता है कि पानेवाले बैंकरने पेयीके हस्ताक्षर की सत्यारक्षीका प्रमाण दिया है अथवा नहीं। यदि उसने पेयीके हस्ताक्षर अथवा हस्ताक्षरों को सनाख्त नहीं किया है, तो उसे भुगतान नहीं मिल सकता और चेक लौट आ सकता है। क्रासका प्रभाव आर्डर चेकपर ही अधिक होता है। बेयरर चेक पर क्रांस लगानेका कोई फल नहीं, क्योंकि जितने हाथसे बेयरर चेक गुजरता है, उसके उतने ही पेयी हो जाते हैं । दूसरे शब्दोंमें बेयरर चेकके पेयीको ठौर ठिकाना नही होता । क्रास्ड-आर्डर चेक उसकी पीठपर उचित हस्ताक्षर कर रकम वसूलीके लिये अपने बैंकरके पास भेजना चाहिये, ताकि उसका बैंकर सरलतापूर्वक उसके हस्ताक्षरका प्रमाण देकर भुगतान ले सके ।

क्रास दो प्रकारके होते हैं—(१) आम क्रास, (२) खास क्रास ! आम क्रास किसी चेक पर कोई भी दे सकता है । आम क्रास वाले चेकके कारबारका वर्णन ऊपर हो चुका है । चेकके आरपार किसी बैंक अथवा कम्पनीका नाम अथवा नामके साथ क्रास भी रहे, तो उसे खास क्रासिंग कहेंगे देनदार बैंकर उसी बैंकरको उस चेकका भुगतान देगा, जिसका नाम खास क्रासिंग में ह । यदि चेक पर एकसे अधिक खास क्रासिंग हैं तो चेककी पीठपर बिक्रीकी लड़ी पूरी होनी चाहिये । अन्यथा देनदार भुगतान देनेसे इनकार कर सकता है और उदाहरणार्थ यदि चेक पर अ, ब, स है । ड-बैंकोंके खास क्रास लगे हुए हैं तो उसकी पीठ पर क्रमशः अ बैंक ब बैंकको, ब बैंक, स बैंकको, और स बैंक ड बैंकको चेककी रकम पानेका अधिकारी बना देगी । इसे बिक्रीकी लड़ी अथवा "चेन आव एण्डोर्समेण्ट्स" कहते हैं ।

आम तौर पर क्रास बैठाये हुए अन्य चेकोंकी बिक्री यदि पेयीने उचित हस्ताक्षर के साथ किसी अन्य व्यक्तिके हाथ कर दी है, तो उसकी रकम खरीदारके खातेमें सरलतापूर्वक रखी जा सकती है । परन्तु "केवल पेयी खाते"—क्रास जिस चेक पर साइन है उसकी बिक्री नहीं हो सकती और उसकीरकम जब जमा होगी, तो पेयीके खातेमें ही जमा होगी । "कारबारके अयोग्य अथवा अव्यवहार्य"—क्रासका तात्पार्य चेकोंको बिक्री अथवा हस्तांतरित होनेके अयोग्य बनाना नहीं होता, जैसा साधारणतः समझा जाता है । उसका केवल मात्र अर्थ यही होता है कि प्रथम पेयीके अधिकार अथवा हकोंके सम्बन्धमें, जो कुछ भी कमजोरी अथवा खामियां हैं वे सब चेकके साथ खरीदारके घर चली जायंगी । इस प्रकारके क्रासका प्रचलित नाम "नाट नेगोशियेबल" क्रास है ।

क्रास को अप्रभावशाली बनानेका एक मात्र अधिकार काटने वालेको है । क्रासके पास 'नकद दीजिये' लिखकर हस्ताक्षर कर देने ही से क्रासकी सारी करामात खत्म हो जाती है । उसी प्रकार आर्डरको उड़ाकर उचित हस्ताक्षर कर देनेसे चेक बेयरर बन जाता है । सारा खेल ड्राअरकी कलमका होता है ।

चेकका रुख, मुख पृष्ठ

चेकके रुख पर आठ चीजें देखनेको मिलती हैं—(१) स्थान, (२) तारीख,


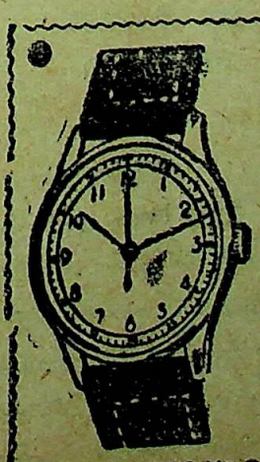

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage as. 12. Free to 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(३) ड्रायीका नाम, (४) पेयीका नाम, (५) चेक बेयरर है अथवा आर्डर, (६) रकम अक्षरोंमें, (७) रकम अंकोंमें, और (८) ड्राअरका हस्ताक्षर। इन अष्टांगोंसे चेकका शरीर गठित होता है। चेककी तारीख एक अत्यन्त आवश्यक चीज है। चेकके रुखकी परीक्षा करते समय देखना चाहिये कि चेक बासी अथवा अकालोत्पन्न (उत्तरकालीन) तो नहीं है। हिन्दुस्तानमें छः महीनेसे अधिक उम्रका चेक बासी अथवा स्टैल समझा जाता है। किसी-किसी बैंकमें तीन ही महीने पर चेक बासी हो जाते हैं। जिन बैंकोंने इस प्रकारका नियम रखा है उनके चेकोंपर वैसा लिखा भी रहता है। साधारण नियम छः ही महीनेका है। आजकी तारीखसे छः महीने पीछे तकका चेक हीनवीर्य नहीं गिना जाता। परन्तु आगामी कलकी तारीखका काटा हुआ चेक आज दिन भर कौड़ी कामका नहीं माना जायेगा। कलके प्रकाशमें उसका मूल्य भले ही बढ़ जाय। ऐसे चेकको पोस्ट डेटेड चेक कहते हैं। अपनी बोलीमें उसे अकालोत्पन्न अथवा उत्तरकालीन ही कहना ठीक जंचता है। जिस चेक पर तारीख छूट गयी हो, उस पर वाहक अपने हाथसे तारीख बैठा सकता है। जिस चेक पर पेयी का ऐसा नाम लिखा हो, जिसे व्यक्ति रूपमें पाना असम्भव है—जैसे हिमालय, भारत माता, श्री कृष्ण भगवान, जीसस क्राइस्ट, अथवा पेयीके स्थानमें नकद, मजदूरी जैसे शब्द लिखे हों तो ड्रायी उसे बेयरर मानकर ही भुगतान करता है। चेककी रकम अक्षर एवं अंकमें एक ही प्रकारकी लिखी होनी आवश्यक है। यदि अंक और अक्षरमें लिखी रकममें अंतर आता है तो चेक लौट जाता है। कानून तो कहता है कि अक्षरमें लिखी रकमका भुगतान हो जाना चाहिये। परन्तु बैंकर धोखेसे स्वयं बचने और धनीको बचानेके लिये इसे प्रोत्साहन नहीं देता।

कभी-कभी धनी चेककी सीमा बांध देता है। उदहरणार्थ वह चेक पर लिख देता है "सौ रुपयेसे अधिक नहीं"। वैसी दशामें ड्रायीको देखना पड़ता है कि चेककी रकम सौको लांघ न जाय। काटने वालेको अपने हस्ताक्षर पर ध्यान रखना आवश्यक है। वह जब हस्ताक्षर करे, तो उसे विश्वास होना चाहिये कि वह ठीक हस्ताक्षर कर रहा है और वह ड्रायीके यहां दिये गये नमूने से मिल जायेगा।

अपढ़ ड्राअर अंगूठेकी छाप अथवा किसी निश्चित चिन्हके द्वारा चेक काटता है। ऐसा चेक कमसे कम एक ऐसे गवाहके सामने कटना चाहिये, जिसे बैंकर जानता है और जो बैंकरका मुलाजिम न हो। गवाह को अपना नाम और पता देना पड़ता है। बीमार और अशक्त ड्राअर अपने डाक्टर और एक अन्य गवाहके सामने चिन्ह बना सकता है। डाक्टरको लिखना पड़ता है कि ड्राअर अमुक रोगसे आक्रांत है और वह होश-हवाससे दुरुस्त है। नशेमें मत्त व्यक्ति यदि चेक प्रेषित करता है तो उसके हस्ताक्षरकी सनाख्ती लेनेसे कभी नहीं चूकना चाहिये। पेंसिल और रबर स्टाम्प के हस्ताक्षर चलने योग्य नहीं होते। पेंसिल से किया हुआ हस्ताक्षर रबरके सहारे बदलना सुगम होता है। रबर स्टाम्पके सम्बन्धमें निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि उसे चेक पर स्वयं ड्रायीने बैठाया है या अन्य किसी ने। इस प्रकार वह भारी संशयका घर होता है। अतएव उसे प्रोत्साहन न देना ही उचित है। इतना सब होने पर भी एक बात ध्यानमें रखनेकी यह है कि चेकके रुखपर तनिक भी काट-छांट अथवा हेर-फेर करनेके लिये ड्राअरका पूरा हस्ताक्षर करना अत्यावश्यक है। अन्यथा चेक चल नहीं सकता।

### छिन्न चेक

चेकका कोई आवश्यक अंश यदि कट-फट जाय, तो उसका मूल्य रद्दी कागज से बढ़कर नहीं होता। ड्रायी यदि वैसे चेकका भुगतान करता है, तो एक भारी जवाबदेही मोल लेता है; क्योंकि सम्भव है चेकको फाड़नेसे ड्राअरका तात्पर्य उसे नष्ट करने से रहा हो। ऐसी दशामें ड्रायी ड्राअरके हिसाबसे रुपया निकाल कर 'अपनेतई' जोखिममें डालता है। चेक यदि भूलसे ड्राअर अथवा भुगतान लेने वाले बैंकरके हाथसे फट जाये, तो प्रेषकको लिखित गारण्टी देनी चाहिये कि चेक भूलसे उसके हाथसे फट गया है। वैसी दशामें चेककी रकम प्रेषकको मिल जायेगी।

पेयी और बिक्रेताओंके हस्ताक्षर बिक्रीकी लड़ी, छिन्नवस्थाकी गारण्टी, हस्ताक्षरोंके प्रमाण आदि आवश्यक बातें चेककी पीठ पर ही पायी जाती हैं। चेककी रकम चुकता करनेके पहले एण्डार्समेण्ट का निरीक्षण सावधानीसे करना चाहिये। हस्ताक्षर नियमानुसार और **ठीक** तथा उनका लगाव परस्पर निकटवर्ती होना चाहिये। बैंकर द्वारा प्रेषित होने पर हस्ताक्षरोंकी यथावश्यक गारण्टी और रकम कहां जा रही है इसका ब्योरा भी स्पष्ट रूपसे रहना आवश्यक है। एण्डार्समेण्ट दो प्रकारके होते हैं—(१) सादा, (२) विशिष्ट। सादा एण्डार्समेण्ट केवल हस्ताक्षरको कहते हैं—जैसे राजेश्वर सिंह। विशिष्ट हस्ताक्षरमें किसी अन्य व्यक्तिको रकम देनेकी आज्ञाके साथ हस्ताक्षर रहता है, जैसे श्याम शेखरको दीजिये, (ह०) राम शेखर।

आर्डर चेकका एण्डार्समेण्ट जहां पेयी द्वारा अथवा पेयीके लिये ठीक ठीक किया हुआ जान पड़ता है, वहां प्रेषक बैंकरको भुगतान देकर ड्रायी सारी जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाता है। एक बात और ड्रायी को देखने की है कि एजेण्टकी हैसियतसे हस्तार करने वाला व्यक्ति रकम वसूल करके अपने खातेमें तो जमा नहीं कर रहा है।

### निषेधाज्ञ

ड्राअर जिस चेकका भुगतान रोकने की आज्ञा करता है उस चेकके विषयमें ड्रायीको विशेष रूपसे सतर्क रहना पड़ता है; क्योंकि भूलसे भी यदि उस चेककी रकम हाथसे निकल गयी, तो उतने रुपये का घाटा उसके सिर बैठा ही समझना चाहिये। निषधाज्ञा जारी करते समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ड्राअरको सावधानीसे सोच लेना उचित है कि उसकी आज्ञा कहां तक ठीक है; क्योंकि ड्राअरको हैसियतसे चेकका भुगतान न मिलने पर कानून उसे अपनी पकड़ के बाहर नहीं जाने देता ।

चेक की वापसी

कारणवश भुगतान न मिलने पर ड्रायी कारण-पत्रके साथ चेक लौटा देता है । परन्तु चेक लौटाते समय खूब सावधानीसे कारणोंकी परीक्षा करनी चाहिये; क्योंकि तनिक सी असावधानीसे किसीकी खाख मिट्टीमें मिल जा सकती है जो व्यवसायीकी एक तुनुक गौर अनमोल निधि होती है । चेककी रकम जितनी ही छोटी होगी व्यवसायीकी साख पर उतना ही बड़ा धक्का लगेगा । बड़ी रकमका चेक लौटानेसे उतनी क्षति नहीं पहुंचती । लापरवाहीसे लौटा हुआ चेक ड्राअर और ड्रायी दोनोंके लिये घातक सिद्ध होता है । चेक लौटानेके साधारणतः निम्नलिखित कारण प्रेषित किये जाते हैं ।

(१) बिलोंका भुगतान नहीं आया है, कृपया पुनः पेश करें--

(२) पेयीका हस्ताक्षर नियमित नहीं है ।

(३) बैंकर पेयीके हस्ताक्षर सनाख्त करे ।

(४) अंक और अक्षरमें लिखित रकमोंमें अन्तर पड़ता है ।

(५) ड्राअरसे मिलें ।

(६) भुगतानका प्रबन्ध नहीं किया गया है ।

(७) प्रबन्धसे अधिक रकमका चेक है ।

(८) ड्राअरका हस्ताक्षर ठीक नहीं है ।

(९) चेक बासी है ।

(१०) चेक उत्तरकालीन है ।

(११) कटिंगके पास ड्राअर पूरा हस्ताक्षर करें ।

(१२) चेक फटा हुआ है, आदि ।

चेकके सगोत्र हुण्डी, ड्राफ्ट, कैशअर्डर, डिविडेण्ड वारण्ट, पोस्टल आर्डर, इंटरेस्ट वारण्ट आदि चेकके सगोत्र कहे जा सकते हैं । परन्तु चूंकि इनमें चेकके सभी लक्षण नहीं पाये जाते; इन्हें पूर्ण रूपसे चेककी पंक्ति में नहीं बैठाया जा सकता । ये कागजात चकके समान बैंकरको कानूनी बंधनोंसे मुक्त भी नहीं कर सकते ।

हम देख चुके हैं कि चेककी उत्पत्ति किस प्रकार एक साधारण अवस्थामें हुई थी और आज किस विकसित रूपमें वह काम कर रहा है । आज उसके डाल-पात आकाशमें और मूल पातालमें छाये हुए हैं । प्रतिद्वंदियोंको परास्त कर उद्योग-धंधेके प्रसारमें उसने जो कमाल दिखाया है वह अकथनीय है । अखण्ड मण्डलाकार टकाका प्रतीक और साखका प्रतिबिम्ब होनेके कारण उसमें भी चराचरको वशीभूत करनेकी अपरिमित शक्ति विद्यमान है । किन्हीं अंशोंमें तो वह टकासे भी दो डग आगे बढ़ गया है । भावी व्यवसायिक ड्रामेमें चेक जो पार्ट खेलेगा वह तो अनुमानके परे है । तब इतना निश्चयके साथ कहा जा सकता है कि वह पार्ट कोई साधारण पार्ट नहीं होगा ।

---


## उच्चतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

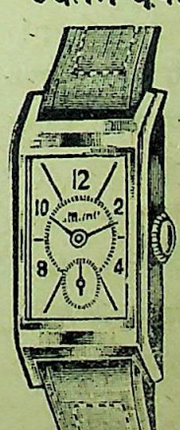

अत्यधिक सस्ती कीमतोंपर स्विटजरलैण्ड की बनी हुई, निहायत सुन्दर और आधुनिक आकार, ठीक समय देनेवाली । हर एक घड़ीकी गारण्टी ३ साल । क्रोमियम केस गोल या चौकोर साइज को १८) सुपीरियर २०) बेस्ट २५) रेक्टंगुलर और टोनिओ आकारकी चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केस, ९ ज्वेल ३८) रोलडगोल्ड ७ ज्वेल ५८) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६९) रोल्ड गोल्ड १० साल की गारंटीका केस ८३) । प्लास्टिक पट्ट सहित । डाक खर्च और पैकिंग माफ ।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V C.)
ऐशबाग — लखनऊ



हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

## ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजो सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसको सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर ता आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शोशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २



साप्ताहिक विश्वामित्र

—: की :—

एजेन्सी

लेकर लाभ उठाइये ।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# होलीका सन्देश

नया स्वर में नया मधु ले पिकरी फिर डाल पर
लिये नव वर्षके संग हर्ष औं मधुआ गई होली।

नया उल्लास, सा मधुमास का मधु पर्व फिर लाया
प्रकृति भी आज पुलकित है लता तरु स्पर्श से डोली
कुसुम रज उड़ रहा वनमें भरी ऋतुराजकी झोली
मसकती है प्रकृतिकी क्या पुरुषको देख कर चोली ?

कुसुमकी मधु भरी पिकचारियां रंग खेलतीं बन में
अरे ये मन चले भौंरे विहंस कर गा रहे होली
जहां देखो, वहीं रसरंगकी धारा उमड़ती है
गलीमें आज कलियोंकी दिखाई मधुकरी टोली
डुबा दो आज अपनेको उमड़ती प्रेम धारा में
यही सन्देश लेकर वर्ष पर आई सखे ! होली।

श्री मुरलीधर श्रीवास्तव

---

री स्वतन्त्र भारतकी होरी !
गांधी विन ही सति है कोरी ॥१॥

लहि स्वतंत्र, प्रथम तू आई–बड़े परिश्रमसे है पाई ।
पै न सके हा ! हम हरषाई–हिरदय रोवत तू हरौ री !
महा राष्ट्र मुख लगी कालिमा–हाय हमारी हरी लालिमा ।
अशुभ घड़ी ही दुष्ट जालिमा–करवायो यह काज अघोरी
केवट गये लगाय किनारे–जीती बाजी लागत हारे
हमसब तेरे रहे सहारे–हा किसमत बैठी मुख मोरी
रही उमंग न हृदय तनिक हू–छेड़ननीकी लागति इक हू
करै न कोई काऊदिक हू–रंग न चलै जहिं लागहि रीरी ।

श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

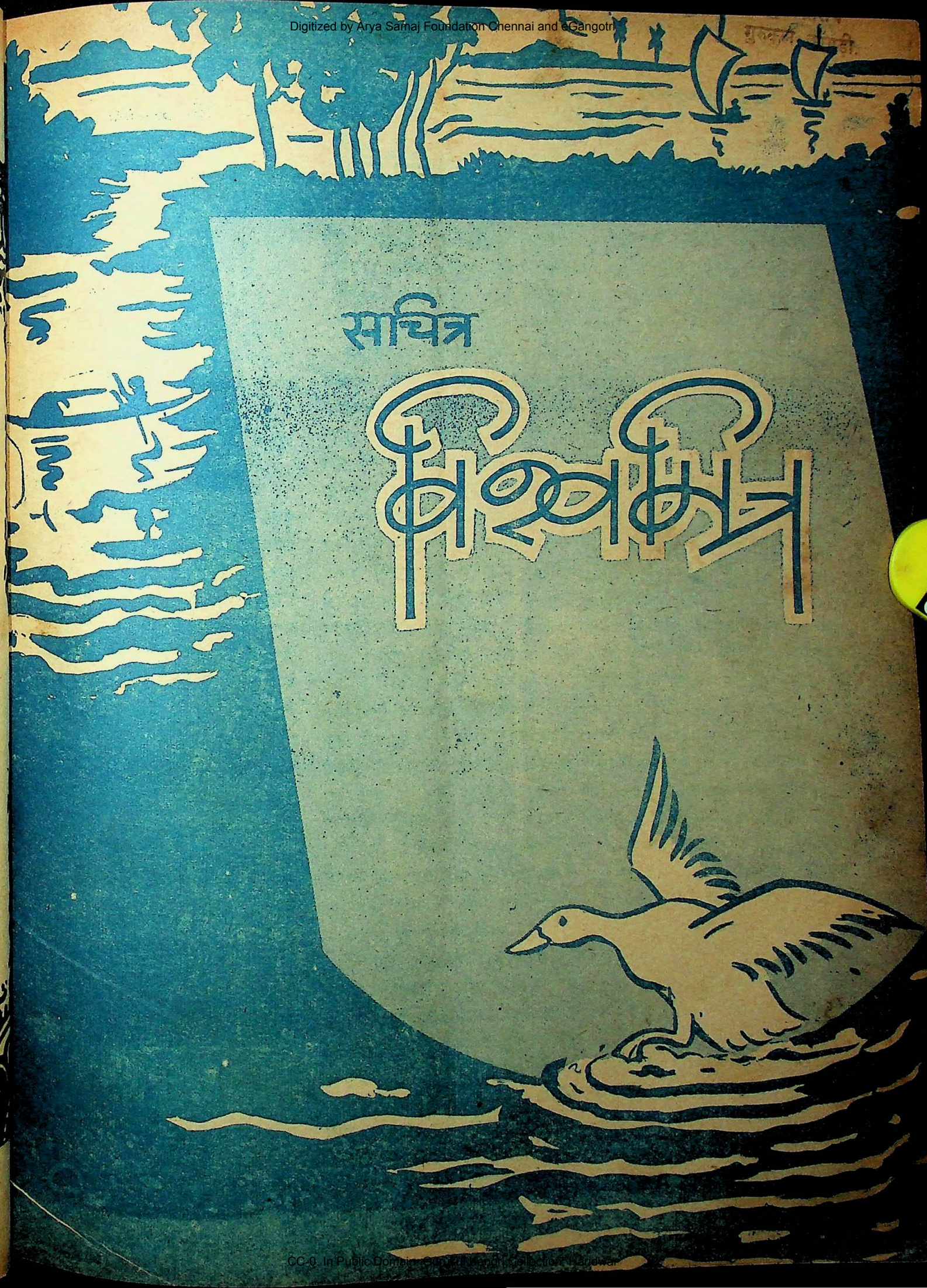


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अन्तर्राष्ट्रीय

### युद्धके पथपर

अमरिका अपनी अमित धनराशिका उपयोग मदांधकी भांति जिस ढंगसे कर रहा ह उससे युद्धके दिन निकट आते जां रहे हैं। अगामी वर्षकेसैनिक फण्डसे उसने तत्काल .२ अरब ३७ करोड़ ६१ लाख डालर मांग की है। यह धन युद्ध विमान और बमोंके कार्यक्रमके लिये मांगा गया है। इस तरह आगामी वर्ष जो पैसा सामरिक कार्योंमें खर्च होता उससे उक्त लम्बी रकम तत्काल खर्च करनेका अर्थ है कि अमेरिका युद्ध पथपर आगे बढ़ रहा है। अमेरिकन पार्लमेण्टकी अर्थ व्यवस्था समितिने आनन् झानन् इस मांग पर अपनी स्वीकृति दे दी है और समझा जाता है कि पार्लमेण्टकी जनसभामें भी इसे तत्काल स्वीकृति देगी। कमेटीने यह सिफारिश की है कि आग्रिम मांगी गयी रकम तत्काल दी जानी चाहिये ताकि वैमानिक उद्योग धंधाका काम अविलम्ब जोर शोरके साथ करने लगे और इस तरह जो काम एक वर्ष बाद होता वह फौरन आरम्भ हो।

### चेक मामलेमें हस्तक्षेप

गत सप्ताह सिक्यूरिटी कौंसिल जब चाइलके इस अनुरोधपर विचार आरंभ हुआ कि चेक मामलेमें रूसके हस्तक्षेप करनेकी जांच की जाये तो रूस और अमेरिका दोनोंकी ओरसे चेकोस्लोवाकियामें हस्तक्षेप करनेके अभियोग और प्रति अभियोग लगाये गये। रूसके प्रतिनिधि मो० ग्रोमिकोने चाइल के अनुरोधको शरारतसे भरी हरकत बताते हुए कहा कि फरवरी संकटके समय रूसके उप-परराष्ट्र सचिव मो० जोरिन प्रेगमें व्यापार वार्ताके सम्बन्धमें उपस्थित थे, अन्य किसी मामलेमें उनका कोई सम्पर्क नहीं था। नयी चेकोस्लोवाकिया और सोवियट रूसके खिलाफ आन्दोलन इसलिये चलाया जा रहा है कि चेकोस्लोवाक जनताके दृढ़ प्रतिरोधने अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियाके मनसूबोंको सम्पूर्ण व्यर्थ कर दिया। ब्रिटिश प्रतिनिधि सर एलेकजेण्डर कैडगोनने चाइलके अनुरोधका समर्थन करते हुए कहा कि चेकोस्लोवाकियाके लोगोंकी इस मामलेमें गवाही ली जानी चाहिये। अमेरिकन प्रतिनिधि मि० आस्टिनने कहा कि पूर्व और मध्य यूरोपमें हुई घटनाओंको देखते हुए चेकोस्लोवाककी कहानी और अधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। बहुमत के खिलाफ कम्यूनिष्ट अपनी लड़ाईमें सर्वत्र एकसे हथकण्डोंसे काम ले रहे हैं। जिस सफाईके साथ एक जैसे हथकण्डे काममें लाये जा रहे हैं उनको देखते हुए यह तर्क उठता है कि इसके पीछे कोई केन्द्रीय शक्ति काम कर रही है या नहीं।

### शांतिके लिये संघर्ष

अमेरिकाके रक्षा सचिव मि० जेम्स फोरस्टेलका विश्वास है कि यह बात स्पष्ट हो जाने पर कि अमेरिका यूरोपकी पश्चिमी सभ्यताको हरगिज नष्ट न होने देगा युद्ध रुक सकता है। अनिवार्य सैनिक भर्ती के समर्थनमें बोलते हुए मि० फोरेस्टेल ने बताया है कि अमेरिकाकी तत्परता और तैयारी ही शान्ति रख सकती है।

### कोलंबियामें विद्रोह

रूसके प्रति अमेरिकाके दिलमें इतना जबर्दस्त सन्देह और अविश्वास बढ़ गया है कि अपने विरुद्ध होनेवाले हर काममें उसे रूस और कम्यूनिस्टोंकी छाया दिखायी देती है। कोलम्बियामें जो विद्रोह हुआ है अखिल अमेरिकन कानफरेंसमें बोलते हुए प्रधान मन्त्री मि० मार्शलने इसके लिये अन्तर्राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट संगठनको जिम्मेदार ठहराया। आपने युद्धके बाद पश्चिमी गोलार्द्धमें कोलम्बियन विद्रोह को पैमानेमें प्रथम कम्यूनिस्ट प्रयास बताया। विश्वास है कि यह विद्रोह प्रत्यक्ष मास्कोके प्रेरणासे हुआ है।

### यहूदी सरकार

फिलस्तीनमें यहूदी राज्यके लिये एक अस्थायी सरकारकी घोषणा जिमनिस्ट कौंसिलने कर दी है। अस्थायी सरकारकी कौंसिलमें ३७ सदस्य रहेंगे और यहूदी राज्यको मानने वाले अरब प्रतिनिधि भी शामिल किये जायेंगे। अरब यहूदी संघर्ष चल रहा है। जिन गांवों पर यहूदियोंने कब्जा कर लिया है उनके उद्धारके लिये अरब जोरदार तैयारी कर रहे हैं। यहूदियोंके नगरोंपर हमला करनेके इरादेसे जेरूसलमके पश्चिममें जूडियन पहाड़ियों पर अरबों तोपें चढ़ायीयी जा रही हैं।

### तीसरे विश्व युद्धकी तैयारी

चीनके रक्षा सचिव जेनरल पाई चुंगलीके राष्ट्रीय असेम्बलीकी बैठकमें कथनानुसार तीसरे विश्व युद्धके लिये चीन वैज्ञानिक तैयारी कर रहा है। आपका कहना है कि यह युद्ध अणु बमोंसे होगा। आपने कम्यूनिस्टोंसे सावधान रहनेकी आवश्यकता बताते हुए कहा कि १९४७ में ये पीली नदी (येलो रिवर) पार करना चाहते थे। इस वर्ष इनकी यांगत्सी नदी पार करनेकी योजना है। इन लोगोंकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उनके पास १३ लाखकी खड़ी सेना है। २० सालके लड़ाईका अनुभव है।

### रूस फिनलैंडकी संधि

फिनलैण्डके साथ सन्धि हो जानेके उपलक्षमें आयोजित प्रीति भोज पर बोलते हुए जेनरल लिरसमो स्टालिनने कहा कि महान राष्ट्रोंके नेता छोटे-छोटे राष्ट्रों के साथ अपने सम्पर्कको उन पर अपनी महती कृपा समझते हैं। इसके विपरीत सोवियट रूस सोवियट फिनिश सन्धिको समानोंका समझौता (पैक्ट) मानता है। यह सन्धि १५० वर्षोंके सन्देह और अविश्वासको दूर कर हम दोनों देशोंके सम्पर्कों को नये रास्ते पर ले चलनेका संकेत है। विश्वासमैत्रीकी दिशामें दोनों देश बढ़ें, यह फिनलैण्ड और सोवियटके सब लोगोंको समझ लेना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वमित्र

सम्पादक--देवदत्त मिश्र

३१-१३ | २१ अप्रैल १९४८ | APRIL, 21, 1948. | मूल्य =), वार्षिक ६)


## गति

रचयिता---श्री "नीरज"

प्यार करना तो बहुत आसान प्रेयसि !
अंत तक उसका निभाना ही कठिन है !
है बहुत आसान ढुकराना किसी को,
है न मुश्किल भूल भी जाना किसी को,
तेज चलती किन्तु सांसों की हवा में--
याद का दीपक जलाना ही कठिन है ।
अंतप्यार करना तो बहुत आसान प्रेयसि
तक उसका निभाना ही कठिन है ॥

स्वप्न बन क्षण भर किसी स्वप्नित नयन के,
ध्यान-मंदिर में किसी मीरा-मगन के,
देवता बनना नहीं मुश्किल,मगर सब-
भार पूजा का उठाना ही कठिन है ।
प्यार करना तो बहुत आसान प्रेयसि !
अंत तक उसका निभाना ही कठिन है ॥

दूसरों के मग सुगम का अनुसरण कर,
है बहुत आसान बढ़ना ध्येय-पथ पर,
पांव के नीचे मगर मंजित बसाकर--
विश्वको पीछे चलाना ही कठिन है ।
प्यार करना तो बहुत आसान प्रेयसि ।
अंत तक उसको निभाना ही कठिन है॥

चीख-चिल्लाते, सुनाते विश्व भरको,
पार कर लेते सभी बीहड़ उजड़ को,
बिछ-बुझे पर पंथ के कटु कंटकों की--
हर चुभन पर मुस्कराना ही कठिन है ।
प्यार करना तो बहुत आसान प्रेयसि !
अंत तक उसका निभाना ही कठिन है॥

छोड़ नय्या वायु, धारा के सहारे,
हैं सभी ही सहज लग जाते किनारे,
धारके प्रतिकूल लेकिन नाव खेकर--
हर लहर को तट बनाना ही कठिन है ।
प्यार करना तो बहुत आसान प्रेयसि .
अंत तक उसका निभाना हो कठिनहैं॥

समय के संग संग बदल निज कंठ, लय स्वर,
क्या कठिन गाना सुनाना गीत नश्वर,
पर विरोधों के भयानक शोर-गुल में--
एक स्वरसे गीत गाना ही कठिन है ।
प्यार करना तो बहुत आसान प्रेयसि ।
अंत तक उसका निभाना ही कठिन है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# 'चरवाहा'

काले कम्बल में लिपटा देखो वह अभागा कोन!
आंधी-पानी से लड़ता-भिड़ता पर ठिकरता मौन !

इसको कहती है दुनियां
इक दीन हीन चरवाहा:
इन पशुओंमें जीवनका
जिसने सारा सुख पाया !
देखो ऊंचे पहले की,
उसने दुनियां कब जानी;
उसने लीला कब जग के
वैभवकी है पहिचानी !

उसके लिये तो बना सदा से प्रश्नवाचक कौन !
काले कम्बल में लिपटा देखो वह अभागा कौन !

उसकी दौलत रही सदा से,
बकरी ,भेड़ें, गायें;
उसने सोने चांदी की,
कब हैं देखी आभायें !
जिसकी ममता में दुनियां
फंसकर होती मतवाली;
जिसमें अन्तरकी आभा,
पड़कर होती है काली !

वैभव की उन झंकारों से वह सदा रहा है मौन !
काले कम्बल में लिपटा देखो वह अभागा कौन !

औ' उसकी धंसती आंखें,
वे करुणा की दो काली;
जिनको देख देख हंसती,
दुनियां होती मतवाली !
पर वे दोनों आंखे ही
करती रहीं जग-कल्याण!
उन आंखों ने ही कितने
दिये जगती को वरदान !

तिस पर भी ये दो आंखें, रहती रहीं अब तक मौन !

काले कम्बल में लिपटा देखो वह अभागा कौन !

उसने भी है जगती से,
देखो कब है आशा की;
उसनें हंसने वालों से
फिर भी नहीं दुराशा की !
उस हरीके ढांचे से
पतला रहा यह संसार;
उसकी झांकी में देखे,
सभी पैगम्बर अवतार !

वही मुहम्मद वही श्याम, वही ये चरवाहे मौन !
काले कम्बल में लिपटा देखो वह अभागा कौन !

# लो तुम्हारी चरणरज मस्तक चढ़ाऐं

रुठकर वरदान यदि अभिशाप होतो दोष क्या दूं ?
भाग्यके जलते सितारोंको भला संतोष क्या दूं ?
ठोकरों पर जी रहा संसारको तूफान क्या दूं ?
बेबसीके मरघटों में मैं भला फिर-प्राण क्या दूं ?
स्वप्न जिसकी जिन्दगी के जल रहे अरमान क्या दूं ?
स्वास घुटती जा रही हो तो भला नवजान क्या दूं ?

धूमकेतु बन किसीका दीप मरघटमें जलाये
मैं लिये सन्तप जलता जा रहा हूं ।

लो तुम्हारी चरणरज मस्तक चढाये
मैं निरन्तर राह चलता जा रहा हूं ।

रागिनी भी जब सिसक कर गा उठी मेरा तराना—
और कोयल् कूक रोई रागका लेकर बहाना—
लह लहाते बाग में लो छा गई पत झड़ हवायें—
जिन्दगी के गीत कडुवे गा चली काली घटायें ।
चोट खा करके हरे होते हृदयके घाव मेरे ।
हार खाये जा रहे हैं जिन्दगी के दाव मेरे ।
याद में घड़ियां तुम्हारी स्वासको रह रह गिनाये
मैं स्वयं ही जिन्दगीको आप छलता जा रहा हूं
लो तुम्हारी चरणरज मस्तक चढाये—
मैं निरन्तर राह चलता जा रहा हूं ।

दोष क्या दूंगा तुम्हें यदि बेबसी का हो बहाना ।
दोष क्या दूंगा यदि रुठे स्वयं मुझसे जमाना ।
क्या भरोसा हाथका पतवार ही यदि टूट जाये ।
'स्वप्न सा बनकर घरौंदा रेतकायें फूट जायें ।'
धूल सा बन कर स्वयं तब आधियों सा छा चलूंगा
मैं विलखकर जिन्दगी की वह रुवाई गा चलूंगा
नयनमें आंसू भरे औ' दर्दको दिलमें दबाये
मैं तुम्हारी राह तकता जा रहा हूं
लो तुम्हारी चरणरज मस्तक चढाये
मैं निरन्तर राह चलता जा रहा हूं ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

विश्वमित्र

# वस्त्र व्यवसायीया ठग

कपड़े पर जब नियन्त्रण था वस्त्र व्यवसायियोंकी ओरसे निरन्तर यह आंदोलन चलाया जा रहा था कि वस्त्राभावके लिये सरकारका नियन्त्रण जिम्मेदार है। नियन्त्रण हटते ही जन साधारणके लिये उचित मूल्य पर वस्त्र सुलभ हो जायेगा। उनके तर्क और आंखोंमें धूल फेंकनेके लिये तैयार किये गये आंकड़ोंसे महात्मा गांधी इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने नियन्त्रण हटानेका जोरदार समर्थन किया। महात्माजी सरल प्राण व्यक्ति थे, उन्होंने प्रत्यक्षमें दिये गये आश्वासनों पर विश्वास किया। प्रतिष्ठित व्यवसायी और व्यापारी बननेवाले इस हद तक पतनकी ओर, इस परिवर्तित स्थिति में भी, जा सकते हैं महात्माजी जैसे साधु स्वभावके महापुरुषने यदि ऐसा सोचना भी हीन समझा हो तो उनको दोष नहीं दिया जा सकता। किन्तु शासनकी बागडोर पकड़ने वाले इस चकमेंमें आ गये, इसे हम क्या समझें? क्या यह दृष्टिकोणका दोष है? बंगालके अकालके समय धर्मप्राण दानवीर व्यवसायियोंका आदर्श सामने रहते हुए भी आजकी लोकप्रिय सरकार उनके इस चकमेमें कैसे आ गयी? क्या यह समझा जाये कि इन लुटेरे व्यवसायियों की सहानुभूतिकी कीमत हमारे शासकों की दृष्टिमें जनताके दुख दर्दों कष्टों और अभावोंकी अपेक्षा अधिक महत्व रखती है?

वस्त्र व्यवसाय परसे नियन्त्रण हटे दो महीनेसे अधिक हो गये किन्तु जनसाधारणके लिये वस्त्र आज नियन्त्रणके समयसे भी अधिक महंगी कस्तूरी हो गया है। कपड़ेके दाम साधारणतया डेढ़ सौ प्रतिशत अधिक हो गये हैं और खुल्लम-खुल्ला इन दामों पर कपड़ा वे लोग खरीद आवश्यकता पूरी करनेके लिये गरीब सर्वस्व स्वाहा करके ही एक जोड़ा धोती या साड़ी पा सकता है। मालूम हुआ है कि सरकार प्रयत्न करके भी कपड़ेके दाम घटानेको वस्त्र व्यवसायियोंको राजी नहीं कर सकी और सरकार अब यह सोच रही है कि इस स्थितिका सामना करने केलिये उसे क्या करना चाहिये। भारत सरकारने पिछले कई महीनोंके बीच में अपनी औद्योगिक नीतिमें जो दुर्बलता दिखायी है और उद्योगपतियों तथा पूंजीपतियोंको जनसाधारण एवं श्रमजीवियों की उपेक्षा करके भी सन्तुष्ट रखनेका जो प्रयास किया है उसीका परिणाम है कि लूटको व्यवसाय बना रखनेवाले पूंजीपतियों के हौंसले इतने बढ़ गये हैं। या तो वे यह समझने लगे हैं कि यह सरकार हमारी है और हमारे कामोंको येन-केन-प्रकारेण उससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सहयोग मिलेगा ही, या वे इस सरकारको इतना दुर्बल समझने लगे हैं कि मनमानी करने पर तुल गये हैं। बहर हाल यह स्थिति एक लोकप्रिय सरकारके लिये किसी प्रकार वांछनीय नहीं है।

वस्त्र समस्याका समाधान करनेमें आज सरकारको व्यवसायियोंसे जरा भी सहयोग नहीं मिल रहा यह अधिकारी सूत्रोंसे प्राप्त इस समाचारसे स्पष्ट है कि भारत सरकारने पश्चिम बंगाल और पूर्व पंजाबको सूती कपड़ा भेजनका ट्रांसपोर्ट परमिट जारी करना तत्काल बन्द कर देनका निश्चय किया है।

ये वस्त्रव्यवसायी कितने बड़े देशभक्त और राजभक्त हैं यह इसीसे पता चल सकता है कि पाकिस्तानमें वस्त्राभाव देख वहां चोरीसे कपड़ा भेजकर मालामाल बननेकी अपनी चोर प्रवृत्तिको रोक नहीं सकते। भारतकी आवश्यकता पूरी हो या न हो पाकिस्तानकी आवश्यकता अपनी सरकारकी चोरीसे पूरी करनेके लिये बम्बई, अहमदाबाद और शोलापुरके मिल मालिक उतावले हो उठे हैं, धर्मप्राण हैं न ये व्यवसायी?

इस सम्बन्धमें जो आंकड़े प्राप्त हुए हैं वे बताते हैं कि पूर्व पंजाब और पश्चिम अधिक कपड़ा पिछले कई महीनोंमें इन दो प्रांतोंको भेजा गया है और इस मालपर २५० से ४०० प्रतिशत तक लाभ उठाया गया है। पश्चिम बंगालको प्रतिमास ६९ सौ गांठोंकी जगह ५२ हजार गांठें अर्थात् सात महीनेसे अधिक तथा इसी तरह पूर्व पंजाबको प्रतिमास १० हजार की जगह प्रायः ४५ हजार ८७५ गांठें १५ फरवरी और १२ अप्रैलके बीच भेजी गयी है। यह है ज्वलन्त प्रमाण हमारे इन दानवीर, राजभक्त व्यवसायियोंकी देशभक्ति का। अन्य प्रांतोंकी वास्तविक आवश्यकताओंकी उपेक्षा करके भी जिन प्रांतों से चोरीसे पाकिस्तानको माल भजा जा सकता है उनको उनके हिस्सेसे जहांतक अधिक सम्भव हो भेजनेकी प्रवृत्ति को सरकारने बड़े मृदु शब्दोंमें अतिलोभ बताया है। हम ऐसा नहीं मानते। यह तो गांधी भक्तोंका हिन्दू मुस्लिम प्रेम भाव है। अपने को मुसलमान भाइयोंको कपड़े के अभावमें कष्ट पाते भला ये धर्मप्राण कैसे देख सकते? सरकारको चाहिये था कि उनके इस उदात्त भावनाको प्रशंसा करती उलटे वह इन वस्त्र व्यवसायियों को अति लोभी बता रही है। दुनियामें 'भले' आदमियोंका गुजारा नहीं है।

देशमें वस्त्राभावसे एवं पाकिस्तानको चोरीसे कपड़ा भेजनेकी साजिशोंसे उत्पन्न स्थितिका सामना सरकार किन उपायोंसे करना चाहती है, यह एक ऐसी समस्या है जिसके समाधानमें कुछ मौलिक सिद्धांतकी बातें हमारे सामने आती हैं। व्यवसायमें यह अनाचार, ठगी और जालसाजी उस आधारके मूलमें हैं जिसपर देश की आर्थिक व्यवस्था खड़ी है। अतः जब तक पूंजीवादी-शोषण व्यवस्था रहेगी तबतक सम्पूर्णतया इस अनाचारको तो बन्द नहीं किया जा सकता और पूंजीवादी व्यवस्थाके शीघ्र बदलनेके लक्षण नहीं दिखायी देते। तब सवाल यह होता है कि क्या ये व्यापारी इसी तरह मालामाल होते रहेंगे और जनसाधारण कष्टोंकी भट्ठीमें झुलसते रहेंगे? बात ऐसी नहीं है। सरकार यदि चाहे तो कड़ाईसे काम लेकर वह इस अनाचारके प्रकोप निर्मूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





तो नहीं कर सकती किन्तु नियन्त्रणमें ला सकती है। पर यह काम वह पूर्व पंजाब और पश्चिम बंगालको कोटेसे अधिक मालका ट्रांसपोर्ट परमिट काटने वाले और वागनोंकी व्यवस्था कर देने वाले जैसे सरकारी कर्मचारियोंके भरोसे नहीं कर सकती। उसे इस काममें जनताका सहयोग प्राप्त करना चाहिये। कांग्रेस संगठनके भीतर उसे इस तरहके कार्यकर्त्ता भी मिल सकते हैं जो सरकारको एकमात्र जनहित भावनासे प्रेरित होकर अपनी सम्पूर्ण सेवाएं देनेको तैयार हैं। किन्तु इन सेवाओंका बिना किसी अधिकारके कोई मूल्य नहीं है। कांग्रेस सरकारकी नीतिको कार्यान्वित करनेका प्रश्न है। जिन कर्मचारियोंने ब्रिटिश सरकारकी छत्र-छाया में आजीवन कांग्रेस आदर्शोंके विपरीत आचरण किया है उनको इस बातकी क्या चिन्ता कि उनके अमुक कामसे सरकारकी बदनामी होगी, यदि उनकी जेब भर रही है। कांग्रेसके हाथमें शासनाधिकार अवश्य आ गये हैं किन्तु उन अधिकारोंका प्रयोग कौन कर रहा है? निश्चय ही वे कांग्रेसमैन नहीं हैं। जो लोग स्वार्थियों और सुविधावादियोंके साथ मिलकर अपने निजी लाभ के साथ साथ कांग्रेसको अप्रिय बनाने और इस तरह उसे अपदस्थ करनेकी स्थिति उत्पन्न कर रहे हों उनसे यह आशा नहीं की जा सकती कि वे वस्त्राभाव जैसी समस्याको मिटानेमें ईमानदारीसे सरकार का साथ देंगे। नेहरू सरकार इसपर ध्यान रखकर वस्त्र व्यवसायियोंको सीधे रास्ते पर लानेके लिये जनताके सहयोगसे कोई योजना सामने लाये तभी उसे सफलता मिल सकती है।

**अल्प संख्यकोंकी रक्षा--**

भारत और पाकिस्तानकी सरकारोंके सामने अल्पसंख्यकोंकी रक्षाका एक ऐसा प्रश्न है जिसके हल होते ही उनकी बहुत सी समस्याएं आपसे आप मिट जायेंगी। इस बातसे इनकार नहीं किया जा सकता कि विभाजनको ठोस वास्तविकता मानकर चलने में ही वर्तमानका हित है। यह वास्तविकता अनिच्छुक लोगोंको समझायी जा सकती है और तदनुकूल चलनेको उन्हें राजी किया जा सकता है, किन्तु कहने से ही यह संभव नहीं हो सकता। विभाजनको जिन अल्पसंख्य के भीतर दहशह, भय आशंका और धन, जीवन मानके निरापद रह सकनेके संबंधमें अविश्वासका भाव पैदा कर दिया है, यदि देशकी सरकार उनके इस भावको दूर कर सकनेमें असमर्थ है तो उनसे यह कैसे आशा की जा सकती है कि वास्तविकताको मान कर वे अपने जीवन, मान और संपत्तिके साथ दुर्वृत्तोंको मनचाहा खेलवाड़ करने दें। पूर्व बंगालमें आतंकित, भ त्रस्त और पीड़ित हिन्दू यदि वहां नहीं रहना चाहते तो केवल आदर्शके नामपर उनको वहां रहनेके लिये उस समय तक कैसे वाध्य किया जा सकता है जब तक पाकिस्तानी सरकारकी ओरसे वस्तुत उनको निर्भय न कर दिया जाये। आज कलकत्तेमें या हिन्दुस्थानके अन्य भागोंमें मुसलमान जिस निर्भयताके साथ हैं पाकिस्तानमें भी जब तक ऐसी ही स्थिति नहीं उत्पन्न होगी कांग्रेस नेताओंकी वहां रहनेकी किसी अपील का कैसे प्रभाव पड़ सकता है। पाकिस्तानमें भारतके हाई कमिश्नर श्री श्रीप्रकाश जीका यह कहना तो ठीक है कि पाकिस्तान के हिन्दू भारत सरकार और हिन्दुस्तानके मुसलमान पाकिस्तान सरकारको अपना रक्षक समझना छोड़ दें। किन्तु सवाल तो यह है कि इससे अल्प संख्यकोंकी रक्षाका प्रश्न तो हल नहीं होगा। अल्पसंख्यक अपने को किसी देशका नागरिक मानकर ही यदि सब भयोंसे सुरक्षित हो जा सकते तो समस्या बड़ी आसानी से सुलझ जा सकती। अल्प संख्यकोंकी रक्षाका प्रश्न इस तरह हल नहीं हो सकता। जबतक बहु संख्य संप्रदायके सदस्यके दिलमें यह भय नहीं पैदा कर दिया जायेगा कि अल्प संख्यकोंके साथ उसका किसी तरहका अन्याय सरकार वर्दाश्त नहीं कर सकती तब तक इस समस्याका समाधान नहीं हो सकता। किन्तु अभी तक पाकिस्तानकी सरकारमें इस तरहकी दृढ़ता दिखायी नहीं देती। भारत सरकारकी भांति पाकिस्तान सरकार जब तक अपने अनूयायियोंकी नाराजगीकी परवाह न कर उनके अन्यायके विरुद्ध कड़ीसे कड़ी कार्यवाही कर सकनेका नैतिक साहस और संकल्प नहीं दिखायेगी, तबतक अल्प संख्यकों की रक्षा एक विराट प्रश्नसूचक समस्या बनी रहेगी। पाकिस्तानके हिन्दू अपनेको उस राज्यके राष्ट्रीय नागरिक समझें इसका उत्तरदायित्व हिन्दुओंकी अपेक्षा पाकिस्तानकी सरकार पर अधिक है। जिस दिन वह हिन्दूके दिलमें यह विश्वास अपने व्यवहारसे जमाकर बैठा देगी कि मुसलमान समझकर किसी नागरिक का अन्याय सरकार वर्दाश्त नहीं करेगी उस दिन नेताओंकी अपीलकी आवश्यकता न रह जायेगी क्योंकि कोई व्यक्ति अपने बाप दादोंका घर सहज ही छोड़नेको तैयार नहीं होता। पूर्व बंगालके प्रधान मंत्री ख्वाजा नाजिमुद्दीनने उस दिन कळकत्तेकी एक चाय पार्टीमें कहा है कि मैं तथ्यों और कार्यों पर विश्वास करता हूं शब्दोंमें नहीं। वे यह कहना चाहते हैं कि पूर्व बंगालमें ऐसी स्थिति नहीं है कि वहांके हिन्दुओंको भागनेकी आवश्यकता हो। यदि सचमुच उनके इस कथनमें तथ्य है तो हम ख्वाजा साहब को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि तब उनको जराभी परेशान न होना चाहिये। शरारत भरा प्रचार बहुत दिन तक टिक नहीं सकता और पूर्व बंगालके हिन्दुओंको जब यह विश्वास हो जायेगा कि वे सम्मानके सहित वहां निर्भय रह सकते हैं उस दिन भागे आये हिन्दूभी स्वतः आपसे आप पूर्व बंगाल वापस चले जायेंगे इसमें जराभी संदेह नहीं है।

**मौतका बदला मौत--**

हिंसाका बदला हिंसा, युद्धका बदला युद्ध, मौतका बदला मौत यह सिद्धान्त उद्देश्य सिद्धिके लिये गलत साबित हो चुका है और देखा जा रहा है कि इस सिद्धान्तकी बर्बरता समाजकी बर्बरताको दूर करनेमें समर्थ नहीं हुई। 'विषस्य विषमौषधम्'का दृष्टान्त सामने रखने वाले व्यक्ति यह भूल जाते हैं कि विषका प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Siddhanta eGangotri

करते समय यदि चिकित्सक मात्रा ठीक न रख सके तो विष औषधिका काम नहीं दे सकता। दण्ड विधानमें भी यही बात है। जिस उद्देश्यसे दण्डका विधान किया जाता है उसके पालनके समय उसका ध्यान नहीं रखा जाता। फलतः दण्ड विधान का उद्देश्य पूरा नहीं होता और अधिकांश दण्ड प्राप्त व्यक्तियोंकी मनोवृत्ति, जिस अपराधके लिये उनको दण्ड दिया जाता है, उसकी और पहलेसे अधिक बढ़ जाती है। इसी लिये मानवप्रेमी सुधारक बहुत दिनोंसे इस बातका आन्दोलन कर रहे हैं कि दण्ड-विधान शास्त्रसे मृत्युका दण्ड विधान उठा दिया जाना चाहिये। जिस कानून या सत्तामें मृत व्यक्तिको प्राण दान दे सकने की क्षमता नहीं है उसे जीवितका प्राण हरण करनेका भी अधिकार न होना चाहिये। साम्प्रदायिक दंगोंमें हम सब यह देख चुके हैं कि मौतका बदला मौत जैसे कानूनको जब व्यक्ति या समाज अपने हाथमें ले लेता है तो उसका कैसा भयंकर परिणाम होता है। मौतके बदले मौतकी सजासे सन्तुष्ट होनेकी प्रवृत्ति दनावी, है मानवीय नहीं। इन्हीं सब तर्कोंसे प्रभावित होकर बहुतसे देशोंने मौतकी सजा उठा दी है। ब्रिटेन भी यह सजा उठाने जा रहा है। फिलहाल यह निश्चय पांच वर्षके लिये किया गया है। इस आशय का बिल पार्लमेण्टमें गत सप्ताह पास हो गया है। मौतकी सजा इस बिलके अनुसार पांच सालके लिये हत्याके मामलोंमें उठा दी गयी है, राजद्रोह अथवा देशके हित विरुद्ध किसी तोड़-फोड़, गुप्त भेद प्रकट करनेके अपराधोंके लिये मौतकी सजा नहीं उठायी गयी। दण्ड विधान प्रणालीको अधिक मानवीय और कम प्रतिहिंसाशील बनानेके उद्देश्यसे किया गया यह सुधार अनुकरणीय है और हम आशा करते हैं कि भारत भी अपने दण्ड विधानमें तदनुकूल संशोधन करनेकी आवश्यकता पर विचार करेगा।

**उड़ीसामें नव विकास—**

हमारी सरकार देशके सर्वांगीण विकासके लिये नयी-नयी योजनाएं कार्यमें परिणत करने जा रही है। देशमें अमित प्राकृतिक साधन हैं जिनको यदि सुनियन्त्रित किया जा सके तो स्वल्प कालमें ही हम देशको समृद्ध करके स्वावलम्बी बना सकते हैं। देशकी नदियां और घाटियां ऐसे ही साधन हैं। आज इनसे लाभकी अपेक्षा देशको हानि ही अधिक हो रही है क्योंकि इनके स्रोत और प्रवाह अनियन्त्रित हैं। भारत सरकारने विभिन्न प्रान्तोंकी स्रोतवती नदियोंमें बांध बनाकर उनको देशके विकासमें सहायक बनानेका जो निश्चय किया है, वह प्रशंसनीय है। हमारे देशको आज अधिक खाद्य पदार्थ और अधिक विदयुत शक्तिकी बड़ी आवश्यकता है। इन दोनों आवश्यकताओंकी पूर्त्तिको दृष्टिगत रखकर गत सप्ताह उड़ीसामें हीराकुण्ड बांधके निर्माणका श्री गणेश भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने बांधकी नींवमें कंकरीट डालकर किया। पण्डितजीने इस अवसरपर कहा कि हीराकुण्ड बांध केवल उड़ीसाको ही नहीं समूचे भारत सारे विश्वको लाभ पहुंचायेंगा। यह निर्माण भारतके विकासकेलिये नींवका काम करेगा। इनसे बाढ़ोंका संकट टलेगा, खेती बहुत बड़े पैमाने और क्षेत्रमें आरम्भ होगी। इस तरह खाद्याभाव मिटेगा। इस बांधके फलस्वरूप इसका पानी बिजली पैदा करनेके काममें आयेगा। इससे उद्योगों का विकास सहज होगा। देहाती अंचलोंमें भी छोटे-छोटे उद्योग-धंधोंको बिजलीकी सहायतासे अधिक प्रगति मिलेगी। उड़ीसामें अभी यह पहला प्रयास है। इसी तरहकी अभी और तीन योजनाओंमें हाथ लगाना बाकी है। चिक्कार पाड़ा योजना, माराकोने योजना और महानदी योजनाके पूरी तरह कार्यान्वित होते ही उड़ीसा सम्पूर्ण समृद्धिशाली प्रान्त होगा और इस तरह हमारा समूचा देश समृद्ध होगा।

**दक्षिण एशिया संघ—**

बर्मा, सीलोन, भारत और पाकिस्तानको लेकर एक संघ बना दिया जाये, इस प्रकारका एक सुझाव हमारे सामने आया है। कहा जाता है कि एशियाके दक्षिणी तटवर्ती देशोंमें आजकल उन्हीं घटनाओंकी पुनरावृत्ति हो रही है जो १८ वीं सदीमें उत्तरी अमेरिकाके पूर्वी तटवर्ती प्रदेशोंमें हुई थी। दक्षिणी एशियामें ब्रिटिश साम्राज्यवादने वह स्थिति शांतिपूर्वक उत्पन्न कर दी है, जो बड़ी भारी लड़ाईके बाद उत्तरी अमेरिकामें लायी जा सकी थी। यह चीज है अपने अधीनस्थ प्रदेशोंको स्वाधीन राज्योंके रूपमें परिवर्तित करना। उत्तरी अमेरिकाके १३ राज्योंके बड़े बड़े नेता अपने अपने यहांकी सार्वभौम सत्ताओंके जोर पकड़ने और लड़ाई के कारण जटिल समस्याओंके पैदा होने से पहिले आपसमें मिले। उन्होंने सब राज्यों को समझाया कि उनका एक संघीय कन्वेन्शन बुलाया जाय। **और इसीका परिणाम है कि अमेरिकाके विभिन्न स्वतन्त्र राज्य आजतक संघबद्ध हैं और यह संघ सबके विकाशमें कितना सहायक सिद्ध हुआ है यह तो अमेरिकाकी सम्पन्नतासे ही स्पष्ट है** हम एशियायी लोग भीअपने सामान्य हितोंको देखते ब्रिटिश साम्राज्यके अधीन रहनेके बाद शीघ्र ही आपसमें एक क्यों न हो सकेंगे? हम इस तरहकी किसी भी योजनाका स्वागत करनेको तैयार हैं, जो दक्षिणी एशियामें शांतिपूर्वक प्रगति और विकास का मार्ग प्रशस्त करनेमें सहायक हो। काश्मीरको संघका पांचवा सदस्य मानने के सम्बन्धमें यह आपत्ति की जा सकती है कि एक देशके अन्तर्भुक्त किसी प्रदेश को उससे अलग करनेसे नयी समस्याओंके उत्पन्न होनेकी संभावना है। बहर हाल यदि संघके विधानके सम्बन्धमें मौलिक बातोंपर भारत और पाकिस्तान राजी हो जायें तो यह प्रश्न ऐसा है जिसका समाधान, संघके मार्गमें बाधक न होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

**इटालीमें चुनाव--**

लोकतंत्रवादी प्रणालीमें देशके भाग्य परिवर्तनमें चुनावका कितना जबर्दस्त और महत्वपूर्ण स्थान है, यह अभी हालके ब्रिटेन, भारत और फ्रांसके चुनावोंसे स्पष्ट समझा जा सकता है। ऐसा ही चुनाव १८ अप्रेल को इटालीमें होने जा रहा है। यह चुनाव संभवतः इस प्रश्नका उत्तर दे देगा कि इटाली दक्षिण पंथी रहेगा या वाम पंथी, वह यूरोपके पश्चिमी गुटमें शामिल होगा या रूसकी ओर अपना दोस्तीका हाथ बढ़ायेगा। इस समय इटालीका शासनसूत्र जिस दलके हाथमें है वह कैथलिक डेमाक्रेटिक पार्टी है। देशके सोशालिस्टों और कम्यूनिस्टोंने इस दक्षिण पंथी शासनके विरुद्ध हाथ मिलाया है, प्रगतिशील दृष्टिकोणसे यह शुभ लक्षण है। इन दोनो दलोंने 'जन मोर्चा' संगठित किया है। कम्यूनिस्टोंके नेता टोगलियट्टी है जो कम्यूनिस्ट दुनिया में एक योग्यतम और अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति समझे जाते हैं। सोशलिस्ट नेता नन्नीका इटालीकी जनतापर बहुत जबर्दस्त प्रभाव है। रूस और पश्चिमी राष्ट्र खासकर अमेरिका ब्रिटेन और फ्रांसकी दिलचस्पी इस चुनावमें स्वयं प्रत्यक्ष है। जनमोर्चाके हाथ मजबूत करनेके लिये ही सोवियट रूसने इस मांगका समर्थन किया कि युद्धके पूर्व इटाली के दक्षिणी अफरीकन उपनिवेश उसे वापस किये जायं। इसका प्रभाव मिटानेके लिये ब्रिटेन और अमेरिकाने यह घोषणा की कि इटालीको ट्रीएस्ट वापस दिया जाये। महाशक्तियोंके इन दांव पेंचोंसे यह भी साफ है कि इटालीका यह चुनाव केवल उसके लिये ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण यूरोपके लिये बहुत महत्वपूर्ण है। दक्षिण पंथी स्वतंत्र व्यवसाय और अमेरिकन सहायता एवं वाम पंथी मार्शल सहायताको अस्वीकार तथा समाजीकरण का नारा लगाकर यह चुनाव लड़ रहे हैं। सोशलिस्ट का यह विश्वास है कि चुनावमें सोशलिस्ट और कम्यूनिस्ट बहुत बड़ी तादाद में विजयी होंगे। संसारकी आखें इस समय इटली पर लगी हैं।

**एक नया अन्तर्राष्ट्रीय संघ--**

संयुक्त राष्ट्र संघकी अब कोई उपयोगिता नहीं रह गयी। दर असल अब तक यह देखा गया है कि संघके सामने लायी गयी प्रत्येक समस्यापर यूरोप और अमेरिकाके लाभालाभका ध्यान रखकर विचार किया गया है, यही कारण है कि उसके सामने जानेवाले किसी एशियाई राष्ट्रको संघकी कार्य प्रणालीसे एवं उसके निर्णयसे सन्तोष नहीं हुआ और आज तक उसके किसी निर्णयने उसकी प्रतिष्ठा नहीं बढ़ायी। उधर महा शक्तियोंके बीच में आपसी मतभेद इतने अधिक प्रचण्ड हो गये हैं कि पश्चिमी राष्ट्र एवं अमेरिका तथा रूस एवं पूर्वी यूरोपके राष्ट्र अब अधिक दिन मिलकर एक मेजके इर्दगिर्द शायद ही बैठ सकें। संयुक्त राष्ट्र संघमें एक तरफ अमेरिका और ब्रिटेन एवं दूसरी तरफ रूसके अपने अपने मनोभाव इतने प्रबल हैं कि कहीं सामंजस्य की गुंजाइश नहीं। रह गयी अतः पहले हीसे दोनों गुट अपने अपने अलग संगठन बनाने लग गये हैं और अभी उस दिन आर्थिक दृष्टिसे यूरोपको अपने पैरोंपर खड़ा करने तथा अमेरिकासे मार्शल योजनाके रूपमें प्राप्त १७ अरब डालरोंको युद्ध विध्वस्त यूरोपकी रक्षामें सुनियंत्रित भावसे लगानेका प्रत्यक्ष उद्देश्य सामने रखकर अमेरिकन गुटके १८ यूरोपीय देशोंने एक ऐसे ही स्थायी संगठनकी सृष्टि कर डाली है। यह स्थापना पेरिसमें गत सप्ताह ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव मि० वेविनकी अध्यक्षतामें हुई जिसमें ब्रिटेन, फ्रांस आस्ट्रिया बेलजियम, डेनमार्क, आयरलैण्ड, यूनान, आइस लैंड, इटाली, लक्समवर्ग, नारवे, नेदरलैण्ड, पुर्तगाल, स्वीडेन, स्वीजर लैंड और और टर्कीके अतिरिक्त जर्मनीने भी भाग लिया। कहनेको इस संगठनका द्वार प्रत्येक यूरोपियन देशके लिये खुला है, किन्तु वास्तविकता यह है कि अमेरिका और ब्रिटेनका नेतृत्व स्वीकार करने वाला ही इसमें शामिल हो सकता है। कोई देश अपना स्वतन्त्र आर्थिक ढांचा बनाये रख कर इस सहायतासे एक हब्बा नहीं पा सकता। इससे यह समझा जा सकता है कि यूरोपकी सहायताके लिये नहीं बल्कि अपनी सहायताके लिये यूरोपको साधन बनानेके उद्देश्यसे अमेरिकाने यह सहायताका जाल बिछाया है। रूस और उसके प्रभावान्तर्गत पूर्वी यूरोपका सामना करनेके लिये बनाया गया यह स्थायी संगठन शांतिकी रक्षा की तैयारी है यह संघर्ष ठाननेकी यह समय ही बतायेगा।

यूरोपकी रक्षाके कार्य क्रमपर विचारमें संलग्न प्रतिनिधिगण ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव वेविन बांयेसे तीसरे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by ... Gurukul Kangri Collection, Haridwar



### हैदराबादमें मुसलीम बहुमत

हैदराबादके इत्तिहादुल मुसलमीन के अध्यक्ष कासिम रिजवीने हैदराबादकी आबादीमें मुसलमानोंकी संख्या बढ़ानेकी एक योजना तैयार की थी और यह योजना निजामको बता दी गयी थी। योजनामें इस बातका आयोजन किया गया था कि यहांके हिन्दुओंको निकालकर हिन्दके मुसलमानोंको बसाया जाय। निजामकी गद्दी अक्षुण्ण रखनेके लिये मुसलमानोंको बसाना आवश्यक है। यही कारण है कि वहां ऐसी स्थिति उत्पन्न की जा रही है, जिससे हिन्दू आप ही आप भाग जायें।

### गुप्तचर विभागकी खोज

संयुक्त प्रांतीय गुप्तचर विभागने एक ऐसे दलको पकड़ा है जो २० हजार वर्गमीलके क्षेत्रमेंसे बच्चोंको भुलावा देकर पकड़ लाता था और उन बच्चोंका एक अनाथालय बनाकर चन्दा एकत्र करता था। दलके एजेण्टोंको प्रत्येक बालकके लिये ५०) मिलते थे। वे एजेण्ट देशके कई भागोंसे बच्चोंको गायबकर फररुखाबादमें एकत्र करते थे। यहां उन बच्चोंको यातनाएं दी जाती थीं और उनके नाम पर प्रचुर धन जमा किया जाता था।

### आजाद काश्मीर सरकार भंग

ज्ञात हुआ है कि आजाद काश्मीर सरकारके भूतपूर्व नेता इब्राहिम खां तथा काश्मीर मुस्लिम सम्मेलनके अध्यक्ष चौधरी गुलाम अब्बासमें आपसी मतभेद हो गया है। लोगोंका अनुमान है कि इस मतभेदके कारण आजाद काश्मीर सरकार शीघ्र ही भंग हो जायेगी।

### फ्रांसीसी उपनिवेशमें जनमत

पता चला है कि भारत सरकार और फ्रांसीसी प्रतिनिधियोंमें समझौता हुआ है कि पांडीचेरी, चन्दननगर और माहीका भविष्य निर्णय जनमतके आधारपर तय किया जाय। भारत सरकारने यथाशीघ्र जनमत संग्रहपर जोर दिया है।

### जयपुर गजट हिन्दीमें

जयपुर सरकारने यह आज्ञा जारी की है कि भविष्यमें जयपुर-गजट हिन्दीमें ही छापा जायेगा। और उसका नाम बदल कर 'राज्य पत्र' रखा जायेगा।

### सरकारी उद्योग नीति

ज्ञात हुआ है किक राष्ट्रीय कांग्रेस महासमितिके बम्बई वाले अधिवेशनमें हिन्द पार्लमेंट द्वारा स्वीकृत सरकारी उद्योग नीतिपर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जायगा। इस सम्बन्धमें कांग्रेसकी आर्थिक कार्यक्रम समितिकी रिपोर्ट भी रखी जायेगी। यह समिति अर्थ शास्त्रियों तथा उद्योगपतियोंके सुझावोंपर विचार कर रही है।

### मंहगाईका भता

पश्चिमी बंगालकी सरकारने अपने कर्मचारियोंको विगत सन् १९४४ की जुलाईसे आज तक के लिये मंहगाईका भत्ता देनेका निश्चय किया है।

# यत्र तत्र

### हीराकुंड बांध

भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित नेहरूने सम्मलपुरसे ९ मील दूर महानदीमें हीराकुंड बांधकी नींव डाली है। यह बांध ३ मील लम्बा है। इसके निर्माणमें ६ मास समय तथा ५० करोड़ रुपये व्यय होंगे। स्मरण रहे कि बांध योजनाओंमें हीराकुंड बांध प्रथम है।

### काग्रेस अधिवेशनमें विदेशी

अखिल भारतीय कांग्रेसके अधिवेशन में विदेशी दूत भी उपस्थित रहेंगे। लगभग ५००० विशेष आमन्त्रण पत्र भी भेजे गये हैं।

### प्राइम मिनिस्टरकी जग प्रीमियर

यह ज्ञात हुआ है कि बम्बईके प्रधान मन्त्रीको प्राइम मिनिस्टर न कहकर प्रीमियरके नामसे सम्बोधित किया जायगा।

### गांधी राष्ट्रीय कोषमें डाक व्यय नहीं

एक विज्ञप्तिमें बतलाया गया है कि जो व्यक्ति गांधी राष्ट्रीय कोषके लिये चेक, मनीआर्डर, रजिस्ट्री या अन्य दूसरे ढंगसे चन्दा देना चाहते हैं उन्हें किसी प्रकारका डाक खर्च नहीं लगेगा। केवल ऊपर लिख देना होगा कि इसके भीतरकी चीज राष्ट्रीय स्मारकके निमित्त है।

### इत्तेहादी नाजी दल

हैदराबादकी इत्तिहादुल मुसलमीन संस्थाके सम्बन्धमें यह ज्ञात हुआ है कि आजकल बम्बई, बरार, उत्तरी भारत, मद्रास, गोवा और हैदराबादके सीमांत भारतीय शहरोंमें इत्तेहादुल मुसलमीन भेदियेके रूपमें भेजे गये हैं। ऐसा पता चला है कि जिन्होंने हिटलरके समयमें नाजी शिक्षा पायी थी, वे जर्मनीसे भागकर यहां इत्तेहादी फौजी कार्यालयका कार्य-भार सम्भाल रहे हैं।

उपर्युक्त नाजी इत्तेहादुलदल केमस्त अपने क्षेत्रोंमें पंचमागीका कार्य कर रहे हैं और हैदराबाद निजाम सरकारका जोरदार समर्थन कर रहे हैं। इस दलको इष्ट स्थानों में पत्र-व्यवहार करनेकी आजादी प्राप्त है। आजसे कुछ मास पूर्व निजामने उस्मानिया विश्वविद्यालयमें पढ़नेके लिये बाहरी मुसलमानोंको विशेष छात्रवृति देकर बुलाया था। केवल गोवाके १५ मुसलमान विद्यार्थी थे।

### खरसावामें उपद्रव

खरसांवा आदिवासी सभाके अध्यक्ष का कहना है कि खरसांवाकी हालत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है। यद्यपि उड़ीसा और बिहारकी सरकारोंसे आश्वासन मिला है लेकिन कोई सक्रिय कदम नहीं उठा है। कुछ उत्पाती लोग वहांके निवासियों को डराया और धमकाया करते हैं बाजारोंमें वे जब सामान बेंचने जाते हैं तो आक्रमणकारियोंके आतंकसे वे सामान यों ही छोड़ भाग खड़े होते हैं। बादमें गुण्डे आकर उसे ले जाते हैं। ये घटनाएं बम्बू, अमोदा, कुचाई और खरसावांमें नित्यप्रति हो रही हैं।

### काश्मीरके आक्रमणकारी

जम्मूके मोर्चेपर भारतीय सैनिकोंसे आक्रमणकारियोंकी मुठभेड़ हुई। फल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

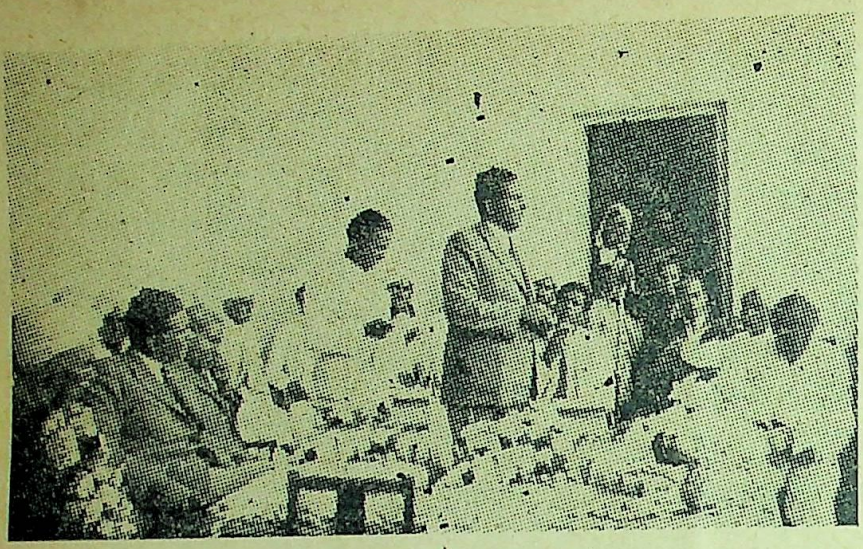

**हिन्दी विद्यालय, धारानगर मारीससके प्रथम वार्षिकोत्सवमें हन्दी प्रचारसभा के मन्त्री श्री एम० एम० भगत (बांयीं ओर) सभाका कार्य विवरण सुना रहे हैं और (दाहिनी ओर) सभाके प्रधान श्री श्रीनिवास जगदत्त सभाके कार्यकलाप औरहिण्दी परिचय परीक्षक्षाके महत्वको समझा रहे हैं ।**

स्वरूप वे भाग खड़े हुए । चिंगसपर भारतीय सैनिक पूर्ववत् अधिकार प्राप्त कर आगे बढ़ रहे हैं । चिंगस पहुंचनेके पूर्व सैनिकोंको जंगली तथा पहाड़ी आक्रमणकारियोंसे मुठभेड़ करनी पड़ी । यह ज्ञात हुआ है कि आक्रमणकारियोंके पास मशीन गनें भी थीं पर सैनिकोंकी सतर्कतासे अत्यधिक हानि नहीं हुई ।

### जमींदारोंकी मांग

पटनेमें छोटे-छोटे जमीन्दारोंकी एक रैली हुई है । कुछ प्रदर्शनकारी प्रधान मन्त्रीके निवासपर पहुंचे और नारा लगाने लगे कि–"जमीन लेनेके पूर्व भोजन दो" अन्तमें उन लोगोंने बिहार सरकार से मांग की है कि वह वकाश्त भूमि हमारे लिये छोड़ दे ।

### शिक्षकोंका पद त्याग

सिंहभूमि जिला शिक्षक संघके प्रधान मन्त्री श्री पी० के० ठाकुर सूचित करते हैं कि यदि बिहार सरकार मांगोंकी पूर्ति नहीं करेगी तो सिंहभूमि जिलेके शिक्षक २३अप्रैलसे सामूहिक रूपसेपदत्याग कर देंगे । वेतन सम्बन्धी मांगें वे १९४६ से ही कर रहे हैं । जब उन्हें तीन मासकी हड़ताल भी करनी पड़ी थी । बिहार शिक्षा मन्त्रीके आश्वासन पर भी उनकी स्थिति करुणाजनक है संघके मन्त्रीने इस पदत्यागकी आशंका उत्पन्न होनेकी ओर बिहार सरकारका ध्यान आकृष्ट किया है ।

### जिन्नाके ग्रह खराब

एक भारतीय ज्योतिषीने संवत् २००५ विक्रमीका वर्षफल प्रकाशित किया है । उसमें कहा गया है कि इस वर्ष मि० जिन्नाकी स्थिति डांवाडोल रहेगी, सम्भवत: वे मृत्युके निकट भी पहुंच जायें । ज्योतिषीजीने यह भी कहा है कि स्टालिन की जानको भी खतरा है ।

### अस्ट्रेलिया और भारतका व्यापार

आस्ट्रेलियाके व्यापार कमिश्नरने बताया है कि विगत ९ वर्षोंसे भारत और आस्ट्रेलियामें महत्वपूर्ण व्यापारिक समझौता रहा है । जनवरीमें समाप्त होने वाले ७ महीनेके अन्दर भारतका नम्बर आस्ट्रेलियासे माल मंगाने वालों में दूसरारहा है ।

### रियासती कांग्रेसकी विज्ञप्ति

हैदराबादके उपद्रवके सम्बन्धमें रियासती कांग्रेसके केन्द्रीय कार्यालयने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है कि रजाकारोंके उत्पात यत्रतत्र जारी हैं । जहां तहां ग्रामीणोंसे उनकी मुठभेड़ हुई लेकिन वे परास्त हो गये । एक कार्यालयमें आग लगा देनेके कारण वहांके सारे कागजात तथा फर्नीचर भस्म हो गये । निजामके अफसर भीलोंको भी अस्त्र शस्त्र देकर उभाड़ रहे हैं । कुछ लोगोंकी सम्पत्ति भी जब्त करने का निश्चय किया है । इन आतंकपूर्ण उपद्रवोंसे वहांके वकीलोंने अदालत जाना बन्द कर दिया है । कुछ विद्यार्थियोंने सत्याग्रह आन्दोलन भी जारी कर रखा है ।

### इवा दारू सम्बन्धी कानून

पश्चिम बंगाल सरकारने निश्चय किया है कि कोई भी व्यक्ति स्वत: या प्रतिनिधि द्वारा ऐसी कोई औषधि न बेंच सकेगा और न तैयार ही कर सकेगा जिसकी शीशी पर निश्चित द्रव्योंकी सूची अंकित न होगी । औषधियोंके परीक्षणके लिये केन्द्रीय ड्रग लेबोरेटरीके पास उन्हें भेजना होगा । तदन्तर केन्द्रीय सरकार से रजिस्ट्री करानी होगी । उक्त धारा १ अक्तूबर १९४८ से लागू होगी ।

### दंगा पीड़ित व्यक्तियोंकी सहायता

पश्चिम बंगाल सरकारकी एक विज्ञप्तिसे ज्ञात हुआ है कि विगत सन् १९४६ की १६ अगस्तसे सन १९४७ की १५ अक्तूबर तक कलकत्तेके आस पास दंगामें शिकार व्यक्तियोंको बंगाल सरकार १३॥ लाख रुपये सहादता करेगी ।

मारीससमें हिन्दी विद्यालयके वार्षिकोत्सवमें श्री जयनारायण राय भाषण कर रहे हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दुराचार

ले०—श्रीराम शर्मा 'राम'

जगजीवन सेठकी उदारताकी खबर [illegible] में वायुकी तरह फैली और सर्व विदित हो गयी। उनके अनेक कारबार, मकान और कोठियां हैं। सुना, कभी उनके पुरखे दूर देशसे उस शहरमें आये और और छोटेसे कारबारसे बड़े बन गये। जगजीवन सेठ ने पुरखोंके उस कारबारमें मानो चार चांद लगा दिये। नयी सभ्यताके अनुरूप पश्चिमीय ढंगका कारबार उन्होंने चलाया। पैसा बढ़ा और यश भी कमाया। जिसका परिणाम यह हुआ कि देशके सामाजिक और राजनैतिक जीवनमें भी उन्हें सहयोग देनेका अवसर मिला। एक दिन जब अंग्रेज भारतके शासक थे, तो तब नगरमें शासकों की ओरसे जगजीवन सेठका ही अधिक सम्मान किया जाता। उनके बाद कांग्रेस के राज्यमें भी उन्हें पूछौं गया। यहबात थी कि सरकारको भी उन्हीं प्रगति व्यक्तियोंका आश्रय लेना पड़ा जिन्हें देश की आन्तरिक व्यवस्थाका ज्ञान था। अतएव, वे उसके लिये उपयोगी थे। उसके सहयोगी और सहायक।

देशमें जिन प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने अपनी आवाज उठायी उनके स्वरमें यह भाव स्पष्ट सुनायी दिया कि पूंजीवाद को नष्ट कर दो.....सेठोंकी मनोवृत्ति दबा दो!

जगजीवन सेठने यह आवाज सुनी तो मुस्करा दिया। मानो जिस प्रकार पैसेकी उछालपर उन्होंने पहिले आदमीको उछलते देखा..... पैसेका दास; तो कदाचित उसी प्रकार अपने सामनेके समाजको भी उससे ऊंचा उठा हुआ नहीं पाया। उन्होंने कहा, पैसा, पैसा है,.....आदमी दास है, इसका! सोचा जगजीवन सेठने कि जब मनुष्य परिस्थिति पर आश्रित है और भोग द्वारा पराश्रित, तो यह कैसे सरल और प्राप्य है कि व्यक्ति सम रहे, प्रगतिशील रहे! न, यह श्रेणियोंमें बंटेगा। यों ही संघर्षमय रहेगा, इसका जीवन!

संभवतः यही कारण था कि जगजीवन सेठका कारबार घटा नहीं, बढ़ता गया। आदर्श उनके जीवनका उमंग बना रहा। ईश्वरवादके प्रति निष्ठा। क्या मजाल कि आने वाले प्रत्येक दिनमें वह दो-तीन घंटे पूजा जाप न करें। सभा सोसायिटियोंमें यह जो भाषण देते उनमें भी व्यक्तिकी परिभाषा और उसके नैतिक आदर्शकी जिस प्रकार विवेचना करते, वह उल्लेखनीय थी और अनुकरणीय। लेकिन यह आदर्श, व्यक्तिका वह नैतिक पहलू मानो परम्पराके अनुरूप कहा जा सकता था, उसे सुथर ढंगसे बताया जा सकता था, परन्तु वह व्यावहारिक हो और स्वयं अपने जीवनके स्तर परसे भी उतारा गया हो, कदाचित जगजीवन सेठ ने ऐसा कभी भी स्वीकार नहीं किया। उनका अपना यह मत था कि यह दुनिया है, यहां मूर्खोंका अधिक प्रवल्प है, अतएव, उनकी मूर्खतासे जितना भी लाभ उठाया जा सके, वह उठा लेना न केवल न्यायोचित था, अपितु उनके लिये आवश्यक और सराहनीय! संभवत; यही कारण था कि सेठजीके कारखानोंमें जो हजारों मजदूर काम करते थे, वे अतिशय अशांत और दुखी थे। उनके जो रहनेके स्थान थे, वे मानो सूर्यके इसलिये दर्शन नहीं कर सकते थे कि श्रापित मानवोंके निवास स्थान बने थे। उन मजदूरोंके बच्चे और स्त्रियां कितने दीन और याचक दिखायी देते, यह भी मानो उनके दुसह जीवनकी एक रोसी कहानी थी कि जिसे वे बिना बोले भी बता सकनेमें समर्थ दीखते थे। और वर्गभेदकी उन पथरीली चटानोंके नीचे वह मानव दब रहा था, कुचला जा रहा था, जगजीवन सेठ भले ही, उन्हें देख न पाते हों, परन्तु वर्षमें अथवा छठे मासमें किस कारखानेसे उन्हें कितना लाभ हुआ, उसे दृष्टिमें रखकर वह सगर्व होकर कहते, इस वर्ष मजदूरोंपर इतना अधिक व्यय हुआ.....पिछले वर्षसे इतना। यही कारण था कि वे समय-समय पर मजदूरोंके उस समाजको, उस दीन और हीन बने हुए मानवके अंगको चिल्लाकर [illegible] को गुंजा देते और कहते–'तुम मेरे हो.... मैं तुम्हारा!' जगजीवन सेठ उन्हें बताते– तुम ऊपर उठो..... तुम समर्थ और शिक्षित बनो..... तुम प्रकाशके दर्शन करो.... इस जगजीवनका तुम सर्वस्व पाकर सुखी बनो, यही मेरा लक्ष्य है, –यही है मानव का एक और आगामी यह सिद्धांत, जिस पर यह जीवित रहा है..... देश जीवित रहा है–यह पाठन संस्कृति!

लोग सुनते और मानो खोया-खोया-सा कोई धुंधले आवरणमें छिपा हुआ हुआ विश्वास पा जाते और उसीको घूर-घूर कर देखते रहनेकी चेष्टा करते। हाय! वे कितने कायर थे! कितने हीन!

जगजीवन सेठके कारखानोंमें कोयले की कमी पड़ी। तब मुख्य मैनेजरने बताया बताया कि कोयला मिल सकता है।

सेठजीने पूछा– कैसे?

अफसरोंको कुछ देकर।

कुछ देकर?

हां–

सुनकर, जगजीवनजी चुप रह गये। फिर मुस्करा कर बोले–तो दो। यों अफसरोंकी जेबोंमें रुपया डालकर कोयला आ गया। परेशानी यह थी कि वे अफसर रेलके डिब्बे न मिलनेकी वजहसे जनता को कोयला नहीं दे सकते थे। और जनता परेशान थी। परन्तु जब उसने देखा कि कि डिब्बे तो हैं, जगजीवन सेठको कोयला मिला है, तो हमें भी मिलेगा। परन्तु जब यह आशा दुराशामें परिणत हुई तो लगा कि जैसे धोखा है....जनताके साथ विश्वासघात! .....मांधू माली सेठजीके बंगलेका बागवान था–पुकारा उसने रानी बंगलेके अन्दर बर्तन मांजने वाली कहारिन हिरियाको संबोधित करके कहा– 'अनाज नहीं मिलता..... ईंधन नहीं।' वह बोला, सेठ पैसे भी नहीं बढ़ाता। गुजर नहीं होती।'

हिरिया भी पुरानी नौकरानी थी यौवनकी भरी दोपहरीमें उस बंगलेमें प्रविष्ट हुई और वृद्धा बन गयी। वह दो रुपये माहवार पर नौकर हुई और दस रुपये मासिकसे अधिक नहीं पा सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसे इस बातका गर्व था कि जगजीवन सेठको उसने अपने हाथोंसे पाला और बड़ा किया। किसी दिन वह उन्हें बेटा कहनेका साहस करती थी। पर अब वह भी सेठजी कहती है। उनसे डरती है। नौकरी छुट जानेका भय भी अपनी छाती के नीचें दबायें रहती है। मोधू उसका पुराना साथी है। राग और वैराग्य उन दोनोंकेजीवनमें मिला है– दुःख और सुख की सीमाके साथ। इसलिये उन दोनोंमें अपनत्व है,–आत्मीयता ! बस सुनकर, वह एकाएक नहीं बोल सकी। वह ऊपर आसमानकी ओर देखने लगी।

मोधूने कहा–सेठके घरमें अन्नका धन भण्डार है....कल ही कोयलोंका ठेला आया है।'

इतना सुनकर, सकिया 'जैसे ईर्षित स्वरमें कहा–तो तुम्हें क्या ! तुम्हारा क्या !

हां मेरा क्या !

सकिया बोली–कोयलाका एक टुकड़ा भी तुम्हें नहीं मिलेगा..... अन्नका एक दाना नहीं !'

और कल ही सरकारको एक लाख रुपया दिया है, सेठने ! सकिया जैसे दर्दके साथ मुसकरायी–यह भी गरीबोंका पेट काटकर दिया है, रे मोधू।'

मोधूने कहा–हां, यह तो है ही।

पहले अंग्रेज आते थे, अब गांधी टोपी वाले आते हैं सेठजीके पास। सबको मूर्ख बनाते हैं।

जल्दीसे, जैसे आत्म पीड़ित भावमें मोधू बोला–पर हम तो मरे जाते हैं.... जिन्दगीकी इस चक्कीमें पिसे जाते हैं ही, सकिया !'

सकियाने अपनी दृष्टि पृथ्वी पर गिरा कर कहा–हम ऐसे ही मरेंगे.....रोसे ही पिसेंगे, मोधूराम !

मोधूने सांस भरी और बोला–ईश्वर नहीं देखता। वह हमारी नहीं सुनता।

सुनकर सकियाने भी सांस भरी– वह न सुनेगा। वह हमारी अन्धेरी और संकरी जिन्गगीके पास नहीं आयेगा। वह भी इन सेठोंके पास जायेगा। वह चांदी सोनेके बर्तनोंमें भोजन पायेगा, मोधूराम !

मोधू चिढ़ गया और बोला–ईश्वर नहीं है,–नहीं।

सुनकर जाने कैसी भावनाके साथ सकियाने मुसकरा दिया। उसने अपना बिन दांतोंका मुंह खोल दिया और एक वेदनामयी इच्छाके साथ उस मुंहको फिर मोधूकी ओर उठा दिया।

लेकिन जब दूसरे दिन चोरीसे कुछ कोयले सकियाने मोधूको लाकर दिये, तो बोली–मुश्किलसे लायी हूं इतने !

मोधूने कहा'आज बना लूंगा रोटी !

परन्तु विपत्तिकी बात तो यह हुई कि जब मोधू उन कोयलोंको ले जाने लगा तो दरवानने देख लिया। पकड़ लिया। सेठको पता दिया। दण्ड रूपमें मोधूकी एक मासकी तनख्वाह जब्त कर ली गयी और नौकरीसे हटा दिया गया। सेठने कहा–नौकर चोर होते हैं। लेकिन अवसर की बात थी कि उसी दिन सेठने उस गल्ले को चोरीसे बिकवानेका आदेश दिया कि जो सरकारकी दृष्टिसे छिपा कर उन्होंने जमा कर रखा था। वह गल्ला पकड़ लिया गया। जनतामें चर्चा हुई, परन्तु बात एक बार चली, फिर दब गयी। सुना कि सेठने कुछ रुपया अफसरों की जेबोंमें डाल दिया और मामला ठंडा हो गया। उसी प्रसंग पर सकियाने मोधूसे कहा–'देखा !

मोधूने कहा–बड़ोंकी बात है।

सकिया बोली–'चोर कहींके !'

और सेठजीको परेशानी है कि नगर व्यभिचार है। समाज गन्दा है..... नैतिक चरित्रसे हीन ! परन्तु उनका तो बहुधंधी जीवन है, एक बात करते हैं, दूसरी भूल जाते हैं। सम्भवतः यही कारण था कि उनके बंगलेमें जो भोजन बनाने वाली महाराजिन आती थी, वह विधवा पार्वती थी, अभी युवा और सुन्दर एक दिन जब वह उनके कमरेमें आयी, तो बलात जगजीवन सेठने उसकी बांह पकड़ ली। अवसरकी बात थी कि कमरेके बाहर कुछ खटखट हुई और पार्वती अपनी बांह छुड़ा कर इस तेजीसे उस कमरेसे बाहर हुई कि जैसे आंधी।

दूसरे दिन ज्ञात हुआ कि पार्वती नौकरी छोड़ गयी। वह अब नहीं आयेगी, रोसा भी सेठानीसे कह गयी। लेकिन वह अपने व्यवसायमें चतुर और बहुधंधी जगजीवन सेठने इतना सुना, तो मुसकरा दिया। वरवश, उनके मनमें जो कुछ आया, उसे भी ढाल दिया। परन्तु जब उन्हींके घरमें उन्हींकी आत्मज पुत्री कमलाने माता पिता की पथरीली रूढ़ियोंको तोड़कर अपने वैधव्य कालमें ही एक युवकसे सम्बन्ध कर लिया, तो उस अवस्थामें जगजीवन सेठको जितना क्लेश हुआ, वह अवर्णनीय था। उसी शोकमें वह बीमार हुए और उनका प्राणान्त हो गया।

———

ओटो पुष्प बहार समस्त सुगन्धियों का सम्राट है। इसको लगाते ही आपका हृदय मस्ती की लहरों में खो जायगा। जिधर से आप निकलेंगे, इसकी सुगंध पाकर सबों की नजरें आप पर केन्द्रित हो जायेंगी। रूमाल में लगाने से इसकी खुशबू महीनों नहीं जाती। यह सुगंध लगा कर आप जिससे मिलेंगे वह आप से बहुत प्रभावित हो जायगा।

मूल्य प्रति शीशी ३।) एक दर्जन का ३०) डाक खर्च १।)
एक साथ एक दर्जन शीशी मंगाने पर एक जोड़ी सुन्दर साड़ी या सेट कम्पनी, केशव की एक चमत्कार अंगूठी एवं कैसी कमाल, एक खूबसूरत शीशा बिल्कुल मुफ्त दिया जायगा।
(यह घोषणा केवल उधार है नगद पर ३) का छूट।)
पता–इंडिया ट्रेडिंग कम्पनी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अमेरिकाके निर्वाचन प्रणाली

ले०--श्री कुमार योगी एम०ए०

अमेरिकाके चुनाव ज्यों-ज्यों निकट आते जा रहे हैं, सारे संसारकी दृष्टि वहां की प्रमुख राजनीतिक पार्टियोंकी व्यूह-रचनापर लगी हुई है। क्योंकि आजके अन्तर्राष्ट्रीय राजमंचका नायक अमेरिका ही है एवं समस्त युद्ध-ध्वस्त संसारके सामने ऋद्धि-सिद्धि-सम्पन्न अमेरिका ही एक मात्र आशा और सांत्वनाका स्रोत है। अतः यह चुनाव अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिकी युगांतरकालीन घटना होगी।

अमेरिकाने राजनीतिक आयुष्यका शैशवकाल समाप्तकर लिया है। द्वितीय महायुद्धमें उसने जिस दायित्व-परायणताका परिचय दिया एवं विश्व शांतिके निर्माण एवं स्थायित्वके लिये जिस बौद्धिक उन्मेषकी अभिव्यक्ति की उससे स्पष्ट हो गया कि राजनीतिका यह होनहार शिशु प्रौढ़ हो गया है और अब उसे ब्रिटेन के पदानुसरणकी जरूरत महसूस नहीं होती है। स्वर्गीय प्रेसीडेंट रूजवेल्ट अमेरिकाके उस नवोदित प्रौढ़त्वकी भावनाओं का प्रतिनिधि था। रूज्वेल्टके अकस्मात् अवसानने अमेरिकाको प्रतिनिधि विहीन कर दिया है। अमेरिकामें इस समय राजनीतिक अराजकताके बवंडर रूज्वेल्टके लगाये उद्यानको नष्ट भ्रष्ट कर रहे हैं। प्रगति और प्रतिक्रियामें जीवन-मरणका संघर्ष चल रहा है। प्रबल व्यक्तित्वके अभावमें गैर जिम्मेदारी और अनर्गलता के तत्व सारे सामाजिक भविष्यको अंधकाराच्छन्न कर रहे हैं। संक्षेपमें अमेरिका आज ऐसे चौराहेपर खड़ा है जहां उसकी प्रगतिके सामने अनेक पथ हैं और वह निर्णय नहीं कर सक रहा है कि कौनसे पथका वह अवलम्बन करे। अमेरिकाका यह निर्णय उसके ही लिये नहीं, वरन् सारे संसारके भविष्यके लिये भी महत्वपूर्ण होगा। क्योंकि अमेरिकाने अपनी आर्थिक शक्तिके कारण विश्व राजनीतिमें ऐसा स्थान प्राप्तकर लिया है कि शांतिकी बुनियादोंके अचल या अस्थिर होनेका दारोमदार उसकी भावी प्रगतिपर ही निर्भर हो गया है।

अमेरिकाके विधानमें प्रेसीडेंटका निर्वाचन बड़ी जटिल प्रणालीसे होता है। इसकी अपेक्षा रूसके सोवियतोंका प्रेसीडेंट अधिक आसानीसे निर्वाचित हो जाता है। प्रेसीडेंटके निर्वाचनके पूर्व अमेरिकाकी सारी प्रमुख राजनीतिक पार्टियां अपना अलग-अलग कन्वेन्शन बुलाती हैं जिसमें अपने दलके सदस्यका नामकरण किया जाता है। इन नेताओंका निर्वाचन बड़ी विचित्र प्रणालीसे होता है। प्रेसीडेंटके लिये दलके नेताका निर्वाचन प्रायः अनुभवी राजनीतिज्ञोंकी एक मंडली ही करती है जिसके लिये कई दिनों तक गुप्त मंत्रणायें होती रहती हैं। जिन कमरोंमें इन अनुभवी राजनीतिज्ञोंकी परिषद बैठती है उन्हें अमेरिकाकी राजनीतिक परम्परा में "धूम्रावृत्त प्रकोष्ठ" कहते हैं। इन प्रकोष्ठोंसे कभी-कभी ऐसे सदस्य नामजद होते हैं जिन्हें प्रायः कोई नहीं जानता है। कुछ वर्ष पूर्व हूवरका निर्वाचन ऐसे ही वैचित्र्यके साथ हुआ था।

फेडरल विधानके अनुसार प्रत्येक राज्यकी धारासभा नामजद करने वाले कन्वेन्शनके लिये सदस्य चुनती है। अधिकांश राज्य प्रारम्भिक चुनावोंमें ही कन्वेन्शनमें जाने वाले प्रतिनिधियोंको चुन लेते हैं। प्रत्येक राज्यके प्रतिनिधियोंकी संख्या उस राज्य द्वारा कांग्रेसमें भेजी गयी सिनेटरों और प्रतिनिधियोंकी संख्याके बराबर होती है। उदाहरणार्थ, न्यूयार्क जैसा सघनं-संख्यक राज्य रिपब्लिकन एवं डेमोक्रेटिक कन्वेन्शनोंमें ४७ प्रतिनिधि तक भेज सकता है। अलबामा जैसे छोटेसे राज्यको प्रत्येक कन्वेन्शनमें केवल सात प्रतिनिधि भेजनेका ही अधिकार है।

कन्वेन्शनमें जाने वाले इन प्रतिनिधियोंको अपने दायित्वके प्रति सचेतकर दिया जाता है। उन्हें काफी अच्छी तरह समझा दिया जाता है कि प्रेसीडेंटके निर्वाचनमें उन्हें किसको समर्थन देना चाहिये। प्रायः उनको बताया जाता है जाता है कि प्रथम बैलेटमें उन्हें शिष्टताके नाते अपने ही राज्यके किसी व्यक्तिको वोट देना चाहिये। इसके पश्चात् राजनीतिक वायुमण्डलकी गतिदिशाके अनुसार वे अपना निर्णय कर लेते हैं। जैसा कि संभव है कि कनसासका प्रतिनिधिमण्डल इस बार अपने पहिले बैलेटमें कनसास निवासी जनरल आइसन हावरको वोट देगा। बादमें वह डेवी या ट्रूमैनको वोट देगा।

अधिकांश कन्वेन्शनोंमें पहिले बेलट में ही ज्ञात हो जाता है कि बहुमत किस व्यक्तिके साथ है। तदनुसार विभिन्न राज्य अपना-अपना समर्थन उस व्यक्तिको देना प्रारम्भ करते हैं। इस प्रकार बिना किसी गहरे बैर-विरोध और कटुताके सभापतिके लिये व्यक्ति नामजद हो जाता है कभी-कभी ऐसा होता है कि प्रारम्भिक बैलटमें विधानानुसार दो तिहाई वोट किसी भी व्यक्तिको नहीं मिलते हैं। अतः किसीको भी नियमानुसार नामजद नहीं किया जा सकता है। ऐसी परिस्थिति गतिरोधकी सूचक होती है। जब निर्वाचनके क्षेत्रमें ऐसी समस्या खड़ी हो जाती है तो वयोवृद्ध एवं अनुभवी राजनीतिक 'अपने धूम्रावृत प्रकोष्ठमें एकत्र होते हैं और चुने जानेवाले व्यक्तिके लिये विचार विनिमय करते हैं। कई रोज तक कभी-कभी ऐसी परिषदें बैठती हैं एवं पारिस्परिक समझौताकी चेष्टा करती हैं। न्यस्त-स्वार्थों में भावी कार्यक्रमको निर्धारित करनेके निमित्त कई प्रकारके सौदे-समझौते होते हैं। कभी-कभी तो इन प्रकोष्ठोंकी परिषदों, के निर्णय बड़े अप्रमाणित और आश्चर्य जनक होते हैं। वारेन हार्जिंग ऐसे ही 'प्रकोष्ठ की परिषदमें रिपब्लिक दलकी ओरसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेसीडेंट-सम्बन्धी चुनाव लड़नेके लिये उम्मीदवार खड़ा किया गया था। राजनीतिक क्षेत्रमें उसका कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं था। फिर भी रिपब्लिकन दलने उसे अपना बहुमत देकर प्रेसीडेंट बनाया था।

राजनीतिक दलोंके ये कन्वेन्शन अपनी पार्टीके 'प्लेट फार्म' भी बनाते हैं और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय योजनाओं, चुंगी, महसूल, उद्योग व्यवसाय एवं वैदेशिक नीति सम्बन्धी वक्तव्य भी प्रकाशित करते हैं। प्रेसीडेंट निर्वाचित होनेके लिये स्वीकृत व्यक्ति अपनी सुविधानुसार इन प्लेट-फार्मों और प्रचार-प्रकाशनोंका पूरा लाभ उठा सकता है। पार्टीकी ओरसे इन नामजद उम्मीदवारोंको पूरी-पूरी सहायता मिलती है। इस प्रकार राजनीतिक पार्टियों द्वारा जब प्रेसीडेंटके लिये नामजद व्यक्तियों का निर्णय हो जाता है तो ये उम्मीदवार देशका दौरा करते हैं और अपनी भावी नीतिका स्पष्टीकरण करके जनतासे सहयोग मांगते हैं।

नवम्बरमें ये चुनाव होते हैं किन्तु जनताको मतदानका अधिकार इतना ही रहता है कि मतदाता रिपब्लिकन या डेमाक्रेटिक पार्टीकी उस सूचीके पक्षमें वोट देता है जिसमें ४७ 'निर्वाचक' होते हैं। वास्तवमें ये निर्वाचक ही प्रेसीडेंटका चुनाव करते हैं। प्रेसीडेंट रूज्वेल्टके आखिरी बार प्रेसीडेंट निर्वाचित होनेके समयमें ऐसी ही प्रक्रियाको अपनाया गया था। रूज्वेल्ट डेमाक्रेटिक पार्टीके उम्मीदवार थे और थामस डेवी रिपब्लिकन दलकी ओरसे चुनाव लड़नेके लिये खड़े किये गये थे। डेमाक्रेटोंकी सूचीमें ४७ व्यक्ति थे जो रूज्वेल्टका समर्थनकर रहे थे। इसी प्रकार रिपब्लिकन पार्टीकी सूचीमें भी ४७ सदस्य थे जो डेवीको प्रेसीडेंट बनाना चाहते थे। जनताका बहुमत डेमाक्रेटिक पार्टीकी सूचीको मिला। अतः ४७ डेमाक्रेटों का एक निर्वाचन कालेज बैठा। डेमाक्रेट कालेजमें जाकर विधान एवं परम्पराके अनुसार निष्पक्ष हो गये। दिसम्बरमें इस कालेजकी बैठक हुई और जैसी कि आशा थी, रूज्वेल्टको ही प्रेसीडेंट चुना गया।

वस्तुतः 'निर्वाचन-कालेज' के निर्माण के समय ही स्पष्ट हो जाता है कि कौन व्यक्ति प्रेसीडेंट चुना जायगा। इसके पश्चातकी जितनी प्रथाएं होती हैं उतनी असलमें आवश्यक नहीं हैं। किन्तु विधान में कांग्रेसको परिचित करानेके लिये ऐसी परम्परा रखी गयी है। विभिन्न राज्योंसे जो प्रतिनिधिमण्डल आते हैं वे भी इस प्रथाका ही निर्वाह करते हैं।

अमेरिकाकी जनता आजके विश्वकी सबसे अधिक जागृत जनता है। मतदाताओं की संख्या वहां अपरिमित है। फिर भी बिना किसी वैमनस्य एवं कटुताके वहां चुनाव हो जाते हैं। सबसे अभिनन्दनीय बात तो यह है कि वहां चुनावोंके समय प्रचारका जो कार्यक्रम रहता है उससे जनताको अच्छी राजनीतिक शिक्षा मिल जाती है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिके सारे उद्देश्योंसे वह परिचित हो जाती है और अपनी गति–दिशा निश्चित कर लेती है।

अमेरिकाके विधानमें परिवर्तनोंके लिये गुंजायश नहीं के बराबर रहती है। युद्ध हो या क्रांति चुनाव होने ही चाहिये। १९४४ में अमेरिका अपनी पूरी शक्तिके साथ युद्धमें संलग्न था, किन्तु अमेरिकाने चुनावोंको टालना उचित नहीं समझा। अंग्रेजी प्रेसने अमेरिकाके इन असामयिक चुनावोंकी काफी निन्दा की थी, किन्तु अमेरिका अपनी परम्परा पर अटल रहा। इस समय रिपब्लिकन पार्टीका प्राबल्य था और अंग्रेजोंको यह विश्वास हो गया था कि डेमोक्रेट पार्टीका प्रेसीडेंट फ्रेंकलिन रूज्वेल्ट पराजित हो जायेगा। इस पराजयके परिणाम बड़े क्रांतिकारी होते– सारी युद्ध नीति परिवर्तित हो सकती थी, किन्तु अमेरिकाकी जनता अपने जनतांत्रिक अधिकारों पर अड़ी रही। ब्रिटेन की भांति वहां न तो संयुक्त सरकार बनी और न चुनावोंको स्थायीरूपसे स्थगित ही किया गया।

अमेरिका परम्परामें विश्वास नहीं करता। ब्रिटेन परम्पराके साथ समझौता करते हुए चलता है। अतः चुनावोंको स्थगित करनेके लिये ब्रिटेनको अपना विधान नहीं बदलना पड़ता है। अमेरिका की परिस्थिति इसके विपरीत है। उसे अपने विधानमें परिवर्तन करना पड़ता जो चुनावोंसे भी अधिक तीव्र वातावरण और व्यतिक्रम पैदा करता।

इसके अतिरिक्त अमेरिकामें चुनाव ही जनताके संतोष या असंतोषको व्यक्त करने वाले साधन होते हैं। शासन-प्रबन्ध के विरोधमें और किसी भी प्रणालीसे सशक्त अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती। ब्रिटेनमें किसी भी समय सरकार बदल सकती है। जन असंतोष तत्काल अपना असर दिखला देता है। अमेरिकाका प्रबुद्ध जन-समाज जनतन्त्रके प्रति अत्यन्त समवेदनाशील है। अधिनायक तन्त्रको वह एक क्षणके लिये भी सहन नहीं कर सकता। ऐसी परिस्थितिमें वहां चुनावोंको स्थगित नहीं किया जा सकता है। किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि वहां चुनाव-कालमें सरकारी व्यवस्थामें किसी प्रकार का व्यतिक्रम पड़े और सारी मशीनरीमें शैथिल्य आ जाये। सारा कार्य यंत्रवत् गतिसे अबाध चला करता है। अपना दायित्व समझने वाले इस समाजसे हमें काफी सीखना है।

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मृत्युकर और उसकी आवश्यकता

लेखक:--श्रीकृष्णलाल हंस बी० ए०

गत २२ मार्चको भारतीय पार्लमेण्ट में केन्द्रीय सरकारके अर्थ मन्त्रीने एक बिल पेश किया है। जिसके कानूनके रूपमें परिणत होनेपर हमारे देशमें मृत्यु करका सूत्रपात होगा। यह कर हमारे देशके लिये बिल्कुल नया है, पर यह सर्वथा नया कर कर नहीं है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, इंग-लैण्ड, स्विटजरलैण्ड आदि देशोंमें यह कर बहुत पहलेसे प्रचलित है। कहीं यह एक प्रकारका संपत्ति कर, कहीं जायदादा-कर, और कहीं उत्तराधिकार कर कह-लाता है। यद्यपि इन करों और मृत्यु-करमें थोड़ा अन्तर अवश्य है। जायदाद-कर इसलिये लगाया जाता है कि एक व्यक्ति की जायदाद उसकी मृत्युके पश्चात दूसरे को प्राप्त होती है। इसी प्रकार उत्तरा-धिकार कर लगानेका कारण यह है कि एक व्यक्तिकी मृत्युके पश्चात् दूसरे व्यक्ति को मृत व्यक्तिसे सम्बन्धित होनेके कारण अतिरिक्त जायदाद प्राप्त होती है और वह अपनी अर्जित सम्पत्ति और जायदादसे होने वाले लाभोंके अतिरिक्त इस अति-रिक्त जायदादसे भी लाभ उठानेका अधि-कारी बन जाता है। इस प्रकार एक व्यक्ति की मृत्युके पश्चात् उसके उत्तराधिकारी की संपत्ति और जायदाद अनायास ही बिना किसी परिश्रमके बढ़ जाती है। जिसे मृत व्यक्तिकी जायदाद प्राप्त होती है वह राष्ट्रका नागरिक है। अतः उसका कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपनेको अना-यास प्राप्त जायदादका एक भाग राज्यको देकर राष्ट्र-हितके कार्योंमें योगदान करे। इसी दृष्टिसे हम मृत्यु-करको एक प्रकारका जायदाद-प्राप्त-कर ही मानते हैं।

जब तक हमारा देश परतन्त्र था, तब तक ऐसे किसी करके देनेका मतलब विदेशी शासनकी शक्ति बढ़ाना ही था, क्योंकि उस स्थितिमें 'देश भक्ति' और राजभक्ति दो विपरीत वस्तुएं थीं, किन्तु इस देशसे विदेशी सत्ताका अन्त होनेपर 'देश भक्ति' और 'राजभक्ति' परस्पर-विरोधी नहीं, वरन् परस्पर सहायक भाव बन गये हैं। आज जो जितना अधिक देश-भक्त है, वह उतना ही अधिक राजभक्त भी है। आजके नागरिकका एकमात्र कर्त्त-व्य हो जाता है कि राज्यको अधिकसे अधिक सहायता प्रदान करे। इस दृष्टिसे भारतीय पार्लमेण्टमें उपस्थित मृत्यु-कर सर्वथा उचित ही है।

दूसरे इस देशमें आर्थिक विषमता बुरी तरह फैली है। कुछ व्यक्ति ऐसे हैं, जिनके पास अपार धन-राशि है और कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं, जिनको सूखा भोजन भी नसीब नहीं है। और वे रो-रो कर अपनी जिंदगी के दिन काट रहे हैं। यह आर्थिक विषमता प्रजातंत्रीय शासनके मार्गका रोड़ा है। मृत्यु-करके द्वारा अमीरोंकी संपत्ति निर्धनोंको तो नहीं मिल जाती, पर सरकारी कोषमें जाकर क्रमशः कम अवश्य होती जायगी। अतः देशकी विषमताको कम करनेकी दृष्टि से भी यह कर आवश्यक ही है।

राज्य करके सिद्धान्तोंकी कसौटी पर भी यह कर पूर्ण रूपेण आवश्यक प्रतीत होता है। एक तो इस करका भार उन्हीं लोगों पर पड़ता है, जिनके पास अधिक संपत्ति है। गरीब और निम्न श्रेणीके व्यक्ति योंपर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता दूसरे इस करके देनेमें करदाता को कष्ट या असुविधा नहीं होगी। मृत्यु करका कर-दाता की स्व-अर्जित संपत्तिपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता यदि उसे प्राप्त अतिरिक्त संपत्तिसे उसी समय मृत्यु कर देना पड़ता है, तो वह सरलतापूर्वक यह कर दे सकता है। इस करके प्राप्त करनेमें सरकारको भी अधिक व्यय करनेकी आवश्यकता नहीं है। हां, संपत्ति या जायदादके मूल्य निर्द्धारण का कार्य अवश्य कुछ कठिन है। यह भी हो सकता है कि जायदादका मालिक अपने उत्तराधिकारीका मृत्यु-कर कम करानेके लिये अपनी जीवितावस्थामें उसका कुछ भाग दूसरोंके नामपर विक्रीत बतला दे। सरकारके कर विभागको पर्याप्त सत-र्कता से अवश्य ही काम लेना होगा।

सर्व प्रथम सन् १८५७ में तत्कालीन गदरसे होनेवाली हानिकी पूर्तिके लिये यह कर लगाये जानेको था, किन्तु अव्या-वहारिक कह कर वह स्थगितकर दिया गया था। इसके पश्चात सन् १९२४-२८ में ही राज्य-कर-जांच समितिने इस देशमें मृत्यु-कर आरंभ करनेकी सिफारिश की थी। सन् १९२८ में पुनः एक उपसमिति ने राज्य-कर जांच समितिकी सिफारिश का समर्थन किया और सन् १९३५ को भारतीय विधानमें भी यह कर संकेत रूपमें रखा गया, किन्तु अनेक कारणों से आजतक इसे क्रियात्मक रूप न प्राप्त हो सका। इसका मुख्य कारण यह था कि फेड-रल कोर्टने यह मत दे दिया था कि वर्तमान विधानके अनुसार भारतीय अथवा प्रांतीय धारा सभाको इस करके लगाने का कोई अधिकार नहीं है। अतः विधानमें आवश्यक संशोधन किया गया और इस संशोधनके अनुसार भारतीय विधान सभाको इस प्रकारका कर लगानेका अधिकार प्राप्त हो गया। इसी अधिकारके अनुसार अब वह इस देशमें मृत्यु-कर लगाने जा रही है।

भरतीय पार्लमेंट कृषि संपत्तिको छोड़कर शेष संपत्तिपर मृत्यु-कर लगा-येगी। अतः प्रांतीय सरकारोंको भी इसी

(शेष १८वें पृष्टपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मैं लाहौरमें रहता था

ले०—श्री सन्तराम बी० ए०

मैं लाहौरमें रहता था। २५ अगस्त का दिन ज्यों ज्यों निकट आ रहा था, मेरा हृदय त्यों त्यों बुझता जा रहा था। उल्लासमें विषाद ही मेरे मनपर अधिकार जमाता जा रहा था। १३ अगस्तको पंजाब के २९ जिलोंमें से १७ जिलोंके हिन्दू-सिखों का भाग्य नक्षत्र डूब चुका था। वे अंगरेजों की दासतासे भी कहीं अधिक भयानक पाकिस्तानकी दासतामें जा गिरे थे। पश्चिमी पंजाबके अधिकांश जिले तो अपने भाग्यका निर्णय सुन चुके थे, पर लाहौर और गुरुदासपुर अभी छुरीके नीचे गला रख पशुकी भांति तड़प रहे थे। पाकिस्तान अभी आया नहीं था, पर लाहौर हिन्दुओं और सिखोंसे खाली हो गया था। भारत माताका अंग-छेदन कराकर, अपने करोड़ों भाइयोंको पाकिस्तानका शिकार बना कर, विभाजनके बाद भी कथित हिन्दु-स्थानके लोग सुख-शांतिसे रह सकेंगे—ऐसी आशा होती, तो भी मैं समझता, चलो २५ करोड़ लोगोंके अकल्याणके लिये ५ करोड़ का बलिदान हो गया। सौदा महंगा नहीं। पर बात ऐसी नहीं। जिन कारणोंसे देशका अंग अंग काटकर जुदा करना पड़ा है वे हिन्दुस्थानमें भी ज्यों के त्यों वर्तमान हैं। पाकिस्तान इसलिये बना है कि मुसलमान हिन्दुओंके साथ इकट्ठे मिलकर नहीं रह सकते क्योंकि हिन्दुओंने, जात-पांतके कारण, उसका सामाजिक बहिष्कारकर रक्खा है, और उनकी संख्या बढ़ते ढ़बते दस करोड़ हो गयी है। अब देखनेकी बात यह है कि इस विभाजनसे भी पांच करोड़ से अधिक मुसलमान हिन्दुस्थानमें और बहुत से हिन्दू पाकिस्तानमें रह गये हैं। हिन्दू पाकिस्तानमें भी घटेंगे और हिन्दु-स्थानमें भी। जातिभेदके रोगसे ग्रसित होनेके कारण वे तो न किसी अहिन्दूको रोटी बेटी व्यवहार द्वारा अपनेमें पचा सकते हैं और अछूतों नऔर स्पृश्य शूद्रोंको सामाजिक समताका अधिकार देकर मुसलमान तथा ईसाई होनसे रोक सकते हैं। फलतः मुसल-मान पाकिस्तानमें तो बढ़ेंगे ही, वे हिन्दु-स्थानमें भी बढ़ेंगे। परिणाम यह होगा कि बीस वर्ष बाद, पंजाब और बंगालकी भांति, संयुक्त प्रांत, मध्यप्रदेश, और अन्य हिन्दू प्रधान प्रान्तोंको भी हिन्दू और मुस्लिम प्रदेशोंमें बांटने की नौबत आ जायगी और यह विभाजन क्रिया तबतक बराबांर जारी रहेगी, जबतक कि हिन्दू जाति समाप्त नहीं हो जाती। इतना ही नहीं। एक और बात भी है। दूसरे प्रान्तोंका तो मुझे ज्ञान नहीं पर पूर्वी पंजाबके संबंधमें मैं कह सकता हूं कि वहां जो कांग्रेसी सरकार बनी है, वह किसी रूपमें भी अंगरेजी राज्यसे अच्छी नहीं है। जिस प्रकार आजकल सिक्खों में हिन्दुओंकी जाति-पांति और मुसलमानों की धर्मान्धता आदि दुर्गुण तो सब आ गये हैं, पर उनका सद्‌गुण एक भी नहीं आया, इसलिये पश्चिमी पंजाबमें उनकी बहुत दुर्दशा हुई है, उसी तरह इस कांग्रेसी राज्यमें अंग्रेजी राज्यके दुर्गुण तो सब आ गये हैं, पर सद्‌गुण एक भी नहीं। पंजाबी में एक कहावत भी है कि पड़ोसिनका रूप तो नहीं आता पर दुर्बुद्धि अवश्य आ जाती है। लोग समझते थे कि कांग्रसी राज्यमें हिन्दू पंजाब में जन्मना सैनिक और असैनिकका, जन्मना कृषक और अकृषक का अन्यायपूर्ण भेद मिटा दिया जायगा। पर हुआ क्या है? पूर्वी पंजाबके मंत्रिमंडलमें एक मंत्री कथित किसान जातिका लेना अववश्यक समझा गया है। चाहे उसके परदादाने भी कभी हल न चलाया हो; एक सिखका लेना, एक हरियाना प्रांतके जाटका, एक अकिसान जातिके व्यक्ति और एक हरिजनका। इस प्रकार पूर्वी पंजाबके सात मंत्रियोंमें से पांच जाट हैं। मंत्रियोंका यह चुनाव योग्यता और अयो-ग्यताका विचार रखकर नहीं ,वरन् इस बातपर किया गया है कि उस प्रदेशमें जाटोंकी प्रधानता है, बनियोंका जोर है, बिना भी छुटकारा नहीं। इससे, पहले दर्जेके चोर बाजार करनेवाले लोग समय समय केवलसे आगे आ रहे हैं। जो जाट आज तक दूसरी जातियोंके लोगोंको किसान बनने और सेनामें भरती होनेके अधिकारों से वंचित करते आय हैं वही राज्यके उच्च पदोंपर अधिकार जमानमें सफलकाम हो गये हैं। जिस अमेरिकाकी राज्य व्यवस्था की नकली हमारी विधान परिषद कर रही हैं वहां मोचीका लड़का भी एक दिन राष्ट्र पति बन सकता है। पर क्या हमारे यहां उपर्युक्त दशामें कोई नाई, धोवी, कुम्हार, तेली या अहीरका लड़का भी कभी राष्ट्र पति तो दूर साधारण मंत्री बननकी भी आशा कर सकता है? कदापि नहीं। कारण यह कि यहां योग्यताका नहीं जन्म-जातिका खयाल किया जाता है, और उस स्पृश्य शूद्रकी जातिके लोगोंकी संख्या बहुत कम है। पंजाबमें तो यही देखनमें आया है कि जब कोई बनिया हाईकोर्टका चीफ जज बन जाता है तो चपरासीसे लेकर सेशन जज तक सब बनिया ही बनिया भरती करनेकी चेष्टा करता है और जब कोई जाट मंत्री बन जाता है तो वह सब पदोंपर जाट ही जाट देखना चहता है। यह दुष्ट चक्र समाप्त होनमें ही नहीं आता।

बात असलमें यह है कि राजपूतान की मरुस्थलीके लोगोंको शीत प्रधान रूसकी गरम पोस्तीन पहनाई जा रही हैं। जन्मसे ऊंच-नीच ही हिन्दू समाजका मूलाधार है। बड़ासे बड़ा कांग्रेसी हिन्दूसे लेकर छोटा से छोट घ सियारे तक सब हिन्दू जात-पांत में फंसे हैं। और यह जात-पांत और प्रजा-तंत्र दो परस्पर-विरोधी चीजें हैं। दोनों इक-ट्ठी नहीं रह सकतीं। जातिभेदको बनाये रखकर जो भी स्वराज्य होगा, वह प्रजाका राज्य नहीं, थोड़से ऊंचवर्णके लोगोंका शासन होगा। प्रजातंत्र शासन प्रजातंत्रीय समाजके ही अनुकूल बैठ सकता है। जिस हिन्दूका सारा जीवन ही—जन्मसे मरण पर्यन्त—समता, बंधुता और स्वतंत्रताका प्रतिवाद है, उसके लिये प्रजातंत्री शासन वैसा ही अननुकूल है जैसे गरम देशके अधि-वासीके लिये रूसकी गरम पोस्तीन। हिन्दू

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समाजके नेताओंने, वे चाहे कांग्रेसी हों और चाहे हिन्दूसभाई—जातिभेदको मिटाकर समाजको प्रजातंत्र शासनके बनानेका कभी यत्न नहीं किया। अब प्रजातंत्री विधान बनाकर प्रजातंत्रका ढोंग रचा जा रहा है। फल इष्ट—सिद्धिके बजाय अनिष्ट ही है। हमारे सोशलिस्ट और कम्यूनिस्ट भी अंधाधुंध रूसका अनुकरणकर रहे हैं। वे अपने देशके असली रोगको देखते ही नहीं ;। दुर्भाग्यसे वे भी प्रायः सबके सब उच्चवर्णके ही हैं। उनको अमीरी गरीबी या विदेशीके ही दुःख अखरता है। वे उस जातिभेदके प्राणघातक प्रभावको देखना नहीं चाहते जिसने शूद्रकी आत्मा को कुचल डाला है, उसके साहसको आहत कर दिया है और उससे वह मानवी-प्रतिष्ठा छीन ली है जिसके बिना यह जीवन दूभर जान पड़न लगता है।

हिन्दुओंने आजकल अपने सामाजिक सुधारकी जो उपेक्षा की है उसीका फल यह पाकिस्तान है। यह प्रकृतिका दिया हुआ हिन्दुओंको दंड है। अभी पाकिस्तान बन नहीं पाया था, कि पंजाबके पश्चिमी जिलोंसे सिखों और हिन्दुओंके मुसलमान बननके समाचार आने आरम्भ हो गय थे। मेरे एक मित्रका मामा हालमें रावलपिण्डीमें मुसलमान हो गया है। जब उसे पुनः हिन्दू धर्ममें लौट आनके लिये कहा गया तो वह बोला—"क्या मैं पुनः हिन्दू बन कर मार खाऊं ? मुझे यहां मुसलमानोंमें रहना है।" हिन्दुओंने यदि जातिभेदको मिटानपर बल दिया होता तो आज न मुसलमानोंकी संख्या इतनी बढ़ती और न पाकिस्तानकी मांग ही होती। कांग्रेसी सिक्खों और जाटोंके सिक्खस्थान और जाटस्थान बनानेका यत्न करते देख हमें दुःख होता है और अनायास मुंहसे निकल पड़ता है कि क्या यही प्रजातंत्री राज्यकी अवस्था है जिसका ढिंढोरा विधान-परिषद में इतन जोरसे पीटा जा रहा है। यह जाति भेदका ही दुष्परिणाम है कि लाखों वर्षोंसे भील, गोण्ड और कोल इस देशमें हिन्दुओं के साथ बस रहे है, पर हिन्दुओंने अपने में न उनको मिलाया न पढ़ाया, न जंगलीसे सभ्य बनाया और न उन्हें नागरिक अधिकार ही दिये। जातिभेदके दुष्टचक्रमें से ही हम आज देशके सब बड़े बड़े पदों पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, और बनिये ही पाते हैं, नाई, तेली, कुम्हार, तंबाली, कुरमी या कलाल जातिका व्यक्ति आटेमें नमक के बराबर भी नहीं मिलता। जातिभेदके कारण ही भंगी जाति सामूहिक रूपसे शताब्दिओंसे दरिद्र और बनियाजाति धनाढ्य चली आ रही है। अमीर और गरीब दूसरे देशोंमें हैं। पर वे श्रेणियां हैं, भारत

## मंजिल चरणोंके पास रहे

बुझती ज्योति जगा साथी !
बुझता जीवन का दीप जले,
विह्वल नद के दो तीर मिले,
दुर्दम अभावकी ज्वाला में
मुरझाने आशा - फूल खिले,
रोती अभिलाषा मुस्काये—
तू दुखकी रात भगा, साथी !
अभिशाप, अमर वरदान बने,
उत्फुल्ल हृदय, मन-प्राण बने,
पतझड़में उजड़ा-विखरा तरु
मधु-ऋतुका चिर अभिमान बने
मंजिल, चरणोंके पास रहे—
तू नौका पार लगा, साथी
—विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त

की भाति जन्मगत जातियां नहीं। श्रेणी दलती रहती है, पर जाति नहीं। खेद इस बातका है कि कांग्रेसने देशके लोगोंको अपनी त्रुटियां दूर करके स्वराज्यका पात्र बननेके बजाय सदा अंगरेजोंको ही दोष देते रहना सिखाया है। नेता लोग यह नहीं देख सके कि अंगरेजोंके भारत छोड़ जानके बाद देशकी कैसी अवस्था होगी और उसे कैसे संभाला जा सकेगा ?

पहले युगोंका पता नहीं पर इस कलियुगमें तो संघमें ही शक्ति है। जिसके साथ संघ है, वही शक्तिशाली है। पर हिन्दुओं ने इस ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया। इनका सारा बल किसीको अछूत, किसीको शूद्र और किसीको नीच बताकर बाहर निकालनेपर ही रहा है। साम्प्रदायिक फिसादोंमें छुरे भोंकन का काम एक विशष श्रेणीके लोग ही किया करते हैं। यह श्रेणी है कुंजड़, कहाई, दबगर, बढ़ई, लुहार, नाई, मोची, आदि कारीगर और मजदूर लोग पर इन लोगोंको हिन्दुओंन पहले ही नीच बनाकर निकाल छोड़ा है। जो कारीगर, किसान या मजदूर अभी हिन्दू हैं उनकी आत्मा को वर्ण-व्यवस्थाने इतनी कुचल डाली हैं कि वे निर्जीव से हो रहे हैं। आप एक हिन्दू मोचीकी तुलना और एक मुसलमान मोचीसे करके देख लें। आपपर मेरे कथन की सत्यता प्रकट हो जायगी। कोई पढ़ा-लिखा मुसलमान वकील, डाक्टर, व्यापारी या अध्यापक कभी किसी निरपराध हिन्दू के पेटमें छुरा भोंकता नहीं देखा गया। लाहौर में क्या होता है ? जब कोई हिन्दू लड़का किसी जगह बम फेंकता था तो उससे कभी कभी एक दो मुसलमान घायल हो जाते थे। इसके बाद मुसलमानोंकी उपर्युक्त श्रणीके लोग छुरोंसे आठ दस हिन्दुओंको मार डालते थे। हिन्दुओंमें वह श्रेणी ही नहीं थी जो उनका सामना कर सके। इससे राष्ट्रीय सेवक संघकी तत्परता हिंन्दुओंके लिये लाभके स्थानमें हानिकारक ही सिद्ध होती थी। जनताका उत्साह बढ़नेके स्थानमें भंग ही होता था। मुसलमानोंके पास लाहौरमें उतन बम और दूसरी सामग्री नहीं थी। पर उनके पास जन-शक्ति या संघ-शक्ति थी। उनकी सामाजिक समता उनमें बंधुता का भाव उत्पन्न करती है। इसलिये उनका हाथ सदा ऊपर रहता है।

मुस्लिम समाजमें समता और बंधुता का एक बहुत बड़ा सदगुण है। इसीके प्रताप से इस्लाम भारत जैसी ज्ञान-भूमिमें भी फैल रहा है। पर इस एक सद्गुणके साथ मुस्लिम समाजमें दुर्गुणोंका भी कोई अन्त नहीं। यह समाज स्त्री-जातिके लिये तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



घोर नरक समान है। पाकिस्तानसे जो समाचार आ रहे हैं उनसे वहां स्त्रियोंकी दुर्दशाका कुछ कुछ पता चलता है। दिन दहाड़े मुस्लिम शरणार्थियोंकी बहू-बेटियां उड़ाई जा रही हैं; शरणार्थी-शिविर व्यभिचारके अड्डे बन रहे हैं; कोई भला मुसलमान लाहौरमें अपनी मान-मर्यादा सुरक्षित नहीं समझता। इस लैंगिक दुराचारके अतिरिक्त उस समाजमें धर्मान्धता और पक्षपात इतना गहरा घुसा है कि वहां कोई उच्च कोटिका मनुष्य उत्पन्न ही नहीं हो सकता। इसके विपरीत हिन्दुओंमें अनेक बहुमूल्य सद्‌गुण रहते भी एक जातिभेद का बहुत बड़ा दुर्गुण है। इसी दुर्गुणके कारण हिन्दू जाति गत १३०० वर्षसे हार पर हार खाती चली आ रही है। ९ शताब्दीमें काबुलमें हिन्दू राजा राज्य करते थे। पर आज लाहौर तकका समूचा प्रदेश इस्लामका ग्रास बन चुका है। हिन्दू यदि अपने इस दुर्गुणको दूरकर दें तो संसारका बड़ा से बड़ा राष्ट्र भी इनका सामना नहीं कर सकेगा। कांग्रेसी सरकारने यदि इस दुर्गुण को दूर करनेपर ध्यान न दिया तो हाथ में आयी हुई स्वतंत्रता भी छिन जायगी।

मत समझिए, अलग पाकिस्तान बन जानेसे अब भारत चैन की नींद सो सकेगा। हालमें एक बड़े प्रभावशाली मुसलमानकी चिट्ठी पाकिस्तानसे एक हिन्दू मित्रके होशियारपुरमें आई है। उसमें वह लिखता है कि हमें पूर्वी पंजाबसे सिखोंने नहीं वरन् तुम्हारी "अच्छी सरकार" ने निकाला है। सिखोंसे हमें कुछ भी डर नहीं था। पर तुम्हारी सरकारने हमें निकलवाया। गांधीजी और नहरू तो भले मनुष्य हैं, पर पटेल मुसलमानोंका शत्रु है। हम शीघ्र ही फिर आपसे मिलेंगे, पर मित्र के रूपमें नहीं, वरन् शत्रुके रूपमें युद्ध-भूमि में। अपना जन्मस्थान, जहांन खेला, मैंने सजल-नेत्र होकर छोड़ा था।" यह भावना एक मुसलमानकी नहीं, मैं समझता हूं, पाकिस्तानमें जानेवाले अधिकांश मुसलमानोंके मन मे ऐसे ही भाव उठ रहे हैं। इस आसन्न संकटका सामना करनके लिये हिन्दुओंको संगठित होनेकी बड़ी आवश्यकता है। संगठनके बिना वे धर्मान्ध मुसलमानों का सामना करनमें उसी प्रकार अशक्त होंगे जैसे उनके पूर्वज महमूद और मुगलों का सामना करनमें असमर्थ थे। और संगठनके रास्तेमें सबसे बड़ी रुकावट जातिभेद है। स्मरण रहे कि यदि हिन्दुओंने जातिभद को न मिटाया तो जातिभद इनको मिटा देगा।

---

(१५ वें पृष्ठका शेषांश)

प्रकारको कर कृषि-संपत्ति पर लगाकान अधिकार है। सर्वप्रथम सन् १०२६ में भारतीय धारा सभामें मृत्यु-कर संबंधी प्रश्न उपस्थित किया गया था, किन्तु तत्कालीन वैधानिक परिवर्तनोंके कारण इस पर विचार न किया जा सका।

प्रस्तुत मृत्यु-कर ब्रिटेनके जायदादकरपर आधारित है। किन्तु कर लगाने का जो तरीका सोचा जा रहा है, वह वर्तमान कोर्ट फीस ऐक्टपर आधारित होता है। इस दृष्टिसे मृत्यु-कर एक प्रकारसे कोर्ट फीस होगी। अच्छा हो कि मृत्युकर एक स्वतंत्र करके रूपमें ही आरंभ हो। इसे स्वतंत्र रूप देनेके लिये यह आवश्यक है कि आय-करकी तरह एक निश्चित मूल्यकी जायदादपर ही यह कर लगाया जाय और कम मूल्यकी जायदाद कर-मुक्त रहे। जिससे इस करका भार निम्न अथवा मध्यम श्रेणीके व्यक्तियोंपर न पड़े हमारी समझसे मृत्यु-कर सगायी जाने वाली जायदादका मूल्य ५ हजारसे कम न होना चाहिये। दूसरे इस करकी दर भी आय कर अथवा कोर्ट फीससे भिन्न हो। मृत्यु-कर आयकरकी तरह प्रति वर्ष दिया जा वाला कर न होगा। पर केवल एक बार ही दिया जायगा। अतः इस कर की दर आयकरकी दरसे अधिक होना आवश्यक है। तीसरे इस करका वर्द्धमान पद्धति से लगाया जाना आवश्यक है। ताकि जायदादके मूल्यकी वृद्धिके साथ ही कर की दरमें भी वृद्धि होती जाय। पर, जैसे जायदाद एक एक उत्तराधिकारीके हाथ से दूसरेके हाथ में जाती जाय वैसे ही कर की दर भी न्यून होती जानी चाहिये।

---

### ब्रिटेनमें फांसी सजा बन्द

ब्रिटिश पार्लमेंटमें निश्चय किया है कि हत्याके अपराधमें फांसीकी सजा बिना परीक्षणके ही पांच वर्षोंके लिये बन्द कर दी जाय।

### लाड नाउण्ट बैटनकी नियुक्ति

भारतके गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्टबैटन आगामी जूनमें अपने कार्य-भारसे मुक्त होकर लन्दनके लिये प्रस्थान करेंगे। लन्दनमें यह चर्चा जारी है कि कार्य-भार मुक्त हो जानेके बाद माउण्टबैटन मास्कोमें ब्रिटेनक राजदत नियुक्त होंगे। ऐसा भी अनुमान किया जा रहा है कि वे संभवतः नौसेना विभागको ही पसन्द करें।

**सुन्दर और मनोरंजक पुस्तकें—**

* पाक विज्ञान—
हर प्रकारके दाल शाक, अचार चटनी मुरब्बे आदि बनानेके अलावा विलायती ढंगका खाना बनानेका भी पूरा हाल दिया गया है मूल्य ३॥)

*सिलाई कटाई विज्ञान—
हर प्रकारके कपड़े काटना व सीना सिखाया गया है। मूल्य ॥।=)

* बम्बईकी चांदनी रातें—
एक अभिनेत्रीकी आत्मकथा जिसमें उसने अपने जीवनकी घटनाओंको लिखा है। मूल्य १।=)

पता:—अनिल कम्पनी (४)
फुलहट्टी, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बांके पीर

ले०— श्री पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

शैतानकी तरह मशहूर इसलिये कि उसी में बांके पीरकी कब्र थी, उत्तरी चहार दीवारीके बीचों बीच। मजारका खुला द्वार सड़ककी तरफ था, सामने पचासों बरस पुराना इमलीका पेड़।

कहते हैं कि पिछले पचास बर्षोंमें सुभानगंजका जितना नुकसान बांके पीरने किया उतना और किसीने नहीं; न तो आंधी ने, न पानी ने। रातमें जो भी उस सड़कसे गुजरता उसका मुर्दा ही सबेरे नजर आता। और कस्बेका नाम इसलामी होनेपर भी रहते थे उसमें ज्यादा हिन्दू ही, अस्सी सैकड़े। सो, बांके पीरके शिकार सौ में सौके सौ हिन्दू ही होते। पिछले पचास सालोंमें कोई एक सौ हिन्दु पीरकी नजर गये। हरेक मुर्देके पोस्टमर्टेम या चीड़फाड़से यही पता चलता कि मौत सांपके काटने से हुई पर सांप कही नजर न आती। गत पन्द्रह बर्षसे तो हरसाल हिन्दू मुसलिम दंगा होता आ रहा है सुभानगंजमें। जब भी कोई मरता तभी शहरके सारे हिन्दू उस खूनी मजारको खोद फेकनेके लिये फावड़े लेकर जुम्मन खांकी बगियापर टूट पड़ते। बगियाका बर्तमान बाशिन्दा सुलतान जोलाहा मजारकी रक्षामें जान लेने-देने पर आमादा हो जाता। सारेके सारे मुसलमान उसकी ताईद करते। नतीजा यह होता कि बांके पीरका शैतान अगर एक जान लेता तो दर्जनों हिन्दू मुसलमान आपस में लड़ मरते।

बांक पीरकी मजार बड़े बूढ़ों के कथनानुसार सन् '५७ के गदरके दिनोंमें तैयार कर दी गयी थी स्वयं जुम्मन खां द्वारा। उसने एक ही रातमें उसको तैयार कराया था स्वयं अपने लिये। क्योंकि उसे खबर मिली थी कि सुभानगंजपर गोरी पलटन छापा मारनेवाली है, खासकर उसीकी दौलत लूटनेके लिये। जुम्मन खां बड़ा दौलतमन्द, अमीर था पर भारी कंजूस। संपत्ति सारी जोड़ी थी उसके मरहूम दादाने जो दिल्ली दरबारका पांच हजारी मनसबदार था। जुम्मन सांपकी तरह उस संपत्तिकी रक्षा भर करता। भला उससे कस्बेके एक आदमीका भी नहीं हुआ और जब गोरोंने चढ़ाई की तो मुसीबतमें पड़ा शहर। गोरोंकी चढ़ाईके दो दिन पूर्व हलों रात वह मजार तैयार करा उसने अपने वारिसोंका हिदायत की थी कि अगर वह मार डाला जाय, तो बचनेवाले उसीकी बनवायी कब्रमें उसे दफनाएं।

और जब गोरे चढ़ आये तब वह उठ कर लड़ा; पर वे सैकड़ों और जुम्मनके साथी मुट्ठी भर। सारे कस्बेको न तो गोरोंने छेड़ा न गोरोंको कस्बे वालोंने। सो, कंजूस पर जब मुसीबत टूट पड़ी तब सबके सब मनही मन खुश हो एक दूसरेको बतलाते रहे कि—'सूमका धन शैतान खाय।' आखिर दुश्मनोंने साथियोंके साथ जुम्मनको गिरफ्तार कर धनके लिये घरकी तलाशी ली। पर कहते हैं एक फूटी कौड़ी भी उनके हाथ न आयी। सारेका सारा माल न जाने कहां गायब ही हो गया। फलतः लाख सांसत होने पर भी जब जुम्मनने मालका पता बताया नहीं तब गुस्सेमें गोरोंने उसकी बोटी-बोटी अलग कर डाली। एक भी साथी, 'रिश्तेदार या वारिस जीता न बचा जो ताजे मुर्देको नयी कब्रमें दफनाता। जुम्मनसे निराश गोरोंने सारे सुभानगंजको कसकर लूटा। चलते वक्त उस पलटनके कप्तानने अपने मुसलमान बाबर्ची रहमान जोलाहेको वह बगिया इनाममें बख्श दिया। वर्तमान मालिक सुलतान जोलाहा उसी रहमानका परपोता है जिसकी आम—दनीका जरिया चरखा या करघा नहीं, बगियाके आम और इमलीके पेड़ थे। हमेशा फटेहाल, मुश्किलोंमें गुजर बसर करता वह, पर बांके पीरकी मजार पर उसकी श्रद्धा अपार। क्या मजाल जो कोई अंगुली भी उठा दे पीरकी तरफ। पिछले दिनों सभी यह कहने लगे थे कि पीरके लिये लड़ता रहे इसलिये अंग्रेज सरकार सुलतान जोलाहे को तीस रुपये माहवार गुजरा देती है पर हमारे पास इसका कोई सबूत नहीं सिवा इसके कि जब कोई विदेशी सुभान गैज देखने आता तो जुम्मन खां की बगिया जरुर जाता। ये लोग सुलतान जोलाहेको इनाम अकराम भी देते।

मगर अंग्रेजी राजके हटते ही सुलता पीरपर श्रद्धा उसकी घटी नहीं। न तो पीर ने ही हिन्दू हत्या बंद की। पिछले दिसम्बर रेखिया उठान एक नौजवान क्षत्रिय वगियां के पीरका शिकार हुआ जिसके बाद भयंकर दंगा हुआ था। उसी वक्त मृत नौजवान के बापने घोषणा कर प्रतिज्ञा की थी कि वह हत्यारे पीरकी कब्र जिस दिन खोद कर फेंक देगा उसी दिन अन्न ग्रहण करेगा। उसने सारे कस्बेमें घूम घूमकर हिन्दुओंको समझाया कि तीस दिनोंकी मुसीबतको एक दिन उठ कर मिटा ही देना मुनासिब है। अंग्रेज चला गया पर पीर बचा है। बिना उसका मूलोच्छेद किये किसी की भी मुक्ति नहीं। और सबके मनमें बात जम गयी।

सुलतान जोलाहा मगर डरा नहीं। वह और भी चौकसीसे पीरकी रक्षा करने लगा। उसने भी चारों तरफ घूम-घूमकर मुसलमानोंको उभारा कि पीर जाने न पावें। एक दलका नेता वह क्षत्रिय बना दूसरे गिरोहका सरगना सुलतान जोलाहा। ठन गयी फिर तो, पर अभी बजी नहीं, क्योंकि सुलतानकी चौकसीके कारण आक्रमण करनेका मौका ही न पाते हिन्दू।

परसों वह मौका आखिर आया ही। ठीक खड़ी दोपहरीमें हिन्दुओंने फावड़े कुदालियोंसे लैस हो बांके पीरकी मजार पर आक्रमण कर दिया। सुलतान उस समय कहीं बाहर गया हुआ था। देखते ही देखते भीड़ने मजारके पासकी चहार दीवारीकी ईंटें बिखेर दीं। कब्र पर पहली गेंती मारी उस क्षत्रिय प्रतिज्ञावान ने। उसका अलस्तर-पलस्तर क्षण-मात्रमें चूर-धूल बना दिया गया। अब जड़ बुनियादके मिटानेकी कोशिश शुरू हुई तो एक भयानक सांप फनफनाकर बाहर आया। सनकनेके पहले ही जन समूहने उसकी चटनी कर दी। अब लोगोंको निश्चय हो गाया कि वही सांप ही सारा मुसीबतका कारण था। सांपको मारने पर लोगोंको स्वयं पीरके विनाशका विश्वास हो गया। फिर भी कब्र अभी खुदती ही रही।

इसी समय खबर पाते ही भारी मुसलमान दलके साथ जोलाहा सुलतान झपटा हुआ आया। यह दल भी हथियारोंसे लैस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सुलतान तो हाथमें भाला संभाले तीरकी तरह भीड़में घुस सीधे वहीं आकर रुका जहां वह क्षत्रिय मजारकी बुनियाद खोद रहा था ।

"बस !" जोलाहेने ललकारा क्षत्रिय को–"रोक दो हाथ! नहीं तो मेरा भाला तुम्हारे सीनेके पार हो जायगा बे–रोक ।"

"अबे जोलाहे जट !" क्षत्रियने कहा– " सांप कुचल डाला गया–पीरकी चटनी बन गयी अब मिट्टी पर क्यों जान देता है ?"

"मैं कहता हूं खबरदार !" सुलतान डटा रहा–"तुमने जमीन पर गेंती मारी कि मैंने घुसेड़ा भाला !"

मगर क्षत्रिय जोशमें था । बेटेकी मृत्यु के रोषमें उसने कब्रकी बुनियाद पर वार किया ही, साथ ही जोलाहेने भी भाला चलाया । लेकिन वार चूक गया । पीछे खड़े दुश्मनोंने दण्डा पकड़ लिया । भाला सुलतानके दुश्मनके सीनेको तोड़ न सका – उसने महसूस किया, साथ ही देखा कि क्षत्रियकी गेंती भी जमीनमें किसी कड़ी चीजसे टकरा कर रह गयी–चिनगारी फेंक कर । क्षत्रियने फिर प्रहार किया और पुनः चिनगारी-चिनगारी–अब लोहेकी एक मोटी कड़ी भी नजर आने लगी जिसका मतलब क्षत्रियसे पहले जोलाहेने समझा । तुरन्त मुट्ठीसे भाला अलग कर हाथ जोड़ कर उसने कहा–

मैं हार गया बाबू साहब ! मजार भी खत्म हो गयी अब जमीन खोदकर गढ़ा बढ़ानेसे कोई फायदा नहीं ।"

"'गढ़ा ही नहीं तालाब बनेगा यहां तब पापी पीरकी हत्याओंकी सफायी होगी मैं कहता हूं, दूर रहो ! गेंती जमीन पर नहीं मारने दोगे तो तुम्हारे सीने पर मारूंगा ।"

"मार डालिये मुझे !" सुलतानने कहा–"खोदकर जमीनको तालाब बना दीजिये पर मेरी एक बात कानमें सुन लेने के बाद । डरिये मत ! मैं बेहथियार हूं ।"

भीड़से जरा अलग कर क्षत्रियसे जोलाहेने कहा–"कब्रके नीचे दफीना–भारी खजाना मालूम पड़ता है ।"

"झूठ !"

"कसम खुदा की !" जोलाहेने जोर दिया –"लोहेकी कड़ी देखते ही मैं ताड़ गया सारा किस्सा । जरूर जुम्मन खांने गोरोंके डरसे इसी कब्रमें अपना मालोजर छिपाया होगा । अच्छा बतलाइये खोदते वक्त हड्डी ठठरी वगैरह भी मिली थी ?"

"हड्डी ठठरी तो एक भी नजर न आयी–केवल सांप एक निकला था ।" क्षत्रिय भी गंभीर हो उठा ।

"तो पीरकी मजार नकली थी–पहलेके लोग कब्र-मन्दिर और मसजिदोंके ही नीचे दफीने गाड़ते थे । सांप वही जुम्मन साला रहा होगा । मरनेके बाद भी खजाने से चिपका । कंजूस होनेके सबब हरेक राहगीरको लुटेरा मान कर काटता रहा होगा शैतान ।"

क्षत्रियको विश्वास हो गया ।

"फिर अब क्या किया जाय" जोलाहेसे पूछा उसने ।

"आगे खोदाई बन्द कर दी जाय और लोगोंको मालूम न होने दिया जाय यह भेद, नहीं तो, दफीना सरकारी हो जायगा । आज ही रातमें हम मालोमाल ऐसे हो जायेंगे जिसकी कोई इन्तेहा नहीं ।"

सांठ गांठ पक्की होते ही दोनों नष्ट कब्रके पास, भीड़में पुनः आ गये । क्षत्रिय ने लेक्चर शुरू किया–

"हिन्दू भाइयो ! मजार तो खत्म ही हो गयी– आप खुश हों कि आजसे हिन्दू–मुसलिम तकरार भी खत्म हो गयी । बड़े मियां जनाब सुलतानका कहना है कि अंग्रेजोंके जानेके बाद भी हिन्दू-मुसलमानों का आपसमें लड़ते रहना ठीक नहीं, सो, अब आप सब खुशी-खुशी अपने-अपने घर तशरीफ ले जाइये ।"

"बिरादराने मुसलिम ! बाबू साहब ने मेरी बात मान ली ।" सुलतान जोलाहे ने मुसलमानोंको बतलाया–"इसीमें सारे कस्बेका भला है । दो ही मीठी बातोंमें हमारा सीना साफ हो गया । देखिये ? क्षत्रियको गले लगाकर जोलाहेने कहा– "दिल खोलकर हम मिल रहे हैं । मेरा दिल कहता है कि इस मेलसे , हर तरहसे गरीब हम दोनों अमीर-खुशहाला बन जायेंगे । जहां सुमत, तहां सम्पत नाना । आजके फटे हालको कल ही मालामाल देख , दिल खोलकर मिलनेके फायदे समझकर आप लोग भी एक दूसरेसे गले मिलें । मेल और मालमें कोई फर्क नहीं । जैसे हम आज मालदार बन रहे हैं–इन्शा अल्लाह !– वैसे ही आप सभी बनें । आमीन ।"

क्षत्रियको फिरसे गले लगा जोलाहे ने कहा–"अब आप लोग लौट जाइये । बहुत दिनों बाद हिन्दू-मुसलिम मेल होने से हमें बड़ा मजा आ रहा है । आज हम सारी रात एक दूसरेको गले लगायेंगे ।"

भीड़ छंट गयी और वे गले ही मिलते रहे । दोपहर ढली, शाम हुई और जब चिड़ियाका एक पूत भी न रह गया तब मुसलमानने गेंती उठाकर हिन्दूसे कहा– "आप थक गये होंगे, अब मैं शुरू करता हूं ।"

इस घटनाके दो ही महीने बाद जब क्षत्रिय और जोलाहा अचानक अमीर बन गये तब लोगोंको अन्दाज लगा कि कब्रके नीचे खजाना था जिसमें एक करोड़का मालोजर दोनोंके हाथ लगा था, एक एक के भागमें पचास पचास लाख ।


**१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच**

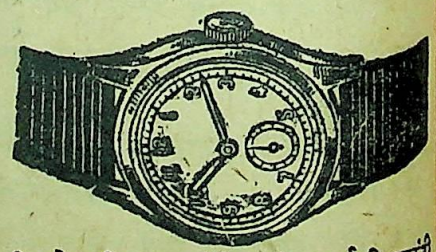

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस– २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस– ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड– ७५)

**रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो शेप**

क्रोमियम केस–४२), सुपिरियर–४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।

एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राहुल सांकृत्यायन

श्री गिरीन्द्रनाथशर्मा एम ए०

दीपककी पतली लौको देखा है और उससे होनेवाले प्रचुर प्रकाशको भी । पन्दहा जैसे देहातमें जन्म लेकर शिक्षा संसारमें इस प्रकारका चमत्कार उत्पन्न कर देगा—एक ग्रामीण बालक , किसे विश्वास था ? आज भारतको उस "राहुल" पर गर्व है और गर्व है उस हिन्दी साहित्यको जिसकी उसने इतनी सेवाएं की हैं ।

जन्म स्थान पन्दहामें कैसे राहुलजीको विद्याभ्यासका सुयोग मिला एक और आश्चर्य की बात है । पर १८९३ का ९ अप्रेल और रविवारका दिन अवश्य ही शुभ मुहुर्त था जिसमें जन्म लेकर राहुलजी अध्यवसाय वीर हो सके । वंश परम्पराके विचार से भी राहुलजी निरा ग्रामीण हैं । इनकी माता विवाहके पश्चात भी अधिकतर अपने पिता रामशरणजी पाठकके ही घर रहती थीं । राहुलजीका शैशव नानाके यहां ही व्यतीत हुआ और १२ वर्षके पश्चात् आप अपने पिता गोबर्धन पाण्डेको जान सके । ग्रामीण जीवन स्वास्थ्यके लिये बड़ा ही सुन्दर होता है माता और पिता बड़े हृष्ट पुष्ट और स्वस्थ्य थे और राहुलजीका स्वास्थ्य इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है । आपके लम्बे चौड़े शरीरपर स्वच्छ वस्त्र एक विशेष आकर्षण उत्पन्न करता है । बचपनमें आपका नाम केदार नाथ पाण्डे था ।

हिन्दीके इस प्रकाण्ड पण्डितकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दूमें हुई। यह एक आश्चर्य जनक परन्तु सत्य बात है । १८९८ की नवम्बरसे मामाके साथ अध्ययनके लिये आप रानीकी सराय भेज दिये गये। "पढ़ने का काम मेरे लिये बिलकुल मुश्किल न था । वस्तुतः चार मासकी पढ़ाईके लिये मेरे बारह मास यों ही बर्बाद किये जा रहे थे ।" नानाकी लम्बी चौड़ी बातें तथा प्राचीन कहानियां इन्हें अच्छी लगती थीं और प्राचीन कथाओंको अधिक रुचिकर ढंगसे भविष्यमें जनताके सामने आपने रखा ।

ग्यारह वर्षकी अवस्था होनेपर आपका यज्ञोपवीत हुआ और तबसे ही आपके आचार विचारका अध्याय आरम्भ होता है । छोटी अवस्थामें ही जबकि आप पूर्ण रूपसे विद्या प्राप्त भी न कर पाये थे कि आपका विवाह हो गया । । निजामाबाद मिडिल स्कलसे मिडिल पास करनेके पश्चात् आप कलकत्ता चले गये । वहां अपनी अल्प शिक्षाका कोई उपयोग न देख कर कठिन परिश्रमसे पैसा प्राप्त करनेका प्रयत्न करने लगे । खिदिरपुर डक तथा कोयला डिपोमें कठिन परिश्रम करके किसी प्रकार अपना भरण पोषण करते थे । हवड़ाके बर्न कम्पनीमें काम लग जाने

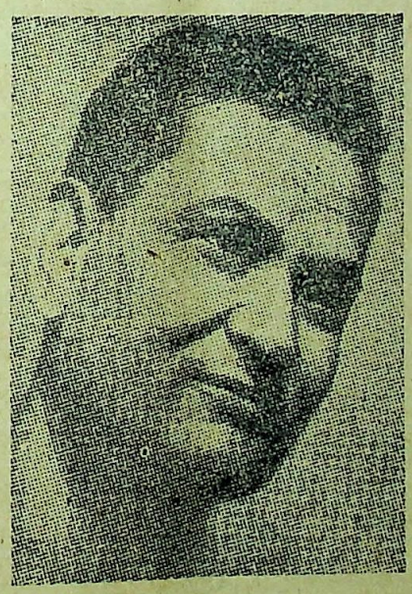

पर मालगाड़ीके पहियेके घुरेको रगड़ कर आप साफ करते तथा उसमें तेल देकर चलने योग्य बनाया करते थे । निरीक्षकोंकी आंख बचाकर कामसे जी चुराना तथा चुपकेसे बैठ रहना इनका काम था । दिनके कठिन परिश्रमसे थक कर आप एक मिस्त्रीके यहां टिक रहते और वहीं भोजन भी करते थे । इस प्रकारके कठिन और रुखे परिश्रमसे ऊबकर आप एक दिन जब धर्मतल्लामें टहल रहे थे एक पोस्ट मैनसे भेंट हो गयी और चाहा पोस्टमैनकी नौकरी पा लेना, पर असफल रहा ।

अंग्रेजी शिक्षाकी ओर अधिक आकर्षित हुए और विशुद्धानन्द विद्यालयमें लिया और पं० विन्दा प्रसादजीकी सहायतासे आप शिक्षा प्राप्तिमें सफल हुए । इन्हीं पण्डितजीके साथ आप ग्रेट ईस्टर्न होटलमें आमकी बिक्रीमें सहायता देते थे । कुछ समय तक आपने कपड़ोंकी फेरी की और कालेज स्कवायरमें आप कपड़ा बेचा करते थे । इस प्रकारके शारीरिक परिश्रमसे ऊबकर आपने शिक्षाकी ओर विशेष रुचि प्रदर्शित की । और प्रसादजी कलकत्तेकी दूकानपर नौकरी और साथ ही साथ अध्ययन भी करते थे ।

कलकत्तेसे आप अपने ग्रामका निराशा लिये लौट गये । वहां पास ही में एक परमहंसजी रहते थे । उनके दर्शन तथा सत्संगसे आपमें कुछ वैराग्यकी भावना उत्पन्न हुई । बाबा हरिकरण दासने आपकोब संस्कृतके अध्ययनके लिये प्रेरित किया । यहींसे राहुलजीके संस्कृतके अध्ययनका आरम्भ होता है । पिता और नानाके मना करने पर भी आप संस्कृतकेकी अध्ययन ओर बढ़ते गये और संध्या बन्दनमें इनका चित्त विशेष रूपसे लगने लगा । धीरे धीरे आप साधु होनेकी इच्छासे अयोध्या और हरिद्वारकी यात्राको निकल पड़े; यात्राक कुछ अंश पैदल तथा रेल द्वारा तय किया । द्रीनाथ और केदारनाथकी यात्रा भी आपने पैदल ही की ।

यात्राने आपको शिक्षा दी कि काशीके अतिरिक्त कोई स्थान संस्कृतकी शिक्षाके लिये अधिक उपयुक्त नहीं है । काशीकी ओर आपका प्रस्थान बहुत ही शुभ था और अक्तूबरमें अपने फूफासे संस्कृतका अध्ययन आरम्भ किया । गर्मीकी छुटीमें रघुवंश, वाल्मीकि रामायण तथा काव्य ग्रन्थोंको समाप्त किया । संस्कृत ग्रन्थोंके अध्ययनके साथ ही मन्त्रोंकी विशेषता ज्ञात करनेके लिये आपने परिश्रम करना प्रारम्भ किया और मन्त्रमें आपकी अधिक जानकारी हो गयी । विद्यार्थियोंमें आपके मन्त्र का अधिक प्रभाव था और अनेक आपके भक्त बन गये । रोटीकी समस्या अब भी न हो पायी थी । नौकरीकी खोजमें आप अब भी थे अन्तमें एक जौहरीके यह रसोईदार बन गये और किसी प्रकार अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भरण पोषण करने लगे । कुछ पूजा आदिसे कुछ विद्यार्थियोंको शिक्षा देकर आप पैसा प्राप्त कर लेते थे । पिता आपकी इस प्रकारकी मनोवृत्ति देखकर कुछ उदास हुए और बलपूर्वक आपको घरसे ले आये । थोड़े ही दिन पश्चात् आप 'परसा' ग्राममें चले गये ।

भटनीमें आपने सिर मुंडाकर साधु वेश धारण किया । तीर्थ यात्राकी धुन अब सवार हो चुकी थी और साधू वेश धारण करनेके पश्चात् आप जगन्नाथपुरीकी ओर चल पड़े । पुरीसे मद्रास होते हुए आप रामेश्वरम् पहुंचे । चावल, इमली, लाल मिर्च, तिलका तेल वहांका मुख्य भोजन था । दक्षिणसे लौटते समय बंगलौर, विजय नगर, पूना, बम्बई, नासिक, उज्जैन, अहमदाबाद, होते हुए आप अपने ग्राम पहुंचे । घरपर अब आपका मन नहीं लगता था । घरेलू झंझट तथा आर्थिक चिन्तायें सता रही थीं । इन बाधाओंसे अवकाश पानेके लिये आपने फिर भागनेकी सोची और एक दिन चुपकेसे घरसे चल पड़े और महाराजगंजके एक मठमें आकर रहने लगे । वहांसे आप अयोध्या गये ।

तीर्थ यात्राके समय भी आपका अध्ययन रुका न था । आर्य समाजका इस समय अधिक नाम था । यद्यपि इसका नाम आप पहले भी सुन चुके थे पर इसका आपपर किसी प्रकारका प्रभाव न पड़ा था । अयोध्याकी यात्राके समय आपके मनमें इस विषयके ग्रन्थोंके अध्ययनकी इच्छा हुई और 'सत्यार्थ प्रकाश' के कई समुल्लास आपने समाप्त भी कर दिया । यात्राके पश्चात् आप ग्राम गये पर घरकी परिस्थिति आपको संतुष्ट न कर पाती थी । पिताकी जमीन्दारीमें कभी-कभी वसूल तहसील करने आप जाते थे पर शहरमें रहकर विद्योपार्जनकी धुन अब भी लगी थी । थोड़े ही समयमें आगराके आर्य मुसाफिर विद्यालयमें अध्ययन करनेके लिये चले गये । वहां दो वर्षका कोर्स था और आर्य समाजके प्रचारके लिये विद्यार्थियोंको तैयार करना ही इस विद्यालय का मुख्य कार्य था । राहुलजीको यह कार्य अच्छा लगा । आप अन्य मित्रोंके साथ व्याख्यान दिया करते थे । फतेहगढ़, जसवन्तनगर, फिरोजाबाद आदि स्थानोंमें आप प्रचारका कार्य किया करते थे । राष्ट्रीयता और धर्म उस समय तक आपके लिये अलग अर्थ नहीं रखते थे । समाजकी ओर से ही प्रचार कार्यके लिये आप लाहौर गये और वहीं संस्कृत अध्ययन भी आरम्भ किया ।

आर्य समाजकी ओर आपकी रुचि अधिक बढ़ती गयी और प्रचार कार्यके सम्बन्धमें आपको सारे उत्तरी भारतका भ्रमण करना पड़ा । पिताके लाख प्रयत्न आपको इस कार्यसे न हटा सके और आप धनकी चिन्ता छोड़ यश प्राप्तिमें अग्रसर हुए । इसी समय समाचार पत्रोंमें रूसी राज्यमें क्रान्तिकी खबरोंने आपके राजनीतिक विचारोंमें अधिक परिवर्तन किया । आर्य समाजके प्रचारके साथ ही साम्यवाद के अध्ययनका अवसर मिला और आपने धर्म और राजनीतिके समन्वयका प्रयत्न किया । कांग्रेसकी कीर्ति १९२० के पश्चात् अधिक बढ़ चुकी थी और उसकी सेवामें अनेक महान व्यक्ति लगे हुए थे । राहुलजी की सेवाओंको देखकर लोगोंने आपको छपरा जिला कांग्रेसका मन्त्री चुना । कानपुरमें प्लेगका प्रकोप था आपने बिना किसी, प्रकार विचार किये लोगोंकी सहायतामें संलग्न हो गये । शास्त्री परीक्षामें आप सम्मिलित हुए पर उत्तीर्ण न हो सके ।

१९१९ में जब लाहौरमें राजनीतिक उथल-पुथलमें था, सारा शहर मार्शल लासे पीड़ित था आपने राजनीतिमें सक्रिय भाग लिया । लाहौरकी दशाको आप देख न सके और चित्तकी शान्तिके लिये आप चित्रकूट चल पड़े । चित्रकूटसे काशी, नेपालकी तराईमें अशोकके स्तम्भका दर्शन करनेके लिये चले गये । भागलपुर, मुर्शिदाबाद, नवद्वीप, पुरी आदि स्थानों का भ्रमण करते हुए आर्य समाजके प्रचार के लिये आप मैसूर तथा कुर्ग पहुंचे और इसके लिये कठिन परिश्रम किया । कुर्ग की यात्राके समय ही आपके पिताजीका स्वर्गवास हो गया था और अब आपका राजनीतिक जीवन अधिक आगे बढ़ा । असहयोग आन्दोलनसे सारा देश जाग उठा था, गोलियोंका सामना करनेमें देश पीछे न था । पटना कांग्रेस कमेटीकी बैठक जब पटनामें हो रही थी पुलिसने आपको गिरफ्तार कर लिया । आपका वारण्ट रामउदार दासके नामसे कटा था । इस बार आपको ६ मासकी कैद हुई और आप बक्सर जेलमें रखे गये । जेलसे छूटते ही रचनात्मक कार्यका प्रचार करनेके लिये आप गांव-गाव दौरा करने लगे । किसी भाषणके सम्बन्धमें आपको फिर एक बार जेल हुई ।

राजनीतिक उथल पथलके समय आपको साहित्य और धर्मकी सेवाका कम अवसर मिलता था । जेलकी चहारदीवारी असंतोषका संचार तो करती थी पर साथ ही राहुलजी ऐसे विद्वानोंका समय काटने के लिये पुस्तक लिखनेका भी बाध्यकर देती थी । राजनीतिक पुरुषोंका जेल जीवन साहित्यका पुण्य पर्व है । बंदी कालमें राहुलजीने "कुरान सार" की रचना की । यह ग्रंथ कुरानका हिन्दी तथा संस्कृतमें अनुवाद है । ज्योतिषके अध्ययनके लिये आपने संस्कृतके विशेष अध्ययनकी आवश्यकता का अनुभव किया । जेल जीवनसे मुक्ति पाकर राजनीतिक और धार्मिक कार्यमें अधिक तेजीसे बढ़े ।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके सदस्यकी हैसियतसे आप मेरठ गये । वहां श्री हरिनाम दास— आजके भिक्षु आनन्द कौशल्यायन— से भेंट हुई । यात्रा के प्रति अभिरुचि अधिक होनेके कारण आप एक स्थानपर अधिक समय तक न रह पाते थे । इस बार हिमालयके भ्रमण के साथ ही साथ तिब्बतकी भी यात्रा की ।

भद्रन्त आनन्द कौशल्यायनके साथ आपकी लंका यात्रा सम्पन्न हुई । यात्रामें धर्म तथा राजनीतिक प्रचार आपका मुख्

(शेष ३८ वें पृष्ठपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हम कांग्रेस क्यों छोड़ रहे

## आचार्य नरेन्द्र देव

कांग्रेसकी स्थापना देशको स्वतंत्र करनेके लिये हुई थी । कांग्रेसका लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करना था । इस लक्ष्यकी प्राप्तिके लिये एक ऐसी राष्ट्रीय संस्थाकी जरूरत थी जो आजादी पानेके लिये विविध वर्गों और विचार धाराओंका एक संयुक्त मोर्चा बन सके । बिना देशके स्वतंत्र हुए कोई भी अर्थनीति सफल नहीं हो सकती थी । राजनीतिक स्वतंत्रता पाना सबका समान ध्येय था। कांग्रेस इस प्रकारका संयुक्त मोर्चा था । इसी कारण यद्यपि समाजवादी पार्टीका जन्म १९३४ ईस्वीमें हुआ, पार्टी ने कांग्रेसमें रहकर संयुक्त मोर्चाको मजबूत किया। हमारी यह नीति समुचित और सफल सिद्ध हुई । इसको देखकर अन्य वामपक्षी भी जो कांग्रेसके बाहर थे और उसका यह कहकर विरोध किया करते थे कि यह पूंजीपतियोंकी संस्था है, कांग्रेसमें शामिल होने के लिये विवश हुए । समाजवादी पार्टीके कांग्रेसके भीतर रहनेकी वजहसे कांग्रेस अधिकाधिक आर्थिक कार्यक्रमको महत्व देने लगी । पंडित जवाहरलाल नेहरूने भी कांग्रेसके प्लेटफार्मसे समाजवादका प्रचार किया। फैजपुर कांग्रेसमें किसानोंकी समस्याओंकी ओर अधिक ध्यान दिया गया और फलस्वरूप असेम्बलीके सन् १९३७ के चुनावमें किसानोंने कांग्रेसका साथ देकर कांग्रेस पार्टीको सफल बनाया और उसकी गवनमेंट कई प्रांतोंमे कायम की । किसानों के प्रभाव कांग्रेसको धीरे धीरे जमींदारी प्रथाका अन्त करनेके लिये बाध्य होना पड़ा । कांग्रेसने आजादी के लिये जो सत्याग्रह की लड़ाइयां लड़ीं उनका नतीजा यह हुआ कि कांग्रेस धीरे-धीरे जनताकी संस्था होने लगी और जनताके प्रभावमें उसे अधिकाधिक जनताकी मांगोंको स्वीकार करना पड़ा । यहां तक कि सन् १९४२ में अपने ८ अगस्त के प्रस्तावमें कांग्रेसको यह स्वीकार करना पड़ा कि वह किसान मजदूर राज्य स्थापित करेगी । इस घोषणाके साथ सन् ४२ के जन आन्दोलनका श्री गणेश हुआ था ।

यद्यपि कांग्रेसने धीरे धीरे किसानोंके अधिकारोंको स्वीकार किया और वह उनको अपने प्रभाव क्षेत्रमें लायी तथापि मजदूरों के लिये कांग्रेस उतना नहीं लड़ी । मजदूरों पर भी कांग्रेसका कुछ प्रभाव था किन्तु वह बहुत थोड़ा था । इसका कारण यही है कि कांग्रेसने मजदूरोंको समान रूपसे नहीं अपनाया । इसका नतीजा यह हुआ कि मजदूर वर्ग पर मजदूर संस्थाओंका ही विशेष प्रभाव रहा । यही कारण है कि सन् '४२के आन्दोलनमें मजदूर प्रायः तटस्थ रहे । मजदूरोंसे कांग्रेस प्रायः सशंक रहती थी और उनको राजनीतिसे बहुत कुछ पृथक रखती थी । यही कारण है कि कांग्रेसके सामाजिक आधारमें मजदूरोंका वह स्थान नहीं है। पिछले चुनावमें मजदूरों ने भी कांग्रेसका साथ दिया । किन्तु इसका कारण यह है कि मजदूर भी आजादी चाहता था । वर्गके हैसियत से वह तब भी कांग्रेस से अलग सा था। शोषित वर्गोंके साथ सहानभूति थी उसके कारण मजदूर भी एक स्पष्ट रूपसे कांग्रेसकी ओर आकर्षित होता था । किन्तु उसने कांग्रेसकी ओर उस तरह नहीं अपनाया जिस तरह किसान वर्ग ने अपनाया था ।

अब हिन्दुस्तान आजाद हो गया है । सर्वत्र कांग्रेसकी गवर्नमेंट शासनारूढ़ है । कांग्रेसका कार्य अब पूरा हो गया है । जब कोई आन्दोलन सफल हो जाता है और उसके संचालक अधिकारूढ़ हो जाते हैं तब उसमें एक प्रकार की जड़ता आ जाती है । जो आन्दोलन पहले सजीव था और निरन्तर विकसित होता रहता था वह धीरे-धीरे निश्चित रूप धारण करने लगता है और उसमें विकासकी गुंजाइश गायब होने लगती है । गवर्नमेंटका संस्था पर अधिकार बढ़ने लगता और संस्था धीरे-धीरे अपने स्वतंत्र अस्तित्व और महत्व को खोने लगती है । क्योंकि कांग्रेसका ध्येय अब पूरा हो गया है इसलिये वह अब गवर्नमेंटकी इच्छाकी पूर्ति मात्र करने लगती है । पर हम कह चुके है कि कांग्रेस एक संयुक्त मोर्चा रहा है । उसमें सब विचारके के लक्ष्यको स्वीकार करते थे । इस राजनीतिक लक्ष्यके साथ धीरे-धीरे आर्थिक ध्येय भी बनने लगा था किन्तु वह सदा अस्पष्ट रहा । इस आर्थिक ध्येय के मौलिक सिद्धान्त कभी निश्चित न हो पायेये और यह स्वाभाविक ही था । क्योंकि कांग्रेस विविध वर्गोंका एक संयुक्त मोर्चा था ।

प्रश्न यह है कि क्या कांग्रेस आज अपनी आर्थिक नीतिको इस प्रकार बदल सकती है कि हम कह सकें कि यह नीति समाजावदके आधारपर आश्रित है। यह कार्य अब दुष्कर क्या असंभव हो गया है ।

कांग्रेसका निरन्तर विकास होता आया है किन्तु लक्ष्यके शुद्ध राजनीतिक होनेके कारण इसका प्लेटफार्म काफी चौड़ा रहा है। इस विकासका कारण यह था कि कांग्रेस एक आन्दोलन था । इस आन्दोलनसे प्रभावित होकर कांग्रेसमें नये नये समूह और वर्ग सदा प्रविष्ट होते रहे हैं । आन्दोलन की मर्यादा गवर्नमेंटकी आवश्यकताओंसे सीमित न थी । गवर्नमेंट सदा स्थिरता चाहती है । वह परिवर्तनोंसे घबराती है । उसकी चाल सदा मन्द होती है । जन आन्दोलनकी स्वागत करनेके बजाय वह उनकी रोक थाम करती है और उसका उत्तर सदा यही होता है कि जब हम जनता के हितोंकी रक्षा करनेको तैयार है तो आन्दोलनको क्या आवश्यकता है । जनता का हित किसमें है इसके अन्तिम निर्णयकर्त्ता कांग्रेसी ही बनाना चाहते हैं । कांग्रेस गवर्नमेंट की मनोवृत्ति भी ऐसी ही बन गयी है । इसमें कोई आश्चर्य करनेका कारण नहीं है । यह स्वाभाविक है । क्योंकि कांग्रेस की कोई ऐसी स्पष्ट और विशद अर्थनीति न थी जो नीचेसे आई होती । इसलिये कांग्रेसमें भी वही जड़ता आती जाती है । यह ठीक है कि कांग्रेसमें काफी असंतोष है और यह असंतोष इसी कारण से है कि कांग्रेस अब तक एक आन्दोलन था न कि एक पार्टी । विविध विचार धारायें जो अब तक कांग्रेसमें रहकर काम करती थीं अब एक साथ काम करनेमें दिक्कत मसूस करती हैं । स्वतंत्रता पानेके बाद आर्थिक प्रश्न सफाईसे सामने आने लगे और वह उत्तर चाहते हैं, कांग्रेसका वह दल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



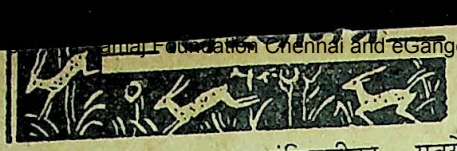

जिसका मशीनपर कब्जा है अब अन्य विचार धाराओंको कांग्रेसमें स्थान नहीं देना चाहता । वह कांग्रेसको एक पार्टीका रूप देना चाहता है । गवर्नमेंटका फायदा भी इसीमेंहैइसीप्रकारवहकांग्रेसकाअपनेलियेउपयोग कर सकती हैं। यह दल एक प्रकारसे मध्यम श्रेणीका प्रतिनिधित्व करता है । कांग्रेस की परम्पराके अनुसार इनकी भी सहानुभूति जनताके साथ है और आजकोई गवर्नमेंट जनताकी उपेक्षा भी नहीं कर सकती । किन्तु इस सहानुभूतिकी मर्यादा बहुत सीमित है । यदि कोई शुद्ध पूंजीवादी गवर्नमेंट होती तो उसको भी विवश होकर जनताकी स्थितिको उन्नत करना होता । उसमें और वर्तमान गवर्नमेंटमें अन्तर इतना ही है कि यह गवर्नमेंट जनताका साथ देने के लिये स्वतः स्वतंत्र है । किन्तु वह एक एक प्रकारकी परवशतामें पड़ी हुई है, गवर्नमेंटमें भी विचारोंकी समानता नहीं. है । उसमें ऐसे भी व्यक्ति हैं जो समाजवाद को स्वीकार करते है किन्तु गवर्नमेंटकी नीति एक व्यक्ति विशेषके विचारोंके अनुसार नहीं निर्धारित होती चाहे वह व्यक्ति कितना ही बड़ा क्यों न हो । इसलिये यह कहना कि क्योंकि केंद्रीय गवर्नमेंटके प्रधान सचिव पंडित जवाहरलाल नेहरू है, इसलिये गवर्नमेंट सोशलिस्ट है, गलत होगा । हम यह प्रश्न पूछ सकते है, कि एक सोशलिस्ट प्रधान सचिवके होते हुए उनके कैबिनटमें पूंजीपतियोंके समर्थक कई सचिव क्यों है तथा उसमें हिन्दू महासभाके एक प्रधान व्यक्ति क्यों है । हम यह नहीं मानते कि पंडितजी ने इन सज्जनोंको अपनी खुशीसे मंत्रिमंडलमें लिया है । वह इनको लेनेके लिये परिस्थितियों से मजबूरकर दिये गये है । यह परिस्थितियां क्या है, यह तो कांग्रेस मशीनपर जिनका कब्जा है वह पंडितजी के विचारके नहीं है, वह पूंजीपतियों के समर्थक है । दूसरी बात यह है कि कांग्रेस की कोई अर्थनीति नीचेके प्रभावसे ठीक-ठीक नहीं बन पायी है । यदि बन पाती तो कांग्रेसकी मशीनपर पंडितजीका ही कब्जा होता । आज पंडितजीका सबसे अधिक प्रभाव है देश और विदेश दोनोंमें । वह अन्तराष्ट्रीय व्यक्ति है । किन्तु वह मध्यम वर्गका जिसका मशीनपर कब्जा है प्रतिनिधित्व नहीं करते । इस वर्गको पंडितजी की बहुत जरूरत है । असलियत को छिपाने के लिये और गवर्नमेंटकी शोभा को बढ़ाने तथा उसे लोकप्रिय बनाने के लिए । पंडित नेहरूके बिना यह गवर्नमेंट अपनी लोकप्रियता खो देगी । इस उद्देश्यको पूरा करनेके लिये वह नेहरूजीको थोड़ा बहुत संतुष्ट भी करेंगे किन्तु यह दिखानेके लिये कि उनके बिना वह कुछ नहीं कर सकते वह कभी-कभी अपना हाथ भी खीच लेंगे । और आज जब पैदावार बढ़ाने की इतनी जरूरत है अपनी पूंजी व्यवसायसे खींच कर नेहरूजीको यह दिखलाना चाहेंगे कि उनकी सहायताके बिना यह कार्य नहीं हो सकता । किसी गवर्नमेंट नीतिके अन्तिम निर्णायक व्यक्ति विशेष नहीं होते किन्तु पार्टी मशीन होती है । यह मशीन पंडित नेहरू और जनताको एक दूसरेसे अलग करती है ।

महात्माजीसे बढ़कर प्रभावशाली कौन हो सकता है । किन्तु क्या हम नहीं जानते कि इधर एक, दो वर्षसे गवर्नमेंट पर उनका प्रभाव क्षीण हो गया था । वह स्वयं कहा करते थे कि पैदलों पर मेरा प्रभाव है किन्तु शतरंजके बड़े मुहरों पर जैसे वजीर आदि पर अब मेरा प्रभाव नहीं है । क्या हम नहीं जानते कि देशका बटवांरा बिना उनको पूछे हो गया था । इसलिये हमारा समाधान यह कहकर करना कि गवर्नमेंट के नेता पण्डित जवाहरलालजी हैं, ठीक नहीं है ।

नये विधानके अनुसार कांग्रेस वस्तुतः एक पार्टी हो गयी है किन्तु वह इसे मुक्त कण्ठसे स्वीकार नहीं करती । कार्यमें कांग्रेस पार्टी हो गयी है, किन्तु उसके नेता वाह्य आकर ऐसा रखना चाहते हैं जिससे भान हो कि वह अब भी सकल राष्ट्रकी संस्था हैं । इसलिये प्रत्येक बालिग स्त्री पुरुषको बालिग मान लिया गया है । अब कांग्रेसकी मशीनका पूरा-पूरा उपयोग गवर्नमेंटके लाभके लिये किया जायगा । जन-आन्दोलन कांग्रेसके अनुशासनके नाम पर रोके जायेंगे । कांग्रेस एक प्रकार से गवर्नमेंटकी केवल प्रचारक रह जायगी । जन -आन्दोलन पर रोक-थाम होनेसे जनता नये-नये अनुभवोंसे वंचित हो जायेगी । इसकीभी आशा कम है कि कांग्रेस द्वारा कोई रचनात्मक कार्य भी हो सकेगा । सहकारिताका रचनात्मक आन्दोलन भी इसके द्वारा न हो सकेगा । ऐसी स्थितिमें कांग्रेसका सामाजिक आधार नित्य संकुचित होता जायगा । जमींदारी प्रथाका अन्त करनेके बाद कांग्रेस बड़े-बड़े किसानों और मध्ययम वर्गकी संस्था रह जायगी । केवल जमींदारी प्रथाका अन्त करनेसे जमीनकी समस्याएं हल न होंगी । गरीब किसानों और खेतिहर मजदूरोंके प्रश्न हल न होंगे । यह एक नया समाधान चाहेंगे । मजदूर वर्ग भी आगे बढ़ न सकेगा ।

सामाजिक संघर्षसे चेतना पैदा होती है और जब एक प्रकारसे इसका नेतृत्व कांग्रेस न करेगी तो कांग्रेसके विकासका द्वार बन्द हो जायगा । सत्याग्रह संग्रामोंसे ही कांग्रेसका सामाजिक आधार विस्तृत हुआ था । प्रत्येक संग्रामके बाद कांग्रेसकी शक्ति बढ़ी है और जनताके आनेसे उसका कार्यक्रम भी अधिकाधिक उन्नतिशील हुआ है । नये सामाजिक उद्देश्योंकी पूर्तिके लिये नया सामाजिक आधार चाहिये । केवल नया कार्यक्रम दे देनेसे उसकी सफलता निश्चित नहीं है । अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने हालमें जो कार्यक्रम स्वीकार किया है वह ऊपरसे आया है नीचेसे नहीं । कांग्रेसका सामाजिक आधार इसका उपयुक्त साधन नहीं है । उपयुक्त साधनके अभावमें साध्यकी सफलता नहीं हो सकती । यही कारण है कि '४२ के प्रस्तावपर विधान परिषदने कोई ध्यान नहीं दिया है । जनताको पता नहीं है कि क्या विधान बन रहा है । यदि जनतामें उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रचार किया जाता और उसकी राय ली जाती तो विधानमें कुछ परिवर्तन हो सकता था ।

समाजवादी पार्टीके सामने ऐसी परिस्थितिमें यह प्रश्न उठा कि उसको क्या करना चाहिये । देशकी संकटकी अवस्था उसे कोई निश्चित फैसला करनेसे रोक रही थी । कांग्रेससे निकलना तो उसको था ही किन्तु प्रश्न था कि इसके लिये उपयुक्त समय क्या है । हमारी अनिश्चिता इसी कारण थी । किन्तु जब कांग्रेस विधान में यह संशोधन कर दिया गया कि कांग्रेस में कोई पार्टी नहीं रह सकती तब हमारे लिये निकलनेके सिवाय कोई दूसरा मार्ग नहीं रहा ।

इसके अतिरिक्त जनतन्त्रके आधारको सुदृढ़ करनेके लिये भी निकलना आवश्यक हो गया । जनतन्त्रकी सफलताके लिये स्वस्थ रचनात्मक विरोधका होना जरूरी है । आज इसका नितान्त अभाव है और साम्प्रदायिक दल इस कार्यको नहीं कर सकते । उनकी आलोचनाका विशेष महत्व और आदत नहीं है । भारतीय परिस्थिति में कांग्रेसका ही कोई दल इस कार्यको पूरा कर सकता है । यह दल समाजवादी दल ही हो सकता है ।

जब कांग्रेस में विकासकी गुंजइश नहीं रह जाती तब उन वर्गोंके आधारपर समाजवादका अधार बन सकते हैं एक नये संगठनका निर्माण करना आवश्यक हो जाता है । यह वर्ग मुख्यतः गरीब किसान और मजदूर ही हो सकते हैं । शिक्षित वर्गका तो प्रत्येक वर्गके लिये महत्व है । त्रिशेषज्ञों की सहायताके बिना कोई भी शासन नहीं चल सकता । समाजवादी पार्टीको जो यह सहायता और भी अपेक्षित है, क्योंकि यह निश्चित आर्थिक योजनाके महत्वको स्वीकार करती है । हम आर्थिक क्षेत्रकी अस्तव्यस्तता को दूर करना चाहते हैं । इसलिये हम व्यवसायिकों और विशेषज्ञोंकी उपेक्षा नहीं कर सकते । इनमेंसे जो हमारी नीतिको स्वीकार करते है उन्हें हमें अपने दलमें सम्मानपूर्वक प्रविष्ट करना है । उनकी सहायतासे हमको अपनी नीति और कार्यक्रमको भी सुस्पष्ट बनाना है ।

हमारे कार्यक्रमका विविध रूप रहेगा । हम मुख्यतः मजदूरों और किसानोंकी सेवामें रत रहेंगे । सामाजिक शक्तिका उदगम स्थान इन्हीं वर्गोंमें है । इन्हीं वर्गोंसे शक्ति लेकर हम समाजवाद की स्थापनाकर सकते हैं । यही वर्ग समाजवादके मुख्य आधार है । साथ ही पार्लियामेंटरी प्रोग्रामकी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती । आज की स्थिति में इसका अपना विशेष महत्व है । इस प्रकार हम देश की समस्याओंका भी अध्ययन कर सकेंगे । और उनके सम्बन्धमें अपना मत देशवासियोंके सम्मुख रख सकेंगे । इस कार्यसे रचनात्मक मनोवृत्तिके बनने भी सहायता मिलेगी । किन्तु हम यह नहीं भूल सकते कि हमको पार्लियामेंटरी प्रोग्राममें तभी सफलता मिलेगी जब हमारी जड़ें जनतामें फैल जाय ।

इस संबंधमें यह कहना आवश्यक है कि हम रचनात्मक कार्यक्रमको ऊंचा स्थान देंगे । लोगतंत्रकी स्थापनाके लिये सर्वत्र सहकारिताकी भावनाको उत्तेजित करना है । यह काम अकेले गवर्नमेंट नहीं कर सकती । इस ओर हम विशेष ध्यान चाहते हैं । कार्य महान् है और हमारे साधन स्वल्प हैं ।

यदि हमारे उद्देश्य और कार्यक्रम देशकी आवश्यकताको पूरा करनेवाले है और यदि विद्याचरण सम्पन्न लोकसेवक इस आन्दोलनका नेतृत्व करें तो इसका सामाजिक आधार विस्तृत होगा और कार्यमें सफलता मिलेगी ।

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# संयुक्त राजस्थान हमारा अगला कदम हो

लेखक—श्रीदीपचन्द्र नाहटा

५२० मील लम्बे और ४८० मील चौड़े राजस्थानके विशाल प्रदेशका महत्व आज किसीसे छिपा नहीं है। बीकानेर, जैसलमेर और जोधपुरका ६०० मील लम्बा सीमान्त प्रदेश पाकिस्तानके सिंध प्रांत, खैरपुर तथा बहावलपुर रियासतों से बिलकुल सटा हुआ है। हिन्द यूनियनका कोई भी प्रांत पाकिस्तान ही क्यों, किसी भी विदेशी राष्ट्रसे एक साथ इतनी लम्बी सीमाका निर्धारण नहीं करता। भारत-विभाजनकी रेखाओंने राजस्थानको केवल सामरिक दृष्टिसे ही महत्वपूर्ण नहीं बना दिया है, बल्कि इसका राजनीतिक एवं व्यापारिक महत्व भी अब इतना अधिक बढ़ चुका है, जिसकी किसी भी हालतमें उपेक्षा नहीं की जा सकती।

## इतिहाससे सबक ले

गत शताब्दियोंका राजस्थानका इतिहास बलिदान, जौहर और कुर्बानियोंका इतिहास रहा है। जिस समय मुगल सम्राटों के नामसे ही बड़े-बड़े साम्राज्योंके दिल दहल जाते थे, राजस्थानके वीरोंने उनसे लोहा लेकर अपनी अदम्य वीरतासे यवनोंके होश गुल कर दिये। राणा सांगाके बलिदान, प्रतापकी देशभक्ति, वीखर दुर्गादास और राजसिंहके अपूर्व त्याग एवं राजस्थानी वीरांगनाओंके अद्भुद जौहर आज भी विश्वके इतिहासमें अपनी शान नहीं रखते। यह एक आश्चर्य और गौरवका विषय है, कि राजस्थानमें कभी किसी शक्तिका एक-छत्र राज्य स्थापित न होने तथा इस प्रदेशके बीसों रियासतोंमें विभक्त होने पर भी यह एक ही राजपूताना या 'राजस्थान' के पवित्र नामसे पुकारा जाता रहा है। हजारों-लाखों वीरोंके खूनकी धाराओंने बहकर इस प्रदेशकी सीमाओंका निर्धारण किया है। युद्ध भूमिमें चमकती हुई तलवारों और कुर्बानियोंके बीच यहां की सभ्यता, संस्कृति और साहित्यका जन्म हुआ है। यही कारण है कि अनेक रियासती दीवारोंके खड़ी रहने पर भी राजस्थानकी सारी शक्तियां एक ही ओर प्रवाहित होती रही है और उसीके फल-स्वरूप यहां की वेश-भूषा, भाषा और समाजका गठन हुआ है।

इतना सब कुछ होते हुए भी, राजस्थानके इतिहासमें एक बहुत बड़ी कमी हमेशा खटकती रही है, और वह यह है कि राजस्थानने पूर्णतया संघबद्ध होकर कभी किसी राष्ट्रीय विपत्तिका सामनां नहीं किया। कभी-कभी कुछ दूरदर्शी राजाओंने शत्रु से लोहा लेते समय इस दिशामें भगीरथ प्रयत्न भी किये, किन्तु वे पूर्णरूपसे सफल नहीं हुए। यह राजाओंकी अदूरदर्शितासे संघबद्ध न होनेका ही परिणाम था कि यहांके वीरोंकी अगणित कुर्बानियां भी अपना रंग न ला सकी, जिसके फलस्वरूप बर्बर आततायियोंके हाथों लाखों मां अपना रंग न ला सकी, जिसके फलस्वरूप बर्बर आततायियोंके हाथों लाखों नर नारी का ह्रास हुआ और असंख्य स्वाभिमानी लोगों को बे-घर-बार होकर दर-दर की ठोकर खानी पड़ी। भारतवर्षमें ब्रिटिश साम्राज्यका दौर भी संभवतः इसी अदूरदर्शिता का परिणाम था।

ब्रिटिश शासन-काल राजस्थानकी जनताके लिये अभिशापका युग था। राजाओंकी पुरानी परम्परा, उनकी प्रजा-वत्सलता और न्यायप्रियताका नामोनिशान तक मिट चुका था। नौकरशाहीके गुलाम बनकर, सुरा और सुन्दरीके आलिंगन में वे मस्त थे। प्रजाकी आवाज और देशकी अन्तरात्माकी पुकारका उनके सामने कोई मूल्य न था। साम्राज्यशाहीके इंगित पर स्वदेशके प्रगतिशील तत्वोंको कुचलनेमें उन्होंने अपनी शान समझ ली थी। राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी सदृश विश्ववंद्य युग-पुरुषकी जयन्ती मनाना उन महाराजाओं की दृष्टिमें अपराध था। रियासती प्रजाकी जिन्दगीसे मजाक करना उनके लिये एक खेल था। राजनीतिक बंदियोंकी गुदाओंमें मिर्च भर देना, उन्हें मांचे पर चढ़ाना, उनके साथ पैशाचिक अत्याचार करना उनकी वीरताकी कसौटी बन गयी थी।

अब समय आ गया है, जब राजस्थान की जनता इस सामन्ती जुएको उतार फेंके और उनकी नादिरशाही हुकूमतका हमेशाके लिये खात्मा कर दे। अब यह मौका है, जब राजस्थानके सूरमें सामन्त-शाहीकी रीढ़ तोड़ दें और नौकरशाहीको घुटने टेकनेके लिये बाध्य कर दें। अब यह सुवर्ण सुयोग है, जब राजस्थानके सिंह-सुवन अपनी अतीतकी अदूरदर्शि-ताओंसे कुछ सबक सीखें और रियासती दीवारोंको चकनाचूर कर एक शक्तिशाली संयुक्त राजस्थानका निर्माण करें।

ऐसा करते समय यस संभव है कि हमारे स्वयंभू नरेश मारवाड़ी जयपुरी और बीकानेरी होनेकी गौरव-गाथाएं गाकर हमारे हृदयकी कमजोरियोंसे लाभ उठानेकी कोशिश करें और हममें से ही एक 'पंचम दल' बनानेमें सफल हो जायं। ऐसे समयमें रियासती जनताका यह कर्त्तव्य होगा कि वे उनकी जोशीली वक्तृताओंमें अपनेको गुमराह न कर दें। हमारे वीर पूर्वजोंको रियासतीपनका भयंकर रोग लग जानेके कारण समस्त राष्ट्रको जो कीमत चुकानी पड़ी उसको भला आज कौन भूल सकता है। हमारी बद-किस्मतीसे साम्प्रदायिक आधार पर निर्मित पाकिस्तानसे हमारी सीमाएं सैकड़ों मीलों तक एक दूसरेसे टकराती हैं। देशकी सुरक्षाके खयालसे इस विषयका मजाकमें उड़ा देना कम खतरनाक न होगा। इतिहास प्रत्येक बार अपनेको दुहराता है। जिन वीर जातियोंने शांतिकालमें अपनेको एकतामें आबद्ध न कर ऐयाशी का जीवन बिताया, वे अचानक विपत्ति आने पर संगठन शक्ति और बलिदानका बिगुल बजाने पर भी अपनेको कायम न रख सकी। हम राजस्थानके आबाल वृद्ध नर-नारी रियासती बखेड़ोंमें पड़कर इतने अर्से तक जिल्लतकी जिन्दगी बिताते रहे हैं। अब फिर इन्हीं दीवारोंको खड़ा करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त भव्य भवनका निर्माण करना चाहते हैं राजस्थानके लिये जी जानकी बाजी न लगा देना कम मूर्खता न होगी।

## टुकड़े टुकड़े होने से बचाइये

सरदार पटेलकी कुशलतासे भारत वर्षकी ५८४ रियासतोंकी जगह अब केवल ६० रियासतें ही अवशिष्ट रही हैं। बची-खुची छोटी-छोटी रियासतें भी शीघ्रातिशीघ्र विलीन हो रही हैं। राजस्थानकी रियासतोंके समूहीकरणके लिये भी कई योजनाएं हमारे सामने आयीं किन्तु उनमें से कोई भी ऐसी न थी, जो राजस्थानकी कुल २६ रियासतोंकी एक इकाई बना दे। हालकी योजनाओंमें उदयपुरके प्रधान मन्त्री राममूर्तिके राजस्थान को ८ इकाइयोंमें बांटनेके सुझावको विशेष महत्व दिया गया है। इसके अनुसार जोधपुर, जयपुर, बीकानेर और उदयपुरकी चार बड़ी इकाइयां होनी चाहिये तथा कोटा, बूंदी, झालवाड़ा और टोंकको मिलाकर पांचवीं, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, सिरोही और किशनगढ़को मिलाकर छठीं, पालनपुर, इडर और विजय नगरको मिलाकर सातवीं एवं धौलपुरव धरतपुर, करौली और अलवरको मिलाकर आठवीं इकाईकी सृष्टि होनी चाहिये। इस योजनाकी आठवीं इकाईके चार राज्यों को मिलाकर मत्स्य राज्य एवं इसकी पांचवीं और छठीं इकाइयोंके नौ राज्योंको सम्मिलित कर चन्द दिनों पूर्व राजस्थान यूनियन का सजन किया गया। संभव है, इस योजनाके इसी प्रकार पूर्णरूपेण कार्यान्वित होनेसे कतिपय छोटी-छोटी रियासतोंकी जनता कुछ आरामकी सांस ले सके। परन्तु क्या ये २ या ३ करोड़से भी कम आमदनी वाले संघ या बड़ी इकाइयां यहांके बाशिन्दोंकी शारीरिक, मानसिक और नैतिक उन्नति करनेमें समर्थ हो सकेंगी। गत शताब्दियोंका इतिहास यही बतलाता है कि जयपुर, जोधपुर और बीकानेरकी बड़ी इकाइयां नौकरशाहीके जुल्मोंके सिवा और किसी भी क्षेत्र में आशातीत उन्नति नहीं कर सकी। जनतामें सैनिक शिक्षण और उसके बौद्धिक विकासके कार्यमें ये इकाइयां सर्वथा असफल रही हैं और यदि अब भी इन इकाइयोंको संघ बद्ध न किया गया तो राजस्थानकी जनता, जो इस समय अवशेष भारतसे प्रत्येक क्षेत्रमें अत्यधिक पिछड़ी हुई है, अपना भविष्य अन्धकारमय बना लेगी।

यदि संयुक्त राजस्थान की योजना को कार्यान्वित करनेमें तत्परतासे काम न लिया गया तो संभव है कि राजस्थानकी छोटी-छोटी इकाइयां कुछ ही कालमें मध्य प्रांतीय देशी राज्य यूनियन, गुजरात स्टेट यूनियन और अपने समीपवर्ती प्रांतोंमें समा जायं, जिसका फल राजस्थान-वासियों और देशकी सामहिक प्रगतिके कार्यमें अत्यन्त भयंकर सिद्ध होगा। जिन प्रांतों या संघोंके साथ वे मिलेंगी, उनमें संभव है कि शीघ्र ही सांस्कृतिक और भाषाके आधार पर अड़चनें उत्पन्न हो जायें। सबसे बड़ी क्षति तो यह होगी कि राजस्थानकी सभ्यता, संस्कृति भाषा रहन-हसन और साहित्यका प्रवाह ही कुण्ठित हो जायगा।

संभवतः यह राजस्थानके संघबद्ध न होणेका ही परिणाम है कि जैसलमेर को भारतीय सुरक्षाके खयाल से मोर्चाबंदी करनेके लिये भारतसरकारको सीधे अपनें नियंत्रणमें लेना पड़ा। हम यदि राजस्थानको संघबद्ध कर एक प्रांतके रूपमें इसका नव निर्माण करने में सफल हो जायें तो उस हालतमें हम खुद एक होकर वह शानदार मोर्चाबंदी कर सकेंगे जिसकी मिसाल दुनियां इतिहासमें बेजोड़ होगी। इस प्रकार एक ओर हम राजस्थानको छिन्न-भिन्न होनेसे बचा सकेंगे और दूसरी ओर भारत सरकार के सिरसे एक बहुत बड़ा बोझ हल्का करने में सहायक हो सकेंगे।

## शोचनीय अवस्था

गत अगस्त तक हम ब्रिटिश साम्राज्य और रियासती सामन्त शाही रूपी चक्की के दो पाटोंके बीच कीड़े-मकोड़ोंकी भांति बुरी तरह पीसे जाते रहे हैं। अंग्रेजोंके भारत से चले जाने के बाद यद्यपि हमारी राजनीतिक परिस्थितिमें अत्यधिक परिवर्तन हो चुके हैं, फिर भी यहांके बदकिस्मत निवासियोंकी अवस्था ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। यहांके बहुसंख्यक किसान और मजदूर अब भी जागीरदारोंकी पैशाचिक ज्वाला के शिकार बन रहे हैं। जयपुरमें ७२ प्रतिशत और जोधपुरमें ८० प्रतिशत से अधिक भूमी अब भी महाराजाओंके चन्द खैरखाहोंके कब्जेमेंहै, जो यहां की गरीब जनता पर दिन रात जुल्मके पहाड़ ढहातेरहते है। बेगारीकी प्रथा अब भी अपने विकराल रूपमें मौजूद है। लोगोंको स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचार प्रकट करने का अब भी अधिकार नहीं है घूस खोरी अन्याय और धांधलीका चारों तरफ बोलबाला है। डावड़ा और कांगड़ आदि कांड तो यहां की रोज मर्रा की घटनाएं हैं।

इससे बढ़कर हमारी पिछड़ी हुईअवस्थाका नमूना और क्या हो सकता है कि जहां हमारे पास ही संयुक्त प्रांतमें लोगोंकी शिक्षा के लिये पांच-पांच यूनिवर्सिटियां हैं वहां क्षेत्र फलमें उसके बराबर और धनधान्य में अधिक सम्पन्न समझे जाने पर भी हमारे राजस्थानमें उसके टक्कर की एक भी यूनिवर्सिटी नहीं है। हमारी आवश्यकताओंको पूरा करनेवाला एकभी मेडिकल कालेज नहीं है, एक भी इंजिनियरिंग कालेज हैं और एक भी रेडियों स्टेशन नहीं है। श्रेष्ठ दैनिक साप्ताहिक और मासिक समाचारत्रोंका यहां सर्वथा अभाव है। अनेक प्राकृतिक साधनोंसे भरपूर होने पर भी उद्योग धंधोंकी दृष्टिसे यह विशाल क्षेत्र सर्वथा अछूता रहा है! सैनिक शिक्षाके लिये किसी भी आदर्श संस्थाका यहां नामोनिशान भी नहीं है। जनताके शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकासके लिये बड़े पैमाने पर कार्य करनेकेलिये एक भी विशाल संस्थाका निर्माण अबतक संभव नहीं हो सका है। कोई भी देश प्रेमी व्यक्ति अपने दिल पर हाथ रखकर यह पूछे कि क्या ये छोटी-छोटी इकाइया हमारी उपर्युक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



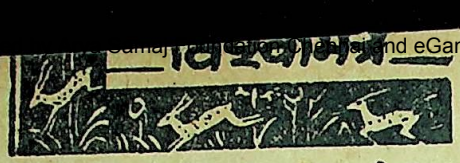


आवश्यकताओंको पूर्तिकर सकेंगी ? यदि नहीं तो राजस्थानकी कोटि-कोटि जनताके भाग्यसे यह खिलवाड़ क्यों ?

### शर्मकी बात

सबसे अधिक शर्मका विषय यह है कि जिस समय कोटा, बूंदी आदि कतिपय रियावतों ने मिलकर राजस्थान यूनियनकी घोषणा कर दी है और मेवाड़ महाराणा भी उसमें शामिल होकी घोषणा करके अपनी गौरवमयी परम्परा निभायी है, उस समय भी यहां की बढ़-बढ़ कर बातें करशेवाली बड़ी-बड़ी रियासतोंने अपनी प्रजा और राजस्थानकी सामूहिक उन्नतिके दृष्टिकोण को भुलाकर अपनी चार चासल की खिचड़ी पकाका राग अलापना प्रारंभ कर रक्खा है । इन चन्द बड़ी-बड़ी रियासतोंमें प्रजामंडलों और नरेशोंके बीच जितनी दरमुलाईके पश्चात उत्तरदायी मंत्रिमंडलोंका गठन संभव, हुआ है और जनतंत्र विरोधी तत्वोंके हाथोंमें राज्यके प्रमुख महकमें सौपने की जो चाले चली गयी है वे राजस्थानके नरेशोंकी प्रगतिशीलता और भारतीय इतिहासमें उनके नामको वट्टा लगा देवाली है । यह बात प्रत्येक समझदार नागरिक भली भांति जानता है कि जोधपुरके दीवानके हाथमें वैदेशिक , राजनीतिक अर्थ, और पुलिसके प्रमुख विभाग, और बीकानेरमें प्रधानमंत्री सहित मंत्रि मंडलके आधे प्रमुख महकमे होनेकर शाहीके पुरानेपिट्ठुओंके हाथोंमें रहेके बावजूद भी उसे कहांतक पूर्ण उत्तरदायी शासन कहा जा सकता है । यदि उनकी सरकारोंमें पूर्ण सत्ता निहित होती तो वे आज तक कभी की राजस्थान यूनियनमें समा गई होती । राजस्थानकी रियासतोंमें पूर्णतया उत्तरदायी मंत्रि मंडलोंके होते राजस्थान यूनियनका दायरा इतना छोटा होना संभव नहीं था । राजस्थान, काजो क्षेत्रफल हजारों वर्षा से निश्चित है, राजस्थान संघका निर्माण होते समय उसका एक दसवां भी नहीं रह गया है । यह राजस्थानके प्रजामंडलों और यहां की उ जनता के लिये लज्जाकी बात है कि उनकी संयुक्त राजस्थानकी कल्पना राजस्थानकी २६ रियासतों ये से केवल १० रियासतोंका संघ बन कर ही चूर-चूर होजा रही है ।

### सन्देहकी गंजायश नहीं

संयुक्त राजस्थानके संबंन्धमें अेक भ्रमात्मक बातोंका लोगोंमें प्रचार किया जा रहा है । कतिपय लोगोंको यह संदेह है कि संयुक्त राजस्थान बननेकी सूरतमें कहीं अन्यान्य रियासतोंके कार्यकर्ता उनकी रियासतोंपर हावी न हो जाय और उनकी नेतागिरी खतरेमेंमें न पड़ जाय ऐंसे व्यक्ति इउ प्रश्नरर जनहितकी दृष्टिसे विचार चर तो उन्हें इस प्रश्तका उत्तर स्वयं ही मिल जायेगा । जनताको ऐसे लोगोंसे सावधान रहना चाहिये, जो रियासती दीवारोंकी आड़में अपना उल्लू सीधा करनेका प्रयत्न कर रहे हैं । सच्चे जन नेताओंके लिये इससे बढ़कर और कोई पुरस्कार नहीं हो सकता कि उन्हें एक रियासतकी जगह २६ रियासतोंकी जनता जनार्दनकी सेवा करनेका सौभाग्य मिल सकेगा । जनताके लिये भी इससे अधिक और क्या हर्ष हो सकता है कि समस्त राजस्थानके योग्यसे योग्य व्यक्ति उनकी सेवामें प्रस्तुत होकर उनके भाग्य निर्माणमें सहायक हो सकेंगे ।

कुछ लोग संयुक्त राजस्थानके निर्माण होने पर रियासती असेम्बलियों, राजस्थान की असेम्बली और भारतीय संघकी असेम्बलीकी राजनीतिक स्थितिसे उत्पन्न सम्भावित त्रिकोणकी आशंकासे वैधानिक अड़चनें उत्पन्न होने और जनशक्तिके कमजोर होनेका खतरा समझते हैं । किन्तु यह भ्रम सर्वथा निर्मूल है । राजस्थानके एक छोरसेसे दूसरे छोर तकके जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियोंसे युक्त अखण्ड राज स्थानकी असेम्बलीके बनते ही रियासती असेम्बलियोंके पृथक अस्तित्वकी कोई आवश्यकता नहीं रह जायेगी । फलतः भारतीय संघके साथ संयुक्त राज स्थान की असेम्बलीका सीधा सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा और राजस्थानकी जनता भी अपनी प्रांतीय असेम्बलीके द्वारा अन्यान्य प्रांतोंकी भांति अखिल भारतीय मामलोंमें अपने प्रभावको काममें ला सकेगी ।

## संयुक्त राजस्थानका स्वरूप

राजस्थानकी पूर्णतया संघटित इकाई को संयुक्त राजस्थान प्रांत या राजस्थान संघ किसी भी नामसे पुकारें, इसमें अजमेर मेरवाड़ा सहित राजस्थानकी सभी इकाइयां अवश्य सम्मिलित होनी चाहिये । इसका विधान बनाते समय राजनीतिज्ञों और विधान वेत्ताओंको इस बातका विशेष ध्यान रखना चाहिये कि जनताके मौलिक अधिकारों पर किसी प्रकारका कुठाराघात न हो । भारतवर्षके अन्य प्रांतोंकी भांति इसके अधिकार भी सर्वथा अक्षुण्य रहने चाहिये । राजप्रमुख या उप राजप्रमुख के पदका जहां तक सवाल है, संघमें सम्मिलित राजाओंमें से प्रत्येकको एक निश्चित अवधि तकके लिये पूर्णतया वैधानिकराराजाकी भांति इस सम्माननीय पद पर अभिषिक्त किया जा सकता है अथवा उन्हें अन्य प्रांतोंके गवर्नरके सदृश भी अधिकार दिये जा सकते हैं । किन्तु दूसरी अवस्थामें भारत सरकार किसी भी देशप्रेमी सुयोग्य नरेशको अपने इच्छानुसार निश्चित कार्यकालके लिये राज प्रमुख नियुक्त कर सकेगी और ऐसी हालतमें वह राजप्रमुख भी प्रांतके गवर्नर के सारे उत्तरदायित्व पूर्णरूपसे निभानेके लिये भारत सरकारके प्रति उत्तरदायी होगा ।

## जनता आगे बढ़े

जब तक हमारा संयुक्त राजस्थानका स्वप्न पूर्ण नहीं हो जाता हमारी उन्नति और विकासकी सभी योजनाएं मृग तृष्णा की भांति व्यर्थ सिद्ध होगी । केवल संयुक्त राचस्थान ही हमारी समस्त आशाओंकी आधार शिला है । इस पर हम एक ऐसे भव्य भवनका निर्माण करना चाहते हैं, जहां दरिद्रता, भय, अत्याचार और शोषण देखनेको भी न हो और जहांके सभी वाशिन्दे भाई-भाईकी तरह प्रेमपूर्वक जिन्दगी बसर

(शेष ३८वें पृष्ठपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रास्ता

श्री ज्ञानचन्द्र

नैशपुर से कुछ दूर वहां, जहां खंडहर ही खंडहर हैं, भूमि कुछ ऊंची भी है और अबतक अंगूरकी लता अपनी छाती की भांति छाये है ।

मशहूर है कि उधरसे जो भी निकल जाता उसमें प्रेमका संचार हो ही जाता और उसकी वहांसे उठनेकी इच्छा भी न करती । बड़े-बड़े परहेजगार उस रास्तेसे गये , बड़े साधु गये पर अंगूरकी वह बेल उनके मनको कुछ ऐसा बझा लेती कि उनको आगे बढ़नेकी इच्छा ही न करती ।

लोगोंको ज्ञात क्या था कि ऐसा क्यों है ? पर यह सभी कहते कि ऐसा है ? और यही कारण था कि कितने ही जिन्हें अपने जीवनसे कुछ भी विरक्ति होती वे वहां जाकर ही जीवन बिताना पसंद करते और राहगीरोंकी तो बात ही क्या थी, उन्होंने तो वहां बैठना अपना फर्ज ही समझ लिया था । चाहे थकान कितनी भी क्यों न हो, चाहे घास कितनी भी क्यों न हो पर मीलोंसे इसी आसरेमें चले आया कि नैशपुरके टीलेपर विश्राम करेंगे । शरीफबड़ परहेजगार, उसकी चर्चा उसके गांव देशमें सर्वत्र रहती । सभी उसकी धर्मपरायणता और सादगीके भक्त निकले । एक दिन उसे कहीं उस मार्गसे गुजरनेका संयोग प्राप्त हो गया । वह भी उस स्थान पर पहुंचनेपर बैठे बिना न रह सका । गर्मीका दिन था । बलोंने उसे साया दी । अंगूरोंने उसे सुगंध दी तथा सुन्दर कटे हुए पत्तोंने उसे बयार करना शुरू कर दिया । थकान तो थी ही उसे नींद आ गयी ।

* * *

स्वप्नमें उसने देखा कि एक सुभूषित मुसलमान एक वृक्ष तले बैठा है । एक प्याला उसके साथमें है । तरुवीह हाथमें है । और वह कागजपर कुछ लिख रहा है । जैसे ऊब गया हो, वैसे ही जगकर उसने अपनी नजर ऊंची की और तुरन्त एक सुन्दर युवती हाथमें मधुरपान लिये नाचती हुई सामने आयी । उस बड्ढेने उसे देखते ही कलम भी भूमि पर रख दी, कागज भी । मसनदसे उठ पड़ा और भर नजर उसे देखने लगा । वह कुछ झिझकी पर स्पष्ट ऐसा मालूम पड़ता कि था कि वह इतनी उससे मिलनेको अभ्यस्त हो गयी थी कि उसकी झिझक दूसरे ही क्षण समाप्त हो गयी और इस झिझकने उस बुड्ढेमें भी आकर्षण बढ़ा दिया ।

नाचते-नाचते वह बगलमें आकर बैठ गयी । बुड्ढेने उसे और प्रेमसे देखना शुरू किया । उसने अपना प्याला संभाला, उसने अपनी मधुपात्र संभाली, उसने प्याला उसके सामने रख दिया, उसने मधु सरक दिया, वह नितब्ध, वह भी निस्तब्ध, अन्तमें उससे खुद न रह गया उसने मधुपात्र उठाकर उसका प्याला भर दिया, उसने उसे हाथोंसे लगाया और होठोंसे लगाते ही तप्त हो गया, ऐसा तृप्त जिसने उसकी तृष्णा और बढ़ा दी ।

शरीफ था तो परहेजगार, पक्का जाहिर । गांवमें कभी शराबकी चर्चा सुनता तो तौबा-तोबा कहने लगता पर आज न जाने क्या था कि वह चुप रह गया और इस कथाको केवल देखता ही न रहा वरन् स्वयं भी उसे वृद्ध मुसलमान पर और उसकी तरुणी पर मुग्ध प्रतीत होने लगा ।

* * *

स्वप्न कुछ बदला । वहीं बुड्ढा एक महलमें बैठा दिखलायी पड़ा । उसके शागिर्द इधर-उधर कुछ काम कर रहे थे । वह बैठा कुछ सोच रहा था । इतनेमें एक भिखमंगेने आवाज लगायी । जाड़ेका दिन था । वह ठिठुर रहा था । बुड्ढेने बाहर देखा । उससे न रहा गया । वह उसे अंदर ले आया । भरपेट भोजन कराके सोनेको कह दिया ।

इतनेमें बादशाह आ पहुंचे । बादशाहने कहा मुझे भोजनकी अधिकताके कारण पेटमें दर्द है । उसने बादशाहको भी उपचार बतलाया और वह चले गये ।

इन दोनों विरोधाभासोंने उसमें एक नयी चेतना-कर दी । उसका क्षण-क्षण पहाड़ सा बीतने लगा । दिनसे भी अधिक भारी उसकी वह रात हुई । उसने रात बड़े मुश्किलसे बितायी । दूसरे दिन सुबह होते ही उठा तब तक वह सुन्दरी भी सामने आ गयी । बुड्ढेने कहा-प्रिये वह संसार विरोधाभासोंका समिश्रण है । मैं अब यह विरोध अधिक देर तक नहीं देख सकता । आओ उठो! चलो चलें ! उस जगह जहां से यह शरद श्यामला भूमि न दिखलायी पड़े । जहां राजा रंकका भेद न हो । जहां भूखे तथा भोजनसे अधिकके शिकार न दिखलायी पड़े । जहां जाड़ेसे ठिठुरता और गर्मीसेपरेशान कोई न दिखलायी पड़े ।

वह ठिठकी । उसने पूछा वह कहां है साधु ।

उसने कहा- वह बुद्धिगम्य नहीं है । बैठे रहनेसे नहीं मिल सकता । चल देना ही उसका उपचार है । चलनेसे ही मिलेगा ।

पौ फूट रही थी । बुड्ढा और उसकी प्रेयसी दोनों चल पड़े । दोनों ओर बगलसे एकके बाद दूसरी अट्टालिकायें बीतती जा रही थीं, वे दूकानें जिनमें कल अभी शाम तक आकर्षण था, अभी बन्द थीं, भीड़को कौन कहे एक व्यक्ति भी उधर आकृष्ट नहीं हो रहा था, नीचेकी धरती उन दोनोंके एक-एक डग पीछे छूटती चली जाती चली और वे दो ! बिना दृष्टि घुमाये, निरन्तर। सीधे! बिनादृष्टिघुमये चले जा रहे थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

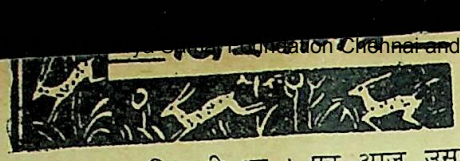

मुर्ग बांग दे रहा था । वलियां छिटक रही थीं कि रास्तेमें मधुशाला दिखलायी पड़ी । बूढ़ा घूमा उधर। बोला–खोलो ; तृप्त होनेंके लिये । अभी तुम नींदमें सोए ही रहोगे ।

अन्दरसे आवाज आयी । अभी बड़ा सबेरा है । ठहरकर आना ।

बुड्ढ़ा-हंस पड़ा। अभी तो तुम रातको सबेरेकी ही प्रतीक्षामें दूकान बन्द कर रहे थे । अब जब सुबह आयी तब फिर यह उससे विरक्ति कैसे ? फिर क्यों आनेको कहते हो । यहां फिर का क्या ठिकाना है । अभी जो है वही है, आगेकी कल्पना कैसी ?

उसने कहा—उफ ! तुम तुम उठाये बिना नहीं छोड़ोगे । बुड्ढ़ा और जोरसे हंसा । ठीक तुम क्या जानो मधु क्या है ? मधु तुम्हारे पास होते हुए भी तुम उससे मुक्त हो । उठो खैर मझे ही दे दो । मैं एक प्यालेमें भूत और भविष्यकी दोनों भावना वर्तमानमें ही डुबा हूं ।

वह उठ बैठा । उसने इनका खोली । तब तक आजानकी आवाज कानमें आ पड़ी । बड्ढ़ा बोला—तुम नहीं जानते । यह मुझे जान क्या कह रहा है ? कहता है कि जो लोग कलकी कल्पना करते हैं और आजका भोग नहीं करते उनकी कल्पना कभी भी पूरी नहीं होने की । उसने उसे मधु दिया । बुड्ढ़ा आगे बढ़ा ।

अब बस्ती समाप्त हो गयी । निर्जन पथपर केवल दो पथिक । पौ फटने लगा । पर कदमपर कदम उठता चला गया । दोनों ही चले जा रहे हैं ।

घण्टों चलनेके बाद सामने एक मग्न प्रसाद दिखलायी पड़ा । उसकी प्रेयसीने पूछा—यह क्या है ?

उसने कहा—यह वह स्थान है जहां शाह जमशेद रहा करता था । एक समय था जब यह स्थल ऐश्वर्यकी पराकाष्ठा समझा जाता था । पर आज यहां श्रृंगाल ही प्रहरी बने हैं । तब तक सामने एक कब्र दिखलायी पड़ी । उसने कहा—यह देखो बहरावकी यह कब्र है । पर एक दिन विख्यात शिकारी था । पर आज उसकी कब्रपर गधा अपने टल चला रहा है और वह अपनी चिर निद्रामें ही मग्न है ।

पूछो तुम बहरावसे आज उसका शौर्य कहां गया, पूछो जमशेदसे आज उसका ऐश्वर्य कहां गया । यह विश्व है जिसने करोड़ों स्वर्ण मुद्रायें मरमर एकत्र किया उसका भी वही अन्त है जो उस फकीर वद्धाकी जो सड़कके किनारे भिक्षा मांग रही थी ।

उसने–कहा अब यह सब नहीं सुना जाता प्राण ! तुम कुछ और कहो ! यह विश्व बड़ा ही विषम है ।

बुड्ढ़ा मुस्करा पड़ा—उसने कहा —विषम नहीं है । विषम उनके लिये है जो कल और आजमें भेद करते हैं । जो मुझमें और तुममें भेद करते हैं । कितना रूप है कि यही आजका मैं ही भविष्यकी एक कल्पना भी था और अभी पल मारते सदियों की एक चीज हो जाऊंगा ।

उसने कहा—तो फिर !

बस चलो ! चले चलो !! चले बिना शिर उठाये, बिना सोंचे, चलते ही चलना इस विश्वका आदि और अन्त दोनों है ।

स्वप्न फिर बदला ।

उसने देखा—वही दोनों निर्जन बनमें चले जा रहे हैं। आगे वह पीछे प्रेयसी। अब उसे किसीकी चिन्ता भी नहीं रह गयी किसीका ध्यान भी नहीं रह गया । बुड्ढ़ा टेढ़े सीधे रास्ते पर चला जा रहा है । ऐसे भी स्थल आते जब अनन्त मार्ग दिखलायी पड़ते । निदन एक पर नाहक चलने लगता । उसकी परछाईंके पीछे वह भी चली जा रही थी ।

अंधकार बढ़ा–परछाईं भी समाप्त हुई । अब वह काला धब्बा सा दिखलायी पड़ता । पर चलता ही चला जा रहा है । उसके पीछे वह भी चली जा रही है । अब वह भी एक धब्बा मात्र ही है । दोनोंके रूप समाप्त हो गये हैं । न वह बुड्ढा ही मालूम पड़ता और न वह युवती ही ।

अन्धकार बढ़ता जा रहा था कांटे झाड़ी बिना किसीकी परवाह किये दोनों धब्बे चले ही जा रहे थे । धैर्य समाप्त हो गया । उसने आवाज दी तुम कहां आ गये !

उस अन्धकारमें प्रकाश चिन्ह सी उसकी मुसकराहट दिखलायी पड़ी । उसने कहा– यही मुझे नहीं मालूम कि कहां आ गये । हवाकी तरह हमें चलना था, चलता रहा । अभी तो बहुत रास्ता बाकी है प्रिये ! अभी क्यों रोके दिया ।

'क्यों क्या रास्ता भूल गये ?'

'रास्ता- रास्तापर चलने वाला भूल नहीं कहलाता प्रिये ?' मैं झूला नहीं हूं । इन सभी मार्गोंको हमें पार ही करना है । पार न करूं तो करूं क्या ? जब बाध्य होकर हमें यही करना ही है तो फिर सोचूं कैसे कि क्य कर रहा हूं ? कहां पहुंचा ? यह तो मार्ग है बस चल रहा हूं यही जानता हूं । इससे अधिक कुछ जाननेकी फुरसत ही कहां मिली ।'

उसने कहा—तब आये क्यों ? क्यों स्वामी यदि यह अज्ञात है तो ? 'तुम आयी–पारा बतला सकती हो ?'

'मैं तो अपने स्वामीकी परछाईं देखती आयी ।'

'ठीक तुमको तो वह परछाईं दिखलायी भी पड़ती है पर मेरे सामने तो एक अदृष्ट परछाईं चली जा रही है । मै उसे देखता चला आ रहा हूं। वह मुझे खींचता चला जा रहा है । मुझे इससे अधिक तो कुछ न मालूम हुआ ।

'ऊफ ! इससे अच्छा तो नैशपुरमें ही था । वहां दरबारसे खिलचत तो मिलती थी । यहां हमको तुमको कौन पूछेगा ।

'हमें और तुम्हें पूछनेकी आवश्यकता ही क्या है प्रिये, । खिलअतकी क्या बात है । खिलअत मुझे क्या देगा, । मैं तो कहता हूं कि इसी वृक्षके नाच तुम बठकर मुझ एक संगीत सुनाओ और एक टुकड़ा रोटी —हमें तुम्हें खानेको मिल जाय और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी शराब पीनेको मिल जाय तो यही मैं इन्द्रपुरीका राज्य मान लूं।'

'वह झेंप गयी ।

वह खिल उठा

वह फिर आगे बढ़ा

वह पीछे पीछे ।

अब सुबह हो रही थी । दोनों चले जा रहे थे ।

वह बोली--पौ फट रहा है ।

'फटने दो प्रिये ! ये दिन और रात दो फाटक हैं जो मानव जाति जीवनमें नित्य प्रति आया जाया करते हैं । जीवनमें कितनी बार दिन आये, रात गयीं कुछ समझमें नहीं आता ।

'हां यह तो है ही ।' नैशपुर, में हम लोगोंको लोग खोजते होंगे ।'

'खोजने दो ! दूसरोंकी क्या चिन्ता है । छोड़ो उनकी चर्चा । दूसरोंको लेकर अब क्या करेंगे, रुस्तम जैसे सोता हो सोने दे । वह हमारे तुम्हारे जगाये तो जगनेका नहीं, दाऊदको पड़ा रहने दो, मुझको उनकी परवाह ही क्या है ? मैं उनको समझता ही क्या हूं ? तुम मेरे साथ रहो ? यहां क्या कमी है ? दाऊद सो रहा है, साथ छोड़कर चला गया पर आज भी बुलबुलने तो अपनी बोली बन्द नहीं की । वह तो बोलता ही चला जा रहा है । वह यहां भी मौज़द ही है । गुलाब इस जंगलमें भी हैं ही । फिर क्या रखा है नैशपुरमें ;

तुम मुझे इस बसन्तमें एक प्याला भर दो ! मैं सब भूल जाऊं ! जिनकी मैंने चर्चा की है उनकी भी पुनरस्मृति पाप है । विस्मरण एक टिक़ान है जो नये बलसे हमें चला देगा ।

उसने तुरन्त एक अपना मधुपात्र खोला और उसे भर दिया । उसने उसे होठोंसे लगाया और खिल पड़ा ।

उसने देखा वह वे दोनों चल रहे थे । थक कर बुड्ढ़ा एक जगह बैठ गया । उसने कहा–मेरे जीवनको तुम द्राक्षारस देकर पुनः उद्दीप्त करो । मैं उसे पी लूं । और तब जीवन लीला समाप्त करूं । उसके बाद भी मुझे मधुसे ही स्नान कराना और द्रक्षा-दलमें ही लपेटकर भूमिमें दफनकर देना ।

उसने उसका प्याला भर दिया । वह पीकर शांत हो गया । फिर वही स्थान आ गया उसी, रूपमें जहां वह लेटा था ।

स्वप्न समाप्त नहीं हुआ । उसने देखा बड़े-बड़े फाटकोंको पार करता हुआ वही बुड्ढ़ा बड़ी तेजीसे चला जा रहा है । सातवें फाटकके बाद उसे एक सिंहासन मिला । वह उसपर बैठ गया जैसे चिर परचित रहा हो ।

उसने कहा--मैं यहांतक पहुंच गया पर मुझे न बड़ा-बड़ा सामान मिला पर यह न समझमें आया कि मृत्यु क्या है ? और कीमत क्या है ?

मुझे नहीं समझमें आया कि यह जीवन क्या है ? लोग कल्पना वाले कलके फेरमें वर्तमान की उपेक्षा क्यों करते हैं ? लालसा क्या है ? मनुष्य उनके चक्करमें कैसे पड़ा रहता है ? और वे विघ्नोंको पाकर कैसे नष्ट हो जाती हैं ? जैसे मरुमें दो घड़ीके लिये हिमपात हो गया हो । रातभर जाग कर लोग कलकी कल्पना करते हैं परन्तु वह कल क्या है ? कल उनके दुखको बन्द कर देता है और उनकी कल्पनामें धरी रह जाती हैं ।

अतः अच्छा तो यह है कि दुनिया भविष्यकी अवहेलना न करे और कभी भूतका ध्यान भी न दें । और.....

इतनेमें वह आ पड़ी । बुड्ढ़ा खिल पड़ा । उसने कहा--क्या कह रहे हो खैय्याम !

कुछ नहीं, जो कुछ देखा था

आखिर सुखका रास्ता क्या है ?

यही कि जो होता जाय, होने दो !

यह प्राचीन पथिकशाला है, अहो

रात्र जिसके दो द्वार, खुलते और बन्द

होते हैं, बारी-बारी बारम्बबार !

कितनी तड़क-भड़कसे आये हैं कितने

सम्राट !

एक द्वारसे घुसे घड़ी भर ठहरे हुए अत्रसे पारदिंगदिगन्तमें एक आवाज आयी 'खैयाम जिन्दाबाद ।'

उससे स्वप्नमें नहा गया । उसकी सांस फूलन लगी । वह ऊबकर उट बैठा उसने देखा कहीं कुल न था ।

* * *

वह आंख मल ही रहा था एक बुड्ढ़ा सामनेसे गुजरने लगा । उसने प्रेमसे कहा --आओ बैठ लो दादा !

उसने कहा--यह रास्ता, बैठनेसे कटने वाला नहीं है । बस चल रहा हूं, इसीसे इसका अन्त होगा ?

'इसका अन्त क्या है दादा'

'कुछ नहीं, चलना । वह स्वयं अन्त बुला देगा'

वह भी उठा और चल पड़ा ।

---


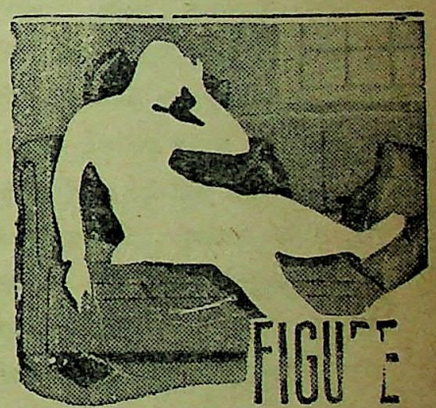


प्रशंसनीय रक्त परिष्कारक दूषित रक्तसे उत्पन्न होनेवाली समी बीमारियोंकी अचूक दवा तथा टानिक । सजन, बात, गठिया चर्मरोग, दुर्बलता घाव, फोड़ा फुंसी, गांठोंकी सजन जो रक्तकी कमी या दूषित रक्तसे उत्पन्न होता है,

AMRITABALLI KASAYA
restores vitality & strength
KAVIRAJ N.N. SEN & Co. LTD CALCUTTA


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दो विरोधी गुटोंके बीच भारतकी द्विविधा

लेखक—श्री नारायण

काश्मीरके मसले पर लेकसेसक्सेसके पिछले अनुभवोंसे पुनः जाहिर हो गया है कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें भारत अबतक एकाकी है । हमारी परराष्ट्र नीतिकी विफलताके सम्बन्धमें असंख्य आरोप और प्रत्यारोप लगाये गये हैं और राष्ट्र संघमें भारतकी निस्साहय अवस्थाके बारेमें काफी क्षोभ है । किसी प्रकारके विवादमें पड़े बिना यह बात कही जा सकती है कि परराष्ट्र नीति सम्बन्धी जसे महत्वपूर्ण विषय पर हमारे नेताओंने पूरी गम्भीरताके साथ विचार नहीं किया और इस पर काफी असम्बद्ध भावसे चर्चा की गयी है । इस बातको स्मरण रखना चाहिये कि भारतके राष्ट्रीय आर्थिक विकासके लिय सुदृढ़ परराष्ट्र नीति आवश्यक है । लेकिन हम देखते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें पाश्चात्य जगत दो पृथक गुटोंमें विभाजित होता जा रहा है और महान शक्तियोंके बीच स्थायी शान्तिकी आशाएं तेजीसे तिरोहित होती जा रही हैं ।

हालमें ही भारतके प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने घोषणा की है कि भारत किसी गुटबन्दीसे पूर्णतया पृथक रहकर तटस्थताकी नीतिका अवलम्बन करेगा । लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या भारतके पास अपनी स्वतन्त्र तटस्थ नीतिके अवलम्बनके लिये पर्याप्त शक्ति है ? एशियाके अन्य देशोंके सामने भी आज ऐसी ही द्विविधा उपस्थित है । इन बातोंको ध्यानमें रखते हुए प्रगतिशील, ईमानदार और स्वतन्त्र परराष्ट्र नीति का अवलम्बन करनेकी पण्डित नेहरूकी घोषणाका स्पष्ट रूपसे विश्लेषण आवश्यक हो जाता ह । पण्डित नेहरूने कहा था कि "भारत पूर्ण स्वतन्त्र और सार्वभौम प्रजातन्त्र होगा और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें अपना स्वतन्त्र अस्तित्व कायम रखेगा । भारत किसी भी गुटमें शामिल नहीं होगा और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें उसके सभी कार्य अपने स्वार्थके अनुसार होंगे । विश्वके सभी शोषित और पीड़ित राष्ट्रोंको भारत सहयोग और समर्थन प्रदान करेगा ।" इस नीतिकी सुदृढ़ताको कोई व्यक्ति अस्वीकार नहीं कर सकता, किन्तु सवाल यह उठता है कि इन आदर्शोंको किस प्रकार कार्य–रूपमें परिणत किया जा सकेगा । यह सुस्पष्ट है कि वर्तमान युगमें कोई भी देश पूर्णतया तटस्थ होकर रहनेकी आशा नहीं कर सकता । अपने राष्ट्रीय हितों की हिफाजतके लिये किसी भी देशको अपने उद्योगोंका विकास कर अपनी ताकत को बढ़ाना जरूरी होगा तथा बाहरी दुनियामें उन सभी राष्ट्रोंके साथ उसको सहयोग और मैत्रीके सूत्रमें आवद्ध होना होगा, जिससे उसके निजी स्वार्थोंकी हिफाजत हो सकेगी, और विश्वशान्ति कायम रह सकेगी । अन्यथा यदि उसके पास अपनी तटस्थताको कायम रखनेकी पर्याप्त शक्ति नहीं रही तो, आसन्न संकटमें उसको भी अनिवार्य रूपसे लिप्त हो जाना पड़ेगा । अतएव सम्भावित आक्रमणके विरुद्ध पूर्ण सुरक्षाके साथ भारतके सार्वभौम अधिकारोंका शान्तिपूर्वक उपभोग करनेकी व्यवस्था सर्वाधिक आवश्यक है ।

इसको स्पष्ट करनेके लिये हम डेनमार्क, हालैण्ड और नावका उदाहरण लें । पिछले महायुद्धमें इन तीनों देशोंको वाध्य होकर लिप्त होना पड़ा था । हिटलर ने इंगलण्डके चतुर्दिक पनडुब्बियोंका घेरा डालनेके लिये इन देशों पर अधिकार जमा लिबा था । यदि इन तीनों देशोंके लिये सम्भव होता, तो वे तटस्थ रहना अधिक पसन्द करते । इससे प्रकट होता है कि सामरिक वृष्टिसे दुर्बल राष्ट्र के तटस्थ रहने अथवा नहीं रहनेकी बात उसकी अपनी इच्छा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि अधिक शक्तिशाली युद्धलिप्त राष्ट्रोंकी सामरिक तथा फौजी आवश्यकताओं पर उसकी तटस्ता निर्भर करती है और तटस्थ देशकी भौगोलिक स्थिति तथा प्रतिरोध–शक्ति पर प्रधानतः युद्धलिप्त राष्ट्रोंके निर्णय निर्भर करते हैं । अब हम भारतकी स्थिति पर विचार करें । भौगोलिक दृष्टिसे हमारा देश हिन्द महासागरके मध्यभागमें अवस्थित है और इ स कारण मध्य अथवा सुदूर पूर्वमें युद्धका इसको प्रधान केन्द्र बनानेके लिये युद्धलिप्त राष्ट्रोंकी दृष्टिमें इसके महत्वको अस्वीकार नहीं किया जा सकता । अतएव प्रश्न यह उठता ह कि अपनी अत्यधिक महत्वपूर्ण सामरिक स्थितिको देखते हुए भारत अपने राष्ट्रीय स्वार्थोंकी हिफाजत करने और महान त्रिराष्ट्रोंकी शक्ति राजनीतिमें लिप्त हुए बिना विश्वशान्तिको कायम रखनेमें किस हदतक समर्थ हो सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलके साथ भारतके सम्बन्धके बारेमें सबसे पहले विचार करना जरूरी है। पण्डित नेहरूने कहा था कि अन्तिम निर्णय चाहे जो कुछ भी हो, यह निश्चित है कि भारत पूर्णतया स्वाधीन और सार्वभौम प्रजातन्त्र होगा। भारतकी वैधानिक स्थितिके सम्बन्धमें शीघ्र ही निर्णय हो जायगा और जनसाधारणका ऐसा खयाल है कि भारत अवश्य ही ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलसे पृथक हो जायगा। किन्तु भारत महासागरके तट पर सभी महत्वपूर्ण सामरिक अड्डे—अदन, सिंगापुर और लंकाके जंगी जहाजी अड्डे-ब्रिटिश अधिकारमें हैं और यदि ब्रिटेन युद्धलिप्त हुआ, तो भारतके लिये अपनी तटस्थता पर अटल रहना कठिन हो जायगा।

अतएव अपने समुद्र-तटकी रक्षाके लिये सुदृढ़ और साहसपूर्ण कायवाही आवश्यक है। भारतकी तटस्थता पर आघात करनेवाले किसी कार्यको अत्यन्त संगीन विषय समझा जाये और उसके प्रतिकारके लिये कड़ीसे कड़ी कार्यवाही की जाये। इस कारण भारतकी सामरिक शक्तिमें वृद्धि सर्वाधिक जरूरी है, किन्तु यह भी तीव्र औद्योगीकरण द्वारा देशके आर्थिक विकास पर निर्भर करता है। गृह-क्षेत्रके समान अन्तर्राष्ट्रीय क्षत्रमें भी "औद्योगीकरण करो अथवा विनष्ट हो" का नारा लागू होता ह। इसके बाद अन्य देशोंके साथ मैत्री सम्पर्कका प्रश्न उठता ह। यद्यपि यह सच है कि सभी राष्ट्र अपने स्वार्थसे सम्बन्धित नीतिका अनुसरण करते हैं, फिर भी अमेरिका और सोवियट रूसके दो परस्पर विरोधी गुटोंके बीच मौलिक सैद्धान्तिक पार्थक्य रहनेकी बातको अस्वीकार नहीं किया जा सकता। विश्व की समग्र मानव जातिमें भावी महायुद्धका भय तीव्र वेगसे फैल रहा ह और यह महायुद्ध इन दोनों विरोधी गुटोंके बीच अत्यन्त सुविस्तृत पैमानेपर होगा तथा उभय पक्ष अधिकाधिक विस्तृत क्षेत्रमें अपने आर्थिक ढांचेको लागू करनेका यथासम्भव प्रयास करेंगे। ऐसी अवस्थामें यदि हम तटस्थ रहेंगे, फिर भी विजेता शक्तिके आर्थिक घेरेमें भारतके आ जानेकी पूरी सम्भावना है। अतएव सारे प्रश्नों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने और इस बातका निर्णय करनेका यही मौका है कि कौन-सी आर्थिक प्रणाली और आदर्श भारतके स्वार्थ तथा विश्वशान्ति और प्रगतिके लिये हितकर साबित होगी। लेकिन जैसा कि पण्डित नेहरूने कहा है कि भारत बीचका रास्ता ग्रहण करेगा, तो उस नीतिको कार्यान्वित करनेके लिये सुदृढ़ कार्यवाहीकी अविलम्ब आवश्यकता है। तटस्थ रहकर विश्वमें शान्ति कायम रखनेका आदर्श अत्यन्त उन्नत है, किन्तु भारतका यह आदर्श तबतक सफल नहीं हो सकता, जबतक उसके पास सुदृढ़ सामरिक शक्तिका अभाव रहेगा। भारतकी शक्तिमें इतनी वृद्धि होनी चाहिये, जिससे सभी राष्ट्र उसकी क्षमताको स्वीकार कर सकें, साथ ही भारतकी परराष्ट्र-नीतिका स्वरूप इस प्रकारका होना चाहिये, जिससे हमारी आन्तरिक शक्तिके विकासमें उससे सहायता प्राप्त हो सके। त्रिंकोमलीमें ब्रिटिश जंगी जहाजी अड्डा भारतके हृदय पर संगीन के समान है। भारत महासागरपर भारतका पूर्ण नियन्त्रण आवश्यक ह, जिससे युद्धलिप्त शक्तियोंके जंगी जहाजी आक्रमणों के खतरोंसे भारतीय समुद्र तटको पूर्णतया सुरक्षित रखा जा सके। इसके लिये समुद्र तटवर्ती एशियाई देशोंके बीच मैत्री सम्पर्ककी सबसे अधिक जरूरत है, जिससे वे अपनीएकता और तटस्थताको बाहरी हस्तक्षेपोंके खिलाफ मुक्त रखनेमें समर्थ हो सकें।

भारतकी परराष्ट्र नीति संसारके शोषित और पीड़ित देशोंकी सेवा और सहायता करने की है। लेकिन हम इस आदर्शको कार्यान्वित करनेमें शक्ति और एकताके अभावके कारण सफल नहीं हो सके हैं। अतएव सर्व प्रथम आवश्यकता कुछ निश्चित आधार पर एशियाई संघके गठन की है, जो अमेरिका की पूंजीवादी नीति और सोवियट रुसकी आक्रमणात्मक तानाशाही नीतिके प्रभाव से पूर्णतया मुक्त रहेगा और इस प्रकार एक तृतीय गुटका निर्माण होगा, एशियाई देशोंके स्वार्थोंकी हिफाजत करेगा। विश्व शांतिकी स्थापना गणतंत्र और समाजवादके सहयोगसे करनेका इस संघका निश्चित कार्यक्रम होना चाहिये और ऐसा होनेपर ही एशियाई देश युद्धके खतरोंसे मुक्त रहकर विश्व शांतिमें सक्रिय सहायता प्रदान कर सकते हैं। हम देख रहे हैं कि पाश्चात्य जगतमें आज किसी अन्यके नाम पर किसीके स्वार्थको नष्ट किया जा रहा है, किसीके लिये किसी अन्यका बलिदान हो रहा है। लेकिन इस बातको हमेशा ध्यानमें रखना होगा कि कोई भी देश बिलकुल एकाकी रहकर अपना अस्तित्व कायम नहीं कर सकता, सभीको किसी अन्यके सहयोगकी आवश्यकता होती है। भारतके नेतृत्वमें यह तीसरा गुट ही एशियाई देशों के स्वार्थोंकी रक्षा करने और विश्वशांति में सक्रिय सहयोग देनेमें समर्थ हो सकता है। यही संघ अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें हमारे सभी आश्वासनोंको पूर्ण करनेकी हमें शक्ति प्रदानकर सकता है। राष्ट्र संघ भी इस प्रकारके क्षेत्रीय गुटोंके महत्वको स्वीकार करता है और इसके लिये अपने क्षेत्रमें क्षेत्रीय व्यवस्था करनेकी इसने विशेषरूपसे स्वीकृति दे रखी है। पिछले कुछ समयसे भारत महासागरके सम्पूर्ण तट प्रदेशोंमें फौजी हवाई और जंगी जहाजी अड्डोंका निर्माण करनेकी पाश्चात्य शक्तियों द्वारा जबर्दस्त चेष्टाएं की जा रही है।

यदि भारत शस्त्रबलसे अपनी तटस्थता को क़ायम रखने और उसकी हिफाजत करनेके लिये अपनेको पूर्ण शक्तिशाली नहीं बना लेगा तो तृतीय विश्वयद्ध छिड़ने पर वह अपनी महत्वपूर्ण सामरिक परिस्थितिके कारण युद्ध लिप्त होनेको बाध्य हो जायगा। किन्तु मात्र तटस्थ रहकर पूर्ण सफल नहीं हो सकता। सभी साम्राज्यवादी चेष्टाओंको विफल करनेके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



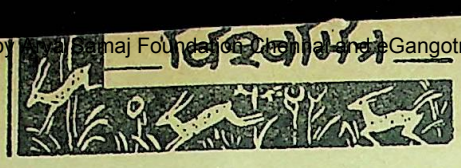

उसको एशियाकी सारी प्रगतिशील शक्तियोंके सहयोगसे कार्य करना होगा। विश्व-शांति कायम रखनेकी चेष्टाको सफल करनेके लिये एशियाई संघका गठन सर्वाधिक आवश्यक है। इसका कारण यह है कि संसारकी आधुनिक सामरिक शक्तिको देखते हुए एशियाई देशोंकी सामरिक शक्ति उसके प्रचुर जन और भौतिक साधनोंके बावजूद अत्यन्त नगण्य है तथा जहांतक औद्योगिक ताकत और फौजी साधनोंका संबंध है, एशियाई देश इस दिशामें पाश्चात्य देशोंसे अबतक बहुत पिछड़े हुए हैं। अतएव उनकी तटस्थता को कार्यकारी बनानेके लिये एक सुदृढ़ संघके गठन से ही उनको पर्याप्त शक्ति प्राप्त हो सकती है।

एशियाई देशोंके किसी सुदृढ़ संगठनके अभावके कारण ही अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें उनकी अवस्था बिलकुल निस्सहाय हो रही है और महान शक्तियोंकी कहपुतली बन कर उनको रहना पड़ रहा है। ऐसी भी खबरें मिली है कि भारत, पाकिस्तान, मलाया,बर्मा और लंकाके साथ देश रक्षा और सामरिक f सन्धि करनेकी ब्रिटेन द्वारा चेष्टाएं की जा रही हैं। ब्रिटेन की इन गुप्त कार्यवाहियोंके खिलाफ दृढ़ रुख अख्तियार करनेकी आवश्यकता है। सिर्फ पवित्र इच्छाओं और उच्च आदर्शोंसे कुछ भी लाभ नहीं होगा। महान शक्यिोंकी दलगत राजनीतिसे चाहे हम कितने भी निराश हो चुके हों, हम बिलकुल एकाकी रह कर अपने आदर्शोंकी पूर्ति करनेकी आशा नहीं कर सकते। भारतको अन्ततः एशिया में शक्ति रखनेके लिये तृतीय गुटका अब अवश्य ही संगठन करना होगा। अतएव सर्वप्रथम आवश्यकता भारतको औद्योगिक और सामरिक दृष्टिसे सुदृढ़ बनानेकी है और ऐसा होने पर ही भारतकी परराष्ट्र नीतिको बल मिल सकता है। इसके बाद एशियाई देशोंके संघका संगठन करनेका आयोजन जरूरी है। महात्मा गांधीने भी गत वर्ष दिल्लीमें आयजित एशियाई सम्मेलनमें एशियाई संघके गठनें पर जोर दिया था और सम्मेलनने भी एशियाई संघके गठनके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया था, लेकिन उसकी अबतक पूर्ति नहीं हो सकी है और हमें इस कार्यको अविलम्ब सम्पन्न करना होगा, अन्यथा विश्व शांतिमें सक्रि सहयोग प्रदान करनेके हमारे आदर्श सफल होना सम्भव नहीं होगा।

---


# प्रभावशाली व्यक्ति

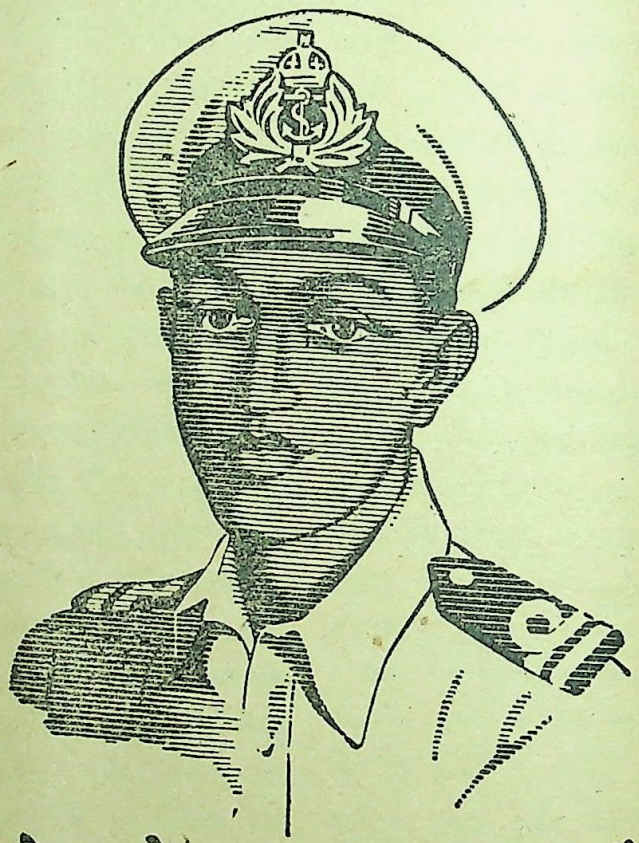

## जीलेट से हजामत बनाते हैं।

प्रभावशाली व्यक्ति जानते हैं कि यदि उनकी आकृति में दोष है तो वे अपने कर्तव्य का पालन आत्मविश्वास के साथ नहीं कर सकते। ये व्यक्ति सदैव जिलेट से हजामत बनाते हैं क्यों कि अनुभवने उन्हें सिखा दिया है कि जिलेट ब्लेड ही सबसे सूक्ष्म, स्वच्छ और रौबिली हजामत बनाते हैं जो उन्हें सदैव से ज्ञात है।

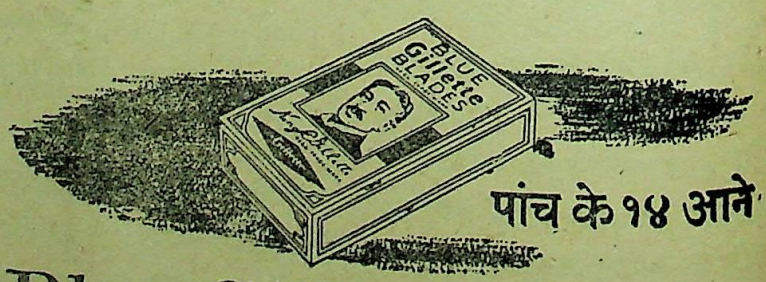


पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्ल्यू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!


CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e

# नेपामिल

कृष्णाचार्य, मथुरा

स्वतत्र भारतम बहुतसे उद्योग धंधों को उन्नत करनेकी चर्चा है । यह चर्चा स्वाभाविक है--क्योंकि इसके कारण अनेक हैं । देशको सुदृढ़ बनानेके लिये, जनता को लाभ पहुंचानेके लिये तथा नवीन वैज्ञानिक आविष्कारोंका पूर्ण सुपयोग करने की दृष्टिसे भी उद्योग-धंधोंको समृद्ध करने की आवश्यकता है । उदाहरणके लिये, यातायत के साधनोंको सरल करनेके लिए यह आवश्यक था कि रेलों और जहाजोंकी वृद्धिकी जाय । भारतमें डिब्बे आदि तो बनते थे । इंजन बाहर से आता था, लेकिन इस वर्षके अंत तक टाटा सुंदर और मजबूत इंजन भी देने लगेगा । जल-पोतोंका कारखाना भी विजगापट्टमके पास खुल गया है, समाचार पत्र पढ़नेवाले जानते ही हैं कि पं० नेहरूने भारतमें बने प्रथम जलपोतका उदघाटन किया था ।

शिक्षा और प्रचारके क्षेत्रमें भी जागृतिके लक्षण दिखलायी देने लगे हैं । इस संबंधमें सबसे अधिक समस्या कागज की थी । कागजमें भी समाचार-पत्रोंके कागजकी भारी समस्या थी । इसका कागज सस्ता होना चाहिये ताकि भारी रोटैरी मशीनों के फटक को सह सके । भारतमें यह कागज नहीं बनता था । संसार में भी इस प्रकार का कागज बनानेवाले देश केवल कनाडा, अमेरिका, स्केल्डेनेविया, फिनलैंड, रूस और आस्ट्रेलिया हैं । अब पांचवां देश भारत भी होने जा रहा है ।

भारतमें कागज निर्माणकी कई एक घटना है । भारत सरकारका खोज विभाग कई बार चेष्टा करके हारे गया।। पी० एन० नायर भारत सरकारके एक कर्मचारी है । उनकी स्त्री पुस्तक विक्रेता हैं । आजकल आये दिन पुस्तक प्रकाशकोंको कागजकी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है । सो नायर महोदयने सरकारसे त्यागपत्र दे दिया और समाचार-पत्रका कागज निर्माण करनेकी बात मन में ठान ली । वह रातदिन अखबार के कागजका आविष्कार करनेमें जुट गए । सच्चे मन से काम करनेका फल नायर महोदयका बहुत अच्छे रूपमें मिला, वह यह कि--

भारतमें अगले वर्षसे तीस हजार टन कागज होने लगेगा । इसका मतलब यह हुआ कि भारतके वर्तमान कागज व्ययकी मांग नवीन मिल पूरी करेगी । जो मिल देशकी इतनी बड़ी मांग पूरी करेगी उसके संबंधमें कुछ थोड़ीबहुत जानकारी प्राप्त करनेकी उत्सकता अपेक्षित ही है । कनाडामें कागज विशषज्ञ कागजका नकशा प्रस्तुत कर रहे हैं, मशीन भी तैयार कर रहे हैं । अंतमें भारत अपने व्यय योग्य कागज प्रस्तुत कर सकेगा ।

इस मिलका नाम नेपा मिल रहेगा । सी० पी० में बंबई-दिल्ली मार्ग पर जी० आई० पी० रेल पर चांदनी नामक छोटा सा स्टेशन हैं । इस स्टेशनसे साढ़े तीन मील दूर यह मिल घोर जंगलोंके बीचमें बनाया जायेगा । इस जंगलके निकटतम गांव दो मील पर है जिसकी आबादी भी पू० मनुष्यों से ऊपर नहीं है । चीते और अन्य भयानक जानवर स्वतंत्रता पूर्वक घूमार कते हैं । चांदनीसे मिलस्थान तक की सड़क बनानेका काम प्रारंभ हो गया है । दो एक दम नये ट्रेक्टर जंगलको साफ कर रहे हैं । मिलके एक मील पास ही ताप्ती नदी है--उससे आवश्यक पानी मिल सकेगा । विशष जानकारोंका अनुमान है कि दो वर्षसे कम समयमें ही यह स्थान तीस हजार मनुष्योंके रहने योग्य कस्बाबन जायेगा । भविष्यमें गांव से कस्बा और कस्बेसे नगर बनजानेकी संभावना है ,अतः नेता नगरको सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक ढंगसे बनानेका विचार है । बहुधा देखा यह जाता है कि मिलके क्षेत्र गंदे रहते हैं । किन्तु कमसे कम व्यय से स्थानको स्वच्छ, स्वास्थ प्रद और शोभ- के कीटाणुओंसे बाचत नहीं है, किन्तु गत महायुद्धने इस कीड़ेसे युद्ध करनेका मार्ग निकाल लिया है । अतः योजनाकारोंको सफलताकी पूरी आशा है ।

यह मिल भारतके लिए एक गौरव की वस्तु होगी । यह मिल भारतको सस्ते से सस्ता और पुख्ता से पुख्ता कागज देगी । कुछ दिनों पहले सन् ४६में तो भारतीय सरकारका यह अनुमान था कि भारतको समाचार-पत्रके कागजके लिए विदेशोंका मुहें जोहना पड़ेगा । किन्तु अब यह विश्वास है कि भारत को संसारका सबसे बढ़िया समाचार-पत्र कागज देनेका सौभाग्य प्राप्त होगा, सबसे सस्ता कागज देनेका गौरव मिलेगा । इस व्यवसायको प्रतियोगिताका भय भी नहीं है--इसके दो कारण हैं--पहला यह कि संसार भरमें इस प्रकारके कागजकी कमी है, दूसरे यह कि भारतमें बने कागजकी लागत अत्यन्त कम होगी । इस समय भारतको छोड़ संसारमें कहीं भी नयी मिल बननेका समाचार नहीं है एक और विचित्र बात है ! विदेशोंमें यह कागज जिस लकड़ी बनता है वह चालीस वर्षमें तैयार होती है । भारतमें यह कागज जिस लकड़ीसे बनेगा वह दस वर्षमें ही तैयार होगी । तत्काल भी सी० पी० के इस जंगलमें १२० वर्षके लिए लकड़ी है ।

यह व्यवसाय मुख्यतः साकारी व्यवस्था ही है क्यों कि आधेसे अधिक हिस्से प्रांतीय ही है क्यों कि आधे से अधिक हिस्से प्रांतीय सरकारके होंगे । भारत सरकार प्रत्येक प्रकारसे इस धंधेको पनपानेका प्रयत्न कर रही है । एशियामें एक भी ऐसी व्यवस्था नहीं है जो मुद्रण-कागज तैयार करता है ? यों सारा एशिया

शिक्षा औ साक्षरता--प्रसारके लिये प्रयत्नशील है । उसकी आवश्यकताएं कैसे पूर्ण होंगी ! जो भारत आज तीस हजार टन समाचार-पत्र कागज काममें लाता है वही पांच वर्षमें एक लाख टन कागज प्रयोगमें लानेकी आशा कर रहा है ।

यह नवीन खोज इतनी आश्चर्यजनक है कि विश्वास करना कठिन था । नायरने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो १९४६के अक्तूबरमें ही घोषणा की थी कि भारतमें भी कागज बन सकता है। सरकारने इस राष्ट्रीय मिलको 'नेशनल न्यूज प्रिंट एण्ड पेपर मिल्स' लिमिटेड कम्पनीका रूप तो दिया, लेकिन मिलको अब भी निश्चयात्मक प्रमाणोंकी आवश्यकता है। इस बातको सिद्ध करनेके लिये कनाडाके डा० केम्पबैलको बुलाया गया। आप कनाडाको कागज शास्त्र के सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ हैं। आपने भी दस महीने तक अनुसंधान किया तथा अन्तमें उन्होंने भी महाशय नायरके सिद्धान्तको और भी अधिक विश्वासके साथ प्रगट किया कि भारत तो सर्व श्रेष्ठ कागज बना सकता है! फिर क्या था? सी० पी० सरकारने पिछले साल अक्तूबरमें मिलका काम पूरा करानेका वचन दिया। प्रान्तीय सरकारने भी दस प्रतिशत हिस्से ले लिया, नदी, बिजलीकी सुविधा देनेका वचन दिया। दस हजार वर्ग मील जंगल लकड़ी काटनेके लिये तथा एक सौ वर्ग भूमि लकड़ीकी खेतीके लिये अर्पित कर दी है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि इस प्रयोगसे उत्साहित होकर कुछ वैज्ञानिक अवश्य ही भारतके विभिन्न भागोंकी छानबीन और अनुसंधानमें व्यस्त होंगे।

वह दिन बहुत दूर नहीं है जब, हम सबको समाचार-पत्र आजसे आधे मूल्य में मिलने लगेंगे। देशमें इस प्रकारके कागज के उत्पादनसे पुस्तक व्यवसायमें भी क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा। अभीतक रूसने ही इस प्रकारके कागज पर प्रचुर परिमाणमें पुस्तकें छापी हैं--अब भारतमें भी उस पर पुस्तकें छपेंगी--परिणामतः जनता को अच्छी पुस्तकें भी कम मूल्य पर सुलभ होंगी।

---


रियायती दामोंपर

उच्चतम क्वालिटी की लीवर घड़ियां।

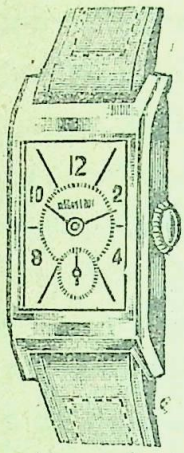

अत्यधिक सस्ती कीमतों स्विट्जर लैन्डकी बनी नई डिजाइनकी निहा सुन्दर ठीक समय देनेवा हर घड़ीकी गारंटी स तीन साल। क्रोमियम के की गोल या चौकोर सुपीरियर फैन्सी डायल १८)वेस्ट सेन्टर सेकन्ड ४ ज्वेलको गोल २०) रेक्टेंगुलर और टोनियो आकारकी चित्र घड़ियां उज्वल क्रोमियम केसकी, ५ वल रोल्ड गोल्ड ५ ज्वेल की ५०) वेस्ट क्रोमि केस ४२) रोल्ड गोल्ड ५३)। क्रोमियम १५ ज्वेल ६३)। स्लट शेप ४०) रोल्ड गो ६०) वेस्ट टोनियो शेपकी ७८)पैकिंग पो माफ। हर घड़ीके साथ एक फीता फै डिजाइन का दिया जाता है।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V. C.)
ऐशबाग गेट लखनऊ

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

### पांचदिनका बच्चा चल उठा

अमेरिकामें सबसे अधिक पुष्ट बच्चा लेविस्टनमें २१ वर्षीया श्रीमती ल्यूसीन कौलरेमको पैदा हुआ था। यह बच्चा जब ५ दिनका था तभी अपनी माताकी अंगुली पकड़कर डगमगाता चलने लगा और कभी रोया तक नहीं। इस बच्चेको देखनेके लिये महिलाओंका तांता बांधा है। पुलिसने उक्त महिलाको चेतावनी दी है कि वह इस तरह प्रदर्शनी बनाकर अपने बच्चेका स्वास्थ्य न बिगाड़ दे।

### गलेकी पतवारसे कागज

युक्त प्रांतीय औद्योगिक विशेषज्ञोंने परीक्षाके बाद यह मालूम किया है कि गन्नेमें से रस निकाल लेनेके बाद जो पतवार बच जाता है उसका बहुत बढ़िया कागज बन सकता है। युक्तप्रांतमें प्रति वर्ष लगभग ७५०००० टन पतवार चीनीके कारखानोंमें आगकी भेंट कर दी जाती है। विशेषज्ञोंका कहना है कि इस पतवारका एक तिहाई भाग कागज बनानेके काम में लाया जा सकता है। इस पतवारसे बोरे भी तैयार किये जा सकते हैं।

### भविष्यमें शीशेके सिक्के

अब तक हम सोने, चांदी, जस्ते, चमड़े आदिके सिक्कोंके नाम सुनते रहे हैं। लन्दनमें भविष्यमें शीशेके सिक्के तैयार किये जायेंगे। उन सिक्कोंकी अन्य बातें उसके भीतर फोटोकी तरह छपी रहेंगी। एक अन्वेषक विज्ञानीने अपनी फर्म लिये शीशेपर फोटोकी तरह प्रतिबिम्ब लेने की योजना कर ली है। अमरीकी कोष विभाग उसी प्रकार सिक्के बनानेकी बात सोच रहा है।

उक्त फर्म शीशेके गहने तैयार करनेमें सफल हो चुकी है। इन शीशेके आभूषणमें रंगीन चित्रकारी तथा फोटो स्पष्ट रूपसे आ जाते हैं।

शीशेपर चित्र लेनेके पूर्व उसे स्वच्छ तथा पारदशक बना दिया जाता है। फिर कुछ रसायनिक पदार्थ मिलाकर शीशेमें चित्र खिंच आनेकी शक्ति उत्पन्न हो जाती है। फिर उसे गरम कर तेज प्रकाशमें उसकी मूर्ति गढ़ी जाती है।

### उड़ती हुई रेल

लीजिये लन्दनमें उड़ती हुई रेलोंका आविष्कार हो रहा है। इसकी चाल प्रति घंटा २०० मील होगी। उसी तरह ५ मिनटके अन्दर ३० से ५० सवारियां निर्दिष्ट स्थानपर पहुंच जायेंगी।

आविष्कार कर्त्ताका दावा है कि इससे मकानोंको कोई क्षति नहीं होगी। न किसी प्रकारकी आवाज ही होगी। इसके निर्माणमें ढाई वर्ष समय तथा ८० अरब पौण्ड खर्च पड़ेगा।

### उत्तर भारतका मौसम

खगोला सम्बन्धी एक पुस्तकमें लिखा है कि उत्तर भारतके मैदानमें जब ठंढ होता है, तब ९ से १३ मीलकी ऊंचाई पर गर्मी होती है। इतना ही ऊंचाई पर आकाशमें ठण्ढ भी होती है। ऋतुका यह परिवर्त्तन नवंबरसे मई तकके मासोंमें ऊपरी वायुमण्डलमें एक विशेष कारणसे होता है। प्रतिदिन भारतके १२ स्टेशनोंसे उर्ध्व वायुमण्डलका संवाद रेडियो द्वारा प्राप्त किया जाता है।

### एक विचित्रता

एक ब्रिटिश अभिनेत्रीके पास एक भारतीयने एक पत्र लिखा है कि आप अपने पैरोंके अंगूठेके कटे हुए नाखून तथा पैरोंके चित्र भेज दें। इसके बदलेमें पत्र लेखकने १ पौण्ड चायभेजनेका विचार किया है। इस बातकी चर्चा जोरोंसे वहांके सिनेमा जगतमें फैल रही है।

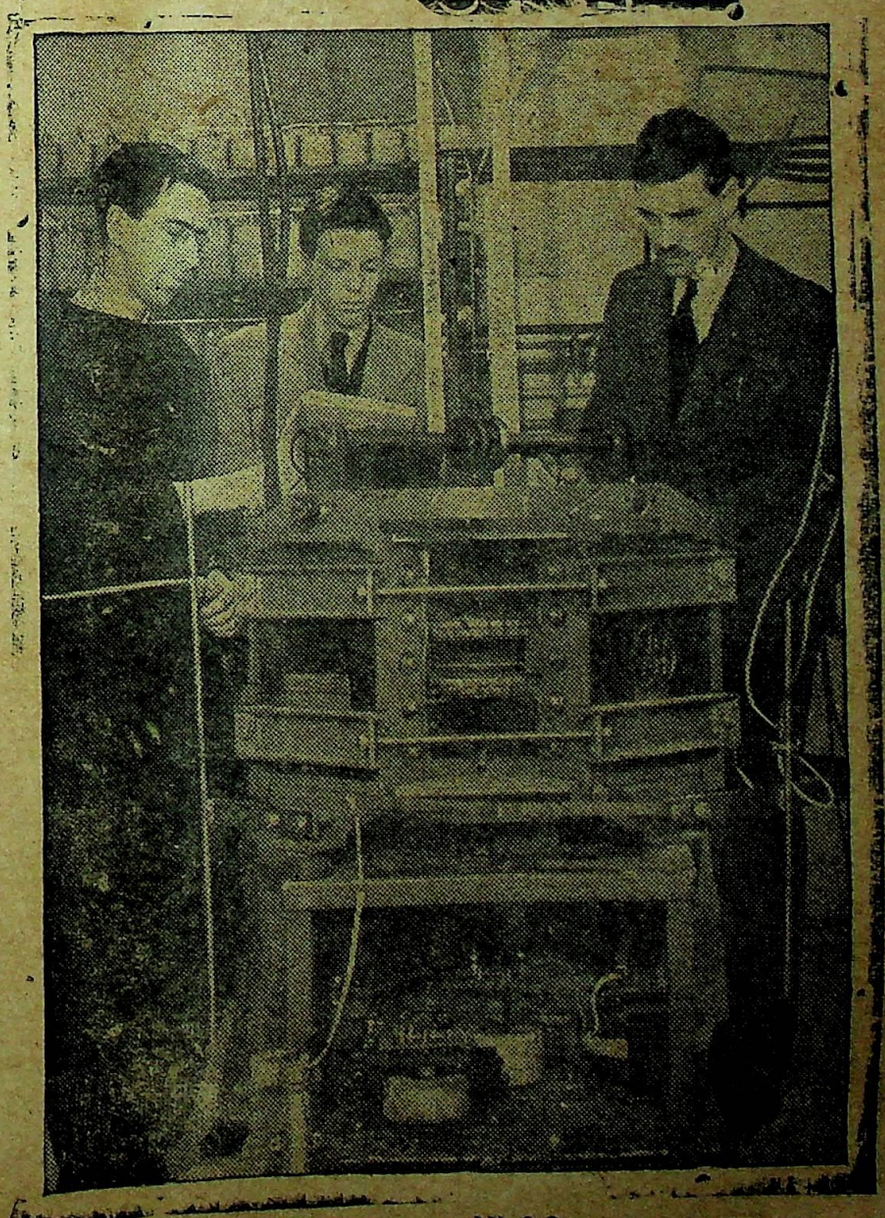

आग तलका अनुसन्धान करनेके निमित्त बना नया यन्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## श्रीराहुलजी.....

(२२व पृष्ठका शेषांश)

विषय था। आज भी राहुल जीके जीवनमें प्रचार कार्य उसी वेग से चल रहा है।

राजनीतिक जीवनके उस पहलूमें आपकी उतनी दिलचस्पी नहीं है जितनी धर्म तथा साहित्यके प्रचारमें फिर भी आपके जीवनके ७साल जेलमेंकटहैं रूसआज आपका स्थायी निवास स्थल सा हो गया है। भारत का भ्रमण करनेके साथ ही आपने तिब्बत, जापान, ईरान, और यूरोपकी भी आपने यात्रा की है। इन यात्राओंमें अपने धर्म तथा साहित्यके विषयमें व्याख्यान द्वारा प्रचार किया तिब्बतके यात्राके पश्चात् आप १७खच्चर ग्रंथ भारत ले आये। रूसी राजनीतिसे प्रभावित होकर निमन्त्रण पानेपर शिक्षकके रूपमें आप रूस गये और वहां एक रूसी स्त्री से विवाह भी कर लिया। हर्षकी बात है आप ढ़ाई वर्ष पश्चात् आज हमारे बीच साहित्य सम्मेलनकी अध्यक्षता करनेके लिये उपस्थित हुए हैं। हिन्दी साहित्य आप ऐसे प्रकांड विद्वानको पाकर अपनेको धन्य समझती है।

राहुल जीकी बहु मुखी प्रतिभा प्रशंसनीय है। हिन्दी और संस्कृतपर आपका समान अधिकार है। यदि हमें आपके साहित्यके ज्ञानको देखना है तो "वोल्गा से गंगा", "सिंह सेनापति" तथा "जय यौधेय" का अध्ययन करना होगा। "बौद्ध दर्शन", "बुद्धचर्चा" तथा "अभिधर्मकोशः" आपके धार्मिक तथा बौद्ध दर्शन ज्ञानके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। राहुल जी राजनीतिमें उतनीही सचिरखते हैं जितनी साहित्यतथा धर्ममें। "मानव-समाज" तथा "वैज्ञानिक भौतिक वाद" में राहुल जी ने अपने समाजवादीविचारोंकोजनताकेसम्मुखरखाहै; आपका दार्शनिक विचार उतना ही ऊंचा है जितना आपका साहित्य ज्ञान। प्रतिष्ठा और सम्मान के पीछे दौड़ना आपका ध्येय नहीं रहा। राजनीतिक विचार धारा कांग्रेस तथा साम्यवादके सिद्धान्तोंसे मिली जुली है। आपके व्यक्तित्वपर रूसी विचार धाराका विशेष प्रभाव है। आपकी साहित्यिक

कृतियां इतनी अधिक हैं कि प्रत्येक विद्वान आपकी विद्वत्तापर ईर्षा करता है। आपका पारिवारिकतथा सामाजिकजीवनप्रत्यक्षहै। रूस और भारत आपके कार्यक्षेत्र हैं।

पन्दहोका ग्रामीण ब्राह्मण, नानाके लाड़ प्यारमें पला हुआ राहुल, जीवन के प्रथम चरणमें कलकत्तेकी खाक छानने वाला आज संसारके महापुरुषोंमें एक होगा किसे ज्ञात था। राहुलजी रूसमें भारतीय दर्शनके प्रतिनिधि माने जाते हैं। आपका जीवन संकटका सामना करके आगे बढ़ने के लिये उत्साहित करता है। भगवान आपको दीर्घायु करें।

---

(२८ वें पृष्ट का शेषांश)

कर सके। अब हम अधिक दिनों तक यह सहन नहीं कर सकते कि रियासती दीवारों की आड़में सामन्तशाही यहांकी भोली-भाली जनताकी जिन्दगीसे अठखेलियां करती रहे और दुनियाकी प्रतिक्रियावादी ताकतोंको राजस्थानकी छिन्न-भिन्न अवस्थासे किसी भी प्रकारका बल मिल सके अब तक नौकरशाहीने, अनेकों प्रकारकी कूटनीतिक चालें चलकर हमें गुमराह करनेकी कोशिश की है। साम, दाम, दण्ड, भेद सब तरीकोंसे हमें अपनी वास्तविक स्थिति समझनेसे वंचित रक्खा है। किन्तु अब हमारी आंखें खुल चुकी हैं। समयका तकाजा है कि हम अपने आपसी मतभेदोंको भुलाकर वृहत्तर राजस्थानके निर्माणमें अपनी समस्त शक्तियोंको जुटा दें। जब तक हम ऐसा नहीं करते हमारा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचा बीसवीं सदीके अणु शक्तिके झोंकोंसे तहस-नहस होनेसे नहीं बच सकेगा। हमें याद रखना चाहिये कि भौगोलिक स्थितिके खयालसे राजस्थान भारतवर्षकी नाक है और इसकी इज्जत बचाना हमारे जीवन मरणसे अधिक मूल्य रखता है। बिना संयुक्त राजस्थानके न तो हम भारतवर्ष को महान राष्ट्र बनानेमें ही सहयोग दे सकेंगे और न यहां उन्नतिकी कोई भी विशाल योजना ही सफल हो सकेगी। अतएव राजस्थानकी जनताका यह स्पष्ट कर्त्तव्य है कि वह अपने महान उत्तरदायित्वको पहचाने और एक आवाजसे एक ऐसे संयुक्त राजस्थानकी घोषणा कर दे जिसे पंजाब और यू० पी० सदृश प्रांतोंकी भांति राजस्थानकी १ करोड़ २६ लाख जनताके विकासके समुचित साधन उपलब्ध हो सके।

---

हमेशा मनलुभावनी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

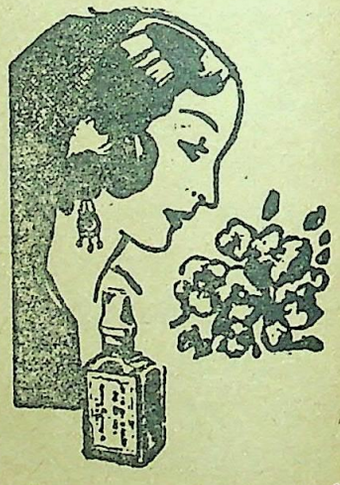

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर ता आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल

कम्पनी बम्बई २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सामयिक विचार

### काश्मीरका प्रश्न

लन्दनके उच्च राजनीतिज्ञोंमें यह चर्चा चल रही है कि राष्ट्रसंघ काश्मीरके प्रश्न में ढिलाईसे काम ले रहा है। उसे चाहिये कि वह अपना एक मत स्थिर करे और तब अपना निर्णय दे। भारतने इसे निर्णयके लिये ही राष्ट्रसंघमें भेजा था लेकिन काश्मीरका मामला उलझता ही जा रहा है। यदि पाकिस्तान और भारतको यह विश्वास हो जाये कि सुरक्षा परिषद इसका पूर्ण निर्णय करेगी तो दोनोंमें कुछ समझौता भी हो सकता है लेकिन उसके रुखसे तो यही कहना होगा कि राष्ट्र संघमें काश्मीर का मामला अभी खटाईमें ही है।

### उभय उपनिवेशोंमें सदभा बना

पाकिस्तानमें भारतीय हाई कमिश्नर श्री श्रीप्रकाशने अपने वक्तव्यमें कहा है कि कुछ लोगोंको मेरे सम्बन्धमें गलतफहमी हो गयी है कि मैं पाकिस्तानमें हिन्दुओंका प्रतिनिधित्व करता हूं पर वस्तुतः बात ऐसी नहीं है। मैं तो उभय उपनिवेशोंमें सद्भावना स्थापित कराने का उद्योग कर रहा हूं। यह गलतफहमी इसलिये हो रही है चूंकि भारत और पाकिस्तानका बंटवारा साम्प्रदायिक ढंगपर हुआ है।जो मैं कार्य करूंगा अल्पसंख्यकोंके लिये। आज अल्पसंख्यक अपनी-अपनी सरकारोंकी ओर सहायताकी आशा से देख रहे हैं। अतः दोनों सरकारोंको चाहिये कि वे उनकी समस्याओंपर गम्भीरतापूर्वक विचार करें।

### मजदूरोंकी सेवा देशकी सेवा

पटनेमें श्रम मन्त्री श्री जगजीवन रामने कहा हैकि पूंजीपतियोंको मजदूरोंके प्रति अपने दृष्टिकोणको बदलना चाहिये। उन्हें मजदूरोंको अपना साझीदार समझना चाहिये। मजदूरोंकी सेवा देशकी ही सेवा है।

### जनमत संग्रह ही निर्णय

पण्डित नेहरूने हैदराबादको चेतावनी देते हुए कहा है कि मैं अपने विचार को किसी पर यों ही लादना नहीं चाहता। केवल काश्मीर तथा हैदराबाद ही नहीं प्रत्युत हर रियासतोंमें मैं जनमतपर जोर देता हूं। जहां तक संभव हो हमें झगड़ेसे बचना चाहिये। हैदराबादने अपने समझौतेकी अवहेलना की है। भारतीय संघमें केवल हैदराबाद ही ऐसा राज्य है जहां अब तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इत्तेहादियोंने वहां हर प्रकारसे आतंक जमा रखा है। मैं हैदराबादको कड़ी चेतावनी देता हूं कि वह वर्त्तमान मामलेको और अधिक न बढ़ाये।

### पत्रकार स्वतन्त्रताके लिये लड़े

संयुक्त प्रांतीय श्रमजीवी पत्रकार संघ में श्री कृष्णदत्त पालीवालने कहा है कि पत्रकारोंको अब अपनी स्वतन्त्रताके लिये लड़ना चाहिये। अब तक वे दूसरोंके लिये लड़ते थे लेकिन आज उन्हें अपनी स्वतन्त्रता के लिये लड़ना है। पत्रकार ही सरकार की नीतिका संचालन, जनमतका परिवर्त्तन तथा क्रांतिका सृजन करते हैं। पत्रकारितामें अणु बमसे भी अधिक शक्ति है। पत्रकारोंको चाहिये कि वे देशमें ऐसी स्थिति उत्पन्न करें जिससे साम्प्रदायिकता का उन्मूलन हो जाय।

### त्रिदल समितिका गठन

ज्ञात हुआ है कि भारत सरकार मजदूरोंकी स्थिति सुधारनेके लिये एक त्रिदल समिति गठित करेगी जिसमें सरकार, श्रमिक तथा पूंजीपतियोंके प्रतिनिधि रहेंगे।


फैंसी सिल्क साड़ी आकर्षक डिजाईन

कलाएण ३-४ इञ्च चौड़ा बार्डर

नं० ७ ८ ९ ५ गज

८) २३) २८) "

१) आडर के साथ पेशगी बाकी वी० पी०

थोक व्यापारियों को खास सुभीता

वमाको इन्डस्ट्रीज, जुही कानपुर

A NOVELTY WATCH

'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage as. 12. Free to 2 watches.

ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

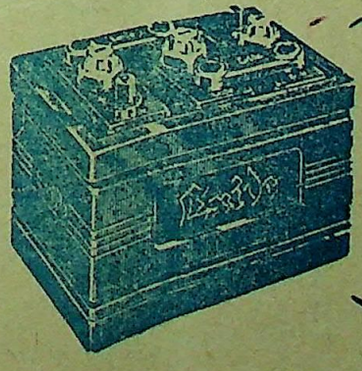

आप इससे अच्छी घड़ी खरीद नहीं सकते कार, टक और बसोंके लिये

एक्साइड बैटरी

Local Agents, Mess. F. & C. OSLER Ltd.

12, Old Court Houe Sreet, Calcutta.

Ex7668


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहः हः
'लालशर' तो मेरे लिये अमृत है!

# लाल-शर

(लाल शरबत)

बच्चों को मोटा, ताजा, खरश और [illegible]
रखने की प्रसिद्ध [illegible]

सब जगह मिलता है।

डॉवर (डा॰ एस॰ के॰ बर्म्मन) लि॰ कलकत्ता

---

## उच्च कोटिकी रिस्ट वाच

स्वीस मेड, मजबूत टिकाऊ, आधुनिक डिजाइन, लींवर मूवमेंट ठीक समय, ३ वर्षकी गारंटी। गोल आकारकी रिस्टवाच १५) सुपीरियर १८) उपर्युक्त जैसी फ्लैट शेप, ४ जुएल, कोमींयम केस २४) उसी प्रकार सेन्टर सेकण्ड २६), गोल आकार १५ जुएल ३६), लम्बी शेप ५ जुएल ३५), रोल्ड गोल्ड स्टील बैंक (केस गारण्टी युक्त १० वर्ष ४८), डाक खर्च ॥=) दो आर्डर आनेसे मुफ्त। प्रत्येक घड़ी के साथ एक फीता दिया जाता है।

**इस्टर्न वाच वं॰**

पो॰ बक्स नम्बर १२[illegible] (बी)

कलकत्ता

---

[illegible] अकसीर उपाय

# आरोदा

१८६६

नीलगिरि तेल

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें [illegible]

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

---

## यह खुरदरी दाढ़ी काफी खर्चा करा देती है

● सात में चार दिनों तक अनेक व्यक्ति बिना हजामत बनाये ही रहते हैं। प्रति सप्ताह नाई की तीन हजामतें ६ आने तक खर्च करवा देती हैं और यह काफी बड़ा खर्चा हो जाता है जब कि प्रति दूसरे दिन आपकी दाढ़ी खुरदरी दिखती है।

## यह चिकनी दाढ़ी काफी कम खर्च कराती है

● यदि आप स्वयं "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडों से हजामत बनावें तो प्रतिदिन आपकी दाढ़ी चिकनी रहेगी और आप पैसे की बचत कर लेंगे। ६ आने के मूल्य के पांच ब्लेड के पैकेट से, जो नाई की तीन हजामत की कीमत है, आप स्वयं प्रतिदिन हफ्तों तक हजामत बना सकते है।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड बाजार में सबसे तेज और सर्वश्रेष्ठ हैं—सर्वोत्तम इस्पात से तीन स्तरों में निर्मित। सर्वश्रेष्ठ ब्लेड जो खरीदे जा सकते हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

# 7 o'clock

SLOTTED BLADES

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस

ब्लेड जो ज्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं

६ आने में ५ का प्रत्येक पैकेट

---

## होमियोपैथिक दवाइयां

प्रति ड्राम =) =)॥ आना है। हरएक बीमारियों की दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी

३८ नम्बर क्लाइव स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट स्थित इलस्ट्रेड इंडिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

सचित्र

# विश्वमित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# यन्त्रतन्त्र

## कांग्रेसका कार्य भारतीय संघ तक

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने घोषणा किया है कि कांग्रेसके नये विधानके अनुसार कांग्रेसका कार्य भारतीय संघ तक ही सीमित रहेगा। पूर्वी बंगाल, पश्चिमी बंगाल, सिन्ध और उत्तर पश्चिम सीमाप्रान्तकी शाखाओंसे इसका सम्बन्ध विच्छेद हो जायगा।

## कांग्रेस समितिके सदस्य

अखिल भारतीय कांग्रेसके अधिवेशन में कांग्रेस समितिके सदस्योंकी संख्या १५ से बढ़ाकर २५ कर दी गयी है। कुछ सदस्यों की राय थी कि इसकी संख्या २५ होनी चाहिये लेकिन बहुमतसे ३० पांस हो गया।

यह भी निश्चय हुआ कि सदस्योंमें प्रान्तीय और संघीय प्रान्तीय मिनिस्टरों की गिनती अधिक न होगी।

## ६ हजार कपड़ा बरामद

बिहार प्रान्तके बाल्मियागपुर स्टेशनपर रेलवेकी लाइनमें पाकिस्तान जाता हुआ ६ हजारका कपड़ा बरामद किया गया है। ऐसा कहा जाता है कि बिहार पाकिस्तान सीमापर पूर्णिया जिलेमें किशनगंज तथा बरसोई और दरभंगामें बिहार पाकिस्तान सीमा पारसे कोयला माल ले जानेमें लोग

## बर्मामें राष्ट्रीय कांग्रेस अवैध

बर्मा सरकारकी एक विज्ञप्तिमें घोषणा हुआ है कि नेपाल राज्यके सीमा-प्रान्तमें राष्ट्रीय कांग्रेस नामक संस्था स्थापित कर दी गयी है। कहा जाता है कि यह संस्था बर्मामें विद्रोह तथा वर्तमान राज्यके विरुद्ध षड्यन्त्र करती थी।

## सड़कोंमें सप्त निषेध

सड़कों दुर्घटनाकी जांच करनेवाली कमेटीके सभापति श्री एच० एन० मुखर्जीने घोषणा की है कि सड़कों पर दुर्घटनाओंको रोकने के लिये सप्त निषेध लागू किया है।

## चायपर कर

अभी हालमें ही यह विज्ञप्ति प्रकाशित की है कि चायपर कर फैक्टरीसे निकासी कराते समय हो ६ आने प्रति पौण्ड लगेगा। चाहे इसका उपयोग भारतमें हो अथवा निर्यातके लिये हो। चायका निर्यात करते समय चुंगी अधिकारी प्रति पौण्ड एक आना लेगा। पहले यह चार आने प्रति पौण्ड लेता था। नवीन व्यवस्थाके अनुसार चायपर कर ३ आना प्रति पौण्डके हिसाबसे पहले ही लग जायेगा और निर्यातके समय एक आना प्रति पौण्ड लिया जायगा।

## दिल्लीमें पानीकी कमी

इन दिनों दिल्लीमें पानीपर आफत मची हुई है। स्वास्थ्य मंत्रिणी श्री अमृत कौर राजकुमारी पानी बचाओ सप्ताह का उद्घाटन करने वाली हैं। इस समय दिल्लीको कमसे कम ३० लाख मन पानी की प्रतिदिन आवश्यकता है।

## बिजलीपर सरकारी कब्जा

ज्ञात हुआ है कि यूक्त प्रांतीय सरकार ने प्रांतकी समस्त बिजली कम्पनियोंपर अधिकार जमा लेनेका निश्चय किया है। ऐसा निश्चय इसलिये करना पड़ा है कि समय-समयपर मजदूर वर्ग हड़तालकी धमकियां देता रहता है और कम्पनियां इस स्थितिको सम्भाल नहीं पाती हैं।

## यक्ष्मा विनाशक सुइयां

भारतमें यक्ष्माके रोगियोंकी संख्या उत्तरोत्तर वृद्धि पर है। भारतसरकारने यक्ष्मा सुइयोंके प्रचारकी व्यवस्था की है। इसकी देख-रेखमें एक समिति भी काम कर रही है। विश्वस्वास्थ्य संघने यक्ष्मा निरोधी सुइयोंके निर्माण और प्रयोगकी विधि प्रदर्शित करनेके लिये मईमें अन्तर्गत एक जत्था भारत भेजना निश्चय किया है। परीक्षणका कार्य पहले सदनपत्तनके यूनियन विशालतिस्टोरियमके अधिकारियोंकी देख-रेखमें होगा।

## हैदराबादकी गुप्त कार्रवाइयां

जानकार लोगोंसे ज्ञात हुआ है कि निजामने अपने सशस्त्र सेना अथवा अर्द्ध सैनिकोंके संगठनके लिये

## अस्त्रोंका आयात

अस्त्रोंका आयात करने के लिये मुसलिम बहुमत बनानेके लिये मुसलमान बाहरसे मंगाये गये हैं। करीब इतने ही हिन्दुओंके घर-बार लूट कर दिये गये हैं जिससे विवश होकर को स्वयं रियासत छोड़ना पड़ा है। जबसे रिजवीकी चुनौती मिली है तबसे वहांके हिन्दुओंकी हालत तो और भी खराब हो गयी है। पता चला है कि पुर्तगाल सरकारको निजामने लिखा है कि यदि उसने निजामसे सन्धि नहीं की तो पोर्तगीज क्षेत्रों पर भारत अपना प्रभुत्व जमा लेगा।

## एंग्लोइण्डियनोंकी सहायकसेना

हैदराबाद सरकार एक सहायक सेना तैयार करने जा रही है। इस सेनामें केवल एंग्लो इण्डियन ही भर्ती किये जायेंगे। उन्हें अपने संगठन तथा ट्रेनिंग की भी सुविधा दी जायेगी।

## मद्रासमें निजामके गुप्तचर

मद्रास असेम्बलीके एक सदस्यका कहना है कि मद्रासमें निजामके गुप्तचर चूड़ी बेचने वालेके रूपमें प्रवेश कर रहे हैं। दर्जनों निजामी गुप्तचर आन्ध्र प्रदेश के जिलोंमें रहने वाले मुस- लमानोंका सहायता कर रहे हैं तथा हैद- राबादसे शरणार्थियोंको डरा-धमका रहे हैं।

## बारी हत्याकाण्ड

बिहार प्रांतीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष श्री प्रो० अब्दुलबारीके हत्याकाण्डके अभियोगमें आजाद हिन्द फौजके दिल बहादुरको ७ वर्षका कठिन कारावास दिया गया है। दो अन्य अभियुक्तोंको बरी कर दिये गये हैं।

## विधान परिषदसे इस्तीफा नहीं

समाजवादी नेता श्री डांगे बम्बई सरकार तथा फलतः राष्ट्रपति शासन के प्रस्तावके रोष में दे चुके हैं कि भले ही बेकारीके त्याग पत्र दे चुके हों पर विधान परिषदसे त्याग पत्र न देंगे। पण्डित नेहरूने भी अभी हाल ही में घोषणा की है कि कोई प्रतिनिधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वमित्र

सम्पादक--
देवदत्त मिश्र

वर्ष—३१ संख्या १४ ता० २८ अप्रैल १९४८ APRIL 28, 1948. मूल्य =), वार्षिक ६)


## गीत

जाति जागरण हो !

टूटे तमकी निष्ठुर कारा

बहे अप्रतिहत ज्योतिर्धारा

जन-मन-अम्बरमें नूतन किरणों का नर्तन हो !

बहे उदात्त भावकी सरिता

करुणा दया स्नेह संभारिता

जिससे निखिल राष्ट्रके कण-कण का अभिसिंचन हो !

स्फूर्ति पूर्ण जन-जनका मन हो

गुण-गरिमा-मंडित जीवन हो

स्नेह स्फीत उर गर्वोन्नत शिर विनत आचरण हो !

मानवतासे भरी सृष्टि हो

श्री सौरभ की सुभग वृष्टि हो

सुख समृद्धि संस्कृति-सुषमायुत जीवन दर्शन हो !

--श्री जितेन्द्र कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खोज रहा पद-चिन्ह किसीके
मैं इस दुर्गम मरु-प्रान्तरमें

नग्न चरण, ये हिम-शीतल
सिकता-कण, परिश्रान्त कलेवर
और निराशा--कशाघात से
कांप--कांप उठता है अन्तर
चिता प्रज्वलित देख कांपता
है ज्यों किसी विधुरका यौवन
सुनकर पगध्वनियां संध्या की
ज्यों कम्पित होता रविका मन
बहता उग्र प्रभंजन, दीपक
थाम सकूंगा कबतक करमें
खोज रहा पद-चिन्ह किसीके
मैं इस तमसय मरु--प्रान्तरमें
क्या जाने कब बीत सकेगी
यह तमपूरित रजनी श्यामा
और उषा मुसकायेगी कब
प्राची--अम्बरमें अभिरामा
आह अभी तो प्राण प्रकम्पनकारी
घोर तिमिर है छाया

जैसे रौरवसे निर्वासित
अभी अभी जगमें हो आया
देता हूं आवाज घनों-सी
व्याकुलता भर कर निज स्वर में
खोज रहा पद चिन्ह अकेला
इस नीरव सिकता--प्रान्तरमें
बीत रहे हैं दिननिशि योंही
पर न वियोगी साथी मिलता
अश्रु-नीरसे सींच रहा हूं
पर न हृदयका शतदल खिलता
चरण चिह्न ही मिल जाते तो
पास पहुंच मैं उसके जाता
सुर दुर्लभ वह मिलन देख कर
मरु-पथका कणकण मुसकाता
पाल रहा तूफान भयंकर
अपने ज्वाला-गिरि-अन्तरमें
भटक रहा हूं अन्वेषण-रत
अंत हीन इस मरु प्रान्तरमें
खोकर अपने ज्योतिर्मयको
रोते हैं नक्षत्र गगनमें
छाया है उन्माद भयंकर

मरघटका--सा नैश पवनमें
ले-ले उसका नाम पागलों--
सा मैं भटक रहा एकाकी
मन पर भी अधिकार जमाती
जाती है यह रात अमाकी
कबतक पाऊंगा आशा-खग
जीवित मानसके पिंजरमें
खोज रहा खोये हमदमको
इस मायामय मरु-प्रान्तरमें
वह होता यदि साथ आज तो
यह मरु-मय उपवन बन जाता
कृष्णपक्षका अन्तरिक्ष यह
फिरसे खोयी ज्योत्स्ना पाता
मेरा व्यथित कल्पना--खग यह
यों न मार्गमें रक्त उगलता
शत-शत काव्योंका निर्माता
बनकर साथ हमारे चलता
'कहां मिलोगे ?' मैं पुकारता
सांय-सांय सुनकर उत्तरमें
मेघों-सा क्रन्दन करता मैं
मेघहीन इस मरु-प्रान्तरमें

# गीत

तटको लहरोंका प्यार मिला ।
मधुमय परागसे थीं वंचित
कोमल--जीवन की मृदुकलियां,
उड़तीन कहीं थीं आस--पास
मधु लोलप सुकुमार--तितलिया ।
सागरका मधुर-उफान कि रत्नोंका मोहक उपहार मिला ।
तूफानों के झकझोर सहे--
पर उन्नत-भाल झुका न सका
संघर्षोंकी मधु--ज्वाला में
अपनों से नयन चुरा न सका ।
नव लोल--लहरियों का नर्तन उसका खोया संसार मिला ।
लहरें मुस्काती चली गयीं
पर थी न कल की हार सुमखि !
अपनों से हार, जीत मधुमय
वह दो क्षण की मनहार सुमखि ।
बस एक प्रणय के चुम्बनमें जीवनका संचित-सार मिला ।
तटको लहरोंका प्यार मिला ।

--श्री बैजनाथ गुप्त 'विशारद'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परहित बस जिनके मनमाहीं ।
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

# हैदराबाद

हम इन पक्तियोंमें कई बार यह कह चुके हैं कि धैर्य और सज्जनताकी भी एक सीमा होती है । उसदिन बंबईमें हैदराबाद के प्रश्नपर वक्तव्य देते हुए भारतके प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूने इसी भाव को बड़े जोरदार और स्पष्ट शब्दोंमें प्रकट किया है । पत्रकारों द्वारा आयोजित स्वागत समारोहके असवसरपर पंडित नेहरूसे यह प्रश्न किया गया कि "रजाकारोंकी हरकतोंसे राज्यके नागरिकोंकी सुरक्षाके खतरेमें पड़नेकी हालतमें क्या भारत सरकार हैदराबादके मामलेमें हस्तक्षेप करेगी ?" इसके उत्तरमें पंडितजीनें कहा कि " हैदराबादके मामलेमें भारत सरकारके धैर्यका बांध टूटनेकी हालतमें पहुंच गया है ।" इस वक्तव्यके साथ जब हम आल इंडिया कांग्रेस कमेटीके अधिवेशनमें पंडितजीकी इस घोषणाको याद करते हैं कि "हैदराबाद के सामने दो ही रास्ते हैं युद्ध अथवा भारतसंघमें प्रवेश" तब भारतसरकारकी नीति के संबंधमें हमें किसी तरहकी अस्पष्टता नही रह जाती और हमें इस बातका पूरा संतोष हो जाता है कि हैदराबादको सीधे रास्तेपर लानेको भारत सरकार कृत संकल्प है । आजतक हमारी सरकारने जहांतक संभव था ढील दी और कोशिश की कि हैदराबाद का प्रश्न समझौतेसे हल हो जाय , किन्तु निजाम यदि भारत सरकारके इस सद्भाव से लाभ नहीं उठाना चाहते और यदि वह भारतके इस प्रयासको उसकी दुर्बलता समझ कर नाजायज लाभ उठानेकी अपनी जघन्य मनोवृत्तिपर अंकुश नहीं लगा सकते तो बाध्य होकर भारत सरकारको वह रास्ता ग्रहण करना होगा जिसे वह नहीं चाहती । नेहरूजीने यह साफ-साफ कह दिया है कि हैदराबाद यह न समझे कि "हम युद्धके मार्गपर चलनेसे डरते हैं ।" हैदराबादमें आज जो काण्ड हो रहे हैं उसके सरहदी गांवोंमें जिस पैशाचिकताका परिचय दिया जा रहा है वह मर्मान्तक है और हमारी सरकार इसकी विभीषिकासे पूरी तरह परिचित है । इतना ही नहीं वह अब इस बर्बरताको अधिक दिनोंतक बर्दास्त नहीं कर सकती

पंडित नेहरू और सरदार पटेलने स्पष्ट शब्दोंमे यह कह दिया है कि हैदराबाद में सामन्तशाहीका टिकना असंभव है । जिस तरह भी होगा राज्यमें उत्तरदायी शासन स्थापित किया जायगा । यह मौलिक सिद्धांतकी बात है , इसमें किसी तरहका समझौता नहीं हो सकता । भौगोलिक और आर्थिक दोनों घटना-क्रमोंकी दृष्टिसे हैदराबादका भारतसंघमें शामिल होना अनिवार्य है । भारत सरकारके दोनों प्रधान और उपप्रधान मंत्रियोंके वक्तव्य निजामके लिये यह स्पष्ट चेतावनी है कि यदि रजाकारोंकी निरंकुशतापर हैदराबाद लगाम लगानेमें असमर्थ या अनिच्छुक है तो यह काम कितनाही अप्रिय क्यों न हो उन्हें अपने हाथोंमें लेना ही होगा । हमारी सरकार इस संबंधमें अपने उत्तरदायित्व को खूब समझती है इसीसे सरदारपटेल ने जनतासे सरकारमें विश्वास रखनेकी अपील करते हुए कहा है कि "गम्भीर उत्तेजनापूर्ण वातावरणमें शब्दोंकाअसंयमएवं सार्वजनिक वाद-विवादसे कोई लाभ हमें नहीं होगा । पंडित नेहरूने भी यही कहा है कि सरहदी घटनाओंके संबंधमें केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारें गला नहीं फाड़ रही इसका अर्थ यह नहीं है कि वे बिलकुल निष्क्रिय हैं । यदि तमाम संकेतोंके बावजूद निजामकी सरकार रजाकारोंकी लूट और बरबादीमें हाथ बंटाती रहेगी तो उसका यह काम भारत सरकार शत्रुतापूर्ण समझेगी, और ऊपरके वक्तव्योंसे स्पष्ट है कि भारत सरकार अब अधिक दिनतक इस शत्रुताचरणको बर्दाश्त करनेको तैयार नहीं है । इस लिय जन-साधारण अपनी सरकारमें विश्वास रखें और पंडित नेहरूके शब्दोंमें उसे "तलवार खींचो और आगे बढ़ो" जैसी सलाह देना बंद कर । सरदार पटेलने स्पष्ट ही कहा है कि संतोषजनक और सम्मान पूर्ण समझौता ही स्वीकार किया जायेगा अन्यथा नहीं । यदि हैदराबादके निजाम जान-बूझकर इसके प्रतिकूल स्थिति उत्पदन्न करेंगे तो इसका समाधान पंडित नेहरू पहलेही यह बता चुके हैं कि "युद्ध अथवा भारत संघमें प्रवेश" ये दो ही रास्ते हैदराबादके सामने हैं ।

## असंभव है—

काश्मीरके प्रश्न पर आल इंडिया कांग्रेस कमेटीके अधिवेशनमें बोलते हुए पण्डित जवाहरलाल नेहरूने यह स्पष्ट रूपसे घोषित कर दिया है कि सिक्यूरिटी कौंसिलने काश्मीरपर जो प्रस्ताव पास किया है उसे स्वीकार करना भारतके लिये असंभव है । इतना ही नहीं उन्होंने यह भी साफ बता दिया है कि काश्मीरकी एकता और रक्षाको जिस किसीकी ओरसे खतरा उपस्थित होगा भारत सरकार उसका डट कर मुकावला करेगी क्योंकि जबतक काश्मीर भारतका अंग है उसकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है । पण्डित नेहरूने यह स्पष्ट कर दिया है कि काश्मीरके मामलेको कतिपय राष्ट्रों ने जान बूझ कर हिंदू-मुस्लिमका प्रश्न बना दिया है और तथ्योंकी उपेक्षा की है ।

यही कारण है कि सिक्यूरिटी कौंसिलके सामने उपस्थित की गयी वास्तविक समस्या को एक किनारे रख साढ़े चार महीने तक कौंसिल अन्यान्य प्रश्नों पर विचार करती रही । जानबूझ कर इस प्रकारका रुख पकड़ने वाले देशोंकी इस जघन्य नीति की निन्दा करते हुए पण्डित जी कहते हैं कि "इस तरहके बिलकुल साफ मामले में भी मित्र कहे जाने वाले इन देशोंने हमारा विरोध क्यों किया । यह समझनेमें मैं असमर्थ हूं । इससे तो एकमात्र प्रत्यक्ष निष्कर्ष यही निकलता है कि हमारे स्वतंत्र हो जाने पर भी इन लोगोंका हमारे प्रति रुख जरा भी नहीं बदला और क्यों बदले । स्वार्थ भावसे प्रेरित होकर काम करनेवाले लोग न्यायकी भावुकता में भूल जायें । ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं । बहर हाल काश्मीर के सम्बन्धमें भारत सरकारने जो नीति ग्रहण की है उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



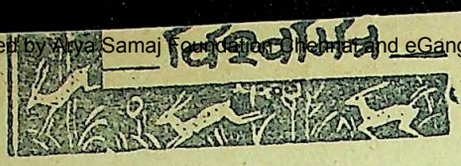

सम्पूर्ण देश स्वागत करता है और हम समझते हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघको भेजे गये प्रतिनिधि मंडलके वापस आते ही भारत सरकार सिक्यूरिटी कौंसिलको यह सूचित कर देगी कि काश्मीरके मामलेकी तहकीकात करनेके लिये वह पांच सदस्यों का कमीशन भेजनेका कष्ट न करे। संयुक्त राष्ट्र संघके अबतक के जितने काम हुए हैं उनसे उसकी प्रतिष्ठा घटती ही जा रही है। परस्पर इर्षा द्वेष और प्रतिहिंसाके कारण राष्ट्रसंघकी स्थिति इतनी डांवाडोल हो गयी है कि उसके निर्णयोंका कोई महत्व या मूल्य नहीं रह गया। हम तो यह समझते हैं कि स्वतंत्र और स्वाभिमानी राष्ट्रोंके गम्भीरता पूर्वक इस प्रश्न पर अब विचार करने का समय आ गया है कि उनको राष्ट्र संघके सदस्य के रूपमें रहना चाहिये या नहीं ?

## यू० पी० में औद्योगिक विकास-

भारतीय पार्लमेंटमें सरकारकी औद्योगिक नीतिका जो चित्र उपस्थित किया गया था युक्त प्रांतीय सरकार उसी दिशामें अपने प्रांतमें औद्योगिक विकासके लिये प्रयत्नशील देखी जा रहीं हैं और ऐसी आशा की जाती है कि निकट भविष्यमें ही यू० पी० में भांति-भांतिके नये और उपयोगी उद्योग-धंधे खुलेंगे। प्रान्तके उद्योग सचिव श्री केशवदेव मालवीयने उस दिन पत्रकार सम्मेलनमें इस आशयका वक्तव्य देते हुए कहा कि केन्द्रीय सरकारकी औद्योगिक नीति की घोषणाके पहले ही यू० पी० अपनी औद्योगिक नीतिकी रूप-रेखा तैयार कर चुका था। तदनुसार मिर्जापुर जिलान्तर्गत मार्कण्डीके निकट एक बहुत बड़ा सीमेंटका कारखाना बनानेका काम हाथमें ले लिया गया है। यह कारखाना इतने विराट रूप में बनेगा कि प्रतिदिन सात सौ टन सीमेंट तैयार होगा किन्तु व्यवस्था ऐसी की जा रही है कि बादमें १४ सौ टन बन सके। सीमेंट तैयार करनेवाली मशीन २ करोड़ रुपयेमें विकर्स आर्मस्ट्रांग ब्रिटिश फर्मसे लेने का कन्ट्राक्ट हो चुका है। ऐसी आशा की जाती है कि १९५० के मध्यमें कारखाना चालू हो जायगा। दूसरी योजना करघा उद्योग-धंधेके लिये महीन सूता तैयार करनेवाला कारखाना खोलनेकी है। इसकी बातचीत चल रही है और दस टन रोजाना सूता तैयार हो सके इस पैमानेसे यह कारखाना खुलेगा। युक्तप्रांतमेंजंगलबहुत हैं। इनसेलाभ उठाने तथा अन्य छिपे हुए सूत्रोंको खोज निकालनेका काम जारी है। कागज एवं उसके लिये उपयोगी रसायनिक वस्तुओंके उत्पादनकी योजना पर भी सरकारकी दृष्टि है। चीनी और सीमेण्ट भरनेके लिये पानीसे न भीजनेवाले थैले बनानेका भी ध्यान है ताकि पाटके अैले विदेशोंको निर्यातके लिये बचाये जा सके। इन सब उत्पादनोमें लकड़ीका उपयोग किया जायेगा। लकड़ी से निर्मित वस्तुओंके उत्पादनके उद्योग धंधेमें प्रायः ११ करोड़ रुपये लगेंगे। यह भी मालूम हुआ है कि औद्योगिक विकासकी योजनाको सफल बनानेके लिये अमेरिकन और ब्रिटिश सलाहकारों तथा विशेषज्ञोंका सहयोग प्राप्त किया जा रहा है। हमारा ख्याल है कि इन दो देशोंके अतिरिक्त चेकोस्लोवाकिया और रूस जैसे औद्योगिक देशोंका भी इस दिशामें सहयोग प्राप्त करना अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिसे भी वांछनीय होगा।

## राजर्षि टण्डनजी—

माननीय श्री पुरुषोत्तम दासजी टण्डन देशके कतिपय इने गिने तपस्वियों और मनीषियोंमें हैं जिन्होंने समाज साहित्य और देश के लिये भोगकी तमाम उपलब्ध सामग्रियों और साधनोंको तिलांजलि देकर कठोर तप और त्याग को अप नाया। इस तरहकी विभूतिका जितना भी सम्मान किया जाये कम है। हमें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि युक्तप्रांतके साधु-सन्यासियों और पण्डितोंने टण्डनजीको राजर्षिकी उपाधिसे विभूषित करके समाज साहित्य और संस्कृतिके प्रति की गयी टण्डनजीकी सेवाओंके लिये इस रूपमें अपनी कृतज्ञता प्रकट की है। आजके जमानेमें जैसे साहित्य विज्ञान और दर्शनादिमें प्रगाढ़ पाण्डित्यका परिचय देने वाले व्यक्तियोंको विश्वविद्यालयोंकी ओरसे उनका सम्मान बढ़ानेके लिये डाक्टर आफ लिटरेचर, डाक्टर आफ साइन्स डाक्टर आफ फिलाजफी आदि उपाधियां दी जाती हैं उसी तरह प्राचीन कालमें दिव्य-ज्ञान राजज्ञान और ब्रह्म ज्ञान के विशारदों को ब्रह्मर्षि राजर्षि और देवर्षिकी उपाधियां दी जाती थी। इस दृष्टिसे जब हम इस उपाधि वितरणको देखते हैं तो हमारे सामने ऊंच नीचका कोई प्रश्न नहीं रह जाता। बहुतसे व्यक्तियोंने इस उपाधि वितरणको अति संकीर्ण दृष्टिसे देखनेकी चेष्टा की है और यही कारण है कि उनको इससे प्रसन्नता नहीं हुई। और वे राजर्षिकी पदवीको टण्डनजीके लिये इसलिये अशोभनीय समझते हैं कि यह ब्रह्मर्षि और देवर्षिसे छोटी है। यह उनके अपने मनका विकार है। ऋषि के सामने लगे हुए देव, ब्रह्म और राज शब्द उच्चता और लघुताके द्योतक नहीं है बल्कि यह बतलाते हैं कि अमुक विषयक ज्ञानमें अमुक व्यक्तिने ऋषित्व प्राप्त किया। इस तरह देव ब्रह्म और राज उपसर्ग से विभूषित सभी व्यक्ति ऋषित्वके समान स्तर पर हैं। इस लिये जो लोग इतना अधिक प्रगतिशील हो गये हैं कि वे ऋषित्वमें भी असमानताकाभेदभावमानतेहैं उनसे तो हमें कुछ नहीं कहना क्योंकि समानता क्या चीज है इसे ये अभी हृदयगंम ही नहीं कर सके और कर भी कैसे सकते हैं। दो पैसे कम और दो पैसे अधिकके आधार पर व्यक्तिको सम्मानीय और असम्माननीय समझनेवालासमाजयदि राजर्षिको नींच और ब्रहमर्षिको ऊंच समझता हैं तो क्या आश्चर्य है। ऋषित्वमें भी जो अन्मानता और उच्चता–अनुच्चता का भाव आरोपित कर सकता है वह अपनेको भले ही बहुत बड़ा समानता-वादीं समझता हो किन्तु हम तो उसे जन्मना वर्ग व्यवस्था मानन वालोंसे भी अधिक प्रतिक्रिया वादी और दकियानूसी समझते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त राष्ट्र संघमें

# इनसाफका खून

**श्री सव्य साची**

हमने २५ फरवरीके अंकमें 'फैसला क्या करेगा' शीर्षक अग्रलेख आरम्भ करते हुए लिखा था कि "काश्मीरके भाग्यका फैसला,जिसे फैसला कहा जा सके, वर्तमान संयुक्त राष्ट्र संघ नहीं कर सकता। न्याय वह कर सकता है जिसमें न्यायकी मर्यादा की रक्षाके लिये आवश्यकता पड़नेपर स्वयं अपने ऊपर आघात करनेका साहस होता है। माया और मोहके गोरख धंधेमें फंसे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र या उसके प्रतिनिधि यदि न्याय कर सकते तो आजकी दुनियाका ढ़ांचा कुछ और ही होता।' सिक्यूरिटी कौंसिलके अध्यक्ष डाक्टर लोपेज ने अन्यपांच राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंके सहयोगसे काश्मीर पर जो प्रस्ताव तैयार किया और जिसे कौंसिलने पास किया है वह हमारे उक्त कथन को अक्षरशःचरितार्थ कर रहा है। हमारा यह दृढ़ विश्वास रहा है और उत्तरोत्तर वह बढ़ता ही जा रहा है कि जो राष्ट्र संघ यूरोप की समस्या हल नहीं कर सकता चार महान राष्ट्रोंके बीच में ऐक्य नहीं ला सकता और अबतक किसी मामलेमें विचार करते समय उसके प्रमुख और नेता स्थानीय सदस्य निजी शक्ति विस्तार और स्वार्थनीतिके ऊँपर नहीं उठ सके उससे यह आशा नहीं की जा सकती कि वह किसी मामलेमें, जिसमें किसी प्रमुख सदस्यका जरा भी स्वार्थ संश्लिष्ट है, वर्तमान समझौता प्रस्तावमें इनसाफ क करेगा। डा० लोमेजने भारतके प्रधान अभियोग को गौण बना दिया गया है। भारतका अभियोग था कि राष्ट्रसंघका एक सदस्य पाकिस्नान उसके दूसरे सदस्य भारतके विरुद्ध काश्मीरमें अघोषित युद्ध चला रहा है और विद्रोही आक्रमणकारियों को सैनिक, असैनिक भौगोलिक सब प्रकार की मदद देकर राष्ट्र संघके सिद्धांतोंकी हत्या कर रहा है। इस प्रश्नको सिक्यूरिटी कौंसिलने पीछे कर दिया और काश्मीर के घरेलू मामलेको सामने ले आया गया। प्रश्न था काश्मीरमें राष्ट्र संघके चार्टरके खिलाफ चलाये गये युद्धको बन्द करनेका और फैसला दिया गया है कि पहले काश्मीर में जनमत गणना करके यह जान लिया जाये कि काश्मीर पाकिस्तानमें जाना चाहता है या भारतमें रहना चाहता है। इसके लिये पहली शर्त यह रखी गयी है कि काश्मीरकी वर्तमान सरकारमें उन दलों को शामिल किया जाये जो उसके खिलाफ विदेशी ताकत (पाकिस्तान) की सहायता और प्रोत्साहनसे लड़ रहे हैं। दूसरी शर्त यह है कि जनमत गणनाका संचालन और व्यवस्था राष्ट्र संघ द्वारा नियुक्त एक कमीशनके तत्वावधानमें भारत और पाकिस्तानकी दोनों सरकारें एक दूसरेके साथ मिलकर करें। यह सहज ही समझा जा सकता है ये छै सदस्य ब्रिटेन अमेरिक फ्रांस बेलजियम चीन और कोलम्बिया अब कि अपने अधिकारके बाहर जाकर, अन्तर्राष्ट्रीय मान्य सिद्धांतोंकी हत्या करके डा० सियांगके प्रस्तावकी जगह यह अनोखा फारमूला क्यों ले आये। पाकिस्तानके सिवा सभीने यह स्वीकार किया था कि सियांगका प्रस्ताव काश्मीर की समस्याको हल करनेके लिये निकटतम उचित मार्ग है। भारतके प्रतिनिधि श्री गोपाल स्वामी आयंगरने कहा था कि यदि यत्र-तत्र रह गयी त्रुटियां हटा दी जायें तो भारत इसे स्वीकार करनेको तैयार है। न्याय करना अभीष्ट होता तो डा० सियांग के प्रस्ताव के बदले वैधानिक कानूनकी हत्या करने वाला यह सर्वथा नया प्रस्ताव न लाया जाता। अभीष्टहै शक्ति विस्तार के लिये पाकिस्तानकी स्थितिसे अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्वितामें लाभ उठानेके उद्देश्य से पाकिस्तानको नाराज न होने देना। इसीलिये अन्तर्राष्ट्रीय शिष्टता वैधानिक कानून और राष्ट्र संघके सिद्धांतोंकी हत्या करके सिक्यूरिटी कौंसिल अनधिकार काम कर रही है। यह सब क्यों, किस लिये? किस लिये वह काश्मीरके घरेलू मामलेमें हस्तक्षेप कर रही है जब राष्ट्र संघके चार्टरमें स्पष्ट यह निषेध किया गया है कि "संयुक्त राष्ट्र संघ ऐसे किसी मामले में हस्तक्षेप न करेगा जो मुख्यतया पारिवारिक विचाराधिकरणके अन्तर्गत आता है।" काश्मीरकी सरकार कैसी हो, यह तो काश्मीरियोंके सोचने विचारनेकी बात है? तब यह निर्णय काश्मीर पर क्यों लादा जा रहा है कि काश्मीरी सरकारमें उनको भी लिया जाये जो उसके खिलाफ युद्ध लड़ रहे हैं। यूनानका ठीक ऐसा ही मामला हमारे सामने है, पर उससमय तो सिक्यूरिटी कौंसिलने यह फैसला नहीं किया था कि विद्रोही नेता जेनरल मारकोसको भी यूनानके शासनमें हिस्सा देना चाहिये। तब आज काश्मीरकी सरकारमें विद्रोहियोंको क्यों हिस्सा दिलाया जा रहा है? क्या इस तरह राष्ट्र संघ आततायियोंके आक्रमणोंको प्रोत्साहन नहीं दे रहा। क्या उसका यह निर्णय अन्य देशोंमें विरोधियोंको देशकी वैधानिक सरकारके खिलाफ बगावत और युद्ध छेड़नेकी प्रेरणा देने वाला नहीं है?

यूनानके मामलेमें अपना पक्ष समर्थन करते हुए अमेरिकाके प्रधान राष्ट्र सचिव मि० मार्शलने कहा था कि अन्तर्राष्ट्रीय कानूनका यह सिद्धांत है कि एक राष्ट्र यदि दूसरी सरकारके खिलाफ हथियार बन्दी करे या विद्रोही शक्तियोंकी मदद करे तो उसका यह काम शत्रुताचरण और आततायी-मूलक समझा जायेगा। किन्तु अमेरिका और उसके वे तमाम साथी जिन्होंने यूनान पर उसका साथ दिया था पाकिस्तानके मामलेमें अन्तर्राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानूनके उक्त सिद्धांत को भूल गये ! शायद उस समय याद रखनेमें और इस समय भूल जानेमें ही उनका स्वार्थ है। जिस कामसे उनका लाभ होता हो वही न्याय है और वही अन्तर्राष्ट्रीय कानून। भारतीय प्रतिनिधि मण्डलकी ओरसे अच्छी तरह यह स्पष्ट कर दिया गया था कि काश्मीरमें आज भी लड़ाई बन्द नहीं है और स्थिति इस हदको पहुंच गयी है कि किसी समय भी दोनों उपनिवेशोंके बीच में युद्ध आरम्भ हो जा सकता है। शायद इस स्थितिसे पाकिस्तानको लाभ उठाने देनेके लिये ही संयुक्त प्रस्तावमें कहा गया है कि भारत सरकार काश्मीरसे अपनी सेना इतनी हटा ले कि कानून और व्यवस्थाकी आवश्यकतासे अधिक न रहे, मानो काश्मीरकी रक्षाके लिये सेनाकी आवश्यकता कोई महत्व नहीं रखती। ब्रिटेन अमेरिका और फ्रांसकी नीयत खोटी है इसीलिये वे ऐसी स्थिति पैदा करनी चाहते हैं कि पाकिस्तानी सेना बेखटके काश्मीरमें प्रवेश कर सके।

अन्तर्राष्ट्रीय दांव-पेंच रूस और अमेरिकाके वर्तमान मनोभावोंकी दृष्टिसे, संसारमेंसामरिक महत्व रखने वाले इने गिने प्रदेशोंमें काश्मीर भी एक है। अमेरिका और ब्रिटेन अवश्य यह चाहेंगे कि जिस तरह भी हो काश्मीर को अपने प्रभावान्तर्गत और संभव हो तो अप्रत्यक्ष रूपसे अपने नियन्त्रणमें रखा जाये। काश्मीरके भारतीय संघके साथ रहनेसे यह पश्चिमी राष्ट्र उसका मनमाना उपयोग नहीं कर सकते, यह भारतकी नीति से स्पष्ट है। अतः उनका उद्देश्य काश्मीरके दुर्बल पाकिस्तानके साथ रहनेसे ही पूरा हो सकता है। इसीलिये पिछले चार महीने सिक्यूरिटी कौंसिलमें काश्मीरका प्रश्न लटका रखा गया और अब उसे इस तहर सुलझानेका प्रयत्न किया जा रहा है कि उससे अमेरिका और ब्रिटेनका स्वार्थ सिद्ध हो सके। इस तरह सिक्यूरिटी कौंसिल इस समय कतिपय बड़ी ताकतोंकी दुरभि संधियों, षडयन्त्रों और प्रभाव-विस्तारका मात्र अखाड़ा रह गया है। अतः स्वार्थसे प्रेरित उसके किसी निर्णयको भारत कैसे मान ले। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के नेता श्री गोपाल स्वामी आयंगरने ठीक ही कहा था कि जिस रूपमें प्रस्ताव है उसका हम सख्त विरोध करते हैं और हमारे विरोध के बावजूद यदि प्रस्ताव पास किया जायेगा तो उस परिस्थितिमें हमारी सरकार इस बातका निर्णय करेगी कि लड़ाई बन्द करने और जनमतगणनाके लिये कौन सा रास्ता अख्तियार करना चाहिये। उक्त प्रस्तावको अस्वीकार करनेका अर्थ यह न समझ लिया जाये कि भारत और पाकिस्तानके बीचमें गृहयुद्ध अनिवार्य है। इसीलिये श्री आयंगरने यह स्पष्ट कर दिया है कि हम शांति प्रिय राष्ट्र हैं और हमें विश्वास है कि हमारे दूसरे झगड़े आपसमें जिस तरह तय हो गये हैं वैसे ही इस सवालको सुलझानेके लिये भी ऐसा रास्ता निनकाला जा सकता है जो दोनों पक्षोंको स्वीकार हो और हमें आशा है कि हमारा प्रयत्न सफल होगा। और दोनों देशोंके बीचमें युद्धकी स्थिति नहीं उत्पन्न होने पायेगी।

---

# आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी बम्बईका अधिवेशन

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीका पिछला अधिवेशन कई दृष्टियोंसे अत्यन्त महत्व पूर्ण रहा और इसे ऐतिहासिक अधिवेशन माना जायेगा।

कांग्रेसके भावी विधानका अन्तिम ढांचा इस अधिवेशनमें स्वीकार किया गया। पुराने विधानमें जो परिवर्तन किये गये हैं उनका राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के शब्दोंमें यह उद्देश्य है कि जनताके हाथों में जो अधिकार आये हैं उसका अधिकाधिक लाभ जनताको मिले। इस उद्देश्यकी पूर्ति कार्यकर्त्ताओंके मनोभावों पर निर्भर है।

स्वतन्त्रता आनेके बाद कांग्रेसके भीतर जिस तेजीके साथ स्वार्थी सुविधावादी प्रतिगामी और पूंजीवादी मनोवृत्ति वाले लोगोंको कांग्रेसके संगठनके भीतर भरा जा रहा है उसे देखते विश्वास नहीं होता कि डा० राजेन्द्र प्रसादकी आशा पूर्ण होगी। अवश्य ही जिस भावनासे परिवर्तन किये गये हैं यदि कांग्रेस हाई कामांड चाहे तो कांग्रेसका संगठन तदनुकूल हो सकता है, किन्तु तभी जब कांग्रेसके भीतर भ्रष्टाचार पैदा करने वाले कतिपय जिम्मेदार कार्यकर्त्ताओंको हटानेमें, पूंजीके प्रभावको मिटानेमें हाई कमाण्ड उसी निर्भयतासे काम लेगा जो कम्यूनिस्टों और सोशलिस्टोंके प्रति उसने दिखायी है।

कांग्रेसका आदर्श और उद्देश्य संशोधित विधानके अनुसार होगा। भारतके नागरिकोंका हित एवं उत्कर्ष तथा भारत में समान राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों तथा सुविधाओंके आधार पर शांतिपूर्ण एवं वैध उपायोंसे सहयोग मूलक राज्य संघ (कामन वेल्थ) की स्थापना।" इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये कांग्रेसका संगठन करनेका उत्तरदायित्व देशके बालिग नागरिकोंपर रखा गया है। कांग्रेसके प्राथमिक संगठनका चुनाव जनता द्वारा होगा। एक निर्धारित क्षेत्रके अन्तर्गत आबादीके प्रति पांच सौ पीछे एक प्रतिनिधि चुना जायेगा। इस प्रकार निर्वाचित प्राथमिक कांग्रेस पंचायत ही तालुका, जिला प्रांतीय और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटियोंके निर्माण और संगठनकी नींव है। क्योंकि प्राथमिक पंचायतोंके सदस्य ही कांग्रेसके प्रतिनिधि (डेलिगेट) चुनेंगे। और यही प्रतिनिधि प्रांतीय कांग्रेस कमेटीके सदस्य होंगे। ये प्रतिनिधि जिला और परगना कांग्रेस कमेटियोंके भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



परेन (एक्स आफिशियो) सदस्य होंगे। इस तरह यह स्पष्ट है कि प्राथमिक पंचायत का चुनाव सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्यों कि यें सदस्प ही कांग्रेसके सम्पूर्ण संगठन के लिये जिम्मेदार होंगे। प्रकानान्तरसे यह उत्तरदायित्व देशके वालिग नागरिक मात्रपर है। अतः जो लोग आज इस बात की शिकायत करते हैं कि कांग्रेसके भीतर अनाचार और भ्रष्टाचारको प्रोत्साहन देने वाले लोग भरे जा रहे हैं उनका यह कर्त्तव्य होगा कि कांग्रेसके प्राथमिक चुनावमें वे पूरी दिलचस्पी लेकर ऐसे लोगोंको चुनें जो कांग्रेसके आदर्श और उद्देश्यको ईमानदारीके साथ कार्यमें परिणत करायें।

### कार्य क्षेत्र

भविष्यमें कांग्रेसका कार्य क्षेत्र भारत के बाहर नहीं रह जायेगा। इसका तात्पर्य यह है कि पाकिस्तानके अंचलोंके भारतीय राष्ट्रीय महासभाके संगठन टूट जायेंगे। यह उचित भी है। जब पाकिस्तान एक भिन्न स्वतन्त्र देश हो गया है तो यह उचित ही है कि वहांके नागरिक भारतसे स्वतन्त्र और भिन्न अपना संगठन पाकिस्तानके नागरिककी हैसियतसे बनायें, तभी वे अपने नागरिक अधिकारोंके लिये वैध लड़ाई लड़ सकेंगे, अन्यथा देशद्रोही और राजद्रोही, यहां तक कि वे विदेशी समझे जायेंगे और उस अवस्थामें स्वभावत; उस देशकी सरकार उनके संगठनोंको तमाम नागरिक अधिकारोंसे वंचित करके उनका अस्तित्व मिटा डालनेकी चेष्टा करेगी क्यों कि कोई भी सरकार अपने देशमें विदेशी, देश द्रोही शक्तिको कैसे पनपने दे सकती है। कांग्रेसको पूर्व बंगालमें बने रहने देने के सुझाव और संशोधनका विरोध करते हुए पण्डित नेहरूने ठीक ही कहा कि इस तरहके प्रस्तावोंपर विचार करना कांग्रेस संगठनके अधिकारकी सीमाके बाहर है। आजके भारतीय संघकी समस्याओंपर ही हम विचार कर सकते हैं। हमारा संगठन पूर्व बंगालमें काम नहीं कर सकता। शतप्रतिशत यह असंभव है। दो पहलुओंसे इस प्रश्न पर दृष्टि डाली जा सकती है। पहली बात तो यह है कि आप चाहते हैं कि हजार दो हजार आदमी पूर्व बंगालसे कलकत्तेमें चले आकर एक पृथक संगठन बनायें। दूसरी बात यह है कि वे रहें तो पूर्व बंगालमें किन्तु राज भक्त बनें भारतीय संघके। यह न्यायकी बात नहीं है। यह सम्पूर्णतया अनुचित और असंभव है। पूर्व बंगालमें रह कर यदि बंगाली अपने को भारतीय समझेंगे तो अफगानिस्तान अथवा अन्य देशमें रहने वाले भारतीयों की तरह ये विदेशी समझे जायेंगे। यदि कुछ लोग व्यक्तिगत रूपसे भारतीय संघ में आकर बसना चाहते हैं तो वहां छूट गये भाइयोंके प्रति इससे बढ़कर विश्वासघात और क्या हो सकता है! खासकर जो अपने को कार्यकर्त्ता या नेता समझता है, जिसका जनतापर कुछ प्रभाव है उसे तो हरगिज न आना चाहिये। यदि इस कोटिके व्यक्ति वहांसे चले आनेका फैसला करेंगे तो डेढ़ पौने दो करोड़ लोग पूर्व बंगालसे चल पड़ेंगे। यह बहुत ही खतरनाक रास्ता है। कांग्रेस संगठनकी दृष्टिसे कुछ नहीं कर सकती। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसादने भी यही कहा कि पूरी सहानुभूति होते हुए भी भारतीय कांग्रेस पूर्व बंगालका या पश्चिम पंजाबमें कांग्रेस संगठन नहीं चला सकती। अन्तमें उक्त संशोधन वापस ले लिये गये। परिवर्तित विधानमें कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सदस्योंकी संख्या १५ से बढ़ाकर २० कर दी गयी है और यह प्रतिबंध रखा गया है कि इनमें केन्द्रीय और प्रांतीय मिनिस्टरोंकी संख्या एक तिहाई से अधिक न हो। कार्यसमितिका चुनाव अध्यक्ष ही पूर्ववत् करेगा और आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीका चुनाव सिंगल-ट्रांसफरेकल वोटकी प्रणालीसे ही होगा।

### अन्तर्कालीन विधान

सम्पूर्ण विधान पास हो जानेके बाद विधान उपसमितिके संयोजक आचार्य युगुल किशोरने यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि नये विधानके अनुसार काम होनेमें कुछ समय लगेगा और पदाधिकारियोंका चुनाव हुए दो वर्ष हो गये हैं इसलिये जितनी निर्वाचित कांग्रेस कमेटियां हैं वे तत्काल अपने पदाधिकारियों और कार्यसमितियों का चुनाव करें।

देखा गया कि प्रांतीय, जिला और तालुका कांग्रेस कमेटियोंके चुनावहो चुके हैं अतः इस व्यवस्थाके अनुसार केल आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीका वही चुनाव होगा। कुछ सदस्योंने इसका विरोध किया और कहा कि पूर्व स्थिति कायम रहनी चाहिये। वोट लेने पर आचार्य युगुल किशोर का प्रस्ताव ५८ के मुकाबले ६८ से गिर गया। परिणामकी घोषणा होते ही पण्डित नेहरूने डिवीजनल मांगा और कहा कि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीको अधिकार है कि वह प्रस्ताव अस्वीकृत कर दे पर बिना पुर्नर्वाचनके सदस्योंका बने रहना मैं अनुचित समझता हूं। इसलिये मैं इस्तीफा दे रहा हूं और मुझे आशा है कि अन्य बहुत सदस्य भी मेरे साथ इस्तीफा देंगे।

डिवीजन मांगनेपर प्रस्ताव ६८ के विरुद्ध १०२ वोटोंसे पास हुआ।

### भावी आर्थिक नीति

विधान प्रस्ताव और उस सम्बन्धमें प्रासंगिक प्रस्तावके पास हो जानेके बाद कांग्रेसकी भावी आर्थिक नीतिपर लाये गये प्रस्तावपर विचार हुआ। प्रस्ताव जो श्री शंकर राव देवने पेश किया इस प्रकार है:—आर्थिक कार्यक्रम समितिकी रिपोर्ट को आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीका साधारणतया समर्थन प्राप्त हो चुका है और उक्त रिपोर्टमें उल्लिखित लक्ष्यों और उद्देश्योंको खास तौरसे स्वीकार किया जा चुका है। रिपोर्टमें जो अन्य विस्तृत सुझाव दिये गये हैं उनके सम्बन्धमें तथा भारत सरकार द्वारा की गयी औद्योगिक नीतिकी घोषणाको दृष्टिगत रखकर आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी निम्नलिखित स्टैण्डिग कमेटी नियुक्त करती है जिसे खास उद्देश्यके लिये अतिरिक्त सदस्य बढ़ानेका अधिकार होगा। यह कमेटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साधारण कार्यक्रमको कार्यान्वित करने पर विचार करेगी इस बातका खास तौर से ध्यान रखकर कि कार्यक्रमका कौन सा भाग पहले कार्यान्वित किया जाये और समय समयपर अपनी सिफारिशें वर्किंग कमेटीके साममने पेश करेगी । कमेटीके सदस्य हैं:–पण्डित जवाहरलाल नेहरू (अध्यक्ष), श्री रफी अहमद किदवई, श्री शंकर राव देव, प्रो रंगा, डा० पट्टाभि सीतारमैया, श्री जगजीवनराम, श्री,गुलजारीलाल नन्दा, श्री जे० सी० कुमारप्पा, और श्री आन्नदा प्रसाद चौधरी ।

कांग्रेसका उद्देश्य है लोकतन्त्रीय आधार पर ऐसे समाजका निर्माण करना जिसमें उचित श्रम करने वाले प्रत्येक व्यक्तिको उन्नति और अपने व्यक्तित्वको पूर्ण बनानेकी पूरी सुविधा मिले । वास्तविक लोकतन्त्रवादकी स्थापनाके लिये अधिकार एवं उत्पादन दोनोंका विकेन्द्रीयकरण आवश्यक है । यह देखना इस कमेटीका काम होगा कि सरकार कांग्रेस द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चल रही है या नहीं । कांग्रेस चाहती है कि वैयक्तिक पूंजीवादकी बुराइयोंको हटाया जाये और देशके धन सम्पद पर वर्ग विशेषका मनमाना एकाधिकार न रहे । यदि भारत सरकारका कार्यक्रम कांग्रेसके आदर्श और लक्ष्यकी पूर्ति न करता हो तो प्रस्तावित कमेटीका कर्त्तव्य होगा कि वह उन उपायोंका अवलम्बन करे कि सरकार उसकी औद्योगिक नीतिके अनुसार काम करे । भारत राजनीतिक दृष्टिसे स्वतन्त्र हो गया है किन्तु अभी उसने आर्थिक स्वतन्त्रता और स्वावलम्बन नहीं प्राप्त किया एवं यह उद्देश्य तभी पूर्ण माना जायेगा जब रास्ते का आदमी यह समझने लगेगा कि उसे किसी चीजका अभाव नहीं है । यह तभी संभव होगा जब सरकार अपनी औद्योगिक नीति जनसाधारणके हितको दृष्टिगत रखकर काम करेगी और अन्य कोई स्वार्थ इसमें बाधक न होने पायेंगे । अतः सरकार पर दृष्टि रखने और समय समय पर उस पर अंकुश लगानेके इरादेसे इस कमेटीका संगठन किया गया है ।

पण्डित नेहरूने उस प्रस्तावका समर्थन करते हुए यह आश्वासन दिया कि देशके सामने आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी द्वारा उपस्थित की गयी नीतिको साधारणतया कार्यमें परिणत करना सरकारका कर्त्तव्य है और अगर वह समझती है कि वह ऐसा करनेमें असमर्थ है तो उसे हट जाना चाहिये । ताकि दूसरे लोग आकर काम करें । किन्तु साथ ही बात बातमें यदि निर्देश दिया जाने लगे तो किसी भी सरकारके लिये काम करना असंभव है । भारत सरकारकी औद्योगिक नीति और कांग्रेसकी आर्थिक योजना समितिकी रिपोर्टमें विशेष अन्तर नहीं है । सरकारने कतिपय उद्योग धन्धोंके राष्ट्रीयकरणके लिये इस सालका समय दिया है जब कि समिति पांच वर्षका समय देना चाहती है । पांच सालका यह अन्तर निश्चय ही कोई बहुत महत्व नहीं रखता ।

### वैदेशिक नीति

यद्यपि भारतकी वैदेशिक नीतिपर प्रस्तावके रूपमें आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में कोई विचार नहीं हुआ किन्तु इस सम्बन्धमें पण्डित नेहरूने जो वक्तव्य दिया वह बड़ा ही महत्वपूर्ण है । पण्डितजीने कहा किअन्तर्राष्ट्रीयक्षेत्रमें भारतकी नीति पूर्ण तटस्थताकी रहेगी । हम प्रत्येक देशके के प्रति मित्रका व्यवहार रखना चाहते हैं और प्रत्येक अवसरपर हम अपनी नीडु पर चलेंगे और जिनका हमसे प्रत्यक्ष सम्पर्क नहीं है उन अवसरों पर हम तटस्थ रहेंगे । आज संसार दो अधिकार-गुटोंमें बंटा हुआ है । युद्धकी चर्चा फिर होने लगी है । पर मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि निकट भविष्य में तीसरा महायुद्ध न होगा हम दोमें से किसी दलमें शामिल नहीं हो होंगे । विश्व सस्याओंके समाधानका पुराना हिंसाका मार्ग शांतिका मार्ग नहीं है । इस तरहकी स्थितिमें भारतका क्या कर्त्तव्य है यह विचारणीय है । भारत दो गुटोंमें भारत दी गुटोंमें किसीका साथ नहीं देगा, किन्तु वह इस रूस और अमेरिकाके बीचमें समझौतेकी दिशामें प्रयत्न अवश्य करेगा । प्रतिदिन इस आशयके तार आ रहे हैं कि इस विनाश लीलाको रोगनेके लिये भारतको कुछ करना चाहिये । भारत इस मेल-मिलाप करानेको प्रस्तुत है और इस कामके लिये कहीं भी जानेको मैं तैयार हूं कि बशर्ते मैं समझूं कि मेरे जानेसे अभीष्ट सिद्ध होनेकी आशा है।

### काश्मीर और हैदराबाद

इसी प्रसंगमें पण्डित नेहरूने काश्मीर की समस्याका भी जिक्र किया और स्पष्ट शब्दोंमें यह घोषणा की कि राष्ट्र संघ का फैसला स्वीकार करना भारतके लिये असंभव है । काश्मीर जब तक भारतका अंग है उसकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है और जिस किसीसे उसे खतरा होगा उससे लड़ना हमारा कर्त्तव्य है ।

हैदराबादकी चर्चा करते हुए नेहरूजी ने कहा कि भौगोलिक और आर्थिक दोनों दृष्टियोंसे घटनाचक्र हैदराबादको भारत में शामिल होनेके लिये बाध्य करेंगे । उसके सामने दो ही रास्ते हैं "लड़े या भारतीय संघमें शामिल हो । हम समझौतेके रास्ते को पसन्द करते हैं किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि हम लड़नेसे डरते हैं ।

इस तरह वर्तमान आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीका यह अन्तिम अधिवेशन, जैसा हम ऊपर कह आये हैं सभी दृष्टियोंसे बहुत महत्वपूर्ण रहा ।

———

**धवल या श्वेत कुष्ठ**— जिनका ऐसा विश्वास हो कि यह रोग चंगा नहीं होता, यदि मेरे पास आयें तो उनके एक छोटे दागको मैं चंगा कर दूंगा, कोई खर्च नहीं देना पड़ेगा । बातरक्त, एक्जिमा, श्वेत कुष्ठ, पित्त और रक्तदोष जनित विविध चर्म रोगके दूर करने के लिए २० वर्षोंके अनुभवी **चर्मरोग चिकित्सक पण्डित एस० शर्मा** की व्यवस्था और औषधि ग्रहण करें (समय ३-८) २६-८ हरीसन रोड, कल०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मई दिवस

( ले० श्री रामस्वरूप शर्मा )

मई दिवस हमारा वह त्यौहार है जिसे मनानेके लिये हमने अपने खूनको पानीकी तरह बहाया है। हम इसे बासठ सालसे मनाते आ रहे हैं और नयी-नयी शिक्षाएं तथा स्फूर्तिके साथ। । मई दिन महज स्मृतिका त्योहार नहीं है और न है शहीदों को केवल पुष्पांजलि अर्पित करनेका ही प्रवित्र दिन। साथ ही यह सिर्फ खुशी या गमीका दिन भी नहीं है। हम मेहनतकश इसे अपना प्रेरणामूलक तथा उत्साहवर्द्धक त्योहार समझते हैं। वास्तवमें यह दिन हममें जोश भरता है और उस जोशको बरकरार रखकर मुस्तैदीसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। दुनियाके हर मुल्कमें यह त्योहार मनाया जाता है। यह जंगी त्योहार है। इस दिन हम अपने पुरान कामोंका लेखा जोखा लगाते हैं। हमारे कामोंमें क्या खूबियां व खामियां रही हैं, उसे सोचते और विचारते हैं। यों तो मार्क्सवादी हमेशा आत्मनिरीक्षण करते ही हैं। किस मोर्चे पर हममें कमजोरी है और कहां हमारी ताकत बेकार बर्बाद होती है इसे समझ बूझकर मोर्चा बदलते हैं। यानी मई दिन हमारे लिये आगेका जंगी प्रोग्राम देता है। इस दिन मेहनतकश प्रतिज्ञा करते हैं कि "हम अपने मकसद (मजदूर राज्य) को पूरा करके ही दम लेंगे।" मई दिन बहुत महत्वपूर्ण दिन है और हम मेहनतकश अपने खूनसे सींचे हुए इस दिनको कैसे भूल सकते हैं। जिसके लिये हमने इतना बलिदान किया, कष्ट सहे, उसे भुलावें ?

यों तो यूरोपमें मईमें वसन्तकी शुरुआत समझी जाती है। सारेके सारे शौकीन पहाड़ोंकी सैरको निकल जाते हैं। खासकर नवदम्पति तो इसे अपना खास त्योहार समझकर ही मधुमास मनाते हैं। मगर हमारे लिये मई दिन मधुमास मनानेका सन्देश थोड़े ही देता है ? हमारे लिये तो यह वह संदेश देता है कि अपने खूनसे रंगे झण्डेको ऊंचा रखें और उसे दुनियाके हर छोर पर फहरा कर अपना राज्य स्थापित करें। हमें यही जंगी संदेशा देने मई दिन आता है। हमने हिन्दुस्तानमें इसके लिये कम कुर्बानी नहीं की है ? कलकी ताजी बात है कि कलकत्तेमें गाड़ीवानोंकी लड़ाई ने दो दिनों तक वहांकी पुलिसको परेशान कर दिया और अपनी मांगोंकी पूर्ति तक डट रहनेकी प्रेरणा दी। १ ली अप्रैल १९३० को कलकत्तेके गाड़ीवानों पर गोलियां चली थीं। अनेकों सदाके लिये हमसे बिछुड़ गये थे, फिर भी गाड़ीवानोंके जोशने १ ली मईको दिखा दिया था कि मेहनतकशोंके जोश कभी कम नहीं होते और वे अन्त तक लड़ने वाले होते हैं। मई दिनको हम राजी व बेराजीसे सारा काम काज बन्द कर देते हैं। और अपने प्यारे झंडेका प्रदर्शन कर शोषकोंसे कहते हैं कि हम अपनी मांगोंके लिये डटे रहेंगे और यह झंडा दुनिया से शोषण और उत्पीड़नको मिटा कर ही दम लेगा। यह हमारी अन्तर्राष्ट्रीयताका प्रतीक है और इसे हम आज ऊंचा उठाकर शोषकोंको चुनौती देते हैं कि दुनियाकी कोई भी ताकत हमें पीछे नहीं ढकेल सकती है। मजदूरों आज जब कि दुनिया में कुहराम मचा हुआ है, खासकर भारतमें आजादी मिल जानेके बाद भी संकटोंके पहाड़का टूटना बताकर हमें खामोश रखा जा रहा है इस मौचे पर हमें खूब सोच समझ कर, आगे के लिये अपना रास्ता तय करना है। इस मौके पर हमें आपसमें एकता स्थापित करनी तथा अपने संगठनको मजबूत बनाना है। हम कौमी एकतासे अलग नहीं रह सकते, मगर समाजबादी क्रान्तिकी कीमत पर राष्ट्रीय एकता, रक्षा और राष्ट्रीय सरकार धोखाधड़ी है। हम राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय रक्षा और राष्ट्रीय सरकारको चाहते हैं मगर अपने मकसदकी कीमत पर मुट्ठीभर सरमायेदारोंको बेहद मुनाफे और गुलछर्रे उड़ानेके लिये नहीं। आखिर मई दिन क्या है ? सन् १८७२ ई० में हेगमें प्रथम अन्तराष्ट्रीयने अपनी जेनरल कौंसिलके दफ्तरको इंगलैंडसे उठाकर अमेरिका ले जाना तय किया था। यों तो प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय आपसी मतभेदों के चलते आखिरी सांस गिन रहा था। औफिसके अमेरिका चले जानेसे एक तरह से यूरोपसे उसका संबंध विच्छेद हो गया। थोड़ा बहुत असर रहा भी तो अमेरिकामें ही। जो भी हो, सन् १८८४ में अमेरिका के मजदूरोंने तय किया कि कामके घंटे आठसे ज्यादा नहीं होना चाहिये और बाजाप्ता दो सालका समय देकर निश्चय किया गया कि १ ली मई १८८६ से हमारे कामोंके घंटे आठ होने चाहिये। एक तरफ मेहनतकश कामके बोझसे दबे जा रहे थे और मजदूरी इतनी कम मिलती थी कि जीना दूभर हो रहा था। दूसरी तरफ सरमायेदार नये-नये साधनोंकी तरक्की द्वारा बेहद मुनाफा लूट रहे थे। ऐसे मौके पर वे ज्यादा से ज्यादा घंटे काम लेना चाहते थे और उसी कम तनख्वाहमें। मजदूर चाहते थे कि आठके अतिरिक्त घंटे ओवर टाइम समझे जांय और उसके लिये ड्योढ़ी मजदूरी मिले। मगर वुर्जुवा राजी खुशीसे थोड़े ही सुनने वाले होते है ? अगर कभी झुकते भी हैं तो धूर्त्तता से ही। सरमायेदारों ने मजदूरोंकी मांगें टरका दीं। इधर मजदूरों ने ३० अप्रैल १८८६ तक अपनी मांगें न पूरी होने पर १ ली मईको शिकागोमें एक संगठित प्रदर्शन किया। जुलूस निकाले गये जो कि अमेरिकन सरमायेदारोंके लिये वर्दाश्त के बाहर था। राज्य तो अमीरोंके लिये होता ही है। अमन अमानका अर्थ ही है अमीरीकी अमीरोकी हिफाजत करना। बस क्या था ? हे बाजारमें पुलिसके गुण्डों से मजदूर प्रदर्शनकारियोंकी मुठभेड़ हो गयी लाठियोंकी बौछार तो हुई ही गोलियां भी चलायी गयी। अनेक मजदूर बात की बातमें अपने हकके लिये शहीद हो गये। घायल तो बहुत हुए। मगर सरमायेदार और उसका संरक्षक राज्य इतने पर ही चुप नहीं बैठा। हे बाजारमें बलवाके मुकद-

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





मे मजदूरों पर चलाये गये। फांसी, आजीवन तथा मियादी कैदकी सजा दीं गयी। हमारे मई दिनका यही इतिहास है। अभी तक यह अन्तर्राष्ट्रीय त्यौहार नहीं बन सका था मगर अमेरिकन मजदूर उसी दिन से मनाते आ रहे हैं। इसके चलते कई बार बहुत कुछ सहना और करना पड़ा है।

१८८९ ई० में द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीयका जन्म पेरिसमें हुआ और द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय के प्रथम अधिवेशनमें ही सभी मुल्कों के मजदूरोंके लिये मई दिन एक अन्तर्राष्ट्रीय त्यौहार निश्चित किया गया और दैनिक कामके आठ घंटे और ओवर टाइम की ड्योढ़ी मजदूरी पर भी स्वीकृति की मुहर लगा दी गयी। उसी दिनसे हमारे लिये मई दिन एक महत्वपूर्ण दिन बन गया। उस दिन हम कारखाने नहीं जाकर अपने भावी प्रोग्राम निश्चित करते हैं और सन् १८८९ ई० से ही प्रायः हरमुल्क के मजदूर कम वा वेशी इसे मनाते आ रहे हैं। १९०१ में पीटस्वर्गके ओबुकोवके वा रूदके कारखानेमें मई विन की हड़ताल मजदूरों और सैनिकोंके खूनी संघर्षमें बदल गयी। ८०० मजदूर गिरफ्तार किये गये थे जिनमें से अनेकोंको कैद वा निर्वासनकी सजा दी गयी। १९०४ के मई दिवस पर वारसामें मजदूर जुलूस पर गोलियां चलीं। कई सौ मरे तथा घायल हुए। प्रतिवादमें हड़ताल हुई और सारा महीना हड़तालों और जुलूसोंका तांता लगा रहा। १९१८ में रूसमें मई दिवस जबर्दस्त रूपसे मनाया गया। यों तो प्रथम युद्धके शुरुसे ही सभी सच्चे मार्क्सबादी युद्धसे फायदा उठाना चाहते थे। मगर १९१५ के मई दिवस पर निकाले गये रौजालग्जमबर्ग के पर्चे बहुत महत्वपूर्ण थे। उसमें साफ लिखा था कि "यह मई दिन इस जंगके मौकेपर हमें आगाह करने आया है कि हम अपनी गफलतको तोड़ अपनी हुकूमत कायम करें।" उस अवसर पर लेनिनके निकाले गये पर्चे तो हमारे लिये तबतक पथ प्रदर्शक का काम करेंगे जबतक कि हमारा मकसद पूरानाहीं हो जाता है। युद्धजनित आर्थिक तथा राजनैतिक संकटको इस्तमाल करने, जनताको आगे बढ़ाने और पूंजीवादी शासनको समाप्त करनेमें बढ़ावा देनेके आधार पर हीं रौजालग्जमबर्ग और कार्ललवेनेटका संयुक्त मोर्चा बना था। आज जिस विषम घड़ीसे हम गुजर रहे हैं, अभी सभी मार्क्सवादियों, वामपंथियोंको संयुक्त मोर्चे बनाना ही चाहिये। फौजी जंग तो अभी बंद सा है। मगर राजनैतिक और कूटनीतिक युद्ध चरम सीमा पर पहुंच चुका है। इस युद्धको कौन किसके लिये चला रहा है" इसी नामपर बहुत बरगलाया जा रहा है। हालांकि ये नारे निर्णयात्मक होते हैं मगर दुश्मन इसी बहाने जनताके सामने विरोधियों का खराब और अपना अच्छा चित्रखींचकर गुमराह करते है। बकौललेनिनके "सरमायेदार और सरमायेदारीके आन्दोलन को प्रगतिशील समझना गुनाह है। सभी बुर्जुवाई प्रजातंत्र प्रतिगामी हो चुके हैं।" अभी हो क्या रहा है ? सरमायेदारोंके पैसेके बलपर श्रेणी सामंजस्यके आधारको अपनानेके लिये हरमुल्कमें उसकी एजेंट सरमायेदारी-समर्थक सरकारें भिड़ी हुई हैं। भारत अपवाद नहीं है। यहां तो वह हमारे त्याग और बलिदान है। यहां तो वह हमारे त्याग और बलिदान का सेहरा अपने ऊपर लेकर आगे बढ़ रहा है। हमें इन प्रगतिविरोधियों से सजग और सचेष्ट रहना है। जब रूसके मजदूर राज्यपर खतरा आया था तो लेनिन भी पूंजीवादी मुल्कोंको तरजीह देनेको तैयार थे, मगर वहां सर्वहाराके क्रान्तिकारी कार्यक्रमको रद्द करनेकी कीमत पर नहीं। एक तरफ आज हिन्दुस्तानमें कितनी ही कसमकसें चल रही हैं। मजदूरोंको दानेदाने का मुहताज होना पड़ रहा है। राष्ट्र पर खतरा आया है उसकी चिन्ता है। मगर दूसरी तरफ सरमायेदारोंके मुनाफेमें बेहद तरक्की हो रही है। व्यवसाय जोरों से बढ़रहा है। मगर मजदूरोंको क्या फायदा? रोजगार की मन्दी आते ही छंटनी और अभी तरक्की होने पर भी भूखों ही मरना पड़ता है। इतने पर भी हमें गद्दार कहा जाता है। इस बारका मई दिन हमें यही सिखने आया है कि "अगर हम दल बद्ध हो मजबूतीसे खड़े हुए तो ठीक है वरना हम बहुत दिनोंके लिये कुचल दिये जायंगे।" अभी हमारे संगठन पर बहुतों खतरे लाये गये हैं। हम पेट के लिये अगर हड़ताल करें तो गैर कानूनी और सरमायेदार अगर सरकार द्वारा नियुक्त पंच की बात न मान कर मिल बंद करें तो चुप्पी, यही तो आज का रवैय्या है। हमें ही अन्तिम मोर्चे पर डटना है। अतः हममें जहां शिथिलता आयी कि अनेकों जन-मन भुलावन आवाजें सुनायी पड़ने लगेंगी। बारहां बहाने बनाये जांयगे ताकि मजदूर तहरीक में किसी भी तरह फूट डाली जा सके। वृटिश अमेरिकन थैलीशाहोंको खुश करनेके लिये हमें कुचला जा रहा है। मगर अमेरिकन थैलीशाह खुश होकर ही क्या करेंगे ? चीनपर खुश होकर ही क्या किया ? बल्कि चीनको बर्बाद अवश्य कर दिया। उसी तरह वह अपने रुपयेके बल पर देशप्रेमके पर्देको टांग कर उसके पीछे शोषण और उत्पीड़न करेगा। इसलिये हम अपनी कमजोरियोंको दूर करते हुए आगे बढ़ते चलें। यही बताने इस बार मई दिन आ रहा है। अन्तर्राष्ट्रीयके प्रतीक शोषितोंका पथप्रदर्शक लाल झंडेके नीचे ही हम आगे बढ़कर शोषण और उत्पीड़न को मिटा कर श्रेणीविहीन समाज बना सकते हैं। इसका यह अर्थ कभी नहीं कि राष्ट्रीय झंडेके हम खिलाफ हैं। उसका अलग स्थान और महत्व है। यही अहद लेकर आज हमें शहीद साथियोंकी स्मृतिके साथ उनकी जंगी हिदायतोंको पूरा करना है, यानेवर्गविहीन समाजकी स्थापना करनाहै।

काफू (रजि०)
हैजे
को रामबाण दवा है
डाबर लिमिटेड, कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रेम-पत्र

—'तपस्वी'—

व्यस्तता और कोलाहलके आधुनिक युगने व्यक्तिको इतना नीरस बना दिया है कि भावुकताके हेतु उसके हृदयमें कोई स्थान नहीं, कोमलताका नैसर्गिक उत्स भी सूख ही गया हो। यह टेलीफोनके द्वारा विवाह रचाये जानेका समय है। इसने नाटकोंका स्थान एकांकी तथा सिनेमा ने ले लिया है एवं उपन्यासोंके बजाय कहानियां हम चाहते हैं।

पाश्चात्य देशोंमें पत्र लिखनेकी कलाका विशिष्ट स्थान रहा है। सम्राट्, सेनापति और कवियोंके पत्र, वे चाहे व्यक्तिगत क्यों न हों संग्रह करना और उन्हें स्थायी साहित्यकी संपत्ति बनाना वे आवश्यक ही नहीं समझते प्रत्युत उसपर गर्वका भी अनुभव करते हैं तथा पत्र साहित्यमें प्रेम-पत्रोंका और भी विशिष्ट स्थान है। यों भारतमें भी रुक्मिणीका श्रीकृष्णको, संयोगिताका पृथ्वीराजको तथा शकुंतला का दुष्यंतको प्रेम-पत्र लिखना प्रसिद्ध है राष्ट्रीयता और इतिहासकी सम्पत्ति इसी प्रकार इंग्लैंड, फ्रांस और अन्य देशों के महत्वपूर्ण पुरुषोंने अपनी पत्नी या प्रेयसियोंको जो पत्र लिखे उनका ऐतिहासिक मूल्य है। इन पत्रोंको पढ़ कभी पाठक भावमें डूब जाता है, कभी आत्म विभोर हो जाता है। संसारके सभी प्रेम-पत्रोंका यदि संकलन किया जा सके तो एक पोथा तैयार हो जावे। आज हमारा देश स्वतन्त्र है। साहित्यके अब अंगोंके विकासके साथ प्रेम-साहित्यकी भी यथेष्ट अभिवृद्धि होनी चाहिये। पण्डित जवाहरलाल नेहरू द्वारा इंदिराको लिखे पत्रोंका संग्रह एक सुन्दर संग्रह है। हमें प्राचीन महत्वपूर्ण पत्रोंका संग्रह करना चाहिये तथा आधुनिक प्रेम पुरुषोंके भी पत्र-संग्रह प्रकाशित होना चाहियें। नीचे कुछ विशिष्ट प्रेम-पत्र दिये जा रहे हैं:—

इंग्लैंडके इतिहासमें हेनरी अष्टमका नाम प्रसिद्ध है जिसे सिंहासनारूढ़ होते ही अपनी विधवा भौजाई केथेराइनसे विवाह करना पड़ा था बादमें एनी बोलेनके सौन्दर्य ने उसे उन्मत्तकर दिया। इसी कारण उसने केथेराइनको तलाक दिया था और बादमें यही महारानी एलिजाबेथकी माता भी हुई थीं। तलाक-व्यवस्थाके समय एनीने राज दरबारमें आना छोड़ दिया था। तब हेनरीने उसे यह पत्र लिखा था—

"मेरी रानी, मैं और मेरा दिल तुम्हारे हाथमें है। मुझे भय है कि दूर रहनेके कारण कहीं मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम कम न हो जाय। तुमसे अलग रहने ही का मुझे काफी कष्ट है इसे अपने प्रेमसे बंचित करके और बढ़ा न देना। मिलनके अभाव में जो मुसीबत हमें उठानी पड़ रही है इसे तो मैं यह जानकर सह रहा हूं कि इसके बिना छुटकारा नहीं है किन्तु तुम्हारे प्रेम के विषयमें निश्चिन्त न होता तो निश्चय जानो कि इस वेदनाको मैं किसी तरह सह न सकता। इसलिये रत्नजटित अपना चित्र भेज रहा हूं। काश,इसकी जगह मैं स्वयं होता! —तुम्हारा सेवक और मित्र हेनरी।"

एनी बोलेनने हेनरीके अप्रसन्न हो जानेपर जेलसे यह पत्र लिखा था:—

"स्वामी आपकी नाराजगी और मेरा इस कारावासमें डाला जाना मेरे लिये इतने आश्चर्यमें डालने वाली बात है कि मैं नहीं जानती क्या लिखूं, क्या न लिखूं? आपने संदेश भेजा है कि सच-सच कहकर फिर आपकी कृपाभाजन बन जाऊं किन्तु यह आप कभी ध्यानमें भी न लावें कि आपकी पत्नी ऐसे अपराध को स्वीकार करेगी जिसे वह कभी ख्याल में भी नहीं ला सकती। सच तो यह है मेरे मालिक, कि किसी व्यक्तिको इतनी साध्वी और पतिव्रता पत्नी न मिली होगी जितनी तुम्हें एनी बोलेन मिली है। आपने समाज की नीची स्थितिसे उठाकर मेरी कल्पनाओं और इच्छाओंकी पहुंचके बाहर अपनी रानी बनाया है और जब कि आप मुझे इस सम्मान और पदके योग्य समझ चुके हैं तो एक साधारण भावोद्वेगके वशीभूत होकर या शत्रुओंके कान भरनेपर अपनी कृपासे बंचित न करें और अपनी साध्वी पत्नी और अपनी इस बच्चीको लांछित न करें। यदि आप मेरे मामले की जांच अदालतमें कराना चाहें तो करावें किन्तु अपने ही शत्रुओंसे न्यायकी याचना करनेपर मुझे मजबूर न करें। भले ही खुली अदालतमें मेरी जांच हो—इससे मैं डरती नहीं, क्योंकि सच बात कहनेमें कोई शर्म नहीं। तब आप देखेंगे कि किस तरह मैं निर्दोष प्रमाणित होती हूं, किस तरह आपका संदेह मिटता है और किस तरह दुनियामें मेरी जो बदनामी हुई है उसका अन्त होता है और यदि मेरा अपराध न्यायालयमें प्रमाणित होता है तो दुश्चरित्रा स्त्रीको जो भी सजा मिलनी चाहिए, वह मुझे मिले और आप खुशीसे उससे प्रेम कर सकते हैं जिसके लिये ये दिन मुझे देखने पड़ रहे हैं परन्तु, यदि आप मेरी मृत्यु और उससे भी बुरी बदनामी करके अपने मनोरंजनका निश्चयकर चुके हों तो ईश्वरसे मेरी यही प्रार्थना है कि वह आपको इसके लिये क्षमा प्रदान करे और उस महान न्यायालयमें, मैं और आप उपस्थित हों तो मेरे जीवनके इस क्रूर उपयोगके लिये कड़ा फैसला न करे। आपकी साध्वी और पतिपरायणा पत्नी-एनी बोलेन।"

क्रामवेलने अपनी पत्नीको लिखा था 'मेरा जीवन तुम्हारी अनुपस्थितिमें अधूरा ही है।'

कदाचित् इतिहासका सबसे प्रसिद्ध प्रेम-पत्र नेल्सनका है जो उसने ट्रांफलगार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की विजयके पहले १९ अक्तूबर १८०५ को ऐमा हेमिल्टनको लिखा था:—

प्रियतमे ऐमा—मेरे हृदयकी रानी, ज्ञात हुआ है कि दुश्मनके जंगी जहाजोंका सम्मिलित बेड़ा अपने बन्दरगाहोंसे चल चुका है। हवा धीमी है इसलिये कि कलसे पहले दिखायी देनेकी आशा नहीं है। युद्धक देवता मेरे प्रयत्नोंको सफल बनावे। चाहे कुछ भी हो, मैं यही कोशिश करूंगा तुम्हें और होरेशिया दोनोंको मेरा नाम सर्वदा आज ही की तरह प्रिय रहे, क्योंकि तुम दोनोंको ही मैं प्राणोंके समान प्यार करता करता हूं। युद्धके पहले मैं अन्तिम बार तुम्हें लिख रहा हूं और आशा करता हूं कि युद्धके बाद भी इस पत्रको समाप्त करनेको जीवित रहूंगा। परमात्मा तुम्हें खुश रखे। तुम्हारा—नेल्सन

दो दिन बाद प्राणोंके मूल्य पर उसने विजय प्राप्त की। नेपोलियनके द्वारा उसकी प्रेयसी जोसेफाइनको लिखे पत्र भी नेल्सन की ही भांति विख्यात हैं। नेपोलियनने सन् १७९६ में उससे विवाह कर लिया पर न वह उच्च कुलकी थी न उसके कोई संतान ही हुई एतदर्थ १८०९ में उसने हैप्सवर्गकी राजकुमारी मेरीसे विवाह कर लिया। जोसेफाइनको विवाहके बाद लिखे पत्र—"प्रेमकी प्रतिमा! तुम्हें पत्र लिखनेसे जो आनन्द मुझे मिलता है उसके अभावसे पीड़ित होकर यह पत्र लिख रहा हूं। मेरे प्राणोंकी प्राण! जो सवार यह पत्र लेकर तुम्हारे पास आ रहा है उसीके हाथ कुछ लिखकर भेज दो नहीं तो मैं जीवित नहीं रह सकता।

'तुम्हारा पत्र मिला, प्रियतमे इस ने मेरे हृदयको हराकर दिया। जबसे तुमसे बिछुड़ा हूं, खोया खोया सा रहता हूं। केवल तुम्हारे पास ही रहनेसे मुझे आनन्द का अनुभव होता है। तुम्हारे चुम्बन, तुम्हारे आंसू, तुम्हारी बातें लगातार मुझे याद आती रहती हैं और अनुपम रूपसी जोसेफाइनकी छवि मेरे हृदयमें उज्ज्वल ज्योति [ सी जलाये रहती है। जबसे तुम्हारा परिचय मिला है, दिन प्रतिदिन मैं तुम्हारे गुणोंका अधिकाधिक पुजारी ही बनता गया हूं। तुममें कोई बुराई तो मुझे दिखाई ही नहीं देती। मुझे कुछ अपने दोष भी देखने दो जैसी सुंदर, कृपालु, मधुर और विनो तुम हो क्या उससे रंचमात्र कम नहीं हो सकती? और देखो, रोना तो कभी भी नहीं, तुम्हारे आंसू देखकर तो मैं पागल हो उठता हूं। विश्वास करो कि तुम्हें छोड़ कर और कोई भी विचार मेरे मस्तिष्क में आना असम्भव है। कोटि कोटि चुम्बन — बोनापार्ट"

भारतके प्रथम गवर्नर वारेन हेस्टिंग्ज की मेरियन इमहाफसे भारत आते समय जहाजपर भेंट हुई थी। हेस्टिंग्जसे विवाह करनेके हेतु बादमें इमहाफने अपने पतिको तलाक दे दिया था। दोनोंका प्रेम आमरण अक्षुण्ण रहा। अपने कार्यकालके अंतिम वर्षमें उसने उसे विलायत भेज दिया था ताकि भारतकी आबहवाका उसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव न पड़े। इसी वर्ष उसके लिखे दो पत्र "तुम्हारी जहाजका मस्तुल जब तक दिखायी देता रहा, मेरी आंखें उसकी तरफ लगी रहीं। वह दिन बड़ा बुरा गुजरा। पीड़ा से दिलमें सूजन सी जान पड़ने लगी। दुनियामें जो मुझे सबसे प्यारी है और जो सदा मेरे बाहुपाशमें आवेष्टित रही है उसके और मेरे बीचमें समुद्र लहरा रहा है। मैं तुम्हें अपने प्राणोंसे भी अधिक चाहता हूं। मेरा जीवन तभी तक है जबतक तुम्हारे आनेकी आशा बनी हुई है।"

"जीवनकी प्रत्येक घटनामें मुझे तुम्हारा अभाव खटकता है। जब अकेला बैठता हूं तो स्मशानकी सी उदासी लगती है। बाहरसे जब घर आता हूं तो काफी भीड़ घेरे रहती है परन्तु मनकी वह जीवनदायिनी तृप्ति नहीं मिलती, हृदयको संतोष देनेवाली मेरियन दिखायी नहीं पड़ती"

---

## दूर खेतों पार—

शीत की काली भयावह रात!
दूर खेतों पार निष्क्रिय 'चांल'
जर्जर दूह,
घुंध भीषण अग्नि लपटें लाल
जलती रह
मूक प्राणों के दमन की बात!
मर्म पर अंतिम विनाशक चोट
घायल क्रम
ले तिरस्कृत प्राण रजमें लोट
पीड़ा क्रम
बद्ध शोषित रक्त से तन स्नात!
तीव्र रोदन का करुणतम शोर
जीवन क्र
फाड़ता अंतर प्रखर विष घोर
वैभव भ्र
सांस प्रति कंपन सिहरता गात!
सभ्यताकी नींव जर्जर, लूट,
साधन हीं
नाशकारी बांध, सिर पर फूट,
मानव क्रं
खो गया तम के विजनमें प्रात!

—महेन्द्र भटना

## गीत

मिट्टीका संसार तुम्हारा
सबमें एक तुम्हारी माया,
सबमें एक तुम्हारी छाया,
ऊधरों का हो मधुर हास या—
नयनोंकी नीरव जल—धारा
मिट्टीका ससार तुम्हारा
ढूंढ-ढूंढ कर दुनियां हारी,
जान सकी रे, गति न तुम्हारी,
पल-पलमें नित बदल रहा ह—
खेल तुम्हारा न्यारा-न्यारा!
मिट्टीका ससार तुम्हारा
पद—पद पर मिथ्या आकर्षण,
पद—पद पर केवल मृग—जल
मुंद जाते जब नयन हमारे,
रह जाता तब कौन हमारा
मिट्टीका संसार तुम्हारा

—रामनाथ पाठक प्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दी बनाम हिन्दुस्तानी

—श्री उमाशंकर शुक्ल—

(इस समय देशमें राष्ट्र भाषाके प्रश्न को लेकर बहुत ही चर्चा हो रही है। हिन्दी हिन्दुस्तानीका प्रश्न जोर पकड़ रहा ह। इस सिलसिलेमें भारतेंदु हिन्दी सिंडीकेट वर्धाके सम्पादक श्री उमाशंकर शुक्लने हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके उपसभापति आचार्य काका कालेलकरसे चर्चा की। जो यहां प्रश्नोत्तरके रूपमें दी जा रही है-संपादक)

प्रश्न--श्री संपूर्णानन्दजीने 'लीडर' में लिखा है कि हिन्दुस्तानीको सरकारत काममें लानेके लिये और इतिहास भूगोल विज्ञान आदि विषयोंमें उसे चलानेके लिये हमें नये पारिभाषिक शब्द ग ने पड़ेगें। ये पारिभाषिक शब्द हमें हिन्दुस्तानी तो नहीं देगी क्योंकि वह तो हमारे उठने हंसने, बोलने और मोल भाव करनेकी भाषा है। इसके लिये हमें या तो संस्कृत या फारसी, अरबी या अंग्रेजीकी शरण में जाना पड़ेगा। किंन्तु अंग्रेजीसे केवल पारिभाषिक शब्द ही लेकर उन्हें अपनी भाषामें चलानेसे एक नयी खिचड़ी और बसिर पैरकी भाषा तयार हो जायगी जिसके लिये कदाचित कोई भी भारतीय तैयार न होगा। यदि ये शब्द फारसी अरबीसे लिये जांय तो वह हिन्दुस्तानी न रह कर उर्दूका रूप धारण कर लेगी। बची संकृत, उससें शब्द लेना हिन्दुस्तानी को हिन्दी बनाना है---अतएव हिन्दुस्तानी की गति कही नहीं है। इस सम्बन्धमें आप की क्या राय है ?

उत्तर---श्री संम्पूर्णानन्दजीने क्या लिखा है मैं नहीं जानता हूं। मैंने सब उसे पढ़ा नहीं है। इतिहाश, भूगोल आदि विषयोंमें शायद खिचड़ी परिभाषा चल सकेगी जिसमें हिन्दुस्तानीकी सबकी सब भाषाओंमेंसे अच्छे पारिभाषिक शब्द लिये जा सकते हैं। कहीं कहीं अच्छे और और आसान अंग्रेजी शब्दको भी ले सकते सकते हैं, जिस तरह अरबो और फारसी फारसी शब्दोंका बहिष्कार हम नहीं करते हैं उसी तरह चन्द अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द अच्छी तरहसे बैठ सकें तो उन्हें लेनेमें में हर्ज नहीं है।

लेकिन परिभाषाके सवालका मेरा व्यापक जवाब यह है कि जहां रूढ़ पारिभाषिक शब्द नहीं मिलते हैं वहां हम संस्कृत ढंगके और अरबी फारसी के ढंगके ऐसे अलग अलग दो सेट तैयार करेंगे। हरेक को दोमेंसें चाहे उस एक सेटके पारिभाषिक शब्द इस्तेमाल करनेकी इजाजत रहेगी लेकिन अपने विषयकी परिभाषाके दूसरे स्टेटके साथ हरेकको परिचित रहना जरूरी होगा मसलन व्याकरणमें मैं स्त्रीलिंग और पुलिग शब्दोंका व्यवहार ही करूंगा लेकिन 'मुजक्कर और मुअन्नस' य शब्द भी मुझे मालूम होने चाहिये।

संस्कृतसे तत्सम या तद्भव रूपमें परिभाषा लेनेसे हिन्दुस्तानी हिन्दी नहीं बनती है और अरबी फारसीके पारिभाषिक शब्द लेनेसे वह उर्दू नहीं बनती है। अथवा यों कहें कि जो कुछ भी नागरीमें आसान शैलीसे लिखा जाता है वह सब हिन्दुस्तानीका हिन्दी रूप है और जो कुछ भी उर्दू लिपिमें वैसा ही लिखा जाता है वह हिन्दुस्तानीका उर्दू रूप है। दो लिपि का स्वीकार हो और सामान्य भाषा मिश्रित हो इतना ही हिन्दुस्तानीका आग्रह है।

प्रश्न--उर्दू लिपिके बारेमें हिन्दुस्तानी के समर्थकोंका कहना है कि उर्दू सरल है। यदि यह बात है तो उर्दू जिस अरबी लिपि में लिखी जाती है, यदि सुगम होती तो वह तुर्की और मध्य एशियाके देशोंसे न निकाली जाती।

उत्तर--उर्दू लिपिकी रफ्तार अच्छी है। वह शीघ्र लेखनकी लिपिका काम दे सकती है लेकिन वह हिन्दुस्तानकी सब भाषाओंकी ध्वनियां अच्छी तरहसे अदा जगह ले लेगी, ऐसा डर नहीं है। तुर्की और मध्य एशियाके देशोंका सम्पर्क यूरोप से ज्यादा है। वे अपनी सहूलियत देखकर चाहे जो करें हमारे देशमें उर्दू लिपि सैकड़ों बर्षसे चली आयी है। वह सरल भी है और सदोष भी है। जो चलती आई है उसका प्रचलन तोड़ना आसान नहीं है, इष्ट भी नहीं है। जो लिपि सैकड़ों वर्षों तक चली है उसने अपने लिये क्षेत्र बनाया है--उर्दू लिपिके द्वारा ही हम उत्तर हिन्दुस्तानके अनेक हिन्दू मुसलमानोंको हमारी हिन्दुस्तानी दे सकेंगे। सिर्फ उर्दू जानने वाले लोग नागरी सीख कर हिन्दुस्तानी शैली नहीं सीख सकेंगे। उर्दू लिपिके जरिये हम उन्हें हिन्दुस्तानी शैली नहीं सिखा सकगे। उर्दू लिपिके जरिये हम उन्हें हिन्दुस्ताधी दे सकते हैं और उसमें जितने भी नये नये देशो शब्द हम बढ़ाये वे सब उर्दू वाले आस्ते-आस्ते समझसकेंगे। हिन्दुस्तानीके प्रचारके लिये उर्दू लिपिका सहारा अत्यन्त आवश्यक है। उर्दू लिपि के साथ नागरीका भी प्रचार चलेगा ही उत्तरी हिन्दुस्तानके उर्दू वालोंको नागरी का भी जब परिचय होगा (इसमें एक जमाना चला जायगा) तब अगर सुधरी हुई नागरी उनको आसान मालूम हुई तो वे उसीको चलायेंगे। इस तरह उर्दू लिपि हिन्दुस्तानीके लिये और नागरीके लिये भी मददगार होगी। उर्दूसे दुश्मनी करने से न नागरीका हित होगा न उसका प्रचार जितना हम चाहते हैं उतना बढ़ेगा। उर्दू के प्रचारसे नागरीको कोई खतरा है नहीं और हमने नागरी छोड़नेकी बात कही भी नहीं है। नागरी तो रहेगी ही और उर्दू की मददसे वह बढ़ेगी भी।

प्रश्न- हिन्दुस्तानी की परीक्षाओंमें बैठने वाले परीक्षार्थियोंकी संख्यामें मुसलमानोंका क्या अनुपात है ?

उत्तर--जब तक हम राष्ट्रभाषाके तौरपर हिन्दीको ही चलाते थे तबतक शायद ही कोई मुसलमान हमारी परीक्षा में बैठता था। जबसे दो लिपि वाली हिन्दुस्तानीकी परीक्षाएं चली हैं, मुसलमान विद्यार्थियोंने बैठना शुरू किया इतना ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विश्वमित्र

नहीं उनका अनुपात भी आशाजनक है।गुजरातमें, बम्बईमें और वर्धामें परीक्षाएं ली जाती हैं। वहांसे आंकड़े मंगवाकर मैं आपको ठीक अनुपात बता सकता हूं। फिलहाल इतना ही कहूंगा कि अनुपात आशाजनक है।

प्रश्न–कुछ लोगोंका कहना है कि हिन्दुस्तानीके समर्थकोंने विधान सम्मेलनमें हिन्दीको भारत संघकी राष्ट्रभाषा न बनाने देनेके लिये बीड़ा उठाया है–क्या यह सच है ?

उत्तर–प्रश्न बड़ा भद्दा है। हिन्दुस्तानीके समर्थकोंमें अग्रणी तो महात्मा गांधी थे। क्या वे हिन्दीके शत्रु थे ? श्री जवाहरलालजी भी हिन्दुस्तानीके समर्थक हैं। उन्होंने क्या हिन्दीकी सेवा नहीं की है ? सुना जाता है कि हिन्दीके पक्षपातियोंने जाहिरा तौर पर हिन्दुस्तानी के खिलाफ बीड़ा उठाया है। उनकी देशभक्तिके बारेमें हमें संदेह नहीं है। अपनी-अपनी राय होती है और प्रभाविकतासे उसका प्रचार करनेका हरेकको अधिकार है। इस प्रश्नमें दो पक्षके बीच झगड़ा पैदा करनेकी जो बू है उसका तो निषेध ही करना चाहिये।

प्रश्न–अबतक मुसलमानोंको खुश करनेके लिये हम उर्दू लिपिमें सीखनेके लिये कहा करते थे–पर अब परिस्थिति बदल गयी है। क्या बिना उर्दू सीखे हमारा काम नहीं चल सकता ?

उत्तर–कारण कुछ भी हो, उत्तर हिन्दुस्तानके हिन्दू और मुसलमान सैकड़ों वर्षोंसे उर्दू लिपि चलाते आये हैं उनको एकाएक उस लिपिको छोड़नेको वाध्य करना न्यायसंगत नहीं है। इस बारेमें मुसलमानोंको खुश करना अनुचित नहीं है। देशका बटवारा होनेसे ही हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो सका लेकिन और कोई परिस्थिति बदली हुई नहीं है जिस पर हम राजी हो सकें। ऐसी हालतमें हम तो मुसलमानोंको यही बता देंगे कि हम उनके कभी भी दुश्मन न थे, न आज भी बनना चाहते हैं। उर्दूको अपनाकर ही हम उनके बीच नागरीका प्रचार कर सकते हैं।

प्रश्न–क्या हिन्दुस्तानीकी कोई निश्चित परिभाषा किसी राष्ट्रीय मुसलमान द्वारा की नयी है। यदि हां, तो वह क्या है और किसके द्वारा की गयी है ? क्या वह मान्य है ?

उत्तर–इस प्रश्नके पीछे मुसलिम फोबिया दीख पड़ता है। इतना कहना बस है कि हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी हिन्दुस्तानीकी परिभाषा मौलाना अबुल कलाम आजाद, जामिया मिलियाके चांसलर ख्वाजा साहब, विहारके डा० सैयद महमद, उसमानिया यूनिवर्सिटीके प्रोफेसर डा० जाफर हुसेन जैसे राष्ट्रीय मुसलमानों ने मंजूर की है और वे हिन्दुस्तानी प्रचार सभाने सदस्य भी हो चुके हैं।

प्रश्न–कहा जाता है कि दिल्लीका जामिया मिलिया जिसके वाइस चांसलर डा० जाकिर हुसेन हैं हिन्दुस्तानीमें शिक्षा देता है। वहां से जो अखबार या रिसाला निकलता है उसकी भाषाको क्या आप हिन्दुस्तानी कहेंगे ?

उत्तर–इस प्रश्नके पीछे भी वैसा ही वृत्ति है जैसी की ऊपरके प्रश्नमें है। क्या हम ऐसा कह सकते हैं कि हिन्दुस्तानका बंटवारा होने तक तो हिन्दुस्तानीकी नीति ठीक थी, अब हिन्दुस्तानीको छोड़कर हिन्दी लेनी चाहिये ऐसा कहने वालोंकी भाषा हिन्दुस्तानके बंटवारेके पहले ठीक हिन्दुस्तानी ही थी ! जिनको जैसी आदत है वैसा ही लोग लिखते आये हैं और हिन्दुस्तानीकी ओर बढ़नेकी कोशिश करते हैं इतना हमारे लिये बस होना चाहिये।

प्रश्न–क्या आपको मालम है कि मद्रास सरकारका जो दक्खिनी हिन्द निकलता है उसके पिछले दो तीन अंकोंमें हिन्दुस्तानीके रूपमें जो परिवर्तन हुआ है वह आपकी दृष्टिमें कैसा है ?

उत्तर–हमेशा मुसाफिरये होनेके कारण अखबार और मासिक नियमित रूपसे नहीं देख सकता हूं। दक्खिनी हिन्द के पिछले दो तीन अंक अभी तक पाया हूं। इसलिये अपनी कोई दे सकता हूं। बेहतर तो यह आप दक्खिनी हिन्दके संचालकों लीजिये कि क्या उनकी नीतिमें हुआ है ?

---

(२० वें पृष्ठका शेषांश)

"मै भी इतनी देर तक तुम्हा बत्तियां जलती देख कर हैरान था। तूम लोग तो जल्दी ही न।"

"अभी इस बच्चीको पास ही छोड़ आऊं तो मिलूंगा— बीस मिनट में।"

मौसीके घर की तरफ जा हो रही थी। तो पहरेदार डा नही होता— मुझे किसने क पहरेदार चोर होता है ? हां सहेली शीला ने कहा था। झू हमेशा झूठ बोलती है। ईश्व देगा। कल उसे बतायेंगी कि झूठ बोलती है।

मौसीका घर हमारे अ दूर नहीं था। लखीराम के द खटरने पर जब दरवाजा खु मौसी और अपनी मौसेरी मझली और भाईको भी सीढ़ि पाया। मौसीने कौशल्या बहन ले जाकर सुलानेको कहा और रामसे बातें करने लगी।

दूसरे दिन सबेरे मेरी कर देने वाली करुणाजनक रो आवाजों से खुली। भाग क कमरे में पहुंची। घरके सभी जमा थे और रो रहे थे। बीच फर्श पर सफेद चादर सिकुड़ी-सी चीज पड़ी थी। पास बैठी मेरी बच्ची, सुमि किस्मत अभागिन बच्ची स विलख रही थी।

उसी रात मंझली बहन की दवाइयों की अल्मरी से को दवा निकाल कर पी ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भूत

**—श्री अनिल कुमार**

भूतोंकी कहानियां आपनें बहुत सी सुनी होंगी, किन्तु कभी इसके विज्ञानकी भी कल्पना की थी ? आप कहेंग भूत और उसका भी विज्ञान हद कर दी आपन तो ! लेकिन बात सही है बिलकुल सोलह आन ।

गर्मीके दिन यों ही रात जल्दी रंग पलटन लगती है और हमको तो यारोंके मजलिसी अड्डोंपर रात-रात गप्पें छाटन का शौक । हमारी इस इल्लतको गर्मीके दिनों खूब मैदान भी साफ मिलता है ।

मजहबी परहेज और कुछ आदतसें हम दिन डूबनसे पहले ही भोजनसे निपट जाते हैं । तो साहब मै खा पीकर बाहर चल दिया । घरमें कोई था नहीं—हम और श्रीमती जी ! लेकिन वह भी लखनादौन अपन नैहर चली गयी थीं । सो मै अकेल ठूंठ रह गया था । चौक बजारवाली पन्नालालजीकी दूकान बहुत रातके बारह बज तक तो खुली रहती ही है । फिर शिवशंकर, चुन्नीलाल और और लक्खी एक से एक बछ कर गप्पियों का जमघट वहीं । रातकोके खरीदके रखत तो क्या होती, बातोंका जमा खर्च खूब ! सो जनाब मैं वहां पहुंचा । वहां पहुंचा तो मरा ही इन्तजार हो रहा था । मैंन जाकर 'कोरम' पूरा किया और कूद पड़ा बातोंके अखाड़में ! दिन डूबने के सातसे लेकर पूरे बारहके टनाटन घंट बजन तक तो हम राजनीति,समाज, कांग्रस, लीग दुनिया भरकी अच्छा -बुराई दायें-बायें, अगल-बगल, सबकी आलोचनाकर के सही सलामत चप्पीके किनार तक पहुंच गय । इधर पन्नालाल जीकी दूकान जो बन्द होन लगी तो मैं भी वहांसे नमस्ते, बंदेमातरम् और तसलीम, आदाबके साथ बिदा लेते हुए चल पड़ा । वहांसे सीध पहुंचा सराफ लेन, क्योंकि हमारी आदत भी इसी रास्तेसे होकर समशेरकी दूकानसे पान चबाकर सिगरेटके कश खींचते हुए आहिस्ते आहिस्ते घर लौटनेकी थी । तो इस दुकानसे भी विदा होकर करीब पौन बजे मै परवार पुरेकी ओर मुड़ने वाला था ही कि शामलालने कंधेपर हाथ रखकर कहा—

"अरे मास्टर साहब, आप भी खूब रहे देख-दाखकर बिन बोलेही चल दिये । कहो, आज दूकानपर क्या क्या छिड़ा ?"

"अरे भाई कुछ न पूछो बड़ी दूर-दूर की ठनी ।"

मैं किसी तरह टालें चाहता था क्योंकि उस दिन नींद समयसे पहलेही रहम कर रही थी । पर शामलाल कब सस्ते में निपटनेलवाले थे ? तो यहां भी खड़े ही खड़े हम घण्टघर बातोंका बतंगड़ लगाते रहे ।

घर पहुंचा तो सूरजमलकी घड़ीने दो की घण्टियां पीट दी । घडीमें लगी रिंग घुमाकर मैंने भीतरसे लगी सांकल खोल ली । भीतर पहुंचकर देखता हूं तो घरकें भीतर प्रकाश ! दरवाजा खोलनेसे पहले हमने खूब सिर मारा लेकिन दिमागने यह जवाब दिया कि मैं लालटेन जलाकर गया तो था नहीं । खैर लालटेन जलाकर भी गये हों और अब याद न पड़ती हो इसलिये हमन हिम्मत के साथ खोला और दरवाजे के पट उलट दिया । अब और एक गजब देखा इस कमरे की रोशनी तो हो गयी गायब और ठीक सामने वाले रसोई घरके कमरेमें दीख पड़ने लगी । आजतक हमने तो कभी भत माना नहीं था, पर सुनते आ रहे थे कि भूतपर आविश्वास करने वालोंको वह दीखता कभी नहीं हमं तो काफी घबरा गये । बदन पसीना पसीना हो गया । सीना जोर जोरसे धड़कने लगा । एक बार तो हमने निश्चय किया कि हो न हो, आज तो इस घरमें सोना नहीं चाहिये । पर अभी हमारी हिम्मेत पानी नहीं हुई थी । चारपाई पलट उस भूतके डेरेमें ही मैं सोचता हुआ बैठा रहा । कुछ सूझा तो मैंने जबसे टटोलकर माचिस निकाली गड़बड़ीमें मैंने अंधेरमें ही लालटेन खोजक जलानेके लिए माचिसपर लकड़ी घिसी त वह जलकर बुझ गयी, जैसे किसीने फूं मार कर बुझा दी हो । मैंने यह भी सुना थ कि भूत लालटेन, ढिबरी या किसी तरहक जलती रोशनी फंक कर बुझा देता है । वह बैठा-बैठा मझ मे कुछ हिम्मत तो आ ह गयी थी, पर इस बातसे डर भी बढ़ रह था । भीतर डर और हिम्मतमें बड़े जोरकी लड़ाई चल रही थी । अब जीत किसीक भी हुई हो, मैंने तो रसोई-घर की भी सांक खोलकर दरवाजेके पीछेकी ओर ठेल दिय अब तो और भी हैरतमें पड़ गया मैं ! रोश एकदम गायब थी ।

मैंने कुछ सोचकर तय किया । जंजीर ख कर चौकेका द्वार बन्द कर दिया और पूर्व वत् बाहरके कमरेमें भी ताला देकर उस वक्त बाहर चल पड़ा । थोड़ी देर बा तो इधर उधर टहलते रहा, फिर घंटे आ घंटे बाद और लौटा, क्योंकि बाहर भी त टहलनेमें कोई दिल नहीं लग रहा था फिर पहलेकी ही तरह घुसकर देखा तो वह पहले जैसा प्रकाश और ताला खोल कर भीत घुसा तो रोशनी चौकेवाले कमरेमें । औ उसकी जंजीर खोल अकर देखा तो रोशन गायब ! मैं बड़े ताज्जुबमें पड़ गया । बिस्त लगा कर बैठा रहा । जब कुछ नहीं सूझ तो लेट गया । चारों ओरसे मसहरीव दबाकर उसके भीतर अपनेको बन्द कर ताकि यदि हो भी तो भूत भीतर न आ सके बड़ी देर तक तो नींद आनेसे नाराज रहा किंतु सोचनेके परिश्रमसे दिमाग काफी थक गया; तब पता भी न चला कि मैं कब स गया ।

दूसरे दिन सवेरे जा और अपने रो मर्राके कामोंमें नित्य की भांति उलझ गया रातकी बात किसीपर प्रकट नहीं की डरका आधा किलाती में फतह कर गयो था, । अभी और आधा बाकी था । भीतर भीतर मैंने निश्चय किया था कि देखूं भू अरमें है क्या बला ? उसके डेरेमें मैं सबेर सोटो सक्का दीया । अतःअबडरउसमानहींरह 'जितना कि प्रथम दर्शनमें ! किसीसे न कहन में भी मेरा तब मतलब था,जरा बातको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किनारेतक पहुंचते कहनेमें भी तथ्य रहेगा। अतः दित भर कामोंमें लगे रहने पर भी और गप्पी या बकबकाचार्य होनेपर भी किसी से उस संबंधमें कुछ भी जिक्र न करते हुए चुप्पी साधे रहा।

इस दिन भी रातके करीब एक बजे घर लौटा – जाते समय में बराबर याद से लालटेन जलाकर बाहर रख गया था लेकिन भीतर वही कलकी रात्रिकी तरह प्रकाश और वही कलवाला हाल बराबर!

इस रातमें भी मैं सोच सोचकर था थका और सो गया।

लेकिन तीसरे दिन जनाब मेरे दिमागमें वह रहस्यका प्रकाश घुसा! इस रातमें मेरा डर तो काफी घट चुका था। प्रकाश पड़ रहा था, वहां दरवाजेके भीतर से बन्दकर मैं आंख लगाकर देखने लगा, आखिर यह आता कहांसे है। बस इतनी क्रिया करनेकी देरी थी कि वही प्रकाश आंखोंकी राह दिमागमें घुसकर उसके भीतर भी रोशनीकर गया।

तीन दिन हुए छोटी सेठानी के बड़े भाई आये थे। ठीक मेरे सामने वाले मकान के उस कमरेमें वे सोते थे जहां से सिरहाने रखे लालटेनकी किरणों सी थीं मेरे दोनों दरवाजोंकी दरारोंसे घुस पड़ती थी सामने वसवाले दरवाजेकी दरारमें पड़ने वाली रोशनी उसके खोल देनेपर उसी रसोई घरमें रसोई-घरके दरवाजेकी दरारमें घुस पड़ती थी और उसने भी खोलने पर वही रोशनी दरवाजेकी आड़में होकर छिप जाया करती थी। कोई माने न माने मैं तो अपनी इस खोज और हिम्मत बनाये रखनेपर पहले तो अपनी ही पीठ थपथपाने लगा, फिर अपनी चिकनी खोपड़ी की मनही मन लगा तारीफ करने। इस जीतपर मैं ऐसा उछला कि मेरा सिर दरवाजेकी चौखटसे टकराते टकराते बचा और ठोकर खाकर मेरे घुटने खाटकी चौखटसे जा लगे।

मारे खशीकी नींद नहीं आ रही थी। भूत भाव डरपोक बनने वालोंकी बेवकूफीपर मुझे तो हंसी आ रही थी और लग रहा था कि कब दिन निकले और मैं अपना किस्सा जाकर दोस्तोंसे कहूं!

तीन दिन या बहत्तर घंटोंकी माथा-पच्चीने मुझपर भ्रम था भूतका राज प्रकट किया था। यदि अविचार और जल्दबाजी से काम लेता तो मैं भी डरकर भूत मानने वालोंमें अपना नाम दर्ज करा चुका होता। हमारे दादाके दादा, जिन्हें हम सब 'बाबा' कहा करतेथेहमारापूराखानदानउनको मानती थी, लेकिन हमने कभी विश्वास नहीं किया था।

वैज्ञानिक तरीकेसे इस कल्पनाका खंडन करते हुए एक कहानी--राजकाली की घाटीमें स्वामी सत्यभक्तजीने लिखी है। उसका भी किस्सा बड़ा वैज्ञानिक है कुछ इस प्रकार --

किसी गांवके पास --जिसका नाम उस कहानीमें है एक पहाड़ी घाटी थी जिसका नाम था राजकालीकी घाटी! उक्त घाटी भूतोंके लिये ख्याति प्राप्त थी। किसीको हिम्मत वहां जानेकी नहीं होती थी। चरवाहों की भेड़ें और गौएं उस ओर कभी घोखेसे निकल जाती तो पुनः जीवित नहीं लौटतीं एक गांवके जमींदारने ऐलान कराया कि जो राजकालीकी घाटीके होकर सही सलामत लौट आये उसकी जीवनकी प्रत्येक इच्छा पूरी की जायगी। एक पढ़ा लिखा गरीब होनहार युवक जिन्दगीसे तंग था। उसने हिम्मतकी। बीबीके रो-रोकर रोकनेपर पर भी रुक न सका और उसको रोती छोड़ कर चला गया। गांव वालोंने उसको घाटीके चढ़ाव तक पहुंचा दिया और लौट आये। युवक ऊंचे स्वरसे गाता हुआ बिना रुके, बेहिचक घाटीके उस पार निकल गया गया है और सही सलामत उसको लांघकर लौट आया। गांववालोंने उसका स्वागत किया। उसकी सारी मांगें पूरी हो गयी थीं लेकिन इसमें तथ्य की बात है उस युवकके द्वारा घाटीके संबंध में दिया हुआ अपना निर्णय! उसके कहा था–

राजकालीकी घाटीमें रासायनिक द्रव्योंकी विपुलताके कारण एक तरह की विषैली गैस फैली रहती है। उस गैसका असर जमीनसे तीन फुटकी ऊंचाईतकहोता है। इसीसे भेडें और गौएं वहांसे जीवित नहीं लौट सकती क्योंकि वे जमीनसेतीन फुटके भीतर ही सांसें लेती हैं। मुझे वहां से जाते हुए काफी थकान महसूस हुई, लेकिन यदि अराम के लिये कहीं बैठता तो लौट सकना मुस्किल था और आपका भूत संबंधी भ्रम अधिक दृढ़ हो जाता।

और युवकके इसी निर्णयके आधार पर वैज्ञानिकोंने उस घाटीका निरीक्षण किया और रासायनिक द्रव्योंके उत्पादन-केन्द्रोंमें उस घाटीका भी उत्पादन-केन्द्रोंमें उस घाटीके भी समावेशकर लिया।

मेरे अनुमानसे भूतका भी विज्ञान ह जसा कि मैने आरम्भमें कहा है। सुविधाके लिये उन्हें चार हिस्सोंमें विभाजित करता हू।

(१) गांवोंके आसपास या सूने स्थानों में उल्लू पेड़पर बैठे कई तरहकी ध्वनि करते हैं जिनमें उसका एक स्वर किसीके एकान्तमें रोते जैसा भी होता है। यह स्वर किसी पिशाचनीका रुदन बनकर मनमें नारी रुपी भूतकी कल्पना बन बैठती है।

(२) चांदनी रातमें धरती और आसमानके बीच चूने जैसी सफेदी फैली होती है। पेड़ोंके तरह-तरंह आकार; उनकी भांति भांतिकी छायाएं और चांदका बादलों में छिपकर उनको अधिक गहरा कर देना कभी कभी ऐसे ढंगसे सामने आता है कि मनमें सोई भतोंकी कल्पनाएं साकार और सजग हो उठती हैं।

(३) अत्यधिक दिमागी गर्मीके कारण कई बार आंखोंके सामने धुंधला आ जाता इसीसे या तो चक्कर आते रहते हैं या सामने की वस्तुएं विचित्र अभद्र और डरावनी दीखने लगाती है। ऐसे समय व्यक्ति डर कर उन्मादकी अवस्थामें चीखने लगता है– 'वो देखो! ये आया, ये आया!! मुझे बचाओ!!' आदि।

(४) --किसी कल्पनाका हृदयमें गहरी हो जाता ही उसका आंखोंके सामने साकार होना है। दिलपर गहरी खुदी भावना

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जीवन-अवसान

कुमारी मृणालिनी राय, लन्दन

बचपनमें जिन अजीब अजीब किस्मोंके वहमोंसे मेरा मन भरा हुआ था या यूं कहूं सताया हुआ था, उनमेंसे एक वहम यह भी था कि रातको हमारे मुहल्लेमें जो पहरेदार होशियार खबरदार जागते रहना की पुकार लगाया करता है, वह ऊंट पर सवार हाथमें तलवार लिये एक भयंकर किस्मका रामायणकी कहानीमें पढ़े किसी राक्षसकी शकलका आदमी है, जो यह कहता है कि रातभर जागते रहो, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूंगा और तुम्हारा घर लूट लूंगा, इत्यादि। वैसे तो मैं पहरेदारके मुहल्लेमें आनेसे पहले ही सो जाया करती थी, किन्तु रात में जब कभी मेरी नींद खुल जाती तो मैं उसकी पुकार सुन कर डरसे पसीना पसीना हो जाती और कम्बलमें मुंह सिर लपेट तब तक डरसे कांपती रहती, गायत्री मंत्रका जाप करती रहती, जब तक पहरेदारकी आवाज हमारी लीसे दूरतक न जाने लगती, या जब सुदायिनी निद्रा चुपचाप मुझे फिर अपनी गोदीमें न ले लेती।

बचपनमें न जाने कहांसे और कैसे मनमें घुसे इन वहमोंसे मैं अभी तक पूरी तरहसे छुटकारा भी नहीं पा सकी हूं। मसलन अन्धेरी रातमें अकेले घर वापिस आते ना पेड़ मुझे अभी तक भूतोंसे डरावने दिखाई देते हैं और तेजीसे घर पहुंचनेकी कोशिश करती। मैं एक बार भी इधर उधर या पीछे देखनेका साहस नहीं करती। इसी तरह अन्धेरेमें सीढ़ियोंपर खड़ी काली बिल्ली की सफेद आंखें देख कर अब भी मेरे दिलकी धड़कन डरसे तेज हो जाती है। लेकिन ही साकार होकर सामने दीखने लगती है। ये भावनाएं डरावनी भयप्रद हो तो भूताकार लगने लगती है। अक्सर बचपनमे चुप करने के लिये भूत नामसे डराकर बच्चोंपर बुरा असर आगे चलकर संस्कार बन जाता है और भूततो इन्हीं सुप्त गत संस्कारोंका अकस्मात प्रस्फुटन है।

पहरेदारके बारेमें मेरा यह वहम बहुत जल्दी ही दूर हो गया था। इसका कारण था, एक रात हमारे घरमें बीती एक अजीब दुखांत घटना।

अक्तूबर–नवम्बरके दिन थे। जाड़ा शुरू हो चुका था। रोजकी तरह उस शाम भी हम लोग हवन-संध्याके लिये बैठे हुए थे। मेरी उम्र तब सात-आठ वर्षकी होगी। हवन-संध्याके नामसे भय जुड़ा हुआ था, एक तरफसे बड़ोंकी डांटका भय, दूसरी तरफसे ईश्वरके दण्डका भय। इस प्रकारके भयके अलावा हवन–संध्याके लिये बैठनेमें मेरी कोई रुचि नहीं थी। हां, हवनके लिये थोड़ा बहुत आकर्षण था, वह इसलिये कि हवनके मन्त्र पढ़ते वक्त हवन–कुण्डमें बड़े सुन्दर तरीकेसे लकड़ियां रखी जाती थीं, फिर उनमें आग लगाई जाती थी, फिर उनमें घी और सुगन्धित सामग्री डाली जाती थी हरसोमवार और शुक्रवारको मेरी बारी सामग्री डालनेकी होती थी। इसलिये हवनके लिये मेरे जी में कुछ आकर्षण अवश्य था, किन्तु मन्त्र पाठ आदिके लिये रत्ती भर भी रुचि न होती थी। वो भी संध्या–हवनपर रोज बैठना एक कड़ा नियम था। सभी मंत्र–श्लोक सुनते सुनते याद हो गये थे, किन्तु पंद्रह बीस मंत्र पढ़ने के बाद मेरा ध्यान अन्धेरेकमरेकीदीवारोंपरपड़ती हुई आगकी लपटोंकी बड़ी बड़ी परछाइयोंकी ओर आकर्षित होता, फिर मुझे भूख लग आती और फिर मेरा सिर अपने आसपास बैठे बड़ोंके कन्धोंसे टकराने लगता। मेरी नींद अन्तिम प्रार्थना-गीतके स्वर से खलती और मैं भी बाकी सबके गायनमें शामिल हो जाती, और कभी कभी तो इतने जोरसे और इतनी ऊंची आवाजमें गा उठती कि बड़ी बहनको डांट दिलानेका मौका मिल जाता।

खैर उस शाम हमारी संध्या तो समाप्त हुई, किन्तु हवन अधूरा ही रहा। अत्यन्त इन्द्र आत्मा" का मंत्र हम पढ़ ही रहे थे कि घरके आंगनके दरवाजे पर जोर जोरसे खटखटकी आवाज शुरू हुई। बहनके हाथसे घीकी कटोरी छूट पड़ी। "जीवन आये हैं शायद" भाईने तेजी और घबराहटमें कहा और उन्होंनें कमरेकी खिड़की से झांक कर देखा। तब तक नीचेसे जोरकी पुकार आनी शुरू हो गई थी" "दरवाजा खोलो, नहीं तो मैं इसे तोड़ दूंगा।"

"क्या करे," भाईने घबराहटमें अपने आप और बड़ी बहनसे पूछा। फिर दूसरे ही क्षण उन्होंने छोटे भाईसे कहा, "मंझलीको पड़ोसियोंकी छत पार करके मौसीके यहां ले जाओ" और खुद जल्दीसे वे नीचे जानेकी सीढ़ियां उतरने लगे। मैंने मंझलीकी तरफ देखा, वे यूं कांप रहीं थी जैसे अभी फर्श पर गिरनेवाली हों। छोटे भाईने उनकी बांह पकड़ी और कहा, चलो सरला, जल्दो चलो, जल्दी।,,

"नहीं, मुझे उनसे खुद बात करने दे। मैं अपनी वजहसे तुम सबको मुसीबतमें नहीं डालना चाहती।" मंझलीने दीवारका सहारा लेते हुए और रमेश भाईके हाथसे अपनी बांहें छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा। आखिर यह मेरी किस्मतमें था कि मेरी शादी किसी तपेदिकके मरीजसे होती। तुम लोग क्यों बीचमें पड़ते हो,छोड़ दो मुझे।"

"यह बातें करनेका वक्त नहीं सरला, चलो जल्दी।" छोटे भाईने मंझलीको खींचनेकी कोशिश करते हुए कहा।

"बीमार पतिकी सेवा करना मेरा धर्म है। यदि वे मुझे अपनी सेवाके लिये ले जाना चाहते हैं तो तुम लोग क्यों बीचमें बाधा बनते हो। जो हो चुका सो तो हो चुका।" बहनने सिसकियां लेते हुए कहा।

"उस आदमीने हमें धोखा दिया है, तुम यह खुद जानती हो सरला। हम क्या जानते थे कि वह किसीका शिकार है। हमें तो यह उस दिन मालूम हुआ जिस दिन वह दूल्हा बन कर हमारे घर आया। वह तुम्हारा पति नहीं है, तुम्हारा उसके प्रति कोई धर्म नहीं है—चलो यहांसे जल्दी।"

बहनको सिसकते देख मैंने भी सिसकना शुरू किया और उसके साथ चिपट गयी। भाईने मुझे धक्का देकर मंझलीसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



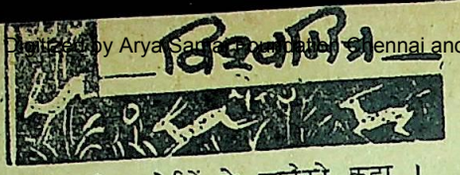


अलग किया और मंझलीको अकेलेमें धकेलते हुए ऊपरकी सीढ़ियोंकी ओर चले गये। रसोइया लखीराम मेरे आंसू पोंछ मुझे पुचकारने लगा। किन्तु नीचेकी मंजिल में जोर जोरकी बातचीत मुझे भयभीत किये जा रही थी। मैं लखीरामकी टांगोंसे चिपट कर "बहनजी! बहनजी!" चिल्लायें जा रही थी। इतनेमें धमन्धाम करते हुए जीवन जीजाजी ऊपरकी मंजिलमें आ पहंचे। साथमें बड़ी बहन और बड़े भैया थे। "कहां है सरला," जीजाजी ऊंची आवाजमें चिल्ला रहे थे, तुमने उसे छिपा रखा है, लेकिन आज मैं उसे अपने साथ लिवाए बिना इस घरसे निकलनेका नहीं।"

श्री जीवन जीजाजी, जिन्हें मैंने पहले केवल एक दो बार ही देखा था, कालेसे रंगके दुबले-पतले और लम्बे कदके थे। उनकी आंखें बड़ी बड़ी और उस रातको लाल भी थीं। उनके हाथमें एक लाठी देख और उन्हें गुस्सेमें ऊंचे स्वरमें बातें करते देख मैं सहम कर लखीरामकी टांगोंके साथ और भी जोरसे चिपट गयी। इधर उधर लाठी फटकारते जीवन जीजाजीने दूसरी मंजिलके तीन चार कमरोंमें पड़े मेज-चारपाइयोंके बीच नीचे झुक कर देखा अलमारियोंके दरवाजे खोल कर देखा, और फिर बेछत ले जानेवाली सीढ़ियोंपर चढ़ने लगे। बड़े भय्या और बहन उनके साथ साथ चलते उनसे कहते जाते, "आप फिजूल, वक्त जायाकर रहे हैं सरला तो यहां नहीं है। वह अपनी एक सहेलीकी शादी पर गई हुई है।"

नहीं तुमने उसे छिपा रखा है, तुम कमीने झठे लोग हो। वह मेरी धर्मपत्नी है, मेरा उस पर अधिकार है। तुम्हारा अब उस पर कोई हक नहीं। जब तक मैं उसे ढूंढ़ नहीं लूंगा, मैं यहांसे हिलनेका नहीं।" जीजाजी चिल्ला कर कहने लगे।

छत वाली सीढ़ियां नीचे उतर कर जीजाजी संध्या-हवनवाले कमरेमें पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गयेऔर लाठी ठोंक ठोंक कर ऐसे-मरी बातें कहने लगे। भाईने लखीरामसे मुझे रसोईमें ले जानेको कहा।

हमारे परिवारके लोग काफी ऊंचे स्वरमें बातचीत करते हैं किन्तु इस तरह के ऊंचे और डरावने स्वरमें बातचीत मैंने पहले कभी न सुनी थी। मुझे डर था कि वे किसी वक्त भी भाईको अपनी बड़ी और मो टी सी लाठी से पीटना शुरू कर देंगे।

खैर रसोई में पहुंच कर मुझे अपनी भूख याद आगई और लखीरायने मेरी अपनी कांसीकी छोटी सी थालीमें दाल भात डाल कर खानेको दिए और मुझे शेख-चिल्ली की कहानी सुनाने लगा। रसोई का दरवाजा लखीरामने बंद कर दिया था। किन्तु फिर भी जब बड़े भाई या जीजा जी का ऊंचा स्वर लखीराम और मेरे कानोंमें पड़ता तो इस भय और अन होनीं के डर से चौंक उठते।

मैं खाना खा चुकी थी और कहानियां सुनते सुनते, चूल्हे की आग की गरमीके पास बैठी बैठी न जाने किस वक्त चटाई पर सो गई थी। लखीरामके झकझोरने पर मै उठ बैठी "मिन्नी उठो चलो।" अपने आपको रसोई में सोया पाकर मै हैरान थी। "कहां चलूं, विस्तर में।" मैंने ऊंघते हुए पूछा नही, यह कोट पहन लो और चलो।"

'कहां चलं' मैंने पूछा

"मौसी जी के घर। आज रात सभी वहां सोएंगे। भैयान कहा है कि मैं तुम्हें वहां छोड़ आऊं। भैया और वहन जी जाजीसे बातचीत कर वहां पहुंच जायेंगे।

जीवन जीजा जी भैया और मंझली बहन की बांते मेरे कानोंमे पड़ी थी। किन्तु उनका अर्थ तब मेरी समझमें न आया था। उन सब बातोंका स्वर मुझे विचित्र डरावना सा लगा था। मै कुछ सहम सी गई थी किन्तु मामला समझ न पाई थी। नीदसे जागने पर अब मैं ऊंघ भी रही थी हालां कि रात के जाड़ेमें नींद भी किसी हद तक खुल गयी थी। घरसे निकल कर हम सड़क पर पहुंचे ही थे कि आवाज आई," खबरदार जागते रहना, होशियार!" एकदम मै लखीराम की टांगोंके साथ चिपट गई और कांपती आवाजमें मैंने कहा।" लखीराम मुझे अपने कम्बलमें छुपा लो, पहरेदार...।"

"पहरेदार : तुम्हें पहरेदार से डर लगता पगली ?" लखी रामने हैरान होकर हसीके स्वरमें मुझे से पूछा "तुम्हे पहरेदार से डर नहीं लगता ? इतनी बड़ी तलवार उसके हाथमें है .. और इतना बड़ा ऊंठ, जिसपर वह सवार होता है—"मैंने उसके कम्बलमें अपना सिर छुपाते हुए कहा

"ऊंट पर सवार होता है ?" लखीरामने हंसते हुए पूछा मुझे लखी रामकी हंसी पर गुस्सा आया और मैनें उसका कम्बल अपनी टांगोंकी तरफ खेंचते हुए कहा " तलवारसे जब वह तुम्हारी गरदन काट लेगा तो तुम्हे पता चलेगा। हंस रहे हो तो वह तुम्हांरी आवाज सुन लेगा और हम दोनोको मार डालेगा जल्दी जल्दी चलो मौसी जी के घर।"

जोर से हंसते हुए लखी रामने कहा, "बेवकूफ पागल लड़की, पहरेदार तो हमारे घरोकी रखवाली करता है, पहरेदार तो डाकुओं से हमें बचाता है पहरेदार चोर थोड़े ही होता है— वह देखो तो सामने पहरेदार आ रहा है।"

डरते डरते मैने लखी रामके कम्बलसे मुंह निकाल कर झांका, लखी राम ही की शक्ल सूरतका एक आदमी एक हाथमें ला औरठी दूसरे में लालटेन लिये सड़क पर खड़ा था।

"बड़ी सरदी है आज।" लखीरामने पहरेदार से कहा।

"हां यार आज बड़ी सरदी है और ममाखू भी खत्म हो गया है। तुम लाला ध्यान बंद के यहां काम करते हो न।" पहरेदारने पूछा।

"हं" लखीरामने कहा।

"इस बिटियाको कहां ले जा रहे हो इस वक्त ?"

"यार, कुछ न पूछो। अजीब मामला है। छोटे बाबूजीने इस बच्चीको इसकी मौसी के घर छोड़ आने को कहा है। बाकी लोग तो रात भर सोएंगे भी कि नही।"

(शेष १६ वें पृष्ठ पर देखिये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हंसना—रोना

## लेखक—श्रीविनायक नानेकर

लोगोंकी बातें तो लोगोंके जन्म-दाता भगवानकी भी समझमे नहीं आतीं। एक तरफ लोग कहते हैं कि एक समयमें एकही काम होता है तो दूसरी तरफ वे 'एक पथ दो काज' की रट लगाते हुए भी दिखायी पड़ते हैं। ये लोग कब क्या कहेंगे, इसका कोई नेम नहीं। अपना बाजू संवारनेके लिये कोई यह कहते हैं कि कभी परिस्थिति इस कदर आ पड़ती है कि बोलें तो अपमान होता है और न बोलें तो जान जाती है, इस-लिये लोग कुछ तो गोल-मटोल भी कह बैठते हैं।

जिस तरह कानूनकी किताबमें सजा या दण्ड या दोनों का कलम होता है, उसी तरह कभी-कभी दोनों बातें भी इकट्ठी दिखायी पड़तीइसमेंशंका-कुशंकाकी जगह ही नहीं है, क्योंकि अकबर वीरबलके किस्सोंने दीर्घशंका और लघुशंकाका इकठ्ठा होना सिद्ध किया और शेक्सपीयरने भी 'मर्चेंट आफ वेनिस में रक्त और मांसका इकट्ठा निकलना अनि-वार्य बताया है। परन्तु यह तो हुई समान श्रेणीकी बात। हम तो यहां यह भी बताना नहीं चाहते हैं कि दो विरुद्ध बातें भी इकट्ठी दिखायी पड़ती हैं, जैसे हंसना और रोना। वैसे दोनोंमें ध्रुवोंका अन्तर है, परन्तु धूप और बारिशकी तरह वे भी एकही समय दिखायी पड़ती है। स्त्री-पुरुष विरुद्ध पक्ष के होकर एकत्रित नजर आते ही हैं। सोना और चलना विरुद्ध होते हुए भी सोते-सोते चलनेवाले भी दिखायी पड़ते ही हैं। मरना और जीना परस्पर विरोधी होते हुए भी मरे हुए जीव इस संसारमें हैं ही। उसी तरह हंसना और रोना विरुद्ध होते हुए भी एकत्र जन्म लेते हैं। उदाहरणार्थः—

### सस्ती सब्जी—

एक मनुष्यको बाजारमें मोल भाव करनेकी आदत नहीं थी। दूकानदारने जो भाव बताया, उसने उसी भावसे हमेशा चीजें खरीदीं। परन्तु घर आतेही उसकी श्रीमतीजी उस पर खौल पड़ती थी। एकदिन श्रीमतीजीने कहा कि सस्ती-से सस्ती सब्जी लानी होगी। बाजारमें घूमते-घूमते एक जगह वह व्यक्ति पहुंचा और पूछा कि यह कैसे सेर दी? दूकानदारने कहा—एकआनेका गट्ठा। सस्ती पा उस मनुष्यने बोझेवालेके ऊपर गट्ठा चढ़ा दिया और घरकी ओर चल पड़ा। पहुंचते ही उसने श्रीमती जीसे कहा कि देखो आज कितनी सस्ती और कितनी अधिक सब्जी लाया हूं। श्रीमतीजीने ज्यों गट्ठेकी ओर देखा तो माथा पीट लिया। सब्जीकी जगह घास उठा लाये। पैसे-के पैसे गये, उल्टे बोझे वालेकी मजूरी माथे पड़ी औरसाग तो रह ही गया। अब आप ही बताइये कि उस मनुष्यकी कार्रवाईपर आप हसेंगे या रोयेंगे या दोनों भाव आपके चेहरे पर दर्शित होंगे?

### बच्चोंका खेल और जीका जंजाल

अब एक दूसरा उदाहरण लीजिये। मान लो, आप किसी लड़केके बाप हैं लड़का अभी नासमझ है। खेलखेलमें लड़के ने आपपर डण्डेसे एक बार कर दिया। चोट लगना संभव है। लड़का नादान है, परन्तु डंडा थोडे ही नादान है, वह तो अपना काम वफदारीसे बजाता है। आपकी वह बिगड़ी हुई सूरत देखकर लड़का उलटा डरने या रंज करनेके बदले हंसने और नाचने लगा तो आपही बताइये कि लड़केकी वह निर्दोष लीला देख आपको हंसी आयेगी या दर्दके कारण रोना, मैं तो समझा हूं कि आपकी आंखोंमें पानी होगा, मगर बेटेपर होगी मुस्कुराहट।

### बन्दरकी दाढ़ी

अब एक तीसरा उदाहरण भी लिजिये आप दाढ़ी बना रहे हैं। बुरा काम नहीं है आजकल सभी बनाते हैं। मगर आप तौलिया भूलगयेहैं, इसलिये आप तौलियालेनेअन्दर गये और जब वापस आय ता आपका छूरा गायब हो गया। है कि नहीं जादू? मगर जैसे ही जैसे ही आपकी नजर सामनेके दरख्तपर पड़ी तो उस पर बैठे हुए बन्दरके पास आपका छूरा दिखायी पड़ा। आपकी नकल करनेमें बन्दरने अपने चेहरेको लोहू-लुहान कर दिया। यह देखकर आपको हंसी आयेगी या छूरे के खोनेके गमसे आप रोयेंगे? आप जहुरू दोनों का आनन्द चखेंगे।

### सिनेमाके आशिक माशूक

आप सिनेमा तो देखते ही होंगे? आजकल सिनेमा न देखने वाले सनकी कहलाते हैं। सिनेमामें कई ऐसे प्रसंग देखने में आये होंगे जैसे एक लड़कीका बाप है, जिसे अपनी लड़कीकी शादी किसीसे भी करने भर का हक है; मगर लड़की प्रेम करनेका भी हक रखती है। मजा तब देखने में आता है, जब लड़कीका बाप लड़कीकी शादी निश्चितकर लेता है—लड़कीके प्रेमीके साथ नहीं परन्तु किसी औरके साथ बापकी खुशी और दबावके कारण लड़की के चेहरेपर इस शादीके नामसे हंसी आती है, परन्तु प्रेमीके वियोगके कारण उसके मुख मंडलपर रोनेकी छटा भी दिखायी पड़ती है।

रोनेका नरम शब्द है सहानुभति। सहानुभूति और हंसी भी इकट्ठा उत्पन्न होती है। उदाहरणार्थ, कोई शख्स बारिश के दिनोंमें चलते चलते रास्तेपर 'साष्टांग-नमस्कार' करने लगे तो उसकी स्थिति देखकर हंसी आती है, परन्तु कराहना सुन-कर सहानुभूति उत्पन्न होती है।

### जमाई बाबू दसवां ग्रह

हमारे पड़ोसमें एक जमाई बाबू हैं, जिनके एक बीबी और चार बच्चे हैं। ससुर के यहां रहते हैं। रेलवेमें नौकरी करते थे, मगर हड़तालमें भाग लेनेके कारण नौकरी ने इन्हें तलाक दे दिया है। शुरू-शुरू में ससुर जीने अच्छी खातिर की, परन्तु 'नये के नौ दिन'। जमाई हुआ तो क्या हुआ। हमेशा बैठाकर कौन खिलायेगा? एक दिन मुझे उस ओर जानेकी जरूरत पड़ी। दरवाजे पर टूटी-फूटी खाट पर एक आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को लटा पाया। मैंने पूछा- "दरवान,कामता प्रसादजी घर पर हैं?" उसने धीमी आवाज में कहा-"जी हां, अन्दर हैं।"

मैं अन्दर चला गया। मेरी और कामता प्रसादजीकी बड़ी देर तक बातें होती रहीं और मैं देखता रहा कि वही दरवान बच्चोंको गरम पानी देता था, कुंए से पानी निकालता था, आंगन झाड़ता था, कपड़े धोता था और जब बच्चोंके फेर में पड़ जाता था तो वे उसकामखौलउड़ाते थे। मैंने कामता प्रसादजीसे पूछा- यह नया नौकर आपने कबसे रखा? बड़ा सीधा मालूम देता है। अपना सीतल क्या हो गया?"

सीतलको गांवपर भेज दिया है और यह नौकर नहीं है, हमारे जमाई बाबू हैं। नौकरी छूट जानेके बाद इन्हें दो महीने यहां रखा था तो इन्हें बैठे-बैठे खानेकी आदत पड़ गयी है और अब नौकरी करनेको जी नहीं चाहता। मैंने कई तरकीबें आजमायी; लाख समझाया, मगर इनके मगजमें एक नहीं फली। आखिर हताश हो मैंने इन्हें तंग करना शुरू किया, नीच काम बताये, ताकि वह शरमाकर अपनी रोजीपर लगें मगर हजरत एक जूं भी नहीं हिले। पक्का बेशर्म पीर बन गया है अब।" कामता प्रसादजीने जबरदस्त जमाईका इतिहास बताया। मुझे तो एक तरफ उसकी नामर्दीपर तरस आ रहा था, दूसरी तरफ उसकी हालतपर हंसी भी आ रही थी।

## विरोधियोंमें समता

इस तरह हमने देख लिया कि हंसना और रोना, दोनों एक साथ हो सकता है। अब हम यह भी बता देना चाहते हैंकि इनके गुणोंमें भी समानता है। हंसने या रोने से अश्रुका बहाव होता है। दोनों आवाज करते हैं। दांत दोनों दिखाते हैं और शरीर पर श्रम दोनों क्रियाओंसे पड़ता है। परन्तु फर्क इतना है कि इन दोनोंके भावोंमें विरोधकता पायी जाती है। किसीका चेहरा ही यों होता है कि यह स्पष्ट नहीं हो पाता कि वह हंसता है या रोता है। विशेषतः बच्चोंकी बाबत ऐसा होते देखा गया है क्योंकि बच्चे आंख बन्द करके दोनों काम करते हैं। इससे स्पष्ट है कि आंखें हृदयके दरवाजे हैं और चेहरेपरकी रेखायें हावभाव की किताब हैं।

दूसरा फर्क यह भी है कि रोनेकी भावनायोंको कर्त्तव्यमें लानेकी इच्छा होते हुए उसे कर्त्तव्यमें नहीं ला सकते, मगर हास्यकी भावनाओंको कर्त्तव्यमें लाने की शक्ति होते हुए भी उसे कर्त्तव्यमें लानेकी इच्छा नहीं होती। जैसे किसी स्त्रीका पति चल बसा हो। स्त्री चाहती है कि सावित्रीकी तरह वह भी यमका पीछा पकड़े और अपने पतिको जिन्दा कर ले, परन्तु वह ऐसा करनेमें असमर्थ होती है, इसलिये पतिके वियोगका दुःख तो उसे होता ही है, परन्तु अपनी निर्बल और असहाय स्थितिको देख आक्रोश करनेकी आवाज अधिक तीव्र हो जाती है।

यह बात हंसनेके विषयमें नहीं होती बल्कि इसके विपरीत ही होता है। आप 'फेस नाउडर' तो लगाते ही होंगे? आपकी देखा-देखी आपके सपूत भी शौक करने लगें तो कोई आश्चर्य नहीं। परन्तु पाउडर लगानेकी जगह यदि वह चेहरापर लिपाई पुताई करले तो वह सूरत देखकर आपको हंसी आ जाती है। आप उसे रोकने या हटानेमें समर्थ है मगर आप उसे हटानेके बजाय उसकी लीला देखनेमें आनन्दका अनुभव करते हैं।

रोने और हंसनेमें एक और भेद है। रोने और हंसनेसे शिथिलता तो आती ही है परन्तु रोनेसे शक्ति क्षीण होती है और मस्तिष्क बेकार हो जाता है। वही हंसनेवाला एक नयी बहारकी तरह नवीन स्फूर्ति रखता है। इससे हमारी सलाह है कि हंसते रहिये। कभी कभी बदल के लिये रो भी लीजिये मगर ज्यादा तो हंसनेकी ही कोशिश करिये क्योंकि हंसी में जादू है, आकर्षण है, स्फूर्ति है और लोकप्रियता है। अब आप चाहें हंसे या रोयें, हमारी बला से।

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट
ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)
व्यवहार कीजिये

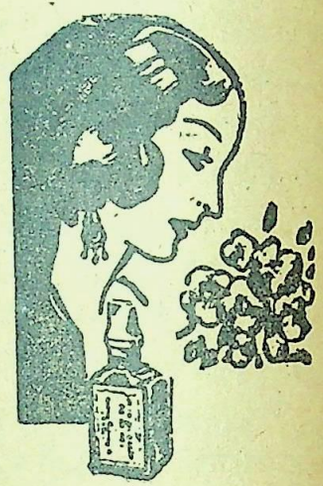

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशी लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं
सोल एजेण्ट्स:
एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

फैंसी सिल्क साड़ी आकर्षक डिजाइन

कलापूर्ण ३-४ इञ्च चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ६ ५ गज
८) २३) २८)
२) आडर के साथ पेशगी बाकी वी० पी०
थोक व्यापारियों को खास सुविधा
रमाकांत इन्डस्ट्रीज, जुही कानपुर

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# टर्कीकी सहायतामें अमेरिकाका स्वार्थ

तुर्कीकी आर्थिक स्थिति वही है जो सैनिक। अमरीकी व्यापारियोंको वे सारी सुविधाएं मिली हुई हैं जो पहले विदेयशयों को प्राप्त थी। उदाहरणार्थ मजलिस ने एक विशेष कानून पास करके अमरीकी फौजी मालको बिना कर दिए देशमें लाने की आज्ञा दे दी है। तुर्कीमें पुराना फालतू फौजी माल अमरीकासे लगातार बहता चला आ रहा है। अमेरीकी व्यापारियोंको खुली छुट्टी है कि वे अपनी पूंजी देशमें लगाएं और लाभ उठकर घरको ले जाएं। अमरीकी कम्पनियोंको प्राकृत धन खोजने की आज्ञा मिली हुई है। तुर्कीमें जितनी करोमियम निकल सकती है उसको अमरीका भेजा जा रहा है। पहले इसे फासिस्ट जर्मनीमें भेजा जाता था। १९४९ से, मध्य तक अमरीकाका अनुमान है कि वह यहांसे २ लाख टन इस धातुको निकाल कर ले जायगा।

अमरीकी दबावके कारण कमाल अतातुर्कके सद्धान्तको जिसके कारण राष्ट्रीय उद्योगोंको सहायता मिलनी चाहिये फेंका जा रहा है। अमरीकाने अपने प्रतिनिधि द्वारा तुर्कीसे यह मांग की कि इस नीतिको बदला जाय। तोर्न बर्गने पछली साल कहा कि इस नीतिको कायम रखनेसे अमरीकी पूंजीको कोई लाभ नहीं हो सकता। नैश निलिनिलिस्ट पार्टीकी कार्यकारिणी दलने इस नीतिपर विचार किया और निर्णय किया कि अमरीकी पूंजीको सुविधाएं मिलनी चाहिये।

अमरीकी सहायता तुर्कीकी आर्थिक स्थितिको पाहल ही बिगाड रही है। उस वे, नये मालिक तुर्कीको लाभदायक गंडी समझते हैं और कच्चा माल पानेका क्षेत्र मानते हैं। वे देश के उद्योग और कृषिको उन्नत करना नहीं चाहते। तुर्कीके समाचार पत्र "हूरेवतज" ने चिन्ता प्रकट की कि देशके उद्योगपति क्या करेंगे। पिछले सात दिस- स्वर में लिखा "कि स्थानीय उद्योग बंद हो चुके हैं। बाहरसे खर आनेके कारण चमड़े का काम बंद हो चुका है। हमारे देशके लिये महान संकट का समय है। शत्रु हमारे देशमें घुस रहा है--सीमापार कर नहीं परन्तु कर गृहोंको पार करके, देश पर आर्थिक जाल बिछा रहा है।"

यह बात तुर्कीकी आर्थिक स्थितिको और भी बिगाड़देती है। आगे ही संकट काल है। काम कम हो रहा है। उद्योधंध बंद हो रहे हैं, बेकारी बढ़ रही है। तुर्कीका मजदूर वर्ग अधिक निर्धन हो रहा है। खाने पीने की चीजें पांच छः गुंन महंगी हो गयी है। वेतन २५ रु० प्रतिशत बढ़ाया गया है। मजदूरोके लिये कामकी दशा बुरी बन रही है। लोग १८ घंटे काम करते हैं। तपदिक, मलेरिया, आवशक, और आंखोंकी बीमा रियां मजदूर जमातमें बढ़ रही है।

किसानोंकी दशा मजदूरोंसे कोई अच्छी नहीं है। तुर्कके लोग हमेशा कहा करते हैं कि देशका इतिहास हलसे लिखा गया है। लेकिन आजकल राजकाज करने वाले भूल जाते हैं कि देशके असली मालिक किसान-बुरा हालमें रहते हैं। उनको 'नंगपाव वाले'के नाम से पुकारा जाता है। कृषिकी दशा बिगड़ रही है, किसानोंकी गरीबी बढ़ रही है। पहली तरह जमींदार गांवोंमें राज करते हैं। बढ़िया जमीन उनके पास है। दो तिहाई उपजाऊ भूमिपर उन का कब्जा है। केवल एक तिहाई जमीन २५ लाख घरोंमें बढ़ी हुई है। ७०-७५ प्रतिशत किसान भूमिसे रहित हैं या उनके पास छोटे छोटे टुकड़े हैं। इनके पास आधुनिक कृषि मशीनोंका तो अभाव है ही।

२५ जनवरीको "वतन" ने लिखा कि आजकल तुर्की को ८० प्रतिशत लोग बुरी हालतमें रहते हैं। वे लकड़ीके हल चलाते हैं और आधे भूखे रहते हैं।" देहात में लोग इतने तंग है कि वे बातें नहीं बनाते बल्कि जमीदारोंसे जमीन छीनते हैं। १९४७ में किसानोंने जमीदारेके आदमियों से मुठमेड़ की। कई घंटे युद्ध होता रहा। अंत में फौज बुलाई गई। समाचार पत्र 'तसवीर' ने उस समय लिखा "कि जहां यह लड़ाई हुई वह युद्धक्षेत्र बन गया।" अब अभी किसानों ओर हुकमसनोंमें एक ओर गांवमें युद्ध हुआ जिसमें दर्जनों लोग मारे गए और किसानोंने नारा लगाया अमरीकी दल मुरादाबाद'।'

देशकी यह दशा है अमरीकी सहायतासे-तुर्की लोगोंकी हालत नहीं सुधार सकती। इसके उलटे अमरीके शुभचिन्तोंकी सहायता राष्ट्रीय आर्थिक आधारको उखाड़ रही है, खर्च ओर फौजी ऋण णेंणको बढ़ा रही है। कर भी बढ़रहे हैं और इसका बोझ मडदूरों पर पड़ रहा है। माली और आर्थिक कष्टोंका पुराना परिणाम होगा। तुर्कीको दिवालिया बनना पड़ेगा। इसके चित्र बार बार तुर्की अखबारोंमें छपते रहते हैं। समाचार पत्र "सोन सात गन' अभी अभी लिखा आजकल हम पुराने ओटोमन कर्जकी ओर ओर बढ़रहे हैं। उस काल को प्राप्त हो रहे हैं जब माली और राजनीतिक अधीनताको कारण तुर्की गुलाम देश था।"

बिलकुल यही अमरीकी शुभचिन्तक चाहते हैं--तुर्की की आर्थिक और राजनीतिक पराधीनताकी जंजोरोंके और भी पक्का किया जाए। देशमें यह मांग दिन प्रतिदिन बढ़ रही है कि अमरीकी फंडको तुर्कीकी आर्थिक स्थिति सुधारनेके लिये खर्च किया जाए। तुर्की के शासकोंको मार्शल योजना से बहुत आशा थी। अब मालूम होता है कि मार्शल योजनाके अनुसार तुर्कीको उधार नहीं मिलेगा। माल खरीदने के लिये नकद दाम चाहिये। इसके लिये अन्तराष्ट्रीय बैंकको प्रार्थना पत्र भेजना पड़ेगा। मार्शल योजनामें जो आशा थी वह निराशामें बदल गई है। अंकरामें लोग-निराश हैं। समाचार पत्र 'सोन पोस्ता' ने ३१ जनवरीको लिखा कि "मार्शल योजना मृगतृष्णाके समान है। इसने केवल लोगों अधीरता बढ़ाई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मार्शल योजनाके अनुसार तुर्कीको उधार इस लिये नहीं दिया गया ताकि तुर्की प्रतिक्रियाबादियों अधिक दबाव डाल कर उन से अधिक लाभ उठाएं जाएं। हम जानते है कि अमरीका दुनियाका मालिक बनना चाहता है। इसका पेट बहुत बड़ा है। समाचार पत्र अमरीकी कामना के बारेमें बताते हैं कि सुमुंद्री अड्डे और तेल के क्षेत्रें तुर्कीसे चाहते हैं। थोड़े सप्ताह हुए मार्शल ने कहा कि तुर्की को अधिक सहायता देने के लिये नई योजनाएं तय्यार की जा रही है।

अमरीकी सहायतासे तुर्कीमें प्रजात्रबादी शक्तियां तुर्कीमें दबाई जा रही हें। अमरीकी मांगोंके कारण तुर्की राजकाज चलानेवाली पार्टीने सोवियत विरोधी आंदोलन आरम्भ कर दिया और देशमें प्रतिक्रियाबादी नीतिको चलना ठीक ठीक समझा। घटनाओंसे पता चलता है कि तुर्की प्रतिक्रियाबादी अमरीकी शुभचिन्तकोंके लिये क्या कुछ कर रहे हैं। अमरीकी सहायताके कारण देशमें इसलामके नामपर लोगोंको भड़काया जा रहा है। सोवियत विरोधी आंदोलन चलाया जा रहा है और युद्धके लिये प्रचार किया जा रहा है। अमरीकी शुभचिन्त तुर्कीके मालिक हैं और निकट पूर्वमें गड़बड़ा मचायेंगे। समझदार लोग यह जानते हैं कि तुर्की वासियोंको अमरीकी सहायतासे कितना लाभ पहुंचा है। अमरीकी सहायतासे खर्च और कर बढ़ गये हैं, ऋण और सूदमें वृद्धि हो गयी है। उसका परिणाम यह निकला है प्रतिक्रियाबादी शक्ति बल पकड़ रही है, राजनीतिक बातावरण गहरा हो रहा है और तुर्कीको जुझना सिखलाय जा रहा है।

परन्तु अमरीकी यह भूल जाते हैं कि तुर्की लोग न बेड़ियां नहीं पहनेंगे चाहे उनपर अमरीकी की ही मोहर क्यों न लगी हो ? तुर्की जनताके प्रगतिशील लोग इनका विरोध कर रहे हैं। तुर्की राजनीतिज्ञ देशको प्रतिक्रियाके गढ़ेमें फेंक रहे हैं। लोग अपने अधिकारेके लिये लड़ रहे हैं, आजादी और भूमिके लिये संग्रामकर रहे हैं चाहे यह कितना ही यह नरम क्यों न हो। युद्ध करने से इनकार करते हैं। चाहे अमरीकी और ब्रिटिश साम्राज्यवाद उनको कितना ही भड़का क्यों न रहा हो अमरीकी सहायता अमरीकियोंकी चालोंका भंडा फोड़ रही है। तुर्की जानते हैं कि साम्राज्यवादी दुनिया पर अधिकार करना चाहते हैं और प्रजातंत्रबादी शक्तियोंको सब देशोंमें दबाना चाहते हैं।

———


प्रभावशाली व्यक्ति

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

प्रभावशाली व्यक्ति इस बातको महसूस करते हैं कि अच्छा प्रभाव डालनेके लिए ताजे और अच्छी तरहसे हजामत बनाये हुये चेहरेका कितना महत्व होता है। अतएव यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वे जिलेट ब्लेडोंका उपयोग करते है। वे जानते हैं कि जिलेट सभी बाल बनाने की प्रणालियों में सर्वोत्तम एवं सबसे सस्ती होती है।

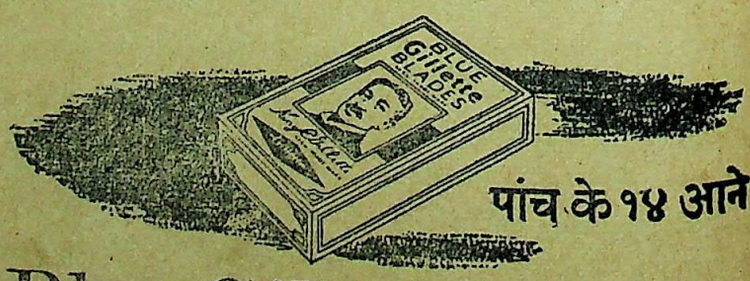


पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्ल्यू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!


CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारी और सौन्दर्य

**श्री हरनाम प्रसाद वाजपेयी**

"मगधका राजकुमार ।"

"महामंत्री हम उनका हृदयसे स्वागतकरते हैं । इस पवित्र भूमिका अहोभाग्य ! उन्हें आदरपूर्वक लिवा लाओ ।" और "राजकुमारकी जय, मगध अमर हो" आदि उच्चजयनादोंके मध्य राजकुमार पुष्यजीतने पदार्पण किया । कितना हर्षका समय था ? आनन्द, प्रेम, सहनशीलता तथा नम्रता वहां चारों ओर बिखरे रही थी ।

सभासदोंके मुखोंपर कुतूहल प्रगट हो रहा था । मगधका राजकुमार, कुछ विशेष घटनाका संदेश लाया है, यह सभी सोच रहे थे । सभामें सर्वत्र शांति थी ।

"महाराज, मगधकी जनता तथा मगधके सम्राटकी ओरसे प्रेमकी सौगात ग्रहण करें।" राजकुमार पुष्यजीतने विनय की ।

"राजकुमार ! तू उस समय निरा अबोध बालक था । मैं, और तेरे पिता, वर्तमान मगधके सम्राट एक ही साथ गुरु मृणालके यहां विद्याध्ययन करते थे । वह समय बीत गया । आज वह मगधके सम्राट् हैं, और म..... । पर राजकुमार मैं तुम्हारी क्या सेवा करूं?" उपूलिकाके सम्राट ने वार्तालाप का रुख बदलते हुए पूछा ।

"महाराज! अपने वंशमें यह शताब्दियों से प्रथा चली आ रही है कि हमारे राज्यका राजकुमार जब युवावस्थामें पदार्पण करता है, उस समय अपने पुरुषार्थके प्रदर्शनके लिए उसे किसी दूसरे देशके सम्राटके अश्वपर चढ़कर आखेट करना पड़ता है । एक माह के पश्चात उस अश्व सहित वह अपनी राजधानी लौटता है ।" राजकुमारने निवेदन किया ।

उपूलिकाके सम्राट के नेत्र एक बार जल उठे । उसे अपने स्वाभिमान पर गर्व था । उसने कड़कते हुए शब्दोंमें पूछा–"तो तुम उपूलिकाके सम्राटके अश्वपर आखेट करनेके स्वप्न देख रहे हो, क्यों कुमार ?"

"महाराज ! मुझे आपसे अधिक हितैषी तथा आत्मीय जन ढूढनेकी आवश्यकता दृष्टिगोचर न हुई, और फिर आर्य पुत्र, अपनीइच्छापूर्त्तिके लिये, एकस्थानसे अधिक जाना अपमान समझता है ।"

"और मेरा अपमान ? मैं एक मगध जैसे प्रतिभाशाली राज्यका नरेश नहीं हूं, मेरे समीप मगधके राज्यकी भांति नर्तकियां नहीं है, मैं अपनेको विलास और मदिरा की मदहोशी से दूर रखता हूं, फिर भी क्या मुझमें आत्म-सम्मान नहीं है ? मुझे दुख है, तुम्हारी अभिलाषा यहां पूर्ण न हो सकेगी । उपूलिका भले ही सूखे मरुस्थलसे अधिक सूखा हो परन्तु अपने स्वाभिमान पर मर मिटने वालोंकी संख्या नक्षत्रोंसे भी अधिक यहां मिलेगी ।"

राजकुमार पुष्यजीत इस अपमानको न सह सका । वह क्रोधसे कांप उठा । उसके नेत्रोंसे चिनगरियां फूट पड़ी, नन्हासा हृदय मचल उठा "उपूलिकाके सम्राट का यह साहस, अपने अश्वको हिमालयकी चोटियों से ऊंचा समझता है । महाराज, मैं आपके ही अश्वपर आखेट करुंगा"। निकला हुआ तीर वापस नहीं लौट सकता । मगधका कुमार, उपूलिका ही नहीं, अपने साध्यके हित ईश्वरके सामनेसे भी नहीं हट सकता । तुम्हारा अश्व मगधके नरेश के अश्वालयमें बंधेगा ।"

उपूलिका नरेशकी आज्ञा हुई,पुष्यजीत बंदी बना लिया गया ।

* * *

दासी कंचना राजकुमारी उर्वशीको कुछ सुनाते सुनाते रुक पड़ी "पर राजकुमारी जी ! राजकुमारका रथ, राजकुमारीजीके रथसे कहीं अधिक सुन्दर है ।" "और राजकुमार स्वयं ?" उर्वशीने टोकते हुए पूछा ।

"मुझे भय है, संसारमें एक, दो नहीं वरन तीन चांद हैं ।"

"अच्छा" राजकुमारी मुस्करा पड़ी "तो बेचारे इन निरीह तारोंका क्या होगा ? और तो और जब बेचारा पृथ्वीका चन्द्रमा ही दिन रात... . . .।"

"सच राजकुमारी जी" दासी कंचनाने कुछ विचारते हुए कहा "सारा सभागृह, मगधके राजकुमारपर मोहित खड़ा था । पर राजकुमारी चन्द्रमाको भी काले मेघ अपनेमें ढक लेते हैं, वर्षामें गंगाकी लहरें भी मिट्टीसे ढकी रहती हैं । पराक्रमी राजकुमार भी बंदी हैं ।"

"राजकुमार बंदी हैं," अनायास ही राजकुमारीके मुखसे यह शब्द निकल गये जैसे कोमल स्वरोंपर उंगलियां चल पड़ीं, और एक दर्दीली आह जैसे वातावरणमें समा गयी । "मैं, मगधके राजकुमारसे मिलूगीं, कंचना !"

"जैसी आपकी इच्छा ।"

पुष्यजीत कल्पनामें भविष्यकी पग डंडियोंपर चल रहा था । रुंधा हुआ स्रोत, अपना पथ ढूढ रहा था । तभी बंदीगृहका लौहद्वार, प्रकाशकी एक क्षीण रेखासे जगमगा उठा । राजकुमारने सोचा उसकी दशा, इस प्रकाशसे कितनी समानान्तर है ।

"कौन, कोई नारी ?" राजकुमार अन्धकार में स्त्रीकी एक बढ़ती हुई छायाको देखकर कुछ चौंक सा गया ।

"हां मैं राजकुमारी उर्वशी की दासी हूं ।" कंचनाके वेशमें राजकुमारीने उत्तर दिया ।

"तो तुम यहां कैसे आयी ।"

"राजकुमारीका कुछ निवेदन ।"

"तो क्या राजकुमारी भी मुझे अपना बंदी बनाना चाहती हैं ?" राजकुमारने कुछ न समझते हुआ पूछा ।

"नहीं, वे तो स्वयं आपकी बंदी हैं ।" दासी ने उत्तर दिया । "पर वे .. ....।"

"मुझे स्त्रियोंसे घृणा है ।राजकुमारीसे कह देना स्त्रियोंके संदेश सुननेका मुझे अवकाश नहीं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"पर स्त्री तो ईश्वरकी सबसे मूल्यवान देन है, राजकुमार !"

"इसीलिये तो ।"

"तात्पर्य ?" राजकुमारीने आश्चर्य चकित हो पूछा ।

"यह साधारणसी बात है, दासी !" राज कुमारने उत्तर दिया "ईश्वरकी यह सृष्टि पुरुषोंको उनके पथसे गिरा देती है । यह मनुष्यकी दुर्बलता है । यह पाप है, बेचारे पुरुष . . . . . ।"

"पर इसमें स्त्रीका क्या दोष राजकुमार ! मनुष्य अपननी दुर्बलतासे लाचार है । यह अन्याय है राजकुमार !"

"जो कुछ भी हो, स्त्रियोंसे मुझे घृणा है । किन्तु दासी तुम्हारा नाम ?

"मुझे कंचना कहते हैं, राजकुमार ।" और मगधके राजकुमारका शुभ . . . ." दासीने तनिक संकोचवश अपनी कोमल उंगलियों को मुरोड़ते हुए पूछा ।

"मगधका बंदी राजकुमार पुष्यजीत . ."

"पुष्य—जी—त" राजकुमारी उर्वशीने दुहराया । कितनी मिठास, कितनी करुण वेदना इसके तहमें भरी थी । राजकुमारी सिहर उठी ।

"तो दर्शन हो सकते हैं ? राजकुमारीने पूछा है ।"

"परन्तु तुमने अपनी राजकुमारीका नाम नहीं बताया दासी ?" राजकुमारने पूछा ।

"हमारी राजकुमारीको उर्वशी पुकारते हैं ।" दासी राजकुमारीने उत्तर दिया "अब जाओ दासी, प्रभातकी गगन–मेरी बजने वाली है । मुझे मुक्त होना है । समय कम है ।"

"दासी राजकुमारीके आज्ञानुसार आपको मुक्त करने ही आयी है ।

"क्या तात्पर्य ?"

राजकुमारी चुप रही । बंदी पुष्यजीत मुक्त हो गया । राजकुमारी अपने टूटे हुए अरमानों को साथ लिये प्रासादकी ओर लौट रही थी । और उधर पक्षियोंके मधुर कलरव के साथ धूलके छितरे बादलोंकी ओर राजकुमार मगधकी ओर उड़ा जा रहा था ।

राजकुमार पुष्यजीतको मगध आए एक माहसे अधिक हो गया था । उसने आजीवन अविवाहित रहनेका प्रण किया । राजकुमारका स्त्रियोंकी ओरका विराग बढ़ता ही गया । कलाकी खोजने जैसे उसके जीवनमें स्त्रीका सुकुमार स्थान ले किया था ।

उन दिनों मगध कला और साहित्य दोनों ही ऐश्वर्योंसे ओत प्रोत था । संगीत की तानें आए दिन राजमंदिरके आंगन से फूट पड़ती थी । नर्तकी तारा मगधकी एक विख्यात तथा कुशल संगीतज्ञ पुकारी जाती थी । संगीतमें निपुण तारा सौंदर्यमें भी किन्नरी थी । मचलता हुआ तारुण्य अंगोसे फूट रहा था । रात जैसे काले बाल, प्रत्येक उसांसपर लहरते थे । पलकोंमें जैसे मीन छिप गए थे । कपोलोंपर गुलाव हंसता था । और नर्तकीका रूप जैसे सबके संयमकी कमजोरी बन गया था ।

पुष्यजीतके मित्र विरुद्धकने एक दिन, उनसे ताराके प्रासादमें चलनेका आग्रह किया । आनाकानी तथा अड़चन दिखानके के पश्चात भी विरुद्धक न माना । राजकुमारको साथ होना ही पड़ा । उनका विचार था, संगीत की लय और तानोंके मध्य वह थोड़ा समय काट ही देगा ।

ताराने दरबारीका आलाप लिया, मार मुग्ध हो कर सुन रहा था, कितना मीठा स्वर था, कितनी प्रभावशालिनी बोलतानें ली जा रही थीं । राजकुमको लगा पुष्पोंके बीच घूमनेसे, यहांका यह संगीत सागर अधिक प्रिय था । वह संगीत में अपनेको भूल सा रहा था । और जब गान समाप्त हुआ, राजकुमारका मन कह रहा था, "अभी और तारा ! तेरे स्वरमें सारे संसारको मदहोश करनेकी शक्ति है ।" पर वह प्रत्यक्ष बोलनेका साहस न कर सका । यह उसकी पराजय होगी, इसका उसे ध्यान था । तभी नर्तकी ने मधुका सुवर्ण प्याला राजकुमारके सम्मुख किया । राजकुमारकी अस्वीकृतिने नर्तकी ताराको चकित अवश्य किया, पर वह जानती थी, इस भवनका अतिथि, आज नहीं कल अवश्य उसको अपनाएगा । यह उसके लावण्यको वरदान था । और सचमुच राजकुमार उस दिन लौटा, पर एक दर्द लेकर, संघर्ष लेकर । विराग और आकर्षण—दोनों ही समस्या बन गये थे । दूसरे दिन भी राजकुमार अपनेको न रोक सका । वह फिर नर्तकीके द्वार पर पहुंचा । नर्तकीने उसका स्वागत किया । फिर वही गीत, वही मस्ती, वही मदहोशी । राजकुमार जैसे भूल जाता, स्त्री दुर्बलता है, स्त्री पाप है । नर्तकी राजकुमारकी ओर देखती और उसे लगता जैसे उसका समूचा व्यक्तित्व कांप उठता है । नर्तकीने फिर मदिरा राजकुमारके सम्मुख की । राजकुमारने फिर नाहीं की—पर जैसे उस नकारमें टिक सकनेकी उक्ति न थी ।

नर्तकीने पूछा—"क्यों?"

"मैं साधना करता हूं । मैं शांति खोजता हूं । और मदिरा उसको सबसे भयंकर शत्रु है ।

नर्तकी तारा खिलखिला पड़ी, मानों कह रही हो "तभी इन चहारदिवारोंके अन्दर तुम आते हो ।"

उसने पूछा– "कहीं शांति का सूत्र भी मिला?" और नर्तकीने उसके ओठों पर प्याला लगा दिया । अनजानेमें ही राजकुमार उसे पी गया ।

दिन बीते, माह बीते । मदिरा राजकुमारकी श्वास थी, नर्तकी उसका शरीर । राज्यके कोने कोनेमें राजकुमार और तारा की चर्चा सुनायी पड़ती थी । पुष्यजीतके पिता अपने एकलौते बेटेपर आसूं बहाते आकाशपर उड़ने वाला पक्षी, संसारके गन्दे तलमें परकटा बैठा था । उसका आकाश में पहुंचना असंभव है, यह कल्पना समस्त राज्य भरमें फैली थी, और राजकुमार स्वयं पृथ्वीके गन्दे तलको आकाशके स्वच्छ वातावरण से कहीं अधिक श्रेष्ठ समझता था ।

माहमें एक आध बार, वह अपने प्रासाद लौटते । स्त्रीको पाप और घृणा कहने

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वाला व्यक्ति स्वयं स्त्रैण बन गया था। एक ओर कितनी लाचारी थी और एक ओर कितनी शक्ति !

राजकुमारी उर्दव सवैत पुष्यराजकी प्रतीक्षा किया करती, और जिस दिन उसे मालूम हुआ पुष्यराज अब वह पुष्यराज न रहा, वह एक वेश्याका दास है, वह प्रजाके नेत्रोंकी किरकिरी है, उसका हृदय क्षोभ से भर गया। उसे अपने ऊपर घृणा हुई। "क्या स्त्री, वास्तवमें दुर्बलता है ?" "क्या स्त्री वास्तवमें पाप है ?"

ओह नर्तकी ताराने समस्त स्त्री जाति का अपमान किया। वह प्रायश्चित् . .।

और कुछ दिनों पश्चात राजकुमारी उर्वशी अपनी दासी कंचना सहित मगध की ओर चल पड़ी। ठीक एक माह पश्चात् वह मगधकी गगनचुंबी अट्टालिकाओंके मध्य पहुंच गथी। कितना ऐश्वर्य भरा था ? राजकुमारी उर्वशी फिर राजकुमारीसे दासी कंचना हो गयी। नर्तकी ताराकी वह चर्चरका थी। पुष्यजीत, कितना अन्तर है, उपूलिकाके बंदी पुष्यजीत और ताराके पुष्यजीत में ? विलासिता, राजकुमारके हृदयकी ही नही वरन, उसके शरीरको भी अपनेमें रंगनेमें कितनी सफल हुई।

राजकुमारी उर्वशी, पुष्यजीत और ताराको एक साथ न देख सकती। क्या नारी भी इतनी कठोर हो सकती है ? यह आज उर्वशीको ज्ञात हुआ। उसने अनुभव किया, वास्तवमें नारी पाप है, घृणा है। उसे साहस न होता कि वह राजकुमारको बिछुड़े पथमें फिर से ला सके। और उस दिन उर्वशीकी रही सही आशाओंपर भी तुषारपात हो गया। तारा और पुष्यजीत का विवाह !

ताराका प्रासाद, उस दिन जगमगा रहा था। आजीवन अविवाहित रहनेवाला पुष्यराज एक गिरी हुई नर्तकीसे विवाह कर रहा था।

"पुष्यराज ?" राजकुमारी धीरे-धीरे पुष्यजीतके पास पहुंची और पुकारा।

'कौन, दासी कंचना ?"

"हां राजकुमार," उर्वशीने उत्तर दिया "स्त्री पाप है।"

"नही दासी वह मेरी भुल थी।"

"नहीं राजकुमार, तुम अब भूल कर रहे हो। वह मेरी भूल थी। मुझे न मालूम था नारी भी पाषाण हृदया हो सकती है। और सुनो . . . . ."राजकुमारी चीख उठी

'मैं दासी कंचना नहीं, वरन उपूलिकाकी राजकुमारी उर्वशी हूं,"

"राजकुमारी उर्वशी !" राजकुमार विस्मयसे कह गया। भूतकी सारी कल्पना सारे चित्र उसके नेत्रोंसे गुजर गये। वह सुन्न हो गया।

राजकुमारी कहती गयी "तुमने एक दिन कहा था, राजकुमार, उपूलिका नष्ट हो रही होगी, तब शायद मेरी सहायता राजकुमारी स्वीकृत करें। परन्तु आज मैं, तुम्हारे राज्यको नहीं, वरन तुम्हें आपत्ति के घनघोर मेघोंसे बचाने आयी हूं। राजकुमार मुझे क्षमा करना। मुझमें अब जीने की तनिक भी शक्ति नहीं है। मैं एक नारी की भूलके प्रायश्चित्तमें अपनेको बलिदान करने जा रही हूं। तुम उसे भी क्षमा करना।" और राजकुमारीने अपने मुस्कराते हुए मुखको सदैवके लिये शांत करनेके लिये अपने वक्षस्थलमें कटार भोंकली। रक्त का फव्वारा फूट गया, और उसमें राजकुमारी समा गई।

राजकुमार चीख उठा।

बरसों बीत गए, राजकुमारका पता न चला। मगध सूना हो गया। और सूनेसे पथमें नर्तकी ताराका प्रासाद अब भी खड़ा है। तारा, अब भी अपनी कोमल वाणीसे लोगोंको शांतिका वरदान देती है।

---

# हमारी धर्मान्धता और उसके कुपरिणाम

**श्री—प्रभाशंकर मिश्र**

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति और समाजका बड़ा गहरा सम्बन्ध है। विना व्यक्तिके समाजका कोई अस्तित्व नहीं, और बिना समाजके व्यक्तिका जीवन सूना है। व्यक्ति और समाजमें दामन-चोलीका नाता है। समाजकी ही उन्नतिसे व्यक्तिकी भी उन्नति है। उन्नति करनेके लिये कई बातें आवश्यक हैं। हमें सोचना चाहिये कि हमारी सामाजिक उन्नतिमें क्या कठिनाइयां हैं! हममें क्या त्रुटि है !

यदि हम भली भांति विचारपूर्वक देखें तो हमें ज्ञात होगा कि कुछ ऐसी त्रुटियां हैं जो बहुत दिनोंसे समाजको हानि पहुंचाती आ रही हैं। कुछ ऐसी त्रुटियां, जो गुलामीके साथ कंधासे कंधा मिलाकर हमारा नाश कर रही थीं, अब भी कर रही हैं और यदि उनका उपचार न हुआ तो भविष्यमें भी अपना बल लगाये बिना न रहेंगी। हमारी सामाजिक उन्नतिकी दो प्रमुख बाधाएं हैं। प्रथम तो हमारी धर्मान्धता, और द्वितीय तज्जनित, ढोंगी, साधु, मठाधीश आदि। हम अपनी धर्मान्धताका फल सदासे ही भोगते आये हैं। इस धर्मान्धताने हमारा कितना अनिष्ट किया है यह तो सभी विचारशील पुरुष जानते होंगे। भारतको परतन्त्र बनानेमें भी इसका बड़ा हाथ था। पर अब वे दिन बीत गये। आज हम एक नये युगमें प्रवेश कर रहे हैं। शताब्दियोंका दलित भारत कितना ही तंग और अंधेरी घाटियोंको पार कर खुले मैदानमें आया है। अब हम स्वतन्त्र हैं। स्वतन्त्रता जन-जनमें आत्म सम्मान और आत्म सुधारका मंत्र फूंक रही है। स्वतन्त्रताका अर्थ तभी सार्थक होगा जब हम अपनी कमजोरियोंको दूर कर सकें। साथ-साथ हमें सामाजिक बुराइयोंको दूर करना है। हमें ऐसे शत्रुसे मोर्चा लेना है जो १८५७ से ही नहीं बल्कि सदियों पहलेसे हमारे ऊपर शासन करता आया है। अब दकियानूसी खयालों, प्राचीन योगापन्थी और घिसी घिसाई आदर्शवादिता से टक्कर लेना है। स्वतन्त्रताका दूसरा मोर्चा हमारी धर्मान्धताके खिलाफ है।

धर्मका वास्तविक अर्थ क्या है ? हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो केवल यही जानते हैं कि धर्म हमें नियम पूर्वक जीवन व्यतीत करनेकी शिक्षा देता है। नियमित जीवनसे ही प्राणी सुखी हो सकता है। इसी लिये धर्म कल्याणकारी कहा गया है। पर जैसे जैसे समय बीतता गया, हम वास्तविक धर्मको भूलते गये। समयके प्रवाहमें हमारा सच्चा, कल्याणकारी आदर्श वह गया। धर्मकी आड़में अधर्मने हमारा पैर घसीटना शुरू किया। सदियोंकी परतन्त्रताने हमें बिल्कुल निकम्मा बना दिया। धर्मान्धके तिमिरने हमें अपने पेटमें रख लिया। धर्ममें बड़े बड़े परिवर्तन हुए और परिवर्तन करने वाले धर्मके वे ठेकेदार जो आज भी धूर्तता, असत्य, हिंसा और मक्कारीमें अपना सानी नहीं रखते। हम विनाशकी ओर बढ़ने लगे। इससे लाभ उठाने वाले, समाजको गुमराह बनाने वाले बहुतसे रंगे स्यार, कनफटे, दंडी, योगी, वैरागी, नागा तथा मठाधीश पैदा हुए।

आज युगके साथ चलने वाले समाज का कर्त्तव्य है कि वह ऐसी प्राचीन रूढ़ियों को समूल नष्ट कर दे। अंग्रेजी शिक्षाने भारतकी गुलामीको मजबूत बनाया। पर मैं यह कहनेमें कभी संकोच न करूंगा कि अंग्रेजी शिक्षाने ही भारतको नवीन युगका मार्ग दिखाया है। उसीने भारतीयों में व्यक्तित्व तथा स्वतन्त्र विचारकी भावना भरी है। अंग्रेजी पढ़े लिखे नवयुवकोंने चाहे धर्मके नामपर कुछ भी न किया हो पर धर्मान्धताकी कड़ी खिसकानेमें बड़ा योग दिया है। वे धर्मके नाम पर गरीबोंको एक पैसा भी न देते हों, पर उनके हाथसे एक भी पैसा आजकलके असाधुओंके हाथमें नहीं जाता। इस रूढ़िको ढीला करनेका यह पहला कदम है। धर्मान्धता त्यागकर हमें नवीन मार्गका अनुसरण करना चाहिये। अब तो समाजको पुरानी केंचुली उतारकर फेंक देनी चाहिये।

हमारी धर्मान्धताका सबसे अधिक लाभ उठाने वाले ये ढोंगी, साधू, नागा, वैरागी, तथा मठाधीश आदि हुए। निरीह जनताको धर्मके नामपर ठगना उन्हें खूब आता है। साधारण जनता इन्हें भगवद्भक्त समझकर इनकी ओर आवश्यकतासे अधिक झुक गयी। इनकी भक्ति से सनी चिकनी चुपड़ी बातें जनताको ठगने के लिये पर्याप्त होती हैं। यही कारण है कि ये लोग एक स्थानपर आसन मार जो वस्तुएं पा जाते हैं वह दिन भर लहू पसीना करने वाले मजदूरको प्राप्त नहीं। गलेमें रुद्राक्ष, भद्राक्षकी माला डाले, तीन अंगुलका त्रिपुण्ड लगाये, आंख मूंदकर कर भक्तिका स्वांग भरने वाले ये, योगानन्द लोग आज भी निरीह जनताको बुरी तरह लूट रहे हैं। इनके रहनेके स्थान ठगी, मक्कारी, अपहरण, मद्य, छूत, द्यत, हिंसा तथा अन्यान्य अवगुणोंके केन्द्र हैं। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि समाजको अन्धकारके गर्त्तकी ओर ले जानेमें इनका विशेष हाथ रहा है। ये लोग आज भी हमारी आंखोंमें धूल झोंककर समाजके मार्गमें रोड़े अटका रहे हैं।

यदि सरकार इनपर भी प्रतिबन्ध लगा देती तो देश और समाजका बड़ा कल्याणहोता। हमारेसमाजकी उन्नतिमेंटांग अड़ाने वाली दूसरी वस्तुएं मठ और मंदिर हैं। हमारा मतलब उन मन्दिरोंसे है जहां काफी भूमि मिली है। ये मठ और मन्दिर बहुत दिनोंसे जनताका रक्तपान करते आ रहे हैं। इन मठों और मन्दिरोंके पास समुचित भूसम्पत्ति है। मठाधीश और उनके मन्दिरोंके पुजारी किसी जमीन्दारसे कम नहीं हैं। इनके पास अतुल सम्पत्ति है। मठाधीश अन्य जमीन्दारोंकी भांति जनताका शोषण करने वाले हैं। ब्रिटिश सत्ताके अन्तर्गत ये लोग काफी रुपया उन सत्तावादियोंने देते थे। मन्दिर उपासनागृह न होकर आमदनीके स्थान बन गये। उपासना स्थान ठीकेपर दिये जाते थे। अब भी हैं। पण्डे लोग मन्दिरों, उपासना गृहों, तथा बड़े बड़े तीर्थों, घाटोंका ठेका ले लेते थे और एक मोटी रकम अधिकारियों को देते थे।

इतिहास इस बातका साक्षी है कि ये मठ और मंदिर सदासे ही धन एकत्र करते आये हैं। मुहम्मद गजनीका आक्रमण अकसर इन लक्ष्मी-स्थानोंपर ही होता था। ऐसे मठ और मंदिर आज भी संपत्तिशाली हैं और यह संपत्ति, द्यूत, मद्य, ऐयाशी और वेश्याओंपर नष्ट की जाती हैं। मठों और मंदिरोंके मालिक समाजके कलंक हैं जो धोनेसे मिटनेवाले नहीं। इनके रहने के स्थान अनाचार, दुराचार, और ठगके अड्डे हैं। प्रति वर्ष ज्ञात नहीं कितने लोग इनके शिकार बनते हैं। रुपयेके लालचमें निरीह जनताका वधकर देना इनके लिये साधारण बात है। ज्ञात नहीं कितनी ललनायें इनके फौलादी पंजेमें जाती हैं जिन्हें, आभूषण सतीत्व और प्राणसे भी हाथ धोना पड़ता है। समाजके इस दूषित अंगका किस प्रकार सुधार किया जाय, हमारे सामने एक महान समस्याका विषय है।

आज भारतके भाग्यने पलटा खाया है और शुभ दिन हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इन मठों और मंन्दिरोंकी संपत्ति जनता की है और वह जनताके हितमें ही व्यय होना चाहिये। जमीन्दारीं प्रथाका टूटना इस सुधारमें एक महान योग दे सकेगा। ऐसे मठ या मंदिर जिनके पास जमीन्दारी नहीं और जो जनतासे रुपया लेते हैं, उसकी संपत्तिका दूसरा भी सदुपयोग हो सकता है। इन स्थानोंपर पाठशाला खोली जावें जहां बच्चे निशुल्क शिक्षा पा सकें। यहां उंचे दर्जेकी भी पाठशालाएं खोली जा सकती हैं जहां वे विद्यार्थी जो धनाभावके कारण नहीं पढ़ सकते, आकर रहें और शिक्षा प्राप्त करें, इन स्थानोंपर बेकार कामचोर और अनाचारियोंकी जगह यदि विद्यार्थी और शिक्षक रहते तो देश जाति और समाजका कितना हित होता। जिस दिन कोई ऐसी व्यवस्था बन जायेगी जो इन मठों मंदिरोंकी संपत्तिका उपयोग जनताके हितके लिये करे, उस दिन हमारी एक महान समस्या सुलझ जायगी। एक अतुल संपत्ति जो दुर्व्यसनोंमें व्यय होती है जनता के कल्याणके लिये व्यय होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारे सांस्कृतिक प्रतीक

## लेखक— श्री महेन्द्र त्रिवेदी

विज्ञानमें हम बहुधा पदार्थके नामके लिये कुछ निशान बनाते हैं, जो उस पदार्थ का गुण और उसकी रसायनिक योग्यता हमको बतलाता है।

प्रतीक किसी भी वस्तुकी परिभाषा हमें देता है। नाम भी हम वही अच्छा समझते हैं जो व्यक्तिके गुणको बतलाता है या इसके विपरीत यों कहिये कि हम उस व्यक्तिको अच्छा समझते हैं, जो अपने नामके समान ही काम करे। हम कहते भी हैं कि 'यथा नाम तथा गुणो' नाम तो है गंगाधर किन्तु पानीसे इतना डर कि कमी स्नान करनेका नाम भी न लें। मतलब यह है कि प्रतीक गुण और कर्म दोनोंको स्पष्ट करनेवाला होना चाहिये। अर्थ हीन प्रतीक व्यर्थ हैं। आज कल अर्थ हीन प्रतीक बहुत है। झंडे, निशान, नारे, इतने निकल गये हैं कि उनका कोई अर्थ नहीं।

प्रतीकका देशकालसे भी संबध रहता है। आज हम यज्ञोपवीतको देखते हैं वह ब्राह्मणके ज्ञान, भक्ति, कर्मसे पूर्ण जीवन का प्रतीक है। एक काल था जब जीवन इतना ही श्रेष्ठ था। आजका देशकाल है शोषितवर्गका, उदय हांसियां, हथोड़ा, हल आज की आवश्यकताके प्रतीक हैं। इसी प्रकार प्रतीकका अपना ऐतिहासिक महत्व भी हैं। आज छोटे-छोटे राजाओंका अपना राजचिन्ह होता है, वह उनका ऐतिहासिक प्रतीक होता है।

प्रतीक गुण, कर्म एवं देशकाल सब का समनबय होना चाहिये। हमारे देशमें कमल' सांस्कृति प्रतीक माना जाता है। कमल जैसा पुष्य राज है, उसी प्रकार प्रतीक राज भी है। कमलकी दशासे जीवनकी दशापर प्रकाश पड़ता है।

कमलः— यह पानीमें रहता है, इसकी जड़ें कीचड़में रहती हैं और अथाह रहती हैं। इसका ऊपरी भाग सुंदर, सुवास्ति एवं कोमल होता है। यह सूर्यके उदय होते ही खिलता है, और उसके अस्तके साथ ही बंद हो जाता है। इससे हम बुराई में से अच्छाई को देखनेका आदेश पाते हैं। इससे परमेश्वरकी दशाका ज्ञान पाते हैं कि वह सृष्टिकर्त्ता होते हुए भी इस सृष्टि से अलग है। प्रकाश कमलका जीवन है। हमारी संस्कृति भी 'तमसोमा ज्योतिगम्य' है। हमने कमलके समान प्रेमका प्रकाश समस्त विश्वको दिया है और आज भी शिया हमसे प्रकाश चाह रहा है। कमल हमारी संस्कृतिके गुण कर्म और जीवनके के परम लक्षका प्रतीक है। साहित्यमें कमल सबसे बड़ा उपमान है।

हमारी संस्कृति अकमळके समान ही है।

त्याग हमारे जीवनका मार्ग है। हम सदासे ही त्याग करते आ रहे हैं और विश्व को प्रकाश देते आ रहे हैं। यह त्यागकी भावना हमारे यहां 'होम'के रूपमें है। त्यागका प्रतीक है। जीवन एक यज्ञ है, जहां हम अपने स्वार्थकी आहुतियां देकर विश्व कल्याण करते हैं। होम ही बौद्धका निर्वाण है, मोक्ष है। हम भस्मी लगाते हैं, वह हमारे मया, मोहको भस्म कर हम लगाते हैं, जो हमें शिक्षा देती है कि जब माया, मोह, स्वार्थकी राख होगी तबही जीवन यज्ञ सफल होगा। कबीरने एक स्थान पर कहा है:—'जो घर जोर अपने चले हमारे संग तुकाराम ने एक स्थानपर कहा है कि आगलगा कर पीछे मत देखो:— "संसारास आग लावूनियां हातें। मागुतें परौते पाहूं नये।" कमल ने हमें दीक्षा दी कि "प्रकाश की पूजा करो, दुखमें सुख देखों, नवीन नवीन खोज करो" हमने हमे सिखाया त्याग करनेसे ही कमलके समान पवित्र बन सकोगें, तब ही भारतीय संस्कृति कमल बनी है।

भारतीय संस्कृति, भारतीय साहित्य में समनव्यका प्रमुख स्थान है। सुख दुःख, सरुपता कुरूपत।विरोधी गुणोंका एकाकीपनही हमारा जीवन है। दुखमें हमने सुख देखा, विरहमें ही हमने मधुर मिलनका सुख-माया इतना ही नहीं 'विरह मिलनेकी प्रथा है।' इसको हमारा कवि गाने लगा, घोर निराशामें आशाका सुन्दर प्रभात हम देखते हैं। यह समनव्य हम कहांसे सीखे, हमारी संस्कृतिमें इसका प्रतीक क्या है, यह जाननेकी बात है। पंचामृत स्वादिष्ट होता है, पूजाके बाद प्रसादके साथ हम पंचामृतको बड़े चावसे पीते हैं। यह पंचामृत हमें भिन्न भिन्न वस्तुओंकी एकजीवताका प्रमाण और आनन्द बतलाता है। यह जीवनानन्दका उपदेश देता

बायेंसे दाहिना— १९४७ के नोवल पुरस्कार विजेता सर रोबर्ट रोविन्सन और सर एडवर्ड एपेलटन तथा ब्रिटिश उद्योगसंघके प्रैसिडेंट सर फ्रेडरिक बेन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कमल, होम, यज्ञोपवीत, पंचामृत प्राचीन कालके प्रतीक हैं किन्तु जीवनकी स्थाइता पर प्रकाश डालते हैं। हम आज फिर उसी संस्कृतिकी ओर मुड़ रहे हैं।

आजके हमारे प्रतीक भिन्न हैं। हमारी राष्ट्रीय पताका आज हमारी स्वतन्त्रताका प्रतीक है, उसके तीन रंग हमारे हिन्दू-मुसलमान भाइयोंकी एकताके प्रतीक हैं। सफेद रंग जीवनकी पवित्रताका प्रतीक है जो मानव मात्रका लक्ष्य है। उसमें एक चर्खा है जो आज विज्ञान द्वारा शोषित समाजका प्रतीक है। यह चर्खा स्वकार्य का प्रतीक है। यह आजका प्रतीक है। इसकी रक्षाके लिये भारतीयोंने क्या नहीं किया है।

महात्माजी कहते हैं खादी दरिद्र नारायणका प्रतीक है। गरीबोंकी रोटी है। यह सत्य भी है, आज मशीनोंने हमें परतन्त्र कर दिया है, उनकी मुकृता ही खादी है।

हमारे समाजवादी विचारकोंका लाल झण्डा और उसका हांसिया हथौड़ा भी आने वाले युगका प्रतीक है।

इस्लामका हरा झण्डा चांद और तारा भी शांतिका प्रतीक है। हमारा भगवा रंग त्याग और तपस्याका प्रतीक है। इन सब आधुनिक प्रतीकोंका हमारे जीवनसे सम्बन्ध है, आज हममें से प्रत्येक किसी न किसी प्रतीकसे आत्मीयता रखता है। इन आधुनिक प्रतीकोंमें भी त्याग, प्रेम और ऐक्यता, मानव कल्याणकी भावनायें हैं। इनका सब आज समयके अनुसार बदल गया है।

भारतीय संस्कृतिके प्रतीकोंने विश्व को प्रकाश दिया है। आज भी विधान परिषदके समय हमारे प्रतिनिधियोंने जहां हस्ताक्षर किये हैं, उन कागजों पर प्रत्येक प्रांतके सांस्कृतिक प्रतीक बने हैं। सदस्यों ने भी प्रांतीय भाषाओंमें हस्ताक्षर किये हैं। आने वाले युगमें इतिहासके सुन्दर पृष्ठोंपर ये प्रतीक भुलाये नहीं जा सकते हैं।

प्रतीक तो हम दैनिक जीवनमें पाते हैं। हमारे हास्य, क्रोध सबका परिचय हमारे हाव-भावसे मिल जाता है। संस्कृतिकी रक्षा और स्थायिता प्रतीकोंसेही होतीहै।

# ऊर्ध्वाकाशके रहस्योद्घाटनमें रैडर

## प्रो० भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव

गत महायुद्धमें इंगलैण्डके वैज्ञानिकोंने रेडियो तरंगोंके बल पर नियन्त्रित शक्तिशाली यन्त्र रैडरका आविष्कार किया था—इसी यन्त्रकी सहायतासे रात जर्मनीसे प्रतिदिन हजारोंकी संख्यामें बम-वर्षक वायुयान इंगलैण्डपर आक्रमण करनेके लिये आते थे, उन दिनों रैडर की ही सहायतासे ब्रिटेनके लड़ाकू वा

ब्रिटिश वैज्ञानिक सर एडवर्ड स्पेलटन जिन्हें १९४७ में भौतिक विज्ञानक नोवल पुरस्कार मिला।

के अधरम तथा घने कुहरेके आवरणमें भी शत्रुके जलयान तथा वायुयानोंके अनेकों आहट ब्रिटेनकी रक्षक तोपें (ऐन्टी एयर क्रैफ्ट गन) पा लेती थी। जिन दिनों यान इन बम-वर्षकोंसे भिड़नेके लिये पू से तैयार होनेमें समर्थ होते थे। अवश्य रैडरकी बदौलत ही जर्मन बम-वर्षक वायुयानोंके आक्रमणसे इंगलैण्डकी र की जा सकी थी।

किन्तु युद्धके उपरान्त इस शक्ति शाली यन्त्रका इस्तेमाल विज्ञानकी आका श सम्बन्धी अनेक समस्याओंको सु झानेके लिये किया जा रहा है। उदाहर के लिये अनन्त आन्तारिक्षके संदेशवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उल्काओं तथा धूमकेतुओंके बारेमें ज्योतिर्विज्ञानकी जानकारी अधूरी ही है। आशा की जाती है कि रैडरकी सहायतासे वृहत्तर ब्रह्माण्डसे धरतीके वायुमण्डलमें प्रवेश करने वाले इन आकाश पिण्डोंकी गतिविधिपर समुचित प्रकाश डाला जा सकेगा।

रैडरकी उपयोगिताको पूर्णरूपसे समझ सकनेके लिये यह आवश्यक है कि हम रैडरकी कार्य प्रणालीकी थोड़ी जानकारी हासिल कर लें। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है इस यन्त्रमें "रैडियो तरंगे" प्रयुक्त होती है। रैडियो तरंगे प्रकाश तरंगोंकी भांति अत्यन्त तीव्रगतिसे गमन करती है—इनकी गति प्रति सेकेण्ड १८६ हजार मील है! रैडर यन्त्र अपने ट्रांसमीटर द्वारा रेडियो तरंगे उत्पन्न करके उन्हें प्रसारित करता है, ये ही तरंगें किसी भी वस्तुसे टकरानेपर परवर्तित होकर पुनः उस यन्त्र तक वापस पहुंचती है। इन्हें रैडरके साथ लगे हुए यन्त्र "आसिलो ग्राफ" द्वारा ग्रहण करते हैं। आसिलो ग्राफमें कांचके पर्देपर रेडियो तरंगके भेजे जाने तथा उनके वापस आनेके कारण क्षण अंकित हो जाते हैं, अतः सहज ही जाना जा सकता है कि परवर्तित करने वाली वस्तु कितनी दूरीपर स्थित है। रैडियो तरंगोंकी तीव्रतम गति ही रैडरको अध्वाकाश सम्बन्धी अनुसन्धानोंके लिये विशेष उपयोगी बनाती है।

उल्काएं वाह्य प्रदेशसे धरतीके वायु मण्डलमें प्रवेश करती हैं। वास्तवमें आकाश पिण्डोंके अंगके ही ये भाग होती हैं—ये उल्काएं आकारमें प्रायः रेतके कणोंसे बड़ी नहीं होती यद्यपि कभी कभी बड़े आकारकी उल्काएं भी गिरती हैं। वायु मण्डलमें ये तीव्र वेगसे प्रवेश करती हैं, अतः लगभग धरतीसे ९० मीलकी ऊंचाई तक आते आते वायुनकणोंके घर्षणके कारण ये उल्काएं इतनी तप्त हो जाती हैं कि आग के गोलेकी तरह यह चमकने लगती हैं और घर्षणकी ज्वालाके कारण शीघ्र ही ये जलकर वाष्परूपमें परिणत हो जाती हैं, धरती तक इनके पहुंचनेकी नौबत ही नहीं आने पाती। केवल बड़े आकारकी उल्काएं ही धरती तक पहुंचनेमें समर्थ होती हैं।

इन उल्काओंकी गतिविधिका विस्तृत रूपसे अध्ययन करनेके लिये रैडरका प्रयोग पहली बार १९४६ में किया गया। अनेक क्षुद्र उल्काएं जो इतनी छोटी थीं कि दूरबीन की सहायतासे भी उन्हें देखा नहीं जा सकता था रैडरकी तीव्र दृष्टिको धोका न दे सकी। फिर दिनके समय तो उल्काओंका निरीक्षण करना एक प्रकारसे असम्भव सा ही है किन्तु कुहरेमें अथवा धूपके प्रकाशमें भी रैडरकी सहायतासे उल्काओंकी स्थिति तथा उनकी रफ्तारका पता लगाया जा सकता है। औसत रूपसे उल्काओंकी गति लगभग २३ किलो मीटर (१५ मील) प्रति सेकेण्ड पायी जाती है। ज्योतिषज्ञ लोवेलने रैडरकी सहायतासे गत वर्ष कई महीनोंके निरीक्षणके उपरान्त मालूम किया कि मईसे जुलाई तकके महीनोंमें उल्का झड़ियोंका बाहुल्य रहता है। ऊर्ध्वाकाशके अनुसंधानक, रैडर सरीखे शक्तिशाली यन्त्रको पाकर उतने ही प्रसन्न हैं जितने उक्त वर्ष पूर्वके ज्योतिषज्ञ दूरबीन पाकर प्रसन्न हुए थे —आशा की जाती है कि गगन मण्डलके रहस्योद्घाटनमें रैडर विशेषरूपसे सहायक साबित होगा।

उल्काओंके अतिरिक्त आकाशमें बादलोंकी उंचाई नापनेके लिये भी रैडरका इस्तेमाल किया जा रहा है। ऋतुवेधशालाओंमें आकाशके ऊर्ध्वस्तरकी वायु की रफ्तारका पता लगातेके लिये छोटे प्रकारके गुब्बारे काममें लाये जाते हैं। रैडरकी मददसे इन गुब्बारोंकी गति रातके अंधेरेमें अथवा कुहरेसे अच्छादित आकाशमें भी नाप सकते हैं—ऐसे अवसरपर दूरबीन तो बिलकुल बेकार ही साबित होते हैं। इस जातिके निर्देशक गुब्बारे आकाशमें अधिकसे अधिक ५-६ मीलकी ऊंचाई तक पाते हैं। अतः अधिक ऊंचाई पा स्थित वायुस्तरोंकी रफ्तार नापनेके लिये इन गुब्बारोंका आश्रय नहीं लिया जा सकता। इसके लिये तो उल्काओंका ही निरीक्षण करना पड़ता है। किन्तु वायु की रफ्तार नापनेके लिये ऐसी दशामें रैडर द्वारा केवल उल्काका निरीक्षण नहीं करते हैं। उल्का-पथपर उसके पीछे वायु के अणु स्वयं विद्युतमय होकर क्षण भरके लिये आलोकमय हो जाते हैं। थोड़ी देरके लिये उल्काके पीछे एक पतलबलकीर जैसी

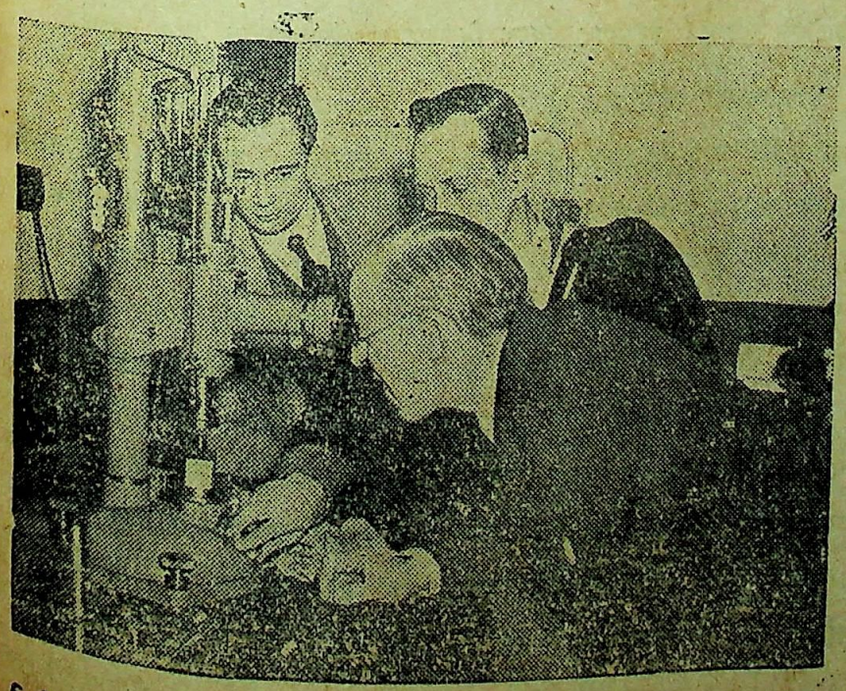

ब्रिटेनके अर्थमन्त्री सर स्टेफर्ड क्रिप्स केण्टमें एक कालेजका उद्घाटन कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रज्वलित पूंछ दीखती है। हवाकी गति के कारण यह प्रज्वलित लकीरकी हवाकी रफ्तारसे ही स्थानान्तरित होती है। रैडर द्वारा रेडियो तरंगें उल्काकी प्रज्वलित पूंछकी ओर भेजकर आसानीसे मालूम कर लेते हैं कि उसकी रफ्तार क्या है और इस प्रकार आकाशमें लगभग ५०-६९ मीलकी ऊंचाईपर स्थित वायुस्तरकी रफ्तार आंकी जाती है। इस प्रदेशकी हवा की रफ्तारका मान अधिकसे अधिक ४०० मील प्रतिघंटा ठहरता है। वास्तवमें हवा की रफ्तार अभी तक ४०० मील प्रतिघंटे से अधिक कहीं भी नहीं पायी गयी है।

रैडरकी सहायतासे मनुष्यने पहली पहली बार चन्द्रमासे भी अपना सम्बन्ध स्थापित किया। यह घटना १० जनवरी १९४६ की ह। उस दिन ठीक ११ बज कर ५८ मिनटपर दीपहरके समय रडर यन्त्रसे रेडियो तरंगें चन्द्रमाकी ओर भेजी गयीं। पूरे २०४ सेकेण्डके उपरान्त रेडि तरंगें चन्द्रमाके धरातलसे टकराकर यन्त्र तक पुनः वापस लौटीं। इस प्रयोगमें चन्द्रमा की भ्रमण गति भी नापी जा सकी। पृथ्वी के वाय मण्डलसे बाहर आकाशके पिण्ड तक संकेत भेजकर उन्हें पुनः ग्रहण करने का यह सर्वप्रथम सफल प्रयास था। इस प्रयोगकी सफलतासे उत्साहित होकर अनेक वैज्ञानिक धरती माताके निकटतम पड़ोसी चन्द्रमा तक पहुंचनेके लिये राकेट सम्बन्धी योजनाएं की बना रहे हैं। इनका अनुमान है कि परमाणु शक्तिके बलसे राकेटका परिचालनकर उसे इस योग्य बना सकेंगे कि वह चन्द्रमाके धरातल तक निर्विघ्न पहुंचनेमें समर्थ हो सके।

—

एक आर्थिक अध्ययन—

# भारतीय सुरक्षाकीसमस्या

श्री राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

संसारके अन्य देशोंके युद्ध-कालीन इतिहासका परिशीलन करनेसे यह ज्ञात होता है कि देशीय सुधारपर किये जाने वाले व्ययका स्वभाव आजकल सदैव बढ़ते ही रहनेका है। व्ययकी यह सीमा कई स्थलों पर पराकाष्ठाको पहुंच गयी है। यह नितान्त आवश्यक है कि इसकी इस वृद्धि को रोका जाय, नहीं तो सारा समाज ही इसम तिरोहित हो जायगा।

युद्धके समय रक्षार्थ व्यय करना ही पड़ता है। धीरे-धीरे यह बढ़ता जाता है और यहां तक कि इसका वृहद् आकार भयानक दीखन लगता है। देशकी सरकार खतरा दूर होते देखनेके साथ ही इसे कम क्यों नहीं कर देती? क्या वह कम करना चाहती ही नहीं? चाहती है क्यों नहीं? परन्तु बात यह है कि जब एक बार इस दिशामें व्यय-वृद्धि हो जाती है तो उसे कम करना टेढी खीर है। बाह्य आ मणसे अपनी रक्षा करना, अपनी स्वतन्त्र को बनाये रखना नितान्त आवश्यक है तदर्थ देश जितना भी खर्चकर

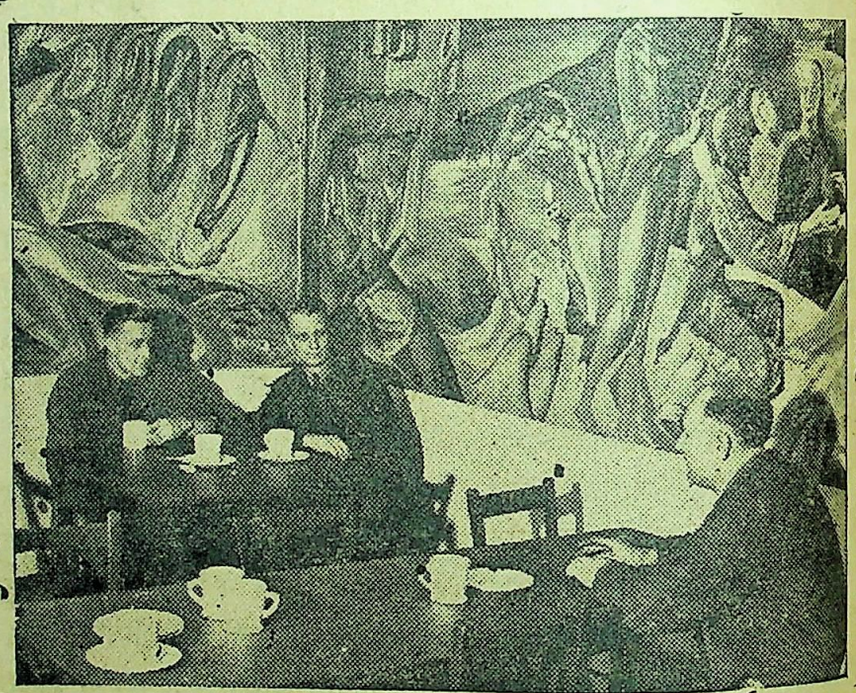

ब्रिटेनके सुप्रसिद्ध कलाकार हेक्टर हिूवस्लरकी चित्रकारीके कुछ नमूने

है करता है।

राष्ट्रकी रक्षाका प्रश्न इच्छा निर्भर नहीं करता। वह तो अनेक व परिस्थितियोंपर निर्भर करता है। अ र्राष्ट्रीय आचरणका मापदण्ड क्या है राष्ट्रोंके एक दूसरेके प्रति विचार कैसे हैं, उनमें वैमनस्य किस सीमा तक ह चुका है—यह सब बातें देशीय रक्षाके प पर प्रभाव डालती हैं।। युद्ध एक छू रोग है। कहीं—दुनियाके किसी को दो देशोंमें परस्पर युद्ध ठने, कि प पक्षकी गुटबन्दियां हुईं और उसने अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विश्वव्यापी रूप धारणकर लिया ।

आधुनिक युद्धोंकी एक दूसरी विशेषता यह है कि इनमें होड़ लगानेकी भावना स्वभावतः ही विद्यमान रहती है । युद्ध में सम्मिलित एक देश या एक समुदाय दूसरे देश या दूसरे समुदायसे आगे बढ़ जाना चाहता है और दोनों एक दूसरेके ऊपर विजयी बनना चाहते हैं । अस्तु, वे दोनों अपने प्रस्तुत साधनोंके बलपर ही नहीं अपनी लड़ाई लड़ना चाहते हैं प्रत्युत नये-नये साधन बनाये जाते हैं और इस प्रकार रक्षार्थ व्यय अपना तुलनात्मक रूप धारण कर लेता है । अपने इसी स्वभाव और रूपके कारण सुरक्षा व्ययमें अत्यधिक वृद्धि हो जाती है । किसी नये अस्त्रका आविष्कार हुआ तो उसे खरीदना ही पड़ता है । युद्धके नये-नये तरीकोंको अपनाना ही पड़ता है । उदाहरणार्थ अणु-बमको ही ले लीजिये । यह एक आधुनिकतम आविष्कार है । भविष्यके युद्धोंका यही मल आधार होगा यह तो स्पष्ट ही है । और इसका अर्थ होता है अधिकसे अधिक रक्षापर व्यय ।

इस प्रकारका व्यय रक्षात्मक ही है उत्पत्तिदायक नहीं । परन्तु अप्रत्यक्ष रूपसे उत्पत्ति देने वाला भी है । क्योंकि जब तक हम अपनी आजादीकी रक्षा नहीं कर लेते तब तक पैदा नहीं कर सकते । अस्तु ।

एक विशाल दृष्टिकोणसे इस दिशामें किये गये प्रत्येक व्ययको 'आर्थिक उपकरणों का नाश' की संज्ञा दे सकते हैं । रक्षामें या यों कहिये कि युद्धमें होता नहीं क्या है ? मार-काट, तोड़-फोड़ । कुछ अपनी हानि कुछ दूसरेका नुकसान । युद्धमें यही सब तो है । उसमें रचनात्मक अंश तो कुछ है ही नहीं केवल ध्वंसात्मक अंश ही दृष्टिगोचर होता है और इसके अतिरिक्त जिन साधनों को हम युद्ध रक्षार्थ लगा देते हैं उन्हें हम रचनात्मक कार्योंमें भी तो लगा सकते हैं जिनकी देशको अधुना अत्यधिक आवश्यकता है ।

### प्रारम्भ

भारतीय सुरक्षाकी समस्याका भली भांति रूप ग्रहण करनेके लिये सर्वप्रथम उसे तीन भागोंमें विभाजितकर लेना सुविधाजनक होगा :- (१) द्वितीय महायुद्धके पूर्व तक । (२) द्वितीय महायुद्धमें और उसके पश्चात । (३) स्वतन्त्र भारत में ।

प्रथम भागका विस्तार ब्रिटिश सत्ताके भारतमें जम जानेसे लेकर सन् १९३९ ईस्वी तक है । सुरक्षाके लिये भारतीय व्यय तो पहलेसे ही काफी ऊंचा था-- क्योंकि १९१३ ईस्वीमें २९.८४ करोड़ रुपया था-- परन्तु १९१४--'१८ के प्रथम विश्व-व्यापी युद्धमें और उसके पश्चात तो यह तीव्र गतिसे बढ़ने लगा । १९२८--१९ में यह खर्च ६६.७२ रुपये और १९२०--'२१ में ६७.३८ करोड़ रुपये हो गया । उसके पश्चात् इसमें कुछ कमी की गयी और १९२७--'२८ में यह खर्च ५४.९२ करोड़ रुपयेपर स्थिर रहा । १९२८'--२९ में जब कि प्रत्येक वस्तुके मूल्यमें कमी आ गयी थी भारतीय रक्षापर ५५.१ करोड़ रुपया खर्च हुआ था । इंचकेप कमेटीने यह सिफारिश की थी कि भारतीय रक्षाके लिये ५० करोड़ रुपयोंसे अधिक खर्च नहीं होना चाहिये । परन्तु उस समय यह बात मानी नहीं गयी । फिर 'साइमन कमीशन' ने भी बताया कि मूल्योंमें कमीके अनुसार ही सुरक्षा-व्ययमें भी कमी की जानी चाहिये, और तब इसमें कमी की गयी । सन् १९३२--'३३ में ४६.७४ करोड़ और १९३३--'३४ में ४६.२० करोड़ रुपयोंके खर्च होनेका अन्दाज लगाया गया था, फिर भी यह कुल सरकारी आमदनीके एक तिहाई अधिकथा । किन्तुयेरुपयेभारतकीभलाई या रक्षामें नहीं खर्च किये गये थे । ये तो ब्रिटिश साम्राज्यवादकी रक्षा और वृद्धिमें खर्च किये गये थे । क्रीमियामें युद्ध, हांगकांग की लड़ाई, प्रथम विश्वव्यापी युद्ध और बर्मापर चढ़ाइयां आदि इसके उदाहरण हैं । देशकी आवश्यकतासे अधिक लम्बी-- चौड़ी फौज रखनेके लिये हमलोग बाध्य किये गये थे । हमारे देशको इतनी बड़ी सेनाकी कोई आवश्यकता न थी ।

राष्ट्रीय आयके मुकाबलेमें यह खर्च बहुत ही अधिक है । केंद्रीय आयका ५० सेलेकर ६० प्रतिशततक सुरक्षाके मदमें खर्च किया गया । और तो उन्हीं लोगोंके साइमन कमीशनने इसका विरोध किया । उक्त कमीशनने बताया था कि ६२ प्रतिशत केंद्रीय आयका और प्रांतीय आयका ३३ प्रतिशत रक्षाके लिये खर्च किया जा रहा है । पर यह किसी न किसी तरह कम किया जाना चाहिये नहीं तो देशोन्नतिके अर्थ कितनी भी अच्छी-अच्छी योजनाएंहैं उनमें से कोई एक भी पूरी न की जा सकेगी ।

इस देशके प्रायः ७० मनुष्योंको अच्छी तरह खाना नहीं उपलब्ध होता । देशकी गरीबीपर ध्यान रखते हुए यह कहां तक उचित था कि रक्षापर इतना अधिक खर्च किया जाता और वह भी केवल ब्रिटिश सामाज्यबादके हितमें ।

### द्वितीय महा युद्ध

भारतीय सुरक्षाकी समस्याके अध्ययनके लिये जिस दूसरे भागका ऊपर उल्लेख किया गया है उसका विस्तार द्वितीय महायुद्ध और उसके बादके समय तक है ।

सन् १९३९ ईस्वीके सितम्बर माहमें द्वितीय महायुद्ध प्रारंभ हुआ । प्रथम महायुद्धमें तथा उसके पश्चात्के कुछ वर्षों तक सुरक्षापर बहुत अधिक खर्च किये गये परन्तु लगभग १९३०--'३१ से बराबर इस मदमें खर्चको कम किया गया । सन् १९३७-३८ में ४५.१८ करोड़ रुपये खर्च किये गये । सन् १९३८--'३९ में महायुद्ध के प्रारंभ होनेके ठीक एक ही वर्ष पूर्व कुल केंद्रीय आय ८४.५ करोड़ थी जिसमेंसे सुर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्षापर ४६.२ करोड़ खर्च किये गये। सन् १९३९-'४० में यह अनुमान लगाया गया था कि इस मदपर करीब ४५.१८ करोड़ रुपये खर्च होंगे परन्तु असलमें ४९.५४ करोड़ रुपये खर्च हो गये अर्थात् अनुमानसे लगभग ४॥ करोड़ रुपये अधिक। यह द्वितीय महायुद्धका प्रथम वर्ष था।

सन् १९४०-'४१ में सुरक्षा व्यय व्ययके लिये ५३.५३ करोड़ रुपयोंका अनुमान लगाया गया था परन्तु ७३.६ करोड़ रुपये खर्च हो गये। यह द्वितीय महायुद्धका दूसरा वर्ष था। इसी प्रकार विभिन्न वर्षों में विभिन्न व्यय होते रहे। खर्च बढ़ता ही गया। इसके आकारमें बहुत अधिक वृद्धि होती गयी जैसा कि नीचेके आंकड़ोंसे ज्ञात होगा :—

| वर्ष | व्यय (संख्याएं करोड़ रुपये में) |
|---|---|
| १९३९-४० | ४९-५४ |
| १०४०-४१ | ७३.६ |
| १९४१-४२ | १०३.९ |
| १९४३-४४ | ३५८.४ |
| १९४४-४५ | ३९५.५ |
| १९४२-४३ | २१४.६ |
| १९४५-४६ | ३७६ |
| १९४६-४७ | २४० |
| १९४७-४८ | १८८.७ (वजट में अनुमान) |
| अन्तरिम वजट (१५ अगस्त सन् '४७ से ३१ मार्च सन् '४८ तकके लिये) | ९२.७४ ( " ) |

द्वितीय महायुद्धके प्रारंभ होनेके बाद ही नवम्बर १९३९ में ब्रिटिश सरकार और भारतीय सरकारके बीच एक समझौता हुआ जिसमें यह तय पाया गया कि भारतीय सरकारको नीचेके खर्च उठाने पड़ेंगे :—

(१) शांतिके समय भारत जितना सुरक्षाके लिये खर्च करता था उतना उसे आगे भी करना पड़ेगा। यह खर्च ३६.७७ करोड़ रुपया ठहराया गया था। (२) उसके अतिरिक्त चीजोंके मूल्यमें वृद्धि हो जानेके कारण कुछ और व्यय करना होगा।

| वर्ष | अतिरिक्त व्यय (मूल्यमें वृद्धिके कारण) |
|---|---|
| १९३९-४० | ३.५५ करोड़ रुपये |
| १९४३-४४ | १४.४ ,, |
| १९४५-४६ | १९.७६ ,, |

(३) युद्धकी उन सामग्रियोंका पूरा-पूरा व्यय भारतको उठाना होगा जो भारत की सुरक्षाके लिये आवश्यक समझी जायेंगी।

| वर्ष | अतिरिक्त व्यय (युद्ध-सामग्रियोंके कारण) |
|---|---|
| १९३९-४० | ३५.४० करोड़ रुपये |
| १९४३-४४ | २९९ " |
| १९४४-४५ | ३०४ " |
| १९४५-४६ | ३२९ " |

(४) देशके बाहर रहनेवाली उन सेनाओंके खर्चके लिये जिनका रखना भारत की वाह्य रक्षाके लिये आवश्यक समझा जायगा एक करोड़ रुपया और देना होगा।

उक्त समझौतेमें यह भी निश्चित किया गया था कि (१) से लेकर (३) विषय तक पर किये गये खर्चके जोड़से युद्ध के वर्षोंमें जितना भी अधिक खर्च होगा वह सब ब्रिटिश सरकारको भारत-सरकार को देना होगा।

इसी निश्चयके अनुसार ब्रिटेन की सरकारको युद्ध-कालीन वर्षोंमें नीचे लिखे रुपये देनेको हो गये :—

| वर्ष | भारतको ब्रिटेनसे पाना |
|---|---|
| १९३९-४० | ४ (करोड़ रुपये) |
| १९४०-४१ | ५३ " |
| १९४१-४२ | १९४ " |
| १९४२-४३ | ३२५.५ " |
| १९४३-४४ | ३७७.९ " |
| १९४४-४५ | ४१०.८ " |
| १९४५-४६ | ३४७ " |
| १९४६-४७ | ४२ " |

इसके पश्चात् तो यह स्कीम ही हटा ली गयी क्योंकि युद्ध समाप्त ही हो चुका था और ब्रिटेनने इसकी कोई आवश्यकता न समझी।

उपर्युक्त बातोंके अतिरिक्त इस बन्दोबस्तीमें यह भी निश्चित किया गया था कि ब्रिटेनकी सरकार भारतको लड़ाईके सामान और अस्त्र-शस्त्र बिना मूल्यके भेजेगी। युद्धके समाप्त होनेके पूर्व तक ऐसी सामग्रियोंका मूल्य करीब ६० करोड़ तक पहुंच चुका था। यदि कभी ब्रिटेनके कामके लिये भारतकी सेना भारतके बाहर जायेगी तो उसकी ट्रेनिंगका व्यय, आवागमनका व्यय, खाने पीने, रहने आदिका व्यय ब्रिटेनकी सरकारको ही उठाना पड़ेगा। निस्सन्देह यह एक अच्छा बन्दोबस्त था।

जब जापान युद्धमें उतर पड़ा तो ब्रिटेनने इस बन्दोबस्तमें परिवर्तन करना चाहा। वास्तवमें ब्रिटेन इस बन्दोबस्तको पूरे-पूरे अपने पक्षमें लाना चाहता था। सन् १९४२ ईस्वीमें इसी उद्देश्यसे कई कमेटियां बैठीं परन्तु कोई परिवर्तन नहीं किये गये। यह भी अच्छा ही हुआ।

हां, एक बात मार्केकी यह हुई कि इस बन्दोबस्तके प्रारंभके साथ ही सुरक्षा संबंधी व्ययको दो भागोंमें बांट दिया गया। एक भागका नाम हुआ 'आय भाग' और दूसरेका हुआ 'संपत्तिभाग'। आय वाले भागको बजटमें ही शामिल रखा गया, परंतु संपत्ति वाले भागका काम उधार लेन-देनसे चलता था। सुरक्षा-संबंधी व्ययके इन दोनों भागोंपर अलग-अलग किस वर्षमें कितान व्यय हुआ, यह नीचेके आंकड़ोंसे प्रकट हो जायेगा :—

| वर्ष | आय भाग | सपत्ति भाग |
|---|---|---|
| १९३९-४० | ४९.५४ (क०रु०) | ... |
| १९४०-४१ | ७३.६ ( " ) | .... |
| १९४१-४२ | १०३-९ ( " ).... | |
| १९४२-४३ | २१४.६ ( " ). .... | |
| १९४३-४४ | २१४.४ (") | ५२.५ (क० रु० |
| २९४३-४४ | ३५८.४ ( ") | ३६.५ ( ") |
| १८४४-४५ | ३९५.५ (क०रु०) | |

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



६२.८ (क०रु०
१९४५–४६ ३७६ ( " ) १५ ( " )
१९४६–४७ २४० ( " ) १.५ (" )

इसके पश्चात् सन् १९४७–४८ से तो ये दोनो भाग फिर एक ही में मिला दिये गये हैं। और १९४७–४८ के सुरक्षा-व्यय के लिये १८८.७ करोड़ का अनुमान लगाया गया था। और फिर बादमें जो अन्तरिम बजट बना था उसमें ९२.७४ करोड़का अनुमान था।

स्वतन्त्र भारतमें

भारतीय सुरक्षाकी समस्याका तीसरा भाग अब प्रारंभ होता है। स्वतंत्र भारतमें यह समस्या कैसा रूप धारण करेगी यह विचारणीय विषय है। गत वर्ष यह अनुमान लगाया जाता था कि स्वतंत्र भारतमें अभी कुछ वर्षों तक २०० करोड़के लगभग इस मदपर व्यय हुआ करेंगे। परन्तु अब तो परिस्थिति ही सर्वथा भिन्न हो गयी है। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की दो अलग-अलग सरकारें बन गयी हैं। फलतः भारतीय सुरक्षा-व्यय में और भी अधिक वृद्धि होनेकी संभावना है। भारतीय सेनाएं अच्छे वेतनकी मांग उपस्थित कर रही है। उनका भी ध्यान रखना ही होगा। और फिर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान तथा हैदराबादके बीच जो यदा-कदा युद्धकी आशंका हो जाती है वह उपेक्षा करनेके योग्य नहीं है। तो बजटमें सुरक्षा-व्यय का अनुमान करते समय इन बातोंको भी विचारमें रखना होगा। स्पष्ट है कि सुरक्षा-व्यय अपना वृहद् आकार धारण कर लेगा।

अब यहां हमारे सामने भारतीय सुरक्षा समस्याका उग्र रूप आता है। एक ओर हम अनुमान लगाते हैं सुरक्षा-व्ययके वृहद् आकारका और दूसरी ओर है ७० प्रतिशत भारतीयोंको भर-पेट भोजन देने का कठिन प्रश्न। किया क्या जाय? क्या इतने लोगोंको भूखों छोड़ दिया जाय। और सुरक्षाकेलिये करोड़ों और अरबों रुपये व्यय किये जायं! और फिर अरबों रुपयोंके व्ययके पश्चात भी तो इस बातकी कुछ गारंटी नहीं कि हम अपनी स्वतंत्रताकी रक्षामें पूर्ण सफल हो सकेंगे। जर्मनी और जापानका उदाहरण हमारे सामने है। उन्होंने अपनी रक्षाके लिये क्या क्या न किया? परन्तु फिर भी आज वे ही देश परतंत्र हो चुके हैं।

अहिंसात्मक नीतिका स्थान

ऐसी दशामें कुछ लोग महात्मा जीकी अहिंसात्मक नीतिकी ओर ध्यान दिलाते हैं। सत्याग्रह और असहयोग — ये दोनों, महात्माजीकी अहिंसाके दो पैर हैं। महात्माजीकी अहिंसा मुख्य रूपसे किसी देशको स्वतंत्र बनानेमें ही सहायक होती है। भारत की स्वतंत्रताकी अहिंसात्मक लड़ाईका आदर्श हमारे सामने है ही। निश्चय ही महात्माजीकी अहिंसात्मक नीतिको इस दिशामें अभूतपूर्व सफलता मिली है। परन्तु जब कोई देश हमारे देशपर आक्रमण करे तो उस समय रक्षाके कार्यमें महात्माजीकी अहिंसा वर्तमान संसारमें सफल होगी-इसमें संदेह है।

अस्तु वाह्य आक्रमणोंके विरुद्ध अपनी रक्षा करनेमें इस नीतिका उपयोग नहीं किया जा सकता और न अभी तक कहीं हुआ ही है। हो सकता है भविष्यमें कभी यह भी संभव हो जाय। परन्तु भारतीय सुरक्षाका प्रश्न तो कभीका हमारे सामने आ चुका है। भविष्यके लिये किस प्रकार प्रतीक्षा की जाय? किन्तु आखिरकार किया क्या जाय? अहिंसात्मक नीति उपयोग ही में नहीं लायी जा सकती और सेनाओं द्वारा रक्षामें अत्यधिक खर्च ही पड़ता है।

"दुहूं ओर दुःख दारुन दाहू"।

सामूहिक रक्षा

आज-कलके कुछ विचारशील व्यक्तियोंने सुरक्षाकी समस्याका एक समाधान 'सामूहिक-रक्षा' के रूपमें दिया है। इसे कहीं-कहीं 'सम्मिलित-उद्योग-रक्षा' का नाम भी दिया गया है। दोनोंमें एक ही बात है। समय पड़नेपर कई देश मिलकर किसी की रक्षा किया करेंगे। इस प्रकार सुरक्षा-व्ययमें बहुत अधिक कमी हो जानेकी संभावना है। यह विचार कार्यान्वित किया जा सकता है। परन्तु यह तो अभी भविष्यके गर्भमें है कि इस सम्मिलित-उद्योग द्वारा रक्षामें कहां तक सफलता मिलेगी। फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि वर्तमान परिस्थितिमें अहिंसात्मक नीतिका प्रयोग एक दुस्तर कार्य है।

———

यह आश्चर्यजनक औषधि मलेरिया बुखारके लिये रामबाण है अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियास कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
Kasaya

KAVIRAJ N.N.SEN & CO. LP.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रजाकार दलकी उत्पत्ति एवं गठन

—श्री प्रेम कपूर वंचन

आज हम स्वतन्त्र हैं फिर भी हमने अपनी स्वतन्त्रताको समझनेमें अवश्य त्रुटि की। चारों ओर रस त्रुटिकी चर्चा हो रही है। चारों ओर घोर निराशाके भाव दिख रहे हैं। अभी तक पत्रोंमें काश्मीरकी चर्चा वेगसे चल रही थी। काश्मीर ही की तरह हैदराबादकी गति चल रही है। रन दोनों रियासतोंमें बहुत कुछ समानता है। काश्मीरकी जनता अहिन्दू है दूसरी ओर हैदराबादकी प्रजा हिन्दू। हैदराबादका शासक निजाम अहिन्दू है पर हैदराबादमें ८५ प्रतिशत जनता हिन्दू है रसके विपरीत निजामकी जो कार्य प्रणाली चल रही है उससे कहीं अधिक ३१ मार्चके (कासिम रिजवी) भाषणने चारो ओर उपद्रव खड़ा कर दिया है।

हैदराबाद आज अपने आस्तीनमें सर्पका पोषण कर रहा है। हैदराबादकी जनता आज कासिम रिजवीके जिहांद वाले भाषणसे कांप रही है। रजाकार दल वाले आज संगीनें ले बेधड़क हैदराबाद में घूम रहे हैं।

रजाकार दलकी उत्पत्ति मजलिस रत्तिहादुल मुसलमीनसे हुई है। रस "मुसलमीन" संघकी स्थापना सन १९२८ में निजामके तत्कालीन धार्मिक विभागके अध्यक्षने की थी।

आरम्भमें दस दलके कार्यकर्त्ता अपनी शक्ति हरिजनोंको मुसलमान बनानेमें लडाते थे। वे हरिजनोंको युवती या धनके चक्करमें डालकर मुसलमान बना लेते थे। दो वर्षोंमें ही १८००० हरिजनोंको तरह-तरहके लालच देकर मुसलमान बना लिया।

आजकल कासिम रिजवी रसी दल वालोंको रजाकार दलके नामसे घोषित कर नेतृत्व कर रहे हैं। कासिम रिजवीका जन्म युक्त प्रांतके तक मुसलिम परिवारमें हुआ था अब उनका निजाम सरकारसे बहुत घनिष्ट सम्बन्ध हो चुका है।

ग्रक पत्रमें प्रकाशित था कि निम्न तिथिसे रजाकार दल वाले भर्ती किये जाते हैं जो अत्यन्त ही ध्यान देने योग्य विषय है:-"मैं ठत्तिहादुल मुसलमीनके रजाकार दलका स्वयंसेवक प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं अपने दल और हैदराबादके निमित्त आहवान मिलने पर अपने आपको निछावर करूंगा। अल्लाकी सौगन्धके साथ मैं वायदा करता हूं कि दक्षिणमें मुसलिम सत्ताको सर्वोपरि रखनेके लियें आखीर तक लड़ता।""

रजाकारोंकी संख्या रस समय १००००० है। कासिम रिजवीने और पांच लाख स्वयंसेवककी भर्तीके लिये मांग की है। रजाकारोंके पास अस्त्र शस्त्रमें ६०००० तोड़ेदार बन्दूकें, १८ तीन हनी लारियां, ४० तक हनी लारियां तथा २२ जीपि मोटरें हैं बहुसंख्यक जातिके विरुद्ध अपना विषक्त प्रचार करनेके लिये ड्रक अंग्रेजी दैनिक, ७ उर्दू दैनिक और ६ उर्दू साप्ताहिक पत्र चलते हैं।

३१ मार्चके भाषण पर तथा प्रोफेसर ग्रक्सेनाके दिये गये विचारों पर भारतीय पार्लमेंटमें पण्डित जवाहरलाल नेहरूने जो कुछ कहा उससे हम बहुत सहमत हैं। ठीक दसके दूसरे ओर ११ अप्रैलको प्रकाशित समाचारमें अरुणा आसफ अलीके भाषण छपे थे। बम्बईमें भाषण देते हुग्र उन्होंने प्रश्न किया था कि मैं नेहरू सरकारसे जानाना चाहती हूं कि आखिर हैदराबादके विषयमें वे क्या करने जा रहे हैं। यदि उनके विचार मेरेसे सहमत न हुग्रे तो म हैदराबाद जाकर सशस्त्र आंदोलन करुंगी। सोंशलिस्ट पार्टीके प्रटास जयप्रकाश नारायणने भी रसी आशयका एक विचार किया है। पर यदि हम देखें तो विदित होगा कि निजाम सरकार कितनी चालाकीसे समय निकाल रही है। नित्य नये-नये व्यक्ति समझौतेकी बात लेकर नेहरूजीसे मिलने जाते हैं। लेकिन बात कोई सुधरती हुई नहीं प्रतीत होती। दूसरी ओर सरदार बल्लभ भाई पटेलके अस्वस्थ होनेके कारण कुछ ढिलाई चल रही है पर हैदराबादकी जनताके विरुद्ध यह खतरा दिनपर दिन बढता चला जा जा रहा है।

कारण रिजवी साहबके भाषणने यह सिद्धकर दिया है कि समाजमें एक उच्च स्थान पाने वाला व्यक्ति धर्मका वाना पहनकर कितना नीचसे नीच काम कर सकता है। जनता ठीक तरहसे जानती है कि भारतीय सरकारने आज ही नहीं वरन् बहुत समय पूर्व ही निजामसे रजाकार दलके बारेमें बातचीत की थी। और उन्होंने इस संस्थाके लिये दबाने को कहा था। इसी दलके सदस्योंने हैदराबादमें समय समयपर लूट-खसोट प्रारम्भकर दी थी। लेकिन निजाम सरकारने उसके विरुद्ध कोई भी कानून पास नहीं किया था। लेकिन आज कलमें कम्यूनिस्टोंकी चालें हैं जो इस दलको दिनपर दिन शक्तिशाली बनानेमें लगे हैं। और आजकल निजाम सरकार कार्लमार्क्सके कथनको सत्य करनेमें जुटा हुआ है। इस लिये रजाकार दलके स्वयंसेवक उस अन्तिम क्षण तक हाथोंमें संगीनें लिये चहलकदमी करते रहेंगे जब तक कि हैदराबाद एक स्वतंत्र हैदराबाद न बन जायेगा क्यों कि अभी वहां सरकारी कर्मचारी केवल ८० फीसदी मुसलमान हैं जब कि हैदराबाद में २५ प्रतिशत मुसलमान निवास करते हैं।

क्या इतना काफा नहीं है कि हम हैदराबादके विरुद्ध अपना हाथ उठा लें हैदराबादकी समस्या दिनपर दिन अपने हाथसे निकलती जा रही है क्योंकि हमें आंखोंके सामने वे शब्द नाच रहे हैं जिन्हें कासिम रिजवीने अपने भाषणमें कहे थे। वह चीख कर कहता है-"हम युद्ध रूपसे प्रस्तुत हैं हमारे पास लड़ाईके

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साधन हैं जबकि भारतीय संघ हमारे बीच में आयेगा हम दिखला देंगे कि हमारे साथ भारतके वे साढे चार करोड़ मुसलमान ही नहीं वरन् १० करोड़ पाकिस्तानके मुसलमानोंके हाथ संगीनोंसे चिपके हैं जो अवसर आनेपर हमारे साथ उभड़ पड़ेंगे।" वह कहता जा रहा था" एक हिन्दू जो काफिर है, जो पत्थरों और बन्दरोंकी पूजा करता है, जो गायका मांस और रक्त पीता पीता है, अपने धर्मकी आड़में वह जंगली पशु हमपर राज्य करना चाहता है।"

कितने स्वप्निल संसारमें वह मजलिसका नेतृत्व करने वाला घूम रहा है। उसकी आंखें निजामके खजानोंकी चमक से अंधी हो उठी हैं। वह अपने भाषणमें बकता है और कहता है कि पण्डित नेहरू एक मुट्ठी भर फ्रांटियरसे हमला करने वालोंको रोकनेमें सफल न हो सके और अन्तमें उन्होंने मुसलमानोंको सहायताके लिये पुकारा और कहा कि मुसलमानो एक हाथमें कुरान और एकमें तलवार लेकर बढ़ चलो दुश्मनका सत्यानाशकर दो और शांतिका इस्लाम साम्राज्यको कायम रखो वह कहता गया शांतिका इस्लाम केवल हैदराबादमें ही नहीं मैं सारे भारतवर्षमें बनाऊंगा।"

ध्यान रहे यह सब बकने वाला उस संस्थाका पूज्य गुरु हो चुका है, वह लुटेरा डाकू है।

हैदराबादके उक्तपर्यालोचनके पश्चात हम इस निष्कर्षपर पहुंचते हैं कि निजाम हैदराबादको सर्वप्रथम अपनी और तत्पश्चात मुसलमानोंकी रियासत समझते हैं। उन्होंने स्वयंके लिये एक भक्षक तैयार कर लिया। उन्हें याद रखना चाहिये उसी धार्मिकताके चक्करमें महान शक्ति हर हिटलरको सत्यानाशकर दिया। उसकी वंशावली समाप्त हो गयी। उसी प्रकार निजामने भी अपनी कब्रके गड्ढे खोद डाले हैं जिसमें अवश्य ही यदि हैदराबाद अपनी नीति नहीं बदलता तो आशफजाई वंशकी कब्र बनेगी।

# अन्तर्राष्ट्रीय

## फिलस्तीनका भाग्य

जब देखा गया कि फिलस्तीनका अरब राज्य और यहूदी राज्यमें बटवारा करना असंभव है, क्योंकि इस प्रश्नपर फिलस्तीन वाले और सिक्यूरिटी कौंसिलके सदस्य भी एकमत नहीं हो सके तब फिलस्तीनकी समस्याके समाधानके लिये कोई दूसरा रास्ता निकालना आवश्यक हो गया। अमेरिकाने यह सुझाव रखा है कि जब तक फिलस्तीनके मामलेमें कोई स्थायी समझौता न हो जाये तब तक फिलस्तीन में ट्रस्टी शासन कायम किया जाये। इस योजनाके अनुसार फिलस्तीनका शासन एक गवर्नर जेनरलके हाथमें रहेगा, जिसकी सहायताके लिये एक मन्त्रिमण्डल और दो परिषदोंकी एक व्यवस्थापिका रहेगी। गवर्नर जेनरलकी नियुक्ति तीन वर्षके लिये होगी। यदि स्थानीय शक्ति अपर्याप्त समझी जायेगी तो गवर्नर जेनरल अन्य सरकारोंसे जिनके नाम बादमें स्थिर किये जायेंगे, सैनिक सहायता ले सकता है। यहूदियों और अरबोंको स्वीकार योग्य सरकारकी योजना व्यवस्थापिका द्वारा बन जाते ही ट्रस्टी शासन समाप्त हो जायेगा। अमेरिका इस योजनाको कार्यान्वित करनेके लिये अपनी सैनिक शक्ति दे सकता है बशर्ते कि बादमें नामांकित अन्य राज्य भी ऐसा ही करनेको तैयार हों। अकेले अपने बल पर वह इस योजनासे कार्यान्वित करनेको तैयार नहीं है। यह बात किसीसे छिपी नहीं है कि विभाजनके प्रस्तावके अनुसार काम नहीं हो सकां क्योंकि फिलस्तीनके और बाहर के अरब इसे रोकनेमें मरने मारनेको तैयार थे। यहूदियोंने जो रुख अख्तियार किया वह भी कम हिंसात्मक नहीं था। और २९ नवम्बर १९४७ से तो फिलस्तीन एक प्रकारसे युद्धस्थल बन रहा है। रूस अमेरिकाकी ट्रस्टी शासन योजनाका विरोधी है और कहा तो यहां तक जाने लगा है कि फिलस्तीनमें यहूदियोंके साथ मिलकर रूसी सैनिक भी लड़ रहे हैं। सोवियट प्रतिनिधि ग्रोमिको अबतक विभाजनके समर्थक हैं और उनका अभियोग है कि कि २९ नवम्बरको राष्ट्र संघ द्वारा पास किये गये फिलस्तीनके बटवारेके प्रस्ताव को जानबूझकर कार्यान्वित नहीं किया जा रहा है और अब दूसरी योजना सामने लायी जा रही है जिससे न तो फिलस्तीन निवासियोंका लाभ होगा और न अन्तर्राष्ट्रीय शांति व रक्षाका उद्देश्य ही पूरा होगा। अतः रूस इसका विरोधी और विभाजनका समर्थक है। ब्रिटेन फिलस्तीनके मामलेमें अब वैराग्य लेना चाहता है। अमेरिकाने फिलस्तीनमें ट्रस्टी शासन कायम करनेके लिये ब्रिटेन और फ्रांससे उत्तरदायित्व ग्रहण करनेका अनुरोध किया है। किन्तु ब्रिटेन इसके लिये तैयार

---

**उक्त विषय भारतीय सरकारके लिये अत्यन्त ही जटिल प्रश्न बन चुका है। उस प्रश्नका हल केवल एक ही रूपमें हो सकता है कि पूर्ण शांतिसे निजाम सरकारपर प्रतिबन्ध लगाये जांय और उन्हें कुछ भी समय सोचनेका न दिया जाय अन्यथा चुपचाप रह जानेसे मूल्य अधिक देना पड़ेगा।**

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं है। वह फिलस्तीनमें अकेले या किसी के सहयोगमें ऐसी कोई नीति कार्यान्वित करनेको तैयार नहीं है जिसे अरब और यहूदी दोनों समर्थन न करते हों। ब्रिटिश उपनिवेश सचिव मि० क्रीक जोन्सने फिलस्तीन-समस्यापर बोलते हुए संयुक्त राष्ट्र संघकी राजनीतिक समितिमें यह बिलकुल स्पष्टकर दिया है कि १५ मईको फिलस्तीनसे अपना शासन उत्तरदायित्व हटा लेनेका ब्रिटेनका संकल्प अचल है। इस तरह यह नितान्त आवश्यक हो गया है कि ब्रिटेनके हटनेके दिनसे फिलस्तीन में कानून और व्यवस्था, जीवन और संपत्ति की रक्षा एवं शासन व्यवस्थाका केन्द्रीय उत्तरदायित्व कौन ग्रहण करेगा, यह निश्चय हो जाना चाहिये। अब अधिक समय भी नहीं रह गया। मि० क्रीक जोन्सका यह कहना बिलकुल सत्य है कि सर्वप्रथम आवश्यक और महत्वपूर्ण यह है कि फिलस्तीनमें चलने वाला युद्ध बन्द हो। यह निस्संदेह है कि फिलस्तीनसे ब्रिटेनके हटनेके पूर्व यदि कोई कार्रवाई व्यवस्था न हुई तो देशको अराजकता और आत्मघाती युद्धमें लिप्त हो जानेका पूरा खतरा है। कहा नहीं जा सकता कि फिलस्तीनके भाग्यमें क्या बदा है। राजनीतिक कमेटी की कार्यवाहीसे यह संकेत मिलता है कि ब्रिटेन और फ्रांसके अमेरिकाकी योजनाके पक्षमें हो जानेकी संभावना है। यह चर्चा है कि फिलस्तीनमें त्रिशक्ति शासन कायम करनेके सम्बन्धमें वाशिंगटन, लन्दन और पेरिसके बीचमें विचार विनिमय हो रहा है। रायटरका राजनीतिक संवाददाता कहता है कि प्रधान मन्त्री मि० एटली ने फील्ड मार्शल लार्ड मौण्ड गोमरीसे फिलस्तीनके लिये ट्रस्टी शासनकी अमेरिकन योजनापर परामर्श किया है। किन्तु यह स्पष्ट है कि रूस ऐसी किसी योजनाका अवश्य विरोध करेगा और यदि यह समाचार सत्य है कि रूसी सैनिक यहूदियोंकी मदद कर रहे हैं तो रूसके इस विरोधका रूप क्या होगा यह सहज ही समझा जा सकता है।

## इटलीका चुनाव

इटालीके साधारण निर्वाचनमें ईसाई डेमाक्रेट पार्टी, जिसके हाथमें इस समय देशके शासनकी बागडोर है, विजयी हुई और उसे चुनावमें पड़े कुल वोटोंमें ४७ प्रतिशत वोट मिले। इसके मुकाबलेमें सोशलिस्टों और कम्यूनिस्टोंके संयुक्त संगठन लोकप्रिय मोर्चाको ३१ प्रतिशत, सोशलिस्ट यूनिटीको ७ प्रतिशत, नेशनल ब्लाकको ६ प्रतिशत तथा रिपब्लिकनों और मोनार्किस्ट नेशनल पार्टीको दो दो प्रतिशत वोट मिले। इटालीकी पार्लमेण्ट दो परिषदों—सीनेट और चैम्बर—के रूपमें है। ईसाई डेमोक्रेटोंकी यह विजय सम्पूर्ण यूरोपके लिये खास महत्व रखती है। इसकी पहली प्रतिक्रिया यह होगी कि रूसके खिलाफ पश्चिमी यूरोप को एक संघमें संगठित करनेका जो प्रयास अमेरिका ब्रिटेन-और फ्रांस कर रहे हैं उसे बल मिलेगा और इस परिणामसे प्रोत्साहित होकर अमेरिका अन्य देशोंके मतदाताओंको प्रभावित करनेके लिये अधिकसे अधिक अपनी शक्ति लगायेगा। यद्यपि ईसाई डेमाक्रेट इस चुनावमें देशकी सबसे बड़ी पार्टीके रूपमें आये हैं और कम्यूनिस्ट विरोधी अन्य दक्षिण पन्थी प्रतिक्रियाशील दलोंके साथ मिलकर वे मजबूत सरकार संगठित कर सकेंगे किन्तु देशमें राजनीतिक शांति हो सकेगी यह नहीं कहा जा सकता क्योंकि कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट जो चुनावमें दूसरे नम्बरमें आये हैं चुप होकर बैठने वाले नहीं हैं। यद्यपि कम्यूनिस्ट नेता पालमीलो तोगलियत्तीने यह आश्वासन दिया है कि "हमारी पार्टी हिंसाको प्रोत्साहन नहीं देना चाहती है।" किन्तु इसके साथ साथ उनका यह कहना कि "आधुनिक समयमें किसी राष्ट्रमें इस तरहका वैदेशिक हस्तक्षेप नहीं देखा गया कि वह निर्वाचकोंकी इच्छाओंको विकृत कर दें।" इससे यह स्पष्ट है कि इटालियन कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट अपने देशको अमेरिकाके डालरके प्रभावसे मुक्त करनेमें कोई बात उठा नहीं रखेंगे और तब देशमें राजनीतिक तथा आर्थिक असंतोष और अशांति अवश्यम्भावी है।

## मार्शल योजनाका परिणाम युद्ध

एक रूसी प्रवक्ताने बतलाया है कि मार्शल योजनाका परिणाम पश्चिम यूरोपका विभाजन होगा और विभाजन यूरोपको युद्धाग्निमें झोंक देगा।

मार्शल योजनाके अन्तर्गत १६ राष्ट्रों को सहायता दी जा रही है। उनका यह विचार प्रतिदिन ही उग्रतर ही होता जा रहा है कि यूरोप अथवा संसारकी शांति अमेरिकाके डालर द्वारा ही संभव है। पर दरअसल यह है कि मार्शल योजनाके द्वारा पश्चिम यूरोपके आर्थिक साधनोंको निकम्मा बना दिया जायगा।

## पाकिस्तान बैंककी स्थापना

१ जुलाईसे पाकिस्तान सरकारकी बैंक उसकी कागजी मुद्रा सार्वजनिक ऋण तथा विनिमयका नियन्त्रण करेगी। इस बैंकका नाम सेण्ट्रल बैंक आफ पाकिस्तान' होगा। यह बैंक उन समस्त कार्योंका भार सम्भालेगी जो आज रिजर्व बैंक कर रही है। सरकार इस बैंकमें आरंभिक पूंजी ३ करोड़ की रखेगी। ताकि विश्वाससे सन्तोषप्रद रीतिसे चल सके।

## बर्मामें भारतीय नोट बंद

सरकारी विज्ञप्तिके अनुसार पता चला है कि बर्मामें १ जुलाई १९४८ से भारतीय मुद्रा नोटोंका चलना बन्द हो जायेगा।

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वमित्र

सम्पादक--
देवदत्त मिश्र

वर्ष--३१ संख्या १५ ता० ५ मई १९४८ MAY 5, 1948. मूल्य =) वार्षिक ६)


## बापू और हिन्दुत्व

गांधी हिंदू जनता का दुश्मन भारी ,
वह करता है तुरुकों की सदा तरफदारी,
उसका प्रभाव हिंदुत्व के लिये भयकारी,
यह बात घुसी
कुछ घूमे-उल्टे
माथोंमें ।

हिंदुत्व दिव्यतम बापू जी में व्यक्त हुआ,
संसार उसी के कारण उनका भक्त हुआ,
हिंदू आदर्शों के ही रहकर अनुयायी,
वे आज चमकते
विश्व-जनों की
पांतों में ।

जिसने मानवता के हित इतना दुख झेला,
वह कर सकता था हिंदूपन की अवहेला ?
हिंदुत्व शब्द ह मानवता का पर्यायी ,
हिंदुत्व सुरक्षित
था बापू के
हाथोंमें ।

(बच्चनजी बापूजीके सम्बन्धमें दो रचनाएं तैयार कर रहे हैं। 'सूतकी माला' --इसमें १०९ गीत बलिदानकी घटना पर है। 'खादीके फूल', में गांधीजी की अस्सी बरसकी अवस्थाके अनुरूप ८० गीत हैं (१६ श्रीसुमित्रानन्दन पन्त के और ६४ बच्चनजीके ) ये श्रद्धांजलियां है। उन में यह कविता 'खादीके फूलसे' शीर्षक रचनाका एक फूल है। स० वि० )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—:o::o:o—

मैं धूल तुम्हारे चरणों की !
अस्तित्व बताने को तेरा
मैं छाया बन साकार हुई।
सम्बन्ध जताने को तेरा
मैं माया का आकार हुई।
जग है निर्मित जिन सत्योंसे मैं भूल उन्हीं उपकरणोंकी ।!
जग आदि काल से गाता
तुम हो अक्षर , तुम हो अनन्त।
तेरी सत्तासे व्याप्त अरे
यह धरा, गगन औ दिक्-दिगन्त।
तुम हो महान गाती रहती मैं पंक्ति गेय उद्धरणों की !!
सौंदर्य-राशि तुम सुन्दरतन
इसका कैसे जग गान करे।
आकर्षित हो लूट-लुट कर वह
कैसे अपना बलिदान करे।
बन बता रही सौंदर्य-मूर्त्ति तेरे सारे आभरणों की ! !

देवनाथ पाण्डेय 'रसाल' बी० ए०, एल० एल० बी

# देखूंगा मैं स्वर्ण-सबेरा !

मंजिल-नदका दूर किनारा
मनका पंछी उड़ता जाता , आशाका ले एक सहारा
अंधकार की काली चादर
जग को गोदी में लिपटाये
पूछ रही , जलते तारों से
जलने में कैसे सुख पाये
मुस्काते तारे यों कहते , देखूंगा मैं स्वर्ण सवेरा
राह न रोक सकेगी बाधा , दर्द हमें जब लगता प्यारा
मंजिल नद का दूर किनारा
रजनी के नयनों से पीड़ा
धरती पर गिरती शबनम बन
असह अभाव दुःखों की ज्वाला
अन्तर में भरती सूनापन
खोज रही मुस्कान अधर की , छूट गया वह चांद दुलारा
मंजिल-नद का दूर किनारा
जीवन-बन की पगडंडी पर
कांटोंको नित चुनते चुनते
आंधी के झोंके से , धूमिल
कितने चित्र बिगड़ते,बनते
थके चरण मेरे मानव के , किन्तु न मन का पंछी हारा
मंजिल नद का दूर किनारा

—विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त

मधुकी तलख, गरलकी तलछट दोनों ही उद्दाम 'सुनयने
मधु पीनें वाले लाखों हैं, विष विरलै ही पी पाते हैं
किन्तु अमर भी हो जाते वे विष पी कर जो जी जाते हैं
और इसीसे मधुके सन्मुख विषके दूने दाम सुनयने
दोनोंही उद्दाम..

गली गली मधुके विक्रेता, घर घर मधु पीन वाले हैं
आंखमूंद कर पी लेते, ऐसे कितने मतवाले हैं
क्यों न अंगुलियोंपर गिनकरके देखो उनका नाम सुनयने ?
दोनोंही उद्दाम सुनयने

मधु पथमें ही भटकाता है, विष मंजिल तक पहुंचाता है
सुनो इसीसे मधुसे बढ़ कर इस विषका ही निर्माता है
मधु पीकर तृष्णा बढ़ती है, विष पीना निष्काम सुनयने
दोनों ही उद्दाम सुनयन

मधु जीवनकी प्रथम पंक्ति तो विष उसका आखिरी चरण है
मधुकी जीर्ण शीर्ण पुस्तकमें विष ही एक नया प्रकरण है
मधु का तन सुन्दर है केवल, विषका मन अभिराम सुनयने
दोनोंही उद्दाम सुनयने

राजकुमार पाण्डेय 'कुमार'

# हो सकता कैसे साथ सखे

तुम सुमनों पर पग धरते हो,
हम राह कटीली चलते हैं ।
तुम अमृतके अन्वेषी हो,
हम विषसे नहीं विचलते हैं
हो सकता कैसे साथ सखे ॥
तुम विघ्न बिलोक पिछड़ते हो
हम उन्हें सहर्ष मसलते हैं ।
तुम मन्थर गतिसे बढ़ते हो,
हम सिंह समान उछलते हैं ।
हो सकता कैसे साथ सखे ॥
तुम कोमलतासे भरे हुए,
हम बज्र सरीखे हैं कठोर ।
तुम पग पग कर डग चलते हो,
मम पग पृथ्वीका ओर छोर
हो सकता कैसे साथ सखे ॥
तुम मधुर रागके गायक हो,
हम करुण कहानी कहते हैं ।
तुम केवल सुखके भोगी हो
हम दारुण दुख भी सहते हैं ।
हो सकता कैसे साथ सखे ॥

श्री रमाशंकर दीक्षित 'रमेश'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराहत बस जिनक मनमाहीं ।
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

विश्वमित्र

# फिलस्तीन ।

ब्रिटिश पार्लमेंट द्वारा स्वीकृत फिलस्तीन कानूनपर सम्राटके हस्ताक्षर हो गये । इस कानूनके अनुसार फिलस्तीन में ब्रिटिश शासन १५ मईसे समाप्त हो जायेगा । अमेरिकाने यह प्रस्ताव रखा है कि ब्रिटिश शासनकी जगह १६ मईसे संयुक्त राष्ट्र संघको फिलस्तीनमें शासन-व्यवस्थाका उत्तरदायित्व उस समय तक ग्रहण करना चाहिये जब तक समस्या-का कोई अन्तिम समाधान न हो जाय । यह सुझाव भी रखा गया है कि जेरूसलममें शान्ति रखनेके लिये अन्तर्राष्ट्रीय सेना भेजी जाय । यहूदी इस योजनाके पक्षमें हैं, किन्तु अरब इसके विरोधी हैं ।

फिलस्तीनमें यहूदियों और अरबोंके बीचमें जो संघर्ष चल रहा है उसे बन्द करनेके लिये संयुक्त राष्ट्र-संघकी ओरसे एक युद्ध-विराम-संधि योजना तैयार की गयी थी किन्तु अभी तक इसे भी सफलता नहीं मिली । सिक्यूरिटी कौंसिल द्वारा नियक्त कमीशन युद्ध विराम-संधिकी योजनाको कार्यान्वित कर सकनेमें असफल रहा । उधर ट्रांसजोरडन सरकार यहूदियोंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर चुकी है । इस तरह यह प्रथम अरब राज्य है जिसने युद्धकी दिशामें कदम आगे रखा है । ट्रांसजोर्डनकी राजधानी अम्मानमें सिरिया, लेबनन, ट्रांसजोर्डन और ईराक के बीचमें एक समझौता हुआ है जिसका उद्देश्य है फिलस्तीनमें एक मोर्चा खोलना और यहूदियोंपर आक्रमणके लिये ४० हजार सैनिक इस मामले

ट्रांसजोर्डनके शाह अब्दुल्लाने यह घोषणा की है कि यदि फिलस्तीनके यहूदी मेरी सलाह को मानकर अरब राज्यके नागरिककी तरह रहनेको तैयार न होंगे तो मुझे फिलस्तीनको मुक्त करनेकी प्रसन्नता और गौरव प्राप्त होगा । मेरी सेना अरब सेना है और मैं अपनी मर्जीके मुताबिक चलूंगा ।

अरब संघके संदस्य राज्य फिलस्तीन पर चढ़ाईके लिये कमर कस रहे हैं । ईराकके न्याय मंत्री नोजिब अल शबीका कहना है कि फिलस्तीनका युद्ध जीवन और मरणका युद्ध है और इसमें भाग लेनेवाले अरबोंको हर तरहकी मदद दी जायेगी । फिलस्तीनसे ब्रिटिश सेनाके हटते ही ट्रांसजोर्डन, सिरिया, लेबनान और ईराककी सेनाएं फिलस्तीनपर चढ़ेंगी और मिसकी सेनाएं फ्रांटियरपर चौकसी करेंगी । ट्रांसजोर्डनका शाह अब्दुल्ला फिलस्तीनमें घुसनेवाली सेनाओंका नेतृत्व करेगा और ऐसा समझा जाता है कि रक्षा-कार्यके लिये ब्रिटिश कमाण्डमें जो अरब सहायक सेना फिल-स्तीनमें है, आक्रमणका आरम्भ वही करेगी । फिलस्तीनपर चढ़ाईकी योजना और नकशा बनकर तैयार हो गया है । अंगरेज शासक इस मामलेमें भी न्यायका नाटक कर रहे हैं । भीतर ही भीतर अरबोंको अंगरेज पूरी मदद पहुंचा रहे हैं । फिलस्तीनके विभिन्न भागोंसे रिवालवर लेकर चलने-वाले अरब अब भी गिरफ्तार किये जा रहे हैं लेकिन टेलअबीबको अछूता छोड़ दिया गया है और उधरसे समरियामें बेखटके सेनाओंका जमाव हो रहा है । यह देखते हुए भी कि अरब राज्य १५ मईसे फिलस्तीनपर चढ़ाईके लिए तैयारी कर रहे हैं, ब्रिटिश शासकोंकी यह उदासीनता है, या धूर्तता है । इसी तरह हैफापर यहूदियोंने आक्रमण किया, किन्तु ब्रिटिश सेनाने उसका भी विरोध नहीं किया । जेरूसलमकी सड़कोंपर युद्धमें भी अंगरेजोंने कोई हिस्सा नहीं लिया । यह संभावना समझ कर कि ट्रांसजोर्डनसे अरब सहायताका मार्ग अवरुद्ध करनेके इरादेसे यहूदी अलामीन पुल उड़ा दे सकते हैं अंजरेजोंने ट्रांसजोर्डनकी अरब-सहायक सेनाको सरहदकी रक्षाके लिये आमंत्रित किया । स्पष्टतया अंगरेजोंका यह भाव देखनेमें अरबोंके प्रति अनूकूल दिखा देता है । किन्तु वस्तुतः ये धूर्तराज ऐसी स्थिति उत्पन्न करना चाहते हैं कि अंग-रेजोंके हटते ही फिलस्तीनमें अराजकता फैल जाये और अरब तथा यहूदी लड़कर मर मिटें । यद्यपि दिखाया यह जा रहा है कि अरब और यहूदियोंके बीचमें जो पाशविक काण्ड हो रहे हैं, उनको रोक सकना असंभव समझकर अंगरेजोंके सामने तटस्थ रहनेके सिवा दूसरा रास्ता नहीं है, किन्तु उनकी यह तटस्थता एक दलको इतना मौका दे रही है कि वह हर तरह से युद्धकी स्थिति उत्पन्न कर सकनेमें सक्षम हो ।

राष्ट्र संघ भी इसी रास्तेपर चल रहा है । स्थिति बिगड़ती चली जा रही है । फिलस्तीनमें रक्तकी नदी बहानेकी जो स्थिति आ गयी है उसे कोई रोक सकता था तो वह राष्ट्र संघ था । किन्तु राष्ट्र-संघ इतना दुर्बल और अक्षम है कि उसमें कोई निर्णायक कदम उठानेका साहस ही नहीं है ।

# भीम भाई बोले

भारत सरकारके कानून सदस्य डा० भीमराव अम्बेदकर हिन्दुस्तानके उन कतिपय प्रतिभाशाली, कानूनके पण्डित व्यक्तियोंमें हैं जिन्होंने हमेशा देशके दुर्भाग्य से लाभ उठानेमें कभी जरा भी इतस्ततः नहीं किया । अंगरेजी शासनकालमें ब्रिटिश शासकोंको हिन्दुओंके भीतर मि० जिन्ना के एक प्रतिरूपकी आवश्यकता महसूस हुई और अपनी इस आवश्यकताके लिये उन्होंने डा० अम्बेडकरको खोज निकाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक दिनमें यह अंगरेजोंकी खोज भारत के प्रायः सात करोड़ अस्पृश्य कहे जाने वाले हिन्दुओंका नेता—स्वयंभू नेता बन-बैठा। उसी दिनसे मुस्लिम लीगके साथ मिलकर इस डाक्टरने कांग्रेस और देशके हितोंके विरोधमें अंगरेजोंका साथ देना आरम्भ कर दिया। पाकिस्तान आन्दोलनको डा० अम्बेडकरने खुलकर सहायता दी और यदि महात्मा गांधीका प्रभाव न होता तो ब्रिटिश सरकारकी शहसे आज हिन्दुस्तान के भीतर एक दूसरा पाकिस्तान दिखायी देता होता।

मुस्लिम लीगकी स्थिति मजबूत बनाने के लिये तत्कालीन टोरी सरकारको डा० अम्बेडकर जैसे जयचन्द हिन्दूकी सहायता की आवश्यकता थी और उसका जब यह काम हो गया तो डा० अम्बेडकरका महत्व भी उसकी दृष्टिमें समाप्त हो गया। भारत से विदा होते समय डा० अम्बेडकरको ब्रिटिश सरकारने राजनीतिसे दूधकी मक्खीकी तरह निकाल बाहर कर दिया। इस बातसे अंगरेजोंके विरुद्ध डाक्टरके मनमें क्षोभ होना स्वाभाविक है। कांग्रेसके हाथमें जब सत्ता आयी तो उसने अतीतकी सब बातें भूलकर सहज उदारतावश डा० अम्बेडकरको अपनी प्रतिभाका सदुपयोग राष्ट्र हितार्थ करनेका एक अवसर दिया और मन्त्रिमण्डलमें शामिल कर लिया। किन्तु सातवें आकाशमें बैठानेका प्रलोभन देकर जिसे अचानक एक दिन कपोल कल्पित राजा बना दिया गया हो उसे समाज और राष्ट्रकी सेवा करनेके सुयोगसे कैसे संतोष हो सकता है? निस्पृह और निस्वार्थ सेवाका नैसर्गिक आनन्द उन लोलुपोंको नहीं सन्तुष्ट कर सकता जो अपने व्यक्तित्व के विकास के लिये देशके स्वार्थोंको भी बेच दे सकते हैं। डा० अम्बेडकर भी उन्हींमें एक हैं और इसलिये वे अपनी वर्तमान स्थितिसे असंतुष्ट है। यह स्वभाविक है।

दूसरी तरफ पद लोलुपता डा० अम्बेडकरमें इतनी प्रबल है कि जब जब इनके सामने टुकड़े फेंके गये इन्होंने झपटकर उनका स्वागत किया। यही वजह है कि ब्रिटिश सरकारने जब वायसरायकी शासन समितिमें इनको स्थान दिया तो ये परिगणित जातियोंका नेतृत्व छोड़ फौरन वहां पहुंच गये। कांग्रेसके निमन्त्रणको भी उसी तरह स्वीकार करनेके प्रलोभनको नहीं रोक सके। उस दिन लखनऊमें यह कैफियत देते हुए कि कांग्रेस सरकारमें क्यों शामिल हुए डा० अम्बेडकरने जो वक्तव्य दिया है वह इनकी पदलोलुपताका चरम निदर्शन है। आप कहते हैं कि परिगणित जातियोंके साथ जो अन्याय और अत्याचार हो रहा है उसे रोकनेके लिये सरकारके भीतर रहना आवश्यक है। यदि वे अकेले सरकार के भीतर रहकर हरिजनोंके साथ होने वाले अन्यायको रोक सकते हैं तो कांग्रेस संगठनके भीतर सात करोड़ हरिजन केवल अपने ही प्रति नहीं बल्कि तमाम अन्यायोंका हमेशाके लिये अन्त कराने वाली एक जबर्दस्त शक्ति बन जा सकते हैं। किन्तु इस तथ्यको महसूस करना डा० अम्बेडकरको अभीष्ट नहीं है क्यों कि हरिजनोंको हिन्दुओं से पृथक करके दूसरे जिन्ना बननेके प्रलोभनको डा० अम्बेडकर अभी तक छोड़ नहीं सके। इसीलिये वे अब एक तीसरा दल बनानेकी उधेड़बुनमें हैं। समाजवादियों के कांग्रेससे हटनेकी स्थितिने उनके सामने फिर ऐन्द्रजालिक माया खड़ी कर दी है और वे यह समझते हैं कि "जलते हुए कांग्रेस घरमें' दो बोतल केरासिन तेल उड़ालनेका फिर एक बार सुयोग हाथ आया है तो क्यों न इससे लाभ उठाया जाये?

डा० अम्बेडकर यदि समझते हैं कि हरिजनोंको कांग्रेससरकारसे न्याय नहीं मिल सकता और जब युक्तप्रांतकी पन्त सरकार पर इस अन्यायका प्रत्यक्ष अभियोग लगाकर उन्होंने यह सिद्ध करनेकी कोशिश की है कि यह तथ्य है तब उनका एक क्षण भी कांग्रेस सरकारमें बने रहना सिद्धांतके साथ व्यभिचार है। पर नेतृत्वके लिये आवश्यक त्याग और तपस्याकी शक्तिका अभाव होनेके कारण वे जानते हैं कि कांग्रेस और सोशलिस्टोंके बीचमें एक तीसरी पार्टीका संगठन कर सकना उनके लिये असंभव है। इसीसे वे प्राप्त पदसे असन्तुष्ट होते हुए भी उससे भी हाथ धो बैठनेके भयसे उससे चिपके हुए हैं। डा० अम्बेडकरकी तीसरी पार्टी बनानेकी घोषणाके पीछे वास्तविकताका भाग कम और भारत सरकारमें अपना स्थान सुरक्षित बनाये रहनेकी भावना अधिक है। वे जानते हैं कि हरिजन उनके बहकावेमें आनेको नहीं हैं। पर इस तरहकी कुचेष्टासे खुराफात तो पैदा ही किया जा सकता है। कोई भी सरकार अनावश्यक खुराफातसे बचना चाहेगी। डा० अम्बेडकर यदि यह समझते हों कि कमसे कम इस खुराफातसे बचनेके लिये सरकार उनको मुक्त करना नहीं चाहेगी और इस तरह उनका स्थान सरकारमें सुरक्षित रहेगा तो उनके जैसे पदलोलुपका यह समझना अस्वाभाविक नहीं है। अवश्य ही यह रास्ता बहुत निरापद नहीं है, किन्तु महत्वाकांक्षी पदलोलुप-पर नेतृत्वके लिये आवश्यक गुणोंसे शून्य-व्यक्ति थोथी धमकियोंके बल पर ही जब तक संभव है, जीते हैं। इसलिये भीम भाई की इस घोषणाको इससे अधिक महत्व नहीं दिया जाना चाहिये।

## राष्ट्रसंघ और भारत—

काश्मीरके प्रश्न पर सिक्यूरिटी कौंसिलमें भारत और पाकिस्तानके झगड़े को अमेरिका और ब्रिटेनने जो रंग रूप दिया है, उसके पीछे छिपी मनोवृत्ति विचारणीय है। रूस इस मामलेमें बिलकुल तटस्थ रहा। बहुमतसे छैराष्ट्र योजनाको स्वीकार करके सिक्यूरिटी कौंसिलने भारतीय प्रतिनिधि श्री गोपाल स्वामी आयंगरके शब्दों में अभियोगीसे भारतको अभियुक्त बना दिया। हमारा तो पहले ही से विश्वास था

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अन्तर्राष्ट्रीय

## अफ्रीकामें गोलमेज सम्मेलन

ट्रांसवाल भारतीय कांग्रेसके प्रांतीय अधिवेशनमें यह निश्चय किया गया है कि आपसी समझौतेके लिये दक्षिणी अफ्रीका की सरकार, भारत सरकार तथा पाकिस्तान सरकारका एक गोलमेज सम्मेलन बुलाया जाय।

गोलमेजके संबंधमें कहा गया है कि तीनों सरकारकी ओरसे सम्मानपूर्ण समझौते के लिये इसे आवश्यक समझा जाय। कांग्रेस को विश्वास है कि अफ्रिकन सरकार इस संबंधमें भारत और पाकिस्तानकी सरकारोंसे अवश्य बातचीत करेगी।

सम्मेलनकी चर्चा करते हुए संयुक्त मंत्रियोंने कहा है कि गत २२ महीनोंका सत्याग्रह आंदोलन एक महत्वपूर्ण परिवर्त्तन ले आया है। अफ्रीकन सरकार तथा विशेष कर जेनरल स्टमस यह नहीं समझते कि इस गोलमेज सम्मेलनसे अफ्रीकाके घरेलू मामले को हानि पहुंचेगी।

---

कि संयुक्त राष्ट्र संघसे किसी मामलेमें न्यायकी आशा करना अपने साथ अन्याय करना है। हम सीलोनस्थ भारतके हाई कमिश्नर श्री वी० वी० गिरिके इस प्रश्नसे पूर्णतया सहमत हैं कि "क्या भारतके संयुक्त राष्ट्र संघसे हट आनेका समय अभी नहीं आया।" न्यायका नाटक संयुक्त राष्ट्र संघमें यूनान, हिन्देशिया, हिन्दचीन, दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयोंके सम्बन्धमें देख कर भी न्याय पानेकी हमारी भूख नहीं मिटी थी। इसीसे हम काश्मीरके मामलेको राष्ट्र संघके सामने ले गये। चलो अच्छा ही हुआ। भ्रम और भ्रांति मिट गयी। यह भी सिद्ध हो गया कि नया संघ पुराने राष्ट्र संघ (लीग आफ नेशन्स) का भी दादा परदादा है। अतएव श्री गिरिके इस सुझाव पर हमें गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। इस मामलेको हमें यों ही नहीं देखना चाहिये बल्कि निर्भीकता के साथ काम करना चाहिये और जब तक संयुक्त राष्ट्र संघ दला दलीका अखाड़ा बना हुआ है तब तकके लिये हमें उसको नमस्कार करके उससे अलग हो जाना ही श्रेयस्कर है।

## फांसी दण्डके विरुद्ध जनमत

ब्रिटेनमें 'फांसी-दंड' उठा देनेके संबंध में विभिन्न विचार उपस्थित किये जा रहे हैं। 'डेलीमेल' ने अपने पाठकोंका जो जनमत लिया है उसके अनुसार प्रति ४१ मेंसे एक व्यक्तिने इस निश्चयका समर्थन किया और शेष ४० व्यक्तियोंने इसका विरोध किया है। मृत्युदंडके समर्थकोंने मृत्युदंड देनेकी अपेक्षा बिजलीकी कुर्सीपर बैठाकर या काली कोठरीमें बंद करके मृत्युदंड देनेका समर्थन किया है। इससे अपराधी तथा जल्लाद दोनोंको सुविधा होगी।

## यूसाकी अपील अस्वीकार

बर्माके सुप्रीम कोर्टने बर्माके भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री यूसाकी अपीलको अस्वीकार कर दिया है। यूसाको यू आंग सांग तथा उनके साथियोंकी हत्याके अपराधमें फांसी की सजा मिली थी जिसके लिये यूसाने सुप्रीम कोर्टमें अपील की थी।

यूसाकी फांसीके संबंधमें यह ज्ञात हुआ है कि वे अपने सहयोगियों सहित ८ मईको फांसी पर लटका दिये जायेंगे उनकी पत्नी ने बर्मा सरकारसे प्रार्थना की है कि उसे उसका पुराना भवन जिसे पर सरकारने कब्जा कर लिया है, पुनः लौटा दिया जाय।

## महिलाओंकी अनिवार्य भर्ती

यहूदियोंकी हगाना सेनाने तेलअवीव में १७ से २५ वर्ष तककी समस्त विवाहित और अविवाहित महिलाओंके लिये अनिवार्य रूपसे सेनामें भर्त्ती होनेकी एक आज्ञा जारी की है। ३६ और ३७ वर्षकी उम्रके सभी यहूदी अफसरों जो ब्रिटिश सेनामें द्वितीय महासमरमें अफसर रह चुके हैं और ४५ वर्षतककी उम्रके सभी डाक्टरों को भी अनिवार्य रूपसे सेनामें भर्त्ती होनेकी आज्ञा दी गयी है।

## अमेरिकामें अनिवार्य सैनिक योजना

अमेरिकाकी सीनेटकी सैनिक समिति के सामने एक योजना पेश की गयी है कि १८ से १९॥ वर्षकी आयुके अमेरिकन युवकोंको सेनामें भर्त्ती किया जाय। रक्षा मंत्री तथा अन्य उच्च सैनिक अधिकारियोंने इसपर गंभीर प्रकाश डाला है। अनुमान है कि एक वर्षके अन्दर १,६१,००० सैनिक युवक सेनामें लिये जायेंगे।

## रूससे ५० हजार टन गेहूं

ऐसा ज्ञात हुआ है कि श्री विजय लक्ष्मी पंडितके अनुरोधपर श्री मोलोटोवने भारतको ५० हजार टन गेहूं देना स्वीकार किया है। लोगोंका अनुमान है कि इस वर्ष अच्छी फसल हो जानेके कारण भारतकोगेहूं की अत्यधिक आवश्यकता न होगी लेकिन यह अनुमान निराधार है। क्यों कि भारत सरकार १० लाख टन गेहूं संचित रखना चाहती है और वर्तमान समय उसके पास कुल ४ लाख टन गेहूं है। आस्ट्रेलियाका गेहूं वापस कर दिया गया था क्योंकि गेहूं के बदले आस्ट्रेलिया डारलर या कोई ऐसी चीज मांग रहा था जिसे हम देनेमें असमर्थ थे। रूसने कहा है कि भारत गेहूं के बदले कोई भी वस्तु चजो उसके यहां अत्यधिक हो, दे सकता है। संभवतः हिन्दको शीघ्र ही रूससे गेहूं प्राप्त होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



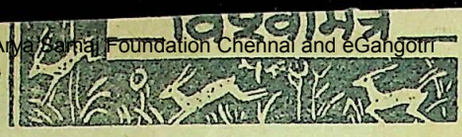

# सामयिक प्रसंग

## दलितवर्ग—एक तीसरा संगठनहो

भारत सरकारके कानून मंत्री डा० भीमराव अम्बेदकरने दलितवर्गके एक सम्मेलनमें कहा है—जिस प्रकार सोशलिस्टों कांग्रेससे अपना संबंध विच्छेद कर एक पृथक दल बना लिया है उसी तरह दलितवर्ग भी अपना एक अलग संगठन तैयार करें क्योंकि कांग्रेसमें रहते हुए उसकी उन्नति असंभव है। भारतमें दो प्रबल दल हैं, एक सोशलिस्ट दूसरा कांग्रेस। दोनों पार्टियां अपनी अपनी शक्ति कायम रखेंगी। यदि दलित वर्ग राजनीतिमें अपना खासस्थान रखना चाहता है तो इन दो पार्टियों से भिन्न एक तृतीय दलकी स्थापना करनी होगी। जब उभय दलोंमें अपनी संघर्ष होगा तब दलितवर्ग अपना स्थान पा सकेगा।

मैं कांग्रेसी सरकारमें हूं, अतः लोगों में इससे भ्रम फैल रहा है। मैं पहले कांग्रेस का विरोधी था। पर सदैव झगड़ना ही मनुष्यका कर्त्तव्य नहीं। जिस दिन मुझे विश्वास हो जायेगा कि सरकारमें मुझे रहनेसे लाभ नहीं उस दिनमें पदत्याग कर दूंगा। कांग्रेसमें मिले रहनेमें हमारी भलाई होगी, मैं साथ ही बना रहूंगा। साथ ही आपसे भी कहूंगा। आप कांग्रेसमें सम्मिलित हो जांय पर अभी आपको प्रतीक्षा करनी है। वह समय अभी दूर है।

## हैदराबादकी लड़ाईमें क्या करना होगा ?

बिहारके पुनर्वास सचिव श्री अब्दुल बयम अन्सारीने अखिल भारतीय मेमिन सम्मेलन नागपुरमें कहा है —भारतीय मुसलमानोंको यह निश्चय कर लेना चाहिये कि यदि भारत और हैदराबादमें युद्ध होगा तो वे क्या करेंगे। पिछले कुछ सप्ताहोंसे हैदराबादमें जो भी घटनाएं घटित हो रही हैं उसे देखते हुए भारतके मुसलमान अपने भविष्यका निर्णय करें। क्या हैदराबादके युद्धमें रजाकरोंको सहायता देकर 'पंचम दस्ते' में अपना नाम अंकित करेंगे ? यदि नहीं तो भारतके प्रति हैदराबादके जुल्मोंका प्रतिकार कर वफादरीका आदर्श सामने रखेंगे ? जिस प्रकार पाकिस्तानकी आवाज बुलंदकर भारतीय मुसलमान पश्चाताप कर रहे हैं, ठीक उसी प्रकार हैदराबादको लेकर पछताना होगा। हमें दो नाव पर कदापि नहीं रहना चाहिये। भारतीय मुसलमान भारतके प्रति ही अपनी राजभक्ति दिखावें। इसीमें उनकी भलाई है।

## गरीबोंका 'सुराज' समाजवादसे

श्री जयप्रकाश नारायणने कहा है कि—यों तो देशमें साम्प्रदायिका विनाश दृष्टिगोचर हो रहा है पर इसके कीटाणु अभी वर्त्तमान ही हैं। साम्प्रदायिकके कीटाणु ये देशी रजवाड़े अभी इस जागरणमें पूर्ववत ही हैं। हमें देशका ऐसा ढांचा तैयार करना है जहां जातिपांतिका कोई प्रश्न न हो। प्रत्येक व्यक्ति कमसे कम १००) मासिक अपनी वृत्ति पा सके। भारतमें ९९ प्रतिशत जनता निर्धन है। इसका कल्याण समाजवादसे ही संभव है। क्योंकि कांग्रेस पूंजीपतियों की कठपुतली बन रही है। जबतक उन मजदूरोंको जिन्हें एक समय भी कठिनतासे भोजन न मिलता है, भरपेट रोटी न मिलेगी तबतक 'सुराज' का कोई अर्थ नहीं।

## पाकिस्तानकी रक्षा दैव ही करेगा

लंदनके 'ग्रेटब्रिटेन एंड दी ईस्ट' नामक पत्रिकामें सर अलफ्रेड वाट्सनने लिखा है कि भारतका भविष्य येनकेन प्रकारेण उज्वल है पर पाकिस्तानका भाग्य दैवाधीन ही है।

भारत और पाकिस्तानके बजटकी विवेचना करते हुए आपने कहा है कि भारत का अनुमानिक बजट घाटेका है फिर भी वह अपना, मार्ग तय करलेगा लेकिन पाकिस्तानको केवल ऋण लेनेके सिवा और कोई चारा नहीं है। पाकिस्तानके माथेपर निराशा ही निराशा दीख रही है। जबतक पाकिस्तान की नव निर्माण योजनाएं फलीभूत न होंगी तावत् उसे ऋण ही लेते पड़ेगा। ऋणसे मुक्ति पानेका एक ही उपाय है कि पाकिस्तान उद्योगोंके प्रसारके ओर अत्यधिक सचेष्ट हो।

## पुलिस अनुशासन परायण हो

बिहारमें प्रधान मंत्री श्री श्रीकृष्ण सिंहने कहा है—पुलिस का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है, अनुशासन पारायण होना। वह जिस सरकारके अधीन है उसके प्रति राजभक्ति प्रदर्शन करना। सरकार चाहे परिवर्त्तित ही क्यों न हो, उसके कर्त्तव्यमें कोई बाधा नहीं। यदि मेरी सरकार विघटित कर दूसरी सरकार स्थापित हो जाय उस समय भी पुलिस अपने कर्त्तव्यमें रहे। यदि उसे मेरी गिरफ्तारी करनेका आदेश मिला है, सहर्ष वह मेरी गिरफ्तारी कर सकता है। मैं किसी प्रकारका द्वेष भाव न रखूंगा।

आज जनताकी मांग है कि पुलिसकी मनोवृत्तिमें सुधार हो। पर जनता भी अपनी पुलिसके प्रति मनोवृत्ति बदले। दोनोंमें परस्परिक सहयोग आवश्यक है।

पुलिसोंमें भ्रष्टाचारकी पराकाष्ठा हो गयी है। यत्रतत्र अनाचार, घूसखोरीकी बुरी प्रथा चल पड़ी है। इसके मूल तहमें ब्रिटिश सरकारकी कूटनीतिक चाले हैं जिससे साम्राज्यबादको प्रश्रय मिलता रहा है। स्वतंत्रता प्राप्तिके बाद हमें रचनात्मक कार्य कोअपनाना होगा अन्यथा हमारा विशाल प्रसाद धूलधूसरित हो जायेगा। भविष्यके निर्माणमें पुलिसकी सहायता उपयोगी सिद्ध होगी।

## पंचायत राज्य

राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसादने कुछ प्रांतीय मंत्रियोंके नामपत्र लिखा है जिसमें सामयिक पंचायत राज्यके विषयमें आवश्यक परामर्श दिये गये हैं। राष्ट्रपतिने लिखा है—

पंचायत बनानेसे पूर्व जनताको स्वायत्त शासनकी जिम्मेदारियोंके प्रति जागृति पैदा करनी चाहिये। गैर जिम्मेदार व्यक्तियों द्वारा भोलीभाली जनतासे लाभ उठाया जाना और पंचायतोंका पदाधिकारी बन जाना नौकरशाही शासनको जन्म देना है। अतः पंचायत राज्यकी स्थापनाके पूर्व इन बातोंका ध्यान रखना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# यत्रतत्र

### पशुरोग निवारणका प्रयत्न

दिल्ली भारतीय पशु चिकित्सा-अनुसंधान शालामें सरकारने पश टीका लगानेके लिये तरल पदार्थोंके उत्पादनकी योजना बनायी है। इस शालामें विभिन्न राज्यों तथा प्रांतोंके इनेगिने व्यक्तियोंकी ९ माहकी ट्रेनिग होगी। बादमें वे टीका की सामग्रीका उत्पादन स्वयंकर सकेंगे।

### पाकिस्तानमे राष्ट्रीय कांग्रेस

बम्बई अधिवेशनमें यह स्वीकृत किया गया है कि भारतीश राष्ट्रीय कांग्रेस भारतीय संघ तक ही सीमित रहेगी। पाकिस्तान कांग्रेसकी शाखाएँ विघटित कर दी जायेंगी। यदि पूर्वी बंगालके लोग चाहें तो कांग्रेसके नामपर अपनी निजी संस्था कायम कर सकेंगे।

### जमीयत उलेमा हिन्द राजनीतिसे पथक

बम्बईमें जमीयत उलेमाए हिन्दने प्रस्ताव स्वीकृत किया है कि जमीयत राजनीतिसे अपना संबंध पृथक कर ले। पाकिस्तानमें इसकी जिनकी शाखाएं हैं उन्हें भंग कर दी जांयें। तथा जमीयतका क्षेत्र भारतीय संघतक ही हो। जमीयत अब केवल धार्मिक और सांस्कृतिक के संस्थाके रूपमें रहें। राजनीतिमें राष्ट्रीय कांग्रेससे सहयोग आवश्यक है।

### भारतमें पेटोलकी कमी

भारत सरकार पेट्रोलकी आमद बढ़ानेका प्रयत्न कर रही है। फारसकी खाड़ीसे भारतको इच्छानुसार पेट्रोल प्राप्त हो जाता था लेकिन सम्प्रति वहां ब्रिटेन तथा अमेरिकाका प्रभाव बढ़ रहा है। भारतको प्रतिदिन ४९ लाख टन पेट्रोल और मिट्टी तेलकी आवश्यकता है। राशनकी व्यवस्था करनेपर भी ३० लाख टन की खपत है। भारत परिश्रम करने पर भी दो ढाई लाख टनसे अधिक पेट्रोल प्राप्त नहीं कर सकता है।

भारतमें पेट्रोलका निजी उत्पादन अपनी आवश्यकतासे पांच गुना न्यून है। ऐसी अवस्थामें भारतीय पार्लमेंट में यह विचार उपस्थित कियाजा रहा है कि बर्मासे गदला तेल मंगाकर इसकी पूर्त्ति की जाये पर अनुमानतः बर्मा फिलहाल इतना तेल नहीं दे सकता क्योंकि उसके कुंएं अधिक बर्बाद हो गये हैं और भारतमें उसे साफ करनेकी मशीनका नितांत अभाव ही है।

### बिहार गजट हिन्दीमें

बिहार प्रांतका मई माहका गजट देवनागरी लिपि तथा हिन्दीमें निकलेगा। कानुनी तथा व्यवस्था संबंधी अंग्रेजी शब्दों के हिन्दीमें पर्यायवाची शब्द न होनेके कारण यह अंश अंग्रेजीमें ही प्रस्तुत किया जायगा। सूचना, नियुक्ति आदिकी उल्लेख हिन्दीमें हो होगा।

### जमींदारोंको निजामकी चेतावनी

हैदराबादकी सरकारने जमींदारों एवं पट्टेदारोंको एक चेतावनी दी है कि जो हैदराबादकी भारतीय सीमामें रहनेवाले हैं और अपना घरबार छोड़ कल बाहर चले गये हैं वे यदि अप्रैलके अंततक नहीं लौट आये तो स्थानीय माल विभागको उनके प्रति हर कार्रवाई करनेका अधिकार है। और सरकारकी ओरसे उनकी भूमिको आबाद करनेके लिये प्रयत्न किया जायेगा। क्योंकि उनकी जमीन परती रह गयी तो रिया सतमें अन्नाभाव हो जानेकी आशंका है।

### बापूकी हत्यामें अलवर नरेशका हाथ नहीं

बापूकी हत्याके संबंधमें जांच समिति का कहना है कि अलवर नरेशका बापूकी हत्यामें कोई हाथ नहीं रहा है और न उनका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघसे संबंध है।

### पाकिस्तापसे ८ करोड़की रूइंका निर्यात

१९४८के मार्च महीनामें रूसने बहुत बड़ी संख्यामें रुई खरीदी है। ज्ञात हुआ है कि पाकिस्तानने कुल १२,५००० टन रुई रूसको दी है। इसके अतिरिक्त ब्रिटेनके हाथ ५१६५० टन, इटलीके ३, ७६९, बेलजियमके ३,३३१, टन, स्पेनके २,१६१ तथा आस्ट्रेलियाके हाथ १,७११ टन रुई बेची है। निर्यातकी मूल्य ७९६०००००) रु० हैं।

### हरिजन सहायक विभाग

युक्त प्रांतीय सरकारने एक हरिजन सहायक विभाग खोला है। जो दलित वर्ग के छात्रोंको छात्र वृत्ति आदि प्रदान करेगा। बजटमें ११ लाख रुपये छात्रवृत्तियों तथा १ लाख रुपये उनके आवश्यक काम आदि के लिये हस्वीकृत किये गये हैं।

### राजस्थानमें जनशासन

राजस्थान संघ जिसमें १० रियासतें शामिल हैं, जन-प्रिय शासनकी व्यवस्था की गयी है। १८ अप्रैलको पंडित नेहरूने इसका उद्घाटन किया था और अब वहां जनताका मंत्रि मंडल काम कर रहा है। इसका क्षेत्रफल ३० पार वर्गमील आदादी ४२ लाख और वार्षिक आय अनुमानतः तीन करोड़ रुपये हैं। जनताकी सरकार हो जानेके कारण उदयपुरके दीवान सर राममूर्त्ति अब राजप्रमुखके परामर्शदाताका कार्य भार संभालेंगे। श्री माणिलाल बर्मा राजस्थान संघके प्रधान मंत्री नियुक्त किये गये हैं। भारतीय संघकी पताका फहराते हुए उदयपुर महाराजाने संघकी एकताको सुदृढ़ करने तथा जनताकी भलाईकी शपथ ली है।

### सन् '४२ के पीड़ित परिवारको सहायता

ज्ञात हुआ है कि बिहार सदकार १९४५ के आन्दोलनके पीड़ित परिवारों की क्षति-पूर्त्ति करेगी। इसके अनुसार मृत व्यक्तिके परिवारोंको २०००() सवाके लिये काममें असमर्थ व्यक्तियोंको १०००) और घायल व्यक्तियोंको ६००) देना स्वीकार किया है। बिहपुर स्थानमें अबतक ८ हजार ५ सौ रूपये वितरित किये जा चुके हैं।

### मि० खुरो बर्खास्त

श्री मुहम्मद अयूब खुरो जो सिंधके प्रधान मंत्री थे पाकिस्तान गवर्नर जेनरल के आदेशानुसार सिंध गवर्नर द्वारा बर्खास्त कर दिये गये हैं। बताया जाता है कि उत्तरदायित्व तथा कर्तव्य-पालनमें अवहेलनाके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कारण ही उन्हें अपने पदसे हटना पड़ा है। इस संबंधमें जांचके लिय एक कमीशन नियुक्त हुआ जिसमें उन्हें अपनी स्थितिको स्पष्ट करनेकी पुसुविधा प्राप्त होगी।

आदिवावसी छात्रोंको छात्र-वृत्ति

केन्द्रीय शिक्षा सचिवालयकी एक विज्ञप्तिमें कहा गया है कि आदिवासी तथा पहाड़ी जातिके जो विद्यार्थी मैट्रिकसे आगे पढ़ना चाहते हैं उन्हें सरकार सन् १९४८–४९ के वर्षमें कुछ छात्र-वृत्तियां पदान करनेका निश्चय किया है। इसके लिये एक बोर्ड भी नियुक्त हुआ है।

नया हवाई मार्ग

ज्ञात हुआ है कि युक्त प्रांतीय सरकारने हिमालय स्थित बद्रीनाथ के मंदिर तक हवाई जहाजके मार्ग निमित्त एक योजना बनायी है। इस योजनाके कार्यान्वित हो जानेपर हवाई मार्ग से यात्रा करनेवाले व्यक्ति १ मासकी अपेक्षा १ घंटेमें ही बद्रीनाथ पहुंच जायेंगे। मंदिरके निकट ही हवाई अड्डेके लिए एक मैदान साफ कियाजा रहा ह।

देशीराज्य लोकपरिषद भंग

अखिल भारतीय देशी राज्य-लोक परिषद की कार्य समितिने इस परिषपुदको भंगकर कांग्रेसमें सम्मिलित हो जानेका निश्चय किया है। इसको ध्यानमें रख कर ही यह निश्चय किया गयाहै कि कांग्रेसके नये विधानके अनुसार उसका कोई भी सदस्य किसी गन्य राजनीतिक संस्थाका सदस्य न रह सकेगा।

भारतमें पाकिस्तानके हरिजन

भारत सरकारको मालूम हुआ है कि पाकिस्तानके ५ लाख हरिजन पश्चिमी पंज ब और सिंधमें पड़े हुए हैं। सरकार उनके के स्थानान्तर पर विचार कर रही है। लगभग ६ लाख पाकिस्तानी हरिजन सीमापार कर भारतीय संघमें प्रविष्ट हुए हैं।

भारतकी केन्द्रीय सरकारने गृह निर्माण में २५ लाख व्य करनेकी निश्चय किया है। इस योजनाके अनुसार दस ग्रामोंमें ५ हजार मकानोंका निर्माण होगा। जहां हरिजन सपरिवार रह सकेंगे। प्रत्येक हरिजननको जो कृषिपर जीवन यापन करता है, १२ एकड़ जमीन दी जायेगी। बम्बई और पूर्वी पंजाबकी सरकारोंने हरिजनोंके गृहनिर्माणमें क्रमशः ९ हजार और १२ हजार की स्वीकृति दी है। विभिन्न मिलों एवं फर्मोंने भी मजदूरोंको काम देनेके विषयमें सहयोग प्रदान करनेका आश्वासन दिया है।

पूर्वी बंगालके साप्ताहिकपत्र बंद

ज्ञात हुआ है कि पूर्वी पाकिस्तानकी सरकारने कागजकी कमीके कारण एक आदेश जारी किया है कि जबतक नया आदेश न लागू किया जाय तबतक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित न होंगे। बाजारोंमे कहीं भी खुले काम काज नहीं मिल रहा है।

मित्र राष्टीय आर्थिक सम्मेलन

ज्ञात हुआ है कि मित्रराष्ट्रीय आर्थिक सम्मेलन १ जूनको उदकमंड (भारत) में होगा। भारतमें होनेवाला यह सर्व प्रथम सम्मेलन है। इसका उद्घाटन भारतके प्रधान सचिव श्री पंडित नेहरू करेंगे। इस सम्मेलनमें महादेशके औद्योगिक विकास औद्योगिक शिक्षा, व्यापारिक उन्नतिके मार्ग, खाद्य-रक्षा तथा कृषि योजनापर विचार विमर्श किया जायेगा। नदियोंकी बाढ़के प्राबल्यको रोकनेपर भी विचार होगा।

## मुसलमोंको तंगकरना आशयनहीं

आचार्य कृपलानीजी कहते हैं कि मेरे वक्तव्यका यह आशय नहीं था कि मैं मुसलमानोंको तंग करना चाहता हूं।


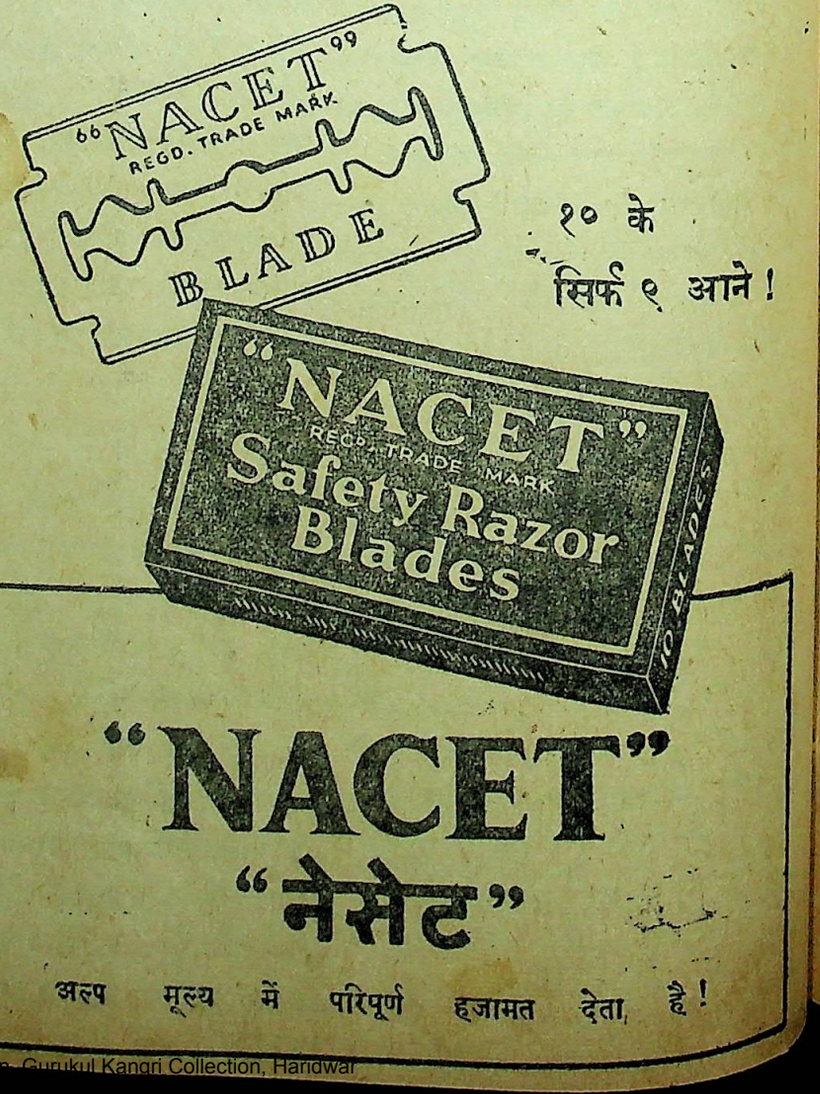



CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हैदराबादमें विदेशी राष्ट्रोंका हस्तक्षेप चाहते हैं?

## श्री सव्यसाची

हैदराबादके सम्बन्धमें हम बातें सुनते सुनते थक चले हैं और प्रधान मन्त्री पण्डित नेहरूके शब्दोंमें हमारे धैर्यका बांध टूटना चाहता है। हम रास्तेमें उपस्थित कठिनाइयों, विषयकी जटिलताकी चर्चा बहुत सुन चुके। अब तो हम इन कठिनाइयोंको रास्तेसे हटानेके सम्बन्धमें कार्य देखना चाहता हूं और इन कार्योंकी चर्चा बना चाहते हैं। निजामसे लेकर राज्यका प्रत्येक अधिकारी व्यक्ति सबकारी और फरेबका नकाब डाले भारत सरकारको नुगालते में रखकर अपनी शरारतसे बाज नहीं आ रहा। ये सब एक ढर्रे पर चल रहे हैं। कासिम रिजवीकी शैतानी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। उसके रजाकारोंकी दानवी लीला अपनी सर्वग्रासी जीभ लपकाती हुई भयंकर वेगसे फैल रही है। गिदड़ों भेडियेकी खाल ओढ़कर जिस वीभत्सताका परिचय दिया है उससे राज्यके शांत और शिष्ट नागरिकोंका आतंकित होना स्वाभाविक है। निजाम, रिजवी और लायक अली जब आगे कदम बढ़ाते हैं तो पहले उनकी दृष्टि पीछे जाती है और तब पाकिस्तान ललकारता है, अमेरिका और ब्रिटेन आश्वासन देते हैं कि भय नहीं है, हम तुम्हारे साथ हैं। यह ललकार और आश्वासन जिसे मिल रहा हो वह क्यों न खुराफात करे। फिर निजामको तो गद्दारीकी विरासत पुश्तैनी मिली हुई है। दिल्लीकी मुगल सल्तनतका मातहत सूबेदार उसे कमजोर होते देख उसकी मदद करनेके बजाय संकटके समय उसका साथ छोड़कर चन्द चांदीके टुकड़ों पर अंगरेजोंकी गुलामीका तौक बांधकर कल तक जो दुम हिलाता घूम रहा था आज वह अपने नये किन्तु स्वाभाविक मालिकको देख कर भौंक रहा है। लिहाजा यह आवश्यक है कि इसका भौंकना जिस तरह भी हो बन्द कर देना चाहिये। हिन्दुस्तानके बीचोबीच गद्दारीके इस गढ़को धराशायी करके उसकी जगह सच्चे लोकतन्त्र का सुन्दर, भव्य महल खड़ा करनेका काम आरम्भ करनेमें अब अधिक विलम्ब किसी तरह वांछनी य नहीं है।

भारत सरकार और हैदराबादके बीचमें कभी समाप्त होते न दिखायी देने वाले वार्तालापोंसे एक दल नाजायज फायदा उठा रहा है और राज्यके नागरिगों के कष्ट बढ़ते ही जा रहे हैं। हर्षकी बात है कि भारत सरकारने भी इस तथ्यको महसूस किया है और पण्डित जवाहर लाल नेहरूको यह कहना पड़ा है कि हमारे धैर्यका बांध टूटने वाला है। पण्डितजीकी इस स्पष्टोक्तिकी प्रतिक्रिया हैदराबाद और उसके पृष्ठ पोषक ब्रिटेनमें जो हुई है उनसे यह स्पष्ट समझा जा सकता है कि निजाम भारत सरकारके साथ कतई समझौता करना नहीं चाहता। निजामके फरमान और प्रधान मन्त्री मि० लायक अलीके वक्तव्यसे यह स्पष्ट हो गया है कि ये लोग हैदराबादमें सामन्तशाही कायम रखना चाहते हैं और जनताके अधिकारोंकी उपेक्षा करनेके लिये आवश्यकता पड़ने पर तलवार उठानेको तैयार हैं। हैदराबाद राज्य कांग्रेसकी संघर्ष समितिके अध्यक्ष श्री वी० जी० विन्दुने मि० लायक अलीके वक्तव्य के उत्तरमें ठीक ही कहा है कि असलीयत यह है कि हैदराबाद सरकार जनताकी सार्वभौम सत्ताको नहीं स्वीकार करती। सरकारके संगठनमें जनताकी रुचि और इच्छाओंकी वह कायल नहीं है। हैदराबाद के दो करोड़ नागरिकोंकी इच्छाओंको कुचल कर आसफ जाही खान-दानके शासन को तलवारके जोरसे कायम रखने वाले रजाकारोंका तब यदि राज्यकी ओरसे मनमानी करनेकी छूट दे रखी गयी हो तो आश्चर्य क्या है।

आश्चर्य तो इस बातका है कि लोकतन्त्रका अपनेको सबसे बड़ा ठेकेदार बताने वाला ब्रिटेन हैदराबादमें जनताके खिलाफ होने वाले अन्यायों और अत्याचारोंको देखकर भी अब तक मौन रहा किन्तु जब जनमतके सम्मानकी रक्षाके लिये भारत सरकारने तत्परता दिखायी तो वह चंचल हो उठा और पण्डित नेहरूके वक्तव्यको युद्धको प्रोत्साहन देने वाला और अवांछनीय कहने लगा। गत सप्ताह ब्रिटिश पार्लमेण्टमें वैदेशिक नीति पर बहसके दौरानमें प्रधान विरोधी वक्ता और किसी समयके उप-भारत सचिव मि० आर०ए बटलरने पण्डित नेहरूके वक्तव्यको अवांछनीय बताते हुए प्रच्छन्न रूपसे यह धमकी दी है कि "मामला इतना सहज नहीं है जितना समझा जा रहा है।" मि० बटलर यह कहना चाहते हैं कि यदि नेहरू सरकार यह समझती हो कि राज्यकी निरंकुशता कोवह युद्ध द्वारा दबाकर न्यायकी प्रतिष्ठा कर सकती है तो यह उसकी भूल है, हैदराबादके अन्याय और अत्याचारकी पृष्ठ पोषकता करने वाले ब्रिटेन और अमेरिकाकी ताकतका अन्दाजा लगाकर ी उसे इस तरहकी कोई धारणा बनानी हचाहिये। यह हमारा मात्र अनुमान नहीं है बल्कि मि० बटलरकी इस मांगका इसके सिवा दूसरा अर्थ ही नहीं हो सकता कि "मैं समझता हूं कि यदि हैदराबाद स्वतन्त्र रहना चाहता है तो उसको इस न्यायोचित मांगको पूरा करानेमें ब्रिटेनको अपने दबावसे काम लेनाचाहिये।" यह है ब्रिटेनका गर्व करने वाला आदर्श लोकतन्त्रवाद। मि० बटलरका यह विश्वास है कि भारत के प्रभावसे अलग रहकर ही हैदराबाद ब्रिटेनके काम आ सकता है और हैदराबाद की ओरसे इस आशयका आश्वासन भी ब्रिटेनको मिला है अन्यथा मि० बटलर यह न कहते कि यदि स्वतन्त्र होकर हैदराबाद कामनवेल्थका सदस्य बनना चाहता है तो उसकी इस मांगको पूर्ण करानेमें ब्रिटिश सरकारको अपने प्रभावसे काम लेना चाहिये। काश्मीरके मामलेमें सिक्यूरिटी कौंसिलमें ब्रिटेन और अमेरिकाके रुखसे यह स्पष्ट है कि उनकी दुरभिसन्धि क्या है और यह समझना भी कोई कठिन काम नहीं है कि इन दोनों 'महान' की सहानुभूति पाकिस्तानके प्रति क्यों है।

भारतकी शक्तिकी संभावनाओं का जिसने सही सही अन्दाज लगाया है वह बखूबी समझता है कि यदि मार्गमें कठिनाइयां पैदा करके प्रगतिको अवरुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं किया गया तो शीघ्रातिशीघ्र भारत सारकी एक बड़ीसे बड़ी शक्ति बनेगा। न्याय और सत्यको आदर्श मान कर चलने वाले किसी राष्ट्रका शक्तिशाली बनना स्वार्थी और धूर्त राष्ट्रोंकी स्वच्छन्दता तथा निरंकुशताके लिये बहुत बड़ा अवरोध सिद्ध होगा, इस भयसे लोकतन्त्रका लबादा ओढ़े हुए साम्राज्यवादी फासिस्ट देश सदा सशंकित रहते हैं। यही कारण है कि 'होनहार विरवानके होत चीकने पात' कहावत सिद्ध करने वाले शिशु राष्ट्रको स्वस्थ सबल होने देनेके बजाय ये राष्ट्र पहले ही उसका गला घोंट डालने में कोई कसर नहीं रखते। सोवियट रूसके जन्म कालमें भी यह प्रयास किया गया था। किन्तु शिशु सोवियट इन धूर्तराजोंके आततायीपनेसे अपनी रक्षा करके आज संसारका एक प्रबल पराक्रमी राष्ट्र बन गया। ब्रिटेन फ्रांस, जर्मनी, स्पेन और अमेरिकाकी सब चालें व्यर्थ करके रूस आज इतना बड़े-बड़े प्रतिद्वन्द्वीके रूपमें सामने खड़ा है कि इनका साहस चलायमान हो गया है। ऐसे समय भारतका नव विकास संसारमें इनकी धाक, इनके प्रभाव विस्तार के लिये रूससे भी बड़ी चुनौती हो सकता है यह ब्रिटेन और अमेरिका भली भांति समझ रहे हैं। यही कारण है कि भारतके मुकाबलेमें पश्चिमी राष्ट्र पाकिस्तानका न्याया अन्यायकी परवाह न करके साथ दे रहे हैं।

पाकिस्तानका निर्माण ही भारतकी प्रगतिको अवरुद्ध करनेकी दुरभि संधिसे किया गया। इस अवरोधको और तगड़ा एवं कारगर बनानेके लिये षड़यन्त्रका दूसरा परिच्छेद काश्मीर और हैदराबादको भारत भूमिसे पृथक करनेका रचा जा रहा है। पाकिस्तानको, इसी दृष्टिसे, सभी संभव उपायोंसे ब्रिटेन और अमेरिका मदद पहुंचा रहे हैं। भारतको शैशवावस्थामें ही युद्ध संलग्न राष्ट्रकी स्थितिमें रखना ही ब्रिटेन और अमेरिकाका लक्ष्य है। पाकिस्तान काश्मीरके युद्धमें आक्रमणकारियोंको जो मदद पहुंचा रहा है वह कहां से ? जो स्वयं दिवालिया हो उसके पास काश्मीर युद्ध चलानेके लिये कहांसे प्रचुर परिमाणमें सैनिक असैनिक सामग्री आती है। प्रधान मन्त्री पण्डित नेहरू साफ कह चुके हैं कि हैदराबादमें चोरीसे विदेशोंसे शस्त्रास्त्र मंगाये जा रहे हैं। काश्मीरके युद्धमें विद्रोहियों द्वारा जिन शस्त्रास्त्रोंका प्रयोग हो रहा है वे पाकिस्तानको निश्चय ही विदेशों से प्राप्त हुए हैं। अभी कुछ दिन पहलेकी बात है कि काश्मीरके विद्रोहियोंके सदर मुकाममें एक जबर्दस्त शार्टवेव ट्रांसमिटर (रेडियो का वाणी प्रसारक यन्त्र) बैठाया गया है। लाहौर और ढाका पाकिस्तान राजधानियां हैं किन्तु अभी तक इनको भी शार्टवेव ट्रांसमीटर मयस्सर नहीं हुआ। यह ट्रांसमिटर बागियोंको कहांसे मिला। पाकिस्तानमें ये बनते नहीं, यहां तक कि मध्यपूर्वके किसी देशमें यह नहीं बनते। तब कहांसे यह ट्रांसमिटर आया ? किसने इसे प्रदान करनेकी उदारता दिखायी और क्यों ?

इन सब बातोंसे स्पष्ट है कि हदराबाद और काश्मीरकी समस्याओंको उलझाये रहनेमें पश्चिमी राष्ट्रोंका हाथ है। यह बड़ा ही संकटका समय है। भारत सरकार इसका सामना करनेमें जितनी अधिक दृढ़ता और साहससे काम लेगी, उतनी ही उसे सफलता मिलेगी। हैदरावादके निजाम, रिजवी और लायक अलीको बातोंसे नहीं कामोंसे अब यह बता देना चाहिये कि तुम्हारे पीछे चाहे जिसकी शक्तिका सहारा क्यों न हो तुम्हारा अन्याय हरगिज बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इसके लिये पहला कदम हैदराबादके खिलाफ आर्थिक प्रतिबन्ध होना चाहिये। किन्तु यह प्रतिबन्ध यह समझकर लगाया जाना चाहिये कि इसके बाद दूसरा कदम युद्ध ही है। अतः पहला कदम उठानेका अर्थ ही यह होगा कि हम दूसरे कदमके लिये भी तैयार हैं। हम जानते हैं कि हमारे इस प्रयासमें पश्चिमी राष्ट्रोंका गुट हमारा विरोध और पाकिस्तानका समर्थन ही करेगा। इसलिये हैदराबादके खिलाफ हमारी तैयारी इस तथ्य को भी दृष्टिगत रखकर होनी चाहिये। इस प्रसंगमें हम पश्चिमी राष्ट्रोंके गुटके प्रभाव क्षेत्रके देशोंमें रहने वाले अपने राजदूतोंसे भी कुछ स्पष्ट कह देना उचित समझते हैं। हम देखते हैं कि यदा-कदा हमारे ये राजदूत इस आशयके वक्तव्य दिया करते हैं कि इन देशोंमें भारतके प्रति पूरी सहानुभूति और सदिच्छा है। संयुक्त राष्ट्र संघमें हम इस सहानुभूतिका रूप देख चुके हैं। अतः भारतके प्रति इन सरकारोंकी नीतिके सम्बन्धमें यदि ये राजदूत स्पष्ट वक्तव्य नहीं प्राप्त कर सकते तो कृपा कर भारतके प्रति उनकी सदिच्छा और सहानुभूतिका ढिंढोरा पीटना बन्द करें, क्यों कि इससे लाभकी अपेक्षा हमारी हानि ही अधिक होनेकी संभावना है।

---

## राजाजी गवर्नर जेनरल

सरकारी तौर पर यह घोषणा की गयी है कि लार्ड माउण्ट बेटनका कार्यकाल २१ जूनको समाप्त होने पर पश्चिम

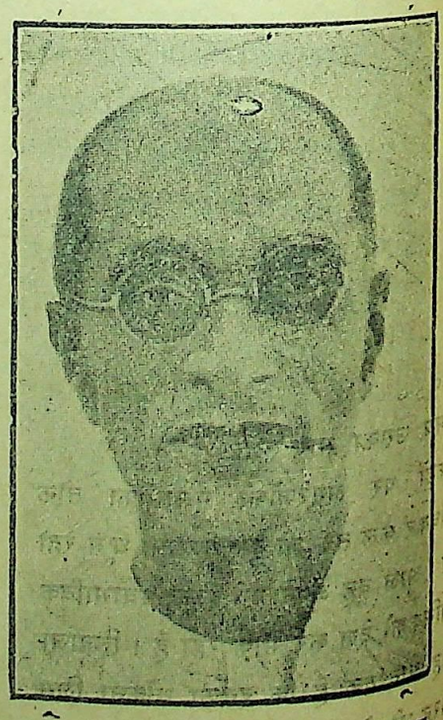

बंगालके गवर्नर माननीय चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य भारतके गवर्नर जेनरल होंगे। राजाजीकी इस नियुक्तिका देश-विदेशमें सर्वत्र स्वागत किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दीवाली की रात

## नवनी

श्री भैरव प्रसाद गुप्त

आज दीवालीकी रात है। नवल शाम ही से परेशान है। विधवा मांका इकलौता बेटा नवल मांकी दुलार-भरी गोदमें पल कर वैसे ही बड़ा हुआ है, जैसे प्रकृतिकी गोदमें एक जंगली पौधा। गायकी तरह सीधा, पर गदहेकी तरह बेहाया नवलको किसी तरहके बन्धन बाधाका अनुभव मां ने नहीं होने दिया। मांके हृदयमें पता नहीं यह बात शुरूसे ही कहांसे आकर जम गयी, कि उसने बेटेपर किसी तरहका बन्धन या बाधा लागू की नहीं, कि वह फूलकी तरह मुरझा जायगा। विधवा मांकी उजड़ी फुलवारीमें एक ही खिलखिलाता हुआ फूल ठहरा। वह भी मुरझा जाय, यह बात मां कैसे चाहती? इसीलिये जिस रूपमें नवल स्वतन्त्र रूपसे बढ़ता गया, उसे मानें प्रकृति की तरह बिना कोई रुकावट उपस्थित किये बढ़ने ही नहीं दिया, बल्कि परोक्ष रूपसे उसने उसकी बढ़नमें सहायता भी दी।

नवल पालनेमें पड़ा अभी मांकी मीठी-मीठी लोरियोंकी गुनगुनाहटके संगीतमय वातावरणमें पुलक-पुलककर हाथ-पांव पटक ही रहा था, कि एक दिन शामको पुलिसोंने उसके दारोगा पिताकी लाश उसके क्वार्टरके सामने रख, मांको सूचना दी, कि दारोगा साहब शहरके गुण्डोंके शिकार हो गये। मां पर बज्र गिर पड़ा लोकलाजकी तिलांजलि दे, वह विक्षिप्त सी हो घरके बाहर आ, अपने पतिकीलाश पर धड़ामसे गिर गयी। उसकी आत्मा शरीरके सब प्राणोंकी खींचती हुई एक लम्बी चीरन निकली,और वह संज्ञाहीन हो, व्यथाकी अगाध गहराइयोंमें ऐसे डूब गयी कि व्यथा भी ज्ञानके परेकी वस्तु हो गयी।

दारोगा साहबअपने हल्केमें अपनी ईमानदारी और कर्त्तव्य परायणताके लिये प्रसिद्ध थे। चन्द काले दिलोंको छोड़कर सबके दिलोंमें उनके लिये असीम मान था। बिजलीकी तेजीसे दारोगा साहबके निहत होनेका समाचार पूरे शहरमें फैल गया। गया। चारों ओरसे उनके क्वार्टरके सामने उभड़ती हुई भीड़ इकट्ठी होने लगी। सब दुखी थें सबके होठों पर दारोगा की प्रशंसाके अनगिनत शब्द थे। उनकी दुख-भरी बातें थीं,और उनकी सासोंमें दुख जनित आहोंका हल्का-हल्का पुट था सारा वातावरण ही ऐसे करुणाकी अद्रतासे भींग गया था।

सबका यही कहना था, कि यह जुआड़ी गुण्डोंका काम है। और इस बातके सच होनेकी पूरी-पूरी सम्भावना भी थी, क्यों कि दारोगाके चरित्रकी यह सबसे बड़ी विशेषता थी कि वह संसारके सब अपराधोंको क्षमा कर सकता था, किन्तु जुआ खेलना उसके देखनेमें एक ऐसा अपराध था, जो अक्षम्य है। किसी भी दशामें वह जुएको बर्दाश्त न कर सकता था। उसका कहना था, कि जुआ सब अपराधोंकी 'जननी' है। जुएके अड्डे ऐसे केन्द्र हैं, जहांसे जहरकी बहुर्मुखी धारायें फूटकर निकलती हैं, और शहर पर छाकर सामाजिक जीवनको दूषित कर देती हैं। चोरी, डकैती कत्ल, व्यभिचार, दंगा, अनाचार, फौजदारी, शराबखोरी और इसी तरहके जितने भी अपराध हैं, वे इसी जुएके पेड़की शाखायें हैं। जब तक इस पेड़को जड़से काट न दिया जाय, ये अपराध समाप्त नहीं किये जा सकते। उसकी यह धारणा इतनी बलवती थी, कि इस विषयमें वह किसीसे भी किसी मूल्यपर समझौता करनेको तैयार न था और इसीलिये वह जहां भी जाता, उसका पहला और अन्तिम कुठाराघात जुएके अड्डों और जुआड़ियोंपर ही होता। जब तक इनका सफाया वह न कर लेता, चैन न लेता। कहा नहीं जा सकता कि इसके हृदयमें यह धारणा कहांसे आकर कैसे जम गयी थी, कि उसने इसे अपने जीवनका लक्ष्य ही बना लिया था। इसलिये उसी लक्ष्यकी प्राप्तिमें उसके जीवनकी बलि चढ़ गयी हो, तो यह कोई असम्भव बात नहीं लगती।

उसके अपने गांवके घरमें अपना सगा कोई न था। जो सम्बन्धी थे उन्हें तार दिया गया। सुबह तक किसीके आनेकी सम्भावना न थी, इसलिये लोगोंने यही उचित समझा कि उसका दाह-संस्कार शीघ्रकर देना ही अच्छा है। पुलिस सुपरिन्टेन्डेंटने रिपोर्ट लिखी। सिविल सर्जनने अपनी रिपोर्ट दी। और दारोगा साहबका भौतिक और शरीर पंच तत्वोंमें मिला दिया गया।

विधवाकी दशा शोचनीय थी। विक्षिप्तावस्थासे जब भी वह होशमें आती, तो सफेद पड़ी आंखोंसे वह एक क्षणको पागल की तरह इधर-उधर देखती, फिर जैसे एक शूल सा उसके हृदयमें चुभ जाता, और वह जोरसे एक बार चीखकर फिर विक्षिप्त हो जाती। सब परेशान थे। नवल का रोते-रोते बुरा हाल था। किसी के किसी तरह फुसलानेसे वह चुप नहीं होता था। गला सूख गया था। हिचकियां बंध गयी थीं। फिर भी 'मां-मां चीखता वह रोता जाता था।

दूसरे दिन नवलके मामा आ गये। बहनकी लुटी दशा देख रो पड़े। उन्हें ही अब सब कुछ संभालना था। किसी तरह दिल खड़ाकर उन्होंने डाक्टरको बुलाया। बहनको इंजेक्शन दिलवाये। नवलको गोदमें किसी तरह बहलानेकी चेष्टा की। दो-चार दिनमें बहनकी हालत कुछ सुधर जाने पर उन्होंने उसे घर ले जानेकी बात तय की कि इतनेमें दारोगाकी जगह पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर दूसरा नये दारोगा मय बाल-बच्चोंके लदा-फंदा आ धमका। उसने जल्द क्वार्टर खालीकर देनेकी ताकीद की।

दूसरोंकी आपत्तिको सिर-आंखोंपर ले उसे अपनी आपत्ति समझने वाले इंसान यों भी दुनियामें नहींके बराबर हैं। फिर पुलिसके महकमेमें काम करने वालोंसे इस तरहकी आशा रखना आगसे शीतलता की आशा रखनेके बराबर है। इन्सानियत के नामपर उनके पास इन्सानके ढांचेके सिवा और कुछ नहीं होता। कुत्ते जैसे स्वामी-भक्त जानवरसे उनकी तुलना करना कुत्ते की जातिका अपमान करना है। कल तक जो कान्सटेबिल और मुंशी दारोगाके सामने एक टांगपर खड़े हो, उसकी आज्ञाओं के लिये खरीदे हुए गुलामकी तरह प्रतीक्षा करते रहते थे, आज उनके आंख मूंदते ही उन्होंने ऐसे आंखें फेर लीं, जैसे उससे उनका कोई सम्बन्ध ही न रहा हो। नये दारोगा से नवलके मामाने बहुत अनुनय विनय की, कि दो-चार दिन तो उन्हें और उस क्वार्टर में रुकने दें। विधवाकी दशा तनिक सुधर जाते ही वह उसे लेकर चले जायेंगे। पर दारोगाने कहा—"यह सरकारी क्वार्टर है, आप जैसे भी हो कल तक खाली कर दें आखिर मेरे भी तो बाल-बच्चे हैं!।"

इसकी खबर जब शहरके लोगोंको मिली, तो कई भले मानसोंने मामासे आकर कहा, कि आप न हो तो तब तक वह उनके यहां ही ठहर जायं। पर मामा को भी ताव आ गया। दुखमें आदमीका किसी साधारण विरोधकी बातपर भी खिझ जाना और क्षुब्ध ही जाना स्वाभाविक है। उन्होंने तय कर लिया कि चाहे जो हो, अब वह बहनको ले घर ही जायेंगे।

मोटर ठीक किया। सब सामान स्वयं ही बांधे किसी पुलिसने उनकी किसी तरह मदद कर नये दारोगाके कोपका शिकार होनेका साहस न किया।

मोटर चलनेके समय पुलिसको छोड़ शहरके काफी लोग जमा थे। उस समयका दृश्य अवर्णनीय था। जमीन रो रही थी, आसमान रो रहा था। सबके सब रो रहे थे, और कह रहे थे कि हे भगवान ऐसी मौत तू किसीको न दे! हे भगवान किसी किसी परदेशीको तू ऐसी विपत्तिमें न डाल!

(२)

नवलकी मांकी हालत वही हुई, जो उस लकड़ीके कुन्देकी होती है, जिसे कारवां वासे जलती छोड़ सुबह अपनी राह लेते हैं। उस लकड़ीके लिये जलकर राख हो जानेके लिवा दूसरा चारा ही क्या रह जाता है? नवलकी मांके जीवनमें जो एक बार आग लग गयी। उसे उसके मरने के पहले बुझा ही कौन सकता है? हिन्दू विधवाका जीवन जल-जलकर राख हो जानेकी ही तो कहानी है! जलके एक शीतल छींटे की व्यवस्था उसके तथाकथित धर्म और समाजमें उसके लिये कहां रखा गया है?

नबलकी मांको अब अपने लिये कोई चिन्ताकी बात न थी। हां, उसे चिन्ता थी, तो केवल एक बात की, कि कहीं जिस आगमें वह जल रही है, उसकी लपटोंकी चपेटमें उसका नन्हा, कुसुम-सा कोमल नवल भी न आ जाय। पहले वह अपने पतिकी पत्नी और नवलकी मां थी। पति मर गया, उसका पत्नीत्व सदाके लिये समाप्त हो गया। अब वह केवल मां है—मांकी असीम ममता, अगाध वात्सल्य, अप्रतिभ स्नेहकी साकार प्रतिमा। नवल, नन्हा नवल ही अब उसके जीवनका सहारा है, उसका सर्वस्व है। उस पर भी उसके दुर्भाग्यकी काली छाया बचपनसे ही पड़ जाय, यह उसकी मांके लिये कैसे सह्य हो सकता था! अपने दुखी हृदय पर पत्थर रख वह अपने नन्हें नवलके भविष्यकी रंगीन कल्पनाओंके जालमें उलझे हुए अपने विरान जीवनके कितने ही ऐसे चित्र देखने लगी, जिनमें उसके मातृत्वके लिये भी एक प्रकारका सुख, तृप्ति और संतोषकी शीतल छायामें झलमला रहीं थी। उसके हाथ पुनः पहले ही की तरह पालना झुलानेमें व्यस्त हो गये, और उसके होंठोंपर पुनः लोरियां गुनगुनाने लगे। नवलकी किलक उसे वापस मिल गयी। वात्सल्यका रस या स्नेहका मुरझाया पौधा पुनः लहलहा उठा।

नवल जब कुछ बड़ा हो गया, और उसकी मां उसके कारण ही जीवनमें कुछ रस लेने लगी, तो नवलके मामाने एक दिन अपनी बहिनसे कहा—"नवलके पिता का घर-द्वार, जगह जमीन्दारी सालोंसे यों ही पड़ी है। मैं चाहता हूं कि वह सब अब नवलके नाम करा दी जाम। और अगर तुम चाहो, तो कभी-कभी वहां भी हो आया करो। अपना घर है। वहां भी दिया-बत्ती जलाना चाहिये। खड़ा घर कहीं गिर गया, तो हजारोंकी मालियत बरबाद हो जायगी। और दुनिया बड़ी खराब है, किसीकी जगह जमीन्दारीपर उचित या अनुचित रूपसे गेर आदमी भी हाथ लगाना शुरू कर देते हैं। अगर तुम चाहो, तो यहां से भी किसीको साथ ले जा सकती हो।"

नवलकी मांने नवलके भविष्यके लिये ही अपने भाईकी उचित बात मान ली। भाई उसे बहुत मानता था। उससे बढ़कर उसका कोई दूसरा शुभेच्छु ही कौन था?

भाईके साथ ही वह अपने गांवके घरमें आ गयी। भाईने घरका सब प्रबन्ध ठीक करा दिया। कागज-पत्तर नवलके नाम मुरत्तब करा दिये। खेतोंका बन्दोबस्त करा दिया। नवलका नाम प्राइमरी स्कूलमें लिखा दिया। सब कुछ ठीक करा कर वह जल्द-जल्द आनेकी बात कह अपने घर चला गया।

मांको उस घरमें अकेले रहते पहले बहुत दुखदायी ज्ञात हुआ। भाईके यहां रहते समय भरे घरमें अपने दुखोंको भुलाये रखना, हृदयको बहलाये रखना आसान था। यहां सूने घरमें अकेली जो पड़ गयी, तो भूली हुई दुखद स्मृतियां पुनः ताजी हो गयीं, सच तो यह है कि अब जाकर उसे लगा कि सचमुच वह अकेली हो गयी। नवल स्कूल चला जाता, तो वह यादोंको ले घंटों बिलख-बिलखकर रोती, बिसूर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बिसूर कर तड़पती। पर अब तो उसे इसी घरमें रहना है। दुखसे घबराकर भाईके घरमें आखिर वह कब तक पड़ी रह सकती है? नवलके इस घरको ही तो उसे बसाना है, गुलजार करना है। धीरे-धीरे वह अपने तड़पते हृदयपर काबू पाने लगी। स्वयं ही अपनेको समझा समझा अपनेको संभालने लगी।

स्कूलमें नवलका साथ कुछ ऐसे लड़कों से हो गया, जिनकी कुछ बुरी लतें थीं। बुरे-भलेका ज्ञान लड़कोंमें कहां होता है, जो वे लतोंको अच्छी या बुरी समझ अपनायें या छोड़ें। वहां तो बुरा या भला जो भी होता है, खेलों-खेलोंसे शुरू हो लतोंका का रूप धारणकर लेता है। उनमेंसे कुछ को ताश और कौड़ी खेलनेकी लत थी। नवलने भी धीरे-धीरे उनके उन खेलों में दिलचस्पी लेना शुरू किया। लड़कोंने उसका स्वागत किया, और वह नायाब खेल उसे भी सिखा देनेका जिम्मा लिया।

दावात भट्ठे और किताब वगैरहके लिये मांसे पैसे मांग नवल ले जाता और ताश और कौड़ियोंके खेलमें हार जाता। फिर पैसेके लिये घरके ताकों, पटनियों और मुक्के मुक्कियोंकी टटोलता। कभी-कभी मां उसे वैसा करते देखती, तो पूछती–"क्या खोज रहा है बेटा?"

नवल चोरकी तरह आंखें झपकाकर कहता–"कुछ नहीं, मां।"

मां कुछ समझती, कुछ नहीं समझती। फिर पूछती–"तुझे कुछ चाहिये क्या?"

नवल भोला बन कहता–"दावात खो गयी मां, एक पैसा दो।"

मां पैसे दे ही न देती, बल्कि यह सोच कर कि नवल उससे पैसा मांगनेमें हिचकता है, एक आध पैसा यों ही किसी ताक पर रख देती। उसे क्या मालूम था कि कि नवल उन पैसोंसे अपनी बरबादीका जाल बुन रहा है, जिसमें एक दिन वह ऐसे फंस जायेगा, कि आजीवन छुटकारा पाना कठिन हो जायगा।

समय बीतता गया। कौड़ियोंकी जगह पैसोंने ले ली। कई लोगोंने नवलको जुआ खेलते देख मांसे शिकायत की। मांने उसे डांटनेकी सोची, पर नवलके सामने वह कुछ कह न सकी। उसकी समझमें न आता आता था कि कैसे वह नवलको डांटे, समझाये और कहे कि 'बेटा, जुआ खेलना बुरा है।' इसके विपरीत वह यह सोचकर स्वयं को ही समझा लेती कि अभी लड़का है, बड़ा होनेपर खुद ही संभल जायगा। उसे क्या मालूम कि एक बार उस राह पर जिसके कदम उठ जाते हैं, उसके लिये अपनेको रोक लेना असम्भव हो जाता है।

और हुआ भी वही। ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता गया, त्यों-त्यों उसका चस्का भी बढ़ता गया। अब वह रुपयेकी सन्दूकचीमें भी हाथ डालने लगा। मांको जब यह मालूम हुआ, तो उसका कलेजा धक् से कर गया। जिस नवलके बापने जुएके विरुद्ध अपनी जान तक की बाजी लगा दी थी, उसीका बेटा जुआड़ी हो गया। हे भगवान, यह क्या होने जा रहा है? वह पूजाके समय भगवानसे नवलको इस बुरे चस्केसे बचा लेनेकी प्रार्थना करती। अपने पतिको स्मरणकर कहती–"देखते हो तुम्हारा बेटा क्या कर रहा है! उसकी रक्षा करो, नाथ!" यह सब वह करती, पर नवलके सामने आते ही न जाने उसे क्या हो जाता, कि वह उससे कुछ न कह पाती और अब कुछ कहनेसे ही क्या लाभ था? पानी सिरसे निकल चुका था। कच्ची कैनमें प्रौढ़ता आ रही थी।

लोग उसे जुआ खेलते देखते तो उसके पिताको यादकर कहते–"मौलवी के घरमें शैतान!" कई उसे समझानेकी कोशिश भी करते, पर किसी भी बातका उस पर असर न होता। उसकी समझमें न आता, कि आखिर वह क्या बुरा कर रहा है? फितनेबाज साथियोंका भोला शिकार नवल बड़ी बेहाईसे लोगोंकी बात एक कानसे सुन दूसरे कानसे निकाल देता। लोग उसे डांटते हिचकते। कहावत है कि विधवाका इकलौता लड़का सांड़ होता है। उसे छेड़ना खतरेसे खाली नहीं होता। पर बात ऐसी न थी। नवल बड़ा होकर भी गायकी तरह सीधा और गदहेकी तरह बेहाया था। उसका भोला-भाला चेहरा, उसकी मासूम आंरू देखकर किसीको भी विश्वास न होता, कि वह सचमुच वैसा होगा। उसकी यही बातें थीं, जो मांके साथ दूसरोंका मुंह भी बन्दकर देती। नहीं तो मांने अगर एक बार भी उसे डांट दिया होता, तो नवल कदाचित सदाके लिये सुधर जाता। पर मांके पास वैसा करनेका हृदय ही कहां था। कितनी बार उसे डांटनेकी उसने सोची, पर सामने आते ही उसके होठोंपर आये शब्द रुक जाते। उसके अन्तरमें कोई बोल उठता–न न ऐसा न कर! कहीं बेटेको बुरा न लग जाय!'

दिन बीतते गये। नवल बड़े-बड़ोंका बाप भी बैठने लगा। एक दिन गांवका सुनार मांके सामने आ, उसकी ओर कड़े बढ़ाकर कहा–"नवल बाबू इन्हें मेरे पास लाये थे।"

मांकी दृष्टि कड़ों पर पड़ी, तो कांप उठी। उसके मुंहसे एक चीखसे निकल गयी–ध्रं!"

मैंने आपके घरानेका नमक खाया है, मालकिन! और कोई होता, तो इन कीमती सोनेके कड़ोंको कुछ दे दिलाकर हड़प हड़त लेता है। नवल बाबू आजकल जुए के पीछे अन्धे हो रहे हैं। उन्हें ठग लेना कोई कठिन बात नहीं।" सोनारने कहा।

मांकी आंखोंसे टप-टप आंसू चू पड़े। वह उठकर अन्दर गयी और पचास रुपये सोनारको दे बोली–"उसे दे देना। और कड़े मेरे पास आ गये, यह बात उससे न कहना!"

मगर मालकिन, आप यह क्या कर रही हैं? नवल बाबूको अपने ही हाथसे जुआ खेलनेके लिये रुपया दे रही हैं?" सुनार अकचका कर बोला।

"तुम जाओ!" मैंने कहकर दरवाजोंको बन्द कर लिया। अन्दर पूजाघर में जा ठाकुरकी मूर्तिके सामने फूट-फूटकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रो पड़ी । इस घटनाके बाद उसे चाहिये था, कि गहनोंको कहीं ऐंसी जगह छिपा दे जहां नवल खोजकर भी न पा सके । पर उसने वैसा भी न किया । उसके ख्यालमें यह बात बिजलीकी तरह कौंध गयी कि नवल बहुत आगे बढ़ चुका है । घरमें उसे कुछ न मिलेगा, तो दूसरी जगह वह हाथ लपकायेगा उस हालतमें उसके घराने पर जो कलंक लग जायगा, वह अपने घरकी बरबादीसे कहीं भयानक होगा ।

नवल खेलता गया और हर जुआड़ी की तरह हारता गया । जितने वाला जुआड़ी तो दुनियामें कस्हीं दिखा नहीं । हार-जीत के इस खेलका अन्तिम परिणाम हार ही दिखाई पड़ता है । जब सब हारते ही हैं, तो पता नहीं कौन जीतता है ?

नवल एक-एक गहनेको चुरा सोनार के पास पहुंचा देता । सोनार उसे उसकी मांको वापस कर जाता । मां नवलको देने के लिये उसे रुपये दे देती । हां, जो जेवर सोनार उसे दे जाता उसे वह अवश्य कहीं और छिपा देती, ताकि नवलको यह शक न हो, कि उसके बेंचे गहने कैसे फिर जेवर-दानमें वापस आ गये ।

मामा महीने- दो महीने पर बराबर आया करते, और एक दो दिन रह, सब देख-भालकर चले जाते । उन्हें नवलके कारनामोंका पता न था । पर अबकी जब वह आये, तो गांवके कई आदमियोंने नवल के बारेमें शिकायत की, कि नवल पक्का जुआड़ी हो गया है । वह घरकी मिल्कियत बरबाद कर रहा है । मां सब कुछ जानकर भी अनजान बन फूंकते घरको देख रही है । मामाको यह बात सुनकर लगा, कि जैसे उन्हें सांप सूंघ गया हो । उन्होंने घर आ बहनसे पूछा—"लोग कह रहे हैं कि नवल पक्का जुआड़ी हो गया है । क्या यह बात तुम्हें मालूम है ?"

"हां" नवलकी मांने गंभीर होकर उत्तर दिया ।

"जानकर भी तुमने उसे रोका नहीं ?" कुछ क्षुब्ध हो वे बोले ।

"रोक न सकी," वैसे ही स्वरमें उसने कहा ।

"रोक न सकी ? इसका क्या मतलब ? तुमने उसे कभी मना किया ?"

"नहीं !"

"क्यों ? क्या तुमने लाड़-प्यारके वशीभूत हो जो अन्याय उसके भविष्यके प्रति किया है, जानती हो उसका परिणाम क्या होगा ?"

"नहीं ।"

"तुमने इसका जिक्र कभी मुझसे क्यों न किया ?"

"तुम क्या कर लेते ?"

"मैं उसकी हड्डी तोड़ देता ! और देखता, कि फिर कैसे वह जुआका नाम लेता है । उसकी यह मजाल कि..... वह दांतोंकी पिसपिसाहटमें बाकी शब्द चबा गये । नवलकी मां किंचित मुस्कराई । फिर गंभीर हो बोली—"किसीका डर क्या हमेशा बना रहता है, भैया ? तुम तो नवल के पिताको जानते थे न ! दुनियामें वह अगर सबसे अधिक किसी वस्तुसे नफरत रखते थे, तो वह जुआ था । जुआ खत्म करना ही उनके जीवनका लक्ष्य था । वह जहां कहीं भी गये जुएके पीछे पड़े रहे । पर सच कहती हूं भैया, वह कभी भी इस काममें लाख सख्तियां कर भी सफल न हो सके । वह अड्डों पर छापे मारते, कितने ही जुआड़ियोंको जेल भिजवा देते, किसानों को मारते-मारते बेदम कर देते, फिर भी जुआ खत्म होनेका नाम न लेता । कभी-कभी अपने जी-तोड़ प्रयत्नमें असफल हो झुंझला कर वह मुझसे कहते—'नवलकी मां, देखता हूं, कि किसी भी बुराईको केवल सख्तियोंसे ही दमन नहीं किया जा सकता । उसका अन्त तो तभी हो सकता है, जब जब बुराई करने वाले स्वयं अपनी किसी अन्त प्रेरणासे बुराईको बुराई समझ त्याग दें । ऐसा होनेके लिये हर घरमें एक वातावरण तैयार करनेकी आवश्यकता होती है, जिसमें पड़कर बुराई करने वालेको को एक न एक वैसी अन्त प्रेरणा हो जाय और वैसा वातावरण तैयार करनेके लिये आवश्यक है, कि आदमीकी आधारभूत मनोवृतियोंके समझनेका प्रयत्न किया जाय। हमारे हमाजकी दशा इस समय इतनी गिरी हुई है, कि सख्तसे सख्त दण्ड कानून, दण्ड व्यवस्था, पुलिस, फौज सब कुछ रहते भी अपराधिधोंकी मात्रामें तनिक भीकमी नहीं हो रही है । फिर भी हम यह सोचने का कष्ट नहीं करते, कि अखिर गलती कहां है, जो सब कुछ प्रयत्न होते भी हम असफल ही हो रहे हैं । जब तक इस सामाजिक व्यवस्थाका आमूल परिवर्तन नहीं हो जाता, तब तक ये बुराइयां खत्म नहीं की जा सकतीं ।' यह कहनेसे मेरा मतलब यह नहीं, कि मैं यही सब सोचकर ढील दे रही हूं । पर भैया इतना तो है ही, कि एक दिन वह जरूर होश करेगा । वह नहीं समझता कि. वह अपने को बरबाद कर रहा है । जिस दिन उसे अपनी बरबादीका ज्ञान हो जायगा, उसी दिन वह उस बरबाद करने वाली बातको ठीक-ठीक समझ पायेगा । तभी शायद वह उसे त्याग भी दे । यह सब मैं तुम्हें समझानेके लिये ही कह रही हूं । पर सच तो यह है भैया, कि मैं उसे किसी प्रकार भी रोकनेसे अपनेको असमर्थ पा रही हूं । भाग्यकी बात कौन जाने ?

**पर मुझे कभी भी इस बातका विश्वास नहीं होता, कि नवल मेरे स्नेह, प्यार और दुलारके रहते बरबाद हो जायगा । एक न एक दिन तो उसे अपनी मां को, उसके प्यारको समझना ही पड़ेगा । तुम सब कुछ मेरे भाग्य पर छोड़ दो । उससे कुछ नकहो। बरबादीकी नीवपर जीवनका उठजाना कोई असंभव बात नहीं । किन्तु सख्तियों से तो जीवनकी बढ़न वैसे ही रुक जाती है, जैसे कोई पौदा चट्टानके नीचे दबकर ।"**

**मामाकी समझमें कदाचित कुछ न आया । वह कुछ बुदबुदाते हुए बहनके पाससे उट गये ।**

**(३)**

**नवलका भोलापन देखिये, कि वह गहने चोरी करके ले जाता । सोनारके**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यहां किसी दामपर बेंच देता । डरता, कि कहीं मांको उसकी चोरीकी बात मालूम न हो गई हो । पर मांके व्यवहारमें किसी प्रकारका संदेहात्मक अन्तर न पा सोचता, कि मांको कुछ नहीं मालूम । जैसे मां को मालूम हो जाता, तो वह चोरी करना बंद ही नहीं कर देता, बल्कि कहीं जाकर डूब भी मरता ! साथ ही उसे इस बातका भी ख्याल न होता, कि आखिर एक-न एक दिनतो क्लई खुल ही जायगी । तब ?और उसके बेहयापनकी हद थी कि लोग उसके मुंहपर उसे जुआड़ी कहते, उसे घृणाकी दृष्टिसे घूरते, पर उसपर उसका कोई असर न पड़ता । वह सोचता, कि जब तक मांको ये बातें मालूम नहीं हो जातीं, उसे दूसरोंकी बातोंकी चिन्ता करनेकी कोई न्वश्यकता नहीं । ऐसा था गायकी तरह सीधा और गदहेकी तरह बेहया नवल । एक विचित्र ही जीव था वह । मां की मुक्त गोदमें पला हुआ, जैसे प्रकृतिके मुक्त आंचल में पला हुअ एक जंगली पौधा ।

करते-करते वह दिन भी आया, जब उसने आखिरी जेबर निकालनेके लिये जेवरदानमें हाथ डाला । उस वक्त उसका हृदय कांप उठा । अब तक जब-जब वह जेवर ले गया है, बराबर सोचता रहा है, कि अबकी वह जरूर बाजी मारेगा । और जब काफी रूपये उसके हाथ लग जायंगे, तो वह मांके जेवर खरीदकर जेवर दान फिर भर देगा । पर वह वक्त कभी आया नहीं । वह बात नहीं, कि वह सदा हारता ही था । जीतता भी वह था । पर जीतकर भी वह कुछ कर न पाता था । और जीतने का लोभ उसे फिर इस तरह हरा देता, कि फिर जेवर बेचनेकी जरूरत पड़ जाती । आज आखिरी जेवर देखकर उसका हृदय कांप उठा वह सोचकर कि कहीं वह इसे भी हार गया, तो फिर कैसे वह मांका खाली हुआ जेवरदान भरेगा ? अन्तरमें बैठी मायाने कहा, इस बार तुम जरूर बाजी मारोगे !' ?और कहीं हार गया, ? तो' उसने पूछा । मायाने कहा –'हार की बात सोचकर इस स्थितिमें इस अकेले गहनेको छोड़ भी दो, तो परिस्थितिमे क्या अन्तर आ जायगा ? और अगर जीतकी बात सोच कर एक बाजी और लगाओ, तो शायद . . . शायद '

ठीक तो है । उसे यह आखिरी दाव तो हर परिस्थितिमें लगाना ही पड़ेगा । वह जेवर ले गया । सोनारसे रुपया पा गया । पर अबकी यह बात बार-बार उसके मस्तिष्कमें गूंज रही थी , कि कहीं इस बार भी वह हार गया तो?

और सचमुच जब वह हार गया , तो उसका कलेजा धकसे कर गया ; अब, हां, अब खाली जेवरदान उसके आंखों के सामने ऐंसे घूम गया, जैसे किसी खूंखार सैकड़ों बार हार चुका था, पर अबकी हार खा,नउसे लगा , कि सच्ची सच्ची हार उसकी आज ही हुई है , जिसके बाद जितनेकी आशा हमेशाके लिये नष्ट ही गयी । अबतक हारने के लिए उसके पास कुछ था, पर अब वह बिलकुल खूंखा रह गया । जिस दिन मांको मालूम होगा , कि उसके जेवर बिक गये, उस दिन, ओह, उसका क्या हाल होगा । नवल , यह तुमने क्या कर डाला ? नवलकी दशा उस वक्दत उस आदमी की थी जो बार-बार हार जीतकर एक दिन हमेशाके लिए जीवनकी बाजी हार गया हो । जिसके पास जीवनकी राहपर चलनेके लिए सम्बलका एक कण भी शेष न रह गया हो । उस दिन वह बेहद उदास हो गया । हृदयमें दबा हुआ चोर, उसके मुंहपर ऐसा कालिख पोत गया था, कि लाख प्रयत्न करनेपर भी वह उसकी छायाको चेहरेसे हटानेमें अहफल रहा । हार और अपराधका भवयावह सन्नाटा छा गया उसके मस्तिष्क और हृदयमें ।

मांने उसे उस हालतमें देखा, तो सब कुछ समझ गयी । दो तीन दिनतक नवल चुपचाप घरमें ऐंसे उदास और सुस्त पड़ा रहा कि जैसे उसमें शक्ति ही न रह गयी हो जीवनकी स्फूर्ति ही सदाके लिए नष्ट हो गयी हो । रहरहकर फड़ोंका दृश्य उसकी आंखों के सामने चक्कर लगा जाता । सिक्कों की खनखनाहट , हार-जीतका दबा हुआ शार उसके कानोंमें गूंज उठता। बार-बर मुट्ठी बन्द करता अअघर खोलता । अऔर खुला हुआ खाली हाथ हसरत भरी नजरसे देख एक करुणा और निराशामें लितटी हुई हल्की मुस्कान मुस्करा उठता । कभी-कभी कुछ बुदबुदाता भी । मां छिपी छिपी उसकी यह दशा देखती । उसकी आंखें भींग जातीं मुंहसे ठंडी आह निकल जाती ।

हार जीतका मूल्य जीवनमें पहिली बार सनमझकर भी नवल स हार जीत के खेलमें इ़तना कगर्क हो चचुका था ,कि उसे लगता कि यों ही जीवमनभरहहार-जीतके इस खेलको जारी रखनेका साधन उसके पास होता । तो क्या अच्छा होता? पर ऐसा नहीं , कि उसे इस बातका ज्ञान न हो गया हो, कि साधन किसीके पास भी असीम अनन्त तो होता नहीं , कि कभी यह खत्म होनेपर नजर हो न आये । इस तरह उसके हृदयमें एक द्वन्द्व भय उठ खड़ा हुआ । जिसका परणिाम बार-बार उससे यही क कि यदि उसके पास इससे भी अधिक साधपू होता, तो भी तो एक न एक वह इसी परिस्थिति को पहुंचता । फिर क्यों न वह हार-जीत के इह खेलको यहीं समाप्त कर दे ? पर किसी दूबरे व्यवहायका उसे अबतक ज्ञान न था । जुएट्ट नशेमें अबतक खोया उसका मस्तिष्क नशेकी खुराक न पा उखड़ा-उखड़ा सा रहता । उसकी समझमें न आता कि वह क्या करे । नशेका अभ्यस्त उसका मस्पितष्क उसे बस नशे की ही याद दिलाता और क्कुछ नहीं ।

मांसे यह हृदय और न देखा गया । वह पता नहीं हृदय और मस्तिष्ककी किस परिस्थितिमें पड़ पुनः सोनारके लौटाये सारे गहने उस खाली जेवरदानमें भर दिये वैसा करते उसे कितनी पीड़ा पहुंची , इस का कोई वर्णन नहीं कर सकता । वह मरी आंखोंको जेवरदानकी ओरसे शीघ्रतामें फेर पूजा घरमें जा ठाकुरके चरणोंमें गिर गयी । उसके पास अय रुपये भी न रस गये थे । उसके सोचनेकी बात यह थी,किअबकि जब सोनार गहना वापस करनें जामगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तो उसे वह नवलके लिए रुपये कहासे देगी ?

उस दिन नवरके दिमागमें भी पता नहीं क्या आया ,कि वह यह सोचकर , कि शायद जेवरदानमें कोई अंगूठी-वंगूठी किसी कोनेमें छिपी पड़ी हो , हृदय और मस्तिष्क के कड़े विरोधके बावजूद भी , जेवरदानकी ओर बिल्लीकी तरह पांव रखते न चोरकी नतहर इधर-उधर चौकन्नी नजरों से देखते , हृदयमें धड़कन और मस्तिष्कक में भयका झन्नाटा लिए बढ़ गया । कांपते हाथोंसे उसने ढक्कन खोला, तो उसके आश्चर्यका ठिठकाना न रहा यह देखकर , कि एजेवरदान गहनोंसे भरा है । उस वक्त उसकी हालत कुछ वैसी ही हुई , जो मीर-कासिमकी डाकुओंका खजाना अप्रत्यारित रूपमें देखकर हुई थी । उस वक्त उसके दिमागसे यह बात भी निकल गयी , कि उसे जल्दीसे कोई जेवर निकाल चम्पत ही जाना चाहिए । उसकी समझमें न आ रहा था ,कि खाली जेवरदान कैसे भर गया । चकराया हुआ दिमाग लिए उसने हाथ लगाकर एक जेवर निकाला । देखा, तो वह सोनेका कड़ा था उसकी आंखोंके सामने जैसे कुछ बिजली सी कांध गयी । एं, यह तो वही कड़ा है , जिसे पहिली बार उसने चुराया थो । यह वहां फिर कैसे आ गया । वह आंखे फाड़-फाड़ कर देखने लका । उसका मस्तिष्क और भी चकरा गया । सहसाउसे लगा , कि दरवमाजेपर किसीके पैरोंकी आहट हुई है । उसने भय-कंपित आंखोंको फेरा, तो दरवाजेपर मोंको खड़ी पाया । उसके पैरोंके नीचेसे जैसे जमीन खिसक गयी । कड़ा हाथसे छूटकर झन्नसे फर्सपर गिर पड़ा । उसके मुंहसे भय-विकृत एक चीख निकल गयी । –"मां"

"बेटा" ! भरे गलेसे कहती मां उसके पास आ गयी ।

"मां", यह कड़ा····"टूटे स्वरमें कड़ेकी ओर फटी आंखोंसे देखता वह बोल पड़ा ।

यहकड़ा वही है , बेटा, जिसे तू सोनारके के हाथ बेंच आया था । भला तुम्हें यह करना चाहिए था , बेटा? रुपये की गरू-रत थी , तो तुयने मुझसे क्यों नहीं मांगी ?" मांने नवलके कन्धेपर हाथ फरघकर पूछा ।

"मां, तुम्हें नहीं मालूम कि मैं उस रुपयेसे ····"

"मुझेसब मालूम है , बेटा ! बीचमेंही में मां बोल पड़ी ।

"तुम्हें मालूम है , तुम्हें मालूम है , मां! फिर भी··· ओह !" कहते मांकन्धे पर सिर रख नवल फूट-फूट कर रो पड़ा

नवरकी पीठ सहलाती मां बोली–"मे सब तेरा ही तो है । तू चाहे इसे गढ़ेमें फेंक दे,या·····"

"मां" बीच हीमें तड़पकर नवल बोला –" बस, बस,करो, मां ! मुझे····"कहकर वह जोर-जोरसे सिसक पड़ा ।

"बेटा, तू अपने पिताको नहीं जानता जुएके वे सबसे बड़े दुश्मन थे । जेए हीको बन्द करनेके लिए उन्हें जानतक दे देनी पड़ी। आज उनकी स्वर्गीय आत्माको अपने बेटे को ही जेुआड़ी बना देख कितना दुख होता होगा , इसका तू अन्दाज नहीं लगा सकता ! कहते-कहते पतिकी कसकती याद उसके चलती हुई हृदयमें एक शूलकी तरह चुभ गयी । वह फफक पड़ी । नवलका पश्चा-त्ताप और ग्लानिसे बुरा हाल था । ओह, उसने दुखियारी मां और स्वर्गीय पिताको अपने काले कारनामेंसे कितना दुख दिया । काश, मांने पहले ही उसे रोका होता ! पर हृदयकी पूरी दृढ़तासे बोल पड़ा–" मुझे क्षमा कर दो , मां ! अब कभी मैं ऐसा न करूंगा !"

"मैं जानदी थी , बेटा कि तू किसका बेटा है । मेझे यही आशा थी ।"

मां पुनीत आशीर्वादोंकी वर्षा करते बोली ।

नवल उसके चरणोंमें झचेक गया ।

(४)

नवलने जीवनकी दूसरी राह पकड़ी! तो लगा कि पहली राहपर कभी नजर उताकर भी न देखगा । धर–गिरहस्ती खतवारीके काभोंमें वह एक तरहसे रम-सा छा गया । पहले उसे अपनी प्रवृत्तिसे काफी द्वन्द्व करना पड़ा । पर धीरे-धीरे वह अपनी दुर्बलता पर विजय पाता गया । भले घोड़ेको एक चाबुक, और भले आदमीको एक बात ही काफी होती है । भली मां और भले पिताका बेटा नवल भले ही कुछ दिनोंके लिये कुपथगामी हो गया हो, पर एक बार जो उसने उससे मुंह फेरी तो फिर उधर ताक कर भी न देखा जिस प्रगतिसे वह उस ओर बढ़ा था, उसी प्रगतिसे वह दूसरी ओर भी बढ़ा । पर पिछली बातें कभी-कभी उसके दिलमें चुटकियां न लेती हों, ऐसा भी कैसे कहा जा सकता है ? सालोंका शराबी शराब पीना छोड़कर भी शराबकी बातोंको कैसे भुला सकता है ?

कभी-कभी नवलके जुआड़ी साथी मिलते, तो उससे पूछते–"क्यों, भाई, अब आना क्यों बन्द कर दिया ?"

नवल भोलेपनसे कह देता–"अब वह सब मैंने छोड़ दिया ।"

"भला क्यों ?" वे पूछते ।

यों ही," नवल कहता ।

"भाई, यों ही तो हम भी सैकड़ों बार छोड़ चुके हैं । पर सच तो यह है, कि इस गलीमें एक बार आकर, इससे छुटकारा पा जाना आसान नहीं है । सच कहो, आखिर क्या बात है ?" वे पूछते ।

"मैंने सचमुच छोड़ दिया है," नवल और भी अधिक भोलेपनसे कहता ।

उसके साथियोंमेंसे कोई तीखा व्यंग करता–"अरे, भाई, सच तो यह है कि उसके पास अब माल-वाल नहीं रह गया ।

नवल बेहायाकी तरह हंस देता यह सुनकर, और चल पड़ता एवहां से ।

मामा आये, तो नवलकी मां ने उन्हें नवलकी बात कही । उन्हें उसकी बात पर विश्वास न हुआ । कहा–"यह तो देखनेसे सम्बन्ध रखता है ।"

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"देखोगे क्या, भैया ?" नवलकी मां ने कहा–"क्या बेटेको देखनेसे लिये मांसे भी अधिक तीव्र दृष्टि किसीकी होती है। अब छोड़ो यह सब बात। जल्द ला दो एक बहू मेरे घर।"

"ओ, तो यह बात है। बेटेको दुल्हा बना देखनेके लिये ही तो कहीं बेटेका दुर्गुण छिपानेका प्रयत्न तुम नहीं कर रही हो। पर इसके लिये किसी भूमिकाकी जरूरत ही क्या है ? तुम जब चाहो बहू घरमें आ जाय।"

भाई उसकी बात पर विश्वास नहीं कर रहा है, यह जान उसे दुख जरूर हुआ। पर उसने उनका कोई प्रतिवाद न किया। खुदका सोना चोखा, तो डर काहे का ? बोली–"जो भी हो अगली गरमीको लगन में हो जाय नवलका विवाह !"

हो जायगा।" मामाने ऐसे कहा, जैसे इसमें कोई कठिनाई ही न हो। विधवा बहनका बेटा चाहे जैसा भी हो, भाईको तो अपनी बहनको ही देखना था। उसका घर बस जाय, वह कैसे न चाहता। फिर जिम्मेदारियां भी तो आदमीको बदल देती हैंने शायद नवल सुधर ही जाय। यही सोचकर मामाने नवलकी शादी ठीक करा। में पूरी दिलचस्पी ली।

और गरमीमें नवलका विवाह धूमधामसे हो गया। विधवा मांको जैसे नवजीवन मिल गया। बरसोंकी खोई उमंग उसके अंग-अंगमें पुनः फिरकने लगी। चांद सी बहू पाकर फूली न समाई। अंधेरा घर खुशीकी चांदनीसे उज्वल ही खिल-खिला उठा। बहूकी पाजेबोंको झुनझुनसे पूरे घरका वातावरण संगीतमय हो झूम-झूम उठता।

नवल रम गया अब। पहले कभी-कभी जो उसका मन बाग तुड़ा पुनः अपनी पुरानी राह पर जानेको मचल उठता था, अब दुहरे बंधनमें ऐसे जकड़ गया, कि पूरी ताकत लगाने पर भी तोड़ना असंभव हो गया। मां सदा बेटेका सूक्ष्मसे सूक्ष्म अध्ययन किया करती थी। पहले कभी उसे उदास देखकर उसे लगता था, क नवल फिर कहीं बहग न जाय। पर अब उसने देखा, कि वैसी संभावना कल्पनातीत हो गयी। उसने सुख और संतोषकी एएक सास ली।

दिन बीतते गये।

और आज दीवालीकी रात है। नवल शामसे ही परेशान है। पुराना मर्ज उभरनेका चिन्ह दिखा रहा है। फड़ोंका दृश्य उसकी आंखोंमें नाच रहा है। सिक्कोंकी खनखनाहट उसके मस्तिस्कमें झनझना रही है। हार-जीतके मुक्त शोर उसके कानोंमें गूंज रहे हैं। आज दिवाली है। सब स्वतन्त्र हैं जुआ खेलने को। और वह ?

परेशानीमें बार-बार वह घर जाता है, बाहर आता है। बाहर चबूतरे पर टहलता है। जुआ खेलने जाने वाली टोलियों को हसरत भरी निगाहोंसे देखता है। जब देखा नहीं जाता तो परेशान हो घर में घुस जाता है। अन्दर मां और पत्नी लक्ष्मी पूजामें व्यस्त हैं। वहां कोई दिलचस्पी उसे नहीं मालूम होती। वह फिर बाहर आ जाता है। मुट्ठियोंको बार-बार खोलता और बन्द करता चबूतरे पर टहलता है। पिछली दीवालीके दृश्य उसकी आंखोंके सामने स्मृतियोंकी रेखाओंमें खिंच जाते हैं। वह बार-बार कोशिश करता है कि वे दृश्य उसके मस्तिष्कमें न उभरें, वे बातें उसे याद न आयें। पर उसे वे दृश्य अनायास आ-आ परेशान कर जाते हैं। वे यादें उसे पड़पा जाती हैं। रह-रह कर वह झुंझला उठता है। आज दिवाली है। न खेलने वाले भी आज खेलते हैं। कोई अयराध नहीं, कीई पाप नहीं, आज खेलनेमें। पर वह ?

दीप-मालाओंसे पूरा गांव जगमगा उठा। लगता था जैसे आसमानके तारे जमीन पर उतर आये हैं। चारों ओर प्रकाश सौन्दर्य विकीर्ण हो रहा था। अनगिनत दीप-मालाओंके जगमग प्रकाशमें पूरा गांव एक स्वप्न नगरीकी तरह मोहक हो उठा था। पर नवलको जैसे इन बातोंसे कोई दिलचस्पी न थी। उसे जैसे कुछ दिखाई न देता था। उसके मस्तिष्क और हृदयमें ऐसा गहन अन्धकार छाया था, कि लाख-लाख दीप भी उसमे प्रकाशकी एक किरण का प्रकाश करनेमें असमर्थ थे। वह उस अंधेरी दुनियामें ही चक्कर लगा रहा था, जहां हथेलियों पर चित्तियां झनझनाती हैं, जहां सिक्के खनखनाते हैं, जहां हार-जीतका रह-रहकर शोर उठता है।

उसे मालूम ननहीं, कि उसका घर भी दीप-मालाओंसे जगर-मगर कर रहा है। उसे मालूम नहीं कि जिस चबूतरे पर वह टहल रहा है, उस पर भी कतारके कतार दीप जल रहे हैं। ऊपर-नीचे आयें-बायें वह दीप प्रकाशोंसे घिरा हुआ है, पर उसे अन्धकारसे छुटकारा नहीं मिल रहा है। वह द्वन्द्वोंके संघर्षमें खोया है। वह मां, स्वर्गीय पिता और जुएके बीच खड़ा है। वह निश्चय नहीं कर पा रहा है कि किधर जाय ?"

"नवल आज तो आओगे न ?" बड़े जमींदारके लड़केने कहलवाया है। पूजे के बाद बैठ जायेंगे।" उसके पुराने साथी कामताने चबूतरेके पास आ कहा–"आज दीवाली है, नवल। आज भी न आओगे, तो हमें बड़ी निराशा होगी। बोलो, आओगे न?"

नवलको जैसे होश आया। वह एक क्षण तक कामताको देखता रह गया। पर कुछ बोला नहीं। भावुकताके आवेगमें बेदम-सा हो चौखट पर बैठ गया। घुटनों पर कुहनियां रख हाथोंसे माथा थाम लिया। चेहरे पर परेशानियोंके जिन्ह आये। आंखें बेहद उदासीसे जमीनकी ओर ताक रही थीं।

कामता यह कहकर चला गया–"आना जरूर !"

इस मिनन्त्रणने जैसे तवे पर पानीकी बूंदोंका काम किया। वह छटपटा-सा उठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजा समाप्त कर मां उठी, तो उसे नवलका ख्याल आया। घर में कहीं दिखाई न पड़ा। तो बाहर झांक कर देखा। नवल की बगलके दरवाजेकी चौखट पर उस तरह बैठा देख, मांका माथा ठनका। वह एक आशंकासे कांप उठी। तो कहीं फिर तो नवलका नदिमाग खराब नहीं हो रहा है? मनमें कहा–"कोई असंभव बात नहीं। न पीनेकी कसम खाये हुए शराबीको कोई शराबखानेके द्वार पर ले जाकर खड़ा कर दे तो उसकी क्या अवस्था होगी?" मांने समझ लिया, नवल क्यों ऐसा बैठा है। आज दिवाली है। जुएका त्योहार। नवल का पुराना जुआड़ी त्योहार मनानेको मचल रहा है। ओह, वह क्या करे? वह सोचने लगी। सोचते-सोचते भीतर चली गयी

"अब पूजा समाप्त हो गयी होगी। थोड़ी देरमें खेल शुरू होगा।" नवल होठों में ही गुनगुना उठा–""कामता, सुरेश, मोहन, केदार, सबके सब आये होंगे। पर मैं.....मैं ..मैं शायद..... ओह..... वे मेरी बाट जोहेंगे। कामता कह रहा था, कि मैं न जाऊंगा तो उन्हें बड़ी निराशा होंगी। तो.....तो...क्या वह सचमुज.....ओह!....."

"बेटा, नवल!" मांने दरवाजे पर आ पुकारा।

नवलके तीनों लोक प्रकाशकी तीव्रता से चौंधिया गये। उसे सहसा लगा, कि वह एक दूसरी दुनियामें आ गया। कहीं मांने उसके मनके चोरको पकड़ तो नहीं लिया? वह अकचका कर उठा। अपनी विकृत मुद्राको स्वाभाविक बनानेका प्रयत्न किया। फिर द्वार पर आ घुटे स्वरमें बोला–"क्या है, मां?"

"इधर आ बेटा!" कह कर मां अन्दर को मुड़ी। नवल उसके पीछे-पीछे।

आंगनमें दीप-मालाओंसे घिरी सौन्दर्य की जगमगाती देवी सी खड़ी थी नवलकी पत्नी। उसकी दाहिनी हथेली पर चित्तियां झनझना रही थीं, बायीं मुट्ठीमें सिक्के खनखना रहे थे। लज्जासे दुहरी हुई चमकीली आंखोंकी कोरसे वह सामने खड़े नवलको देख रही थी। नवल कुछ न समझ एक भोले बच्चेकी तरह खड़ा रहा।

मांने कहा–"आज दीवाली है। बहू जुआ खेलेगी, कौर तू भी। नहीं जानता लोग कहते हैं कि दीवालीमें जो जुआ नहीं खेलता, उसे गृद्धका जन्म मिलता है।"

"मां!" नवलकी रग-रगमें खुशीकी एक बिजली दौड़ गयी। हर्ष-विह्वल स्वर में बोला–"सच कहती हो, मां?"

"हां, बेटा यह लो!" कह कर उसने सिक्कोंसे भरी मुट्ठी नवलकी ओर बढ़ा दी। फिर नवलको सिक्के देकर हर्ष-विभोर हो बोली-"तुम दोनों खेलो। मैं देखूंगी, कौन जीतता है, कौन हारता है।"

हथेलीमे चित्तियां झनझनाने लगी। सिक्के खनखनमने लगे। हार-जीतके मीठे-मीठे शोरसे घर गूंजने लगा। बहू शर्मसे सिर झकाये,उत्फुल्ल हास्य होठों पर विखराये खेल रहीं थी। मां आंखोंमें हर्ष की चमक भरे देख रही थी। नवलका मस्तिष्क, हृदय प्रकाशसे भर गया था न वह अन्धकार था, न वह द्वन्द्व। वह खेल रहा था। पत्नीकी कोमल, लाल मुट्ठीमें सफेद-सफ़ेद चित्तियोंका हल्के हल्के हिलना देख रहा था और उसे लग रहा था, कि इस जुएमें जो आनन्द है वह और कहां? रह-रह क र वह मां को ओर देखता, जिसदे ऐसे आनन्दमय खेलकी रचना की थी।

बहू जीतती, तो मां खिलखिला कर हंस पड़ती। बहूका चेहरा मारे खुशी और लज्जाके लाल हो उठता। नवल उस चेहरे को देख सोचता, 'भगवन् करे मैं ही हारता जाऊं!'

पर जुएके हार-जीतके खेलमें ऐसा कहां होता है। कभी नवल जीतता, तो मां बहू की पीठ ठोक कर बोलती–"अब की तेरी बाजी है, बुटी।" बहू छिपी नजरसे नवलका मुस्कराता चेहरा देख सोचती, भगवान करे मैं ही हारती जाऊं।'

दोनों खेलते रहे। मां उठने लगी, तो कहा–"यही जीवनका सच्चा खेल है बेटा। खेलते जाओ यह जीवनका खेल! जब तुम हारो तो बहू जीते, जब बहू हारे तो तुम जीतो! यों जीतते-हारते बढ़े जाओ तुम जीवनकी राह पय! इस हार-जीतके खेलमें किसीकी हार-जीत नहीं होती। दोनों हार कर भी जीतते हैं, जीत कर भी हारते हैं! यों ही तुम एक दूसरेसे हारते-जीतते खुश-खुश जीवनकी डगर पर बढ़ते जाओ। मां दोनों हाथोंसे तुम दोनों पर सदा आशिर्वादोंके फूलोंकी वर्षा करती रहेगी!"

मां कमरेसे बाहर जा रही थी। पुत्र और बधू उसकी ओर उत्फुल्ल आंखोंसे असीम प्रसन्नता, अगाध कृतज्ञता, अनन्त श्रद्धा और भरे हुए देख रहे थे।

—---


रियायती दामोंपर

उच्चतम क्वालिटी की लीवर घड़ियां।

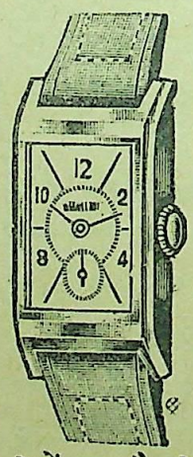

अत्यधिक सस्ती कीमतोंपर स्विट्जर लैन्डकी बनी हुई नई डिजाइनकी निहायत सुन्दर ठीक समय देनेवाली हर घड़ीकी गारन्टी सा. तीन साल। क्रोमियम केस की गोल या चौकोर १६) सुपीरियर फैन्सी डायलकी १८) बेस्ट सेन्टर सेकन्ड २१) ४ ज्वेलको गोल २०)। रेक्टेंगुलर और टोनियो आकारकी चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केसकी, ५ ज्वल २१) रोल्ड गोल्ड ५ ज्वेल की ५०) बेस्ट क्रोमियम केस ४२): रोल्ड गोल्ड ५३)। क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६३)। फ्लट शेप ४०) रोल्ड गोल्ड ६०) बेस्ट टोनियो शेपकी ७८) पैकिंग पोस्टेज माफ। हर घड़ीके साथ एक फोटो फ्रैन्च डिजाइन का दिया जाता है।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V. C.)
ऐशबाग गेट-लखनऊ


Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मनोरंजक लेख—

# ब्राह्मण देवता और उनका हिन्दू-धर्म

—श्री विनायक नानेकर

जिस तरह 'पार्सिंग शो' यानी सिगरेट 'रैमिंगटन, यानी टाइप राइटर सिगर यानी कपड़ा सीनेकी मशीन उसी प्रकार 'लहरी जवान' यानी श्रीयुत लीलाधर । उनका मकान यानी एक दुकान और उनका खेल यानी कमरेके सामानोंका सम्मेलन। किताबें कपड़े, टोपी, छाता और जते तक आपको टेबुल पर दिखायी पड़ेंगे । और तोखुद, लीलाधर को भी स्वयं टेबुल पर और कुर्सी पर आप कभी-कभी पायेंगे ।

यह प्रदर्शन देख कर कोई भी कह सकता है कि श्रीयुत लीलाधर अभी 'चतुर्भुज' नहीं हुए हैं, क्योंकि उत्तम व्यवस्था और टापटीपकीशिक्षालेनीहोतोगृहिणीबननेयागृहिणी बनानेकीआवश्यकताहोतीहै । गृहिणी बननेकी बात तो लीलाधरने स्वप्नमें भी नहीं सोची, पर गृहिणी बनानेके विचारमें वह है और इसीलिए उन्होंने आज पांडेजी को बुलाय है, ताकि यह मालूम हो सके कि उनके हिन्दूधर्म में शादी की बाबतमें कहां तक रिया यत दी जा सकती है ।

मोहल्ले भरमें पाण्डेजीकी यह तारीफ है कि वे चेहरा देखकर कुण्डली बना सकते सकते हैं और श्रीयुत लीलाधर पांडेजीका चेहरा देखकर उनकी अक्ल की पहुंच तनेका दावा करते हैं ।

"तुम पढ़े-लिखे लोगों को लज्जा तो है ही नहीं । अंग्रेजों की चटक-मटक देखकर तुम लोग भटक गये हो और अपना पूर्व भूल बैठे ।" पाण्डेजीने श्रीयुत लीलाधरके कमरेका राग-रंग देख कर ताना मारा ।

"क्या किया है अंग्रेजोंने तुम्हारा ?" लीलाधर ने पूछा ।

"अब और क्या करने का बाकी रह गया है ? तुम्हारी किताबें गयीं, चोटी गयी, मूछें गयीं, जनेऊ गया और स्त्रियोंके माथेका सिन्दूर गया । और क्या जानेका बाकी रहा ? तुम्हारा सब-कुछ लेकर उन्होंने तुम्हारे हाथ में टोकनी देकर और गले में फांसी लगाकर अपना रास्ता साफ किया और तुम ऐसे मूर्ख कि अपना सर्वस्व खोकर उनके जूतोंमें ही आनन्द मानने लगे ।

"पांडेजी, यहीं तो आप भूलते हैं । हमारे यहां सब अच्छा-हीअच्छा है । इससे वे 'अच्छा' ले गये । मगर उनके पास कुछ 'अच्छा' है ही नहीं तो हम उनसे लेते क्या ? इतने दिनकी सोहबतकी निशानी के लिये यह फैशन ले लिया है । मगर वह भी कहां हमेशाका है ! आदमीके लिये फैशन होता है, कि फैशनके लिए आदमी जन्म लेता है ।"

"देखा,देखा ! तुम लोगों केइन्हीं विचारों से हिन्दू धर्मका सत्यानाश हो रहा है । एक वह शिवाजी था, जिसने हिंदू धर्मके लिये जन्म लिया था और ब्राह्मणोंके लिये अपना जीवन न्योछावर कर दिया और एक तुम हो, जो हिंदू-धर्म पर कलंक लगानेपर तुले हो

"पाण्डेजी, हिंदू-धर्म ऐसा संकुचित नहीं है, जैसा कि तुम ब्राह्मणोंने इसे बना रखा है । हिन्दू-धर्म महान है और उसके अनुयायी भी महान हृदय और महान विचार लेवा होते हैं । शिवाजीने हिंदू-धर्मकी रक्षा के लिए जन्म नहीं लिया था, बल्कि उसने देशको स्वतंत्र करनेके लिये जन्म लिया था । शिवाजीने ब्राह्मणोंकी रक्षा की, परन्तु वह कार्य उसकी सेनाके हजारों अछतोंकी सहायता से ही सफल हो सका और तुम बेवफा ब्राह्मणोंने अपनेरक्षक अछूतोंको जातिसे निकाल दिया । तुम ब्राह्मणोंने उपकार का बदला कैसे दिया है, इसका इतिहास प्रत्यक्ष उदाहरण है । इससे स्पष्ट है कि हिंदू-धर्म का कलंक ये ब्राहमण ही हैं—हम नहीं, हम तो सेंट परसेंट राष्ट्रवादी हैं । जहां राष्ट्र अपनाहो,वहांअपनाधर्मउन्नतिकरताहीहै । तुम्हें क्या मालूम कि शिवाजीने महारोंकी मदद देशकी रक्षा की, इसी कारण उस देशका नाम महाराष्ट्रपड़ाहै । पशुका मूत और गोबर खाकर तुम ब्राह्मणोंके सरमे गोबर भरा हुआ है ।

"ब्राह्मणोंकी बराबरी नहीं कर सकते, इसीसे उन्हें गालियां देते हो ? ब्राह्मणों में ब्राह्मणत्व नहीं रहा, इससे तुम लोगों की जबान ढीली हो गयी है ? तुम क्षत्रिय हो, मगर क्षत्रियोंका कौन-सा गुण तुममें रहा है । पुलिसकी लाठी देखकर तो तुम नौ दो ग्यारह होते नजर आते हो । कौन-सा शस्त्र तुम्हारे हाथमें ? सिर्फ हजामत बनाने का एक छुरा तुम्हारे पल्ले रह गया है, परन्तु वह भी तुम ठीक चला नहीं सकता अपना ही चेहरा लोह-लुहान कर बैठते हो पाण्डेजीने गर्वसे मूंछों पर ताव मारा ।

"बड़ी बहस हो रही है पाण्डेजीके साथ, क्या बात है लीलाधर ? प्रेमनाथ ने अंदर आते हुए पूछा ।

"ये आये गांधी टोपीवाले—हिन्दूधर्मके गोलमटोल दुश्मन ।" पाण्डेजी प्रेमनाथ कीओरदेखकर बोले "न सिर पर चोटी है, है, न गलेमें जनेऊ 'मगर गला फाड़ कर चिलाते हैं हिंदूधर्मकी जय और घुसाते हैं मंदिरों में उन महारोंको ।

"देखिये पांडेजी, हिन्दू धर्म चोटी और जनेऊमें नहीं है । यदि हिन्दू धर्म बालों और धागोंमें होता तो नाई आजतक कितने ही ब्राह्मणोंको अपनी कैंचीके सहारे नाई बना लेते । मगर मुगलोंकी तलवारें भी हिन्दू धर्मको नेस्तनाबूद करनेमें असफल रहीं । इससे स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म बालों और धागोंमें नहीं है —न वह मंदिरों और पोथियोंमें है ,क्योंकि म्लेच्छोंने उन्हें भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भंग करनेसे हाथ नहीं रोका है। हिन्दू-धर्म ३३ करोड़ देवताओंको पूजनेमें नहीं, बल्कि देशके ३३ करोड़ मानवोंकी सेवा में है। मानव सेवा ही हिन्दू -धर्मका आदि तत्व है।" प्रेमनाथने हिन्दू धर्मकी व्याख्या की।

"विश्वामित्र सरीखे ऋषिको ब्राह्मणत्व प्राप्त करनेके लिए हजारों वर्ष तपश्चर्या करनी पड़ी और तुम कहते हो कि ब्राह्मण धर्म कुछ है ही नहीं। अरे चौरासी लक्ष योनियां भुगतनेके बाद कहीं ब्राह्मण का जन्म मिलता है। मगर तुम लोग उसे एक घंटेके भीतर होटलमें खाकर गायबकरन चाहते हो। अरे प्रेमनाथ,तुम शुद्ध ब्राहमण होकर ब्राह्मणोंके ऊपर कुठाराघात कर रहे हो और उधर ब्राह्मणेतर गलेमें जनेऊ डालकर ब्राह्मण बननेका प्रयत्न कर रहे हैं। हे भगवान, कैसा भयंकर समय आया है।"

"हिन्दू धर्म याने ब्राह्मण धर्म नहीं है, बल्कि भारत माताके लिए त्याग करना हिन्दू-धर्म है। ब्राह्मणके कुलमें जन्म लेनेवाला हिन्दू नहीं, बल्कि हिन्दुस्तानकी भूमिके प्रति प्रेम रखनेवाला सच्चा हिन्दू है। जब तक देशकी सारी जातियां नष्ट नहीं होगी, सच्चा हिन्दू-धर्म जाग्रत नहीं हो सकता। हिन्दू-धर्मके तुम सरीखे आकाओंने हिन्दू-धर्मको नष्ट किया है। लाखों अस्पृश्य हिन्दू-धर्म छोड़कर पर-धर्म स्वीकार कर रहे हैं – सिर्फ इसीलिए कि तुम ब्राह्मण उनका तिरस्कार करते हो–उनका अपमान करते हो। जिस तरह पूंजीपति चाहता है कि लोग गरीब रहें और उनका मान बढ़े, उसी तरह तुम चाहते हो कि लोग नीच रहें और तुम्हें उच्च होनेका मानमिले। जब ब्राह्मण शूद्रका यह भेद-भाव नष्ट होगा, तभी हिन्दू-धर्म बलिष्ट होगा।"

प्रेमनाथ !

बाहर कोलाहल सुनाई देता है। लोग चिल्लाते हैं। –"भेद-भाव नष्ट हो -ब्राहमण-शूद्र एक हों-हिन्दू-धर्म की जय।"

"अरे अरे, अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रलय काल नजदीक आ गया है। हिन्दूधर्म डूबने लगा। ऋषियों-मुनियोंके सारे प्रयत्नों पर पानी फिरने लगा। भगवान्, अब जल्द कोई अवतार लेकर अपने ;सनातन-धर्मकी रक्षा करो, वरना तुम्हार नाम इन भ्रष्ट लोगों के भ्रष्टाचार से मिट जायेगा।" पांडेजीने आकाश की ओर हाथ जोड़कर भगवानको आमंत्रण भेजा।

"पांडेजी, तुम्हारा हिन्दूधर्म अब रहा कहां —वह तो कभी का डूब चुका। कुत्ता रसोई-घरमें घुसा-डूबा तुम्हारा धर्म, जता पहन कर खाना खाया-डूबा तुम्हारा धर्म, होटलमें चाय पी-डूबा तुम्हारा धर्म–– तुम्हारा हिन्दू-धर्म तो कभीका डूब चुका मगर हमारा हिन्दूधर्म ऐसा कच्चा नहीं, जो डूबने और डुबा आता और जाता रहे।चमड़ापर पैर पड़गया लगाओ डुबकी बाजारमें गये थे--लगाओ डुबकी, हजामत की- लगाओ, डुबकी, कोई परदेशमें भी मरा हो तो लगाओ डुबकी। ऐसे कहीं शुद्धि होती है ? यह देखकर तो ऐसा लगता है कि एक दफा इन ब्राह्मणोंको वेसुध होते तक पीटा जाय, तब ही इनके मन की शुद्धि होगी। हमारा हिन्दू-धर्म ऐसा गोते खानें वाला नहीं है। वह तैरना जानता है और हजारों तूफानोंमें भी सही सलामत पार उतरता है। पांडेजी, आपको शायद मालूम नहीं होगा कि लीलाधर नसीम नामकी लड़की से प्रेम करता है और अब जल्द ही वह उससे शादी करनेवाला है।"

"हरे राम, क्या इसीलिये इन्होंने मुझे बुलाया था। अब तो तुम्हारा भ्रष्टाचार चरम सीमा तक पहुंच गया है। विधर्मी लड़की से शादी क्यों ? क्या हिन्दुओं की सारी लड़कियां गंगामें डूब गयी हैं ?"

"हमारा कलक्टर हिन्दू है मगर उसकी बीवी फिरंगी है और आपको उससे नफरत नहीं है, उल्टा आप उसकी खुशामद करते हैं और अपने मंदिरोंमें सभापति बनाते हैं। उससे तो लीलाधर अच्छा, जो नसीम से शादी कर रहा है। आपको लीलाधर इस बात का सबूत भी दे सकता है कि नसीम "फिफ्टी पर्सेंट' हिन्दू है। कलक्टर 'फिफ्टी पर्सेंट' विजातीय से शादी करे तो आपका धर्म ऊंचा रहता है और लीलाधर "फिफ्टी पर्सेंट' हिन्दू लड़की से शादी करे तो आपका हिन्दूधर्म डूब जाता है, भ्रष्ट हो जाता है। बाहरे, तुम्हारा हिन्दूधर्म !

"––और प्रेमनाथ, इनका हिन्दूधर्म सब दिखावटी है। यही क्या, सारे धर्म दिखावटी हैं। वैसे देखा जाय, तो सारे धर्म एक ही हैं। जो कुछ फरक है, वह बालों का ही है। हिन्दूधर्मवाले चोटी रखते हैं, मुसलमान दाढ़ी रखते हैं, फिरंगी मूंछें-दाढ़ी साफ करके सर पर बाल रखते हैं, तो सिख सारे चेहरे पर 'जंगल' रखते हैं। सब दिखावटी तमाशा। एक दूसरे धर्मके विरुद्ध प्रतिस्पर्धा करनेके लिये यह दिखाऊ 'ट्रेड मार्क' है। ईश्वरसे प्रेम तो एक भी नहीं करता। प्रेमका संबंध आत्मासे होता है और आत्माकी न जात होती है न धर्म, न दाढ़ी होती है न जटा। मेरा नसीम से प्रेम है और हम दोनों मानव हैं। इसीसे हम दोनों शादीको राजी हैं। मियां बीबी राजी तो क्या करेगा काजी? गीता पढ़ने से शादी नहीं होती। गीता नाम की लड़की से प्रेम करनेसे ही शादी हो सकती है।" लीलाधरने अपने निश्चय का समर्थन किया।

"मालूम होता है कि तुम मुसलमान ही हो। तुमने मुझे धोखा दिया है। मुझे बनानेके लिये तुमने यह जाल रचा है। मगर तुम देखनेमें तो मुसलमान नहीं जंचते। आजकल हिन्दू, मुसलमान, ईसाई की परख करना भी बड़ा मुश्किल हो गया है। जो देखो, वही सूट-बूट पहने फिरता है।"––पांडेजी।

"इसीसे तो कहता हूं पांडेजी कि तुम्हारा हिन्दूधर्म कभी का डूब गया अब हमारा हिन्दूधर्म चल रहा है। हमारा हिंदू धर्म दिखाऊ नहीं है। वैसे तो देखनेमें कई ब्राह्मण चमार-से दिखायी पड़ते हैं और कई चमार ब्राह्मण-से। पांडेजी, अब ब्राह्मण होनेकी रट छोड़ दीजिये। तुम्हारा कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भी अवतार ब्राह्मण नहीं। सब हमारे जैसे ही फक्कड़ थे। शादीके बारेमें भी वे हमारी तरह स्वतंत्र थे। श्रीकृष्णने रीछकी लड़की से शादी की थी, बभ्रुवाहनने नाग-कन्या से नाता जोड़ा था, विष्णुने समुद्रकी लड़कीको अर्धांगी बनाया और महादेवने तो पहाड़की लड़कीको अपनी पत्नी चुना। उस वक्त क्या हिन्दूधर्ममें लड़कियोंकी कमी थी या लड़कियां सब संन्यासिनी बन गयी थीं ? इससे स्पष्ट है कि उन्होंने. जातिसे शादी नहीं की, बल्कि रूप और प्रेम देखकर शादी की थी। मैं तो कहूंगा कि हिन्दुस्तानकी जमीन पर रहनेवाले हर मनुष्यको जिससे प्रेम हो जाय, उसीसे शादी करनेका अधिकार है।"—लीलाधर।

'ब्राह्मणोंका नाश हो' 'हिन्दू धर्मकी जय' सड़क पर लोग चिल्ला रहे थे। पांडेजी घबड़ा उठे, "यह कैसा शोर है ? ब्राह्मणोंके नाम से ये लोग क्यों रो रहे हैं ?"

"ये अस्पृश्य हैं। महाकालेश्वरके दर्शन करके वापस जा रहे हैं"—प्रेमनाथ

"क्या ये लोग महाकालेश्वरके मंदिर मंदिरमें घुसे थे ?"

"घुसे ही नहीं थे, पूजा भी की है इन्होंने।"

"घोर कलियुग— इन पापियोंने महाकालेश्वरको भ्रष्ट कर दिया। जब तक उसकी शुद्धि नहीं होगी., हमलोग वहां जा नहीं सकते। इन महार-चमारोंको कोई और मंदिर नहीं था ?" पांडेजीने माथा पीट दिया।

"वाहरे पांडेजी, तुम्हारा देव भी भ्रष्ट होता है ? क्या खप्ती हो--धर्म के नाम पे गला फाड़ते हो और अपने धर्मको भी नहीं समझते ? तुम शुद्धि करोगे तब देव शुद्ध होगा ? तुम्हारा देव तुम्हारी भीतीकी तरह ढीला है, जो छूने से अपवित्र हो जाता है। अरे, देव तो सबको शुद्ध करता है। महादेवसे निकली गंगा सबके पाप नष्ट करती है और वही महादेव इतना कच्चा है कि मनुष्योंके स्पर्श मात्र से भ्रष्ट हो जाता है ? यह सब मनगढ़न्त है। तुम्हारा मन भ्रष्ट है और तुम्हारे इन भ्रष्ट विचारों से ही हिन्दूधर्म दिन-ब-दिन निर्बल बनता जा रहा है। लोग पटापट दूसरा धर्म स्वीकार कर रहे हैं और तुम लोग धर्मके नामसे रो रहे हो। हिन्दू-धर्मको बलिष्ठ बनानेके लिये इन लोगोंको परधर्म स्वीकार करनेसे रोकना पड़ेगा और जो हिन्दू धर्ममें आना चाहें, उन्हें मौका दिया जायेगा। तुम ब्राह्मणोंको भी यदि हिन्दूधर्ममें आना होगा, तो तुम्हारी भी शुद्धि की जायेगी। हमारे राष्ट्रीय हिन्दू धर्मने ब्राह्मणोंको विधर्मी माना है—समझे ?"

"आर्य संस्कृति पर आधारित हमारे सनातन धर्मको तुम लोग विधर्म कहते हो—कैसा अधर्म है ? —तुम लोग नर्कमें जानेका रास्ता बना रहे हो— रौरव नर्कमें जाओगे तुम दोनों, समझे ?" —बड़बड़ाते पांडेजी माग खड़े हुए।

"हम नर्क में जायें या गटरमें जायें, इसका ठेका तुम्हें किसने दिया है ? तुम अपने स्वर्ग की तैयारी करो, बस। स्वर्गके नंदनबनमें जाकर एक प्लाट खरीदो और मकान बनाकर चैन करो।" लीलाधरने चिल्लाकर कहा।

"जाने भी दो लीलाधर उस पागलको। बाहर जाते ही वह यह भी भूल जायेगा कि वह ब्राह्मण है।" प्रेमनाथ ने लीलाधर को रोका।

"वह क्यों ?" लीलाधर ने पूछा।

"खिड़की में जाकर देखो।"

गांधीजीकी निर्मम हत्या एक ब्राह्मण के हाथ से हुई,इससे लोग ब्राह्मणोंके ऊपर बिगड़ उठे थे। लीलाधर खिड़की में जाकर देखने लगा। पांडेजी रास्तेके एक किनारे किनारे से जल्दी-जल्दी जा रहे हैं। इतने में एक गली से लोगों के एक झुंडने उन्हें घेर लिया। 'यह ब्राह्मण है,इसे मारो' एक चिल्लाया। चारों तरफ से 'मारो-मारो' की आवाज उठने लगी। डंडे ऊपर उठने लगे। पांडेजी घबड़ा उठे —'अरे भाई, मैं ब्राह्मण नहीं हूं।' वे गिड़गिड़ा कर बोल उठे।

'फिर यह जनेऊ कैसे ?" एकने जनेऊ खींचकर तोड़ डाला।

'मैं नायिक ब्राह्मण हूं' पांडेजी बोले। लोगोंने पांडेजीको छोड़ दिया।

'हिन्दूधर्म की जय' लीलाधर ने कहा, "आज पांडेजीकी शुद्धि हुई है।"

---


हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

**ओटो दिलबहार** (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी—

# दृष्टिकोण

## श्री लक्ष्मी प्रसाद मिश्र

संध्याका समय था। आकाशमें सुर मई रंगके काले-काले धूमिल मेघ छाये थे। आकाश मेघाच्छन्न होनेके कारण अंधकार द्विगुणित हो रहा था। उस घटा-टोप सघन अन्धकारमें घनगर्जनके साथ चपलाकी चमक नेत्रोंमें चकाचौंध भर रही थी! मेढकोंका कर्कश 'टर्र-टर्र, स्वर भी मधुर सा लग रहा था! रिमझिम रिम-झिम वर्षा हो रही थी। खपरोंसे पानी टपक रहा था—"टप—टप—टप!"

वर्षाके कारण सारे मकान और दीवालों में सील महारानीका अटल साम्राज्य स्था-पित था। मैं चारपाईपर बैठा वर्षाकी बहार और बादलोंकी शोभा देखता हुआ एक अखबारके पन्ने पलट रहा था। अचा-नक मेरी श्रीमतीजी आयीं और तमककर बोलीं—"आपसे कितने दफा कहा—एक मकान छाने वाला बुला दीजिये! मगर आप सुनते ही नहीं। दिन रात पढ़ाई-लिखाई जारी है! घर गिरस्तीकी फिकर ही नहीं। घरमें कमसे कम बीस टपकेहैं और एक टपका तो कम्बख्त ठीक चूल्हेके ऊपर है। एक तो बरसातके दिन! दूसरे लक-ड़ियां गीलीं! तीसरे यह चूल्हेपर टपका भगवान स्त्रीका जनम किसीको न दे! रोज तवेपर "छुन्न-छुन्न" पानी पड़ता रहता है। रोटियां कच्ची रह जाती हैं! आप अगर मकान छाने वाला नहीं बुलाते, तो कलसे भूख हड़ताल करना पड़ेगी। सारा घर तालाब बन गया है। जरा घर-गिरस्ती भी देखा कीजिये।"

मेरे कानोंपर जूं रेंगने लगी। सोचा—"भगवान, लड़ाई तो कबकी खत्म हो गयी, किन्तु ये गृह युद्ध और हड़तालें कब खत्म होंगी? एक तो छः छटाकका राशन! दूसरे उसीमें झिल्लियों-युक्त आधा चावल तथा मिट्टी मिला आधा गेहूं, कटहरेमें बन्द मानव-सिंहको जिन्दा रखनेके लिये पर्याप्त है। बुभुक्षितः किम् न करोति पापम्! "भूख हड़ताल तो कयामत बरपा कर देगी!" इसलिये देवीजीसे सान्त्वना एवं सम्वेदनापूर्ण शब्दोंमें कहा—"क्षमा कीजियेगा! कल मकान छाने वाला अव-श्य आ जायगा।"

श्रीमतीजीके जाते ही राजेन्द्र बाबू की सवारी आई! कुछ दाल मुंहमें लपेटे! कुछ कमीजमें लगाए! एक कटोरी में दाल तथा हाथमें रोटी पर भटे की शाक लिये पधारे! आते ही उन्होंने रंग में भंग कर दिया! बोले—"हमें भी खटिया पै चढ़ा लो बाबू!"

उन्हें जैसे ही खाटपर चढ़ाया; तैसे ही उन्होंने रोटी तो दी छोड़; और अखबार को फाड़चीर कर र दिया! मैंने कहा—"खूब! अच्छे शैतान हो!"

"अच्छे छेतान हो"— कह कर वे रोटी खाने लगे! आधी रोटी खानेके बाद उन्हें खेल सूझा! अवशिष्ट आधी रोटीको गाड़ी-समान घुमाते तथा उसपर बैठनेका अभिनयसा करके वे बोले—"बाबू गाड़ी"! उनका यह सजीव अभिनय देख मेरे बचपन की स्मृतियां जाग उठी—"बचपन कितना सुखी, निर्द्वन्द तथा आनन्दमय है! चिन्ता रहित खेलना-खाना! खूब डटकर पढना-लिखना! और, बचपनके यही मधुर क्षण, जो व्यक्ति व्यथ ही खो देता है; वह अन्तमें पश्चात्ताप करता है।"

उसी समय सीताराम झाड़ूवाला मेहतर आया। उसने अपनी झाड़ूसे राजेन्द्र को झाड़कर भूत भगाया!"

'भूत कहां रहता है, बाबू?" राजेन्द्रने उत्सुकता से पूछा!

"पहले दुनियामें बड़े बड़े भूत थे; पर अब भूतावूत कोई चीज ही नहीं है! लोगोंका ऐसा वहम है, कि भूत आदमीके शरीरमें लग जाता है! कोई कहता है, भूत पीपलपर रहता है। कोई कहता है मरघट या खंडहरमें! कई बूढ़े-पुराने आदमी कहते हैं—'भूत काली शकलका होता है! उसकी बिजली सी आंखे, बड़े बड़े बाल और बड़े-बड़े दांत होते हैं! पर, आजकल तो सब भयका ही भूत समझो!"—मैंने कहा।

तभी राजेन्द्रने टेबिलपर से एक मा-सिक पत्र उठाया। उसके मुख पृष्ठपर एक युवतीका सुन्दर चित्र था! चित्र देख कर राजेन्द्र बोले—"बाबू, देखो अम्मा है! अम्मा!" फिर चित्रपर हाथ फेरते हुए वे बोले—"ये आखें, ये बाल, ये नाक है!" मैंने पूछा—'कान कहा हैं?' तब वे बोले—"ये हैं"!

अचानक श्रीमती जीने आकर पूछा —"ये क्या तमाशा है?"

मैंने कहा—"राजेन्द्र अपनी सुन्दर मां बता रहा है!"

"और कल मुझसे दुलैया मांग रहा था"! श्री मती जी बोली।

"सच"! मैंने साश्चर्य पूछा!

"पूछो न उससे"!

मैंने पूछा—क्यों राजेन्द्र बहू लायेगा?

राजेन्द्र—हूं! बहू!

मैंने फिर पूछा—"उसे क्या पहनाओगे?" राजेन्द्रने कहा—"पांवमें बेड़ी! कानमें ईरिंग।"

मैंने कहा—"धत्त तेरे की! उसे बन्धन में रखेगा"!

राजेन्द्र बोला—"हां"! और वह खिल-खिला पड़ा!

श्रीमती जीका तापमान ११० पर पहुंचा! वे बोलीं— देखा! पुरुष हृदय कितना स्वार्थी है? समाजके सारे नियम पुरुषोंने अपनी स्वार्थ-सिद्धिके लिये बनाये हैं! क्या बास्तवमें आज स्त्रि-यां परदेकी चहार-दिवारीमें बंद रहकर मनुष्योंकी गुलाम रहनेकी अधिकारिणी हैं? जिन देशोंमें स्त्रियोंको स्वतंत्रता नहीं मिली, वे कभी उन्नत नहीं हुए! क्या स्त्री पुरुषके पैरोंकी जूती है? पुरुष एक नहीं; दस-दस शादियां करनेका अधिकारी है! पर नारीको एक छोड़, स्वप्नमें परपुरुषका ध्यान करना पाप है! यह कैसा न्याय है समाजका? इन उच्चवर्ण वालोंसे तो अछूत अच्छे हैं; जिनके यहां बेचारी विधवाओंकी कुछ व्यवस्था तो है! पर आपके यहां वही ढाकके तीन पात! जन्म भर ईश्वर-भजन, त्याग, तपस्या! बाबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी विधवासे यह साधना हो या न हो ! इससे अच्छी तो हमारी प्राचीन सती-प्रथा थी। उस समय कमसे कम देशका वायु-मंडल विधवाओंकी आहोंसे विषाक्त तो नहीं था !"

"ठीक है देवी जी ! मगर राजेन्द्र को दूल्हा बनने तथा मौर बांधनेकी धुन आपने ही सवार की है ! क्योंकि बहूके हाथके गरम फुलके खानेकी फिक्र आपको अधिक रहती है !"

राजेन्द्र बोल उठे—"बाबू हम दुल्हा! उनका अभिप्राय था— हम दूल्हा बनेंगे। उन्होंने मासिक-पत्रको सिरपर मौरकी तरह धारणकर लिया। फिर खड़े होकर नाटक करने लगे ! बोले—

"ले लो भटा ! ले लो आम"! इसके पश्चात वे दौड़कर मेरी सूखी धोती आंगनमेंसे उठा लाए, क्योंकि बूंदा-बांदीसे धोती भीग रही थी। फिर वे मुझसे बोले—"बाबू लेट जाओ ! हम हवा करेंगे !" कुछ उमस भी थी। राजेन्द्रका पंखा झलना मुझे बड़ा अच्छा लगा !

और, एकाएक श्रीमती जी विनोद करते करते फिर गंभीर हो उठीं ! बोलीं— मुझे तो मर्दोंकी अलकपर रोना आता है ! मंदिरमें भगवानके दर्शन करने जाते हैं, पर उनका ध्यान श्रीमतियोंकी ओर रहता है ! कभी कभी तो उनका ध्यान श्रीमतियों से उचटकर जूतियोंकी ओर चला जाता है ! जूतियोंको देखकर वे श्लोक पढ़ते जाते हैं —"त्वमेव माता च पिता त्वमेव ! त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ! त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव; त्वमेव सर्वम् मम देव देवः !!" अब बताइए, इन बकुल-ध्यानियोंके आराध्य देव कौन हैं ? जूतियों या मेहतर आया ! यह नित्य ही मुहल्लेमें झाड़ू देता है ! जाड़ा, बरसात और गरमी तीनों मौसमोंमें परिस्थितियोंसे युद्ध करता हुआ पचास वर्षका वृद्ध हमेशा सिर झूकाए कर्त्तव्य-रत रहता है ! सिर तथा मूछोंके बाल खिड़की हो गए थे ! चेहरे पर झूरियां लटक रही थी ! मस्तककी तीन आड़ी रेखाओंने उसे मेहतरका जन्म दिया था ! हाथमें झाड़ू ! नंगे पैर ! घुटनों तक फटी धोती ! बदन पर एक मटमैला कुर्त्ता और उस पर एक फटी-पुरानी बास्केट ! पानी में कांपते हुए सीतारामने कहा—"भैया राजेन्द्र ! रोटी खा रहे हो ! क्या भटेकी शाक भी है ?"

राजेन्द्र बोले—"बाबा तुम भी खा लो ! भटा हैं।"

सीतारामके चेहरेपर मुस्कराहट की क्षीणरेखा दौड़ गई। वह "अच्छा अच्छा" —कह कर राजेन्द्रको अपनी लम्बी झाड़ू से झाड़ने लगा ! झाड़नेके साथ ही वह मंत्रोच्चारण भी करने लगा —"जय महाकाली ! रक्षा करो ! जय हनुमान हठीले रक्षा करो ! जय महाकाली ! रक्षा करो ! जय हनुमान हठीले रक्षा करो ! जय गुरु जयपालसिंह रक्षा करो "'झाड़ूको तीनबार जमीन पर पटककर सीताराम बोला— "कौन है रे तू ? भाग यहां से !"

अन्दर से सुशीला ने आकर सीताराम को दो रोटियां और थोड़ी भटे की शाक दी ! सीतारामने चलते समय मुझसे गिड़गड़ाकर कहा —"सरकार ठंड लगती है ! एकाध फटा-पुराना कपड़ा मिल जाय ! पानीमें भीगते हुए सरकारी ड्यूटी करनी पड़ती है।"

पुराना कपड़ा लेनेके लिये अन्दर गया; तो श्रीमती जी बोली यह झाड़वाला बड़ा गुणी है ! सभी लोग इससे अपने बच्चों को झड़वाकर उनके रोग-दोष हटाते हैं। यह बड़ा नेक है"!

मैंने कहा —"ठीक है"! और बाहर आकर उसे एक पुराना कोट देकर पूछा— "सीताराम तुम्हारी हड़तालका क्या हुआ ?"

'चल रही है सरकार ! डिपटी साहब के यहां गए थे ! उन्होंने कमेटीवालोंको बुलाकर दो रुपया महंगाई और बढ़ाई है ! सौ रुपया तनरब्वाह और बारह महंगाई में कैसे पेट पलपुा है सरकार ! चार बच्चे हैं ! औरत है ' मैं हूं ! दो बच्चे छोटे छोटे हैं। दो बच्चे बड़े हैं ! वे काम करते हैं ! औरत काम करती है। मैं काम करता हूं। फिर भी गुजर नहीं होती सरकार आजकल ! कंट्रोलका जमाना है।आप जैसे दो चार आदमी कलेवा दे देते हैं, वरना पहलेके समान अब ये जूठे टुकड़े नहीं मिलते। आजकल तो व्यापारी और भिखारी लोग मजे में हैं ! खूब चोर बाजार चल रहा है ! एक के दस बन रहे है ! दुखी तो आप और हम हैं ! बीचवाले पीस रहे हैं ! आठ तारीख तक सत जुग ! पन्द्रह तक द्वापर त्रेता ! और पन्द्रह तारीखके बाद इकतीस तक ऐसा घोर कलजुग आ जाता है, कि भगवान ही मालिक रहते हैं सत्तर रुपयेमें छः प्राणियोंको खाना-कपड़ा नहीं पूजता सरकार ! बड़ी मुसीबत है हुजुर !

—सीतारामने कहा और साफेके छोरसे आंसू पोंछे।" तुम सच कहते हो बाबा ! तुम सोचते होगे— "इन उज्ज्वल वस्त्रोंमें लिपटा हुआ मैं सुखी हूं ! पर तुम्हारा यह विचार कलत है ! मनुष्य अपनी हालत पर कभी संतुष्ट नहीं रह सकता। उसका तो स्वभाव ही ऐसा है, कि वह अपनेसे अधिक सुखी मनुष्यकी ओर देखता है ! उससे ईर्षा और प्रतिस्पर्धा रखता है ! पर, वह अपनेसे अधिक दुखी मनुष्यकी ओर नहीं देखता ! यदि वह अपनेसे अधिक दुखी मनुष्योंको देखने लगे, उनसे रह और ममता रख सके; तो वह संतुष्ट रह सकता है। दुनियामें बस इसी एक बात से शांति कायम हो सकती है। वैसे तो आज जो दस पाता है, वह भी दुखी है और जो दस हजार पाता है वह भी दुखी है !"

—मैंने कहा।

दूसरे दिन सुबह मैं एक कहानीकी प्रतिलिपिकर रहा था। कलम नीचे रख कुछ देर विचार-मग्न हुआ, कि अचानक राजेन्द्र आए और कलम उठाकर ले भागे ! चट तपाकसे बोले—"हम भी कहानी लिखेंगे बाब ! तुम कहानी सुनाओ बाबू"! मैंने इस नई बलाको दूर करनेके लिये एक कहानी सुनाई।"एक था राजेन्द्र !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अढ़ाई सालका था ! एक दिन वह रोटी खा रहा था । तब एक झाड़वाला श्रीमतियां ? अथवा भगवान ? और हमारे धर्म और समाजके ठेकेदार अछूतोंको मंदिर में नहीं जाने देते ! उन्हें कुएपर चढ़ने नहीं देते ! जो अचानक कलमष हटाकर राष्ट्र में पूत-भावनाका निर्झर बहाते हैं, तथा पतितपावन प्रभुको भी जो प्रिय हैं, वे ही मंदरि-प्रवेश न कर सकें । घृणाकी दृष्टि से देखे जायं ! धिक्कार है, ऐसे समाजको ! आज यदि स्त्रियां और अछूत हड़तालकर दें, तो आपके समाजकी अक्ल ठिकाने लग जाय ! स्त्रियां और अछूत ही राष्ट्रके जीवन् रथके दो मजबूत चक्र हैं । इनसे सहयोग रखनेमें ही पुरुष की विजय तथा शासन सूत्र स्थिर है ।"

मैंने कहा—"ठीक है ! मैं आपके विचारोंसे पूर्णतया सहमत हूं कृपया हड़-तालका निश्चय स्थगित कर दें ! क्योंकि एक तो शहरमें मेहतर-हड़तालके द्वारा वैसे ही गंदगी बढ़नेकी संभावना है ! यदि आप लोगोंकी हड़ताल जोर पकड़ जायगी, तो फिर गजब ही हो जायगा । सारे पुरुषों के हाथोंमें झाड़ू और बच्चे उछलता नजर आवेंगे ।"

उन्होंने कहा—"बस इतने से ही डर गए ! देख ली आपकी करतूत ! आपलोग तो बस यार-दोस्तोंमें गप्पें लड़ाया करें और दफ्तरोंमें बैठकर मक्खियां मारा कीजिए । देख लिया आपका पुरुषत्व, धैर्य और साहस । आपलोग क्या खाक राष्ट्रोद्धार करेंगे ? काश महीनेदो महीनेके लिये आपको हमारा या अछूतोंका काम करना पड़े; तो आप तो 'मरी बोल' जायं ! यह हमारा ही बज्र हृदय है ! जिसने पुरुषको जन्म दिया ! पालपोसकर तथा शिक्षा देकर योग्य नाग-रिक बनाया । मातृत्वकी फुलवारीने तुम्हें जन्म दिया ! नारीत्वके स्नेहाभि सिंचन-ने तुम्हें पुष्पित, पल्लवित तथा फलित किया ! और, आज तुम उसी वाटिकाको उजाड़ रहे हो ! उसी नारीके अधिकार को कुचल रहे हो ! आप यदि नारी तथा अछूत जातिके अधिकारों की रक्षा न कर सकें, तो आरामसे पड़े-पड़े खर टिलें ! गिरे हुए स्वयं उठते हैं ।"

मैंने कहा—"मैं मानता हूं देवि ! वाता वरणके अनुसार पुरुषोंको अपना दृष्टिकोण व्यापक बनाना ही होगा; अन्यथा इसमें उन्हींका अहित होगा ।"

—


टी. बी. T. B. "तपेदिक" फेफड़ेका हो, या अंतड़ियोंका, बड़ा भयंकर रोग है

पहली स्टेज — मामूली ज्वर खांसी (Jabri)

दूसरी स्टेज — ज्वर-खांसी की अधिकता (जबरी)

तीसरी स्टेज — शरीर का सूखना ज्वर खांसी की भयंकरता (Jabri)

चौथी स्टेज — हालत खराब, दस्त आदि शुरू जाना (जबरी)

अन्तिम स्टेज — रोगी की मौत भयंकर जमों का इधर-उधर फैलना

## (टी० बी०) तपेदिक और पुराने ज्वर के रोगियो देखो—

श्री मान् तीसलहुसेन साहब रईस मौजा मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जि० फैजाबादसे अपने ताजे पत्रमें लिखते हैं कि—आपके यहां से जिस रोगीके लिये दवा 'जबरी' हमने मंगाई थी, बहुत लाभ हो रहा है, हम तो समझते थे कि इस भयंकर रोगकी कोई भी दवा नहीं है । परन्तु आपकी दवा 'जबरी' ने हमारे विचारको बदल दिया । यथार्थ में 'जबरी' इस रोगके लिये आश्चर्यजनक शक्तिशाली औषधि है, हमारी तरफ से आपको हार्दिक धन्यवाद है । परमात्मा आपको दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की दे ।

श्री नागेश्वर प्रसाद तिवारी—मास्टर स्कूल नड्डगावां पो० "डालटनगंज" बिहार से लिखते हैं । मैं अनेक दिनोंसे ज्वर खांसी से बीमार था बलगम आदि की परीक्षा पर तपेदिक (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ । मैं रोगका नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया । इसी बीच परमात्माकी कृपासे आपकी अमृतरूपी दवा 'जबरी' का नाम सुना । मैंने तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया । दवाको विधिपूर्वक सेवन किया, उसके अमृतरूपी गुणोंने मुझे आश्चर्यमें डाल दिया, थोड़े ही दिनोंमें शरीरका रंग ही बदल गया, ऐसा मालूम होने लगा जैसे कुछ रोग ही नहीं रहा । अधिक लिखना व्यर्थ है । यथार्थमें आपकी औषधि इस दुष्ट रोगके लिये अमृततुल्य है । जितनी भी प्रशंसा कीजावे कम है ।

इसी प्रकारके पचासों प्रशंसापत्र पहिले भी आप इन्हीं कालमोंमें देख चुके हैं, भारतके कोने-कोनेमें लोगोंने यह मान लिया है कि इस भयंकर रोगसे रोगीकी जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र 'जबरी' ही है । 'जबरी' के नाम में ही भारतके पूज्य ऋषियों के आत्मिक बलका कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोगके जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं । यदि आप सब तरफसे हताश हो चुके हैं तो परमात्माका नाम लेकर एक बार जबरीकी परीक्षा करें, परीक्षार्थ ही हमने १० दिनका नमूना भी रख दिया है, जिसमें आपको तसल्ली हो सके । बस—आज ही आर्डर देकर रोगीकी डान बचावें । अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होता है, जब चि-ड़ियां चुग गई खेत । इसे डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियोंपर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तारद्वारा आर्डर देते हैं । तार आदिके लिये हमारा पता केवल 'जबरी' जगाधरी लिख देना ही काफी है । तारसे यदि आर्डर दें तो अपना पूरा पता दें । मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरोंके लिये जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ानेके लिये सोना, मोती, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिनके लिये २०) रु० । जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी-बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिनके लिये ६) रु० । महसूल आदि अलग है । आर्डर में पत्रका हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगीकी जान बचा लें ।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# एक महान चुनौती

## लेखक—श्री मधुकर खेर

१५ अगस्त १९४७ को प्रथम सूर्योदयकी किरणने समस्त भारतीयोंके हृदय प्रसन्नतासे भर दिये थे। उस दिन अपनी भारतीय संस्कृतिकी प्रेरणासे हमने प्रतिज्ञा की—हम जागे हैं और दुनियाको जगा देंगे। हमने आशा की थी कि हम अपने बापू, अपने नेता जवाहरलाल नेहरू तथा अपने सरदार बल्लभभाई पटेलके नेतृत्वमें अपने महान प्रयासमें सफल होंगे। हमें अपने बापू का आशीर्बाद प्राप्त था और उससे मिली नैतिक शक्तिके आधारपर हम संघर्षोंके बीच सुरक्षित निकल सकते हैं। देश व्यापी साम्प्रदायिक दंगोंने हमारी आशा पूरी न होने दी हिंसात्मक प्रवृतियोंने हमसे हमारा बापू छीन लिया। बापूके इस बलिदानसे देशकी जनता अवश्य पाठ लेगी। अब देश में हिंमात्मक मनोवृत्ति कतई न पनप सकेगी। बापूके बलिदानसे हमारी साम्प्रदायिक समस्या प्रायः हल ही हो गयी है। प्रत्येक व्यक्तिके हृदयमें यही ध्वनि है "ईश्वर अल्ला तेरा नाम।" इस समस्याके बाद भी हमारे सम्मुख एक बड़ी समस्या है पण्डित नेहरू तथा सरदार पटेल की। हम जब पण्डितजीके लिये "पूंजीपति नेता" का सम्बोधन सुनते हैं तो हमारा हृदय तिलमिला जाता है। यह भारतकी जनताको मजदूरों और किसानोंको चन्द पदलोलुपों की एक महान चुनौती है और भारतकी जनताका यह कर्त्तव्य है कि वह इस चुनौती का मुंहतोड़ जवाब दे।

यह चुनौती मुख्यतः कम्यूनिस्ट पार्टी की ओरसे दी गयी है। सोशलिस्ट पार्टी भी इधर कांग्रेसके विरुद्ध तथा मन्त्रिमण्डलके विरुद्ध प्रचार कर रही है किन्तु यह एक बड़ी अच्छी बाप है कि समाजवादी नेताओंकी नीति अभी कम्यूनिस्ट नेताओंके समान गंदी व दूषित नहीं हुई है। नेहरूजीको पूंजीपति नेता कह उनका नहीं, किन्तु भारतीय जनताका अपमान किया गया है। यद्यपि भारतीयताके नाते हममें प्रतिशोध और प्रतिक्रियाकी भावना नहीं होनी चाहिये (इसकी संभावना भी नहीं है) किन्तु इस दूषित मनोवृतिका नाश करना तथा अपने आपको इससे सुरक्षित रखना प्रत्येक भारतीय नागरिकका कर्त्तव्य है।

समाजवादी दल इधर कांग्रेससे अलग हो गया है। कांग्रेस अभी एक राजनैतिक संस्थाके रूपमें ही हमारे सम्मुख है। नये विधानके अनुसार कांग्रेसमें विभिन्न दल भी न रह सकेंगे और यह संस्था एकता के लिये नितान्त आवश्यक है।। कांग्रेससे यदि कोई अलग होता है या उसका विरोध करता है तो हम उसे दोष नहीं दे सकते। एक संस्था होनेके नाते यह लोगोंका अधिकार है कि वे चाहें तो उसका समर्थन करें या चाहें तो उसका विरोध करें। समाजसमाजवादी दल कांग्रेससे अलग हो गया है। यह भी निश्चित है कि समाजवादी अगले चुनावमें भाग लेंगे हालके कतिपय प्रांतीय म्युनिसिपल चुनाओंमें पराजयके बावजूद भी हम यहां यह चर्चा नहीं करना चाहते कि उनका कार्य उचित है या अनुचित किन्तु उन्होंने अपने अधिकारका का उपयोग किया है। यह उपयोग उचित है या अनुचित वह एक दूसरा प्रश्न है फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि आज के इस नाजुक अवसर पर कांग्रेससे अलग हो समाजवादी नेताओंने दूरदर्शिता नहीं दिखायी। इस समय यथार्थमें भारतवर्ष को समाजवादियोंसे बहुत आशा थी किन्तु खेद है कि उन्होंने ठीक मार्ग नहीं चुना। कम्यूनिस्टोंका दावा तो यह है कि वे स्वयं कांग्रेससे निकले हैं जब कि यर्थार्थता यह है कि उन्हें निकाला गया है।

भारतीय कम्यूनिस्टोंके सम्मुख सचझूठका प्रश्न रहता ही नहीं। कम्यूनिस्टों को देश-द्रोहके अपराधमें ही निकाला गया है। सोशलिस्टोंके विषयमें कहा जा सकता है कि यदि उन्होंने कांग्रेसमें रहकर ही कांग्रेसमें आये भ्रष्टाचारका विरोध करते तो उनकी सार्थकता सिद्ध हुई होती। कांग्रेसमें आज भ्रष्टाचार आ गया है और पण्डित नेहरूने वर्धाके भाषणमें इसके विरुद्ध कांग्रेस जनोंको चेतावनी भी दे दी है। नेहरूजीने स्पष्ट कर दिया है कि यदि यही स्थिति रही तो कांग्रेस इस चुनावमें भले ही जीत जाये किन्तु अगले चुनावोंमें उसे कठिनाई होगी।

आजके मन्त्रिमण्डलका विरोध करना देशका विरोध करना है। पण्डित नेहरू तथा सरदार बल्लभभाई पटेल यह स्पष्ट कर चुके हैं कि वर्तमान मन्त्रिमण्डल किसी वर्ग विशेष या संस्था विशेषका न हो सम्पूर्ण देशके प्रतिनिधियोंका है। यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि मन्त्रिमण्डल के सदस्य किसी पार्टी-टिकिटके आधार पर न लिये जाकर अपनी योग्यताके आधार पर लिये गयें हैं। इस सत्यकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

राष्ट्र पिताकी हत्यासे उत्पन्न हुई परिस्थितिका कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट दोनोंने ही फायदा उठाया। जो कम्यूनिस्ट गांधीजीकी कटुसे कटु आलोचना करते थे उन्होंने ही बड़ी बड़ी बातें की और हिंसात्मक कार्य किये। "जनयुग" के द्वारा गंदा प्रचार किया। पण्डित नेहरू तथा सरदार पटेल जब क्षुब्ध जनताको धैर्य बंधा रहे थे और राष्ट्रको सांत्वना दे रहे थे तब "कामरेडस" जनताको उत्तेजित कर रहे थे। इनकी इस अनुशासन हीनतासे न जाने कितने निर्दोष नागरिकों की दुर्दशा हुई।

दिल्लीमें यह तय करनेके पश्चात् भी कि हड़तालें नहीं की जायेंगी—कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट हड़तालोंपर जोर जोर दे रहे हैं। कम्यूनिस्टोंका तो रचनात्मक कार्यक्रम हड़ताल ही है। अभी मध्यप्रांतमें १६ मार्चको जो प्रांत व्यापी हड़ताल कम्यूनिस्टोंने करायी थी वह असफल रही। प्रांतीय कांग्रेस कमेटीके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रेसीडेण्टकी अपील का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा और हड़ताल एक तमाशा ही रही किन्तु "जनयुग" ने उसे बहुत जबरदस्त हड़ताल लिखा । "अपने मुंह मियां मिट्ठू" वाली कहावत "जनयुग" पर पूरी चरितार्थ होती है ।

कम्यूनिस्टोंकी नीति सदैव विध्वंसक है । राष्ट्रीयतासे कम्यूनिस्ट सदैव परे रहते हैं । वे प्रत्येक समस्या रूसी चश्मेसे देखते हैं । रूसका अनुसरण करने में कम्यूनिस्ट गर्वका अनुभव करते हैं । इनकी अवसरवादिताकी कोई सीमा ही नहीं है । एक समय ये नेताजी सुभाषको गद्दार तथा देश-द्रोही कहते थे किन्तु अब उनकी जयन्ती मनाते हैं । पण्डित नेहरू की भी जयन्ती इन्होंने मनायी किन्तु अब पण्डितजीको "भावुक मूर्ख" कहा जाता है । इन जयन्तियोंमें भी जमकर पार्टीका प्रचार किया जाता है । कटकमें कम्यूनिस्ट पार्टीका एक ऐसा सरकूलर पकड़ा गया है जिसमें मेम्बरोंको गांधीजीकी हत्यासे उत्पन्न हुई परिस्थितिका लाभ उठाने और पार्टीको मजबूत बनानेका आदेश दिया गया है ।

कम्यूनिस्टोंके विरोधकी आवश्यकता उनके अराष्ट्रीय विचारोंके कारण ही है । कम्यूनिस्टोंने रूसकी अन्तर्राष्ट्रीय नीति को अपनी राष्ट्रीय नीति बना लिया है । इन्हें भारतीयता पर विश्वास ही नहीं है । राहुलजीके भाषणका एक वाक्य—"इस्लाम को भारतीय बनाना है ।" इन्हें इतना अखरा कि इनके शब्दोंमें "राहुलजीका नाम पार्टी के सदस्योंकी सूचीसे काट दिया गया ।" ये भारतको रूसी पद्धतिपर ले जानेको उतावले हो रहे हैं ।

कटु सत्य तो यह है कि कांग्रेस जो कार्य करती है उसका श्रेय कम्यूनिस्ट और कुछ अंशोंमें सोशलिस्ट भी लेना चाहते हैं । स्वतन्त्रताके संग्राममें सोशलिस्टोंने अवश्य ही कार्य किया है किन्तु सन ४२ की क्रांतिको गलत बता, "लोक युद्ध" का नारा लगाते हुए अंग्रेजोंको सहायता दे अपने 'कामरेडों' के वारंट रद्द कराने के सिवाय कम्यूनिस्ट पार्टीने क्या किया ? रियासतोंको भारतीय यूनियनमें शामिल करनेका श्रेय सरदार पटेल, तथा श्री मेनन को ही है किन्तु कम्यूनिस्ट तथा सोशलिस्ट इसका श्रेय भी स्वयं ही लेना चाहते हैं । रायपुरमें मध्यप्रांतके मन्त्री पण्डित द्वारका प्रसाद मिश्रने कहा था कि सोशलिस्ट केवल कहते हैं और कांग्रेस कार्य करती है । यह सत्य है । रायपुरमें जब सोशलिस्टों ने अपनी कांफ्रेंसमें रियासतोंको भारतीय यूनियनमें मिलानेका प्रस्ताव पास किया ठीक उसी समय सरदार पटेलनें नागपुरमें नरेशोंको अपनी रियासतें भारतीय यूनियनमें मिलानेको बाध्य किया ।

श्री जयप्रकाश नारायणने चौपाटीमें भाषण देते हुए भारतीय मन्त्रिमण्डलके मुंह पर एक तमाचा मार दिया । जय प्रकाश विद्रोही रहे हैं और पण्डित नेहरू के पश्चात् भारतके युवक उन्हींकी ओर आशा भरी दृष्टिसे नेतृत्वकी चाहसे देखते हैं । उनसे भारतीय समाजको अभी बहुत आशा थी । कांग्रेसमें जो भ्रष्टाचार आ गया है उसे कांग्रेसमें रह कर निकालना जयप्रकाश बाबूके ही लिये सम्भव था । हमें भय है कि श्री जयप्रकाश नारायणकी नयी राह युवकोंके लिये हानिप्रद ही होगी । जिन सरदार पटेलके विरुद्ध चौपाटीमें जयप्रकाश बोले उनके विषय में मैं यही कहूंगा कि अभी सरदारने जनता का विश्वास खोया नहीं । आजकल लोगों की धारणा हो गयी है कि सोशलिस्टोंकी भी सभाओंमें कम्यूनिस्टोंकी सभाओंकी ही भांति अनर्गल बातें होती हैं । देशके ऐसे संकटकालमें नेहरू मन्त्रिमण्डलका विरोध करना सभी दृष्टिसे हानिप्रद है । आज संयुक्त मोर्चेकी आवश्यकता है । भारतवासी हिन्दुस्थानको मजबूत देखना चाहते हैं । हिन्दुस्थानकी तलवारमें ताकत है, हमारे नौजवानोंमें हिम्मत है और हिन्दुस्थानके मस्तिष्कमें प्रतिभा है किन्तु हमारा विखराव हमारी कमजोरीका कारण हो रहा है । काश ! हमारी तलवारें एक हो जातीं । हमें प्रसन्नता है कि अनेक स्थानों पर समाजवादियोंने कम्यूनिस्टोंकी हड़तालोंका विरोध किया और यह किया भी जाना चाहिये । प्रत्येक नागरिकको इनसे बचकर रहना चाहिये । भाषणोंकी स्वतन्त्रताके आधार पर ये जहर उगलते हैं, प्रेसकी स्वतन्त्रताके नाम जहर बांटते हैं । इधर इनके अनेक स्वयंसेवक दल भी खुले हैं जिनका उपयोग गुण्डागर्दीके ही लिये है । मद्रास सरकारने साम्प्रदायिक संस्थाओं के साथ ही साथ इस पर भी रोक लगाः अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया है ।

किसी भी देशमें किसी पार्टीका रहना या न रहना उस देशकी जनता पर ही निर्भर रहता है । नेहरूजी तथा सरदार पटेलका विरोध कर कम्यूनिस्ट तथा सोशलिस्टोंने अपने देशकी जनताको एक चुनौती दे दी है । जनताका कर्त्तव्य है कि इस चुनौतीका मुंहतोड़ जवाब दे । जनतन्त्र के विकासके लिये आलोचना अवश्य ही आवश्यक है किन्तु ऐसी आलोचना जो विध्वंसक ही सिद्ध होती है—कुत्सित मनोवृतिकी प्रतीक ही कही जा सकती है ।

मुझे विश्वास है कि जनता इस चुनौती का मुंहतोड़ जवाब देगी । पण्डित नेहरू के नेतृत्वकी छत्रछायामें ही हम बापूकी राहपर चल सकते हैं और तभी हमारा यह अभागा देश सुखी और समृद्धिशाली हो सकता है ।

———

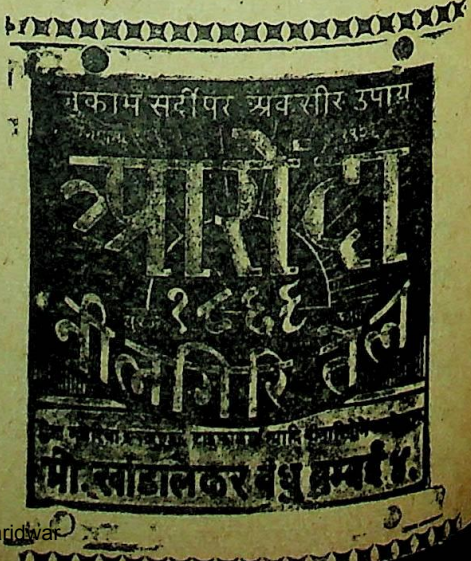


CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारीका नैतिक अस्तित्व

—श्री अनिल कुमार—

हमारे देशमें जबसे नारी आन्दोलनका स्रोत खुल पड़ा, उसने दो दिशाओंमें भारत की नारीमें परिवर्तन लानेका प्रयास किया, एक तो उन्हें सीमित अन्तःपुरसे बाहर समाज और देशके खुले विशाल मैदानमें खड़ा किया गया, दूसरी दिशामें वह अपना अन्तर्बाह्य अन्धकार हटानेके लिये शिक्षालयोंके दिदयूत प्रकाशमें उपस्थित की गयी। दोनों दिशाओंमें आदर्शके रूपमें पाश्चात्य नारीका चित्र सम्मुख करनेके लिये अमेरिका, रूस और यूरोपके नाम उन्हें रटाये गये। वहांकी नारीकी स्वच्छन्दता, सभी क्षेत्रोंमें उनका बेहिषक, बेहया, निस्संकोच वास्तव्य और उचित अनुचितके प्रश्नसे निर्द्वन्द्व होकर पश्चिमी नारीकी प्रवृतिसे भारतीय नारीको परिचित कराया गया। और पश्चिमके चमकीले आदर्शके आकर्षण द्वारा खिंचकर भारतीय नारीके अन्तःपुरसे बाहर आनेके पहले, जिन समाज व्यवस्थापकोंको उन्हें घरोंमें ही प्रस्तुत रखकर उनके द्वारा अपने महत्वकी बात पूरी करानेकी थी, तब उनके सामने भारत की उन ख्यात प्राप्त अतीतकालीन नारियों के आदश सामन रख गये, जिनकी नैतिक शक्तया हा उन्हें गौरवास्पद आसन दे गयी थी। यहां हम आदर्शोंकी तुलनाके फेरमें नहीं पड़ेंगे जसा कि अकसर इस विषय पर लिखत हुए होता है। हां यह देखना अनिवार्य हो जाता है कि दोनों ओर की स्थितिमें भारतीय नारीका व्यक्तित्व कितना भारा रह सका है? यह तो सीधी सी और सही बात है कि वह अर्वाचीन नारी आन्दोलनोंके सूत्रसंचालकों तथा प्राचीन समाज व्यवस्थापकों द्वारा निर्जीव कठपुतलीकी भांति इशारे पर महज तमाशे के लिये नचाई गयी है। यह कहनेमें हमें यहां आपत्ति नहीं कि उनका उद्देश्य खिलवाड़ करनेका न रहा हो इसे लेकिन इनकार किया जा सकता है कि उनका ढंग तमाशाई नहीं था। दोनों स्थानों पर वह व्यक्तित्वहीन-निर्जीवसी ही आयी और असफल रही।

समाजके व्यवस्थापकोंने समाजकी नींव गहरी करनी चाही और उस नींवके लिये खुदने वाली खाईमें मजबूतीके लिहाजसे चूने और बिन तराशे पत्थरके रूपमें नारीको झोंक दिया—एक तरहसे दफना ही दिया। वहांकी आदर्शकी लालच नारीके सामने थी ही—तुम समाजकी जड़ हो! नींवकी ईंट हो! तुम्हारा अस्तित्व यहां जितना सफल है, अन्यत्र चोटीके स्वर्ण कलशमें भी नहीं। और प्रलोलनसे उतना नहीं जितना की भोलेपनसे वह समाज की नींवमें ईंट बनी रही—दफन होकर भी। इसके पश्चात नारीका नींवकी ईंट बनकर समाजके निम्न स्तरमें गड़ी रहना जिन्हें मंजूर नहीं था उन्होंने उसको बाहर की रोशनीमें लाना चाहा। इसी चाहकी प्राप्तिके लिये उक्त नवविचार वादियों द्वारा समाजकी नींव खोदी गयी चूंकि उन्हें नींवकी ईंटें जो बाहर करनी थीं। अब तक भारतीय समाजिकताकी इमारतकी नींव में गड़ी ये सभी नारी रूपी ईंटें बाहर नहीं की जा सकीं। यह सही है परन्तु इमारतके जिन हिस्सोंमें नींव कुरेदी गयी वहांका पोलापन करनेके लिये तथा निकाली हुई ईंटोंके स्थान पर इमारतको आधार देने के लिये, समाजमें दूसरे किसीका व्यक्तित्व नींवकी ईंट बनकर प्रस्तुत नहीं हुआ, अतएव उन हिस्सोंमें इमारतका ढह जाना अस्वाभाविक नहीं था। तब यह कहनेमें कोई हानि नहीं कि समाज व्यवस्थाको ठोकरसे उड़ाकर, पारिवारिक संगठनसे विमुख होकर चाहे किसी भी क्षेत्रमें नारी रहें, न वह सुरक्षित रह सकती है न उसका अस्तित्व ही। आधुनिक नारी आन्दोलनों की प्रेरणाका केन्द्र जो पश्चिम रहा है उसने भी नारीको आजका स्थान देनेके लिये पहले अपने पारिवारिक बंधनोंको शिथिल किया और उसके बाद वैवाहिक बंधनोंकी रस्सियां खोल दीं। किसीकी किसी भांति रुकावट न रहनेके परिणाम स्वरूप नारी वहां अतिशय उन्मुक्त उच्छृंखल हो गयी। उनकी इसी भांतिकी स्वच्छन्दताका ही नमूना है।

पश्चिमी समाज व्यवस्थाके चिकित्सक भी आज अपनी सामाजिक तथा पारिवारिक खामियां समझ गये हैं। यही कारण है कि आज वे हमारी आवाज "गो वैक टू दी विलीजेज" की भांति "वैक टू दी होम्स" के निश्चित निष्कर्ष पर उतर रहे हैं। फिर जिन्हें नारीके उक्त अनियन्त्रित प्रयोगमें इस तरह असफलता मिली उनके अनुकरण पर भारतीय सामाजिकताको तथा उनके पुर्जोंको ले जाकर हमें क्या हासिल हो सकेगा यह स्पष्ट है!

अब तक तो हुई भूमिकाकी बातें। आगे हम यह देखेंगे कि उपर्युक्त भूमिका द्वारा जिस आन्दोलनको गति दी गयी उसकी गतिमें किन विचार धाराओं द्वारा बलका संचार हुआ?

यह तो मानी हुई बात है कि नारीं को दबान में, उसे निःसत्व-अस्तित्वहीन बनाने में पुरुष ही अधिक दोषी हैं। अस्तु पुरुषकी हरकतोंका दृश्य इस आंदोलनमें आर्थिक स्फुरण भर सका। और आगे चलकर ऐसे ही पुरुष-समाजके सम्बन्ध बनी हुई नारीकी भावना आंदोलनकी प्रवृत्तिमें ढल गई। इस प्रवृतियमें एकांगिता का दोष आजाने से वह इसे सोच सकने में हमेशा ही असमर्थ रही कि पुरुषके अभाव में वह अपने जीवनका घृणित स्वरूप ही संसारके सामने उपस्थित कर सकेगी। अपनी इस असमर्थताको वह असमर्थताहीनहीं समझती यह बात दूसरी है लेकिनप्रत्येक क्षेत्रमें पुरुषके विरुद्ध, उसके प्रतिपक्षमें सिर्फ प्रतिद्वन्दीके रूपमें आधुनिक नारीका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# काफू (रजि०)

## हैजे

को रामबाण दवा है

## डाबर लिमिटेड, कल.

**धवल या श्वेत कुष्ठ**—जिनका ऐसा विश्वास हो कि यह रोग चंगा नहीं होता, यदि मेरे पास आयें तो उनके एक छोटे दागको मैं चंगा कर दूंगा, कोई खर्च नहीं देना पड़ेगा। वातरक्त, एक-जिमा, श्वेत कुष्ठ, पित्त और रक्तदोष जनित विविध चर्म रोगके दूर करने के लिए २० वर्षोंके अनुभवी **चर्मरोग चिकित्सक पण्डित एस० शर्मा** की व्यवस्था और औषधि ग्रहण कर। (समय ३-८) २६-८ हरीसन रोड, कल०।

**१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच**

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)

फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)

फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)

फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)

फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)

**रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो शेप**

क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।

एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)

पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

# होमियोपैथिक दवाइयां

प्रति ड्राम =), =)॥ आना है। हरएक बीमारियों की दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। **मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी**

९८ नम्बर क्लाइव स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

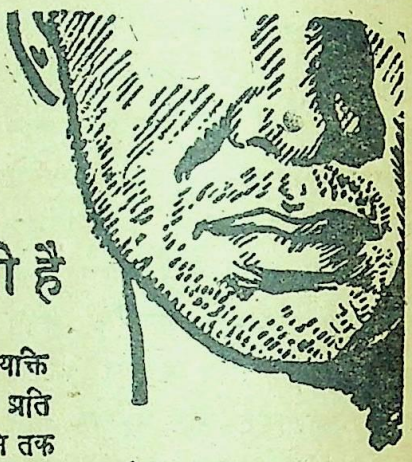

## यह खुरदरी दाढ़ी काफी खर्चा करा देती है

● सात में चार दिनों तक अनेक व्यक्ति बिना हजामत बनाये ही रहते हैं। प्रति सप्ताह नाई की तीन हजामतें ६ आने तक खर्च करवा देती हैं और यह काफी बड़ा खर्चा हो जाता है जब कि प्रति दूसरे दिन आपकी दाढ़ी खुरदरी दिखती है।

## यह चिकनी दाढ़ी काफी कम खर्च कराती है

● यदि आप स्वयं "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडों से हजामत बनावें तो प्रतिदिन आपकी दाढ़ी चिकनी रहेगी और आप पैसे की बचत कर लेंगे। ६ आने के मूल्य के पांच ब्लेड के पैकेट से, जो नाई की तीन हजामत की कीमत है, आप स्वयं प्रतिदिन हफ्तों तक हजामत बना सकते है।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड बाजार में सबसे तेज और सर्वश्रेष्ठ हैं—सर्वोत्तम इस्पात से तीन स्तरों में निर्मित। सर्वश्रेष्ठ ब्लेड जो खरीदे जा सकते हैं।

**नित्य स्वयं हजामत बनाइये**

# 7 o'clock

**SLOTTED BLADES**

**"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस**

ब्लेड जो ज्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं

६ आने में ५ का प्रत्येक पैकेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आना; उसने जिस नई प्रवृत्तिमें ढालनेका प्रयास किया है उसकेअनुसार ठीक ही है।

किन्तु जहां आधुनिक नारी बाहरके संघर्षमय जीवनमें जिस पुरुषको नीचा दिखानेके लिये वह सभी क्षेत्रोंमें कठिन से कठिन परिश्रम करेगी, जीवन यापनके लिये आवश्यक प्रत्येक वस्तुको अपने स्वेद-कणोंसे तौलकर स्वीकार करेगी, उसी पुरुषकेमें नारीके प्रति जिज्ञासा जाग्रत रखनेके लिये वह अपने सौंदर्य और अंग सौष्ठवके रक्षार्थ असाध्य से असाध्य कार्य करनेके लिये प्रस्तुत है। आज उसे अपने अपने रूप,अपने शरीर औरअपने आकर्षणका जिबनाध्यान है उसेदेखतेहुए कोई भी विचार शीलको स्वतन्त्र न कह सकेगा। यदि पुरुष को उन्मत्त कर देनेवाले रूपकी इच्छा नहीं मिटी, उसे बांध रखने वाले आकर्षणकी खोज नहीं गयी तो फिर नारीत्वकी ही, जिसका अभिशाप नहीं वरदान मातृत्व है उपेक्षा क्यों की गई? वास्तवमें आधुनिक नारीकी स्थिति प्राचीन रूढ़ियोंके बंधनमें बंदिनी स्त्रियोंकी स्थिति से भिन्न जान पड़ने पर भी उससे स्पृहणीय नहीं है। उन्हें प्राचीन विचारोंका उपासक पुरुष समाज अवहेलनाकी दृष्टिसे देखता है, आधुनिक दृष्टिकोण वाले समर्थनका भाव रखते हुए भी क्रियात्मक सहायता देनेमें असमर्थ रहते हैं और उग्र विचार वाले प्रोत्साहन देकर भी उन्हें अपने साथ ले चलना कठिन समझते हैं। वस्तुतः आधुनिक स्त्री जितनी अकेली है उतनी प्राचीन नहीं, क्यों कि उसके पास निर्माणके उपकरण मात्र हैं, कुछ भी निर्मित नहीं।

सांसारिकता या गृहस्थी नारी-पुरुष की पारस्परिक सम्मिलित वृतिका ही दूसरा नाम है। परन्तु एक की दूसरेके प्रति विग्रह वृत्ति तो गृहस्थीको मरुस्थली बना देगी जैसा कि पश्चिमी देशोंमें हुआ और पूर्व उस मार्ग पर अग्रसर होने जा रहा है। वहां सन्तानोंकी रक्षाका भार सामाजिकके मस्तक पर होनेसे क्षणिक-दाम्पत्य-

का उतना अनुचित परिणाम नहीं हुआ जितना कि भारत जैसे पारिवारिक सम्बन्धों द्वारा सम्बद्ध देशमें हो सकता है। वैवाहिक और सामाजिक शृंखला ही जब नहीं रही तब मनुष्यकी 'सेक्स' जनित समस्याओं पर नियन्त्रण रक्खे ही कौन? और बिना नियन्त्रण और संचालनके मानव समाजमें उक्त समस्या अमृतमय कैसे साबित हो सकेगी? दम्पति, घर, परिवार तथा समाज मानव समूहके सुव्यवस्थित नियन्त्रणके ही तो स्वरूप हैं। इस स्वरूपके विकृत करनेका ही अर्थ है प्रलयका शीघ्रातिशीघ्र आवाहन करना। मनुष्यका स्वभाव पानीकी भांति है। जैसे पानी गड्ढोंमें पहले घुसता है, ऊंचे टीलोंकी ओर स्वाभाविक गतिसे नहीं बढ़ पाता यह जो उसका गुणधर्म है, मनुष्यकी 'सत्' की अपेक्षा 'असत्' की ओर पहले खिंच जाता है। तब समाज-विहीन विशृंखल-मानव समूहका अस्तित्व सम्बद्ध-मानव समूह (समाज) को अनैतिकताके उग्र दृश्योंके अधिक महत्वकी कौन सी वस्तु दे सकेगा?

भारतमें भी इस तरहके कुछ प्रयोग आधुनिकताकी चकाचौंधमें पड़कर किये गये। जिसमें शिक्षित नारी पुरुषसे, उसकी पारिवारिकतासे और उसके संसर्गसे अनायास प्राप्त मातृत्वसे बगावत करती रही। जिसके फलस्वरूप उसने जीवनका अधिकांश अविवाहित रह कर ही नष्ट कर दिया किन्तु इस अविवाहित समयमें उसकी नीतिमत्ता सुरक्षित नहीं रह सकी, उसमें वासनाके प्रति विराग उत्पन्न नहीं हुआ। वह जीवनके लिये न सही पर यौवन के लिये पुरुषकी आवश्यकताका अनुभव महसूस करती रही—भीतर ही भीतर अस्पष्ट तौर पर। इस आवश्यकताको प्रकट करनेमें उसकी विग्रह-वृत्तिकी पराजय हो जाती जिसके पोषणके लिये वह एकांगी जीवनकी शरण ले चुकी थी, अतएव उसके यौवनकी आवश्यकताओंको

ही टेकती रही। अपनी इस नैतिक हारको वह जाहिल न करते हुए आड़की दीवार खड़ी करती रही तथा पुरुष समाजकी छाती पर खुलेआम मूंग दलती रही। इस तरह स्वयं अपनी और पुरुषकी भी नजरोंमें गिर जाने पर किसी भी कीमत में, ढलती उम्रमें, आश्रयके लिये वह विवाह के बाजारमें खड़ी हो गई। ऐसी अवस्था में नारी अपनेको, अपने ही हाथों कितनी दयनीय तथा परावलम्बी बना जाती है? इसका खेद क्या भारतीय पुरुषोंको नहीं होता? संघर्शशील वृत्ति रखते हुए भी जहांतक जीवनकी पूर्णताका प्रश्न उठ सकता है, स्त्री और पुरुष दोनोको एक दूसरेके आगे हमेशा झुकते रहना पड़ेगा और यदि नारी अपने विरोध को ही चरम लक्ष्य मान लें तथा पुरुषसे समझौतेके प्रश्नको ही पराजयका पर्याय मानलें तो जीवनकी व्यवस्था अनिश्चित और विकासका क्रम शिथिल होता जायगा।

स्त्रीने अपने लिये पुरुषसे समानताकी मांग की। कुछ अंशोंमें अनुचित होने पर भी यह मांग उचित ही थी। परन्तु उसकी पूर्तिके लिये सामाजिकतासे निर्वासित हो जानेकी भावना रखना क्या ठीक कहा जा सकेगा? आंदोलनकी प्रवृत्तिको जन्म देकर नारी हमको कुछ भी नहीं दे सकी यह नहीं परन्तु उसकी देनमें मधुके साथ कुछ क्षार भी मिला या इसे नहीं भल सकते। उसने इस तरीके से जो पाया यह भी बहुमूल्य है और जो खोया वह भी बहुमूल्य था।

आजकी शिक्षिता स्त्री उसकी जातिपर अबतक किये गये अन्यायोंका पुरुष द्वारा संतोषजनक उत्तर पानेमें असफल रही तब उसने विद्रोह किया। उसे अपने विद्रोह को स्थाई और सफल बनानेके लिये अपने उस गर्वका सहारा लेना पड़ा जिसके बलपर वह यह सोचती थी कि उसका अस्तित्व बिना पुरुषके सहयोग और उसकी छायाके भी पूर्वबत सुरक्षित तथा संभव हो सकता है। किन्तु प्रयोग कालमें ही उसका गर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अधिक गिर गई। पहलेसे भी अधिक निम्न तथा अनैतिक स्तर पर जा पहुंची। असहयोग के कालमें भी उसे यौवनकी स्वाभाविक प्रवृत्तिने अनाभावके रूपमें पुरुषकी शरणमें जानेके लिये बाध्य किया। यह सत्य है कि वह अपनी इस शरण और अनाचारकी ओर झुकावको बाहर से अपने स्वभाव द्वारा अधिक छिपा सकी। किन्तु निसर्गको अनुचित का निरंतर अप्रकट रहना कब स्वीकार है ? उसीने सारी बातोंका भंडा-फोड़ किया। इस तरह नारी अपनी स्वाभाविकतासे हाथ धोकर, पुरुषसे विद्रोह करनेकी भावना द्वारा स्वयं ही अनैतिकताकी गोदमें जा बैठी। इन आंदोलनकारिणी शिक्षिता अनैतिकताकी पुत्रियोंको क्या इसी तरह अपने अन्यायोंका प्रतिशोध लेना था ?

यह नहीं कि अपने पर की गई ज्यादतियों का वे प्रतिशोध ही न लें; वरन् पहले उसके लिये अपनेको अधिक संस्कृत, समर्थ तथा गंभीर बना लें, पश्चात किसी सबल प्रभावशाली नेतृत्वमें वह जिहाद का नारा बुलन्द करें। तब उसकी विजय में क्या संदेह हो सकेगा ? लेकिन आजतक नारी पुरुषके खिलाफ निर्बल पांवों पर असमर्थ नेतृत्वमें ही खड़ी होती रही है। यही बाता है कि वह प्रत्येक बार गिरती गई और इतनी कि फिर दुबारा मुश्किलसे सिर उठा सकी। अपने अस्तित्वको किसी भी स्थितिमें क्षुद्र तथा व्यक्तित्वरहित न सिद्ध होने दें यही नारीकी कसौटी है। हमारे देशमें नारीको आदि कालसे इसीका बल मिलता रहा। अपनी महानताकी अग्नि-परीक्षा भी वह इसी सत्यकी ज्वालामें कर सकीं ! किन्तु आज जिस रूपमें हमारी नव युवतियां पुरुष समाजमें आती जाती हैं, वह उनका भ्रान्त परिचय ही दे सकता है। आजकी शिक्षित युवती जीवन की गंभीरतासे दूर, उच्छृंखल तितली के रुपमें घर से बाहर आती है और प्रायः दूसरोंके आकर्षणका केंद्र बनना बुरा नहीं समझती। यदि ऐसा शृंगार, जो उनके मार्गमें बाधक होता है, उनके अस्तित्वको नष्ट तथा व्यक्तित्वको कलंकित सिद्ध करनेमें सहायक होता है, वे छोड़ दें तो क्या प्रलय हो जायेगा ?

फैंसी सिल्कसाड़ी आकर्षकडिज़ाईन

कलापूर्ण ३-४ इञ्च चौड़ा बार्डर

नं० ७ ८ ६ ५ गज
८) २३) २८) "

२) आडर के साथ पेशगी बाकी वी० पी०

थोक व्यापारियों को खास सुभीता

धमाको इन्डस्ट्रीज, जुही कानपुर

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

T.B टी.बी. "तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जबरीका नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगीकी जान बचाने वाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु०। नमूना १० दिन २०) रु०। जबरी नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगीकी जान बचावें। तारका पता-Jabri-Jagadhari काफी है।

पता—रायसाहब, के०एल० शर्मा, रईस (६०) 'जगाधरी' (E.P.)

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong. Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage As. 12. Free to 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

दमा स्वांस सभी लोग मान बैठे हैं कि दमा सिर्फ दम के साथ ही जाता है, लेकिन यह दमा-स्वांस की दवा २० वीं सदी में आविष्कृत हुई, जिससे चाहे जैसा नया या पुराने से पुराना दमा-स्वांस क्यों न हो इसकी पहली खूराक से छाती की खोचन, स्वांस की तकलीफ, खांसी, पीठ का भारीपन दूर होकर रात को सुख से नींद आती है। पूरी शीशीमें पूरा आराम। चिकित्सकगण इसके गुणों से रीझ कर इसी का इस्तेमाल करते हैं। कीमत २॥)

पता—भारत आयुर्वेद आश्रम, मोहल्ला दर्शनपुरवा, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भला हुआ पर्व

# कबीर जयंती

लेखक—श्री अ० भिक्षुस्वामी

**"हिन्दी साहित्यके हजार वर्षोंके इतिहासमें कबीर जैसाव्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ।" 'कबीर' पृ० २१७ —श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी।**

जितनी सचाई उपरोक्त कथनमें है उतनी ही सचाई इस बात में भी है कि लगभग साढ़े पांच सौ वर्षसे हम उस महापुरुषको भूलते चले आ रहे हैं। हिन्दी और साहित्यको राष्ट्र व्यापी महत्व मिल जानेके बाद धभी यह गंभीर भूल बनी हुई है। नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी संस्थाएं अस्तित्वमें आकर विशाल रूप धारण कर लेती हैं तथा उनसे राष्ट्रकी सांस्कृतिक सम्पत्तिकी वृद्धि के साथ साथ उसकी रक्षाकी भी गारण्टी मिल जाती है। पर आश्चर्य है कि इतनी शक्ति और क्षमता प्राप्त कर लेनेके बाद भी हिन्दी जगत उस महापुरुष कबीरकी स्मृति बनाये रखनेके लिये उनकी जयन्ती मानने जैसा छोटासा कार्य भी व्यापक रूपसे नहीं कर सका। उस महापुरुष की जयन्ती माननेका कार्य जिसकी प्रतिभा पर हिन्दी साहित्यका एक हजार वर्षका इतिहास गर्व कर सकता है। और उसी महापुरुषकी स्वर्गीय काव्य भूमि पर अंगड़ाई लिये गुरुदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर की महान प्रतिभा, आकाश चूमती हुई 'नोबल प्राइज' के पुरस्कारसे गौरवान्वित होती है। इस भूलको क्या कहा जाये ? कुछ समझ में नहीं आता। 'दुर्भाग्य' कहना तो और भी भद्दी भूल होगी।

संसारके सभी राष्ट्र अपने महापुरुषों की स्मृति बनाये रखनेके लिये अनेक प्रकार के कार्य करते रहते हैं। उन कार्योंके पिछछे जहां अपने महापुरुषोंके प्रति कृतज्ञता प्रगट करनेकी भावना रहती है वहां नयी नयी प्रेरणाएं प्राप्त करनेकी अभिलाषाएं भी रहती हैं। और राष्ट्र के जीवित एवं जाग्रत होनेका परिचय तो मिलता ही है। क्या हमारे देशवासी और खास करके हिन्दी प्रेमी जनता तथा संस्थाएं कबीर साहब जैसे महापुरुष के प्रति अपना कर्त्तव्य निभानेके लिये उत्कंठित हैं ? यदि हों, तो मेरी एक नम्र प्रार्थना है कि इस दिशामें पहला काम ज्येष्ठ पूर्णिमाके कबीर जयन्ती मनाने का होना चाहिये कबीर साहबकी स्मृति बनाये रखनेकेलिय या कामतो और भी बहुतसे करने होंगे यह संभव है कुछ किये भी जा रहे हों, पर यह इस दिशामें मूल प्रेरणाके रूपमें सउल तथा पहला प्रभावकारी कदम नमानल जायेगा। सर्वसाधारण जनताको इस प्रणाली से जो लाभ पहुंचाया जा सकता है वह सूक्ष्य अनुसंधान द्वारा बुद्धिवादी वर्गकी तार्किक प्रणालीसे एक एक नहीं पहुंचाया जा सकता। यह हमारा हजारों वर्षोंका आजमाया हुआ तरीका है।

अब तो बहिरे और न सुननेकी शपथ लेनेवालोंने भी सुन लिया होगा कि हिंदुस्तान आजाद हो गया है। और इस आजादी को संभव बनानेमें कुछ न कुछ तो उस युग पुरुषका भी भाग रहा ही होगा। तो क्या आजके आजाद हिन्दुस्तानमें भी उसकी जयन्ती नहीं मनायी जायेगी ? क्या हम हिंदी प्रेमी अब भी पहलेकी तरह निष्ठुरतापूर्वक उदासीन रह कर उनके साहित्य पर गर्व करनेका दुस्साहस करते रहेंगे। कृपया अब तो ऐसा न होने दें।

इसी सिलसिलेमें इतना और कह देना उचित होगा। यदि निकट अतीतके गड़े मुर्दे खोद कर देखे जायें तो उनमें एक जयचन्द और एक मीरजाफरकी दो सड़ी हुई लाशें मिलेंगी। लेकिन प्रत्यक्ष वर्तमानको देखे तो आज हजारों जयचन्द और मीरजाफर हमारी आंखोंके सामने चलते फिरते दिखाई देते हैं। इस अतीतके जयचन्द्र और मीरजाफरको तो हम अच्छी तरह से पहचान भी चुके हैं। पर आजके इन जयचन्दों और मीरजाफरोंको हमारे देशकी जनताके एक बहुत बड़े भागने और खास तौर पर मध्य वर्गने अभी तक ठीक ठीक नहीं पहिचाना है। नत्थूराम गोडशेका या उसको पैदा करने वाली संस्थाओंका दुष्कृत्य तथा पूज्य बापूजीका बलिदान हमको इसी नतीजे पर पहुंचाता है। ये धर्म, संस्कृति, जातीयता हिन्दुत्व और इसलामक आकर्षक नारे लगा कर जनताके खूनकी नदियां तो बहाते ही चले जा रहे हैं, उसकी आजादी का खून करके फिरसे सारे देशको गुलामीके नर्कमें डालनेके लिये भी जी जानसे लगे हुए हैं।

ऐसे निर्णयात्मक संघर्षके समय में यदि कबीर जयन्तीके सहारे किंचित भी उस महान संतके धर्मान्धता और सम्प्रदायवाद-विरोधी प्रगतिशील विचारोंसे, देशको रास्ता दिखानेमें कुछ मदद कर सकें तो इन मानव-घाती पापियोंका मुंह काला करनेमें अवश्य ही सफलता मिलेगी। कबीर साहबका नाम और 'मिशन' ही धर्मान्धता, जातीयता और साम्प्रदायिकताके विरुद्ध शुद्ध मानवताके प्रगतिशील मोर्चे का महानतम द्योतक बन गया है।

हमारे देश वासियोंकी मनोवैज्ञानिक रचना किस प्रकार की है यह हमको कदम-कदमपर याद रखना है। स्वार्थलोलुप तथा जन-विरोधी वर्गके लोग आज जरा-जरा सी बातमें अनेक जन-हितकारी मौलिक विचारों और कार्यों तकको 'विदेशी और विधर्मियोंके विचार' कहकर भयंकर रूढ़ियों में फंसी हुई जनताको प्रगतिकी ओर कूच करनेसे डरा देते हैं। धर्म और संस्कृतिकी रक्षाका प्रश्न खड़ा करके देशकी अधिकांश जनताको मूर्ख बनाया गया है और मुट्ठी भर राजनीतिक महत्वाकांक्षियोंको छोड़कर समस्त जनता सर्वनाशके मुंहमें सिमटकर पहुंच गयी है।

ऐसी स्थितिमें यदि हम चाहें तो काफी तक इसी राष्ट्रकी मिट्टीसे पैदा हो करने वाले महापुरुषों और संतोके जीवित तथा प्रगतिशील विचारों और परम्पराओंको आगे बढ़ाकर जनताकी प्रगतिको ओर लेजा सकते हैं। हेम जनताको उसीके देशके महापुरुष कबीरकी वह कसौटी और परख दे सकते हैं कि धर्म और संस्कृपि क्या अर्थ रखते हैं ? हम यह समझा सकते हैं कि जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



धर्म और संस्कृतिका नारा लगाकर नरमेध रचा जा रहा है, वह शोषक, स्वार्थी और स्थापित हित रखने वाले भेड़ियोंका धर्म और संस्कृति है। आम जनता और मानवता के आधार पर पैदा होनेवाले धर्म और संस्कृतियां बिलकुल ही दूसरी प्रकार की हैं जिनका समर्थन अन्य प्रगतिशील महा-पुरुषोंकी तरह कबीर साहबने भी बहुत हद तक किया है। हिन्दुस्तानके इस विशाल भूखंडमें यदि आमूल परिवर्तन या क्रांति की सफलताका स्वागत करना है तो कबीर साहब जैसे महान क्रांतिदर्शी संतके जीवन और विचारोंसे भी हमको बड़ी भारी मदद मिल सकती है।

इस दृष्टिसे कबीर-साहित्यके उत्त-राधिकारीके रूपमें हम अपने साहित्यकी श्रेष्ठता तो सिद्ध करेंगे ही पर उसकी श्रेष्ठता का लाभ उठाकर जनताको भी खून और आगसे बचानेका, किसी न किसी अंशमें, श्रेय प्राप्त करेंगे।

निस्संदेह मेरा यह कदापि आशय नहीं है कि हम कबीर साहबके एक एक शब्दको पकड़कर सम्प्रदाय वादियोंकी तरह उनसे चिपट जायें अथवा उनकी उपयोगी और मनमानी नयी नयी व्याख्याएं करनेमें जुट कर 'सब कुछ ठीक' कर लेनेका स्वप्न मात्र देखते रहें। जो बातें उनमें न हों उनका आविष्कार कर डालें या कबीर साहबके विचारोंकी आड़ लेकर पाश्चात्य देशोंके विचारोंको हेय अद्भुत और अग्राह्य सिद्ध करनेके दलदलमे फंसकर उनको गालियां देने अथवा दीवालिया घोषित करनेका निरर्थक पुराना खेल खेलनेमे लग जायें। इस प्रकारके बहुतसे प्रयोग हमारे यहां सदियोंसे होते चले आ रहे हैं। बल्कि इसके विपरीत हमको तो यह स्पष्ट समझकर चलना है कि आजके अनुरूप और प्रगतिशील तत्वोंको ही अपनानेकी एक मात्र शर्त रखी जा सकती है। हर महा-पुरुषके विचारोंमें उनके अपने समयकी समस्याओं और मान्यताओंके साथ साथ भविष्यके लिये भी उपयोगी हो सके ऐसे तत्व रहते हैं। हमको भी अपने अनुकूल प्रगतिशील विचारोंका ही आधार लेना है। आज हम चौतरफा संघर्षमें फंसे हैं। यह संघर्ष शिथिल और विफल न हो, इसके लिये यह आवश्यक है कि हम अपने पासके हरेक हथियारसे दुश्मनपर वार करनेमें पीछे न रहें।

नागरी प्रचारिणी सभा, अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दुस्तानी-तालीमी-संघ, अ० भा० प्रगतिशील हिन्दी लेखक सम्मेलन, साहित्य-संसद, लोकायन तथा अन्य साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएं व्यापक रूपसे कबीर जयन्ती मनायें—इतनी ही प्रार्थना है। पाठशालाएं, कालेज, विद्यापीठ, और विश्वविद्यालयोंके विद्यार्थी-वर्गसे भी यह आशा रखी जा सकती है। इस दिशामें किसी संस्था, साहित्यकार या नेताके आदेश की प्रतीक्षा किये बिना भी यह गौरवपूर्ण कदम उठाया जा सकता है।

पुनः प्रार्थना है कि हिन्दीजगत इस विषय पर अवश्य ही विचार करेगा।

# प्लेग

## श्रीहरिवंश सिंह वैद्यवाचस्पति

—'प्लेगा' लैटिन भाषा का एक शब्द है -जिसका अंग्रेजीमें अर्थ है - आकस्मिक दुर्घटना। पाश्चात्य चिकि-त्सकोंका कहना है कि यह रोग एशिया महा प्रदेशके हांगकांग (चीन) में सर्व प्रथम प्रसूत हुआ था। वहांसे इस मारक रोगका प्रसार भारतमें १८९६ ई० के बीच हुआ। आज से ५२ वर्ष पूर्व हम इस महामारीसे अनभिज्ञ थे। इस महामारीका प्रसव यूरोप में आजसे २८४ वर्ष पूर्व १६६४-१६६५ के बीच हुआ था। उस युगमें यूरोपमें एक महा संग्राम सौसाला युद्ध हुआ है जिसमें असंख्य नर मेधके साथ साथ यह महामारी मारकके रूपमें फैली थी। भारतीय शास्त्रों में,पुराणोंमें,इतिहासोंमे और इस रोगका कहीं वर्णन नहीं है। भारतमें १८९६ ई० से पूर्व था ऐसा सिद्ध नहीं होता है। यह रोग विज्ञान युगका जनपदोध्वंसक रोग है। वैज्ञानिक इसकी चिकित्सा है लेकिन विज्ञान इस बातको प्रकाशमें नहीं लाया कि इस महामारीका आदि जनक कौन, कहां और कब हुआ ?

आधुनिक परिभाषाके अनुसार यह एक निर्दिष्ट जीवाणुजन्यविषके कारण उत्पन्न होनेवाला जनपद संहारक महामारी है। जिसमें शीत पूर्वक ज्वरारोमूल-गण्ड-ग्रंथियोंमें शोथ, प्रलाप, वमन, शिरः शूल आदि विषेश लक्षण होते हैं।

### रोगप्रसार

रोगको उत्पन्न करनेवाले जीवाणु है। सभी जानते हैं चूहोंके द्वारा इस रोगका प्रसार होता है। लेकिन गरीब और निर्दोष चूहे रोगोत्पादनमें जरा भी उत्तरदायी नहीं है। चूहोंके पिस्सू जीवाणओंको लेकर रोग प्रसार करते हैं पर मौलिक रूपमें पिस्सू भी इस रोगका जनक नहीं। रोग को उत्पन्न करनेवाला एक विशिष्ठ जीवाणु है। प्लेगके जीवाणु और चूहोंके पिस्सू प्रकृतिके गर्भसे किस प्रकार पैदा होते हैं और उनका लालन-पालन प्रकृतिकी गोद में किस प्रकार होता है यह एक गुरुतर समीक्षाका विषय है। यहां यह जान लेना आवश्यक है कि प्लेगके जीवाणुओंका जीवन-चक्र तीन स्थानोंमें विभक्त है - पहला स्थान पिस्सूओंके शरीरमें —दूसरा स्थान चुहोंके शरीरमें -तीसरा स्थान मनुष्य शरीरमें ; प्रकृपिकी गोदमें ही पिस्सू प्लेगके जीवाणुओंसे संक्रमित हो जाते हैं और इस प्रकार रोगका बीज अंकुरित हो जाता है।

### सहायक कारण

(१) दारिद्र्यः—जनताकी गरीबी एक महत्वपूर्ण सहायक कारण है। गरीबीके कारण लोग अच्छे घरोंमें नहीं रह सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रख सकते, जूते नहीं पहनते--मशहरीका का उपयोग महीं कर सकते । आदि।

(२) हमारी गंदी आदतें:--प्लेग, हैजा आदि जैसे संक्रामक रोगोंको उत्पन्न करनेमें हमारी गंदी आदतें एक प्रधान कारण हैं। आर्थिक अवस्था बहु संपन्न होनेपर भी कुछ लोग घरोंकी सफाई नहीं रखते--घरके बाहर इधर-उध र कूड़े-कर्कट फेंक कर गंदगी पैदा करते हैं ! उनके घरोंकी कोठरियों कमरोंसे जिसमें कितनी ही चीजें इकट्ठी रखी रहती हैं भयंकर दुर्गन्ध निकलती है । उन कमरोमें सूर्यके प्रकाश और शुद्ध वायुका संचरण कभी नहीं होता । दीपमाला के दिन शायद ईउन कमरोंमें झाड़ू दी जाती है । असंख्य संक्रामक रोंगों के जीवाणुऐसे वातावरणमें उत्पन्न होते और पलते रहते हैं ! पर उनकी गंदी आदतें अस्वास्थ्यकर जीवनके कष्टको अनुभव नहीं करने देती ।

## हेतु

चूहे प्लेगके जीवाणुओंसे संक्रमित होते हैं और यह माहमारी चुहोंपर मारकके रूपमें फैलती है । संक्रमिक चूहे मरने लगते हैं। शेष चूहे औपसर्गिक क्षेत्र परित्यागकर भाग जाते हैं । अब रुधिराशिपिस्सू चूहोंके अभावमें मनुष्य रक्तपर आश्रित होना चाहता है । अत: ये पिस्सूजिनके उदरमें प्लेगके जीवाणु संवर्द्धित होते हैं मनुष्यको काटता है और रक्त चूषणके साथ-साथ रोगके जीवाणुओंको मनुष्य - शरीरमें प्रवेश करा देती है ।

## रोग दर्शनफी अवधि

जिस दिन पिस्सू प्लेगके जीवाणुको मनुष्यके शरीरमें निक्षेप करता है उस दिन ही रोगके लक्षण उत्पन्न नहीं होते। रोगके रूपका दर्शन ४८ घंटेसे लेकर एक या दो सप्ताह बाद होता है । यह रोग संचय काल कहलाता है ।

## विकृति

चूहोंके पिस्सू प्राय: डेढ़ फूटतक ऊंचा उछलते हैं । इस कारण वे मनुष्यके पांवों पर ही विशेष काटते हैं । कभी-कभी सोये मनुष्यके मूख, हाथ, ग्रीवादिअंगोंको भी काट लेते हैं । प्लेगके जीवाण, दंश स्थानसे लसीकावाहिनियोंके मार्गसे होता हुआ रक्त में मिल१ा है । लेकिन जीवाणुओंको रक्तमें संचरित होन क पूर्व लसाका ग्रंथियां उन्हें रोकती ह । इस प्रकार लसीकी ग्रंथियां एक प्रकारसे शरीर-रक्षक दुर्ग हैं जिनका सारे शरीरमें जाल-साबिछा हुआ है । लसीका ग्रंथियां एक दृष्टिसे रण-भूमि है जो शरीरमें जीवाणुओंके पहुंचने पर शोथपूर्ण हो जाती है । रोगोत्पादक जीवाणुओंके शरीरमें प्रविष्ट करनेपर शरीर रक्षाके लिए तथा उन घातक जीवा-णुओंके विनाश करनेके लिए शरीरके रक्त गत श्वेत कण शोथयुक्त लसीका वाहियोंके स्थानपर अधिकसे अधिक संख्बामें दौड़पड़ते उस समय इनकी संख्या स्वाभाविक अवस्था से लगभग आठगुणीअधिक हो जाता है । इसलिए कि ये अपने बलिदानसे जीवाणुओं का नाश कर सकें और शरीरकी रक्षा उस शोथस्थानपर रक्त संचार अत्यधिक मात्र ामें होने लगता है। रक्ताधिक्यके कारण सूजन बढ़ती जाती है । --लोहितवर्णता और उष्णता भी रक्तमें हलचल उत्पन्नहोने के कारण ही होती है । शोथस्थानमें बात नाड़ियोंपर अधिक दबाव पड़ता है जिससे वेदना बढ़ती जाती है। श्वेत कण स्वस्थावस्था में १०,०००के लगभग प्रत्येक सी० एम में होते हैं, जो संक्रमण कालमें १००,००० तक पहुंच जाते हैं । श्वेताणुओंकी वृद्धिके के साथ साथ मज्जा रक्तमय हो जाता है--प्लीहा बढ़ जाती है । यकृत भी थोड़ा बढ़ जाता है और उसमें छोटे-छोटे व्रण बन जाते हैं। वृहदान्त्रमें व्रणोंकी उत्पत्ति हो जाती है । शोथ स्थानोंके श्रावोंमें --रक्त में-- लसीकामें प्लीहा, फुसफुसोंमें रोगके जीवाणु पाये जाते हैं । हृदयका वाम क्षेपक बढ़ जाता है ।

## (प्लेगकाके प्रकार)

लक्षणोंको देख कर प्लेगको पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है ।

### ग्रंथिक १ (गिल्टी)

इसमें जांघोंकी लसीका ग्रंथिका शोथ-पूर्ण तथा पीड़ा युक्त हो जाती हैं । क्वचित कक्ष, तथा ग्रीवाकी लसीका ग्रंथियां पहले शोथपूर्ण होती हैं । ग्रंथियां कुक्कुटाण्ड जैसी दिखायी देती है । ज्यों ज्यों शोथ बढ़ता है वेदना भी बढ़ती है । शीत लगकर सहसा ज्वर होता है । रोगीके पांव तथा पृष्ट प्रदेश में पीड़ा होती है—वमनकी इच्छा होती है, रोगी दुर्बल हो जाता है । विषाद मय । चलनेंकी शक्ति उसमें नहीं रहती शैयारूढ़ हो जाता है । उसका मुंख मंडल लाल नेत्र की आकृतिमें कुछ परिवर्तित हो जाता है । ताप १०२ से १०४ डिग्रीसे ऊपर भी कभी चला जाता है । ग्रंथियोंमें मवादका संचय प्राय: १ सप्ताहमें होता है । ज्वर क्रमश: न्यून होने लगता है । ग्रंथिके पकने तथा शारी-रिक तापके स्वाभाविक होनेसे रोगी आरोग्य लाभ करता है ।

(२) सैप्टीसीमिक यह घातक है। इससे मृत्यु संख्या अधिक होती है । जीवाणु तथा उनके विष लसीका ग्रंथियोंकी रोग-प्रतिकारशक्तिको तोड़कर रक्तमें संचरण करने लगते हैं। इसमें स्पष्ट रूपसे न तो लसी-का ग्रंथियोंकी वृद्धि दिखायी पड़ती है और न गिल्टी ही निकलती है । जीवाणु-विषका लक्षण सर्व शरीरमें दिखायी देता है । सिर के अग्रिम भागमें तीव्र वेदना-ज्वर वमन प्रलाप मानसिक क्षोभ मुख्य लक्षण है । कभी कभी ज्वर का वेग कस होता है-पर रोगी का अवस्था भयंकर होती है नाड़ी गति अत्यंत तेज, और दुर्बल रोगी ५ दिनमें मर जाता है ।

### (३) न्यूमोनियम

अकस्मात शीत लगकर ज्वर होता है अंगोंमें वेदना अकडन जैसी । शिर शूल उत्केश (वमकी इच्छा) छातीमें पीड़ा शुष्क खांसी खांसीके साथ कभी कभी रक्त निकलता है श्लेष्मा (कफ) नहीं निकलता । कफके स्थान पर थूक जैसा कफ निकलता है जिसमें प्लेग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के जीवाणु होते हैं फेफड़े कठेर हो जाते हैं जिससे श्रवण प्रदेशपर करकरायुन शब्द मिलता है। शरीर नीलाम श्वास लेनेमें कष्ट चार दिनके अन्दर मृत्यु। ये मुख्य लक्षण हैं।

(४)

आंत्रिक बहुत कम देखा जाता है:- इसमें विकार आन्त्रमें होता है। अविच्छिन्न रूपसे मल त्याग होता रहता है। मलका रंग पीत्तापम कभी कभी शोणित युक्त। गिल्टी नहीं दिखती।

(५) करलवाल

यह भी बहुत ही कम देखा जाता है तीव्र ज्वर, मूर्च्छा आक्षेपक आदि मस्तिक गत लक्षण होते हैं।

उपद्रव

ग्रंथिक प्लेग सैप्टीसी मिकम परिवर्तित हो जाता है। ग्रंथियां पक कर फूटनेपर उनसे मवाद निकलना जल्द नहीं रुकता। व्रणका रोहण स्वस्थ धातुओंसे बहुत देर के बाद होता है।

सापेक्ष निदान

जीवाणुजन्य उपसर्गसे और भी बहुत रोग होंते हैं। और प्लेगके अतिरिक्त अन्य उपसर्गमें भी गिल्टी निकलती है ज्वर भी होता है। लेकिन जबतक प्लेगके जीवाणु लसीकामें रक्तमें न पाये जाएं प्लेगका भ्रम नहीं करना चाहिये। देखा गया कि जहां प्लेगका प्रकोप है वहां किसी अन्य कारण से मनुष्यको लसीका ग्रयां फूली कुछ ज्वर लसीका वह भ्रमसे आशंकित होकर मृत्यु को निमंत्रित कर लेता है।

चिकित्सा

प्रितरोधक:--

(१) सभी प्रकारकी सफाई सबसे सुन्दर चिकित्सा है।

(२) चूहोंको घरसे भगाना या मार डालना।

(३) मरे चूहोंको मिट्टीका तैल छिड़क कर जला देना।

(४) अन्न भण्डार और निवास गृह पृथक गपृथक और वे ऐसे बने हों जहां चूहोंको स्थान न दे सके।

(५) महामारीके दिनोंमें घरोंमें डी० डी० टी० छिड़के सुगन्धिदत धूप जलायें। हाइड्रो कियानिक गैस, ब्लीचिंग पाउडर, सलफर डि आसाइड डिहोल इनमें किसी एकसे गृह सलफर डि शुद्ध करना चाहिये।

(६) महामारीके दिनोंमें जमीनपर न सोये और नंगे पावों घूमें। घुटनों तक पट्टी वांध ले।

(७) प्रतिरोधक टीका ले।

२ शीशी मांसपेशी में इससे एक वर्ष तक प्लेगका भय नहीं रहता संक्रमित गृह का परित्याग करे।

शमन चिकित्सा

(१) रोगका संदेह होतेही रोगीको उन अस्पतालोंमें पहुंचा दें जहां औपसर्गिक रोगोंकी चिकित्साका समुचित प्रबंध है।

(२) यदि अस्पताल सुलभ न हो तो:-

(क) रोगीको पूर्ण विम्वाम दें।

(ख) सावधानी पूर्वक उसकी सेवा तथा उपचार करे।

(ग) ग्रंथिको पकानेके लिये गर्म सेक या पुल्टिश दें। आकका पत्र पीस कर उसमें उनका भस्म, कपताका विष्टा लवण मिला गर्म गर्म लेप कर गरम आकके पत्तोंसे ढक कर बांधे। इस क्रियाको गिल्टी पकने तक करे।

(६) पकनेपर चीटा लगा—मवाद निकाल उसे डेट्टल और गर्म जलसे धो दें

(३) ज्वर वेग अधिक हो तो माथे पर वर्फ —

(४) गंधककी गोलियां खिलांये और ऊपरसे काफी भागमें जल पीनेको साधारण मात्रा २ गोली प्रत्येक तीन घण्टे बाद ६मात्रा

(५) उसके मल -मूत्र का विसंक्रमण विधिसे नाश करें। —

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ पृष्ठका शेषांश

टुकड़ेमें बन्दकर देनेकी कथा सबसे सुनी है। ऐसे ही हाथकी अगूंठीमें से हाथीपर झूलने वाले आवरणको निकाल देनेका जिक्र भी होता है। ऐसी बातें तभी सम्भव है, जब कि कपड़ा अत्यन्त महीन पन हो। कपड़े का यह महीनपन आज दानवी मशीनों द्वारा भी प्राप्त नहीं किया जा सकता, जब कि भारतीय कारीगरोंने यह हाथोंसे कर दिखाया है। अतः पहले सूत कातने का महत्व चाहे आवश्यकता-जन्य भले ही हो, कम नहीं था।

एक स्त्री अपने पतिसे रुष्ट होकर अपने पिताके घर जाती है। पति उसे मनाने जाते है लेकिन स्त्रीका स्वाभिमान उसको झुकनेसे रोकता है? वह कहती है :—

रांगा पीयर पड़ोस,
झालागां रेटल्योंजी म्हारा राज।
जावांगां जावरियारो हाट
मोंघो करी बेंचागांजी म्हारा राज।
रुपया रुपया म्हारो तार,
मोंघरी म्हारी कूंकड़ी जी म्हारा राज।

—मैं अपने पिताके घर ही रहूंगी, पीयर पास ही है। मैं चरखा चला-कर सूत कातूंगी, पीयर और उसे जावरेके हाटमें महंगा कर बेचूंगी।

—रुपय रुपयेमें उसका तार बिकेगा और लच्छी एक मोहरके घाव होगी।

उन दिनों स्वावलम्बी होकर जीनेकी कला सब जानते थे। दूसरेका बोझ बनकर जीना अपमानकी जिन्दगी समझा जाता था। अपने पिताके घर रहनेपर भी उस स्त्रीको अपने कार्यमें विश्वास है। गृह उद्योग की यह सादगी आत्माको कष्ट नहीं पहुंचाती। लेकिन, हमारा यह स्वाभिमान और मनकी स्वतंत्रता मशीनोंके अवतरणके साथ-साथ धीरे-धीरे लुप्त हो गये। फिर भी आज भारत के असंख्य ग्रामोंमें अनेक ऐसे भी हैं जहां मशीनका अभिशाप अभी नहीं पहुंचा है। गांवोंमें घरेलू खेती और घरेलू धंधोंका मान भंग नहीं हुआ है। गांधीजीका खादी आंदोलन जब भारतमें फैलाने लगा तो गांवोंमें धीरे धीरे चलने वाले चरखे भी तेजीसे फिरने लगे और कस्बोंमें जहां चरखोंपर पकड़ी के जाले और गर्द जम गयी थी काममें लाये जाने लगे। खादी पहनो और विदेशी मालका बहिष्कार करो—यह सब ओक सुनायी पड़ने लगा। दासतामें पिसा हुआ भारतीय इस अभिशापसे मुक्ति पानेके लिये बेचैन हो गया। यह बेचैनी और विदेशी वस्तुसे घृणा लोगोंकी नसोंमें उतरकर अनेक कार्यों और भावों द्वारा व्यक्त होने लगी। गांवोंके गीत इससे अछूते कब रहते? मालव युवतियोंने गाया:—

चरखों चलानो सीखो रे महाभारतका बन्ना
खादी पेरनो सीखो रे महाभारतका बन्ना
टोपीमें ले लो झंडों रे महाभारतका बन्ना
चरखो चलानो सीखो रे महाभारतका बन्ना

यह गीत उस समय का है जब भारत में प्रथम महायुद्धकी चिनगारियां अपना असर दिखा रही थीं। महा भारतके बन्ने से तात्पर्य युद्ध कालके दूल्हेसे है।

उस समय लोग आर्थिक कठनाइयों से परेशान थे। छोटे-छोटे रीति-रिवाजोंके लिये विदेशी मालको खरीदनेमें सारी रकम खर्च करनी पड़ती थी। समयने लोगों को इस समस्याका हल बताया:—

कांई लगनाकी लिख न हजार
चलन चाल्यो खादी को।
किनने चलायो लील्यो रेशमी रे,
तो किननेदियो उपदेश,
चलन चाल्यो खादी को।
जर्मन चलायो लील्यो रेशमी रे,
गांधी दियो उपदेश,
चलन चाल्यो खादी को।

—यह लग्नका खर्च तो हजारोंका है। आजकल तो खादीका रिवाज चल गयाहै। यह लील्या रेशमी किसने चलाया और किसने उपदेश (खादीका) दिया है?

जर्मन वालोंने तो लील्या रेशमी चलाया और गांधीजीने खादीका उपदेश दिया है।

आजकल तो खादी का रिवाज है। गांधी विचार धाराका प्रचार खादी और अहिंसाके नामपर अत्यधिक हुआ है। वर्षोंसे भारतके गांव-गांवमें खादी-प्रचार का कार्य जारी है। खादीका क्या महत्व है, इसको समझनेका प्रयत्न प्रायः अधिकांश लोगोंने किया है। गीतोंमें भी स्त्रियोंने खादी की महत्ताको बड़े उत्साहसे व्यक्त किया है। देखिये:—

चीरा तो तम पेरलो जी पेरलो
बना सुदेसी वापरो जी वापरो
जी वायल मलमल छोड़ दो जी झछोड़दो
जी खादी कर लो पास, सुदेसी वायरो

गीतमें पाएं शब्दसे प्रतीत होता है कि यह की उपज है।

गांधीजीकी व्यापकता जब हम इन गीतोंमें पाते हैं तो गांधीवादके प्रभावपर हमें गर्व होता है। युगकी संस्कृति, युगकी कला और युगकी वाणी गांधीजीसे बहुत प्रभावित हुई है। गांधीजी ज्यों ज्यों दूर अतीत के रहस्य बनते जायेंगे, लोक संस्कृतिकी यह बहती हुई गंगा उनके महत्वको उतनी ही मात्रामें विकसित करेगी। खादीकी महत्ता न केवल गांवोंके गीतों तक ही सीमित है, बल्कि पहेलियों और कथाओंमें भी इन्होंने अपना स्थान बना लिया है। आगे गांधीजी के उपदेश भी गीतोंकी कड़ियोंमें हमेंशाके लिये सजीब हो उठेंगे।

---

## भारतका अगला चुनाव

नव विधानके अन्तर्गत सभी प्रांतीय सरकारें मत दाताओंकी सूचियां तैयार कर रही हैं। १ जनवरी १९४८ से सब वयस्कोंकी आयु निश्चित की जायगी। एक ही सूचीमें सब सम्मिलित किये जायेंगे चाहे वे किसी भी जातिके क्यों न हों। जो भारतका नागरिक है वह मतदान कर सकेगा। वे व्यक्ति ही मतदाता हो सकेंगे जिनके माता पिता अथवा पितामह आदि भारतकी सीमामें पैदा हुए हों और १३ अप्रैल १९४७ के बादसे किसी विदेशी राज्यमें न रहने लगे हों। जो व्यक्ति लंका बर्मा अथवा मलायामें पैदा हुए हों और वे भारतमें रहने लगे हों ऐसे व्यक्ति भी मतदाता बन सकेंगे। मतदाताकी सूचीमें वेही व्यक्ति सम्मिलित किये जायेंगे जो उस स्थानपर ३१ मार्च १९४८ तक कमसे कम १८० दिन रह चुके हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## भारतीय प्रदेशपर भूटानका दावा

भूटानका प्रतिनिधिमंडल भारत सरकारके साथ अपनी वार्ताओंका प्रथम दौर समाप्त कर चुका हैं ।

वार्ताओंमें भूटानी प्रतिनिधिमंडलने ८०० वर्गमील भारतीय प्रदेश भारत सरकारसे वापस मांगी । उसका दावा था कि यह भूमि हस्तगत कर ली थी । यह भूमि अधिकतया पहाड़ी तथा जंगली है और पश्चिमी बंगाल तथा आसाम प्रांतके अधीन है। केंद्रीय सरकारने संबद्ध सरकारों से परामर्श करनेका वचन दिया है ।

## सातवें महाद्वीप की खोज

'अतलांतिस' नामक महाद्वीपकी खोज के लिये लंदनकी एक अभियान सेना अतलांतक महासागरमें गहराई तक घुसनेकी तैयारियां कर रही है । उक्त सेनामें १५ व्यक्ति है । यह सेना दो दलोंमें विभाजित है । जो गत १८ महीनोंसे अतलातककी गहराई तक पहुंचनेकी योजना बना रएस है । सेनाका विश्वास है कि उसे एक चही वस्तु प्राप्त होगी जिससे समस्त संसार आश्चर्यान्वित हो जायेगा ।

२००० वर्षसे महान दार्शनिक चप्लेटो के कालसे ही मिश्रके पुजारियोंका विश्वास था कि 'अतलांतिक' नामक एक देश अवश्य है । इसका भूखंड बड़ा विशाल बताया गया है । यह सभ्य और सुसंस्कृत लोगोंका निवास था लेकिन १००० पूर्व यह जल प्रलयका शिकार हो गया ।

सेनाके नायक श्री साइक्स पिछले २५ वर्षों से इस विषयका गम्भीर अध्ययन कर रहे हैं । अपने अनुसंधानके संबंधमें आपने कहा है कि यह द्वीप अतलांतिक महासागरकी डाल्फिन पर्वत श्रेणीसे दो मील नीचेकी ओर जलमें होगा । हमारी सेना उस महाद्वीपका फोटो लेनेका प्रयास कर रही है । ऐसा मालूम होता है कि समुद्र के गर्भमें कुछ इमारतें भी छिपी हैं ।

## ११ सौ प्राचीन स्वर्ण पत्र

हिन्देशियाकी राजधानी जोग्जाकार्ता के निकट परमबनम मंदिरके ध्वंसावशेष में ११ सौ वर्षका पुराना स्वर्ण पत्र मिला है जिसमें संस्कृतका एक लेख है । इसके निरीक्षणके लिये हिन्देशिया शिक्षा और सांस्कृतिक विभागकी ओरसे भारतीय पुरातत्व अमंत्रित किये गये हैं ।

## नंगों की दुनियां

नागरिक कानूनोंसे परेशान होकर अमरीकाके न्यूंडिस्टों (नंगे रहनेमें विश्वास करने वाले) ने पनामा तटके 'क्रोट' नामक एक द्वीपको खरीदकर वहां नंगोंकी बस्ती बसायी थी । इस द्वीपका उन्होंने फिरसे नामकरण भी किया था —'आजाद द्वीप' बेचारोंने सोचा था यहां कानूनोंकी बन्दिशें नहीं होंगी और मजेसे नंगे रहेंगे ।

पर किस्मतकी मार ! इस द्वीपमें बसेरा डालनेके बाद उन्हें पता चला कि यहां इतनी चींटियां हैं कि नंगा रहना तो दूर, पूरे कपड़े पहननेपर भी इस कयामतसे पार नहीं । बेचारे अब या तो सारे बदनपर तेल का गाढ़ा लेप किये रहते हैं या ऊपरसे नीचे तक पूरा लिबास पहनना पड़ता है ।

## जर्मनीमें बौद्धधर्म का प्रचार

बर्माके बौद्ध संघके प्रतिनिधि महास्थविर उथनन्द अपने बौद्ध वेषमें हैम्बर्ग पहुंचे । उन्होंने जर्मनीकी नियंत्रण समितिसे अनुमति मांगी हैकिउन्हेंतीनवर्षतकबौद्धधर्मका प्रचार करनेके लिये जर्मनीमें रहने दिया जाय । विश्वास किया जाता है कि जर्मनी में लगभग १०,००० बौद्ध हैं ।

## पाकिस्तान भी 'गांधीका देश'

कराचीके मेयर हकीम मुहम्मद खां ने, जो हालमें लन्दनसे लौटे हैं, एक मुलाकात में बतलाया कि लंदनमें जब वे एक धोबी की दूकानपर गये तो उसकी संचालिकाने "आप गांधीके देशसे आये हैं" शब्दोंके साथ मेरा अभिवादन किया । जब मैंने उससे यह कहा कि मैं पाकिस्तानसे आया हूं, तो उसने उत्तर दिया : "वह भी गांधी का देश है ।"


सुन्दर और मनोरंजक पुस्तकें

* पाकविज्ञान —

हर प्रकारके दाल, शाक, अचार चटनी सुरब्बे आदि बनानेके अलावा विभिन्न यती ढंगका खाना बनानेका भी पूरा दिया गया है मूल्य ३॥)

* सिलाई कटाई विज्ञान—

हर प्रकारके कपड़े काटना व सीना सिखाया गया है । मूल्य ॥।=)

*रुस्वईकी चांदनी रातें—

एक अभिनेत्री की आत्मकथा जिसमें उसने अपने जीवन की घटनाओंको लिखा है । मूल्य १॥=)

पता:— अनिल कम्पनी (४)
फुलहट्टी आगरा

MONSOON SETS IN
Anopheles breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मलेरिया बुखारके लिये रामबाण है अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियास कष्ट हो तो इसका सेवन करें । यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है ।

PANCHATIKTA Kasaya

KAVIRAJ N.N.SEN & CO. LTD.


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चित्र विचित्र

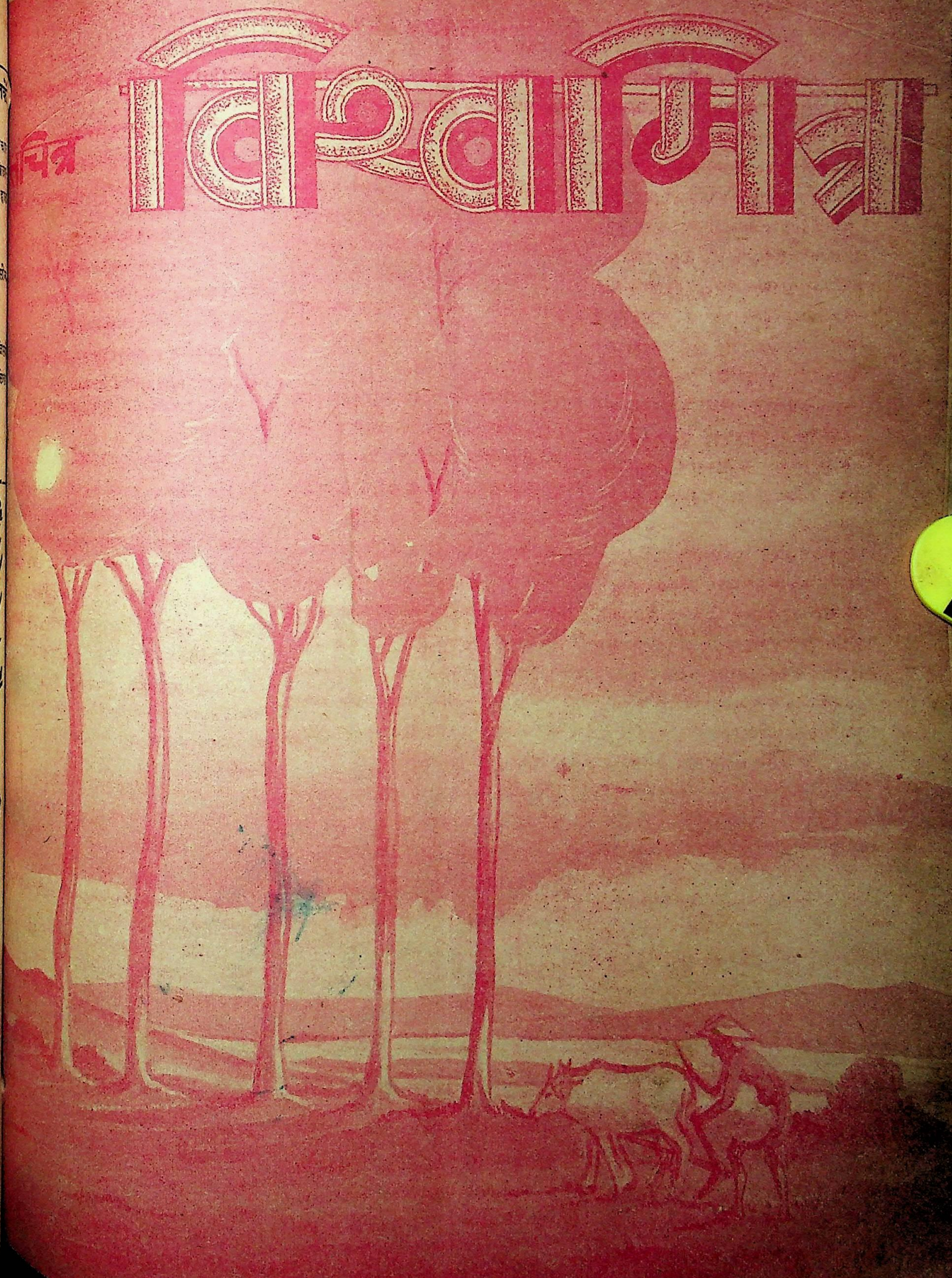

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आज हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें पानी नहीं है

—पुरुषोत्तम दास मोदी

हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें आज पानी नहीं है। पश्चिमी पंजाबने (पाकिस्तान का एक प्रांत) पूर्वी पंजाबसे (हिन्दुस्तान का एक प्रांत) पानी मांगा है वहांकी धरती पानी बिना प्यासी है। इतना-इतना मानव लोहू भी उसकी प्यास नहीं बुझा सका इस लिये अब उसे पानी चाहिये—पानी। लेकिन हिन्दुस्तानमें पानी है कहां। अभी उस दिन जब हिन्दुस्तानसे पाकिस्तानको जानेवाले शरणार्थियोंने तुमसे पानी मांगा तो तुमने उनके होठोंसे उन्हींका गरम-गरम खून लगाया था क्योंकि तुम्हारे पास भी पानी नहीं था। पाकिस्तानमें भी पानी की जगह खून इफरात था और हिन्दुस्तान में भी पानीकी जगह खून ही इफरात था। दोनोंने एक दूसरेके होठोंसे एक दूसरे का खून लगाया। मासूम बच्चे पानीके लिये बिलख उठे लेकिन उनकी आंखोंसे उनके ओंठोंपर पानीकी बूंदे भी न टपकीं जिन्हें चाहनेके लिये बार-बार उन मासूम बच्चों की जीभें बाहर निकल आती थी। क्योंकि वे बच्चे हिन्दू और मुसलमान थे यही उनका सबसे बड़ा अपराध था।

लेकिन, कहते हैं अब वहांकी भुजायें, वहांकी कलाइयें मटके और घड़े लिये पूर्वी पंजाबसे आनेवाली नहरोंकी ओर देख रहे हैं। खूनसे उनका जी भर गया है अब प्याससे वे जा रहा है। पर यह खूब है उस दिन जब पंजाबमें इंसानियत तबाह हो रही थी धरती की गोदमें खूनकी दरिया बह रही थी तब और नदियोंमें भी बाढ़ आ गयी और कितनों को बेघर-बार कर गई। उस वक्त पंजाबमें इफरात पानी था, इफरात खून था। लेकिन आज पंजाब की पांचो दरिया— रावी, झेलम, चेनाब, सतलज, व्यास सूख गयी है। उनमें पानी नहीं है।

अखंड पंजाबके दोनों टुकड़ोंमें ही पानीका टोटा नहीं है। दिल्लीमें भी पानी की कमी है। वहां भी पानी कम खर्च करो दिवस" मनाया जा रहा है। हिन्दुस्तान की राजधानीको भी पानी चाहिये। राज [illegible] टोटियोंमें पानीका टोटा है।

लेकिन पाकिस्तानने हिन्दुस्तान से पानी मांगा है—पंजाबने पंजाबसे पानी मांगा है। उस पंजाबने जहांके मिट्टीके घड़े मुसाफिरोंकी प्यास बुझा-बुझा कर कभी खाली नहीं होते थे जहांकी कलाइयां कभी पानी पिलाते-पिलाते दुखती नहीं थी आज वे घड़े फूट चुके है और वे कलाइयां अपने चुल्लूमें आंसूकी बूंदें इकट्ठी कर रही है। यह भी खूब रहा कभी तुमने अपना खून दूसरोंके चुल्लूसे पीया था। अब अपने आंसू अपने ही चुल्लू से पीयो।

पंजाबको पानी चाहिये—उस पंजाबको जहां लस्सीके कुल्हड़ कभी खाली नहीं होते थे जहांकी उंगलिया कभी दही मथते-मथते थकती नहीं थी। आज वे कुल्हड़ टूट-फूट चुके है। उंगलियोंमें दर्द हो रहा है।

कहते है हिन्दुस्तानसे जानेवाले शरणार्थियोंके हाथ हिन्दुस्तान ने एक-एक गिलास पानी सौ-सौ रुपये में बेचा था उसी तरह पाकिस्तानसे आनेवाले शरणार्थियोंके हाथ पाकिस्तानने भी पानी बेचा था। आज वे ही शरणार्थी हिन्दुस्तानके हाथ पानी बेच रहे हैं। गरीब शरणार्थी अमीर शरणार्थीके हाथ पानी बेच रहा हैं।

कलकत्तेसे बंबई जानेवाले मुसाफिर बेचारे प्यासे हैं गर्मीसे उनके कंठ सूख रहे है। प्लेटफार्मपर इफरात पानी है पर वे प्लेटफार्म पर उतर नहीं सकते। बेचारे थर्ड क्लासके मुसाफिर मंगियोंकी तरह अपने दखेमें धंसे-ठंसे पड़े हैं। वे उतरे कैसे? इसलिये उनके कंठ और भी सूख रहे है। उनके पेटका पानी पसीना बनकर सूखता जा रहा है। वे प्यासे है उन्हें पानी चाहिये। वह देखिए उनके लिये पानी आ रहा है। पंजाबसे भागकर आये हुए बच्चे यह देखिए अपने मासूम मस्तकोंपर कोमल कलाईसे पकड़े पानीकी देगकियां, घड़े और बालटियां लिये आ रहे हैं। आपको पानी चाहिये न। ओ पानीवाला पानी देना। और आपने आपने अपने लोटा बढ़ाया-पानी देना जी। हां तो लगाइये लोटा। आप प्यासे है आपको पानी चाहिये इसलिये [illegible] कर अपना लोटा उसके हाथमें दीजिये ही।

"अच्छा तो साहब निकालिये दो आने पैसे आपका लोटा बहुत बड़ा है। हां तो आप दे रहे हैं न। लाइये इधर बढ़ाइये तो आपका लोटा भरूं।"

ओह! तो पानीपर भी पैसा लगेगा?

जी साहब पानीका भी पैसा लगेगा। हम इतनी दूरसे आपके लिये पानी ला रहे हैं हमें मजदूरी तो चाहिये ही।

मजदूरी! अच्छा तो एक-आने ले लो। एक लोटे पानीका और क्या लोगे?

अच्छा तो एक ही आने लाइये साहब यह लो!

और आपने उस लोटेको अपने प्यासे होठोंसे लगाया। और अगर आपने पैसा देनेमें हीले हवाले की तो लीजिए आपका लोटा भी गया। उसे उसने वही नीचे जमीन पर छोड़ दिया और चल दिया। गाड़ीने सीटी दी है अगर हिम्मत हो तो गाड़ीसे उतरिये और उतर कर उस खाली लोटे को चुपचाप उठा लाइये। ट्रेन छूट जाय तो क्या छूट जाने दीजिए। बिना पैसोंके आपको पानी मिल जायगा—इफरात और तब अपनी प्यासको कोस-कोस कर खूब प्यास बुझाइये।

तो पाकिस्तानने हिन्दुस्तानसे पानी मांगा है। हिन्दुस्तानके रहनेवाले पाकिस्तानसे आनेवालोंसे पानी मांग रहे हैं। दोनों जगह पानी नहीं है।

हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें आज पानी नहीं है।

पानी हिन्दुस्तानमें भी है पाकिस्तानमें भी है। पानी कहीं नहीं है और पानी हर जगह है। पानी हिन्दुस्तानमें भी है पाकिस्तानमें भी है।

लेकिन उनके आंखोंका पानी मर चुका है उनके दिलोंकी दरिया सूख चुकी है। इसलिये आज हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में पानी नहीं है, इसलिये रावी, झेलम, चेनाब, सतलज, व्यास, गंगा और यमुना सबका पानी सूख गया है।

और हों तो पाकिस्तानने हिन्दुस्तानसे पानी मांगा है लेकिन—

हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें आज पानी नहीं है।

Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वमित्र

सम्पादक--
देवदत्त मिश्र

वर्ष--संख्या ३१ १८ ता० २६ मई १९४८ MAY 26, 1948. मूल्य =), वार्षिक ६)


## गीत

जब तक तनमें प्राण भाग मत जग जीवनसे !
बार-बार जल जलकर भी क्या कभी शलभ दीपकसे भागा?
हार मानकर कांटोंसे कब बता मधुपने मधुबन त्यागा ?
वज्र गिरे, ओले बरसें, टूटे पहाड़ अंधड़ मंडराये-
घनको छोड़ पपीहेने पर कब जलदान किसीसे मांगा ?
फिर तू ही क्यों आज हृदयकी दुर्बलताका दामन थामे-
जीवनकी लालसा त्याग, हैं मांग रहा वरदान मरणसे !
जब तक तनमें प्राण भाग मत जग जीवनसे !!

तुझे याद हो-प्राणोंमें रो रोकर भी तूने गाया है,
तेरे पगके छालोंने पथके कांटोंको शरमाया है,
बैठ तरुण अरमानोंकी अधजली चिताकी जड़ समाधिमें-
अनगिन भूले हुए राहिओंको तूने पथ बतलाया है,
और आज यदि बन्द कर दिया तूने ही निज गान विजयका-
दुनिया लड़नेका साहस फिर पायेगी किसके गायनसे ।
जब तक तनमें प्राण भाग मत ! -जग-जीवनसे !!

जीवन एक समर है जिसमें लीन जगतका प्रतिक्षण प्रतिकण
रोज हुआ करता है नभ पर दिनकरका, रजनीकरका रण
प्रात हारता जांद, पराजित होता संध्याको रवि नित ही-
फिर भी नित्य नये साहससे देते वे रणका आमंत्रण,
हार, जीत तो विश्व-समरमें सत्य नहीं, वे अमर दशायें-
प्राप्त किया करते हैं योद्धा लड़नेका साहस, बल जिनसे !
जब तक तनमें प्राण भाग मत जग-जीवन से !!

—श्री 'नीरज'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विश्वामित्र

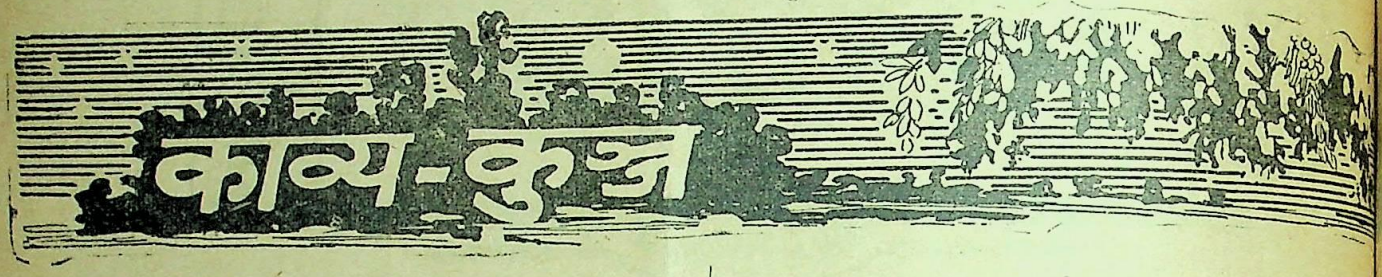


## प्रणयका परिधान

करो अंगारोंसे शृंगार !

किया क्यों दीप शिखा से मेल ?
शलभ रे ! प्रणय नहीं है खेल।
जलनमें कहां छिपी है छांह, दाहसे वर्तुल प्यार संवार।
करो अंगारोंसे शृंगार !
मचल कर चले चूमने फूल—
अधरमें चुभे अचानक फूल;
मधुप रे ! साहस है तो लिपट, कली है कहां? कंटीली।
करो अंगारोंसे शृंगार !

पर जाने की है यदि चाह—
खोज मत कौन सुगम है राह;
प्रबल झंझामें नौका खोल, तोड़ दे नाविक रे ! पतवार !
करो अंगारोंसे शृंगार !
उठी क्यों अन्तरतममें हूक ?
आज क्यों मुखर मुरलिया मूक ?
पुजारी ! लौटो नहीं निराश, खुलेगा मन-मन्दिरका द्वार !
करो अंगारोंसे शृंगार !

—प्रभंजन

## मैं तुम्हें अबोध कहूं या मैं नादान बताऊं अपनेको

मैं तुम्हें अबोध कहूं या मैं नादान बताऊं अपने को।
जीवनको मधुर समझती हो,
पर मधुर नहीं मानव जीवन;
पग-पग पर दुःखके शूल बिछे,
करते विह्वल मानव - मन को,
यह नहीं कल्पना लोक अरी, जो सफल बनालो सपने को।
मैं तुम्हें अबोध कहूं या मैं नादान बताऊं अपने को।
जीवनकी मंजिल दूर बहुत,
चलना जिस पर आसान नहीं;
चंचल मन है, अल्हड़ यौवन,
जीवनका है सामान नहीं,
सोचो दुःखमें पीड़ा कितनी, यह जीवन नहीं कलपने को।
मैं तुम्हें अबोध कहूं या मैं नादान बताऊं अपने को।
माना एकाकी नहीं, साथ में—
साथी है जीवन भर का;
पर पन्थ निरा अनजान रहा,
सुख मिला कहीं तो पलभर का,
दुःखको कब तक सुख मानोगी, ये मोती नहीं ढुलकने को।
मैं तुम्हें अबोध कहूं या मैं नादान बताऊं अपने को।

—प्रो० मित्तल एम० ए०

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



परहित बस जिनके मनमाहीं।
तिन कंह जग दुलभ कछ नाहीं ।।

विश्वमित्र

# अन्नोत्पादन बढ़ाओ

प्रचुर साधनों और सामग्रियोंके देश भारतवर्षमें चारों ओर अभाव ही अभाव दिखायी दे रहा है। जीवनकी रक्षाके लिये आवश्यकक अन्न,वस्त्र तथा गृहका अभाव है। जीवनको नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टिसे उच्च स्तरपर उठानेके लिये इस धर्मप्राण देश भारतकी व्यवस्था इतनी अपूर्ण और अपर्याप्त है कि समाजके इने-गिने लोगोंको छोड़कर अवशिष्ट सम्पूर्ण समाजको मानसिक और नैतिक विकासके साधन और अवसर मिलते ही नहीं हैं। यह सब हमारी सदियोंकी दासताका परिणाम है। विदेशी शासनने हमारे समाजकी सम्पूर्ण व्यवस्थाको इस तरह खोखली बना डाली है कि ध्वन्सोन्मुखी प्रवृत्तियां समाजपर राज शासन कर रही हैं। देशको इस शोचनीय अवस्थासे मुक्त करनेके लिये यह आवश्यक हो गया है कि पहले उन उपायोंका अवलम्बन किया जाये, जिनसे देशवासी तमाम अभावोंसे मुक्त होकर स्वावलम्बी बन सकें। हमारी सरकार इसी उद्देश्यसे विभिन्न योजनाएं देशको स्वावलम्बी और अभावोंसे मुक्त करनेके लिये बना रही हैं।

देशमें इस समय जैसा अन्नाभाव है, शायद उसके इतिहासमें ऐसा समय पहले कभी नहीं आया। इस अभावको कैसे दूर किया जा सकता है, इसपर तात्त्विक अनुसंधान करके अपना मन्तव्य सरकारके सामने उपस्थित करनेके लिये एक खाद्यान्न समिति संगठित की गयी थी। इस समितिने जो अपनी अन्तिम रिपोर्ट उपस्थित की है उसमें यह सुझाया गया है कि कमसेकम समयके भीतर सलाना एक करोड़ टनकी वृद्धि अन्नोत्पादनमें होनी चाहिये। तभी अभाव, दुर्भिक्ष और विदेशोंकी निस्सहाय पर-मुखापेक्षिताके निरन्तर भयसे देशको मुक्त किया जा सकता है। किन्तु कहनेसेही तो यह काम संभव नहीं है। हम युद्धकालमें और उसके बाद भी अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलनका परिणाम देख चुके हैं। इसमें सन्देह नहीं कि १९४३-४७ के बीचमें अन्न अधिक उपजानेके संबंधमें सही उपायोंसे काम लिया गया था फिर भी उद्देश्य सिद्ध नहीं आ। इसका कारण यह था कि वस्तुस्थिति सर्वथा विपरीत थी एवं जो प्रयास किये गये थे, वे अपर्याप्त थे। समाजके जिन लोगोंके हाथमें इस योजनाको सफल बनानेके साधन थे उन जमींदारों, तालूकेदारों एवं व्यवसायियोंका जैसा सहयोग मिलना चाहिये था, नहीं मिला। अतः देशको अन्नाभावसे मुक्त करनेके लिये इस बार पहलेसे अधिक क्रान्तिकारी उपायोंसे काम लेनेकी आवश्यकता है। नयी उत्पादन-नीति और प्रणालीका अवलम्बन आवश्यक है। इसीलिये खाद्यान्न नीति समितिने यह सिफारिश की है कि पर्याप्त सिंचाईकी व्यवस्था, जिस भूमिपर पहले हीसे कृषि हो रही है उसका उत्पादन बढ़ानेके निमित्त जोरदार प्रयत्न एवं कृषियोग्य परती जमीनको खेतोंमें परिणत करनेके लिये तत्काल बहुत बड़े पैमानेमें बहुमुखी योजना निकट भविष्यमें व्यापक अन्न उत्पादन नीतिकी सफलताके लिये आवश्यक है। इस योजनाको कार्यमें परिणत करनेके लिये एक केन्द्रीय कृषियोजना समिति तथा प्रान्तीय कृषि योजना समितियोंके साथ साथ एक ऐसा स्वायत्त शासन प्राप्त केन्द्रीय संगठन कायम किया जाये जो कृषियोग्य भूमि प्राप्त कर सकें। इस सम्पूर्ण योजनाके लिये ५० करोड़ रुपयेकी पूंजी आवश्यक बतायी गयी है। यह योजना आगामी पांच सालके भीतर-अन्न उत्पादनमें निश्चित वृद्धिके लिये तैयार की गयी है।

इस योजनाकी सफलता प्रान्तीय प्रयत्नोंपर निर्भर है। और हर्षकी बात है कि कतिपय प्रान्तोंने,खासकर बिहार,संयुक्त प्रान्त, मद्रास और मध्यप्रान्तने देशकी कृषिको समुन्नत करनेमें सबसे बड़ी बाधा जमींदारी प्रणालीको हटाने की दिशामें निश्चित कदम उठाय गया है। इस तरहका प्रयत्न किया जा रहा है कि कमसेकम ६ महीने और अधिकवे अधिक १८ महीनेके भीतर बिहार और संयुक्त प्रान्तमें जमींदारी प्रथा टूट जायें। इसके अतिरिक्त कतिपद प्रान्तोंने नहरोंको बढ़ाकर,नलकूप बैठाकर एवं जलसे विद्युत पैदा करके कृषि भूमिकी सिंचाई की व्यवस्था पर्याप्त करनेका कार्य भी बड़ी तत्परताके साथ आरम्भ कर दिया है। केन्द्रकी सहयताके भरोसे हाथपर हाथ धरे बैठे रहनेकी नीतिको त्याग करके जिन प्रान्तोंने कृषि उत्पादन बढ़ानेकी अपनी स्वतंत्र योजनाएं पहलेहीसे कार्यान्वित करना आरम्भ कर दिया है,उनको खाद्यान्न नीति समिति द्वारा सुझाये गये प्रस्तावोंके अनुसार काम शुरू होनेपर बड़ी सुविधा और सहायता मिलेगी। उनकी यह दूरदर्शिता प्रशंसनीय है। एक करोड़ टन अर्थात् प्रायः २८ करोड़ मन प्रति वर्ष अन्न उत्पादनमें वृद्धि सहज काम नहीं है। अतः अधिकसेअधिक तत्परताके साथ प्रान्तों और देशी रियासतोंको केन्द्रके साथ सहयोग करनेके लिये प्रस्तुत रहना चाहिये। उनको पहलेहीसे अपनी मशीनरीको इस तरह पुन संगठित कर रखना चाहिये ताकि इस योजनाको पांच सालके भीतर पूर्णतया कर्यान्वित किया जा सके। इस योजनाकीसफलतामें समयका बहुत मूल्य है, क्योंकि खाद्यान्न नीति समिति ने प्रति वर्ष आबादीमें ५० लाखकी वृद्धिक अनुपात सामने रखकर योजना तैयार की हागी। अतः यदि समय के अन्तर्गत योजना पूरी न हुई तो आबादी तो बढ़ती ही जायेगी और इस तरह अन्नाभावकी समस्या बनी ही रहेगी। इसलिये केन्द्र, प्रान्त तथा देशी रियासतोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मिलकर इस तरहका प्रयत्न करना चाहिये कि पांच वर्षके भीतर देश एक करोड़ टन अन्न अधिक उत्पन्न करने लगे अन्न ताकि कमसेकम जहांतक अन्नका संबंध है हम स्वावलम्बी हो सकें और इस तरह विदेशोंसे अधिक मूल्य देकर हमें आज जो अन्न खरीदना पड़ रहा है उसमें फंसी रकम हम विकास और समृद्धिकी अन्य दिशाओंमें लगा सकें ।

देशकी सरकारके साथ-साथ जनताका भी कर्तव्य है कि वह उत्पन्न अन्न बढ़ानेकी योजनाको कार्यमें परिणत करनेके लिये स्वेच्छापूर्वक अपना पूर्ण सहयोग सरकारको दे । बिहार और युक्त प्रान्तके जमींदारोंको खासकर इस बातको ध्यानमें रखना चाहिये कि वे सरकारकी भू-सुधार योजनामें बाधक न हों, क्योंकि उनको सफलता तो मिलेगी नहीं अवश्य ही उनकी अवांछनीय नीतिसे कुछ अनावश्यक बिलम्ब अवश्य लग सकता है जो देशके लिये बहुत हानिकर सिद्ध होगा । उनका यह आचरण उनको जनता और सरकार दोनोंकी दृष्टिमें अप्रिय बनायेगा, जो उनके भविष्यके लिये कदापि वाञ्छनीय नहीं समझा जा सकता ।

एक बात और । अन्नोत्पादनमें वृद्धिसे जनसाधारण लाभ उठा सकें, इस दृष्टिसे सरकारकी आर्थिक नीतिमें भी तदनुकूल संशोधन होना चाहिये । जिसकीखादयान्न नीति समितिकी रिपोर्ट में शायद उसके अधिकारक बाहरकी बात [illegible] कोई उल्लेख नहीं किया गया व्यवसायियों और व्यापारियोंपर इस तरहके प्रतिबंध लगाये जाने चाहिये ताकि उत्पादिक अधिक अन्नका अधिकाधिक लाभ वे ही न मार लेंजाये और जनता तथा अन्न उत्पादन करनेवाले उससे फिर भी बंचित रहें । हमे आशा है कि सरकार इस ओर पर्याप्त सतर्कतासे काम लेगी तभी देशको अधिक उत्पन्न अन्नका लाभ प्राप्त हो सकेगा ।

## ऊटी सम्मेलन

एशियाई देशोंके बीचके आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सम्पर्क सदियों पुराने हैं । इन सम्पर्कोंको अधिक सुदृढ़ बनान और सन्निकट लानेके लिये यह आवश्यक है कि वे परस्पर एक दूसरेके सुखदुखमें साथी बनें । इस दष्टिसे यह आवश्यक है कि एशियाई देश समान आर्थिक समस्याओं पर एक दूसरेके हितका ध्यान रख कर परस्पर विचार विनिमय करें और इस तरह जहां तक संभव हो एशियाई देश अपनी आर्थिक आवश्यकताएं आपसमें ही पूरी करनेका प्रयत्न करें । पण्डित नेहरू के नेतृत्वमें भारत बराबर ही एशियाई देशोंके अधिकाधिक निकट आनका प्रयत्न करता रहा है । पण्डित जी बरा-बर एक एशियाई संघकी आवश्यकता महसूस करते आ रहे हैं । इसी उद्देश्यसे गत मार्च महीने में दिल्लीमें एक एशियाई सम्पर्क सम्मेलन किया गया था जिसमें प्रायः सभी एशियाई देशोंके प्रतिनिधियोंने भाग लिया था । यह गैर सरकारी सम्मेलन था ।

संयुक्त राष्ट्र संघने एशियाई और सुदूरपूर्वके लिये एक आर्थिक कमीशन नियुक्त किया है । इसका काम सुचार रूपसे तभी संपादित हो सकता है जब कमीशन द्वारा की गयी सिफारिशोंको प्रत्येक देशका पूरा पूरा सहयोग मिले । इसी उद्देश्यसे ऊटकमंडमें एक जून से एशियाई और सुदूरपूर्वके लिये संयुक्त राष्ट्र संघ आर्थिक कमीशनका ,अधिवेशन होने जा रहा है । इस सम्मेलनमें प्रत्येक देशके चुने हुए विश्वास प्राप्त सरकारी प्रतिनिधि भाग लेंगे और भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू सम्मेलनका उद्घाटन करेंगे । एशिया और सुदूर पूर्वके आर्थिक पुन संगठन और आर्थिक स्तरको ऊपर उठानेकी समस्याओं पर सम्मेलनमें विचार होगा । यह कमीशन ऐसे समयमें बैठ रहा है जब दक्षिण और पूर्व एशिया प्रदेशान्तर्गत रहनेवाले लोगोंकी भलाईसे सम्बन्ध रखने वाली बहुसंख्यक महत्वपूर्ण समस्याओंका समाधान केवल एशियाके हितकी दृष्टिसे ही नहीं सम्पूर्ण संसारकी दृष्टिसे आवश्यक है और अधिक विलम्ब हानिकर सिद्ध हो सकती है । इस दृष्टिसे ऊटी सम्मेलनका महत्व स्वयं स्पष्ट है । एशियाके इतिहासमें इसका अपना एक विशिष्ट स्थान होगा । ऐसा समझा जाता है कि भारतके ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर और इस अधिवेशनमें भाग लेनेवाले भारतीय प्रतिनिधि मण्डलके नेता डा० मथाई ऊटी सम्मेलनके अध्यक्ष चुने जायंगे । और ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डल अध्यक्ष पदके लिये डा० मथाईका नाम उपस्थित करेगा । आसामके पूर्व गवर्नर सर एण्ड्रू क्लो ब्रिटिश प्रतिनिधि नेता होकर आ रहे हैं । हम आशा करते हैं कि कमीशन एशियाकी आर्थिक समस्याओं पर विचार करते समय इस बातका ध्यान रखेगा कि एशियाकी आर्थिक उन्नतिमें कतिपय पश्चिमी देशोंका, खास कर ब्रिटेन, फ्रांस, हालैंड और अमेरिकाका स्वार्थ सबसे अधिक बाधक है। साम्राज्यवादने एशियाई देशोंमें जो पैर फला रखे हैं जब तक उसके पैर काट कर छोटे नहीं कर दिये जायेंगे तब तक एशियाके आर्थिक पुनसंगठनकी योजना स्वतन्त्रता और स्वच्छंदता पूर्वक कार्यान्वित नहीं की जा सकती ।

## धैर्य धरो

सुन्दर और असुन्दर, अमृत और विष, सत्य और असत्य एक दूसरेसे सर्वथा विपरीत गुणधारी होते हुए भी सृष्टिके आदि कालसे समवयसी साथी और पड़ोसी हैं । संसारमें अमृत, सुन्दर और सत्यके लिये सदासे साधना,तपस्या और त्याग किया जाता रहा है, किन्तु विष और असत्य असुन्दर अन्यायके उपासकोंने इनकों ही अमृत, सत्य, सुन्दर बताकर इनकी सत्ता कायम करनेकी सदा चेष्टा की है । जब इनको सफलता मिली है, संसारमें अनाचार,

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अशांति, संघर्षका जोर और दबदबा रहा है, किंतु फिर भी अमृत, सत्य और सुन्दर, इनका क्षेत्र भले ही सीमित हो गया है, कभी दबाये नहीं जा सके और इनके तेज और प्रकाशका ही परिणाम है कि संसार अन्धकारमें विनष्ट होते-होते बचा है। छद्मवेशी अमृत, सत्य और सुन्दर बहुत दिन तक अपने विषैले प्रभावको छिपाये नहीं रह सकते और धीरे-धीरे उनकी माया नष्ट होने लगती है और सत्य सुन्दरकी प्रतिष्ठा होने लगती है। देशकी सत्य और सुन्दर शक्तियोंने अपने अपूर्व साहस, तेज और त्याग-तपस्यासे विदेशी सत्ताका अन्त किया है। किन्तु आसुरी शक्तियां नहीं चाहती, कि देशमें सत्य और सुन्दरकी प्रतिष्ठा हो यही कारण है कि हम देखते हैं कि आज स्वतंत्र भारतमें "नाना वेश धराः कौलाः विचरन्ति महीतले"। इसीका परिणाम है कि स्वतंत्रताका सुख भाई—भाईकी हत्या, रोटी और कपड़ेके अभाव, तथा भांति-भांतिके अनाचारों, भ्रष्टाचारोंके दारुण दुःखमें बदलता जा रहा है। स्वतंत्रताके साथ-साथ पाकिस्तानका अन्य, विदेशी शक्तियोंका भारत और पाकिस्तानके पारस्परिक संपर्कको कटु एवं विषादमय बनाये रखनेका घृणित प्रयास, एवं इस स्थितिसे [redacted]नाजायज लाभ उठानेकी कुत्सित मनोवृत्तिवाली, हमारे बीचकी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आसुरी शक्तियोंकी दुरभिसन्धियों और दुरभिलाषाओंने देशके भीतर अधैर्य, असंतोष और अशांतिके भयंकर वातावरणकी सृष्टि की है। सत और असत की पहचान मुश्किल हो गयी है। अजीब माया है! सत्य और सुन्दरके उपासक किंकर्तव्य विमूढ़ हो विपथगामी हो रहे हैं। यह विकट परीक्षाका समय है। सत्य और सुन्दरके उपासक अधीर और अस्थिर चित्त होकर धीरे-धीरे आसुरी मायाके शिकार होते जा रहे हैं। साम्प्रदायिकता और प्रान्तीयताके दैत्य धीरे-धीरे अपना विकराल रूप धारण कर रहे हैं। राजनीतिक और आर्थिक असंतोष फैलाया जा रहा है। इसी तरहकी स्थितिको लक्ष्यमें रखकर उस दिन दार्जिलिंगमें पश्चिमी बंगालके गवर्नर चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने मायाके वशीभूत होते चले जानेवाले सत्य और सुन्दरके उपासकोंको स्मरण कराया है कि "स्वतंत्रताका बोझ सरकारने अभी-अभी उठाया है और उसके सामने बहुसंख्यक समस्याएं एवं कठिनाइयां हैं। इसलिये आपको जरा धैर्य रखना चाहिये। सरकारकी स्थिति उस आदमी जैसी है जिसने मरम्मतके लिये अपने घरमें अभी मात्र पैर रखे हैं जहां चारो तरफ विश्रृंखलता और अव्यवस्था है। कहीं कहीं छत भी गायब है। इस स्थितिको सिलसिलेमें ले आने तक आप प्रतीक्षा कीजिये।" स्वतंत्रताके आनेके साथ-साथ देशमें जिन आसुरी शक्तियोंका प्रावल्य बढ़ने लगा है यदि उनको हमें दबाय रखना है तो हमारा यह फर्ज हो जाता है कि हम अपनी सरकारको सब भांति सहयोग दें। समय और सहयोग मिलनेसे हमारी सरकार, हमारे नेता और हमारे प्रधानमंत्री पंडित नेहरू एवं उनके साथी देशका रूप बदल कर सुख और शांति गंगा बहानेकी क्षमता रखते हैं। यह बात कीकोई कल्पना या अतिरंजन नहीं है। देशसे दरिद्रता दूर करके, शोषणके रास्ते बन्द करके समाजको अभावमुक्त करनेकी दिशामें हमारी सरकार केवल बातें ही नहीं कर रही हैं। भारत सरकारकी उद्योगीकरण की नीति बम्बईकी पांच साला औद्योगिक योजना युक्त प्रान्तकी उद्योग-विस्तार-योजना नवीन नगर और नहर निर्माण योजना, बिहार तथा संयुक्त प्रांतमें जमीन्दारी मिटाकर नवीन भू प्रणाली प्रवर्तन की योजना, दामोदर, कोसी, हीराकुण्ड प्रभृति बांध निर्माण द्वारा भूसिंचन एवं विद्युत उत्पादनादिकी योजनाएं बताती हैं कि हमारी सरकार देशका आर्थिक स्तर ऊपर उठानेके लिये चिन्तित है। देशको सरकारके इस काममें पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिये। किन्तु देखा जाता है कि अवसरवादी, सुविधावादी आसुरी शक्तियां सभी क्षेत्रोंमें उसके सामने कठिनाइयां खड़ी कर रही हैं। कहीं भाषाके नामपर प्रान्तीयताकी विद्वेषाग्नि भड़काकर वर्तमान सरकार के विरुद्ध असंतोष पैदा किया जा रहा हं, विद्रोह भड़काया जा रहा है तो कहीं आर्थिक क्षेत्रोंमें असंतोष पैदा करके नेतृत्व हथियाने की कुचेष्टा की जा रही है। कांग्रेस बार-बार कह चुकी है कि समानताके आधारपर समाजका निर्माण करना हमारा लक्ष्य है। अतः आज हमारे सामने पहला कर्त्तव्य यह है कि जिस तरह हो हम अपनी स्वतंत्रताकी रक्षा करें। यह तभी हो सकता है जब देशकी समृद्धि और उन्नतिके लिये कांग्रेस सरकार द्वारा निर्धारित कार्यक्रमोंको पूरा करनेमें हम सहायता दें। किन्तु हम देख रहे हैं कि कम्यूनिस्ट एवं अन्य प्रतिक्रियाबादी दल प्रगतिवादका ढोल पीट कर देशको गुमराह करनेमें लगे हुए हैं। देशके स्वार्थको धक्का लगा कर ये अपने निजी स्वार्थके लिये प्रत्येक असंतोष सरकारके खिलाफ विद्रोहाग्नि भड़कानेका साधन बताते जरा नहीं हिचकिचाते। इस स्थिति का हमें सामना करके देशमें श्रमिकों और किसानोंके नामपर फैलायी जानेवाली उच्छखलताको डुबाना हमारा पहला काम हैं। तभी हम सत्य और सुन्दरकी प्रतिष्ठा कर सकेंगे।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टर्कीमें

# नारी-जागरण

लेखक-श्री गंगाप्रसाद श्रीवास्तव

आज संसारके प्रत्येक राष्ट्रने प्रयोग करके देख लिया है कि किसी भी राष्ट्रकी उन्नति केवल पुरुषोंकी ही उन्नतिसे नहीं हो सकती। पुरुषोंका पुरुषत्व केवल परुष भावोंकी सृष्टि कर सकता है, केवल कठोर योजनाओंका संपादन कर सकता है; पर्वतको तोड़ सकता है, कणकणमें बिखरा सकता है, पर नन्हें नन्हें कणोंसे वैसा ही सुन्दर पर्वत फिर नहीं बना सकता। यदि उसने प्रयास करके बनाया भी तो उसमें नैसर्गिकताकी सुन्दरता न रहेगी। अर्थात् पुरुषमें विनाशकारी प्रवृत्तियां प्रधान होती हैं, तो नारीमें सृजनात्मक केवल विनाश हीसे हम उन्नति नहीं कर सकते, उन्नतिमें दो मूल –विनाश और सृजन। तभी वास्तविक समुन्नति तथा सुख होता है।

टर्कीने भी इसी प्रवृत्तिके अनुसार अपने कदम उठाये और इतनी तेजी तथा दृढ़तासे बढ़ाये कि बिना कहीं गिरे हुए सबके साथ आ पहुंचा। । वहांकी स्त्रियां यूरोपकी स्त्रियोंकी भांति स्वतंत्रता पूर्वक विचरती हैं, स्वतंत्र वातावरणमें पलती हैं। जीवनके यथार्थ विकासके लिये स्वतंत्रता अत्यन्त ही आवश्यक है। और आज टर्कीकी नारीको व्यक्तिगत सभी सामाजिक स्वतंत्रताके अधिकार प्राप्त हैं। यही कारण है कि आज टर्कीकी नारियां पुरुषोंके साथ कंधेसे कंधा मिलाकर कदम-से कदम मिलाकर उसे प्रत्येक क्षत्रमें सहायता दे रही। कुछ पिछले वर्षोंमे टर्कीने जो अभूतपूर्व उन्नति प्राप्त की है, इसका बहुत कुछ श्रेय वहांकी जिम्मेदार नारियोंपर भी है।

### पूर्वकी नारियां

वहांकी नारियोंकी सन् १९२५ के प्रथम जो दशा थी, कदाचित वैसी भारतमें तो नहीं थी। आज हमारे देशकी नारियां बहुत ही पिछड़ी हुई कही जाती हैं। जाग्रत् अथवा विकासके इस युगमें इधरके बीस वर्षोंमें भारतकी नारीने कुछ उन्नति अवश्य की होगी, पर आज तो भारतमें रियोंकी दशा शोचनीय है ही, परन्तु टर्कीकी दशा तो बहुत शोचनीय थी। कुछ दोष तो ऐसे थे कि जिनके कारण नारीका जीवन मानुषिक न होकर पशुसे भी गया बीता था। पर्देकी प्रथा तो इतनी जटिल थी कि किसी भी नारीका कोई भी अंग किसी प्रकार दीख नहीं पड़ सकता था। पहले तो उनको कभी घरकी चार-दीवारीसे बाहर निकलने ही नहीं दिया जाता था। जीवनमें कुछ विशेष अवसरों पर यदि वह कदम बाहर निकालती थी, तो बिलकुल ढंकी हुई; कहीं हवा न लग जाय। अर्थात् संसार उनके लिये कुछ न था। उसका उपभोग करनेकी कौन कहे आंख उठाकर देख भी नहीं सकती थीं दूकानोंकी सजावट विविध खेल-तमाशे, नाच-रंग; उनके आमोद-प्रमोदकी वस्तु नहीं, वह केवल पुरुषोंके लिये ही थी। दृश्योंमें एक-एक रईसके यहां सैकड़ों स्त्रियां सड़ा करती थीं। वह केवल उनकी काम-वासनाकी तृप्तकी एक मात्र साधन थीं। बहु-विवाहकी प्रथा तो बहुत जोरोंपर थीं। स्त्रियोंका जो नारकीय जीवन हो गया था उससे तो मृत्यु भली थी। विशुद्ध प्रेम स्नेहका नाम उन्हें सुननेतकको न मिलता था। वहांके गंदे वातावरणमें वह घुट घुटकर मरती थीं। तिसपर यदि किसीने किसीको तलाक दे दिया तो उसका जीवन यापन कठिन ही हो जाता था। सामाजिक स्वतंत्रता तो नामकी भी न थी। .....तात्पर्य यह कि गृहमें संकुचित क्षत्रके अंदर रहते हुए वे नारियां उस तोते से भी गई बीती हो गयी थीं जिसको हम एक लोहेके पिंजड़ेमें बांध रखते हैं, वह पंख होते हुए भी उड़ नहीं सकता। पांव होते हुए भी चल नहीं सकता; आंख होते हुए भी देख नहीं सकता।

### कमालपाशाके सुधार

टर्कीमें स्वतन्त्र्य युद्धकी जागृतिके साथ साथ नारीकी भी जागृति प्रारंभ हुई। अनातोलियाकी स्त्रियोंने पुरुषोंकी बहुत-कुछ सहायता भी की थी पर उस समय कुछ अधिक सुधार न हो सका था। टर्कीको स्वतंत्रता दिलानेका श्रेय कमालपाशाको है। देशकी राजनैतिक उन्नति साथ सामाजिक उन्नति भी आवश्यक होती है। अतः शक्तिशाली होनेपर कमालने इस क्षेत्रमें भी वही क्रान्तिकारी परिवर्तन किये उस समय टर्कीमें धार्मिक कट्टरता बहुत थी। कमालपाशाने उस कट्टरताको मिटानेके लिये मुल्ला मौलवियोंका दमन किया। इसलामी टोपीको हटा दिया। स्त्रियोंकी स्वतंत्रताने विरोधी मुल्लाओंको कठिन दंड दिया। इस प्रकार धार्मिक बाधाएं उसने बिलकुल दूर कर दीं।

कमालपाशाने देशमें इधर-उधर घूम-घूम करके भाषण दिये और नारियोंको अपने दायित्व बतलाये। उनके प्रति पुरुषों के विचारोंमें आमूल परिवर्तन कर दिये। वह कहता था, "जो समाज केवल पुरुषोंकी ही उन्नतिसे संतुष्ट हो जाता है वह भयंकर भूल करता है। पुरुषोंकी उन्नति केवल आधी उन्नति है। अपनी पूर्ण उन्नतिके लिये स्त्रियोंको समान अधिकार देना परमावश्यक है।"

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसके अतिरिक्त कमालने क्रियात्मक कार्य भी किये । स्त्रियोंको पुरुषोंके ही समान अधिकार दिये । बहु विवाहक प्रथाको उठा दिया गया । बहु विवाह इस अवस्थामें जब कि स्त्रियां पर घर जाती ह उचित कहा जाता है पर एक ही साथ तमाम बीबियां रखना यह तो पूर्ण अमानुषिकता है । पर्देकी भीषण प्रथा भी उठा दी गयी । स्विटजरलैंड, जर्मनी फ्रांस, इटलीकी भांति टर्कीने भी कानूनोंमें आमूल परिवर्तन कर दिये । कमाल पाश्चात्य वेश-भूषा, पाश्चात्य सभ्यताका पोषाक था, अतः उसने टर्कीकी स्त्रियोंको इंग्लैंडकी 'शाप गर्ल' की भांति रहनेका आदेश दिया । उनका वह बुर्का और ढीले-ढाले पहनावे हट गये। लाखों निवासियोंने उसी पाश्चात्य वेशभूषाको अपना लिया । उनके आचार-विचार व्यवहार आदि भी बदल गये ।

टर्कीकी स्त्रियां हरमोंकी गंदगी जिन्दकी और दम घोंट देने वाले वातावरणसे निकल कर राष्ट्रीय क्षेत्रमें लायी गयीं । परिणाम स्वरूप जब पहले टर्कीको किसी भी सड़क पर कोई भी स्त्री नजर नहीं आती । आज विशेषकर इस्तम्बोल और अंगारा की सड़कोंपर गलियों और पार्कोंमें हजारोंकी संख्यामें तुर्की नारियां स्वतंत्ररूपसे घमती हुई दीख पड़ती हैं । उनके जीवनमें भी वह स्वतंत्रता है, जो पुरुषोंके । इसके पहले वही स्त्रियां सुल्तानोंके समयमें हरमोंमें पड़ी सड़ा करती थीं; पुरुषोंकी पैरकी उन तिरस्कृत जूतियोंके सामन जिनको जब चाहा, पहना और जब चाहा, एक कोनेमें फेंक दिया । सड़नेके लिये, घुट-घुटकर मरनेके लिये । समाजमें उनकी क्या प्रतिष्ठा थी, यह अब सभी समझ सकते हैं । एक-एक पुरुषके घरमें कई नारियां सदैव आहें भरा करती थीं । ईश्वरने उनको नारी बनाया था तो जो अत्याचार पुरुष करे सहनेके लिये ? क्या सामाजिक विधान था स्त्रियां गुलाम थीं ? कमालपाशाने इसी गुलामीकी प्रथाका अंत किया था ।

शिक्षाका भी काफी प्रचार हुआ । कमालपाशाके प्रयत्नसे शिक्षाके प्रति इतना चाव उत्पन्न हो गया था कि इंग्लैंड और अमेरिकाके कालेजोंमें टर्कीकी छात्राओंकी संख्या सबसे अधिक रहती है । बाहर जाकर शिक्षा प्राप्त करना यह क्रान्तिकारी परिवर्तन कमालके द्वारा संभव है टर्कीमें भी बहुतसे स्कूल खोले । गयेअंगाराका 'अमेरिकन महिला कालेज' आश्चर्यजनक कार्य कर रहा है । टर्कीकी शिक्षामें यह विशेषता है कि उन्हें केवल किताबी शिक्षा ही नहीं दी जातीं। वरन् वहांकी छात्राओंको पाश्चात्य देशोंकी भांति व्यापक नृत्य आदिकी शिक्षा भी दी जाती हैं । टर्कीमें यह शिक्षाका प्रसार है ।

आज टर्कीमें प्रथा बिलकुल उठ चुकी है । बुर्का पहिनकर छोलदारियोंकी भांति चलती फिरतीं दिखलायी देनेवाली स्त्रियां आज यूरोपीय ढंगकी चूस्त-दुरुस्त पोशाक पहने तितलियोंकी तरह इधरसे उधर घूमती दीख पड़ती है। टर्कीके गांवोंमें भी यूरोपीय शैलीके घर बन रहे हैं । वहां वह गांवकी सब नर-नारियां यूरोपकी भांति किसी नृत्यशाला, संगीतशालामें एकत्र होकर आमोद-प्रमोद करते हैं और अपने जीवनकी विषमताको मिटाते हैं । इस प्रकारके जन-गहोंका आजकल वहां बड़ा प्रचार हो रहा है । आज १६०० वर्षकी पुरानी सामाजिक व्यवस्थाका अंत हो गया है :

महिलाओं द्वारा जनकार्य

टर्कीकी महिलाओंमें जनकार्यकी ओर बड़ी रुचि है। यहीं कारण है कि अस्पतालोंमें काम करनेवाली नर्सों जच्चा-खानोंकी दायियोंकी अन्य देशवाले भी प्रशंसा करते हैं । आजकी टर्कीकी नारियों के लिये गाड़ियोंमें पर्दे लगानेकी आवश्यकता नहीं । तलाकके बाद उनका जीवन जो नया बन जाता था। आज वह बात नहीं वहांकी नारियोंको विचार स्वतंत्रता भी प्राप्त हो गयी है । पतियोंकी गुलामीसे उनका जीवद मुक्त हो गया है ।

आजकल वहांकी महिलाएं पुरुषोंके साथ प्रत्येक क्षेत्रमें समान कार्य करती हैं। प्रत्येक विभागमें सरकारी पदोंपर महिलाएं नियुक्त की जाती हैं । वे सरकारी कारखानों, आफिसोंमें काम करती हैं । इसके अतिरिक्त अध्यापन कार्य बायुयान संचालन, सामरिक शिक्षा तथा इंजनियरिंग आदिके महत्वपूर्ण कार्य सीख रही है टर्कीमें नये विधानके अनुसार बीस लाखसे भी अधिक महिलाओंको वोट देनेका अधिकार मिला है । और वे राष्ट्रीय परिषदकी सदस्या भी हो सकती हैं । राष्ट्रीय परिषदकी असेम्बलीमें आजकल १७ महिलाएँ हैं।

देशमें राष्ट्रीय भावनाको जागृति करनेके लिये अन्य देशोंकी भांति बीर रमणियोंकी मूर्त्तियां बनवायी गयी हैं । तथा स्मारक बनवाये गये हैं ।

इस प्रकार आजकी टर्कीकी नारीमें और बीस वर्ष पूर्व की टर्कीकी नारीमें जमीन आसमानका अंतर है । आजकी नारी इंगलैंड और अमेरिकाकी नारीकी भांति अपने कर्तव्योंकेप्रति जागरुक तथा प्रयत्नशील है और तभी आज टर्कीसा छोटासा देश इतना उन्नत है । इसी अभावके कारण आज हमारा भारत कितना गरा हुआ है । यह प्रतिदिनके अनुभवकी बात है ।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आधुनिक उर्दू कविता में प्रगतिवाद

श्री निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए० साहित्यरत्न

प्रगतिवादपर हिन्दीमें काफी विचार हुआ है। लोग इस संबंधमें अनेक प्रकारकी धारणाएं अपने मस्तिष्कमें बनाये हुए हैं और उन धारणाओंका प्रभाव साहित्यपर भी पड़नेसे उश्रृंखलता और समाजके निम्न वर्गके व्यक्तियोंके प्रति एक बनावटी सहानुभूति रखनेको है। । बहुतसे लोग प्रगतिवाद मानने लगे हैं। अभी उस दिन श्रीमती महादेवी बर्मा हिन्दीके बने हुए प्रगतिवादियोपर हंसकर कह रही थीं–"अ.जकलके प्रगतिशील कवियोंक.तो यह हिसाब है कि इतव.रपर किसी छुट्टीके दिन नगरके पास डाले किसी गांवमें वहां ज.कर एक निर्धन किस.नके हाथपर जेबसे निक.लकर चवन्नी रखते हुए कह. –"जरा अपना हल तो हमें दिखान....., इसके इसभागक. क्या ना और इस भागका क्य. प्रयोंग है। और इएसबको अजऋनी होटबुकमें नोर करके ले आये। घर आकर कुछ विचित्रसे गांवव.लोंके शब्दोंक. प्रयोग करते हुए 'हल' के उउऊपर कुछ तुकें जोड़ डाली और लो, बस हो गयी .प्रगतिशील कवित.।" मह.देवीजीक. यह कथन एक मधुर व्यंग्य ही नहीं किन्तु इस सत्यको कोई अस्वीक.र नहीं कर सकता। कि प्रगति शब्दके व.स्तविक अर्थको भलीभांति 'न समझनेके क.रण कवित.के क्षेत्रमें बड़ा अनर्थ हो रहा है। " साधारणतय. मजदूर, मिल म.लिक, किस.न, जमींदार धनी, निर्धन धार्मिक, अछूत तथा सम.जके उच्च और निम्न वर्गोंके संघर्षको व्यंजित करनेव.ले स हित्यको ही प्रगतिशील स हित्य संज्ञा दी ज तीहै।

उर्दू कवित मह कवि वलीसे लेकर' ह ली' तक प्रायः एक निश्चित गौंर सीमित धार में हो बहती रही। सभो श यरोंने इश्किय गजलें लिख कर प्रेमी हृदयकी टीस, वेदना और मिलन, अभिल षा की अभिव्यक्तिके लियु ही कवित को म ध्यम म न। इन गजलोंमें इश्कमज जीकी अधिकत में कहीं -कहीं इश्कहकीकीकी झलक भी दिखाई दे ज ती है। किन्तु म नव हृ दयकी अन्य न्य वृत्तियां तथा जीवमसे संबंधित ,न्य ब त ोंक दिग्दर्शन उल्में ननहीं पाया गया। इल समयके कवियोंमें केवल नजीर अकबर - ब दीने कृ ष्णकन्हैय, बरस त, बनज र न मी अ दि नजमें लिखकर मह कवि सौद ने कसीदेकी शुरूअ त करके और "अनीस" तथा "दवीर" ने कठील कर्बल के युद्धके शहीदों पर मर्सिय लिखकर क ककी नयी दिश ओंकी ओर संकेत किय।

ह लीने सबसे पहले देश कऔर सम.जकी उथल-पुथल के दर्शन अपने क व्यमें कर ये और भारतव सियोंके मनोभावोंको उभारदनेव ली अनेकों जोशिली कवित.एं लिखीं। ह लीके ब द 'अकबर' की व्यंग त्मक कवित ओंपर देश क लक. प्रभाव सबसे अधिक पड़ा। अकबर सस्वभाव से तो प्रतिक्रिय व दी थे परन्तु उनकी रचन.में हमें तत्क.लीन नवयुवक सम.ज विच.रोंअ. प्रतिबिम्ब मिलत. है। देशके नवयुवक न.स्तिक.व.द गौर घोर अस.रिकत.कन ओर झुकने लगे थे। इसी पर व्यग्य करते हुए उन्होंने कह. है।

रकीबोंने रपट लिखव.ई है ज. ज. के थानोंमें,
कि अकबर जिक्र करत. है खुद.कर जम.नेमें।
फिटन नफीस सड़क खुशनुम. डिनर हर शब
यह लुत्फ छोड़के हज क. सफर ? यह खूब कही।

अकबर प्रगतिव.दी णेंहीं थे किन्तु उन्होंने परम्पर.की रूढ़ियोंमें ब.हर निक.ल उर्दू कवित.को एक नयी जमीन दी इसमें संकेदेह नहीं किय. ज. सकत.।.

अकबरके समयसे ही देशके जीवनमें ज गृतिके चिह्न दिखाई देने लगे थे। र.ष्ट्रीय चेतन.की एक लहरसी र.जनीतिक अ.न्दोलनोंमें के स.थ देशके कोने-कोनेमें दौड़ गयी थी। उर्दू कवियोंमें 'पुसुबह वतन" के सुप्रसिद्ध रचयित. "चकवस्ता"की रचन.ओंमें इस चेतन.कन पूर. अ.भास हमे मिलत. है, किन्तु उनगकी र.ष्ट्रीयत. बहुत अधिक हिन्दूपन लिये हुए थी। इसी समय ल.हौरके अमह.कवि इकब.ल इस नवीन अ.योजन.ओंकी ओर संकेत करते हुए कह. :–

सच कह दूं ये विरहमन गर तू बुर. न म.ने,
तेरे सनमकदोंके बुत हो गए पुर.ने।"

अपने जीवनके अन्तिम दिवसोंमें वे मुस्लिम धर्म और दर्शनकी ओर इतने अधिक झुक गये थे कि कह. ज.त. है उन्होंने स्वयं अपनी कलमसे र.ष्ट्रीय भावन.ओंसे ओत्प्रोत अपनी कई कवित.ओंक. स्वरूप बिलकुल बदल दिया।

देशमें इस राष्ट्रीय चेतनाके विकासके साथ साथ निर्धन धनवान्, सांसारिकता और पारलौकिकता उच्च और निम्न वर्गका संघर्ष और भी जटिल होता गया। इस संघर्ष के उग्र होनेसे घवर.कर स्वभावसे ही कोमल होनेके क.रण कुछ व्यक्तियोंने बचावके उपाय सोचे। इन मैदान छोड़कर बगले झांकनेकी चेष्ट करनेवाले कवियोंमें अग्रगण्य अस्तर शीरानी, सागर निजामी, फितरतवात्सी का और शौकत थानवी हट्टें, जो प्रेम और सौंदर्यके एक काल्पनिक अपनेको सुरक्षित रखनेका उपक्रम करने लगे। कुछ दूसरे वर्गके कवियोंने सारी समस्यओंकाहल मुस्लिम धर्म और दर्शनमें खोजनेकी चेष्ट. की। इन कवियोंमें हफीजजालन्

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धरी, रविश सट्टीकी, और एहसान विनदानिश मुख्य है। कवियोंके इन दोनों वर्गके अतिरिक्त एक तीसर वर्ग भी था, जिसने हमारे जीवनके संघर्षका टडकर सामना किया। इस वर्गके कवियोंमें जोश मलिहरवादी, मजमग लखत्रनवी, अली सरदार जाफरी, मुईन एहसानजजवी और मखदूम मुईउद्दीन के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

इस तीसरे वर्गके कवियोंने देशकी गरीबी और दलित वर्गकी दयनीय दशाको अपनी कवितमें चित्रित किया। देशके दुःखी, परेशानी और तड़पते हुए जीवनसे इन्होंने कवित लिखनेके लिये प्रेरणा ग्रहण की। शर ब और सौंदर्य के अमर कवि जोश "फलसफये पेक र" लेकर साहित्य क्षेत्र में आये हमारे सामने आये। भारतवर्षकी निर्धनताके जैसे करुणपूर्ण चित्र जोशीने अपनी कविताओंमें खींचे हैं वैसे कदाचित् हिवदी भर उर्दूकी कोई भी दूसरा कवि चित्रित नहीं कर सका। है। "भूखा हिन्दोस्तान" नामक कवितामें वे कहते हैं ::

एक मूफलिसके अंकामें कल मेरा हूआ गुजर,
खाकपर बैठा था बच्चा और बीबी तख्त पर
तख्त ईंटोंकी कमी वेशीसे नाहमवारका
वजन इक नाजुक सी औरत जिवसपर वार था।
खेलनेमें तिफलकें गुलफाम था डूबा हुआ,
आई इतनेमें गलीसे आन व.ले की सदा।
कांपती आई सदन हिलने लगा बच्चेका दिल।
सांस ली यों जैसे रक्खी हो कोई छातीपर सिल,
हो गई अगली जिदोंको यदासे दुनिया सियाह,
मांके चेहरे की तरफ ड.ली झिझकती सी निगाह।
मांकी नजरें उठ गयी उठकर फिरा, फिर कर झुकीं,
हाय मेरे लाल मेरे पास तो कुछ भी नहीं।
देख कर मां की उद.सी हो गई परम.ल अ.स,
अंखड़ियोंमें आग की सुर्खी तखम्मुल में मिठोस।
आह ऐ हिन्दोस्तां ऐं मुफलिसों की सरजमी॥

भारतवर्षकी निर्धन गृहस्थियोंका इससे अधिक करुण और कौन दृश्य हो सकत. है। संस्कृतके किसी प्राचीन कविने इसी प्रकारका भाव अपने एक श्लोकमें व्यक्त किया था

अये लाजानुचैः पथि वचनमाकर्ण्य गृहिणी
शिशोः कर्णोयत्नात्सुपिहितवयी दीन वदना।
मयि क्षीणोपापं यद्कृत दशा वश्रु शवले।
तदन्तः शल्यं मे त्वमिव पुनरुद्धर्तुमुचितः।

एक वृद्धाकी जिसकी सुधि लेनेकी परवाह इतने लम्बे चौड़े संसारमें एक व्यक्तिको भी नहीं, वर्णन करते हुए जोश साहब फरमाते हैं :-

एक जईफा सो रही हैराहतेमें खाक पर,
मुर्दनी छाई हुई है चेहरये गम नाक पर
इबरतो दहशति का खंजर है दिले गमन.क पर,
हाय! ये बेदम पड़ा है कौन? ठंडी खाक पर
आह! ये बेकस जईफा गम की तड़पाई हुई,
ये जमाने की झिझोड़ी जर की ठुकराई हुई।
खिदमते अगजाच से फुर सत कोई पाता नहीं।
सच है अपनों पर गुलामों को तरस आता नहीं॥

समाजमें निम्न श्रेणीके इन लोअगोंकी इ सबुरी अवस्थान की कारण भी वे जानते हैं। कि वे सरमायदार जो गरीबोंकी उत्पन्न की हुई दौलत पर फूलकर वैभव विलासकी जिन्दगी बसर करते हैं। वह ऐसे जमींदारोंको किन शब्दोंमें सम्बोधन करते हैं :-

ऐ गदापेशोंके सुलतां, जाहिलों के ताजदार
वेजरों के शाह दार पूजाघरों के शहरदार।

वह उनसे पूछते हैं ::

जूतियां तक छीन ले इन्सान की जो सामराज,
क्या उसे यह हक पहुंचता है कि रक्खे सर पै ताज॥

और उनका तो पक्का विश्वास है :-

चिसके लाताद को मुर्दों को कफन मिलत. नहीं
उसके परचम को निगल ज.ती है बिल अ.खिर जमीं।

आजके कविका काम वस्तु-स्थितिका केवल यथातथ्य वर्णनमात्र कर देना नहीं। वह मनुष्योंको एक नग़हान् क्रांति अथवा परिवर्तनके लिये उत्तेजित करनेकी आवश्यकता भी भली भांति समझता है। अथवा अपनी जतिके लोगोंसे जोशका कहना है :-

सिर्फ रो लेने से कौमों के नहीं फिरते हैं दिन
खूं फिसानी भी है लाजिम अश्क अफशानीके साथ।

अथव.,

गए वह दिन कि तू चिजन्दों में आंसू बह.त. था,
जरूरत है कफस पर अब तुझे बिजली गिर.ने की।

देशके जमींद.रोंकी शरणमें रहकर अपनी जिन्दगीके दिन क.टने व.ले लोगोंसे वे कहते हैं :-

उठायेग. यहां तक जूतियां सरम.येद.री की
जो गैरत हो तो बुनिय.दें हिल.दे शहरय.री की।

सम.जमें गरी ब और अमीर की ऐसी विषम व्यवस्थ की जड़ है, वह ईश्वर जिवसक. न.म लेकर धर्मोके नियम बन.ये ज.ते हैं अघर जो गरीबोंको श.सित और पददलित रखनेमें एक बड़े हथिय.रक.क.म करते. है। रईसोंके उसी ईश्वरकी खिल्ली उड़ाते हुए वह कहत. है :-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वह खुद. जो अ.दमी से च.हत. है बन्दगी,
तिरूगी डिसको बहुत है खुशनुम. अलफाज की ।
फातह. क. न.महलव. अ.ये दिन खभत. है जो
उंगलियों पर रोज अपन. न.म गिनवग़त. है जो
दत. रहत. है जिसकी खैर को इब्लीसे सर,
च बते हैं जिसके न द रोंके भेजें अहले जर ।
हुक्म है कि जिसक यों उंगली हिल.न. च.हिये ।
जब ग़म्ह.ई अ.ये तो चुटकी बज.न. च हिए ।
मरके जलन य किसी दरिय पमें बहन च हिए ।
छींक जब अ ए य अन-अलहम्द कहन च हिए ।

इत्य दि इत्य दि । इसी लिये वह इस सम जके सुधार की अ श क्रम विकग़स के सिद्धात्तपर नहीं करत । बिन क्रान्तिके किसी प्रक रक परिवर्तन असम्भव है । इसी लिये वहके रहनेव लोंको उक्रत्तेजित करते हुए कहत हैः—

ऐ ! हिन्द केजलील ग ुल म न रू सिय ह ।
श यर से तो मिल ओं खुद के लिये निग ह ।
इस खौफन गक र ह की अ खिर सहर भी है ।
तोपें गरज रही हैं सरों पर खबर भी है ।
तुझको यकीं न अ येग पै द यमी गुल म,
मैं जा के मकबरों में सुन ऊं अगर पप म ।
खुद मौत से हय त से के चश्में उबल पड़ें .
कबरों से सर को पीट के मुरदे निकल पड़ें ।
तू चुप रह जमी म हिली अ समां हिल,
तुझ से तो क्य खुद से करूंग मैं गिल ।
इन बुजनिदलोंके हुस्न पै शैद किय है क्यों ?
न मर्द कौम में मूं झे पैद किय है क्यों ?

सम जकी दुव्यवस्थाके प्रति विद्रोहकी विगुल बहुतसे उर्दूके कवि श यरोंने बन य है । अली सरद र ज फरीक कथनहै :—

बगावत मेरी मंजिल है बग वत र स्त मेर,
बगावत मेर मजहब हैं बग वत देवत मेर,
बगावत रस्स्म चंगेजी से तह्यज़ ब्रे तत री से
बग ावत जब्रो इस्तब्द द से सरम यद री से ।
बगा वत अपनी अ ज दीकी नेमत खोने व लों से,
बगा वत अजमहे रफ्त : के ऊपर रोनु व लों से ।
बगा वत मुफलिसी की अ जन्न बद्दुग ओं से
बगा वत सण्ख्त पत्थर की परह बेहस खुदाओं से
बगावत दर्द सहने से बगावत गम उठाने से ,
बगावत हां बजुज इन्सान के सारे जमाने से ।

मखदूम मुहीउद्दीन तो वर्तमानकी दूषित व्यवस्थासे इतने तंग आगये कि महाप्रलयकी अभिलाषा करने लकते हैं :—

फूंक दो कसर को गर कन कर तमाशा है यही,
जिन्दगी छिन लो दुनियां से जो दुनियां है यही ।
जलजलों आओ , दहकते हुए शोलों आओ
बिगजलियों आओ गिरो और घटाओ छाओ ।
आंधियो आओ जहन्नुम की सवओं आओ ॥

इसी प्रकार मजजम साहब क्रान्तिकी तीव्र अभिलाषा रखनेवाले नवयुवक हृदयकी बेचैनीको प्रकट करते हुए अपनी "अबारा" नामक कविता में कहते हैं :—

जी में आता है ये मुरदा चांद तारे नाच लूं,
इस कनारे नोंच लूं और उस कनारे नोंच लूं ।
एक दो का जिक्र क्या सारे के सारे नोंच लूं ,
ऐ गमे दिल क्या करूं,ऐ बहशते दिल क्यकरूं ? (अपूर्ण)

---

[२०वें पृष्ठ का शेषांश]

कांग्रेस हीके – जमीन आसमान एक कर दिया । ऐयरने सारी बातें महात्माजीको भी लिखीं । ऐयरकी ही बात गान्धीजीको भी उचित जान पड़ी । गान्धीजीने भी कहा कि जबरदस्ती कोई सुधार न लादा जाय । फिर भी यह विवाद उग्ररुप करता जाता था जिससे ऐयरका दिल टूट गया । आश्रम भी इस विवादसे ऐसा न चल सका कि जैसा ऐयरने चाहा ।

खरडमें ऐयर पापनाशक झरनेमें अपनी पुत्रीके साथ स्नान करने गये । अचानक उनकी पुत्रीका पैर फिसल गया, वह पानीमें बह गयी । ऐयर पुत्रीको बचानेकी कोशिशमें गये । वे भी बह गये । यही उनकी आखरी लीला थी ।

ब्रिटिश सरकार अपनी सारी शक्ति लगाकर ऐयरको दबा न सकी । पर इस गृहकलहने सब कुछ कर दिया । अंग्रेज शासक इस गृहकलहसे इतना खुश हुए कि वे आपसमें अक्सर इसकी चर्चा भी करते थे ।

ऐयर तामिलके मजे हुए लेखक थे । पहले उनका आतंकवादमें अटल विश्वास था । पर गान्धीजीके समाजमें प्रवेश करनेपर उनका मन भी उनकी ओर गया । ऐयर गान्धीजी शिष्य बननेपर एक दम महर्षि बन गये ।

एक बात सत्य है । दक्षिणमें सभी गुण हैं । सब काममें आगे रहता है । पर एक अवगुण जातिद्वेषका है । जिसके मिटने पर वह स्वर्ग हो जायगा । इसकों मिटाने के लिये दक्षिणमें एक गान्धीजीकी आवश्यकता है । पर, ऐसा तभी हो सकता है इनकी प्रेरणा करनेवालों आज बाहरी आदमी – ब्रिटिश – भारतमें नहीं रहा । क्या हम इसकी प्रतीक्षा कर सकते हैं कि वह अपना जाति द्वेष भलकर राष्ट्रके निर्माणमें हाथ दें । ——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# फिलस्तीनकी समस्या और भारत

लेखक —श्री शिवदेव उपाध्याय, बी० ए० बाएल०

फिलस्तीन आज जल रहा है। पंजाब कल ही जल चुका। आप कहेंगे फिलस्तीन और पंजाबका तुक कैसा ? लेकिन हम कहेंगे कि दोनोंके लिये एक ही कारण है। और वह इसलिये कि साम्राज्यवादी देशोंके अधीनस्थ अंचलोंका यह दुर्भाग्य हो रहा है कि जब तक वे अधीनस्थ रहें तब तक अपदस्थ एवं शोषित हो और जब उनपर वे विदेशी सत्ताका प्रभुत्व विलुप्त हो जांय, तब उनके ध्वस्त होनेके उपकरण भी विदेशी सत्ताकी विरासतमें ही उपलब्ध हो जायें। ब्रिटिश शासनके हटते ही यही विरासतका काश्मीर या कि यहांके दोनों ही विभाजित अंचलोंकी जनता आपसमें ही जूझने लगी और आज इसीके परिणाम फिलस्तीनमें भी भयावह दृश्य उपस्थित कर रहा है।

हम कभी स्वीकार नहीं करते कि फिलस्तीनमें आज जो ध्वंस-लीला चल रही है उसकी जिम्मेदारी ब्रिटेनपर नहीं है। १ मई १९४७ की बालफोर घोषणासे लेकर १४ मई १९४८ तक ब्रिटेनने कौन सा ऐसा कार्य किया जिससे कि फिलस्तीनमें अशांतिके कारण उत्पन्न होते। ब्रिटिश साम्राज्यकी यह विरासत है जिसमें ब्रिटिश पैकेजेटके हटते ही यहूदी और अरब जूझने लगे हैं। भूमध्य सागरके हटते ही तटवर्ती शहरों, एकर हैफा, तेल-अवीव, जैफा, अलबदा और गजा सभीमें मौत नाच रही है। दूसरी ओर सीरिया, इराक और अरब जिनकी सेनाएं जोरदनको रक्त रंजित करती हुई जेरिको और मदरशलयमें मौत बरफा करनेके लिये रणोन्मादमें बढ़ती आ रही हैं। इस बातके लिये रायटरके सम्वाददाताका उत्तरदायित्व हैं कि उक्त अरब सैन्य वाहिनीका कमाण्डर एक अंग्रेज है। ऐसे अनेक अंग्रेजोंका हाथ काश्मी पर होनेवाले हमलोगोंमें भी बताया गय था।

जियोनिस्ट आन्दोलनके जनक और जितोनिस्ट महत्वाकांक्षाओंको प्रतीक डा० वीजमैनको यहूदियोंने अपने नव प्रतिष्ठित राष्ट्र इजराइलका ७३ वर्षकी अवस्थामें निर्वाचित किया है। इजराइल राष्ट्रकी प्रतिष्ठा होनेके कुछ ही घंटोंके भीतर अमेरिकाने उस पर अपनी स्वीकृति देकर सर्वसाधारणको चकित कर दिया है। प्रेसिडेंट ट्रूमैनकी इस आतुरताको जेनरल स्मिमो स्टैलिन नहीं समझ सकता था। ऐसा सोचना ही अदूरदर्शिता थी। मो० मोलोटोवने भी यहूदी राष्ट्रपर अपनी स्वीकृति दे दी है। ब्रिटेन चुप है। वह अपनी परिस्थितिका अध्ययन और संभावनाओंकी प्रतीक्षा करेगा। ब्रिटेनके साथ मिश्रकी १९३६ की संन्धिके अनुसार मिश्र उससे सहायताकी याचना नहीं कर सकता, किन्तु मिश्री मंत्री सलेह पाशको ब्रिटेकी सहायता प्राप्त होनेपर प्रसन्नता होगी। मुसलिम राष्ट्रोंनें एक स्वरसे यहूदियोंके विरुद्ध जेहाद छेड़ दिया है और कराचीके मुसलिम शरणार्थियोंके लिये भी मुट्ठीभर अन्न और गजभर कपड़ेका प्रबन्ध करनेमें असमर्थ पाकिस्तानने भी अपनी आश्वासन अरबोंको दे डाला है।

फिलस्तीनकी समस्यासे सम्बन्धरखने वाली शक्तियोंमें वर्तमान युद्धके प्रति विभिन्न विचार हैं। यहूदी सदियोंके सताये हुए सब रखते हुए भा जराय पेशावाली तरह खाना बदोश और सभी द्वारा तिरस्कृत, कला कौशल, ज्ञान विज्ञानमें समुन्नत किन्तु सर्वत्र अपमानित एवं लांच्छित अपने लिये एक राष्ट्रीय वास स्थान की रट लगा रहे हैं। ब्रिटेन और अमेरिकाने इशाक घोषणा और संयुक्त राष्ट्र मण्डलकी हालकी योजनाएं एवं इसकी साक्षी हैं।

फिलस्तीनपर आक्रमण करनेवाले मुसलिम अपने देश अपनी परम्परागत मनोवृत्तिके अनुसार सारे मामलेको मजहबी रंग दे रहे हैं। शाह अब्दुल्ला इस जेहाद का नेता बन रहा है और हमारे पड़ोसी पाकिस्तानको मजहबी प्रासादोंमें कितनी दिलचस्पी रहती है, इसपर कहने की आवश्यकता नहीं है। तथ्य अपने आप स्पष्ट है।

प्रश्न अब भारतका है। अरबोंके प्रति भारतकी सहानुभूति सदासे अत्यन्त स्पष्ट रही है। मुसलिम जगतके अन्ध विश्वासों के लिये भी भारतने यातनाएं सही हैं। खिलाफत आन्दोलन जैसे आंदोलनोंमें भी हम भाग लें। यह राजनीतिक कौशल हो सकता है, किन्तु घटनाओंने इसकी व्यर्थता प्रमाणित की है। धर्ममें सर्वथा अश्रद्धा रखनेवाले [illegible], और धार्मिक अन्ध विश्वासोंके प्रति कुपित होनेवाले प्रगतिशील विचारवालोंने भी खलीफाके लिये युद्ध किया यह भारतीय स्वीधता संग्रामके इतिहासकी एक मनोरंजक सामग्री होगी

खिलाफतके गड़े मुर्देको आज उखाड़नेकी क्या आवश्यकता है, इस पर आप सोचेंगे तो उत्तर अपने आप स्पष्ट हो जायगा। फिलस्तीनके मामलेको मजहबी जामा पहिनाकर जब आपके सामने लाया जायगा, तब आपको निर्णय करना होगा कि आप इस मजहबी जेहादमें शरीक हों या न हों। और तब अगर आप खिलाफत आंदोलनसे थोड़ासा सबक लेनेकी कोशिश करें तो आप इसे समयका अपव्यय अथवा इस विषयको आप्रासंगिक नहीं समझेंगे। हमारी मुश्किल यह है कि हममेंसे अधिकांशने वाइल चेम्बरलेनके ही मतावलम्बी हो चले हैं। इसीलिये हम पग पगपर म्यूनिख पैक्टसे ही राजनीतिक बुद्धिमत्ताका ककहरा सीखना चाहते हैं। पुरानी भूलों और और तज्जन्य दुष्परिणामोंसे शिक्षा लेने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



का हमने महान् गुण अपनाया है, उसकी सराहना भी हम सद्भावनाके नामपर करते हैं। आदिम युगकी हमारी इस भावना का परिणाम वर्तमान युगकी हमारी राजनीतिक पराजयके रूपमें ही दिखायी पड़ता जा रहा है।। किन्तु विपक्षी दलको सहिष्णुताके अभावमें हमने स्वतन्त्र चिन्तन एवं निर्भीक अभिव्यक्तिका आश्रय भी छोड़ रखा है। फिर भी आवश्यकता है कि फिलतीनके मामलेमें अपनी वैदेशिक नीतिका स्पष्टीकरण एक मात्र अपने राष्ट्रीय हितों के संरक्षणकी प्रेरणासे करें। हमें इस बातका प्रयत्न अन्त तक करना चाहिये कि हम धार्मिक कहे जानेवाले इस कूटनीतिक युद्धसे सर्वथा तटस्थ रहें। हमारी अपनी बहुत बड़ी समास्याएं अभी अधूरी पड़ी हैं। हमें अभी अन्तर्राष्ट्रीय पचड़ोंमें तब तक नहीं पड़ना चाहिये जबतक कि हमारे राष्ट्रीय हितोंके लिये अनिवार्य न हो जाय। दूसरी बात हमें ससर्वथा स्पष्ट कर देनी चाहियें कि मजहबी आधारपर राज्योंके गठनके हम सदा विरुद्ध रहे हैं, इसलिये अरबोंकी इस मजहबी लड़ाईसे हम कोई वास्ता ना रखेंगे। इस सम्बन्धमें भारतीय संघकी मुसलिम जनताके मनोभाव तथा पाकिस्तानके तद्विषयक निर्णयसे तनिक भी प्रभावित नहीं होना चाहिये। जिम्मेदार पदोंपर प्रतिष्ठित नेताओंसे भी हम नम्र निवेदन करें कि वे यदि संभव हो तो, अपने व्याखानों की संख्या थोड़ी कम करके, इस विषयपर भावुकतासे काम न लें। यहूदी जातिने हमारा कुछ भी अहित साधन नहीं किया किया है और न तो उन्होंने मजहबी लड़ाई ही छेड़ी है। फिलस्तीन अरब राज्य राज्यका ही अंग है और केवल इस नाते अरबोंको वहांसे यहूदियोंको मार भगानेका अधिकार है, यह तर्क कुछ ऐसा ही होगा कि पाकिस्तान भारतका ही अंग है, इसलिये हम उसे नहीं रहने देंगे। लेकिन पाकिस्तान रक्षाके लिये तो हमने कलकत्तेमें पैक्ट बनाकर इस बात की भी जिम्मेदारी ली है कि हम किसीको दोनों देशोंके पुनर्मिलन की बात करनेको भी स्वाधीनता नहीं ननहीं देंगे। फिर इस आधारपर इन यहूदियोंका विरोध कैसे करेंगे? मुसलमानोंके स्वराष्ट्रसे भिन्न यहूदियोंके स्व-राष्ट्रकी मांग कैसे कही जा सकती?

मध्य पूर्वकी अनेक भयावनी संभावनाएं हैं जिनका सूत्रपात फिलस्तीनके युद्धसे हुआ है। इसलिये आवश्यकता है अत्यन्त सतर्कता पूर्वक राष्ट्रीय एवं वैदेशिक नीतिके संचालनकी। यथार्थवादसे दूर, कोरे आदर्शवादकी प्रेरणासे ही हमने एक भी गलत कदम उठा दिया तो हमारी स्थिति बहुत और जटिल हो सकती है। और तब अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता, विवेक और सद्भावना पर हम कितना भरोसा कर सकेंगे इसे संयुक्त राष्ट्रमण्डलमें काश्मीर समस्याने आवश्यकतासे अधिक स्पष्ट कर दिया है।

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# चल द्रव्यकी समस्याएं

—श्री प्रेमकपूर कंचन—

भारतीय संघके सम्मुख आज कल जिस प्रकार बहुतसी राजनैतिक समस्यायें उलझी हुई हैं उसीं प्रकार चल द्रव्य (करेंसी) की भी समस्यायें हैं। इस समय उनमें मुख्य पांच हैं:—

(१) रीतिकी समस्या
(२) मूल्यकी स्थिति
(३) स्टर्लिंग बैलेन्सेज
(४) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग
(५) समानुपातकी समस्या

(१) रीतिकी समस्या—इस समस्या के अन्तरगत मुख्य चार तत्व हैं। प्रथम स्थितिमें हमादे सन्मुख जो रीति हमारे भारतीय संघमें चल रही हैं उसे चलने दिया जाय। द्वितीय स्थितिमें डालर इक्चेनज की रीति अपनायी जाय। तृतीय स्थितिमें सोने रीति अपनायी जाय। चतुर्थ दशामें चल द्रव्यको किसी भी रीतिमें न बांधकर स्वतन्त्र छोड़ दिया जाय। ये चारों स्थितियां आज विश्वमें चल रही हैं। भारत सबको इन्हीं चारो स्थितियोंमेंसे एकको अपनाना है। इन चारोंका नीचे पूर्ण विवेचनात्मक रूप दिया गया है।

जो देश या व्यक्ति स्टर्लिंग स्टैण्डर्डके पक्षमें हैं उनका कथन है कि भारतीय आयात का व्यापार अधिकतर उन देशोंसे है जहां यह स्टण्डर्ड है। इसलिये यदि भारत अपने यहां स्टर्लिंग रीति रखता है तो व्यापारमें अधिक सुगमता होगी।

लेकिन पक्षके साथ विपक्षियोंके तर्कमें भी अधिक पुष्टता है। उनका कथन है कि स्टर्लिंग रीति इंगलैण्डकी बनायी हुई है और चूंकि आज उस देशका दिवाला निकल चुका है उसकी रीतिको अपनाना बुद्धिमता नहीं। यहां हम स्वीकार करते हैं कि स्टर्लिंग रीति कभी भी उपयुक्त हो सकती है इसलिये भारतको इसे अपनानेके प्रश्न पर विचार करना चाहिये।

द्वितीय स्थितिमें डालर स्टैण्डर्ड उस धनाढ्य देश अमेरिकाका है जहां अगम सोना है इस रीतिकी स्थिति विश्वमें अधिक ऊंची है। यदि हम डालर रीति अपनायें तो उत्तम होगा। तभी यह प्रश्न उपस्थित होता है कि डालर हमें मिले कहांसे। चूंकि अमेरिका डालर देनेके लिये राजी नहीं होगा उसका स्वप्न देखना भूल होगी।

तदुपरान्त हमारे सन्मुख स्वर्ण रीति आती है यह रीतिका सबसे पुराना चलन है। इसके लिये हमारे पास अधिकसे अधिक सोनेकी आवश्यकता होगी चूंकि हमारे पास पर्याप्त सोना नहीं इसलिये इसे भी नहीं अपना सकते।

बाकी बची वह रीति जिसमें हमारा चन द्रव्य (करेंसी) किसी भी रीतिसे बंधी न हो लेकिन इस रीतिसे हमारा विदेशी व्यापार सुगमता पूर्वक नहीं चल सकेगा।

अन्तमें इस झगड़ेका कोई रूप सुधरा हुआ नहीं मिलता। और फिर यह रीतका झगड़ा केवल भारत संघके सम्मुख ही नहीं वरन विश्वके प्रत्येक देशके सम्मुख है। इसलिये अन्तर्राष्ट्रीय द्रव्य संघने मिलकर एक नवीन अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण रीति चलायी है जिसे सोवियट रूसको छोड़कर और देशोंने स्वीकार किया है

### समतल मूल्य

इस समस्याके अन्तर्गत दो विचार धाराएं है। प्रथम विचारधाराका कहना है कि आज कल बाजारके बढ़े हुए मूल्य को रोककर नीचे गिराया जाय या उसे उसी स्थितिमें बढ़ने दिया जाय या जिस प्रकारसे कण्ट्रोल चल रहा था चलने दिया जाय। समस्या बहुत ही उलझी हुई है क्योंकि चारों ओर मल्यमें कमीकी मांग अधिकतर बढ़ रही है। तभी हम विचारने लगते हैं कि मल्यमें कमी किस प्रकार हो सकती है। इसके दो रूप हैं। एक ओर हम अपना चल द्रव्य घटावें या पैदावार बढ़ायें। पैदावार बढ़ानेके लिये हमें कच्चे माल और मशीन की आवश्यकता पड़ेगी। मशीन हम उसी क्षण खरीद सकेंगे जब हम उसका मूल्य चुका दें लेकिन हमने अपने देशका १७ सौ करोड़ रुपया अंग्रेजोंको उधार दे रखा है वे देनेको नहीं कहते। यह भी ठीक रूपसे नहीं कहा जा सकता कि भविष्यमें हमारी सरकार चल द्रव्य घटाकर दूसरे नये झंझट मोल लेगी क्योंकि प्रथम महायुद्धके पश्चात चल द्रव्य घटाकर जो क्षति विदेशी सरकार ने भारतवर्षको दी थी वह अकथनीय है। लोग एक दूसरेका कर्ज नहीं अदाकर पाये थे चारो ओर भुखमरी जोरोंपर थी। इसलिये समान मूल्यकी धारणा इस प्रकार की होनी चाहिये जिससे किसान और मिल दोनोंमें कोई विशेष क्षति न हो और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सुगमतासे चले। क्योंकि एक देश जब चल द्रव्य घटाता है उसीके समानान्तर रूपमें दूसरे देशोंको चल द्रव्य घटाना पड़ता है। जैसे मान लीजिये अमेरिका १०) में एक समान भारतके हाथ बचता है यदि भारत चल द्रव्य घटा देता है तो भारतके १०) की कीमत ६) रुपया रह जाती है। अब इस स्थितिपर अमेरिकाका तो माल बेचना बन्द कर दे या अपने यहांका चल द्रव्य घटाकर उस समानतापर लाकि मूल्य-स्तर बराबर हो जाये इसलिये मूल्य स्तर ऐसे समान धरातलपर रखना होगा कि अन्य देशोंके साथ उसका सामंजस्य रहे।

आज भारतीय संघके सम्मुख स्टर्लिंग बैलेंसेजकी समस्या बहुत घनघोर उलझी हुई है। लगभग १७ सौ करोड़ रुपयेका आज भारतवर्ष अंग्रेजोंका साहूकार बन चुका है। क्योंकि इस द्वितीय महायुद्धके पूर्व ही भारत और अंग्रेजी राज्यके अन्तर्गत एक समझौता हुआ था। उस सम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



झौतेके अनुसार भारतवर्ष इंगलैण्डके लिये लड़ाईका सामान खरीदता फौजोंका खर्च चलाता और इसी प्रकारके खर्चे करता रहा। भारत सरकारका लड़ाईके दिनोंमें १ करोड़ रुपये रोजका खर्च था। ठीक इसी प्रकारका कर्जा अंग्रेजोंने अमेरिका से लिया था लेकिन अमेरिकाने उस कर्जे के बिलोंको बाजारमें बेंच दिया और वे फिर अंग्रेज व्यापारियोंके हांथमें पहुंचकर भुन गये। लेकिन भारत के बिल इकट्ठे हो कर इतने अधिक हो गये। । प्रथम तो अंग्रेजोंने इस रकमको देनेसे पूर्णतया अस्वीकार कर दिया था लेकिन बहुत कुछ बहसके उपरान्त छमाहीकी दो सन्धियां हुई हैं और उसमेंसे कुछ रुपये मिलनेकी आशा है पर भारतको पूर्ण रुपया प्राप्त होगा ऐसी आशा नहीं, क्योंकि इंग लैण्डकी नीयत बहुत साफ नहीं मालूम होती।

अन्तर र्ष्ट्रीय विषय

इस विषयकी समस्या कुछ सुधर जानेकी धारणा की जाती है पर अभीतक यह रीति चालू नहीं हुई। ब्रिटेन उस सम्मेलनमें सोवियट रूसको छोड़कर और देशोंने भाग लिया था । भारतसे रिजर्व बैंकके गवर्नर श्री देशमुख सम्मेलनमें उपस्थित थे। अन्तर्राष्ट्रीय देशोंके बीच समझौता हो जानेकी बहुत कुछ सम्भावना है। क्योंकि बिना ऐसे समझौतेसे अन्तर्राष्ट्रीय आधार जो अन्तर्राष्ट्रीय विषयकी एक जटिल समस्या है, नहीं नहीं सुलझ पाती इसलिये सम्भव है निकट भविष्यमें इस विषयकी उलझी हुई समस्या नहीं रह जाय। और एक दूसरेकी कठिनता के समयपर वे सहायता देंगे। इस सम्मेलन से व्यापार का ही नहींबल्कि रीति समानुपातकी समस्या इत्यादि भी सुलझ जायेंगी। क्योंकि एक देश तथा दूसरे देशोंके चल द्रव्यका क्या सम्बन्ध होगा यह तभी स्थिर हो सकता है जब ये सब अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण रीति पास की है, इससे दूसरी कठिनाइयोंके हल हो जानेकी सम्भावना है।

(शेष १८ वें पृष्ठपर देखिए)

एक प्रहसन

# पॉलिटिक्स

ले० श्री सम्पति राय भटनागर

[कराचीके अपने सरकारी बंगले के एक शानदार कमरेमें मिस्टर जिन्ना पलंगपर अनमने लेटे हुए हैं मिस्टर लियाकत अलीखां पास ही पड़ी एक कुर्सी पर बैठे हुए किसी उर्दू अखबारके पन्ने उलट रहे हैं।]

जिन्ना—लियाकत! काश्मीरकी कोई ताजी खबर आयी?

लियाकत—हां, कायदे आजम! खूनके एक बड़े समुन्दरपर काश्मीरकी नाव तैर रही है। हमारे पंजाबी जवानोंने भी लड़ाई मोर्चेपर कबाइलियोंके साथ साथ वह हाथ दिखाये हैं कि कुछ न पूछिये! तारीफ करते ही बनता है।

जिन्ना—लियाकत! मैं तो अब बूढ़ा हो चला हूं, फिर भी जाने क्यों, कभी-कभी अब भी तबीअत मचल उठती है कि लड़ाईके मोर्चेकी सैर कर आऊं। और जब भी यह बात दिमागमें आती है, कुछ ऐसा महसूस होने लगता है कि जैसे मैं थोड़ी देरके लिये फिरसे जवान बन गया हूं। (मुस्कुराहट।)

लियाकत—काश्मीर जगह ही जवानोंके लिये है कायदे आजम! दिल्ली में बेगमसे मोहब्बत होनेके दो साल पहले मैं भी एक बार काश्मीर गया था।

जिन्ना—तो अब फिर तुम्हारे जानेमें क्या रुकावट है?

लियाकत—अब बेगम साहिबा जाने जो नहीं देतीं——। (दोनों एक साथ हंस पड़ते हैं।) [इतने में कबायालियोंका एक सरदार कमरेके अन्दर आता है। कायदे आजम एकदम उठ बैठते हैं और लियाकत और वे दोनों उसकी ओर देखने लगते हैं।]

सरदार—जिन्ना साहब, तुम्हारा चौकीदारबहुत बदमाश है। हमको अन्दर नहीं आने देता था। (गुस्सेमें आकर) हम उसको गोली मार देता (कहते-कहते चौकीदारके बदले जिन्ना की ओर अपनी बन्दक तान देता है। लियाकत खड़े होकर बड़ी मुश्किलसे उसकी बन्दककी नलीके सामनेसे हटा करते हैं।)

लियाकत—(कुछ सहमते हुए) लेकिन आप तो चौकीदारके बदले कायदेआजम पर ही गोली चलाने लगे?

सरदार—हम जिन्ना साहबको भी गोली मार देगा! तुम हमारी बेइज्जती करता है। घरमें नहीं आने देता!

[चाय लिये हुए नौकर का प्रवेश]

जिन्ना—(नौकरकी ओर मुखातिब होकर) नजीर! सरदार खानको चाय पिलाओ! [सरदार मिस्टर जिन्नाके पलंगके पास ही पड़े एक कोचपर बैठ जाता है और मिस्टर जिन्ना उसके लिये प्यालीमें चाय ढ़ालने लग जाते हैं।]

जिन्ना—सरदार, तुम तो आते ही नाराज हो गये। खैर, काश्मीरके मोर्चे पर से आ रहे हो? लूटमें क्या कुछ हाथ लगा?

सरदार—लूटकी बात पूछते हो जिन्ना साहब? (हंसकर) कुछ भी हाथ नहीं लगा। चार खूबसूरत लड़कियां छांट कर हम लाया था, उनमेंसे दो को फौजका साला पंजाबी लोग ले गया। साला लोग मुसलमान नहीं है, काफिर है। हमको भी लूट लिया! हम उसको गोली मार देंगा।

जिन्ना—(चायकी प्यालीमें चम्मच से चीनी मिलाते हुए) लो चाय पियो।

सरदार—(प्याली हाथमें लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की चुस्की लेते हुए) हमें चाय नहीं चाहिये जिन्ना साहब! तुम लोग हमको फुसला रहा है। हमको चाय नहीं रुपया चाहिये। अङ्गरेज सरकार भी हमको सालका १० हजार रुपया देता था। पाकिस्तान नहीं देगा तो हम पाकिस्तानको गोली मार देगा। (सरदारका हाथ फिर बन्दूक पर जाता है।)

लियाकत—नहीं,नहीं सरदार! पाकिस्तान रुपया देगा तुमको। पहले काश्मीर तो लूट लो।

सरदार—(बिगड़कर) तुम लोग हमको पागल बनाता है। हम काश्मीर नहीं लूटेगा। साला लोग पंजाबी उसमेंसे भी ले भागता है। (सहसा जैसे शान्त होकर और जिन्ना की ओर मुखातिब होकर) अब सिर्फ दो बच गया ह। गजब खूबसूरत हैं काश्मीरमें। एक लड़की तुम लेगा जिन्ना साहब?

[जिन्ना बिना कुछ उत्तर दिये उसकी ओर सिर्फ देखते भर रह जाते हैं। और तभी बिना किसी उत्तरकी प्रतीक्षा किये सरदार चलनेके लिये उठ खड़ा होता है।]

सरदार—अच्छा, हम आज जाता है। कल फिर आयेगा। आदाब अज! (चल देता है।)

[सरदारके जानेपर मि० जिन्नाके जीमें जी आता है।]

लियाकत—ये कबाइली भी अजीब जानवर हैं! इन्हें पार पाना तो बहतही मुश्किल है। जब देखो तब, बात-बात में बन्दूक तान देते हैं!

जिन्ना—लेकिन इनको जीतना ही तो पाकिस्तानके पॉलिटिक्सकी जीत होगी। (कुछ गंभीर होकर) खैर, देखा जायगा। (फिर पलंगपर लेट जाते हैं।)

[पर्दा गिरता है।]

## द्वितीय दृश्य

(लेकसक्सेसके एक होटलके कमरेमें पाकिस्तानके विदेशमंत्री सर जफरुल्ला ठहरे हुए हैं। शराबकी बोतल उनके सामने खुली पड़ी है और वे एक ग्लासमें मदिरा ढ़ाल रहे हैं। उनके निजी सेक्रेटरी मिर्जा मुसर्रफ भी उनके साथ बैठे पी रहे हैं। दोनों आपसमें बहुत बेतकल्लुफ हैं।]

जफरुल्ला—मिर्जा, सिक्योरिटी कौंसिलका रुख कुछ समझ में नहीं आया।

मिर्जा—तो क्या हुआ? कुछ दिन मजे की चुहल तो रही!

जफरुल्ला—लेकिन काश्मीरके झगड़ेका आखिर फसला क्या होगा?

मिर्जा—होगा क्या? या तो वह हिन्दुस्तानमें मिल जायगा या फिर पाकिस्तान के पल्ले पड़ेगा। और क्या हो सकता है?

जफरुल्ला—हां, और क्या। लेकिन मैं तो सोचता हूं कि पाकिस्तानको या हिन्दुस्तानको इससे कोई फायदा हो या नहीं, फिर भी यार लोगोंको तो फायदा पहुंचा ही है। लेकसक्सेसतककी सैर तो मुफ्त में हो ही गयी!

मिर्जा—अंग्रेज कहते थे कि रूसवालों की भी नजर काश्मीरपर लगी है!

जफरुल्ला—लगी भी रहने दो। (सामने रखा हुआ ग्लास पूरा खाली करके) हमारी भी तो नजर कहीं लगी हैं! (नशेकी तेजी बढ़नेसे बदहोश होते चले जाते हैं और धीरे धीरे उठकर मिर्जा की ओर बढ़ते हुए उसके कन्धों का सहारा लेकर गुनगुनाने लग जाते हैं—तबीअत बहत आज घबरा रही है! उन्हें याद शायद मेरी आ रही है!!

(पर्दा गिरता है)

## तृतीय दृश्य

[मिस्टर जिन्ना अपने बंगलेके लानमें एक आराम कुर्सीपर लेटे हैं। लियाकत अली पास हीमें एक अमरूद के पेड़से पके अमरूद तोड़कर खड़े-खड़े खा रहे हैं।]

जिन्ना—लियाकत! तुम्हारे पास सिगार-लाइटर होगा? मेरी सिगरेट जरा सुलगा देना।

लियाकत—(अमरूद चबाते हुए) सिगरेट क्या, कायदे आजम, यहां तो दिल ही सुलग रहा है। (सिगरेट सुलगाकर मिस्टर जिन्नाको देते हैं।)

जिन्ना—लियाकत! कभी कभी मैं यह सोचता हूं कि काश्मीरमें बहाया गया खून बेकार तो नहीं जायगा?

लियाकत—क्या कहा जाय कायदे आजम! सुरक्षा परिषदका फसला भी तो सोलहों आने हमारे पक्षमें नहीं हो पाया जब कि अमेरिका हमारी पीठपर और ब्रिटेन हमारे सिरपर था!

जिन्ना—कुछ भी हो, लियाकत! भविष्य के आसार अच्छे नजर नहीं आ रहे। मेरी तो छाती धड़क रही है।

[नौकरका प्रवेश। वह सूचना देता है कि बाहर कबाइलियोंका एक डेपूटेशन उनसे मिलनेके लिये खड़ा है।]

जिन्ना—लियाकत! ये कबाइली फिर आ धमके? एक मिनटकी भी तो सांस नहीं लेने देते!

लियाकत—बड़े खतरनाक प्राणी हैं! पैसा मांगते हैं। और अगर कुछ कहा जाता है तो बन्दूक तान देते हैं।

जिन्ना—तो फिर अब क्या किया जाय?

लियाकत—आप कहलवा दीजिये कि कायदे आजम घरपर नहीं हैं।

जिन्ना—लेकिन वे लोग इसे कब मान सकते हैं? वे तो दीवार फांदकर भी अन्दर आ जायेंगे। या खुदा! (पसीना आ जाता है।)

लियाकत—फिर?

जिन्ना—ज्यादा सोचनेका इस वक्त समय नहीं है लियाकत! पिछले दरवाजेसे फौरन बाहर निकल चलो।

लियाकत—लेकिन!

जिन्ना—लेकिन वेकिन कुछ नहीं। यह पालिटिक्स है। इसे अभी तुम नहीं समझते।

(तेजी से कदम बढ़ाते हुए पिछले दरवाजे से दोनों बाहर निकल जाते हैं और एक टैक्सी करके कराचीके हवाई अड्डेकी ओर जाने लगते हैं।)

[समाप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१६ वें पृष्ठका शेषांश]

यह समस्या आजसे नहीं वरन् बहुत समयसे चल रही है। विदेशी अपना भला चाहते थे। उन्होंने भारतवासियोंके कथनके विरुद्ध भारतके रुपयेका समानुपात अपने चल द्रव्यमें इतना ऊंचा नियत किया कि उनको अधिकसे अधिक लाभ हो और भारतको अधिकसे अधिक कच्च माल ले जा सकें। भारतवासियोंका कथन था कि यहांके रुपयेका मूल्य एक शिलिंग चार पैसे होना चाहिये। परन्तु अंग्रेजोंने इसके विरुद्ध एक शिलिंग ६ पेंस रखा। यहां तक कि रामपुर कांग्रेसके समय यह झगड़ा जोरोंसे चल पड़ा था। कांग्रेसने कहा था कि हम रुपयेका समानुपात घटाकर ही रखेंगे। दूसरी ओर गवर्नमेंटकी घोषणा हुई कि वह किसी भी स्थितिमें समानुपात घटानेके लिये प्रस्तुत नहीं बातें चलती रही लेकिन कांग्रेसकी सात्ता आनेके बाद भी हमारे देशका समानेपात घटाया न गया। क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय कानूनके अनुसार हमारा समानुपात निकट भविष्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलननद्वारा नियत होने जा रहा है। फिर सोना होनेके कारण भारत लगभग प्रत्येक वस्तुको स्वयं तैयार रनेकी चेष्टामें लगा है। समानुपातकी समस्या इस समय राजनीतिक मामलोंकेके सम्मख अधिक महत्वकी नहीं।

इस प्रकार हमने पांच मुख्य समस्याओंका विवेच किया है। लेकिन हमारी नेहरू सरकारको इस समय राजनीतिक विषयोंसे अवकाश नहीं मिलता कि वह इनको देखे। इसमें शंका नहीं कि इन विषयोंको भारतको सुलझाना होगा लेकिन चूंकि भारतवर्ष अब अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनका एक प्रमुख सदस्य हो चुका है इससे आर्थिक झगड़ोंका बहुत कुछ भार हलका हो गया है। माह अन्तर्राष्ट्रीय सममेलनसे आशा करते हैं कि वह भारतीय विषयोंपर ठीक तरीकेसे विचेन हो।

प्रतिसप्ताह ६आ. खर्च करने पर भी
ऐसे क्यों दिखते हैं?

• अधिकांश व्यक्ति हफ्ते में नाई से केवल तीन ही हजामत बना सकते हैं। इसमें ६ आना तक खर्च हो जाता है और फिर भी वे सात दिनों में से चार दिन इस व्यक्ति की तरह दिखते हैं—हजामतविहीन और खुरदरे!

पैसे बचाते हुये
आप ऐसे
कब दिखेंगे?

• बुद्धिमान व्यक्ति जो प्रतिदिन स्वयं "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड से हजामत बनाता है उतनी ही कीमत में अनेक हजामतें बना लेता है जितने में दूसरा व्यक्ति तीन बनाता है। इन ब्लेडों का एक पैकेट हफ्तों चलता है।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड तीन स्तरों में सर्वश्रेष्ठ इस्पात से बनाये जाते हैं! कोई भी दूसरे ब्लेड न तो इतने चलते हैं और न इतनी चिकनी हजामत बनाते हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock
SLOTTED BLADES
"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस्
ब्लेड जो ज्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं

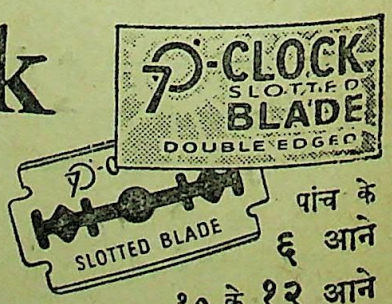


पांच के ६ आने
१० के १२ आने


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# दक्षिणका क्रान्तिकारी

## वी० वी० एस० ऐयर

**लेखक—श्री अरुणदासन**

तुम कौन हो ? सच-सच बता दो । हमें तुम्हारी हरकतोंका पता लग गया है । अगर तुने अपनी सारी बातें नहीं बतायीं तो मेरे हाथकी रिवाल्वरकी छः गोलियां हम दोनोंका काम तमाम कर देंगी ।

यह बी० बी० एस० ऐयरकी इंगलैंडमें एक महाराष्ट्रको थी दी हुई धमकी थी । बी० बी० एस० ऐयर इंगलैंडमें इंडिया हौसमें सावरकरके साथ ठहरे थे । सावरकरके नेतृत्वमें उधर भारतीयोंने भारतस्वतंत्रताकी लिये आतंकवादका का कार्य आरम्भ कर दिया था । उसमें कउई लोगोंका हाथ था । बी० बी० एस० ऐयर की इसम प्रधान स्थान था ।

जब यहांका कयर्य अ रम्भ हूआ तभीसे ब्रिटिश सरकारको इंडिया हौसके प्रति सदेह उत्पन्न हो गया था । उसने निश्चय कर लिया कि किसी तरह इंडिया हौसको शान्त न रहने दें । इसलिये सरकार ने उसमे गुप्तचरोंको नियुक्त किया । भारत से गुप्तचर विद्यार्थीके रूपमें आकर इंडिया हौसमें ठहर गये । उन्हींमें वह महाराष्ट्र भी था। उसने मिलकर उनकी मित्रता प्राप्त कर ली । हौसकी सभी नियमावली का पालन करता और हर बातकी सरकार को यथासमय रिपोर्टकर देता । सरकारको इसका पता बिलकुल न था । पर बी० बी० एस रेऐयर पहले हीसे सशैक थे । उस महाराष्ट्रका अत्यधिक दान देना, सबसे अधिक इंडिया हौसके काममें शरीक होना , रोज शामको अकेले सैरके लिये जाना , बातोंने ऐयरके संदेहको पुष्ट कर किया । एयरके एक दिन सावर करसे सकी चर्चा की । सबरकारको अभी सब बात मालूम हुई । सबसे मिलकर यह काम बी० बी० एस ऐंयरको सौंप दिया ।

सी निर्णयपर ऐंयरने काम किया । उसकी अनुपस्थितिमें ऐयरने उसकी पेटीकी तलाशी की । उनको उसके सी० आई० डी० होनेका प्रमाण मिल गया । ऐयरने वे कागजात ले लिये जिससे यह सिद्ध हो सकता था कि उसने हौंसके प्रतिकूल क्या-क्या किया है ।

एयर अपने काममें सफल हो गये । सामने बंदूकको देखकर वह वह महराष्ट्री डर गया कि कहीं यह सचमुच मार न डाले एयरकी सारी बातें उसनें मान ली । आगेसे वह महाराष्ट्रीय सरकारका गुप्तचर न होकर इंडिया ाउसका गुप्तचर हो गया । रूष्टकारकी सभी बातें पहले ही हौसको मालम हो जातीं और उसके अनुसार हासका कार्यक्रम बनता ।

बीसवीं शताब्दीके आरम्भमें इस इंडिया हौसको श्यामजी कृष्ण बर्माने आरंभ किया था । उस समयका भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नरम दलवालोंका आधिपत्य था । वे न तेज जाते और न किसीको करने देते । बर्माजीने इंगलैंडमें उसका खंडन किया । इसी समय शिक्षा पानके लिये भारतसे कई नौजवान उधर गये । उनमें एयर लाला हरदयाल, सवरकर डाक्टर राजन आदि उल्लेखनीय हैं । बर्मा जीके लेख व भाषणने इन नौजवानोंके मनमें तूफान पैदा कर दिया । इंगलैंडमें भारतीयों का अपमानने तो इन्हें कुछ करनेकी उत्तेजना दी । उन लोगोंने महसूस किया कि इसका मूल कारण देशकी गुलामीं है इसी समय जापान और रूसके बीचमें लड़ाई छिड़ गयी । जापान जैसा छोटा देश रूस जैसे बड़े देशके साथ लड़ाई करना और उसमें जीत जाना उन लोगोंको सबक सिखाना था । जब इतना छोटा देश लड़ाई कर सकता है तो हम क्यों नहीं कर सकते हैं ? फलतः इनलोगोंका लक्ष्य बदल गया । शिक्षा पाने गये और क्रांतिकी दीक्षा ले ली ।

जब बर्माजीने हौस खोला तब उनका ध्यान शायद आतंकवादकी ओर न गया । इंगलैंडके लोग उनके कामसे ही इतने असंतुष्ट हो गये थे कि पार्लामेंटमें प्रश्न उठा कि उनकी गति रोकी जाय । इससे बर्माजीका इंगलैंडमें हरना मुश्किल हो गया । उन्होंने पेरिसकी राह ली । इसी समय लाला हददयाल भी पेरिस चले गए । उनके बाद सावरकर ही हौसके सर्वसर्वा हो गये । और उनका बी० बी० एस एयर दाहिने हाथ रहे ।

यह सोचनेकी बात थी कि जब सावरकर इंगलैंड गये उसके पहले ही भारतमे नाम मिल गया था । नेताओंका आशीर्वाद और मदद थी । इसलिये उनका इंगलैंडमें नेतृत्व करना आश्चर्यकी बात नहीं थी । पर, ऐयर भारतसे विद्यार्थीकी हैसियतसे ही गये । साधारण घरानेके थे । निजी प्रयत्नसे वह इंगलैंड आये थे । रुपयेका कोई इन्तजाम न था । ऐसी हालतमें उनका धर प्रधान आदमी बनाना आश्चर्यकी बात थी ।

"भारतमें क्रांति करनी चाहिये । ईसके लिये हमें नये हथियारोंका प्रयोग विदित रहना आवश्यक है । भारतमें हथियार भेजते रहें और हम भी निश्चित समयपर भारत पहुंच जावें । एक दिन नियत किया जाय । उस दिन भारतके सभी शासक गोरोंको गोली मार दें ।" यह ऐयरका कहना था । सावरकर भी इस से सहमत थे । युद्धकला सीखनेके लिये कुछ भारतीयोंको स्पेनकी लड़ाईमें सेवा करनेके बहाने भेजा जाय । इस तरह क्रान्ति की तैयारी होने लगी । ऐयरने दक्षिण भारतका एक पत्रकार तिसुभले आचार्य को इसके लिये तैयार कराया ।

इंडिया हौसवाले बड़ी ही सावधानीसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



काम करते रहे । पर ब्रिटिश स्काटलैंड यार्ड पुलिस दुनिया भरमें प्रसिद्ध थी कुछ ही दिनोंमें सारा कार्य सरकारको मालूम हो गया । निश्चय हुआ कि वे कुछ दिन पेरिसमें रहे । इस निश्चयके अनुसार सावरकर पेरिस चले गये । कुछ हफ्तोंके बाद जब पूर्व योजनाके अनुसार सावरकर लौटे तो भारत सरकारकी प्रार्थनापर ब्रिटिश सदकारने इन्हें कैद करा दिया । इसपर प्रश्न उठा कि ब्रिटिश सरकार भारतीय प्रजाको इधर कैसे कैद कर सकती है ? जिस मुकदमेमे ऐयरने सावरकरके लिये बड़ी दौड़ धूप की । पर, इसमें अदालतने भारत सरकारके पक्षमें फैसला सुनाया । इसके बाद ऐयरने सावरकरसे जेलमें मुलाकात की और पेरिस चले गये ।

यह सर्व विदित है कि जब सावरकर जहाजपर भारत लाये जा रहे थे तो समुद्रमें कद पड़े । और तैरकर फ्रांसकी भूमिमें चले गये । । पुलिस उनका पीछा कर रही थी फ्रांसके एक पुलिसके जवानकी बेवकूफीसे सावरकर फिर उनसे पकड़े गये। पर यह बात कम लोग जानते हैं कि जब सावरकर समुद्रमें कूदकर फ्रांसके किनारे आये तो उधर दो फरलांगपर बी० बी० एस ऐयरके मेडम कामाके साथ मोटरमें बैठे सावरकरकी प्रतीक्षा कर रहे थे । यह योजना बी० बी० एस ऐंयरने ही बनायी थी और शायद इंगलैंडके जेलमें इसी मतलबसे ऐयरने सावरकरसे मुलाकात की थी। इसी योजनाके अनुसार सावरकर समुद्र में कूद पड़े। जो हो, ऐयर और सावरकरकी योजना इच्छानुसार सफल न हो सकी ।

अब ऐयरका इंगलैंड जाना गैरमुमकिन हो गया । अब किसी तरह इंगलैंड नहीं जा सकते थे । ब्रिटिश सरकारकी भारतमें ऊधम मचानेके बाद वह इंगलैंड कैसे जा सकते थे ? ऐयर डरपोक थे सो बात नहीं थी । जेलमें जानेसे अपना जीवन वृथा करनेसे अधिक लाभ क्या था ? बाहर टहलते हुए कुछ काम कर सकते हैं। इसी मतलबसे उन्होंने सावरकरको भी छुड़ानेकी योजना बनायी थी ।

ऐयरने निश्चय किया कि वे पेरिस में कुछ दिन ठहरनेके बाद भारत चले जायेंगे । इतनी धारणाओंके बाद भी ऐयर का मन आतंकसे ऊबा नहीं । उनका उत्साह बढ़ता ही जाता था । उन्होंने उधरसे भारतमें अस्त्र शस्त्र बराबर भजनेकी व्यवस्था बनायी ।

कुछ भी हो ऐयर भारत वापस आना चाहते थे । जब इंगलैंड जाना ही खतरेका था तो भारतमें आना तो अपनी जान गंवानेके बराबर ही था । पर, ऐयरने दृढ़ निश्चय कर लिया कि वे आशु भारत में आवेगें और अगर ब्रिटिश इंडियामें नहीं तो फ्रेंच इंडियामें रहेंगे । उन्होंने लम्बी दाढ़ी बढ़ा ली जिससे किसीको न मालूम हो । सावरकरको सजा देनेके कुछ दिनों बाद ऐयर फ्रेंच इंडिया पांडीचेरीके लिये रवाना हो गये । ईजिप्ट और सिलोनमें कई महीने ठहरकर भारतमें पाण्डीचेरीमें आ गये कि किसीको कानोंकान खबर ही न हुआ । ऐयरके पाण्डीचेरी आनेके ६ महीने बाद ही सावरकरको मालूम हुआ कि ऐयर किधर हैं ! इस तरह ऐयरका अज्ञातवास आरम्भ हुआ ।

इसी समय तामिलके वह कवि श्री भारती भी अज्ञातवासके लिये पाण्डीचेरी आ गये थे.—जिनका स्मारक-गृह अभी हाल ही में गवर्नर राजाजीके हाथों खुला — और भगवान अरविन्दका भी पाण्डीचेरी अज्ञातवास स्थल हो गया था ।

इधर भी ऐयर चुप न रहे । ब्रिटिश भारतसे नौजवानोंको बुलाकर उधर समुन्दरके किनारे रिवाल्वर चलानेका अभ्यास कराते थे । इन्हींका शिष्य वांचकी नाम ऐंयरने तिरुनेलवेलीके गोरे कलेक्टरको गोली मारकर मार डाला था । जो एक मरहठा केसके नामसे प्रसिद्ध है । सरकार को साफ मालूम हो गया था कि ऐयर ही ही इसके सूत्रधार हैं । इन्हें ब्रिटिश भारतमें बुलाकर कैद करनेकी सरकारकी सभी कोशिश नाकामयाब रही ।

पाण्डीचेरीमें ऐयर १२ वर्ष रहे । इस लम्बे अरसेमें उन्होंने उधरसे पत्रका संचालन किया । तमिल वेद तिरुक्कुटलका अनुवाद अंग्रेजीमें किया ।

बहुतसी कहानियां लिखीं । आखिर किसी तरह ऐयरपरसे रोक १९२० में उठा दिया और भारतमें आनेकी अनुमति दे दी ।

अब ऐयर कांग्रेसके काममें लग गये । अब तक कांग्रेसमें महात्माजीका प्रवेश हो गया था । और उन्होंने अपनी अद्भुत शक्तिसे ऐयरको भी वशीभूत कर लिया । गान्धीजीका ऐयरपर बड़ा प्रेम रहा । पर दक्षिणकी कमबख्ती थी कि उनकी सेवासे अधिक लाभ न उठा सके ।

दक्षिणके लिये उन्होंने ऐसा कार्यक्रम बनाया था कि जिसको पूरा करनेसे देश को ऐसे सेवक मिल जाते जिससे भविष्यकी स्वतंत्रता लड़ाईके लिये मदद मिलती । उस समय तामिल नाडमें ई० वेरा और वरद राजुलू नायडू बड़े नेता थे । दोनों अब्राह्मण थे और ब्राह्मणोंसे घृणा करते थे। ऐयर तो ब्राह्मण थे ऐयरकी इतनी कीर्ति उन्हें असह्य थी । इसलिये मौकेकी ताकमें थे और ज्योंही एक छोटी बात हो जाती उसको लेकर चिल्लाने लगते ।

बात यह हुई । ऐयरने भारतमें नेता तैयार करनेकी दृष्टिसे एक आश्रम खोला उसमें देशके सेवक तैयार होने लगे । दक्षिण में जति पांतिका भेद भाव अधिक है । इसलिये आश्रमसे कुछ विद्यार्थियोंके पिताने यह आक्षेप किया कि उनके लड़के सबके साथ बैठ भोजन न करें । ऐयर भेदभाव न रखते थे । पर जबरदस्ती कोई काम करना भी नहीं चाहते थे । उन्होंने ऐसा इन्तजाम किया, जो चाहते हैं एक साथ बैठकर भोजन कर सकते हैं और जो नहीं चाहते वे अलग भी भोजन करें ।

विरोधियोंको मौका मिला । इसी बातको लेकर विरोधियोंने —बाहरके नहीं —

[शेष १२वें पृष्ठपर देखिये]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पाठक चाहिये।

— श्री हंसकुमार तिवारी—

किसी भी देशकी उन्नतिकी पराकाष्ठा तीन प्रधान अवलम्बों द्वारा हो सकती है— उसकी संगठित शक्ति, उसकी वर्द्धनशील संपदा और उसका समृद्ध साहित्य। प्रत्येक उत्कर्षकामी देश एक साथ ही इन तीनों विषयोंकी समृद्धिका प्रयत्नशील होता है। इनमें भी साहित्यका आधार सर्वापेक्षा महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि साहित्य देशकी आत्माकी रागिनी है, उसके प्राणोंका शब्दमय रूप है। संपद, सहिष्णु और चरम उत्कर्ष भी हो, तो वाणीहीन वीरता देशका सुहाग नहीं हो सकती। साहित्यमें जीवन-संजीवनके अतिरिक्त काल प्लावनमें गिरकर स्थायित्व पानेकी क्षमता है। धन हो, शक्ति हो और साहित्य न हो, तो देश एक स्वस्थ-सुन्दर पुतला-सा हो जाय।

साहित्यकी सिद्धिके भी दो अंग हैं— उसकी सृष्टि और उसका व्यापक प्रसार। सृष्टिका संबंध लेखक-कविसे है और प्रसार का पाठकोंसे। किसी देशको बहुत अधिक साहित्य-स्रष्टाकी आवश्यकता नहीं होती, किन्तु अधिक-सेअधिक संस्कार संपन्न पाठककी अपेक्षा होती है। क्योंकि पाठकों द्वारा ही साहित्यकी शक्ति सार्थक होती है। अनेक कारखाने खोलकर आप अनेक तोप-बन्दूक तैयार कर दें और शिक्षित सैनिक ही संख्यामें थोड़े हों, तो क्या लाभ? समर्थ लेखक थोड़े ही हों, पर सहृदय पाठक यथेष्ट हों तो साहित्य असाध्य-साधनकर सकेगा, इसमें कोई संदेह ही नहीं। इसलिये जिस देशको प्रतिभाका बरदान मिलता है, वह भाग्यवान् है। साथ ही जिसे संवेदनशील पाठकोंका समुदाय भी मिलता है, उसे स्वर्ग जानिये। साहित्यकी अचूक अक्षय शक्ति लेखक-पाठकके संयोगसे ही प्रत्यक्ष हो सकती है। सच पूछिये, तो कविता मात्र लेखककी सृष्टि नहीं होती, समान रूपसे वह पाठककी भी सृष्टि होती है। सृष्टिकी सार्थकता उत्पादनमें ही नहीं, उस भावनाके विस्तारमें है, जिसका सारा उत्तरदायित्व पाठकोंपर होता है। कहा गया है—

कविता रसमाधुर्यं कविर्वेत्ति न तत्कविः
भवानी-भ्रूकुटीभंगं भवो वेत्ति न भूधरः

साहित्यके प्रति पाठकोंका उत्तरदायित्व बहुत बड़ा है। साहित्य सृष्टि जीवनकी जैसी तपस्या है, साहित्य रसास्वादन वैसी ही पाठकोंकी एक साधना है। जो-सो पाठक नहीं हो सकते। बड़ा-से बड़ा कवि भी यह दावा नहीं कर सकता कि मैं अच्छी कविता कर सकता हूं। काव्य-प्रतिभा ईश्वरप्रदत्त होती है। कुछ विचारकोंने उसे अनुशीलन और अभ्यासलब्ध जरूर बताया है, मगर अबतकके साहित्येतिहाससे इस सत्यकी प्रतीति नहीं होती। पाठक होना भी ऐसे ही कठिन काम है। उसके लिये एक स्वाभाविक संस्कार चाहिये। प्रतिदिन पांच पुस्तकके हिसाबसे पढ़ने वालेको ही आप यथार्थ पाठक नहीं कह सकते। पाठक वह है, जो लेखक द्वारा संचित रसकी प्रतीति ठीक उसी रूपमें कर सकता है। रसके साथ लेखक-पाठककी तदाकारतामें ही आनन्दका अक्षय स्रोत है। कार्लाइलने कहा है— 'जब हम तल्लीन होकर, कविता पढ़ते हैं तो स्वयं कवि हो जाते हैं। ऐसा न हो, तो काव्य या साहित्य पाठका आनन्द ही नहीं मिल सकता। गायक और श्रोता कवि और पाठककी अंतर्दृष्टि एवं रसदृष्टि एक होनी चाहिये। दोनोंके संस्कारमें यदि सामंजस्य न हो जाय, तो रसकी सिद्धि नहीं होती। गंगा-गुण गानमें अंग्रेज पाठकोंको उत्फुल्ल आनन्द इसलिये नहीं मिलता कि उनके संस्कारमें वह प्रत्यक्ष नहीं हो पाता। आप कालीदासके काव्यको पढ़ें और उसके वर्णित विषय अगर आपके हृदयकी पृष्ठभूमिपर यथायथ न उतरें, तो उसका रस आपको नहीं मिल सकता। भगवान् कृष्णने गीता कही। अर्जुनने उसे सुना। उस अर्जुनको भी हम कृष्ण कहा करते हैं। इसका अभिप्राय केवल इतना है कि कहन-सुननेवालेकी रस-दृष्टि एक है गाड़ीके दोनों बैलकी गन्तव्य दिशा एक होनी चाहिये। इसीलिये पाठकका काम आसान नहीं है। चूंकि आसान नहीं है, इसलिये उपयुक्त पाठक अधिक मिलते ही नहीं। किसी रचनासे पाठकको आनन्द महज इसीलिये मिलता है, कि उसके हृदयमें भी वे विषय, वे वस्तु, वे भाव वर्तमान होते हैं। कालिदासने कहा है :—

रम्याणि विक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्।
पर्युत्सुको भवति यत्सुखितोऽपि जन्तुः।
तच्चेतसा स्मरति नूनंबोध पूर्वं।
भावस्थिराणि जननान्तर सौहृदानि।

इसलिये वास्तवमें हरकोई साहित्य-रसका अधिकारी नहीं होता। कवि-प्रतिभा की तरह जिसे स्वभावतया ही सहृदयता मिली है, उसकी बात और है, किन्तु यों रसकी प्रतीतिके लिये पाठकको अभ्यास और अनुशीलनकी आवश्यकता होती है। आवश्यकता होती है कि पाठक साहित्य वर्णित भावोंमे डूब जाय। यही रसज्ञता है, इसीको तन्मयी भवनयोग्यता कहते हैं। अभिनव गुप्ताचार्यने इसे यों कहा है—

येषाम् काव्यानुशीलनाभ्यासवशाद्
विशदीभूते मनोमुकुरे वर्णनीय तन्मयी
भवनयोग्यता ते हृदयसंवाद भागः सहृदयः।

ऐसे लोग सहृदय कहलाते हैं। ये सहृदय या तो जन्मसे अपने साथ यह गुण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लिये आते हैं अथवा अभ्यासानुशीलन द्वारा सहृदयताके अधिकारी होते हैं। जिस निविड़ आत्म-संयोग द्वारा दो अलग-अलग कुलके स्त्री-पुरुष एक होकर दाम्पत्यका अमृत संग्रह कर लेते हैं, लेखक-पाठकमें उसीकी आवश्यकता है।

यह स्वीकार करते हुए हमें दुःख तो होता है, पर हिचक नहीं होती कि हमें पाठकोंका ही सबसे बड़ा अभाव है। हमारे साहित्यकी यह जो मंथरगति है, ऐसी जो कृश काया है, उसमें लेखकोंका जितना चाहे दोष हो, सबसे दोष पाठकोंका ही है। हम लेखकोंके लिये बड़ी-बड़ी कसौटियां तैयार किये हुये हैं, बार-बार उनके महान् उत्तरदायित्वकी उन्हें याद दिलाते रहते हैं। राष्ट्रके प्रति उनके कर्तव्यकी ओर उन्हें सतत जागरुक रखना चाहते हैं, किन्तु संस्कारसंपन्न पाठक बढ़ानेकी हमारी कोई चेष्टा नहीं होती। साहित्यकी समर्थताका मात्र एक ही पहलू हम देखा करते हैं वह है, सृष्टि। और हमारी यह एकांगी दृष्टि ही हमारी त्रुटिकी जिम्मेदार है। सजीवित बीज बटोरनेसे कुछ नहीं होता, उर्वर क्षेत्रका प्रयोजन उससे बड़ा है। दाता चाहते हैं मंगतोंको दामन भी होना चाहिये और हम देखते हैं कि बहुत-बहुत दिन पहलेसे ही लोग पाठकोंके अभावका रोना रोते आ रहे हैं। बल्कि इस मर्जकी इलाज समझकर ही नाना प्रकारके संतोष वाक्यों द्वारा समर्थ साहित्यकोंको संतुष्ट हो लेना पड़ा है। भवभूतिको अपनी कृति अनन्त कालपर छोड़कर संतुष्ट होना पड़ा। बहुतोंने यह कहा कि लोकप्रियता ही कला की कसौटी नहीं। थोड़े ही सहृदय पाठक मिलें, मगर वे योग्य हों। अरसिकोंकी जमायतसे थोड़े योग्य पाठक ज्यादा उपादेय हैं। किन्तु वास्तवमें उन साहित्यकारों की मनकी बात नहीं। बहुतोंमें अपनी आत्म-प्रतिष्ठाकी हार्दिक आकांक्षा उनकी होती है। किन्तु जब उसे असंभव ही देखते हैं, ज्ञाता इसीपर संतोष करते हैं। अनेक कलाकारोंके जीवनवृतान्त, उनकी रचनाओंमें हमें इसका स्पष्ट आभास मिलता है कि पाठकोंकी इस उपेक्षा, ऐसी उदारशीलतासे उन्हें मार्मिक पीड़ा पहुंची है। मगर वे निरुपाय ही तो थे।

हम यह भी मानते हैं कि पाठकोंकी यह उदासीनता उनकी विवशता है। उनमें साहित्य-संस्कारके विकासकी कोई सामूहिक चेष्टा नहीं की गयी, कोई राष्ट्रीय प्रयत्न नहीं हुआ। फलतः उनकी भी लाचारी ही जानिये। और दोनों लेखक-पाठककी इस विवशतासे हमारा राष्ट्र साहित्यकी संजीवनीका वह लाभ नहीं उठा पा रहा है जो अपेक्षित है। साहित्य राष्ट्रकी संपत्ति है। और इसीलिये साहित्यकार उसका एक आवश्यक अंग है। राष्ट्रको चाहिये कि वह अपने भाव कल्पतरु साहित्यकारको श्रद्धा और प्रेमसे सींचें और उसके फलसे अधिक-से-अधिक लोग लाभान्वित हों, इसके लिये समर्थ पाठक समाज तैयार करे राष्ट्रकी ओरसे दोनोंकी समान उपेक्षा है। वह न तो वाणीके वरदपुत्रोंकी अभी वह सामाजिक महत्व दे सका है, न बीणापाणिके आशीर्वादके बितरणकी सुव्यवस्था कर सका है। जब तक राष्ट्रके इस अनिवार्य कार्यको सुचारु रूप नहीं दिया जा रहा है तबतक यही समझना चाहिये कि गोबरमें घीका अपव्यय हो रहा है। ईश्वरने मनुष्य बनाया, उसके पहले उसने अन्न–वनस्पतिकी सृष्टि की। साहित्य जहां जी सके, हमें उस क्षेत्रको साहित्यकारसे पहले ही तैयार करना चाहिये।

अन्यान्य देशोंके साहित्य–प्रसारको देखकर हम हिन्दीवालोंको आश्चर्य होता है। आश्चर्य होता है कि हमारे बड़े से बड़े लेखककी कृतिका महज एक हजारका संस्करण सालोंमें भी खत्म नहीं होता और विदेशी लेखककी रचनाओंकी लूट, होती है मानो अमृत बंट रहा ह। एक–एक पुस्तककी लाखोंलाख प्रतियां लहरमें चुक जाती हैं। इसमें लेखकोंकी योग्यताका जितना हाथ चाहे होता हो, सजग पाठकोंकी दुनिया बहुत बड़ी है। हिन्दीमें दुर्भाग्यसे लेखक–कवि ही पाठकसे अधिक हो पड़े हैं। साहित्य–विचारक गण इसीपरसे साहित्यकी प्रभावशून्यताकी शिकायत कर बैठते हैं। दबा खायी जाय और गुण नहीं हो तो, दबा या चिकित्सकका दोष है। बिना दबा खाये ही उससे किस गुणो की उम्मीद की जा सकती है? साहित्यकी हम ऐसी ही आशा करने लगे है। साहित्यके पढ़नेवाले तो नहींके बराबर ही है, किन्तु। उथल–पुथल मचा देनेवाली तानकी मांग कविसे की जाती है, किन्तु जिनके माध्यमसे वह क्रांति रूप ले सकती है उन्हें उस साहित्यसे कोई वास्ता नहीं, तो साहित्यका प्रभाव प्रत्यक्ष कैसे देखा जा सकता है? जिन विदेशीकवियों अथवा लेखकोंको समर्थ, क्रांति–दूत, मंत्र दष्टा बताया जाता है। कहा जाता है कि उनके साहित्यसे देशमें अनुकूल वातावरण तैयार हो सका है, उनकी रचनाएं हमने देखी हैं। सी, वाल्टेयर, गोर्की, दांते, शेक्सपियर, सबकी रचनाएं हमारे सामने हैं और हम कह सकते हैं कि भारतीय साहित्यमें उन जैसे समर्थ साहित्यकोंका अभाव नहीं रहा, न वैसी कलानिधियोंकी कमी ही। फिर भी यहां उनसे वह जादू नहीं किया जा सका। आग्रहशील पाठक ही यहां उतने नहीं हैं जिनके लिये साहित्य है। फलतः महत्व की रचनाएं उसी प्रकार निष्प्रभ हो गयी हैं जैसे कि मरुमें बीज हो जाता है। इसलिये हम तो कहेंगे, भावकी गंगा तो बहती है किन्तु उनके किनारे लोकालय नहीं बसाया गया, स्नानोत्सबकी न बिधि बतलायी गयी, न लोगोंका उसमें गोते लगाकर शीतल होने का उछाह है। यही हमारे साहित्यकी प्रभावहीनताका प्रमुख कारण है। आज इसे दूर करना निहायत जरूरी है। सजग साहित्यकारसे जागरुक पाठककी हमें ज्यादा जरूरत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भारतका भावी विधान : दो प्रश्न

श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

भारतके भावी विधानका मसविदा देशके सामने है। इसको देखकर पहला प्रश्न यह होता है कि भारतका विधान लिखित हो या अलिखित हो, कठोर हो या लचकीला हो। दूसरा प्रश्न यह है कि भारतीय राज्य संयुक्त राज्य होगा या संघ राज्य होगा। विधानके लक्ष्य और उद्देश्यके समान ही ये दोनों प्रश्न महत्वपूर्ण हैं।

विधान क्या है? यह वह कानून है, जो देशकी गवर्नमेंटका होना निश्चित करता है, और सरकार और नागरिकोंके पारस्परिक कर्तव्योंका निश्चय करता है। यह राजनीतिक कानून है जो शासनात्मक कानूनोंसे भिन्न होता है। प्रत्येक विधान तात्कालिक, राजनीतिक परिस्थितियोंकी उपज है और शासक श्रेणीके राज्यों या पार्लमेंट या जनताके आदर्शोंऔर विचारों का प्रतिरूप होता है। विधान शासकश्रेणीकी राजनीतिक इच्छाका मूर्तरूप होता है। इसलिये सभा, और प्रवृत्तियोंके परिवर्तन के साथ विधानमें परिवर्तन आवश्यक है। यदि वैधानिक रीतिसे परिवर्तन संभव न होगा तब अवैधानिक रीतिसे होगा। इस लिये प्रत्येक विधानमें सत्ता या आदर्श बदलनेके साथ विधान परिवर्तन करनेकी सुविधा दी जातीं है। इसलिये भारतीय विधानके मसविदेकी इस कसौटीपर परीक्षा की जानी चाहिये, क्या इसमें वर्तमान भारतीय राजनीतिक आदर्शों और विचारों का समावेश है, और उसके संशोधनके लिये क्या उपयुक्त मैशीनरी उसमें विराजमान है?

संयुक्त राष्ट्र अमरीकाका विधान लिखित या कठोर कहा जाता है और इंगलैंडका विधान अलिखित या लचकीला कहा जाता है। पर वस्तुतः इन दोनोंमें विशेष अन्तर नहीं है। क्योंकि इंगलैंडका विधान भी लिखित है। पर एक साथ एक पुस्तिकाके रूपमें तैयार नहीं किया गया वह बिखरा हुआ है। अमरीकाका विधान भी लचकीला है। क्योंकि इसमें संशोधन और परिवर्तनके लिये सुविधा और अवकाश है और अनेकबार इसमें परिवर्तन किया गया है।

फिर स्वभावतः प्रश्न उठता है कि विधान और साधारण कानूनमें क्या अन्तर है? साधारण कानूनमें साधारण बहुमतसे परिवर्तन संभव है। पर वैधानिक कानूनमें दो तिहाई या तीन-चौथाई मतोंसे ही परिवर्तन किया जा सकता है। इंगलैंडमें वैधानिक कानूनों और साधारण कानूनोंमें कोई अन्तर नहीं किया जाता। लार्ड सभाकी शक्ति कम करनेका बिल पार्लमेंटके सामने है। उसकी स्वीकृति और अस्वीकृति साधारण बहुमतके आधारपर ही होगी। पर संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके अन्दर इसमें भेद किया जाता है। वहां वैधानिक कानूनमें कांग्रेसके दो-तिहाई वोटोंसे और स्टेटोंके तीन-चौथाई वोट आनेपर ही परिवर्तन और संशोधन तथा परिवर्द्धन संभव है।

भारतके विधानके मसविदेमें भी वैधानिक कानून और साधारण कानूनके बीच भेद स्वीकार किया जाता है। वैधानिक कानूनोंमें दोनों धारा-सभाओंके दो-तिहाई बहुमतसे ही संशोधन और परिवर्तन हो सकेगा। इसलिये संभवतः प्रश्न उत्पन्न होता है। क्या भारतमें संयुक्त राष्ट्र अमरीकी पद्धतिका अनुसरण करना उचित है?

अल्प मतसे प्रश्न यह है कि विधान परिषद या दो-तिहाई या तीन-चौथाई मतोंसे विधानको स्वीकार करेगी, बल्कि साधारण बहुमतसे करेगी। एक बात और ध्यानमें रखनेकी है। विधान परिषदके सदस्योंका चुनाव सीमित और अल्प वोटरों द्वारा साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणालीसे किया गया है। आजकी विधान परिषद विधान बनाने और साधारण कानून दोनोंको बनानेका काम कर रही है। इस अवस्थामें बालिग मताधिकार द्वारा प्रत्यक्ष तथा संयुक्त निर्वाचन प्रणालीके आधारपर चुनी गयी पार्लमेंटपर यह यह प्रतिबन्ध क्यों लगाया जाय, कि वह दो-तिहाई मत प्राप्त होनेपर ही विधानमें परिवर्तन और संशोधन कर सकेगी? क्या बादमें पार्लमेंटके बननेवाले सभ्य कम योग्यता और कम जिम्मेदारी होंगे? गणितके हिसाबके अनुसार यह मानना होगा कि वर्तमान विधान परिषदका ५१ प्रतिशत सभा और बुद्धिमानीके भविष्यका पार्लमेंटके ६७ प्रति शत के समान है।

इस प्रसंगमें संयुक्त राष्ट्र अमरीकाका विधान किसप्रकार स्वीकार किया गया, यह जानना अनुचित न होगा। रोडे आइलैंड विधान बनानेमें सम्मिलित ही नहीं हुआ। कन्वेशन द्वारा अपना कार्य समाप्त करनेसे पहले ही बहुत-से प्रतिनिधि चले गये। जो शेष बचे उनमेंसे अनेक ने हस्ताक्षर ही नहीं किये। ६५ प्रतिनिधि नियुक्त किये गये, ५५ उपस्थित हुए और ३९ ने केवल दस्तखत किये! इसपर भी जार्जवाशिंगटनने लिखा, उपस्थित स्टेटोंकी सर्व सम्मतिसे विधान स्वीकार किया गया। पर सचाई क्या है? अमरीकाके इस विधान को दो-तिहाई मत नहीं प्राप्त हुए। पर आज उसमें संशोधन इसके वगैर सम्भव नहीं है। क्या भारत भी इसीको अपनाना चाहता है?

इस पद्धतिमें एक और दोष है। यह अल्पसंख्यकोंको 'वोटों' का अधिकार देना है। क्योंकि संशोधन उनकी सहमतिके बिना सम्भव नहीं है। अल्पसंख्यक इस प्रकार बहुसंख्यक बना दिये जाते हैं। इसकी बुराईका परिणाम देखना हो तो संयुक्त राष्ट्र अमरीकाके विधानके संशोधनका इतिहास देखना चाहिये। लार्ड ब्राइसका कहना है कि बहुतसे वांछनीय और आवश्यक सुधार पेश नहीं किये गये या पुष्ट नहीं किये गये क्योंकि आवश्यक बहुमत प्राप्त करनेमें इस तरहकी कठिनाइयां थीं।

साधारण कानूनोंसे राजनीतिक और वैधानिक कानूनोंको विशेष महत्व देनेका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई कारण भी नहीं दीखता । यह मानी हुई बात है कि संयुक्त राष्ट्र अमरीकाकी अपेक्षा ब्रिटेनमें राजनीतिक और नागरिक अधिकार अधिक सुरक्षित हैं ।

वैधानिक और साधारण कानूनके बीच भेदकरनेसे एकऔर हानि होती है इससे एक प्रकारकी अनिश्चितता उत्पन्न होती है क्योंकि हमेशा भय बना रहता है कभी कोई व्यक्ति इनको सुप्रीम कोर्टमें चुनौती देगा और ये कानून कोर्ट कानूनी घोषित कर देगा । धारा सभा भी कानूनोंको रद्द कर सकती है । पर जबतक उसके पीछे लोकमतका बल न हो, वह ऐसा करनेका साहस नहीं कर सकती और इस राजनीतिक शास्त्रकी कल्पना की जा सकती है । पर धारा सभा द्वारा पास किये गये कानूनपर सुप्रीम कोर्ट नें वैधानिक मुहर लगाया या अवैधानिक यह जानना कठिन है । इ सका पूर्वाभास नहीं हो सकता । सुप्रीम कोर्ट धारा सभाके समान कानूनको बोलनेमें असमर्थ है । उसको जन-मतकी भी चिन्ता नहीं है और न समयकी आवश्यकताकी ओर इसका ध्यान रहता है । उसका ध्यान तो कानूनकी व्याख्या करनेकी ओर एक अन्त रहना है। दूसरी ओर धारा सभा इस बातका विचार करती है कि कानून कैसा होना चाहिए । अपवादोंकी बात छोड़ देनी चाहिय जब कोर्टोंने कानूनकी व्याख्या करनेका काम न करके कानून बनानेंका काम किया है। प्रेसीडेंट रूजवेल्टकी नूतन योजनाओंको सुप्रीम कोर्टसे जैसा मोर्चा लेना पड़ा , वह यहां दुहरानेकी आवश्यकता नहीं है ।

फिर सुप्रीम कोर्टके जज किसी कानूनको वैध या अवैध दो-तिहाई या तीन-चौथाई मतोंसे नहीं ठहराते, पर साधारण बहुमतसे । यदि वैधानिक प्रश्नका एक जजके बहुमतसे निर्णय किया जा सकता है तब धारा सभाके बहुमत द्वारा इस प्रश्नका निर्णय करनेमें क्या आपत्ति है हो सकती है । इसलिये कानून बनानेके लिये पार्लमेंटकी सभा सर्वोच्च होनी चाहिये । ब्रिटेनके समान भारतमें भी वैधानिक कानूनों और साधारण कानूनोंमें भारतमें भेद न करना चाहिये । भारत जिस तेजीसे बदल रहा है , हमारी सामाजिक संस्थाएं , नया रूप धारण कर रही हैं, हमारे विचार और आदर्श बदल रहे हैं, उनके अनुसार विधानका बदलना आवश्यक है । इसके लिये आवश्यक है कि विधानमें आवश्यकताके अमुसार परिवर्तन करनेकी सुविधा हो , । विधान जनताकी भावना, उसके आदर्शोंऔर विचारोंके अनुसार हो, इसके लिए यह आवश्यक है कि उसमें परिवर्तन करनेके लिये आवश्यक बन्धनोंके अतिरिक्त बन्धन न लगाये जायें ।

दूसरा प्रश्न है कि भारत संयुक्त राज्य हो अथवा संघ राज्य । भारतके इतिहासपर दृष्टि डालते हुए यह कहना अनुचित न होगा कि यदि इस देशमें एक राष्ट्र निर्माण करना है, यदि जातीय और प्रान्तीय भेदोंको मिटाना है और राष्ट्रीयताकी स्थापना करनी है,तो इस देशमें संयुक्त राज्यकी स्थापना करना चाहिये, संघ राज्यकी नहीं । डा० अम्बेडकर और उनकी कमेटीने भारतीय संघकी जगह भारतीय यूनियन नाम देना अधिक पसन्द किया है । यदि भारतीय नामको सार्थक करना है, तो संघ राज्यकी स्थापनाका विचार छोड़कर संयुक्त राज्य एक मंत्री (यूनिटरी) शासनकी स्थापना करनी चाहिय । इसमें प्रान्तों और जनपदोंकी विशेषताके खोनेका कोई डर नहीं है , पर देशमें एक सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक कानुन होनेसे भारतीयताकी भावना प्रबल होगी और एकताकी सत्ता दृढ़ होगी । अतः समके ब्रिटिश साम्रज्यवादोंकी चालोंमें आकर नरेशों और मुस्लिम लीग सदृश राष्ट्रीयता विरोधी साम्प्रदायिक संस्थाओंको प्रसन्न करनेके लिये १९२० में पहली बार भारतीय राजनीतिज्ञोंनें एक नयी शासनकी जगह फेडरल शासनको स्वीकार किया,पर जिन कारणो और जिन परिस्थितियोंके कारण फेडरल शासन और संघ राज्य स्वीकार किया था वे अब नहीं रहे । अब सब स्वीकार करते हैं कि केन्द्रीय सभा मजबूत होनी चाहिये ,उसका अधिकार अबांधित रहना चाहिए । इसको स्वीकार करते हुए संघ राज्य बनाना गलती होगी । १९३१में की इस गलती को सुधारनेका यह उत्तम अवसर है । संघ राज्यके स्थानपर संयुक्त राज्यकी स्थापना करके हम पुरानी भूलको सुधारनेका उद्योग करेंगे ?

**धवल या श्वेत कुष्ठ**—जिनको ऐसा विश्वास हो कि यह रोग चंगा नहीं होता, यदि मेरे पास आयें तो उनके एक छोटे दागको मैं चंगा कर दूंगा, कोई खर्च नहीं देना पड़ेगा । वातरक्त, एकजिमा, श्वेत कुष्ठ, पित्त और रक्तदोष जनित विविध चर्म रोगके दूर करने के लिए २० वर्षोंके अनुभवी **चर्मरोग चिकित्सक पण्डित एस० शर्मा** की व्यवस्था और औषधि ग्रहण करें। (समय ३-८) २६-८ हरीसन रोड, कल०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# काश्मीरका भविष्य

सन्तराम बी०ए०

२७ अक्टूबर १९४७ का दिन था और तीसरे पहरका समय। मैं होशियारपुरसे कोई ढाई मील परे पुरानी बसी नामक गांवमें बैठा था। अचानक आकाशमें वायुयान उड़ते देख पड़े। वे घूं-घुं करते हुए पूर्वकी ओरसे आ रहे थे और उत्तरको जा रहे थे। उनका यह सिलसिला दिनमें ही नहीं, रातभर लगा रहा। लोग हैरान थे कि क्या मामला है! २८ अक्टूबरको वायुयानोंका आवागमन फिर आरम्भ हो गया। आज वे जहां पूर्वसे उत्तर जाते थे वहां उत्तरसे पूर्व लौट भी रहे थे। दिन भर आकाश उनके शब्दसे शब्दायमान रहा। इससे जनताका आश्चर्य और भी बढ़ गया। रातको ९बजे जब रेडियो सुना तब पता लगा कि अफरीदी और दूसरे पाकिस्तानी मुसलमान शस्त्रास्त्रसे सुसज्जित हो, ट्रक भरे, मार-काट करते हुए काश्मीर राज्यमें घुस आये हैं; उन्होंने अनेक गांवोंपर ,अधिकार कर लिया है। यहांका बिजली घर नष्टकर डाला है। मुजफ्फराबाद शहर जला दिया गया है, हिन्दू-सिख सहस्रोंकी संख्यामें मारे गये हैं, और बहुतसी स्त्रियोंका अपहरण हुआ है। यह भी समाचार मिला कि काश्मीर नरेशने भारत-सरकारसे सहायता मांगते हुए इंडियन यूनियनमें सम्मिलित होनेका निश्चय किया है और भारत सरकारने वायुयानों द्वारा अपने सैनिक काश्मीर भेज दिये हैं। पर लार्ड माउण्टबैटन आदि अधिकारियोंने नियम यह रखा है कि उपद्रव शान्त हो जानेपर काश्मीर-वासियोंका मत लिया जायगा कि वे किस डोमिनियन में सम्मिलित होना चाहते हैं; पाकिस्तान में, या हिन्दमें। जिसके पक्षमें बहुमत होगा, काश्मीर उसीमें सम्मिलित होगा। इसी बीचमें एक अन्तरकालीन सरकार काश्मीरमें बनायी जायगी, जिसका प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला होगा। रेडियोके इस समाचार से वायुयानोंके आवागमनका रहस्य खुल गया। रेडियोने यह भी बता दिया कि काश्मीरकी राजधानी श्रीनगरसे ३५मील के अन्तरपर बारहमूलामें विद्रोहियों और हिन्द सेनाओंकी टक्कर हो रही है। विद्रोहियोंके साथ पाकिस्तानी सिपाही भी हैं और काश्मीरकी ९० प्रतिशत मुस्लिम प्रजा विद्रोहियोंकी अस्थायी सरकारके सैनिकोंका फल-फूलसे स्वागत कर रही है।

काश्मीर यद्यपि होशियारपुरसे दूर कोई पांच सौ मील है, पर इस समाचारसे सबके हृदय धड़कने लगे। सभीने समझ लिया कि काश्मीर गया। शेख अब्दुल्ला चाहे कितने ही शुद्ध हृदयवाले हों पर वे वह काम नहीं कर सकते जिसे स्वयं गांधीजी नहीं कर सके। जब भारतमें गांधीजी हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करनेमें सफल न हो सके, जिसका परिणाम पाकिस्तान हुआ, तो काश्मीरमें शेख अब्दुल्ला साम्प्रदायिक एकता कैसे संपन्न कर सकेंगे। याद रहे कि साम्प्रदायिक एकताके बिना राजनीतिक एकता असंभव है। संसारमें एक भी देश ऐसा न मिलेगा जहांके अधिकारी केवल जन्मके कारण एक-दूसरेसे खान-पान और ब्याह-शादी करनेमें इंकार करते हों और फिर भी वह देश स्वतंत्र और राजनीतिक रूपमें एक हो। भारतके नेता इस सृष्टि-नियमको बदल नहीं सकते। इस विषयमें प्रकृति भारतको अपवाद नहीं बना देगी। काश्मीरमें पहले तो बहुत से हिन्दू अभी भाग आये हैं। जो लोग रह गये हैं वे सदा ज्वालामुखी पर्वतपर बसनेवाली की भांति वहां रहेंगे। भारत संघमें मिल जाने पर भी काश्मीरके मुसलमान किसी समय भी उठकर हिन्दुओंका सफाया कर देंगे और शेख अब्दुल्लाकी आंखें बंद होते ही वे पाकिस्तानमें मिल जायेंगे। पहले तो मतदानमें भी वहां भारतका जीतना कोई निश्चित बात नहीं। यदि मान लिया जाय कि इस समय वह जीत जायगा तो भी हिन्दुओंके दृष्टिकोणसे वह समाप्त ही समझिये। हिन्दू वहां कभी बेखटके न रह सकेंगे। इतिहासकी यही शिक्षा है कि मुस्लिम काश्मीर बहुत दिन तक भारतका भाग न रह सकेगा। कांग्रेसने कितनी ही कुरबानियां क्यों न की हों, पर जिस नीतिपर वह अब चल रही है उससे देशके अकल्याण की ही आशंका है।

**सारे अनिष्टका कारण यह है कि हमारे नेतागणने भारतके रोगको समझनेकेऔर यत्न न हीं किया। वे अन्धाधुन्ध रूस और अमरिकाका अनुकरणकरना चाहते हैं जर्मन नाजियोंके सदृश कांग्रेसने सारे प्रेस पर अधिकार कर रखा हैं। इससे विपक्ष जनताके सामने ही नहीं आने पाता। परिणाम यह है कि भारत स्वतंत्रताकीदत्तले तक पहुंच कर फिर नीचे गिर पड़ता है। कांग्रेसकी आलोचना करना बड़ा भारी देश-द्रोह समझा जाता है। जिससे लोकतंत्रकी छीछालेदर हो रही है। समाजवाद के प्रवर्तक श्री कालेमार्क्सने ८ अगस्त १८५३ के न्यूयार्क डेलीट्रिब्यूनलमें भारतके संबंधमें जो कुछ लिखा था वह आज भी भारतीय प्रजाओंके मनन करने योग्य है। उन्होंने कहा था–**

**"यह कैसे हुआ कि भारतमें अंग्रेजोंका आधिपत्य स्थापित हो गया। मुगल सम्राटों की प्रधान सत्ताको मुगल राज प्रतिनिधियोंने भंग कर दिया। इन मुगल नबाबोंकी शक्ति मराठोंने तोड़ दी थी। मराठोंकी शक्तिको अफगानोंने तोड़ा। ये सब लोग जब आपसमें लड़भिड़ रहे थे, ब्रिटेन भीतर घुस आया और इनको दबानेमें सफल हो गया। यह देश न केवल हिन्दू और मुसलमानमें ही बंटा था, वरन् एक जाति दूसरी जातिसे एक वंश दूसरे वंशसे, एक विरादरी दूसरी बिरादरी से,, एक वर्ण दूसरे वर्णसे अलग बंटा पड़ा था ,यह एक समाज था जिसका ढांचा एक ऐसी साम्यावस्थापर आधारित थी जो उस समाजके सब सदस्योंमें एक दूसरेके प्रति घृणा, अप्रीति और वैधानिक पृथकतासे उत्पन्न हुई थी। ऐसे देश और ऐसे समाजके भाग्यमें क्या पहलेसे ही हार**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





खाना नहीं लिख दिया गया था ? यदि हमें भारतके प्राचीन इतिहासका न भी पता हो, तो क्या यहीं एक अकाट्य सत्य नहीं कि भारत आज इस समय भी भारतके खर्चसे रखी हुई भारतीय सेना द्वारा अंग-रेजोंकी दासतामें जकड़ा गया है । तब भारत पराजित होनेके दुर्भाग्यसे न बच सका और इसका सारा इतिहास, यदि कोई इतिहास है, उन क्रमिक हारोंका इतिहास है जो इसे खानी पड़ीं । भारतीय समाजका बिलकुल कोई इतिहास रूपमें कम कोई ज्ञात इतिहास, नहीं । जिसे हम भारतका इतिहास कहते हैं वह जिन बुलाये आनेवाले आक्रमणोंका इतिहास है जिन्होंने प्रतिरोध न करने और न बदलनेवाले हिन्दू समाजके आधारपर अपने साम्राज्य स्थापित किये । इसलिये प्रश्न यह नहीं कि अंगरेजोंको भारतको जीतने-का सा अधिकार था, वरन् यह कि भारतको तुर्क जीत लेते, ईरानी जीत लेते, या रूसी जीत लेते तब अच्छा था या अंगरेजोंका इसे जीतना अच्छा है ।"—हिन्दुस्तानपर लेख, पेज ६६–६७ .

अब देखना यह है कि हिन्दू समाज में पायी जाने वाली जिस जाट, सामाजिक पृथकता, जाति-भेद, ऊंच-नीचमूलक घृणाके कारण यह देश गत १३०० बर्षसे विदेशियों द्वारा पदाक्रान्त होता चला आ रहा है, क्या वह अब दूर हो गयी ? बिलकुल नहीं । जो काश्मीर आज पाकि-स्तानका कौर बनने जा रहा है, उसी काश्मीर के एक सौ मुसलमान राजपूतघरानोंने गत जलाईम वहांके हिन्दुओंसे प्रार्थना की थी कि हमे अपने समाजमें ले लो, पर अभि-मानी और स्वार्थी हिन्दू राजपूतोंने उनकी प्रार्थनाको ठुकरा दिया ।

इतना ही क्यों, सुना है, कथित आजाद काश्मीरके लुटेरोंका सरदार मुहम्मद इब्राहीम जिस चिब जातिमें हैं चिब जातिके कोई एक लाख मुसलमानोंने काश्मीर-नरेशसे उनके द्वारा हिन्दू बना लेनेके लिये प्रार्थना की थी । सुना है, काश्मीर-नरेश भी चाहते थे कि उनको हिन्दू बना लिया जाय ; पण्डित भी सहमत हो गये थे पर हिन्दू राजपूत नावमें पत्थर डाल दिये । उन्होंने चिब राजपूतोंको अपनेमें मिलानेसे साफ इन्कार कर दिया । वे समझते थे अब हम डोंगरे (हिन्दू राजपूत) ही काश्मीरके अधिपति बने हुए हैं, फिर हिन्दू बनकर ये चिब भी हमारे भागीदार बन जायेंगे । जब आप मुसलमानको न तो रोटी-बेटी व्यवहार द्वारा अपनेमें मिलानेको तैयार हैं और न उनको अपवित्र, ऊंच-नीच समझकर उनसे घृणा करना छोड़ते हैं, तो तंग आकर वे आपसे लड़ें न तो और क्या करें ? अछूत और शूद्र बनकर बहुत दिन तक कैसे रह सकते हैं ।

हैदराबाद आदि जितने मुस्लिम रज-वाड़े हैं वे अपने पांवोंको मजबूत बनाने के लिये सदा ही अपने यहां मुस्लिम प्रजाकी संख्या बढ़ानेका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपसे यत्न करते रहते हैं । इसके विपरीत हिन्दू रजवाड़े शूद्रों और अछूतों जैसे हिन्दुओंको कुचलकर अपनाक्षत्रित्व या ठाकुरपन दिखलाया करते हैं । मुसलमा-नोंको पचाना तो दूर एक हिन्दू जाति भेदके कारण दूसरे हिन्दुओंको भी समता और बन्धुताके सूत्रमें नहीं बांध सकता । इसलिये हिन्दूओंका घटना औरमुसल-मानोंका बढ़ते रहना अवश्यम्भावी है । खेद है कि हमारे राजनीतिक नेता जाति-भेदको मिटाकर सामजिक समता और स्वतंत्रताके आधारपर एक राष्ट्रकी सृष्टि किये बिना ही राजनीतिक एकताकी विफल चेष्टा कर रहे हैं । इसलिये इनके प्रयत्न देशके कल्याणका कारण न बनकर बहुधा अनिष्टका ही कारण बना करते हैं । एक ओर तो ये लोग सारे उपद्रवकी जड़ अंगरेजोंको बताते हुए नहीं थकते । दूसरी ओर अंगरेजोंका गवर्नर जनरल और सुप्रीम कमाण्डर बनानेमें भी इन्हें कोई संकोच नहीं । अंगरेज ही श्रेष्ठ क्यों न हों, पर जो ममता और हित श्री जिन्नाको पाकिस्तानसे है वह किसी अंगरेजको कभी भी भारतसे नहीं हो सकता ।

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage As. 12. Free to 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

T.B टी.बी. "तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जबरीका नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगीकी जान बचाने वाली शक्ति-शाली औषधि है । एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके । मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु०. । नमूना १० दिन २०) रु० । जबरी नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है । आज ही आर्डर देकर रोगीकी जान बचावें। तारका पता-Jabri-Jagadhari काफी है।

पता—रायसाहब, के०एल० शर्मा, रईस (६०) 'जगाधरी' (E.P.)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कहानी—

# दुश्मन——

श्री राम शर्मा 'राम'

देश स्वतन्त्र हो गया । किन्तु स्वतन्त्रताकी जिस प्रकार ज्योतिको जगमगाने के लिये आत्म बलिदानका पहिले ही ढेर लगा था,—हाय ! उसीसे माता स्वतन्त्रता का पेट नहीं भरा, उसके आते आते एक साथ ही हजारों प्राणियोंका वध हो गया ! समाज त्रस्त हो उठा ! आत्मीय छूट गये । सदियोंके सम्बन्ध टूट गये । अपने पराये बन गये । देशपर निराशा और वंधव्यके बादल छा गये ।

कमरेमें आते ही , सतीशने अपनी पत्नीकी ओर देखा और मांकी ओर । वह तभी विद्वेष और ईर्षा भरी वाणीमें बोला——रोम गल रहा था और नीरो बंशी बजा रहा था...देशका बच्चा-बच्चा गाजर मूलीकी तरह कट रहा है और यहींपर इसी शहरमें राजधानी और स्वतन्त्रताके नामपर प्रदर्शन हो रहा है...संसारको बताया जा रहा है कि आज भारत स्वतन्त्र हो गया । कहते हुए वह जोरसे हंसा और ठहाका मार कर , इस तरह अपने आपमें डूब गया कि जैसे समुद्रके गहरे पानीसे ऊपर आ मगर-मच्छने अपना विशाल मुंह खोला, और फिर गोता खाकर अन्दर चला गया ।

लेकिन पत्नी और मांने जब उसकी बात सुनी, तो मांने उसकी ओर अचरज और जिज्ञासाके साथ देखते हुए कहा——तो सतीश बेटा——'

घूरते ही सतीशने कहा——'यह देश मर जायगा, मां! जीवित नहीं रहेगा ।'

मांने शास्वत और धीर भाव लेकर कहा— जो भाग्यमें लिखा है, वही होगा । ईश्वरको यह भी करना था !

बात सुन कर, सतीश मांके सामने ही कुर्सीपर बैठ गया । उसने अपने पत्नी नर्वदाको भी लक्ष किया । तदनन्तर बोला—यह कहना तो आसान है, मां ! परन्तु जिसपर बीतता है, वह जानता है, वह——सतीशने फिर नर्वदाकी ओर देखकर कहा——मेरे मस्तिष्कमें इस समय जो आंधी उठ रही है, उसीने मुझे परेशान कर दिया है ।' वह बोला——लाहौरसे आया हुआ मुझे अभी अभी एक मित्र मिला । रास्तेमें मिल ही गया, बेचारा ! आह ! जिसके घरमें लाखों रुपया था, नौकर थे, ऐशो आरामकी जिन्दगी थी, सुन्दर, सुकोमल पत्नी, वह सभीसे विछुड़ गया । उसने अपने पत्नी और बच्चेको अपने हाथों से ही काट दिया । उसने——'

नर्वदाने एकाएक कहा——उफ !,

सतीश बोला——मिलते ही रो पड़ा । छातीसे चिपट गया ।

आतुर भावमें मांने कहां-कहां है, कहां——

सतीश बोला——'शरणार्थी कैम्पमें ।' उसने कहा——पहचाना भी नहीं गया । रास्तेमें सामने टकरा गया । छूटते ही बोल दिया, मैंने चौंक कर कहा——'कौन रमेश ! उसने उत्तर नहीं दिया । उसकी आंखोंने रो दिया ।

मांने कहा——हे राम !

सतीश बोला——और देशका जो सरसब्ज भाग उजड़ गया, वहांका एक बड़ा समुदाय भिखारी बन गया, अपने घरोंसे छूट गया, तो अब यह हाल है इस नगरका मकान नहीं देता.....उन विपत्तिके मारोंको धीरज.....

उसी समय , नर्वदाने सांस भरी और छोड़ दी ।

मांने कहा— 'यह अन्याय है ।

सतीश बोला—'न, मां ! हिन्दू समाजका यही पाप है । यह हजारों वर्षोंसे चला आता है.....आज घड़ा भर गया औ फूट गया । '

नर्वदाने कहा—'यह पाप मूसलमानोंने किया ,उन्होंने ही बलात्कार और लूट-मार——'

ओह, तुम बहुत अंतकी बात लेती हो, नर्वदा ! न, न, यह आजकी बात नहीं— अभीकी नहीं ।— सतीश बोला—इस हिन्दू जातिका इतिहास देखो । तुम समझो कि पापका सृजन ही हमने किया .... हमारे पैसेने ! '

उसने कहा—हिन्दू जातिने पैसा क्या पाया , मनुष्यताको खो दिया । अकर्मण्यता और स्वार्थपरताका भी जीवन पा लिया, इस हिन्दू गातिने !

माने कहा—'पैसा बुरा नहीं ।आदमीत बनाता है , आगे बढ़नेकी गति देता है ।

सुनकर, सतीश क्षणभर मौन रहा । बोला—एक दिन वही समझा गया था मा! पर यह नहीं हुआ । इस देशपर बाहर से प्रहार हुए । वे शत्रुविजयी हुए और यहांके स्वामी बन गये । भला क्यों ! क्या शासन करनेके लिये ? न, मा ! वे यहांका धन चाहते थे । वे अपना धर्म और मजहब भी बढ़ाना चाहते थे । उन्होंने जितने युद्ध किये , धर्मका झंडा आगे रखा और पीछे नंगी तलवार .....उन्होंने इसी प्रकार संसारका एक बड़ा भाग जीत लिया । हिन्दू धर्म भी जित लिया ।

माने कहा—'धर्म नहीं , व्यक्ति जीत लिया ।'

दोनोंका एक अर्थ है मा ! —सतीश बोला —व्यक्तिसे धर्म है ।'

माने कहा—'यह भी अन्याय था ।। हिन्दू समाजने कहीं हमला नहीं किया यह उदार कहा । जीओ और जीनेकी दो की परम्परा मानता था । '

माकी बात सुनकर , सतीश फिर झल्ला उठा— भोली मा ! इस आदर्शने ही हिन्दू समाजकका पतन किया । '— वह बोला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जिस 'स्वातः सुखाय, बहुजन हिताय' के अमर उपदेशसे सम्राट् अशोक प्रभावित हुआ । और बौद्ध धर्मका अनुयायी हुआ, उसी सम्राट् अशोकके कालमें साम्राज्यका अंग कटने लगा । घरमें विद्रोहका बीज फूट निकला । जो समाज तलवारके भयसे भीत था, वह 'अहिंसा परमो धर्मः केउस अमर उपदेशों से न तो प्रभावित हुआ, न जागरूक ! वह काहिल, अकर्मण्य और ईर्षालु बन गया । '

चंचल बनकर, उसी समय, नर्वदा ने कहा–'तो हो क्या.....क्या !'

'अब क्या होगा ! हिन्दू समाज मरेगा। इसकी संस्कृतिका, इसके धर्मका लोप हो जायगा ।'

सुनते ही, तपाकसे नर्वदाने फिर कहा– 'यह नहीं होगा'– नहीं ।

सुनकर, सतीश फिर ज़ोरसे हंस दिया।

उस हंसीको देख, स्वयं माने जैसे क्षुब्ध बनकर कहा –'हां, रे ! तू हंसता है ! बहू ठीक कहती है, हिन्दू समाज नहीं, सकेगा ।'

तब नर्वदाने माकी ओर लक्ष्य करके कहा –'न, अम्मी ! बात इतनी नहीं ! इसमें रहस्य है । कुछ भारीपन भी है। वह बोली–'पिताजी करहते थे, यदि हिन्दू समाज मर गय, तो विश्वसे एक सुंदर और अभूतपूर्व संस्कृतिका लोप हो जायगा। विश्वमें संकटके जिस प्रकार बादल उठे हैं उनसे विश्व त्रस्त ही होगा, शान्त नहीं! वह कहने लगी–'हमको जीवनमें जितनी सामग्री चाहिये, उनमें रुपया और विश्वका वैभव ही तो प्रमख नहीं, हमको आत्माकी खुराक भी चाहिए। नैतिक बल। और यह हिन्दू संस्कृति देती है। यही तो विश्वकी ओर मुंह करके कहती है,– ये सभी बच्चें हैं,– मेरे ही प्राण !'

सतीशने नर्वदाकी उस भावनामयी आकृतिको देख, तनिक विचलन भरी भावनाके साथ उसे देखा और तब कहा– नर्वदा देवी, इतनी बातसे कोई इन्कार नहीं करेगा। परन्तु, प्रश्न तो यह है, ऐसी संस्कृति से हमें मिले क्या ! विश्वकी भले ही कुछ दिया हो, परन्तु भारत तो सदियोंसे गुलाम बना रहा ।'

उसी समय, नर्वदाने लाल बनकर कहा– आप भलते ह, हमा ी संस्कृतिक ही प्र भाव है कि हजारों ज्वारांभाटेआनेपर भी संस्कृति अमर नहीं....विश्व कहता तो है, इस भूतलपर जाने कितने धर्म बर्ण और किकतनी जातियां, पर उनमें जो अधिकांश चले गयें और मिट गये ।'

मांने सतीशकी ओर देखकर कहा– और तू इतना भी नहीं मानता ? इतना–'

सतीश बोला–'शायद !'

मांने कहा–'शायद नहीं ! ठीक !

सुनकर, सतीश हंस दिया ।

मांने कहा– यह हंसीका विषय नहीं, चिन्ताका है । खेदपूर्ण !

इतनी बातपर, सतीश फिर अपनी बातपर आ गया और वाणीमें रोष भर कर बोला– जो प्रस्तुत विषय है वह यह नहीं। वह और ह । आज धनिक-निर्धनका तो युद्ध छिड़ा ही हैं। पर हिन्दू समाजमें जो गतिहीनता है, छूत–अछूतपन है, वह पाप आज हमारे सिरपर चढ़कर बोला है । मुसलमानोंका सृजन इसी पापके द्वारा हुआ है, मां !'

मां बोली–'यह मानती हूं ।'

'और तुम यह नहीं मानती कि इस खुदगर्जी और स्वर्थपरताने ही, हिन्तू समाजको एक नहीं बनने दिया ..... पास-पास नहीं आने दिया । '

मांने सांसभर कर कहा–'यह तो ठीक ही है, बेटा !'

सतीशनें कहा–विदेशी राज्यमें देश एक था । पर आज तो जिसे देखो, वही आगे बढ़ने और दूसरेको ठग लेनेकी इच्छा में डूब रहा है। स्वार्थ और दम्भ फैल रहा है .... पैसेके लिये, व्यक्ति ही व्यक्तिका गला काट रहा है । '

मांने इस बातको सुनकर भी सांस भरा और छोड़ दिया । उसने अपनी उन रूखी आंखोंको बाहर आसमानकी ओर भी उठा दिया ।

सतीशने नर्वदाकी ओर देखकर कहा–'जिस अमानुषिक अत्याचारका सामना करनेके लिये और शोषणको को रोकनेके लिए बलिदानों और त्यागकी भावनाओंका प्रदर्शन किया गया। मैं देखता हूं, मानो आज उसका अस्तित्व ही मिट गया। पूंजीवाद आगे बढ़ गया। सामाजिकताका पतन !'

लेकिन उस समय, नर्वदाके मनमें कुछ और था । वह सोच रही थी, देशके जिस भागपर अत्याचार हुआ, व्यक्ति भेड़ बकरियोंकी तरह काटा गया, सदियों के उसे उस घरसे भगाया गया, वही समाज –वही त्रस्त व्यक्ति, आज भी अपना स्वार्थ नहीं छोड़ सका । वह मनमें कह रही थी– पड़ोसमें जो शरणार्थी आकर बसे हैं, मकान उनके पास पड़ा है । जब इसके शरणार्थी उनके पास आये, तो भगाने और मारनेके लिये इन व्यक्तियोंने अपनी तलवारोंको निकाल लिया .....शरणार्थी शरणार्थी को लूटा, मारा, इन वक्तव्योंका भी इतिहास बन गया ! वह अपने आप बोली– 'ऐसा है यह हिन्दू समाज .....यह क्रूर व्यक्ति! इतना हीन ! इतना निष्कपट ! आह !' उसी समय उसने मानों खिजकर, आतुर भावमें सतीशकी ओर देखकर कहा– 'सदियोंकी दासताने ही समाजको दीन बनाया है, याचक और आत्महीन !' वह बोली–'गन्दे पानीका पतलानाला जहांसे गिरा है' हमे अब उसी ओर देखना है। समाजके उस परम और स्वार्थकी ओर !'

इतनी देरमें सतीशने अखबार उठा लिया था और उसका एक समाचार पढ़ने लगा था । नर्वदाकी बात सुनी, तो उसने अखबारसे आंखें उठाकर देखते हुए कहा 'यह एक समस्या है, जिसका मिटना आसान नहीं दीखता ।'

नर्वदाने तेज स्वरमें कहा–'समाजको जीवित रहना है, तो इस समस्याका नाश करना पड़ेगा। ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'स्वार्थका खन होगा, तो व्यक्ति जी उठेगा। पैसेका व्यापार मिट गया, तो व्यक्ति फिर व्यक्तिके पास आ जायगा। भाई बन जायगा। बात काटकर सतीशने फिर अखबारपर आंखोंको टिका दिया। उस समय, मांके मनमे एक और बात थी। वह उसीको लेकर बोली –'हां, रे सतीश ! 'तो जैसे वह लाहौरवाला दोस्त मिला, तो सच, उसने अपने बच्चे और स्त्रीको अपने ही हाथों मार दिया। ओह !

सतीशनें अखबार रख दिया और कहा 'उसे यही करना था, मा ! सच, यही ! वह बोला–यदि इतना न करता, तो उसकी पत्नीको भ्रष्ट किया जाता, बच्चेको मारा जाता अथवा मुसलमान बनाया जाता.....

मांने कहा–'उसे यहां क्यों न लाया। हमारा मकान पड़ा है, यहां आकर ठहर जाता ?

सतीशने बताया–'मैंने कहा था ! पर उसने स्वीकार नहीं किया अब कौन है उनके साथ ?' मांने पूछा।

अब कोई नहीं। पर अकेला है। दूरके रिश्तेकी एक मौसी है, उसीको साथ लेकर यहां आया है। कहता था, कलसे एक तांगेपर कोचवानीका काम करूंगा।

शाबाश ! मां बोली– उसे जीवित रहनेका अधिकार है। वही हिन्दू है।'

सुनकर सतीश हंस दिया – इसलिये कि उसने अपने स्त्री बच्चोंको मार दिया। उसने भी अपने हाथोंसे अनेक परिवारोंको साफ कर दिया।

मांन तेज उनकर कहा– 'हां, नहीं तो ! उसे यही करना था। उसका यही आदर्श था, यही कर्म !'

तो इतना काम क्या चितौड़के किलेमें नहीं हुआ...?.पद्मिनिके साथ क्या हजारों राजपूतिनियोंने अपना गौरव प्रदर्शन करके अपनी शिराओंको प्रज्वलित ही किया ?'–सतीश बोला–मां, पर हुआ क्या ! जाति तो गुलाम बनी ! जिस जातिमे तलवारके धनी थे, वे गुलाम बने, यह आश्चर्यका विषय नहीं क्या ? हमारे इतिहासकी यहीं कालिमा है,–यही आगे !

मां बोली–'तो क्या.....क्या.....?

वे मस्तिष्कहीन थे ? राजनीतिसे दूर ? जागरुक और नव-चेष्टा नहीं कहे जा सकते, वे पागल भैंसेके सदृश .....'

माने झल्लाकर कहा–'अरे, चुप ! चुप !

सतीशने अपने दांत निकाल कर कहा यह तो इतिहास कहता है, मां ! हिन्दू स्वयं ही मुसलमान बने, यह भी इतिहास बताता है।'

नर्वदाने व्यंग करते हुए कहा–'ये कम्युनिस्ट..... ये समाजवादी.....?

सतीश बोला–'यह तो सत्य है। यह विषय अमिट और अजेय !'

नर्वदाने हंसकर कहा–हां, हां, मैं भी तो कहती हूं, आप कम्यूनिस्ट हैं। प्रतिक्रियाकी भावना आपमें भी है।'

इतना सुनकर सतीश तिलमिला उठा। उसने चाहा कि कुछ कहें, परन्तु बात बड़ी थी, इसलियें वह कमरेसे उठकर चला गया।

एक दिन जब सतीश घर आया, तो एकान्तमें, नर्वदाने सामने जाकर, अचरज और ईर्षा भरे शब्दोंमे कहा–' यह ठीक है कि तुमने बीस हजारकी पगड़ी लेकर वह बड़े बाजारवाला मकान किसी शरणार्थीको दे दिया ?'

सतीशने कहा–'हां, यह ठीक है।

नर्वदाने कहा–'ओह' !

सतीशने नर्वदाके मनका भाव पढ़ा और समझा कि इसे इतना सुनना पसन्द नहीं आया। इसीलिये, उसने अतिशय दीन और याचक भावमें अपने सूखे दांत निकालते हुए कहा–'यह रुपयेका प्रश्न है। नर्वदा, भूला नहीं जाता .....भुलाया भी नहीं जाता।'

नर्वदाने चाहा कि कहें, फिर यह ढोंग क्यों?....समाजके साथ यह छल ! पर उसने नहीं कहा, नहीं ! उसी समय, वह तेजी के साथ कमरेसे निकली और दूसरी ओर चली गयी। काश वह सुन पाती और दिखा पाती कि उसकी छातीकी धड़कन बेतहाशा द्रुत बेगसे बढ़ गयी थी। अजीब उन क्षणोंमें वह अशान्त थी और उद्वेगसे पूर्ण !

MONSOON
SETS IN
Anophelis breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मलेरिया बुखारके लिये रामवाण है अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियास कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
Kasaya

KAVIRAJ N.N.SEN & CO. LD.
CALCUTTA

होमियोपैथिक दवाइयां प्रति ड्राम ≈), ≈)॥ आना है।
हरएक बीमारियोंकी दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी
९८ नम्बर क्लाइव स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





# असम के मारवाड़ी समाज में

( ले० श्री चैतन्यप्रकाश रंगा )

सदियामें जालानजीको बड़ा जोश आ गया था और उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें कह डाला था कि यदि पुरुषसमाज स्त्रियों पर इस तरहका अत्याचार करेगा तो हम उसे एक दिनके लिये भी बर्दास्त नहीं कर सकते । जालानजीके इस भाषणका सब जगहोंके भाषणसे अधिक प्रभाव पड़ा, और सदियामें ही जब यह निश्चय कर लिया गया कि वह भी आगामी १५ तारीख को मातृ मुक्ति दिवसके पहले ही स्त्रियोंका पर्दा हटा देगा तो दूसरी जगहोंका तो कहना ही क्या ?

सदियासे हमलोगोंका आगे मनीपुर जानेका कार्यक्रम निश्चित हो चुका था और उसके लिये यही तय हुआ कि हमें तिनसुकिया, डिब्रुगढ़ और शिसागर होते हुए अब शीघ्र ही मनीपुर पहुंचना जाना चाहिये । हमलोग दोपहरको तिनसुकिया जा पहुंचे । तिनसुकियामें कुछ ही देर ठहर सके क्योंकि हमें मालूम हो गया था कि डिब्रुगढ़वालोंने आज भी कुछ कार्यक्रम तय कर रखा है' जब हम डिब्रुगढ़ पहुंचे तो वहां पहुंचते ही हमें युवकोंकी चहल पहलका पता लग गया । हमने देखा कि सारे ही युवक कार्यकर्त्ता बड़ी दौड़ धूप कर रहे हैं । कुछ मित्रोंसे मुझे मालूम पड़ा गया कि आज अधिकसे अधिक युवकोंसे पर्दा विरोधकी प्रतिज्ञायें करायी जायगी और साथ ही आज आगेके लिये निश्चित कार्यक्रम भी तय किया जायगा । प्रायः ५॥ बजे होंगे । एक एक करके युवक आने लगे और देखते ही देखते भाई सहारियाजी की कोठीका हाल युवकोंसे ठसा-ठस भर गया और वहांके प्रायः समस्त युवक कार्यकर्त्ता उपस्थित हो गये । भाई सहदेव देवडाने सभी युवकोंका जालानजीको परिचय कराया और आजकी सभाके बुलानेका कारण सबोंके सामने रखा । भाई देवडाजीने कहा कि यह तो हमलोग तय कर ही चुके हैं कि १५ अगस्तको मातृ मुक्ति दिवस मनानेके पहले पहल हमें समाजसे पर्देको विदा कर देना है किन्तु यह काम तो तभी सम्भव हो सकेगा जब कि हम क्रियात्मक रूपसे इसमें लगें ।

जालानजी और रंगाजीके भाषणके बाद सहदेवजीने अपील की और आपकी अपीलपर वहां उपस्थित सभी युवकोंने अपनी स्त्रियोंके पर्देको हटानेकी प्रतिज्ञा की और भविष्यमें इस कार्यको अधिक गतिसे तेज करनेके लिये वहांके कार्यकर्त्ताओंका एक संगठन किया गया, डिब्रुगढ़के युवकोंका उत्साह देखते ही बनता था उनमें जीवन था समाज सेवाके लिये भारी उत्साह

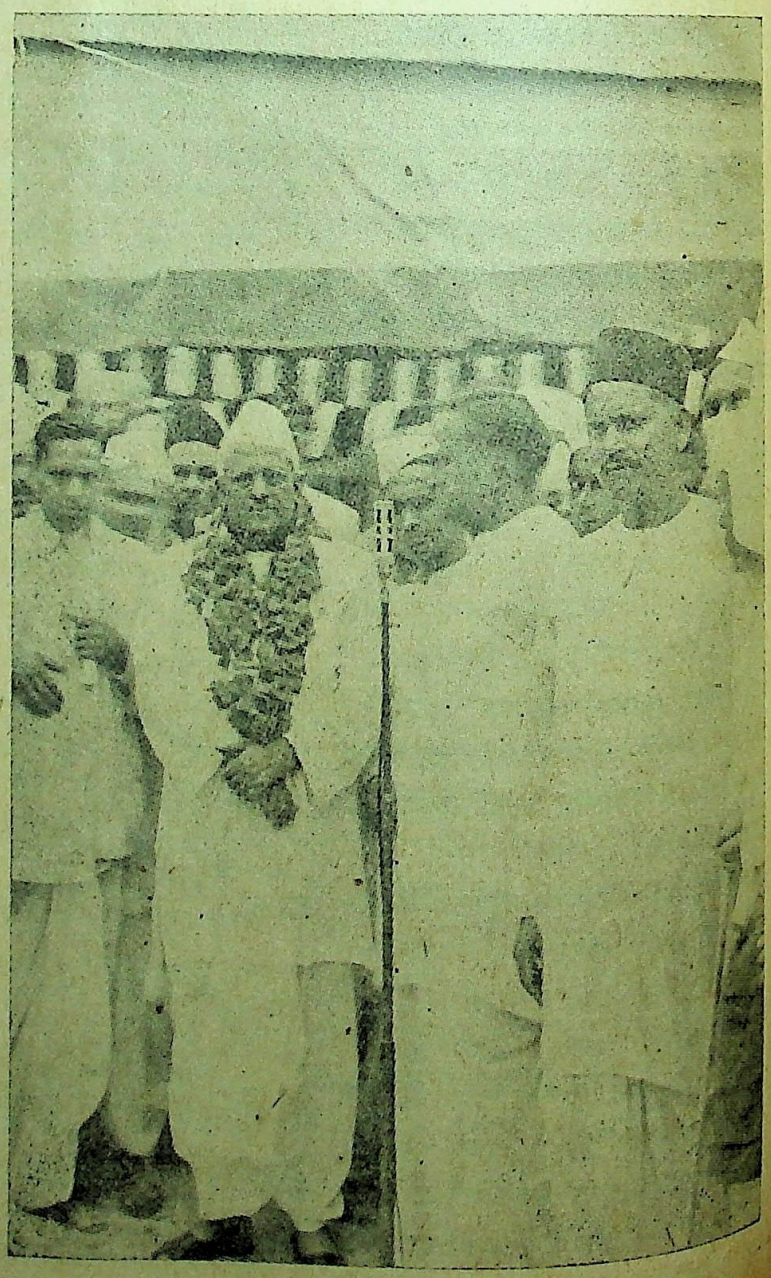

सम्मेलन के पदाधिकारियों के बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



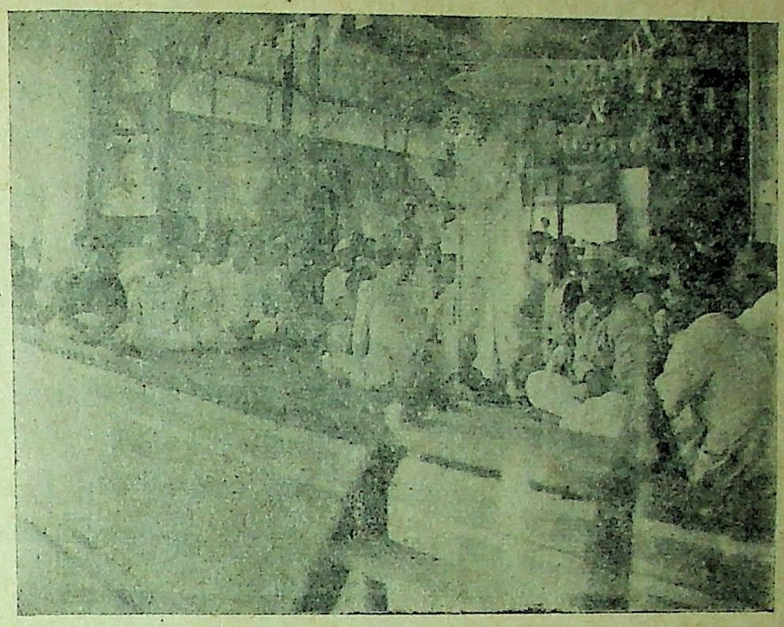

नागरिकोंकी ओरसे अभिनन्दन

उन्हें देखकर यह विश्वास हो रहा था कि अब आसाममें पर्दा नहीं रहनेका । मनीपुरके लिये रास्तेमें डीमापुरमें भी समाज द्वारा आयोजित सभामें जालानजीने एक भाषण किया, अभीतक जहां समाजके सामने केवल समाजिक प्रश्न ही मुख्य था यहांसे कुछ परिस्थितिमें परिवर्तन आरम्भ हो गया' पिछले महायुद्धके बादसे कोहिमा हो गया, पिछले महायुद्धके बादसे कोहिमा और मनीपुरसे मारवाड़ियोंकी जगह सब जब्त करली गयी और तत्कालीन अंग्रेज पोलिटिकल अफसरके कारण कई तरहके अडचने समाजके सामने हो गयी थी जिनके कुछ परिस्थितियोंका हल तो राष्ट्रीय सरकारके होनेसे हो गया था किन्तुफि भी कई संगीन परिस्थितियों समाजकोर घेरे हुए अब भी है । जैनियोंका मन्दिर जैसा पवित्र स्थान आज विधर्मियोंके हाथों में है और जहां मनमाने ढंगसे धर्म विरुद्ध कार्यवाहियां हो रही हैं । यहांके मारवाड़ियों की विषम परिस्थितियां समाजके लिये चिन्ताका विषय है । जालानजीने सारे कागज पत्र देखे और भाई केदारजी शर्मा एम० एल० ए० आसामको साथ लेकर इस कार्यके लिये वे अग्रसर हुए । कोहिमामें वहां अधिकारीको तार दिया गया और मनीपुरमें पोलिटिकल ऐजेण्ट और प्रधान मन्त्रीको भी सूचना भेजी गयी । यों तो जालानजीकी यात्राका समाचार पाकर सब ओरसे पूरी व्यवस्था कर दी गयी थी और मनीपुर सरकार और भारतीय सरकारके ऐजेण्टने खास व्यवस्था रखी थी फिर भी मारवाड़ी समाजने भी अपनी ओरसे इनके लिये पूरी चेष्टा की और भाई नथमलजी बाकलीवाल नहीं होते तो शायद हमें वहांके समाजकी उदासीनता का ही चित्र देखनेको मिलता । यहांकी समाजकी परिस्थिति अधिक शोचनीय है जिनका कुछ दोष हमारे समाजकी अव्यवस्थापर भी है, जिसका हमें वहांके प्रत्येक कार्यमें परिचय मिलता था । जब हम मोटरमें बैठकर आगेकी ओर बढ़े तो सब चीजोंको भूल गये और अब प्राकृतिक सौन्दर्य ने सबोंको अपनी ओर आकर्षित कर लिया ।

मनीपुरके बारेमें तरह-तरहकी बातें सुन रखी थीं और एक अजीब चित्र आंखों के सामने आ रहा था कि न जाने मनीपुर क्या होगा । रातको पहुंचे' तो रास्तेमें रोक लिये गये सोचा शायद व्यँह होता होगा जो कि वहां प्रचलित एक विवाह की स्वयंवरकी परिपाटी है किन्तु दृश्य दूसरा ही नजर आया गाड़ी रुकी कि जालानजीकी जै, सम्मेलन जिन्दाबादके नारे लगने लगे, आश्चर्य हुआ कि पहाड़ों के रास्तेमें रातकी वक्त भी लोग यहां स्वागतके लिये तैयार हैं । खैर चाय पानी की व्यवस्थाको स्वीकार करके आने बढ़े मंजिल मिली रातको आराम किया और सबेरे हीसे फिर वही सभा और वही व्याख्यानोंका काम ।

यहांके समाजके बारेमें इतना ही यथेष्ट है कि अभी तक आसाममें कई वर्षों तक काम करनेके बाद वहां साहसकी बात होगी वहां ओसवाल भाइयोंका ज्यादा प्रभाव है और उदासीनताका भी यही कारण है उन्हें आपसमें जिमनवारोंकी लड़ाईसे ही फुरसत नहीं है तो समाजकी बात कौन सोचे और करे, जहां तक उनकेस्वार्थोंकी बातेंहैं उन्होंने जालानजीको बड़ा उत्साह दिखायो और जहां समाज सेवाकी बात आयी सभी टाल मटोल करने लगे । वहां की परस्थिति देखकर यही मालूम हुआ कि अपना समाज कहां है और उनमें काम करनेके लिये सम्मेलनकी कितनी आवश्यकता है ।

तीन दिनोंकी मधुर यात्राके बाद मनीपुर से लौट आये और शिलांगको प्रस्थान किया गया । शिलांगका पिछला अनुभव सुन रखा था कि वहां जब कभी समाजकी विराट सभा होती है तो तीन सज्जनों की उपस्थिति होती है एक तो डाकोत जो कि सभाका बुलावा देता है और दूसरा. पण्डित महाराज जिसके मन्दिरमें सभा होती है और तीसरेमें बेचारे वहांके मन्त्री । इसलिये हम तो निश्चित थे इसलिये वहांके कार्यकर्त्ताओंकी जब चेष्टा देखी तब भी हमने कह दिया कि यदि यहां चार व्यक्ति भी आ जायं तो हम बड़ा सौभाग्य मानेंगे किन्तु इस बार इन लोगोंने शिलांगको जन्मपत्रीमें ठोकर लगा दी एक तो सार्वजनिक सभा जिसमें माननीय निकोलसराय सभापति थे और काफी लोग सभामें आये थे दूसरी सभा रात्रिको पुस्तकालयमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समाजकी हुई । जिसमें भी समाजके बहुतसे लोग आये थे यद्यपि पहलेसे यहां बड़ी शानदार रही । किन्तु शिलांग को देखते हुए तो यही लगता था कि यह की जनतामें अभी जीवन आनेमें देर है ।

शिलांगसे गौहाटी आये, अभी तक श्री केदारजी हमारे साथ थे इसलिये यहां चेष्टा नहीं कर पाये थे । इसलिये जैसी आशा थी वही हुआ जिस तरह पिछली बार शिलांगने अपनी छाप लगायी थी इसबार गौहाटीने बाजी मार ली । गौहाटी जैसे बड़े शहरमें जहां अधिकसे अधिक मारवाड़ी रहते हैं वहांकी उदासीनता तो बड़ी हीदुःख देने वाली हुई धानुका शंकरलालजी व अन्य युवक तो क्रियाशील देखनेको मिले बाकी तो सारेके सारे इस तरह लगे कि वहां कुछ हो ही नहीं रहा है । यदि गौहाटीवालोंकी स्थितिपर विचार किया जाय तो यही कहना होगा कि हमारे समाजकी यदि इतनी अच्छी स्थिति रह सकी है तो भगवान्‌की कोई विशेष कृपासे ही, नहीं तो समाजके कारनामोंसे तो आज तक हमारा और भी अधिक पतन होना आवश्यक था । वहां मन्दिरमें आयोजन किया किया गया था बहुत देर तक कीर्तन करते रहे शायद भगवान् राजी होकर गौहाटीके बंधुओंको सुबुद्धि दे, किन्तु बेचारे भगवान् को भी सफलता नहीं मिली और कीर्तन के बाद कुछ भक्त लोगोंके ही बीचमें सभा आरम्भ हुई । कुछ युवकोंको बड़ा जोश था और दुःख भी था कइयोंने बड़ी-बड़ी आलोचनायें समाजकी और कइयोंने यहां जोरदार काम करनेकी अपील की ।

जालानजी बोले कि मुझे यहांकी स्थितिसे तनिक भी रंज व दुःख नहीं होता है क्योंकि हमें तो काम करना है किन्तु ऐसी जगहोंपर तो हमें अधिक काम करना चाहिये किन्तु यह इस बातका भी प्रमाण है कि हमारे यहांके समाजमें जीवनका अभाव है यदि कुछ भी प्राण रहें तो मात्रा आदिसे इलाज हो सकता है । किन्तु जहां बिलकुल ही हालत नाजुक हो वहां कुछ बस नहीं चलता । अतः हमें तो यहां देखना है कि भाषण आदिका भी कुछ असर यहां होता है कि नहीं यदि नहीं वह भी बेकार जाय तो फिर अपनी शक्तियोंका खर्च नहीं करना चाहिये । इस वक्त सामने अपर आसाम का १५ तारीखका कार्यक्रम है देखना है कि उसका संग्रह यहां क्या और कैसा असर पड़ता है यदि कुछ गुंजाईश मालूम पड़ी तो आगे भी इलाजकी सम्भावना रहेगी नहीं तो गीता पाठ और कीर्तन ही यहांके लिये श्रेष्ठ है । आपने कहा कि मुझे तो यह आशा बिलकुल ही नहीं थी कि कहीं यह भी हालत है, जब मैं आसाम आया तो सर्वप्रथम मुझे गोहाटी ही देखनेको मिली । मैंने यहांकी भीड़ और व्यवस्थाको देखकर प्रसन्नता जाहिर की थी किन्तु मालूम पड़ा कि वह तो बाहर वाले सज्जनों की करामात थी या यहांके कतियप बन्धु उसमें शामिल थे, समाजकी यह दशा हमें आज बतलाती है कि हम कहां हैं, हम तरह-तरहकी शिकायतें करते हैं किन्तु मैं कहता हूं कि हमें शिकायतें करनेका अधिकार ही क्या है जब दिन रात हम अपने स्वार्थ साधनमें ही लगे रहते हैं तो स्वार्थों पर आघात पहुंचते वक्त भी हमें धैर्य और उदासीनता ही रखनी चाहिये । गोहाटीकी दशासे सारे समाजको अपनी आंखें खोलने की शिक्षा मिलती है । समाजको अच्छी तरह आंख खोलकर देख लेना चाहिये कि उसकी दुर्दशा होती है तो क्यों न हो । मैं अपने कामके लिये नहीं आया हूं मुझे भी अपना काम है, गृहस्थी है आपकी तरह मैं भी सुखी होना चाहता हूं किन्तु फिर भी समाजका दुःख दर्द खींच लाता है और जब आपके लिये आपके पास आते हैं और तब भी आपको फुर्सत नहीं तो अब तो आपका राम ही मालिक है । सच है जो लोग समाजकी बदनामी करते हैं वे ऐसी जगहके लोगोंके कारण ही करते हैं यदि कोई सारे आसामके समाजकी हालत नहीं देखकर गोहाटीकी हालत ही देखकर लौट जाय तो वह फिर आसामके भाइयों के लिये कोई चेष्टाका ही साहस नहीं करेगा, और यदि हम आसामकी सारी बातें कहकर फिर किसीको गोहाटी दिखलायें तो हमें झूठा बनना पड़ेगा यह अच्छा ही रहा कि मुझे अन्तमें यहां लाया गया नहीं तो शायद मेरा उत्साह भी कुछ कम हो जाता और मैं जो काम कर पाया हूं वह शायद नहीं होता किन्तु अब तो यह जोरदार शब्दोंमें कहता हूं कि गोहाटीके बन्धु आंखें खोल कर देख लें कान खोलकर सुन लें हम उनको ऐसे नहीं रहने देंगे इससे

आसाम के दौरे में कार्यकर्ताओं के बीच मुरारकाजी और जालानजी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समाजका अहित होता है और इसे हम बर्दास्त नहीं कर सकेंगे। हमें अन्य जगहों के भाइयोंसे भी आसाममें यही कह देना है कि उन्हें अपना ध्यान इस ओर लगा देना चाहिये और अगस्तके पहले पहल ऐसी स्थिति यहां कर देनी चाहिये कि फिर यहां भी काम किया जा सके। मान पत्रके जवाबमें धन्यवाद देकर यहांकी कार्यवाही शेष की गयी और हमलोग घरोंकी ओर चल पड़े कि रास्तेमें फिर एक घटना घट गयी और जालानजीको इस बार बड़ा क्रोध आ गया। मैंने पहली बार इनका यह रूप देखा, बात यह थी कि एक बड़े धनीके लड़केकी शादी थी जिसमें बनौली निकली थी बड़ी सजावटसे और तड़क-फड़क तो थी ही किन्तु इसके अलावे वहांपर एक बड़ी सजी हुई लारीमें एक लड़केको मारवाड़ी स्त्रीका स्वांग बनाकर घाघरा वगैरहकी पोशाकमें नचाया गया था। वह नाचता जाता था और जुलूस आगे बढ़ता जाता था, जालानजीने उसे देखते ही कहा। :–यह क्या है, क्या यहां समाजमें पुरुष नहीं हैं और हैं तो मालूम पड़ता है उनमें जीवन नहीं है हमारी इस हरकतसे हमारे समाजपर क्या असर पड़ता है क्या इसे कोई नहीं समझता और यदि लोग समझते हैं तो फिर ऐसी हरकतें समाजमें चालू होने दी जाती है। जिस चीजका का असर समाज पर बुरा पड़ता हो उसे हमें तत्काल रोक देना चाहिये इसके लिये चाहे जैसे विद्रोहकी हमें आवश्यकता क्यों न पड़े हमें बिना हिचकिचाहट उसमें शामिल हो जाना चाहिये। मैं यहांके पुरुषोंसे कहता हूं कि उन्हें खुल्लम खुल्ले भय त्याग कर ऐसी हरकतोंके खिलाफ जोरदार विद्रोह कर देना चाहिये, यह भी क्या तमाशा है कि लोग चाहें जैसी हरकतें करें और हम उसका फ भोगते रहें यदि हमने ऐसा होने दिया तो यह हमारी कमजोरी होगी जो कि समाज द्वारा कभी भी क्षम्य नहीं है।

इस तरह गोहाटीके बाद हमारी इस बारकी यात्रा शेष हुई। किन्तु पलाश-बाड़ीका जिक्र भी बड़ा आवश्यक है यहां भाई छगनलालजी जैनने बड़े उत्साहसे काम किया है कई सार्वजनिक संस्थाओं

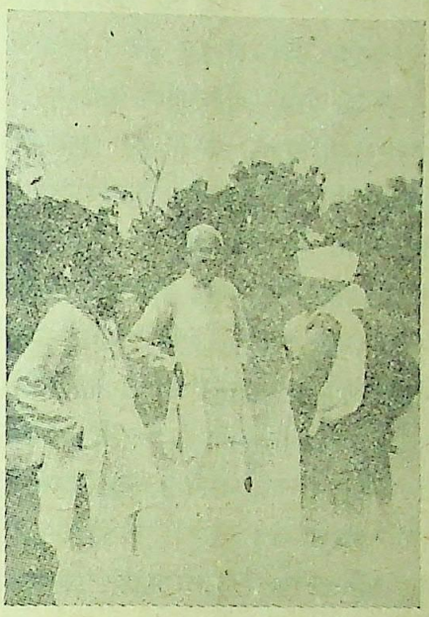

मनीपुर में डोमिनियन एजेन्ट देवेन्द्र शर्मा के साथ

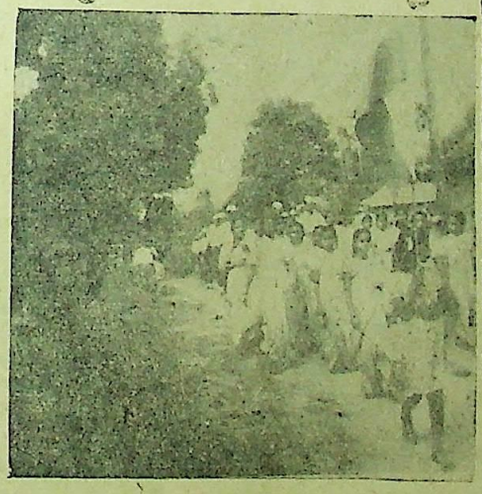

स्वागत जुलूस में बलिकाऐ

की स्थापना की गयी है। यहां भी एक बैठक मन्दिरमें बुलायी गयी जहां मालूम पड़ा कि आसाममें भी रहकर भी हम चुरू, लोहारू और राजपूतानेके ठेठ गांवमें हैं। वहांकी स्त्रियोंकी पोशाक पहनाव वही बाबा आदमके जमानेका देखनेको मिला, वही घाघरा बोरला, और वही ढंग जब स्त्रियां निकलती हैं तो लोग हंसते हैं और तरह-तरहकी बातें होती हैं एक तरफ तो हम लोगों समरस होनेकी बातें सोचते हैं तो दूसरी ओर हमारी स्त्रियों का यह ढंग बनाये रखना चाहते हैं। कैसे काम चलेगा। यहां भाषण देते हुए जालानजी ने कहा कि जालानजीने कहा ह रहेंगे तो आसाममें और कहेंगे भी कि हम यहींके हैं किन्तु ढंग रखेंगे ठेठ राजस्थानी गांवका तो यह काम कब तक चलनेका है। जब जालानजीने बीरलेकी बातें कहनी आरम्भ की तो सारी स्त्रियां उठ उठकर चली गयीं तो जालानजीने कहा कि यह है हमारे समाजकी हालत हम किस सभ्य समाजके साथ इसकी तुलना करें? यह दोष स्त्रियों का नहीं किन्तु हमारे पुरुष समाजका है जिसने यह हालत हमारी स्त्रियोंकी कर रखी है यदि पुरुष चाहें तो कल इसमें सुधार हो सकता है किन्तु उनकी मनो-वृत्ति दूषित हो चुकी है और उनकी विचार धारा सड़ गयी है इसलिये आज उसमें साहस नहीं और हिम्मत नहीं जो चीज बुरी है उसे त्यागमें भय और हिचकिचाहट काहे का। जो कुछ आज तक होता रहा हमने सह लिया किन्तु अब पदको बिलकुल नहीं सहेंगे।


१६॥) में ज्वेल शली रिस्ट वाच

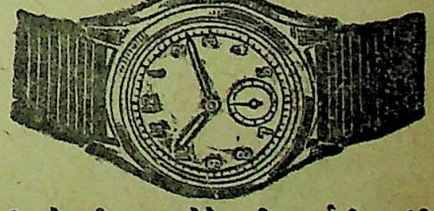

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस– २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस– ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड– ७५)
रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो शेप
क्रोमियम केस–४२), सुपिरियर–४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो बड़ी लेनेसे माफ।
एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# अपहृत महिलाओंका उद्धार कैसे हो?

लेखक 'इ'

इधर कई माससे भारतीय विभाजन के बाद पश्चिमी पंजाब सिंध तथा काश्मीर में जिन हिन्दू और सिख महिलाओंका अपहरण मुसलमान गुण्डों और नराधमों द्वारा हुए थे उनके उद्धारके लिये निरंतर प्रयत्न किये जा रहे हैं। भारतीय संघके दल पश्चिमी पंजाबमें घूम घूम कर ऐसी महिलाओंका पता लगानेकी कोशिश करते है जो मुस्लिम परिवारोंमें धुलमिल गयी है। कई धर्मभीरू मुसलमानोंने ऐसी महिलाओं की खोजमें जो सहायता की है वह सराहनीय है। ऐसी महिलाओंके उद्धारके बाद उन्हें अपने अपने परिवारमें पहुंचाना सरकारका दूसरा कर्त्तव्य है। परन्तु भारतीय संघका हिन्दू समाज रूढ़ियोंसे इस प्रकार जकड़ा हुआ है कि ऐसी महिलाओंको पुनः अपने परिवारमें सम्मिलित करते हुए हिचकता है। इन महिलाओंमें सभीका सतीत्व निरापबाद रूपसे भंग हो चुका है। उनमेंसे कुछ गर्भवती भी हैं और मार्च १९४७ से जून १९४७ तक पश्चिमी पंजाबमें जो दंगे हुए थे उस समयकी अपहृत नारियोंने शिशु भी प्रसव किये हैं। यह पंजाबी सज्जन जो अपनी बहू बेटियोंको अपनी आंखोंके सामने अपहृत और लांछित होते देखते रहे और आततायियोंसे प्राण रहते मुकबला न करके भारतीयसंघमें प्राण बचाकर शरण लेने पहुंच गये उन्हें क्या अधिकार है कि इन पवित्रात्मा देवियोंको अपने परिवारमें लेनेसे आंख चुरायें। कुछ ऐसे भी सज्जन हैं जिन्होंने स्वयं अपने परिवारकी अभागी नारियोंको पहचाननेसे भी इन्कार कर दिया है। इसलिये भारतीय संघका अब यह प्रधान कर्त्तव्य हो जाता है कि निरंतर भारत भरके दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रोंमें इन देवियोंकी निष्पापताकी घोषणा करे और शास्त्रके प्रमाणों द्वारा यह प्रचार करे कि विवशावस्थामें किये गये पाप दंडनीय नहीं हैं। भारतके प्रमुख आचार्यों, नेताओं, विद्वानों, समाजके ढेकेदारोंके जल्से भारतके कोने कोनेमें किये जाये जिनमें प्रस्तावों द्वारा इन देवियों की पवित्रतापर जोर दिया जाये। पूर्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पंजाब, यू० पी० बिहार इत्यादिमें विभिन्न बिरादरियोंकी पंचायतें नगर–नगर,–ग्राम–ग्राममें की जायें जिसमें सर्व सम्मतिसे यह तै हो कि बिरादरीका जो भी सदस्य अपनी अपहृत बहू बेटियोंको ग्रहण करनेसे इन्कार करेगा उसे बिरादरीसे बहिष्कृत किया जायेगा। यदि हिन्दू समाज आज तक जीवित है तो इसका प्रधान कारण यही है कि इसमें समयानुसार नियमोंमें परिवर्तन करनेकी क्षमता रही है। एक जमाना था जब अपहृत नारियोंको पुनः ग्रहणपर बिरादरीसे खारिज किया जाता था अब यह आवश्यक है कि इन अभागी नारियोंको ग्रहण करनेसे इन्कार करनेपर खारिज कर दिया जाये। जब विभिन्न बिरादरियों में ऐसे तथा कथित नकरोंकी संख्या अधिक हो जायेगी तो फिर कौन किसको उंगली दिखा सकता है।

जब किसी अपहृत नारीके उद्धारके बाद यह पता लगे कि यह गर्भवती है तो उसे तत्काल उसके परिवारमें पहुंचानेका प्रयत्न नहीं करना चाहिये। हमारे विचारमें उन्हें शरणार्थी शिविरमें स्थान देकर शिशु प्रसवके पश्चात् ही अपने परिवारमें भेजना चाहिये। सरकारको चाहिये कि इन अनाथ बच्चोंके लिये अनाथालय खोले और उनके लालन पालन और शिक्षा दीक्षाका पूरा प्रबंध करे। उद्धारकी गयी अपहृत नारियोंके नामके जो रजिस्टर रखे गये हों उनकी क्रम संख्या उन बच्चोंके हाथोंपर गोदवा दिया जाये तो यह नारियाँ जब भी चाहेंगी अपने शिशुओंको अनाथालयों में या कहीं भी पहचान सकेंगी। जब यह बच्चे बड़े हों तो उन्हें कलंकसे कुछ हदतक बचानेके लिये तत्कालीन राजनैतिक नेताओं को उनका धर्म पिता बना देना चाहिये। कुछ ऐसे भी सन्तानहीन व्यक्ति होंगे जो कि इन्हें गोद लेना पसंद करेंगे। यदि इस प्रकार इन अनाथोंका प्रबंध न हो सके तो रूस, अमेरिका, इंग्लैंड इत्यादि देशोंमें जैसा प्रबंध है उन्हें शिक्षाके पश्चात् सेना या नागरिक संस्थाओंमें समुचित पद प्रदान किये जायें जो इनकी योग्यताके अनुसार हों। इनका विवाह यदि संभ्रांत कुलमें संभव न हो तो उन्हीं अनाथालयोंकी अनाथ लड़कियोंके साथ हो जाना चाहिये। कोई भी व्यक्ति नहीं चाहता कि वह किसी अविवाहित या भ्रष्ट नारीके गर्भसे पैदा हो। यदि समाज किन्हीं कारणोंसे सतीत्व भंग करने वाले पुरुषको दंड नहीं दे सकता या देना ही नहीं चाहता और वह भ्रष्ट की गयी स्त्री लांछनके डरसे अपने अवैध शिशुका परित्याग कर देती है तो सभ्यताकी जिस सीढ़ीपर हम पहुंचे हैं उसके अनुसार उस अवैध शिशुको दंड देनेका हमें कोई अधिकार नहीं है। मनुष्यको केवल अपने अपराधों का दंड मिलना चाहिये न कि उसके माता पिता द्वारा किये गये अपराधोंका।

शिशु प्रसवके पश्चात् इन अभागी नारियोंको उनके परिवार तक पहुंचानेका प्रयत्न सरकारको करना चाहिये और उसमें सार्वजनिक संस्थाओंकी भी सहायता लेनी चाहिये। यह भी संभव है कि उनके परिवार वाले तत्काल इन्हें ग्रहण करनेमें अपनी असमर्थता प्रकट करें। ऐसी अवस्थामें इन नारियोंकी शिक्षा दीक्षाका प्रबंध करना होगा जिससे वह शिक्षिकायें नर्स, डाक्टर, हकीम, कविराज, शार्टहैंड––टाइपिस्ट, क्लर्क, विक्रेतृ, सिनेमा, थियेटर, सरकस, रेलवे स्टेशनोंपर टिकट बेचनेवाली, टेलिफोन आपरेटर, इंजीनीयर, स्थापत्य कला विशारदा, पत्रकार, पुलिस इत्यादि अपनी सहजरूचिके अनुसार बन सकें। कुछ सिनेमा और थियेटरकी अभिनेत्री बनना पसंद करेंगी इसलिये अभिनय कला और विज्ञान की शिक्षाकी संस्थामें भी खुलनी चाहिये।

इस उपायसे दो लाभ होंगे। प्रथम तो इन अभागी नारियोंको अपनी स्वतंत्र जीविका साधन प्राप्त हो जायेगा जिससे वह सम्मान पूर्ण अपना जीवन बिता सकेंगी। और दूसरे जब कुछ दिन तक यह स्वतंत्र रहेंगी तो बहुतसे पुरुष इनके रूप और गुणसे मुग्ध होकर इन्हें अपनी पत्नी बनानेको प्रस्तुत हो जायेंगे। प्रत्येक स्त्रीकी आन्तरिक इच्छा यह होती है कि वह किसीकी पत्नी बनकर स्वच्छन्द रूपसे दाम्पत्य जीवन व्यतीत करे। वह एक कुशल गृहिणी बनना चाहती है और वीर प्रसविनी माता। यदि इन निर्दोष अभागी नारियोंके विवाहका प्रबंध कुछ वर्षोंमें कर सकते हैं तो हम भारतकी एक प्रमुख समस्या हल कर लेंगे। यदि इन नारियोंको सम्मानपूर्ण जीवन बितानेका सुयोग समाज या सरकारने प्रदान नहीं किया तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यह तिरस्कृत नारियों पुनः पाकिस्तान लौट कर भारतीय संघके शत्रु प्रसवन करें जो समय आनेपर समूचे भारतीय संघको हड़प जानेका प्रयत्न करें। इसके अतिरिक्त इनके सामने केवल दो ही और रास्ते खुले रहेंगे। एक तो आत्महत्याका और दूसरा वैश्यावृति ग्रहण। स्वतंत्र भारतमें यह दोनों उपाय अत्यन्त घृणित हैं। इसलिये हम भारत वासियोंसे निवेदन करेंगे कि इस समस्याकी गंभीरतापर गौर करें और यथा संभव इस समस्याके हलमें समाज और सरकारकी हर प्रकारकी सहायता करें।

काफू (रजि०)
हैजे
को रामबाण दवा है
डाबर लिमिटेड, कल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारी-हृदय

—श्री लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

"एक पैसा दे मोरे सालिगराम'....!! एक लड़की झांझ बजाती हुई गा रही है– 'एक पैसा दे मोरे सालिगराम !'

एक लंगड़ा भिखारी एक लंगोटी पहने , सिर तथा पैरमें फटे पुराने चिथड़े लपेटे लड़कीके स्वरमें स्वर मिलाकर गा रहा है , 'एक पैसा दे मोरे सालिगराम' भिखारीके दहिने हाथमें एक छोटी सी थाली है , जिसमें लोग पैसे फेंकते जा रहे हैं । और, ये दोनों राजपथकी बाईं ओर चल रहे हैं । लड़कीके अंग-प्रत्यंगसे पूर्ण-यौवन-चन्द्रकी आभा प्रस्फुटित हो रही है । मानो वह जीवनके तेरह बसन्त पार करके चौदहवेंकी देहलीपर खड़ी है ।

उसका सौंदर्य गरीबीके बादलोंसे ढंके चन्द्रकी भांति दमक रहा था । गोरा चांदसा मुखड़ा ! अनारकी सी दंतपंक्ति ! कक्ष शुष्क बाल हवामें घास जैसे उड़ रहे हैं ! अरुण गुलाबसे कपोल, खंजनसे नेत्र, और पतली कमान सी भौंहोंके नीचे सुंदर मौसम्बी सी पलकें और, अधर ! अधरों पर तो जैसे सूखी मुस्कराहटकी रेखा अंकित है । और उनसे वही करुण रागका अमृत झर रहा है –"एक पैसा दे मोरे सालिग राम!"

और , सालिगराम सच ही उसे पैसा दे रहे हैं । उसे नहीं, उसके रूप और यौवनकी निछावर पैसोंके रूपमें उसे मिल रही है । थालीमें पैसोंकी खनखनाहट हो रही है । 'खन्न 'खन्न' 'खखन्न'! काला कलूटा भिखारी जैसे दरिद्रनारायणका अवतार प्रतीत होता है ! उसके शरीरपर जैसे किसीने कोलतार पोत दिया है । वहपर लला की तीन-चार आड़ी भाग्य रेखायें उसके अतीत गौरवकी प्रतीक हैं! पृथ्वीपर घसीटनेसे उसे एक मर्म वेदना, एक छटपटाहटका अनुभव हो रहा है । किन्तु भिखारी फिर भी चल रहा है उसकी झुर्रियां लटक रही हैं । पैरोंमें छाले पड़ चुके हैं । लेकिम , दुबला-पतला पसीनेसे सराबोर भिखारी चल रहा है । भीषण गर्मी और दोपहर ! किन्तु मानवका हृदय अपनी भूखकीज्वाला–उदरकी आगसे बेचैन है । उसे सूर्यकी अग्नि बरसाती धूप नहीं व्यापती । उसे प्यास नहीं , भूख नहीं । हां, लड़कीको भी भूख-प्यास नहीं ! वे दोनों इस तवेसी जलती धरतीपर चले जा रहे हैं ।एक करुण एवं मधुर स्वर लहरीमें बहे जा रहे हैं और लग रहा है जैसे सारा संसार भी उसी स्वर-लहरीमें बहा जा रहा है । अपने प्रभुके दर्शनार्थ ! वैसा प्रभुकी पूजा-अरचाके लिये थे !

लड़की बाएं कंधेपर एक फटी मट-मैलीसी लालालाल छझोली टांगे है ! वह उसी झोलीमें आटा,डाल, चावल आदि व्यवस्थापूर्वक खानोंमें दाल रही है ! कपड़े उसके फटे और अस्त-व्यस्त हैं वह लोगों पर एक उपेक्षापूर्ण दृष्टि डाल रही है । पर लोग उसके अंग-प्रत्यंगकी शोभाकी ओर बारीकीसे देखनेमें लवलीन है । कभी-कभी उसका जीवनका चन्द्रमा उन बादलोंके टुकड़ोंसे झांकने लगता है , तब लोग उसे घूरने लगते हैं । पर लड़की का ध्यान इस ओर नहीं है । वह तो अपनी वही पुरानी स्वर-लहरीमें बही जा रही है । –'एक पैसा दे मोरे सालिकगराम!'

( २ )

तीन माह बाद ! एक दिन संध्याकी लालिमा पश्चिमी आकाशपर छिटक रही है ! संध्या सूरजमुखीसी खिल उठी है ! मैं हवाखोरीके लिये निकला , कि शहरके नुक्कड़पर , फिर वही ध्वनि पक्षियोंके कलरव सी सुन पड़ी –"एक पैसा दे मोरे सालिगराम मैं कुछ छण मौन रहकर सोचने लगा –"मैंने बहुतसे भिखारी देखे हैं ! बहुतसी बालिकाएं हाथमें चिट्ठी लिये यहां वहांसे कुछ पैसे झटकत हुई देखी हैं । अनेकों रंगे सियार सभ्य भिखारी तीर्थवालाका बहाना करते हुए अपने निवास स्थानपर पहंचनेके लिये पैसे ऐंठते हुए देखे हैं । लेकिन इसकी सादगीसे तो खुदाका नूर दिखायी पड़ रहा है । " आज उस सुन्दर, भोली किन्तु दीन लड़कीका चहरा कुछ अपनी ओर विशेष रूपसे आकर्षितसा करने लगा । जैसे वह मुझसे अपनापन खोज रही है और मैं अपनेको उसमें खो रहा हूं ।

क्रमशः संध्याके झुटपुटेमें अन्धकारने अपने पैर पंसारे । बिजलीके प्रकाशसे दूर जब भिखारी अपने तिमिरगृहकी ओर प्रयाण करने लगा , तो मैंने उसका पीछा किया । थोड़ी दूरपर एक जीण-शीर्ण झोंपड़ी ही उसका भवन थी ! वह घास-फूसकी झोंपड़ी अपने जीवनकी घड़ियां गिन रही थी रिमझिम वर्षाकी बूंदे पड़ रही थी शहरमें जहां तहां चिराग जल उठे थे ! अभी बालिका और वृद्धने कुटीमें प्रवेश ही किया था कि इतनेमें मैं कुटीकी द्वारपर ठिठक कर खड़ा हो गया । लड़की झोली टांगनेमें व्यस्त थी किन्तु वृद्धने मेरी ओर एक सम्मान पूण दृष्टि डालते हुए कहा –"आइये बाबू जी , बाहर कैसे खड़े हैं । अन्दर आ जाइये पानीकी बूंदे पड़ रही हैं ।

मैंने ठहर खिसकाकर झोंपड़ीके अन्दर प्रवेश किया ! वृद्धने एक मैली सी चटाई बिछाते हुए मुझे उसपर बैठनेका संकेत किया।

मैं चटाईपर बैठा और लड़कीके सौंदर्य की ओर निहारने लगा । वह दीपककी बाती बढ़ा रही थी ! दीवालोंमें यत्र-तत्र सील और धूएंकी कालिखसी पुती हुई थी ! और दियाथानेके ऊपर दीवालमें बहुत सी कालिख और और नीचे बहुतसी तैल-कीट जमी हुई थी ! और मेरी कल्पना दीपकसे उसके सौंदर्यकी उपमा दे रही थी। "चिरागे हुस्न " । कीचड़में कमल और कांटोंमें गुलाबकी शोभा देखते ही बनती है संसारमें सौंदर्यकी कितनी अगम्य सरिता बह रही है । अनेकों मतवाले जीवन तरंग उसे तैरककर पार कर रहे हैं । कई तो उसमें डूब चुके ,गर्क हो चुके ! अनेकों मतवाले अपने शरीरोंकी खाक उसी प्रेम दीपके चरणोंमें अर्पित कर चुके ! प्रेमका मार्ग कितना उच्च और महान है । और वास्तवमें उज्ज्वल और पवित्र प्रेम वही है जिसमें त्याग या त्यागकी भावना है !"

मिट्टीके दीपकपर भी बहुत सी तैल-कीट जम रही थी । और, दीपककी स्वर्णशिखा हिल-डुल रही थी । उसकी हिल-डुल बार बार मेरे हृदयमें एक स्पन्दन सा भर रही थी । अचानक 'फक्क' करके दीपक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बुझ गया और किसी अज्ञात आकाशसे मेरा हृदय 'धक-धक' कर उठा ! तभी एक सुरीली और मधुर स्वरमें एवं मधुर आवाजमें किसीने कहा–"बाबूजी माचिस होगी ?

आवाज मेरे हृदयको स्पर्श कर गयी। मैंने माचिस उसके समीप फेंक दी ! उसने दीपक जलाया और स्मितिका प्रकाश बखेरते हुए कहा –"लीजिये माचिस" और नयन लज्जानत हो गये । तभी वृद्धने मुझसे पूछा–"'बेटा,तुम कहां रहते हो!

'बाबा, मैं एक कालेजका छात्र हूं। यहीं होस्टलमें रहता हूं। अपने पिताका इकलौता पुत्र हूं ! मांका स्वर्गवास छुटपन में हो चुका–मैंने कहा ।

"क्या आप भी जीवन-कथा सुनाने की कृपा करेंगे ?" मैंने फिर कहा !

तभी बुड्ढा कुछ उलझन में पड़ता नजर आया। उसके माथेपर सिलवटें पड़ गयी। उसने एक ठण्डी किन्तु दीर्घ विश्वास छोड़ते हुए कहा––"बेटा, हम कलके शाह और आजके भिखारी ! हमारी बात क्या पूछते हो ? यह दुनिया हमारे लिये एक मुसाफिर खाना है । आज यहां कल वहां ! हमारा कोई खास ठौरठिकाना नहीं ! हमें ग्रीष्म, वर्षा शीत सब एक सी हैं। न कभी सुखमें हर्ष और न दुखमें शोकमे हों, एक चिन्ता इस 'उषा' के विवाहकी है ! सो बेटा वही भगवान मेरी बेटीकी नैया भवसागरसे पार करेगा ।

मेरे पिता मुगल खनदानके थे ! सन सत्तावनके गदरके समय वे कानपुरसे इलाहाबाद भाग आये और उन्होंने एक ब्राह्मणी विधवासे शादी कर ली ! फिर वे फौजमें भरती हुए ! जब १४ की लड़ाई छिड़ी तो सरकारने उन्हें लड़ाईपर भेज दिया। वे मारे गये ! थोड़े दिन बाद मेरी मां भी उन्हींके रंजोगम और बीमारियोंमें पिसते-पिसते चल बसीं ! अकेला मैं बचा । मैंने पुलिसमें नौकरी की और अपना धर्म बदल कर एक गरीब ब्राह्मणी विधवासे शादी करके घर बसाया ! किन्तु विधाता को जो मंजूर था, वही हुआ ! आजसे पांच वर्ष पहले उषाकी मां बीमार पड़ी ! मंहगीका जमाना था ! बीस रुपयेमें गुजर न होती थी ! और एक दिन माहकी ३१ तारीख थी ! घरमें दवादारूको एक पैसा नहीं ! मेरी पत्नी और दोनों बच्चियां बीमार ! उन्हें मेरे और उषा के सिवा और कोई पानी देने वाला न था। लष्टम-पष्टम खाना खाकर मैं ड्यूटीपर गया और एक जगह रिश्वत खा गया ! मेरी रिपोर्ट हुई और कप्तान साहबने मुझे बरखास्त कर दिया ! अफसोस ! मेरी स्त्री और दोनों बच्चियां चुल्लू भर दूधके लिये तरस-तरस कर 'टाइफाइड' और निमोनियांसे मर गयीं ! उनकी उस तड़फड़ाहटको याद करके आज भी मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं ! शरीरमें कंप-कंपीसी भर जाती है ! नौकरी गयी ! परन्तु बन्धनसे मुक्ति पाकर भी तो मुझे जीना था––उषाके लिये ! केवल उषाके लिये मैं वर्षों जंगलोंकी खाक छानता रहा ! पागलोंकी तरह मारा-मारा यहां-वहां दर-दरकी ठोकरें खाता रहा ! सोचता, कहीं कुटिल काल इसे भी न निगल ले ! पर, यह मेरी नयनपुतली बच गयी ! इसकी 'ज्योरिया' मजबूत थी ! आज मेरा शरीर टूट गया ! बहुत कमजोर हो गया हूं भैया ! फिर भी पापी पेटको भरनेके लिये भीख मांगता हूं।"

और दीपकके धुंधले प्रकाशमें मैंने देखा—वृद्धकी आंखोंसे अश्रुधारा अविराम गतिसे बह रही है ! मैंने उसे सान्त्वना देते हुए कहा—"आप शान्त रहें ! अब रंज करनेसें क्या फायदा ? जो होना था, सो हुआ। अच्छा मुझे अब इजाजत दीजिये, क्योंकि मेरी होस्टलकी हाजिरी का वक्त हो चुका है !"

भिखारी—"अच्छा बेटा फिर मिलेंगे ! कभी-कभी इस तरफ निकल आया करो।"

(३)

एक वर्ष बाद ! मुझे उस लड़कीके प्रति कुछ लगाव सा प्रतिदिन बढ़ने लगा ! मैं रोज शामको उसके घर आने जाने लगा ! उसने मेरे और बाबाके कहनेसे पढ़ना शुरू किया । एक ही वर्षमें वह चौथी हिन्दी पढ़ने लगी ! एक दिन उषा नल दमयन्तीकी कथा पढ़ रही थी ! वृद्ध सो रहा था ; उषाकी आंखोंमें दो मोतियां जैसे अश्रुविन्दु अटके हुए थे और सामने खुली हुई पुस्तक आंसुओंसे भीग रही थी । उषाने अपनी मर्मस्पर्शी वाणीमें कहा––"क्या आप भी मुझे राजा नलकी तरह.....!"

एक क्षणके लिये मैंने दीपककी मन्द रोशनीमें उसके मोमकी भांति गलते सौन्दर्यको देखा ! फिर प्रेमपूर्वक बालोंको सुलझाते हुए बोला—"नहीं उषे, प्राण रहते ऐसा नहीं होगा !" और फिर रूमालसे उसके अश्रु पोंछते हुए मैंने कहा––"पगली कहीं की ! यौवनका गुलाब तो कांटोंमें ही खिलता है ! आज हम और तुम इस कंटक मार्गमें जिस तेजीसे दौड़ पड़े हैं अब शान तो बस यही है, कि पैर पीछे न हटे।"

उषाने तब आंसू पोंछते हुए—'आखिर आपसे मुझे इतना....." मैंने कहा—"यह भी क्या बताने लायक बात है ? मेरे हृदयमें क्यों तुम्हारे ही प्रेमका समुद्र लहरा रहा है ?"

"और, मैं तो उस सागरमें मिलने वाली एक क्षुद्र सरिता हूं प्राण !"

"और, मैं सोचता हूं, उषे ! शायद हमारा यह मिलन अक्षुण्ण, अखण्ड और अबाध है। यौवनके उन्मुक्त निर्झर सा प्रगतिशील ! शायद हम जन्म-जन्मान्तरसे दो शरीर एक प्राण हैं ! उषे, तुम बिलकुल निश्चिन्त रहो ! मैं तुम्हींसे अपनी शादी करूंगा। चाहे पिताजी कुछ कहें !"

और दूसरे दिन सुरेशको पिताका तार और पत्र मिला। कम सून फार मैरिज" सुरेश, तुम्हारी शादी मैंने हरिरामपुरके मालगुजारके यहां तय कर दी है। दहेजमें पूरे ६०००) का सौदा है ! तुम पूरे ७ दिनकी छुट्टी लेकर जल्दी चले आओ ! अच्छी खासी रकम है !"

तुम्हारा पिता—
विनोदशंकर

पत्र पढ़कर सुरेशका बना बनाया स्वप्नोंका महल ढह गया ! ताशके पत्तों सरीखा कल्पनाका भवन गिर पड़ा ! वह सोचने लगा—"अब क्या किया जाय ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उषासे क्या कहें? और फिर उस भोली लड़कीसे विश्वासघात कैसे किया जाय?" और, दौलतकी चिकनी जमीनपर सुरेश फिसल गया! उसने सोचा—"आखिर पथकी भिखारिनसे प्रेम कैसा? वह सौंदर्य कलिका एक क्षणको सूंघने भरके लिये थी। अब उसमें धरा ही क्या है? उसमें अब वह रूप माधर्य नहीं; जिसके लिये यह मनभ्रमर उतावला और बावला हो! उषा मर चुकी है! वह वर्णसंकरकी सन्तान है। समाजमें उसके द्वारा मेरा सम्मान न होगा! धन न मिलेगा। यौवनका गुलाब अब पूर्णरूपसे विकसित होकर अपनी पंखड़ियां धरतीपर बिखरे चुका! अब वहां कांटे ही कांटे हैं! कलिका मुरझा गयी और भ्रमरका काम है, कि जब एक कलिकासे वह रस न पा सके, तो उसे छोड़ वह दूसरीगह ले! सदा नवीन रस, नवीन सुरभि और नूतन सुखका आकांक्षी तो है मन भ्रमर! और, इसी परिवर्त्तनका नाम जीवन है तथा जीवनकी प्यास सर्वदा अमर है। सर्वदा एक अभाव, एक अपूर्ति एक प्यास और एक अतृप्तिका ही नाम 'जीवन' है! और वह जीवनकी प्यास कभी नहीं बुझती —नहीं बुझती—नहीं बुझती! जब तक विश्वमें 'मानव' और 'नारी' नामके दो प्राणी हैं, तबतक जीवनकी प्यास भी अमर है! और, उस प्यासके विना यह जीवन भी जीवन नहीं, अजीवन है!"

और, दूसरे दिन रातकी गाड़ीसे सुरेश घर चला गया। दहेजकी मोटी रकम वसूल करने!

(४)

तीन वर्ष बाद! बाबू सुरेश कुमार हरिरामपुरके मिडिल स्कूलमें अंग्रेजी के अध्यापक नियुक्त हुए! घटनाचक्र बड़ी तीव्र गतिसे परिवर्तित हो रहा है! महामारीमें उनके पिताका स्वर्गवास हो गया और वह मोती रकम भी पिताके साहूकारने पचा ली! 'लक्ष्मी' चंचला जो हैं न! किसी प्रकार घरकी लुटिया- पुंजिया बेचकर सुरेशने बेकारी के दो वर्ष काटे, तब कहीं पचास रुपये की अध्यापकी मिली! सो भी सुसरालमें और श्वसुरजीकी कोशिशोंके बाद! सब दिन एकसे किसीके नहीं रहते। उमा-देवी हिन्दीकी प्रसिद्ध कवियित्री और सुरेशकुमारकी धर्मपत्नी है!

नवदम्पति किसीके जीवन-सुमनको पैरों तले रौंदकर एक अतुलनीय एवं स्वर्गीय आनन्दकी लहरियोंमें बहे जा रहे हैं। सुरेश जब अपने विगत जीवनपर दृष्टि-पात करते हैं—"एक अधखिली कलिका धूलधूसरित पड़ी है! उसकी पंखड़ियां धरतीपर यत्र-तत्र बिखर रही हैं और वे उनपर, पैर रखते हुए आगे बढ़ रहे हैं। एक क्षण उन्होंने किसी जीवन-तरुसे उस कलिकाको विलग करके सूंघा है! उसकी मन्द, मधुर एवं हृदयस्पर्शी सुवास ली है। रस लूटा है! किन्तु दूसरे क्षण, उसे गन्धरहित जान, धरतीपर फेंक दिया है! वे ज्यों-ज्यों उसे भूलनेका प्रयत्न करते हैं, त्यों-त्यों उसका छाया चित्र, चलचित्रकी भांति, उनकी आंखोंकेआगे नाच उठता है। वह उन्हें आंखोंमें आंसू भरे आशान्वित नेत्रोंसे देख रही है। पर, वे उसे देखकर भी जैसे नहीं देखते! उसके स्थानमें वे अपने सामने दूसरी मूर्ति उमाको देखते हैं! उमामें रूप है, यौवन है, बाहर है, मस्ती है—सब कुछ है! पर इन सब वस्तुओंसे जैसे उनके अतृप्त यौवनकी प्यास बुझकर भी नहीं बुझती। उनके अन्तरालमें ज्वालामुखीकी भांति एक ठण्डी ज्वाला, एक मीठी आग दह-कती रहती है! और, प्रतिपल आंखोंके आगे पददलित कलिका उषाका चित्र, चलचित्रकी भांति थिरक उठता है। सुरेश ज्यों-ज्यों उसे भुलानेका प्रयत्न करते, त्यों-त्यों उसकी स्मृति अमरवल्लरीके सदृश उनके जीवनतरुसे चिमटती चली जाती है—शीर्षभाग वृक्षको स्पर्श करनेके लिये!" और सुरेशने पश्चातापकी अग्निमें जलते हुए सोचा—"अफसोस, मैंने बुरा किया! धनके मदने मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी! आज बेचारी उषाकी क्या दशा होगी? न जाने वह कहां होगी? क्या खाती होगी? न जाने वह कैसी हालतमें होगी? काश, आज वह यहां आ जाती, ताकि मैं उससे अपने अपराध की क्षमा मांग लेता!"

उधर, उषा सर्द आहें भरती है अपने प्रियतमको-परदेशी प्रियतमको पानेके पानेके लिये! उसका पिता मर चुका है! अब उसकी गोदमें एक दो वर्षका शिशु है। किसीकी स्मृति रूपी थाती! जिसे वह कन्धेसे चिपटाये भीख मांगती है! सौभाग्यसे पथकी ठोकरें खाती हुई उषा हरिरामपुर पहुंची और सुरेशके यहां एक परिचारिकाके रूपमें रहने लगी! बरसातके दिन हैं! हरिरामपुरमें बड़े जोरका हैजा फैल गया है! उमादेवीको हैजा हो गया! 'इनाकुलेशन' तो उन्होंने सप्ताह पहले ही ले लिया है! मनुष्य मृत्युसे बचनेके अनेक उपाय करता है, पर जब कजा आ ही जाती है, तब वह असमर्थ हो जाता है! मृत्युके सामने भले बुरेका कोई ख्याल नहीं! उसके सपाटेमें जो भी पड़ा—चाहे वह वृद्ध हो —चाहे जवान हो, चाहे बालक कोई भी हो, वह साफ हो जाता है। मौत किसीको प्रिय नहीं लगती। सभी उससे भय खाते हैं। यही हाल उमाका हुआ। उषा और सुरेशने मिलकर बड़ी सेवा-सुश्रूषा की। लेकिन दीपक हाथ लगाते आखिर बुझ ही गया। अभी कल ही सुरेश उमाको फूंककर घर आये, कि इसी गड़बड़ीमें उन्हें भी हैजाने धर दबाया! मतलबी, मित्र और सास -ससुर तकने उनकी कोई खबर न ली! वे क्या करते? दामाद का रिश्ता भी लड़की तक था! 'अपने पराये' और 'पराये-अपने' हो गये! बेचारी उषा अपने दुधमुंहे 'नन्हे' को धरती पर 'भुखा प्यासा' ही छोड़कर अपने स्वामी तथा पतिकी सेवा सुश्रूषामें तत्पर रहती है! वह गुदड़ीका लाल फटे पुराने कपड़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में मस्तीकी नींद सोता है। ईश्वरकी कृपासे उसे कोई बीमारी नहीं व्यापती।"

"राम भरोसे जो रहें, पर्वत पै हरियायं" —वाली उक्तिके अनुसार उसकी मां भी स्वस्थ है! इस बार डाक्टरोंके इंजेक्शन' काम के रहे! सुरेश बाबू लगभग दो माहके बाद दवा और किसी की 'दुआ' से आखिर बच गये! लेकिन कमजोर इतने हो गये कि उठने बैठने की शक्ति उनमें नहीं थी! बिलकुल क्षीणकाय अस्थिपंजर हो गये! उषाकी करुण मूर्ति अब उनके आगे चौबीसों घण्टे रहती है!

एक दिन वे अपनी पतली-पतली अंगुलियां उषाके बालोंमें उलझते हुए बोले—"उषे, तुम धन्य हो! तुमने मेरी सेवा करके मुझे दूसरा जीवन दिया है! मैं तुम्हारे इस उपकारको आजन्म नहीं भूल सकता! बोलो देवी, क्या तुम मेरे पूर्व पाप क्षमा कर सकोगी?"

और उषाको रुलाई आ रही है! उसका 'नन्हा' जग उठा! उषाके मुखसे एक शीतल निश्वास निकल गयी! उसने कहा—"देवता, आपने तो मुझे भुला ही दिया! किन्तु मैंने दमयन्तीकी भांति खोजकर तुम्हें पा लिया! आपने जो भूल किया, उसे अब भूल जाइये! आदर्श नारी एक ही पतिकी पूजा और प्राण-प्रतिष्ठा करती है और भारतीय नारीके लिये पतिके चरण तो स्वर्गकी महान विभूतियोंसे श्रेष्ठतर हैं! आदर्श नारीके लिये पति सेवा महान त्याग, और कठोर कर्तव्य पालन है!"

और, सुरेश, पलंग पर लेटे-लेटे, तकिये में मुंह ढांपे सोच रहे हैं—"यह 'नारी हृदय' कितना उदार, सहिष्णु और विशाल है! मातृत्व और रमणीत्वकी खेती जिसमें सर्वदा लहलहाती रही हैं तथा जो सागर की तरह धीर-गम्भीर और प्रशान्त है। और, जो विश्वमें शान्तिकी सुखद ज्योत्सना छिटका रहा है!"


# प्रभावशाली व्यक्ति

## जीलेट से हजामत बनाते हैं।

कोई भी प्रभावशाली व्यक्ति सुव्यवस्थित आकृति की विश्वासपात्रता स्वीकार नहीं कर सकता यदि वह अच्छी तरह हजामत बनाई हुई नहीं हो। प्रभावशाली व्यक्ति जिलेट से ही हजामत बनाते हैं क्योंकि उन्हें अनुभव द्वारा ज्ञात हो गया है कि उनके पैसे के पूरे मूल्य के अनुसार, जिलेट ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ हजामत देते हैं।

पांच के १४ आने

# Blue Gillette Blades
# ब्लू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGD. NO. C 2229.

# विश्वामित्र

ल डाल १० हजारकी बड़ी भीड़ जमा हो गयी थी लेकिन जब उपस्थित जनता को पता चला कि शान्ता आप्टेने खुले आम पंडालमें दर्शकोंके सामने गाने से इन्कार कर दिया है तब वह क्रोधसे पागल हो उठी और उपद्रव मचाना शुरू किया। बड़े-बड़े पत्थर फेंके जाने लगे, झाड़ और फानसोंको चूर कर दिया गया और पंडालको भी बड़ी गहरी क्षति पहुंची। बाद पुलिसने पहुंचकर लाठी चार्ज द्वारा गुंडोंको तितर-बितर कर दिया।


हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

**ओटो दिलबहार** (रजिस्टर्ड)

**व्यवहार कीजिये**

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुरुचिजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और धीमी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

इसकी शिकायत

मांड फ्रेगरेन्स:

ए ग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

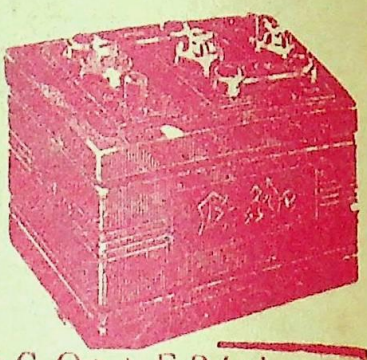

**Exide**

अधिक टिकाऊ

ड ट री

कार, ट्रक और लारी के लिये

Local Agents Messrs. F. & C. OSLER Ltd

12 Old Court House Street Calcutta

# पूर्ण उपहार

टाटा के ओ डी कोलोन की एक शीशी मित्रों व प्रियजनों को भेंट करने के लिये एक परिपूर्ण उपहार है क्योंकि सब लोग इसकी प्रशंसा करेंगे। यह पेंचदार शीशी बहुत आकर्षक है मूल्य उचित होनेके कारण इसे हर कोई खरीद सकता है। आनेवाले त्योहार के समय इसे खरीद कर भेंट कर दीजिये।

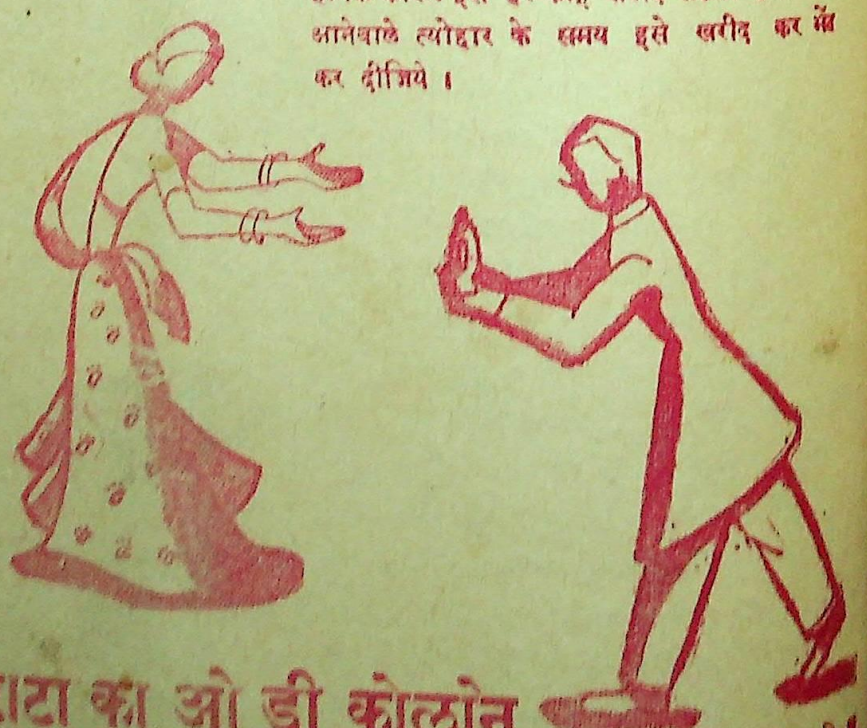

**टाटा का ओ डी कोलोन**

दी टा टा आ ई ल मि क्स क म्प नी लि मि टे ड

७८ महात्मा गांधी रोड फ्रीमेन्ट्स इंडिया प्रेसमें गोविन्द चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वमित्र

सम्पादक--
देवदत्त मिश्र

वर्ष--संख्या ३१ १८ ता० २६ मई १९४८ MAY 26, 1948. मूल्य =), वार्षिक ६)


## गीत

जब तक तनमें प्राण भाग मत जग जीवनसे !
बार-बार जल जलकर भी क्या कभी शलभ दीपकसे भागा?
हार मानकर कांटोंसे कब बता मधुपने मधुबन त्यागा ?
वज्र गिरे, ओले बरसें, टूटे पहाड़ अंधड़ मंडराये-
घनको छोड़ पपीहेने पर कब जलदान किसीसे मांगा ?
फिर तू ही क्यों आज हृदयकी दुर्बलताका दामन थामे-
जीवनकी लालसा त्याग, हैं मांग रहा वरदान मरणसे !
जब तक तनमें प्राण भाग मत जग जीवनसे !!

तुझे याद हो-प्राणोंमें रो रोकर भी तूने गाया है,
तेरे पगके छालोंने पथके कांटोंको शरमाया है,
बैठ तरुण अरमानोंकी अधजली चिताकी जड़ समाधिमें-
अनगिन भूले हुए राहियोंको तूने पथ बतलाया है,
और आज यदि बन्द कर दिया तूने ही निज गान विजयका-
दुनिया लड़नेका साहस फिर पायेगी किसके गायनसे ।
जब तक तनमें प्राण भाग मत ! -जग-जीवनसे !!

जीवन एक समर है जिसमें जीत जगतका प्रतिक्षण प्रतिकण
रोज हुआ करता है नभ पर दिनकरका, रजनीकरका रण
प्रात हारता जाव, पराजित होता संध्याको रवि नित ही-
फिर भी नित्य नये साहससे देते वे रणका आमंत्रण,
हार, जीत तो विजय-समरमें सत्य नहीं, वे अमर दशायें-
प्राप्त किया करते हैं योद्धा लड़नेका साहस, बल जिनसे !
जब तक तनमें प्राण भाग मत जग-जीवन से !!

—श्री 'नीरज'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## प्रणयका परिधान

करो अंगारोंसे शृंगार !

किया क्यों दीप शिखा से मेल ?
शलभ रे ! प्रणय नहीं है खेल।
जलनमें कहां छिपी है छांह, दाहसे वर्तुल प्यार संवार।
करो अंगारोंसे शृंगार !
मचल कर चले चूमने फूल—
अधरमें चुभे अचानक फूल;
मधुप रे ! साहस है तो लिपट, कली है कहां? कंटीली।
करो अंगारोंसे शृंगार !

पर जाने की है यदि चाह—
खोज मत कौन सुगम है राह;
प्रबल झंझामें नौका खोल, तोड़ दे नाविक रे ! पतवार !
करो अंगारोंसे शृंगार !
उठी क्यों अन्तरतममें हूक ?
आज क्यों मुखर सुरलिया मूक ?
पुजारी ! लौटो नहीं निराश, खुलेगा मन-मन्दिरका द्वार !
करो अंगारोंसे शृंगार !

—प्रभंजन

## मैं तुम्हें अबोध कहूं या मैं नादान बताऊं अपनेको

मैं तुम्हें अबोध कहूं या मैं नादान बताऊं अपने को।
जीवनको मधुर समझती हो,
पर मधुर नहीं मानव जीवन;
पग-पग पर दुःखके शूल बिछे,
करते विह्वल मानव - मन को,
यह नहीं कल्पना लोक अरी, जो सफल बनालो सपने को।
मैं तुम्हें अबोध कहूं या मैं नादान बताऊं अपने को।
जीवनकी मंजिल दूर बहुत,
चलना जिस पर आसान नहीं;
चंचल मन है, अल्हड़ यौवन,
जीवनका है सामान नहीं,
सोचो दुःखमें पीड़ा कितनी, यह जीवन नहीं कलपने को।
मैं तुम्हें अबोध कहूं या मैं नादान बताऊं अपने को।
माना एकाकी नहीं, साथ में—
साथी है जीवन भर का;
पर पन्थ निरा अनजान रहा,
सुख मिला कहीं तो पलभर का,
दुःखको कब तक सुख मानोगी, ये मोती नहीं ढुलकने को।
मैं तुम्हें अबोध कहूं या मैं नादान बताऊं अपने को।

—प्रो० मित्तल एम० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



परहित बस जिनके मनमाहीं।
तिन कंह जग दुलभ कछ नाहीं।।

# अन्नोत्पादन बढ़ाओ

प्रचुर साधनों और सामग्रियोंके देश भारतवर्षमें चारों ओर अभाव ही अभाव दिखायी दे रहा है। जीवनकी रक्षाके लिये आवश्यकक अन्न,वस्त्र तथा गृहका अभाव है। जीवनको नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टिसे उच्च स्तरपर उठानेके लिये इस धर्मप्राण देश भारतकी व्यवस्था इतनी अपूर्ण और अपर्याप्त है कि समाजके इने-गिने लोगोंको छोड़कर अवशिष्ट सम्पूर्ण समाजको मानसिक और नैतिक विकासके साधन और अवसर मिलते ही नहीं हैं। यह सब हमारी सदियोंकी दासताका परिणाम है। विदेशी शासनने हमारे समाजकी सम्पूर्ण व्यवस्थाको इस तरह खोखली बना डाली है कि ध्वन्सोन्मुखी प्रवृत्तियां समाजपर राज शासन कर रही हैं। देशको इस शोचनीय अवस्थासे मुक्त करनेके लिये यह आवश्यक हो गया है कि पहले उन उपायोंका अवलम्बन किया जाये, जिनसे देशवासी तमाम अभावोंसे मुक्त होकर स्वावलम्बी बन सकें। हमारी सरकार इसी उद्देश्यसे विभिन्न योजनाएं देशको स्वावलम्बी और अभावोंसे मुक्त करनेके लिये बना रही हैं।

देशमें इस समय जैसा अन्नाभाव है, शायद उसके इतिहासमें ऐसा समय पहले कभी नहीं आया। इस अभावको कैसे दूर किया जा सकता है, इसपर तात्त्विक अनुसंधान करके अपना मन्तव्य सरकारके सामने उपस्थित करनेके लिये एक खाद्यान्न समिति संगठित की गयी थी। इस समितिने जो अपनी अंन्तिम रिपोर्ट उपस्थित की है उसमें यह सुझाया गया है कि कमसेकम समयके भीतर सलाना एक करोड़ टनकी वृद्धि अन्नोत्पादनमें होनी चाहिये। तभी अभाव, दुर्भिक्ष और विदेशोंकी निस्सहाय पर–मुखापेक्षिताके निरन्तर भयसे देशको मुक्त किया जा सकता है। किन्तु कहनेसेही तो यह काम संभव नहीं है। हम युद्धकालमें और उसके बाद भी अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलनका परिणाम देख चुके हैं। इसमें सन्देह नहीं कि १९४३–४७ के बीचमें अन्न अधिक उपजानेके संबंधमें सही उपायोंसे काम लिया गया था फिर भी उद्देश्य सिद्ध नहीं आ। इसका कारण यह था कि वस्तुस्थिति सर्वथा विपरीत थी एवं जो प्रयास किये गये थे वे अपर्याप्त थे। समाजके जिन लोगोंके हाथमें इस योजनाको सफल बनानेके साधन थे उन जमींदारों, तालूकेदारों एवं व्यवसायियोंका जैसा सहयोग मिलना चाहिये था, नहीं मिला। अतः देशको अन्नाभावसे मुक्त करनेके लिये इस बार पहलेसे अधिक क्रान्तिकारी उपायोंसे काम लेनेकी आवश्यकता है। नयी उत्पादन–नीति और प्रणालीका अवलम्बन आवश्यक है। इसीलिये खाद्यान्न नीति समितिने यह सिफारिश की है कि पर्याप्त सिंचाईकी व्यवस्था, जिस भूमिपर पहले हीसे कृषि हो रही है उसका उत्पादन बढ़ानेके निमित्त जोरदार प्रयत्म एवं कृषियोग्य परती जमीनको खेतोंमें परिणत करनेके लिये तत्काल बहुत बड़े पैमानेमें बहुमुखी योजना निकट भविष्यमें व्यापक अन्न उत्पादन नीतिकी सफलताके लिये आवश्यक है। इस योजनाको कार्यमें परिणत करनेके लिये एक केन्द्रीय कृषियोजना समिति तथा प्रान्तीय कृषि योजना समितियोंके साथ साथ एक ऐसा स्वायत्त शासन प्राप्त केन्द्रीय संगठन कायम किया जाये जो कृषियोग्य भूमि प्राप्त कर सकें। इस सम्पूर्ण योजनाके लिये ५० करोड़ रुपयेकी पूंजी आवश्यक बतायी गयी है। यह योजना आगामी पांच सालके भीतर–अन्न उत्पादनमें निश्चित वृद्धिके लिये तैयार की गयी है।

इस योजनाकी सफलता प्रान्तीय प्रयत्नोंपर निर्भर है। और हर्षकी बात है कि कतिपय प्रान्तोंने,खासकर बिहार,संयुक्त प्रान्त, मद्रास और मध्यप्रान्तने देशकी कृषिको समुन्नत करनेमें सबसे बड़ी बाधा जमींदारी प्रणालीको हटाने की दिशामें निश्चित कदम उठाय गया है। इस तरहका प्रयत्न किया जा रहा है कि कमसेकम ६ महीने और अधिकवे अधिक १८ महीनेके भीतर बिहार और संयुक्त प्रान्तमें जमींदारी प्रथा टूट जायें। इसके अतिरिक्त कतिपद प्रान्तोंने नहरोंको बढ़ाकर,नलकूप बैठाकर एवं जलसे विद्युत पैदा करके कृषि भूमिकी सिंचाई की व्यवस्था पर्याप्त करनेका कार्य भी बड़ी तत्परताके साथ आरम्भ कर दिया है। केन्द्रकी सहयता के भरोसे हाथपर हाथ धरे बैठे रहनेकी नीतिको त्याग करके जिन प्रान्तोंने कृषि उत्पादन बढ़ानेकी अपनी स्वतंत्र योजनाएं पहलेहीसे कार्यान्वित करना आरम्भ कर दिया है,उनको खाद्यान्न नीति समिति द्वारा सुझाये गये प्रस्तावोंके अनुसार काम शुरू होनेपर बड़ी सुविधा और सहायता मिलेगी। उनकी यह दूरदर्शिता प्रशंसनीय है। एक करोड़ टन अर्थात् प्रायः २८ करोड़ मन प्रति वर्ष अन्न उत्पादनमें वृद्धि सहज काम नहीं है। अतः अधिकसेअधिक तत्परताके साथ प्रान्तों और देशी रियासतोंको केन्द्रके साथ सहयोग करनेके लिये प्रस्तुत रहना चाहिये। उनको पहलेहीसे अपनी मशीनरीको इस तरह पुन संगठित कर रखना चाहिये ताकि इस योजनाको पांच सालके भीतर पूर्णतया कर्यान्वित किया जा सके। इस योजनाकीसफलतामें समयका बहुत मूल्य है, क्योंकि खाद्यान्न नीति समितिने प्रति वर्ष आबादीमें ५० लाखकी वृद्धिक अनुपात सामने रखकर योजना तैयार की हागी। अतः यदि समय के अन्तर्गत योजना पूरी न हुई तो आबादी तो बढ़ती ही जायेगी और इस तरह अन्नाभावकी समस्या बनी ही रहेगी। इसलिये केन्द्र, प्रान्त तथा देशी रियासतोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलकर इस तरहका प्रयत्न करना चाहिये कि पांच वर्षके भीतर देश एक करोड़ टन अन्न अधिक उत्पन्न करने लगे अन्न ताकि कमसेकम जहांतक अन्नका संबंध है हम स्वावलम्बी हो सकें और इस तरह विदेशोंसे अधिक मूल्य देकर हमें आज जो अन्न खरीदना पड़ रहा है उसमें फंसी रकम हम विकास और समृद्धिकी अन्य दिशाओंमें लगा सकें ।

देशकी सरकारके साथ-साथ जनताका भी कर्तव्य है कि वह उत्पन्न अन्न बढ़ानेकी योजनाको कार्यमें परिणत करनेके लिये स्वेच्छापूर्वक अपना पूर्ण सहयोग सरकारको दे । बिहार और युक्त प्रान्तके जमींदारोंको खासकर इस बातको ध्यानमें रखना चाहिये कि वे सरकारकी भू-सुधार योजनामें बाधक न हों, क्योंकि उनको सफलता तो मिलेगी नहीं अवश्य ही उनकी अवांछनीय नीतिसे कुछ अनावश्यक बिलम्ब अवश्य लग सकता है जो देशके लिये बहुत हानिकर सिद्ध होगा । उनका यह आचरण, उनको जनता और सरकार दोनोंकी दृष्टिमें अप्रिय बनायेगा, जो उनके भविष्यके लिये कदापि वाञ्छनीय नहीं समझा जा सकता ।

एक बात और । अन्नोत्पादनमें वृद्धिसे जनसाधारण लाभ उठा सकें, इस दृष्टिसे सरकारकी आर्थिक नीतिमें भी तदनुकूल संशोधन होना चाहिये । जिसकी ओर दयानन्द नीति समितिकी रिपोर्ट में शायद उसके अधिकारके बाहरकी बात होनेसे कोई उल्लेख नहीं किया गया व्यवसायियों और व्यापारियोंपर इस तरहके प्रतिबंध लगाये जाने चाहिये ताकि उत्पादक अधिक अन्नका अधिकाधिक लाभ वे ही न मार लेंजायें और जनता तथा अन्न उत्पादन करनेवाले उससे फिर भी बंचित रहें । हमे आशा है कि सरकार इस ओर पर्याप्त सतर्कतासे काम लेगी तभी देशको अधिक उत्पन्न अन्नका लाभ प्राप्त हो सकेगा ।

## ऊटी सम्मेलन

एशियाई देशोंके बीचके आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सम्पर्क सदियों पुराने हैं । इन सम्पर्कोंको अधिक सुदृढ़ बनाने और सन्निकट लानेके लिये यह आवश्यक है कि वे परस्पर एक दूसरेके सुखदुखमें साथी बनें । इस दृष्टिसे यह आवश्यक है कि एशियाई देश समान आर्थिक समस्याओं पर एक दूसरेके हितका ध्यान रख कर परस्पर विचार विनिमय करें और इस तरह जहां तक संभव हो एशियाई देश अपनी आर्थिक आवश्यकताएं आपसमें ही पूरी करनेका प्रयत्न करें । पण्डित नेहरू के नेतृत्वमें भारत बराबर ही एशियाई देशोंके अधिकाधिक निकट आनेका प्रयत्न करता रहा है । पण्डित जी बरा-बर एक एशियाई संघकी आवश्यकता महसूस करते आ रहे हैं । इसी उद्देश्यसे गत मार्च महीने में दिल्लीमें एक एशियाई सम्पर्क सम्मेलन किया गया था जिसमें प्रायः सभी एशियाई देशोंके प्रतिनिधियोंने भाग लिया था । यह गैर सरकारी सम्मेलन था ।

संयुक्त राष्ट्र संघने एशियाई और सुदूरपूर्वके लिये एक आर्थिक कमीशन नियुक्त किया है । इसका काम सुचारु रूपसे तभी संपादित हो सकता है जब कमीशन द्वारा की गयी सिफारिशोंको प्रत्येक देशका पूरा पूरा सहयोग मिले । इसी उद्देश्यसे ऊटकमंडमें एक जून से एशियाई और सुदूरपूर्वके लिये संयुक्त राष्ट्र संघ आर्थिक कमीशनका ,अधिवेशन होने जा रहा है । इस सम्मेलनमें प्रत्येक देशके चुने हुए विश्वास प्राप्त सरकारी प्रतिनिधि भाग लेंगे और भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू सम्मेलनका उद्घाटन करेंगे । एशिया और सुदूर पूर्वके आर्थिक पुन संगठन और आर्थिक स्तरको ऊपर उठानेकी समस्याओं पर सम्मेलनमें विचार होगा । यह कमीशन ऐसे समयमें बैठ रहा है जब दक्षिण और पूर्व एशिया प्रदेशान्तर्गत रहनेवाले लोगोंकी भलाईसे सम्बन्ध रखनेवाली बहुसंख्यक महत्वपूर्ण समस्याओंका समाधान केवल एशियाके हितकी दृष्टिसे ही नहीं सम्पूर्ण संसारकी दृष्टिसे आवश्यक है और अधिक विलम्ब हानिकर सिद्ध हो सकती है । इस दृष्टिसे ऊटी सम्मेलनका महत्व स्वयं स्पष्ट है । एशियाके इतिहासमें इसका अपना एक विशिष्ट स्थान होगा । ऐसा समझा जाता है कि भारतके ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर और इस अधिवेशनमें भाग लेनेवाले भारतीय प्रतिनिधि मण्डलके नेता डा० मथाई ऊटी सम्मेलनके अध्यक्ष चुने जायंगे । और ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डल अध्यक्ष पदके लिये डा० मथाईका नाम उपस्थित करेगा । आसामके पूर्व गवर्नर सर एण्ड्रू क्लो ब्रिटिश प्रतिनिधि नेता होकर आ रहे हैं । हम आशा करते हैं कि कमीशन एशियाकी आर्थिक समस्याओं पर विचार करते समय इस बातका ध्यान रखेगा कि एशियाकी आर्थिक उन्नतिमें कतिपय पश्चिमी देशोंका, खास कर ब्रिटेन, फ्रांस, हालैंड और अमेरिकाका स्वार्थ सबसे अधिक बाधक है । साम्राज्यवादने एशियाई देशोंमें जो पैर फला रखे हैं जब तक उसके पैर काट कर छोटे नहीं कर दिये जायेंगे तब तक एशियाके आर्थिक पुनसंगठनकी योजना स्वतन्त्रता और स्वच्छंदता पूर्वक कार्यान्वित नहीं की जा सकती ।

## धैर्य धरो

सुन्दर और असुन्दर, अमृत और विष, सत्य और असत्य एक दूसरेसे सर्वथा विपरीत गुणधारी होते हुए भी सृष्टिके आदि कालसे समवयसी साथी और पड़ोसी हैं । संसारमें अमृत, सुन्दर और सत्यके लिये सदासे साधना, तपस्या और त्याग किया जाता रहा है, किन्तु विष और असत्य असुन्दर अन्यायके उपासकोंने इनको ही अमृत, सत्य, सुन्दर बताकर इनकी सत्ता कायम करनेकी सदा चेष्टा की है । जब इनको सफलता मिली है, संसारमें अनाचार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अशांति, संघर्षका जोर और दबदबा रहा है, किंतु फिर भी अमृत, सत्य और सुन्दर, इनका क्षेत्र भले ही सीमित हो गया है, कभी दबाये नहीं जा सके और इनके तेज और प्रकाशका ही परिणाम है कि संसार अन्धकारमें विनष्ट होते-होते बचा है। छद्मवेशी अमृत, सत्य और सुन्दर बहुत दिन तक अपने विषैले प्रभावको छिपाये नहीं रह सकते और धीरे-धीरे उनकी माया नष्ट होने लगती है और सत्य सुन्दरकी प्रतिष्ठा होने लगती है। देशकी सत्य और सुन्दर शक्तियोंने अपने अपूर्व साहस, तेज और त्याग-तपस्यासे विदेशी सत्ताका अन्त किया है। किन्तु आसुरी शक्तियां नहीं चाहती, कि देशमें सत्य और सुन्दरकी प्रतिष्ठा हो यही कारण है कि हम देखते हैं कि आज स्वतंत्र भारतमें "नाना वेश धराः कौलाः विचरन्ति महीतले"। इसीका परिणाम है कि स्वतंत्रताका सुख भाई–भाईकी हत्या, रोटी और कपड़ेके अभाव, तथा भांति-भांतिके अनाचारों, भ्रष्टाचारोंके दारुण दुःखमें बदलता जा रहा है। स्वतंत्रताके साथ-साथ पाकिस्तानका अन्य, विदेशी शक्तियोंका भारत और पाकिस्तानके पारस्परिक संपर्कको कटु एवं विषादमय बनाये रखनेका घृणित प्रयास, एवं इस स्थितिसे नाजायज लाभ उठानेकी कुत्सित मनोवृत्तिवाली हमारे बीचकी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आसुरी शक्तियोंकी दुरभिसन्धियों और दुरभिलाषाओंने देशके भीतर अधैर्य, असंतोष और अशांतिके भयंकर वातावरणकी सृष्टि की है। सत और असत की पहचान मुश्किल हो गयी है। अजीब माया है! सत्य और सुन्दरके उपासक किंकर्तव्य विमूढ़ हो विपथगामी हो रहे हैं। यह विकट परीक्षाका समय है। सत्य और सुन्दरके उपासक अधीर और अस्थिर चित्त होकर धीरे-धीरे आसुरी मायाके शिकार होते जा रहे हैं। साम्प्रदायिकता और प्रान्तीयताके दैत्य धीरे-धीरे अपना विकराल रूप धारण कर रहे हैं। राजनीतिक और आर्थिक असंतोष फैलाया जा रहा है। इसी तरहकी स्थितिको लक्ष्यमें रखकर उस दिन दार्जिलिंगमें पश्चिमी बंगालके गवर्नर चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने मायाके वशीभूत होते चले जानेवाले सत्य और सुन्दरके उपासकोंको स्मरण कराया है कि "स्वतंत्रताका बोझ सरकारने अभी-अभी उठाया है और उसके सामने बहुसंख्यक समस्याएं एवं कठिनाइयां हैं। इसलिये आपको जरा धैर्य रखना चाहिये। सरकारकी स्थिति उस आदमी जैसी है जिसने मरम्मतके लिये अपने घरमें अभी मात्र पैर रखे हैं जहां चारो तरफ विशृंखलता और अव्यवस्था है। कहीं कहीं छत भी गायब है। इस स्थितिको सिलसिलेमें ले आने तक आप प्रतीक्षा कीजिये।" स्वतंत्रताके आनेके साथ-साथ देशमें जिन आसुरी शक्तियोंका प्राबल्य बढ़ने लगा है यदि उनको हमें दबाय रखना है तो हमारा यह फर्ज हो जाता है कि हम अपनी सरकारको सब भांति सहयोग दें। समय और सहयोग मिलनेसे हमारी सरकार, हमारे नेता और हमारे प्रधानमंत्री पंडित नेहरू एवं उनके साथी देशका रूप बदल कर सुख और शांति गंगा बहानेकी क्षमता रखते हैं। यह बात कीकोई कल्पना या अतिरंजन नहीं है। देशसे दरिद्रता दूर करके, शोषणके रास्ते बन्द करके समाजको अभावमुक्त करनेकी दिशामें हमारी सरकार केवल बातें ही नहीं कर रही हैं। भारत सरकारकी उद्योगीकरण की नीति बम्बईकी पांच साला औद्योगिक योजना युक्त प्रान्तकी उद्योग-विस्तार-योजना नवीन नगर और नहर निर्माण योजना, बिहार तथा संयुक्त प्रांतमें जमीन्दारी मिटाकर नवीन भू प्रणाली प्रवर्तन की योजना, दामोदर, कोसी, हीराकुण्ड प्रभृति बांध निर्माण द्वारा भूसिंचन एवं विद्युत उत्पादनादिकी योजनाएं बताती हैं कि हमारी सरकार देशका आर्थिक स्तर ऊपर उठानेके लिये चिन्तित है। देशको सरकारके इस काममें पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिये। किन्तु देखा जाता है कि अवसरवादी, सुविधावादी आसुरी शक्तियां सभी क्षेत्रोंमें उसके सामने कठिनाइयां खड़ी कर रही हैं। कहीं भाषाके नामपर प्रान्तीयताकी विद्वेषाग्नि भड़काकर वर्तमान सरकार के विरुद्ध असंतोष पैदा किया जा रहा है, विद्रोह भड़काया जा रहा है तो कहीं आर्थिक क्षेत्रोंमें असंतोष पैदा करके नेतृत्व हथियाने की कुचेष्टा की जा रही है। कांग्रेस बार-बार कह चुकी है कि समानताके आधारपर समाजका निर्माण करना हमारा लक्ष्य है। अतः आज हमारे सामने पहला कर्त्तव्य यह है कि जिस तरह हो हम अपनी स्वतंत्रताकी रक्षा करें। यह तभी हो सकता है जब देशकी समृद्धि और उन्नतिके लिये कांग्रेस सरकार द्वारा निर्धारित कार्यक्रमोंको पूरा करनेमें हम सहायता दें। किन्तु हम देख रहे हैं कि कम्यूनिस्ट एवं अन्य प्रतिक्रियाबादी दल प्रगतिवादका ढोल पीट कर देशको गुमराह करनेमें लगे हुए हैं। देशके स्वार्थको धक्का लगा कर ये अपने निजी स्वार्थके लिये प्रत्येक असंतोष सरकारके खिलाफ विद्रोहाग्नि भड़कानेका साधन बताते जरा नहीं हिचकिचाते। इस स्थिति का हमें सामना करके देशमें श्रमिकों और किसानोंके नामपर फैलायी जानेवाली उच्छखलताको डुबाना हमारा पहला काम हैं। तभी हम सत्य और सुन्दरकी प्रतिष्ठा कर सकेंगे।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# टर्कीमें नारी-जागरण

लेखक-श्री गंगाप्रसाद श्रीवास्तव

आज संसारके प्रत्येक राष्ट्रने प्रयोग करके देख लिया है कि किसी भी राष्ट्रकी उन्नति केवल पुरुषोंकी ही उन्नतिसे नहीं हो सकती। पुरुषोंका पुरुषत्व केवल परुष भावोंकी सृष्टि कर सकता है, केवल कठोर योजनाओंका संपादन कर सकता है; पर्वतको तोड़ सकता है, कणकणमें बिखरा सकता है, पर नन्हें नन्हें कणोंसे वैसा ही सुन्दर पर्वत फिर नहीं बना सकता। यदि उसने प्रयास करके बनाया भी तो उसमें नैसर्गिकताकी सुन्दरता न रहेगी। अर्थात् पुरुषमें विनाशकारी प्रवृत्तियां प्रधान होती हैं, तो नारीमें सृजनात्मक केवल विनाश हीसे हम उन्नति नहीं कर सकते, उन्नतिमें दो मूल –विनाश और सृजन। तभी वास्तविक समुन्नति तथा सुख होता है।

टर्कीने भी इसी प्रवृत्तिके अनुसार अपने कदम उठाये और इतनी तेजी तथा दृढ़तासे बढ़ाये कि बिना कहीं गिरे हुए सबके साथ आ पहुंचा। । वहांकी स्त्रियां यूरोपकी स्त्रियोंकी भांति स्वतंत्रता पूर्वक विचरती हैं, स्वतंत्र वातावरणमें पलती हैं। जीवनके यथार्थ विकासके लिये स्वतंत्रता अत्यन्त ही आवश्यक है। और आज टर्कीकी नारीको व्यक्तिगत सभी सामाजिक स्वतंत्रताके अधिकार प्राप्त हैं। यहीं कारण है कि आज टर्कीकी नारियां पुरुषोंके साथ कंधेसे कंधा मिलाकर कदम-से कदम मिलाकर उसे प्रत्येक क्षत्रमें सहायता दे रही। कुछ पिछले वर्षोंमे टर्कीने जो अभूतपूर्व उन्नति प्राप्त की है, इसका बहुत कुछ श्रेय वहांकी जिम्मेदार नारियोंपर भी है।

### पूर्वकी नारियां

वहांकी नारियोंकी सन् १९२५ के प्रथम जो दशा थी, कदाचित वैसी भारतमें तो नहीं थी। आज हमारे देशकी नारियां बहुत ही पिछड़ी हुई कही जाती हैं। जाग्रत् अथवा विकासके इस युगमें इधरके बीस वर्षोंमें भारतकी नारीने कुछ उन्नति अवश्य की होगी, पर आज तो भारतमें रियोंकी दशा शोचनीय है ही, परन्तुन टर्कीकी दशा तो बहुत शोचनीय थी। कुछ दोष तो ऐसे थे कि जिनके कारण नारीका जीवन मानुषिक न होकर पशुसे भी गया बीता था। पर्देकी प्रथा तो इतनी जटिल थी कि किसी भी नारीका कोई भी अंग किसी प्रकार दीख नहीं पड़ सकता था। पहले तो उनको कभी घरकी चार-दीवारीसे बाहर निकलने ही नहीं दिया जाता था। जीवनमें कुछ विशेष अवसरों पर यदि वह कदम बाहर निकालती थी, तो बिलकुल ढंकी हुई; कहीं हवा न लग जाय। अर्थात् संसार उनके लिये कुछ न था। उसका उपभोग करनेकी कौन कहे आंख उठाकर देख भी नहीं सकती थीं दूकानोंकी सजावट विविध खेल-तमाशे, नाच-रंग; उनके आमोद-प्रमोदकी वस्तु नहीं, वह केवल पुरुषोंके लिये ही थी। दृश्योंमें एक-एक रईसके यहां सैकड़ों स्त्रियां सड़ा करती थीं। वह केवल उनकी काम-वासनाकी तृप्तकी एक मात्र साधन थीं। बहु-विवाहकी प्रथा तो बहुत जोरोंपर थीं। स्त्रियोंका जो नारकीय जीवन हो गया था उससे तो मृत्यु भली थी। विशुद्ध प्रेम स्नेहका नाम उन्हें सुनने तकको न मिलता था। वहांके गंदे वातावरणमें वह घुट घुटकर मरती थीं। तिसपर यदि किसीने किसीको तलाक दे दिया तो उसका जीवन यापन कठिन ही हो जाता था। सामाजिक स्वतंत्रता तो नामकी भी न थी। .....तात्पर्य यह कि गृहमें संकुचित क्षत्रके अंदर रहते हुए वे नारियां उस तोते से भी गई बीती हो गयी थीं जिसको हम एक लोहेके पिंजड़ेमें बांध रखते हैं, वह पंख होते हुए भी उड़ नहीं सकता। पांव होते हुए भी चल नहीं सकता; आंख होते हुए भी देख नहीं सकता।

### कमालपाशाके सुधार

टर्कीमें स्वतन्त्र्य युद्धकी जागृतिके साथ साथ नारीकी भी जागृति प्रारंभ हुई। अनातोलियाकी स्त्रियोंने पुरुषोंकी बहुत-कुछ सहायता भी की थी पर उस समय कुछ अधिक सुधार न हो सका था टर्कीको स्वतंत्रता दिलानेका श्रेय कमालपाशाको है। देशकी राजनैतिक उन्नति साथ सामाजिक उन्नति भी आवश्यक होती है। अतः शक्तिशाली होनेपर कमालने इस क्षेत्रमें भी वही क्रान्तिकारी परिवर्तन किये उस समय टर्कीमें धार्मिक कट्टरता बहुत थी। कमालपाशाने उस कट्टरताको मिटानेके लिये मुल्ला मौलवियोंका दमन किया। इसलामी टोपीको हटा दिया। स्त्रियोंकी स्वतंत्रताने विरोधी मुल्लाओंको कठिन दंड दिया। इस प्रकार धार्मिक बाधाएं उसने बिलकुल दूर कर दीं।

कमालपाशाने देशमें इधर-उधर घूम-घूम करके भाषण दिये और नारियोंको अपने दायित्व बतलाये। उनके प्रति पुरुषों के विचारोंमें आमूल परिवर्तन कर दिये। वह कहता था, "जो समाज केवल पुरुषोंकी ही उन्नतिसे संतुष्ट हो जाता है वह भयंकर भूल करता है। पुरुषोंकी उन्नति केवल आधी उन्नति है। अपनी पूर्ण उन्नतिके लिये स्त्रियोंको समान अधिधकार देना परमावश्यक है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसके अतिरिक्त कमालने क्रियात्मक कार्य भी किये । स्त्रियोंको पुरुषोंके ही समान अधिकार दिये । बहु विवाहक प्रथाको उठा दिया गया । बहु विवाह इस अवस्थामें जब कि स्त्रियां पर घर जाती ह उचित कहा जाता है पर एक ही साथ तमाम बीबियां रखना यह तो पूर्ण अमानुषिकता है । पर्देकी भीषण प्रथा भी उठा दी गयी । स्विटजरलैंड, जर्मनी फ्रांस, इटलीकी भांति टर्कीने भी कानूनोंमें आमूल परिवर्तन कर दिये । कमाल पाश्चात्य देश-भूषा, पाश्चात्य सभ्यताका पोषाक था, अतः उसने टर्कीकी स्त्रियोंको इंग्लैंडकी 'शाप गर्ल' की भांति रहनेका आदेश दिया । उनका वह बुर्का और ढीले-ढाले पहनावे हट गये । लाखों निवासियोंने उसी पाश्चात्य देशभूषाको अपना लिया । उनके आचार-विचार व्यवहार आदि भी बदल गये ।

टर्कीकी स्त्रियां हरमोंकी गंदगी जिन्दकी और दम घोंट देने वाले वातावरणसे निकल कर राष्ट्रीय क्षेत्रमें लायी गयीं । परिणाम स्वरूप जब पहले टर्कीको किसी भी सड़क पर कोई भी स्त्री नजर नहीं आती । आज विशेषकर इस्तम्बोल और अंगारा की सड़कोंपर गलियों और पार्कोंमें हजारोंकी संख्यामें तुर्की नारियां स्वतंत्ररूपसे घमती हुई दीख पड़ती हैं । उनके जीवनमें भी वह स्वतंत्रता है, जो पुरुषोंके । इसके पहले वही स्त्रियां सुल्तानोंके समयमें हरमोंमें पड़ी सड़ा करती थीं; पुरुषोंकी ठोकरों की उन तिरस्कृत जूतियोंके सामन जिनको जब चाहा, पहना और जब चाहा, एक कोनेमें फेंक दिया । सड़नेके लिये, घुट-घुटकर मरनेके लिये । समाजमें उनकी क्या प्रतिष्ठा थी, यह अब सभी समझ सकते हैं । एक-एक पुरुषके घरमें कई नारियां सर्द आहें भरा करती थीं । ईश्वरने उनको नारी बनाया था तो जो अत्याचार पुरुष करे सहनेके लिये ? क्या सामाजिक विधान था स्त्रियां गुलाम थीं ? कमालपाशाने इसी गुलामीकी प्रथाका अंत किया था ।

शिक्षाका भी काफी प्रचार हुआ । कमालपाशाके प्रयत्नसे शिक्षाके प्रति इतना चाव उत्पन्न हो गया था कि इंग्लैंड और अमेरिकाके कालेजोंमें टर्कीकी छात्राओंकी संख्या सबसे अधिक रहती है । बाहर जाकर शिक्षा प्राप्त करना यह क्रान्तिकारी परिवर्तन कमालके द्वारा संभव है टर्कीमें भी बहुतसे स्कूल खोले । गये अंगाराका 'अमेरिकन महिला कालेज' आश्चर्यजनक कार्य कर रहा है । टर्कीकी शिक्षामें यह विशेषता है कि उन्हें केवल किताबी शिक्षा ही नहीं दी जातीं । वरन् वहांकी छात्राओंको पाश्चात्य देशोंकी भांति व्यापक नृत्य आदिकी शिक्षा भी दी जाती हैं । टर्कीमें यह शिक्षाका प्रसार है ।

आज टर्कीमें प्रथा बिलकुल उठ चुकी है । बुर्का पहिनकर छोलदारियोंकी भांति चलती फिरतीं दिखलायी देनेवाली स्त्रियां आज यूरोपीय ढंगकी चूस्त-दुरुस्त पोशाक पहने तितलियोंकी तरह इधरसे उधर घूमती दीख पड़ती हैं । टर्कीके गांवोंमें भी यूरोपीय शैलीके घर बन रहे हैं । वहां वह गांवकी सब नर-नारियां यूरोपकी भांति किसी नृत्यशाला, संगीतशालामें एकत्र होकर आमोद-प्रमोद करते हैं और अपने जीवनकी विषमताको मिटाते हैं । इस प्रकारके जन-गहोंका आजकल वहां बड़ा प्रचार हो रहा है । आज १६०० वर्षकी पुरानी सामाजिक व्यवस्थाका अंत हो गया है ।

### महिलाओं द्वारा जनकार्य

टर्कीकी महिलाओंमें जनकार्यकी ओर बड़ी रुचि है । यही कारण है कि अस्पतालोंमें काम करनेवाली नर्सों जच्चाखानोंकी दायियोंकी अन्य देशवाले भी प्रशंसा करते हैं । आजकी टर्कीकी नारियोंके लिये गाड़ियोंमें पर्दे लगानेकी आवश्यकता नहीं । तलाकके बाद उनका जीवन जो नया बन जाता था । आज वह बात नहीं वहांकी नारियोंको विचार स्वतंत्रता भी प्राप्त हो गयी है । पतियोंकी गुलामीसे उनका जीवद मुक्त हो गया है ।

आजकल वहांकी महिलाएं पुरुषोंके साथ प्रत्येक क्षेत्रमें समान कार्य करती हैं । प्रत्येक विभागमें सरकारी पदोंपर महिलाएं नियुक्त की जाती है । वे सरकारी कारखानों, आफिसोंमें काम करती हैं । इसके अतिरिक्त अध्यापन कार्य वायुयान संचालन, सामरिक शिक्षा तथा इंजनियरिंग आदिके महत्वपूर्ण कार्य सीख रही है टर्कीमें नये विधानके अनुसार बीस लाखसे भी अधिक महिलाओंको वोट देनेका अधिकार मिला है । और वे राष्ट्रीय परिषदकी सदस्या भी हो सकती है । राष्ट्रीय परिषदकी असेम्बलीमें आजकल १७ महिलाएँ हैं ।

देशमें राष्ट्रीय भावनाको जागृति करनेके लिये अन्य देशोंकी भांति बीर रमणियोंकी मूर्त्तियां बनवायी गयी हैं । तथा स्मारक बनवाये गये हैं ।

इस प्रकार आजकी टर्कीकी नारीमें और बीस वर्ष पूर्व की टर्कीकी नारीमें जमीन आसमानका अंतर है । आजकी नारी इंगलैंड और अमेरिकाकी नारीकी भांति अपने कर्तव्योंकप्रति जागरुक तथा प्रयत्नशील है और तभी आज टर्कीसा छोटासा देश इतना उन्नत है । इसी अभावके कारण आज हमारा भारत कितना गरा हुआ है । यह प्रतिदिनके अनुभवकी बात है ।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आधुनिक उर्दू कविता में प्रगतिवाद

श्री नि ङ्कारदेव सेवक, एम० ए० साहित्य त्न

प्रगतिवादपर हिन्दीमें काफी विचार हुआ है। लोग इस संबंधमें अनेक प्रकारकी धारणाएं अपने मस्तिष्कमें बनाये हुए हैं और उन धारणाओंका प्रभाव साहित्यपर भी पड़नेसे उश्रृ खलता और समाजके निम्न वर्गके व्यक्तियोंके प्रति एक बनावटी सहानुभूति रखनेको है। । बहुतसे लोग प्रगतिवाद मानने लगे हैं। अभी उस दिन श्री मती महादेवी बर्मा हिन्दीके बने हुए प्रगतिवादियोपर हंसकर कह रही थीं—"अ.जकलके प्रगतिशील कवियोंक.तो यह हिसाब है कि इतव.रपर किसी छुट्टीके दिन नगरके पास डाले किसी गांवमें वहां ज.कर एक निर्धन किस.नके हाथपर जेबसे निक.लकर चवन्नी रखते हुए कह. —"जरा अपना हल तो हमें दिखान....., इसके इसभागक. क्या ना और इस भागका क्य. प्रयोग है। और इएसबको अजऋनी होटबुकमें नोर करके ले आये। घर आकर कुछ विचित्रसे गांवव.लोंके शब्दोंक. प्रयोग करते हुए 'हल' के उउऊपर कुछ तुकें जोड़ डाली और लो, बस हो गयी .प्रगतिशील कवित. ।" मह.देवीजीक. यह कथन एक मधुर व्यंग्य ही नहीं किन्तु इस सत्यको कोई अस्वीक.र नहीं कर सकता। कि प्रगति शब्दके व.स्तविक अर्थको भलीभांति 'न समझनेके क.रण कवित.के क्षेत्रमें बड़ा अनर्थ हो रहा है। " साधारणतय. मजदूर, मिल म.लिक, किस.न, जमींदार धनी, निर्धन धार्मिक, अछूत तथा सम.जके उच्च और निम्न वर्गोंके संघर्षको व्यंजित करनेव.ले स हित्यको ही प्रगतिशील स हित्य संज्ञा दी ज तीहै।

उर्दू कवित मह कवि वलीसे लेकर' ह ली' तक प्रायः एक निश्चित गौर सीमित धार में हो बहती रही। सभो श यरोंने इश्किय गजलें लिख कर प्रेमी हृदयकी टीस, वेदना और मिलन, अभिल षा की अभिव्यक्तिके लियु ही कवित को म ध्यम म न। इन गजलोंमें इश्कमज जीकी अधिकत में कहीं -कहीं इश्कहकीकीकी झलक भी दिखाई दे ज ती है। किन्तु म नव हृ दयकी अन्य न्य वृत्तियां तथा जीवमसे संबंधित ,न्य ब त ोंक दिग्दर्शन उल्में ननहीं पाया गया। इस समयके कवियोंमें केवल नजीर अकबर - ब दीने कृ ष्णकन्हैय, बरस त, बनज र न मी अ दि नजमें लिखकर मह कवि सौद ने कसीदेकी शुरूअ त करके और "अनीस" तथा "दबीर" ने कठील कर्बल के युद्धके शहीदों पर मर्सिय लिखकर क ककी नयी दिश ओंकी ओर संकेत किय।

ह लीने सबसे पहले देश कऔर सम.जकी उथल-पुथल के दर्शन अपने क व्यमें कर ये और भारतव सियोंके मनोभावोंको उभारदनेव ली अनेकों जोशिली कवित.एं लिखीं। ह लीके ब द 'अकबर' की व्यंग त्मक कवित ओंपर देश क लक. प्रभाव सबसे अधिक पड़ा। अकबर सस्वभाव से तो प्रतिक्रिय व दी थे परन्तु उनकी रचन.में हमें तत्क.लीन नवयुवक सम.ज विच.रोंअ. प्रतिबिम्ब मिलत. है। देशके नवयुवक न.स्तिक.व.द गौर घोर अस.रिकत.कन ओर झुकने लगे थे। इसी पर व्यग्य करते हुए उन्होंने कह. है।

रकीबोंने रपट लिखव.ई है ज. ज. के थानोंमें,
कि अकबर जिक्र करत. है खुद.कर जम.नेमें।
फिटन नफीस सड़क खुशनुम. डिनर हर शब
यह लुत्फ छोड़के हज क. सफर ? यह खूब कही।

अकबर प्रगतिव.दी नेंहीं थे किन्तु उन्होंने परम्पर.की रूढ़ियोंमें ब.हर निक.ल उर्दू कवित.को एक नयी जमीन दी इसमें संकेदेह नहीं किय. ज. सकत. । .

अकबरके समयसे ही देशके जीवनमें ज गृतिके चिह्न दिखाई देने लगे थे ।र.ष्ट्रीय चेतन.की एक लहरसी र.जनीतिक अ.न्दोलनोंमें के स.थ देशके कोने-कोनेमें दौड़ गयी थी। उर्दू कवियोंमें 'पुसुबह वतन" के सुप्रसिद्ध रचयित. "चकवस्त"की रचन.ओंमें इस चेतन.कन पूर. अ.भास हमें मिलत. है, किन्तु उनगकी र.ष्ट्रीयत. बहुत अधिक हिन्दूपन लिये हुए थी। इसी समय ल.हौरके अमह.कवि इकब.ल इस नवीन अ.योजन.ओंकी ओर संकेत करते हुए कह. :—

सच कह दूं ये विरहमन गर तू बुर. न म.ने,
तेरे सनमकदोंके बुत हो गए पुर.ने।"

अपने जीवनके अन्तिम दिवसोंमें वे मुस्लिम धर्म और दर्शनकी ओर इतने अधिक झुक गये थे कि कह. ज.त. है उन्होंने स्वयं अपनी कलमसे र.ष्ट्रीय भावन.ओंसे ओत्प्रोत अपनी कई कवित.ओंक. स्वरूप बिलकुल बदल दिया।

देशमें इस राष्ट्रीय चेतनाके विकासके साथ साथ निर्धन धनवान्, सांसारिकता और पारलौकिकता उच्च और निम्न वर्गका संघर्ष और भी जटिल होता गया। इस संघर्ष के उग्र होनेसे घबर.कर स्वभावसे ही कोमल होनेके क.रण कुछ व्यक्तियोंने बचावके उपाय सोचे। इन मैदान छोड़कर बगले झांकनेकी चेष्ट करनेवाले कवियोंमें अग्रगण्य अस्तर शीरानी, सागर निजामी, फितरतवात्सी का और शौकत थानवी हुई, जो प्रेम और सौंदर्यके एक काल्पनिक अपने को सुरक्षित रखनेका उपक्रम करने लगे। कुछ दूसरे वर्गके कवियोंने स ारी समस्यओंकाहल मुस्लिम धर्म और दर्शनमें खोजनेकी चेष्ट. की। इन कवियोंमें हफीजजालन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धरी, रविश सद्दीकी, और एहसान विनदानिश मुख्य हैं। कवियोंके इन दोनों वर्गके अतिरिक्त एक तीसर वर्ग भी था, जिसने हमारे जीवनके संघर्षका टडकर सामना किया। इस वर्गके कवियोंमें जोश मलिहरवादी, मजमग लखत्रनवी, अली सरदार जाफरी, मुईन एहसानजजवी और मखदूम मुईउद्दीन के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

इस तीसरे वर्गके कवियोंने देशकी गरीबी और दलित वर्गकी दयनीय दशाको अपनी कवितमें चित्रित किया। देशके दुःखी, परेशानी और तड़पते हुए जीवनसे इन्होंने कवित लिखनेके लिये प्रेरणा ग्रहण की। शर ब और सौंदर्य के अमर कवि जोश "फलसफये पेक र" लेकर साहित्य क्षेत्र में आये हमारे सामने आये। भारतवर्षकी निर्धनताके जैसे करुणपूर्ण चित्र जोशीने अपनी कविताओंमें खींचे हैं वैसे कदाचित् हिवदी भर उर्दूकी कोई भी दूसरा कवि चित्रित नहीं कर सका। है। "भूखा हिन्दोस्तान" नामक कवितामें वे कहते हैं ::

एक मूफलिसके अंकामें कल मेरा हूआ गुजर,
खाकपर बैठा था बच्चा और बीबी तख्त पर
तख्त ईंटोंकी कमी वेशीसे नाहमवारका
वजन इक नाजुक सी औरत जिवसपर वार था ।
खेलनेमें तिफलकें गुलफाम था डूबा हुआ,
आई इतनेमें गलीसे आन व.ले की सदा।
कांपती आई सदन हिलने लगा बच्चेका दिल।
सांस ली यों जैसे रक्खी हो कोई छातीपर सिल,
हो गई अगली जिदोंको यदासे दुनिया सियाह,
मांके चेहरे की तरफ ड.ली झिझकती सी निगाह।
मांकी नजरें उठ गयी उठकर फिरा, फिर कर झुकीं,
हाय मेरे लाल मेरे पास तो कुछ भी नहीं।
देख कर मां की उद.सी हो गई परम.ल अ.स,
अंखड़ियोंमें आग की सुर्खी तखम्मुल में मिठोस।
आह ऐ हिन्दोस्तां ऐं मुफलिसों की सरजमी ॥

भारतवर्षकी निर्धन गृहस्थियोंका इससे अधिक करुण और कौन दृश्य हो सकत. है। संस्कृतके किसी प्राचीन कविने इसी प्रकारका भाव अपने एक श्लोकमें व्यक्त किया था

अये लाजानुचैः पथि वचनमाकर्ण्य गृहिणी
शिशोः कर्णोयत्नात्सुपिहितवयी दीन वदना।
मयि क्षीणोपायं यदकृत दशा वश्रु शवले।
तदन्तः शल्यं मे त्वमिव पुनरुद्धर्तुमुचितः।

एक वृद्धाकी जिसकी सुधि लेनेकी परवाह इतने लम्बे चौड़े संसारमें एक व्यक्तिको भी नहीं, वर्णन करते हुए जोश साहब फरमाते हैं :-

एक जईफा सो रही हैराहतेमें खाक पर,
मुर्दनी छाई हुई है चेहरये गम नाक पर
इबरतो दहशति का खंजर है दिले गमन.क पर,
हाय ! ये बेदम पड़ा है कौन ? ठंडी खाक पर
आह ! ये बेकस जईफा गम की तड़पाई हुई,
ये जमाने की झिझोड़ी जर की ठुकराई हुई।
खिदमते अगजाच से फुर सत कोई पाता नहीं।
सच है अपनों पर गुलामों को तरस आता नहीं ॥

समाजमें निम्न श्रेणीके इन लोअगोंकी इ सबुरी अवस्थान की कारण भी वे जानते हैं। कि वे सरमायदार जो गरीबोंकी उत्पन्न की हुई दौलत पर फूलकर वैभव विलासकी जिन्दगी बसर करते हैं। वह ऐसे जमींदारोंको किन शब्दोंमें सम्बोधन करते हैं :-

ऐ गदापेशोंके सुलतां, जाहिलों के ताजदार
वेजरों के शाह दार पूजाघरों के शहरदार।
वह उनसे पूछते हैं ::
जूतियां तक छीन ले इन्सान की जो सामराज,
क्या उसे यह हक पहुंचता है कि रक्खे सर पै ताज ॥

और उनका तो पक्का विश्वास है :-

चिसके लाताद को मुर्दों को कफन मिलत. नहीं
उसके परचम को निगल ज.ती है बिल अ.खिर जमीं।

आजके कविका काम वस्तु-स्थितिका केवल यथातथ्य वर्णनमात्र कर देना नहीं। वह मनुष्योंको एक नग़हान् क्रांति अथवा परिवर्तनके लिये उत्तेजित करनेकी आवश्यकता भी भली भांति समझता. है। अथवा अपनी जतिके लोगोंसे जोशका कहना है :-

सिर्फ रो लेने से कौमों के नहीं फिरते है दिन
खूं फिसानी भी है लाजिम अश्क अफशानीके साथ।
अथव.,
गए वह दिन कि तू चिजन्दों में आंसू बह.त. था,
जरूरत है कफस पर अब तुझे बिजली गिर.ने की।

देशके जमींद.रोंकी शरणमें रहकर अपनी जिन्दगीके दिन क.टने व.ले लोगोंसे वे कहते हैं :-

उठायेग. यहां तक जूतियां सरम.येद.री की
जो गैरत हो तो बुनिय.दें हिल.दें शहरय.री की।

सम.जमें गरी ब और अमीर की ऐसी विषम व्यवस्थ की जड़ है, वह ईश्वर जिवसक. न.म लेकर धर्मोके नियम बन.ये ज.ते हैं अग्रर जो गरीबोंको श.सित और पददलित रखनेमें एक बड़े हथिय.रक.क.म करत. है। रईसोंके उसी ईश्वरकी खिल्ली उड़ाते हुए वह कहत. है :-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह खुद. जो अ.दमी से च.हत. है बन्दगी,
तिरूगी डिसको बहुत है खुशनुम. अलफाज की ।
फातह. क. न.महलव. अ.ये दिन खभत. है जो
उंगलियों पर रोज अपन. न.म गिनवग़त. है जो
दत. रहत. है जिसकी खैर को इब्लीसे सर,
च बते हैं जिसके न द रोंके भेजें अहले जर ।
हुक्म है कि जिसक यों उंगली हिल.न. च.हिये ।
जब ग.ह.ई अ.ये तो चुटकी बज.न. च हिए ।
मरके जलन य किसी दरिय· पमें बहन च हिए ।
छींक जब अ ए य· अन-अलहम्द कहन च हिए ।

इत्य दि इत्य दि । इसी लिये वह इस सम जके सुधार की अ श क्रम विकास के सिद्धान्तपर नहीं करत । बिन क्रान्तिके किसी प्रक रक परिवर्तन असम्भव है । इसी लिये वहके रहनेव लोंको उक्तेजित करते हुए कहत हैं:-

ऐ ! हिन्द केजलील गुल म न रू सिय ह ।
श यर से तो मिल औं खुद के लिये निग ह ।
इस खौफन गक र ह की अ खिर सहर भी है ।
तोपें गरज रही हैं सरों पर खबर भी है ।
तुझको यकीं न अ येग पै द यमी गुल म,
मैं जा के मकबरों में सुन ऊं अगर पप म ।
खुद मौत से हय त से के चश्में उबल पड़ें .
कबरों से सर को पीट के मुरदे निकल पड़ें ।
तू चुप रह जमी म हिली अ समां हिल,
तुझ से तो क्य खुद से करूंग मैं गिल ।
इन बुजनिदलोंके हुस्न पै शैद किय है क्यों ?
न मर्द कौम में मूंझे पैद किय है क्यों ?

सम जकी दुव्यवस्थाके प्रति विद्रोहकी विगुल बहुतसे उर्दूके कवि श यरोंने बन य है । अली सरद र ज फरीक कथनहै :-

बगावत मेरी मंजिल है बग वत र स्त मेर,
बगावत मेर मजहब हैं बग वत देवत मेर,
बगावत रस्स्म चंगेजी से तहच्चा बे तत री से
बग ावत जब्रो इस्तब्द द से सरम यद री से ।
बगा वत अपनी अ ज दीकी नेमत खोने व लों से,
बगा वत अजमहे रफ्त : के ऊपर रोनु व लों से ।
बगा वत मुफलिसी की अ जब्र बद्दुग ओं से
बगा वत सख्त पत्थर की परह बेहस खुदाओं से
बगावत दर्द सहने से बगावत गम उठाने से ,
बगावत हां बजुज इन्स ान के सारे जमाने से ।

मखदूम मुहीउद्दीन तो वर्तमानकी दूषित व्यवस्थासे इतने तंग आगये कि महाप्रलयकी अभिलाषा करने लकते हैं :-

फूंक दो कसर को गर कन कर तमाशा है यही,
जिन्दगी छिन लो दुनियां से जो दुनियां है यही ।
जलजलों आओ , दहकते हुए शोलों आओ
बिगजलियों आओ गिरो और घटाओ छाओ ।
आंधियो आओ जहन्नुम की सवओं आओ ॥

इसी प्रकार मजजम साहब क्रान्तिकी तीव्र अभिलाषा रखनेवाले नवयुवक हृदयकी बेचैनीको प्रकट करते हुए अपनी "अबारा" नामक कविता में कहते हैं :-

जी में आता है ये मुरदा चांद तारे नाच लूं,
इस कनारे नोंच लूं और उस कनारे नोंच लूं ।
एक दो का जिक्र क्या सारे के सारे नोंच लूं ,
ऐ गमे दिल क्या करूं,ऐ बहशते दिल क्यकरूं ? (अपूर्ण)

---

[२०वें पृष्ठ का शेषांश]

कांग्रेस हीके – जमीन आसमान एक कर दिया । ऐयरने सारी बातें महात्माजीको भी लिखीं । ऐयरकी ही बात गान्धीजीको भी उचित जान पड़ी । गान्धीजीने भी कहा कि जबरदस्ती कोई सुधार न लादा जाय । फिर भी यह विवाद उग्ररुप करता जाता था जिससे ऐयरका दिल टूट गया । आश्रम भी इस विवादसे ऐसा न चल सका कि जैसा ऐयरने चाहा ।

खरडमें ऐयर पापनाशक झरनेमें अपनी पुत्रीके साथ स्नान करने गये । अचानक उनकी पुत्रीका पैर फिसल गया, वह पानीमें बह गयी । ऐयर पुत्रीको बचानेकी कोशिशमें गये । वे भी बह गये । यही उनकी आखरी लीला थी ।

ब्रिटिश सरकार अपनी सारी शक्ति लगाकर ऐयरको दबा न सकी । पर इस गृहकलहने सब कुछ कर दिया । अंग्रेज शासक इस गृहकलहसे इतना खुश हुए कि वे आपसमें अक्सर इसकी चर्चा भी करते थे ।

ऐयर तामिलके मजे हुए लेखक थे । पहले उनका आतंकवादमें अटल विश्वास था । पर गोन्धीजीके समाजमें प्रवेश करनेपर उनका मन भी उनकी ओर गया । ऐयर गान्धीजी शिष्य बननेपर एक दम महर्षि बन गये ।

एक बात सत्य है । दक्षिणमें सभी गुण हैं । सब काममें आगे रहता है । पर एक अवगुण जातिद्वेषका है । जिसके मिटने पर वह स्वर्ग हो जायगा । इसकों मिटाने के लिये दक्षिणमें एक गान्धीजीकी आवश्यकता है । पर, ऐसा तभी हो सकता है इनकी प्रेरणा करनेवालों आज बाहरी आदमी – ब्रिटिश – भारतमें नहीं रहा । क्या हम इसकी प्रतीक्षा कर सकते हैं कि वह अपना जाति द्वेष भूलकर राष्ट्रके निर्माणमें हाथ दें । ———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# फिलस्तीनकी समस्या और भारत

लेखक —श्री शिवदेव उपाध्याय, बी० ए० बाएल०

फिलस्तीन आज जल रहा है। पंजाब कल ही जल चुका। आप कहेंगे फिलस्तीन और पंजाबका तुक कैसा ? लेकिन हम हम कहेंगे कि दोनोंके लिये एक ही कारण है। और वह इसलिये कि साम्राज्यवादी देशोंके अधीनस्थ अंचलोंका यह दुर्भाग्य हो रहा है कि जब तक वे अधीनस्थ रहें तब तक अपदस्थ एवं शोषित हो और जब उनपर वे विदेशी सत्ताका प्रभुत्व विलुप्त हो जांय, तब उनके ध्वस्त होनेके उपकरण भी विदेशी सत्ताकी विरासतमें ही उपलब्ध हो जायें। ब्रिटिश शासनके हटते ही इसी विरासतका काश्मीर या कि यहांके दोनों ही विभाजित अंचलोंकी जनता आपसमें ही जूझने लगी और आज इसीके परिणाम फिलस्तीनमें भी भयावह दृश्य उपस्थित कर रहा है।

हम कभी स्वीकार नहीं करते कि फिलस्तीनमें आज जो ध्वंस-लीला चल रही है उसकी जिम्मेदारी ब्रिटेनपर नहीं है। १ मई १९४७ की बालफोर घोषणासे लेकर १४ मई १९४८ तक ब्रिटेनने कौन सा ऐसा कार्य किया जिससे कि फिलस्तीनमें शांतिके कारण उत्पन्न होते। ब्रिटिश साम्राज्यकी यह विरासत है जिसमें ब्रिटिश मैण्डेटके हटते ही यहूदी और अरब जूझने लगे हैं। भूमध्य सागरके हटते ही तटवर्ती नगरों, एकर हैफा, तेल-अवीव, जैफा, अलमदा और गजा सभीमें मौत नाच रही है। दूसरी ओर सीरिया, इराक और अरब जिनकी सेनाएं जोरदनको रक्त रंजित करती हुई जेरिको और मदरशलयमें मौत बरफा करनेके लिये रणोन्मादमें बढ़ती जा रही हैं। इस बातके लिये रायटरके सम्वाददाताका उत्तरदायित्व है कि उक्त अरब सैन्य वाहिनीका कमाण्डर एक अंग्रेज है। ऐसे अनेक अंग्रेजोंका हाथ काश्मी पर होनेवाले हमलोगोंमें भी बताया गय गा।

जियोनिस्ट आन्दोलनके जनक और जियोनिस्ट महत्वाकांक्षाओंको प्रतीक डा० वीजमैनको यहूदियोंने अपने नव प्रतिष्ठित राष्ट्र इजराइलका ७३ वर्षकी अवस्थामें निर्वाचित किया है। इजराइल राष्ट्रकी प्रतिष्ठा होनेके कुछ ही घंटोंके भीतर अमेरिकाने उस पर अपनी स्वीकृति देकर सर्वसाधारणको चकित कर दिया है। प्रेसिडेंट ट्रूमैकी इस आतुरताको जेनरल स्मिसो स्टैलिन नहीं समझ सकता था। ऐसा सोचना ही अदूरदर्शिता थी। मो० मोलोटोवने भी यहूदी राष्ट्रपर अपनी स्वीकृति दे दी है। ब्रिटेन चुप है। वह अपनी परिस्थितिका अध्ययन और संभावनाओंकी प्रतीक्षा करेगा। ब्रिटेनके साथ मिश्रकी १९३६ की संन्धिके अनुसार मिश्र उससे सहायताकी याचना नहीं कर सकता, किन्तु मिश्री मंत्री सलेह पाशको ब्रिटेनकी सहायता प्राप्त होनेपर प्रसन्नता होगी। मुसलिम राष्ट्रोंनें एक स्वरसे यहूदियोंके विरुद्ध जेहाद छेड़ दिया है और कराचीके मुसलिम शरणार्थियोंके लिये भी मुट्ठीभर अन्न और गजभर कपड़ेका प्रबन्ध करनेमें असमर्थ पाकिस्तानने भी अपनी आश्वासन अरबोंको दे डाला है।

फिलस्तीनकी समस्यासे सम्बन्धरखने वाली शक्तियोंमें वर्तमान युद्धके प्रति विभिन्न विचार हैं। यहूदी सदियोंके सताये हुए सब रखते हुए भा जराय पेशावाली तरह खाना बदोश और सभी द्वारा तिरस्कृत, कला कौशल, ज्ञान विज्ञानमें समुन्नत किन्तु सर्वत्र अपमानित एवं लांछित अंपने लिये एक राष्ट्रीय वास स्थान की रट लगा रहे हैं। ब्रिटेन और अमेरिकाने इराक घोषणा और संयुक्त राष्ट्र मण्डलकी हालकी योजनाएं एवं इसकी साक्षी हैं।

फिलस्तीनपर आक्रमण करनेवाले मुसलिम अपने देश अपनी परम्परागत मनोवृत्तिके अनुसार सारे मामलेको मजहबी रंग दे रहे हैं। शाह अब्दुल्ला इस जेहाद का नेता बन रहा है और हमारे पड़ोसी पाकिस्तानको मजहबी प्रासादोंमें कितनी दिलचस्पी रहती है, इसपर कहने की आवश्यकता नहीं है। तथ्य अपने आप स्पष्ट है।

प्रश्न अब भारतका है। अरबोंके प्रति भारतकी सहानुभूति सदासे अत्यन्त स्पष्ट रही है। मुसलिम जगतके अन्ध विश्वासों के लिये भी भारतने यातनाएं सही हैं। खिलाफत आन्दोलन जैसे आंदोलनोंमें भी हम भाग लें। यह राजनीतिक कौशल हो सकता है, किन्तु घटनाओंने इसकी व्यर्थता प्रमाणित की है। धर्ममें सर्वथा अश्रद्धा रखनेवाले हैं, और धार्मिक अन्ध विश्वासोंके प्रति कुपित होनेवाले प्रगतिशील विचारवालोंने भी खलीफाके लिये युद्ध किया यह भारतीय स्वीधता संग्रामके इतिहासकी एक मनोरंजक सामग्री होगी

खिलाफतके गड़े मुर्दको आज उखाड़नेकी क्या आवश्यकता है, इस पर आप सोचेंगे तो उत्तर अपने आप स्पष्ट हो जायगा। फिलस्तीनके मामलेको मजहबी जामा पहिनाकर जब आपके सामने लाया जायगा, तब आपको निर्णय करना होगा कि आप इस मजहबी जेहादमें शरीक हों या न हों। और तब अगर आप खिलाफत आंदोलनसे थोड़ासा सबक लेनेकी कोशिश करें तो आप इसे समयका अपव्यय अथवा इस विषयको आप्रासंगिक नहीं समझेंगे। हमारी मुश्किल यह है कि हममेंसे अधिकांशने वाइल चेम्बरलेनके ही मतावलम्बी हो चले हैं। इसीलिये हम पग पगपर म्यूनिख पैक्टसे ही राजनीतिक बुद्धिमत्ताका ककहरा सीखना चाहते हैं। पुरानी भूलों और और तज्जन्य दुष्परिणामोंसे शिक्षा लेने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



का हमने महान् गुण अपनाया है, उसकी सराहना भी हम सद्भावनाके नामपर करते हैं। आदिम युगकी हमारी इस भावना का परिणाम वर्तमान युगकी हमारी राजनीतिक पराजयके रूपमें ही दिखायी पड़ता जा रहा है।। किन्तु विपक्षी दलको सहिष्णुताके अभावमें हमने स्वतन्त्र चिन्तन एवं निर्भीक अभिव्यक्तिका आश्रय भी छोड़ रखा है। फिर भी आवश्यकता है कि फिलतीनके मामलेमें अपनी वैदेशिक नीतिका स्पष्टीकरण एक मात्र अपने राष्ट्रीय हितों के संरक्षणकी प्रेरणासे करें। हमें इस बातका प्रयत्न अन्त तक करना चाहिये कि हम धार्मिक कहे जानेवाले इस कूटनीतिक युद्धसे सर्वथा तटस्थ रहें। हमारी अपनी बहुत बड़ी समास्याएं अभी अधूरी पड़ी हैं। हमें अभी अन्तर्राष्ट्रीय पचड़ोंमें तब तक नहीं पड़ना चाहिये जबतक कि हमारे राष्ट्रीय हितोंके लिये अनिवार्य न हो जाय। दूसरी बात हमें ससर्वथा स्पष्ट कर देनी चाहिये कि मजहबी आधारपर राज्योंके गठनके हम सदा विरुद्ध रहे हैं, इसलिये अरबोंकी इस मजहबी लड़ाईसे हम कोई वास्ता ना रखेंगे। इस सम्बन्धमें भारतीय संघकी मुसलिम जनताके मनोभाव तथा पाकिस्तानके तद्विषयक निर्णयसे तनिक भी प्रभावित नहीं होना चाहिये। जिम्मेदार पदोंपर प्रतिष्ठित नेताओंसे भी हम नम्र निवेदन करें कि वे यदि संभव हो तो, अपने व्याखानों की संख्या थोड़ी कम करके, इस विषयपर भावुकतासे काम न लें। यहूदी जातिने हमारा कुछ भी अहित साधन नहीं किया किया है और न तो उन्होंने मजहबी लड़ाई ही छेड़ी है। फिलस्तीन अरब राज्य राज्यका ही अंग है और केवल इस नाते अरबोंको वहांसे यहूदियोंको मार भगानेका अधिकार है, यह तर्क कुछ ऐसा ही होगा कि पाकिस्तान भारतका ही अंग है, इसलिये हम उसे नहीं रहने देंगे। लेकिन पाकिस्तान रक्षाके लिये तो हमने कलकत्तेमें पैक्ट बनाकर इस बात की भी जिम्मेदारी ली है कि हम किसीको दोनों देशोंके पुनर्मिलन की बात करनेको भी, स्वाधीनता नहीं ननहीं देंगे। फिर इस आधारपर इन यहूदियोंका विरोध कैसे करेंगे? मुसलमानोंके स्वराष्ट्रसे भिन्न यहूदियोंके स्व-राष्ट्रकी मांग कैसे कही जा सकती?

मध्य पूर्वकी अनेक भयावनी संभावनाएं हैं जिनका सूत्रपात फिलस्तीनके युद्ध से हुआ है। इसलिये आवश्यकता है अत्यन्त सतर्कता पूर्वक राष्ट्रीय एवं वैदेशिक नीतिके संचालनकी। यथार्थवादसे दूर, कोरे आदर्शवादकी प्रेरणासे ही हमने एक भी गलत कदम उठा दिया तो हमारी स्थिति महा भय और जटिल हो सकती है। और तब ह अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता, विवेक और सहयो पर हम कितना भरोसा कर सकते इसे संयुक्त राष्ट्रमण्डलमें काश्मीरकी समस्याने आवश्यकतासे अधिक स्पष्ट कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# चल द्रव्यकी समस्याएं

—श्री प्रेमकपूर कंचन—

भारतीय संघके सम्मुख आज कल जिस प्रकार बहुतसी राजनैतिक समस्यायें उलझी हुई हैं उसीं प्रकार चल द्रव्य (करेंसी) की भी समस्यायें हैं। इस समय उनमें मुख्य पांच हैं:—

(१) रीतिकी समस्या
(२) मूल्यकी स्थिति
(३) स्टर्लिंग बैलेन्सेज
(४) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग
(५) समानुपातकी समस्या

(१) रीतिकी समस्या—इस समस्या के अन्तरगत मुख्य चार तत्व हैं। प्रथम स्थितिमें हमादे सन्मुख जो रीति हमारे भारतीय संघमें चल रही हैं उसे चलने दिया जाय। द्वितीय स्थितिमें डालर इक्चेनज की रीति अपनायी जाय। तृतीय स्थितिमें स्वर्ण रीति अपनायी जाय। चतुर्थ दशामें चल द्रव्यको किसी भी रीतिमें न बांधकर स्वतन्त्र छोड़ दिया जाय। ये चारों स्थितियां आज विश्वमें चल रही है। भारत संघको इन्हीं चारो स्थितियोंमेंसे एकको अपनाना है। इन चारोंका नीचे पूर्ण विवेचनात्मक रूप दिया गया है।

जो देश या व्यक्ति स्टर्लिंग स्टैण्डर्डके पक्षमें हैं उनका कथन है कि भारतीय संघका व्यापार अधिकतर उन देशोंसे है जहां यह स्टण्डर्ड हैं। इसलिये यदि भारत अपने यहां स्टर्लिंग रीति रखता है तो व्यापारमें अधिक सुगमता होगी।

लेकिन पक्षके साथ विपक्षियोंके कथनमें भी अधिक पुष्टता है। उनका कथन है कि स्टर्लिंग रीति इंगलैण्डकी बनायी हुई है और चूंकि आज उस देशका दिवाला निकल चुका है उसकी रीतिको अपनाना बुद्धिमता नहीं। यहां हम स्वीकार करते हैं कि स्टर्लिंग रीति कभी भी समाप्त हो सकती है इसलिये भारतको उसे बदलनेके प्रश्न पर विचार करना चाहिये।

द्वितीय स्थितिमें डालर स्टैण्डर्ड उस धनाढ्य देश अमेरिकाका है जहां अगम सोना है इस रीतिकी स्थिति विश्वमें अधिक ऊंची है। यदि हम डालर रीति अपनायें तो उत्तम होगा। तभी यह प्रश्न उपस्थित होता है कि डालर हमें मिले कहांसे। चूंकि अमेरिका डालर देनेके लिये राजी नहीं होगा उसका स्वप्न देखना भूल होगी।

तदुपरान्त हमारे सन्मुख स्वर्ण रीति आती है यह रीतिका सबसे पुराना चलन है। इसके लिये हमारे पास अधिकसे अधिक सोनेकी आवश्यकता होगी चूंकि हमारे पास पर्याप्त सोना नहीं इसलिये इसे भी नहीं अपना सकते।

बाकी बची वह रीति जिसमें हमारा चन द्रव्य (करेंसी) किसी भी रीतिसे बंधी न हो लेकिन इस रीतिसे हमारा विदेशी व्यापार सुगमता पूर्वक नहीं चल सकेगा।

अन्तमें इस झगड़ेका कोई रूप सुधरा हुआ नहीं मिलता। और फिर यह रीतका झगड़ा केवल भारत संघके सम्मुख ही नहीं वरन विश्वके प्रत्येक देशके सम्मुख हैं। इसलिये अन्तर्राष्ट्रीय द्रव्य संघने मिलकर एक नवीन अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण रीति चलायी है जिसे सोवियट रूसको छोड़कर और देशोंने स्वीकार किया है

### समतल मूल्य

इस समस्याके अन्तर्गत दो विचार धाराएं है। प्रथम विचारधाराका कहना है कि आज कल बाजारके बढ़े हुए मूल्य को रोककर नीचे गिराया जाय या उसे उसी स्थितिमें बढ़ने दिया जाय या जिस प्रकारसे कण्ट्रोल चल रहा था चलने दिया जाय। समस्या बहुत ही उलझी हुई है क्योंकि चारों ओर मल्यमें कमीकी मांग अधिकतर बढ़ रही है। तभी हम विचारने लगते हैं कि मल्यमें कमी किस प्रकार हो सकती है। इसके दो रूप हैं। एक ओर हम अपना चल द्रव्य घटावें या पैदावार बढ़ायें। पैदावार बढ़ानेके लिये हमें कच्चे माल और मशीन की आवश्यकता पड़ेगी। मशीन हम उसी क्षण खरीद सकेंगे जब हम उसका मूल्य चुका दें लेकिन हमने अपने देशका १७ सौ करोड़ रुपया अंग्रेजोंको उधार दे रखा है वे देनेको नहीं कहते। यह भी ठीक रूपसे नहीं कहा जा सकता कि भविष्यमें हमारी सरकार चल द्रव्य घटाकर दूसरे नये झंझट मोल लेगी क्योंकि प्रथम महायुद्धके पश्चात चल द्रव्य घटाकर जो क्षति विदेशी सरकार ने भारतवर्षको दी थी वह अकथनीय है। लोग एक दूसरेका कर्ज नहीं अदाकर पाये थे चारो ओर भुखमरी जोरोंपर थी। इसलिये समान मूल्यकी धारणा इस प्रकार की होनी चाहियें जिससे किसान और मिल दोनोंमें कोई विशेष क्षति न हो और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सुगमतासे चले। क्योंकि एक देश जब चल द्रव्य घटाता है उसीके समानान्तर रूपमें दूसरे देशोंको चल द्रव्य घटाना पड़ता है। जैसे मान लीजिये अमेरिका १०) में एक समान भारतके हाथ बचता है यदि भारत चल द्रव्य घटा देता है तो भारतके १०) की कीमत ६) रुपया रह जाती है। अब इस स्थितिपर अमेरिकाका तो माल बेचना बन्द कर दे या अपने यहांका चल द्रव्य घटाकर उस समानतापर लाकि मूल्य-स्तर बराबर हो जाये इसलिये मूल्य स्तर ऐसे समान धरातलपर रखना होगा कि अन्य देशोंके साथ उसका सामंजस्य रहे।

आज भारतीय संघके सम्मुख स्टर्लिंग बैलेंसेजकी समस्या बहुत घनघोर उलझी हुई है। लगभग १७ सौ करोड़ रुपयेका आज भारतवर्ष अंग्रेजोंका साहूकार बन चुका है। क्योंकि इस द्वितीय महायुद्धके पूर्व ही भारत और अंग्रेजी राज्यके अन्तर्गत एक समझौता हुआ था। उस सम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



झौतेके अनुसार भारतवर्ष इंगलैण्डके लिये लड़ाईका सामान खरीदता फौजोंका खर्च चलाता और इसी प्रकारके खर्चे करता रहा। भारत सरकारका लड़ाईके दिनोंमें १ करोड़ रुपये रोजका खर्च था। ठीक इसी प्रकारका कर्जा अंग्रेजोंने अमेरिका से लिया था लेकिन अमेरिकाने उस कर्जे के बिलोंको बाजारमें बेंच दिया और वे फिर अंग्रेज व्यापारियोंके हांथमें पहुंचकर भुन गये। लेकिन भारत के बिल इकट्ठे हो कर इतने अधिक हो गये। । प्रथम तो अंग्रेजोंने इस रकमको देनेसे पूर्णतया अस्वीकार कर दिया था लेकिन बहुत कुछ बहसके उपरान्त छमाहीकी दो सन्धियां हुई हैं और उसमेंसे कुछ रुपये मिलनेकी आशा है पर भारतको पूर्ण रुपया प्राप्त होगा ऐसी आशा नहीं, क्योंकि इंग लैण्डकी नीयत बहुत साफ नहीं मालूम होती।

अन्तर र्ष्ट्रीय विषय

इस विषयकी समस्या कुछ सुधर जानेकी धारणा की जाती है पर अभीतक यह रीति चाल नहीं हुई। ब्रिटेन उस सम्मेलनमें सोवियट रूसको छोड़कर और देशोंने भाग लिया था। भारतसे रिजर्व बैंकके गवर्नर श्री देशमुख सम्मेलनमें उपस्थित थे। अन्तर्राष्ट्रीय देशोंके बीच समझौता हो जानेकी बहुत कुछ सम्भावना है। क्योंकि बिना ऐसे समझौतेसे अन्तर्राष्ट्रीय आधार जो अन्तर्राष्ट्रीय विषयकी एक जटिल समस्या है, नहीं नहीं सुलझ पाती इसलिये सम्भव है निकट भविष्यमें इस विषयकी उलझी हुई समस्या नहीं रह जाय। और एक दूसरेकी कठिनता के समयपर वे सहायता देंगे। इस सम्मेलन से व्यापार का ही नहींबल्कि रीति समानुपातकी समस्या इत्यादि भी सुलझ जायेंगी। क्योंकि एक देश तथा दूसरे देशोंके चल द्रव्यका क्या सम्बन्ध होगा यह तभी स्थिर हो सकता है जब ये सब अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण रीति पास की है, इससे दूसरी कठिनाइयोंके हल हो जानेकी सम्भावना है।

(शेष १८ वें पृष्ठपर देखिए)

एक प्रहसन

# पॉलिटिक्स

ले० श्री सम्पति राय भटनागर

[कराचीके अपने सरकारी बंगले के एक शानदार कमरेमें मिस्टर जिन्ना पलंगपर अनमने लेटे हुए हैं मिस्टर लियाकत अलीखां पास ही पड़ी एक कुर्सी पर बैठे हुए किसी उर्दू अखबारके पन्ने उलट रहे हैं।]

जिन्ना—लियाकत! काश्मीरकी कोई ताजी खबर आयी?

लियाकत—हां, कायदे आजम! खूनके एक बड़े समुन्दरपर काश्मीरकी नाव तैर रही है। हमारे पंजाबी जवानोंने भी लड़ाई मोर्चेपर कबाइलियोंके साथ साथ वह हाथ दिखाये हैं कि कुछ न पूछिये! तारीफ करते ही बनता है।

जिन्ना—लियाकत! मैं तो अब बूढ़ा हो चला हूं, फिर भी जाने क्यों, कभी-कभी अब भी तबीअत मचल उठती है कि लड़ाईके मोर्चेकी सैर कर आऊं। और जब भी यह बात दिमागमें आती है, कुछ ऐसा महसूस होने लगता है कि जैसे मैं थोड़ी देरके लिये फिरसे जवान बन गया हूं। (मुस्कुराहट।)

लियाकत—काश्मीर जगह ही जवानोंके लिये है कायदे आजम! दिल्ली में बेगमसे मोहब्बत होनेके दो साल पहले मैं भी एक बार काश्मीर गया था।

जिन्ना—तो अब फिर तुम्हारे जानेमें क्या रुकावट है?

लियाकत—अब बेगम साहिबा जाने जो नहीं देतीं——। (दोनों एक साथ हंस पड़ते हैं।) [इतने में कबायालियोंका एक सरदार कमरेके अन्दर आता है। कायदे आजम एकदम उठ बैठते हैं और लियाकत और वे दोनों उसकी ओर देखने लगते हैं।]

सरदार—जिन्ना साहब, तुम्हारा चौकीदारबहुत बदमाश है। हमको अन्दर नहीं आने देता था। (गुस्सेमें मरकर) हम उसको गोली मार देता (कहते-कहते चौकीदारके बदले जिन्ना की ओर अपनी बन्दूक तान देता है। लियाकत खड़े होकर बड़ी मुश्किलसे उसकी बन्दूककी नलीके सामनेसे दूर करते हैं।)

लियाकत—(कुछ सहमते हुए) लेकिन आप तो चौकीदारके बदले कायदेआजम पर ही गोली चलाने लगे?

सरदार—हम जिन्ना साहबको भी गोली मार देगा! तुम हमारी बेइज्जती कराता है। घरमें नहीं आने देता!

[चाय लिये हुए नौकर का प्रवेश]

जिन्ना—(नौकरकी ओर मुखातिब होकर) नजीर! सरदार खानको चाय पिलाओ! [सरदार मिस्टर जिन्नाके पलंगके पास ही पड़े एक कोचपर बैठ जाता है और मिस्टर जिन्ना उसके लिये प्यालीमें चाय ढ़ालने लग जाते हैं।]

जिन्ना—सरदार, तुम तो आते ही नाराज हो गये। खैर, काश्मीरके मोर्चे पर से आ रहे हो? लूटमें क्या कुछ हाथ लगा?

सरदार—लूटकी बात पूछते हो जिन्ना साहब? (हंसकर) कुछ भी हाथ नहीं लगा। चार खूबसूरत लड़कीको छांट कर हम लाया था, उनमेंसे दो को फौजका साला पंजाबी लोग ले गया! साला लोग मुसलमान नहीं है, काफिर है। हमको भी लूट लिया! हम उसको गोली मार देंगा।

जिन्ना—(चायकी प्यालीमें चम्मच से चीनी मिलाते हुए) लो चाय पियो

सरदार—(प्याली हाथमें लेकर चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की चुस्की लेते हुए) हमें चाय नहीं चाहिये जिन्ना साहब! तुम लोग हमको फुसला रहा है। हमको चाय नहीं रुपया चाहिये। अङ्गरेज सरकार भी हमको सालका १० हजार रुपया देता था। पाकिस्तान नहीं देगा तो हम पाकिस्तानको गोली मार देगा। (सरदारका हाथ फिर बन्दूक पर जाता है।)

लियाकत—नहीं,नहीं सरदार! पाकिस्तान रुपया देगा तुमको। पहले काश्मीर तो लूट लो।

सरदार—(बिगड़कर) तुम लोग हमको पागल बनाता है। हम काश्मीर नहीं लूटेगा। साला लोग पंजाबी उसमेंसे भी ले भागता है। (सहसा जैसे शान्त होकर और जिन्ना की ओर मुखातिब होकर) अब सिर्फ दो बच गया है। गजब खूबसूरत हैं काश्मीरमें। एक लड़की तुम लेगा जिन्ना साहब?

[जिन्ना बिना कुछ उत्तर दिये उसकी ओर सिर्फ देखते भर रह जाते हैं। और तभी बिना किसी उत्तरकी प्रतीक्षा किये सरदार चलनेके लिये उठ खड़ा होता है।]

सरदार—अच्छा, हम आज जाता है। कल फिर आयेगा। आदाब अज! (चल देता है।)

[सरदारके जानेपर मि० जिन्नाके जीमें जी आता है।]

लियाकत—ये कबाइली भी अजीब जानवर हैं! इन्हें पार पाना तो बहतही मुश्किल है। जब देखो तब, बात-बात में बन्दूक तान देते हैं!

जिन्ना—लेकिन इनको जीतना ही तो पाकिस्तानके पॉलिटिक्सकी जीत होगी। (कुछ गंभीर होकर) खैर, देखा जायगा। (फिर पलंगपर लेट जाते हैं।)

[पर्दा गिरता है।]

## द्वितीय दृश्य

(लेकसक्सेसके एक होटलके कमरेमें पाकिस्तानके विदेशमंत्री सर जफरुल्ला ठहरे हुए हैं। शराबकी बोतल उनके सामने खुली पड़ी है और वे एक ग्लासमें मदिरा ढाल रहे हैं। उनके निजी सेक्रेटरी मिर्जा मुसर्रफ भी उनके साथ बैठे पी रहे हैं। दोनों आपसमें बहुत बेतकल्लुफ हैं।]

जफरुल्ला—मिर्जा, सिक्योरिटी कौंसिलका रुख कुछ समझ में नहीं आया।

मिर्जा—तो क्या हुआ? कुछ दिन मजे की चुहल तो रही!

जफरुल्ला—लेकिन काश्मीरके झगड़ेका आखिर फसला क्या होगा?

मिर्जा—होगा क्या? या तो वह हिन्दुस्तानमें मिल जायगा या फिर पाकिस्तान के पल्ले पड़ेगा। और क्या हो सकता है?

जफरुल्ला—हां, और क्या। लेकिन मैं तो सोचता हूं कि पाकिस्तानको या हिन्दुस्तानको इससे कोई फायदा हो या नहीं, फिर भी यार लोगोंको तो फायदा पहुंचा ही है। लेकसक्सेसतककी सैर तो मुफ्त में हो ही गयी!

मिर्जा—अंग्रेज कहते थे कि रूसवालों की भी नजर काश्मीरपर लगी है!

जफरुल्ला—लगी भी रहने दो। (सामने रखा हुआ ग्लास पूरा खाली करके) हमारी भी तो नजर कहीं लगी है! (नशेकी तेजी बढ़नेसे बदहोश होते चले जाते हैं और धीरे धीरे उठकर मिर्जा की ओर बढ़ते हुए उसके कन्धों का सहारा लेकर गुनगुनाने लग जाते हैं—तबीअत बहत आज घबरा रही है! उन्हें याद शायद मेरी आ रही है!!

(पर्दा गिरता है)

## तृतीय दृश्य

[मिस्टर जिन्ना अपने बंगलेके लानमें एक आराम कुर्सीपर लेटे हैं। लियाकत अली पास हीमें एक अमरूद के पेड़से पके अमरूद तोड़कर खड़े-खड़े खा रहे हैं।]

जिन्ना—लियाकत! तुम्हारे पास सिगार-लाइटर होगा? मेरी सिगरेट जरा सुलगा देना।

लियाकत—(अमरूद चबाते हुए) सिगरेट क्या, कायदे आजम, यहां तो दिल ही सुलग रहा है। (सिगरेट सुलगाकर मिस्टर जिन्नाको देते हैं।)

जिन्ना—लियाकत! कभी कभी मैं यह सोचता हूं कि काश्मीरमें बहाया गया खून बेकार तो नहीं जायगा?

लियाकत—क्या कहा जाय कायदे आजम! सुरक्षा परिषदका फसला भी तो सोलहों आने हमारे पक्षमें नहीं हो पाया जब कि अमेरिका हमारी पीठपर और ब्रिटेन हमारे सिरपर था!

जिन्ना—कुछ भी हो, लियाकत! भविष्य के आसार अच्छे नजर नहीं आ रहे। मेरी तो छाती धड़क रही है।

[नौकरका प्रवेश। वह सूचना देता है कि बाहर कबाइलियोंका एक डेपूटेशन उनसे मिलनेके लिये खड़ा है।]

जिन्ना—लियाकत! ये कबाइली फिर आ धमके? एक मिनटकी भी तो सांस नहीं लेने देते!

लियाकत—बड़े खतरनाक प्राणी हैं! पैसा मांगते हैं। और अगर कुछ कहा जाता है तो बन्दूक तान देते हैं।

जिन्ना—तो फिर अब क्या किया जाय?

लियाकत—आप कहलवा दीजिये कि कायदे आजम घरपर नहीं हैं।

जिन्ना—लेकिन वे लोग इसे कब मान सकते हैं? वे तो दीवार फांदकर भी अन्दर आ जायेंगे। या खुदा! (पसीना आ जाता है।)

लियाकत—फिर?

जिन्ना—ज्यादा सोचनेका इस वक्त समय नहीं है लियाकत! पिछले दरवाजेसे फौरन बाहर निकल चलो।

लियाकत—लेकिन!

जिन्ना—लेकिन वेकिन कुछ नहीं। यह पालिटिक्स है। इसे अभी तुम नहीं समझते।

(तेजी से कदम बढ़ाते हुए पिछले दरवाजे से दोनों बाहर निकल जाते हैं और एक टैक्सी करके कराचीके हवाई अड्डेकी ओर जाने लगते हैं।)

[समाप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



[१६ वें पृष्ठका शेषांश]

यह समस्या आजसे नहीं वरन् बहुत समयसे चल रही है। विदेशी अपना भला चाहते थे। उन्होंने भारतवासियोंके कथनके विरुद्ध भारतके रुपयेका समानुपात अपने चल द्रव्यमें इतना ऊंचा नियत किया कि उनको अधिकसे अधिक लाभ हो और भारतको अधिकसे अधिक कच्च माल ले जा सकें। भारतवासियोंका कथन था कि यहांके रुपयेका मूल्य एक शिलिंग चार पैसे होना चाहिये। परन्तु अंग्रेजोंने इसके विरुद्ध एक शिलिंग ६ पेंस रखा। यहां तक कि रामपुर कांग्रेसके समय यह झगड़ा जोरोंसे चल पड़ा था। कांग्रेसने कहा था कि हम रुपयेका समानुपात घटाकर ही रखेंगे। दूसरी ओर गवर्नमेंटकी घोषणा हुई कि वह किसी भी स्थितिमें समानुपात घटानेके लिये प्रस्तुत नहीं बातें चलती रही लेकिन कांग्रेसकी सात्ता आनेके बाद भी हमारे देशका समानेपात घटाया न गया। क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय कानूनके अनुसार हमारा समानुपात निकट भविष्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलननद्वारा नियत होने जा रहा है। फिर सोना होनेके कारण भारत लगभग प्रत्येक वस्तुको स्वयं तैयार रनेकी चेष्टामें लगा है। समानुपातकी समस्या इस समय राजनीतिक मामलोंकेके सम्मख अधिक महत्वकी नहीं।

इस प्रकार हमने पांच मुख्य समस्याओंका विवेच किया है। लेकिन हमारी नेहरू सरकारको इस समय राजनीतिक विषयोंसे अवकाश नहीं मिलता कि वह इनको देखे। इसमें शंका नहीं कि इन विषयोंको भारतको सुलझाना होगा लेकिन चूंकि भारतवर्ष अब अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनका एक प्रमुख सदस्य हो चुका है इससे आर्थिक झगड़ोंका बहुत कुछ भार हलका हो गया है। माह अन्तर्राष्ट्रीय. सममेलनसे आशा करते हैं कि वह भारतीय विषयोंपर ठीक तरीकेसे विचेन हो।

प्रतिसप्ताह ६आ. खर्च करने पर भी
ऐसे क्यों दिखते हैं?

• अधिकांश व्यक्ति हफ्ते में नाई से केवल तीन ही हजामत बना सकते हैं। इसमें ६ आना तक खर्च हो जाता है और फिर भी वे सात दिनों में से चार दिन इस व्यक्ति की तरह दिखते हैं—हजामतविहीन और खुरदरे!

पैसे बचाते हुये
आप ऐसे
कब दिखेंगे?

• बुद्धिमान व्यक्ति जो प्रतिदिन स्वयं "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड से हजामत बनाता है उतनी ही कीमत में अनेक हजामतें बना लेता है जितने में दूसरा व्यक्ति तीन बनाता है। इन ब्लेडों का एक पैकेट हफ्तों चलता है।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड तीन स्तरों में सर्वश्रेष्ठ इस्पात से बनाये जाते हैं! कोई भी दूसरे ब्लेड न तो इतने चलते हैं और न इतनी चिकनी हजामत बनाते हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock
SLOTTED BLADES
"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस
ब्लेड जो ज्यादा हजामत
और कम खर्चा देते हैं

पांच के ६ आने
१० के १२ आने


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# दक्षिणका क्रान्तिकारी

## वी० वी० एस० ऐयर

लेखक—श्री अरुणदासन

तुम कौन हो ? सच-सच बता दो । हमें तुम्हारी हरकतोंका पता लग गया है । अगर तुने अपनी सारी बातें नहीं बतायीं तो मेरे हाथकी रिवाल्वरकी छः गोलियां हम दोनोंका काम तमाम कर देंगी । यह बी० बी० एस० ऐयरकी इंगलैंडमें एक महाराष्ट्रको थी दी हुई धमकी थी । बी० बी० एस० ऐयर इंगलैंडमें इंडिया हौसमें सावरकरके साथ ठहरे थे । सावरकरके नेतृत्वमें उधर भारतीयोंने भारतस्वतंत्रताकी लिये आतंकवादका का कार्य आरम्भ कर दिया था । उसमें कउई लोगोंका हाथ था । बी० बी० एस० ऐयर को इसमें प्रधान स्थान था ।

जब यहांका कयर्य आरम्भ हूआ तभीसे ब्रिटिश सरकारको इंडिया हौसके प्रति संदेह उत्पन्न हो गया था । उसने निश्चय कर लिया कि किसी तरह इंडिया हौसको शान्त न रहने दें । इसलिये सरकार ने उसमें गुप्तचरोंको नियुक्त किया । भारत के गुप्तचर विद्यार्थीके रूपमें आकर इंडिया हौसमें ठहर गये । उन्हींमें वह महाराष्ट्र भी था। उसने मिलकर उनकी मित्रता प्राप्त कर ली । हौसकी सभी नियमावली का पालन करता और हर बातकी सरकार को यथासमय रिपोर्ट कर देता । सरकारको उसका पता बिलकुल न था । पर बी० बी० एस रेएयर पहले हीसे सशैक थे । उस महाराष्ट्रका अत्यधिक दान देना, सबसे अधिक इंडिया हौंसके काममें शरीक होना , रोज शामको अकेले सैरके लिये जाना , बातोंने ऐयरके संदेहको पुष्ट कर दिया । एयरके एक दिन सावर करसे सकी बातचीत की । सबरकारको अभी सब बात मालूम हुई । सबसे मिलकर यह काम बी० बी० एस ऐयरको सौंप दिया ।

सी निर्णयपर ऐयरने काम किया । उसकी अनुपस्थितिमें ऐयरने उसकी पेटीकी तलाशी की । उनको उसके सी० आई० डी० होनेका प्रमाण मिल गया । ऐयरने वे कागजात ले लिये जिससे यह सिद्ध हो सकता था कि उसने हौंसके प्रतिकूल क्या-क्या किया है ।

एयर अपने काममें सफल हो गये । सामने बंदूकको देखकर वह वह महराष्ट्री डर गया कि कहीं यह सचमुच मार न डालें एयरकी सारी बातें उसनें मान ली । आगेसे वह महाराष्ट्रीय सरकारका गुप्तचर न होकर इंडिया हाउसका गुप्तचर हो गया । रूष्टकारकी सभी बातें पहले ही हौसको मालम हो जातीं और उसके अनुसार हासका कार्यक्रम बनता ।

बीसवीं शताब्दीके आरम्भमें इस इंडिया हौसको श्यामजी कृष्ण बर्माने आरंभ किया था । उस समयका भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नरम दलवालोंका आधिपत्य था । वे न तेज जाते और न किसीको करने देते । बर्माजीने इंगलैंडमें उसका खंडन किया । इसी समय शिक्षा पानके लिये भारतसे कई नौजवान उधर गये । उनमें एयर लाला हरदयाल, सवरकर डाक्टर राजन आदि उल्लेखनीय हैं । बर्मा जीके लेख व भाषणने इन नौजवानोंके मनमें तूफान पैदा कर दिया । इंगलैंडमें भारतीयों का अपमानने ने इन्हें कुछ करनेकी उत्तेजना दी । उन लोगोंने महसूस किया कि इसका मूल कारण देशकी गुलामी है इसी समय जापान और रूसके बीचमें लड़ाई छिड़ गयी । जापान जैसा छोटा देश रूस जैसे बड़े देशके साथ लड़ाई करना और उसमें जीत जाना उन लोगोंको सबक सिखाना था । जब इतना छोटा देश लड़ाई कर सकता है तो हम क्यों नहीं कर सकते हैं ? फलतः इनलोगोंका लक्ष्य बदल गया । शिक्षा पाने गये और क्रांतिकी दीक्षा ले ली ।

जब बर्माजीने हौस खोला तब उनका ध्यान शायद आतंकवादकी ओर न गया । इंगलैंडके लोग उनके कामसे ही इतने असंतुष्ट हो गये थे कि पार्लमेंटमें प्रश्न उठा कि उनकी गति रोकी जाय । इससे बर्माजीका इंगलैंडमें हरना मुश्किल हो गया । उन्होंने पेरिसकी राह ली । इसी समय लाला हददयाल भी पेरिस चले गए । उनके बाद सावरकर ही हौसके सर्वसर्वा हो गये । और उनका बी० बी० एस एयर दाहिने हाथ रहे ।

यह सोचनेकी बात थी कि जब सावरकर इंगलैंड गये उसके पहले ही भारतमे नाम मिल गया था । नेताओंका आशीर्वाद और मदद थी । इसलिये उनका इंगलैंडमें नेतृत्व करना आश्चर्यकी बात नहीं थी । पर, ऐयर भारतसे विद्यार्थीकी हैसियतसे ही गये । साधारण घरानेके थे । निजी प्रयत्नसे वह इंगलैंड आये थे । रुपयेका कोई इन्तजाम न था । ऐसी हालतमें उनका घर प्रधान आदमी बनाना आश्चर्यकी बात थी ।

"भारतमें क्रांति करनी चाहिये । ईसके लिये हमें नये हथियारोंका प्रयोग विदित रहना आवश्यक है । भारतमें हथियार भेजते रहें और हम भी निश्चित समयपर भारत पहुंच जावें । एक दिन नियत किया जाय । उस दिन भारतके सभी शासक गोरोंको गोली मार दें ।" यह ऐयरका कहना था । सावरकर भी इस से सहमत थे । युद्धकला सीखनेके लिये कुछ भारतीयोंको स्पेनकी लड़ाईमें सेवा करनेके बहाने भेजा जाय । इस तरह क्रान्ति की तैयारी होने लगी । ऐयरने दक्षिण भारतका एक पत्रकार तिरुभले आचार्य को इसके लिये तैयार कराया ।

इंडिया हौसवाले बड़ी ही सावधानीसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



काम करते रहे । पर ब्रिटिश स्काटलैंड यार्ड पुलिस दुनिया भरमें प्रसिद्ध थी कुछ ही दिनोंमें सारा कार्य सरकारको मालूम हो गया । निश्चय हुआ कि वे कुछ दिन पेरिसमें रहे । इस निश्चयके अनुसार सावरकर पेरिस चले गये । कुछ हफ्तोंके बाद जब पूर्व योजनाके अनुसार सावरकर लौटे तो भारत सरकारकी प्रार्थनापर ब्रिटिश सदकारने इन्हें कैद करा दिया । इसपर प्रश्न उठा कि ब्रिटिश सरकार भारतीय प्रजाको इधर कैसे कैद कर सकती है ? जिस मुकदमेमे ऐयरने सावरकरके लिये बड़ी दौड़ धूप की । पर, इसमें अदालतने भारत सरकारके पक्षमें फैसला सुनाया । इसके बाद ऐयरने सावरकरसे जेलमें मुलाकात की और पेरिस चले गये ।

यह सर्व विदित है कि जब सावरकर जहाजपर भारत लाये जा रहे थे तो समुद्रमें कद पड़े । और तैरकर फ्रांसकी भूमिमें चले गये । । पुलिस उनका पीछा कर रही थी फ्रांसके एक पुलिसके जवानकी बेवकूफीसे सावरकर फिर उनसे पकड़े गये। पर यह बात कम लोग जानते हैं कि जब सावरकर समुद्रमें कूदकर फ्रांसके किनारे आये तो उधर दो फरलांगपर बी० बी० एस ऐयरके मेडम कामाके साथ मोटरमें बैठे सावरकरकी प्रतीक्षा कर रहे थे । यह योजना बी० बी० एस ऐंयरने ही बनायी थी और शायद इंगलैंडके जेलमें इसी मतलबसे ऐयरने सावरकरसे मुलाकात की थी। इसी योजनाके अनुसार सावरकर समुद्र में कूद पड़े। जो हो, ऐयर और सावरकरकी योजना इच्छानुसार सफल न हो सकी ।

अब ऐयरका इंगलैंड जाना गैरमुमकिन हो गया । अब किसी तरह इंगलैंड नहीं जा सकते थे । ब्रिटिश सरकारकी भारतमें ऊधम मचानेके बाद वह इंगलैंड कैसे जा सकते थे ? ऐयर डरपोक थे सो बात नहीं थी । जेलमें जानेसे अपना जीवन वृथा करनेसे अधिक लाभ क्या था ? बाहर टहलते हुए कुछ काम कर सकते हैं। इसी मतलबसे उन्होंने सावरकरको भी छुड़ानेकी योजना बनायी थी ।

ऐयरने निश्चय किया कि वे पेरिस में कुछ दिन ठहरनेके बाद भारत चले जायेंगे । इतनी धारणाओंके बाद भी ऐयर का मन आतंकसे ऊबा नहीं । उनका उत्साह बढ़ता ही जाता था । उन्होंने उधरसे भारतमें अस्त्र शस्त्र बराबर भेजनेकी व्यवस्था बनायी ।

कुछ भी हो ऐयर भारत वापस आना चाहते थे । जब इंगलैंड जाना ही खतरेका था तो भारतमें आना तो अपनी जान गंवानेके बराबर ही था । पर, ऐयरने दृढ़ निश्चय कर लिया कि वे आशु भारत में आवेगें और अगर ब्रिटिश इंडियामें नहीं तो फ्रेंच इंडियामें रहेंगे । उन्होंने लम्बी दाढ़ी बढ़ा ली जिससे किसीको न मालूम हो । सावरकरको सजा देनेके कुछ दिनों बाद ऐयर फ्रेंच इंडिया पांड़ीचेरीके लिये रवाना हो गये । ईजिप्ट और सिलोनमें कई महीने ठहरकर भारतमें पाण्डीचेरीमें आ गये कि किसीको कानोंकान खबर ही न हुआ । ऐयरके पाण्डीचेरी आनेके ६ महीने बाद ही सावरकरको मालूम हुआ कि ऐयर किधर हैं ! इस तरह ऐयरका अज्ञातवास आरम्भ हुआ ।

इसी समय तामिलके वह कवि श्री भारती भी अज्ञातवासके लिये पाण्डीचेरी आ गये थे –जिनका स्मारक-गृह अभी हाल ही में गवर्नर राजाजीके हाथों खुला – और भगवान अरविन्दका भी पाण्डीचेरी अज्ञातवास स्थल हो गया था ।

इधर भी ऐयर चुप न रहे । ब्रिटिश भारतसे नौजवानोंको बुलाकर उधर समुन्दरके किनारे रिवाल्वर चलानेका अभ्यास कराते थे । इन्हींका शिष्य वांचकी नाम ऐंयरने तिरुनेलवेलीके गोरे कलेक्टरको गोली मारकर मार डाला था । जो एक मरहठा केसके नामसे प्रसिद्ध है । सरकार को साफ मालूम हो गया था कि ऐयर ही ही इसके सूत्रधार हैं । इन्हें ब्रिटिश भारतमें बुलाकर कैद करनेकी सरकारकी सभी कोशिश नाकामयाब रही ।

पाण्डीचेरीमें ऐयर १२ वर्ष रहे । इस लम्बे अरसेमें उन्होंने उधरसे पत्रिका संचालन किया । तमिल वेद तिरुक्कुटकका अनुवाद अंग्रेजीमें किया ।

बहुतसी कहानियां लिखी । आखिर किसी तरह ऐयरपरसे रोक १९२० में उठा दिया और भारतमें आनेकी अनुमति दे दी ।

अब ऐयर कांग्रेसके काममें लग गये। अब तक कांग्रेसमें महात्माजीका प्रवेश हो गया था । और उन्होंने अपनी अद्भुत शक्तिसे ऐयरको भी वशीभूत कर लिया। गान्धीजीका ऐयरपर बड़ा प्रेम रहा। पर दक्षिणकी कमबख्ती थी कि उनकी सेवासे अधिक लाभ न उठा सके ।

दक्षिणके लिये उन्होंने ऐसा कार्यक्रम बनाया था कि जिसको पूरा करनेसे देश को ऐसे सेवक मिल जाते जिससे भविष्यमें स्वतंत्रता लड़ाईके लिये मदद मिलती। उस समय तामिल नाडमें ई० वेरा और वरद राजुलू नायडू बड़े नेता थे। दोनों अब्राह्मण थे और ब्राह्मणोंसे घृणा करते थे। ऐयर तो ब्राह्मण थे ऐयरकी इतनी कीर्ति उन्हें असहय थी । इसलिये मौकेकी ताकमें थे और ज्योंही एक छोटी बात हो जाती उसको लेकर चिल्लाने लगते ।

बात यह हुई । ऐयरने भारतमें नेता तैयार करनेकी दृष्टिसे एक आश्रम खोला उसमें देशके सेवक तैयार होने लगे। दक्षिण में जति पांतिका भेद भाव अधिक है। इसलिये आश्रमसे कुछ विद्यार्थियोंके पिताने यह आक्षेप किया कि उनके लड़के सबके साथ बैठ भोजन न करें। ऐयर भेद भाव न रखते थे। पर जबरदस्ती कोई काम करना भी नहीं चाहते थे। उन्होंने ऐसा इन्तजाम किया, जो चाहते हैं एक साथ बैठकर भोजन कर सकते हैं और जो चाहते वे अलग भी भोजन करें।

विरोधियोंको मौका मिला । इसी बातको लेकर विरोधियोंने –बाहरके नहीं

[शेष १२वें पृष्ठपर देखिये]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पाठक चाहिये।

—श्री हंसकुमार तिवारी—

किसी भी देशकी उन्नतिकी पराकाष्ठा तीन प्रधान अवलम्बों द्वारा हो सकती है—उसकी संगठित शक्ति, उसकी वर्द्धनशील संपदा और उसका समृद्ध साहित्य। प्रत्येक उत्कर्षकामी देश एक साथ ही इन तीनों विषयोंकी समृद्धिका प्रयत्नशील होता है। इनमें भी साहित्यका आधार सर्वापेक्षा महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि साहित्य देशकी आत्माकी रागिनी है, उसके प्राणोंका शब्दमय रूप है। संपद, सहिष्णु और चरम उत्कर्ष भी हो, तो वाणीहीन वीरता देशका सुहाग नहीं हो सकती। साहित्यमें जीवन-संजीवनके अतिरिक्त काल प्लावनमें गिरकर स्थायित्व पानेकी क्षमता है। धन हो, शक्ति हो और साहित्य न हो, तो देश एक स्वस्थ-सुन्दर पुतला-सा हो जाय।

साहित्यकी सिद्धिके भी दो अंग हैं—उसकी सृष्टि और उसका व्यापक प्रसार। सृष्टिका संबंध लेखक-कविसे है और प्रसार का पाठकोंसे। किसी देशको बहुत अधिक साहित्य-स्रष्टाकी आवश्यकता नहीं होती, किन्तु अधिक-सेअधिक संस्कार संपन्न पाठककी अपेक्षा होती है। क्योंकि पाठकों द्वारा ही साहित्यकी शक्ति सार्थक होती है। अनेक कारखाने खोलकर आप अनेक तोप-बन्दूक तैयार कर दें और शिक्षित सैनिक ही संख्यामें थोड़े हों, तो क्या लाभ? समर्थ लेखक थोड़े ही हों, पर सहृदय पाठक यथेष्ट हों तो साहित्य असाध्य-साधनकर सकेगा, इसमें कोई संदेह ही नहीं। इसलिये जिस देशको प्रतिभाका बरदान मिलता है, वह भाग्यवान् है। साथ ही जिसे संवेदनशील पाठकोंका समुदाय भी मिलता है, उसे स्वर्ग जानिये। साहित्यकी अचूक अक्षय शक्ति लेखक-पाठकके संयोगसे ही प्रत्यक्ष हो सकती है। सच पूछिये, तो कविता मात्र लेखककी सृष्टि नहीं होती, समान रूपसे वह पाठककी भी सृष्टि होती है। सृष्टिकी सार्थकता उत्पादनमें ही नहीं, उस भावनाके विस्तारमें है, जिसका सारा उत्तरदायित्व पाठकोंपर होता है। कहा गया है—

कविता रसमाधुर्यं कविर्वेत्ति न तत्कविः
भवानी-भ्रूकुटीभंगं भवो वेत्ति न भूधरः

साहित्यके प्रति पाठकोंका उत्तरदायित्व बहुत बड़ा है। साहित्य सृष्टि जीवनकी जैसी तपस्या है, साहित्य रसास्वादन वैसी ही पाठकोंकी एक साधना है। जो-सो पाठक नहीं हो सकते। बड़ा-से बड़ा कवि भी यह दावा नहीं कर सकता कि मैं अच्छी कविता कर सकता हूं। काव्य-प्रतिभा ईश्वरप्रदत्त होती है। कुछ विचारकोंने उसे अनुशीलन और अभ्यासलब्ध जरूर बताया है, मगर अबतकके साहित्येतिहाससे इस सत्यकी प्रतीति नहीं होती। पाठक होना भी ऐसे ही कठिन काम है। उसके लिये एक स्वाभाविक संस्कार चाहिये। प्रतिदिन पांच पुस्तकके हिसाबसे पढ़ने वालेको ही आप यथार्थ पाठक नहीं कह सकते। पाठक वह है, जो लेखक द्वारा संचित रसकी प्रतीति ठीक उसी रूपमें कर सकता है। रसके साथ लेखक-पाठककी तदाकारतामें ही आनन्दका अक्षय स्रोत है। कार्लाइलने कहा है— 'जब हम तल्लीन होकर, कविता पढ़ते हैं तो स्वयं कवि हो जाते हैं। ऐसा न हो, तो काव्य या साहित्य पाठका आनन्द ही नहीं मिल सकता। गायक और श्रोता कवि और पाठककी अंतर्दृष्टि एवं रसदृष्टि एक होनी चाहिये। दोनोंके संस्कारमें यदि सामंजस्य न हो जाय, तो रसकी सिद्धि नहीं होती। गंगा-गुण गानमें अंग्रेज पाठकोंको उत्फुल्ल आनन्द इसलिये नहीं मिलता कि उनके संस्कारमें वह प्रत्यक्ष नहीं हो पाता। आप कालीदासके काव्यको पढ़ें और उसके वर्णित विषय अगर आपके हृदयकी पृष्ठभूमिपर यथायथ न उतरे, तो उसका रस आपको नहीं मिल सकता। भगवान् कृष्णने गीता कही। अर्जुनने उसे सुना। उस अर्जुनको भी हम कृष्ण कहा करते हैं। इसका अभिप्राय केवल इतना है कि कहन-सुननेवालेकी रस-दृष्टि एक है गाड़ीके दोनों बैलकी गन्तव्य दिशा एक होनी चाहिये। इसीलिये पाठकका काम आसान नहीं है। चूंकि आसान नहीं है, इसलिये उपयुक्त पाठक अधिक मिलते ही नहीं। किसी रचनासे पाठकको आनन्द महज इसीलिये मिलता है, कि उसके हृदयमें भी वे विषय, वे वस्तु, वे भाव वर्तमान होते हैं। कालिदासने कहा है :—

रम्याणि विक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्।
पर्युत्सुको भवति यत्सुखितोऽपि जन्तुः।
तच्चेतसा स्मरति नूनंबोध पूर्वं।
भावस्थिराणि जननान्तर सौहृदानि।

इसलिये वास्तवमें हरकोई साहित्य-रसका अधिकारी नहीं होता। कवि-प्रतिभा की तरह जिसे स्वभावतया ही सहृदयता मिली है, उसकी बात और है, किन्तु यों रसकी प्रतीतिके लिये पाठकको अभ्यास और अनुशीलनकी आवश्यकता होती है। आवश्यकता होती है कि पाठक साहित्य वर्णित भावोंमें डूब जाय। यही रसज्ञता है, इसीको तन्मयी भवनयोग्यता कहते हैं। अभिनव गुप्ताचार्यने इसे यों कहा है—

येषाम् काव्यानुशीलनाभ्यासवशाद्
विशदीभूते मनोमुकुरे वर्णनीय तन्मयी
भवनयोग्यता ते हृदयसंवाद भागः सहृदयः।

ऐसे लोग सहृदय कहलाते हैं। ये सहृदय या तो जन्मसे अपने साथ यह गुण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लिये आते हैं अथवा अभ्यासानुशीलन द्वारा सहृदयताके अधिकारी होते हैं। जिस निविड़ आत्म-संयोग द्वारा दो अलग-अलग कुलके स्त्री-पुरुष एक होकर दाम्पत्यका अमृत संग्रह कर लेते हैं, लेखक-पाठकमें उसीकी आवश्यकता है।

यह स्वीकार करते हुए हमें दुःख तो होता है, पर हिचक नहीं होती कि हमें पाठकोंका ही सबसे बड़ा अभाव है। हमारे साहित्यकी यह जो मंथरगति है, ऐसी जो कृश काया है, उसमें लेखकोंका जितना चाहे दोष हो, सबसे दोष पाठकोंका ही है।, हम लेखकोंके लिये बड़ी-बड़ी कसौटियां तैयार किये हुये हैं, बार-बार उनके महान् उत्तरदायित्वकी उन्हें याद दिलाते रहते हैं। राष्ट्रके प्रति उनके कर्तव्यकी ओर उन्हें सतत जागरुक रखना चाहते हैं, किन्तु संस्कारसंपन्न पाठक बढ़ानेकी हमारी कोई चेष्टा नहीं होती। साहित्यकी समर्थताका मात्र एक ही पहलू हम देखा करते हैं वह है सृष्टि। और हमारी यह एकांगी दृष्टि ही हमारी त्रुटिकी जिम्मेदार है। सजीवित बीज बटोरनेसे कुछ नहीं होता, उर्बर क्षेत्रका प्रयोजन उससे बड़ा है। दाता चाहते हैं मंगतोंको दामन भी होना चाहिये और हम देखते हैं कि बहुत-बहुत दिन पहलेसे ही लोग पाठकोंके अभावका रोना रोते आ रहे हैं। बल्कि इस मर्जकी इलाज समझकर ही नाना प्रकारके संतोष वाक्यों द्वारा समर्थ साहित्यकोंको संतुष्ट हो लेना पड़ा है। भवभूतिको अपनी कृति अनन्त कालपर छोड़कर संतुष्ट होना पड़ा। बहुतोंने यह कहा कि लोकप्रियता ही कला की कसौटी नहीं। थोड़े ही सहृदय पाठक मिलें, मगर वे योग्य हों। अरसिकोंकी जमायतसे थोड़े योग्य पाठक ज्यादा उपादेय हैं। किन्तु वास्तवमें उन साहित्यकारों की मनकी बात नहीं। बहुतोंमें अपनी आत्म-प्रतिष्ठाकी हार्दिक आकांक्षा उनकी होती है। किन्तु जब उसे असंभव ही देखते हैं, ज्ञाता इसीपर संतोष करते हैं। अनेक कलाकारोंके जीवनवृतान्त, उनकी रचनाओंमें हमें इसका स्पष्ट आभास मिलता है कि पाठकोंकी इस उपेक्षा, ऐसी उदारशीलतासे उन्हें मार्मिक पीड़ा पहुंची है। मगर वे निरुपाय ही तो थे।

हम यह भी मानते हैं कि पाठकोंकी यह उदासीनता उनकी विवशता है। उनमें साहित्य-संस्कारके विकासकी कोई सामूहिक चेष्टा नहीं की गयी, कोई राष्ट्रीय प्रयत्न नहीं हुआ। फलतः उनकी भी लाचारी ही जानिये। और दोनों लेखक-पाठककी इस विवशतासे हमारा राष्ट्र साहित्यकी संजीवनीका वह लाभ नहीं उठा पा रहा है जो अपेक्षित है। साहित्य राष्ट्रकी संपत्ति है। और इसीलिये साहित्यकार उसका एक आवश्यक अंग है। राष्ट्रको चाहिये कि वह अपने भाव कल्पतरु साहित्यकारको श्रद्धा और प्रेमसे सींचें और उसके फलसे अधिक-से-अधिक लोग लाभान्वित हों, इसके लिये समर्थ पाठक समाज तैयार करे राष्ट्रकी ओरसे दोनोंकी समान उपेक्षा है। वह न तो वाणीके वरदपुत्रोंकी अभी वह सामाजिक महत्व दे सका है, न बीणापाणिके आशीर्वादके वितरणकी सुव्यवस्था कर सका है। जब तक राष्ट्रके इस अनिवार्य कार्यको सुचारु रूप नहीं दिया जा रहा है तबतक यही समझना चाहिये, कि गोबरमें घीका अपव्यय हो रहा है। ईश्वरने मनुष्य बनाया, उसके पहले उसने अन्न--वनस्पतिकी सृष्टि की। साहित्य जहां जी सके, हमें उस क्षेत्रको साहित्यकारसे पहले ही तैयार करना चाहिये।

अन्यान्य देशोंके साहित्य--प्रसारको देखकर हम हिन्दीवालोंको आश्चर्य होता है। आश्चर्य होता है कि हमारे बड़े से बड़े लेखककी कृतिका महज एक हजारका संस्करण सालोंमें भी खत्म नहीं होता और विदेशी लेखककी रचनाओंकी लूट, होती है मानो अमृत बंट रहा ह। एक--एक पुस्तककी लाखोंलाख प्रतियां लहमेंमें चुक जाती हैं। इसमें लेखकोंकी योग्यताका जितना हाथ चाहे होता हो, सजग पाठकोंकी दुनिया बहुत बड़ी है। हिन्दीमें दुर्भाग्यसे लेखक--कवि ही पाठकसे अधिक हो पड़े हैं। साहित्य-विचारक गण इसीपरसे साहित्यकी प्रभावशून्यताकी शिकायत कर बैठते हैं। दवा खायी जाय और गुण नहीं हो तो, दवा या चिकित्सकका दोष है। बिना दवा खाये ही उससे किस गुणो की उम्मीद की जा सकती है? साहित्यकी हम ऐसी ही आशा करने लगे है। साहित्यके पढ़नेवाले तो नहींके बराबर ही है, किन्तु । उथल--पुथल मचा देनेवाली तानकी मांग कविसे की जाती है, किन्तु जिनके माध्यमसे वह क्रांति रूप ले सकती है उन्हें उस साहित्यसे कोई वास्ता नहीं, तो साहित्यका प्रभाव प्रत्यक्ष कैसे देखा जा सकता है? जिन विदेशीकवियों अथवा लेखकोंको समर्थ, क्रांति--दूत, मंत्र दृष्टा बताया जाता है। कहा जाता है कि उनके साहित्यसे देशमें अनुकूल वातावरण तैयार हो सका है, उनकी रचनाएं हमने देखी हैं। सी, वाल्टेयर, गोर्की, दांते, शेक्सपियर, सबकी रचनाएं हमारे सामने हैं और हम कह सकते हैं कि भारतीय साहित्यमें उन जैसे समर्थ साहित्यकोंका अभाव नहीं रहा, न वैसी कलानिधियोंकी कमी ही। फिर भी यहां उनसे वह जादू नहीं किया जा सका। आग्रहशील पाठक ही यहां उतने नहीं हैं जिनके लिये साहित्य है। फलतः महत्व की रचनाएं उसी प्रकार निष्प्रभ हो गयी हैं जैसे कि मरुमें बीज हो जाता है। इसलिये हम तो कहेंगे, भावकी गंगा तो बहती है किन्तु उनके किनारे लोकालय नहीं बसाया गया, स्नानोत्सबकी न बिधि बतलायी गयी, न लोगोंका उसमें गोते लगाकर शीतल होने का उछाह है। यही हमारे साहित्यकी प्रभावहीनताका प्रमुख कारण है। आज इसे दूर करना निहायत जरूरी है। समाज साहित्यकारसे जागरुक पाठककी हमें ज्यादा जरूरत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भारतका भावी विधान : दो प्रश्न

श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

भारतके भावी विधानका मसविदा देशके सामने है। इसको देखकर पहला प्रश्न यह होता है कि भारतका विधान लिखित हो या अलिखित हो, कठोर हो या लचकीला हो। दूसरा प्रश्न यह है कि भारतीय राज्य संयुक्त राज्य होगा या संघ राज्य होगा। विधानके लक्ष्य और उद्देश्यके समान ही ये दोनों प्रश्न महत्वपूर्ण हैं।

विधान क्या है? यह वह कानून है, जो देशकी गवर्नमेंटका होना निश्चित करता है, और सरकार और नागरिकोंके पारस्परिक कर्तव्योंका निश्चय करता है। यह राजनीतिक कानून है जो शासनात्मक कानूनोंसे भिन्न होता है। प्रत्येक विधान तात्कालिक, राजनीतिक परिस्थितियोंकी उपज है और शासक श्रेणीके राज्यों या पार्लमेंट या जनताके आदर्शोंऔर विचारों का प्रतिरूप होता है। विधान शासकश्रेणीकी राजनीतिक इच्छाका मूर्तरूप होता है। इसलिये सभा, और प्रवृत्तियोंके परिवर्तन के साथ विधानमें परिवर्तन आवश्यक है। यदि वैधानिक रीतिसे परिवर्तन संभव न होगा तब अवैधानिक रीतिसे होगा। इस लिये प्रत्येक विधानमें सत्ता या आदर्श बदलनेके साथ विधान परिवर्तन करनेकी सुविधा दी जाती है। इसलिये भारतीय विधानके मसविदेकी इस कसौटीपर परीक्षा की जानी चाहिये, क्या इसमें वर्तमान भारतीय राजनीतिक आदर्शों और विचारों का समावेश है, और उसके संशोधनके लिये क्या उपयुक्त मैशीनरी उसमें विराजमान है?

संयुक्त राष्ट्र अमरीकाका विधान लिखित या कठोर कहा जाता है और इंगलैंडका विधान अलिखित या लचकीला कहा जाता है। पर वस्तुतः इन दोनोंमें विशेष अन्तर नहीं है। क्योंकि इंगलैंडका विधान भी लिखित है। पर एक साथ एक पुस्तिकाके रूपमें तैयार नहीं किया गया वह बिखरा हुआ है। अमरीकाका विधान भी लचकीला है। क्योंकि इसमें संशोधन और परिवर्तनके लिये सुविधा और अवकाश है और अनेकबार इसमें परिवर्तन किया गया है।

फिर स्वभावतः प्रश्न उठता है कि विधान और साधारण कानूनमें क्या अन्तर है? साधारण कानूनमें साधारण बहुमतसे परिवर्तन संभव है। पर वैधानिक कानूनमें दो तिहाई या तीन-चौथाई मतोंसे ही परिवर्तन किया जा सकता है। इंगलैंडमें वैधानिक कानूनों और साधारण कानूनोंमें कोई अन्तर नहीं किया जाता। लार्ड सभाकी शक्ति कम करनेका बिल पार्लमेंटके सामने है। उसकी स्वीकृति और अस्वीकृति साधारण बहुमतके आधारपर ही होगी। पर संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके अन्दर इसमें भेद किया जाता है। वहां वैधानिक कानूनमें कांग्रेसके दो-तिहाई वोटोंसे और स्टेटोंके तीन-चौथाई वोट आनेपर ही परिवर्तन और संशोधन तथा परिवर्द्धन संभव है।

भारतके विधानके मसविदेमें भी वैधानिक कानून और साधारण कानूनके बीच भेद स्वीकार किया जाता है। वैधानिक कानूनोंमें दोनों धारा-सभाओंके दो-तिहाई बहुमतसे ही संशोधन और परिवर्तन हो सकेगा। इसलिये संभवतः प्रश्न उत्पन्न होता है। क्या भारतमें संयुक्त राष्ट्र अमरीकी पद्धतिका अनुसरण करना उचित है?

अल्प मतसे प्रश्न यह है कि विधान परिषद या दो-तिहाई या तीन-चौथाई मतोंसे विधानको स्वीकार करेगी, बल्कि साधारण बहुमतसे करेगी। एक बात और ध्यानमें रखनेकी है। विधान परिषदके सदस्योंका चुनाव सीमित और अल्प वोटरों द्वारा साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणालीसे किया गया है। आजकी विधान परिषद विधान बनाने और साधारण कानून दोनोंको बनानेका काम कर रही है। इस अवस्थामें बालिग मताधिकार द्वारा प्रत्यक्ष तथा संयुक्त निर्वाचन प्रणालीके आधारपर चुनी गयी पार्लमेंटपर यह यह प्रतिबन्ध क्यों लगाया जाय, कि वह दो-तिहाई मत प्राप्त होनेपर ही विधानमें परिवर्तन और संशोधन कर सकेगी? क्या बादमें पार्लमेंटके बननेवाले सभ्य कम योग्यता और कम जिम्मेदारी होंगे? गणितके हिसाबके अनुसार यह मानना होगा कि वर्तमान विधान परिषदका ५१ प्रतिशत सभा और बुद्धिमानीके भविष्यका पार्लमेंटके ६७ प्रति शत के समान है।

इस प्रसंगमें संयुक्त राष्ट्र अमरीकाका विधान किसप्रकार स्वीकार किया गया, यह जानना अनुचित न होगा। रोडे आइलैंड विधान बनानेमें सम्मिलित ही नहीं हुआ। कन्वेशन द्वारा अपना कार्य समाप्त करनेसे पहले ही बहुत-से प्रतिनिधि चले गये। जो शेष बचे उनमेंसे अनेक ने हस्ताक्षर ही नहीं किये। ६५ प्रतिनिधि नियुक्त किये गये, ५५ उपस्थित हुए और ३९ ने केवल दस्तखत किये! इसपर भी जार्जवाशिंगटनने लिखा,उपस्थित स्टेटोंकी सर्व सम्मतिसे विधान स्वीकार किया गया। पर सचाई क्या है? अमरीकाके इस विधान को दो-तिहाई मत नहीं प्राप्त हुए। पर आज उसमें संशोधन इसके वगैर सम्भव नहीं है। क्या भारत भी इसीको अपनाना चाहता है?

इस पद्धतिमें एक और दोष है। यह अल्पसंख्यकोंको 'वोटों' का अधिकार देना है। क्योंकि संशोधन उनकी सहमतिके बिना सम्भव नहीं है। अल्पसंख्यक इस प्रकार बहुसंख्यक बना दिये जाते हैं। इसकी बुराईका परिणाम देखना हो तो संयुक्त राष्ट्र अमरीकाके विधानके संशोधनका इतिहास देखना चाहिये। लार्ड ब्राइसका कहना है कि बहुतसे वांछनीय और आवश्यक सुधार पेश नहीं किये गये या पुष्ट नहीं किये गये क्योंकि आवश्यक बहुमत प्राप्त करनेमें इस तरहकी कठिनाइयां थीं।

साधारण कानूनोंसे राजनीतिक और वैधानिक कानूनोंको विशेष महत्व देनेका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई कारण भी नहीं दीखता । यह मानी हुई बात है कि संयुक्त राष्ट्र अमरीकाकी अपेक्षा ब्रिटेनमें राजनीतिक और नागरिक अधिकार अधिक सुरक्षित है ।

वैधानिक और साधारण कानूनके बीच भेदकरनेसे एकऔर हानि होती है इससे एक प्रकारकी अनिश्चितता उत्पन्न होती है क्योंकि हमेशा भय बना रहता है कभी कोई व्यक्ति इनको सुप्रीम कोर्टमें चुनौती देगा और ये कानून कोर्ट कानूनी घोषित कर देगा । धारा सभा भी कानूनोंको रद्द कर सकती है । पर जबतक उसके पीछे लोकमतका बल न हो, वह ऐसा करनेका साहस नहीं कर सकती और इस राजनीतिक शास्त्रकी कल्पना की जा सकती है । पर धारा सभा द्वारा पास किये गये कानूनपर सुप्रीम कोर्ट नें वैधानिक मुहर लगाया या अवैधानिक यह जानना कठिन है । इसका पूर्वाभास नहीं हो सकता । सुप्रीम कोर्ट धारा सभाके समान कानूनको बोलनेमें असमर्थ है । उसको जन-मतकी भी चिन्ता नहीं है और न समयकी आवश्यकताकी ओर इसका ध्यान रहता है । उसका ध्यान तो कानूनकी व्याख्या करनेकी ओर एक अन्त रहना है। दूसरी ओर धारा सभा इस बातका विचार करती है कि कानून कैसा होना चाहिए । अपवादोंकी बात छोड़ देनी चाहिय जब कोर्टोंने कानूनकी व्याख्या करनेका काम न करके कानून बनानेका काम किया है। प्रेसीडेंट रूजवेल्टकी नूतन योजनाओंको सुप्रीम कोर्टसे जैसा मोर्चा लेना पड़ा , वह यहां दुहरानेकी आवश्यकता नहीं है ।

फिर सुप्रीम कोर्टके जज किसी कानूनको वैध या अवैध दो-तिहाई या तीन-चौथाई मतोंसे नहीं ठहराते, पर साधारण बहुमतसे । यदि वैधानिक प्रश्नका एक जजके बहुमतसे निर्णय किया जा सकता है तब धारा सभाके बहुमत द्वारा इस प्रश्नका निर्णय करनेमें क्या आपत्ति है हो सकती है । इसलिये कानून बनानेके लिये पार्लमेंटकी सभा सर्वोच्च होनी चाहिये । ब्रिटेनके समान भारतमें भी वैधानिक कानूनों और साधारण कानूनोंमें भारतमें भेद न करना चाहिये । भारत जिस तेजीसे बदल रहा है , हमारी सामाजिक संस्थाएं , नया रूप धारण कर रही हैं, हमारे विचार और आदर्श बदल रहे हैं, उनके अनुसार विधानका बदलना आवश्यक है । इसके लिये आवश्यक है कि विधानमें आवश्यकताके अमुसार परिवर्तन करनेकी सुविधा हो , । विधान जनताकी भावना, उसके आदर्शोंऔर विचारोंके अनुसार हो, इसके लिए यह आवश्यक है कि उसमें परिवर्तन करनेके लिये आवश्यक बन्धनोंके अतिरिक्त बन्धन न लगाये जायें ।

दूसरा प्रश्न है कि भारत संयुक्त राज्य हो अथवा संघ राज्य । भारतके इतिहासपर दृष्टि डालते हुए यह कहना अनुचित न होगा कि यदि इस देशमें एक राष्ट्र निर्माण करना है, यदि जातीय और प्रान्तीय भेदोंको मिटाना है और राष्ट्रीयताकी स्थापना करनी है,तो इस देशमें संयुक्त राज्यकी स्थापना करना चाहिये, संघ राज्यकी नहीं । डा० अम्बेडकर और उनकी कमेटीने भारतीय संघकी जगह भारतीय यूनियन नाम देना अधिक पसन्द किया है । यदि भारतीय नामको सार्थक करना है, तो संघ राज्यकी स्थापनाका विचार छोड़कर संयुक्त राज्य एक मंत्री (यूनिटरी) शासनकी स्थापना करनी चाहिय । इसमें प्रान्तों और जनपदोंकी विशेषताके खोनेका कोई डर नहीं है , पर देशमें एक सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक कानुन होनेसे भारतीयताकी भावना प्रबल होगी और एकताकी सत्ता दृढ़ होगी । अतः स्रमके ब्रिटिश साम्राज्यवादोंकी चालोंमें आकर नरेशों और मुस्लिम लीग सदृश राष्ट्रीयता विरोधी साम्प्रदायिक संस्थाओंको प्रसन्न करनेके लिये १९२० में पहली बार भारतीय राजनीतिज्ञोंनें एक नयी शासनकी जगह फेडरल शासनको स्वीकार किया,पर जिन कारणो और जिन परिस्थितियोंके कारण फेडरल शासन और संघ राज्य स्वीकार किया था वे अब नहीं रहे । अब सब स्वीकार करते हैं कि केन्द्रीय सभा मजबूत होनी चाहिये ,उसका अधिकार अबांधित रहना चाहिए। इसको स्वीकार करते हुए संघ राज्य बनाना गलती होगी । १९३१में की इस गलती को सुधारनेका यह उत्तम अवसर है । संघ राज्यके स्थानपर संयुक्त राज्यकी स्थापना करके हम पुरानी भूलको सुधारनेका उद्योग करेंगे ?

**धवल या श्वेत कुष्ठ**—जिनको ऐसा विश्वास हो कि यह रोग चंगा नहीं होता, यदि मेरे पास आयें तो उनके एक छोटे दागको मैं चंगा कर दूंगा, कोई खर्च नहीं देना पड़ेगा । रक्तरक्त, एक-जिमा, श्वेत कुष्ठ, पित्त और रक्तदोष जनित विविध चर्म रोगोंके दूर करने के लिए २० वर्षोंके अनुभवी **चर्मरोग चिकित्सक पण्डित एस० शर्मा** की व्यवस्था और औषधि ग्रहण करें। (समय ३-८) २६-८ हरीसन रोड, कल०।

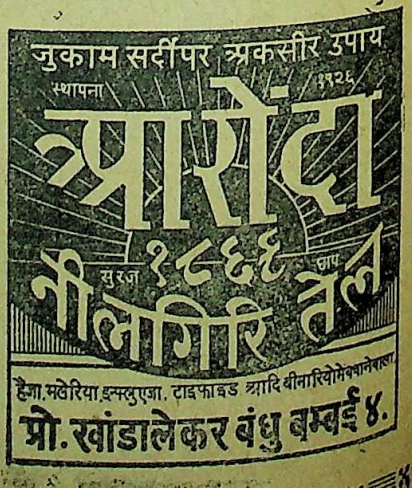


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# काश्मीरका भविष्य

सन्तराम बी०ए०

२७ अक्टूबर १९४७ का दिन था और तीसरे पहरका समय । मैं होशियारपुरसे कोई ढाई मील परे पुरानी बस्ती नामक गांवमें बैठा था । अचानक आकाशमें वायुयान उड़ते देख पड़े । वे घूं-घुं करते हुए पूर्वकी ओरसे आ रहे थे और उत्तरको जा रहे थे । उनका यह सिलसिला दिनमें ही नहीं, रातभर लगा रहा । लोग हैरान थे कि क्या मामला है ! २८ अक्टूबरको वायुयानोंका आवागमन फिर आरम्भ हो गया । आज वे जहां पूर्वसे उत्तर जाते थे वहां उत्तरसे पूर्व लौट भी रहे थे । दिन भर आकाश उनके शब्दसे शब्दायमान रहा । इससे जनताका आश्चर्य और भी बढ़ गया । रातको ९बजे जब रेडियो सुना तब पता लगा कि अफरीदी और दूसरे पाकिस्तानी मुसलमान शस्त्रास्त्रसे सुसज्जित हो , ट्रक लेकर, मार-काट करते हुए काश्मीर राज्यमें घुस आये हैं; उन्होंने अनेक गांवोंपर ,अधिकार कर लिया है । यहांका बिजली घर नष्टकर डाला है । मुजफ्फराबाद शहर जला दिया गया है , हिन्दू-सिख मनुष्योंकी संख्यामें मारे गये हैं, और बहुतसी स्त्रियोंका अपहरण हुआ है । यह भी समाचार मिला कि काश्मीर नरेशने भारत-सरकारसे सहायता मांगते हुए इंडियन यूनियनमें सम्मिलित होनेका निश्चय किया है और भारत सरकारने वायुयानों द्वारा अपने सैनिक काश्मीर भेज दिये हैं । पर लार्ड माउण्टबैटन आदि अधिकारियोंने नियम यह रखा है कि उपद्रव शान्त हो जानेपर काश्मीर-वासियोंका मत लिया जायगा कि वे किस डोमिनियन में सम्मिलित होना चाहते हैं; पाकिस्तान या हिन्दमें । जिसके पक्षमें बहुमत होगा , काश्मीर उसीमें सम्मिलित होगा । इसी बीचमें एक अन्तरकालीन सरकार काश्मीरमें बनाई जायगी , जिसका प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला होगा । रेडियोके इस समाचार से वायुयानोंके आवागमनका रहस्य खुल गया । रेडियोने यह भी बता दिया कि काश्मीरकी राजधानी श्रीनगरसे ३५मील के अन्तरपर बारहमूलामें विद्रोहियों और हिन्द सेनाओंकी टक्कर हो रही है । विद्रोहियोंके साथ पाकिस्तानी सिपाही भी हैं और काश्मीरकी ९० प्रतिशत मुस्लिम प्रजा विद्रोहियोंकी अस्थायी सरकारके सैनिकोंका फल-फूलसे स्वागत कर रही है ।

काश्मीर यद्यपि होशियारपुरसे दूर कोई पांच सौ मील है, पर इस समाचारसे सबके हृदय धड़कने लगे । सभीने समझ लिया कि काश्मीर गया । शेख अब्दुल्ला चाहे कितने ही शुद्ध हृदयवाले हों पर वे वह काम नहीं कर सकते जिसे स्वयं गांधीजी नहीं कर सके । जब भारतमें गांधीजी हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करनेमें सफल न हो सके, जिसका परिणाम पाकिस्तान हुआ, तो काश्मीरमें शेख अब्दुल्ला साम्प्रदायिक एकता कैसे संपन्न कर सकेंगे । याद रहे कि साम्प्रदायिक एकताके बिना राजनीतिक एकता असंभव है । संसारमें एक भी देश ऐसा न मिलेगा जहांके अधिकारी केवल जन्मके कारण एक-दूसरेसे खान-पान और ब्याह-शादी करनेमें इंकार करते हों और फिर भी वह देश स्वतंत्र और राजनीतिक रूपमें एक हो । भारतके नेता इस सृष्टि-नियमको बदल नहीं सकते । इस विषयमें प्रकृति भारतको अपवाद नहीं बना देगी । काश्मीरमें पहले तो बहुत से हिन्दू अभी भाग आये हैं । जो लोग रह गये हैं वे सदा ज्वालामुखी पर्वतपर बसनेवाली की भांति वहां रहेंगे । भारत संघमें मिल जाने पर भी काश्मीरके मुसलमान किसी समय भी उठकर हिन्दुओंका सफाया कर देंगे और शेख अब्दुल्लाकी आंखें बंद होते ही वे पाकिस्तानमें मिल जायेंगे । पहले तो मतदानमें भी वहां भारतका जीतना कोई निश्चित बात नहीं । यदि मान लिया जाय कि इस समय वह जीत जायगा तो भी हिन्दुओंके दृष्टिकोणसे वह समाप्त ही समझिये । हिन्दू वहां कभी बेखटके न रह सकेंगे । इतिहासकी यही शिक्षा है कि मुस्लिम काश्मीर बहुत दिन तक भारतका भाग न रह सकेगा । कांग्रेसने कितनी ही कुरबानियां क्यों न की हों, पर जिस नीतिपर वह अब चल रही है उससे देशके अकल्याण की ही आशंका है ।

सारे अनिष्टका कारण यह है कि हमारे नेतागणने भारतके रोगको समझनेकी और यत्न न हीं किया । वे अन्धाधुन्ध रूस और अमरिकाका अनुकरणकरना चाहते हैं जर्मन नाजियोंके सदृश कांग्रेसने सारे प्रेस पर अधिकार कर रखा है । इससे विपक्ष जनताके सामने ही नहीं आने पाता । परिणाम यह है कि भारत स्वतंत्रताकीदत्तले तक पहुंच कर फिर नीचे गिर पड़ता है । कांग्रेसकी आलोचना करना बड़ा भारी देश-द्रोह समझा जाता है । जिससे लोकतंत्रकी छीछालेदर हो रही है । समाजवाद के प्रवर्तक श्री कालेमार्क्सने ८ अगस्त १८५३ के न्यूयार्क डेलीट्रिब्यूनलमें भारतके संबंधमें जो कुछ लिखा था वह आज भी भारतीय प्रजाओंके मनन करने योग्य है । उन्होंने कहा था–

"यह कैसे हुआ कि भारतमें अंग्रेजोंका आधिपत्य स्थापित हो गया । मुगल सम्राटों की प्रधान सत्ताको मुगल राज प्रतिनिधियोंने भंग कर दिया । इन मुगल नबाबोंकी शक्ति मराठोंने तोड़ दी थी । मराठोंकी शक्तिको अफगानोंने तोड़ा । ये सब लोग जब आपसमें लड़भिड़ रहे थे , ब्रिटेन भीतर घुस आया और इनको दबानेमें सफल हो गया । यह देश न केवल हिन्दू और मुसलमानमें ही बंटा था , वरन् एक जाति दूसरी जातिसे एक वंश दूसरे वंशसे, एक विरादरी दूसरी बिरादरी से, ,, एक वर्ण दूसरे वर्णसे अलग बंटा पड़ा था ,यह एक समाज था जिसका ढांचा एक ऐसी साम्यावस्थापर आधारित थी जो उस समाजके सब सदस्योंमें एक दूसरेके प्रति घृणा, अप्रीति और वैधानिक पृथकतासे उत्पन्न हुई थी । ऐसे देश और ऐसे समाजके भाग्यमें क्या पहलेसे ही हार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खाना नहीं लिख दिया गया था ? यदि हमें भारतके प्राचीन इतिहासका न भी पता हो , तो क्या यहीं एक अकाट्य सत्य नहीं कि भारत आज इस समय भी भारतके खर्चसे रखी हुई भारतीय सेना द्वारा अंग-रेजोंकी दासतामें जकड़ा गया है । तब भारत पराजित होनेके दुर्भाग्यसे न बच सका और इसका सारा इतिहास , यदि कोई इतिहास है , उन क्रमिक हारोंका इतिहास है जो इसे खानी पड़ीं । भारतीय समाजका बिलकुल कोई इतिहास रूपमें कम कोई ज्ञात इतिहास , नहीं । जिसे हम भारतका इतिहास कहते हैं वह जिन बुलाये आनेवाले आक्रमणोंका इतिहास है जिन्होंने प्रतिरोध न करने और न बदलनेवाले हिन्दू समाजके आधारपर अपने साम्राज्य स्थापित किये । इसलिये प्रश्न यह नहीं कि अंगरेजोंको भारतको जीतने-का सा अधिकार था , वरन् यह कि भारतको तुर्क जीत लेते, ईरानी जीत लेते, या रूसी जीत लेते तब अच्छा था या अंगरेजोंका इसे जीतना अच्छा है ।"--हिन्दुस्तानपर लेख, पेज ६६--६७ .

अब देखना यह है कि हिन्दू समाज में पायी जाने वाली जिस जाट, सामाजिक पृथकता , जाति-भेद, ऊंच-नीचमूलक घृणाके कारण यह देश गत १३०० बर्षसे विदेशियों द्वारा पदाक्रान्त होता चला आ रहा है ; क्या वह अब दूर हो गयी ? बिलकुल नहीं । जो काश्मीर आज पाकि-स्तानका कौर बनने जा रहा है, उसी काश्मीर के एक सौ मुसलमान राजपूतघरानोंने गत जलाईम वहांके हिन्दुओंसे प्रार्थना की थी कि हमें अपने समाजमें ले लो, पर अभि-मानी और स्वार्थी हिन्दू राजपूतोंने उनकी प्रार्थनाको ठुकरा दिया ।

इतना ही क्यों, सुना है, कथित आजाद काश्मीरके लुटेरोंका सरदार मुहम्मद इब्राहीम जिस चिब जातिमें हैं चिब जातिके कोई एक लाख मुसलमानोंने काश्मीर-नरेशसे उनके द्वारा हिन्दू बना लेनेके लिये प्रार्थना की थी । सुना है, काश्मीर-नरेश भी चाहते थे कि उनको हिन्दू बना लिया जाय ; पण्डित भी सहमत हो गये थे पर हिन्दू राजपूतनावमें पत्थर डाल दिये । उन्होंने चिब राजपूतोंको अपनेमें मिलानेसे साफ इन्कार कर दिया । वे समझते थे अब हम डोंगरे (हिन्दू राजपूत) ही काश्मीरके अधिपति बने हुए हैं, फिर हिन्दू बनकर ये चिब भी हमारे भागीदार बन जायेंगे । जब आप मुसलमानको न तो रोटी-बेटी व्यवहार द्वारा अपनेमें मिलानेको तैयार हैं और न उनको अपवित्र,ऊंच-नीच समझकर उनसे घृणा करना छोड़ते हैं, तो तंग आकर वे आपसे लड़ें न तो और क्या करें ? अछूत और शूद्र बनकर बहुत दिन तक कैसे रह सकते हैं ।

हैदराबाद आदि जितने मुस्लिम रज--वाड़े हैं वे अपने पांवोंको मजबूत बनाने के लिये सदा ही अपने यहां मुस्लिम प्रजाकी संख्या बढ़ानेका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपसे यत्न करते रहते हैं । इसके विपरीत हिन्दू रजवाड़े शूद्रों और अछूतों जैसे हिन्दुओंको कुचलकर अपनाक्षत्रित्व या ठाकुरपन दिखलाया करते हैं । मुसलमा-नोंको पचाना तो दूर एक हिन्दू जाति भेदके कारण दूसरे हिन्दुओंको भी समता और बन्धुताके सूत्रमें नहीं बांध सकता । इसलिये हिन्दूओंका घटना औरमुसल-मानोंका बढ़ते रहना अवश्यम्भावी है । खेद है कि हमारे राजनीतिक नेता जाति-भेदको मिटाकर सामजिक समता और स्वतंत्रताके आधारपर एक राष्ट्रकी सृष्टि किये बिना ही राजनीतिक एकताकी विफल चेष्टा कर रहे हैं । इसलिये इनके प्रयत्न देशके कल्याणका कारण न बनकर बहुधा अनिष्टका ही कारण बना करते हैं । एक ओर तो ये लोग सारे उपद्रवकी जड़ अंगरेजोंको बताते हुए नहीं थकते । दूसरी ओर अंगरेजोंका गवर्नर जनरल और सुप्रीम कमाण्डर बनानेमें भी इन्हें कोई संकोच नहीं । अंगरेज ही श्रेष्ठ क्यों न हों, पर जो ममता और हित श्री जिन्नाको पाकिस्तानसे है वह किसी अंगरेजको कभी भी भारतसे नहीं हो सकता ।

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage as. 12. Free to 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

T.B टी.बी. "तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जबरीका नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगीकी जान बचाने वाली शक्ति-शाली औषधि है । एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिससे तसल्ली हो सके । मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु० । नमूना १० दिन २०) रु० । जबरी नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है । आज ही आर्डर देकर रोगीकी जान बचावें। तारका पता-Jabri-Jagadhari काफी है।

पता—रायसाहब, के०एल० शर्मा, रईस (६०) 'जगाधरी' (E.P.)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कहानी—

# दुश्मन——

श्री राम शर्मा 'राम'

देश स्वतन्त्र हो गया । किन्तु स्वतन्त्रताकी जिस प्रकार ज्योतिको जगमगाने के लिये आत्म बलिदानका पहिले ही ढेर लगा था,——हाय ! उसीसे माता स्वतन्त्रता का पेट नहीं भरा, उसके आते आते एक साथ ही हजारों प्राणियोंका वध हो गया ! समाज त्रस्त हो उठा ! आत्मीय छूट गये । सदियोंके सम्बन्ध टूट गये । अपने पराये बन गये । देशपर निराशा और वैधव्यके बादल छा गये ।

कमरेमें आते ही , सतीशने अपनी पत्नीकी ओर देखा और मांकी ओर । वह तभी विद्वेष और ईर्षा भरी वाणीमें बोला——रोम गल रहा था और नीरो बंशी बजा रहा था...देशका बच्चा-बच्चा गाजर मूलीकी तरह कट रहा है और यहींपर इसी शहरमें राजधानी और स्वतन्त्रताके नामपर प्रदर्शन हो रहा है...संसारको बताया जा रहा है कि आज भारत स्वतन्त्र हो गया । कहते हुए वह जोरसे हंसा और ठहाका मार कर , इस तरह अपने आपमें डूब गया कि जैसे समुद्रके गहरे पानीसे ऊपर आ मगर-मच्छने अपना विशाल मुंह खोला, और फिर गोता खाकर अन्दर चला गया ।

लेकिन पत्नी और मांने जब उसकी बात सुनी, तो मांने उसकी ओर अचरज और जिज्ञासाके साथ देखते हुए कहा——तो सतीश बेटा——'

घूरते ही सतीशने कहा——'यह देश मर जायगा, मां! जीवित नहीं रहेगा ।'

मांने शास्वत और धीर भाव लेकर कहा—— जो भाग्यमें लिखा है, वही होगा । ईश्वरको यह भी करना था !

बात सुन कर, सतीश मांके सामने ही कुर्सीपर बैठ गया । उसने अपने पत्नी नर्वदाको भी लक्ष किया । तदनन्तर बोला——यह कहना तो आसान है, मां ! परन्तु जिसपर बीतता है, वह जानता है, वह——सतीशने फिर नर्वदाकी ओर देखकर कहा——मेरे मस्तिष्कमें इस समय जो आंधी उठ रही है, उसीने मुझे परेशान कर दिया है ।' वह बोला——लाहौरसे आया हुआ मुझे अभी अभी एक मित्र मिला । रास्तेमें मिल ही गया, बेचारा ! आह ! जिसके घरमें लाखों रुपया था, नौकर थे, ऐशो आरामकी जिन्दगी थी, सुन्दर, सुकोमल पत्नी, वह सभीसे बिछुड़ गया । उसने अपने पत्नी और बच्चेको अपने हाथों से ही काट दिया । उसने——'

नर्वदाने एकाएक कहा——उफ !,

सतीश बोला——मिलते ही रो पड़ा । छातीसे चिपट गया ।

आतुर भावमें मांने कहां-कहां है , कहां——

सतीश बोला——'शरणार्थी कैम्पमें ।' उसने कहा——पहचाना भी नहीं गया । रास्तेमें सामने टकरा गया । छूटते ही बोल दिया, मैंने चौंक कर कहा——'कौन रमेश ! उसने उत्तर नहीं दिया । उसकी आंखोंने रो दिया ।

मांने कहा——हे राम !

सतीश बोला——और देशका जो सरसब्ज भाग उजड़ गया, वहांका एक बड़ा समुदाय भिखारी बन गया, अपने घरोंसे छूट गया, तो अब यह हाल है इस नगरका मकान नहीं देता.....उन विपत्तिके मारोंको धीरज.....

उसी समय , नर्वदाने सांस भरी और छोड़ दी ।

मांने कहा- 'यह अन्याय है ।

सतीश बोला-'न, मां ! हिन्दू समाजका यही पाप है । यह हजारों वर्षोंसे चला आता है.....आज घड़ा भर गया औ फूट गया । '

नर्वदाने कहा-'यह पाप मूसलमानोंने किया ,उन्होंने ही बलात्कार और लूट-मार——'

ओह, तुम बहुत अंतकी बात लेती हो, नर्वदा ! न, न, यह आजकी बात नहीं- अभीकी नहीं ।- सतीश बोला-इस हिन्दू जातिका इतिहास देखो । तुम समझो कि पापका सृजन हो हमने किया .... हमारे पैसेने ! '

उसने कहा-हिन्दू जातिने पैसा क्या पाया , मनुष्यताको खो दिया । अकर्मण्यता और स्वार्थपरताका भी जीवन पा लिया, इस हिन्दू गातिने !

माने कहा-'पैसा बुरा नहीं ।आदमीत बनाता है , आगे बढ़नेकी गति देता है ।

सुनकर, सतीश क्षणभर मौन रहा । बोला-एक दिन वही समझा गया था मा! पर यह नहीं हुआ । इस देशपर बाहर से प्रहार हुए । वे शत्रुविजयी हुए और यहांके स्वामी बन गये । भला क्यों ! क्या शासन करनेके लिये ? न, मा ! वे यहांका धन चाहते थे । वे अपना धर्म और मजहब भी बढ़ाना चाहते थे । उन्होंने जितने युद्ध किये , धर्मका झंडा आगे रखा और पीछे नंगी तलवार .....उन्होंने इसी प्रकार संसारका एक बड़ा भाग जीत लिया । हिन्दू धर्म भी जित लिया ।

माने कहा-'धर्म नहीं , व्यक्ति जीत लिया ।'

दोनोंका एक अर्थ है मा ! -सतीश बोला -व्यक्तिसे धर्म है ।'

माने कहा-'यह भी अन्याय था ।। हिन्दू समाजने कहीं हमला नहीं किया यह उदार कहा । जीओ और जीनेकी दो की परम्परा मानता था । '

माकी बात सुनकर , सतीश फिर झल्ला उठा- भोली मा ! इस आदर्शने ही हिन्दू समाजका पतन किया । '- वह बोला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जिस 'स्वातः सुखाय, बहुजन हिताय' के अमर उपदेशसे सम्राट् अशोक प्रभावित हुआ । और बौद्ध धर्मका अनुयायी हुआ, उसी सम्राट् अशोकके कालमें साम्राज्यका अंग कटने लगा । घरमें विद्रोहका बीज फूट निकला । जो समाज तलवारके भयसे भीत था, वह 'अहिंसा परमो धर्मः केउस अमर उपदेशों से न तो प्रभावित हुआ, न जागरुक ! वह काहिल, अकर्मण्य और ईर्षालु बन गया ।'

चंचल बनकर, उसी समय, नर्वदा ने कहा–'तो हो क्या.....क्या !'

'अब क्या होगा ! हिन्दू समाज मरेगा । इसकी संस्कृतिका, इसके धर्मका लोप हो जायगा ।'

सुनते ही, तपाकसे नर्वदाने फिर कहा– 'यह नहीं होगा'– नहीं ।

सुनकर, सतीश फिर जोरसे हंस दिया ।

उस हंसीको देख, स्वयं माने जैसे क्षुब्ध बनकर कहा –'हां, रे ! तू हंसता है ! बहू ठीक कहती है, हिन्दू समाज नहीं, सकेगा ।'

तब नर्वदाने माकी ओर लक्ष्य करके कहा –'न, अम्मी ! बात इतती नहीं ! इसमें रहस्य है । कुछ भारीपन भी है । वह बोली–'पिताजी करहहते थे, यदि हिन्दू समाज मर गय, तो विश्वसे एक सुंदर और अभूतपूर्व संस्कृतिका लोप हो जायगा । विश्वमें संकटके जिस प्रकार बादल उठे हैं उनसे विश्व त्रस्त ही होगा, शान्त नहीं ! वह कहने लगी–'हमको जीवनमें जितनी सामग्री चाहिये, उनमें रुपया और विश्वका वैभव ही तो प्रमख नहीं, हमको आत्माकी खुराक भी चाहिए । नैतिक बल । और यह हिन्दू संस्कृति देती है । यही तो विश्वकी ओर मुंह करके कहती है,– ये सभी बच्चें हैं,– मेरे ही प्राण !'

सतीशने नर्वदाकी उस भावनामयी आकृतिको देख, तनिक विचलन भरी भावनाके साथ उसे देखा और तब कहा– नर्वदा देवी, इतनी बातसे कोई इन्कार नहीं करेगा । परन्तु, प्रश्न तो यह है, ऐसी संस्कृति से हमें मिले क्या ! विश्वकी भले ही कुछ दिया हो, परन्तु भारत तो सदियोंसे गुलाम बना रहा ।'

उसी समय, नर्वदाने लाल बनकर कहा– आप भलते ह, हमा ी संस्कृतिक ही प्र भाव है कि हजारों ज्वारांभाटेआनेपर भी संस्कृति अमर नहीं....विश्व कहता तो है, इस भूतलपर जाने कितने धर्म बर्ण और किकतनी जातियां, पर उनमें जो अधिकांश चले गयें और मिट गये ।'

मांने सतीशकी ओर देखकर कहा– और तू इतना भी नहीं मानता ? इतना–'

सतीश बोला–'शायद !'

मांने कहा–'शायद नहीं ! ठीक !

सुनकर, सतीश हंस दिया ।

मांने कहा– यह हंसीका विषय नहीं, चिन्ताका है । खेदपूर्ण !

इतनी बातपर, सतीश फिर अपनी बातपर आ गया और वाणीमें रोष भर कर बोला– जो प्रस्तुत विषय है वह यह नहीं । वह और ह । आज धनिक-निर्धनका तो युद्ध छिड़ा ही है । पर हिन्दू समाजमें जो गतिहीनता है, छूत–अछूतपन है, वह पाप आज हमारे सिरपर चढ़कर बोला है । मुसलमानोंका सृजन इसी पापके द्वारा हुआ है, मां !'

मां बोली–'यह मानती हूं ।'

'और तुम यह नहीं मानती कि इस खुदगर्जी और स्वर्थपरताने ही, हिन्दू समाजको एक नहीं बनने दिया ..... पास-पास नहीं आने दिया ।'

मांने सांसभर कर कहा–'यह तो ठीक ही है, बेटा !'

सतीशनें कहा–विदेशी राज्यमें देश एक था । पर आज तो जिसे देखो, वही आगे बढ़ने और दूसरेको ठग लेनेकी इच्छा में डूब रहा है । स्वार्थ और दम्भ फैल रहा है .... पैसेके लिये, व्यक्ति ही व्यक्तिका गला काट रहा है ।'

मांने इस बातको सुनकर भी सांस भरा और छोड़ दिया । उसने अपनी उन रूखी आंखोंको बाहर आसमानकी ओर भी उठा दिया ।

सतीशने नर्वदाकी ओर देखकर कहा–'जिस अमानुषिक अत्याचारका सामना करने के लिये और शोषणको को रोकनेके लिए बलिदानों और त्यागकी भावनाओंका प्रदर्शन किया गया । मैं देखता हूं, मानो आज उसका अस्तित्व ही मिट गया । पूंजीवाद आगे बढ़ गया । सामाजिकताका पतन !'

लेकिन उस समय, नर्वदाके मनमें कुछ और था । वह सोच रही थी, देशके जिस भागपर अत्याचार हुआ, व्यक्ति भेड़ बकरियोंकी तरह काटा गया, सदियों के उसे उस घरसे भगाया गया, वही समाज –वही त्रस्त व्यक्ति, आज भी अपना स्वार्थ नहीं छोड़ सका । वह मनमें कह रही थी– पड़ोसमें जो शरणार्थी आकर बसे हैं, मकान उनके पास पड़ा है । जब इसके शरणार्थी उनके पास आये, तो भगाने और मारनेके लिये इन व्यक्तियोंने अपनी तलवारोंको निकाल लिया .....शरणार्थी शरणार्थी को लूटा, मारा, इन वक्तव्योंका भी इतिहास बन गया ! वह अपने आप बोली– 'ऐसा है यह हिन्दू समाज .....यह क्रूर व्यक्ति ! इतना हीन ! इतना निष्कपट ! आह !' उसी समय उसने मानों खिजकर, आतुर भावमें सतीशकी ओर देखकर कहा– 'सदियोंकी दासताने ही समाजको दीन बनाया है, याचक और आत्महीन !' वह बोली–'गन्दे पानीका पतलानाला जहांसे गिरा है' हमे अब उसी ओर देखना है ! समाजके उस परम और स्वार्थकी ओर !'

इतनी देरमें सतीशने अखबार उठा लिया था और उसका एक समाचार पढ़ने लगा था । नर्वदाकी बात सुनी, तो उसने अखबारसे आंखें उठाकर देखते हुए कहा 'यह एक समस्या है, जिसका मिटना आसान नहीं दीखता ।'

नर्वदाने तेज स्वरमें कहा–'समाजको जीवित रहना है, तो इस समस्याका नाश करना पड़ेगा ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'स्वार्थका खन होगा, तो व्यक्ति जी उठेगा। पैसेका व्यापार मिट गया, तो व्यक्ति फिर व्यक्तिके पास आ जायगा। भाई बन जायगा। बात काटकर सतीशने फिर अखबारपर आंखोंको टिका दिया। उस समय, मांके मनमे एक और बात थी। वह उसीको लेकर बोली –'हां, रे सतीश ! तो जैसे वह लाहौरवाला दोस्त मिला, तो सच, उसने अपने बच्चे और स्त्रीको अपने ही हाथों मार दिया। ओह !

सतीशनें अखबार रख दिया और कहा 'उसे यही करना था, मा ! सच, यही ! वह बोला–यदि इतना न करता, तो उसकी पत्नीको भ्रष्ट किया जाता, बच्चेको मारा जाता अथवा मुसलमान बनाया जाता.....

मांने कहा–'उसे यहां क्यों न लाया। हमारा मकान पड़ा है, यहां आकर ठहर जाता ?

सतीशने बताया–'मैंने कहा था ! पर उसने स्वीकार नहीं किया अब कौन है उनके साथ ?' मांने पूछा।

अब कोई नहीं। पर अकेला है। दूरके रिश्तेकी एक मौसी है, उसीको साथ लेकर यहां आया है। कहता था, कलसे एक तांगेपर कोचवानीका काम करूंगा।

शाबाश ! मां बोली– उसे जीवित रहनेका अधिकार है। वही हिन्दू है।'

सुनकर सतीश हंस दिया – इसलिये कि उसने अपने स्त्री बच्चोंको मार दिया। उसने भी अपने हाथोंसे अनेक परिवारोंको साफ कर दिया।

मांन तेज उनकर कहा– 'हां, नहीं तो ! उसे यही करना था। उसका यही आदर्श था, यही कर्म !'

तो इतना काम क्या चितौड़के किलेमें नहीं हुआ...?.पद्मिनिके साथ क्या हजारों राजपूतिनियोंने अपना गौरव प्रदर्शन करके अपनी शिराओंको प्रज्वलित ही किया ?'–सतीश बोला–मां, पर हुआ क्या ! जाति तो गुलाम बनी ! जिस जातिमे तलवारके धनी थे, वे गुलाम बने, यह आश्चर्यका विषय नहीं क्या ? हमारे इतिहासकी यहीं कालिमा है,–यही आगे !

मां बोली–'तो क्या.....क्या.....?

वे मस्तिष्कहीन थे ? राजनीतिसे दूर ? जागरुक और नव-चेष्टा नहीं कहे जा सकते, वे पागल भैंसेके सदृश .....'

माने झल्लाकर कहा–'अरे, चुप ! चुप !

सतीशने अपने दांत निकाल कर कहा यह तो इतिहास कहता है, मां ! हिन्दू स्वयं ही मुसलमान बने, यह भी इतिहास बताता है।'

नर्वदाने व्यंग करते हुए कहा–'ये कम्युनिस्ट..... ये समाजवादी.....?

सतीश बोला–'यह तो सत्य है। यह विषय अमिट और अजेय !'

नर्वदाने हंसकर कहा–हां, हां, मैं भी तो कहती हूं, आप कम्यूनिस्ट हैं। प्रतिक्रियाकी भावना आपमें भी है।'

इतना सुनकर सतीश तिलमिला उठा। उसने चाहा कि कुछ कहें, परन्तु बात बड़ी थी, इसलियें वह कमरेसे उठकर चला गया।

एक दिन जब सतीश घर आया, तो एकान्तमें, नर्वदाने सामने जाकर, अचरज और ईर्षा भरे शब्दोंमे कहा–' यह ठीक है कि तुमने बीस हजारकी पगड़ी लेकर वह बड़े बाजारवाला मकान किसी शरणार्थीको दे दिया ?'

सतीशने कहा–'हां, यह ठीक है।

नर्वदाने कहा–'ओह' !

सतीशने नर्वदाके मनका भाव पढ़ा और समझा कि इसे इतना सुनना पसन्द नहीं आया। इसीलिये, उसने अतिशय दीन और याचक भावमें अपने सूखे दांत निकालते हुए कहा–'यह रुपयेका प्रश्न है। नर्वदा, भूला नहीं जाता .....भुलाया भी नहीं जाता।'

नर्वदाने चाहा कि कहें, फिर यह ढोंग क्यों?....समाजके साथ यह छल ! पर उसने नहीं कहा, नहीं ! उसी समय, वह तेजी के साथ कमरेसे निकली और दूसरी ओर चली गयी। काश वह सुन पाती और दिखा पाती कि उसकी छातीकी धड़कन बेतहाशा द्रुत बेगसे बढ़ गयी थी। अजीब उन क्षणोंमें वह अशान्त थी और, उद्वेगसे पूर्ण !

MONSOON
SETS IN
Anophelis breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मलेरिया बुखारके लिये रामवाण है अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियास कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
Kasaya

KAVIRAJ N.N. SEN & CO. LP.
CALCUTTA

होमियोपैथिक दवाइयां प्रति ड्राम =), =)॥ आना है।
हरएक बीमारियोंकी दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी
९८ नम्बर क्लाइव स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





# असम के मारवाड़ी समाज में

( ले० श्री चैतन्यप्रकाश रंगा )

सदियामें जालानजीको बड़ा जोश आ गया था और उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें कह डाला था कि यदि पुरुषसमाज स्त्रियों पर इस तरहका अत्याचार करेगा तो हम उसे एक दिनके लिये भी बर्दास्त नहीं कर सकते । जालानजीके इस भाषणका सब जगहोंके भाषणसे अधिक प्रभाव पड़ा, और सदियामें ही जब यह निश्चय कर लिया गया कि वह भी आगामी १५ तारीख को मातृ मुक्ति दिवसके पहले ही स्त्रियोंका पर्दा हटा देगा तो दूसरी जगहोंका तो कहना ही क्या ?

सदियासे हमलोंगोंका आगे मनीपुर जानेका कार्यक्रम निश्चित हो चुका था और उसके लिये यही तय हुआ कि हमें तिनसुकिया, डिब्रुगढ़ और शिसागर होते हुए अब शीघ्र ही मनीपुर पहुंचना जाना चाहिये । हमलोग दोपहरको तिनसुकिया जा पहुंचे । तिनसुकियामें कुछ ही देर ठहर सके क्योंकि हमें मालूम हो गया था कि डिब्रुगढ़वालोंने आज भी कुछ कार्यक्रम तय कर रखा है' जब हम डिब्रुगढ़ पहुंचे तो वहां पहुंचते ही हमें युवकोंकी चहल पहलका पता लग गया । हमने देखा कि सारे ही युवक कार्यकर्त्ता बड़ी दौड़ धूप कर रहे हैं । कुछ मित्रोंसे मुझे मालूम पड़ा गया कि आज अधिकसे अधिक युवकोंसे पर्दा विरोधकी प्रतिज्ञायें करायी जायगी और साथ ही आज आगेके लिये निश्चित कार्यक्रम भी तय किया जायगा । प्रायः ५॥ बजे होंगे । एक एक करके युवक आने लगे और देखते ही देखते भाई सहारियाजी की कोठीका हाल युवकोंसे ठसा-ठस भर गया और वहांके प्रायः समस्त युवक कार्य-कर्त्ता उपस्थित हो गये । भाई सहदेव देवडाने सभी युवकोंका जालानजीको परिचय कराया और आजकी सभाके बुलानेका कारण सबोंके सामने रखा । भाई देवडाजीने कहा कि यह तो हमलोग तय कर ही चुके हैं कि १५ अगस्तको मातृ मुक्ति दिवस मनानेके पहले पहल हमें समाजसे पर्देको विदा कर देना है किन्तु यह काम तो तभी सम्भव हो सकेगा जब कि हम क्रियात्मक रूपसे इसमें लगें ।

जालानजी और रंगाजीके भाषणके बाद सहदेवजीने अपील की और आपकी अपीलपर वहां उपस्थित सभी युवकोंने अपनी स्त्रियोंके पर्देको हटानेकी प्रतिज्ञा की और भविष्यमें इस कार्यको अधिक गतिसे तेज करनेके लिये वहांके कार्यकर्त्ताओंका एक संगठन किया गया, डिब्रुगढ़के युवकोंका उत्साह देखते ही बनता था उनमें जीवन था समाज सेवाके लिये भारी उत्साह

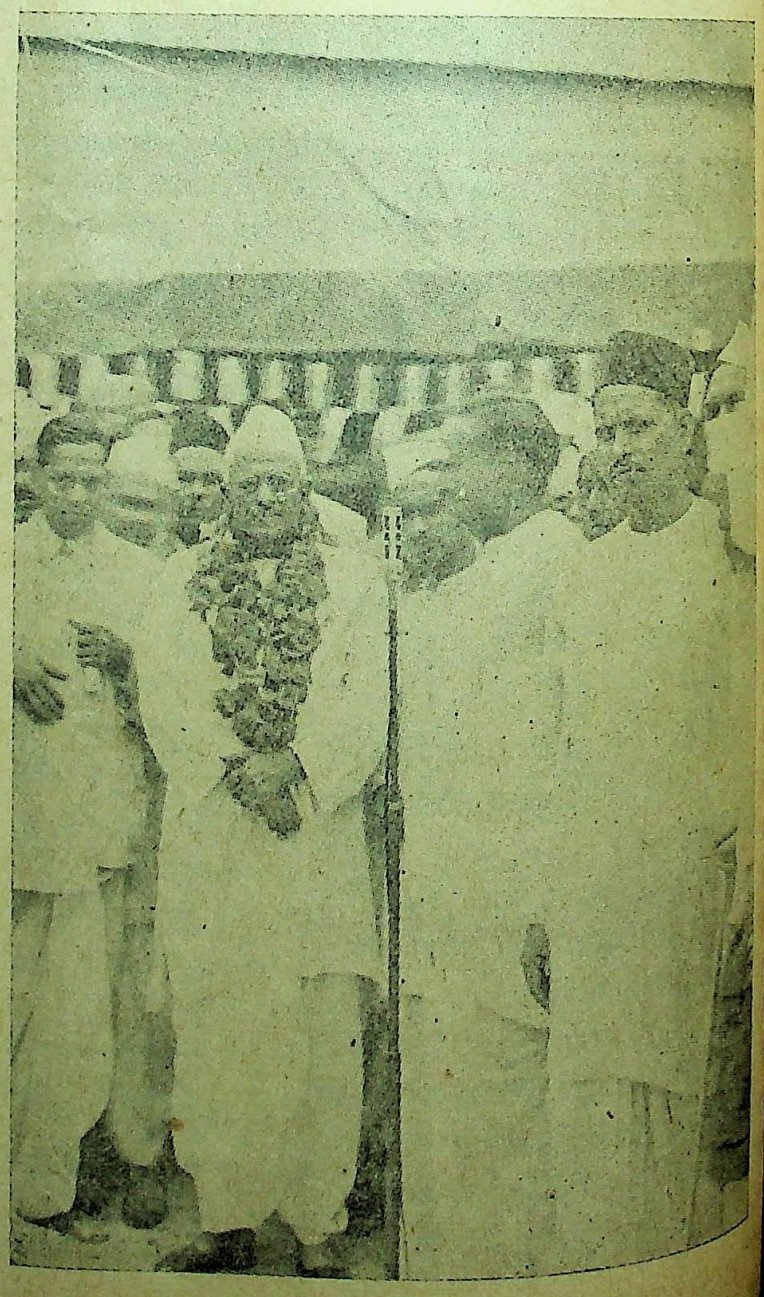

सम्मेलन के पदाधिकारियों के बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उन्हें देखकर यह विश्वास हो रहा था कि अब आसाममें पर्दा नहीं रहनेका । मनीपुरके लिये रास्तेमें डीमापुरमें भी समाज द्वारा आयोजित सभामें जालानजीने एक भाषण किया, अभीतक जहां समाजके सामने केवल समाजिक प्रश्न ही मुख्य था यहांसे कुछ परिस्थितिमें परिवर्तन आरम्भ हो गया' पिछले महायुद्धके बादसे कोहिमा हो गया, पिछले महायुद्धके बादसे कोहिमा और मनीपुरसे मारवाड़ियोंकी जगह सब जब्त करली गयी और तत्कालीन अंग्रेज पोलिटिकल अफसरके कारण कई तरहके अडचने समाजके सामने हो गयी थी जिनके कुछ परिस्थितियोंका हल तो राष्ट्रीय सरकारके होनेसे हो गया था किन्तुफि भी कई संगीन परिस्थितियों समाजकोर घेरे हुए अब भी है । जैनियोंका मन्दिर जैसा पवित्र स्थान आज विधर्मियोंके हाथों में है और जहां मनमाने ढंगसे धर्म विरुद्ध कार्यवाहियां हो रही हैं । यहांके मारवाड़ियों की विषम परिस्थितियां समाजके लिये चिन्ताका विषय है । जालानजीने सारे कागज पत्र देखे और भाई केदारजी शर्मा एम० एल० ए० आसामको साथ लेकर इस कार्यके लिये वे अग्रसर हुए । कोहिमामें वहां अधिकारीको तार दिया गया और मनीपुरमें पोलिटिकल ऐजेण्ट और प्रधान मन्त्रीको भी सूचना भेजी गयी । यों तो जालानजीकी यात्राका समाचार पाकर सब ओरसे पूरी व्यवस्था कर दी गयी थी और मनीपुर सरकार और भारतीय सरकारके ऐजेण्टने खास व्यवस्था रखी थी फिर भी मारवाड़ी समाजने भी अपनी ओरसे इनके लिये पूरी चेष्टा की और कोई नथमलजी बाकलीवाल नहीं होते तो शायद हमें वहांके समाजकी उदासीनता का ही चित्र देखनेको मिलता । यहांकी समाजकी परिस्थिति अधिक शोचनीय है उसका कुछ दोष हमारे समाजकी अव्यवस्थापर भी है, जिसका हमें वहांके प्रत्येक कार्यमें परिचय मिलता था । जब हम मोटरमें बैठकर आगेकी ओर बढ़े तो सब

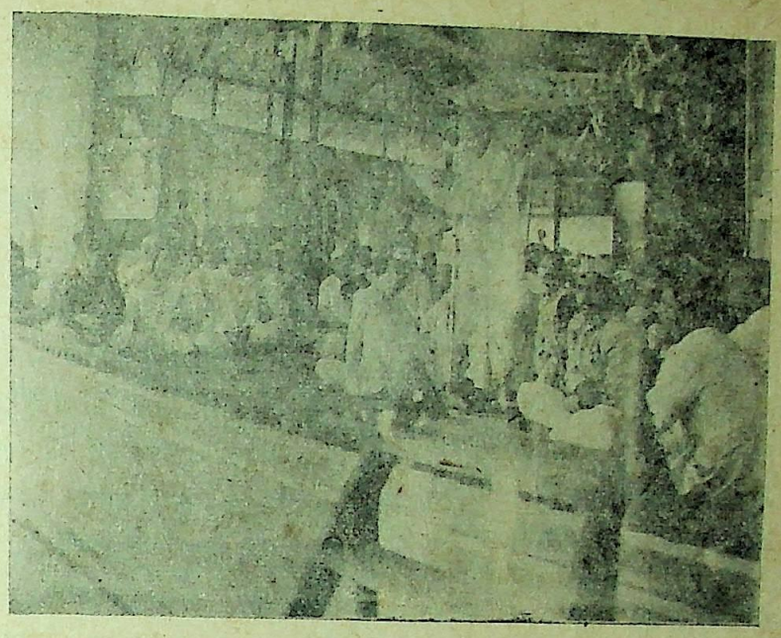

नागरिकोंकी ओरसे अभिनन्दन

चीजोंको भूल गये और अब प्राकृतिक सौन्दर्य ने सबोंको अपनी ओर आकर्षित कर लिया ।

मनीपुरके बारेमें तरह-तरहकी बातें सुन रखी थीं और एक अजीब चित्र आंखों के सामने आ रहा था कि न जाने मनीपुर क्या होगा । रातको पहुंचे' तो रास्तेमें रोक लिये गये सोचा शायद व्यूह होता होगा जो कि वहां प्रचलित एक विवाह की स्वयंवरकी परिपाटी है किन्तु दृश्य दूसरा ही नजर आया गाड़ी रुकी कि जालानजीकी जै, सम्मेलन जिन्दाबादके नारे लगने लगे, आश्चर्य हुआ कि पहाड़ों के रास्तेमें रातकी वक्त भी लोग यहां स्वागतके लिये तैयार हैं । खैर चाय पानी की व्यवस्थाको स्वीकार करके आने बढ़े मंजिल मिली रातको आराम किया और सबेरे हीसे फिर वही सभा और वही व्याख्यानोंका काम ।

यहांके समाजके बारेमें इतना ही यथेष्ट है कि अभी तक आसाममें कई वर्षों तक काम करनेके बाद वहां साहसकी बात होगी वहां ओसवाल भाइयोंका ज्यादा प्रभाव है और उदासीनताका भी यही कारण है उन्हें आपसमें जिमनवारोंकी लड़ाईसे ही फुरसत नहीं है तो समाजकी बात कौन सोचे और करे, जहां तक उनकेस्वार्थोंकी बातेंहैं उन्होंने जालानजीको बड़ा उत्साह दिखायी और जहां समाज सेवाकी बात आयी सभी टाल मटोल करने लगे । वहां की परस्थिति देखकर यही मालूम हुआ कि अपना समाज कहां है और उनमें काम करनेके लिये सम्मेलनकी कितनी आवश्यकता है ।

तीन दिनोंकी मधुर यात्राके बाद मनीपुर से लौट आये और शिलांगको प्रस्थान किया गया । शिलांगका पिछला अनुभव सुन रखा था कि वहां जब कभी समाजकी विराट सभा होती है तो तीन सज्जनों की उपस्थिति होती है एक तो डाकोत जो कि सभाका बुलावा देता है और दूसरा पण्डित महाराज जिसके मन्दिरमें सभा होती है और तीसरेमें बेचारे वहांके मन्त्री । इसलिये हम तो निश्चित थे इसलिये वहांके कार्यकर्त्ताओंकी जब चेष्टा देखी तब भी हमने कह दिया कि यदि यहां चार व्यक्ति भी आ जायं तो हम बड़ा सौभाग्य मानेंगे किन्तु इस बार इन लोगोंने शिलांगको जन्मपत्रीमें ठोकर लगा दी एक तो सार्वजनिक सभा जिसमें माननीय निकोलसराय सभापति थे और काफी लोग सभामें आये थे दूसरी सभा रात्रिको पुस्तकालयमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समाजकी हुई । जिसमें भी समाजके बहुतसे लोग आये थे यद्यपि पहलेसे यहां बड़ी शानदार रही। किन्तु शिलांग को देखते हुए तो यही लगता था कि यह की जनतामें अभी जीवन आनेमें देर है।

शिलांगसे गौहाटी आये, अभी तक श्री केदारजी हमारे साथ थे इसलिये यहां चेष्टा नहीं कर पाये थे। इसलिये जैसी आशा थी वही हुआ जिस तरह पिछली बार शिलांगने अपनी छाप लगायी थी इसबार गौहाटीने बाजी मार ली। गौहाटी जैसे बड़े शहरमें जहां अधिकसे अधिक मारवाड़ी रहते हैं वहांकी उदासीनता तो बड़ी ही दुःख देने वाली हुई धानुका शंकरलालजी व अन्य युवक तो क्रियाशील देखनेको मिले बाकी तो सारेके सारे इस तरह लगे कि वहां कुछ हो ही नहीं रहा है। यदि गौहाटीवालोंकी स्थितिपर विचार किया जाय तो यही कहना होगा कि हमारे समाजकी यदि इतनी अच्छी स्थिति रह सकी है तो भगवान्‌की कोई विशेष कृपासे ही, नहीं तो समाजके कारनामोंसे तो आज तक हमारा और भी अधिक पतन होना आवश्यक था। वहां मन्दिरमें आयोजन किया किया गया था बहुत देर तक कीर्तन करते रहे शायद भगवान् राजी होकर गौहाटीके बंधुओंको सुबुद्धि दे, किन्तु बेचारे भगवान् को भी सफलता नहीं मिली और कीर्तन के बाद कुछ भक्त लोगोंके ही बीचमें सभा आरम्भ हुई। कुछ युवकोंको बड़ा जोश था और दुःख भी था कइयोंने बड़ी-बड़ी आलोचनायें समाजकी और कइयोंने यहां जोरदार काम करनेकी अपील की।

जालानजी बोले कि मुझे यहांकी स्थितिसे तनिक भी रंज व दुःख नहीं होता है क्योंकि हमें तो काम करना है किन्तु ऐसी जगहोंपर तो हमें अधिक काम करना चाहिये किन्तु यह इस बातका भी प्रमाण है कि हमारे यहांके समाजमें जीवनका अभाव है यदि कुछ भी प्राण रहें तो मात्रा आदिसे इलाज हो सकता है। किन्तु जहां बिलकुल ही हालत नाजुक हो वहां कुछ बस नहीं चलता। अतः हमें तो यहां देखना है कि भाषण आदिका भी कुछ असर यहां होता है कि नहीं यदि नहीं वह भी बेकार जाय तो फिर अपनी शक्तियोंका खर्च नहीं करना चाहिये। इस वक्त सामने अपर आसाम का १५ तारीखका कार्यक्रम है देखना है कि उसका संग्रह यहां क्या और कैसा असर पड़ता है यदि कुछ गुंजाईश मालूम पड़ी तो आगे भी इलाजकी सम्भावना रहेगी नहीं तो गीता पाठ और कीर्तन ही यहांके लिये श्रेष्ठ है। आपने कहा कि मुझे तो यह आशा बिलकुल ही नहीं थी कि कहीं यह भी हालत है, जब मैं आसाम आया तो सर्वप्रथम मुझे गोहाटी ही देखनेको मिली। मैंने यहांकी भीड़ और व्यवस्थाको देखकर प्रसन्नता जाहिर की थी किन्तु मालूम पड़ा कि वह तो बाहर वाले सज्जनों की करामात थी या यहांके कतिपय बन्धु उसमें शामिल थे, समाजकी यह दशा हमें आज बतलाती है कि हम कहां हैं, हम तरह-तरहकी शिकायतें करते हैं किन्तु मैं कहता हूं कि हमें शिकायतें करनेका अधिकार ही क्या है जब दिन रात हम अपने स्वार्थ साधनमें ही लगे रहते हैं तो स्वार्थों पर आघात पहुंचते वक्त भी हमें धैर्य और उदासीनता ही रखनी चाहिये। गोहाटीकी दशासे सारे समाजको अपनी आंखें खोलने की शिक्षा मिलती है। समाजको अच्छी तरह आंख खोलकर देख लेना चाहिये कि उसकी दुर्दशा होती है तो क्यों न हो। मैं अपने कामके लिये नहीं आया हूं मुझे भी अपना काम है, गृहस्थी है आपकी तरह मैं भी सुखी होना चाहता हूं किन्तु फिर भी समाजका दुःख दर्द खींच लाता है और जब आपके लिये आपके पास आते हैं और तब भी आपको फुर्सत नहीं तो अब तो आपका राम ही मालिक है। सच है जो लोग समाजकी बदनामी करते हैं वे ऐसी जगहके लोगोंके कारण ही करते हैं यदि कोई सारे आसामके समाजकी हालत नहीं देखकर गोहाटीकी हालत ही देखकर लौट जाय तो वह फिर आसामके भाइयों के लिये कोई चेष्टाका ही साहस नहीं करेगा, और यदि हम आसामकी सारी बातें कहकर फिर किसीको गोहाटी दिखा लायें तो हमें झूठा बनना पड़ेगा यह अच्छा ही रहा कि मुझे अन्तमें यहां लाया गया नहीं तो शायद मेरा उत्साह भी कुछ कम हो जाता और मैं जो काम कर पाया हूं वह शायद नहीं होता किन्तु अब तो मैं जोरदार शब्दोंमें कहता हूं कि गोहाटीके बन्धु आंखें खोल कर देख लें कान खोलकर सुन लें हम उनको ऐसे नहीं रहने देंगे इसी

आसाम के दौरे में कार्यकर्ताओं के बीच मुरारकाजी और जालानजी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समाजका अहित होता है और इसे हम बर्दास्त नहीं कर सकेंगे। हमें अन्य जगहों के भाइयोंसे भी आसाममें यही कह देना है कि उन्हें अपना ध्यान इस ओर लगा देना चाहिये और अगस्तके पहले पहल ऐसी स्थिति यहां कर देनी चाहिये कि फिर यहां भी काम किया जा सके। मान पत्रके जवाबमें धन्यबाद देकर यहांकी कार्यवाही शेष की गयी और हमलोग घरोंकी ओर चल पड़े कि रास्तेमें फिर एक घटना घट गयी और जालानजीको इस बार बड़ा क्रोध आ गया। मैंने पहली बार इनका यह रूप देखा, बात यह थी कि एक बड़े धनीके लड़केकी शादी थी जिसमें बनौली निकली थी बड़ी सजावटसे और तड़क-फड़क तो थी ही किन्तु इसके अलावे वहांपर एक बड़ी सजी हुई लारीमें एक लड़केको मारवाड़ी स्त्रीका स्वांग बनाकर घाघरा वगैरहकी पोशाकमें नचाया गया था। वह नाचता जाता था और जुलूस आग बढ़ता जाता था, जालानजीने उसे देखते ही कहा।:—यह क्या है, क्या यहां समाजमें युवक नहीं हैं और हैं तो मालूम पड़ता है उनमें जीवन नहीं है हमारी इस हरकतसे हमारे समाजपर क्या असर पड़ता है क्या इसे कोई नहीं समझता और यदि लोग समझते हैं तो फिर ऐसी हरकतें समाजमें चालू होने दी जाती है। जिस चीजका का असर समाज पर बुरा पड़ता हो उसे हमें तत्काल रोक देना चाहिये इसके लिये चाहे जैसे विद्रोहकी हमें आवश्यकता क्यों न पड़े हमें बिना हिचकिचाहट उसमें शामिल हो जाना चाहिये। मैं यहांके युवकोंसे कहता हूं कि उन्हें खुल्लम खुल्ले भय त्याग कर ऐसी हरकतोंके खिलाफ जोरदार विद्रोह कर देना चाहिये, यह भी क्या तमाशा है कि लोग चाहें जैसी हरकतें करें और हम उसका फ भोगते रहें?यदि हमने ऐसा होने दिया तो यह हमारी कमजोरी होगी जो कि समाज द्वारा कभी भी क्षम्य नहीं है।

इस तरह गोहाटीके बाद हमारी इस बारकी यात्रा शेष हुई। किन्तु पलाश-बाड़ीका जिक्र भी बड़ा आवश्यक है यहां भाई छगनलालजी जैनने बड़े उत्साहसे काम किया है कई सार्वजनिक संस्थाओं

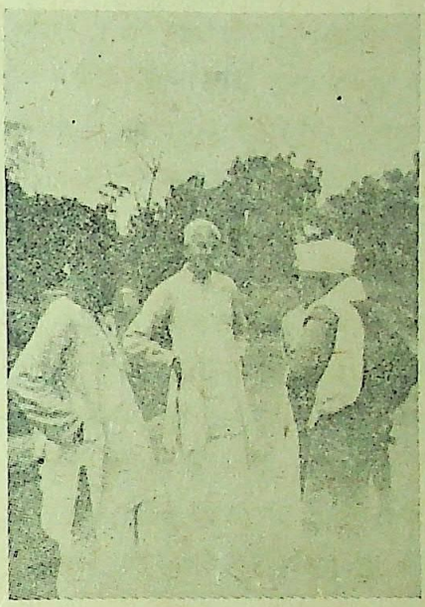

मनीपुर में डोमिनियन एजेन्ट देवेन्द्र शर्मा के साथ

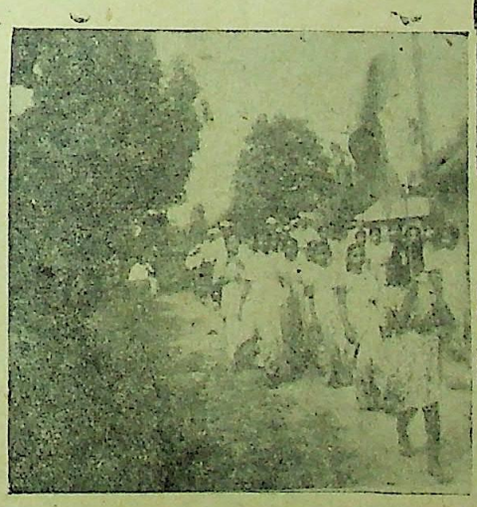

स्वागत जुलूस में बलिकाऐ

की स्थापना की गयी है। यहां भी एक बैठक मन्दिरमें बुलायी गयी जहां मालूम पड़ा कि आसाममें भी रहकर भी हम चुरू, लोहारू और राजपूतानेके ठेठ गांवमें हैं। वहांकी स्त्रियोंकी पोशाक पहनाव वही बाबा आदमके जमानेका देखनेको मिला, वही घाघरा बोरला, और वही ढंग जब स्त्रियां निकलती हैं तो लोग हंसते हैं और तरह-तरहकी बातें होती हैं एक तरफ तो हम लोगों समरस होनेकी बातें सोचते हैं तो दूसरी ओर हमारी स्त्रियों का यह ढंग बनाये रखना चाहते हैं। कैसे काम चलेगा। यहां भाषण देते हुए जालानजी ने कहा कि जालानजीने कहा ह रहेंगे तो आसाममें और कहेंगे भी कि हम यहींके हैं किन्तु ढंग रखेंगे ठेठ राजस्थानी गांवका तो यह काम कब तक चलनेका है। जब जालानजीने बीरलेकी बातें कहनी आरम्भ की तो सारी स्त्रियां उठ उठकर चली गयीं तो जालानजीने कहा कि यह है हमारे समाजकी हालत हम किस सभ्य समाजके साथ इसकी तुलना करें? यह दोष स्त्रियों का नहीं किन्तु हमारे पुरुष समाजका है जिसने यह हालत हमारी स्त्रियोंकी कर रखी है यदि पुरुष चाहें तो कल इसमें सुधार हो सकता है किन्तु उनकी मनो-वृत्ति दूषित हो चुकी है और उनकी विचार धारा सड़ गयी है इसलिये आज उसमें साहस नहीं और हिम्मत नहीं जो चीज बुरी है उस त्यागम भय और हिचकिचाहट काहे का। जो कुछ आज तक होता रहा हमने सह लिया किन्त अब पदको बिलकुल नहीं सहेंगे।

१६॥) में ज्वेल वाली रिस्ट वाच

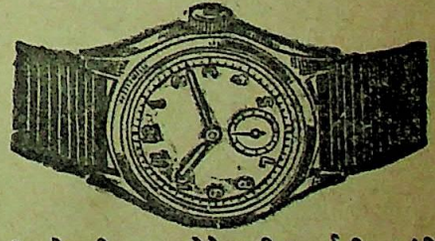

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो शेप
क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०)
अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।
एच० डेमीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अपहृत महिलाओंका उद्धार कैसे हो?

लेखक 'इ।'

इधर कई माससे भारतीय विभाजन के बाद पश्चिमी पंजाब सिंध तथा काश्मीर में जिन हिन्दू और सिख महिलाओंका अपहरण मुसलमान गुण्डों और नराधमों द्वारा हुए थे उनके उद्धारके लिये निरंतर प्रयत्न किये जा रहे हैं। भारतीय संघके दल पश्चिमी पंजाबमें घूम घूम कर ऐसी महिलाओंका पता लगानेकी कोशिश करते है जो मुस्लिम परिवारोंमें धुलमिल गयी हैं। कई धर्मभीरू मुसलमानोंने ऐसी महिलाओं की खोजमें जो सहायता की है वह सराहनीय है। ऐसी महिलाओंके उद्धारके बाद उन्हें अपने अपने परिवारमें पहुंचाना सरकारका दूसरा कर्त्तव्य है। परन्तु भारतीय संघका हिन्दू समाज रूढ़ियोंसे इस प्रकार जकड़ा हुआ है कि ऐसी महिलाओंको पुनः अपने परिवारमें सम्मिलित करते हुए हिचकता है। इन महिलाओंमें सभीका सतीत्व निरापबाद रूपसे भंग हो चुका है। उनमेंसे कुछ गर्भवती भी हैं और मार्च १९४७ से जून १९४७ तक पश्चिमी पंजाबमें जो दंगे हुए थे उस समयकी अपहृत नारियोंने शिशु भी प्रसव किये हैं। यह पंजाबी सज्जन जो अपनी बहू बेटियोंको अपनी आंखोंके सामने अपहृत और लांछित होते देखते रहे और आततायियोंसे प्राण रहते मुकवला न करके भारतीयसंघमें प्राण बचाकर शरण लेने पहुंच गये उन्हें क्या अधिकार है कि इन पवित्रात्मा देवियोंको अपने परिवारमें लेनेसे आंख चुरायें। कुछ ऐसे भी सज्जन हैं जिन्होंने स्वयं अपने परिवारकी अभागी नारियोंको पहचाननेसे भी इन्कार कर दिया है। इसलिये भारतीय संघका अब यह प्रधान कर्त्तव्य हो जाता है कि निरंतर भारत भरके दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रोंमें इन देवियोंकी निष्पापताकी घोषणा करे और शास्त्रके प्रमाणों द्वारा यह प्रचार करे कि विवशावस्थामें किये गये पाप दंडनीय नहीं हैं। भारतके प्रमुख आचार्यों, नेताओं, विद्वानों, समाजके ढेकेदारोंके जल्से भारतके कोने कोनेमें किये जाये जिनमें प्रस्तावों द्वारा इन देवियों की पवित्रतापर जोर दिया जाये। पूर्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पंजाब, यू० पी० बिहार इत्यादिमें विभिन्न बिरादरियोंकी पंचायतें नगर–नगर,–ग्राम–ग्राममें की जायें जिसमें सर्व सम्मतिसे यह तै हो कि बिरादरीका जो भी सदस्य अपनी अपहृत बहू बेटियोंको ग्रहण करनेसे इन्कार करेगा उसे बिरादरीसे बहिष्कृत किया जायेगा। यदि हिन्दू समाज आज तक जीवित है तो इसका प्रधान कारण यही है कि इसमें समयानुसार नियमोंमें परिवर्तन करनेकी क्षमता रही है। एक जमाना था जब अपहृत नारियोंको पुनः ग्रहणपर बिरादरीसे खारिज किया जाता था अब यह आवश्यक है कि इन अभागी नारियोंको ग्रहण करनेसे इन्कार करनेपर खारिज कर दिया जाये। जब विभिन्न बिरादरियों में ऐसे तथा कथित नकरोंकी संख्या अधिक हो जायेगी तो फिर कौन किसको उंगली दिखा सकता है।

जब किसी अपहृत नारीके उद्धारके बाद यह पता लगे कि यह गर्भवती है तो उसे तत्काल उसके परिवारमें पहुंचानेका प्रयत्न नहीं करना चाहिये। हमारे विचारमें उन्हें शरणार्थी शिविरमें स्थान देकर शिशु प्रसवके पश्चात् ही अपने परिवारमें भेजना चाहिये। सरकारको चाहिये कि इन अनाथ बच्चोंके लिये अनाथालय खोले और उनके लालन पालन और शिक्षा दीक्षाका पूरा प्रबंध करे। उद्धारकी गयी अपहृत नारियोंके नामके जो रजिस्टर रखे गये हों उनकी क्रम संख्या उन बच्चोंके हाथोंपर गोदवा दिया जाये तो यह नारियाँ जब भी चाहेंगी अपने शिशुओंको अनाथालयों में या कहीं भी पहचान सकेंगी। जब यह बच्चे बड़े हों तो उन्हें कलंकसे कुछ हदतक बचानेके लिये तत्कालीन राजनैतिक नेताओं को उनका धर्म पिता बना देना चाहिये। कुछ ऐसे भी सन्तानहीन व्यक्ति होंगे जो कि इन्हें गोद लेना पसंद करेंगे। यदि इस प्रकार इन अनाथोंका प्रबंध न हो सके तो रूस, अमेरिका, इंग्लैंड इत्यादि देशोंमें जैसा प्रबंध है उन्हें शिक्षाके पश्चात् सेना या नागरिक संस्थाओंमें समुचित पद प्रदान किये जायें जो इनकी योग्यताके अनुसार हों। इनका विवाह यदि संभ्रांत कुलमें संभव न हो तो उन्हीं अनाथालयोंकी अनाथ लड़कियोंके साथ हो जाना चाहिये। कोई भी व्यक्ति नहीं चाहता कि वह किसी अविवाहित या भ्रष्ट नारीके गर्भसे पैदा हो। यदि समाज किन्हीं कारणोंसे सतीत्व भंग करने वाले पुरुषको दंड नहीं दे सकता या देना ही नहीं चाहता और वह भ्रष्ट की गयी स्त्री लांछनके डरसे अपने अवैध शिशुका परित्याग कर देती है तो सभ्यताकी जिस सीढ़ीपर हम पहुंचे हैं उसके अनुसार उस अवैध शिशुको दंड देनेका हमें कोई अधिकार नहीं है। मनुष्यको केवल अपने अपराधों का दंड मिलना चाहिये न कि उसके माता पिता द्वारा किये गये अपराधोंका।

**शिशु प्रसवके पश्चात् इन अभागी नारियोंको उनके परिवार तक पहुंचानेका प्रयत्न सरकारको करना चाहिये और उसमें सार्वजनिक संस्थाओंकी भी सहायता लेनी चाहिये। यह भी संभव है कि उनके परिवार वाले तत्काल इन्हें ग्रहण करनेमें अपनी असमर्थता प्रकट करें। ऐसी अवस्थामें इन नारियोंकी शिक्षा दीक्षाका प्रबंध करना होगा जिससे वह शिक्षिकायें नर्स, डाक्टर, हकीम, कविराज, शार्टहैंड––टाइपिस्ट, क्लर्क, विक्रेतृ, सिनेमा, थियेटर, सरकस, रेलवे स्टेशनोंपर टिकट बेचनेवाली, टेलिफोन आपरेटर, इंजीनीयर, स्थापत्य कला विशारदा, पत्रकार, पुलिस इत्यादि अपनी सहजरूचिके अनुसार बन सकें। कुछ सिनेमा और थियेटरकी अभिनेत्री बनना पसंद करेंगी इसलिये अभिनय कला और विज्ञान की शिक्षाकी संस्थामें भी खलनी चाहिये।**

**इस उपायसे दो लाभ होंगे। प्रथम तो इन अभागी नारियोंको अपनी स्वतंत्र जीविका साधन प्राप्त हो जायेगा जिससे वह सम्मान पूर्ण अपना जीवन बिता सकेंगी। और दूसरे जब कुछ दिन तक यह स्वतंत्र रहेंगी तो बहुतसे पुरुष इनके रूप और गुणसे मुग्ध होकर इन्हें अपनी पत्नी बनानेको प्रस्तुत हो जायेंगे। प्रत्येक स्त्रीकी आन्तरिक इच्छा यह होती है कि वह किसीकी पत्नी बनकर स्वच्छन्द रूपसे दाम्पत्य जीवन व्यतीत करे। वह एक कुशल गृहिणी बनना चाहती है और वीर प्रसविनी माता। यदि इन निर्दोष अभागी नारियोंके विवाहका प्रबंध कुछ वर्षोंमें कर सकते हैं तो हम भारतकी एक प्रमुख समस्या हल कर लेंगे। यदि इन नारियोंको सम्मानपूर्ण जीवन बितानेका सुयोग समाज या सरकारने प्रदान नहीं किया तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यह तिरस्कृत नारियां पुनः पाकिस्तान लौट कर भारतीय संघके शत्रु प्रसवन करें जो समय आनेपर समूचे भारतीय संघको हड़प जानेका प्रयत्न करें। इसके अतिरिक्त इनके सामने केवल दो ही और रास्ते खुले रहेंगे। एक तो आत्महत्याका और दूसरा वैश्यावृति ग्रहण। स्वतंत्र भारतमें यह दोनों उपाय अत्यन्त घृणित हैं। इसलिये हम भारत वासियोंसे निवेदन करेंगे कि इस समस्याकी गंभीरतापर गौर करें और यथा संभव इस समस्याके हलमें समाज और सरकारकी हर प्रकारकी सहायता करें।**

काफू (रजि०)
हैजे
का रामबाण दवा है
डाबर लिमिटेड, कल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारी-हृदय

—श्री लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

"एक पैसा दे मोरे सालिगराम'....!! एक लड़की झांझ बजाती हुई गा रही है– 'एक पैसा दे मोरे सालिगराम !'

एक लंगड़ा भिखारी एक लंगोटी पहने , सिर तथा पैरमें फटे पुराने चिथड़े लपेटे लड़कीके स्वरमें स्वर मिलाकर गा रहा है , 'एक पैसा दे मोरे सालिगराम' भिखारीके दहिने हाथमें एक छोटी सी थाली है , जिसमें लोग पैसे फेंकते जा रहे हैं । और, ये दोनों राजपथकी बाई ओर चल रहे हैं । लड़कीके अंग-प्रत्यंगसे पूर्ण-यौवन-चन्द्रकी आभा प्रस्फुटित हो रही है । मानो वह जीवनके तेरह बसन्त पार करके चौदहवेंकी देहलीपर खड़ी है ।

उसका सौंदर्य गरीबीके बादलोंसे ढंके चन्द्रकी भांति दमक रहा था । गोरा चांदसा मुखड़ा ! अनारकी सी दंतपक्ति ! कक्ष शुष्क बाल हवामें घास जैसे उड़ रहे हैं ! अरुण गुलाबसे कपोल, खंजनसे नेत्र, और पतली कमान सी भौंहोंके नीचे सुंदर मौसम्बी सी पलकें और, अधर ! अधरों पर तो जैसे सूखी मुस्कराहटकी रेखा अंकित है । और उनसे वही करुण रागका अमृत झर रहा है –"एक पैसा दे मोरे सालिग राम!"

और , सालिगराम सच ही उसे पैसा दे रहे हैं । उसे नहीं, उसके रूप और यौवनकी निछावर पैसोंके रूपमें उसे मिल रही है । थालीमें पैसोंकी खनखनाहट हो रही है । 'खन्न 'खन्न' 'खखन्न'! काला कलूटा भिखारी जैसे दरिद्रनारायणका अवतार प्रतीत होता है ! उसके शरीरपर जैसे किसीने कोलतार पोत दिया है । वहपर लला की तीन-चार आड़ी भाग्य रेखायें उसके अतीत गौरवकी प्रतीक हैं! पृथ्वीपर घसीटनेसे उसे एक मर्म वेदना, एक छटपटाहटका अनुभव हो रहा है । किन्तु भिखारी फिर भी चल रहा है उसकी झुरियां लटक रही हैं । पैरोंमें छाले पड़ चुके हैं । लेकिम , दुबला-पतला पसीनेसे सराबोर भिखारी चल रहा है । भीषण गर्मी और दोपहर ! किन्तु मानवका हृदय अपनी भखकीज्वाला– उदरकी आगसे बेचैन है । उसे सूर्यकी अग्नि बरसाती धूप नहीं व्यापती । उसे प्यास नहीं , भूख नहीं । हां, लड़कीको भी भूख-प्यास नहीं ! वे दोनों इस तवेसी जलती धरतीपर चले जा रहे हैं ।एक करुण एवं मधुर स्वर लहरीमें बहे जा रहे हैं और लग रहा है जैसे सारा संसार भी उसी स्वर-लहरीमें बहा जा रहा है । अपने प्रभुके दर्शनार्थ ! वैसा प्रभुकी पूजा-अरचाके लिये थे !

लड़की बाएं कंधेपर एक फटी सट-सैलीसी लालालाल छझोली टांगे है ! वह उसी झोलीमे आटा,डाल, चावल आदि व्यवस्थापूर्वक खानोंमें डाल रही है ! कपड़े उसके फटे और अस्त-व्यस्त हैं वह लोगों पर एक उपेक्षापूर्ण दृष्टि डाल रही है । पर लोग उसके अंग-प्रत्यंगकी शोभाकी ओर बारीकीसे देखनेमें लवलीन है । कभी-कभी उसका जीवनका चन्द्रमा उन बादलोंके टुकड़ोंसे झांकने लगता है , तब लोग उसे घूरने लगते हैं । पर लड़की का ध्यान इस ओर नहीं है । वह तो अपनी वही पुरानी स्वर-लहरीमें बही जा रही है । –'एक पैसा दे मोरे सालिकगराम!'

( २ )

तीन माह बाद ! एक दिन संध्याकी लालिमा पश्चिमी आकाशपर छिटक रही है ! संध्या सूरजमुखीसी खिल उठी है ! मैं हवाखोरीके लिये निकला , कि शहरके नुक्कड़पर , फिर वही ध्वनि पक्षियोंके कलरव सी सुन पड़ी –"एक पैसा दे मोरे सालिगराम मैं कुछ छण मौन रहकर सोचने लगा –"मैंने बहुतसे भिखारी देखे हैं ! बहुतसी बालिकाएं हाथमें चिट्ठी लिये यहां वहांसे कुछ पैसे झटकत हुई देखी है । अनेकों रंगे सियार सभ्य भिखारी तीर्थवालाका बहाना करते हुए अपने निवास स्थानपर पहंचनेके लिये पैसे ऐंठते हुए देखे हैं । लेकिन इसकी सादगीसे तो खुदाका नूर दिखायी पड़ रहा है ।" आज उस सुन्दर, भोली किन्तु दीन लड़कीका चेहरा कुछ अपनी ओर विशेष रूपसे आकर्षितसा करने लगा । जैसे वह मुझसे अपनापन खोज रही है और मैं अपनेको उसमें खो रहा हूं ।

क्रमशः संध्याके झुटपुटेमें अन्धकारने अपने पैर पसारे । बिजलीके प्रकाशसे दूर जब भिखारी अपने तिमिरगृहकी ओर प्रयाण करने लगा , तो मैंने उसका पीछा किया । थोड़ी दूरपर एक जीण-शीर्ण झोंपड़ी ही उसका भवन थी ! वह घास-फूसकी झोंपड़ी अपने जीवनकी घड़ियां गिन रही थी रिमझिम वर्षाकी बूंदे पड़ रही थी शहरमें जहां तहां चिराग जल उठे थे ! अभी बालिका और वृद्धने कुटीमें प्रवेश ही किया था कि इतनेमें मैं कुटीकी द्वारपर ठिठक कर खड़ा हो गया । लड़की झोली टांगनेमें व्यस्त थी किन्तु वृद्धने मेरी ओर एक सम्मान पूण दृष्टि डालते हुए कहा –"आइये बाबू जी , बाहर कैसे खड़े हैं । अन्दर आ जाइये पानीकी बूंदे पड़ रही हैं ।

मैंने टहर खिसकाकर झोंपड़ीके अन्दर प्रवेश किया ! वृद्धने एक मैली सी चटाई बिछाते हुए मुझे उसपर बैठनेका संकेत किया।

मैं चटाईपर बैठा और लड़कीके सौंदर्य की ओर निहारने लगा । वह दीपककी बाती बढ़ा रही थी ! दीवालोंमें यत्र-तत्र सील और धूएंकी कालिखसी पुती हुई थी ! और दियाथानेके ऊपर दीवालमें बहुत सी कालिख और और नीचे बहुतसी तैल-कीट जमी हुई थी ! और मेरी कल्पना दीपकसे उसके सौंदर्यकी उपमा दे रही थी। "चिरागे हुस्न " । कीचड़में कमल और कांटोंमें गुलाबकी शोभा देखते ही बनती है संसारमें सौंदर्यकी कितनी अगम्य सरिता बह रही है । अनेकों मतवाले जीवन तरंग उसे तैरककर पार कर रहे हैं । कई तो उसमें डूब चुके ,गर्क हो चुके ! अनेकों मतवाले अपने शरीरोंकी खाक उसी प्रेम दीपके चरणोंमें अर्पित कर चुके ! प्रेमका मार्ग कितना उच्च और महान है । और वास्तवमें उज्ज्वल और पवित्र प्रेम वही है जिसमें त्याग या त्यागकी भावना है !

मिट्टीके दीपकपर भी बहुत सी तैलकीट जम रही थी । और, दीपककी स्वर्ण-शिखा हिल-डुल रही थी । उसकी हिल-डुल बार बार मेरे हृदयमें एक स्पन्दन सा भर रही थी । अचानक 'फक्क' करके दीपक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बुझ गया और किसी अज्ञात आकाशसे मेरा हृदय 'धक-धक' कर उठा ! तभी एक सुरीली और मधुर स्वरमें एवं मधुर आवाजमें किसीने कहा—"बाबूजी माचिस होगी ?

आवाज मेरे हृदयको स्पर्श कर गयी। मैंने माचिस उसके समीप फेंक दी ! उसने दीपक जलाया और स्मितिका प्रकाश बखेरते हुए कहा —"लीजिये माचिस" और नयन लज्जानत हो गये । तभी वृद्धने मुझसे पूछा—"बेटा, तुम कहां रहते हो!

'बाबा, मैं एक कालेजका छात्र हूं। यहीं होस्टलमें रहता हूं। अपने पिताका इकलौता पुत्र हूं ! मांका स्वर्गवास छुटपन में हो चुका—मैंने कहा ।

"क्या आप भी जीवन-कथा सुनाने की कृपा करेंगे ?" मैंने फिर कहा !

तभी बुड्ढा कुछ उलझन में पड़ता नजर आया। उसके माथेपर सिलवटें पड़ गयी। उसने एक ठण्डी किन्तु दीर्घ विश्वास छोड़ते हुए कहा—"बेटा, हम कलके शाह और आजके भिखारी ! हमारी बात क्या पूछते हो ? यह दुनिया हमारे लिये एक मुसाफिर खाना है । आज यहां कल वहां ! हमारा कोई खास ठौरठिकाना नहीं ! हमें ग्रीष्म, वर्षा शीत सब एक सी हैं। न कभी सुखमें हर्ष और न दुखमें शोकमे हां, एक चिन्ता इस 'उषा' के विवाहकी है ! सो बेटा वही भगवान मेरी बेटीकी नैया भवसागरसे पार करेगा ।

मेरे पिता मुगल खनदानके थे ! सन सत्तावनके गदरके समय वे कानपुरसे इलाहाबाद भाग आये और उन्होंने एक ब्राह्मणी विधवासे शादी कर ली ! फिर वे फौजमें भरती हुए ! जब १४ की लड़ाई छिड़ी तो सरकारने उन्हें लड़ाईपर भेज दिया। वे मारे गये ! थोड़े दिन बाद मेरी मां भी उन्हींके रंजोगम और बीमारियोंमें पिसते-पिसते चल बसीं ! अकेला मैं बचा । मैंने पुलिसमें नौकरी की और अपना धर्म बदल कर एक गरीब ब्राह्मणी विधवासे शादी करके घर बसाया ! किन्तु विधाता को जो मंजूर था, वही हुआ ! आजसे पांच वर्ष पहले उषाकी मां बीमार पड़ी ! मंहगीका जमाना था ! बीस रुपयेमें गुजर न होती थी ! और एक दिन माहकी ३१ तारीख थी ! घरमें दवादारूको एक पैसा नहीं ! मेरी पत्नी और दोनों बच्चियां बीमार ! उन्हें मेरे और उषा के सिवा और कोई पानी देने वाला न था। लष्टम-पष्टम खाना खाकर मैं ड्यूटीपर गया और एक जगह रिश्वत खा गया ! मेरी रिपोर्ट हुई और कप्तान साहबने मुझे बरखास्त कर दिया ! अफसोस ! मेरी स्त्री और दोनों बच्चियां चुल्लू भर दूधके लिये तरस-तरस कर 'टाइफाइड' और निमोनियासे मर गयीं ! उनकी उस तड़फड़ाहटको याद करके आज भी मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं ! शरीरमें कंप-कंपीसी भर जाती है ! नौकरी गयी ! परन्तु बन्धनसे मुक्ति पाकर भी तो मुझे जीना था—उषाके लिये ! केवल उषाके लिये मैं वर्षों जंगलोंकी खाक छानता रहा ! पागलोंकी तरह मारा-मारा यहां-वहां दर-दरकी ठोकरें खाता रहा ! सोचता, कहीं कुटिल काल इसे भी न निगल ले ! पर, यह मेरी नयनपुतली बच गयी ! इसकी 'ज्योरिया' मजबूत थी ! आज मेरा शरीर टूट गया ! बहुत कमजोर हो गया हूं भैया ! फिर भी पापी पेटको भरनेके लिये भीख मांगता हूं।"

और दीपकके धुंधले प्रकाशमें मैंने देखा—वृद्धकी आंखोंसे अश्रुधारा अविराम गतिसे बह रही है ! मैंने उसे सान्त्वना देते हुए कहा—"आप शान्त रहें ! अब रंज करनेसे क्या फायदा ? जो होना था, सो हुआ। अच्छा मुझे अब इजाजत दीजिये, क्योंकि मेरी होस्टलकी हाजिरी का वक्त हो चुका है !"

भिखारी—"अच्छा बेटा फिर मिलेंगे ! कभी-कभी इस तरफ निकल आया करो।"

(३)

एक वर्ष बाद ! मुझे उस लड़कीके प्रति कुछ लगाव सा प्रतिदिन बढ़ने लगा ! मैं रोज शामको उसके घर आने जाने लगा ! उसने मेरे और बाबाके कहनेसे पढ़ना शुरू किया । एक ही वर्षमें वह चौथी हिन्दी पढ़ने लगी ! एक दिन उषा नल दमयन्तीकी कथा पढ़ रही थी ! वृद्ध सो रहा था ; उषाकी आंखोंमें दो मोतियां जैसे अश्रुबिन्दु अटके हुए थे और सामने खुली हुई पुस्तक आंसुओंसे भीग रही थी । उषाने अपनी मर्मस्पर्शी वाणीमें कहा—"क्या आप भी मुझे राजा नलकी तरह.....!"

एक क्षणके लिये मैंने दीपककी मन्द रोशनीमें उसके मोमकी भांति गलते सौन्दर्यको देखा ! फिर प्रेमपूर्वक बालोंको सुलझाते हुए बोला—"नहीं उषे, प्राण रहते ऐसा नहीं होगा !" और फिर रुमालसे उसके अश्रु पोंछते हुए मैंने कहा—"पगली कहीं की ! यौवनका गुलाब तो कांटोंमें ही खिलता है ! आज हम और तुम इस कंटक मार्गमें जिस तेजीसे दौड़ पड़े हैं अब शान तो बस यही है, कि पैर पीछे न हटे।"

उषाने तब आंसू पोंछते हुए—'आखिर आपसे मुझे इतना....." मैंने कहा—"यह भी क्या बताने लायक बात है ? मेरे हृदयमें क्यों तुम्हारे ही प्रेमका समुद्र लहरा रहा है ?"

"और, मैं तो उस सागरमें मिलने वाली एक क्षुद्र सरिता हूं प्राण !"

"और, मैं सोचता हूं, उषे ! शायद हमारा यह मिलन अक्षुण्ण, अखण्ड और अबाध है। यौवनके उन्मुक्त निर्झर सा प्रगतिशील ! शायद हम जन्म-जन्मान्तरसे दो शरीर एक प्राण हैं ! उषे, तुम बिलकुल निश्चिन्त रहो ! मैं तुम्हींसे अपनी शादी करूंगा। चाहे पिताजी कुछ कहें !"

और दूसरे दिन सुरेशको पिताका तार और पत्र मिला। कम सून फार मैरिज" सुरेश, तुम्हारी शादी मैंने हरिरामपुरके मालगुजारके यहां तय कर दी है। दहेजमें पूरे ६०००) का सौदा है ! तुम पूरे ७ दिनकी छुट्टी लेकर जल्दी चले आओ ! अच्छी खासी रकम है !"

तुम्हारा पिता—
विनोदशंकर

पत्र पढ़कर सुरेशका बना बनाया स्वप्नोंका महल ढह गया ! ताशके पत्तों सरीखा कल्पनाका भवन गिर पड़ा ! वह सोचने लगा—"अब क्या किया जाय ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उषासे क्या कहें? और फिर उस भोली लड़कीसे विश्वासघात कैसे किया जाय?" और, दौलतकी चिकनी जमीनपर सुरेश फिसल गया! उसने सोचा--"आखिर पथकी भिखारिनसे प्रेम कैसा? वह सौंदर्य कलिका एक क्षणको सूंघने भरके लिये थी अब उसमें धरा ही क्या है? उसमें अब वह रूप माधर्य नहीं; जिसके लिये यह मनभ्रमर उतावला और बावला हो! उषा गर चुकी है! वह वर्णसंकरकी सन्तान है। समाजमें उसके द्वारा मेरा सम्मान न होगा! धन न मिलेगा। यौवनका गुलाब अब पूर्णरूपसे विकसित होकर अपनी पंखड़ियां धरतीपर बिखरे चुका! अब वहां कांटे ही कांटे हैं! कलिका रक्षा गयी और भ्रमरका काम है, कि जब एक कलिकासे वह रस न पा सके, तो उसे छोड़ वह दूसरीगह ले! सदा नवीन रस नवीन सुरभि और नूतन सुखका आकांक्षी तो है मन भ्रमर! और, इसी परिवर्तनका नाम जीवन है तथा जीवनकी प्यास सर्वदा अमर है। सर्वदा एक अभाव, एक अपूर्ति एक प्यास और एक अतृप्तिका ही नाम 'जीवन' है! और वह जीवनकी प्यास कभी नहीं बुझती --नहीं बुझती--नहीं बुझती! जब तक विश्वमें 'मानव' और 'नारी' नामके दो प्राणी हैं, तबतक जीवनकी प्यास भी अमर है! और, उस प्यासके बिना यह जीवन भी जीवन नहीं, अजीवन है!"

और, दूसरे दिन रातकी गाड़ीसे सुरेश घर चला गया। दहेजकी मोटी रकम वसूल करने!

(४)

तीन वर्ष बाद! बाबू सुरेश कुमार हरिरामपुरके मिडिल स्कूलमें अंग्रेजी के अध्यापक नियुक्त हुए! घटनाचक्र बड़ी तीव्र गतिसे परिवर्तित हो रहा है! महामारीमें उनके पिताका स्वर्गवास हो गया और वह मोती रकम भी पिताके साहूकारने पचा ली! 'लक्ष्मी' चंचला जो हैं न! किसी प्रकार घरकी लुटिया- पुंजिया बेचकर सुरेशने बेकारी के दो वर्ष काटे, तब कहीं पचास रुपये की अध्यापकी मिली! सो भी सुसरालमें और श्वसुरजीकी कोशिशोंके बाद! सब दिन एकसे किसीके नहीं रहते। उमा-देवी हिन्दीकी प्रसिद्ध कवियित्री और सुरेशकुमारकी धर्मपत्नी है!

नवदम्पति किसीके जीवन-सुमनको पैरों तले रौंदकर एक अतुलनीय एवं स्वर्गीय आनन्दकी लहरियोंमें बहे जा रहे हैं। सुरेश जब अपने विगत जीवनपर दृष्टि-पात करते हैं--"एक अधखिली कलिका धूलधूसरित पड़ी है! उसकी पंखड़ियां धरतीपर यत्र-तत्र बिखर रही हैं और वे उनपर पैर रखते हुए आगे बढ़ रहे हैं। एक क्षण उन्होंने किसी जीवन-तरुसे उस कलिकाको विलग करके सूंघा है! उसकी मन्द, मधुर एवं हृदयस्पर्शी सुवास ली है। रस लूटा है! किन्तु दूसरे क्षण, उसे गन्धरहित जान, धरतीपर फेंक दिया है! वे ज्यों-ज्यों उसे भूलनेका प्रयत्न करते हैं, त्यों-त्यों उसका छाया चित्र, चलचित्रकी भांति, उनकी आंखोंकेआगे नाच उठता है। वह उन्हें आंखोंमें आंसू भरे आशान्वित नेत्रोंसे देख रही है। पर, वे उसे देखकर भी जैसे नहीं देखते! उसके स्थानमें वे अपने सामने दूसरी मूर्ति उमाको देखते हैं! उमामें रूप है, यौवन है, बाहर है, मस्ती है--सब कुछ है! पर इन सब वस्तुओंसे जैसे उनके अतृप्त यौवनकी प्यास बुझकर भी नहीं बुझती। उनके अन्तरालमें ज्वालामुखीकी भांति एक ठण्डी ज्वाला, एक मीठी आग दह-कती रहती है! और, प्रतिपल आंखोंके आगे पददलित कलिका उषाका चित्र, चलचित्रकी भांति थिरक उठता है। सुरेश ज्यों-ज्यों उसे भुलानेका प्रयत्न करते, त्यों-त्यों उसकी स्मृति अमरवल्लरीके सदृश उनके जीवनतरुसे चिमटती चली जाती है--शीर्षभाग वृक्षको स्पर्श करनेके लिये!" और सुरेशने पश्चातापकी अग्निमें जलते हुए सोचा--"अफसोस, मैंने बुरा किया! धनके मदने मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी! आज बेचारी उषाकी क्या दशा होगी? न जाने वह कहां होगी? क्या खाती होगी? न जाने वह कैसी हालतमें होगी? काश, आज वह यहां आ जाती, ताकि मैं उससे अपने अपराध की क्षमा मांग लेता!"

उधर, उषा सर्द आहें भरती है अपने प्रियतमको-परदेशी प्रियतमको पानेके पानेके लिये! उसका पिता मर चुका है! अब उसकी गोदमें एक दो वर्षका शिशु है। किसीकी स्मृति रूपी थाती! जिसे वह कन्धेसे चिपटाये भीख मांगती है! सौभाग्यसे पथकी ठोकरें खाती हुई उषा हरिरामपुर पहुंची और सुरेशके यहां एक परिचारिकाके रूपमें रहने लगी! बरसातके दिन हैं! हरिरामपुरमें बड़े जोरका हैजा फैल गया है! उमादेवीको हैजा हो गया! 'इनाकुलेशन' तो उन्होंने सप्ताह पहले ही ले लिया है! मनुष्य मृत्युसे बचनेके अनेक उपाय करता है, पर जब कजा आ ही जाती है, तब वह असमर्थ हो जाता है! मृत्युके सामने भले बुरेका कोई ख्याल नहीं! उसके सपाटेमें जो भी पड़ा--चाहे वह वृद्ध हो --चाहे जवान हो, चाहे बालक कोई भी हो, वह साफ हो जाता है। मौत किसीको प्रिय नहीं लगती। सभी उससे भय खाते हैं। यही हाल उमाका हुआ। उषा और सुरेशने मिलकर बड़ी सेवा-सुश्रूषा की। लेकिन दीपक हाथ लगाते आखिर बुझ ही गया। अभी कल ही सुरेश उमाको फूंककर घर आये, कि इसी गड़बड़ीमें उन्हें भी हैजाने धर दबाया! मतलबी, मित्र और सास -ससुर तकने उनकी कोई खबर न ली! वे क्या करते? दामाद का रिश्ता भी लड़की तक था! 'अपने परायें' और 'परायें-अपने' हो गये! बेचारी उषा अपने दुधमुंहे 'नन्हे' को धरती पर 'भुखा प्यासा' ही छोड़कर अपने स्वामी तथा पतिकी सेवा सुश्रूषामें तत्पर रहती है! वह गुदड़ीका लाल फटे पुराने कपड़ों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रफुल्ल कांगड़ी

# चित्र दीर्घा

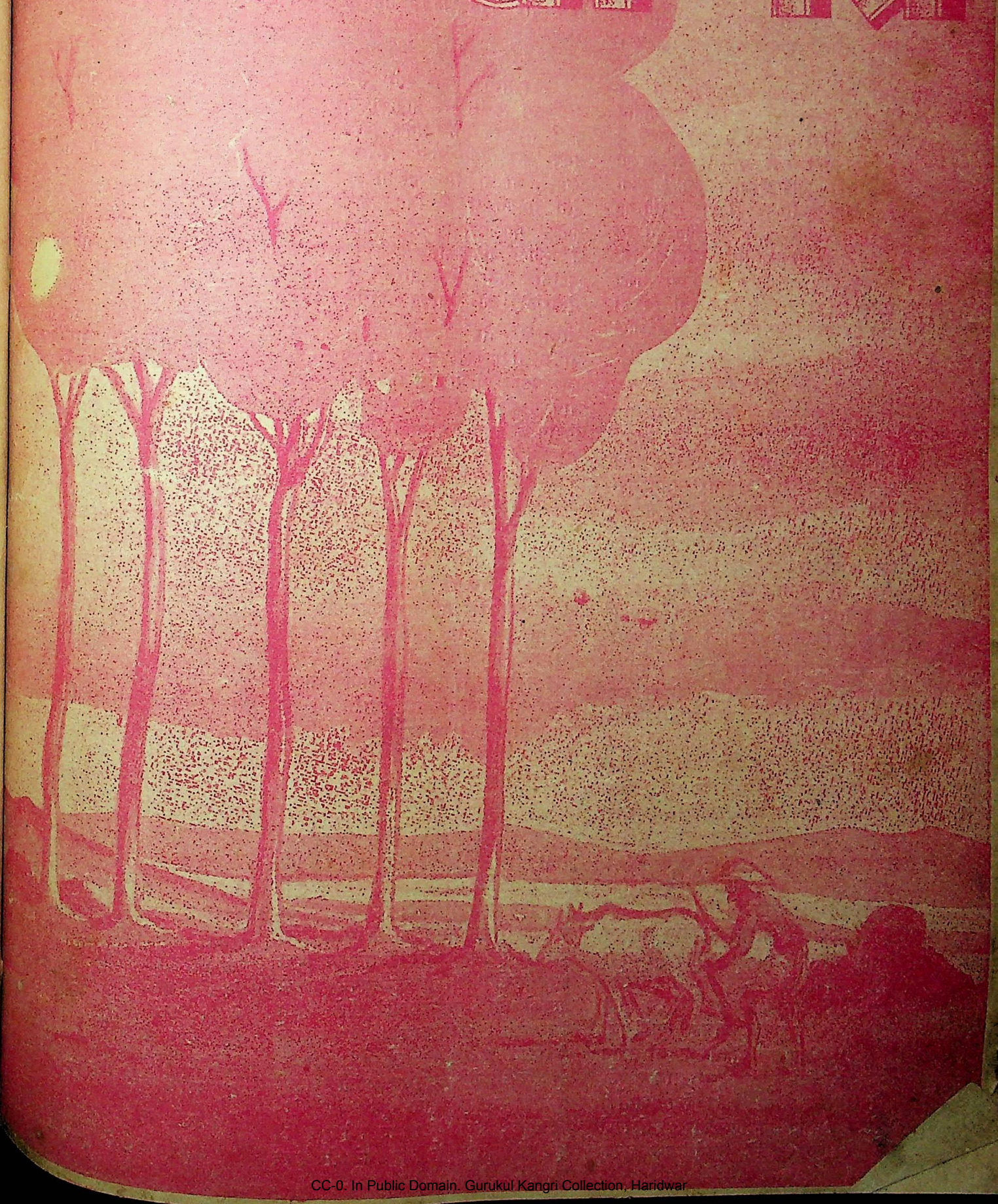

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भाषा गई तो संस्कृति भी जायगी

( लेखक—श्री कात्यायन )

अखिल भारतीय रेडियोकी समाचार शाखामें 'हिंदुस्तानी' नामकी एक खिचड़ी भाषाको जन्म देनेका कृत्रिम प्रयत्न बुखारी कालसे चला आ रहा है। किन्तु जान पड़ता है कि रेडियोके पण्डित अभी तक कोई ऐसा सांचा नहीं बना पाये जिसमें हिन्दुस्तानी नामकी कल्पनातीत भाषाको ढाला जा सके। यही कारण है कि रेडियोसे कभी कभी तुरंगी तिरंगी हिन्दुस्तानी सुनाई दे जाती है। ( तुरंगी वह जिसमें हिन्दी उर्दू हो और तिरंगी वह हिन्दी उर्दू-अंग्रेजी है ) कुछ दिन हुए इस तथा कथित हिंदुस्तानीमें हिंदी शब्दोंका प्रतिशत तीस तक पहुंच आया था लेकिन हालमें उर्दूका प्रतिशत फिर बढ़ा पूर्व हो गया है। अब तो हिन्दीके बराबर ही अंग्रेजीके शब्द भी भरे जाने लगे हैं।

### किसी को लाभ नहीं

इस संकर भाषासे किसे लाभ पहुंचाने का प्रयत्न किया जा रहा है यह समझमें नहीं आया। इस भाषाको न उर्दूवाले समझ पाते हैं न हिंदीवाले। बुखारी युगमें उर्दू-वाले रेडियोकी भाषासे पूर्णतः सन्तुष्ट थे। किन्तु इस समय तो हिन्दी और उर्दू-वाले दोनों ही असन्तुष्ट जान पड़ते हैं। आशा थी कि भारतको स्वतन्त्रता मिलने पर भारतकी जलन शांत हो जायगी किन्तु हम उसकी व्यथाको कम होनेकी अपेक्षा बढ़ा ही हुआ देख रहे हैं। पाकिस्तानने उर्दूको राष्ट्र भाषा घोषित कर दिया है किन्तु भारतमें अभी भाषाके सम्बन्धमें इस प्रकारकी कोई घोषणा नहीं हुई। हमें आश्चर्य न होगा यदि भारतकी भाषा में भी हिंदुस्तानीके नाम पर उर्दू घोषित कर दी जाय। हम इसके लिये तैयार हैं किन्तु हम रेडियो अधिकारियोंके सम्मुख इतनी मांग रखनेके अधिकारी हैं कि वे उर्दूके साथ साथ हिन्दीको भी बराबरीका दर्जा दे दें। बराबरीसे तात्पर्य यह नहीं है कि एक ही भाषामें शब्दोंका प्रतिशत पचास पचास कर दिया जाय। हमें आधा तीतर आधा बटेर पसंद नहीं। हम तो कहते हैं कि आपकी हम पर बड़ी दया होगी यदि आप हमारे समाचार बुलेटिनको विशुद्ध हिंदीका कर दें और उर्दूको समान पद देनेके लिये उर्दूका एक समाचार बुलेटिन बिलकुल अलग कर दें। भाषाकी ओटमें जान या अनजानमें भारतके संस्कारों को बिगाड़ना राष्ट्रके लिये लाभ दायक न हो सकेगा। अपनी संस्कृतिको गर्वा कर हम भौतिकके वरदानोंको लेकर कहां रहेंगे और प्रबुद्ध जगतके सनमुख अपना मस्तक कैसे ऊंचा कर सकेंगे ?

### असम्भव प्रयत्न

क्या संसारमें कोई ऐसी दूसरी भाषा है जिसमें किसी अन्य भाषाका मेल हुआ हो ? पाश्चात्य देशोंके अनेक महापण्डितोंने अनेक बार ऐसी भाषा गढ़नेका प्रयत्न किया, जो सार्वभौम नहीं तो कमसे कम ऐसी ही बन ही सके जिसे संसारके बहु-संख्यक लोग लिख पढ़ सकें। ऐसी भाषाओं में 'एस्पांटो' अधिक प्रसिद्ध है, किन्तु पाश्चात्य विद्वानोंके हजार सिर मारने पर भी "'एस्परांटो' को प्रचलित करनेके पहले 'वोलापुक' और ईडियान' न्यूट्रल नामक कृत्रिम भाषाओंको प्रचलित करनेके भागीरथ प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हो चुके थे। कृत्रिम भाषा गढ़नेकी दिशामें हम चाहें तो युरोपीय विद्वानोंको इस सफलतासे शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं, किन्तु जान पड़ता है कि अपना कुछ खोये बिना हमें सदबुद्धि न आयेगी। हिन्दीमें उर्दू और अंग्रेजीका समावेश करके हम युग युग तक केवल यही प्रदर्शित कर सकेंगे कि हम पहले मुसलमानों और अंग्रेजोंके गुलाम रहे। प्रस्तर मूर्तियां सड़कोंके नाम बदल देने पर भी हिन्दीमें उर्दू और अंग्रेजीका समिश्रण रख कर हम भारतको कभी भी बन्धन मुक्त न देख सकेंगे। हमारी भाषाके अन्तर में उर्दू और अंग्रेजीके शब्द हमारी दासताके चिरस्थायी स्तम्भ बन कर खड़े रहेंगे जिन्हें देख कर अशोक स्तम्भ लज्जासे नतमस्तक हो जायगा।

### संस्कृति पर आक्रमण

हमारी विडम्बनाकी सीमा इस खिचड़ी भाषा हीमें लगी हो तो बात नहीं है। अपनी इस तथाकथित प्रगतिशीलतामें हम कुछ इस तरह बहे जा रहे हैं कि कुछ समयमें हम अपनी उस संस्कृतिको भी भुला बैठेंगे, जिस पर हमें गर्व है और जिससे हम प्रेरणा ग्रहण करते हैं। आज हम अपने आपको तत्वको छोड़ कर परछायीके पीछे दौड़ता देख रहे हैं। थोड़ेसे लाभके लिये हम अपने विराटकी बलि चढ़ा रहे हैं।

विरोधियोंके असंभव मांगोंके आगे झुकते झुकते हम इतना झुक गये हैं कि कि हमारी कमर गुलेल बन गयी है। अब हमें डर लगता है कि कहीं अकड़े और कमर टूटी। किन्तु यह भय भ्रांति के सिवा कुछ नहीं है। यदि हम तन कर खड़े होने अभ्यास करें तो हमारी कमर सीधी हो सकता है।

### रेडियो की भाषा

रेडियोके कारण हमारी भाषामें किस प्रकार विकार घुसता जा रहा है। यह पाठकों और रेडियोके श्रोताओंसे छिपा नहीं है। रेडियोकी बेमेल भाषा से केवल हिन्दी कुरूप बन रही हो, सो बात नहीं है। हमारी संस्कृतिको भी इससे ठेस पहुंच रही है। रेडियोकी हिंदुस्तानीमें ऐसे शब्द और वाक्य भरे भरे जा रहे हैं जो भाषाके साथ साथ हमारी संस्कृतिको भी नष्ट कर देंगे।

हालहीमें रेडियोकी हिंदुस्तानीको फिर अपनी पूर्व स्थिति प्राप्त हो जा रही है। बीचमें थोड़े हिन्दी शब्दों स्थान मिल गया था, परन्तु अब उन्हें ढूंढ़ कर निकाला जा रहा है। अब फिर उर्दूका बोलबाला है। इस तथा कथित हिन्दुस्तानीमें जो दो चार शब्द हिन्दी सुनायी दे जाते हैं. वे सब विधर्मी बना बहां बैठाये जाते हैं। रेडियोकी भाषा वाक्य विन्यास कुछ इस ढंगका होता रहा है कि हिन्दी अपनी प्रकृति और छोड़ती जा रही है। हिन्दुस्तानीके नाम हिन्दीको विधर्मी बनानेका षड़ यन्त्र होने लगा है। इस प्रसंगमें उर्दू और के शब्द की तालिका देनेसे कोई लाभ होगा। जो लोग रेडियोके समाचार टिनोंको सुनते हैं, उन्हें पता है कि इन बुलेटिनोंमें उर्दू और अंग्रेजी

### कुछ नमूने

उर्दू अंग्रेजी शब्दोंकी बहुलताके ही वाक्योंका विन्यास भी फारसीके होने लगा है और बेचारे श्रोताओंको मारके उसे सुनना पड़ रहा है। समाचार बुलेटिन सामने न होनेके उपर्युक्त कथन की पुष्टिमें विशेष देनेकी सुविधा नहीं है। नमूनेके लिये दो ही चार वाक्यांश उद्धृत किये जा हैं। १४ मईकी रातके बुलेटिनमें 'उन्नति' कान्ती' 'जनता' आदि शब्दोंके अतिरिक्त ' कार्रवाहियोंको 'आम समझौता' स्थायी सुलह, तारा चिट्ठी, आदि वाक्यांश भी सुनायी थे। इसी बुलेटिनमें एक ..... इस प्रकार था।

दियोंकी बस्ती पर हमला कर रहे यह वाक्य फारसी ढंगका है और है। इससे यह भ्रम होता है कि

( शेष ३७वें पृष्ठपर देखिए )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वमित्र

सम्पादक--
देवदत्त मिश्र

वर्ष--३१ संख्या १९ ता० २ जून १९४८ June 2 1948 मूल्य =), वार्षिक ६)


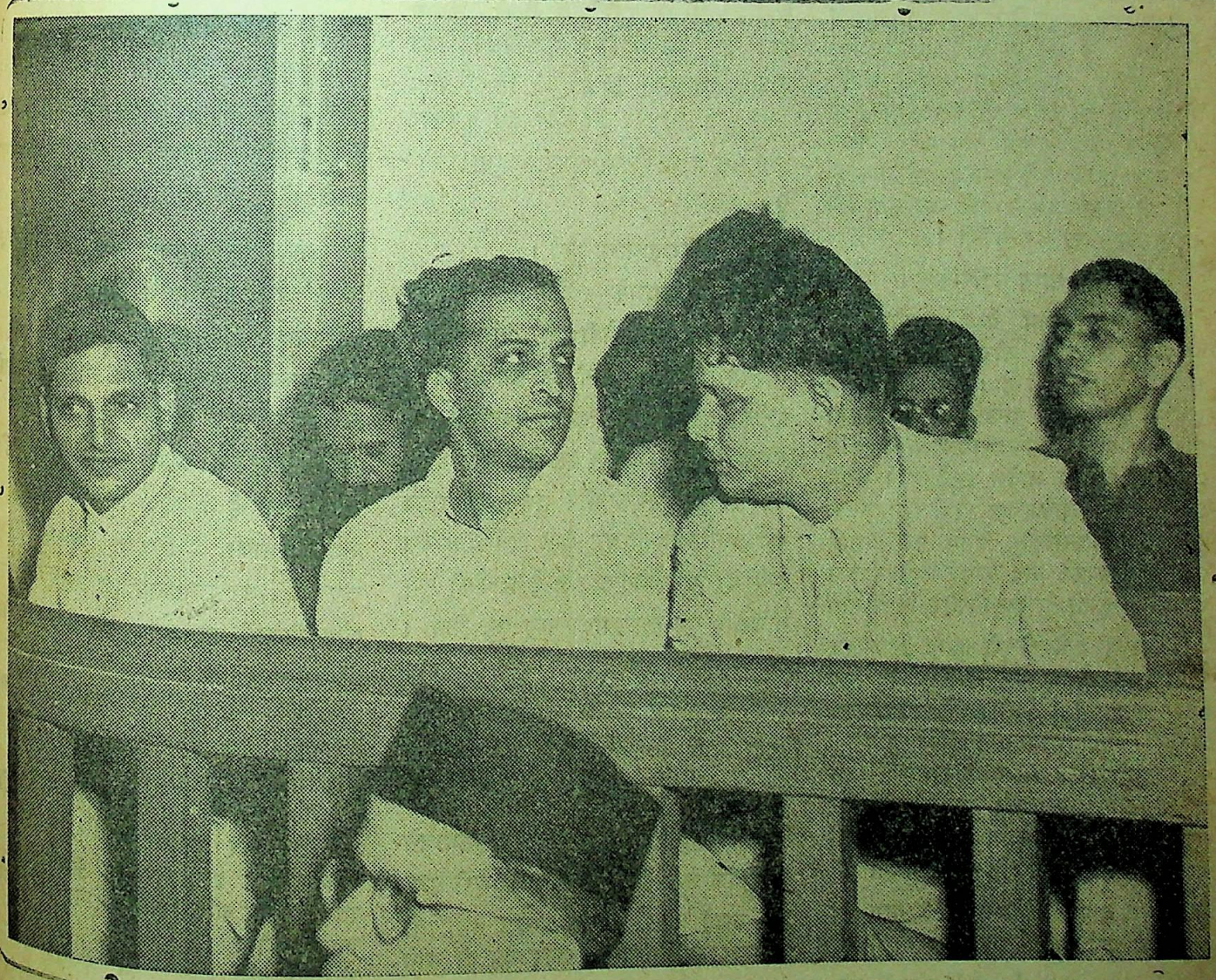

महात्मा गांधीजीके हत्याके अभियोगमें दिल्लीके लाल किलेमें गत वृहस्पतिवारको ९ अभियुक्तोंपर मुकदमा शुरू हुआ। चित्रमें पहली कतारमें बायींसे दाहिनी तरफ नाथुराम विनायक गोडसे, नारायण आप्टे, और विष्णुराम कृष्णकरे पीछे बैठे हैं। (बाएंसे दाहिने) दिगम्बर रामचन्द्र बाडगे, शंकर, विनायक दामोदर सावरकर, गोपाल विनायक गोडसे और दत्ताराय सदाशिव परचुरे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# समाज-दर्पण

### पार्वतीकी आत्महत्या ।

जब पार्वतीने देखा कि मेरे सामने चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार है, तो उसने अपनी फटी साड़ी पर मिट्टीका तेल छिड़का , दियासलाई जलायी और चट जल कर प्राण विसर्जन कर गयी । पार्वती सरीखी विधवाओंके सामने हिन्दू समाजमें दो ही रास्ते तो हैं—आत्म हत्याकर अपने दुखी जीवनका अन्त करें, या समाजमें सदा संन्दिग्ध और दुखी जीवन बितायें। विधुर भाई एक दो चार और एक दर्जन तक विवाह कर सकता है, परन्तु विधवा बहनकोसु षिमुनियों द्वारा निर्द्धारित ब्रह्म-चर्य पथ पर चलनेके लिये वाधक है । पार्वती ने अपने लिये एक वर भी चुन लिया था और साहस पूर्वक इसकी सूचना माता-पिताको दे दी थी, परन्तु उसे इसके लिये काफी फटकार सुननी पड़ी और अन्तमें वह प्राण देनेके लिये वाध्य हुई । विधवाओं की यह करुण दशा न जाने कब समाजकी सहानुभूति प्राप्त कर सकेगी ।

### व्यय साध्य यज्ञोपविति ।

हिन्दू समाजमें वैश्य व्यापार कर धनार्जन करते हैं और शूद्रवर्ग मेहनत मजूरीसे पैसे कमाते हैं । बेचारा ब्राह्मण समाज धनार्जनकी दृष्टिसे काफी पिछड़ा हुआ है, परन्तु उसके सामने प्राचीनस षि मुनियोंके बहुतसे आदेश रहते हैं । उन्हीं आदेशोंमें एक आदेश यह भी है कि बालकों का यज्ञोपवित-संस्कार समय पर कराया जाये । संस्कारके बाद बेचारे यज्ञोपवीतकी जो दुर्दशा होती है, वह किसीसे छिपी नहीं है । परन्तु यज्ञोपवीतमें इतना खर्च कर डाला जाता है कि कर्ज भी शिर पर लाद लिया जाता है । धार्मिकताके साथ वाह-वाहीकी झूठी भावना लोगोंको कर्जके संकटमें डालती है । वित्तके बाहर खिलाने पिलाने और वस्त्र आदि बाटनेमें खर्च कर डाला जाता है जो लोग जमीन पर दरी बिछा कर कभी नहीं सो सकते, वे भी ऐसे मौकों पर बाप दादाके सुनामके नाम पर काफीखर्च कर बैठते हैं । प्रियजनोंको दूर दूरसे बुलाया जाता है, मानो उनकी उप-स्थितिके बिना वाहवाहीका नाटक पूरा ही न होगा । निर्धन ब्राह मण समाज न जाने कब तक इस भ्रमजालमें फंसा रह कर कष्ट भोगता रहेगा ।

### सियारोंकी करतूत ।

शेर और भेड़ियेकी जगह सियारोंसे भी मनुष्यको काफी सतर्क और सावधान रहनेकी जरूरत है । समाचार पत्रोंमें उस दिन यह दुखदायी संवाद पढ़नेको मिला कि हवड़ाके एक अंचलमें रातको एक झोपड़ी में जब मातापिता अपने तीन वर्षके बच्चेको पास सुला कर सोये हुए थे, एक सियार खुले दरवाजेसे भीतर घुस गया और बच्चे को उठा कर पासकी झाड़ीमें ले गया और उसका कलेवा कर गया । सबेरे उठने पर बच्चेकी तलाश होने लगी और कोई बात समझमें न आयी । तलाश करने पर पासकी झाड़ीमें हड्डियां पड़ी हुई मिलीं, जिससे पता चला कि सियारने यह अनर्थ किया है । हमारे देशके सियार भी कितने परा-क्रमी हैं । इस पर भी लोग हमें कमजोर बता कर न जाने क्यों हमाराउपहास करते हैं ।

### नर हत्याका पुण्य ।

हिन्दू समाजके कपड़े धोकर सबको सुन्दर बनानेवाले धोबी यह संवाद सुनकर निश्चय ही प्रसन्न होंगे कि उनकी विरा-दरीका एक छोटासा लड़का बिहारके एक गांवमें कुंएमें ढकेल कर इस लिये मार डाला गया कि उसने कुछ छींटे पासमें खड़े उच्च वर्ण कहलानेवालों पर डाल दिये थे । बस इसी पर क्रुद्ध होकर उन्होंने बच्चेको कुए में ढकेल कर नरहत्याका पुण्य लूट लिया । इस प्रकारके जुर्म कानूनी दृष्टिसे संगीन हैं हीसामाजिक दृष्टिसे भी भयंकर माने जायें, तभी समाजके छोटे अंग सुरक्षित रह सकते हैं । लाख चेष्टा करने पर भी वास्तवमें छुआछूतके भूतने हिन्दू समाजसे अभी तक छुट्टी नहीं ली और वह बुरी तरह हमें जकड़े हुए है । हम प्रत्यक्ष नहीं, तो अप्रत्यक्ष रूपमे उसके शिकार बन ही जाते हैं और यह अनुभव नहीं कर पाते कि मनु-ष्यको अछूत माननेके एक मात्र अपराधी हिन्दू ही हैं, जो अपने अंग पर कुठाराघात कर स्वयं पंगु बनते जा रहे हैं । भगवान् हमें तुरन्त सुबुद्धि दे ।

## आपके पीछे क्या

--- विनायक नोनकर

"यह हमारे पीछे कौन आ रहा है ?"
"शायद कोई सी० आई० डी० होगा ।"
"मगर हम तो सरकारके विरूद्ध कुछ नहीं बोलते हैं ।"
"फिर कोई पाकेटमार होगा ।"
"मगर हमारे तो पाकेट भी नहीं हैं। जो कुछ दो चार आने हैं वे हम टेंटीमें रखते हैं यह पाकेट मार भी जानते हैं ।"
"फिर कोई भड़वा होगा ।"
"क्यों बेइज्जती करते हो ? भड़वे, आदमी पहचानते हैं । वे उन्हीका पीछा करते हैं जिनसे उनका काम बनता है ।"
"फिर जरूर कोई गुंडा होगा ।"
"अरे बापरे, यह तो सबसे खौफनाक प्राणी है । यह शेर की तरह खून पीता है । भागो भागो ।"

जब दोनों भागने लगे तो पीछे से 'बाबा' कहकर किसीने पुकारा ।
'अरे यह तो अपना लच्छु है ।'
'यह कम्बख्त इतनी रात गये यहां क्यों मरनेको आया ?"
'क्यों बे बापके पीछे मां का खुफिया पोलिस बने फिरता है ?"
नहीं चाचाजी, सिनेमा देखकर आ रहा था । डर लग रहा था इतनें में आप लोग दिखाई पड़ गये इससे आपके पीछे हो लिया ।"

"बड़ी देर से देख रहा हूं, यह मेरे पीछे कौन आ रहा है ?"
कोई महाजन होगा ।"
"मुझे उधार खानेकी आदत नहीं और कर्ज लेने की जरूरत नहीं ;
योंकि दोनोंसे इन्सानियतका ह्रास होता है यतब तो वह कोई ग्रेजुवेट होगा ।" नौकरी चाहता होगा ।"
'मैं क्या कोई दफ्तर का अफसर हूं नौकरी दिलाने वाली कंपनीका एजेंट हूं ?"
"फिर कोई गधा होगा ।"
"देऊंगा एक झापड़ । क्या मुझे धोबी बनाना चाहते हो ?"
"तब तो जरूर कोई भिखारी होगा ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"अरे बापरे ! भागो भागो, ये भिखारी एक सर दर्द है। जिसे चार आदमियोंमें अपनी इज्जत खोनी हो वह इन भिखारियों के मुह लगे। ये भिखारी याने एक शनी हैं। जो एक जो एक दफै चिपटे कि विना कुछ नुकसान पहुंचाये पीछा नहीं छोड़ते। अपने मतलब के लिये चाहे उसे 'बाबा' 'काका' 'दादा' बना लेते हैं। कुछ दिया तो खूब आशीश देते हैं और यदि दुर्भाग्य से आपकी जेबमें कुछ नहीं हुआ तो बुरीसे बुरी गाली देनेको भी नहीं चुकते। भागो--घर में बीबी की गालियोंके डर से बाहर निकला तो ये यहां भी गाली देने वाले मौजूदी ही हैं। क्या संसारमें इन्सान गाली खानेके लिये ही पैदा किया गया है ? जब गाली, मार और हवा सरीखी वस्तुएं खानेके लिये मौजूद हैं तब ये फल, अम वगैरा पैदा करने की भगवान्को क्या जरूरत पड़ी भगवान ही जाने।"

"यह आदमी तो बड़ा लोक प्रिय मालूम देता है। मर गया तो इसके पीछे जुलूस की तरह इतने आदमी जा रहे हैं। कितने दुःखी है ये लोग।"

"यह आदमी जो मरा है वह लोमप्रिय तो नहीं था बल्कि धनप्रिय जरूर था इसकी प्रेत यात्रामें एक भी आदमी जाने को राजी नहीं था। यह जो इतनी बड़ी इसके जमात दुंकी पीछे जा रही है वह भाड़े की है। क्या ढंग लाया है बदमाशोंने मानों उनका वाप ही मर गया हैं। हमारे यहां जिस तरह रोनेके लिये औरतें बुलायी जाती है उसी तरह पश्चिमीय देशोंमें प्रेत यात्राके लिये आदमी मिलते हैं। बीम कंपनी की तरह इनकी भी एक कंपनी है जो प्रेत यात्राके लिये आदमी और दिगर सामान जुटा देती है। यह सब भाड़े के टट्टू हैं न कि उस मृतः मनुष्यके सगे संबंधी या मित्र।"

"नकली हो या असली पीछे की चीजों से ही आगे का महत्व हैं। पीछे सौ पचास आदमी न हो तो आगे वाले को लीडर कौन कहेगा ? बापके पीछे बेटा न हो तो उसे मरनेके बाद पानी कौन देगा ? अपने पीछे कुछ जायदाद नहीं छोड़ी तो मरने पर उसे बाप कौन कहेगा ? हिन्दुस्तानका पिछला इतिहास ही तो उज्ज्वल है। जिसके कारण आज भी वह इज्जत से देखा जाता हैं। लोग कहते हैं कि पीछे की बातें भूल जाव। नादान हैं पीछे की बातें यदि भूल जायं तो समय कैसे कटे ? यदि पीछे कुछ न हो तो आगे का रास्ता कैसे दिखाई देवे ?"

"यह देखिये तो आपके पीछे क्या है?"

"क्या होगा ? जो आगे नहीं है वह पीछे होगा।"

"वही तो मैं भी कह रहा हूं कि लोग पसब कुछ पीछे ही करते हैं, पीठके पीछे बुराई करते हैं। परन्तु यहां तो कुछ नया ही दिखाई पड़ता है।"

"जो आगे बढ़ते हैं वे पीछे नहीं देखते।"

"परन्तु पीछे न देखनेसे रास्तेमें अपघात होनेका भय रहता है। शहर है, कोई वाहन ऊपरसे निकल जाय। इससे पीछे देख कर चलना ही अच्छा है।"

"मुझें वाहनके नीचे दबनेका डर नहीं क्योंकि मैं सही बाजूसे चल रहा हूं। वाहनके नीचे तड़ाक पड़ाख मरनेके लिये मेरे पितजीने मुझे पैदा नहीं किया।"

"फिर भी पीछे देख कर ही चलना उत्तम होता है। मान लो आपकी बीबी आपके साथ हो। चलते समय वह आपके पीछे ही चलेगी यदि आप पीछे नहीं देखेंगे तो मुमकिन है कि शहरकी भीड़में वह गायब हो जाय।"

"मगर यहां न बीबी है न बाबा, फिर ऐसा है क्या जो मैं पीछे देखूं ?

"आपके पीछे बेचना है, का पोस्टर चिपका हुआ है।"

"हां देखा शैतानको ? रिक्शेके पीछे लगानेको कहा था सो मेरे ही पीछे चिपका दिया। रिक्शेकी जगह वह अपने आपको ही बेचना चाहता है। अब बताओ मैं क्या करूं ?"

"पीछे देख कर चला करिये तो सब ठीक हो जायगा।"

"क्या आपको मालूम है कि उस लड़की के पीछे कौन जा रहा है ?"

"होगा कोई उचक्का। आज कल लोगोंके पीछे जाने और धक्का मारने की बीमारी लग गयी है।"

"अजी वह कोई उचक्का नहीं बल्कि कालेज युवक है। उस लड़कीसे बातें करने का मौका ढूंढ़ रहा है।"

"मगर यहां रास्तेमें उसे एकान्त कहां मिलेगा ?"

"न सही, जब तक वह दिखायी देगी, वह उसके पीछे पीछे जावेगा। इसीमें उसे आनन्द होता है। वह एक वफादार प्रेमीकी तरह उसकी रक्षा करता है कि कहीं वह फिसल पड़े तो यह उसे सहारा देवे, या उसकी कोई चीज गिर पड़े तो यह उसे उठा कर देवे या कोई उसे छेड़े तो यह अपनी बहादुरीका परिचय देवे और दोस्ती बढ़ावे।"

"मगर वह तो छोटा सा मुंह लिये वापस आ रहा है।"

"तब वह अकेली न होगी। कोई दूसरा युवक उसके साथ होगा।"

"देखूं। अरे यह तो उस लड़कीका मौसेरा भाई है मगर इस दिवानेने उसे उस लड़कीका प्रेमी समझा होगा।"

इस तरह हम देखते हैं कि पीछेकी हर वस्तु धोखेकी और संदेह उत्पन्न करने वाली होती है। परन्तु ईश्वरने सबके पीछे कुछ न कुछ लगा ही रखा है ताकि मनुष्य चैतन्य रहे। चूहेके पीछे बिल्लीके पीछे कुत्ता, कुत्तेके पीछे हिंसक प्राणी और मनुष्यके पीछे नाना प्रकारकी चिंताएं।

"यह आपने अपने पीछे क्या लगा लिया है ?"

"मैंने तो कुछ लगाया नहीं है लड़कोंने दुम लगायी होगी। बड़े शैतान हो गये हैं।'

"अजी दुम उम कुछ नहीं है कि आपने यह झंझट क्यों अपने पीछे लगा लिया है ?

"कौन सा झंझट ?"

""यही उधार देनेकी, दो आदमियोंके बीच पड़नेकी उपकार करने सलाह देनेंकी। ऐसे एक न दो अनेक झंझट लगा रखा हैं आपने अपने पीछे क्या हुआ ! जिंदगीमें कुछ भला भी तो करना चाहिये। खाली मगरमस्तकी तरह पड़े रहनेसे तो लोहे सरीखी धातुको भी जगलग जाती है।"

"मगर यह भलेकी दुनियां नहीं है। यहां तो नेकीका बदला बदीसे मिलता है। मैं पहिले कई संस्थाओंका अध्यक्ष था मगर बादको ऐसा अनुभव आया कि मन कहने लगा कि नाहकको ये झंझटें अपने पीछे लगा लिया।"

'क्यों'

'मैं ईमानदारीसे अपना कार्य करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत सरकारकी उद्योग नीति

ले० श्री केशरीदास अग्रवाल

विगत कितने ही महीनोंसे सरकारसे मांग की जा रही थी कि वह अपनी उद्योग सम्बन्धी नीतिको स्पष्ट करे । लोगोंका यह कहना था और वास्तवमें वह उचित भी था, कि सरकारकी उद्योग सम्बन्धी नीति स्पष्ट न होनेके कारण उद्योगपति सशंकित हो रहे हैं, जिसके फलस्वरूप उत्पादन गिर रहा है और देशवासियोंकी कठिनाई बढ़ रही है । अन्तमें इस विषय पर अत्यन्त सावधानीसे विचार करनेके बाद गत ६ अप्रैलको भारतकी धारा सभामें उद्योग मंत्री डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जीने सरकार की उद्योग नीतिको स्पष्ट करने वाला प्रस्ताव उपस्थित किया । इस प्रस्तावमें जिस नीतिकी घोषणा की गयी है, यद्यपि वह कांग्रेस द्वारा निर्धारित नीतिके अनुरूप नहीं है और कुछ दृष्टिसे उससे दूर जा पड़ी है, परन्तु व्यवहारिक दृष्टिसे उसे अत्यन्त संतोषजनक कहा जा सकता हैं । इसमें कुछ युक्तियां अवश्य हैं, जिनका उल्लेख बाद मेंकियाजायगा,परन्तु साथही विरोधीमतोंका इसमें अच्छा समन्वय है और उद्योगको प्रोत्साहन देने तथा उनके विकासकी सभी बातें निहित हैं ।

यह सत्य है कि सरकार उद्योगोंके राष्ट्रीयकरणके पक्षमें हैं, परन्तु उसने समाजवादी नीतिका अन्धानुकरण नहीं किया है । इस समय सरकारके पास राष्ट्रीयकरणके लिये जिन साधनोंकी आवश्यकता होती है, वे नहीं हैं । उसकी पूंजी सीमित है तथा उसके पास अनुभवी कर्मचारियोंका अभाव है । अतः वह देशके सभी उद्योगोंका राष्ट्रीयकरण करनेमें नितान्त असमर्थ है । फलस्वरूप उसने बीचका रास्ता अपनाया है । इस नीतिके अनुसार सरकारी और गैरसरकारी दोनों प्रकारके उद्योगोंके विकासके लिये पथ प्रशस्त करनेका प्रयत्न किया गया है ।

मुद्रा स्फीतिकी समस्या दूर करने तथा विदेशी व्यापार बढ़ानेके लिये इस समय सरकारका एक मात्र उद्देश्य उत्पादन वृद्धि है । वह जानती है कि देशके उद्योगपतियोंके पास पर्याप्त आर्थिक साधन और अनुभव हैं, अतएव उनके सहयोगसे ही उत्पादनकी कमी दूर हो सकती है । यदि वह देशके सभी उद्योगोंकी मिल्कियत प्राप्त कर लेती है अर्थात् उनका राष्ट्रीयकरण करती है, और यदि इमानदार तथा अनुभवी कर्मचारियोंके अभावमें उन्हें चला न सकी, तो इसका परिणाम अत्यन्त भयावह हो सकता है और इससे मिल मालिकों, मजदूरों तथा उपभोक्ताओं—सभीकी हानि हो सकती है । दूसरी बात यह है कि औद्योगिक दृष्टिसे देश अभी भी अर्धविकासित अवस्थामें है । अभी भी ऐसे बहुतसे उद्योग हैं, जिनकी स्थापना नहीं हो सकी है, अतएव सरकार अपनी पूंजी से इन्हीं उद्योगोंकी स्थापना और विकास पर ध्यान देगी ।

### उद्योगोंका वर्गीकरण

उद्योगोंके राष्ट्रीयकरण और उनके विकासके लिये सरकारने उद्योगोंको तीन भागोंमें विभाजित किया है । प्रथम श्रेणीमें वे उद्योग हैं जिन पर केवल राजका अधिकार होगा, दूसरी श्रेणीमें वे उद्योग धंधे हैं जिनपर सरकारका नियंत्रण रहेगा और तीसरी श्रेणी निजी उद्योगोंकी होगी । तदनुसार रेलवे, शस्त्रास्त्रका निर्माण, जल विद्युत तथा परमाणु शक्तिका उत्पादन और नियंत्रण—इनपर सरकारका एकाधिकार रहेगा । कोयला, लोहा और इस्पात, विमान, जहाज; टेलिफोन, तार और वायरलेसके यंत्रोंका उत्पादन, रेडियो सेट, मिट्टीके तेल—इन उद्योगोंके नये कारखानेकी स्थापना केवल सरकार ही कर सकती है, अन्य कोई व्यक्ति नहीं । परन्तु इस समय देशमें इन उद्योगोंके जो कारखाने हैं उन्हें दस वर्षों तक इसी अवस्थामें विकसित होने दिया जायगा । उसके बाद उनके संबंधमें नये सिरेसे विचार किया जायगा । उपर्युक्त आधारभूत उद्योगोंका किसी देशकी आर्थिक उन्नतिमें विशेष हाथ रहता है, और उनमें अधिक पूंजी और श्रमकी आवश्यकता होती है, परन्तु प्रायः वे उपेक्षित दृष्टिसे देखे जाते हैं । अस्तु सरकारने उनकी स्थापनाका कार्य जो अपने हाथमें लिया है वह उचित और तर्क संगत है । तीसरी श्रेणीके उद्योगोंमें सूती और ऊनी वस्त्र, रबड़, सीमेंट, साधारण तथा अखबारी कागज, सामुद्रिक और हवाई यातायात, खान खोदना, रक्षा संबंधी उपादनोंका निर्माण, बिजलीके तथा अन्य कलपुर्जोंका निर्माण, भारी और हलके रासायन, लौहेतर धातु—आदि उद्योग आते हैं । इन उद्योगोंकी स्थापना और व्यवस्था आदिसे सरकार संबंध न रखेगी और उन्हें जनताके ऊपर छोड़ दिया जायगा । परन्तु उद्योगोंके उचित विकास तथा इनमें काम करने वाले श्रमिकोंके हितोंकी रक्षाके लिये और मिल मालिकों, उपभोक्ताओं, आदिकी भलाईके लिये तीसरी श्रेणीके उद्योगों पर भी सरकार अपने विवेकानुसार नियंत्रण रखेगी । यदि आवश्यक समझा गया तो सरकार किसी भी उद्योग को अपने कब्जेमें ले लेगी, परन्तु ऐसा करते समय मिल मालिकोंको उचित मुआविजा दिया जायगा ।

### योजना साधारणतः संतोषजनक

वर्गीकरण सिद्धान्ततः संतोषजनक है । उपर्युक्त सरकारी घोषणाने उद्योगपतियों और व्यवसायी वर्गकी आशंकाओं और भयको निर्मूल कर दिया है । उन्हें अपनी स्थितिका ज्ञान हो गया है और अब वे निर्भय होकर उद्योगोंकी स्थापना और विकासका प्रयत्न कर सकते हैं, जिन्हें तीसरी श्रेणीमें रखा गया है और जो अभीतक अछूत थे । सरकारका यह आश्वासन कि यदि परिस्थिति विशेष में उनके उद्योगोंपर कब्जा किया गया तो उन्हें उचित मुआविजा दिया जायगा, उनके रहे सहे भयको भी दूर कर देगा, ऐसी आशा है । औद्योगिक विकासमें अनिश्चियताकी अभी तक जो बहुत बड़ी बाधा थी, और जिसके कारण गत कई मासमें उत्पादन गिर रहे थे, वह अब दूर हो गयी । अब ऐसी आशा की जाती है कि निकट भविष्यमें ही उद्योगोंके विकासके साथ उत्पादन बढ़ने लगेगा और अभावग्रस्त जनताका कष्ट दूर हो सकेगा ।

इन उद्योग धंधोंपर सरकार उचित कर लगायेगी जिससे देशकी आर्थिक विषमता दूर हो सके और धनीवर्गका धन गरी-

---

था मगर लोग अपने मुंह बातें करते थे । कोई कहते थे कि मैंने संस्थाके रूपयें खाये हैं, कोई कहते थे कि मैं संस्था की मोटरें घरेलु काममें लाता हूं, कोई कहते थे कि मैं नौकरोंसे अपना घरका काम लेता हूं, कोई तो यहां तक कहते थे कि मैं संस्थामें आने वाली स्त्रियोंसे लाग लपट करता हूं ; मारनेवालेका हाथ रोका जा सकता है मगर बोलनेवाले मुंह कौन बन्द करे ?"

"फिर क्या किया आपने ?"

"रगड़ दिया, इस्तीफा और हो गया स्वतन्त्र इन झंझटोंसे । अजब दुनिया है । कुछ करो तो भी आफत न करो तो भी आफत । न जाने ईश्वरने यह जीनेकी आफत पीछे क्यों लगा रखी है ?"

"मरनेके लिये ।"

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के काम आ सके । परन्तु कर लगानेके समय वह इस बातका ध्यान रखेगी कि उनसे उद्योग धंधोंको क्षति न पहुंचे ।

देशके समाजवादी भाई बहुत दिनोंसे राष्ट्रीयकरणकी पुकार कर रहे हैं । उनके मतमें सभी उद्योगोंपर सरकारी अधिकार होने पर ही आर्थिक समस्या दूर हो सकती है अन्यथा नहीं । आज समाजवादका जादू बड़े बड़े लोगोंपर है । कितने ही लोगोंके विचारानुसार समाजवादसे ही दुनियाकी आर्थिक और राजनीतिक समस्या दूर हो सकती है । इसीके द्वारा देशकी उन्नति हो सकती है, दरिद्रोका दुःख दूर हो सकता है जनताको सन्तुलित भोजन मिल सकता है अभावग्रस्त लोगोंकी आवश्यकता पूरी हो सकती है और दुनियासे समस्त रोग, शोक सन्ताप आदिका लोप हो सकता है । समाजवादके वशेमें लोगोंको व्यवहारिक कठिनाईयां दृष्टिगत नहीं होती और न वे उसका देख सकते हैं कि जिस उद्देश्यके लिये वे राष्ट्रीय करण करना चाहते है, वह पूरा होगा अथवा नहीं । यह सत्य है कि पूंजीवादी व्यवस्था सर्वथा त्याज्य है । पूंजीवाद से राष्ट्रकी समस्त संपत्ति कुछ लोगोंके हाथमें आ जाती है, मुनाफाखोरी बढ़ती है, उसमें वस्तुओंका अपार उत्पादन होने पर भी देशकी जनताको अधिक दाम होनेके कारण उनसे वंचित रहना पड़ता है, उत्पादनमें अनियान्त्रित वृद्धि होनेके कारण दूसरे देशोंमें उन्हें खपानेका प्रयत्न किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप सम्राज्यवादका उदय होता है और साम्राज्यवाद युद्धको जन्म देता है । आज अमेरिका और रूसमें जो तनातनी है और भावी युद्धकी काली छाया जो दिखाई पड़ती है उसका एकमात्र कारण अमेरिकाका पूंजीवाद और अत्यधिक उत्पादन है । भारत सरकार पूंजीवादी व्यवस्थाके दुर्गुणोंसे खूब परिचित है । देशमें पूंजीवाद फलने फूलने देनेकी उसकी इच्छा भी नहीं है । इसी उद्देश्यको दृष्टिमें रखकर क्रमिक राष्ट्रीयकरण की नीति अपनायी है । परन्तु समाजवादीयोंको इससे संतोष नहीं है, वे सभी काम एक ही दिनमें किया हुआ देखना चाहते हैं और किसी भी मूल्यपर देशमें समाजवादी व्यवस्था स्थापित करना चाहते है ।

समाजवादसे जिस स्वर्ग की कल्पना की जाती है, वह इस मृत्यु लोकमें कलियुगके जमानेमें असम्भव है । इस जगतका आधार द्वन्द्वात्मक है । अन्धकार-प्रकाश अच्छा-बुरा, नित्य-अनित्य, जड़-चेतन, आकाश-पाताल, स्वर्ग-नर्क , देवत्व-दानवत्व, आदिसे ही इस जगतकी सृष्टि हुई है । इसी आधारपर अमीर-गरीब, मालिक और मजदूरका भी भेद हमेशा रहा है और रहेगा । रूस समाजवादी देश है और वहां समाजवादी व्यवस्था है , फिर भी अमीर-गरीब, मालिक मजदूरका भेद किसी न किसी रूपमें वहां भी विद्यमान है ।

ऊपर जो कुछ लिखा गया है उससे हमारा यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि समाजवादी व्यवस्था देशके लिये अनुपयुक्त है । वास्तवमें यदि किसी व्यवस्थासे देशमें फैली दुरवस्था दूर हो सकती है तो वह समाक्रवाद ही है ।समाजवाद एक दवा है जिससे पूंजीवाद रूपी जहरसे उत्पन्न बुराइयां दूर होती है । यह साधन है वस साध्य नहीं, अतएव इसे देखना भी चाहिये इसी रूपमें ।

समाजवादका उद्देश्य आर्थिक विषमताको दूर करना है । रष्ट्रीयकरणके अतिरिक्त य ह विषमता अन्य उपायोंसे भी दूर की जा सकती है और हमारी सरकार उन सभी उपायोंकी छानबीन कर रही है । मजदूरोंकी दवा-दारू आदि सुविधाके लिये सरकारी बीमा बल अभी हालमें ही स्वीकृत किया गया है, उन्हें मुनाफेमें हिस्सा मिल सके , इसका भी उपाय किया जा रहा है और उनकी शिक्षा आदिकी भी व्यवस्था की जा रही है । सभी उद्योगोंका राष्ट्रीयकरण क्यों नहीं किया जा सका, इसका संकेत ऊपर किया जा चुका है । इस संबंधमें प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरूने अपने भाषणमें बताया कि सरकारके दो कारणोंसे ऐसा करना उचित नहीं समझा । एक तो यह कि संसार में आज तीव्र गतिसे परिवर्तन हो रहे हैं, उत्पादनके तरीके बदलने जा रहे हैं, अतः मौजूदा कारखानोंपर कब्जा करनेका अर्थ ऐसे कारख़ानोंमें रुपया फंसा देना होगा, जो कुछ ही वर्षोंके बाद बहुत पिछड़े हुए प्रतीत होने लगेंगे । दूसरा कारण यह है कि देशकी वर्तमान कठिनाइयों और परिमित साधनोंको देखते हुए मौजूदा ढांचेको अत्यधिक क्षति पहूंचानेकी स्थितिमें आज हम नहीं हैं । देश विभाजनके कारण बहुत संपत्तिका नाश हुआ है । मुझमें यह साहस नहीं है कि और भी विनाशके लिये मैं रास्ता तैयार करूं । पुनः जो चीज उत्पादन बढ़ानेमें सहायक हो रही हो, उसे नष्ट करना ठीक न होगा । किसी चीजको नष्ट तो तुरन्त किया जा सकता है परन्तु उन्हें बनानेमें देर लगती है । यदि चालू कारखानोंपर कब्जा कर सरकार नये सिरेसे उन्हें चलानेका प्रयत्न करे तो उसके पास उन उन महत्वपूर्ण योजनाओंका कार्यान्वित करनेका समय और पूंजी कहांसे आयेगी जिनके अनुसार पांच-दस वर्षोंमें ही देशके काया-पलटकी आशा की जाती है । परन्तु सरकारी नीतिका यह अर्थ नहीं कि उद्योग पतियोंको मनमाना करनेकी छूट दे दी जाय । अपनी योग्यता प्रमाणित करने और उचित रूपसे मुनाफा उठानेका उन्हें यथेष्ठ अवसर दिया जायगा । यदि वे युग-प्रवाहकी उपेक्षा कर अपने ही ठर्रे पर चलनेकी चेष्टा करेंगे तो. सरकारके साथ उनका संघर्ष अनिवार्य है । स्पष्ट है कि इस संघर्षमें राजकी ही विजय होगी और उस व्यक्तिको घुटने टेकनेके लिये बाध्य होना पड़ेगा, जो अपने व्यक्तिगत लाभके लिये सारे देश और समाजका दोहन करनेका प्रयत्न जारी रखेगा ।

उद्योग प्रान्तीय विषय है । प्रान्तीय सरकार ही उसके विकास आदिके लिये जिम्मेदार है । केन्द्रीय सरकार कुछ उद्योगों की मिल्कियत और कुछ उद्योगोंका नियंत्रण तथा उनकी स्थापना अपने हाथमें रखेगी बाकी तृतीय श्रेणीके जो उद्योग हैं, उनकी स्थापना , विकास आदि प्रान्तीय सरकारकी नीतिपर ही निर्भर रहेगा । अतः प्रान्तीय सरकारको ऐसी नीति निर्धारित करना चाहिये जिससे निजि अथवा गैर सरकारी उद्योगोंके विकासमें किसी-प्रकारकी बाधा न पहुंचे । सरकार औद्योगिक नीतिमें यह स्पष्ट कर दिया है कि सरकार कोई भी उद्योग-धंधा स्वयं खोल सकती है । कई प्रान्तीय सरकार इस घोषणा के अनुसार अपने उद्योग-धंधे स्वयं चलाना चाहती है । ,और कितनें हीनें उनके लिये आवश्यक मशीनरी आदिके लिये आर्डर भी भेज दियै हैं । इस संबंध में इतना कह देना आवश्यक प्रतीत होता है कि सरकारको मुनाफेकी लालचसे कोई उद्योगधंधा न खोलना चादिये अच्छा होताकि इस संबंधमें प्रान्तीय सरकार भी उद्योगपतियोंकी सलाहसे प्रान्तीय औद्योगिक विकासकी योजना बनाये और उसीके अनुसार काम करे । सरकार और मिल-मालिकोंके सहयोगसे और सुयोजित रूपसे जो कल-कारखाने चलाये जायेंगे उनके विकसित होनेमें बिलम्ब न होगा ।

देशके कई प्रान्तोंमें बिक्री कर लगाये गये हैं । उद्योगपतियोंके विरोधके बावजूद भी कोई उनके औचित्यको अस्वीकार नहीं कर सकता, परन्तु उनको दर ऐसा होना चाहिये जिससे नये उद्योगोंके विकास में बाधा न पहंच सके । देशकी कुछ प्रान्तीय सरकारोंने श्रमिकोंकी जो न्यूनतम मजदूरी निर्धारित की है तथा उनकी अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सुविधाओंके जो कानून बनाये हैं वे स्तुत्य हैं, परन्तु इसके साथ ही सरकारको ऐसा प्रयत्न न करना चाहिये जिससे वे अपनी जिम्मेदारी भी समझने लगें। दुर्भाग्यसे भारतीय श्रमिक अशिक्षित हैं और उन्हें अपने उत्तरदायित्वका उतना ज्ञान नहीं है जितना अन्य देशोंके मजदूरोंमें है। सभी प्रान्तीय सरकारको चाहिये कि वे मजदूरोंकी अधिकसे अधिक सुविधा दिलाने का प्रयत्न करें और यथा संभव उनके कठिन जीवनको सुखमय बनायें, उनके निवास आदिकी कठिनाइयोंको दूर करें और इसके साथ उनके हृददयमें स्वतंत्र देशके नागरिकोंका भाव उत्पन्न करें, जिससे वे अधिकारके साथ अपने कर्तव्य भी समझने लगें। ब्रिटेन आदि देशोंके मजदूरोंके समान जब तक उन्हें अपने कर्तव्योंका ज्ञान न होगा, देशकी आर्थिक स्थिति न सुधरेगी। यह सत्य है कि मिल मालिकोंने भूतकालमें मजदूरोंकी पूर्ण उपेक्षा की और जहांतक उम्भव था उनका शोषण किया तथा अपना जेब भरा। अधिकांश मिलमालिक आज भी अपनी उन्हीं दकियानूसी तरीके पर चलना चाहते हैं। अतः मजदूरोंकी सुविधाके लिये सरकारी कानून होना जरूरी है, परन्तु मजदूरोंके लिये भी कुछ ऐसा प्रतिबन्ध हो जिससे वे जब चाहें हड़ताल न कर सकें। मिलमालिकोंको भी ऐसा प्रयत्न करना चाहिये जिससे उनमें और मजदूरोंमें आत्मीयता बढ़े, और वर्तमान विभेद रेखा दूर हो जाय। उन्हें मजदूरोंके सुख दुःखको अपना सुखदुख समझना चाहिये और उन्हें अपने परिवार का ही एक अंग मानना चाहिये। मिलमालिकों और मजदूरोंमें जबतक ऐसी भावना उत्पन्न नहीं होती तबतक ऐसी औद्योगिक अशान्ति दूर नहीं हो सकती।

# खैबर घाटीका महत्व

विश्वकी कोई भी घाटी सामरिक अथवा ऐतिहासिक दृष्टिसे खैबर घाटी जितनी महत्वपूर्ण नहीं है। पेशावर से दस मील आगे, जमरूदरसे इसका विस्तार प्रारंभ होता है और तीस मील तक पर्वतीय घुमावों से गुजरनेके बाद हमारे पड़ौसी देश अफगानिस्तानमें तोरखां नामक स्थान पर इसका अन्त होता है। इसका अत्यन्त संकुचित मार्ग आज भी भारत पर हुए आक्रमणोंका इतिहास बता रहा है।

सिकन्दर, मोहम्मद, गजनवी और तैमूरलंग आदिके विजयी आक्रमणोंने इसे भारतका 'सिंहद्वार' बना दिया। अफगानिस्तान और हिंदुस्तानके बीच फैला हुआ यह भयानक पहाड़ी मार्ग इतिहासवेत्ताओं कूटनीतिज्ञों और रेल अथवा सड़कके इंजीनियरोंके लिये सदैव विचारणीय रहा है। इतिहासज्ञ भारत पर हुए आक्रमणों और पिछली शताब्दीके अफगान युद्धके साथ इसका अटुट संबंध देखता है। कूटनीतिज्ञ के लिये यह अपने कबायलियोंके कारण, जो अपने आपमें भी एक समस्या हैं, हमेशा से ही जटिल प्रश्न या सिर दर्द उत्पन्न करने वाली गुत्थी बना हुआ है।

यहांकी रेलवे लाइन और सड़कें, जिन्हें विशाल लागतके बाद तैयार किया गया है, इंजीनियरिंग का एक चमत्कार हैं। सन् १९२५ में यह रेलवे लाइन कुछ ब्रिटिश विशेषज्ञोंकी सलाह के अनुसार-ही बिछायी गई थी। तमाम रेल-जाल का विस्तार कबायली प्रदेशमें ही है। जहां-तहां छोटे या बड़े पुल भी इसके लिये बनाए गए जिन पर चौबीस घंटे सैन्य प्रहरी तैनात रहते हैं।

रेलवे लाइन, सड़क या जहां-तहां बैठाई गई सैन्य चौकियोंके अतिरिक्त सारा ही प्रदेश कबायली है --जिसमें अधिकांश अफरीदी निवास करते हैं। युद्ध-प्रेमी इन लड़ाकोंका राइफलके प्रति मोह प्रसिद्ध है। अपने जीवनमें ये राइफल से अधिक मूल्यवान किसी और वस्तु को नहीं समझते। उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रांतके पर्वतीय प्रदेशोंमें फैले हुए कबालियोंमें सबसे अधिक शक्तिशाली पठान अफरीदी ही हैं। तमाम खैबर घाटीमें यों तो यह सबसे हुए हैं, लेकिन ऊपर काफी ऊंचाई पर स्थित 'देहात' तिराह में इनकी प्रधानता है। विभाजन से पूर्व भारत सरकार प्रायः इनके आक्रमणों से परेशान रही और कई बार इनके खिलाफ सैनिक कारंवाई भी की जाती रही। अब यह पाकिस्तान सरकार के लिये इतनी ही विकट समस्या बनी हुई हैं जितनी जटिल कि पाकिस्तानको ही सम्पन्न रखनेकी समस्या है। काश्मीरियोंकी तरह ही अफरीदी भी रंग रूपमें सुन्दर होते हैं, फिर भी उनके भयानक कृत्योंकी छाया उनके चेहरोंको डरावना बना देती हैं। मनोरंजन भी इन्हें काफी पसंद होता है। पारिवारिक झगड़ोंने इनका भी पीछा नहीं छोड़ा है और ये लोग जब आपसमें लड़ते हैं तो राइफले गूंज उठती हैं। यहांकी भूमि उपजाऊ नहीं है और कबायलियोंके अपनी सभी आवश्यकताओंके लिये पाकिस्तान और अफगानिस्तानका मुंह ताकना पड़ता है।

पेशावरसे दस मील दूर जब आप कबायली प्रदेशमें प्रवेश करेंगे, तो पायेंगे कि पेशावरकी घाटियोंकी हरियाली लुप्त हो चुकी है और कहीं-कहीं कटीली झाड़ियोंके अतिरिक्त इन सुनसान घाटियोंमें कुछ दिखाई न पड़ेगा। लेकिन खैबरका यही अनुपम सौन्दर्य है।

लहरिए की तरह घुमावदार सड़क पर जैसे जैसे आप ऊपर चढ़ते जायेंगे, आपको कहीं कहीं प्रहरी मिलेंगे जो सड़क और रेलवे लाइनकी निरंतर रक्षा कर रहे हैं। यह घाटी प्राचीन कल से ही व्यापार के लिये प्रख्यात रही है। उत्तर पश्चिमके देशोंका भारतके साथ जो व्यापार होता था उसमें खैबरका महत्व किसी से गुप्त नहीं रहा है। इस मार्ग के साथ गुजरते हुए आप जहां तहां अफरीदियोंके मिट्टी से बने विचित्र मकान और निगरानीके लिये बनाए गए ऊंचे-ऊंचे 'गुम्बज'-- देखेंगे। बसन्तमें जब काफिले गुजरते है--कई बार पांच-पांच मील लम्बे--तो वह दृश्य हठात् आंखोंको खींच लेता है।

रेलवे लाइन पार करनेके बाद थोड़ा और आगे बढ़कर आप तंग घाटियोंमें पहुंच जायेंगे। यहीं से वास्तविक घाटीका आरंभ होता है--और यहीं अलीमसजिद है। प्रथम अफगान युद्धमें यहीं सबसे अधिक कत्लेआम हुआ था।

जमरूदसे आगे बढ़ने से पहले ही आपको जमरूदका ऐतिहासिक किला देखना न भुलना चाहिये। महाराजा रंजीतसिंहके प्रधान सेनापति जनरल सरदार हरिसिंह नलवा ने काबुल-विजयके बाद इस किलेको बनवाया था। इसीमें गुप्तद्वार भी बनवाया गया था, जिसमें सरदार हरिसिंहके हस्तलिखित ग्रंथ अब भी सुरक्षित रखे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ये दो क्रीम आपके चेहरे को अधिक सुन्दर क्यों बना देंगे?

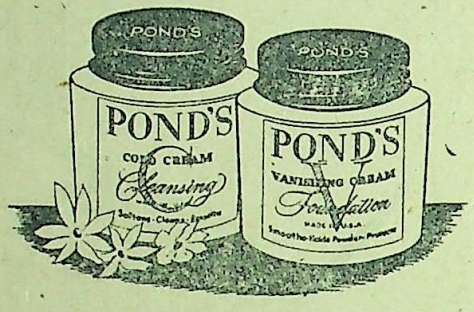


**एक स्त्री के चेहरे के लिये दो सौन्दर्य-क्रीम की आवश्यकता है। पहिला—क्योंकि स्वच्छता सौन्दर्य का प्रथम नियम है इसलिये चेहरे को स्वच्छ करने और उसे कोमल बनाये रखने के लिये आप को तेलों के उत्तम मिश्रण से बनाये गये एक क्रीम की आवश्यकता है—पांड्स कोल्ड क्रीम। दूसरा—गर्मी और धूल से सुरक्षा देने के लिये अदृश्य हो जाने वाला हल्का चिकनाई-रहित क्रीम—पांड्स वेनिशिंग क्रीम।**

स्मरण रखिये ग्रीष्म की कठोर गरमी और सर्दी की शीत दोनों ही हमारे शरीर के प्रकृत तेलों को सुखाकर उसे काला और भद्दा बना देती हैं।

यह भी स्मरण रखिये कि छिद्रों की गहराई में धूल या मैल के कणों से शरीर में अधिकांश दाग पैदा हो जाते हैं।

पांड्स के दैनिक, नियमित प्रयोग से चेहरा स्वच्छ, उज्ज्वल और निर्मल हो जावेगा—वह सदैव युवा दिखेगा। आपके 'सौंदर्य-नियमन' के इस साधन को प्रति दिन पांड्स के दो क्रीम से पूरा कीजिये।

छिद्रों में प्रविष्ट होकर धूल और पसीने के मैल को बाहर निकालनेवाले समृद्ध तेलों से बनाये गये इस क्रीम को प्रति रात्रि अपने चेहरे और गले पर लगाइये। पोंछ कर फिर शीशे में देखिये। कितना उज्ज्वल और कोमल आपका चेहरा हो गया है!

प्रति सवेरे पांड्स वेनिशिंग क्रीम से अपने चेहरे की रक्षा कीजिये। यह चिकनाई-रहित क्रीम बिना चमक छोड़े आपके लगाते ही अदृश्य हो जाता है—चेहरे पर केवल पुष्पवत् शृंगार रह जाता है। दिनभर यह अदृश्य झिल्ली आपके चेहरे को धूप और मैल से बचावेगी और उसका सौन्दर्य बढ़ावेगी।

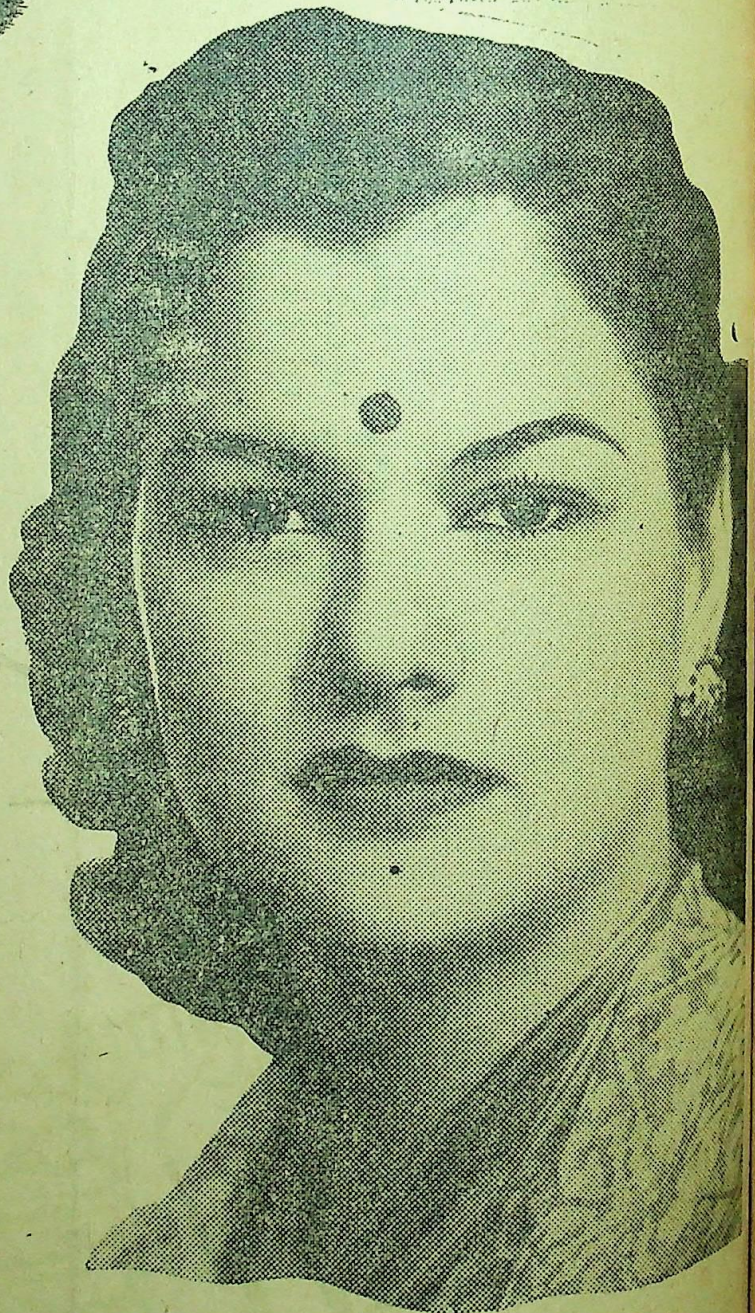

# पांड्स

व्यापारिक विवरण के लिये- एल. डी. सेमूर एंड कं. (इंडिया) लि.
बम्बई — कलकत्ता — देहली — मदरास — नोवा गोवा — कराची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# मुसलमानोंकी बोलचालभाषा

## लेखक जहूरबख्श

पिछली मर्दुमशुमारीके समयकी बात है। एक शिक्षित ब्राह्मणने अपनी मातृभाषा हिन्दी बतलाई। परन्तु उसके पड़ोसी अशिक्षित मुसलमान धुनियेने उत्तर दिया--'मैं तो उर्दू बोलता हूं।'

जब धुनिये से कहा गया कि तुम्हारी बोली खालिस हिन्दी है; तुम तो पढ़े-लिखे भी नहीं हो, फिर उर्दू कैसे बोलते हो; तब उसने स्पष्टतापूर्वक कहा--'आपको इससे मतलब ? मैं कहता हूं, मेरी बोली उर्दू है। आप लिखिए।'

इसमें कोई संदेह नहीं कि धुनियेका उत्तर प्रशंसनीय था। फिर भी सोचनेकी बात है कि जो आदमी हमेशा पढ़े-लिखे हिन्दुओंके सम्पर्कमें रहता है, अशिक्षित भी है, वह भला मुसलमान होनेसे ही क्यों कर उर्दू-भाषा-भाषी हो सकता है ? सत्य तो यह है कि ऐसा आदमी न मातृभाषाका अर्थ जानता और न हिन्दी या उर्दूका ही राष्ट्रीय महत्व समझता है। इसलिये यह स्वीकार करनेमें कोई हानि नहीं है कि धुनियेके दृढ़ उत्तरमें वह मुस्लिम प्रयत्न झलक रहा था, जो उर्दूकी रक्षाके लिये हमेशा सतर्क रहता है। यद्यपि यह मुस्लिम प्रयत्न सर्वथा उचित है, तथापि उससे वस्तु-स्थितिमें कोई अन्तर नहीं पड़ता-वह तो ज्योंकी त्यों विद्यमान रहती है। अतएव मुसलमानोंकी बोलचालकी भाषापर कुछ विचार करना, औचित्य और सामयिक ताकी दृष्टिसे रुचिकर प्रतीत होता है। अस्तु।

देश-कालानुसार एक भाषापर दूसरी भाषाका प्रभाव पड़ता ही रहता है। उदाहरणार्थ यही देख लीजिये कि अल्प कालिक सहवास होनेपर भी अंगरेजी भाषा द्वारा हिन्दी किस प्रकार प्रभावित हुई है। कौन नहीं जानता कि अंगरेजी भाषाके शब्दोंकी एक बड़ी राशि हिन्दीमें घुल मिल गयी है। उनमेंसे अनेक तो अपभ्रंश रूप धारण कर ग्रामीण जनोंके नित्य प्रतिके बोलचाल में भी प्रयुक्त होने लगे हैं। यदि दैवात् सौ पचास वर्ष यही स्थिति विद्यमान रही, तो हमारी वर्तमान भाषा एक सर्वथा ही नवीन रूप धारण कर लेगी। उस समय उसमें और नहीं तो, दस प्रतिशत अंगरेजी शब्द उसी प्रकार प्रविष्ट हो जायेंगे, जिस प्रकार अबतक अरबी, फारसी, तुर्की आदि विदेशी भाषाओंके शब्द मिल चुके हैं। परन्तु विद्वजनोंकी दृष्टिमें इन विदेशी शब्दों के मिश्रण से हिन्दी की शक्ति और शोभा में वृद्धि ही हुई है। इसी प्रकार वह भविष्य में अंगरेजी शब्दोंके मेलसे भी समृद्धि-सम्पन्न समझी जायेगी।

पादरी लोग वर्तमान समयमें जिस प्रकार हन्दी सीखकर उसे उपयोगमें लाते हैं--यह तो सभी जानते हैं। उनकी हिन्दी ध्यान-पूर्वक देखी जाय, तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसपर चुपचाप विदेशी प्रभाव पड़ रहा है। यदि भारतवर्षमें यूरोपियन लोगों की संख्या प्रचुरतासे बढ़ती जाय, और वे सदैवके लिये यहींके निवासी हो जायं अर्थात् हम लोगोंमें हिल-मिल कर रहने लगें, तो कालान्तर में उनको एक पृथक ही भाषा बन जायगी। उसमें विदेशी शब्दोंके साथ एत्तदेशीय शब्दोंका ऐसा-कुछ सम्मिश्रण रहेगा, जिसका विश्लेषण करनेकी कभी किसी को आवश्यकता न पड़ेगी। इसका कुछ आभास आज भी भारतीय ईसाइयों और उन हिन्दू-मुसलमानोंकी भाषामें पाया जाता ह, जो अंगरेजीपर विशेष मुग्ध रहते हैं। वे अपनी बोलचाल की भाषामें अंगरेजी अथवा विदेशी शब्दोंका स्वतंत्रतासे प्रयोग करते हैं। इस ओरके रहने वाले महाराष्ट्र और गुजराती लोग भी इसी प्रकारकी मिश्रित भाषा व्यवहारमें लाते हैं। उनकी घरेलू बोलीमें अच्छी तरह हिन्दी और उर्दू शब्दोंकी मिलावट रहती है। इसका मुख्य कारण भाषाकी वह प्राकृतिक परिवर्तनशीलता है, जो मनुष्योंके प्रवाससे अनिवार्य-रूपेण होती रहती है, क्योंकि मनुष्योंके प्रवासके साथ-साथ उनकी मातृभाषा भी प्रवास करती है। यही हाल मुसलमानोंकी भाषाका भी हुआ है।

जब मुसलमान लोग लगभग एक हजार वर्ष पूर्व भारतवर्षमें आये, तब उपर्युक्त विवेचनके अनुसार, उनके साथ उनकी मातृ भाषा अरबी, फारसी, तुर्की आदिने भी प्रवास किया। परन्तु उनको यहां अपना निर्वाह करनेके लिये हिन्दी ही अपनानी पड़ी। फल यह हुआ कि उनके शासनमें बहुत अधिक काल तक राज-कार्योंमें भी हिन्दीका ही बोल बाला रहा। इस बातके प्रमाण पाये जाते हैं और इतिहास-प्रेमी उनसे अपरिचित भी नहीं हैं। यदि यह प्रश्न किया जाय कि ऐसा क्यों होता रहा, तो इसका उत्तर यही है--एक तो अरबी, फारसी आदि भाषाओंने उस समय यहां विशेष उन्नति नहीं कर पायी थी और दूसरे यद्यपि उनको मातृभाषाके नाते मुसलमान बोलचालके व्यवहारमें अवश्य लाते थे, तथापि उनकी एक बहुत बड़ी संख्या निरक्षर ही थी; इसलिये उन्हें स्वेच्छा-पूर्वक कहिये अथवा विवश होकर, अपनी अपेक्षा विशेष शिक्षित एवं राज-कार्य-पटु हिन्दू लोगोंका साहाय्य लेना पड़ता था। अस्तु,

इस पारस्परिक सम्पर्कका परिणाम भी सुन्दर हुआ। धीरे-धीरे मसलमानोंपर हिन्दीका रंग-जमने लगा और अन्तमें वे हिन्दी-भाषा-भाषी ही हो गये। हां, उनकी भाषामें वर्तमान अंगरेजी ढंगके अनुसार स्वभावतः विदेशी शब्दोंका उपयोग स्वतंत्रता पूर्वक प्रचु परिमाणमें होता था।

परन्तु एकतबारअवश्य थी। मुसलमान लोग विदेशी लिपियोंका मोह त्यागनेमें समर्थ नहीं थे और कदाचित् देवनागरी सीखनेके कष्टसे बचनेके लिये अपना हिसाब-किताब फारसी अक्षरोंमें रखते थे। इस प्रकार धीरे-धीरे उस भाषाका जन्म हुआ, जो आज कल उर्दू कहलाती है। परन्तु वास्तवमें उसका अस्तित्व हिन्दीसे पृथक नहीं है। उसकी आत्मा हिन्दी है और उसकी देह भी हिन्दी है। विदेशी शब्द तो मानों उसकी साज-सज्जाके काम आते हैं। कौन जानें, तत्कालीन मुसलमान भी यही समझते थे, तब तो उन्होंने हिन्दीको इस प्रकार अपना लिया था कि वह उनकी गोदमें खेलने लगी थी, जिसका उल्लेख करना अनावश्यक है। ठीक यही बात हिन्दुओंके विषयमें भी कही जा सकता है। उनमें विदेशी शब्दोंके प्रति किसी प्रकारकी विरक्ति अथवा संकोचकी भावना नहीं थी। यही क्यों, वे तो उनको साहित्यकी भाषामें भी यथोचित स्थान देनेकी आवश्यकता समझने लगे थे, जिसके प्रमाण पृथ्वीराज-रासो और रामचरित-मानस जैसे यशस्वी ग्रन्थोंमें विद्यमान हैं।

इस प्रकार बहुत काल तक हिन्दी विकासके पथपर अग्रसर होती रही। उर्दू की प्रतिस्पर्द्धा बाधाका रूप लेकर उसके सम्मुख आई हीनहीं। परन्तु सम्राट् अकबर के समयमें एक नवीन कार्य हुआ। राजा टोडरमल्लके प्रयत्नसे हिन्दी राज-भाषा के पदसे भ्रष्ट हुई और उसका सम्मान पूर्ण स्थान फारसीने प्राप्त किया। इसका परिणाम भी वही हुआ, जो होना चाहिये था। हिन्दुओं और मुसलमानोंमें समान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रूपसे फारसीके अध्ययन-अध्यापन की भावना जागृत हुई और दोनोंकी सभ्यताएं तथा संस्कृतियां पारस्परिक सहयोगसे एक-रस होने लगीं। यहींसे उर्दूको पनपने और पल्लवित तथा पुष्पित होनेका अवसर प्राप्त हुआ। परन्तु हिन्दीके साहित्यिक महत्वको कोई क्षति नहीं पहुंची। वह पूर्ववत् मुसलमानोंकी गोदमें खेलती रही। मुसलमान बराबर उसका लालन-पालन करते रहे—उसे सुन्दर-सुन्दर काव्याभूषणोंसे शोभाशाली बनाते रहे। कदाचित् उनको अबतक हिन्दी और उर्दूके पृथकत्व का कोई बोध नहीं था और वे निस्संकोच भावसे हिन्दीको ही अपनी बोलचाल की भाषा बनाये हुए जीवन यापनकर रहे थे। हिन्दुओंमें भी ऐसी ही उदार प्रवृत्ति विद्यमान थी। वे उर्दू रचनाओंमें हिन्दी का रस प्राप्त करते थे—उनको हिन्दीसे भिन्न भी नहीं समझते थे।

परन्तु ब्रिटिश सत्ताके आगमनसे दोनों जातियोंका यह उदार दृष्टि-कोण नष्ट हो गया। अंगरेजी राज-भाषाके पदपर प्रतिष्ठित हुई और हिन्दी तथा उर्दू अनाथावस्था में जा पहुंचीं। उधर राजनीतिकी माया नित्य नये रंग-बदलने लगी, इधर हमारे नेताओंमें अधिकार-भोगकी लालसाके साथ-साथ साम्प्रदायिकताकी भावना बलवती हो चली। इन हलचलोंसे भारतकी प्रधान भाषाका प्रभावित होना अवश्य म्भावी था। फलतः हिन्दी और उर्दूका - अस्तित्व स्पष्टतया पृथक-पृथक दृष्टिगोचर होने लगा। दोनोंके मध्य एक अरुचिकारक एक अप्रीतिकारक प्रतिस्पर्द्धा छिड़ गयी। हिन्दीसे प्रचलित अरबी-फारसी शब्दों और उर्दूसे प्रचलित संस्कृत शब्दोंका बहिष्कार करनेकी प्रथा-सी-चल पड़ती। इतना ही नहीं हिन्दीमें अप्रचलित संस्कृत शब्द और उर्दूमें अप्रचलित अरबी-फारसी शब्द ठूंसनेका दुष्प्रयत्न किया जाने लगा। फिर तो धीरे-धीरे वह समय भी आ गया जब हिन्दू हिन्दीका पक्ष लेकर और मुसलमान उर्दूका पक्ष लेकर विष उगलने लगे। ऐसी ही कटु चेष्टाका यह परिणाम था, जो उस अशिक्षित हिन्दी-भाषी मुसलमान धुनिये ने मर्दुमशमारीके समय उत्तर दिया था—'मेरी बोली तो उर्दू है।'

'री बोली तो उर्दू है।'

इस प्रकार हमारी ही संकुचित वृत्तिसे हिन्दी और उर्दू—दोनों पृथक-पृथक मार्गों पर चल रही हैं—दोनों पृथक-पृथक् साहित्यकी भाषायें बन रही हैं। फिर भी वस्तु स्थिति तो ज्योंकी त्यों है—हिन्दू और मुसलमानोंकी बोलचालकी भाषामें वही ऐक्य विद्यमान है। हां, इतना अवश्य है कि हिन्दुओंकी अपेक्षा मुसलमानोंकी भाषामें विदेशी शब्द कुछ अधिक परिमाण में रहते हैं; परन्तु यह कोई अद्भुत वैषम्य नहीं है; क्योंकि वे शब्द भलीभांति परिचित हो चुके हैं और अब उनको समझनेमें किसीको कठिनाईका सामना नहीं करना पड़ता।

इस सम्बन्धमें एक बात और स्मरण रखने योग्य है। वह यह कि भारतमें स्वदेश मुसलमान भी एक बड़ी संख्यामें विद्यमान हैं। वे प्रांतानुसार अब तक उसी भाषाका व्यवहार करते हैं, जो हमारे हिंदू भाई बोलते हैं। धुनिये जुलाहे, कुंजड़े, रंगरेजी आदि इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इनमें उन लोगोंकी संख्या बहुत ही न्यून है, जो उर्दूसे परिचित हैं अथवा विदेशी शब्द कुछ अधिकतासे बोलचालमें व्यवहृत करते हैं। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि वे उर्दूका राष्ट्रीय महत्व समझते या हिन्दीसे घृणा करते हैं। सत्य तो यह है कि इस्लामकी दीक्षा लेनेके पश्चात् उन्होंने अपने धार्मिक ग्रंथोंका अध्ययन किया और वे सहज ही अनेक विदेशी शब्दोंसे परिचित हो गये। फिर भी उनकी भाषा ऐसी दुरुह नहीं हो गयी है कि उसे समझनेमें किसीको कुछ कठिनाई पड़े। वास्तवमें वह अपने पड़ौसी हिंदुओंकी बोलीसे किंचित भी भिन्न नहीं है।

सिंध, पंजाब, बंगाल, आसाम आदि अहिंदी प्रांतोंमें स्थिति चाहे जैसी हो; परन्तु युक्त प्रांत बिहार, मध्य प्रांत आदि हिंदी-भाषी प्रदेशोंमें तो हिन्दुओंकी अपेक्षा मुसलमान विशेष शिक्षित हैं। जो शिक्षित भी हैं, उनमें और नहीं तो, पहचत्तर प्रतिशत् हिंदी पढ़े लिखे ही मिलेंगे। अच्छा, तो ये बहु संख्यक अशिक्षित तथा हिंदी पढ़े लिखे मुसलमान कौन सी भाषा बोलते हैं? यह बात जिस भाषा विद्को जाननेकी आकांक्षा हो, वह ग्रामोंमें जाकर इन लोगोंसे हिले मिले। वह स्पष्टता पूर्वक देखेगा कि वे वही भाषा अपने व्यवहारमें लाते हैं, जो उनके पड़ौसी अशिक्षित तथा तथा शिक्षित हिंदू भाई बोलते रैं; न उन्हें उर्दूका अभिमान है और न हिन्दी से विराग, उनके निकट तो दोनों एक समान हैं। उनकी भाषा ही हिन्दुओंसे नहीं मिलती, बल्कि बहुतसे आचार व्यवहार भी हिंदुओं जैसे होते हैं। अब रह गये अल्पसंख्यक उच्च शिक्षा प्राप्त मुसलमान। सो इन लोगोंको अवश्य इस्लाम तथा उर्दू-फारसीका विशेष अभिमान होता है। इनमें ऐसे लोगोंका भी अभाव नहीं पाया जाता, जो हिंदी और हिंदुओंसे घृणा करते हैं। कदाचित तें इसका तो विचार भी नहीं रखते कि हिन्दी और उर्दूमें कितना घनिष्ट सम्बन्ध है। परन्तु उनकी भाषा पर ध्यान देनेसे स्पष्ट विदित होता है कि वे विदेशी शब्दोंआ व्यवहार अधिकतासे अवश्य करते हैं, पर उसके समझनेमें जरा भी कठिनाई नहीं होती—सभी उसे सहजता पूर्वक समझ लेते हैं। कुछ यही बात नहीं कि वे हिंदुओंके साथ ही ऐसी भाषा का व्यवहार करते हों, नहीं परस्पर भी इसी प्रकारकी भाषा बोलते हैं। एक बात और। इन लोगोंकी भाषामें विशुद्ध विदेशी शब्द ही प्रचुर मात्रामें व्यवहृत होते हों—यह धारणा अनुचित है; उसमें हिंदी शब्द भी बहुतायतसे सुनाई देते हैं। हमारे यहांके शिक्षित मुसलमान तो उपद्रव, शांत शांति, अशांति, समाचार, दया, दुःख दुष्ट, मूर्ख, धर्म, शास्त्र, प्रेम, अपशकुन, आंदोलन, प्रस्ताव आदि बहुसंख्यक शुद्ध हिन्दी शब्दों का प्रयोग निधड़क करते हैं। कहनेका अभिप्राय यह कि ये मुसलमान चाहे किस प्रदेशमें रहें, चाहे जहां आये जायें, सहज समझने योग्य भाषा बोलते हैं। अब एक विचारवान् लोगोंके अधिकारकी बात बात है कि वे इस भाषाका नाम जो कुछ आयें, रक्खें—हिन्दी, उर्दू अथवा और कुछ। आश्चर्य और खेदकी बात तो यह कि हिन्दू और मुसलमानोंकी बोलचालकी भाषामें कोई अस्पष्ट अन्तर न होनेपर भी हिन्दू और उर्दूके मध्य विरोध या विद्वेषकी खाई दिनोंदिन चौड़ी होती जा रही है। हमारी राष्ट्रीय महासभाने 'हिन्दुस्तानी' के माध्यम द्वारा यह खाई पाटनेका प्रयत्न किया था। परन्तु हिंदुओंकी ओर साम्प्रदायिकताने राष्ट्रीय महा सभाका वह पुण्य प्रयत्न चौपट कर दिया। उन्होंने 'हिन्दुस्तानी' के प्रति अपनी उग्र विग्रह-भावना प्रकट की। मानों हिंदीकी पाचन शक्ति क्षीण हो चुकी है और वह अधिकाधिक विदेशी शब्दोंको आत्म-सात करनेमें नितान्त ही असमर्थ है। यदि राष्ट्रीय महासभाका वह प्रयत्न सफलता प्राप्त करता, तो भविष्यमें हिन्दी और उर्दू एक ही सतहपर आ जानेकी बहुत बड़ी संभावना थी। अस्तु,

इस सम्बन्धमें एक बात और। और हिन्दीके विचारसे मुसलमानोंका दृष्टिकोण विशेष उदार रहता है। वह हिन्दू उर्दूकी सेवा करता है, उसे मुसलमान हिर आंखोंपर लेते हैं। परन्तु हिंदुओंमें ऐसी उदात्त भावनाका एकान्त अभाव पाया जाता है। वे तो मुसलमानोंको हिन्दी की ओर आकर्षित करनेकी ही चेष्टासे विरत रहते हैं। यही कारण है, जो वर्तमान कालमें मुसलमान हिन्दीका एक भी ऐसा लेखक अथवा कवि नहीं हुआ, जिसपर हिंदी संसार गर्वका अनुभव कर सके। हिन्दीके लिये यह स्थिति न प्रशंसनीय है और न वांछनीय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सोना

श्री श्याम परमार

सोना खिड़कीमें बैठी अपनी अलसाई किन्तु प्रतीक्षामयी आंखोंसे किसीके लिये उत्सुक दिखायी देती। और जब मीलके मजदूरोंके साथ, लेकिन सबसे अलग वह आता हुआ दिखाई देता तो उसमें एक सिहरन-सी दौड़ जाती।

वह कई दिनोंसे देख रही थी कि उसकी सूरत काली और पतली है। गाल अन्दरको धसे हुए। दो गड्ढोंमें चमकती पीली आंखें। दांत मैले और बड़े-बड़े। एकदम छरहरा बदन। कंधेकी हड्डियां पसीनेसे मैले खाये कमीजके पड़े रहनेपर भी दिखायी देतीं थीं। 'पोलू' कालरका कमीज जिसमें चांदीके सरबाले बटन लगे थे, फिर भी उसके गलेका बहुत बड़ा हिस्सा खुला रहता। पजामेको अपने दोनों हाथोंसे जरा ऊपर उठाकर काली लकड़ियों-से पैरोंपर झूलता था। वह मस्तानी चालसे चला करता तेलसे चलते-चलते जब उसके कालेपर नज सने लम्बे बाल पीछेकी ओर बराबर तो मनेके कारण सामने की ओर लटक आते करवह गरदनको झुटका देकर उन्हे ठीक से लेता। वह जवान था। कदाचित मेहनत चेजी नहीं चुराता था। हंसी उसके सूखे हरेपर एक पतली सी रेखा बनकर चमका करती। धीरे-धीरे यही नौजवान दीनू सोनाके लिये प्रतीक्षा का विषय बन गया था। .... ... ....

दीनू मंगलकी बड़ी चालमें रहता था। तीन रुपयेकी वुट्टरमें दीनू की बूढ़िया मां बेटेके लिये बहू लानेके सपने देखा करती। बुढ़ियाका शरीर कमजोर था। उसपर बुढ़ाये की भुरियों ने अपना भार डाल दिया था। चमड़ी लटक गयी थी। आंखोंसे कम सूझा करता। इतनेपर भी वह दीनके लिये रोटी पका दिया करती थी। दीनूसे वह कई बार कह चुकी है कि कहीं वह अपने ब्याहका प्रबंध करे। उसे आराम हो जायगा। और वह भी छुट्टी पाकर राम भजन करेगी। रोटी सेक कर वह अपनी टिमटिमाती आंखें बंद किये अक्सर ऊधा करती थी।

मीलसे लौटकर दीनू कोठरीमें बहुत कम ठहरता। जो तैयार मिलता उसे झटपट पेटमें डालकर बाहर निकल जाता। मांकी गिरती हुई हालत इस बीच उसके लिये चिन्ताका विषय अवश्य बन जाती। खा चुकनेके बाद उसे कोठरीकी गंदगी से नफरत हो जाती और खासकर जब कि उसकी जेब तर रहती। मेहनतसे संत्रस्त होकर एकांगी दीनूके लिये आम्म संतोष की बड़ी आवश्यकता होती। उसके पैर अपने आप किसी परिचित स्थानकी ओर उठने लगते। उसके मस्तिष्कमें कितने ही विचार आते। कितने ही मन्सूबे, कितनी ही कल्पनाएं, कितनी ही योजनाएं आपस में टकराकर उसकी भावधाराको यौवन के तीरपर घमते हुए वासनाके बादलोंमें भटकनेके लिये छोड़ देती .. .. ..... ।

'भगवती' (मालवामें बननेवाली एक हल्की शराब) की गर्मी उसके मस्तिष्क में सोये हुए भावोंको जाग्रत कर देती। उसे पीकर वह कुछ श्लथ, किन्तु अपने में जीवनकी तीव्रताका अनुभव करता था। इस उत्तेजनामें उसको ढोये की रमजानी, भीखूकी घरवाली, घड़े हनुमानके नुक्कड़ वाली, और कितनी ही ऐसी स्त्रियोंके प्रति जिनके बारेमें वह सोचा करता, वासनामूलक विचार आने लगते। वह ऐसे ही अनेक चित्रोंमें मायाजाल में डूबता हुआ पान दरीबे वाली सोना के बारेमें सोचने लगता। उसे प्रतीत होता सानों उस काली पर हृष्ट-पुष्ट उठती हुई लड़की की आंखों खींच लेने की शक्ति है।.... गयी नाग-पंचमीको जब उसके मील की छुट्टी थी, उसने किसी सांप वाले से बिना दांत वाले सांप को खरीदा था, और उसे गले में डाल, मस्तीसे झूमता हुआ जब वह उस मोहल्ले में पहुंचा तो सोना की आंखोंमें आंसू गऔर श्रद्धाके भाव उमड़ आये थे। और दीनू यह देखकर कि उसका प्रभाव ठीक पड़ा है, फूलकर कुप्पा हो गया था।..... तब से सोनाका आकर्षण उसके हृदय में जमता ही जा रहा था। विशेषकर जब वह उस तरफ से निकलता तो सोनाको देखकर एक-आध गंदी पंक्ति अवश्य गुन गुनाकर मुस्करा देता; और सोना अपनी गोल आंखोंको शर्मसे अपने उन्नत उरोजों की ओर झुका लेती। यह भाव-भंगीमा दीनूको खूब ऊंचा करती। उसकी शरमीली मुस्कराहट उसके हृदयमें खलबली पैदा कर देती।

सोना शरीर से न मोटी थी न पतली। उसका मुंह विशेष सुन्दर न था। दांत बड़े और रंग सावला-सा था। जब वह हंसती तो उसके गालों में गड्ढे पड़ जाते। पहरांव उसका साधारण था। अक्सर दीनूने उसको बिना धुला लुगड़ा और लाल घाघरा पहने देखा है। इन सबके बावजूद भी उसका उभरता हुआ यौवन एक तीव्र आकर्षण की वस्तु था। सुन्दर न होते हुए भी दीनूके लिये उस निकालस यौवनमें विशेष चाव सिमिट आया था।

'भगवती' उसने ज्यादा नहीं ली थी। तन्द्रील अवस्थामें अपनी पूर्व स्मृतियों पर तैरता हुआ वह भगवत् चाया की दूकान पर आ खड़ा हुआ। पान मुंह में दाबकर एक पैसे की पहलवान छाप बीड़ी ली और फिर चल पड़ा। गोपाल मंदिरकी छतरी के आसपास सड़क पर सिन्धियों की बर्फ की दूगानों पर दृष्टि डालता हुआ वह घूमता रहा। गैसोंका प्रकाश आते-जाते लोगोंकी छायाओंको एक दूसरे से मिलाकर जाल बुन रहा था। दीनू कभी इस कतार को देखता और बीड़ीका कश खींचते हुए कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कारपेट लेम्पोंके सहारे फुटपाथ पर बैठे कपड़ेके छोटे व्यापारियों पर निगाह दौड़ाता। उसका ध्यान इन सबमें भटकते हुए कभी मीलके सांचों और जाबरों की कठोरता की ओर क्षणभरके लिये उन्मूख हो जाता। उसकी मुट्ठीया तन जाती और दूसरे ही क्षण 'ऊंह' कहकर बरबस वह अपने को वहां से हटा लेता।.....

लचते-चलते जब कभी उसकी दृष्टि नृसिंग टांकीजके किसी स्टंट पिक्चरके साइन बोर्ड पर पड़ती तो दो क्षण रूक कर उसे अच्छी तरह से पढ़ता और अपने मनके अकेले पन को उसमें धुला देनेके लिये वह मार्केटके पास वाली सड़क की ओर मुड़ जाता।

....किन्तु रोज-रोज सिनेमा मनके विषाद और वासना की भूखको कहांतक तृप्त कर सकता है? जो ज्वार उसके शरीरमें उमड़ता रहा वह थोड़े समहके लिये कार्य व्यस्तता अथवा मीलके सिकचोंमें दावा अवश्य जाता पर उसे दूसरों की उपेक्षा अपनेमें कुछ अवश्य मालूम देती। यर्याप्त कमा करभी वह अपनी रंहत न बना इस पर उसे क्षेभ होता बुढ़िया मां क्या खाती है, खाता तो वह है। एक उदासी-भी उसके मुंह पर फैल जाती। अपनी इस आत्मग्लानी से भरी अवस्था में उसे रमजानी के पड़ोसका सहसा ध्यान आ जाता। वह अपने से झगड़ता और स्वयं अपने से पास्त हो जाता...

उसके पैर ढंडी सड़क पर उठते-पड़ते अपना जाना पहचाना रास्ता पकड़ लेते...

प्रायः कई दिनोंसे सोना दिखायी न दी। दीनू व्याकुल होने लगा। रोज सबेरे जिस खिड़कीमें सोना बैठी दिखायी देती थी, वह अब बन्द ही मिलती।

उस दिन छुट्टी थी। दीनू अनजाने ही दोपहरको उस मुहल्लेसे निकला। सदाकी भांति उसकी दृष्टि सोनाके घरकी खिड़कीकी ओर गयी।

बाल बिखेरते हुए। मैले लगड़ेके स्थानपर लाल किनारकी एक सफेद धोती जो सिकुड़ी हुई —सलवारोंसे भरी थी। पीठपर फैले हुए बाल सफेद पृष्ट भूमिपर

असंख्य काली धाराओंकी भांति नीचेकी ओर लटक रहे थे।

दीनूने एक उड़ती हुई नजरखासे दे कि सोनाकी दृष्टि उसकी ओर घूम गयी। आंखोंमें निमंत्रण देती हुई तृष्णा वहां नहीं थी। उनकी ललाईई प्रकट कर रही थी। मानों रात अधिक जगी हो। उनमेंकी वह चमक जो पहले थी अब बुझती हुई प्रतीत होने लगी। उनमें आर्द्रता और ग्लानीके भाव तड़पड़ा रहे थे। ओठोंपर पानकी सुरखी ने सूख कर पपड़ियां बना दी थीं। दीनूने उसकी आंखोंमें कुछ ढूंने की कोशिश की। उसे प्रतीत हुआ मानो वे कह रही हों, "तुम आये हो, अब क्या रखा है!"

दीनू असमंजसमें था। उसकी छोटी बद्धिने इस अचानक पग्रवर्तनके पीछे एक उड़ते हुए तूफानको ससमझनेका प्रयत्न किया। वह ठीक ठीक न सोच सका। उसके मस्तिष्कमें एक अजीव चक्कर उठने लगा। वह शंकित दृष्टिसे देखता हुआ आगे बढ़ गया।

रमजानीके यहांसे पान लेते हुए दीनू ने उसकी दूकानके पासवाले गंदे मकानोंकी ओर लम्बी नजर दौड़ा यी।

गंदी गलीके मोड़पर बिजलीकी बत्त के चारों ओर पतंग चक्कर काट रहे थे उन दो मंजिले मकानकी खिड़कियोंसे पील उजाला बाहर आ रहा था मानों उस जिंदगी का मैलापन प्रकाशकी लहरोंपर छुपाये न छुपकर उजागर हो रहा था।

रमजानीके दूकानके नीचे बड़ी नाली में बहता हुआ पानी आगेके मोड़पर बड़े नालेसे मिलता था। गंदगीकी सतहपर क्रीड़ा करते हुए मच्छरोंकी गुनगुनसे रमजानी और उसके ग्राहक परिचित थे। सहसा एक मच्छरने दीनूकी पिण्डलीमें काट लिया। भद्दीसी प्रचलित गाली देते हुए दीनूने पिण्डली पर हाथ मारा। 'चट' की आवाज हुई। मच्छर उड़ चुका था। हवामें खुश्की और बदबू फैली हुई थी।

रातकी स्याह चादर ज्याद गहरी होती होती जा रही थी। आने जाने वाले हंसते, सिगरेट पीते या बीड़ीका धूंआ उड़ाते ठीली ठीली चालसे चले जा रहे थे।

....यकायक पास ही किसीने एक गंदी गजलकी पंक्तिको बड़े अन्दाजसे गाया। दीनूने देखा एक लड़की धीरे धीरे चली आ रही है। बिजलीका प्रकाश काफी नहीं था। ज्यों ज्यों वह पास आती गयी दीनूकी आंखें उतनी ही फटती आयीं। वह पास आ गयी थी। उसे अच्छी तरह जान लेनेके लिये उसका कलेजा धड़कने लगा। उसने आंखें मल ली कि सहसा उसे पहचानते ही उसके मुंहसे निकल गया,

"तुम?"

सावली लड़कीने दीनूको बिजलीके उजालेमें पहचान लिया। उसकी गति एक दम रुक गयी। दीनू चुप। दोनों एक दूसरेको प्रश्न-सूचक दृष्टिसे देख रहे थे। वह भी मानों आंखों ही आंखोंसे पूछ रही थी, औ तुम....यहां कैसे....?"

लड़कीके रुकते ही दूसरे क्षण पीछेवाली बुढ़ियां जो उसके साथ थी, धक्का देते हुए उसे आगे खींच ले गयी।

दीनू भौचक्कासा खड़ा रहा। उसके मनमें बवन्डर उठ रहा था। तूफान आने में देर नहीं थी। अग्रत्मग्लानी, हीनता, विवशता और अभाव उसमें घुटने स लगे। उसे लगा मानो उसकी कोई अपनी इज्जत आ गयी हो और वह उसे रोक सकनेमें असमर्थ है। उसके मनका कोमल भाग उस पर विचार करने लगा। उसकी इच्छा हुई की वह रो दे।

रमजानीरे हंसकर ताना मारा, "इब्दाये इश्क है रोता है क्या....।"

दीनूने क्रोधसे रमजानीको घूरा। वह सहम गयी और दूसरे ही क्षण धीरेसे बोली, "नयी नयी आयी हैं बेचारी।.... गरीबी ससब कुछ करा लेती है....।"

दीनूने दृष्टि फेर ली। वह भी तो तो गरीब है। ससचमुच गरीब। बड़े बड़े धनवालोंके सामने उसकी क्या हस्ती? दो टकेके लिये वह भी तो मीलवाले का गुलाम है। वह भी तो अपना शरीर बेंच रहा है। वह तपता है, मरता है, गलता है और क्या नहीं करता....?"

वह लड़की तब तक कोनेवाले मकान के निचले भागमें दाखिल हो चुकी थी। दीनूका कठोर मन करके उस तरफ बढ़ा। कमरेका दरवाजा खुला था। प्रकाश प्रयाप्त न था। दीया उदासीसे भरी लौ में जल रहा था। कमरेकी सील बदबू मार रही थी, जिसपर एक चटाई और उस पर एक पतली-सी गद्दी डाल दी गयी थी। दीनू दरवाजेकी चौखटपर खड़ा रहा। लड़की सिर झुकाये गद्दीपर बैठी थी। दीनूको देख कर एक दम खड़ी हो गयी। उसके साथ वाली बुढ़िया जो कोनेमें बैठी थी चौंक पड़ी, पर तत्काल अपने दांत निपोरते हुए बोली, "आओ, आओ, ज्यादा नहीं...."

दीनू चुप था। उसकी समझमें न आया कि क्या करे। उसने अपनी जेबमें हाथ डाला और जितने रुपये थे सब निकाल लिये। लड़की आश्चर्यमें थी। देखते ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# महाकवि सूरका बालचित्र

## लेखक ---श्री सूर्य कुमार शास्त्री

महा कवि सूरदासका नाम आजसाढ़े चार सौ वर्षोंके बाद भी धनी, कोविद, अकोविद खेत-खलिहान, खघर-बांहर, शहरादि हात सर्वत्र एकसा गूंजता सुनायी पड़ता है। शहरसे दूर जाकर दिहातोंमें –जहां जन-समह– कोई हल जोत रहा है, कोई घास काट रचा है और अन्वय जो नित्यके दैनिक कार्योंमें आ जुटे हैं, वहां भी हम आज यह आवाज सुन लेते हैं---"तुम बिन और न कोउ कृपानिधि,पावै पीर पराई।' प्रातः कालका वक्त है। तारे अस्त हो चले हैं और जो अवशेष हैं पीले हो गये हैं। पूर्वकी दिशामें अरुण रेखायें खींच गयी हैं। एक किसान अपने कंधेपर कुदाल, गहे बैलोंको ललकारता हुआ ,अपने खेतकी ओर बढ़ता गा रहा हहै। उसके भी कंठ-स्वरसे यह ध्वनि फूट रही है। 'चरण कमल बन्दो हरिराई ..... यह यह है सूरदासकी व्यापकता।

प्रश्न यह है कि आखिर महाकवि सूर में वे कौनसे गुण थे, जो आज भी स्वर्गीय कविको जन-गनमें जीवित रख रहा है। क्या सूर महात्मा थु, इस कारण ही उनका नाम जन-जनमें कण्ठहार बन रहा है? नहीं, ऐसी बात नहीं। अगर ऐसी बातें होतीं तो सूरसे बढ़े हुए कितने महात्मा इस भारत-भूमिपर इनके पहले और बादमें भी अवतरित हुए हैं, जिनका नाम कुछ एक व्यक्तियों के मस्तिष्कमें , ही रहा है। अस्तु, यह स्पष्ट हो जाता है कि वे गुण कुछ और थे, गिनने सूरको अमर बनाया। यह सर्वमान्य बात है कि सूर भगवान्के सच्चे भक्त थे, पर भक्त होनेमात्रसे वे अमर हो गये, ऐसी बात भी नहीं मानी चा सकती। अतएव, अब मैं यह कह सकता हूं कि महाकविमें जो अमर वस्तु थी, जिसने उन्हें अमर बनाया---वह थी उनमें अ अविराम जलनेवाली स्नेहयुक्तप्रेमिल प्रोज्जवल जीवन-ज्योति, जो कविता बन फूटी थी। वह वही ज्योति थी जो आग भी जन-जनमें जल रही है। जिसका जीवन दायक स्नेह सर्वत्र एकसा है। जिसका स्पंदन मानव रूपी बिजलीके हर में बबलएकसा अनुभूत होता है। मानव-हृदयकी वह अमर भावना जो प्रत्येक हृदयके अन्दर निवास कर रही है।, वह उस बीणाके तार सी है जिसे विश्वके किसी भी महाकविने या यों कहें कि वादनने जिस उंगलियोंसे छेड़ा कि सभी हृतंत्रीके तार ध्वनित हो उठे। शेक्सपियर द्वारा वर्णित क्लिवोपेटरा– स्त्रीका वही रूप है जो बरबस सभीको आकृष्ट कर लेता है। माइकेलऐंजलो ऐसे कलाकारकी अनुपम कृतियां अबतक मनुष्य की आत्माको प्रफुल्लित करती है। अमर-कला और साहित्य (पद्य-गद्य) देश और कालसे नियमित नहीं हो सकते। उसकी सीमाका कोई अनुमान नहीं, कोई प्रमाण नहीं, वह मनुष्यके जीवनके नाटकका दर्पण है। उसमें जीवनका कोलाहल और उनकी शान्ति हम दोनों पाते है। क्या हेलेन अमर नहीं है? क्या कालिदासकी शकुत्तला-दुष्यन्तकी केवल एक ही स्त्री थी। नहीं, उसके चरिण में हम नारी-स्वभाव और नारी जींवनकी कोमलता करुण और स्थिर शक्ति पाते हैं। इसो तरह महाकविका मोहन सभीको मोह लेता है। भ्रमरगीत विश्वके नारी हृदयमें एक कंपन भर देता है। उनके विनयके गीत हर भागवत भक्तोंको हर्षित कर देता है। अस्तु, यह निर्विवाद सत्य स्पष्ट हो जाता है कि सूरको अमरकरने वाली उनकी काव्य-प्रतिभा थी।

अब इन पंक्तयोंमें सूरके बाल-चित्रण का मैं अवलोकन करता हूं। 'बालकृष्ण' में महाकवि सूरने बालजीवनका अमर चित्र खींचा है। हिन्दी कवियोंमें महा कवि सूर बाल चित्रणमें प्रथम कोटिके कवि माने गाते हैं। सूरने जो स्वाभाविकता अपनी कल्पनाओंमें भर दी है, वह अन्यत्र देखनेको नहीं मिलती। कहा जाता है कि अंग्रेजी साहित्यमें भी महाकवि सूरकी समतामें बालचित्रणमें कोई कविसमर्थ नही है। उदाहरणके लिये राम, श्याम और जीसस क्राइस्टके जन्मपर कुछ महाकवियोंने जोरचनाएं की हैं, उन्हें मैं निम्न पंक्तियोंमें क्रमशः उपस्थित करता हूं। महाकवि तुलसी लिखते हैं :-

चौ०–वृन्दवृन्द मिली चली लुगाई,
सहज सिंगार किये उठि धाई।
कनक कलश मंगल भरि थार,
गावत पैठहिं भूप दुआरा॥

महाकवि सूर लिखते हैं :-

नंद राई के नव निधि आई
माथे मूकुट श्रवण मणि कुंडल,
पीत वसन भुज चारि सुहाई
बाजत ताल मृदंग जंत्र गति,
सुरुचि अरगजा अंग चढ़ाई
अछत दूद सिवे सिर बंदत,
घर खघर बंदनवार बंधाई
छिरकत हरद दही हिय हरषत
गिरत अंक भरि लेत उठाई
सूरदास सब मिलत परस्पर,
दान देतु नहिं नंद अघाई। :-

महाकवि तुलवसीदासके वर्णणेंनसेल ऐसा मालूम होताहै कि कि उनको प्रतिप भगवानके जन्मकी मर्यादा और रहस्यका ज्ञान है। वे एक पल भी यह बाद नहीं भूरल सकते। महाकवि सूरदासके वर्णन पढ़नेसे यही मालूम होता है कि मानों किसीके यहां बालक उत्पन्न हुआ है अट्टर हर्षके मारे लोग फूले नहीं समा रहे

बाल विनोद उदाहरण लीजिये :-

मेरो माई ऐसो हठि बाल गोबिन्दा
अपने कर गहि गगन बतावत ,,
खेलन को मांगे चन्दा।

(३) मोहन मान मनायो मेरो
मैं बलिहारी नंद नन्दन की–

नेक द्वइतै हंसि हेरो –
कारो कहि कहि मोहि खिझावत
बरजत खरो अनेरो
बदन बिमल ससि ते, तनु सुन्दर
कहा करै बल चेरो।

---

देखते उसने उसके मुंहपर दे मारा और फौरन लौट गया।

बुढ़िया बुलानेके लिये दरवाजेकी तरफ लपकी, पर वह निकल चुका था। रमजानी लड़कीकी डंडीसे पानपर कत्था मल रही थी। दीनको पाससे गुजरते हुए देख बोली "मिल आये सोनासे ....?" और उसने क, कुटिल हंसी हंसी।

दीनूका ध्यान और कहीं था। उसको जैसे किसीने डंक मार दिया। उसने दांत कटकटाये—"सोना..सोना..सोना। सब सोनेके लिये .."

वह विवश था। सोना भी विवश। तूफान उसके मनमें घुट रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





(४) देखो माई कान्ह हिचकियन रोवै
तनक मुखहिं माखन लपटना
डरनि ते अंसुवनि धोवै

महाकवि सूर ने ऊपरवाली पंक्तियों कितनी स्वाभिवकताके साथ बाल स्वभावकी अभिव्यक्ति की है। महाकविके बालमोहनके निज प्रतिबिम्ब पकड़नेकी लालचका चित्रण आजके सयानोंको भी विचलित कर देगा, ऐसा प्रतीत होता है। चांदके प्रति बालमोहनका जो आकर्षण है, अध्येताके लिये सूरकी वे पंक्तियां काम आकर्षक नहीं नहीं मालूम होती जिन्हें कविने चित्रित किया है खिज तो मोहनका बहुत ही मनोहर है और खासकर उस समय जब मोहन रिसिया जाते हैं और मासे कहते हैं :-

तू मोही को मारन सीखी,
दाउहि कबहु न खीजै ॥

मां और बेटेके स्वभावका कितना सुन्दर परिचय है। बच्चे या किशोर अवस्थावाले तो सूरकी पे पंक्तियां पढ़कर मिश्रीकी मिठास पायेंगे ही, सयाने और बूढ़े भी सहज ही बचपन की मीठी यादसे प्रफुल्लित हो उठेंगे। दैनिक जीवनमें हम सभीको बाल स्वभावको अवलोकन करनेका अवसर मिलता है। अतः वे सौभाग्यशाली सूरके बाल स्वभावके निरीक्षणसे अपनी निरीक्षण शक्तिमें भी परिवर्तन ला सकते हैं।

यशोदा मोहनको बुलानेका उपक्रम कर रही है। मोहन सो रहे हैं। यशोदा लोरी गा रही है। 'मेरे लालकी आज निदिया'। मोहन झपकियां ले रहे हैं। जबतक यशोदा गाती हैं, वे सो रहे हैं और जहां यशोदाके स्वर बन्द हुए कि मोहन निज क्रंदन ध्वनि से यशोदाको पुनः गानेके लिये विवश कर देते हैं :-

कबहूं पलक हरि मूंदि लेत हैं,
कबहूं अधर फरकावैं
सोवत जानि मौन ह्वै रहि रहि
करि करि सैन बतावैं
इहि अंतर अकुशलाई उठे हरि
जसुमति मधुरै गावैं

मांकी अभिलाषाएं कैसी होती है, वह भी जरा देखें :-

कब मेरे लाल घुटुरुवन रेंगै,
कब धरनी पग द्वैक धरैं
कब द्वै दंत दूध के देखों,
कब तुतरे मुख बैन झरैं
कब नंदहि कहि बाबा बोलै,
कब जननि कहि मोहि ररै
कब मेरो अंचरा गहि मोहन,
कोई सोइ कहि मों सो मुखहि भरै
कब हसि बात कहैगो मोंसो,
छवि देखत दुख दूरि टरै

# शैतानका साम्राज्य!

लेखक—श्री अ० भिक्षु स्वामी

जिन मठ-मन्दिर और धर्मस्थानों में अछूत माने जाने वाले गरीब और इनसे मिलते-जुलते मनुष्योंका प्रवेश निषिद्ध है, वे देवस्थान नहीं, बल्कि शैतानके साथ मिलकर मानवता विरोधी षड़यन्त्र करने वाले, समाजके भयंकर शत्रुओंके छिपे रहनेके अंधियाले दुर्ग हैं।

जिन मठ-मन्दिर और धर्मस्थानोंमें परम पवित्र स्वातन्त्र्य देवीकी उपासना वर्जित है, वे धर्मस्थान नहीं, बल्कि धर्म की ओट लेकर गुलामीका पोषण करने वाले देश द्रोहियोंके कपट महल हैं।

और जिन मठ मन्दिर या धर्मस्थानोंमें धर्म, संस्कृति एवं प्राचीनताकी दुहाई देकर, प्रगति की ओर ले जाने वाले नवीन तथा आदर्श विचारोंका विरोध किया जाता है, वे पवित्र स्थान नहीं; बल्कि जन-साधारणके जीवनमें विष घोलकर उसका अन्त कर देने वाले हत्यारोंके, सुवासित पुष्पोंसे सजे हुए, धूप-दीपमय हत्याहार हैं।

'हमारे मठ, हमारे मन्दिर, हमारे धर्मस्थान, अछूत, ईसाई या मुसलमानके प्रवेश करनेसे भ्रष्ट हो जायेंगे'—ऐसा कहकर, देशकी जनताके एक बहुत बड़े भाग को, अस्पृश्य या अधम लोगोंकी श्रेणी में बांट देना, उन्हीं लोगोंका काम हो सकता है जो मानवताके आदर्श से स्वयं भ्रष्ट हो गये हैं।

'हमारे मठ,हमारेमंदिर,हमारे धर्मस्थान, केवल हमारे संप्रदाय या उच्च-वर्णाभिमानी लोगोंके लिये ही हैं'—ऐसा कहकर, जो जाति-पांति तथा दीवारें खड़ी करते हैं, वे उन हिंस्रपशुओंके पथपर जा रहे हैं जो जरख, सूअर, भेड़िये और कुत्तोंके चलनेके हैं।

'हमारे मठ, हमारे मन्दिर, हमारे धर्मस्थान सार्वजनिक नहीं हो सकते'—ऐसा वे लूटरे ही कह सकते हैं, जो सार्वजनिक संपत्तिकी निरंतर लूटको व्यक्तिगत संपत्ति बनाकर पवित्रताकी दुहाई देते रहते हैं।

और उन मठ-मंदिर तथा धर्मस्थानोंको आप क्या कहेंगे, जो लाखों गंजेड़ी, भंगेड़ी, और सुलफेबाज लोगोंके पोषण तथा रक्षण के (गीताकी भाषामें योग-क्षेम) केन्द्र बने हुए हैं? मेरी दृष्टिमें ऐसे मदकचियों के स्थान 'शैतानकी पाठशाला' है।

उन मठ-मन्दिर और धर्मस्थानोंको आप क्या कहेंगे, जो लाखों भगोड़े, कामचोर और आलसियोंके अड्डे बने हुए हैं? मेरी दृष्टिमें ऐसे मुफ्तखोरों के स्थान 'शैतान का स्वर्ग' है।

उन मठ-मंदिर और धर्मस्थानोंको आप क्या कहेंगे, जो लाखों मूर्ख, लम्पट, दुराभिमानी, कट्टर संप्रदायवादी और दुराचारियों के 'गोविन्द भवन' बने हुए हैं? मेरी दृष्टिमें ऐसे रासपुटिनके स्थान 'शैतानकी प्रयोग शाला' है।

पाषाण-निर्मित प्रतिमाकी पूजा करनेसे-हालांकि प्रत्यक्षमें यह गुड़ियोंके खेल जैसा ही लगता है—भगवद् पूजा होती है या नहीं; इस प्रश्नमें तथ्य होते हुए भी हम इसको व्यक्तिगत स्वतंत्रता और तत्वचिंतकोंके लिये छोड़ देना उचित समझते हैं। लेकिन भगवद् पूजा या धर्मकी ओट लेकर, ये ऊंच-नीचके जो भेद-प्रभेद खड़े कर दिये हैं, इनको आजका स्वतंत्र भारत अब कहांतक बरदाश्त करता रहेगा?

पाषाण-निर्मित प्रतिमामें वेद-मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठा करनेपर उसमें ईश्वर या ईश्वरीय अंश, आ सकता है या नहीं—यह प्रत्यक्ष शंकाका विषय होते हुए भी—वेदमर्मज्ञों और जो मूर्तिपूजाके पीछे पागल बने फिर रहे हैं, उनको हल करनेका प्रश्न है। लेकिन ईश्वरकी संतान या उसीके अंश माने जाने वाले मनुष्य—जिनमें अछूत, ईसाई और मुसलमान आदि भी आ जाते हैं—जो अपने हृदयकी धड़कनसे निरंतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'प्राणवान या सजीव' होनेका प्रमाण देते रहते हैं, उनके मुकाबलेमें उस पाषाण-प्रतिमाको अधिक पवित्र मान लेना, आजका स्वतंत्र भारत कबतक बरदाश्त करता रहेगा ?

उन पत्थरकी निर्जीव प्रतिमाओंके लिये, जो किसी भी म्यूजियमके एककोने में सरलतासे रखी जा सकती हैं, लाखोंकी संख्यामें बड़े-बड़े मठ-मंदिर और धर्मस्थान बनानेके साथ-साथ एक लम्बी चौड़ी खर्ची ली व्यवस्था भी कायम की जाती है। किन्तु वे चलती-फिरती सजीव प्रतिमाएं-करोड़ों मनुष्य-अछूत और विधर्मी बने, छूरोंके ढेर, फुटपाथ, और असहाय गन्दे स्थानोंमें जीवन व्यतीत कर रहे हैं। न स्वच्छ पानी की व्यवस्था है न भोजन की; यह आजका स्वतंत्र हिन्दुस्तान कबतक बरदाश्त करता रहेगा ?

धर्मस्थानकी जड़ प्रतिमाओंके भोजन के नामपर हरदिन बालभोग, राजभोग और मानभोग आदि अष्ट-भोगोंका दिन रात एक लम्बा क्रम चलता रहता है और विविध प्रकारके पकवान बनाये जाते हैं। अन्नकूटके ऊंचे-ऊंचे ढेर भी इन्हीं निर्जीव तमाओंके पेट भरनेके लिये लगाये जाते

**हैं जिन राक्षसोंको बुरी तरह बदनाम करने में पंडितवर्गकी समूची शक्ति खर्च** की जाती रही है, उनमें इतना भोजन खाने वाला कोई दुष्ट राक्षस पैदा नहीं हुआ। देव-पुत्र भीम और राक्षस-पुत्र कुंभकर्णने भी कभी इतना भोजन नहीं किया होगा और भस्मक रोगसे पीड़ित व्यक्ति भी बेचारा व्यर्थ ही बदनाम किया जाता है। हालांकि १०० सौ प्रतिशत आस्तिक डाक्टर भी, यदि उसको मौका दिया जाये तो, वह किसी भी पाषाणका, जो देव या भगवान बनी हुई है, पेट चीरकर यह दिखा सकता है कि आजतक करोड़ों टन मिष्टान्न और अन्नकूटोंका भोग लगानेपर भी उसके पेटमें कभी एकदाना भी नहीं पहुंचा।

पर मान ले कि इस चर्चाको यहीं रोक दें तो भी उस प्रश्नको नहीं रोक सकते जो आजके युगका ही एक प्रश्न है। वह जलता हुआ प्रश्न यह है कि एक तरफ लाखों मन्दिरोंकी जड़ प्रतिमाओंको ये छप्पन भोग लगाये जाते हैं, और दूसरी तरफ करोड़ों करीब मजदूर और किसानोंको, जो सभी चीजें अपने परिश्रमसे पैदा करते हैं और उन्हीं चीजोंसे ये छप्पन भोग लगते हैं, अपनी ही पैदा की हुई खूराकके अभाव में छप्पनके अकालमें भूखों मरने वालोंकी तरह तरस-तरस कर क्यों मरते रहते हैं ? आजके स्वतंत्र हिन्दुस्तानमें यह कैसी विड़म्बना है !

धर्मस्थानकी जड़ प्रतिमाओंकी सेवामें तत्पर, लाखों पुजारी उत्पादनकाकोईकाम नहीं करते। यदि उन लाखों भगोड़ोंको इनके साथ न गिनें—हालांकि उनको किसी हालतमें नहीं छोड़ा जा सकता— तो भी 'टुनटुनी बजाते मियां खाते शकर घी' इस कहावतके पात्र, पुजारी, लोग देशके लिये किस मर्जकी दवा हैं ? न मालूम कितनी ही देशदासियां, घरों और भजन आश्रमों में वैधव्य भुलानेके लिये कीर्तन करने वाली विधवाएं और अन्यप्रकारके सेवक लोगों का जीवन इन्हीं प्रतिमाओंके पीछे व्यर्थ बरबाद हो रहा है। जबकि दूसरी ओर करोड़ों एकड़ जमीन श्रम करनेवालों के अभावमें बंजर पड़ी है; रत्नगर्भा वसुन्धराकी खानोंमें लोहा, चांदी, सोना, पीतल, हीरे और सैंकड़ों तरहके दूसरे खनिज पदार्थ भी परिश्रमी हाथोंके अभावमें गड़े हुए, कयामतमें जी उठने वाले मुर्दों की तरह बाहर आनेका रास्ता देख रहे हैं। अस्पतालों, जच्चाखानों, कन्या पाठशालाओं और स्त्री उद्योग-गृहोंमें नर्सों, शिक्षिकाओं और व्यवस्थापिकाओंका जबर्दस्त अभाव है। आजका स्वतंत्र भारत इस विषम परिस्थितिको, जो वास्तवमें उत्पादन,मेहनत और मुफ्तखोरी या शोषण की परिस्थिति है, मुंह लटकाये देख रहा है—यह कैसी विड़म्बना है।

धर्मस्थानकी जड़ प्रतिमाओंको भगवद् सेवाके नामपर ऐसे श्रृंगार-प्रसाधनों से सजाया जाता है, जैसे किसी राजकुमारी के लिये अति परिश्रमसे गुड़िया तैयार की जाती है; या मनुष्यतासे छूछे राजकुमारों और राजकुमारियोंको विशेष वस्त्राभूषणोंसे विभूषित किया जाता है। हीरे- जवाहरात और सोनेके आभूषणोंसे, इन धर्मस्थानकी प्रतिमाओंको, कहीं-कहीं तो इस बुरी तरहसे लाद दिया जाता है कि सौन्दर्यके स्थानपर या तो फूहड़पनका ही एकमात्र प्रदर्शन हो जाता है या निरि कुरुपताका ही। सोनेके बर्तन, सोनेके कलश, सोनेकी महराबें, सोनेके दरबाजे, सोनेकी छड़ी-चंवर-सिंघासन आदि सब सोने ही सोनेकी हों। वैभव प्रदर्शनके मतवालोंकी दृष्टिमें चांदीकी कोई कीमत नहीं रह जाती; अतः जहांतक हो सोनेका ही उपयोग होता है।

ऐसे कई मंदिर किसी महमूद कीप्रतीक्षामें खड़े हैं। हलांकि उसके बुत शिकनी के कामको छोड़कर बाकीका सब कुछ 'महंत' 'पुजारी' और 'मुखियाजी' ही पूरा कह देते हैं। आखिर गजनीकी भी कोई सीमाएं हैं—बारबार महमूद कैसे पैदा किया जाये ? यही कारण है कि उसका पार्ट 'मंदिरके अपने ही लोगोंको' अदा करना पड़ता है। फिर भी बड़ी-बड़ी जागीरें, हीरे-जवाहरात, सोना-चांदी, और भक्तों से आये हुए करोड़ों रुपये सहित, यह अथाह संपत्ति धर्माचार्यों के जेलखानोंमें पड़ी सड़ रही है, या जैसा कि सब जानते हैं, रागरंगमें बरबाद होती रहती है।

इधर दूसरी तरफ यह हाल है कि करोड़ों लोग भूखे रहते हैं, नंगे रहते हैं और अशिक्षाके केंद्र बने हुए हैं। इस भूख, नंगापन और अशिक्षाको दूर करनेके लिये पैसा नहीं मिल रहा है। खेती करनेके लिये बैल, ट्रैक्टर, पानी, बिजली, खाद, बीज तथा अन्य उत्पादनके साधनोंकी तीव्र आवश्यकता अनुभव हो रही है। शत्रुओंके आक्रमणसे बचनेके लिये अपनी आजादीकी रक्षा करनेके लिये-हमको तोपें, मशीनगनें, दरियाई और हवाई जहाज, टैंकों तथा नवीनतम वैज्ञानिक शस्त्र-सरंजामकी आव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





# दहेजप्रथा और डिब्रूगढ़ की समस्या

गोलाघाट अधिवेशनके पहले यहां ब्रिगढ़के मारवाड़ी समाजके व्यक्तियों ो हमेशा यही चर्चा हुआ करती थी कि समाजमें सुधार होना चाहिये, सम्मेलनको छें करके दिखालाना चाहिये, केवल प्र- कुावोंसे कुछ नहीं होता यदि अधिवेशन डतगजी प्रस्ताव पास करने तक ही रहा साजऐसा अधिवेशन आयोजन कर, समाजके कतहार रुपये बेकार खर्च करनेसे कोई फायदा नहीं। अधिवेशनके पहले जहां सुनिये यही चर्चा थी। अधिवेशनमें जो सज्जन शामिल होनेके लिये जा रहे थे उन्हें यही कहा जा रहा था कि वे कुछ करके लौटें।

अधिवेशन हुआ, उसमें युवकोंसे ज्यादा महत्वपूर्ण उपस्थिति थी वृद्धजनोंकी। अधिवेशनमें देशकी, प्रांतकी, एवं समाजकी स्थितिको देखते हुए बहुतसे प्रस्ताव गृहीत हुएजिसे कार्यरुप देनेके लिये प्रांतीय आफिस पूर्णतया सचेष्ट हैं--दहेज संबधी प्रस्ताव भी अधिवेशनमें ग्रहण किया गया जिसमें बढ़ती हुई दहेज प्रथाके प्रति चिंता प्रगट की गयी एवं तज्जनित कष्टोंको दूर करनेके लिये समाजमें अपील की गयी। दहेज संबधी नियम बनाकर प्रस्ताव लेनेके लिये यह हिचकिचाहट हो रही थी कि पहले भी ऐसे नियम बनाये गये थे जिनका पालन नहीं हुआ। एक और कारण यह था कि सम्मेलन जैन, ब्राह्मण, अग्रवाल, महेश्वरी, हरेक सम्प्रदायका प्रतिनिधित्व करता है इसलिये सभी संप्रदायपर लागू होनेवाली नियमावली बनाना कठिन है। सम्मेलनके मुख्य प्रस्तावको आधारपर ही जो अग्रवाल बन्धु वहां उपस्थित थे उन्होंने दहेजकी एक संशोधित प्रणाली बनायी, इसके बनाने में समाजके वयोवृद्ध, अनुभवी, स्वार्थहीन व्यक्तियोंका मुख्य हाथ था। नियमावली सम्मेलनमें उपस्थित व्यक्तियोंके सम्मुख रखी गयी। प्रायः सभीने उक्त नियमावलीका बड़ा ही स्वागत किया। नियमावलीके अनुसार यही अंदाजा लगाया गया कि इसके अनुसार ६-७) हजार रुपये कुल विवाहमें खर्च होगें। समाजकी आर्थिक अवस्था, जमानेकी रफ्तारको देखते हुए यह बिलकुल उचित प्रतीत हुई और वहीं गोलाघाटमें ४० व्यक्तियोंने उसको पालन करनेके लिये हस्ताक्षर किये। जैन, ब्राह्मण, महेश्वरी संप्रदायके लोगोंने इसका स्वागत किया और कहा कि अग्रवाल संप्रदायकी उन्नति सम्मेलनकी उन्नति है और सम्मेलन की उन्नति हमारी उन्नति है। जिन वयोवृद्ध अनुभवी व्यक्तियोंने उक्त नियमावली सुनायी, उसका इस तरहसे स्वागत हुआ देखकर उनका उत्साह दुगुना हुआ और वहीं निश्चय हुआ कि सारे प्रांतमें घूम-घूमकर इसपर हस्ताक्षर करवाये जायें। और यह निश्चय किया गया कि जिन व्यक्तियोंके बहुत ही निकट भविष्यमें लड़केका विवाह है उनके पाव जाकर समाजके नाते हाथ जोड़कर प्रार्थना की जाय कि अब समाजकी भलायी और बुराई आपके हाथमें है।, समाजके हितैषी होनेके कारण आपका कर्तव्य हो जाता है कि आप भी हमारा साथ दें। ऐसे भी व्यक्ति इस चीजको लेकर आगे बढ़रहे थे जिन्होंने समाजके लिये शायद ही कुछ किया हो जो सार्वजनिक कामोंसे बिलकुल अलग रहते थे। समाजका सौभाग्य था ऐसे व्यक्तियोंने समाजसेवाका कार्य अपने हाथमें लिया। उन्होंने अपने अपने व्यक्तिगत को छोड़ २४ घंटे इसीमें लग गयें। कामों उनका उत्साह, त्याग सराहनीय था। उन्होंने प्रथम नियमावलीपर हस्त क्षर करनेका काम डिब्रूगढ़में आरम्भ किया। डिब्रूगढ़में सहर्ष सैकड़ों व्यक्तियोंने उसपर हस्ताक्षर कर दिये। लेकिन बड़े दुःखकी बात है कि निकट भविष्यमें जिनके यहां शादी होनेवाली थी उन्होंने हस्ताक्षर करनेसे इन्कार कर दिया – यहीं तक नहीं कि प्रत्येक संभव तरीकेसे अपने समाजघा- तक पक्षको बढ़ाने लिये अन्य स्वार्थी उसमें शामिल करनेकी कोशिशमें लग गये इससे समाजके युवकोंके हृदयमें ठेस लगी और कुछ लोगोंने जिनके हृदयमें समाज-उन्नतिकी आग धधक रही थी यह निश्चय किया कि वे ऐसे लोगोंको शादियोंमें शामिल नहीं होंगे। ये प्रत्यक्ष गांधीवादी विचार थे ,, असहयोगका अस्त्र गांधीजीने सिखाय था। लेकिन स्वार्थ वश जिन व्यक्तियोंने विरोधी दल तैयार कर लिया था वे लोग इन समाज हितैषियोंके विरुद्ध अनर्गल प्रचार करने लगे।, इससे क्या नतीजा हुआ। किसी भी तरहका सुधार कार्य अभी हालमें हुई शादियोंमें नहीं हो सका। और स्वार्थ विरोधी दलने इसमें अपनी बड़ी भारी विजय समझी। उस स्वार्थी विरोधी दलसे कुछ समझौतेपर पहुंचनेके असफल प्रयास भी हुए। उन्हें कहा जाता है कि आप यदि इस नियमावलीको पसन्द नहीं करते तो अपनी तरफसे ही कोई नियमावली बनाकर और उसे व्यव- हारमें लाकर समाजके सामने उदारहरण रखें लेकिन कौन सुनता है।

आज ये व्यक्ति गुमराह किये गये हैं, उन्होंने सुधार चाहनेवाले सज्जनोंको गलत समझा है। लेकिन वे भी हमारे ही भाई हैं। आज नहीं तो कुछ दिन बाद उन्हें ज्ञान आयगा और वे समाजके साथ हो जा- येंगे। हमारें समाजमें शिक्षा न होनेके कारण यह संभव नहीं कि असहयोगकी कीमतको, उनके आदर्शको, उसकी पवित्र भावनाको समझ सके।

उनसे समाजके हितके लिये असहयोग करनेपर उन्होंने उसे दुश्मनीके रूपमें ग्रहण किया और इसी कारण यहां डिब्रू गढ़में कटुता फैली और कुछ भी कार्य नहीं हो सका। यहां तक कि हस्ताक्षर किये हुए व्यक्ति भी डगमगा गये हैं। वचनोंको कुछ भी खयाल न कर शादियोंमें उसी पुरानी रिवाजपर लड़की पक्षसे दहेग लिया और लगे। उनमेंसे ऐसे व्यक्ति भी हैं जो शिक्षित हैं, जिन्हें समाज अपना हितैषी समझती थी। और जिनको ईश्वरने आज सब कुछ दे रखा है।

---

श्यकता है। पर हम इनको बनानेमें असमर्थ हैं—सिर्फ पैसेके अभावसे। पाकिस्तानसे आये हुए शरणार्थी कहलाने वाले करोड़ों पीड़ित, मकान, रोजी और रोटीके अभावमें इधर-उधर भटक रहे हैं; या केम्पोंमें और सड़कोंपर अपना जीवन बिता रहे हैं। क्यों ? सिर्फ इसीलिये कि हमारे पास धन नहीं है। आजका अभागा स्वतंत्र भारत, त्रभ-सा ठुकुर-टुकुर इस परिस्थितिको देख रहाहै—यह कैसी विडम्बना है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हैदराबादका रण निमंत्रण

श्री सव्यसाची

परिस्थितियां, तथ्यपूर्ण कारण और आत्मिक घटनाओंके आधारपर हो गयी शत्रुता या विरोध समय टल जाने पर, विवेक उत्पन्न होनेपर पारस्परिक सद्भावनापूर्ण बार्तालापों द्वारा मिटाया जा सकता है और सौजन्य तथा सौहार्द स्थापित किया जा सकता है। किन्तु जब किसी खास दुरभिसंधि और दुरभिलाषासे मदमत्त होकर जानबूझकर शत्रुता पैदा की जाती है, भित्ति निराधार जानते हुए भी उसपर बिरोधको खड़ा कराया जाता है तब तक पक्षका बिवेक, सद्भाब और तर्क थक कर हार जाते हैं पर दूसठ पक्ष की शत्रुता शान्त नहीं की जा सकती। ठीक यही स्थिति आज हैदराबाद और भारतीय संघके बीचमें उपस्थित है। इस बातमें किसी तरहका सन्देह नहीं रह गया कि हैदराबाद हर हालतमें भारतीय संघका बिरोध करने पर तुला हुआ है। यह बिरोधी मोर्चा, -जिसमें निजाम, हैदराबादकी सरकार और रजाकार शामिल हैं एवं जिसे पाकिस्तानका संरक्षण तथा सहयोग एवं प्रतिक्रियाबादी ब्रिटेन और अमेरिकाका आशीर्वाद प्राप्त है--दिनोदिन उत्तरोत्तर प्रवल और प्रचण्ड पड़ता जा रहा है। हमें खेदके साथ यह कहना पड़ता है कि हमारी जिस दुर्बलपाने मुस्लिम लीगके पाकिस्तान आन्दोलनको एक स्वतंत्र और पृथक राज्यमें परिणत होने दिया वही दुर्बलता आरम्भ से ही हैदराबाद निजामके स्वतंत्रता आन्दोलनके सम्बन्धमें दिखायी जा रही है और हमें भय है कि कहीं इसका परिणाम हिन्दुस्तानके भीतर ही स्वतंत्र पाकिस्तानकी स्थापना न हो। भाग्य परिबर्तनमें समयका महत्व और मूल्य अपना खास स्थान रखता है। समय बड़ा बलवान होता है। बुद्धिमत्ताका तकाजा है कि समयकी अबहेलना करके जानबूझ कर अपनी जड पर कुठाराघात न किया जाये। आज पाकिस्तान बन जाने पर हम पछता रहे हैं। किन्तु इस पश्चात्तापका क्यय मूल्य है। कहा भी है कि समय चूकि पुनिका पछताने।

हम पिछले नौ महीनोंसे भारतीय संघके प्रति हैदराबादके शत्रुभावको शान्तकर उसे सीधे रास्ते पर लानेका प्रयत्न कर रहे हैं। इन प्रयन्नोंका इतिहास बताया है कि इस समझौता बार्तालापके दौरानमें हैदराबादकी ओरसे बातचीत चलाने वाले जिस प्रतिनिधिने जरा भी बिवेकका परिचय दिया उसने निजामका बिश्वास खोया और उसकी जगह दूसरेने ली। इसी प्रसंगके कारण छतारीके नवाब और सर मिर्जा इस्माइलको हैदराबादके प्रधान मंत्रित्वसे हाथ धोना पड़ा क्यों कि इनके बिचार अधिक उदात्त और बैधानिकताको मानकर चलने वाले थे। किन्तु सर वाल्टर मौंकटन जबसे निजामके बैधानिक परामर्शदाता होकर आये तबसे वे अपनी जगह पर बरकरार हैं। क्यों? ये अपना परामर्श ऊंचेसे ऊचे मूल्य पर किसीको बेच सकते हैं और फिर यहां तो यह सौदा प्रकारान्तरसे उनके देशके लिये, हितकर भी सिद्ध हो रहा है। इन सब तत्थोंके सामने रहते हुए भी भारत सरकारके धैर्यकी बलिहारी है। मिर्जा इस्माइल, छतारी और लायक अलीके पहलेके प्रधान मंत्री नवाब यार जंगके रहते जिस हैदराबादको हीधे रास्तेपर लानेका प्रयास असफल हुआ उसे कासिम रिजवी, लायक अली और वाल्टर मौंकटन की मौजूदगीमें ठीक रास्तेपर ले आनेकी आशा करना कहांतक उचित है, यह सहज ही समझा जा सकता है।

चलते चलाते भारतके गवर्नर जेनरल लार्ड माउन्ट बेटेनने उचित ही समझा कि एकबार अन्तिम प्रयास करके देख लिया जाये, शायद निजामका बिवेक जाग उठे और इस तरह यह अन्तिम प्रयास उनके कार्यकालकी सफलताओंके मुकुटमें चार चांद लगा दे। किन्तु उनकी भी बुरी तरह निराशा होना पड़ा और उनका खास दूत मि० कैम्बेल जानसन हैदराबादसे बिवर्ण बदन, रिक्तहस्त वापस आया। यह सहज स्थिति नहीं है। भारतके गवर्नर जेनरलके निमंत्रणको अस्वीकार करके निजामने सम्पूर्ण भारतका अपमान किया है और हम तो यह कहेंगे कि निजामकी यह अस्वीकृति प्रच्छन्न रूपसे भारतको चुनौती है। दो दो बार निमन्त्रणको अस्वीकार करके निजामने भारत सरकारको एक तरहसे साफ साफ जवाब दे दिया है और इस अस्वीकृतिपत्रमें लिखे गये, अवश्य ही प्रत्यक्ष नदिखायी पड़ने वाले, रणनिमन्त्रण के शब्दोंका अर्थ समझनेके लिये भारत सरकार अब भी यदि बिभिन्न शब्दकोषोंकी सहायता लेनेमें समय नष्ट करती रहेगी, तो इससे लाभकी अपेक्षा हानि ही होनेकी संभावना अधिक है। पर हम देखते हैं कि भारत सरकार दीवालपर लिखे स्पष्ट शब्दोंका अर्थ शमेशा तोड़ मरोड़ का ग्रहण करती रही है। फलतः उसने हैदराबादके भारतीय संघमें सम्मिलित होनेके सम्बन्धमें दूसरी रियासतोंसे भिन्न रास्ता ग्रहण किया और यथास्थिति समझौता करके एक वर्ष तककी उसे ढीलदी। हैदराबादने इस समयकी अपनी स्वतंत्रताकी तैयारीमें लगाना शुरू किया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पर्दाविरोधी आन्दोलन

लेखक- ईश्वरदास जी जालान उपाध्यक्ष अ० भा० मा० सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलनकी समाज सुधार समितिने कुछ दिनोंसे पर्देके विरोधमें सक्रिय आन्दोलन आरम्भ किया है। और ग्वह चाहती है कि शीघ्रातिशीघ्र समाजसे पर्दा प्रथा उठ ज़ाय। सम्मेलनके बंबई अधिवेशनमें यह निश्चय हुआ था कि इसकी ओर सम्मेलन पूरा ध्यान दे और समाजसे पर्दा-प्रथाको दूर कर दे। यह प्रस्ताव सर्व सम्मतिसे स्वीकृत हुआ था। इसको कार्यान्वित करनेके लिये गत अप्रैल महीनेसेजोरदार आन्दोलन शुरू कर दिया है। गोलाघाटमें द्वितीय आसामी प्रान्तीय अधिवेशनके बाद १५ दिन हम लोगोंने विभिन्न स्थानोंमें दौरा किया और वहांके भाइयोंमें विशेष कर अपर आसाममें बहुत उत्साहपूर्वक युवकोंने इसके बहिष्कारका आन्दोलन प्रारम्भ किया। सैकड़ों युवकोंने प्रतिज्ञाएं की और उसको काममें लाना प्रारम्भ कर दिया ऐसी आशा है कि १५ अगस्तको जब डिब्रूगढ़में मातृमुक्ति दिवस मनाया जायगा अधिकांश परिवारोंसे पर्दा उठ जायगा। कलकत्तेमें भी इस आन्दोलनका श्रीगणेश किया जा रहा है। यों तो बीसों वर्षोंसे यह आन्दोलन चल रहा है।, परन्तु उसमें जितनी प्रगति आनी चाहिये थी उतनी अभी तक नहीं आयी। यह सोचकर सम्मेलनकी समाज सुधार समितिने आन्दोलनके अलावे ऐसे प्रतिज्ञा पत्रोंपर हस्ताक्षर कराना शुरू किया है जिसमें उनपर हस्ताक्षर करनेवाले इस बातकी प्रतिज्ञा करें कि वे अपनी स्त्रीको पर्दाप्रथासे मुक्त करें और ऐसे विवाहोंमें भी सम्मिलित नहीं होंगे जिसमें पर्दाप्रथाका बहिष्कार नहीं हो। पिछली बातसे लोगोंमें काफी चर्चा है। इसकी आवश्यकता उसी बातको लेकर होती हैकि इस कुप्रथोकी ओर समाजका ध्यान विशेष रूपसे आकृष्ट हो और वे इस दिशामें आगे बढ़ें। किसी भी दूसरी भावनासे प्रेरित होकर यह नहीं किया जा रहा है। किसी भी आन्दोलनके भिन्न भिन्न स्टेज होते हैं। पहला स्टेज पत्र और व्याख्यानों द्वारा प्रचार, दूसरा स्टेज व्यक्तियोंद्वारा प्रतिज्ञाएं, तीसरा स्टेज व्यक्तिगत असहयोग, चौथा स्टेज सत्याग्रह, पांचवां स्टेज कानून। पत्र और व्याख्यानों द्वारा

---

राज्यके भीतर एक प्रकारसे सामरिक सरंजाम होने लगा। पाकिस्तानकी पृष्ठ-भूमि पर इसस तैयारीका सूत्रपात हुअ मुस्लिम नेशनल गार्डकी जगह रजाककारोंने लीं और ये लोग राज्याधिकारियोंकी मददसे राज्यके बहुसंख्या सम्प्रदायके नागरिकोंका साहस बिचलित करनेके लिये उनको आतंकित करने लगे। किन्तु भारत सरकारने इस स्थितिको हस्तक्षेपके लिये पर्याप्त नहीं समझा और यह निजामकी इस कैफियतसे सन्तुष्ट हो गयी कि रजाकारोंकी हरकतोंसे निजाम सरकारका कोई सम्पर्क नहीं है और वह उनकी गतिबिधिको नियंत्रित करनेकी कोशिश कर रहीं है। इसका परिणाम यह हुआ कि रजाकारोंने राज्यकी सीमाके बाहर भी पैर बढ़ाया और संघके प्रदेशान्तर्गत ग्रामों तथा नगरोंमें लूट, हत्या, अपहरण और बलात्कार होने लगा, जो हैदराबादकी सरहदोंकी निकटबर्त्ती बम्बई, मध्यप्रान्त और मद्रास सरकारकी बिज्ञप्तियोंसे स्पष्ट है और अन्तमें आलइंडिया कांग्रेस कमेटीके अधिशनके अबसर पर बम्बईके प्रधान मंत्री श्री खेर एवं अन्य प्रमुख नेताओंकी जबानी रजाकारों और निजाम राज्यकेअधिकारियोंके अत्याचायचारों बर्णन सुनकर भारतके प्रधान यंत्री पंडित नेहरूको यह कहना पड़ा कि भारत सरकारके धैर्यका बांध टुटना चाहता है और हैदराबादके सामने पो ही रास्ते रह गये हैं युद्ध या भारतीय संघमें प्रवेश।

प्रधान मंत्रीके इस वक्तब्यसे आशाका संचार हुआ और समझा गया कि हैदराबाद की समस्याका अब कुछ न कुछ वारा न्यारा हो जायेगा। किन्तु खेदकी बात है कि अभीतक भारत सरकार इस संबंधमें अगर मगरमें पड़ी है और उधर रजाकारोंका नेता रिजवी ललकार रहा है। अभी उसी दिन उसने यह कहा है कि हैदराबादमें उत्तरदायित्वपूर्ण शासन नहीं हो सकता। यह मुस्लिम राज्य है। यहां मुसलमानोंका शासन रहेगा। उसने यहां तक कह दिया है कि यदि निजाम सरकार किसी तरहके दवावमें पड़कर उत्तरदायी सरकार स्थापित करनेका प्रस्ताव स्वीकार कर लेगी तो हम उसे कदापि स्वीक र न करेंगे और उसके मुकावले अपनी अलग समानान्तर सरकार स्थापित करेंगे। राज्यमें उथल पुथल मचाकर निजाम की योजनाको तोड़फोड़ कर नष्ट कर डालेंगे। इस तरह की बात रिजवी बिना निजाम सरकारकी शहके नहीं कह सकता था और यदि वह कहता तो आज वह इस तरह मुक्त निद्वंद्वन विचरने पाता और अबतक उसे बांधकर जेलमें डाल दिया गया होता और उसका संगठन अवैध घोषित कर दिया गया होता। अबतंक के समझौता प्रयासोंके परिणामसे और राज्यमें होनेवाली तैयारियों से यह स्पष्ट है कि हैदराबादकी समस्याको सुलझानेके लिये भारत सरकारको अपना रास्ता बदलना चाहिये। "युद्ध और भारत संघमें प्रवेश" ये दो ही रास्ते हैं, भारतके प्रधान मंत्रीकी इस घोषणाको कार्यमें परिणत करनेका समय अब आ गया है और इसमें अब एक क्षणका भी विलम्ब असह्य प्रतीत हो रहा है। अतः भारत सरकारको हैदराबादमें बढ़ते हुए खतरे और हिंसा पर चलने वाली ताकतोंको कुचलनेके लिये अविलम्ब जोरदार कार्यवाही करनी चाहिये ताकि निजामियों और रजाकारोंके हौसले इतने न बढ़ जायें कि हैदराबाद भी दूसरा काश्मीर बन जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यथेष्ट आन्दोलन हो चुका है । इसीका परिणाम है कि लोग इसको मानने लगेकि पर्दाप्रथाको उठा देना चाहिये । इसको रखनेके हिमायती बहुत कम देखनेमें आते हैं। यह बहुत बड़ी नैतिक विजय है। दूसरा स्टेज प्रतिज्ञा और तीसरा व्यक्तिगत असहयोग है। समाज सुधारकी समितिने चौथे और पांचवें स्टेजको अभी ग्रहण नहीं किया है। अभी दूसरे और तीसरे स्टेजोंसे समाजमें इस आन्दोलनको आगे बढ़ाना चाहती है । आन्दोलनमें प्राण तभी आता है जब कि किसी आदमीको कुछ करनेके लिये उतारू होना पड़े। जबतक व्याख्यानोंका स्टेज होता है विरोध नहीं होता । परन्तु जब कामका स्टेज आता है तो नाना प्रकारकी बातें होनी लगती है । परन्तु बिना इस स्टेजके काम आगे भी नहीं बढ़ता । इसलिये विवश होकर समाज सुधार समितिको यह पग उठाना पड़ा है । हमें विश्वास है कि समाजमें इसे सहयोक मिलेगा। पर्दा प्रथाके विरुद्ध जनमत काफी जाग्रति हो चुका है । अतएव बहुत अधिक इसके संबंधमें लिखनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। परन्तु तो भी जन साधारणको इसके दुष्परिणामोंकी याद दिलाना अनुचित नहीं होगा । मारवाड़ी समाजकी वर्तमान स्थितिमें उसके कल्याणके लिये यह मार्ग अत्यन्त आवश्यक समझ कर ही सम्मेलनने इसको अपनाया है ।

हमारे समाजमें स्त्रियोंकी स्थिति बड़ी विचित्र है । बिना उसे सुधार हुए हम समाजका सुधार नही कर सकते और न समाजको अपने पड़ोसियोंकी दृष्टि मे उठा ही सकते है । जब हमारी स्त्रियां लाखोंके गहने पहन और हजारोंके कीमती वस्त्रोंको धारण कर लम्बासा घूंघट निककाल गीत गाती हुई या यों ही निकलती है तो अन्य समाजोंके हृदयमें डाह-दुर्भावना और घृणा उत्पन्न होती है । आधुनिक जगतमें ये स्त्रियां बिलकुल खप नहीं पाती । लाखोंके जेवर और वस्त्र हमार वैभव दूसरोंकी निगाहमे कांटेकी तरह चुभते है । उनका घूंघट तथा अन्य व्यवस्था उन्हें असभ्य अशिक्षित और गवारोंके दायरेमें डालती है । इससे हम दूसरोंकी निगाहमें नहीं उठते । अगर पर्दाप्रथा उठजायतो न स्त्रियां ऐसे वस्त्रोंकी ओर और न ऐसे जेवरोंको पहनेगी । लाखोंकी बचत होगी । पोशाक और जेवर आजके सभ्य जगतके अनुकूल हो जायेंगे ।

आज हमारी स्त्रियां सभ्य समाजकी स्त्रियोंसे मिल नहीं सकतीं । जिसके कारण हमारा समाज प्रान्तमें घुल मिल नहीं सका । प्रान्तीयता जिस द्रुत अगतिसे बढ़ रही है, इस बातकी आवश्यकता है कि हम प्रान्तवासियोंके साथ समरस हो जायेंपरन्तु जबतक हमारा स्त्री समाज प्रान्तीय समाजसे मिल नहीं सकता उनके साथ जीवनमें किसी समय भी शामिल नहीं हो सकता, जबतक उसके बीचऔर हमारे बीच गहरी दीवार रहेगी । हम कदापि समरस नहीं हो सकते । सदा दूसरे रहेंगे । पर्दा उठनेसे हमारी स्त्रियां भी प्रान्तीय भाषा सीख सकेंकी । प्रान्तीय महिलाओंसे मिल जुल सकेंगी और दूसरोंकी निगाहमें ऊंची उठ सकेंगी ।

पांच सात वर्षोंमें भारतवर्षमें साम्यवादी भावनाओंका प्राधान्य होगा । सरकार उनके हाथमें होगी । लोगोंकी आमदनी कम हो जायगी । स्त्रियोंको भी जीवन संग्राममें भाग लेना पड़ेगा । देश अब स्वतन्त्र हो गया है। यदि कल युद्ध छिड़ गया तो पुरुषोंको जाना पड़ेगा। स्त्रियोंको देशका शासन-भार ग्रहण करना पड़ेंगा । क्या हमारी स्त्रियां पर्देमें रहकर उसमें भाग लेने योग्य अपनेको बना सकेंगी ? क्या जीवन संग्राममें वे अपना भाग ले सकेंगी ? क्या संसारके किसी भी सभ्य देशने ऐसा किया है । साम्यवादके पूर्ण प्रभाव होनेपर पुरुष इतना नहीं कमा सकेगा कि वह कमावे और स्त्रियां भी बिना कुछ काम किये मुफ्तमें खाना खाया करें ।

इसके अतिरिक्त स्त्रियोंके स्वास्थमें काफी सुधार हो जायगा । विवाहके कुछ वर्षों बाद ही हमारी स्त्रियां पीली पड़ जातीं हैं। सौंदर्य चला जाता है । थाइसिस आदिकी शिकार होती हैं। शिक्षा और दूसरे कामोंके अभावमें गृह-कलहकी प्रधानता हो जाती है। उनमें शिक्षाका प्रचार भी नहीं हो सकता।

भारतवर्षमें ही तो , गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, आसाम, बंगाल, और मद्रास जैसे बड़े-बड़े प्रान्तोंमें भी स्त्रियोंको पर्दा नहीं है । क्या वे हमारी स्त्रियोंसे प्रत्येक दिशामें ऊंची नहीं हैं । क्या हम कह सकते हैं कि नैतिक दृष्टिमें भी हमारी स्त्रियां उनसे ऊंची हैं । हम यही चाहते हैं कि भारतीय स्त्रियां जिस तरह बिना पर्देके अन्य प्रान्तोंमें रहती हैं, वैसे ही हमारी हमारी स्त्रियां भी रहें । हम पाश्चात्य देशोंकी नकल करना नहीं चाहते । उनकी बुराइयोंको ग्रहण करना नहीं चाहते ।

जबतक कन्याका विवाह न हो जाय, तबतक वह किसीसे पर्दा नहीं करती । विवाहके समय ही उसे पर्देमें डालकर उसकी जेलयात्राका श्रीगणेश होता है । जो आजन्म कारावासकी तरह घर की चहरदिवारीके अन्दर उसे कैद करके रखता है । विवाहके समय पर्दा नहीं हो उसपर इसी लिये जोर दिया जाता है कि यदि इस समय पर्दा नहीं होगातो फिर उसका पर्दा छूट जायगा सदाके जिये । इसका असर भी समाज पर बहुत पड़ता है। क्योंकि विवाहादि अवसरोंपर बहुत सैख्या में आदमी एकत्रित रहते है और उसके ध्यानमें यह बात आती है ।

थोड़ेमें इतना कहना पर्याप्त है कि पर्दाप्रथा न तो आर्य संस्कृतके अनुकूल है क्योंकि यह तो मुसलिम संस्कृतिके साथ हमारे यहां आया है और न यह धर्मके प्रतिकूल है । क्योंकि कोई शास्त्र इसको समर्थन नहीं करता । न इसको हटानेसे से किसीको रुपये पैसेकी हानि है । न किसीको नैतिक दृष्टिसे ही कोई नुकशान है । थोड़ी सी झिझक है जिसके दूर करते ही समाजकाअकथनीय कल्याण है । ऐसी चीजको समाज न अपनावे तो हमारा दुर्भाग्य होगा, परन्तु हमारा तो विश्वास है कि समाजके नवयुवक इसे द्रुतगतिसे अपनावें और शीघ्र ही समाजमें इसके विरुद्ध तेज लहर उठनेवाली है । सबाजके विचार शील बन्धु इसमें पवित्र सहयोग दें, यही प्रार्थना है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्वागतं ते महाभाग !

**—: श्री माखनलाल चतुर्वेदी :—**

जाने कब, किसने जमानेकी स्मृति में 'संघे शक्ति कलौ युगे,—वाली कहावत शामिल कर दी और तबसे आज तक बिना सोचे समझे लोग इस भ्रांतिको दुहराते हुए चल रहे हैं। विचारकी कसौटीपर चाहे जिस युगको कसिये, व्यक्ति और केवल एक व्यक्ति, मिलेगा, जिसके महान गुरुत्वाकर्षणके चारों ओर व्यक्ति समूह सौर मंडलके उपग्रहोंकी भांति चक्कर काटता हुआ पाया जायेगा वह शक्ति सागर पूर्व और पश्चिमके मौलिक मतभेदोंकी अनुकूलतासे गांधी हो, या स्तालिन या ट्रूमैन जैसा कोई और, व्यक्तियोंकी शक्ति धारा उसमें अपना जीवन विलीन कर देनेको विवश है।

अपने जीवनमें समूहकी अपेक्षा गुणको सदा अधिक महत्व देकर महात्मा गांधीने एकसे अधिक बार उपरोक्त भ्रांतिपर प्रहार किया है। और अभी उस दिन गांधी विचार रश्मियोंसे आलोकित आचार्य विनोबा भावे, जब महात्माजीके अकाल अवसानसे अपरिपूर्ण कार्यकी पूर्तिकी उद्देश्यसे दिल्ली पहुंचे, तब उनके साथ उनके दो-चार ऐसे साथी थे जिन्हें याद रखनेमें इतिहास अकसर भूल कर दिया करता है। अतः आज एक बार फिर यह प्रश्न सामने आया कि समूहकी अपेक्षा व्यक्ति को, क्यों न शक्ति एवं सामर्थ्यका स्रोत माना जाये। हां, वह शक्ति स्रोत, निर्मित जमानेका बागी होता है। वह अपना अपना जमाना स्वयं निर्माण करता है। उसके आरोह विन्दुओंको छू सकनेमें सर्वथा असमर्थ लीक लोक चलनेवाले लघु तंतुओंको रीझ और खीझ उसे अपने अभिमतसे विमुख नहीं कर पातीं। जमाना लाचार होकर उसके पीछे चलनेको बाध्य होता है।

विश्वको एक प्रवाह कहा है। प्रवाह तो निम्न गामी ठहरा। युगपुरुष, इस चिरन्तन प्रवाहको जड़त्वके पतन पथसे खींच कर चिन्मय केन्द्रकी ओर मोड़ देता है। राष्ट्रोंके जीवनमें ऐसे ही मोड़ उज्जवलतम अध्यायों का सृजन करता है। बेचारा इतिहास ! विनोबाभाने अभी उसे अवसर ही कह दिया कि वह इनका परिचय लिखे। प्राचीन ऋषियोंके अनुगामी इस साधकने अपनी साधनाके परिणामोंको नीरस और उपेक्षित रचनात्मक कार्योंके दुर्गमें सूमके सोनेकी भांति इस सावधानीसे बन्द कर रखा कि इतिहासके गुप्तचर उसपर डाका नहीं डाल सके। महात्माजीसे मिलनेके वर्ष १९१६ से लगा कर उनके निर्वाण सन् १९४८ तक बत्तीस वर्षोंकी लम्बी अवधि में विनोबाजीने अपने नामको प्रसिद्धि सहित छापनेके लिये समाचार पत्रोंको केवल तीन मौके दिये; और वे तीनोंके तीनों क्षणजीवी। असहयोग आंदोलनकी प्रखरताके बीचो बीच सन् १९२३ में, मध्यप्रांतीय सरकारकी निरंकुशता मध्य प्रांतकी तरुणाईको, राष्ट्रीय झंडेके सम्मान के लिये बलिपथपर चुनौती दे बैठी। नागपुरमें झंडा-सत्याग्रह छिड़ गया। तब एक दिन, जब तत्कालीन सरकारी अधिकारियों ने सत्याग्रहका संचालन करनेवाली समितिको सहसा, गिरफ्तार कर लिया, साधना निरत विनोबाका आसन, झंडेकी मान रक्षाके लिये डोल उठा और सत्याग्रह संचालनका भार संभालनेके लिये बाहर आये। किन्तु दूसरे दिन सत्याग्रह प्रारम्भ करनेके पहिले ही, विनोबा जेल पहुंचा दिये गये। श्री विनोबाके, समाचार पत्रोंके शीर्ष स्थानमें आनेका, यह प्रथम अवसर था, और उसका शुभ प्रारम्भ मध्य प्रांतमें, उनके बलिपथ पर आरूढ़ होनेसे हुआ।

दूसरी बार सुदूर दक्षिणी केरलसे आयी हुई एक दर्दीली पुकारसे गांधीजी बेचैन हो उठे। प्रभुके दर्शनोंसे वंचित हरिजनोंने मंदिर प्रवेशके लिये वहां सत्याग्रह छेड़ रखा था। श्री विनोबा उसके संचालन लिये गुरुवयूर भेजे गये। यह सन् १९२४ की बात है।

प्रसिद्धिका तीसरा अवसर जरा देरसे पहुंचा—सन् १९४० में। किन्तु गौरव और महत्वमें यह सबसे आगे रहा। और उसका यश भी इस प्रांतको ही मिला। सत्याग्रहके कठोरतर अनुशासनोंको पार करनेमें भारतीय जनता सामूहिक रूपसे गांधीजीकी नजरोंमें असमर्थ ठहरी। अतः भारत सरकारकी युद्ध नीतिका विरोध करनेके लिये उन्होंने व्यक्तिगत सत्याग्रहका विकल्प निश्चित किया। आचार्य विनोबा इस यज्ञके प्रथम होताके गौरवसे अभिषिक्त हुए।

राजनैतिक प्रसिद्धिके क्षेत्रमें मची हुई प्रथम आनेकी उस स्पर्धाको देखिये जिसमें त्याग और कुरबानियोंका ढिंढोरा पीटते हुए, उसी पूजा वेदीपर पांव रख कर अपने साथियोंमें श्रेष्ठ दीखनेकी कोशिशों का तांता बंधा हुआ है, जिससे प्रेरणा व क्रिया शक्ति प्राप्त होती रही है; फिर इस व्यक्ति विशेषकी समर्पण भावनाको देखिये जो साधक जीवनके जाने किस आकर्षणसे अभिभूत, प्रसिद्धि और लोक प्रतिष्ठाको आवर्जनकी तरह बार बार ठुकराता आ रहा है।

बम्बई प्रांतके कोलाबा जिलेके गगोड़ा गांवकी भूमि गरबीली है कि विनोबाजीका बचपन उसकी गोदमें खेला। तब श्री विनोबा का पूरा नाम था—श्री विनायक नरहरि भावे। विद्याभ्यासकी लोक परम्पराके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अनुसार सन् १९०७ में बड़ोदाके हाई स्कूलमें आपका नाम लिखा गया। किन्तु विद्रोही जीवनका कंटीला मुकुट पहिननेके लिये राष्ट्रका भविष्य जिन विभूतियोंको वरण करता है, उन्हें शासनकी दीवारोंसे बंधी निर्जीव पाठशालामें पचा नहीं सकतीं। श्री विनायकने बिना कोई डिग्री लिये सन् १९१६ में गुलाम शिक्षा प्रणाली पर तिल छोड़ दिया। घर और पारिवारिक जीवनकी सीमायें, पश्चिमके आदर्शोंपर ढले भौतिक उद्योगोंसे देशको समृद्ध बनानेके पक्षपाती पिताका स्नेह, विलासोंसे पटीले पथके सुखमय आकर्षण, साधारण मानवको ललचानेवाली महत्वकांक्षायें—इन सब जंजीरोंको तोड़ते जानेमें ही श्री विनोवा सुख अनुभव करते रहे। उन्हें उस शिक्षाकी तलाश थी जिसके लिये कहा गया है—'साविद्या या विमुक्तये'। सबसे पहले विनोवा फिर उनके शेष दो भाई भी, लोक साधना के महत्तर आदर्शोंकी प्राप्तिके लिये घर छोड़ कर चल दिये।

योग्य मार्ग दर्शककी खोजमें, दीर्घ और तीखे मानसिक संघर्षोंके बाद विनोबा जी सन् १९१६ में घर छोड़ कर काशी पहुंचे। महात्मा गांधी सावरमती आश्रम स्थापित कर चुके थे। पत्र लिख कर आपने महात्माजीसे आश्रममें आनेकी अनुमति चाही। किन्तु प्रतीक्षा सहन नहीं हुई। बिना अनुमति प्राप्त किये, महमान नहीं अतिथिके रूपमें श्री विनायक सावरमती पहुंचे। महात्माजीने अपने आश्रमके प्रारम्भ में ही मानों इस छोटेसे सिद्धि विनायकका स्वागत किया। अपराजित आर्य परम्परा, अपना नन्हासा रूप धर कर मानों सिद्धियों का भडार महात्माजीकी साधनाकी गोदमें सौंपने आयी।

आश्रमवासी विनायकने आश्रमके कर्मठ और कठोर अनुशासनोंकी तपनसे गुजरनेके लिये अपने मन और शरीरको उसी तरह फ़ेंक दिया जिस तरह प्राचीन मुनियोंके, परिचर्याव्यस्त, साधनामय जीवनकी कहानी हम उपनिषदोंमें पढ़ा करते हैं। आज भी विनोबा शरीर श्रमको बहुत महत्व दे रहे हैं। उस दिन दिल्लीके राजघाट पर प्रार्थना सभामें उन्होंने कहा, शरीर श्रम छोड़नेसे ही दुनियांमें साम्राज्यशाही और अन्य शाहियां पैदा हुई हैं। श्री विनायकका यह आश्रमवास कितना श्रद्धामय तपोनिष्ठ एवं अध्ययन शील रहा, यह इस घटनासे व्यक्त होता है :—

दुर्बल अस्वस्थ शरीर विनायकके कठोर श्रम शील किन्तु शिकायत रहित चर्या और परिचर्यासे प्रभावित एक दिन महात्माजीने पूछा—इतने दुबले हो रहे हो; फिर भी इतना सारा काम कैसे कर लेते हो ?

गिने-चुने शब्दोंमें अथाह गहराई लिये हुए उत्तर था—काम करनेकी इच्छा शक्तिसे।

कैसे कहें कि इस शिष्यको अपने समस्त ज्ञानलोकसे उद्भाषित कर देनेकी सात्विक उमाहसे गांधीजीका हृदय भर आया नहीं होगा।

इस तरहसे ज्वाल प्रज्वलित हुई, और चिनगारीसे दीपमानकी परम्परा जागृत की गयी।

मध्य प्रांतमें गांधीजीके मत, पथ और व्रतके एकनिष्ठ प्रचारमें अपना जीवन खपा देनेवाले स्वर्गीय देशभक्त जमनालाल जीकी अनन्य सेवाभावनासे सन् १९२१ में महात्माजी द्वारा वर्धा आश्रमकी स्थापना की गयी। विनोबाजी इसके प्रधान आचार्य होकर साबरमतीसे वर्धा आश्रम लाये गये।

महात्मा गांधीकेवाससे गौरवान्वित सेगांव (वर्धा) जिस तरह सेवाग्राम बन गया, उसी तरह सेवाग्रामसे पांच मील दूरीपर अवस्थित पौनार ग्राम जिसे हरिजन सेवाकी सुविधाके लिये विनोबाजीने चुन लिया विनोबाके चरण पड़ते ही परमधाम बन गया। मानो, अपनेको जीते जी गाड़ देनेवाले आचार्य विनोबाने सन्त तुकारामकी वाणीको दुहराकर कहा—

आवुले मरण, पहिले मीं डोला।
(अपनी मौत, मैंने अपनी आंखों देखी है।)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा प्रज्वलित अभिनव ज्योति अपने अंतःकरणमें आलोकित किये, आचार्य विनोबा, महात्माजीके महाप्रस्थानके अनन्तर स्वतन्त्र भारतके हृदय प्रदेशको द्वेष और कलुषसे निर्मल बनानेका प्रयत्न कर रहे हैं। महात्मा गांधीके अन्यतम साथी स्वर्गीय श्री महादेव देसाईके शब्दोंमें, विनोबा ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी मेधा प्रतिक्षण विकसित होती रहती है। प्राचीन मुनिकी वाणी दुहरायी जाय तो विनोबाका जीवन उस मंत्र को जीवन प्रदान कर रहा है। जिसमें कहा गया है कि:—

चिरन्वै मधुविंदति
चरणस्वादु मुदम्बरम्
चरैवेति चरैवेति ॥

संत तुलसीदासने भगवान श्री रामके मुंहसे अनन्यभक्तकी परिभाषा यों कहलायी है :—

सो अनन्य जाके असि, मति न टरै हनुमन्त
मैं सेवक सचराचर, रूपस्वामि भगवन्त।

उस दिन कुरुक्षेत्र छावनीमें, विनोबा ने शरणार्थियोंके बीच अपने आगमनका उद्देश्य इस प्रकार समझाया—"आप लोगोंको मैं ऐसे देखता हूं जैसे भक्त भगवानको देखता है।

विनोबाके शब्दकोषमें कमजोरी या लाचारीका बोध करनेवाला कोई शब्द आपको नहीं मिलेगा। इस विषयमें उनके विचारोंका ओज इन पंक्तियोंमें अनुभव कीजिये:—

चन्द्रके साथ चन्द्रका वातावरण रहता है। मंगलके साथ मंगलका - वैसे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अन्नं बहु कुर्वीत

## लेखक--आचार्य विनोबा भावे

'अनाज अधिक पैदा करों' यह आज्ञा तो उपनिषदोंने हमें पहले ही दे रखी है। अगर उसका पालन करना है तो उनका योग्य मार्ग-प्रदर्शन करना होगा। उनको सब तरहकी सहूलियतें देनी होगी।

उनको वैज्ञानिक मदद देनी होगी। यह सब काम हमारा है। खेतोंसे अनाज तो पैदा होगा लेकिन दूधके बिना हमारा काम नहीं चल सकता। इसके लिये 'गोपालन' विद्या किसानोंको सिखलानी होगी। जिस देशमें दूधकी नदियां बहती थीं, वहां अब प्रति मनुष्य बड़ी कठिनाईसे ढाई छटांक दूध मिलता है। मध्य प्रान्तके निवासियोंको तो आधा छटाक ही मिलता है। इस दिशामें हमको काफी सुधार करना होगा। 'गोपालन' को कृषि उन्नतिका एक अंग ही मानना चाहिये। घी-दूध शहर वालोंको तो देना ही है। पहले किसानोंके बच्चे उसका उपभोग करेंगे फिर बचा हुआ शहर वालों को देंगे, और वह भी काफी तादादमें देंगे। ऐसा अपनेको करना है।

खेती और गोपालन दोनों बातें किसानों को सहयोग द्वारा सिखानी है। सहयोगके सिवाय दोनों बातें पूर्णरूपसे लाभदायक नहीं हो सकतीं, और आजकी सुसंघटित दुनियामें तितर-बितर किसान टिक नहीं सकता। सहयोगसे आर्थिक बचत होकर पैदावार भी बढ़ेगी। इससे किसानोंमें कार्य कुशलता आयेगी साथ-साथ उनमें नैतिक गुणोंका विकास भी होगा। इसके लिये आवश्यक शिक्षा किसानोंको देनी पड़ेगी।

### किसान और ग्रामोद्योग

परन्तु केवल खेती करके- जिसमें मैं गोपालनको भी मानता हूं--किसानों का जीवन सुखी नहीं हो सकता। इसके लिये ग्रामोद्योगको भी चलाना होगा। हिन्दुस्तानकी जन संख्या बढ़ रही है और खेतोंका क्षेत्रफल अभी बढ़ने वाला नहीं, इसलिये जो जो कच्चा माल खेतोंमें तैयार होता है उससे बनने वाली उपयोगी वस्तु किसानोंके घरोंमें ही बननी चाहिये। किसानोंके विशेषणमें ही यह 'अन्तर्भूत' समझना चाहिये। अर्थात् किसान वह है जो अपना अनाज, साग, फल, फूल, दूध, दही खुद ही तैयार कर लेता हो। खेत जोतनेके लिये बैल बाहरसे खरीदेगा नहीं, अपने घरमें खाद तैयार करके उससे खेती करेगा। अपने घरोंमें नित्य उपयोगमें आने वाली चीजोंको खुद तैयार कर लेगा वही सच्चा किसान है। खेतोंमें लगने वाली सभी खाद घरमें तैयार होनी चाहिये। गोबर जलाया न जाय। मनुष्यके मल मूत्रको घृणास्पद समझकर उसे छोड़ा न जाय और उसका पूरा उपयोग कर लिया जाय।

आखिर किसानोंको ही हिन्दुस्तानका राज्य चलाना है। इसलिये उन्हें जल्दसे जल्द तैयार हो जाना होगा। हमारे मध्य-प्रान्तमें ग्राम पंचायतें होने जा रही हैं और भी प्रान्तोंमें बनेगी। 'स्वराज्य' का अर्थ है 'पंचायती राज्य' और पंचायती राज्य का अर्थ है 'किसानोंका राज्य'। यह पंचायती राज्य चलानेके लिये किसानोंमें संघटन चाहिये। संघटन 'अविरोध' चाहिये। विरोध पर खड़ा किया गया संघटन अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारनेके सदृश्य होगा। 'पांच मुंह परमेश्वर' का अर्थ है कि जब पांचों एक होकर बोलते हैं तो परमेश्वर बोलता है। चार मुख, तीन मुखी परमेश्वर होता ही नहीं। वह बहुसंख्यकोंके साथ भी नहीं रहता। अगर पांच पांडव आपसमें ही लड़ते तो भगवान श्रीकृष्ण उनके साथ थोड़े ही रहने वाले थे?

---

मेरे साथ मेरा वातावरण रहना चाहिये। लोग कहते हैं--यह तो कलियुग आया है। किन्तु कलियुगमें रहता हूं या सतयुगमें यह तो तू अपना चुन ले।

तेरा युग तो तेरे पास है। इसलिये हम ऐसा न मानें कि दुनियाकी हवाके सामने हम लाचार हैं। लाचार तो जड़ होता है। हमलोग चेतन हैं, आत्मस्वरूप हैं। हमारा वातावरण हम बनायेंगे।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीके इस सुयोग्य प्रकाशवाहक और उत्तराधिकारी, सन्त एवं लोकनेताका, इन पंक्तियोंके साथ हम स्वागत करते हैं, एवं उनका अभिनंदन करते हैं :—

"नमो परम ऋषिभ्यो, नमः परम ऋषिभ्यः"

१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

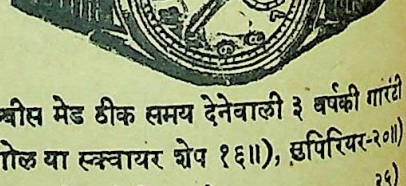

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप १६॥), छपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस- २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस- ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड- ७५)
रेक्टेंगुलर कर्व या टोनो शेप
क्रोमियम केस-४२), छपिरियर-४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त १०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।
एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मौलिक पाठक

श्री हंसकुमार तिवारी

नाम तो अभी याद नहीं आ रहा, पर वह इटलीका ही कोई कवि था शायद जिसे यह प्रसिद्धि मिली कि अपनी रचनामें वह सर्वापेक्षा मौलिक रहा क्योंकि अपनी तमाम उम्रमें उसने एक भी किताब नहीं पढ़ी! हमारी समझमें इसमें न तो शंका की गुंजाइश है, न अचरज की। इतिहास में इसके उदाहरण विरल नहीं। आदि कवि बाल्मीकिके तपोवनमें प्रकृतिकी खुली पुस्तकके सिवाय पुस्तकालय था क्या? दूरकी बात जाने दीजिये, कबीर साहब तो निपट अपढ़ ही थे। बादशाह अकबरको स्वयं उसके बेटे जहांगीरने 'उम्मी' यानी निरक्षर कहा है फिर भी हम देखते हैं कि वाणीके मन्दिरमें उसके भी कविता फूल हैं। सृजनके लिये पुस्तकगत पण्डिताई जरूरी भी नहीं। हां, भावमय प्राण तो चाहिये ही। पच्छिमके कवि शिरोमणि शेक्सपियरके बारेमें कहा जाता है कि वह 'स्माल लैटिन ऐण्ड लेस ग्रीक' जानता था। शरच्चंद्र, डिकेंस, थैकरेकी भी तो पाण्डित्यके लिये प्रसिद्धि नहीं थी। यों साहित्य पढ़कर साहित्यकी सृष्टि तो हो ही सकती है। अखबारोंमें समाचार पढ़कर ही अनेक कवियोंने इतिहास प्रसिद्ध बंगाल दुर्भिक्षपर कवितायें लिखीं। विलास-भवनमें चैनकी वंशी बजाने वाले कलाकार किसानोंके धूलमें सूखने वाले पसीनेपर आकाश-पाताल मिलाने वाले शब्दोंकी माला गूंथ ही रहे हैं! लेकिन अनुभूति सत्य नहीं होनेसे ये रचनायें प्रभावकी मन्त्र शक्तिसे रहित हैं, उन्हें साहित्यके उच्चतम शिखरपर आसीन होनेका सौभाग्य नहीं मिल रहा है। ऐसी दशामें अगर इटलीका एक अपढ़ कवि हो गया, तो असम्भव क्या हुआ? चूंकि स्वाध्याय नहीं होनेसे वह पराये प्रभावसे वंचित रहा, इसलिये उसकी मौलिकता भी स्वाभाविक ही है। लेकिन यदि हम नहीं पढ़ने वाले यानी मौलिक पाठककी बात करें, तो आपको हैरानी होगी। हैरानीकी बात भी है। पढ़े नहीं और पाठक हो जाय, इसका तुक नहीं मिलता। मगर यकीन मानिये आप, आपके यहांसे ऐसे मौलिक पाठक ही ज्यादा हैं।

हमारे साहित्यके लिये आज आम तौरसे एक ही शिकायत है। यह कि साहित्य युगके, जनताके और जीवनके साथ नहीं चल रहा है। परिणाम यह हो रहा है कि जहां उसे बरगदकी तरह सबको अपनी घनी छांहमें लाना था, वहां वह ताड़की तरह अपनी जीर्ण काया और क्षीण छाया लिये आप ही उदास खड़ा है। यह शिकायत सर-आंखोंपर। तर्क पेश करनेका जरिया भी क्या हो सकता है? किन्तु जब हम यह सोचते हैं कि आखिर यह शिकायत किनकी ओरसे है, तब ताज्जुब होता है और तभी हमारे सामने मौलिक पाठक आ जाते हैं। एक दोके हिसाबसे यह जाना गया है कि हमारे इस विशाल जनसमूह वाले देशमें सैकड़े दस तो साक्षर हैं और जो साक्षर हैं, उनमें भी हजारमें एक शायद मुफ्तखोर पाठक है, जो दोस्तों की मंगनीकी पुस्तकसे अथवा निःशुल्क वाचनालयसे पुस्तक पढ़ता है। खरीदकर पुस्तक पढ़ता हो, ऐसा पाठक तो दस-पांच हजारमें एक हो, तो नीमत। यह कोई अत्युक्ति नहीं। आप साक्षरोंकी संख्या देखें और तब किसी प्रतिष्ठित प्रकाशककी मशहूर किताबकी खपतका लेख। दूध पानी अलग हो जायगा। लिहाजा रोगमें आजमाये बिना जैसे दवाकी लानत-मलामत भगवान् भरोसे वाले रोगी करते हैं, उसी तरह साहित्यपर असफलताका फतवा हमारे मौलिक पाठक दिया करतेहैं!

हमारे यहां आधुनिक बातें अनेक अपना ली गयी हैं और उन्हें जीवनका अनिवार्य अंग बना दिया गया है। प्रत्येक सभ्य परिवारमें घरेलू बजटमें सभी चीजों पर एक आनुमानिक व्यय शामिल है। खान-पान, वस्त्र-आभूषण धर्म-कर्मकी बात छोड़ दें। शहरोंमें बसने वाले शायद ही कोई हों, जिनका सिनेमा, प्रदर्शनी, खेलोंके मैच, नाटक, खिलौने आदिमें प्रतिवर्ष कोई न कोई रकम खिसक नहीं जाती हो। मगर हम ऐसे सौभाग्यशाली लोगोंकी दुबली सूची लिये डोलते चल रहे हैं, जिनके घर माह वर्ष या कई वर्ष पर कुछ किताबें खरीदी जाती हों। यह हम निरक्षरोंके लिये नहीं कह रहे, उनके लिये साहित्य सत्संगका युग लानेके लिये तो हमें आजादीकी लड़ाईसे कम कठोर तपस्या नहीं करनी है। यह रोना तो उन्हीं के नामपर है, जो लिखे-पढ़े हैं, जिन्हें विद्या-व्यसनके नामपर किसी न किसी विश्वविद्यालयने उच्च प्रमाणपत्र दिया है और जो शेक्सपियरका एक नाटक पाठ्यबुकमें पढ़कर, अध्यापक महोदयो वाचके अनुसार बिना पढ़े ही कालिदास, भवभूति और प्रसादको महत्वका कलाकार ही नहीं मानते, शेलीकीट्सकी चार कवितायें पढ़कर ही निराला, महादेवी, जानकी वल्लभके गीतोंको तुच्छता कह चलते हैं और प्रेमचन्द, शरच्चन्द, भगवतीचरणे की किताबें न खरीदकर व्हीलरके स्टालसे अमरीका और इंगलैण्डकी सस्ती पुस्तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मालाकी कोई एक खरीद कर बैठककी मेज सजा लेते हैं। ऐसे घरोंमें हिन्दी पुस्तकोंकी खपत कम होती ह, उनके थोथेपनकी ही चर्चा ज्यादा होती ह। ये भी मौलिक पाठक ही हैं।

कैसा साहित्य होना चाहिये, यह तो बेशक एक महत्वका प्रश्न है। लेकिन वह तो जैसा उचित हो, वैसा ही होगा, पर इन मौलिक पाठकोंके लिये तो चाहे जैसा भी साहित्य हो, उनकी निजी मौलिकता पढ़नेकी बनी रहेगी। क्योंकि जीवन में उन्होंने स्वाध्यायको कोई भी, कैसा भी स्थान नहीं दिया। हफ्तेमें सिनेमा जरूरी है, उसके टिकटके लिये बजटमें गुंजाइश हो जाती है, किताबके लिये सालमें दस-पांच रुपये भी नहीं निकलते। बहुत लोग ऐसे वक्त देशकी आम गरीबीकी आड़ ले बैठेंगे। इसी गरीब देशमें एक-एक शहरमें कई-कई सिनेमा घर चलते हैं और रोज जगहकी शिकायत ही रहती है। इसी गरीब देशमें अनेक नाइट क्लब, नाच-घर, बार और शराबखाने चलते हैं, प्रसाधन सामग्रियोंकी जितनी चाहे दूकाने खुलती और चलना कौन पूछे, वे दौड़ने लगती हैं। किन्तु इसी देशमें पत्र-पत्रिकायें अल्पायु होती हैं। प्रकाशक फेल मारते हैं, किताबकी दूकान ढूंढ़ेसे मिलती हैं। क्यों? इसलिये कि जीवनके लिये सबसे कम जरूरी चीज किताब ही मानी जाती है। देश और संसारके इस घोर आर्थिक संकटकालमें भी अभी मलमलके बिना शराफत नहीं बच पा रही है, मगर ऐसे संपन्न घरमें एक भी अच्छी पुस्तक नहीं, यह कहते या अनुभव करते न हमें ग्लानि होती है न मर्यादाहीनताका खयाल होता है। शारीरिक स्वस्थताके लिये हम बहुत कुछ करते भी हैं, मानसिक स्वस्थताकी बात भी नहीं सोचते। एफ्रेड नोबलने इतनी रकम जमा कर दी ह कि हर साल उसके सूदसे ही लाख-लाखके कई पुरस्कार दिये जाते हैं। स्कूल कालेजकी डिग्रीको ही हम ऐसी पूंजी मान बैठे हैं कि उसका सूद खाकर ही चिर जीवन हमारा मन मोटा और वह मगन वह लगा। और इस एकांगी दृष्टिकोण अथवा अर्द्ध स्वस्थताके नशेसे क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं, यह हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं।

रस्किनने उधार ली हुई पुस्तक पढ़नेकी मनाही की है। उसका कहना है, जब तुम मांग कर चीजें पढ़नेके आदि होंगे तो जैसी भी चीजें तुम्हारे हाथ आयेंगे, टढ़ोगे। इस आदतसे बिल्कुल नहीं पढ़नेकी आदत कहीं अच्छी है। कमसे कम खराब चीजें तो नहीं पढ़ोगे। किन्तु जब तुम खुद कोई किताब अपने दाम पपर लोगे, तो बार बार उसकी अच्छाई और उपयोगिता पर तुम्हारा ध्यान रहेगा। ईश्वरको धन्यवाद है कि रस्किन जसा विवेचक अपने इस देशमें नहीं हुआ, नहीं तो मुश्किल ही होता। हमारे यहां जो थोड़ी सी स्नेह सहानुभूति बेचारे साहित्यको मिल जाती है, उसका विशेष श्रेय मुफ्तखोर पाठकों को ही है। मुफ्तखोर पाठक हैं, तभी लेखकों का सृजन श्रम थोड़ा बहुत धन्य हो पाता आप एक अखबार या एक सजनी माया खरीद कर रेलसे चलें। गंतव्य स्थान तक पहंचते पहंचते वह सारे डब्बेमें एक बार घूम ही नहीं जायगा, लापता भी हो जा सकता है! खैनीके बारेमें सुनते थे कि लाखके आदमी भी टकेवालेके आगे हाथ फैलाते नहीं हिचकते। पत्र-पत्रिकाओंके लिये तो करोड़पति भी मंगते हो लेते हैं! चांदीके डिब्बेमें रुपये दो रुपयेका पान होगा, अब्दुल्ला इम्पीरियलका एक भरा डब्बा होगा, हर स्टेशनपर चाय और पकौड़ी का श्राद्ध होता चलेगा, मगर होगा नहीं उनके पास एक अखबार, एक पत्र, एक पुस्तक। यह पुस्तक ही एक ऐसी चीज है जिसकी जरूरत नहीं पड़ती, बाकी तो सब जरूरी ही है।

जहां ऐसे मौलिक पाठक ही भरे पड़े हैं, वहां मौलिक साहित्यका रूप और स्वरूपका विचार भी हो क्या और हो भी तो उससे किस लाभ की संभावना हो सकती है? क्या पढ़ना चाहिये और कैसे पढ़ना चाहिये, यह सवाल तो उठ सकता है, जब पढ़नेवाला हो। इमर्सनकी राय है, पुस्तक वही पढ़ी जाय, जो कमसे कम साल भरसे मशहूर हो और अच्छी हो। रस्किनका कहना है, पुस्तकें जानकारकी सलाह लेकर पढ़नी चाहिये, विज्ञापन देख कर नहीं। लार्ड लिटनका विचार है कि विज्ञापनकी नयी एवं साहित्यकी पुरानी पुस्तकें ही पढ़नी चाहिये। यह सब कुछ जायज है, किताबोंकी महत्ताके अनेक प्रमाण अनेक उपदेश दिये जा चुके हैं। किसीने कहा, नर्क भी मिले तो स्वीकार है, बशर्ते वहां पुस्तकें मिल जायं। राजा बलि बेचारा तो विद्वानोंके साथ नर्क जाना भी कबूल कर चुका। किताबसे अच्छा ज्ञानी क्या हो सकता है। आलमारियोंमें अच्छे ग्रन्थ रखनेका अर्थ ही है विभिन्न विद्वानोंके साथ बसना। इन सब कुछके बावजूद पुस्तकें ही संसारमें सबसे ज्यादा उपेक्षित हैं। धनकी असारता सब कोई जानते कहते हैं, पुस्तकोंके गुणगान में सभी सहस्रमुख हैं, फिर भी संसारमें पुस्तकोंकी पुस्तक लिखनेवालेकी वैसी प्रतिष्ठा वैसा सामाजिक स्थान नही है। राम जैसे आदर्श पुरुषोत्तम मर गये, बाल्मीकि न होता तो, उनकी गंध भी न होतीं; पांडव जैसे पराक्रमी और कृष्ण जैसे योगिराज आज नहीं है, व्यासने उन्हें घर पर अमर कर रखा है। मगर ऐसोंकी उचित उच्चता समाजमें कहा है?

आचार्य विनोबाने अपने एक प्रवचनमें कहा है साक्षरताकी महत्ता, उसकी सार्थकतामें हैं, और सार्थकताके लिये उसके संक्षिप्त रूपकी जरूरत है। इसी विचारसे ऋषियोंने वेदोंको ओम् में संक्षिप्त कर दिया था, वाल्मीकिके शतकोटि श्लोकोंका सार ओम्में सीमित किया गया था, महाभारत जैसे प्रकांड ग्रन्थका सारांश व्यासने एक श्लोकमें दिया था। यह बात बहुत ठीक है, किन्तु उस सूत्रको जाननेके लिये ही आवश्यक हो जाता है। स्वाध्यायके बिना भावना और बुद्धिका उपयुक्त योग जीवनमें नहीं आ सकता। इस कर्म कठोर जगतमें हमें पुस्तकोंका आधार चाहिये। जब तक इसे हम जीवनका ही एक अंग नहीं मान लेते, अपने कर्त्तव्योंकी तालिकामें स्वाध्यायको भी स्थान नहीं देते, तब तक अमृत जैसी दुर्लभ एक मंत्र जैसी शक्तिशाली वस्तुसे यह जीवन और जगत् वंचित रह जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# आधुनिक उर्दू कवितामें प्रगतिवाद

( गतांकसे )

लेके इक चंगेजके हाथों से खंजर तोड़ दूं,
ताज पर इसके दमकता है जो पत्थर तोड़ दूं।
कोई तोड़े पर न तोड़े मैं ही बढ़ कर तोड़ दूं,
ऐ गमे दिल क्यय करूं, ऐ बहशते दिल क्या करूं ?

अली सरदार जाफरी ने भी अपनी जवानीक जोश दिखाते हुए कहा है :-

जमाने का सितम हरदम रहा है राजदां मेरा,
भरा है ऐसे ही कांटों से सारा गुलिस्तां मेरा।
हकीकत से मेरी क्यों बेखबर दुनियाये फरमाती है ।
बगावत काम मेरा नाम मेरा नौजवानी है।

तनिक भी गम्भीरतापूर्वक देखनेसे स्पष्ट हो जाता है कि क्रान्तिके इतने उग्र रूपके ख्वाहां इन सभी नौजवान शायरोंमें कुछ विचारशीलताके बजाय सस्ती भावुकता ही अधिक है ।

और इसी लिये इनके विद्रोहके इस भयंकर स्वरूपको देखकर जीवनसे मोह करनेवाले व्यस्क्तियोंके हृदयमें भय उत्पन्न हो जाता है। वे ऐसी कविताको समाजके लिये खतरेकी चीज समझते हैं। देश, जाति और समाजके पुराने आदर्शोंको उखाड़कर उनके स्थानपर नवीन आदर्शोंकी प्रतिष्ठा करनेकी चेष्टा करनेवाले साहित्यमें इतना उथलापन और सस्तापन अच्छा नहीं मालूम होता। इन क्रान्तिकारी कवियोंमें अपनी बातको दिलयें गहराईसे तारनेके लिये थोड़ी विचारशीलताकी अधिक आवश्यकता है ।

उपर्युक्त जोशीले विद्रोही कवियोंके अयपरिक्त दूसरे वर्गके कुछ कवियोंने भी प्रगतिवादकी ओर गदा बढ़ाया है हाफीज जालन्धरीकी कुछ नयी कविताओंमें देशकी गरीब रजाक रक्त चुसनेवालोंके प्रति विद्रोहकी ज्वाला धधक ही है। एहसान बिन दादिशने 'अयोध्याकी शाम' 'साधु की चिन्त' 'मुफलिसकी ईद' 'मजदूरकी बेटीकी रुखसत' आदि विषयोंपर हृदयद्रावी कविताएं लिखी हैं। अपनी रिक्शावाला' कवितामें उन्होंने दिल्लीकी गर्म सड़कोंपर बरसते अंगारोंमें रिक्शा चलाते-चलाते मर कर गिर पड़ने वाले एक गरीब रिक्शावालेका बड़ा करुणाजजनक चित्र खींचते हुए "समदर्शी" और न्यायकारी ईश्वरपें अविश्वास करते हुए कहा है :-

है अगर यही इन्सान तो खुदा नहीं ।

निराशा और दुःखकी हद हो जानेसे सचमुच एक ऐसा समय आ जाता है जय अपने युग-युगके दुःख-दर्दको सुनने वाले आराध्य देवपर से भी उसकी आस्था हट जाती है। मुस्लिम सभ्यता और संस्कृतिके पक्के हिमायती सीमाब सहबने भी भारतवर्षकी गरीबीके कुछ चित्र खींचे हैं "मजदूर" की दुर्दशाका वर्णन करतुते हुए वे लिखते हैं :-

हड्डियों में तेज चलने से चटखने की सदा,
दर्द में डूबे हुए मजरूम टखने की सदा।
पांव मिट्टी की तहों में मैल से चिपटे हुए,
एक बदबूदार मैल चीथरा बांधे हुए,
मुजमीहल वामान्दगी से और फाकों से निढाल
चार पैसों की तवक्कों सारे कुनबे का ख्याल।

उर्दूके इन सभी प्रगतिशील कवियोंने भारतवर्षकी गरीबीका चश्मा अपनी आंखोंपर चढ़ाकर ही जीवन को देखा और समझा है। प्रगतिके अन्य पहलुओंपर इन्होंने दृष्टिपात नहीं किया। हिन्दुओंके जीवनसे विशेष परिचित होनेके कारण विधवाम-विवाह, अछूत आदि की समस्याओंपर इन कवियोंने लेखनी नहीं घिसी है। मुसलमानोंकी सामाजिक कुरीतियों अन्धर धर्मान्धित पर भी कलम कुल्हाड़ा उन्होंने नहीं चजाय है। हिन्दू मुसलमानोंकी एकतापर अवश्य कुछ कवियोंने प्रकाश डाला है। जोश साहब एक नये धर्मकी बुनियाद डालनेका दावा करते हुए अपनी "भूखा हिन्दुस्तान" नामक कविता में वे कहते हैं :-

आह एक दिल भी तेरे इफलास का हिलता नही,
अब तो एक रोटीका टुकड़ा भी तुझे मिलता नहीं ।
हिन्दुओ मुस्लिम नहीं उठते तेरी इमदादपर,
तुझ है ऐसी बेहमीयत खलफ नऔल पर ।
हाय क्या करना था इनको और क्या करते हैं ये,
गाय और बाजेपर लड़नेके लिये मरते हैं ये ।

आगे उन्हींका कहना है :-

ड ल दूंग तरह नौ अजमेर औ परय ग में,
झोंक दूंग कुफ्रो ईम को धधकती अ ग मे ।
कौसरो गंग को एक मख्दज पै ल ने के लिये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नय संगम बन ऊंग ज़म नेके विलए ।
एक दीने नौ की लिक्खूंग कित बें जर फिश ां,
सब्त होग जिसकी जर्रों जिल्द पै हिन्दोस्तां ।

जोश की प्रगतिशोलत की एक विशेषत यह है कि वह र ष्ट्रीयत क एक बहुत गहर रंग लिये हुए होनेपर भी अत्यन्त प्रभावश लिनी है । अपनी एक कवित में तो उन्होंने अपनी र ष्ट्रीय भावन को बहुत स फ करके रख दिय है । स रे संस रक स्वप्न देखनेव लेसे उनक कहन हैं :-

कौन कहत है जमीनों अ स्म ां तेर नहीं,
कुल जहां तेर मगर हिन्दोस्तां ठुर नहीं ।
सबसे पहलि मर्द बन हिन्दोस्तां के व स्ते
हिन्त ज ग उठेग फिलर म रे जहां के व सते ।

हमें उनके दृष्टिकोणतपर केवर इतन कहन है कि अ जके सस रमें भारतवर्षकी समस्य एं दूसरे देशोंकी समस्या ओंसे इतनी गधिक उलझी हुई है कि हम उन्हें सबसे अलग रखकर सुलझानेका विफल प्रयास मनहीं कर सकते ।

नवीन प्रगतिशील कवितापर एक बहुत बड़ा दोष यह लगायाजाता है कि उसमें काव्य-सौंदर्यकी कमी है । अलंकारों और कल्पपनाकी ऊंची उड़ामको ही कविता समझनेवालोंको की दृष्टिमें यदि ऐसा ही है तो आश्चर्यकी बात नहीं । किन्तु उन्हें समझना चाहिये कि आजके संघर्षमय जीवनमें चूड़ान्त डूबा हुआ कवि कठोर वास्तविकताओंघी की उपेक्षा करके दूरकी कौड़ी लानेपर बैठे सबैठे शब्दोंसे खिलवाड़ करनेको ही कविता नहीं समझ सका ।

---

# समाज हितैषी ध्यान दें

(ले० श्री रामेश्वर लाल धूत)

हमारे मारवाड़ी समाजमें सुधारक महानुभावोंने रोजाना अखबारोंमें समाज सुधारके नामपर जो आंदोलन कर रखा है उनका विषय है–स्त्रियोंका पर्दा उठाना, दहेज प्रथा बन्द करना, हरिजनोंका मन्दिर प्रवेश कराना, और विधवाओंका पुनर्विवाह कराना । समाजमें जो बुराइयां आ गयी हैं, उनको जड़ मूलसे मिटाना हर एक सुधारकका कर्त्तव्य है । किन्तु मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि जिस समाजकी आर्थिक अवस्था एक दम छिन्न भिन्न हो रही हो, व्यापारके सब साधन नष्ट प्रायः हो रहे हो, बेकारीका दौर दौरा हो, उस समाजके सुधारकोंकी सबसे पहिले समाजकी आर्थिक अवस्था सुधारनेकी चेष्टा होनी चाहिये । किस योजना द्वारा समाजकी आर्थिक अवस्था सुधर सकती है, वह समाज के सामने लाके समाजका बताना चाहिये । किन्तु दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि इस बहुत जरूरी मसलेकी तरफ कोई भी महानुभावका ध्यान तक नहीं जा रहा है । मैंने इस विषयमें हमारे समाजके एक प्रतिष्ठित सुधारक महानुभावसे लिखा पढ़ी भी की थी । जिस एक बुराईके कारण समाज की आर्थिग अवस्था खराब हुई है उसका सुझाव मैंने उनके सामने रखा था । किन्तु बहुत दिन हो गये मेरे इस सुझावका उन्होंने उत्तर भी नहीं दिया । यह क्या बुराई है उसका समाजके सामने वर्णन करता हूं । वह बुराई है–फाटका व्यवसाय रूपी वाड़ोंका अड्डा । यह जुआ रूपी व्यापार जबतक समाजसे नहीं उठाया जायगा तबतक हम लोग अपने पूर्व पुरखाओंकी व्यापारिक प्रतिष्ठाको फिरसे नहीं प्राप्त कर सकते । आज समूचे हिन्दुस्तानमें व्यापारमें जो हमारी प्रतिष्ठा है जो कि अब नाम मात्र की रह गयी है । उन पुरखाओंके परिश्रमका ही फल है । हमारे अब जो यह फाटके व्यवसाय हैं, इन्होंने हमको सत्यानाशमें मिला दिया है । इसलिये अब समूचे समाजका जो कि किसी भी वर्ग का क्यों न हो सबसे पहिले समूची ताकत इन जुआ रूपी अड्डोंको उठवानेमें लगा देनी चाहिये और यदि यही व्यवसाय आप चालू रखेंगे तो याद रखिये समाजके और सुधार तो कभी आप पार पटक ही नहीं सकते किन्तु रहा सहा और व्यापार धंधा जो हमारे हाथमें है उसको भी खो बैठेंगे । क्योंकि जिस समाजका व्यापारिक साधन जहां जुएके रूपमें ही रह गया हो उस समाजमें कोई भी सुधारकी बात तो बहुत दूर की है, उलटा रोज रोज नयी नयी बुराइयां जरूर पैदा होती रहेगी । उसका परिणाम फिर क्या होगा वह आप लोग खुद ही सोचिये । अब मैं समाजके सामने उन महानुभावोंसे प्रार्थना करता हूं जिनकी यदि चेष्टा होगी तो यह बुराई समाजसे उठनेमें तनिक भी देर नहीं होगी ।

( १ ) सबसे पहिले मैं उन महानुभावोसे प्रार्थना करता हूं जिन्होंने इधरके पचीस तीस वर्षमें अपना समूचा दिमाग इन जुआ रूपी अड्डोंको स्थापित करनेमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ही खर्च किया है। आप लोगोंका परिश्रम आप लोगोंको सफलता दे चुका है। परमात्माकी कृपासे आप लोग कोट्याधीश बन चुके हैं, चाहे समूचा समाज छिन्न भिन्न हो गया हो, आप लोगोंका मननोरथ तो पूरा हो चुका है। अब भी समाजकी तरफ दया करके यदि आप इन जुआ रूपी अड्डोंको उठानेमें जी-जानसे जुट जायें तो समाजका बहुत बड़ा उपकार आपके द्वारा हो सकता है। इस फाटके रूपी बुराईको उठा कर समाजको यदि आप असली व्यापारी उद्योग धंधोंकी तरफ लगा दें तो समाजकी आर्थिक अवस्था बहुत जल्दी सुधर जायगी। और इस महान पुण्यका फल आपको ही मिलेगा।

(२) अब मैं समाजके मध्य श्रेणीके महानुभावोंसे प्रार्थना करता हूं। आप लोग कितने दिन इस भूल भुलैयामें पड़े रहेंगे। जरा आप लोग सोचिये आप लोग कठिन परिश्रम किसी व्यापार दलाली या नौकरी द्वारा करके कुछ उपार्जन करते हैं किन्तु इस फाटके रूपी जालकी तरफ वे समझे बूझे लखपति, करोड़पति बननेकी धुनमें फंस कर सब कुछ कठिन परिश्रमसे उपार्जन किया हुआ धन दे आते हैं। जिसका अनुभव तो आप लोगोंको रोज ही हो रहा है। किन्तु जरा चेतो और निगाह करो कि इन फाटकेके अड्डोंके सृष्टि-कर्त्ता कैसे होशियार हैं। जरा ध्यान दो उनलोगोंने कैसा जाल फेक रखा है, जिसमें आप लोगोंको रोज ही वेवफूफ बनना पड़ता है और वह लोग सब करोड़पति इसके द्वारा बनके अपने तो अच्छे अच्छे धंधा खोजके बैठ गये हैं जिससे उनको अब कोई नुकसान उठानेका मौका ही नहीं आता और आप लोगोंकी वेवकूफीका फायदा वह लोग अब भी जब इच्छा करते करते हैं तब उठाते रहते हैं। आप लोग रोजाना सिरपर हाथ धरके पछताते रहते हैं; इसलिये यदि आपको अपने कल्याणकी इच्छा हो तो सबसे पहिले इस जुआ रूपी अड्डेसे आपको अलग हो जाना चाहिये और फिर आपको अपने समाजके पूर्व सुधारकोंकी करनीको याद करना चाहिय, जिन्होंने अपने मेहनत मजूरीसे व्यापारको चलाकर हिन्दुस्तान भरमें हमारे समाजका नाम ऊंचा किया था और उस मेहनत मजदूरी द्वारा ही खुद तो करोड़पति बने ही थे, अपने समाजको भी हजारों परिवारोंको उन्होंने बनाया है। उन्हीं महानुभावोंकी करनीका फल है कि आज इस कलकत्ता महानगरीमें हमारे समाजके हजारों आदमी व्यापार करके इतने बड़े बने हैं। आप लोग शायद यह कहेंगे वह तो पुराना जमाना था मेहनत मजूरीसे ही आदमी करोड़पति बन सकता था। अब उन पुराने साधनों द्वारा आदमीका काम कैसे चल सकता है! यह आप बिलकुल भूल कर रहे हैं। यदि मनुष्य मेहनत मजूरीके व्यवसायमें जुटा रहे तो वह हमेशा सुखी रहेगा ही और पूर्व जन्मका अच्छा संचय हो तो करोड़पति भी बन सकता है। ऐसा भी उदाहरण मैं बहुत पुराना नहीं, अभी इधरके पचीस तीस वर्षके भीतरका ही दे रहा हूं। जबकि समाजका एक अंग इन जुआ रूपी अड्डोंको चलानेमें ही अपना समूचा दिमाग लगा रहा था। उसीके साथ साथ समाजके कुछ महानुभाव समाजके सामने यह उदाहरण पश कर रहे थे कि मेहनत मजूरीके व्यवसायसे मनुष्य करोड़पति भी बन सकता है। वे महानभाव थे आज कलके उन्नतिशील फार्म कहानेवाले फार्मोंमें सेठ सूरजमल नागरमल फार्मके मालिक सेठ बन्शीधर जालान। जिन्होंने एक गरीबकी हैसियत भी अपने जीवनमें देखी और अपने ही परिश्रमके फलसे करोड़पति बने और ऐसे आधुनिक उद्योग धंधे स्थापित किये जिस कमाईका फल आज उस फार्मके सुयोग्य संचालक भोग रहे हैं। अब आप महानुभाव खुद ही सोचिये कि मेहनत मजूरी करनेवाला कभी दुखी रह सकता है? ऐसे ऐसे महानुभावोंको करनीका अनुसरण यदि हम लोग पहले हीसे करते तो आज हम लोगोंकी यह दशा कभी नहीं होती। अब भी समय है हमलोग चेतें और इन जुओंसे अपना नाता तोड़ कर सच्चे उद्योग धंधोंकी तरफ लग जाय। अब मैं समाजके सुधारक महानभावों से यही प्रार्थना करता हूं कि आप लोग यदि इस एक महान फाटका रूपी बुराईको उठवानेमें जी-जानसे लग जायें तो बहुत जल्दी आप सफल होंगे और बाकी आपकी जो सुधार योजनायें हैं इस एक बुराईका सुधार होते ही सब अपने आप सफल हो जायेंगी। आशा करता हूं, समाजके सब बन्धुगण मेरी प्रार्थनापर ध्यान देंगे।

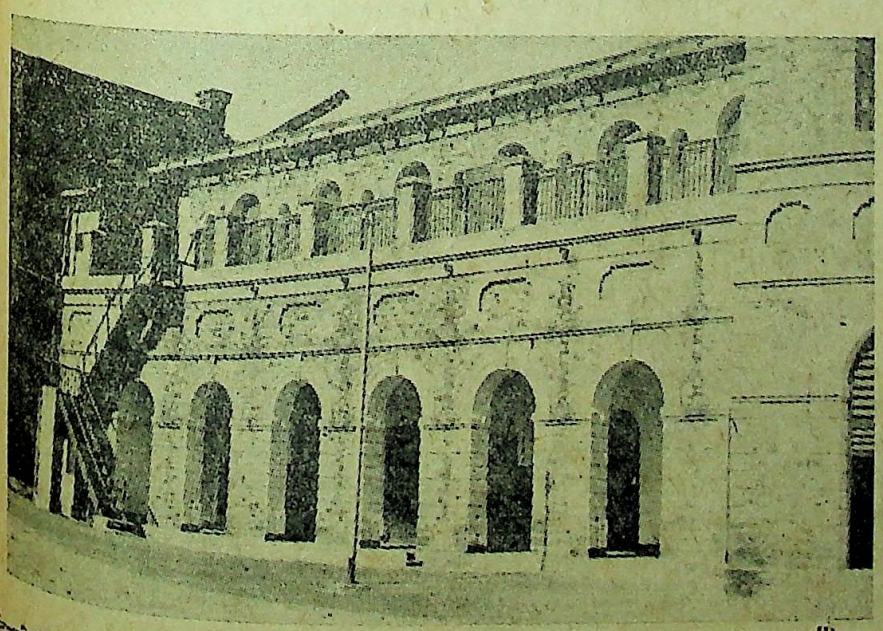

दिल्लीके लाल किलेका वह स्थान जहां महात्मा गांधी हत्याके केसकी सुनवायी होने वालीहै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारे कृषि श्रमिक

( लेखक :—प्रो० महेचंद्र , प्रयाग बिश्व बिद्यालय )

दक्षिणी भारत में खेती का काम करने वालों की यूनियन स्थापित हुई हैं। श्री के० जी० शिवस्वामी आदि के परिश्रम स्वरुप इन यूनियनों का एक संघ बन गया है। इस संघने ढाई दर्जन मागों को पेश किया है। इनमें से सात उल्लेखनीय हैं। प्रथम, प्रत्येक प्रदेश में मजदूरी, भोजन, रहने का स्थान आदि के नियंत्रण के लिये उपयुक्त व्यवस्था की जाय। द्वितीय, कामके घंटे, छुट्टी और अवकाश का नियंत्रण किया जाय। तृतीय, लम्बे पैमाने के खेतों पर काम की हालत की देखरेख करने के लिये मजदूर समितियां स्थापित की जाय। चतुर्थ, दूसरों के द्वारा ठेके पर मजदूर रखने की प्रथा बंद कर दी जाय। पंचम, सामूहिक निश्चय, निपटारा और पंचनामे की प्रथा चालू की जाय। षष्टम, सरकारी और स्थानीय बोर्ड के इकरार नामों मे मजदूरों—बिशेषतः औरतों और बच्चों के लिये उपयुक्त मजदूरी को स्थान दिया जाय। सप्तम, प्रत्येक प्रकारकी कृषि—दासता का अंत कर दिया जय।

भारतमें कृषक और कृषि श्रमिकों को ट्रेड यूनियन के ढंग पर चलाने का यह प्रथम प्रयास है। कहा जाता है कि छोटे पैमानो की खेती के कारण तथा बिशाल देश होने के कारण भारतमें कृषि श्रमिकों की ट्रेड यूनियन चल नहीं सकती। इसके अतिरिक्त बारहों मास काम करने वाले कृषि—श्रमिकों की संख्या कम रहती है तथा मौसमी श्रमिकों की संख्या अधिक। अतः कृषि—श्रमिकों की यूनियन की सदस्यता स्थायी नहीं होती। जहां किसान के पास स्थायी श्रमिक होता भी है, उसकी संख्या अधिकतर एक (या दो) होती है और वह भी किसान के घर में ही रहता है। घर में रहने के कारण मालिक—मजदूर के मध्य एक प्रकार का सहयोग स्थापित हो जाता है। यदि ऐसा न भी हो तो यथार्थ कारण रहते हुए भी मजदूर के लिए यह कठिन होता है कि वह मालिक का सफल बिरोध करे। कनाडा और अमरीका में तो कृषि श्रमिकों की ट्रेड यूनियन नहीं है। पिछले अस्सी साल में इंग्लैण्ड, यूरोपीय देश और आस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड आदि देशों में कृषि—श्रमिकों की ट्रेड यूनियनें बनी परन्तु अन्तिम दो देशो को छोड़ कर वे कही सफल नहीं रही। यों अन्तरराष्ट्रीय श्रम संघ ने सन् १९२१ में ही यह प्रस्ताव पास कर दिया था कि कृषि—श्रमिकों को अपने संघ बनाने की अनुमति दी जाय दक्षिण भारत में कृषि—श्रमिकों को एक सूत्र में बांधने का जो प्रयास किया जा रहा है वह सफल हो, ऐसी हमारी इच्छा है परन्तुअधिक आशा नहीं है।

## कृषि—श्रमिक कौन है ?

कृषि श्रमिकों की समस्या जटिल है। इस समस्या पा बिचार करते समय बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है कि कृषि—श्रमिक कौन है। कभी बिचार करनेवाले ग्राम्य श्रमिकों की ओर संकेत करते हैं कभी भूमि—रहित श्रमिकों की ओर और कभी उन किसानों की ओर भी जो वर्ष में दो चार महीने बिना काम रहते हैं। मेरे बिचार से कृषि—श्रमिकों में उसकी ही गिनती करनी चाहिये जो किसी रूप में मजदूरी लेकर गांव में ही दूसरों के लिये खेती संबंधी काम करते हैं और इस प्रकार अपनी अधिकांश रोजी कमाते हैं। यह संभव है कि इनमें से कुछ के पास जमीन हो अथवा कुछ दूसरों से जमीन लेकर खेती करते हो। यदि उनकी अधिकांश आमदनी ऐसी खेती से नहीं होती तो उन्हें कृषि—श्रमिक में गिनना चाहिए। सन् १९५१ में जब जनसंख्या के आंकड़े इकट्ठे किये जायं तब ऐसे व्यक्तियों की गणना अलग करनी चाहिये।

## फालतू कृषि—श्रमिक

देश में कृषि बाकारी तथा आर्थिक उन्नति की योजना बनाते समय कृषि श्रमिकों की संख्या में उस श्रमको भी शुधार किया जा सकता है जो छोटे छोटे बिखरे के कारण किसान को खो देना पड़ता है। इस संबंध में एक अनुमान के अनुसार बर्तमान पद्धति पर एक चक में खेती करने पर पुराने बृटिश भारत में कृषि कार्यों के लिये आवश्यक व्यक्तियों और फालतू व्यक्तियों की संख्या निम्न प्रकार रहेगी :—

| | कृषि में कितने व्यक्तियों का कार्य रहेगा (लाख में) | फालतू नर व्यक्तियों की संख्या (लाखमें) |
|---|---|---|
| संयुक्त प्रांत | १२४.२ | ४१.१ |
| बंगाल | १११.१ | ४७.२ |
| मद्रास | ७९.२ | १८.४ |
| बिहार | ७५.८ | २९.४ |
| पंजाब | ४२.५ | ३.४ |
| मध्यप्रांत व बरार | ३५.४ | ०.१ |
| बम्बई | ३०.९ | ४.३ |
| आसाम | २१.० | ५.१ |
| उड़ीया | १९.३ | ४.० |
| सिंध | ६.९ | |
| सीमाप्रांत | ५.० | १.६ |
| अजमेर मेड़वाड़, कुर्ग दिल्ली | १.७ | ०.४ |
| कुल बृटिश भारत | ५५३.१ | १५५.० |

यदि हम भूमि—रहित कृषि—श्रमिकों की ही गणना करें, तो उनकी संख्या भिन्न प्रकार थी :—

| | १८८२ | १९२१ | १९३१ | १९४१ |
|---|---|---|---|---|
| | (डा० ज्ञानचंद का अनुमान) | | | |
| संख्या (लाखमें) | ७५ | २१५ | ३३५ | ६००—७०० |

इस बृद्धि के कई कारण हैं, जैसे, भारतीय प्रचीन उद्योगधंधों की अबनति, खेती का तारतम्य बिगड़ना, बिचवइयों और बटवारों के कारण खेतों का छोता छोटा बिखरा हुआ होना, बर्तमान उद्योगधंधों की कम श्रमवाले ढंगों पर उन्नति और जनसंख्या बृद्धि।

रियासतों के मिल जाने के कारण खण्डित भारत में यही स्थिति मानी जा सकती है अर्थात हम बर्तमान भारत में फालतू कृषि—श्रमिकों की संख्या १५५ लाख मानते हैं। गृहकार्यके लिये अधिक अवकास देनेके हेतु उनको कमाईके कार्यसे मुक्त करना वांछनीय है। इसलिये १५५ लाखमें स्त्रियोंके कारण कोई संख्या जोड़ना उचित नहीं।

फिर भी एक बात विचार करने योग्य है सन् १९३१में जनसंख्याके आंकड़ोंसे यह पता लगाया जा सकता है कि कुल कितने किसान तथा जमींदार किसान थे। और यह भी मालूम है कि कितने कृषि-श्रमिक थे यह कृषि श्रमिक किसानोंकेही तो मजदूर बनते हैं। सन् १९३१ में प्रति सौ किसान पीछे कृषि श्रमिकोंकी संख्या पंजाबमें ७०, बंगालमें ५५, मद्रासमें ५५, बिहारउड़ीसामें ४८, संयुक्तप्रान्तमें ३३,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हिन्दी कवितामें—

# युगवाद और स्थिर सत्य

—श्री—अनिलकुमार—

परिभाषिक दृष्टिसे सत्य स्वम् ही स्थिर है। तब उसके लिये विशेषणका प्रयोग क्यों ? यह प्रश्न लेखका शीर्षक देख कर ही उठ सकता है ; परन्तु 'सामयिक' और सर्वकालीनता' इन साहित्यके दो विभिन्न क्षेत्रोंके कारण सत्य भी बंट कर 'सामयिक' तथा 'सर्वकालीन' हो गया। साहित्य सृजनके समयकी विषयकी स्थिति, या तत्कालीन समाजकी वाह्य व्यवहार प्रणाली जिस ढंगकी होगी उसीका चित्र साहित्यमें सामयिक होगा। निर्माण-कालकी छाया तत्कालीन समाजकी विचार प्रणालीका प्रतिबिम्ब, साहित्यपर पड़ता है। उससे साहित्यको वंचित नहीं रखा जा सकता। किन्तु सामयिकताके सांचेमें साहित्य पूर्ण-रूपेण बन्दी भी नहीं बनाया जा सकता। ऐसा करना उसकी आयु विशिष्ट कालके लिये मर्यादित करना है। अब तकके विवेचकों में किसीकी साहित्यकी आयु किसीके समय के लिये निश्चित करते हुए नहीं पाया गया। ऐसा करना भी आदर्शको अल्पायु सिद्ध करनेका व्यर्थ प्रयास मात्र होगा। संसारके इतिहासमें मानवजातिपर आक्रमण करने वाले कालोंकी संक्षिप्त सीमामें बाध्य साहित्य अथवा काल विशेषके तत्वों, पहलुओं या समस्याओंका विश्लेषण करने वाला साहित्य-सृजन युगवादी साहित्य। कहा जायेगा। उसके आदर्श भी किसी युग तक ही सीमित रह सकनेकी वस्तु हो तो वह सर्वरूपेण सामयिक कहलानेके अतिरिक्त कुछ नहीं। ऐसे साहित्यकी आयु तथा उसकी उपादेयता भी काल ( युग ) तक ही जीवित रह सकती है। किन्तु जब साहित्यमें 'स्थिर सत्य' अथवा 'सर्वकालीनत्व' की चर्चा की जाती है तब हमारे उन आदर्शों एवं सत्योंका निष्कर्ष होने लगता है जिनकी स्थिति ही स्वयम् 'अक्षय' है। 'युग' के सृजनमें ऐसे ही चिर सत्योंका समावेश कर उन्हें 'युग-युग' का घोषित किया जा सकता है। यही नहीं, युगके बाद युग बदलनेपर भी उसकी उप योगिता विश्वके लिये आवश्यक ही रहीं तो वह स्वयम् 'स्थिर सत्य' की संज्ञा पा जायेगा। अर्थात साहित्य निर्माणकालीन होते हुए भी विश्वके 'अनन्त' और अक्षय का पल्ला पकड़ कर काल और युगोंको लांघ सकता है। वह सामयिक होते हुए भी 'सर्वकालीन' बन सकेगा !

इन प्रश्नों पर भारतके प्राचीन कवियों ने विमर्श किया था अथवा नहीं इसका नुअसंधान लगानेका बोझ तो हम नहीं उठाना चाहते। यही देखनेका प्रयत्न करेंगे कि उनका सहस्रों वर्ष पूर्वका सृजन आज मनुष्य समूहको आदर्शका प्रकाश दे सकता है या नहीं ? वेदों और उपनिषदोंसे लेकर कालिदास-भास तक उधर पूर्वमें विद्यापति, चंडीदाससे रविबाबू तक तथा उत्तरमें कबीर तुलसीसे प्रसाद तक इस कसौटीपर काव्य साहित्य खरा उतरता गया। अपने आविर्भाव कालमें वह मानवको जिस परिमाणमें प्रकाश दे सका, वह अब भी न्यून नहीं हुआ। यहीं सर्वकालीनकी परीक्षा पूर्ण हो जाती है। परन्तु विकास-क्रमके छोरोंका गठन ठीक होनेपर भी मध्यभागमें अपेक्षित शिथिलता आ ही गयी। पूर्वकालीन हिन्दी काव्य रामें विकसित पंकजोंकी गंध अब तक व्याप्त रहने पर भी उत्तर-मध्य कालकी कविता आज अस्तित्व विहीन हो गयी। यह उसकी सामयिक रुचिके पागलपनका ही परिणाम है। रुचिके लिये निर्मित साहित्य रुचिके पूर्ण होने तक ही जीवित रहनेका अधिकार रखेगा। अधिक कैसे ? सामंत-कालीन कविताका स्रोत इसी कारण शुष्क पड़ गया। अब यदि मिलती है तो उसकी वहम गतिकी शुष्क रेखायें। उनका उद्रेक जिन शैल शृंगोंसे विसृत हुआ उनमें सलिलका अपार स्रोत दुर्भाग्यसे नहीं था। कबीरकी वाणी आज भी सजल रसमय है। सूरके पदोंमें प्रगीतात्मक अभिनव संगीत है। मीरा तन्मयताकी धुन दे रही परन्तु रीति-कालीन कविता वर्तमानके लिये क्या प्रस्तुत कर रही है। यही बात आजके काव्यगत संविषयोंके चनावके सम्बन्ध है। भारतके अतीतकालीन संघर्षोंसे उसका वर्तमान घर्ष अधिक प्रखर, अधिक कराल है।

---

और बम्बईमें ३२ थी। इस तरह समूचे भारतकी औसत संख्या ५२ होती है। फलतः यह आशा की जा सकती है कि कहीं कृषि-श्रमिकोंको लाभ नहीं मिलता होगा और कहीं उनकी कमीकमी पड़ती होगी यह किसी हदतक ठीक भी है। तब भी कृषिकार्यमें कुछ ऐसे कार्य होते हैंजब हर जगह श्रमकी कमी महसूस होती है। कुछ हदतक यह कमी श्रमके तुप्रवाससे दूर हो जाती है। यह आश्चर्यकी बात नहीं है किक यह प्रवास हर प्रकारके क्षेत्रों में होता है क्यप ? यथा सूखेसे सींचे क्षेत्रोंकी ओर, मैदानोंसे पहाड़ियोंकी ओर (विशेषतः जहां चाय, काफो, रबर, आदि की खेती होती है ) और अंदरूनी प्रदेशोंसे सुहानेवाले क्षेत्रोंकी ओर फिर चाहे वह लंका ही क्यों न हो। तब भी कहीं-कहीं श्रमकी कमीके कारण उपज बन्द हो गयी है जैसे तंजोरमें धानकी दूसरी फसल। अतः स्पष्ट है कि यदि वर्तमान ढंग रहा तब फालतू कृषि-श्रमिकोंको इस प्रकार अकृषि कार्य देना होगा कि वे समयपर कृषि कार्यके लिये प्राप्त हों या ऐसे कार्योंके लिये मशीनके उपयोगकी व्यवस्था और प्रयत्न करना होगा। या उन कार्योंको इस प्रकार स्थगित कर के किया जाय कि अधिक श्रमिकोंकी आवश्यकता न पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और हिन्दी कविताका अमर स्रोत अतीतके संघर्षोंसे ही प्रसूत होता रहा है। तब इस संक्रमण कालमें हमारा सृजन क्षणजीवि कहलानेका अधकारी क्यों बनें ?

राष्ट्र और समाजके सामने आज जिन समस्याओंके दूत खड़े हैं उनसे समाज और राष्ट्रके आजके मानवको समझौता करना ही है। इसी समझौतेके फलस्वरूप साहित्यज्ञोंका सृजन भी होगा। किन्तु समस्यायें हल हो जानेपर उनकी ऋतु बीत जानेपर सके आधारसे लिखे गये साहित्यका क्या मूल्य रह जायेगा ? वह तो तत्कालीन समस्याओंका शव कहलायेगा ! यदि समस्याओंके बीच उन बीजोंको बो दें जिनके वृक्ष युगों तक समाजको छाया देते रहते है, तो वह साहित्यिक प्रयास समाज-पुरुष के आकर्षणका केन्द्र बनेगा। 'अभिज्ञान-शाकुतलम' महाकविका इसी प्रकारका प्रयास है। रीति-रास पूर्ण आभा होते हुए भी विद्यापतिका स्थान मध्यकालीन रीति-ग्रंथकारोंकी भांति मामूली नहीं क्योंकि वह तो विरह मिललनके बीच क्रमणका संदेश भी देता रहता है--

कमल मिलल दल
विहग चलत गृह
मधुप गहल निज ठामें!
अरे रे पथिक जन
करिय रे थिर मन
बड़ पांतर दुर गामें !

लक्ष्य दूर हुआ तो क्या ? पथिकका मन स्थिर रहे ! सृष्टि विरामका संकेत कर रही है। उसके जीवोंने संकेतका सहर्ष स्वागत करते हुए 'गृह' तथा 'निज ठामों' का चुनाव भी कर लिया और किन्तु कवि मनुष्यसे विश्रामकी ओर असक्त होनेकी अपेक्षा नहीं रखता। वह स्मरण दिला देना चाहता है कि मनुष्य दूर देशका वासी है। लम्बा पथ उसे पार करना है। विश्राम गतिमें अवरोध बनेगा !

सर्वकालीन कविताके विषय मुख्यांश में यौवन जनित विरह-मिलनकी शृंगार भावना और भावित्तरूती अध्यात्म ही रहे हैं। लोक जीवके संचालक विराट् शक्ति ईश्वरका अवलम्बन इसके लिये जितना स्वाभाविक तथा सर्वकालीनकी दृष्टिसे


प्रतिसप्ताह ६आ. खर्च करने पर भी
ऐसे क्यों दिखते हैं ?

• अधिकांश व्यक्ति हफ्ते में नाई से केवल तीन ही हजामत बना सकते हैं। इसमें ६ आना तक खर्च हो जाता है और फिर भी वे सात दिनों में से चार दिन इस व्यक्ति की तरह दिखते हैं--हजामतविहीन और खुरदरे !

पैसे बचाते हुये
आप ऐसे
कब दिखेंगे ?

• बुद्धिमान व्यक्ति जो प्रतिदिन स्वयं "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड से हजामत बनाता है उतनी ही कीमत में अनेक हजामतें बना लेता है जितने में दूसरा व्यक्ति तीन बनाता है। इन ब्लेडों का एक पैकेट हफ्तों चलता है।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड तीन स्तरों में सर्वश्रेष्ठ इस्पात से बनाये जाते हैं ! कोई भी दूसरे ब्लेड न तो इतने चलते हैं और न इतनी चिकनी हजामत बनाते हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock
SLOTTED BLADES
"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड्स
ब्लेड जो ज्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं

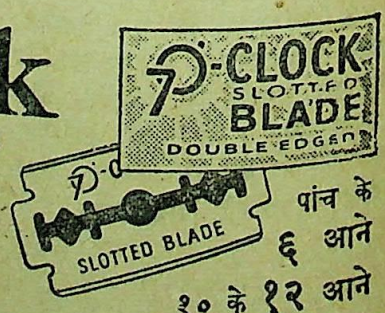


पांच के ६ आने
१० के १२ आने


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लक्षित्यगम्य था उतना ही यौवनका आकर्षण भी है। व्यक्तिकी सत्तामें यौवन क्षणिक और नश्वर होनेपर भी विश्वका वह स्थिर सत्य है। यौवन ही विश्वका विकासका मूल है। उसे विकृत बनाकर आत्मघात भी किया जा सकता है। यह बात दूसरी है। इसी तरह स्नेह, वात्सल्य, ममता, आदि मानवी विकारोंकी सृष्टि भी साहित्यकी काल सीमा पार करनेमें समर्थ है। पतझरके गर्भमें मधुरितुका मासल मधुमय विकास, ग्रीष्मकी निश्वासोंका वर्षा द्वारा शमन; क्रम तो सृष्टिके आदिकालसे और प्रलयकी घड़ी तक चलेगा। अथवा इस क्रमका अवरोध ही प्रलयकी कल्पना बनेगा। तब इन सृष्टिके स्थिर सत्योंका चुनाव साहित्यके विषयमें ढाल कर उसमें स्थैर्य क्यों न लाया जाय ?

वर्तमान हिन्दी कवितामें गये दस वर्षोंमें नवीनता और सृजनकी बहुलताकी दृष्टिसे यह जो बाढ़ आ रही है उसकी स्थिरताका हमें निर्देश करना है। छायायुगके शिथिल होते ही विषय शैली और दृष्टिकोणमें अद्भुत परिवर्तन हुआ। धाराने करवट खूब बदली परन्तु निरंतर विकसित होनेका गुण क्षय हो गया। प्रगतियुगके विषयोंकी ओर देखनेसे उसके विकास-शैथिल्यका अनुमान शीघ्र ही हो जाता है। सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक विषमता, नारीकी वैवाहिक समस्या, पुरुष द्वारा नारीके अवरोधका विरोध, फुटकर कुछ-गीत और भारत वंदना इन्ही विषयों की सीमामें आजकी कविता चक्कर काट रही है। इनमें एक भी ऐसे विषयका स्थान नहीं है जोग हजार-पांच सौ वर्ष तक कविताओंमें स्पन्दन भर सकेगा। अभी-अभी इसी शताब्दिके अर्धपूर्वार्ध में आधुनिक हिन्दी कविताको 'पंत' द्वारा 'परिवर्तन' और 'प्रसाद' द्वारा कामायिनी के रूपमें जिन स्थिर सत्योंका कोष मिला उसकी कांक्षा तो मानवको चिरकालसे थी, है और रहेगी।

नारीकी वास्तविक स्थिति भारतीय समाजमें अबतक इससे अधिक भली नहीं रही—

म जभी तोलनेका करती
उपचार स्वयम तुल जाती है;
भुजलता फंसाकर नरतरुसे
झूले सी झोकें खाती हूं !

परन्तु आगे चल कर कवि नारीके लिय आदर्श भी देता है —

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत-नग पगतलमें ;
पीयूष-स्रोत सी बहा करो
जीवनके सुन्दर-समतलमें !
'कामायिनी'

यही युगकी सीमासे मुक्त गतिशील सत्य 'परिवर्तन' मे विचारोंकी भूमिपर पुष्ट होता हुआ दिखायी देता है।—

मूंदती नयन मृत्यु की रात
खोलती नव जीवन की प्राप्त;

तरसते हैं हम आठों याम,
इसीसे सुख अति सरस प्रकाम;
झेलते निशि दिनका संग्राम
इसीसे जय अभिराम !
अलभ है इष्ट, अतः अनमोल,
साधना ही जीवनका मोल !
'परिवर्तन'

मृत्यु संसारका प्रथम और अन्तिम कुतूहल है। इसी कुतूहलकी तृप्तिकी कामनाने अट्ट ग्रंथोंका विराट भंडार मनुष्यकी बुद्धिके सम्मुख रखा। पर वह कुतूहल मिटा उकतेमें अबतक मनुष्य असमर्थ ही साबित होता आया अस्तु कवि संक्षिप्त शब्दोंमें मृत्युका कुतूहल हल करने लगा—

जगत जीवन का अर्थ विकास,
मृत्यु गतिक्रम का ह्रास !

आल्हाद-विषादके पट-परिवर्तनोंमें जीवन विकासित होता रहा। एकमें दूसरे, का विकास, दूसरेमें पहलेका अस्त !

आजका दुख कलका अह्लाद
और कलका सुख आज विषाद !
दिना दुखके सब सुख निस्तार,
बिना आंसूके जीवन-भार;
दीन-दुर्बल है रे संसार—
इसीसे दया, क्षमा औ प्यार !
'परिवर्तन'

वर्तमान हिन्दी कवितामें जिन समस्याओंको लेकर सृजनका तूफान प्रलय मच रहा है, वे समस्याएं केवल दस-बीस साल की हैं। समस्याओंका आकर्षण हट जाने पर कविता जैसे स्थायित्वके क्षेत्रमें उनका क्या महत्व रह जायेगा 'पाकिस्तान की समस्या पर लिखी गयी कविताओंका महत्व क्या आज उतना ही रह गया है जितना कि उनके निर्माण कालमें था ? रोटी और भूखकी समस्याएं भी १०० वर्षसे अधिक की नहीं। तब इनका साहित्यमें प्रादुर्भाव आग्रहके साथ क्यों हो ? और इन समस्याओंको लेखनी द्वारा न चुननेके कारण साहित्यज्ञोंको क्यों कर लांछन लगे ? विषयकी सीमा जहांतक विस्तृत है वहीं तक उसका महत्व भी बना रह सकता है। सामयिक साहित्यका भी अपने समयमें महत्व है और सबसे अधिक है। इसे मानते हुए समयको लांघनेवाला साहित्य भी सृजित हुआ करें इसे भूलनेका कदापि प्रयत्न नहीं करना चाहिये। ऊंचे विस्तीर्ण सघन वृक्षोंकी ही नहीं दूबोंकी भी महत्ता प्रकट ह परन्तु सर्वत्र दूबोंके हरे हरे मैदानोंका ही आग्रह रखना अव्यावहारिक ही नहीं असंगत है। अपने अपने क्षेत्र, स्थान व महत्वमें दूब और विटप दोनोका अस्तित्व महत् है। सामयिक साहित्यके निरंतर सृजनके रुपमें दैनिक और साप्ताहिक पत्रोंका प्रकाशन मुख्य है। उसमें दृष्टिगोचर होनेवाला साहित्य साप्ताहिक और दैनिक जीवनकी आवश्यकताओंसे संबंधित है। परन्तु अन्न वस्त्रका समस्याएं हल हो जाने ही से जीवन की आकांक्षा तृप्त नहीं होती। वह 'पूर्णत्व' को प्राप्त नहीं करती। यह नहीं कि सामयिक साहित्यका कोई महत्व नहीं। उसकी स्थितिसे भी समाज एकदम वंचित नहीं नहीं रखा जा सकता। किन्तु केवल सामयिकताका ही अनिवार्य रूपसे आग्रह करना नितांत भ्रममूलक है। और यह जो स्थायी साहित्यके प्रति आजकल विराग उत्पन्न किया जा रहा है उसकी जड़ भी इससे दूसरी बातमें नहीं !

देशकी परिस्थिति भयंकर हो रही है। नेताओंका मार्गदर्शन पथभ्रष्ट हो रहा। अन्यायके व्याल गरल उगल रहे हैं। सियार शेरकी खाल ओढ़ कर टट्टीकी ओट शिकार खेल रहें। इन सबके बीच पिस रही है निम्न और मध्यम श्रेणीका मानवजाति ! इसीको लेकर साहित्यके स्थिर एवं प्रलयंकर सत्यों का उद्घाटन किया जा सकता है। सामयिक परिधिमें रखकर भी उसे विस्तृत किया जा सकता है परन्तु यह भी आज किस संख्यामें हो रहा है ? मुख्य बात तो हमारी अनुभूतिकी शिथिलता है ! उ

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




टी. बी. T. B. "तपेदिक" फेफड़ेका हो, या अंतड़ियोंका, बड़ा भयंकर रोग है

| पहली स्टेज | दूसरी स्टेज | तीसरी स्टेज | चौथी स्टेज | अन्तिम स्टेज |
|---|---|---|---|---|
| मामली ज्वर खांसी | ज्वर-खांसी की अधिकता | शरीर का सूखना ज्वर खांसी की भयंकरता | हालत खराब, दस्त आदि शुरू जाना | रोगी की मौत भयंकर जमों का इधर-उधर फैलना |
| ( Jabri ) | (जबरी) | ( Jabri ) | ( जबरी ) | |

## (टी० बी०) तपेदिक और पुराने ज्वर के रोगियो देखो—

श्री मान् तीसलहुसेन साहब रईस मौजा मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जि० फैजाबादसे अपने ताजे पत्रमें लिखते हैं कि—आपके यहां से जिस रोगीके लिये दवा 'जबरी' हमने मंगाई थी, बहुत लाभ हो रहा है, हम तो समझते थे कि इस भयंकर रोगकी कोई भी दवा नहीं है। परन्तु आपकी दवा 'जबरी' ने हमारे विचारको बदल दिया। यथार्थ में 'जबरी' इस रोगके लिये आश्चर्यजनक शक्तिशाली औषधि है, हमारी तरफ से आपको हार्दिक धन्यबाद है। परमात्मा आपको दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की दे।

श्री नागेश्वर प्रसाद तिवारी—मास्टर स्कूल नड़ुगावां पो० "डालटनगंज" बिहार से लिखते हैं। मैं अनेक दिनोंसे ज्वर खांसी से बीमार था बलगम आदि की परीक्षा पर तपेदिक (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोगका नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया। इसी बीच परमात्माकी कृपासे आपकी अमृतरूपी दवा 'जबरी' का नाम सुना। मैंने तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवाको विधिपूर्वक सेवन किया, उसके अमृतरूपी गुणोंने मुझे आश्चर्यमें डाल दिया, थोड़े ही दिनोंमें शरीरका रंग ही बदूल गया, ऐसा मालूम होने लगा जैसे कुछ रोग ही नहीं रहा। अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थमें आपकी औषधि इस दुष्ट रोगके लिये अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा कीजावे कम है।

इसी प्रकारके पचासों प्रशंसापत्र पहिले भी आप इन्हीं कालमोंमें देख चुके हैं, भारतके कोने-कोनेमें लोगोंने यह मान लिया है कि इस भयंकर रोगसे रोगीकी जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र 'जबरी' ही है। 'जबरी' के नाम में ही भारतके पूज्य ऋषियों के आत्मिक बलका कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोगके जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि आप सब तरफसे हताश हो चुके हैं तो परमात्माका नाम लेकर एक बार जबरीकी परीक्षा करें, परीक्षार्थ ही हमने १० दिनका नमूना भी रख दिया है, जिसमें आपको तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर देकर रोगीकी डान बचावें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होता है, जब चिड़ियां चुग गई खेत। इसे डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियोंपर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तारद्वारा आर्डर देते हैं। तार आदिके लिये हमारा पता केवल 'जबरी' जगाधरी लिख देना ही काफी है। तारसे यदि आर्डर दें तो अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरोंके लिये जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ानेके लिये सोना, मोती, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिनके लिये २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी-बूटियां है पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिनके लिये ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर में पत्रका हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ साफ लिखें तुरन्त आर्डर देकर रोगीकी जान बचा लें।

पता—रायसाहब के० एन० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (६०) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E.P.)

काफू (रजि०)

हैजे

का रामबाण दवा है

डाबर लिमिटेड, कल.

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage As. 12. Free to 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



( दूसरे पृष्ठका शेषांश )

यहूदियोंकी बस्ती पर किसी तीसरे धर्म वाले हमला कर रहे हैं। १० अप्रैलकी रात के बुलेटिनमें 'मर्दों, स्त्रियों और बच्चों' कहा गया था। अच्छा तो यह होता कि 'स्त्रियोंके स्थान पर औरतोंको प्रयोग किया जाता और सारा वाक्य उर्दूका बना दिया जाता। मर्दके साथ तो औरत की ही शोभा है स्त्री की नहीं। इसी प्रकार'..... संयुक्त यूरोप बनानेके लिये यह वाक्यांश भी फारसीके ढंगका है। होना चाहिये 'यूरोपको संयुक्त करनेके लिये' 'यूरोप' से पहले संयुक्त रखने पर तो यूरोपको संयुक्त करनेका काम पहले हीसे पूरा हुआ जान पड़ता है। 'दोपहरके खाने तक' यह वाक्यांश भी हिन्दीके प्रकृतिके विरुद्ध है। सब जानते हैं कि दोपहर खाना नहीं खाती अन्यथा इस वक्यांशका यही अर्थ निकलता कि जब तक दुपहरी खाना खाती रहे तब तक' होना चाहिये था, 'दोपहरके खानेके समय तक'। उर्दूवाले तो खाने पर बुलाये जाते हैं 'लेकिन हिन्दीवाले खाने पर कभी भी न जायेंगे। वे तो– 'खानेके लिये' ही जायेंगे। 'सनीचरको रेलोंमें काम करने वालोंने ....."शनिश्चरके स्थान पर सनीचर ध्यान देने योग्य है। इसके अतिरिक्त उपर्युक्त वक्यांशसे यह अर्थ निकलता है कि केवल वे ही लोग जो शनिवारको रेलों में काम करते हैं। 'सुर्ख पोश' न तो हिंदी है न हिन्दुस्तानी। यह रेड शर्टका उर्दू अनुवाद है। हिन्दुस्तानीमें इसे 'लाल कुर्ती या लाल कमीज' कहते हैं।

५ अप्रैलके एक बुलेटिनमें सुना था 'यदि पार्टियां कट्टर मांगों पर अड़ी न रहें.....।' अभी तक यह कट्टरता साम्प्रदायिकोंका धर्म थी पर अब शब्दोंमें घुसने लगी।

दक्षिण भारतके किसी स्थान पर बापूके चित्रोद्घाटनका समाचार यों सुना गया था—'श्री जान मथाईने गांधीजीके पूरे चित्र पर से पर्दा हटाया, सब जानते हैं कि "शिलान्यास' 'गृह प्रवेश' "मूर्ति प्रतिष्ठा' आदि संस्कारोंकी भांति चित्रोद्घाटन भी एक संस्कार है किन्तु रेडियोके उत्साही पण्डितोंने इस संस्कारका भी अपने ढंगसे संस्कार कर दिया है। रेडियोके इस हिंदुस्तानी करणके आदर्श मान लिया गया तो 'मुंडन' संस्कारके लिये 'बाल बनाना उपनयन' संस्कारके लिये धागा पहनाना और पाणिग्रहण संस्कारके लिये हाथ पकड़ाना लिखा जायगा। किसी बड़े उद्देश्यकी पूर्तिके प्रलोभनमें हिन्दू इस हिंदुस्तानीकरण को मान भी सकते हैं किन्तु क्या किसीको एक क्षणके लिये भी यह विश्वास हो सकता कि प्रोफेसर गुलाम नबी अपने लड़के खतन का निमंत्रण अपने सहयोगी डा० खगेंद्रके पास रेडियोकी हिंदुस्तानी भाषामें भेजेंगे। और यदि थोड़ी देरके लिये मान भी लिया जाये कि प्रोफेसर गुलाम नबी खतनेका निमंत्रण हिन्दुस्तानी भाषामें लिख कर भेजेंगे तो प्रश्न उठता कि जिस प्रकार चित्रोद्घाटन के लिये चित्र परसे पर्दा हटाना लिखता है उसी प्रकार खतनेके लिये प्रोफेसर गुलाम नबी क्या लिखेंगे। अपनी समझमें नहीं आता कि खतनेकी क्रिया हिन्दुस्तानी क्या बन सकती है। संभव है कि रेडियोके समर्थ पण्डित इसकी भी हिंदुस्तानी बना ले जायं। यदि ऐसी आशा कीजा सके प्रो० गुलाम इस तरहका हिंदुस्तानी करण करवा सकेंगे तो संभव है कि किसी रेडियो द्वारा संस्कारोंके उपर्युक्त हिंदुस्तानी करण पर कोई आपित्ति न हो परन्तु बात ऐसी नहीं है। उर्दूवाले कभी भी अपनी भाषाको विकृत न होने देंगे।

उपर्युक्त हिन्दुस्तानीकरण के अतिरिक्त चित्रोद्घाटन सम्बन्धी समाचार कुछ भ्रामक भी है। 'श्री जान मथाईने गांधीजीके पूरे चित्र परसे पर्दा हटाया,' इस वाक्यसे तो यह जान पड़ता है कि श्री जान मथाईने किसी निगूढ़ विषयका स्पटीकरण किया। इसके अतिरिक्त उपर्युक्त वाक्यसे यह भी ध्वनि निकलती है कि किसी और ने गांधीजीके अधूरे चित्र पर से पर्दा हटाया, किन्तु श्री जान मथाईने पूरे चित्र परसे यदि यह भी मान लिया जाय के रेडियोके उपर्युक्त वाक्यसे किसी प्रकार के अन्यथा अर्थका भ्रम नहीं होता, तो भी यह तो माना ही पड़ेगा कि उससे चित्रोद्घाटनका भाव व्यक्त नहीं होता। यदि 'उद्घाटन' शब्दसे बचना ही था तो यह

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGD. NO. C 2229.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वाक्य इस प्रकार भी लिखा जा सकता था, 'श्री जान मथाईने गांधीजीके पूरे चित्र 'आगारका चित्र स्थापित किया' या 'श्री जान मथाईसे गांधीजीके पूरे आकारके चित्रकी प्रतिष्ठा करायी गयी। और यदि हिन्दुस्तानीके लिये दिलमें इतनी तड़प हो कि ये दोनों वाक्य भी हिन्दीके जान पड़ें तो फिर इसे यों भी लिखा जा सकता था, 'श्री जान थाईके हाथसे गांधीजीके पूरे आकारका चित्र टंगवाया गया पर जान मथाईने गांधीजीके पूरे आकारका चित्र खोला। अंग्रेजी शब्द 'अनव्हील' के शाब्दिक 'अनुवाद ( पर्दा हटाना ) ने 'उद्घाट शब्दकी समारोह एवं संस्कार विषयक भावना शब्द पास तक फटकने नहीं दिया।

की हिंदुस्तानी रेडियोमें आज कल इसी प्रकार यदि प्रतिष्ठा की जा रही है। ही सम समय रहते न चेत पाये तो थोड़े

समयमें अपनी भाषा और संस्कृति दोनोंको गवां बैठेंगे। हमारी भाषामें हिंदुस्तानीके नाम पर बड़ी चतुराईसे उर्दू और अंग्रेजीके ऐसे शब्द और मुहावरे भरे जा रहे हैं कि जो भारतके स्वतन्त्र होते हुए भी सदियों तक हमारी पिछली दासताका झण्डा फहरात रहेंगे तथा संसारके समस्त राष्ट्र हम पर उंगली उठायेंगे। वे कहेंगे कि 'भारतीयोंकी अपनी कोई भाषा नहीं है। यदि इन्हें मुसलमानोंसे उर्दू और अंग्रेजीसे अंग्रेजी न मिली तो इन बर्बर भारतीयोंके पास अपने विचार प्रकट करनेका कोई माध्यम ही न होता। और उर्दू, अंग्रेजी मिली हिंदुस्तानीके माध्यमसे जब हम अन्तर्राष्ट्रीय समाज में अपने विचार प्रकट करने बैठेंगे तो इतर राष्ट्रीयजन हमारे मुंह पर थूक देंगे

MONSOON
SETS IN
Anopheles breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मले रिया बुखारके लिये रामबाण है। अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियास कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
Kasaya

KAVIRAJ N. N. SEN & CO. LD.

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट
ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)
व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, पर मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

बड़ी साइजकी शिशियां ।

सोल एजेण्ट्स :
एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सि. मा. की दुनियां का असर रहस्य जाननेके लिये फिल्मी दुनिया पुस्तक आज ही मुफ्त मंगाइये।

पता—मधुर मन्दिर हाथरस यू० पी०

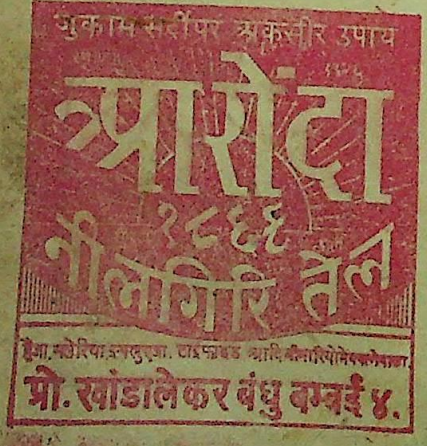


होमियोपैथिक दवाइयां प्रति ड्राम =), =)॥ आनाकी। हरएक बीमारियों की दवाइयां मय बेगूल बक्सीका बक्स और चिकित्सा किताबके डाम १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी
६८ कलकत्ता ब्राह्म स्ट्रीट, भवानी दत्त लेन, कलकत्ता।


७४ धर्मतला स्ट्रीट स्थित इलेस्ट्रेड इंडिया प्रेसमें गोविन्द चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचित्र

# विश्वमित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभुजी, राखो लाज हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वमित्र

सम्पादक—

प्रदीप

३१—२८ CALCUTTA, AUGUST 22, 1948. कलकत्ता २२ अगस्त १९४८ मूल्य =) वार्षिक ६)


## याद

श्री 'नीरज'

तब याद किसीकी आती है !

मधुकर-गुन-गुन -धुनसुन क्षण भर
कुछ अलसाकर, कुछ शरमा कर
जब कमल कली धीरे धीरे, निज घूंघट पट खिसकाती है !
तब याद किसी की आती है !

आंगनके तरु की फुनगी पर
दो तिनके सज्जा सजा कर घर
जब कोई चिड़िया एकाकी, निज उजड़ा नीड़ बसाती है !
तब याद किसी की आती है !

हिल डुल कर पवन झकोरों से
जब ओस फूल के अधरों से
कलिका के खुलते अधरों पर, मृदु चुम्बन-सी धर जाती है !
तब याद किसीकी आती है !

पाकर निशि का तम, सूनापन
जब शशि की एक शरीर किरण
सोते फूलके गालों को हलके हलके सहलाती है !
तब याद किसीकी आती है !

उन्मुक्त झरोखे से आकर !
सिर, मस्तक मेरा सहला कर
जब प्रात उषा की किरण एक सोतेसे मुझे जगाती है !
तब याद किसीकी आती है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मिट्टीकी महिमा

प्रो० केसरी एम० ए०

'यह अनित्य शरीर मिट्टीका बना
व्यर्थ है इसके लिये परिदेवना
भानु-सा वह मनुज ज्योति अखंड है
कीर्ति-गगन-वितान जिसका है तना—'

ज्ञानियोंकी उक्ति यह दुख-शोकमें
प्राणियोंको धैर्य्य-संबल दे रही
किन्तु मिट्टीके लिए भगवान हैं
मनुजकी ममता सदा से रो रही

मोह मिट्टीका भले अज्ञान हो
किंतु लौ जब उतर आती दीपमें
रूप मिलता तब अदृश्य अरूप को
तरल मोती जब समाता सीपमें

एक ज्योति अभी बुझी संसार से
एक मोती उड़ गया रे सीपसे
और आज असंख्य प्राणोंसे विकल
उठ रही चीत्कार जंबू-द्वीप से

किंतु हम रोते नहीं उस ज्योति हित
ज्योति तो अव्यय अनश्वर शाश्वती
रो रहे हैं -हाय ! उस मनु जेंद्र की
अब न वह काया रही सेवा व्रती
अब न । छाया मयी वर दायिनी
दो भुजाएं कल्प-तरु की जाल-सी
वे उंगलियां दग्ध मानव-शीश पर
तापहर श्री खंड मृदुल मृणाल-सी
और वह मुसकान ।—हे भगवान ! फिर

— क्या कभी इस लोकमें संभाव्य है
वह दुआ की देन, जिसकी याद ही
बन रही इस शोकमें भी काव्य है

हाय ! वह मुसकान—जैसे फुलझड़ी
प्रेम—करुणाकी क्षमा की निर्झरी
द्वेष-हिंसाकी आनमामें प्यार की
वह शिखा निष्कंप तुम हरती फिरी
रो रहे हम उस कलवेर के लिए
फूल सा जो और वज्र समान भी
हाय ! मिट्टी वह मरणकी वस्तु थी
किंतु वह इंसान थी भगवान भी !

रो रहे हम उस मरणकी वस्तु हित
जो कि मिट्टी की बनी तस्वीर थी
एक मुट्ठी राख भर वह बच रही
जो कभी इस राष्ट्रकी तकदीर थी
अमर गांधी बाद है—हम जानते
अमर गांधीकी तपस्या-साधना
रो रहे हम किंतु बापूके लिए
हाय ! मिट्टी के लिए यह वेदना !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



* श्री *

परहित बस जिनके मनमाहीं ।
तिन कई जग दुर्लभ कछु नाहीं ।।

# विश्वमित्र

## भारतके मुसलमान

पाकिस्तानकी स्थापनाके बाद भारत के अनेक मुसलमान नेताओंने भारतीय संघ के प्रति अपनी वफादारीकी घोषणा की। अब भी आये दिन हम अखबारोंमें ऐसे वक्तव्य या भाषण पढ़ते रहते हैं, जिनमें विभिन्न प्रांतोंके मुस्लिम नेता यह विश्वास दिलाते रहते हैं कि भारतीय मुसलमान देशके साथ कदापि विश्वासघात न करेंगे। लेकिन घटनाओंकी गति इतनी तेज है कि मुसलमानोंके कोरे आश्वासनोंसे अब काम नहीं चल सकता। काश्मीर और हैदराबादकी घटनाओंने आज जो रूप धारण कर लिया है, उससे भारत और पाकिस्तानके बीच 'अघोषित युद्ध' की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। ऐसी हालतमें भारतके मुसलमानोंको अब एक निश्चित और स्पष्ट रुख अख्तियार करना होगा। यह सर्वविदित है कि पाकिस्तानकी स्थापनामें भारतीय प्रदेशोंके मुसलमानोंने ही मुख्य भाग लिया था। अतएव यदि उनमेंसे अधिकांश आज भी पाकिस्तानसे छिपी नैतिक सहानुभूति रखते हों, तो इसमें कोई विशेष आश्चर्यकी बात नहीं है। हां, यह ठीक है कि पाकिस्तान की स्थापनाके बाद भारतीय मुसलमान भलीभांति उसकी बुराइयां समझने लगे हैं, लेकिन साथ ही यह भी ठीक है कि अभी तक ऐसे मुसलमानोंकी संख्या कम न होगी, जो पाकिस्तानसे हार्दिक और नैतिक सहानुभूति रखते हैं। निस्संदेह ऐसे व्यक्ति राष्ट्र के लिये तो खतरनाक हैं ही, साथ ही अपने

उनकी राष्ट्र-विरोधी हरकतोंके कारण दूसरे लोग भी संदेहकी दृष्टिसे देखे जाते हैं।

जहां तक भारतका ताल्लुक है, प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू अनेक बार यह घोषित कर चुके हैं कि हमारा राष्ट्र अ-साम्प्रदायिक राष्ट्र है और इसमें सभी जातियों और धर्मोंके नागरिकोंके साथ बिना किसी भेदभावके एक समान बर्ताव किया जायेगा। पण्डित नेहरूकी यह घोषणा कोरी जबानी नहीं है। भारत सरकारने कार्यों द्वारा भी दिखा दिया है कि उसके दृष्टिकोणमें कितनी सचाई है। केन्द्र और प्रांतोंमें हमारे अनेक मंत्री मुसलमान हैं। विदेशोंमें भारतके राजदूतों में भी कई मुसलमान हैं। इसके अलावा जिस फौज और पुलिसपर रक्षाकी मुख्य जिम्मेदारी रहती है, उसमें भी बहुतसे मुसलमान जिम्मेदार पदों पर विद्यमान हैं। इससे स्पष्ट है कि मुसलमानोंके प्रति भारत सरकार किस नीति से काम करती अथवा करना चाहती है। लेकिन एक ओर सरकारकी नीति इतनी स्पष्ट हो और दूसरी ओर कुछ मुसलमान भीतर ही भीतर पाकिस्तान और उसके कायदे-आजम से हमदर्दी रखें, तो सरकार पर इसकी प्रतिक्रिया स्वाभाविक है। इस स्थलपर यह उल्लेख भीअप्रासंगिक नहीं होगा कि राजनीतिक मामलोंमें धार्मिकताको घुसेड़ना सर्वथा अवांछनीय है। राजनीतिका सम्बन्ध समस्त देशसे होता है, जब कि धर्म व्यक्तिगत चीज है। भारतकी तरह ही अन्य देशोंमें भी विभिन्न धर्मोंके लोग रहते हैं, लेकिन उनके राजनीतिक कार्य धार्मिकताके आधार पर नहीं होते। उदाहरणके लिए सोवियट रूस और अमेरिकाको लीजिये। इन दोनों ही देशोंमें अनेक धर्मोंके नागरिक निवास करते हैं, लेकिन धर्मके नाम पर राजनीतिक दंगे-फसादोंकी खबरें यहांसे नहीं मिलती। और भी स्पष्ट देखिये। आज फिलस्तीनके प्रश्न पर सोवियट रूसने जो नीति अख्तियार की है, उससे अरब राष्ट्र अथवा यों कहें कि

असंतोषकी प्रतिक्रिया रूसके मुसलमानों पर कुछ भी नहीं सुनी जाती। रूसमें मुसलमानोंकी संख्या बहुत अधिक है। लेकिन जहां तक विदेशी मामलोंका सम्बन्ध है, वे कदापि ऐसा रुख अख्तियार नहीं कर सकते, जो उनके राष्ट्रीय हितके प्रतिकूल साबित हो। इसी तरह अमेरिकामें भी अनेक धर्मों के माननेवाले नागरिक राष्ट्रोत्थानके कार्यों में सम्मिलित रूपसे योग देते हैं। तब भारत में ही हिन्दू और मुसलमान, धार्मिकता के नाम पर आपसमें क्यों सदा कटते रहें? यह धार्मिक भेदभाव तो अंग्रेज शासक ने अपने लाभ के लिये उत्पन्न किया था। लेकिन सौभाग्यसे वे विदा हो चुके हैं। इसलिए उनकी यह 'देन' हमें उनके साथ ही विदा कर देनी चाहिये थी। लेकिन यह संभव नहीं हुआ, क्योंकि चलते चलाते उन्होंने पाकिस्तानकी स्थापना करा कर एक गहरी खाई खोद दी।

और पाकिस्तानके मजहबी नेता आये दिन भारतीय मुसलमानोंकी मजहबी भावना उभाड़नेकी ओछी हरकतें करते रहते हैं। पाकिस्तानी रेडियो हर रोज एक-से-एक जहरीला प्रचार करता रहता है, मुसलमानों पर हिन्दुओंके अत्याचारकी मनगढ़न्त कहानियां सुनाता रहता है। लेकिन सचाई यह है कि भारतीय नेता और खासकर कांग्रेसी अधिकारी इस बातके लिए निरन्तर प्रयत्न कर रहे हैं कि मुसलमानों के हकों और हितोंकी ठीक ठीक हिफाजत हो। इसका सबसे ज्वलन्त प्रमाण यह है कि हैदराबादसे अत्यन्त उत्तेजक खबरें आती रहने पर भी भारतीय प्रदेशोंमें उनकी प्रतिक्रिया नहीं हो पाती। भारतके मुसलमानोंने बड़ी शांतिपूर्वक ईद मनायी। खासतौरसे कलकत्तेमें, जहां किसी समय साम्प्रदायिक संघर्ष अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया था, देखा गया कि मुसलमानोंने बिना किसी रोक-रुकावटके आनन्दपूर्वक त्योहार मनाया। लेकिन कायदे आजमने ईदके संदेशमें क्या कहा? मुस्लिम बन्धुत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मानोंसे अपील की वे पाकिस्तानके दुश्मनके खिलाफ संगठित हों। पाकिस्तानका दुश्मन कौन है ? स्पष्टतः उनका मतलब भारत से है। तो यदि भारतके मुसलमान कायदे आजमके संदेश पर ध्यान दें और पाकिस्तानसे सहानुभूति दिखायें, तो इसका परिणाम क्या होगा ? अतएव आवश्यकता इस बात की है कि भारतके मुसलमान समझदारीसे काम लें और अपने हिताहित का ध्यान रखते हुए अपने विचारों और दृष्टिकोणोंमें स्पष्टता लायें। साथ ही उन्हें मन, वचन और कर्मसे अपनी सचाई और ईमानदारीका ऐसा सबूत पेश करना चाहिये, जिससे पाकिस्तानी नेता उनकी शान और निष्ठाके खिलाफ कुछ भी बोलनेकी हिमाकत न करें। भारतके मुसलमानोंका हित-साधन पाकिस्तानसे कदापि नहीं हो सकता। उनका हित तो भारतका सच्चा नागरिक बने रहने से ही सध सकता है। और जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं, आज काश्मीर और हैदराबाद की समस्याओंने ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है, जिससे भारतके मुसलमानोंकी वफादारी कसौटी पर आ गयी है। इसलिये आज मुसलमानोंको अपने राष्ट्रीय कर्तव्यका ध्यान रखते हुए सच्ची नागरिकताका पालन करना चाहिये।

## सेनामें आजाद हिन्द फौजके सदस्य—

भारत सरकारने आजाद हिन्द फौजके सदस्योंको सेना और प्रादेशिक जन-सेनामें भर्ती करनेका निश्चय किया है। अन्यान्य सरकारी नौकरियोंमें उन्हें नियुक्त करनेका आदेश तो पहले ही जारी कर दिया गया था, लेकिन कई कारणोंसे सेनामें उनकी भर्तीपर प्रतिबन्ध अभी तक बना हुआ था। कहना नहीं होगा कि यह प्रतिबन्ध देशवासियोंको खटकता था। देशके स्वातंत्र्य संग्राममें आजाद हिन्द फौजका एक विशिष्ट स्थान है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोसके नेतृत्वमें आजाद हिन्द फौजने जिस साहस और बल विक्रमका परिचय दिया, वह समस्त संसार के इतिहासमें अपना सानी रखता। ऐसी हालतमें स्वतन्त्र भारतकी सेनामें आजाद हिन्द फौजके सदस्य और अधिक सम्मान पानेके अधिकारी हैं। देशकी वर्तमान स्थिति का तकाजा है कि फौजी शक्ति अधिक से अधिक मजबूत बनायी जाय। काश्मीर और हैदराबादकी समस्याएं अधिकाधिक भीषण रूप धारण करती जा रही हैं। और, लगता है कि इन समस्याओंको शांतिपूर्वक हल करनेका प्रयत्न अब अधिक दिनों तक जारी नहीं रखा जा सकता। इसलिए विशाल भारतीय राष्ट्रकी सैनिक शक्तिको तदनुरूप बढ़ाने और बनानेकी आवश्यकता है। लेकिन सेनाकी शक्ति उसकी संख्या पर ही नहीं, बल्कि अनुशासन पर निर्भर करती है। जहां तक अनुशासनका ताल्लुक है, आजाद हिन्द फौजने जातिगत और धर्मगत भेद-भावोंसे ऊपर उठ कर अपने फौजी कर्त्तव्यों का पालन अत्यन्त ही प्रशंसनीय रूपमें किया था। इसलिए हमें पूरा विश्वास है कि आजाद हिन्द फौजके सदस्योंकी भर्ती से भारतीय सेनाके आदर्श और उत्साहमें एक नयी लहर आ जायेगी।

## शाबाश शेरे काश्मीर—

शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्ला अपने क्रांतिकारी विचारोंके लिए सुविख्यात हैं। अपने अधिकार-ग्रहणके चन्द महीनोंमें ही उन्होंने अपनी कर्तव्यपरायणता और कर्मठताका जो परिचय दिया है, वह सर्वथा प्रशंसनीय है। एक ओर तो काश्मीर कबायल आक्रमणकारियों और पाकिस्तानी फौजों का सामना कर रहा है, लेकिन दूसरी ओर वह अपनी आर्थिक व्यवस्थाके पुनर्गठनकी भी कारवाइयोंमें जुटा हुआ है। वस्तुतः यह बड़ी ही कठिन बात है। लेकिन शेख अब्दुल्ला जानते हैं कि काश्मीर की आर्थिक व्यवस्थामें आमूल परिवर्तन कर जब भीतरी शक्ति सुदृढ़ बना दी जायेगी, तो इससे बाहरी आक्रमणकारियोंको परास्त करना बिल्कुल आसान हो जायेगा। इसीसे उनकी सरकारने जमींदारी प्रथा तुरन्त खत्म कर देनेकी घोषणा की। और, सिर्फ घोषणा ही नहीं की, बल्कि उसे कार्य रूपमें परिणत करनेके प्रयत्न भी जारी हैं। जमींदारी व्यवस्थामें खेतिहर किसान पैदावारका एक-चौथाई भाग पाता था और जमींदार तीन चौथाई भाग। लेकिन अब स्थिति बिलकुल प्रति-[illegible]। जमींदारी प्रथा खत्म करने के सिलसिलेमें पहली कार्यवाही यह की जा रही है कि पैदावारका तीन-चौथाई भाग किसान पाये और सिर्फ एक-चौथाई भाग जमींदार। इस व्यवहारिक परिवर्तनसे किसानोंकी वर्तमान दुरावस्था सुधरते देर न लगी।

## प्रो० भंसालीका अनशन—

सेवाग्राम आश्रमके प्रो० भंसाली ने हैदराबादके रजाकारोंके अमानुषिक अत्याचारोंके प्रतिवादस्वरूप आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया है। अनशन प्रारम्भ करनेके पहले प्रो० भंसाली हैदराबाद जाकर वहांकी वास्तविक स्थिति आंखों देख आये हैं। उनका कहना है कि मदीपल्ली, रेमिडीचेरला, अलीनगर वं अन्यान्य गांवोंमें रजाकारोंने निरीह जनता पर अकथनीय अत्याचार किये हैं। घर के घर और खलीहारोंको भी जला कर नष्ट कर दिया गया है। महिलाओं पर आक्रमण किये गये हैं। प्रो० भंसालीने बड़े ही मर्मस्पर्शी शब्दोंमें कहा है कि उक्त गांवोंकी दुरवस्था देखने पर चंगेज खां, तैमूर और नादिरशाहके अत्याचारोंकी कहानियां याद आने लगती हैं। प्रो० भंसाली कोई राजनीतिक नेता नहीं, प्रत्युत बिना किसी धार्मिक भेदभावके मानवताकी सेवा करनेवाले एक अहिंसाव्रती हैं। ऐसी हालतमें उनके कथनमें अतिरंजनकी तनिक भी संभावना नहीं। लेकिन क्या प्रोफेसर भंसाली के इस आमरण अनशनसे अत्याचारी रजाकारों पर कोई प्रभाव पड़ेगा ? हम तो ऐसा नहीं समझते। हां, भारत सरकारका ध्यान इस ओर आकृष्ट होगा और वह इन निजामी गुंडोंको राहे रास्ते पर ले आने के लिए शीघ्र उचित कारवाई करेगी, इसमें तनिक भी संदेह नहीं। प्रो० भंसाली समस्त हैदराबादकी स्थिति जानना चाहते थे, लेकिन अत्याचारोंकी हृदयविदारक कहानियां सुन कर और एकने एक भयंकर दृश्य देख कर वे ऐसे विचलित हो उठे कि आगे यात्रा न करना ही उन्हों उचित समझा। निस्संदेह इस तपस्वीका अनशन यह प्रेरणा देता है कि भारत सरकार हैदरावादके निरीह हिन्दुओंकी हृदि लेनेमें अब अधिक विलम्ब न कर और निजाम शाहीका तख्त शीघ्राति शीघ्र उलट दे, जिससे कि बीसवीं सदीमें मध्य युगकी इस बबरता का अन्त हो।

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# स्वाधीनताकी मशाल प्रज्ज्वलित रखें

पण्डित जवाहर लाल ने क

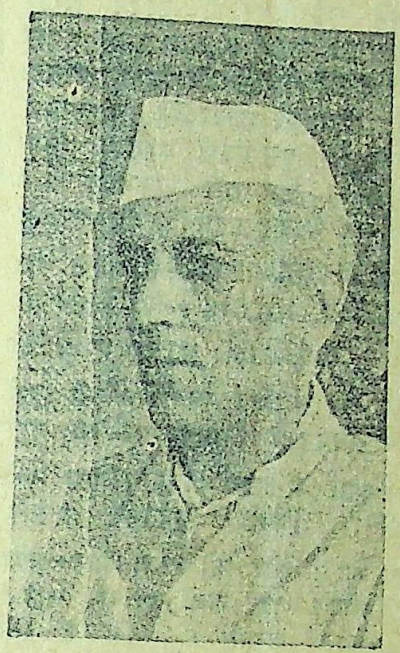

भारतीय स्वाधीनता के प्रथम वार्षिकोत्सव पर प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरूने राष्ट्रको अपना संदेश ब्राडकास्ट करते हुए भय साम्प्रदायिकता और प्रांतीयताके उन्मूलनकी जोरदार अपील की आपने बताया कि भारतका सर्व-प्रधान लक्ष्य संपूर्ण विश्व जिसमें हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान भी सम्मिलित है, — के साथ शांति और मैत्री संबंध स्थापित करना है। आज हम जिस युद्धमें सम्पूर्ण देशका सहयोग चाहते हैं, वह देशकी गरीबी और निर्धनताका निवारण तथा इसके दुखद परिणामोंका सर्वदाके लिये अन्त कर डालना है। मातृभूमिकी सेवा और महात्मा गांधी के आदर्शोंकी पूर्ति के लिये नयी प्रतिज्ञा हमारा कर्त्तव्य है। यदि भारत अपनी उन्नति और विकास चाहता है, जिसे वह अवश्य पूरा करेगा और जो निश्चयहीसम्भव भीहै तो उसे महात्मा गांधीके उपदेशोंका दृढ़तापूर्वक पालन करना होगा।

१५ अगस्तके बाद साल भरकी घटनाओंका सिंहावलोकन करते हुए आपने कहा कि एक वर्ष पूर्व इसी स्थानपर इसी समय देशकी जनताके नाम अपना संदेश ब्राडकास्ट किया था। स्वाधीन भारत का एक वर्ष पूरा हो गया। किंतु आप कल्पना कर सकते हैं कि इसे अपनी स्वाधीनताके बाल्यकालमें किस प्रकारके परीक्षा काल और संकटोंसे होकर गुजरना पड़ा है। हम सभी प्रकारके खतरों और विनाश के मुकाबले एकता और शांति कायम रखनेमें सफल हुए जिसमें पड़ कर अत्यधिक सुदृढ़ और शक्तिशाली राष्ट्र तक अपना अस्तित्व खो बैठते हैं। हम इस सफलता तथा अन्य तरह की सफलताओंके लिये धन्यवादके पात्र हैं। इसका सारा श्रेय देशकी जनताको है। यह अत्यावश्यक है कि हम अपने कार्योंमें कमजोरी दिखाई न दिखायें तथा लक्ष्य तथा साहस कठिन परिश्रम और बलिदान को कदापि न भूलाय, जो हमारी जनताकी गौरव बुद्धि करता है। किंतु साथ ही हम यह भी न भूल जायें कि हम किस जगह विफल हुए हैं तथा कहां पर हमसे गलती हुई है; क्योंकि हमारी असफलताएं और गलतियां अनेक हैं। इनमेंसे कुछ तो बिलकुल स्पष्ट हैं। किन्तु हमारी वास्तविक विफलता तो राष्ट्रपिता द्वारा स्थापित श्रेष्ठ विचार और ऊंचे-स्तरसे पथभ्रष्ट होना है जिनके नेतृत्वमें पचीस वर्षतक स्वातंत्र्य संग्राम करते हुए स्वाधीनताके पथ पर अग्रसर हुए। उन्होंने हमें शिक्षा दी है कि महान विचारोंके जरिये महान उद्देश्योंकी पूर्ति हो सकती है। इन आदर्श और लक्ष्योंका परित्याग नहीं किया जा सकता। उन्होंने हमें इनकी प्राप्तिका मार्ग भी बताया है। हमें हृदयसे भय दूर करनेकी शिक्षा दी है, क्योंकि यह सिर्फ उपेक्षित और निन्दनीय ही नहीं है; बल्कि इससे हिंसा और घृणाकी वृद्धि होती है। हम लोगोंमेंसे अधिकांश अपना कर्तव्य भूल जाते हैं, जिससे भयका संचार होता है। यह भय किसी अन्य प्रकारके संकटका द्योतक नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरेसे भय करने लगताहै, जिससे बुराइयां उत्पन्न होती हैं। जिस राष्ट्र पिताने हमारा नेतृत्व कर हमारे हृदयमें उत्साह उत्पन्न किया, आज इस दुनियामें नहीं रहे। अब हमें स्वयं अपनी जिम्मेदारी सम्भालनी है। अतः हमारा सर्व प्रधान कर्त्तव्य यह है कि हम उत्तरदायित्व पूरा करनेमें संगठित रूपसे संलग्न हो जायं। क्या हम उनके संदेश और उपदेशोंका अनुकरण करेंगे अथवा रास्ता भूल कर नये पथका अनुसरण करेंगे।।

हम सभी भारतके सम्बन्धमें सोचते तथा उससे बहुत-सी चीजें प्राप्त करने की आशा करते हैं। किन्तु हम बदलेमें क्या आशा करते हैं? हम जो कुछ भी देते हैं उससे अधिक कुछ भी प्राप्त करनेकी आशा कदापि नहीं कर सकते। भारत ठीक वैसा ही होगा। जिस रूपमें हम उसकी सृष्टि करेंगे। आज साम्प्रदायिकताके विषके कारण हमारी स्वाधीनताके विनाशका खतरा उत्पन्न होगया है। मुसलमान, सिख और हिन्दूको भावना महान घातक है यह भारतकी एकतामें बाधक है, जिस पर देशकी महान उन्नति निर्भर करती है। यदि यह दुर्भावना हमारे मनमें बढ़ती गयी, तो फलतः हम अपने लक्ष्यसे विचलित हो जायंगे। किन्तु हमें उसे पुनः प्राप्त कर अपने स्वप्नके भारतका निर्माण करना होगा। हमें अपने देशकी पुरानी प्रतिष्ठा स्थापित करनी होगी और उसे स्वाधीन भारत के नये ढांचेमें रखना होगा। स्वाधीनता प्राप्तिके साथ-साथ उत्तरदायित्व की वृद्धि होती है, जिसकी रक्षा अनुशासन पालन, कठिन परिश्रम और स्वतंत्र विचार के जरिये की जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हम ऐसी सभी बुराइयोंका अन्त कर डाले, जो हमारा मार्गसीमित कर हमें पथभ्रष्ट करती है। हम भय, साम्प्रदायिकता तथा प्रान्तीयता को दूर कर स्वाधीन और गणतन्त्रवादी भारतका निर्माण करें, जिसमें जनताके स्वार्थोंकी पूर्तिको प्राथमिकताका प्राप्तहो। स्वाधीनता का कोई अर्थ नहीं यदि यह जनताका कष्ट निवारण कर वांछित सहायता पहुचाने में असफल सिद्ध हुई। गणतंत्रका अर्थ है सहिष्णुता। सिर्फ अपने विचारों से सहमत व्यक्तियोंके प्रति सहिष्णुता प्रगट नहीं करनी चाहिए, बल्कि भिन्न मत और विचार रखने वालोंके साथ भी समान व्यवहार परमावश्यक है। स्वाधीनताके प्रादुर्भावके साथ हमारे व्यवहार में परिवतन वांछनीय है, जो उसके अनुरूप प्रमाणित हो सके। संसारपिछले विश्व व्यापी युद्ध के दुष्परिणाम से पीड़ित है तथा मुद्रा-स्फीति, मूल्य वृद्धि एव बेकारीसे जनता परेशान है। अभी हमें इनका सामना करना है। किंतु इससे भी जटिल समस्या आने उन लाखों भाई बहनोंकी देखरेख और जीविका दिलानेकी है, जिन्हें अवणनीय मुसीबतों और सकटोंका सामना करना पड़ा है। इन्हें अपना घरबार छोड़ कर जीवन यापनके नये साधनोंकी खोजमें अन्यत्र भटकना पड़ रहा है। आज हमारे सामने मुख्य लड़ाई आर्थिक सकटका सामना तथा निराश्रित व्यक्तियोंके पुनर्वासकी समस्या है। इस युद्धमें घृणा या हिंसा नहीं, बल्कि देश और जनताकी सेवा सर्व प्रधान लक्ष्य है। इसमें प्रत्येक भारतीय सिपाहीकी भांति सहयोग प्रदान कर सकता है। यह सभ्य व्यक्ति विशेष या दलोंके लिए देशके महत्तर स्वार्थ की उपेक्षा कर सकुचित मनोवृत्तिसे सिर्फ स्वार्थ साधनका विचार करनेका नहीं है। अतः मैं अपने देशके समस्त स्त्री पुरुषोंसे, जिनके हृदयमें भारतके प्रति प्रेम है और जो जनता का मापदण्ड एव जीवन स्तर ऊचा उठाना चाहते हैं, अपील करता हूं कि वे ऐसे भावोंको, जो इन्हें दूसरोंसे पृथक रखते है, हृदयसे बाहर कर महान जनताके लिए वांछित ऐतिहासिक और उत्तर दायित्व-पूर्ण गुरुतर कार्यमें सगठित हो जाये और नवजात स्वाधीनताकी मशाल प्रज्वलित न रखें।


## ज्वेलयुक्त लिवर घड़ियां

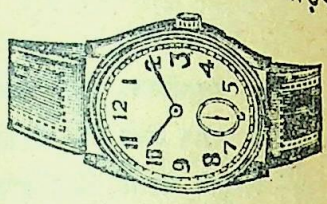

स्विस मेड, लिवर मशीन, बिल्कुल ठीक समय देनेवाली गारण्टी ३ वर्ष। गोल या चौकोर १८।) सुपीरियर २०।) फ्लाट शेप क्रोमियम केस.....२४।) छोटी सुपीरियर क्वालिटी.....२८।) फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष की गारण्टी --५५) फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोमियम केस--३८) फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड--७५)

रेक्टेंगुलर टोन्यो या कर्व शेप क्रोमियम केस ४२) सुपीरियर--४५) रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ६०) १५ ज्वेल क्रोमियम केस--------७०) १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड----------९०)

एलार्म टाइम पीस

मूल्य १८) २२) सुपीरियर २५) डाकखर्च अलग। दो का आर्डर देने पर माल

स्टेण्डर्ड वाच कम्पनी (V.M.)

पोस्ट बक्स नं० ११४१९. कलकत्ता ६

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# एक पौण्ड मांस

श्री कनैयालाल

पश्चिमी बंगालके कुछ नेताओंने बिहारसे कुछ हिस्से पानेके आन्दोलनको फिर आगे ढकेलनेकी कोशिश की है। बंगाली पत्रोंने और कुछ अंग्रेजी पत्रोंके बंगाली सम्पादकोंने भाषायिक सांस्कृतिक आर्थिक और अन्य दूसरे दूसरे आधारों पर बिहारके सिंह भूमि, मानभूमि, तथा पुर्णिया जिलेके भूभागको तुरतही मिलाये जानेकी मांगका समर्थन तो क्या किया इसे पैदा किया है। इन पत्रोंका संकुचित दृष्टि कोणतो जग जाहिर है, पर इन लोगोंने इधर हालमें भारतीय राष्ट्रके मान्य नेताओंको बुरा भला कहनेकी प्रवृत्ति भी अपना ली है और डा० राजेंद्र प्रसाद, चक्रवर्ती राजा गोपालाचार्य और डा० मेहरू पर भी लांछन लगाया है। श्री शरच्चंद्र बोसने जब अपने हथसे नेतागिरीकी बागडोर खिसकती देखीतो यह नया शिगूफा लेकर भाव-पूर्ण, अनुचित रूपसे उद्वेगशील बंगाली नवयुवकोंको इसी बहाने फिर अपनी गाड़ीमें जोतनेका ढंग किया है।

इधर एक नये सज्जन निकले हैं। इनका नाम है श्री निहारेन्दु दत्ता। यह उपदेश देते हैं कि लोगोंको प्रांतीयतासे बचना चाहिये। यह उपदेश-दान उनका उस पंडितजीके उपदेश-दानकी तरह ही है जो खुद भंटा खाते थे और दूसरोंको न खानेका उपदेश देते थ। पूछने पर इन्होंने कहा था कि उपदेश दूसरेके लिये होता है अपने लिये नहीं। इनके बाद पत्रिकाके सम्पादक महोदय हैं जिन्हें इस मांगकी भाषाकी दलील बहुत भाती है और राष्ट्रीयताका जामा लगा कर ये भी बिहारके अंगच्छेद का आन्दोलन अपने पत्रके कालमोंको खोले रख कर चला रहे हैं। इस पत्र सम्पादकको भी यह नहीं सूझता कि एक सीधीसी बात यह सोचे और अगर कुछ तथ्य होतो उसे लेकर आगे आये। वह सीधीसी बात यह है कि जिन प्रदेशोंको वह बंगालमें मिलानेको बेहाल हैं उन प्रांतोंमें कितनी जनसंख्या किस भाषाके बोलने वालोंकी है इसका सही सही पता लगावें तब कुछ लिखें। साथ ही वह यह भी बतावें कि मिलानेवाले परेशान क्यों हैं जबकि मिलने वाले एक बार भी इसके लिये आगे नहीं आते? असलमें प्रांत छोड़नेका निर्णय सिंह भूमि, मान भूमि के निवासियोंको करना चाहिये, कलकत्ते वालोंको नहीं और सिंह भमि मान भूमि की सम्पूर्ण जनता का इस सम्बन्धमें मत होना चाहिये केवल वहां बसे हुए अथवा बाहरसे जाकर वहां अपनी रोटी पैदा करने वाले बंगालियोंका नहीं।

इस संबंधमें बंगाली अपने मस्तिकका हर-एक बल लगा रहे हैं, देखा जाता है। कोई भी दलीलें, लचरसे लचर क्यों नहो स्कूलकी बादविबाद सभामें बोलने वाले स्कूली छात्रोंकी तरह, ये आगे लानेसे बाज नहीं आते और अपने जोश और भाव प्रवणताके बल पर अपनी बातें मनवा लेनेका बिश्वास रखते हैं। ऐसीही एक दलील श्री निहारेन्दु मजुमदार ने दी है जबवे कहते हैं कि रेडक्लिफके फैसलेने पश्चिमी बंगालको दो टुकड़े कर दिया हैं। इन दोनोंको जोड़ने वाला एक सूत्र चाहिये नहींतो ठीक शासन प्रबंध नहीं होगा। यह सूत्र बिहारके जिले बनायेंगे। सूत्रकी खोज करने वाले श्री दत्तको चाहिये कि जिन्नाके पूर्व और पश्चिम दोनों पाकिस्तानोंको मिलानेको पश्चिमी बंगालका एक हिस्सा गलियारेके लिये पहले छोड़ें, करेंगे वे ऐसा? श्री दत्तको राजाजी ने दार्जिलिंगके भाषणमें बड़ा अच्छा उत्तर यह कहकर दिया था कि आजके भारतमें प्रांत प्रान्तमें पृथकता कैसी? सारा भारत एक है सभी प्रान्त उसीके अविच्छेद्य अंग हैं, इसमें बंगाल, बिहार, यूपी, सीपी, मद्रास, बम्बई का सवाल क्या? शासन प्रबन्धकी सुविधाके लिये कुछ प्रदेश इधर रहें या उधर रहें इसके लिये इतनी परेशानी क्यों? पर बंगाली अपनेस्वार्थ में जितना कट्टर होता है उतना शायदही कोई होता होगा। यह राष्ट्रीय हितकी सीखभी उसे कड़वी लगी और राजाजी पर व्यंग कसते हुए मद्रासकी इमली नामक अग्रलेखही उस प्रमुख स्थानीय पत्रने लिख मारा जिसे अपनी राष्ट्रीयता पर नाज है।

फिर यह कहा जाने लगा है कि बिना और कुछ प्रदेश मिलाये पश्चिमी बंगाल प्रान्त अपना व्यय आप उठानेमें समर्थ न होग न होगा, तो वह अपना खर्चा कम करेगा और इससे भी न होगा तो फिर बंगालको बिहारमें मिला दिया जायगा। या पश्चिमी बंगालके जिलोंको बिहार आसाम और उड़ीसा मिलकर बांट कर अपने प्रांतोंमें बिलीन करलेंगे। बंगाली यह बातही सुनकर हजार गालियां देंगे। मगर वे निश्चिंत रहें। कोई ऐसा प्रस्ताव करने नहीं जारहा है। पश्चिमी बंगालका प्रांत जो है वह रहेगा और वह आप व्यय उठानेमें समर्थ है इसमें सन्देह नही। पूर्व बंगालतो और भी कमजोर है मगर वह जब अपने पैरों पर खड़े रहनेको कमर बांधे हुए है तब पश्चिमी बंगालकोही ऐसी क्या कमजोरी दीखती है जिसकी गोदमें कलकत्ता जैसा नगर है जो अकेला किसी प्रांतके बराबर है।

पूर्वी बंगालके आये हुए शरणार्थियोंको बसानेकी समस्या है पर इस लिये पड़ोसी प्रांतोंसे भूमि पैंचा न मांग कर उसके बिस्तारको खंडित करनेकी चेष्टा बंगालियोंको यशी नहीं बना सकती। शरणार्थी बिहारके पुर्णिया, भागलपुर, संथाल परगना आदि स्थानों में बसें तो उन स्थानोंको बंगालमें मिलाही लिया जाय इसकी क्या बहुत भा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



री आश्यकता है ? उनके साथ अन्य प्रांतों में स्वयं पश्चिमी बंगालसे अच्छा वर्ताव हो रहा है । यह वेही लोग कह रहे हैं । पश्चिमी बंगालकी आर्थिक दशा औरभी उन्नति करनेका ही ख्याल होतो इसे औद्योगिक उन्नति ; सुधरे हुए विकसित ढंग की खेती - पाती दामोदर योजना ; बिजली-यातायात की योजना आदिसे बढाना चाहिये नकि बिहारके उद्योग-प्रधान जिलों की ओर लोलुप आंख उठा कर । बिहार यों भी उससे पिछड़ा हुआ है । बर्तमान बजट ही इस बातका साक्षी है कि बिहारकी प्रति मनुष्य आय केवल ४।। है जब कि बंगालकी १८।।, इस विभाजनके बाद भी है । कौन अधिक समर्थ है ? किसको विस्तार की आवश्कता है ? बंगाके ये विभेदी नेता अपने स्वार्थ के कारण इतने अंधे होगये हैं कि दूसरेकी आवश्यकता को महसूस ही नहीं करते ।

यह सही है कि राष्ट्रीय महा सभाने भाषाके आधार पर प्रांतोंकी पुनर्रचना की बात स्वीकार कीथी । वह चीज अबभी है । शासनकी सुविधाके लिये अगर प्रांतोंके पुनर्विभाजनकी आवश्यकता हो तो भाषा के आधार पर विभाजन करके बर्तमान कठिनाइयोंको दूर किया जायगा - यह कांग्रेस प्रस्तावका अभिप्राय था । कठिनाइयां दूर करनके लिये भाषाके आधार की बात सोची गई थी , कठिनाइयां बढानेके लिय नहीं । कांग्रेसका कभी यह मत नहीं था कि उसके उस मन्तव्यको स्वार्थी लोग अपना उल्लू सीधा करनके काममें लावें और उसीको लेकर परस्पर एक दूसरके अंगच्छेदका प्रयत्न करे । कांग्रेसने कह दिया है इसलिए पश्चिमी बंगाल लेगा इस प्रवृतिकी विश्वामित्र की उस प्रवृतिसेही तुलना कीजायगी जिसके द्वारा वचन हार जानेके कारण उसने हरिश्चन्द्र को बिकवा कर दक्षिणा ली थी, अथवा यह उस शालक का उदाहरण होगा जो पाउण्डभर मांस एकरारनामे के रूसे एण्टोनियो की देहसे काटनाही चाहता था ।

जाय तो यह बात बिहार के [illegible] है कि शासनमें कठिनाइयां है या नहीं । यह बात केंद्रीय सरकार भी उठा सकती है । बंगालकी ओरसे दावा करने का कोई हकही नही है । फिरभी दावा किये जाकर बंगालके स्वनामधान्य नेता अपनी लिप्सा काही प्रदर्शन किया करते हैं । जितना-भूभाग उनके अधिकारमें है उतनेपरतो आदर्श शासनकी स्थापना करलें, पश्चिमी बंगालके ये बाबू लोग तब और प्रदेश बढानेकी सोचें । मै यहां पर उस बुढ़ियाकी बात उद्धृत करनेका लोभ संवरण नहीं करसकता जिसने महमूद गजनवी से कहा था कि जिस इलाके पर तुम ठीकसे हुकूमत नही कर सकते उस पर जमे रहने की कोशिश क्यों करते हो ? अभी पश्चिमी बंगालका अपना घरही दुरुस्त नही है । पहले पश्चिमी बंगाल वाले अपने यहां स्थिर लोक प्रिय मंत्रिमंडल तो बना लें । पहले अपने बर्तमान बिस्तारकोतो सुखी करलें, तब प्रदेश-बिस्तारको सोचेगे ।

भाषाके आधार पर मान भूमि ; सिंह भूमि को मिलानेकी बातभी लीजाय तोभी उसका दावा निःसन्देह नही ठहरता । नीचेकी तालिकासे यह बात स्पस्ट हो जायगी

पहले पुर्णिया की बात लीजिये । अबतो पुर्णिया के किसनगंज और अररिया सब्डिवीजन की बात भी कीजाने लगी है । पुर्णियामें बंगला बोलने वालों और न बोलने वालों की संख्या इस प्रकार है -

| | बंगाली | गैर-बंगाली | कुलसंख्या |
|---|---|---|---|
| सदर | ८६६९ | ११०२५१०८ | १११७९८ |
| किशनगंज | ५०५२८ | ५०११७९ | ५६०५७७ |
| अररिया | २११० | ५१२९५ | ७५१४१६७ |

जनता देखे कि इस पुर्णियाके किसीको भी बंगला भाषा भाग और संस्कृति के नाम पर मांगना बई मानी छोड़ कर और क्या है ।

संथाल परगना की हालत यह है कि उसमें बंगालियोंकी संख्या अधिक [illegible] नही

के गैर बंगालियोंसे अधिक होजाय । समूचे जिलेमें २।। लाख बंगला भाषी हैं जबकी ८ लाख गैर बगला न बोलन वाले लोग हैं । इसपर भी ये लोग यह जिला पश्चिमी बंगालमें मिलायगे ! क्यों ? शायद इस लिये कि स्वल्पस्कता के रोग वाले बंगाली बाबुओं को दव घर, मधुपुर और जसीडीके स्वास्थ प्रद स्थान मिल जांय जिनकी आबहवासे उनको सूखी नसोंमें लाल लाल रक्त आये ?

अब सिंह भूमिकी दशा देखिये । सिंहभूमि सदर और जमशेद पुर लेकर समूची दल भूमिमें १।। लाखके लगभग है ६४१२-१४१०५ ) बगांली और उधर गैर बंगालियोंकी तादात ७।। लाखके करीब (५२८७-९५२५३४९०) है । इनमें भी करीब २२ हजार लोग कुर्मिली भाषा बोलते हैं जिसकी लिपि बंगाला पर भाषा श्री ग्रियर्सनके अनुसार "मगधीका ही विभेद है" । इनके निकल जाने पर तो बंगाली १। लाख ही रह जायेंगे । मानभूमि पर आइये । इसमें धनवाद सबडिवीजन में तो बंगालको कुछ भी कहना नहीं होगा । अन्य स्थानोंकी जन संख्यामें जनगणाकेन आंकड़ोंके मुताविक बंगाला भाषियोंकी संख्या थोड़ी अधिक है । पर जैसा कि उपर कहा गया है, तमाशा यह है कि यहांकी जन संख्यामें आधे से अधिक संख्या उन कुर्मी जातिके लोगोंकी है जो कुर्माली बोलते हैं और बिहारकी उसी कुर्मी जातिके हैं जिनका वहां बहुत प्रसार है । इनको बंगला भाषी कभी कहा नहीं जा सकता और इस पर भी एक दूसरा तमाशा है । ये कुर्माली बोलने वाले बंगालमें मिलनेके पक्षमें एक दम नहीं हैं । कोई मतगणना करा ले । स्पष्ट पता लग जायेगा कि पश्चिम बंगालके भेदी नेताओंको यहां कितना समर्थन मिलता है ।

इस क्षेत्रमें बंगला भाषाके प्रसारकी भी एक कहानी है । जब बिहार बंगालके अन्तर्गत ही था उसी समय से इन क्षेत्रोंमें बंगलाका प्रचार बढ रहा है । स्कूलोंमें कहीं हिन्दी की पढ़ाई

( शेष पृष्ठ २८ पर )

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# सोपासका प्रेमांकुर

अनुवादक--श्री आमप्रकाश

कारडियर अपने धनवान पिताकी एक मात्र लड़की है। पैदा होनेके कुछ दिनों बादही उसकी मांनेअपना स्नेहांचल खींच लिया। अपनी नन्हीसी अबोध बच्चीको अपने पतिकी गोदमें सुलाते हुए कहगई, मेरी बच्चीको मेरा अभाव मत खटकने देना। और इसी एक संकेतको लिये हुए उसके पिता इस असार संसारमें जहां उनके लिये अपनी पत्नीकी अवशेष स्मृति बच्चीके सिवाय और कुछ नही रह गया था, जी रहे थे। उन्होंने सुखके अनेक साधन उस अबोध बच्चीको उलझा रखनेके लिये जुटा रखे थे। उसने अपने पिताके दुलारमेंही माकी ममता पायी थी। उसके पिताने अपनी आत्माका सारा का सारा प्यार उंडेल कर रख दिया था। अवसादकी कहीं छाया तक नही थी। जीवनकी अवधि बढी जारही थी। पिताके इस स्नेहांचलमें पलकर नजाने कब अबोध कारडियर २० वर्षकी युवती होगई। अंग अंगमें जीवन हिलोरे लेउठा। लम्बा पतलासा चेहरा मृगीसी भटकी भटकी सुन्दर आंखें सूर्यकी रजत किरणोंसा रंग। सुन्दरता सारे अंगोंसे टपकी पड़ती थी। पर बापके सम्मुखतो वह अभी अल्हड़ बालिका थी।

इसी बीच उसके दूरके रिश्तेके एक युवकसे परिचय हो जाता है। बरसों बाद वह उसके पितासे मिलने आया था। कुछ दिनके लिये वह वही ठहर गया। उसके पिता एक बड़ी फर्मके मालिक थे। व्यापारके सम्बन्धमेंही उसे यहां भेजा था।

वह बड़ा सुन्दर और हंसमुख था। उसकी उलझी सीधी बातोंमें कारडियर भटक जाती। घण्टों उसके साथ बातें करते बीत जातें। धीरे धीरे वह उसकी ओर आकर्षित होने लगी। वह भावी सुखकी स्मृतिमें गद गद हो उठती मनमें अनेक संकल्प करती और मिटाती। आखिर एक दिन बातों ही बातोंमें वह अपने मनका सारा आल्हाद पितासे कह बैठी। वैसे वे स्वयं भी युवक लेव्रमेंट पर रीझ गये थे, पर इस आकस्मिक घटनासे चौंक पड़े। उन्हें इसकी कल्पन नथी कि उनकी बच्ची जल्दी अपना सम्पर्ण करदेगी। उनके अन्तर तममें बिछोहकी कल्पना कौध गयी। जिस अपने हृदयके कोरको पाला पोसा, उसे एक निमिष मात्रमें खो देना पड़े गा। क्या वो उसके अभावमें जी भी सकेंगे। ? अपनी अबोध बालिकाको अभीसे वैवाहिक बंधनमें बांधना पड़ेगा आंखें गर्मी होगई। एक तक पीड़ा सेवे कांप कांप गये। भोली कारडियर यह सब देख चकित भ्रमित रहगई। वहतो यह कभी नही सोच पायी थी। वह एक बापकी आत्मा कैसे आंक सकती थी। वह स्वयं भी इस सबसे स्तब्ध मौन रह गयी। पिताक पीड़ाका अनुभव कर उसका रोम रोम रो उठा।

पिता भी कब बच्चीकी बातकी उपेक्षा कर सकते थे। उसकी आत्माको कैसे पीड़ा पहुंचाते आखिर हृदय पर पत्थर रख कर विवाह की आज्ञा दे दी।

विवाह होगया। बापने अपनी सारी संचित संपत्ति अपनी बेटीके नाम करदी कारडियर अपना जीवन साथी पा अत्यंत सुखमें भटक गई। एक क्षणका अभावभी उसे खटकने लगता। वहतो एक दम उसे अपनी अत्माका देवता मान बैठी। और युवक लेव्रमेंट मनकी बाततो परमात्मा ही जाने पर प्रेम अभिनयका सिद्ध हस्त कलाकार तो था ही। भोली कारडिय उसकी आत्माकी गहराई कैसे पासकेती थी।

नजाने किस मुहूर्तमें विवाह हुए एक माह बीत गया!

बसन्त की पीली सन्ध्या थी। जब दम्पति बैठे अपने भावी जीवनकी रूप रेखा बांधनेमें तल्लीन थे। युवकने कहा कितना अच्छाहो यदि हम अपने जीवनका प्रथम बसन्त कही दूर जाकर बिताये।

कहां चला जाये?" यवतीने धीरेसे पूछा।

शायद पेरिसही उचित स्थान रहेगा। यदि पापा (ससुर) की आज्ञा मिलजाय तो अच्छा हो। उनसे पूछाना जरूरी है। और हां, यह रकम जो तुम्हारे बापकी है, साथही लेचलना नहीतो बिदेशमें किसके आगे आचल फैलायेगे। वैसे मै कुछ न कुछ धन्धा जमाही लूंगा।

" कब चलना होगा? "

" आज्ञा मिलने पर कलही चलदें आजही रातको पूछ लेना।

" अच्छा! "

रातमें कारडियरने अपने पितासे अपनी यात्राके लिये आज्ञा मांगी। पहलेही वे एक मर्मव्यथा से आहत थे अब वह दूसरा अनभ बज पात आखिर जर्जर शरीर कहां तक सहन करता उसकी आत्मा हाहा कार कर उठी। क्यायें शेष दिन इन्ही व्यथाओंमें पलकर एकाकी रहकर बिताना होगा? क्या इसी सुखके लिये उन्हें जीना था कैसाकर सत्य है, जीवनका! वे कहने लगे ", बेटी, यह स्वार्थोंकी रेलगाड़ी और कितने दिन और चलनेकी है। मै आज तक तुम्हारी बातोंको मानता आया हू, कभी अवज्ञा नही की। अब एकही इच्छा अवशेष है कि मै अपनी अंतिम श्वासों तक तुम्हें आंखोंमें निहारता रहू। फिर आगे तुम्हारी मर्जी बेटा। अगर जल्दीही आनेका वादा करती हो तो, हो आओ बेटा। अब यह शरीर अधिक दिनोंक नही है .....। और आगे कहते गला भर आया। न जाने किस अज्ञात पीड़ासे व्यथित हो आंखें बंद कर कर ली। कारडियर अनमनीसी उठकर दूसरे कमरे में चली गयी। अंदरका नारी हृदय रो उठा। पर वह कैसे अपने देवताकी बात टाल सकती।

जानेकी सारी तैयारियां होचुकी थी। पिता आशीश देने आये। जब उन्हें मालुम हुआ कि कशीरडियरने सारी रकम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपने हांथ रखली है तो वे कहने लगे, बेटी इतनी बड़ी जोखिम अपने साथ रखनेसे भय है, अपने आपको खतरेमें डालना है। खर्च इतनी रखली। युवक लेब्रूमेंटने कहा. " पापा आप बिल्कुल बेफिक्र रहें जब मै व्यापार करनेके लिये निकलता हूं, इससे ज्यादा रकमतो मै अपने पास रखता हूं, डरकी कोई बात नही है !

जैसा उचित समझो करो । "

और पापा लौट गये।

स्टेशन आये पेरिसके लिये टिकट खरीदा। गाड़ी आई और बैठ गये। गाड़ीने स्टेशन छोड़ा और चलदी।

कारडियरको रह रह कर अपने पिता का ध्यान आरहा था। क्या मेरा इस प्रकार चलदेना ठीक था। उनकी आत्मा कितनी दुखी होअगी। उनके उपदेश मनमें उठ रहे थे, बेटी जीवनमें खूब सोच बिचार कर कदम उठाना चाहिये, । इतनी जोखमसे अपने आपको खतरेमें डालना । और न जाने क्या क्या, उसके बिचारोंने मानो रेलकी गति पाली हो। एक द्वंद उसके मनको मथे डाल रहा था।

पेरिस आया, गाड़ीसे दोनों उतर पड़े। स्टेशनसे बाहर आकर, एक कार किराये पर की। लेब्रूमेंट कारडियरको उसमें बेठा गया और कह गया कि अभी थोड़ी देरमें आता हूं।

पन्द्रह मिनट बीस मिनट पच्चीस और एक घण्टा, दो घण्टे भी बीत गये। अरे इतना समय होगया क्या हूआ, थोड़ी देरकी कह गये थे, ऐसे दो घण्टे बीत गये कहां रह गये इतनी देर। डाइबर अलग परेशान कर रहा है। क्या करे कहां ढूढे किससे पूछे घड़ीके कांटोंके तरह एकके बाद एक प्रश्न मनमें उठने लगे। इस अनजान देशमें कौन है उसका जो सहानुभूति जतायेगा उसके प्रति । यहांतो वह अकेली ही है. उसके अंतरतममें एक आशंका उठी और मिट गई। छिः छिः पति के प्रति अविश्वास कितनी दुर्बल आत्मा है मेरी। कुछ काम होगा, आते होंगे. कहीछोड़ कर जा थोड़ेही सकते हैं। अरे समयतो भाग रहा है जैसे। आखिर कौनसा इतना बड़ा काम आगया। उन्हें पता नही कि मै यहां बैठी हूं। आगे यहां हमको और भी तो काम करना है। रह रह कर एक आशंकासे उसका मन व्याप्त होता जारहा था।

और डाइबर कह रहा था, कही जाना नही है तो मोटरसे उतर जाइये, मेरा कितना बड़ा नुकसान हुआ है आज मुझे इतने समय तक रोक रखनेकी कीमत दीजिये, चार घण्टे होने आये आने का पता ही नही है बड़े बिचित्र आदमी हैं। औरतको बिठा कर नजाने कहां गायब होगये। अब मै नही रुक सकता, कही जाना हीतो पहुंचा दूंगा ! "

भोलीसी कारडियर कांप गई। कहां जायगी वह, किसका घर है वहां।

नही वह कही नही जायगी और एक निश्चयके साथ गाड़ीसे उतर पड़ी जोकुछ पैसे पासमें थे सभी उसको देदिये और एक और चल दी। मनुष्यके प्रति एक उपेक्षा, घृणा एक पीड़ा उसके मनमें हो गई। उसका नारी हृदय अपनी दुर्बलता पर चीत्कार उठा, फफक फफक कर रो उठा उसका मन। वह चली जारही थी पता नही किस ओर !

२०॥] में ज्वेल वाली रिष्ट वाच्

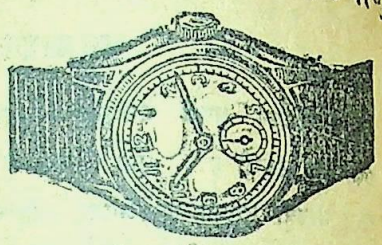

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप २०॥) सुपिरियर २२॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस—३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)

रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो शेप

क्रोमियम केस—४२) सुपिरियर —४५)
रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्डगोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०
अलार्म टाइम पीस १८) २२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग। कोई दो घड़ी लेने माफ।

एच० डेभीड एण्ड कं० (V,
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

मनुष्यके पास समृद्ध बनाने के लिये अनेकों सुख सामग्री और अगाध सम्पत्ति भले ही हो परन्तु सुन्दर स्वास्थ्य और सम्पूर्ण शक्ति के बिना उसका जीवन दुखमय और कठिन हो जाता है। जीन सीन गोल्ड टानिक पिल्स पुरुष जातिको निर्बलता से बचाकर शुद्ध वीर्य का बिकास कर उसमें नवीन शक्तिका संचार कर उन्हें पुष्ट बनाती है। आठ दिन के लिये ४८ गोली की एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग। परहेजकी आवश्यकता नहीं होती और प्रत्येक मौसम में सेवन किया जा सकता है।

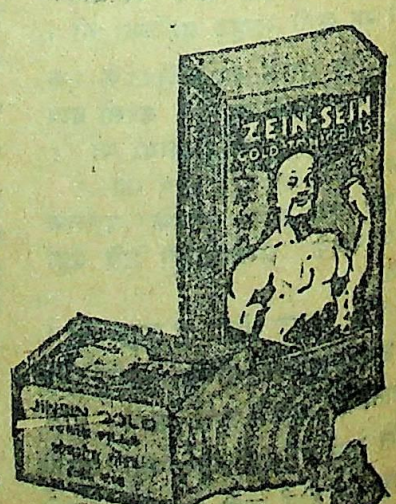


चाईनीज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०

शाखाएं—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, हेड आफिस—२८ अपोली स्ट्रीट, फोर्ट बंबई हौसी स्क्वायर कलकत्ता, नया बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हम निराश नहीं हैं

## आचार्य श्री नन्दकिशोर अग्रवाल

हजारों वर्षोंकी राजनीतिक गुलामीके बाद १५ अगस्त ४७ को भारतवर्ष आजाद हुआ था। एक वर्ष हो चुका और दूसरे वर्षमें हमने पदार्पण किया है; लेकिन यह पिछला वर्ष हमारे लिये कितना दुख भरा और भयंकर साबित हुआ है। आजादी मिलते ही पंजाबमें अमानुषिक हत्याकांड हुआ। लाखों स्त्री पुरुष और बच्चे मारे गये, करोड़ों रुपयेकी जायदाद मिट्टीमें मिल गयी। जान और मालके नाशसे भी बढ़कर इज्जत और मनुष्यताका हनन हुआ। सम्प्रदायिकताकी आग सारे देशमें ही और खुद भारतकी राजधानी दिल्लीमें जोरसे भड़की। उसे बुझानेके लिये स्वयं हमारे राष्ट्र पिता कूद पड़े उनके आखिरी उपवासके कारण यह आग ऊपरी तौरसे बुझ भी गई। लेकिन जातीयतासे पागल एक हिंदू नवयुवक ने अपने ही हाथों उन्हें गोलीका शिकार बनाया और वे आजादी के नन्हे बच्चेको असहाय छोड़ कर सदाके लिये चले गये। संसारके इतिहासमें इतना भयंकर क्रूर हत्याकांड नहीं हुआ होगा। हमने स्वतंत्रता तो पायी लेकिन अपने राष्ट्रपिताको ही खो दिया। इससे बढ़कर हमारा और अधिक दुर्भाग्य क्या हो सकता था।

इस गहरी चोटके अलावा देशके ऊपर काश्मीरकी तरफसे युद्धके बादल गरजे और आज तक गरज रहे हैं। पाकिस्तानने कबाइलियोंके भेसमें हिंदुस्तान पर हमला किया और झूठ पर झूठ बोला। हमने मित्रराष्ट्रोंके सामने इसकी शिकायत की लेकिन वहां भी हमारा कोई हल न निकला। उलटा चोर कोतवालको डांटे जैसी घटना घटी। पाकिस्तानने यह स्वीकार तो कर लिया है कि उसकी फौज काश्मीरमें लड़ रही है, फिर भी मित्र राष्ट्रोंका कमीशन अपनी रिपोर्टमें क्या लिखेगा, कोई ठिकाना नहीं।

आखिर अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति स्वार्थ और झूठ पर ही चलती रही है। इधर कई महीनोंसे हैदराबादकी समस्या दिन दिन गम्भीर होती जारही है। रजाकारोंके अत्याचार शायद चंगेज खांको भी मात करने लगे हैं। निजाम हैदराबाद तो आजाद रहना चाहता है किंतु स्वयं रिजवीका गुलाम बन गया है। रियासतमें सच्चाई भलमंसाहतका नाम निशान नहीं है। इस अमानुषिक परिस्थितिको न सह सकने के कारण तपस्वी भंसालीजी आमरण अनशन कररहे हैं। भारत सरकारके सामने आज कई अन्य महत्वके प्रश्न हैं लेकिन हैदराबादका सवाल सबसे अहम बन गया है। मुझे तो स्पष्ट लगता है कि हैदराबाद कांड बिना भयंकर खून-खराबी के तय न होगा। हिंसाका बहुर बढ जानेसे पच नहीं सकता; वह फट कर ही निकलता है।

देशकी गंभीर राजनीतिक परिस्थिति होते हुए भी हमारे व्यापारी काले बाजार और मुनाफाखोरीसे ऊबे नहीं हैं। उन्हें तो सिर्फ पैसे कमानेकी लालसा है, फिर चाहे देश नरकमें जाय। वाणिज्य व्यवसायमें शायद इतनी अनैतिकता कभी नहीं रही होगी। भारतीय सरकारको विवश होकर फिर अंकुशका प्रारम्भ करना पड़ा है। लेकिन पूंजीपतियोंने अपने पंजे चारों ओर इस प्रकार जमा रखे हैं कि उनको सहज हटाना सरकारके लिये आसान नहीं है। और सबसे दुर्भाग्यकी बात तो यह है कि कांग्रेसजनोंका पुण्य भी दिन दिन तेजीके साथ घटता जारहा है।

यह सारा चित्र निराशासे भरा है फिरभी हमें निराश हो जाना शोभा नहीं देता। मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि भारतका भविष्य उज्ज्वल है। यह प्राचीन देश हजारों वर्षोंके बाद एक बार फिर स्वतंत्र हुआ है। प्रारम्भमें सभी प्रकारकी कठिनाइयां आनी स्वाभाविक हैं लेकिन अब भारतवर्षकी स्वतंत्रता को कोई भी ताकत न छीन सकेगी। निजाम और पाकिस्तानकी तो हस्ती ही क्या है? हमें अपने भविष्यमें अटल श्रद्धा रखनी चाहिये और हिम्मतसे सारी आपत्तियोंको झेलना चाहिये। अगर हम हृदयमें आशा श्रद्धा और साहस रखकर आगे बढ़ते गये तो हमारी प्रगतिको कोई न रोक सकेगा।

लेकिन एक बड़ी शर्त है और वह यह कि हमें अपना खुदका घर स्वच्छ रखना होगा। उसमेंसे संकीर्ण जातीयता, प्रांतीयता और स्वार्थके जालोंको साफ करके नष्ट करना होगा। अगर हम एकताका मूल्य भूल गये और छोटे छोटे स्वार्थोंके लिये घरके भाई भाई आपसमें ही लड़ने लगे तो फिर हमें परमेश्वर भी न बचा सकेगा और हमारा और हमारे देशका नाम दुनियासे मिट जायगा। मुझे विश्वास तो है कि हम इतने नीचे न गिरेंगे और परिस्थितिकी गम्भीरताको समझ कर आगे बढते चले जायंगे। लेकिन केवल विश्वाससे काम नहीं चलेगा। अपने उज्ज्वल भविष्यको प्राप्त करनेके लिये अटल और अडिग पुरुषार्थ की आवश्यकता होगी।


# पूजा-दीपावली विशेषांक

'विश्वमित्र' का पूजा-दीपावली विशेषांक दीपावलीके अवसरपर सज-धजके साथ प्रकाशित होने जा रहा है। सम्माननीय लेखकों और कवियोंसे निवेदन है कि वे अपनी रचनाएं यथा-सम्भव शीघ्र भेजनेकी कृपा करें।

—सम्पादक


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# वनस्पति घी

देशमें अन्य जीवनोपयोगी पदार्थोंका अभाव हो या नहो वनस्पति घीका अभाव तो नहीं है। यह विवादका विषय बन गया है कि वनस्पति घी स्वास्थके लिये हानिकर है या नहीं। कहागया था कि डाक्टरोंने इसकी परीक्षा कर के यह बताया कि इसके खानेसे पुरुषत्वकी हानिहोती है। वनस्पति घी वालोंके संगठनने इस सच्चाईको चुनौती दी है पर उसे व्यवसायिक चतुराई भी कहा जा सकता है। वह न भी हो तोभी इतनातो है ही कि वनस्पति घी एक ऐसा पदार्थ है जो घी मक्खन आदि में मिल कर उसकी शुद्धताको आसानीसे बिगाड़ सकता है। शहरोंमें पाक-विक्रेताके अतिरिक्त, जन साधारणभी इसे उपयोगमें लाचारी लाता ही है। लोग यही सोचते हैं कि असली घी जब मिलताही नहीं, तो वनस्पति मिश्रित घी लेनेकी अपेक्षा विशुद्ध वनस्पतिही क्यों न खाया जाय क्योंकि यहभी जाननें और पहचाननेका कोई उपाय नहीं है कि किस घी में यह कितना मिश्रित है। वनस्पति घीके सबसे बड़े पोषक घी, मक्खन का व्यवसाय करने वाले व्यापारी तथा उत्पादक हैं।

वनस्पतिका उत्पादन थोड़ेसे बढ़ते बढ़ते अब अपने पूरे अंशतक होगया है। गत वर्ष ४॥ लाख टन इसके लिये निर्धारित भाग रखा गया था। इस बातसे इस वस्तुकी खपतीका अन्दाजा लगाया जा सकता है कि जहां अन्य पदार्थोंका उत्पादन कम हुआ, इसका पूरा हुआ। यद्यपि इस पदार्थके लिये मूंगफलीकी आवश्यकता है जिसकी खेतीका मुख्य स्थान हैदराबाद है, और वहांकी अशांतिके कारण हैदराबादकी मूंगफली पर्याप्त रूपसे प्राप्त नहीं है, फिरभी इतना लाभदायक यह व्यवसाय रहा कि बिनौले, नारियलके तेल एवं अन्य तेलोंको साफ करके, उसके सहारे वनस्पति बनता रहा और पूरा बना। सरकारने, खबर थी कि इस चीजको रंगीन करदेने का आदेश दिया है जिससे वह घी में मिलाया न जासके। पर सुना गया जो आदेश उसके अनुसार देखनेमें नहीं आया। आजभी सफेद वनस्पतिही बनरहा है और घी मक्खनमें मिलाया जाकर खप रहा है।

सरकारने इसचीजके उत्पादनका कोटा इस सालभी ४॥ लाख टनही रखा थे। समझमें नहीं आती यह पहेली। अगर यह पदार्थ हानिकारक नहीं हैतो इसके उत्पादन पर रोक क्यों है? मिलवाले औरभी अधिक उत्पादन करना चाहते हैं। और अगर हानिकारक हैतो जनसाधारणके स्वास्थके साथ खेलवाड़ कैसा? कमसे कम इसे रंगीन बनानेकी दिशामें क्यों प्रयत्न नहीं हो रहा है? पता लगता है कि सरकार इस विषयमें छ पांचकी अवस्थामें है और स्वभावतः न इस पर रोक लगा रही है न इसे धड़ल्लेसे बनने देती है। वनस्पतिहै तो एक प्रकारसे तेलही। फिर इसका दाम अन्य तेलोंसे अधिक क्यों है? अगर यह धड़ल्लेसे बन पाता तो दाम कुछ कम होता। वहभी नहीं हो रहा है।

सरकार कुछनहीं करतीतो म्यूनिसिपैलिटियां और कारपोरेशन इस दिशमें खुद काम कर सकते हैं। प्रांतीय सरकारभी कर सकती है पर यह कैसी विडम्बना है कि कोई कुछ नहीं करता। इस सम्बन्धमें यहभी ज्ञात हो कि विदेशोंमें वनस्पतिको खानेके इस्तेमाल में नहीं लाया जाता। यह भारतही है जहां इसे भोजनमें लगाया जाता है! फिरभी अभीतक जनता निश्चित रूपसे नहीं जानती कि यह चीज खानेके उद्देश्यको पूरा कर सकती है या नहीं। यदि नहीं कर सकती है तो इसको इस योग्य क्यों नहीं बनाया जाय कि यह शुद्ध घी की शुद्धताको नष्ट करता रहे?

## रूई के विषयमें

पहले भारतमें पाकिस्तानी प्रदेशोंसे अधिक रूई लीजाती थी। स्वयं भारतमें बड़े रेशोंवालों बंगा कम होता है इस कारण उससे बहुत अच्छा कपड़ा नहीं बनसकता कमसेकम मिलोंमें इसका उपयोग नहीं होता। मिल वाले पाकिस्तानसे रूई लेते थे। इस सम्बन्धमें पकिस्तानसे एक समझौता किया गया है जिसमें निश्चय हुआ है कि वह ६॥ लाख गांठ रूई हमें देगा। अनुमान है कि पाकिस्तानमें कुल १२ लाख गांठ रूई होती है। उसमेंसे आधेसे कुछ कम रख कर वह आधेसे कुछ अधिक हमें देगा और उसके बदले हम यहांसे उसे तैयार वस्त्र देंगे।

इधर हमारे देशमें रूईका उत्पादन कुछ बढ़ा है ऐसा बताया जाता है। १९४७ में १ करोड़ ४० लाख ६० हजार एकड़ भूमिमें रूई पैदा कीगयी थी जिससे ३५ लाख ६६ हजार गांठ रूईका अनुमान लगता है। इस हिसाबसे सन १९४६ से १ प्रतिशतकी वृद्धि दिखाई देरही है क्योंकि उस वास्तविक रूपमें ४२ लाख ३० हजार गांठ हुई।

सरकारने प्रांतीय सरकारोंको आदेश दिया है कि रूईकी खेती अब बढ़ानेकी कोशिश न की जाय पर उसकी किस्ममें सुधार लानेकी चेष्टा हो। चालू सालमें ४३ लाख २० हजार एकड़में बढ़िया किस्मका बंगा बोया गया है। देखें इससे कैसी रूई मिलती है।

देशमें खाद्यान्नका अभाव देखते हुए बांगेकी उपज पर जोर न देना तो एक हिसाबसे ठीक लगता है पर देशमें वस्त्रका अभाव भीतो है। रूईकी मंहगीसे खद्दर करनेके बने वस्त्रभी मंहगे हैं जो मिल वस्त्रोंके अभावमें बहुत काम देते हैं पर रूईके अभावमें उनकी कीमतभी कम नहीं है। सरकारकोतो चाहिये कि बंगा और खाद्यान्न की उपज बढ़ाने पर ही जोर

(शेष २७ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# उड़ीसामें शिशुपालगढ़ क्षेत्र

भारत सरकारके पुरातत्व विभागकी खनन शाखाने हालमें ही उड़ीसामें भुवनेश्वर के निकट शिशुपाल गढ़ नामक स्थान की खुदाई करके एक अति प्राचीन दुर्गकी खोज की है, जिसके मान एवं फाटककी व्यवस्थासे पता चलता है कि यह दुर्ग ईसासे पूर्वकी द्वितीय तथा प्रथम शताब्दियोंका बनाया हुआ है। प्रत्येक लेखमें इस दुर्गका विवरण तथा उसकी खोज के महत्व का उल्लेख किया गया है।

पुरातत्वकी दृष्टिसे भारत एक बहुत ही सम्पत्तिशाली देश है। उसके प्राचीन इतिहास का पता लगानेके लिये भूतकालमें यद्यपि कार्य हुआ है, किन्तु उसकी इस पुरातन संपत्तिका एक बड़ा भाग आजभी अन्वेषित है। देशकी विभिन्न संस्कृतियोंके बीच कालानुसार सम्बन्ध स्थापित कर सकने के उद्देश्यसे भारत सरकारके पुरातत्व विभाग ने पिछले दो वर्षोंसे पांडेचेरीके निकटस्थ अरिकामेडू और ब्रह्मगिरि तथा चंद्रावल्ली ( मैसूर राज्य ) नामक स्थानमें खुदाईका व्यवस्थित कार्य फैला रखा है। इस प्रकार यह कार्य दक्षिण भारतसे आरम्भ करक जहांकी स्थानिक संस्कृतियोंका काल निर्णय पक्के तौर पर हो चुका है, उसका विस्तार धीरे धीरे उत्तर की ओर अर्थात् ज्ञातसे अज्ञात क्षेत्रकी दिशा में किया जायगा, ताकि बौद्ध उपनिषद ब्राह्मणिक तथा आरम्भिक वैदिक कालोंकी संस्कृतियोंका पूर्ण परिचय प्राप्त हो सके और इस प्रकार ईसासे पूर्व तृतीय सहस्राब्दि सिन्धु सभ्यता और ईसाके पूर्व तीसरी चौथी शताब्दियों की आरम्भिक ऐतिहासिक सभ्यताके बीच के काल पर प्रकाश डाला जा सक।

## खुदाई का काम

भुवनेश्वरसे २ मील पूर्व स्थित शिशुपालगढ़की हालकी खुदाईमें इस दिशामें उठाया गया एक और कदम है। भारतीय पुरातत्व विभागकी खनन शाखा के सुपरिण्टेंडेंट श्री बी० बी० लालकी निगरानीमें इस खुदाईके काममें भारतके विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं और चीन व लंका के लगभग ६० विद्वानों तथा सहायकों के सहयोग प्रदान किया है। उड़ीसा सरकारने आवश्यक सुविधाओंकी व्यवस्था कर दी थी और पुरातत्व विभागके डाइरेक्टर जनरल डा० एन० पी० चक्रवर्ती खुदाई कार्यके निरीक्षण के लिये गये थे।

शिशुपालगढ़का निर्माण वर्गके आकारमें किया गया मालूम होता है, क्योंकि उसकी चारों ओरकी दीवारें एक ही लम्बाई की हैं। दुर्गकी विशालता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उसकी हर तरफकी इन दीवारोंकी लम्बाई लगभग ६ फर्लांग अर्थात पौन मील है और हर दीवार में दो दो बड़े फाटक तथा उनके रास्ते हैं। इन बड़े फाटकोंके अतिरिक्त चहार दीवारी में हर तरफ दो दो अन्य दिवार भी हैं, जोकुछ छोटे हैं। गढ़के चारों ओर एक नाला भी है, जो दुर्गके निर्माणके ही समय चहार दीवारीके रक्षार्थ खुदवाया गया होगा।

## निर्माणकी कई अवस्थायें

खुदाईसे पता चला है कि पहली अवस्था में गढ़की किलेबन्दी मिट्टीकें परकोटेसे की गयी रही है। यह फाटक कोई २५ फुट ऊंचा रहा ह और बुनियादके पास उसकी चौड़ाई १५० फुटसे भी अधिक रही है। दूसरी अवस्थामें इस पर पत्थरोंका ३-४ फुट मोटा पलस्तर चढ़ाया गया मालूम देता है और तीसरी तथा बादकी अवस्थाओं में मिट्टीका यह धुस, उसके दोनों ओर पक्की ईंटोंका पुस्ता बांध कर मजबूत किया गया है।

आठ फाटकोंमेंसे एककी खुदाई पूरी की गयी है। इसका रास्ता करीब २५ फीट, चौड़ा रहा है। किन्तु दो जगह दरवाजोंके लिये तंग होकर १३ फीट ही रह गया है। इन दरवाजोंसे ५-६ फुट चौड़ा दूसरा रास्ता गया है। रातके समय फाटक बन्द हो जाने पर जब गाड़ी गड्डोंका आना जाना रुक जाता था तो देरमें पहुंचनेवाले लोग इन्हीं रास्तोंसे गढ़की चहारदीवारीमें प्रवेश करते होंगे। मौर्य कालीन सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कौटिल्यने अपने अर्थ शास्त्र नामक ग्रंथमें इस प्रकारके रास्तोंका भी उल्लेख किया है। गढ़के बीचोबीच १६ खंभे हैं, जिनसे पता चलता है कि उस स्थान पर कोई खंभेदार भवन रहा होगा।

खुदाई जमीनमें काफी गहराई तक की गयी थी, यहां तककी पानीभी निकल आया। इसलिये पानी खींचनेके लिये पम्पों से भी काम लेना पड़ा।

खुदाईसे जो छोटी मोटी चीजें प्राप्त हुई हैं, उनमें सुलेमानी पत्थरके बने दाने बिल्लोरी जातिके कई रंगके कीमती पत्थर कानोंमें पहननेके पक्की मिट्टीके कई प्रकारके जेवर, हाथी दांतके लटकन, पक्की मिट्टी व कांचकी चूड़ियां, अन्य जेवर और शान्ति तथा युद्ध कालमें काम आने वाले लोहेके अनेक औजार विशेष उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त सोने चांदी, तांबे तथा शीशेके ३० सिक्के भी मिले हैं, जो उस स्थानकी ऊपरी स्तरोंकी खुदाईसे प्राप्त हुए हैं। ढालनेके कुछ सांचे भी मिले हैं, मिले हैं जो मिट्टीके बने है और जिनसे पता चलता है कि प्राचीन भारतमें सिक्के किस तरह ढाले जाते थे।

मालूम देता कि यह स्थान पहले ईसासे ३०० वर्ष पूर्व निर्मित किय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया, पर किले बन्दी बादमें इससे पूर्व की द्वितीय शताब्दिके आरम्भमें की गयी। समीपवर्ती खंडगिरि उदयगिरि पहाड़ियोंकी "हाथ गुफा" नामक गुफा पर जो शिलालेख मौजूद हैं, उनमें बताया गया है कि सम्राट खारवेलने अपने शासन कालके प्रथम वर्षमें, अपनी राजधानी—कलिंग नगरकी किलेबन्दी तथा फाटकों की मरम्मत करायी थी। इसीसे अनुमान किया जा रहा है कि कारवेलके शासन कालमें कलिंग साम्राज्यकी राजधानी यही शिशुपालगढ रही है। किन्तु जबतक कोई ऐसा शिला लेख नहीं मिलता, जिसमें खारवेलका नाम आया हो, तबतक इस अनुमानकी पुष्टि नहीं होती।

खुदाईसे इस बातका भी पता चला है कि ईसासे बादकी चौथी शताब्दीके मध्यमें शिशुपालगढ शायद वीरान हो गया और उसके बाद उसमें कोई आबादी नहीं रही। किन्तु यह अनुमान भी अभी पक्का नहीं कहा जा सकता।

### ऐतिहासिक महत्व

खुदाईके इस कार्यसे, हमारे देशके प्राचीन इतिहासका पता लगानेमें महत्वपूर्ण सहायता मिलेगी फाटक हित २१०० वर्ष पुराने किलेकी खोज, वैसे भी महत्व पूर्ण है, क्योंकि उससे हमें एक नयी जानकारी हुई है। यह पहला ही बार है कि हमें प्राचीन इतिहास कालका ऐसा गढ मिला है, जिसके निर्माणमें कोई विदेशी भाव नहीं पड़ा। तक्षशिला की सिरकाप की किलेबन्दी प्राचीन अवश्य है पर उसका निर्माण विदेशी भावसे मुक्त नहीं है और वह किलेबन्दी भारतीय यूनानी ढंग पर हुई है। साथ ही शिशुपालगढकी खुदाईमें मिट्टीकी बनी विशेष प्रकारकी चीजें मिलनेसे अन्य अनुमान भी किये जा रहे हैं और संभव है कि यह पता चले कि भारत के पूर्व तट पर शासन करनेवाले कलिंग सम्राटका व्यापार संबन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रीति से भूमध्य सागर तटवर्ती देशोंसे रहा हो

## जूटका उत्पादन

कलकत्ता, ५ अगस्त। पता चला है कि निकट भविष्यमें मद्रासमें जूट उपजाने का प्रयोग प्रारंभ किया जायगा, ताकि यह पता लगाया जा सके कि कौन-कौनसे क्षेत्र जूटके उत्पादनके उपयुक्त हैं। इस प्रयोगका उद्देश्य भारतमें जूट-उत्पादनकी वृद्धि करना है।


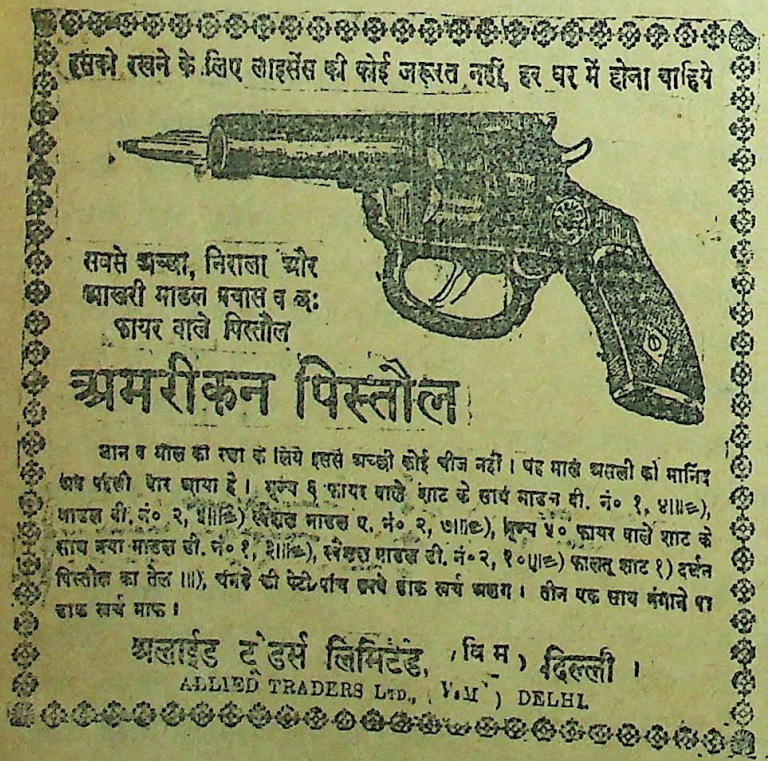


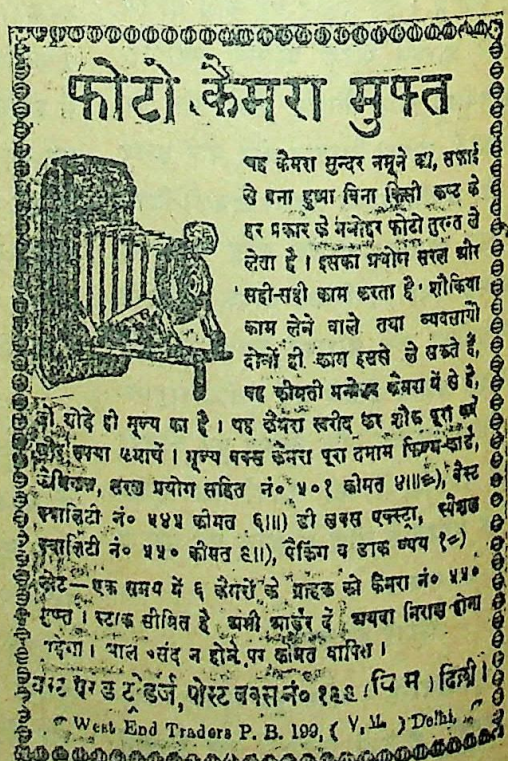



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# साहित्य और साहित्यकार

श्रीअम्बिकाप्रसाद पाण्डेय बी० ए०

"पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।
कर बिचार देखहु मन माहीं।"

आजसे सैकड़ों वर्ष पूर्व महाकवि तुलसी दासने पराधीनताको कोसते हुए यह उद्गार प्रकट किया था। उन दिनों भारत गुलाम था। देश पर मुसलमानी हुकूमत थी। भारतीय जनता सुख - समृद्धि खोकर कराह रही थी। ऐसी हालतमें कविकी यह वाणी निकलनी स्वाभाविक थी। लेकिन आज उस परतंत्रताका अन्त कर हम स्वतंत्र हो चुके हैं। इसलिये इस साल तुलसीदासकी पुण्य तिथि पर बरबस हमें कविकी उपर्युक्त पंक्तियां याद आयीं।

कवि की वाणी सर्वथा स्वच्छन्द और निरंकुश होती है। वह जो कुछ सोचता और अनुभव करता है, उसे उसकी लेखनी बिना किसी हिचकके व्यक्त करती है। इसीलिये कवि अपने युगका निर्माता या विधाता ही नहीं, प्रत्युत् पथप्रदर्शक भी माना जाता है और इसीसे देश व समाजके प्रति कविकी जिम्मेदारियां बहुत अधिक हैं। गोस्वामी तुलसीदासने अपने इस कविधर्मका पालन करनेमें जितनी जागरूकता दिखायी, उतनी अन्य शायद किसी भी कविने नहीं। और खूबी तो यह कि तुलसीदासके काव्यको हम जिस भी दृष्टिसे देखते हैं, उसमें विशेषता ही विशेषता पाते हैं। साहित्यिक उसमें साहित्यकी अनुपम छटा पाता है। धार्मिक व्यक्ति हररोज उसका पाठ कर अपने चंचल चित्तको शान्त करता है। राजनीतिज्ञ भी उसमें अपने मतलब की बहुतसी बातें पाता है। गांवका ग्रामीण दिनभरकी मिहनत मजदूरीके बाद शामको व्यक्तिगत या सामूहिक रूपमें रामायण या विनय-पत्रिका के पद गा मनोविनोद करता है। इतना ही नहीं, दीन - दुखी भिक्षुक तुलसीके ये पद गाकर आसानीसे अपनी जीविका उपार्जित कर लेता है। मतलब यह कि महलसे लेकर झोपड़े तक तुलसीका काव्य मानवहृदय को झंकृत करता रहता है। यह है उस अमर कविके काव्यकी व्यापकता और महानता।

हिन्दी संसार तुलसीको लेकर न सिर्फ भारतकी अन्यान्य भाषाओंके, प्रत्युत विदेशी भाषाओंके सामने भी, अपना मस्तक ऊंचा रखता है। लेकिन ऐसे महाकवियोंकी कोरी पुण्य तिथियां मनाकर ही हम अपने कर्तव्यों की इति श्री नहीं समझ सकते। किसी महाकविके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तो यही है कि हम उसके साहित्यका वास्तविक आदर एवं सम्मान करना सीखें। आये दिन हम अनेक महाकवियों अथवा महालेखकों की जयन्तियां या पुण्यतिथियां मनाते रहते हैं। यदि हम ऐसी प्रत्येक तिथि पर उस साहित्यकारकी कृतियोंको संग्रहीत करने का नियम बना लें तो इससे साहित्यके प्रचारमें बड़ी मदद मिलेगी। साथ ही किसी महाकवि या साहित्यकारकी तिथि सिर्फ एक दिन न मनाकर यदि साहित्यके संस्थाओं द्वारा 'सप्ताह' मनाने और उस सप्ताहमें उसके साहित्यका प्रचार करनेका आयोजन किया जाय तो इससे बहुत लाभ होगा। यह कौन नहीं जानता कि सूर और तुलसी, कबीर और केशव तथा आधुनिक कवियोंमें निराला और प्रसाद, महादेवी और गुप्तजी आदिका चाहे जितना विशिष्ट स्थान हो, लेकिन इनकी साहित्यिक प्रतिभाका परिचय कुछ थोड़ेसे लोगों तक ही सीमित रहता है? साथ ही साधारण लोगोंकी बात तो दूर रहे, काफी पढ़े लिखे लोगोंके पास भी उच्च कोटिकी पुस्तकोंका कोई संग्रह नहीं होता। कुछ अंशों तक इसका कारण आर्थिक स्थिति भी है, लेकिन विचार करने पर मालूम होगा कि इसकी अधिकांश जिम्मेदारी रुचि और भावनाकी कमजोरी पर ही है। पढ़े लिखे लोग यदि अपनी अन्य आवश्यकताओंमें सुन्दर सुरुचि-पूर्ण पुस्तकोंका संग्रह करना भी शामिल कर लें और हर महीने अपनी स्थितिके अनुसार कुछ पुस्तकें खरीदते रहें, तो इससे वे अपना और अपने साहित्यका बड़ा उपकार कर सकते हैं। साथ ही किसी साहित्यकारकी जयन्ती अथवा पुण्य तिथि जैसे विशेष अवसरों पर तो हमें विशेष तौरसे सुन्दर पुस्तकें खरीदनेका नियम-सा बना लेना चाहिये। जैसे धन-तेरसके दिन बर्तन आदि खरीदनेकी प्रथा प्रचलित है, उसी तरह सूर, तुलसी, कबीर आदि तथा रवीन्द्र, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी प्रसाद, प्रेमचन्द आदि की पुण्यतिथियों पर हमें उच्च कोटिकी पुस्तकें खरीदनेका नियम प्रचलित करना चाहिये। देश भरमें इस प्रथाका प्रचलन ज्यों ज्यों बढ़ेगा शिक्षा और साहित्यका प्रचार भी त्वरित बढ़ता जायगा। आम तौर पर यह देखा जाता है कि हममेंसे यदि कोई एक विशिष्ट पुस्तक खरीदता है, तो दूसरे मित्र देखादेखी उसे खरीदना नहीं चाहते, बल्कि उसी पुस्तकको उधार लेकर अपना काम चलाना चाहते हैं। वस्तुतः यह गन्दी आदत है। सच बात तो यह है कि दूसरेसे पुस्तक उधार मांगना तो अनुचित है ही, पर दूसरेको अपनी पुस्तक उधार देना उससे भी अधिक अनुचित है। ऐसा करके एक तो आप अपनी पुस्तक का दुरुपयोग कराते हैं और दूसरे एक अन्य व्यक्ति की, जिसे अपनी पुस्तक उधार देते हैं, रुचि बिगाड़ देते हैं। इस स्थल पर यह बता देना भी उचित है कि मुफ्तमें मिली हुई अथवा उधार ली हुई पुस्तकके प्रति हमारी रुचि जितनी होनी चाहिये, उतनी नहीं होती। इसलिये पुस्तकें खरीदनेकी प्रवृत्ति बढ़ानी सर्वथा उचित है और किसी भी साहित्यिक समारोह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# आर्थिक-आदर्श

भारत सरकारके यातायात मंत्री डा० जानमथाईने प्रयाग कृषि-कालेजमें भाषण देते हुए देशके उपयुक्त आर्थिक व्यवस्था पर विचारपूर्ण मन्तव्य व्यक्त किये थे। नीचे उनके भाषणका एक अंश दिया जा रहा है।

"कृषि इस देशके लिये सदा ही एक महत्व-पूर्ण और अमित प्रभावकरी धंधा रही है, किंतु आज तो इसकी आवश्यकता पहलेसे कहीं अधिक है। खाद्यकी कमी सबको चिंता में डाले हुए है। इस अभावका कारण बाहरसे खाद्य पदार्थका न आना और जन संख्याकी वृद्धि बताया जा रहा है। कृषि-सुधारकी आवश्यकता इसलिये बहुत अधिक हो गयी है कि हमारी आजादीके कारण हम पर और जिम्मेदारी आ गयी है। जनसाधारणके जीवन-यापन-क्रमको समुन्नत करना आवश्यक है। इस ध्येयसे जहां तक विचार किया जाता है ज्ञात होता है कि खेती भारतीय जनताकी सबसे प्रमुख धंधा रह ही जायगी क्योंकि बिना उत्पादनके कोई भी उन्नति संभव न होगी।

खेती केवल व्यवसाय ही नहीं है, जीविका ही नहीं है, यह एक जीवन-रीति भी है। खेतीसे जीवनको सहारा मिले यही यथेष्ट नहीं है, आवश्यक यह है कि खेती से हमारा जीवन भी विकसित हो। इसके लिये हमारे जीविकाके साधनोंको इतना समुन्नत होना चाहिये कि जनसाधारण को अपनी क्षुधा के निवारणकी चिंतासे मुक्ति मिल जाय। मनुष्योंके लिये ऐसे धंधे होने चाहिये जो उनकी जिन्दगीमें आनन्द भर सके।

ग्राम्य जीवन को समुदायोंके पारस्परिक सहयोग एवं आत्म निर्भरताके आधार पर संगठित करना होगा। कमसे कम भोजन वस्त्र और निवासके लिये तो उसे स्वयं-पूर्ण बनाना ही चाहिये। आवश्यक साधारण पदार्थोंमें प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय स्वयं-पूर्णता एक आवश्यक वस्तु है। निकट भविष्य में बड़े बड़े आर्थिक उलटफेर होंगे। इन उलट फेरोंमें जनसाधारणको सुरक्षित रखनेका प्रबंध किया जाना आवश्यक है जिससे कि इन तब्दीलियोंके समय उसकी जीवन-व्यवस्था टूट न जाये। भारत जैसे विशाल देशमें जनावश्यक पदार्थोंका जुटाना, एक ऐसा भारी काम है कि उसमें बहुतसे मध्यवर्ती मनुष्यों अथवा वितरकों की आवश्यकता पड़ जाती है। इन मध्य-वर्ती अवयवोंको देने बिलाने के बाद, इस तारीकेसे पैदा हुए माल बहुत मंहगे हो जायेंगे। इसके अतिरिक्त सामानोंको दूर दूर तक ढोकर रख आनेके लिये वाहनकी कमी भी कम नहीं है और इस समय जैसी कठिनाइयां हैं अभाव शीघ्र दूर होने, की आशा नहीं।

इन सभी कारणोंसे कुछ आवश्यकीय उपभोग्य पदार्थोंमें क्षेत्रीय स्वयं-पूर्णता होना एक ऐसा अनिवार्य विषय है जिसकी ओर सरकार और जनता दोनोंका ध्यान जाना चाहिये।

वर्तमानमें कुछ ऐसी अवस्था हो गयी है कि जीवनोपयोगी पदार्थोंकी प्राप्तिकी हम बड़े बड़े कारखाने खोल कर नहीं कर सकते। कमसे कम निकट भविष्यमें तो नहीं। इसके कई कारण है। आवश्यक कल-कांटों की अप्राप्ति, हुनरमंद कारीगरोंकी कमी, पूंजीकी कमी आदि उनमें से कई हैं।

इसलिये जहां तक छोटी छोटी आवश्यकता की चीजोंका सवाल है आवश्यकता इस बात की है कि गृहोद्योग धंधोंका जालसा बिछा दिया जावे। जनताको पूर्ण औद्योगिक बना देनेकी चिंतामें हमें एक और बात न भूलनी चाहिये। वह बात इस विषय का आध्यात्मिक पहलू है जिसे पश्चिमीय देश अपने औद्योगीकरणके प्रवाहमें भूल गये हैं। यह आवश्यक है कि भारत चाहे जिस प्रवाहमें बहे उसकी आध्यात्मिकता नष्ट नहीं होनी चाहिये। पूर्व पश्चिमका विभेद बताते हुए सामान्यतः यह बात कही जाती है कि पूर्व आध्यात्मिक है और पश्चिम भौतिक। पूर्व निग्रही है और पश्चिम संग्रही, यह दोनों दिशाओंके मनुष्योंको लेकर नहीं कहा गया है। मनुष्य तो दोनों ओर-छोरोंमें समान ही हैं। भारत और यूरोप में भी बहुत समान से विषय हैं। विभेद केवल इस बातमें है कि पिछले दो सौ वर्षोंके भीतर यूरोपमें यांत्रिक और इसके चलते औद्योगिक वातावरण प्रबल रूपसे व्याप गया है। अगर भारत का आर्थिक ढांचा सहयोगी कृषि एवं गृहोद्योग धंधोंके आधार पर गठित किया जा सके, तब पश्चिमकी भूलोंसे निस्तार मिल सकता है। नवस्वाधीन राष्ट्रको पश्चिमी देशोंके आदर्श पर नहीं बढ़ाना चाहिये। हमारी स्वाधीनता निकम्मी होगी अगर इसने हमलोगों उसी मार्ग पर बढ़ाया जिस पर पश्चिमके साम्राज्यवादी राष्ट्र चले हैं। हमारी स्वाधीनता

---

के अवसर पर हमें निश्चित रूपमें पुस्तकें खरीदनेका नियम बना लेना चाहिये। ऐसा नियम बना लेने पर प्रत्येक शिक्षित व्यक्तिके घरमें उसका एक अपना पुस्तकालय हो जायगा, जिसे उत्तरोत्तर समृद्ध बनानेकी चिन्ता और चेष्टा परिवारके सभी शिक्षित सदस्योंको होगी। वर्तमान में हिंदीके लेखकों और प्रकाशकों की यह आम शिकायत है कि उच्च कोटिकी पुस्तकों का विक्रय बहुत कम होता है जबकि सस्ता साहित्य बड़ी तेजीसे बिकता है। इसका परिणाम यह होता है कि उच्च साहित्यके प्रणेता अपनी मिहनतकी पूरी पूरी मजदूरीसे वंचित रह जाते हैं, फलतः उनका उत्साह भंग हो जाता है, उनकी प्रतिभा कुंठित हो जाती है, जिससे आगे वे साहित्य को अपनी उत्कृष्ट देन दे नही पाते। इसलिये साहित्यकारोंकी तिथियां मनाते समय हमें साहित्यके स्थायी प्रचारकी क्रियात्मक योजनाएं बना उन पर आचरण करना चाहिये। साहित्यकारोंके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# स्वाधीनता-दिवस

श्री नटवर

युग युग की साधना, तपस्या, बलिदानों का वर वरदान
कितने चिन्तन, यतन, और कितने संग्रामोंका परिणाम
प्रकट मुक्ति, साकार कर्मफल, संघ शक्ति कलियुग अवदान
भारत मां को देने आया अरे आज नव-जीवन-दान

इस मंगलमय बेलामें मंगलमयका मधु मंगल गान
गाओ आज विराट सुरोंमें हे हिमगिरि, त्यागो ध्रुव ध्यान
तड़ित-तान भर दो जगती में आज हुआ है स्वर्ण-विहान
सिंधु लहरियो, नाच उठो, मेदिनी सजा पावन परिधान

कल कल नाद करो अब नदियो, नहीं सुना अभिनव आह्वान
पवन आज ही तो पागल बननेका आया पर्व-महान
रजकण चमक उठो, लघु जीवो छोड़ो आत्मग्लानि लघुमान
मुस्काहट बिखेर दो कलियो, फूलो, फलो लुटा दो जान

अरी कल्पने कला पंख को खोल, मचा नूतन रसखान
ललित लेखनी कर्मठ मसि लेकर रच अब नूतन निर्माण
अब से पतन गुलामी, लघुताका मिटता है नाम-निशान
चिर जीवो स्वाधीन देश हे, चिर जीवो मजदूर किसान।

हमें जो शक्ति दी है उसको सबके हित और सबके सुखकी व्यवस्थामें लगाना चाहिये, किसी व्यक्ति या समूह विशेषके हितमें नहीं। महात्मा गांधी इसी आदर्शके लिये उद्योगशील थे, और अगर हम वास्तविक उन्नति चाहते हैं तो उनका आदर्श हमें विस्मृत न होना चाहिये।

# असत्याश्रित अर्थ व्यवस्था

कांग्रेस द्वारा नियोजित कृषि सधार समितिके अध्यक्ष डा० जे० सी० कुमारप्पा ने उस दिन शिलांमें एक जन सभामें गांधी जीके अर्थ-दर्शन पर प्रकाश डालते हुए सरकारी उद्योग नीतीकी आलोचना की। उनके भाषणका नीचे एक अंश दिया जारहा है।

"गांधीजीका अर्थ" आदर्श दो शब्दों पर आश्रित है जिन्हें सत्य और अहिंसा कहेंगे। सिलके उद्योग धंधोंकी अंधेपनासे जन दुख बढ़ेगा क्यों कि यह हिंसा और असत्य पर आश्रित है। हमें इस चीजका दुष्परिणाम पश्चिमी देशोंमें देखना चाहिये जहां व्यापक कष्ट और कठिनाइयां फैली हुई हैं और लोग भूखों मरनेकी अवस्थामें आगये हैं। भारत सरकार उद्योगी करणके मार्ग पर आगे बढ रही है। उसे चेत जाना चाहिये। भारतीय जनताके वर्तमान कष्टोंका कारण उसकी उद्योगिक नीति ही है। देशके अन्न उपजाने वाले क्षेत्रोंको नारियल और गन्ना उपजानेके काममें लगाया जाने लगा है। किन्तु जानना चाहिये कि चीनी और कपड़ेके मिल हमारे भारी शत्रू हैं इनकी हानि करनेकी ताकत अंग्रेजोंसे अधिक है। चावलके मिल हमारे लिये दुश्मनके किलेसे अधिक भयानक हैं जिनमें चावलके पोषक तत्वको जलाकर चावल तैयार होता है और जिनके मालिक सदा जनताको ठगने के प्रयत्नमें ही लगे रहते हैं। यांत्रिक खेती भी हमारा अहित करनें को ही आयी है। यह रीति अगर व्यापक हुई तो भर पेट खिलाने के बदले यह हमें मार डालेगी।

## संसारका सोना

संसारमें सबसे अधिक सोना अमरीकाके पास है अर्थात स्वर्ण राशिका६० सैकड़ा। अमेरिकाके कुल सोनेकी कीमत अमरीकाके कुल सोनेकी कीमत ७६ अरब कूती जाती है और इस हिसाबसे हर अमरीकी नर नारी पर ८६०) रुपये मूल्यका सोना पड़ता है। शेष दुनियामें ४६ अरबका सोना बताया जाता है जिसमें शेष संसारके आदमियों का हिस्सा २२) प्रति व्यक्ति है। इस हिसाबसे पृथक सोवियट सरकारका हिसाब है जिसने अपने सोनेका अन्दाज कभी नही बताया अनमान है कि रूसका नम्बर बादही है। कहते हैं कि इसके पास १६ से लेकर ३३ अरब तक का सोना है सकता है। आजसे पहले इंगलेन्डमें सभी देशोंसे अधिक सोना था पर इस समय इसके पास ६॥ अरबसे अधिकका सोना नहीं है। इस सूची में स्वीटजर लेन्डका नम्बर चौथा है इसके पास ४ अरब ३० करोड़का सोना है यह सोना उसके पुराने कोषसे दुगना युद्ध कालमें हुआ है। वेल्जियम ५ वां फ्रांस६ठा है। वेल्जियमके पास २ अरब और फ्रांसके पास कुल १॥ अरबका स्वर्ण है। भारतका स्वर्ण ९० करोड़का है। इससे अधिक सोना तो नीदरलेन्डके पास है।

अमेरिकामें अभी भी संसारके अन्य भागोंसे बहबह कर ६६ करोड़का सोना हर महीनेमें पहुंचता है। अमेरिकाके सासने सवाल है कि इसको लेकर वह क्या करेगा? दूसरे देशवाले तो अमेरिकासे माल ले उसका मल्य सोनेमें चमकाकर उसका उपयोगी कर लेते हैं इस तरह अमेरिकाके अपने व्यवहारके लिये उसे सोना मिलताही रहता है। तब वह जो सोनेका बिशाल पहाण नौक्स किलेके तहखानेमें छिपाकर रखा हुआ है वह क्या होगा, यह एक समस्या है। वास्तवमें उसका व्यवहारिक मुल्य अब कुछ नहीं रह गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सुन्दर बनिये—

## पांड्स के दो क्रीम से

एक निर्मलता के लिये- एक सुरक्षा के लिये

सुन्दरता के लिये आपको खास अभिप्रायवाले दो क्रीम का प्रयोग करना चाहिये। पहिला, क्योंकि सौन्दर्य-पुस्तक में सब से पहिले स्वच्छता का स्थान है, अतः रोमछिद्रों के विकारों की स्वच्छता के लिये और चेहरे को कोमल बनाये रखने के लिये उत्तम रूपसे मिश्रित, गहराई में प्रवेश करनेवाले तेलों से बनाया गया क्रीम— पांड्स कोल्ड क्रीम। दूसरा, मुख को धूल और गर्मी से सुरक्षित रखने के लिये दिन में अदृश्य रूप से लगा रहनेवाला हलका और चिकनाई-रहित क्रीम—पांड्स वेनिशिंग क्रीम।

प्रति रात्रि पांड्स कोल्ड क्रीम से अपने चेहरे को स्वच्छ कीजिये। काफी मात्रा में उसे चेहरे और गले पर फैलाइये, थोड़ी देर तक मलिये और तब पोंछ डालिये। कुछ दिन का यह उपचार ही आपके मुख को अपूर्व रूप से निर्मल और उज्ज्वल बना देगा।

अपने चेहरे की पांड्स के चिकनाई-रहित वेनिशिंग क्रीम से प्रति सवेरे रक्षा कीजिये। हलके-हलके थपथपाइये और मलिये और देखिये वह गायब हो गया है! लेकिन धूल और सूर्यकिरणों से आपके चेहरे को सुरक्षित रखने के लिये यह अदृश्य क्रीम दिनभर लगा रहता है और मुख को रेशम की तरह कोमल शृंगार देता है। जरा परीक्षा कीजिये!

स्मरण रखिये ग्रीष्म की कठोर गरमी और सर्दी की शीत दोनों ही हमारे शरीर के प्रकृत तेलों को सुखाकर उसे काला और भद्दा बना देती हैं।

# पांड्स

यह भी स्मरण रखिये कि छिद्रों की गहराई में धूल या मैल के कणों से ही शरीर में अधिकांश दाग पैदा हो जाते हैं।

पांड्स के दैनिक, नियमित प्रयोग से चेहरा, स्वच्छ, उज्ज्वल और निर्मल हो जावेगा—वह सदैव युवा दिखेगा। आपके 'सौन्दर्य-नियमन' के इस साधन को प्रतिदिन पांड्स के दो क्रीम से पूरा कीजिये।

व्यापारिक विवरण के लिये- एल. डी. हेमूर एंड कं. (इंडिया) लि०
बम्बई - कलकत्ता - देहली - मदरास - नोवा गोवा - कराची - कोलम्बो - रंगून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ-चक्र

**मजदूरोंकेलिए लाभका हिस्सा**

भारतीय उद्योगधंधोंकी बाल्यवस्था होते हुए भी अभी ही इनमें वे सब उलझने आने लगी हैं जो पश्चिमीय देशोंमें उनके प्रौढ़ और विस्तृत हो जाने पर आयी थीं। ऐसी ही उलझनोंमें उद्योगधंधों के मालिक और मजदूरोंका पारस्परिक अर्थ-संबंध है। कारखानोंमें मालिक अपना पैसा लगाता है, तो मजदूर अपनी मेहनत-बुद्धि अपने अपने क्षेत्रमें दोनों ही खर्च करते हैं। इसलिये धीर-धीरे अब मजदूर यह मांग करने लग हैं कि कारखानेके मुनाफेमें से उन्हें भी कुछ मिलना चाहिये। अच्छे वेतन और कार्य करने के सुन्दर वातावरण की मांग ही आजकलके हड़तालोंका प्रधान कारण है।

गत वर्ष तक कारखानोंके लाभ का अंश तो कहीं मांगा न गया था, इस कारण इस बार श्री जगजीवनरामके श्रम-मंत्रित्वमें लाभांश देनेकी नीति जो स्वीकार की गयी यह एक क्रांतिकारी बात थी। इस नीतिकी बहुत बड़ी व्यापकता है मगर हमारे देशमें मजदूरोंके निपढ़ होनेके कारण इस चीजको समझा नहीं जा रहा है। उधर कारखानेके मालिक इसे समझ रहे हैं। मजदूरी आप कम या बेशी जो इच्छा हो दीजिये, किन्तु औद्योगिक संस्थानों द्वारा अर्जित लाभमें मजदूरोंका कुछ भी भाग आप स्वीकार करते हैं तो पूंजी के साथ श्रमको भी आप भागीदार स्वीकार कर रहे हैं। फिर इसमें श्रमका अंश अभी प्रारंभमें भले ही आप कम रखदा दें पर सिद्धांत रूप से इसे स्वीकार कर लेनेके बाद आपको इसे फिर बढ़ाना ही पड़ेगा और एक दिन श्रम बढ़ कर पूंजीसे अधिक नहीं तो उसका बराबरका हिस्सेदार तो हो ही जायगा।

भारत सरकारने कल कारखानों में मजदूरोंको लाभांश देनेके प्रश्न पर विचार करनेके लिये एक समिति बनायी है। मजदूर इस संबंधमें क्या कर रहे हैं पता नहीं, पर मालिक क्या कर रहे हैं यह पत्रोंमें निकलता रहता है। उद्योगपति प्रायः इस लाभ योजनाके विरुद्ध हैं। सुप्रसिद्ध औद्योगिक और महात्मा गांधीके एक प्रिय शिष्य श्री घनश्यामदास बिड़लाने इस लाभदानका विरोध किया है। सभी बड़े बड़े उद्योगपति उनके कथनसे सहमत हैं। अभी उतने दिन दिल्लीके अखिल भारतीय रेडियो स्टेशनसे ब्राडकास्ट करते हुए आपने इस संबंधमें जो भाषण किया था, पाठकों की जानकारीके लिये उसका अभिप्राय हम देना चाहते हैं। बिड़लाजीने मुख्यतः जिन बातों के आधार पर विरोध किया था, उनमें कुछ तो तथ्य अवश्य है। जहां अन्योंकी दलीलोंमें स्वार्थ-रक्षाकी भावना स्पष्ट दिखती है वहां बिड़लाजी के विचार प्रच्छन्न हैं।

बिड़लाजीका विरोध इसलिये है कि कारखानोंमें सदा नफा ही होगा, इसकी गारंटी कौन दे। नफा होने पर तो मजदूर उसका हिस्सा पायेंगे मगर घाटा होगा तब उनसे कैसे लिया जायगा और न भी लिया जाय तो उस साल लाभांश न मिलनेसे मजदूर मानेंगे कैसे। लाभमें हिस्साके सिद्धांत मान लेने पर सुस्त और चुस्त मजदूरमें कोई भेद नहीं रह जायगा और इससे उत्पादनमें ह्रास होगा। नफाका अंश घटजानेसे खानगी लोग उद्योगधंधोंमें पैसा न लगायेंगे फलतः उसका प्रसार रुकेगा। मजदूरोंको लाभांश देते रहनेके लिये वस्तुओं का मूल्य-सतह ऊंचा रखना ही पड़ेगा जिससे मालिक और मजदूरोंके कारण जन साधारण उपभोक्ताको अधिक दाम देना पड़ेगा। इस तरह मुट्ठी भरके लाभके लिये विशाल समाजको दूहना पड़ेगा। मजदूरकी एक श्रेणी न होगी, क्योंकि किसी कामनें कम मुनाफा है किसीमें अधिक—ऐसी दशामें किसी मजदूरको कम मिलेगा हालांकि वह अधिक मिहनत करेगा और किसी को अधिक मिल जायगा यद्यपि वह कम परिश्रम करेगा : कारखानेके मजदूर और मालिकके बीच सदा अविश्वासका वातावरण बना रहेगा क्योंकि मजदूर हमेशा यह शक पालेंगे कि कारखानेका हिसाब ठीक नहीं रखा जाता। ऐसा होना संभव भी है। फलतः अशांति और असन्तोष बना रह जायगा और सहयोगितापूर्ण संबंध काम नहीं चलेंगा। मजदूरोंमें स्थायित्व नहीं रहेगा क्योंकि जिस कारखानेमें अधिक नफा होगा उसी में मजदूर भागेंगे और इस तरह उनकी कलामें श्रेष्ठत्वका विकास न हो पायगा, आदि।

इधर प्रायः सभी स्थानोंके चेम्बर आफ कामर्सने प्रायः इसी तरह के विचार इस प्रश्न पर व्यक्त किये हैं। अभी उस दिन मालावार चेम्बर आफ कमर्सकी ओरसे रायबहादुर बी० के० रेड्डीने उद्योग मंत्री डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जीके पास एक स्मृतिपत्र उपस्थित कर यही व्यक्त किया है। जिसमें भी येही बाते हैं।

**कोयलेकी कठिनाइयां ज्योंकी त्यों**

कोयलेकी कठिनाइयां ज्योंकी त्यों हैं। इसका कारण न कोयला उत्पादनकी की कमी है न और कुछ। मुख्य बाधा वहन-वाहनकी कठिनायी है। सरकारी रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि नवम्बर १९४७से अप्रेल १९४८ तककी अवधि में सभी खानोंमें २२ लाख ४० हजार टन कोयला प्रति मास निकलता रहा। इनमें से रेलोंके द्वारा १९ लाख टन ही ढोया जा सका। ४० हजार टन कोयला प्रति मास सड़क द्वारा ढोये जानेकी व्यवस्थाकी गयी थी। इस तरह ३ लाख टन कोयला प्रति महीन बचता गया जिसकी निकास की कोई व्यवस्था न हो सकी। इस प्रकार जमा होते होते बंगाल और बिहार के कोयलाके खानोंमें २४ लाख टन कोयला एकत्रित हो गया जो अभी तक पड़ा हुआ है।

वहन-वाहनकी कठिनायीके कारण कोयला वितरण विभाग बड़ी अड़चनोंके साथ काम कर रहा है। दूसरी कठिनायी यह है कि निकाल गये सारे कोयलेकी निकासी की व्यवस्था न होनेके कारण बढ़िया किस्मके कोयले पर ही मार पड़ गयी है जबकि घटिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किस्मका कोयला पड़ा हुआ है। सरकारको इसकी रोक थाम करनी पड़ी है। रेल्वे के प्रबन्ध में असमान गड़बड़ी एवं कहीं गाड़ियों का सुभीता कहीं अधिक दिक्कत के कारण भी कोयला समान रूपसे सब जगह नहीं पहुंचाया जा सका। इसलिये अब मुगलसराय से ऊपरके स्टेशनोंके संबंधमें कुछ रोक लगायी गयी है। मुगल सरायसे नीचे के स्टेशनोंके लिये अब अधिक डिब्बे लिये जा रहे हैं। इस हिसाबसे पश्चिम बंगालके लिये कुछ अधिक कोयला दिया जा सका है। जूटके मिलोंके पास कोयलेका स्टाक, पता लगा है कि अभी काफी है। इसलिये उनके कोटेमें कमीकी गयी है।

सरकारने इस चीजकी सुव्यवस्थाके लिये एक कोयला परामर्शदात्री समिति बनायी है जिसकी बैठकें नियमित रूपसे हर महीने हुआ करती हैं और उसके समुचित वितरण पर विचार कर व्यवस्था करती हैं।

उस दिन केन्द्रके यातायात मंत्री डा० जीवराजभाईके सभापतित्वमें रेलवे अर्थ समितिकी बैठक हुई जिसमें कई महत्वपूर्ण निश्चय किये गये। यातायात भी कठिनायी और तज्जनित अवस्थाको दृष्टिमें रख कर २०० और नये इंजिन अमेरिकासे खरीद कर लानका निश्चय किया गया है। कल्याण (बम्बई) में जी० आई० पी० के विद्युतोत्पादक केन्द्रकी शक्ति वृद्धि करने एवं पचोरा-जमनरेकी छोटी रेल लाइन खरीद लेनेका निश्चय हुआ। दिल्लीसे मथुरा तक दोहरी रेल लाइन बनाने का भी विचारहुआ और यह निश्चय हुआ कि आगामी दोवर्षोंमें ४८ करोड़ रुपये खर्चकर प्रायः सभी रेलकेडब्बे नये बनाये तथा और बढ़ाये जायें।

**सरकारी सहयोग प्राप्त औद्योगिक प्रतिष्ठान**

देशमें उद्योगधंधोंके विस्तारके लिये भारत सरकारने नीति निश्चत की है कि उसके लिये सरकारी सहायता तथा देख रेखमें जनताके सहयोगसे औद्योगिक प्रतिष्ठान खुलें। अभी-विमान निर्माणका काम हाथमें लेनेके लिये एक औद्योगिक आर्थिक संस्थानकी स्थापना हुई है जिसकी पूंजीमें सैकड़े ५१ रुपये सरकारके रहेंगे। प्रतिष्ठान की ओरसेशीघ्र ही ९से११ अगस्त तक संस्थानके प्रधानकार्यालय-दिल्लीमें एवं रिजर्व बैंककी बम्बई कलकत्ता, मद्रास और दिल्लीकी शाखाओं में का काम किया जायगा। सरकारने कम्पनी की पूंजी लौटाने और कमसेकम २।) रुपये सैकड़े मुनाफे की गारंटी दी है। सरकारी पूंजी रहने पर भी यह कम्पनी जनताकी कम्पनीके समान रहेगी और उस पर आय कर, अतिरिक्त कर आदि लगेंगे।

**टेली फोन यंत्र बनानका कारखाना**

'इण्डिया टलीफोन इंडस्ट्रिज' नामसे एक नया कारखाना भारत सरकार अपनी अधीनता में खोल रही है जिसमें टेलीफोनके सुनने वाले यन्त्र बनाये जायेंगे। यह कारखाना बंगलोरमें होगा। कारखानेके बननेमें २॥ करोड़ रुपये व्यय होंगे। कारखानेमें दस हजार मजदूरोंको काम मिलेगा और अनुमान है कि आगामी ५ वर्षोंमें पूरा काम होने लगेगा। अभी जैसे जैसे मकान औरमशीन तैयार होते जायेंगे वैसे वैसे काम बढ़ता जायेगा। अभी तुरंत केवल 'रिसीवर' बनाया जायगा जिसका काम अक्तूबरमें शुरू कर दिया जायगा। कारखानेमें दो हजार महीना टेलीफोन यन्त्र तैयार होनेका तखमीना लगाया गया ह


घर पर छापने के लिये जेबी प्रेस

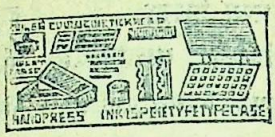

नाम, पता, पत्र, लेबुल एवं प्रोग्राम आदि घर पर ही अच्छी तरह इसको मदद से छापे जा सकते हैं। मूल्य १ नं०२, नं २, २॥) स्पेशल ३॥) सर्वोत्तम ४) पोस्टेज ॥=)। पता-फ्रेंच कमर्शयल स्टोर्स पो० बक्स नं० १२२१६, कलकत्ता

मुफ्त सरल सर्प विष चिकित्सा। साप, बिच्छू, कुत्ता, सियार, चूहा, कीट-पतंग, मक्खियां, अफीम, पारा आदि की सरल चिकित्सा की पुस्तक बिल्कुल मुफ्त बांटी जायगी। दो आने के डाक टिकट भेज पत्र भेजें।
हिमालिया केमिकल वर्कर्स
पोष्ट ब० नं० ११४०५ कलकत्ता, ६।

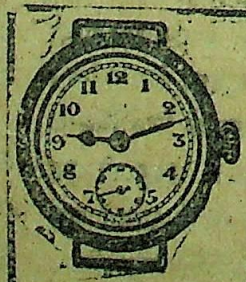

ORIENT'S GOLDEN WATCHES
Golden In Colour *Golden In Beauty
Golden In Timekeeping *Golden In Price
Here is a splendid selection of fine watches Suitable for gents & Ladies' wear, very strong, durable & accurate Timekeepers, Swiss Made, Roskopf lever movements, fitted with 4 or 5 Jewels, golden case, unbreakable Glass, white enamelled dial, guaranteed 3 years, each with Plastic strap & velvet Box.
Gents' (11''' Size) Rs. 31/-
Ladies' (8''' Size) Rs. 39/-
Postage Rs, 1- (Free for 2 Watches)
ORIENT WATCH SYNDICATE. Sec (14) DUM DUM, (Bengal)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# अर्थ-चक्र

## रिजर्व बैंकका रिपोर्ट

भारतीय रिजर्व बैंकके केन्द्रीय संचालक-समिति द्वारा प्रकाशित वार्षिक रिपोर्ट से, जो जून १९४८ में समाप्त होनेवाले वर्ष से, संबंध रखती है, यह ज्ञात होता है कि कि रिजर्व बैंककी इस वर्ष १० करोड़ ३८ लाख २८ हजार ४ सौ २८ रुपये १४ आने ८ पाई का लाभ रहा : गत वर्ष इसी अवधिमें लाभ की रकम कड़ोर कम थी । इस लाभमें कानूनके अनुसार अधिक से अधिक मुनाफा, यानी ४ रु० सैकड़े देकर प्राप्त, २० लाख रुपये बैंकके हिस्से खरीदने वाले लोगोंको देनेके लिये रखा गया है। शेष रकम भारत सरकार के खाते में जमा हो जायेगी। जमा रकममें से समझौते द्वारा निश्चित नियमके आधारपर पाकिस्तानको भी, १॥ करोड़ हिस्सा मिलेगा।

बैंककी रिपोर्टमें इस विषयके अतिरिक्त कारबार, देशकी स्थिति– तथा देशके बैंक व्यवसायके संक्षिप्त विवरण भी दिये गये हैं। कहा गया है कि देशकी आर्थिक स्थिति पर इस वर्ष भर देश-विभाजन जन्य प्रभाव छाया रहा। विनियंत्रणके निश्चयके कारण मुद्रा-स्फीति पुनः एकबार दिखायी पड़ने लगी। औद्योगिक उत्पादन दो कारणोंसे घटा – एक तो पूंजीपतियोंकी आशंकाके कारण कि न जाने सरकारी नीति क्या होगी दूसरे श्रमिक अशांतिके कारण। मुख्यतया यहनबाहनकी कठिनायीके कारण व्यवहार्य वस्तुओंका अभाव रहा। इस क्षेत्र अभावका कारण सरकार की नियंत्रित आयात-नीति भी रही। पदार्थोंका मूल्य–स्तर धीरे धीरे चढ़ता ही रहा जिससे जनतामें भरोसा नहीं रह गया और व्यवसाय कम जोर पड़ गया। इस परिस्थितिका सामना करनेके लिये सरकारने तीन वर्षोंके लिये औद्योगिक विराम संधिकी घोषणा करायी राष्ट्रीय आर्थिक संस्थानकी स्थापना की गयी, बजटमें कर-निष्पत्तिकी व्यवस्था हुई और सरकारने अपनी उस उद्योग-नीतिकी घोषणा की जिसने राष्ट्रीय और खानगी उद्योगों के बीच एक लकीर खींच दी। तथा यह कहा कि आगामी दस वर्षोंतक उद्योग धंधोंके राष्ट्रीयकरणकी दिशामें अधाधुंध पग न उठाया जायगा।

गत वर्ष विदेश व्यापार भी बढ़ती पर रहा। यह वृद्धि ११ करोड़के आस रही। भारत सरकारने इस वर्ष ७५ करोड़ रुपये का ऋण लिया। पहला ऋण जो २-सैकड़े ब्याजका था नवम्बर १९४७में चालू किया गया और दूसरा ३॥ रुपये सैकड़ेमें जून १९४८ में। दोनोंके रुपये पूरे पूरे आ गये सरकारकी ओरसे दो तरहके ऋणोंकी अदायगी की गयी।

आलोच्य वर्षमें देशभरमें ५ नये बैंकोंको रिजर्वबैंककेसूचीन्यस्त बैंकोंमेंशामिल किया गया और तीन बैंकोंको हटाया गया। इस तरह अब कुल शेड्यूल बैंकोंकी संख्या ९९ हुई। इन बैंकोंकी शाखा प्रशाखाओंको लेकर सबकी संख्या ४९० है। इन शेड्यूल बैंकों रिजर्व बैंकसे मुद्दती ऋणोंकी मांग की और २५ जून १९४८ तक कुल १११०,८४ करोड़की मांग इन बैंकोंकी हुई। इन बैंकोंको गत सालसे अधिक पेशगी भी दी गयी जिसकीजोड़४६८.४१करोड़होती है। रिजर्व बैंकसे दो प्रान्तीय सहयोग-बैंकोंको लेकर १२ बैंकोंको ऋण दिया गया।

शेड्यूल बैंकोंको छोड़कर देशभरमें असबद्ध ननशिड्यूल बैंकोंकी संख्या ६८५ हो गयी। गत वर्ष यहकम थी।

### रिजर्व बैंकका राष्ट्रीयकरण

गत ४ फरवरीको सरकारने यह निश्चय किया कि रिजर्व बैंकको राष्ट्रीय बना लिया जाय। बैंकके संचालकोंने यद्यपि इस निश्चयपर आपत्ति की पर सरकार अपने निश्चय पर दृढ़ रही रही और उसने यह घोषणा की कि बैंकके कारबारमें कोई हस्तक्षेप न हो केवलमात्र उसका नेशनलिज़ धीरे से परिवर्तित हो जायेगा।

### विदेशवासी भारतीय

विदेशोंमें जा बसनेवाले भारतीयोंकी समस्या विकट हो गयी है। संसारके गोरे देशोंमें भारतीयोंको हेय दृष्टिसे देखा जाता है। जबतक देश गुलामथा, भारतीय जहरकी घूंट पीकर अपमान सहते थे। अब देश आजाद हुआ तो भारतीयोंके मनोभाव भी बदल गये हैं भारतीय समझने लगे हैं कि हम भी स्वाधीन हैं, हम किसीसे कम क्यों! बा नयी होनेसे अभी भावोंका द्वन्द चल रहा है। यह द्वंद दक्षिण अफ्रिकामें तो बहुत तीव्र हो गया है जहांसे भारतीयोंको निकाल बाहर करनेका षडयंत्र भी डा० मालनकी सरकार कर रही है। पड़ोसी लंकामें भी भारतीय मजदूरोंके साथ पक्षपात का बर्ताव हो रहा रहा है। बर्मामें भी एकबार भारतीय विद्वेष के जगनेकी खबर आयी थी पर इधर वह भावना कुछ कम गयी है, अथवा अभी वहां कुछ दूसरी बातें चल रही हैं इस कारण प्रस्तुत विषय दबा हुआ है। जो हो, भारतीय गुलाम थे और अब आजाद हुए हैं तो भी अभीउनबल और गौरवक हीनताकी जो गाथा प्रचलित थी, दूर नहीं हुई। पर वह दूर होगी। वह दिन भी आयेग जब भारतीय भी उसी सम्मान और श्रद्धा के पात्र होंगे जो अभी विदेशियोंको मिलता

भारतीय जहां भी गया, भारत वहां पहुंचा। एक अंग्रेज कविके सिपाहीने कहा, "जहां कहीं ब्रिटिश सिपाही हैं, वहीं ब्रिटेन है"। भारतीय भी जहां हैं भारतका एक छोटा अंश वहां है। ऐसी दशामें हमें जानना चाहिये कि हमारे देश-भाई कहां कहां हैं और किस अवस्थामें हैं। नीचे हम एक सूचीदे रहे हैं जिससे यह पता लगेगा। यद्यपि इसमें दिये गये आंकड़े पुराने हैं फिर भी अध्ययनार्थ यथेष्ट हैं।–

| | |
|---|---|
| आस्ट्रेलिया | ४५४४ |
| कनाडा | १५०० |
| न्यूजीलैंड | १२०० |
| दक्षिण अफ्रिका | २६६०१६ |
| रोडेशिया | २५४७ |
| लंका | ५०००० |

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | |
|---|---|
| ममायाः | ७४८८ ६ |
| मरिशश | २६६५४०७४ |
| ट्रिनिडाड | १७०३६६ |
| गायना | १५७१८५ |
| फिजी | ६०५५८१ |
| बर्मा | १०१९१७८१५ |
| युगांडा | २६९३२ |
| केनिया | ४७००० |
| टांग्यानिका | ३५५१९ |
| जमेका | २६५०७ |
| हांगकांग | ४३४५ |
| जंजीबार | १४००० |
| बोर्नियो | १२९८ |
| अदन | ५५९४ |
| ग्रेलैंड | ५००० |
| मारका संयुक्तराष्ट्र | ७१२८ |

ल्बसे अधिक भारतीय बर्मामें और सबसे कम जिब्राल्टर माल्टा और नाइजीरियामें हैं अर्थात ८०, ४१ और ३१।

### भारतीय निर्यात

जून १९४८में समाप्त होनेवाले ६ महीनोंमें २०३ करोड़का माल भारतने विदेश भेजे। इन्हीं महीनोंमें गत वर्ष यह व्यापार १६३ करोड़का हुआ था। इन आंकड़ों में पाकिस्तान गये हुए मालके आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं जो पूरे पूरे मिल नहीं रहे। कलकत्ता, बम्बई और मद्रास इन तीन बन्दरगाहोंसे निर्यातका काम हुआ और अधिकांशमें पाट, सन, अबरख, रेंडी और तल, तीसी और तेल, मूंगफली और तेल अन्य तेलहन, गोंद, तथा कई प्रकारके रंग साजीके मसाले, हड्डी और खाद्यक नियों में वृद्धि हुई।

### मैसूरमें रेशमका धंधा

मैसूरमें रेशमका धंधा बड़े पैमाने पर होता है। देश भरमें जितना रेशम पैदा होता होता है। उसका करीब करीब ६० प्रतिशत मैसूरमें होता है। रेशमका धंधा राज्यके दो लाख परिवारोंको रोजी देता है राज्यमें करीब ८० हजार एकड़में शहतूतके तरखत लगाये गये हैं जिनसे रेशमके कीड़ों को पाला जाता है, रेशमका सूत बनाने के लिये ४ हजारके करीब चर्खे हैं और द हजारके करीब रेशम प्रस्तुत करनेके यंत्रा उत्पन्न रेशमका मूल्य तीन करोड़ रुपया होत है जो केवल रेशमका दाम है। सूत और वस्त्रवे का नहीं। गत युद्धमें रेशमके उद्योग धंधे को बहुत महत्व हो गया क्योंकि इसकी मांग बहुत बढ़ गयी थी। मैसूर सरकार इस उद्योग धंधेके और विकासके लिये बहुत प्रयत्न कर रही है।

### कोयलासे पेट्रोल

पेट्रोलकी कमी पड़नेके कारण भारत सरकार इस बातके प्रयत्नमें है कि मोटरमें खर्च होनेके लिये कोयलासे पेट्रोल निकालने की व्यवस्था की जाय। इस कामके लिये सरकारने बाहरसे विशेषज्ञ बुलाये हैं और यह विचार कर रहे हैं कि कारखाना खोला जाय। यह प्रबन्ध किया जायगा कि इस प्रकार से १० लाख टन मोटर आयल तैयार हो जाया करे। कहा जाता है कि सात टन कोयलासे १ टन तेल बनता है। इस तरह ७० लाख टन कोयला इस काममें लाया जायगा जो कुल उत्पादनका चतुर्थांश है। कारखाना खड़ा करनेमें ५० करोड़ रुपये लगेंगे और कारखानेमें दो लाख कीलोवाट बिजली की आवश्यकता पड़ेगी। इस कारखानेमें प्रायः १५ करोड़का पेट्रोल तैयार होगा।

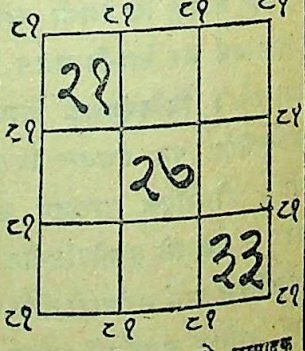


**होमियोपैथिक दवाइयां** प्रति डाम ॥). ॥)॥ आना है।

हरएक बीमारियों की दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। **मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी**

९८ नम्बर क्लाइव स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

## ॥ ८००० रु० नकद इनाम ॥

पहिला इनाम—ठीक हल के लिए ६००० रु० (जो एक अधिक हल ठीक होने पर बराबर बांट दिया जावेगा)। दूसरा इनाम—सब से अधिक हलों के लिये १००० रु०। तीसरा इनाम सब से पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १००० रु०।

हल क्या करना है? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भांति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़ें उत्तर २१ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है।

| | | |
|---|---|---|
| २१ | | |
| | २७ | |
| | | ३३ |

दाखला फीस—एक रु० प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो सम्पादक महोदय दैनिक अमर भारत के पास रखा गया है खाना दर खाना मिलेगा। इनामी नतीजे की कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला फीस की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी होसकती है पर सही हल के इनाम की कम से कम ५० रु० की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर पहुंचने के हम जिम्मेवार न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में वापिस न होगी मैनेजर साहिब पहेली का फैसला कानूनी व हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता हलों पर व मीआर्डर कोपन पर साफ लिखें हल ३१ अगस्त तक डाक में डाल देने चाहिये। इसके पश्चात भेजा हुआ कोई हल स्वीकार न किया जावेगा सही हल १५ सितम्बर को प्रकाशित कर दिया जावेगा।

॥ ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए०, दिल्ली ॥

E T & Company Post Bag No 52 A Delhi


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# हमारी राष्ट्रीय पोशाक

श्री अनिरुद्ध लाल

इस समय राष्ट्रीय निर्माणका जो सर्वतोमुखी काम चल रहा है उसमें बहुतसे विषय जो होने चाहिये थे नहीं हो रहे और जिन्हें नहीं होना चाहिये था हो रहे हैं। पहलेके उदाहरण स्वरूप हम राष्ट्रीय पोशाककी समस्या रखेंगे। पोशाक परिच्छदके विषयमें बहुत अधिक अध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने वाला पुरुष इसकी ओरसे उदासीनता दिखा सकता है पर हम जानते हैं कि वेशभूषाका भौतिक प्रभाव बहुत अधिक होता है। आध्यात्मिक क्षेत्र पर भी इसका प्रभाव कम नहीं पड़ता, नहीं तो राजाओंके लिये, छात्रोंके लिये, सन्यासियोंके लिये, एवं विधवाओंके लिये अलग अलग पोशाक की व्यवस्था क्यों थी? क्यों मृतक-श्राद्ध कर्ता कपड़े नहीं लगा सकता और क्यों नंगे शरीर भोजन पर बैठना वर्जित है?

इसी प्रकार राष्ट्रकी एक पोशाक होनी चाहिये। हमारे देशमें इसका अभाव है और यह अभाव अप्रत्यक्ष रूपसे हमारी राष्ट्रीयता पर बराबर प्रहार करता हुआ उसको कुछ न कुछ शिथिल करनेमें समर्थ रहा है। जो लोग विदेशोंका पर्यटन कर चुके हैं उन्हें यह बात बतानी न होगी कि पोशाक ही राष्ट्रीयताका प्रधान चिन्ह है। अगर हम पोशाककी आवश्यकता न मानें तो राष्ट्रीय झंडे और राष्ट्रीय गान का महत्व भी कम करेंगे। सभी चीनी एक तरहकी पोशाक पहनते हैं, सभी अंग्रेज एक ही प्रकारकी। तुर्कोंकी अपनी पोशाक है, यूनानियोंकीअलग, क्या पोशाकोंके द्वारा मारवाड़ी, पारसी, मथिल, बिहारी, बंगालीकाभेद नहींखुलता? कोई विदेशी जो हमारे यहां आता है,हमारी पोशाककी भिन्नता देख कर तुरत यह कह बैठता है कि भारत एक राष्ट्र नहीं है, और उसके इस कथनसे संसारका जन-मत हमारी राष्ट्रीयताके विरुद्ध बनता है और वह निर्बल पड़ती है।

दुर्भाग्यवश हमारी कोई राष्ट्रीय पोशाक नहीं है। पोशाक के तीन विभागों–कमरसे नीचे,कमरसे ऊपर और शिर-में से किसी में भी हमारे देशमें एकरूपता नहीं है। कमर से नीचे ढीली ढाली चुमटदार सलवार पाजामा (चूस्त और खलीता) पैन्ट पूरी और आधी) से लेकर धोती और लुंगी तक चलती है। कमरसे ऊपर नीचेके कुर्ता और कमीज पर कोट (तरह तरहके कटशेरवानी, निर्जई और बण्डी चलती हैं। सबसे अधिक विभिन्नता है शिरके ऊपर। यहां वहुव्य, और मितव्यविशालता और क्षुद्रता गुरुता और लघुता-सबका उदाहरण मौजूद है। इसबीत गजके चौड़साफेसे लेकर, जो गज भर चौड़े मलमलका होता है, और पश्चिम के पंजाबी, सीमाप्रांतीय तथा सिख लोग बांधते हैं, चार अंगुल चौड़ी पगड़ीका साफा मारवाड़ी भाइयोंके शिर पर शोभता है। पारसियोंकी गायके खुरकेआकारकी, मैथिलों की ओसारेदार और अन्योंकी, शिरसे सटी सटी हुई पगड़ियां भी, मद्रासीकी भिन्न और महाराष्ट्रीकी भिन्न होती हैं। मुसलमानी फेजसे लेकर लखनवी दो पल्लिया तक की बहार शिर पर देखी जा सकती है। नयी पोशाकोंमें हैट भी चाल है जो शिरकी रक्षा करनेमें अद्वितीय होनेके अतिरिक्त गर्मीमें हवा करने और बाजार हाटसे सौदा ढोनेके काममें मजेमें आता है। पोशाकोंकी बनावट और पहननेके ढंगमें भी विचित्रता है और उनके रंगमें तो बहुत ही विभिन्नता हलक रंगोंसे लेकर गहरे तक,सभी तरहके रंग प्रयोगमें आते हैं। पुरुषोंकी पोशाकमें यह विचित्रता स्त्रियोंकी पोशाकसे अधिक है। महिलाओंके परिच्छदमें साड़ीकी प्रधानता अधिक है चाहे उसे बंगाली ढंगसे बायेंसे ले शिर पर ओढ़ा जाय या उसे मराठी ढंग से धोती नुमा पछुआ खोंस कर पहरा जाय।

पोशाककी विचित्रता इस बातका सबूत है कि इसदेशमें समय समयपर भिन्न भिन्न संस्कृतियोंका आगमन हुआ और उन्होंने भारतीय संस्कृतिमें घुल मिल जानकी कोशिशें कीं। इसीके परिणाम स्वरूप हमारी पोशाकोंके रूप और आकार प्रकार भी समझौतेके आधार पर परिवर्तित होते रहे इस समझौतेमें देशकी भौगोलिक स्थिति की प्रधानता रही। हमलोगोंने ठंडे देशोंकी चुस्त पोशाक भी स्वीकार की तो उस पर अपना रंग चढ़ाया और उसे पुरा पूरा तो धारण नहींहीकरसके। मद्रासी लोग आजकल भी लंगी पर कोट और टाई और ऊपर पगड़ी लगालेते हैं। पंजाबीभाई पैन्ट कोट औरटाइपर साफाबांधते हैं। ढीलेढालेगिरेबाले वाले कुरते पर भी कोट लगाया जाता है। धोती पर मोजे बांधे जाते हैं जिनसे कोई काम नहीं सधता, क्योंकि हमारी पिंडलियां गर्म रहती हैं और उनके ऊपर धोतीसे ढका हुआ हिस्सा खुला और ठंडा रहता है। मोर लगानेका शौक जो जोर मारता है तो गंवारू स्त्रियां उस पर कड़े छड़े भी चढ़ा लेती हैं जो हंसनेका काफी मसाला उपस्थित करते हैं। कोट देखिये तो इतना बड़ा कि घुटना ढंक जाय या इतना छोटा कि मांसल नितम्ब के ऊपर वह इस प्रकार टिका रहे मानों पिण्ड पर चादर ऊढ़ाया गया हो।

अभिप्राय यह कि हमारी पोशाककी विशिष्टता देखकर आदमी चकित हो जाता है और कह नहीं सकता कि भारतीय पोशाक क्या है। विदेशियोंको इससे बड़ा कुतूहल होता है। पहले देश गुलाम था तो हमारा सम्पर्कभी बाहरवालोंसे कम था। विदेश-सम्पर्क के सभी अवसरों पर अंग्रेज बहादुर हमारे "प्रतिनिधि" होकर जाते थे, यद्यपि वह अवसर भी कम ही होता था। विदेशोंमें जो भारतीय, अध्ययन, पर्यटन अथवाचिकित्सार्थ जाते थे वे अंग्रेजीवेशभूषा धारणकर लेते थ। और उस राजनीतिक अधीनताके युगमें हमारी उपस्थितिका महत्व भी नहीं होता था। अब जो भारतीय अधिकाधिक संख्यामें बाहर जाने लगे हैं तो पोशाककी दरिद्रता बहुत खलती है। प्रायः सभी प्रमुख देशोंमें भारतीय राजदूत जा पहुंचे हैं। वे सभी यूरोपीय पोशाक पहनते हैं पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देख कर दुख होता है कि इन लोगोंको ऐसा कोई आदेश नहीं दिया गया कि वे वहां भारतीय पोशाकमें रहा करें और अपने देशकी प्रतिष्ठा बढ़ावें। बहुतसे राजदूत हमारे यहां हैं। वे जब समारोहोंमें सम्मिलित होते हैं तब हमारे शासन-संचालकों वस्त्रकी विभिन्नता देखकर अवश्य चकित हो जाते होंगे। हमारे गवर्नर राजाजी हैं जो कुरता धोती लगाते हैं, प्रधान मंत्री नेहरूजी हैं जो शेरवानी चुस्त पाजामा और गांधी टोपी लगाते हैं, और श्री जगजीवनराम और श्री शेरवानी उनके साथ हैं पटेलजी राजाजीके अनुगामी हैं और उधर श्री चेट्टी डा० अम्बेदकर और श्री जानमयाई सूट बूटमें रहते हैं। इन तीन किस्मोंके अतिरिक्त चौथी किस्म मौलाना आजाद की है जिन्होंने अपनी तुर्की टोपी कभी नहीं छोड़ी, महात्मा गांधीके सामने जाते हुएभी नहीं। इस तरह मंत्रि मंडलमें भी पोशाक की त्रिवेणी का संगम हुआ है। प्रांतोंके गवर्नरों और प्रांतीय मंत्रिमंडलोंमें भी यह त्रिवेणी लहराया करती है और इसमें बिहार गवर्नर श्री माधव अणे महाशय की मराठी पगड़ी झकेली है।

इस विभिन्नताका परिणाम यह होता कि देशसे बाहर एक प्रकारसे हमारी अप्रतिष्ठा होती है जब हम अपनी राष्ट्रीय पोशाकमें वहां नहीं होते। संयुक्त राष्ट्रमंडल में, अन्तराष्ट्रीय अगणित सम्मेलनोंमें या अन्यअवसरोंपर पोशाकसे भारतीयको पहचान लेना असम्भव है। अगर कभी हमारे नेहरू या राजाजी, स्टालिन या ख्रुश्चेवसे मिलाजायें तो उन्हें अपनी पोशाक पर वह अवश्य संकुचित होना पड़ेगा, क्योंकि वे यूरोपीय पोशाकमें रहेंगे। राष्ट्रीय गौरव इस बातमें स्थिर रहता कि ऐसे अवसरों पर वे भारतकी राष्ट्रीय पोशाक में होते यह विचार भावना मूलक नहीं है तथ्यमूलक है ऐसे अवसरों पर राष्ट्रीय गौरव अवश्य ही कंठित होता है। इस प्रसंग में महात्मा गांधी की चर्चा हम छोड़ दें जो यूरोप में भी अपनी धोती लगाये घूमे। नियममें अपवाद होता है अपवाद एकदो ही हैं, और वे अपवाद थे से अधिक नहीं होना चाहिये। इसलिये राष्ट्रीय पोशाक की आवश्यकता है। अभी तक भारतीय सरकारका ध्यान इधर नहीं गया यह ठीक नहीं। उसे चाहिये कि राष्ट्रीय पोशाकके लिये एक समिति बनाव और उसकीसिफारिशके अनुसार इस संबंध निश्चय करें। सर्वसाधारणको पोशाकके संबंधमें बाध्य करना तो ठीक न होगा, पर खास अवसरोंके लिये, सरकारी कर्मचारियोंके लिये, विदेश स्थित राजदूतोंके लिये स्कूलों कालेजोंके के लिये राष्ट्रीय पोशाक की बाध्यता होनी चाहिय।

अब यहीं पर इस संबंधका हमारा सबसे कठिन मोर्चा उपस्थित होता है। राष्ट्रीय पोशाक कौनसी हो यह निश्चय करना आसान न होगा। इस सिलसिलेमें कितनोंको कुछ असन्तुष्ट करना होगा और कुछ नाराजी फैलेगी। आलोचना प्रत्यालोचना तो खूब ही चलेगी। पर हमारा ख्याल है कि थोड़ी स्थिरताके साथ प्रचारके सभी माध्यमोंको अपना कर वातावरण तैयार करते रहनेसे पीछे सब ठीक हो जायगा।

राष्ट्रीय पोशाक तय करनेमें कुछ परम्पराके साथ उपादेयता सुविधा और मितव्ययिताका विचार रखना आवश्यक प्रतीत होता है। हमारा कोई भी राष्ट्रीय परिच्छद पहलेसे होता तो सारी असुविधायें भोग कर भी हम उसी को रखनेकी सलाह अभी देते। मगर दुर्भाग्यवश वह नहीं है और यह हमारे लिये थोड़ी आसानी कर देता है। हम अब पोशाकके संबंधके उद्देश्यों को अधिक से अधिक ध्यानमें रख कर राष्ट्रीय पोशाक ठीक कर सकते हैं।

ज्ञात होता है कि सभी बातोंका विचार कर धोती पंजाबी कुरता और गांधी टोपी यह हमारा राष्ट्रीय पोशाक हो सकता है। कुरतेके ऊपरसे और कुछ पहननेकी आवश्यकता हमें प्रतीत नहींहोती। कुछ लोग कुरते पर बण्डी, शेरवानी या कोट आदि कोई औधरीय परिधान लगानेकी आवश्यकता समझते हैं। गर्मीके दिनोंके लिये तो यह चीज कष्टकर है। कुरते परऊपरसेऔरकुछलगानेकी यों भी आवश्यकता नहीं है कि वह स्वयं इतना लम्बा चौड़ा होता है कि उस पर वैसा ही लम्बा चौड़ा औरकुछ चढ़ानाव्यर्थसालगताहै कोट या शेरवानीके सभी काम वह पूरे कर सकता है। कोट या शेरवानीके नीचे कुरता पहनना यों भी व्यर्थ है कि उसमें व्यर्थ ही वस्त्रका व्यय होता है, जबकि कोट या शेरवानीका अस्तर उसके ऊपरके वस्त्रको बचानेके लिये काफी है। फिर कुर्तेके ऊपर कोट उपयुक्त भी नहीं लगता क्योंकि वह कुरते से छोटा होता है और उसके नीचेसे कुरतेके छोर झांकने लगते हैं। अगर कुर्ता छोड़ कर हम कोट या शेरवानी ही लगायें तो गर्मीके दिनोंकी कठिनायी रही जायगी। हमारे ग्रीष्म प्रधान देशके लिये किसी ढीले ढाले वस्त्र की आवश्यकता है जो पंजाबी से पूरा होगा। हम इसके बदले कमीज पहनें तो वह ठीक नहीं। उसकी बनावट कठिन भी है और केवल कमीज चल नहीं सकती जबकि वह अपने पितृ देशोंमें भी अकेले कभी पहरी नहीं जाती; उसे सदा नीचे पहननेके वस्त्रके रूपमें ही इस्तमाल किया जाता है। अन्य देशोंका 'अण्डरवियर' अगर हम अपना "ओवर-वियर" बना लें तो वे लोग हम पर हसेंगे। इसलिये कुरतेकी जगह कमीजको देना ठीक नहीं।

धोती हमारा पुरानी उत्तरीय है। ज्ञातहोता है उससे प्राचीन हमारी कोई पोशाक नहीं होगी। इस दृष्टिसे धोती छोड़नेके पक्ष में हम नहीं हैं। धोती के पक्षमें कई सुन्दर दलीलें हैं, उनमें एक खास यह है कि उसका मेल हमारी महिलाओंके पहराव, साड़ीसे बैठता है। यह कहना होगा कि जब हम अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणसे देखते है तो यह आवश्यक पाते हैं कि पुरुषोंका परिधान महिलाओं के परिधान से विभिन्न न हो, केवल पहनने के ढंगमें विभेद रहे। धोतीमें यह बात पूरी होती है। हम अगर धोती छोड़ दें तो स्त्रियोंको भी समानताके लेहाजसे साड़ी छोड़नी होगी और यह हम न चाहेंगे। साड़ीकी उत्तमताका संसार कायल हो रहा

(शेष पृष्ठ २६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# चीनी मंहगी है

---प्रो० महेश चन्द्र

"चीनी नहीं मिलती। मिलती भी है तो एक रुपये एक आने सेर।"

"चीनी मिलती तो है। केवल भाव तेज है," रमेश ने उलट कर कहा। "परन्तु ऐसा क्यों है? और यार, कभी कभी तो मैं सोचता हूं कि चीनीसे गुड़ अधिक लाभदायक होना चाहिये।"

रमेशने जिन प्रश्नोंको उठाया था वे अति महत्वपूर्ण हैं। भारत ईखका जन्म स्थान है। हम पहले इसे या तो यों ही चूसते थे या गुड़, खंडसारी बूरा, गिदौड़ा मिश्री आदि के कपमें खाते थे। सन् १८४६ तक हजारों मन चीनी भारत द्वारा इंग्लैण्ड भेजी जाती थी। इसके पश्चात ब्रिटिश व्यवसाइयों की गृह दृष्टि इस ओर की गयी। सफेद चीनी का प्रचार आरम्भ हुआ। भारतीय व्यवसायी और जनताके कारण सन् १९३१ में भारत सरकारने सफेद चीनी उद्योगको संरक्षण प्रदान किया। विदेशसे आने वाले प्रत्येक हंडरवेट (लगभग सवामन) चीनी पर सवा सात रुपयेका टैक्स लगा दिया गया। फलतः सफेद चीनीके व्यवसायने आशातीत उन्नति की। एक ऐसी स्थिति भी आ गई जब युद्ध से पूर्व हम और आप पौने तीन आने सेर चीनी खरीद लेते थे। वही चीनी अब सत्तरह आने सेर है। अब भी चीनी उत्पादक संरक्षण-कर को पूर्ववतः रखनेकी बराबर मांग कर रहे हैं। कुछ का तो मत है कि संरक्षण कर बढ़ा देना चाहिए अन्यथा विदेशी चीनी इस व्यवसायको भारी धक्का पहुंचाएगी और फलतः कई लाख कृषक और मजदूर जो अधिकांश गांवोंसे आते हैं घाटेमें रहेंगे। कारण अमरीकामें चीनीका थोक भाव आठ आने सेर है, क्यूबामें छः आने सेर और भारतमें लगभग बारह आने सेर। परन्तु अब संरक्षण क्यों दिया जाय। अट्ठारह वर्षोंसे चीनीका उद्योग धंधा संरक्षणकी ओट में पनप रहा है फिर भी यह अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य नहीं बना! दर असल चीनी का उत्पादन व्यय जितना अधिक बढ़ा है उससे कहीं अधिक चीनीके बिक्री भावमें वृद्धि हुई है। गत जनवरीमें चीनी मिलके एक मनेजर से बातों के दर्मियान पता चला था कि अब भी मिल-मालिककी पांचों उंगलियां घीमें हैं। उत्पादकोंने उत्पादन घटानेका सामूहिक प्रयत्न नहीं किया है। यदि सन् १९४९ से संरक्षण कर घटा दिया जाय तो वे अवश्य इस ओर प्रयत्नशील हों। अस्तु उनका मत है कि

### ईखका दाम

घटाना चाहिए। यह सत्य है कि उत्पादन व्ययका लगभग दो तिहाई ईखके दामके रूपमें खर्च होता है। परन्तु विचारणीय बात तो यह है कि नब्बे प्रतिशतसे अधिक क्षेत्रमें उन्नत किस्मकी ईख पैदा की जाती है। इस ओर कई लाख रुपए व्यय किए जा चुके हैं। फिर भी प्रति एकड़ उपज १५ टनके आस पास ही रही है। यों दक्षिण भारतमें एक स्थान पर १०० टन प्रति एकड़ ईख पैदा की जा चुकी है और डाक्टर बर्न्स के अनुसार तीस-पैंतीस टन प्रति एकड़की पैदावारकी जा सकती है। परन्तु पैदावारकी वृद्धिमें अबतक केवल बीजकी ओर ध्यान दिया गया है। हम यह भूल गए हैं कि इन बीजोंका पूर्ण उपयोग करनेके लिए अधिक और सस्ती खाद तथा सिंचाईकी व्यवस्था होनी चाहिए। यह संभव है कि कुछ वर्षोंके पश्चात विभिन्न बहु-मुखी योजनाओंके फलस्वरूप ये दोनों सुविधाएं हमें प्राप्त हो जायं और तब हम ईख का दाम घटा सकें। परन्तु इसके यह तात्पर्य नहीं कि

### अन्य उत्पादन व्यय

में कभी नहींकी जा सकती। संयुक्त प्रांत तथा बिहारमें भारतकी लगभग सत्तर प्रतिशत चीनी तैयार की जाती है। कुछ काल हुआ, जब संयुक्त प्रांतकी सरकारने एक अफसर की नियुक्ति इस कार्यके लिए की थी कि वह पता लगाए कि मिलोंकी क्षमता किस प्रकार बढ़ सकती है। उक्त अफसरकी रिपोर्ट का विशेष विवरण अभी तक हमें प्राप्त नहीं हुआ है परन्तु तब भी यह कहा जा सकता है कि अन्य कार्योंसे आर्थिक बचत की काफी बल उखल- गुंजायश है। चीनी व्यवसायमें

### अनिपुण मजदूर

संख्यामें लगभग सवा लाख हैं और वे कुल उत्पादन व्ययका पांचवा भाग मजदूरीके रूपमें प्राप्त करते हैं। तीन चौथाई मजदूरोंको केवल आठसे बारह आने प्रति दिन मजदूरी पड़ती है। यह बहुत कम है। इसके अतिरिक्त उनके रहनेका कोई प्रमन्ध नहीं है। रीगे कमेटीने उत्तर और दक्षिण भारतके कुछ केन्द्रोंमें जो सर्वेकी थी उससे पता चलता है कि मजदूर एक एक कमरे वाली कोठरियोंमें रहते हैं। एक एक कोठरीमें चार पांच प्राणी गुजर करते हैं। वहीं रहना, वहीं सोना, वहीं नहाना और खाना बनाना। मिलोंमें–विशेषतः संयुक्त प्रांत और बिहारकी मिलोंमें सीरे और काट की ऐसी दुर्गन्ध उड़ती रहती है कि उसके प्रभावसे मजदूरोंकी क्षमता अछूती नहीं बच सकती। अर्थशास्त्रका एक मुख्य सिद्धांत है कि अच्छी मजदूरी और सुविधासे मजदूरों की क्षमतामें आशातीत वृद्धि होती है। मजदूरों पर जो व्यय होता है उससे कहीं अधिक मूल्य का काम मजदूर कर गुजरते हैं। परन्तु हमारे चीनीके उद्योगपति एक संकुचित दृष्टिकोणके कारण इन मजदूरों को कुछ नहीं समझते। वे उन्हें चूसना चाहते हैं। इसी की प्रतिक्रिया स्वरूप मजदूर और संघभी इन पूंजीपतियों और उनके धंधोंकी उन्नति अवनति का ध्यान छोड़ कर कम काम करते, कामसे जी चुराने तथा अत्यधिक सुविधाएं मांगने और हड़तालकी धमकी देनेकी राह पर दिन पर दिन बढ़ते जाते हैं। हमने

### विदेशियोंकी बुराइयां

तो अपना ली हैं परन्तु उनकी पिछली और बन रही अच्छाइयोंकी ओर पूरा ध्यान भी नहीं दिया है। कई वर्ष हुए तभी अमरीका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के चीनी उत्पादकोंने एक अनुसंधान समिति स्थापितकी थी। उसका ध्येय यह पता लगाना था कि सफेद चीनी अधिक हानिकर होती है या भूरी चीनी। उत्पादकोंने यह निश्चय निश्चय कर लिया था कि यदि भूरी चीनी ही उत्तम होती है तो वे उसी को बनाएंगे। भारतमें बहुत पुरगने समयसे गुड़ बनता ह और केवल भारतमें ही यह पदार्थ बनता है। परन्तु इससे कई लाभ हैं। प्रथम गुड़में ग्लूकोजकी चीनी रहती है जो शरीर में पहुंचते ही घुल जाती है। थके मांदे मनुष्य थोड़ा सा गुड़ खाकर पानी पीते हैं। उसका प्रभाव वैसा ही होता है जैसे आजकल की डाक्टरीके अनसार पानीमें डेक्स्ट्रोसाल या ग्लूकोजडी पीनेका। द्वितीय, गुड़के कारण सीरें और उसमें स्थित धातु पदार्थ भी खराब नहीं जातें। तृतीय प्रति सौ मन ईख पीछे हमको १३.८३ मन गुड़ चीनी मिल सकती है जब सफेद चीनी केवल लगभग १० मन ही तैयार होती है। चतुर्थ, गुड़ शक्कर बूरा आदि गांवमें ही तैयार हो सकता है उसके लिए गांव वालोंका एक उद्योगधंधों छीन कर उसे केन्द्रीय करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। चीनीकी जो मिलें हैं उनमें परिवर्तन करके उनसे बड़ी मात्रामें गुड़ तैयार करनेका काम लिया जा सकता है। चीनीकी ये मिलें पुरानी पड़ चली हैं। उनके उनकी मशीनें और कल पुर्जे घिस गए ह। टैरिफ बोर्ड तथा पैनेल कमेटीका विश्वा है कि इन कल पुर्जोंमें से अधिकांश भारतमें तैयार किए जा सकते हैं। परन्तु हमारे ध्यानमें इनकी ओर ध्यान न देकर सुधर ढंग पर गुड़ खांडसारी, बूरा बनानेके उत्तम और उन्नत साधनोंकी ध्यान देना चाहिए।

हमने अपने पूर्वजों द्वारा उपभुक्त पदार्थोंकी ओर समुचित ध्यान नहीं दिया। हमारे मूर्खतावश तथा विशेष परिस्थितियोंके कारण विदेशियोंने हमको खूब उल्लू बनाया। चूंकि हम आजाद हो गए हैं अतः अब हमको शांतिपूर्वक ऐसी हानिकारक आदतोंकी ओर ध्यान देना चाहिए। हमको मालूम है कि गुड़के उद्योगधंधे के कट्टर पुजारियोंके खान पानमें भी सफेद चीनीने घर बना लिया है। बिगड़ी हुई बात एक रातमें नहीं बन सकती। सरकार की जनता में उचित उपभोक्ता-शिक्षाक प्रसार और प्रचार करना चाहिए। ईख संबध

ईख के संबंधमें यह संतोषजनक नीय है कि हम जितनी ईख पैदा करते उसका लगभग आधा भाग अब भी गुड़ बनाने के काममें आता है। चौथाई अंश ईख चूसने आदि में निकल जाता और केवल एक चौथाई ईख की ही सफेद चीनी बनती ह। सफेद चीनी खाने वाले अभी तक अधिकतर शहरों में ही हैं। उन्हें सुधारना मुश्किल नहीं होना चाहिए। यदि हम इस ओर शीघ्र ध्यान नहीं देंगे तो संभव है कि प्रतिक्रिया स्वरूप सफेद चीनीका प्रचलन गरीबोंमें उसी प्रकार बढ़ जाय जिस प्रकार आइसक्रीम का प्रचलन त अमरीकामें बढ़ गया

---

(२३ वें पृष्ठका शेषांश)

ह। इसकी सादगी और सुरुचिपूर्ण सौन्दर्यका लोहा सभी को मानना पडा ह। इसलिये धोती के पक्षमें हम हैं। निस्संदेह धोती हमारा सैनिक वस्त्र न होगा और कल कारखानोंमें भी धोतीसे अधिक सुविधा पैंट या पाजाममें हो सकती ह पर अन्य सभी अवसरोंके लिय धोती में कोई कठिनायी नहीं है। फर्श पर बैठ कर काम करने और बठ कर मलमूत्र त्याग करनेके अभ्यासी होनके कारण पैंट या पाजामासे भारतीयोंको आराम नहीं मिलता। न भारतमें सब कहीं कमाडेके तरीककी टट्टी और पलश तरीकेका पेशाबखाना बन सकता है, और इनक अभावमें हट पाजामा-धारियोंकी फजीहत का क्या कहना! इसलिय धोती अवश्य रखी जाय।

शिरके लिय गांधी टोपी से बढ़ कर कोई दूसरी पोशाक न होगी जिसक साथ उस महा पुरुषका नाम जुड़ा हुआ ह जो आधुनिक युगका सर्वश्रेष्ट व्यक्ति था और जिसने अपूर्व साधनोंसे देशको स्वाधीन किया। यह टोपी यों भी आजहीके सिपाहियोंका चिन्ह रही है और अब उसे राष्ट्रीय शिरोवसनक रूपमें हमें चिरस्थायी करनी चाहिये। ऐसी सादी, सरल अथवा सुन्दर शायद ही दूसरी कोई शिर पर धारण करनवाली पोशाक हो।

हमेशा मननुग्धकारी सेण्ट
ऑटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)
व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं
सोल एजेण्ट्स :
एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल
कम्पनी बम्बई २

काफू (रजि०)
हैजे
की रामबाण दवा है
डाबर लिमिटेड, कल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# प्रेस-कानून-जांच कमेटीकी रिपोर्ट

सन् १९४८। प्रेस कानून जांच कमेटी' की रिपोर्ट हालही में प्रकाशित हुई है। कमेटी ने सिफारिशकी है कि १९३१ का भारतीय प्रेस (संकटकालीन अधिकार) कानून मिटा दिया जाय और उसकी कुछ बातें देशके साधारण कानूनमें शामिल कर ली जाय। कमेटीकी दो अन्य महत्वपूर्ण सिफारिशें ये हैं --प्रेस (पत्र-पत्रिकाओं) को जाब्ता फौजदारीकी १४४ वीं दफा से बरी कर दिया जाय और यदि आवश्यक हो तो खतरेके भय की दशामें प्रेससे निपटने के लिये अलग कानून बना दिया जाय 'भारतीय दंड विधान' की १२४ ए धारा (राजद्रोह) का संशोधन इस तौर पर कर दिया जाय कि कानून द्वारा स्थापित सरकारके विरुद्ध केवल हिंसात्मक प्रचारको राजद्रोह माना जाय।

उपर्युक्त जांच कमेटी मार्च, १९४७में नियुक्त की गयी थी और इलाहाबाद हाईकोर्टके भूतपूर्व जज श्री गंगा नाथ झा उसके चेयरमैन थे। समाचार पत्रोंके कई संपादकोंके अतिरिक्त केन्द्रीय-व्यवस्थापक मंडलके अनेक व्यवस्थापक भी इसके सदस्य थे, किन्तु इनमें से कई, पाकिस्तानी होनेके कारण, अगस्त १९४७ में सदस्यता से हट गये थे। जानकारी हासिल करनेके अभिप्रायसे कमेटीने एक प्रश्नावली प्रचारितकी थी, स्मरण-पत्र भेजने अथवा जबानीशहादत देनेके लिए निमंत्रण निकाला था और प्रान्तीय सरकारों तथा पत्रकार-संस्थाओंके अनेक प्रतिनिधियोंगके के बयान भी लिये थे।

### विचारित विषय

कमेटीको जिन बातोंपर विचार करने के लिए कहा गया था, उसके अनुकूल उसने अपनी रिपोर्ट विस्तृत रूपमें तैयार की है। इस रिपोर्टके एक भागमें भारत के प्रेस कानून का ऐतिहासिक सिंहावलोकन किया गया है, एक अध्यायमें संसारके मुख्य देशोंमें प्रचलित प्रेस कानूनों की तुलना तत्संबंधी भारतीय कानूनोंसे की गयी है तथा बताया गया है कि भारतीय विधान परिषद द्वारा निश्चित मूल अधिकारोंकी दृष्टिसे वेकहां तक उपयुक्त हैं और एक अध्यायमें प्रेसके अधिकारों और दायित्वोंकी चर्चा की गयी है। कमेटीने प्रेससे संबंध रखने वाले १० से अधिक कानूनों और कई कानूनोंकी अनेक धाराओंका सिंहावलोकन किया है।

कमेटीकी एक सिफारिश यह है कि भारतीय दंड विधानकी धारा १५३ ए (वर्गोंके बीच शत्रुताको प्रोत्साहन) में यह स्पष्टीकरण जोड़ दिया जाय कि सामाजिक अथवा आर्थिक व्यवस्थामें परिवर्तनके पक्षका प्रचार अपराध नहीं माना जायगा, बशर्ते कि उसमें हिंसा शामिल न हो।

इसी तरह 'भारतीय तार कानून' और भारतीय डाकखाना कानूनमें भी संशोधन की सिफारिश की गयी है और कहा गया है कि इन कानूनोंमें तारों या चिट्ठी-पत्रियोंको "बीचमें रोक सकने' (इंटर्सेप्शन) की जो व्यवस्था इस समय है उसमें संशोधन होना चाहिये, और यह व्यवस्था रखी जानी चाहिये कि मातहत अफसर इस संबंधमें जो भी कार्य करें या जो भी आज्ञाएं निकालें, उनकी रिपोर्ट सरकारके उत्तरदायी मंत्रियोंको भेजी जाय और वे उनपर पुनर्विचार कर सकें।

---

(१२ वें पृष्ठ का शेषांश)

दे, हां अन्य नगदी फसिलकी ओर ढील देनेका परामर्श दिया जासकता है। हमारा तो कहना है कि दिया जाना चाहिये। हमारातो यह कहना है कि जबतक और अधिक मात्रामें रूईका उत्पादन न होगा वस्त्रकी समस्याभी हल न होगी। मिलके वस्त्रही हमारी जरूरत पूरी न कर सकेंगे, उन्हें करघेके वस्त्रकी सहायता मिलनीही चाहिये और करघेको सहायक बनानेके लिये रूईका उत्पादन बढाना जरूरी है।

हमारा मत है कि सरकारके कृषि विभागको खाद्यान्न और रूईकी पैदावार बढ़ाने और रूईकी किस्मको उन्नत करने की ओर सारी चेष्टा लगानी चाहिये। अगर सरकार मिश्र, जापान, और पाकिस्तानसे बड़े रेशेवाले बंगेका बीज मंगा कर किसानोंको दे, बांगेकी खेती करने वालों को पुरस्कार आदिसे उत्साहित करे और इस बिषय का प्रचार करेतो हमको बाहरसे उत्तम कोटिकी रूई मंगानी ही न पड़े और इस सम्बन्धकी हमारी परेशानी धीरेधीरे दूर होजाय। उन्नत कोटिका गल्ला वैसे भारत सरकारके कृषि विभागकीही देन है, वसाही कुछ रूईके विषय मेंभी अविलम्ब किया जाना चाहिये।


WHY BUY A PEN WORTH RS. 85/- or 100/-

When you can get a most similar U. S. A. DELUXE Fountain Pen of world-wide reputation at thrilling low price RS. 10/- by V. P. P. at your door with a PARKER ink bottle and an extra 14 ct. nib, Not more than one or out of Hindusthan orders will be accepted. Very limited stock. Order today to avoid disappointment.

DELUXE 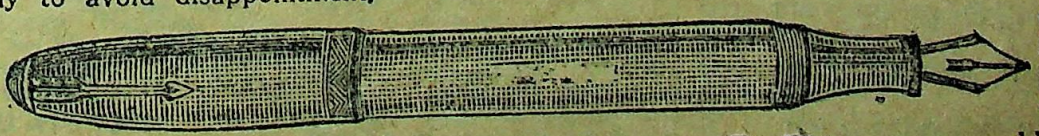 Rs. 10/- Post free

- Shape very attractive
- Colour black or other
- Pocket Clip Rolled Gold

Rs. 10

- Writes very smoothly & freely
- Dries as Writes
- Nib semi gold life guarantee
- Self ink filling very easy takes 15 seconds.

Apply :ORIENT TRADERS, V.W. BALDEO BUILDINGS, JHANSI, UP.


CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(पृष्ठ ८ का शेषांश)

को उस समय जगह ही नहीं दी गयी थी। फलतः अपने बच्चोंको शिक्षा देनेके लिये उन्हें बंगला स्कूलोंमें भेजना ही पड़ता था। इस क्षेत्रके सभी कागज पत्रोंमें बंगलाकी ही पूछ थी। इस क्षेत्रके सभी कागजपत्रों में बंगला की ही प्रधानता थी। बिहारके अलग होने पर भी बिहार सरकारमें बंगालियोंका प्राधान्य रहा। बिहारके गांव गांव जिले जिलेमें बंगाली सरकारी कर्मचारी थे, संथाल परगना छोटानागपुर, सिंहभूम लभूममें तो बिहार या संथाली कर्मचारी देखनेमें ही नहीं आता था। सरकारी अफसर बंगाली, सरकारी वकील बंगाली, डाक्टर बंगाली, पोस्ट मास्टर बंगाली, स्कूल टीचर बंगाली, स्टेशन मास्टर बंगाली। संथाल परगना और छोटानागपुरके स्थानीय स्वायत्त संस्थाओंमें बगालियोंका राज्य। ऐसी दशामें बंगालाका प्रसार हो जाना कोई कठिन न था। इस तरह बंगला भाषा बढ़ी। बंगलमें सब जगह हिन्दीकी ऐसी ही उपेक्षा रही है। कलकत्ता कार्पोरेशन के स्कूल को छोड़ कर बंगालमें कहीं भी कोई हिन्दी स्कूल अभी नहीं है, कहीं हिन्दीकी पढ़ाई नहीं होती।

मगर बंगला जानने और बोलने वाक बंगाली नहीं हो जात। बंगला जानने पर भी बिहारके पूर्वी सिमान पर बसे हुए लोग बिहारी हैं बंगाली नहीं हो गय।

पश्चिमी बंगालके लोग यह भय दिखात हैं कि पाकिस्तानकी सीमासे लगे हुए होने के कारण पश्चिमी बंगालको बलवान बनाना चाहिये तभी देशकी सुरक्षा होगी। इस संबंधमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि देशकी सीमाओंकी सुरक्षाका विषय लोकोंलह। अकले पश्चिम बंग की उसकी चिंता न होनी चाहिये। और जहां तक स्वयं पश्चिम बंगालकी रक्षाका संबंध है, उसे जानना चाहिये कि उस

आगे चलकर उसी सुत्तमें बुद्धने स्पष्ट कह दिया है कि जो स्वयम् कीचड़में फंसा है वह दूसरेको क्या कीचड़से बाहर निकालेगा। जिसने स्वयम् अपना दमन नहीं किया, स्वयंको अनुशासनमें नहीं बांध लिया, जो स्वयं शांत नहीं—वह दूसरोंका, क्या तो दमन करेगा, दूसरोंको क्या तो अनुशासनमे रखेगा और दूसरोंको परिनिर्वृत्त क्या करेगा?

परंतु बुद्धकी बात लोग भूल गये। रक्तपातपर रक्तपात, बंधनपर बंधन। मानवात्मापर पापकी बड़ी बड़ी सांकल उसने अपने हाथोंसे डाल लीं। आज तो केवल शांतिके लिए विश्वकी, राष्ट्रोंके प्रतिनिधियों कीकमीशन बैठते हैं सभाएं होती हैं, परिणाम यही होता है कि और जोरोंसे शस्त्रोंकी तैयारी की जाती है। अणुबम और कीटबम! विराट् नरसंहारमें मनुष्य अपने आपको बहुत निपुण, कुशल और प्रसन्न मानता है। फौजी शिक्षण बढ़ रहे हैं, नीति-शिक्षणकी किसीको आवश्यकता नहीं जान पड़ती। शस्त्रास्त्र बढ़ रहे हैं—और संभव है एक दिन वह भी आवे, जैसाकि मैंने एक विदेशी व्यंगचित्रमें देखा था, कि एक रेडियो, जिसमें कि 'टेली विजन' की भी व्यवस्था है, एक टूटे घरमें, जहां कि कोई नहीं है, सुना रहा है—देखिये और सुनिये—नवीनतम शस्त्रकी संहारक लीलाका आंखों देखा हाल, हमारे नये यंत्रपर जिसमें रंगीन हूबहू चित्र भी दिखाई देंगे और आवाज भी सुनी जा सकेगी। .....


रियायती दामोंपर

उच्चतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

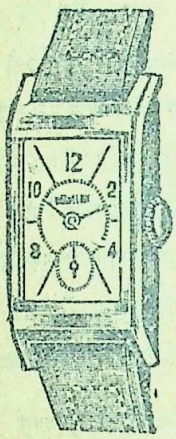

अत्यधिक सस्ती कीमतों पर स्विट्जरलैन्डकी बनी हुई, नई डिजाइन की निहायत सुन्दर ठीक समय देनेवाली। हर घड़ी की गारंटी साढ़े तीन साल। क्रोमियम केस की गोल या चौकोर १८) सुपीरियर फैन्सी डायलकी २०) बेस्ट सेन्टर सेकन्ड गोल २४)। रेक्टेंगुलर और टोनियो आकार की चित्र जैसी घडियां उज्वल क्रोमियम केसकी, ५ ज्वेल ३७) रोल्ड गोल्ड ५ ज्वेल की ५०) बेस्ट क्रोमियम केस ४२ रोल्ड गोल्ड ५०) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६५)। फ्लैट शेप ४०) रोल्ड गोल्ड ६०) बेस्ट टोनियो शेपकी ७८) पैकिंग पोस्टेज माफ। हर घड़ीके साथ एक फीता फैन्सी डिजाइन का दिया जाता है।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V. C.)
एशबाग रोड लखनऊ

वैद्य डाक्टरों के पुरुषवर्ती

यदि आपको आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों का—
हजारोंबार का अदभुत चमत्कार
आयुर्वेदिक मैलेरीना इञ्जेक्शन
केवल १ इञ्जेक्शन में मलेरिया लापता हो जाता है। प्लोपैथी कुनैन से विशेष गुणप्रद। बड़े २ वैद्य डाक्टरों ने आजमाकर मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है।
दी आयुर्वेदिक इञ्जेक्शन सप्लाई एजेन्सी, मंगलगढ़ (दरभंगा)

ORIENT'S QUALITY PEN
AT AMAZINGLY LOW PRICE

Rs 11/-

You will be proud to own this magnificent pen specially made from materials to suit the Indian Climate, fitted with 9 ct. nib, ensures life long service. Self filling writes more words in one filling. Available in most pleasing & Charming assorted colours and shades.

with pocket clip and one special Ink bottle. Price Rs. 11/- Postage free.

MADE IN U. S. A.
write at once to factory representatives.

ORIENT WATCH SYNDICATE DEP 14 DUMDUM (BENGAL)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# चलती चक्की

जिन्ना मियांके भारतको कराची स्थित हाई कमिश्नर श्री श्री प्रकाशने ईदका मुबारक बाद भेजा है।

जिन्ना साहबने ईदकी रेवड़ियां भेजी होंगी उनके पास या कभी होलीमें बधाई ही आयी होगी।

* * *

कुछ दिन तक अपने रामको एक बड़े आदमी का साथ करनेका अवसर मिल गया था। उस समय एक चीज देखता तो बड़ा कुतूहल होता था। देखता कि किसी पर्व त्योहारमें जमींदार अपनी कुर्सी पर बैठे होते और ब्रह्मण लोग उन्हें आशीर्वादी देने आते। साधारण शिष्टाचार के हिसाबसे चाहिये था कि बाबू साहब विप्रदेवता को पहले प्रणाम करें। पर वहां ऐसा न होता था। विप्रदेवता ही, सामने आकर दांत निपोरे पहले "यजमान आशीर्वाद" कहते पीछे बाबू साहब उन पर नजर करते और जरा शिर हिला देते।

* * *

एक कुतूहल जो उन दिनों होता था फिर आज ऊपर लिखे श्री प्रकाशजीके बधाई दानके समाचार पर हो रहा है। इससे अधिक बोलना गद्दारी होगी।

* * *

कपड़े पर कण्ट्रोल हुआ यानी व्यवसायी जगत पर फिर कण्ट्रोल हुआ, जो कण्ट्रोल से बाहर हो गया था। चुनाव का मौका आने वाला है न ? कुछ लोग तो खुशीके मारे पैजामेसे बाहर हुए जा रहे हैं क्योंकि जनताके हाथमें चुनावका अधिकार होगा तो इधर भी चुनावका अधिकार मिल गया है। एक चुनावसे दूसरेको जरूर प्रभावित किया जा सकता है।

* * *

प्रांतीय सरकारें अब कपड़ा मंगाने-वाले "अपने आदमी" रखेंगी। बिहार सरकारने अपने "आदमियों" को चुन लिया है, बंगाल भी चुन लेगा। ये हैं अपने आदमी, बाकी सब गैर ?

* * *

फिर एक महन्थजीकी याद आ रही है जिनका अपने दरबारियोंके मारे नाकमें दम था। ये दरबारी ऐसी हिमाकत करते थे कि महन्थजीके मुंहकी बात ही लोक लेते और उस पर अपना मतलब लपेट कर महन्थजी की कही हुई प्रवारित कर दिया करते थे।

* * *

अब इसको जरा विस्तारसे समझिये। मान लीजिये महन्तजीके यहां किसीने कुछ सहायता दानकी याचना की। अगर उसने इसके साथ ही दरबारियों से दानकी रकम का कुछ भाग-बांट करके समझौता कर लिया तब तो उसकी चांदी नहीं, तो टलहा। अब इस विषयमें दरबारियों का "मोडस अपरेन्डी" यह होता था। महन्थजीके सामने वह गरीब पेश होता। उसकी गुजारिश सुनकर महन्थजी बोलते "इसे पांच .." । पहली अवस्थामें दरबारी लोग महन्थजीके मुंहसे आगे कुछ निकलनेके पहले ही "रुपये" जोड़ देते और दीवान झट उसे कागज पर लिख लेता और गरीबका काम बन जाता। अगर कहीं दूसरी अवस्था रही अर्थात याचकने दरबारियोंको कुछ हिस्सा देनेका करार करके खुश नहीं रखा तो वे झट कह देंगे "आने" और अब महन्थजी चुप।

* * *

केन्द्रीय सरकारऔर प्रांतीय सरकार में, नई कपड़ेकी नीतिके विषय में तो हमें महन्थजी और उनके मुसाहिबों वाला संबंध ही दिखायी पड़ रहा है। अब रामजाने बात क्या है।

* * *

क्योंकि कपड़ेके संबंधमें एक नीति सब कहीं वर्ती नहीं जा रही है। बिहार सरकारने अपने आदमी चुने हैं, वही कपड़े लायेंगे और बेचेंगे। और वह यह नहीं देख रही है कि इस नयी योजनासे उसकी पुरानी योजना में कोई प्रभेद नहीं है, जिसके कारण बिहारमें सर्दीको कफन नहीं मिलता था और दो चार आदमी सेठसे सरसेठ बनते जाते थे।

* * *

उधर यू० पी० सरकार सहयोग समितियों और राशनकी दूकानोंके द्वारा कपड़े बिकवायेगी मगर व्यापारियोंके माल जो उसने कानपुर बनारस, प्रयाग आदि स्थानों में मुहरबन्द कर रखा था वह सब छोड़ रही है। और प्रयागकी खबर है कि अब दाम और भी चढ़ गया है।

* * *

खास दिल्लीकी खबर है कि पिछले हफ्तेसे इस हफ्तेमें दाम चढ़ गया है ! राम राम कीजिये —

"जस जस सुरसा बदन बढ़ावा
तासु द्विगुन कपि रूप दिखावा"।

* * *

मगर इसके बाद "बदन पैठि पुनि बाहर आवा" वाली बात भी हो जाय तो हम कहेंगे कि वालासे, "देर आयद, दुरुस्त आयद"।

* * *

सो महन्थ केन्द्रीय सरकार और दरबारी प्रांतीय सरकारें—जिसको जो अच्छा रुचा उसने केन्द्रीय सरकारके मुंहकी आधी बात ही लोक कर, उसका मनमाना उपयोग कर लिया। यह साफ है कि केन्द्रीय सरकार नियंत्रण, पाबन्दी, लेंसन्स, कोटा आदि नहीं चाहती थी —केवल कपड़ों पर मूल्यांकन और निर्धारित मूल्य पर वस्त्र वितरण वह चाहती थी। मगर लोग हैं कि वह जो न चाहती थी, उससे 'चहवा' दिया और कर ली अपने मनकी। जय हो, लोकतंत्र की,! जय हो स्वतंत्रता की।

* * *

जिन्ना मियांने ईद का पैगाम देते हुए मुस्लिम संसारको काश्मीर और हैदराबाद का हवाला देकर आंख खोलने की सलाह दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# विविध समाचार

## विदेश

### ब्रिटेन पर प्रकृतिकी कृपा

ब्रिटेनमें इस समय जन्म संख्या अधिक और मृत्यु की संख्या कम हो गयी है। बताया गया है गत २५ वर्षों के अन्दर ऐसा पहली हर बार हुआ है। जन्म संख्या प्रति हजार मनुष्य १९.१ है और मृत्यु संख्या १२ हजार शिशुओंमें केवल १.४३ की मृत्यु हो जाती है बाकी सभी जीते जागते रहते हैं

### पहाड़ पर व्याह

एक अमेरिकन बुढ़े कला कारने अपनी पहली ५५ वर्षीया पत्नी को परित्याग कर दूसरी शादी की है। कलाकार व्याहकी रश्म पूरी करनेके लिये अपनी पत्नी को पहाड़ पर ले गया था क्योंकि "वहां वे लोग भगवानके कुछ निकट होंगे।"

### कौन जानें तुम क्या हो ?

रुमानियाके राजा रानी फ्लोरेंसमें मोटरमें जा रहे थे कि इनकी गाड़ीसे १ साइकल सवार को धक्का लग गया और उसकी साइकल टूट गयी। एक पुलिस वाला भी आ गया। सब लोग एक कारीगरकी दूकानपर गये और साइकल मरम्मत का दाम चुपचाप चुका कर राजा साहब अपनी राह लगे पीछे पता लगा कि वे कौन थे।

### कई तरहके बाजे एकमें

वायना (आस्ट्रिया) के एक रेडियो कारीगरने एकऐपियानो बनाया है जिसमें कई पटरियां एक साथ बजती हैं। उसे बजाने से ज्ञात होता है कि पियानो, वायलिन, बांसुरी और तुरही एक साथ बज रहे हैं।

### पतिकी शिकायत पुलिससे

विलायतके वर्सेस्टर शायर जिलेके डडली गांवकी स्त्रियोंने मिल कर एक दिन पुलिससे शिकायतकी कि उनके पति १० बजे रातके बाद घर आते हैं जिससे उन्हें बहुत कष्ट होता है। पुलिस तहकीकातमें निकली तो देखा कि पतिगण शराब खाने चल रहे हैं। पुलिसने सबको खदेड़ा।

### आस्ट्रेलियाका विचित्र पक्षी

आस्ट्रेलियामें एक पक्षी होता है जिसे मटन चिड़िया कहते हैं। इसका तेलका दवाकी तरह इस्तमाल होता है और इसका गोश्त खाते हैं। इसमें एक विचित्रता यह है कि सालभर केभिन्न भिन्न ऋतुओंमें ये भिन्न भिन्न जगहोंमें रहती है और फिर दूसरे साल निश्चित स्थान पर आ जाती हैं। इतना ही नहीं, जिस चिड़ियाका जो घोसला होता है वह उसीमें बसेरा लेती है। एक और विचित्रता उनमें यह है कि जितनी मादा चिड़ियां हैं एकसब ही रात अंडा देती हैं। इस तरह लखों लाख चिड़िया एक स्थानसे उड़ कर कभी एक हजार मील दूर अलास्का तथा टसमानियां तक उड़ कर चली जाती हैं।

### एक महिला शिक्षार्थिणी

आसामकी एक नवयवती जिसका नाम कुमारी ढिलो-तमागो गोई है विलायतमें खान- विद्याकी शिक्षा प्राप्त करने गयी हैं। वह लंदनके रायल स्कूल आफ माइन्समें जब पहुंची तो वहांके बाकी ५९ शिक्षार्थी सभी पके केशोंऔर झुकी कमर वाले थे- एक यही छात्रार्थी जिसमे अभी बीसवां वसन्त भी नहीं देखा है।

### जापानमें इच्छानसार संतान

कहते हैं जापानमें पुत्र या पुत्री प्राप्त करनेकी एक सीधीसी रीति प्रचलित है जिसे जापानी स्त्रियां कारण जान कर भी व्यवहार करती है और ७५ फी सदसफल होती हैं। वह तरीका प्रबल इच्छा शक्ति है। गर्भिणी स्त्रियां गर्भकी संभावना ज्ञात होने के दिनसे ही पुत्र या पुत्रीकी इच्छाको बार बार लगातार रोज नियमसे दुहराया करती हैं। कहते हैं कि इससे इच्छानुरूप फल मिलता है। फ्रांसके एक यौन-ज्ञान विशेषज्ञने इस विधीकी बड़ी सराहना की है।

### मतदाता सूची बनानेके लिये मशीन

बनाना और उसे चुनावके दिन तक दुरुस्त कर रखना और फिर हर एक वोटरको उसके नामका कार्ड कायदेसे देना एक महान कठिन काम है जिसके लिये पचासों किरानियोंको महीनों पहलेसे खटना पड़ता है। अब यहकाम एक मशीन द्वारा होगा। हालैण्डके इंजिनियर ने ऐसी मशीन बनायी है और हालैण्डकी राजधानी एम्सटर्डमके चुनावमें उसका सफलापूर्वक उपयोग हुआ है।

## विहार-

### नेपाली गांजा

नेपालसे १५ सेर गांजा चुरा कर लाने के अपराधमें बेतियाके मजिस्ट्रेटने एक लड़केको ९ महीने कड़ी कैदकी सजा दी।

### मोटर बसमें आग

किशनगंजसे आनेवाले एक बसमें अचानक आग लग गयी। मुसाफिर उतर गये। यद्यपि उन्हें कोई क्षति नहीं पहुंची पर कईके कपड़े जल गये। बस जल गयी।

### सम्पादकने माफी मांगी

पटनाके कमिश्नर श्री बख्सीने 'पटना टाइम्स' पर जो मुकदमा चलाया था उसमें प्रकाशक और मुद्रकने माफी मांगी है। मुद्दई का कहना है कि इन्होंने पहले तो माफी नहीं मांगी अब लाचार होकर माफी मांगते हैं। अदालतने माफी नहीं दी। मकदमा आगे चल रहा है।

### पुलिस पर नालिश

भागलपुरके श्री झुनझुन वाला नामके एक व्यापारीने विहारकी पुलिस पर नाजायज ढंगसे रोक और सम्पत्ति अपहरण का मुकदमा चलाया है। कहा गया है कि जब आप कुछ रेशमी कपड़े लिये कलकत्ता जा रहे थे तो पाकुर स्टेशन पर पुलिसने आपको रोका, ट्रेनसे उतार लिया और कपड़े जप्त कर लिये जिन्हें जप्त करनेका कोई कारण न था। जांच हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नमक-मिर्च

गत १५ अगस्तको भारत का स्वाधीनता दिवस था। इस दिन भारत के शेके बजन पर पाकिस्तानने भी अपना स्वाधीनता दिवस मनाया! क्यों मनाया स्वाधीनता दिवस पाकिस्तानने? उसे तो जन्म दिवस मनाना चाहिये था क्यों कि उसदिन तो सचमुच उसकी 'नार' काटी गयी थी।

× ×

मगर मि० जिन्ना और लियाकत कभी मान नही सकते कि वह बच्चा है। इतनी नम्रता आयी ही नहीं इन महानुभावों में कि अपनी हीनता स्वीकार करके अपना मार्ग सुगम करलें। उन्होंने चुना है जो मार्ग, वह हठके कारण, और "हठबस सब सकट सहे" के अनुसार उन्हें संकट सहनाही होगा, कोई उपाय नहीं।

× ×

कहनेके लिये तो वे सीधे शब्दों में नहीं स्वीकार करेंगे कि उन्होंने बुरा करलिया है पर उनकी अन्तरात्मा यह मनाती है और उन लोगोंके हृदय की अवाज में वह दर्द प्रति मास होता है, सब समय।

उस दिन मि० जिन्नाने भी कहा और म० लियाकत अलीने भी की अभी हमारी मजिल दूर है"! हां मजिल अपकी क्या है; कोई है ही नही। और आपकी विश्वामित्री सृष्टि को शायदही कोई ठिकाना मिले।

× ×

यही देखिये न, आपको रात दिन दुश्मनोंका भूत सताता रहता है! यह भूत-भय आपका कभी न छूटेगा क्यों कि आपने अपनेही हठके कारण महर्षि विश्वामित्रके समान जो दूसरी सृष्टि रचली है, वह उतना अस्वाभाविक एवं अस्थायी है कि आपको स्वप्न में भी वह चैन न लेने देगी और आप सोये सोये उठ कर "भूत भूत" कहकर चिल्ला उठेंगे।

वह दुश्मन कौन है पाकिस्तान का? भारतके भाग्य विधाताओंसे आपने कसम खिलाई कि विभाजन को मिटानेकी चेष्टा तो दूर, उसका जिक्र भी न करेंगे। फिर अब कौनसा दुश्मन खड़ा है आपका तख्तो ताज छीननेके लिये?

बात यह है कि आपके अपने दिलका पाप आप को निश्चिन्त नहीं होने देता और आप कभी निश्चिन्त होंगे भी नहीं जबतक विपरीत मार्ग पर चलते रहेंगे। अंग्रेजोंके यहां यह धारणा है कि जो जितना बड़ा पापी होता है वह उतने भयानक स्वप्न देखता है!

तब वह कौनसी मजिल है, आप जहां अभी नहीं पहुंच सके? जिन्दगी थोड़ी है महाराज! जरा डबल मार्च लगाइये नहीं तो कहीं मार्गमें ही जिंदगी की शाम आ पहुंची तो फिर दिलकी लगी, दिलमें ही रह जायगी।

* * *

हमारे देशके लिये यह समाचार है कि काशीकी एक कन्या कल्याणी देवी को बेदारम्भ कराने वाला एक बेदज्ञ मिलगया है और इसतरह तीन वर्षोंसे चला आता हुआ रगड़ा समाप्त हुआ! संसारके और किसी भागमें पढ़ने पढ़ानेका अधिकार लेकर ऐसा झगड़ा कभी नहीं चला होगा। हमारा देश इस विषयमें भी अपूर्व रहा। धन्य है काशीके ब्राह्मणोंका कर्तव्यज्ञान कि उन्होंने "स्त्रीशूद्रौं नाधीयतामकी शास्त्रीय आज्ञाकी अवहेलना नकी, न की। बचगया उनका धर्म। बच्चीको वेद पढानेके लिये के० प्रसाद नामके कोई व्यक्ति रखे गये हैं, मगर वे ब्राह्मण नहीं हैं।

* * *

हम ब्राह्मणोंके इस वेद हठ पर उनकी पीठ ईटसे ठोकना चाहते हैं क्योंकि हम उनपर बहुत खुश हैं। विप्र देवता! शस्त्रास्त्र तो इस अभिप्रायसे थी कि अनाधिकारी न पढने पावें और उसवेदके मूल पाठ की रक्षा हो जो उस समय तक श्रुतही था, लिखित अथवा मुद्रित न था। मगर अब जब वह मुद्रित और पठित हो गया है तब आपका हठ अब किस कामका! आप न पढायेंगे तो दूसरे पढाने वाले मिलेंगे। और वह भी न मिलेंगे तो बेदका, स्वामी दयानन्द कृत भाषा भाष्य पढ कर हम वेद ज्ञान प्राप्त करलेंगे! दक्षिणा भी बचेगी! जाइये महाराज, वंश्या रूठी धर्म बचा"!

⁂ ⁂

मगर देखिये, मान तब ठीक होता है जब कोई मनाने वाला भी हो। कोई मनाने वाला न होतो मान - महल उपेक्षाकी सील लग कर खुद ढहने लगता है? और बश्वास मानिये, आपके इस आभिजात्यके हठ पर आप को कोई मनाने नहीं जारहा है अब। वे दिन-लद गये महाराज, जबकि ज्ञान पर भी इस प्रकारका अपना इजारा कोई चला सकता था। अबतो ज्ञान सार्वजनिक है, सर्व सुलभ है, सर्व ग्राह्य है। आप का मान अब नये जमाने में अपमानित ही होगा, जैसा कि काशी में हुआ।

⁂ ⁂

और उधर बंगलोरमें भी एक मनोरंजक घटना घटी है। लार्ड माउण्ट बैटन जब मैसूर गये थे तो श्री रंगनाथ जी का मन्दिर देखने गये थे। उनके वापस होने पर पुजरियों ने घोषित किया कि मंदिर अशुद्ध हो गया और उन्होंने उसे बन्द कर दिया।

— खबर है कि मैसूर सरकारने ऐसे शुद्धि ज्ञान भ्रष्ट पुजारियों को मन्दिर से हटा दिया है। वास्तवमें मन्दिर अब शुद्ध हुआ।

मास्कोमें स्वाधीनता दिवस पर पंडित विजया लक्ष्मीने अपने हाथसे बनाकर रूसी मेहमानों को चांदीके वर्कमें लिपटी मिठाइयां खिलाईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# रजाकारोंपर किसानोंका हमला

बम्बई, १९ अगस्त। हैदराबाद रियासती कांग्रेसकी ओर से आज एक समाचार-विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है जिसमें बताया गया है कि निजामी इलाकेके दोनों गांव पर, जहां बहुत बड़ी संख्यामें रजाकार लुटेरे एकत्रित हुए थे, रियासती कांग्रेसके सदस्यों तथा किसान के एक बहुत बड़े सशस्त्र समूहने अकस्मात् आक्रमण किया और रजाकारों पर भयंकर प्रहार प्रारंभ कर दिया। फलस्वरूप २० रजाकार गुण्डे तत्काल मार डाले गये और ४० बुरी तरह घायल हो गये। आगे चल कर बताया गया है कि उस दिन कांग्रेस स्वयंसेवकों और किसानों की भीषण गोलाबारी और कड़ी मारसे स्थानीय रजाकार आतंकित और कायर हो गये हैं।

विज्ञप्तिके अन्तमें कहा गया है कि रजाकारोंको पहले से इस आक्रमणकी आशंका नहीं थी और वे अपनी लूट और हत्याकी योजनाएं बनानेमें मस्त थे। अपनी काल्पनिक भारत-विजयकी खुशी वे अपनी आसन्न मृत्युको नहीं देख सके थे। इसलिये सब घबड़ाहटसे चिल्ला उठे। उसी बेहोशीमें ४०० रजाकारोंने डर कर अपनी सनिक पोशाक फेंक दी और नंगे हो गये। वहांके रजाकार-नेताने उन्हें पोशाक पहन लेनेके लिये बहुत कहा—सुना किन्तु वह सफल नहीं हुआ।

रजाकारोंकी ऐसी कायरता कोई नयी बात नहीं है। अपने अंधे जोशमें आकर वे जिस प्रकार हत्या लट और बलात्कार पर आमादा हो जाते हैं, ठीक उसी प्रकार वे जबर्दस्त शत्रुके सामने जनानी हैसियतें अख्तियार कर लेते हैं।

रियासती कांग्रेस की एक दूसरी समाचार विज्ञप्तिमें बताया गया है कि रियासत भर की हिंदू जनता के विरुद्ध इन गुण्डोंने व्यर्थ 'जेहाद' शुरू कर दिया है। पिछले दिन बिदर जिलेके उदयगिर नामक बहुत बड़े हाटको लगभग १ हजार सशस्त्र रजाकारोंने घेर घेर लिया और इसके ठीक बाद ही इत्तेहाद उल-मुसलमीन के तूफानी सैनिकों (स्टार्म ट्रूपर्स) का एक जत्था नगरमें घुस गया और हिन्दूओंका कत्लेआम शुरू कर दिया। कहा जाता है कि उस दिन २०० व्यक्ति मारे गये और अनगिनत घायल हुए। मृतकों की लाशें पासके झीलमें फेंक दी गयीं। १०० मकानोंमें आग लगा दी गयी। छोटे-छोटे बच्चोंको पाशविक निर्दयताके साथ आग में फेंक दिया गया और सामूहिक रूपसे ५०० हिन्दुओंको बलपूर्वक मुसलमान बनाया गया।

### निजाम द्वारा भारतीय पलिसकी कथित रक्षाका दावा

हैदराबाद (दक्षिण), १९ अगस्त। निजाम द्वारा प्रकाशित एक प्रेस नोटसे ज्ञात होता है कि निजामने दावा किया है कि विगत १४ अगस्त को उसकी पुलिसने कुछ भारतीय पुलिसमैनों, गृहरक्षक-स्वयंसेवकों और १ भारतीय पुलिस लारीकी कम्युनिस्ट आक्रमणकारियोंसे रक्षा की।

कहा जाता है कि हुजूर नगरके निकट कुछ कम्युनिस्ट बदमाशोंने एक भारतीय पुलिस जत्थे पर आक्रमण किया। उक्त जत्थेके साथ कुछ भारतीय गृहरक्षक स्वयं-सेवक (होमगाड) भी थे और ये सभी एक पुलिस लारीमें सवार थे। एक पुलिस दारोगा भी साथ थे। आक्रमण होने पर दारोगा और ३ पुलिसमैन निजामी इलाकेके हुजूर नगर नामक स्थानमें भाग गये। दूसरे लोग लारी छोड़ कर निकटके मैदानोंमें भाग गये।

जब इस घटनाका समाचार हुजूर नगर स्थित निजामी अधिकारियोंको ज्ञात हुआ तो उन्होंने भाग कर आये हुए ३ भारतीय पुलिसमैनों तथा दारोगाको अपने पास सुरक्षित रूपसे रख लिया और स्थानीय पुलिस सुपरिंटेंडेंट दुघटनाकी जांच करनेके लिये आक्रमण के स्थल पर गया। निजामी पुलिसने सरगर्मीसे कम्युनिस्टोंकी खोज प्रारंभ की और उन्हें भगा दिया।


'राजा'

(14 Kt. Rolled Gold Nib)

ट्यूबलेस बेस्ट फाउन्टेनपेन ६)

S. M. Co., Nimtola, Calcutta—9.

आधुनिक स्टाइलकी रिस्टवाच १८रु

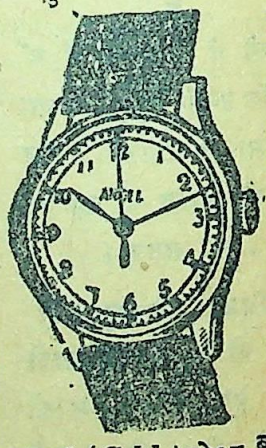

यह आधुनिक डिजाइनकी घड़ी १३", साइजकी जूएल लगी हुई मजबूत लीवरकी ठीक देनेवाली घड़ी है। क्रोमियन केस गोल या चौकोर आकार। मूल्य १८) रु० डाक खर्च ।।।) ३ वर्ष की गारन्टी। नाम पता अंग्रेजी में लिखें। —ब्रिटानिया वाच कं. (C.V.) पोस्ट बक्स ११४०३ कलकत्ता

अधिक टिकाऊ

ड ट रो

कार, ट्रक और लारो के लिये

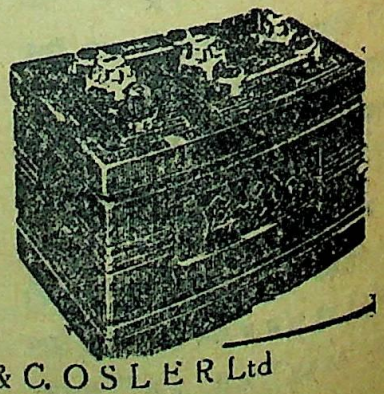

Local Agents Messrs. F. & C. OSLER Ltd

12 Old Court House Street Calcutta


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

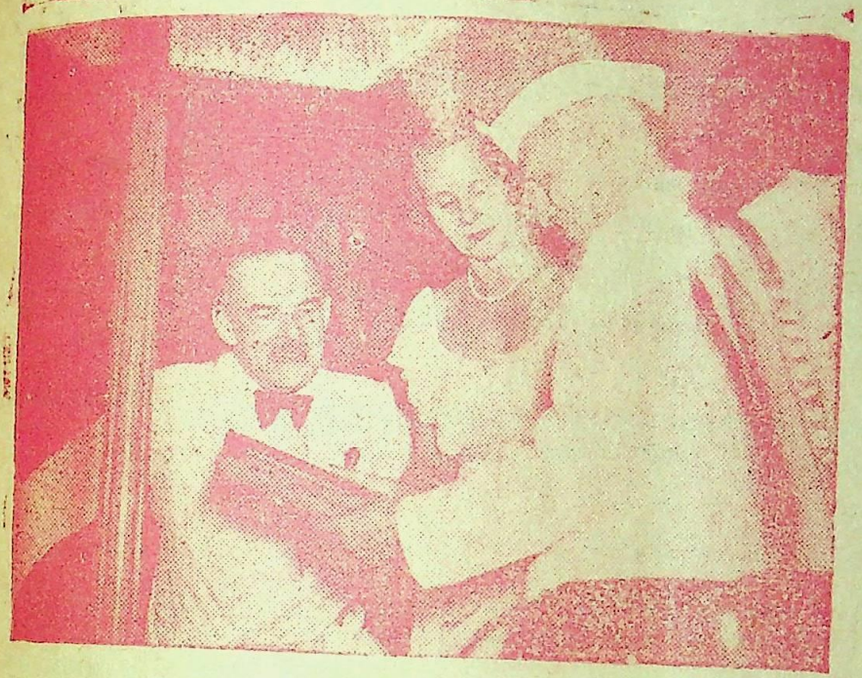

हालमें ही भारत स्थित ब्रिटिश हाईकमिश्नर सरटेरेंस शोनने अपने निवास स्थान पर एक पार्टी दी थी, चित्रमें पं० जवाहर लाल नेहरू सरटेरेंस शोन के साथ दिखायी पड़ रहे हैं।

लंदन के पास होने वाले ओलम्पिक खेलों में भाग लेने वाली भारतीय टीम के कुछ सदस्य। इस टीम का एक सदस्य घायल हो गया था। यहां उसका उपचार किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. C 2229.


# वह टैक्सी चलाया करता था

अब वह कई टैक्सिय ाका मालिक है

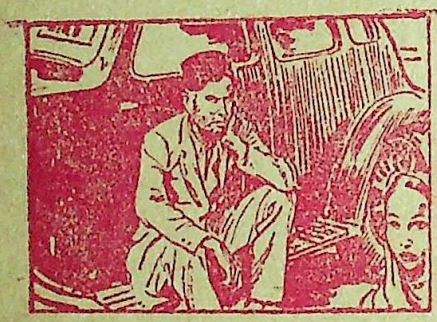

१. रामदास टैक्सी चलाता था किन्तु कभी उसे अधिक भाड़ा नहीं होता था। उसकी आय इतनी कम थी कि सप्ताहमें तीन बार हजामत बनाने मेंसिर्फ ६: आने खर्च कर पाता था।

२. दूसरा ड्राइवर सदैव साफ सुथरा रहता था और उसकी कार काफी जन प्रिय थी। अतएव रामन उससे पूछा "तुम रोज हजामत बनानेका खर्च कैसे जुटा लेते हो ?"

३. उसने उत्तर दिया: "मैं 'सेवन ओ क्लाक' ब्लेडोंसे हजामत बनाता हूं। ५ ब्लेडोंके पैकेट पर ६ आने खर्च कर मैं प्रतिदिन सप्ताहों तक हजामत बना लेता हूं।"

४, अतः रामन भी एक जाए और 'सेवन ओ क्लाक' ब्लेडोंका एक पैकेट खरीदा और रोज हजामत बनाने लगा। उसके साफ सुथरेपनके कारण अधिकाधिक भाड़ा मिलने लगा और आज वह अनेक टैक्सियोंका मालिक है।

* वेषभूषापर अधिकांश में सफलता निर्भर करती है। 'सेवन ओ क्लाक' ब्लेड सफलता-दायक स्वच्छता प्रदान करते हैं। प्रत्येक ब्लेड सर्वोत्तम इस्पातसे निर्मित तीक्ष्ण धार युक्त होता है और इसके अच्छा ब्लेड दूसरा कोई नहीं होता।

"सेवन ओ क्लाक" ब्लेडस रोजाना हजामत बनाइय

# 7 o'clock

SLOTTED BLADES

कम खर्च में अधिकाधिक हजामत बनाने वाला ब्लेड

६ आनेमें ५ ब्लेडोंका पैकेट

न० १

MONSOON
SETS IN
*Anophelis breeds,,*

य आइश्चर्यजनक व्याधि मले रिया बुखारके लिये रामबाण है। अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरिया कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह ज्वरघ्न एवं बल वर्द्धक है।

PANCHATIKTA
*Kasaya*

KAVIRAJ N. N. SEN & CO. LTD.
CALCUTTA



**श्वेत या श्वेत कुष्ठ**—जिनको ऐसा विश्वास हो कि यह रोग चंगा नहीं होता, यदि मेरे पास आयें तो उनके एक छोटे दागको मैं चंगा कर दूंगा, कोई खर्च नहीं देना पड़ेगा। वातरक्त, एक-जिमा, श्वेत कुष्ठ, पित्त और रक्तदोष जनित विविध चर्म रोगके दूर करने के लिए २० वर्षोंके अनुभवी चर्मरोग

**चिकित्सक पण्डित एस. शर्मा** की व्यवस्था और औषधि ग्रहण कर। (समय ३-८) २६-८ हरीसन रोड, कल०।


७४ धरमतला स्ट्रीट इलेस्ट्रेटेड इंडिया प्रेसमें गोविन्द चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वामित्र

सम्पादक--

नरेन्द्र

वर्ष—३१—२२ २३ जून १९४८ June 23 1948 मूल्य =) वार्षिक ६)


## बापू

कविवर 'अंचल'

रक्त-रंजित युग खड़ा निस्पन्द तुमको सोचता !
दीप आंधीमें जला पर शांत नभ में बढ़ गया
दासता में साथ था जो मुक्तिमें क्यों कढ़ गया
मूर्ति सूनी- देवता बलि-वेदिका पर चढ़ गया

रक्त-रंजित युग खड़ा निस्पन्द तुमको सोचता !
रो रहा खो सिन्धु जिसको बिन्दु वह कितना सजल
तप अनोखा —तपस्वी बन स्वयं जो अनल
है चकित—देखी उसी साधना ऐसी विमल

रक्त-रंजित युग खड़ा निस्पन्द तुमको सोचता !
है अचल विश्वास कितना है अडिग कितना हृदय
है अनश्वर जीव कितना है जयी कितना अभय
भव्य है कितना मरण—संकल्प है कितना अजय

रक्त-रंजित युग खड़ा निस्पन्द तुमको सोचता !
है निरामय देह कितनी प्राण कितने ज्योतिधर
है समर्पण सत्य कितना—मौन कितना है मुखर
है शिखा यह उच्च कितनी भस्म कितनी है अमर
रक्त-रंजित युग खड़ा निस्पन्द तुमको सोचता !

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



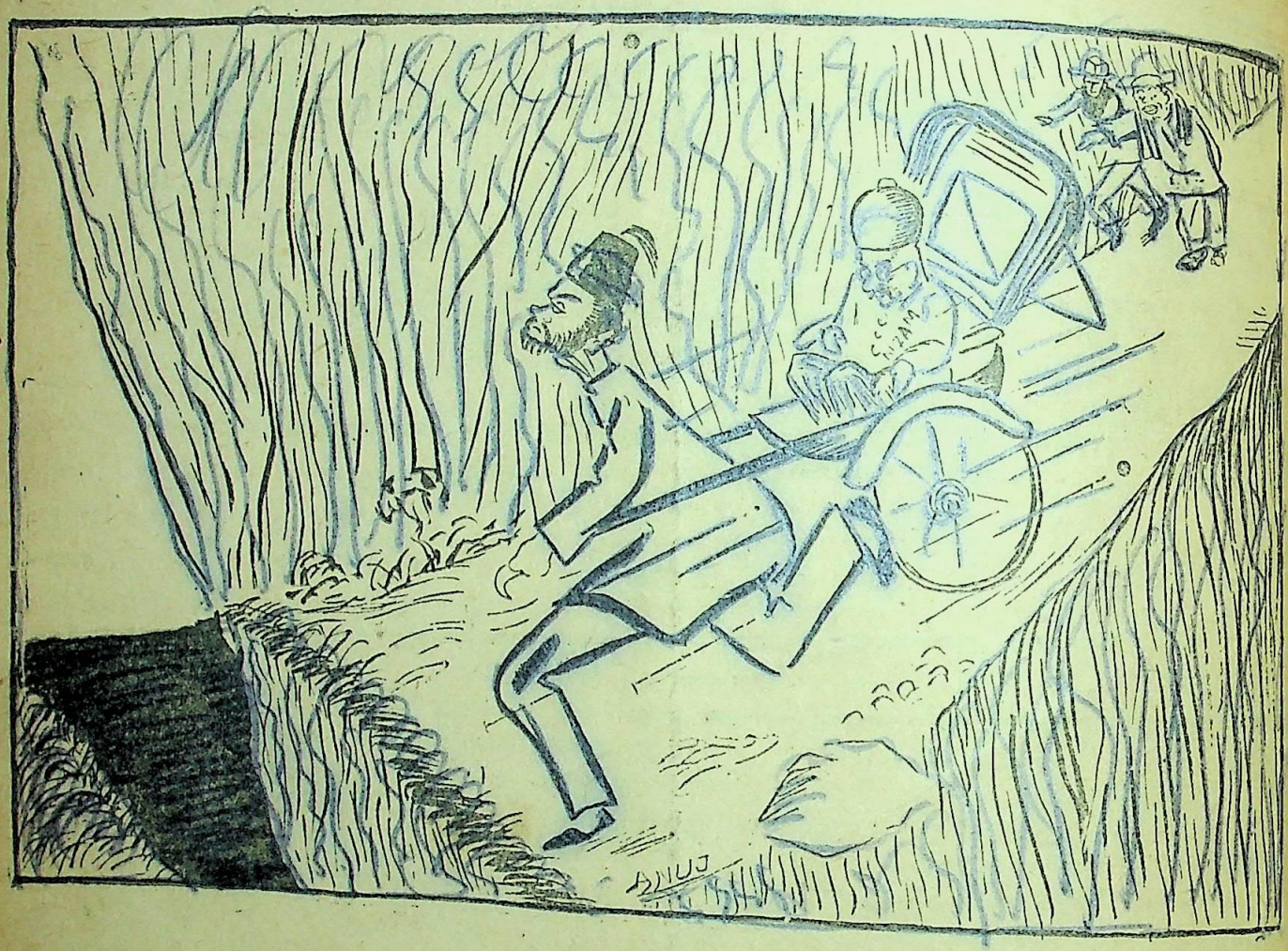

गहरा गर्त भयंकर है यह, आगे तनिक न डोल ।
खुद डूबेगा, ले डूबेगा, आंखें अब भी खोल ।

आंखें अब भी खोल, नहीं तो पछतायेगा ।
होगा सरबस नाश और तब घबरायेगा ।

सुन चिराग की बात, अरे मत बन जा बहरा ।
होगा सत्यानाश, लगेगा ऐसा गहरा ।

* * * * *

देख तुम्हारी अकल पर ऐसा परदा आज ।
सारा जग है हंस रहा, तुम्हें न आती लाज ।
तुम्हें न आती लाज, बात बढ़ बढ़ के बोले ।
अरे मौत की राह जा रहा, विष क्यों घोल ।
अपनी गरदन आप काटने की तैयारी ।
हंसता आज जहान, मूर्खता देख तुम्हारी ।

——चिराग़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पर हित बस जिनके मनमाहीं ।
तिन कह जग दुर्लभ वछ नाहीं ।

# विश्वामित्र

## विनय न मानत

हैदराबादके सवालने आज समस्त देशका वातावरण गम्भीर बना दिया है और जनता यह जाननेके लिये अत्यन्त व्यग्र हो रही है कि भारत सरकारका अगला कदम अब क्या होगा । साधारणतः यह आशा की जा रही थी कि निजाम सरकारको अन्तमें सुबुद्धि आ जायेगी और मामला शान्तिपूर्वक सुलझ जायेगा । लेकिन नादान दोस्तोंने गलत सलाह दी और भारत सरकारके प्रस्ताव अस्वीकार कर दिये गये ।

इस अस्वीकृतिके कारणोंको यद्यपि पूर्णतया स्पष्ट नहीं किया गया है, तथापि इतना तो प्रकट होता ही है कि जिम्मेदार सरकारकी स्थापना और रजाकार दलको भंग कर देनेकी शर्तें माननेमें हिचकिचाहट हो रही है । लेकिन ये दोनों ही शर्तें ऐसी हैं, जिनमें तनिक भी किसी तरहकी रियायत करनेकी गुंजाइश नहीं है । जहां तक जिम्मेदारकी स्थापनाका सवाल है, कोई भी सभ्य और गणतन्त्री सरकार इसकी उपेक्षा कैसे कर सकती है । हैदराबादकी आबादीमें मुसलमानोंकी संख्या १५ प्रतिशतसे भी कम ही है । फिर यह कैसे बर्दाश्त किया जा सकता है कि इसी १५ प्रतिशत जनताकी सहानुभूति और उसके सहयोगसे निजाम अपना निरंकुश शासन कायम रखें । इस स्थल पर यह प्रश्न उठ सकता है कि तब भारत सरकार क्यों नहीं मत-गणनाका प्रस्ताव स्वीकार कर लेती, जिसे निजाम सरकारने स्वयं ही पेश किया है । वस्तुतः मत-गणनाके सम्बन्धमें स्थिति यह है कि एक ओर विगत १०-१२ महीनोंमें लाखों हिन्दू निवासी रजाकारों और निजामी पुलिसके उपद्रवोंसे आतंकित होकर रियासत छोड़कर अन्यत्र चले गये हैं और दूसरी ओर भारतके विभिन्न स्थानोंसे लाखों मुसलमान शरणार्थी हैदराबाद पहुंच गये हैं, जिन्हें मत-गणनामें भाग लेनेका कोई अधिकार नहीं है । अतएव यह आशंका सर्वथा स्वाभाविक है कि ऐसी स्थितिमें निष्पक्ष मत-गणना नहीं हो सकती । और, जहांतक रजाकार दलका सम्बन्ध है, यह सर्वविदित है कि इस फासिस्ट दलने इधर अपनी शक्ति बहुत अधिक बढ़ा ली है, जो सार्वजनिक शान्ति और गणतन्त्री व्यवस्थाके लिये सर्वथा खतरनाक है । इस बढ़ी हुई शक्तिका अन्दाज तो इसीसे लगाया जा सकता है कि रजाकारोंका नेता कासिम रिजवी आये दिन एक-से-एक उत्तेजक वक्तव्य देता रहता है । कभी वह दिल्लीके लाल-किले पर निजामका आसफजाही झण्डा फहरानेका स्वप्न देखता है और कभी हैदराबाद पर भारतीय फौजोंका आक्रमण होने पर वहांके हिन्दुओंका कत्ले-आम करा देनेकी धमकी देता है । यही कारण है कि समझौतेके प्रस्तावोंमें उपर्युक्त दोनों शर्तें रखी गयी हैं ।

तो अब भारत-सरकार पर निजाम सरकारके इस रुखकी क्या प्रतिक्रिया हुई है ? एक प्रेस-कानफरेंसमें प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने इस पर प्रकाश डालते हुए बड़े ही स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि समझौतेके प्रस्तावोंमें अब तनिक भी हेर-फेर नहीं किया जा सकता, लेकिन साथ ही समझौतेका दरवाजा खुला रखा गया है—निजाम सरकार चाहे तो अब भी स्वीकार कर संघर्षका अन्त कर सकती है । भारत सरकारने अभी तक अपने अगले कदमकी घोषणा नहीं की है । लेकिन सहिष्णुताकी यह चरम सीमा है । यह ठीक है कि हैदराबादके खिलाफ फौजी काररवाई का निर्णय करना देशके लिये अहितकर ही होगा, लेकिन साथ ही यह भी ठीक है कि उसमें विलम्ब करना और अधिक अहितकर हो सकता है, क्योंकि निजाम सरकार बड़ी तेजीसे अपनी फौजी तैयारियां कर रही है । स्वयं पं० नेहरूने ही अपने वक्तव्यमें कहा है—"हैदराबादकी सरकार दुनियाके कोने-कोनेसे युद्ध सामग्रियां प्राप्त करने और अपनी सेनाकी शक्ति अधिक-से-अधिक बढानेकी कोशिशें कर रही थी, लेकिन वह पूर्ण सफल नहीं हुई—इसलिए नहीं कि उसके प्रयासमें कमी थी, बल्कि दूसरे कारणोंसे ।" पं० नेहरून यह भी बताया कि शस्त्रास्त्र एवं अन्य युद्ध-सामग्रियोंका हैदराबाद जाना रोक दिया गया है । इससे प्रकट होता है कि सतर्कतामूलक काररवाइयां करते हुए भी भारत सरकार अभी आक्रमणात्मक रुख अख्तियार करना नहीं चाहती । लेकिन हम तो देखते हैं कि हैदराबादके अधिकारियों पर भारत सरकारकी इस नरम नीति का प्रतिकूल ही असर पड़ता है । निजामके प्रधान मन्त्री मि० लायक अलीने जनता तथा पुलिस और फौजसे किसी भी स्थितिका मुकाबला करनेके लिये तैयार रहनेकी अपील की है । साथ ही उन्होंने नागरिकोंको यह भी धमकी दी है कि जो लोग निजाम सरकारके हितोंके खिलाफ आचरण करेंगे, उन्हें 'दुश्मन' समझा जायेगा । मि० लायक अलीके वक्तव्यसे प्रकट होता है कि निजाम सरकारको सही रास्ते पर लानेके लिए भारत सरकारको अपनी यह नरमी छोड़नी होगी, क्योंकि यह कथन सर्वथा सत्य है कि "विनय न मानत जलद जड़....

## विदा और स्वागत

अन्तिम वायसराय और स्वतंत्र भारतके प्रथम गवर्नर-जनरल लार्ड लुई माउण्ट बैटनको विदा करते हुए, भारतीय जनता अवश्य ही उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती है । निस्सन्देह स्वतन्त्र भारतके इतिहासमें लार्ड माउण्ट बैटनका नाम अमर रहेगा । भारतको शासनाधिकार सौंपने और देश-विभाजनके गुरुतर कार्यों को सम्पन्न करनेमें उन्होंने जिस राजनीतिज्ञता और दूरदर्शिताका परिचय दिया, वह सर्वथा प्रशंसनीय है । और, सबसे खास बात तो यह रही कि लार्ड माउण्ट बैटन भारत और पाकिस्तान, दोनोंके ही विश्वास-पात्र बने रहे । विगत महायुद्धमें दक्षिण पूर्वी एशियाके सुप्रीम कमाण्डरकी हैसियत से भी वे पूर्णतया सफल रहे । ऐसे सैनिक और राजनीतिक नेताको पाकर किसी भी देशको गर्व हो सकता है । हम पूर्ण विश्वास है कि ब्रिटनकी भावी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें लार्ड माउण्ट बैटनका महत्वपूर्ण भाग होगा । भारत उनके प्रति अपनी हार्दिक शुभकामना प्रकट करता है । और, चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्यको उनका जो उत्तराधिकारी चुना गया है, उस सम्बन्धमें इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि इससे बढ़कर और कोई चुनाव नहीं हो सकता था । राजाजी अपनी राजनीतिज्ञता के लिए न सिर्फ देशमें, प्रत्युत विदेशोंमें भी भलीभांति सुविख्यात हैं । देशकी वर्तमान राजनीतिक परिस्थितिमें हम ऐसे ही सूत्रधारकी आवश्यकता थी । इस नये पद पर राजाजीका स्वागत करते हुए, हम ईश्वरसे उनके दीर्घजीवनकी कामना करते हैं, जिससे कि वे जननी जन्मभूमिकी अधिकाधिक सेवा कर सकें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि

राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपिके सवाल को यदि भारत सरकार और अधिक दिनों तक लटका रखेगी, तो इसकी प्रतिक्रिया अच्छी नहीं होगी। भारतीय जनता चाहती है कि इसका निर्णय अब जल्दसे जल्द कर दिया जाय। जहांतक राष्ट्रभाषा का सम्बन्ध है, उसे 'हिन्दी' या 'हिन्दुस्तानी' कुछ भी कहकर आसानीसे स्वीकार किया जा सकता है; क्योंकि दोनोंमें कोई खास अन्तर नहीं है। हां, यदि हिन्दीके हिमायती उसमें संस्कृतके शब्द अथवा उर्दूके हिमायती अरबीके शब्द जबर्दस्ती घुसेड़नेकी चेष्टा करेंगे, तो उस तरहकी भाषा 'हिन्दी' या 'हिन्दुस्तानी'के नामसे नहीं पुकारी जा सकती और वैसी भाषा लोकभाषा नहीं हो सकती। कहना नहीं होगा कि हिन्दीमें संस्कृतके कठिन शब्दोंको ला उसे दुरूह बनानेकी प्रवृत्ति यदि कुछ हिन्दी-लेखकोंमें पैदा हुई तो इसकी मुख्य जिम्मेदारी उन उर्दू लेखकों पर ही है, जिन्होंने पहले उर्दूमें अरबी-फारसीके कठिन शब्दोंको ला-लाकर अंग्रेजी हुकूमतकी मददसे उसे जनता पर लादना चाहा। लेकिन यदि उर्दूकी लिपि 'अरबी' न होकर 'नागरी' ही रही होती, तो अरबी-फारसीके शब्दोंका अत्यधिक समावेश सम्भव न होता और तब हिन्दी और हिन्दुस्तानी का झगड़ा ही न खड़ा होता! तात्पर्य यह कि उर्दूका 'अरबी' लिपिमें लिखा जाना हमारी राष्ट्रीय एकताके लिए सर्वथा अवांछनीय है। इसलिए सरकारको हिन्दी या हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषा और नागरी को राष्ट्रलिपि घोषित करनेमें अब तनिक भी संकोच न करना चाहिए।

## हमारा राष्ट्रीय झण्डा

"स्वतन्त्रता-आन्दोलनके समय तो सभी अवसरों पर राष्ट्रीय झण्डेका उपयोग करना उचित था, लेकिन अब स्वतन्त्रता प्राप्त हो गयी है, इसलिए दूसरे देशोंकी तरह हमारे देशमें भी अब राष्ट्रीय झंडेके व्यवहारके लिए सुनिश्चित नियम बना दिये जाने चाहिये।" ये विचार भारत सरकारकी एक विज्ञप्तिमें प्रकट करते हुए बताया गया है कि राष्ट्रीय समारोह के निम्नलिखित अवसरों पर झंडेके व्यवहार पर नियंत्रण नहीं रहेगा,--स्वतन्त्रता दिवस राष्ट्रीय सप्ताह, २६ जनवरी, महात्मा गांधीका जन्म दिवस तथा राष्ट्रीय समारोहके कुछ अन्य दिवस। मोटरों पर राष्ट्रीय झंडा फहराने अधिकारी सिर्फ केन्द्र और प्रांतोंके मिनिस्टर, स्पीकर तथा देशी नरेश (रूलिंग चीफ) और राज प्रमुख ही होंगे। किन किन सरकारी भवनों पर झंडा फहराया जा सकेगा, इसकी भी एक सूची विज्ञप्तिमें दी गयी है। निश्चय ही जनता द्वारा इस आदेशका भलीभांति पालन किया जायेगा। लेकिन सरकारी विज्ञप्तिमें राष्ट्रीय समारोहोंकी पूरी सूची नहीं दी गयी है, जिससे गड़बड़ी हो सकती है, अतएव सरकारको सभी राष्ट्रीय समारोहोंकी एक पूरी सूची घोषित कर देनी चाहिये। स्वराज्य-प्राप्तिके बाद राष्ट्रीय झंडेका उपयोग पहले कई गुना बढ़ गया था। स्वातंत्र्य-संग्रामके समय जो लोग देशके प्रति विश्वासघात कर रहे थे, वे भी अब बड़ी शानसे अपने मकानों और मोटरों पर झण्डा फहरा कर सस्ती 'देशभक्ति' लूट रहे थे। निश्चय ही, ऐसे लोग इस आदेशसे निराश होंगे।

## गुलामी मनोवृत्तिका विदाई

अभी तक सरकारी आवेदन पत्रोंमें आवेदनकर्ता अपने नामके पहले लिखता था—"मैं हूं आपका अत्यन्त आज्ञाकारी सेवक।" लेकिन स्वतन्त्र भारतकी सरकारने यह प्रणाली उठा देनेका निश्चय किया है। अब आवेदन कर्ता अपने नामके पहले लिखेगा "मैं हूं आपका विश्वस्त।" सरकारका यह निर्णय अत्यन्त प्रशंसनीय है। स्वराज्यसे पूर्व, सत्ता की ताकत ऊपरसे नीचे आती थी; लेकिन अब सत्ताकी अपनी ताकत नीचेसे अर्थात् जनतासे प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में यह कि पराधीनताके दिनों जनता भले ही 'सेवक' रही हो, पर अब स्वतन्त्रता प्राप्त कर ले पर तो वही 'मालिक' है और सरकार 'सेवक' है। ऐसी हालतमें उपर्युक्त प्रणाली का हटाया जाना सर्वथा उचित और आवश्यक था। पर हम जानते हैं कि गुलामीकी मनोवृत्ति हममें इतनी गहराई तक पहुंच गयी है कि अपने दूषित अभ्यासों को हम आसानीसे नहीं बदल सकते। इस लिए संभव है कि उक्त प्रणालीको छोड़ने में भी हम विलम्ब करें। इसलिए सरकारको यह हिदायत जारी कर देनी चाहिए कि कि जिन आवेदन पत्रों पर 'मैं हूं आपका अत्यन्त आज्ञाकारी सेवक, लिखा रहेगा, उन पर कोई विचार नहीं किया जायगा।

## पाकिस्तानमें असन्तोष

अखबारोंमें प्रकाशित रिपोर्टोंसे पता चलता है कि इन दिनों पाकिस्तान सरकार को जनतामें तेजीसे फैलते हुए राजनीतिक और आर्थिक असन्तोषका सामना करना पड़ रहा है। सीमान्तके गांधी खां अब्दुल गफ्फार खांको गिरफ्तारी और तुरत उन्हें ३ साल कैदकी सजासे साफ प्रकट होता है कि राजनीतिक विरोध किस तरह अधिकाधिक बल प्राप्त करता जा रहा है। नवगठित अखिल पाकिस्तान जन संघके मन्त्री श्री जी० एम० सैयद भी नजरबन्द कर दिये गये हैं। यह भी पता चलता है कि इन दिनों पश्चिमोत्तर सीमा-प्रान्तमें 'पठानिस्तान' का आन्दोलन तेजी से बढ़ रहा है। यह तो हुई राजनीतिक असन्तोषकी बात, अब आर्थिक असन्तोष देखिये। एसोसिएटेड प्रेसकी रिपोर्ट है कि कराचीमें एकाउण्टेण्ट जनरलके दफ्तर के लगभग ७०० नान-गजेटेड कर्मचारियोंने त्याग-पत्र दे दिये हैं। इस स्थल पर यह बता देना आवश्यक है कि वेतन-वृद्धिके प्रश्न पर पाकिस्तानके समस्त सरकारी कर्मचारियोंमें घोर असन्तोष फैल रहा है। इतनी खास बात यह है कि देशके विभाजन के पूर्व केन्द्रीय वेतन कमीशनने सरकारी कर्मचारियोंके वेतन बढ़ानेके सम्बन्धमें जो सिफारिशें की थीं, उन पर पाकिस्तान सरकारने कुछ भी ध्यान नहीं दिया, जब कि भारतमें उन सिफारिशोंके अनुसार वेतन बढ़ाये गये। ऐसी हालतमें भारतसे गये हुए सरकारी कर्मचारियों पर इसकी प्रतिक्रिया स्वाभाविक ही है। सुननेमें तो यहां तक आया है कि बहुतेरे पाकिस्तानी कर्मचारियोंने अपनी सरकारको यह चेतावनी दी है कि यदि उनके वेतनोंमें उचित वृद्धि न की गयी, तो वे पाकिस्तान छोड़ कर भारत चले जायेंगे। जो हो, पाकिस्तानका यह आर्थिक असन्तोष तबतक दूर नहीं हो सकता, जबतक वह अपने पड़ोसी विशाल भारतीय राष्ट्रसे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित न करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पाकिस्तानका षड्यंत्र

श्री जी० डी० पाकिस्तान द्वारा स्थापित तथाकथित आजाद काश्मीर सरकार में ऊंचे पदपर रहचुके है। पाकिस्तानी चंगुलोंसे उन्होंने किस प्रकार छुटकारा पाया तथा काश्मीर के युद्धमें पाकिस्तानने कैसे खुल आम मदद दी इसका बड़ा ही रोमांचकारी वर्णन आपने इस लेखमें किया है जो बम्बई के अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र 'ब्लिज' ने एक विशेषांकमें प्रकाशित किया है। हम पाठकोंकी जानकारीके लिये उसे प्रकाशित कर रहे हैं। सं०

यह तो किसीसे छिपा नहीं है कि काश्मीर युद्धके पीछे एक भीषण षड़यन्त्र है। इस षड़यन्त्रका रहस्योद्घाटन अभी तक पूरा पूरा नहीं हो पाया है। भारत सरकारका श्वेत पत्र और विदेशी समाचार पत्रोंकी टिप्पणियोंसे हम इतना ही जान सके कि काश्मीर युद्धमें हिंद संघका प्रतिद्वन्दी पाकिस्तान यद्यपि खुल्लमखुल्ला न था तथापि कबाइलियोंको युद्धमें हर तरहकी सहायता और सुविधा दे वह काश्मीर युद्धके षड़यन्त्रमें शामिल अवश्य है। आज जैसा प्रकट हो रहा है उससे तो अब संदेहकी कोई गुंजाइश ही न रही कि काश्मीरका युद्ध एक सफल राजनैतिक योजना पर आधारित था और इस योजना के सूत्रधार पाकिस्तानके जन्मदाता मि० मुहम्मद अली जिन्ना थे। अमरीकन और अन्य विदेशियोंकी सहायतासे मि० जिन्ना ने काश्मीरमें एक आजाद काश्मीर सरकार कायम कर दी। भारत सबके अधिकारियों ने पाकिस्तानको इतना शैतान और दयाहीन न समझा कि जब तक पंजाब के आंचल पर लगा हुआ खून सूखने भी न पायगा कि पाकिस्तान विश्वासघातका दूसरा छुरा भी उसकी पीठमें घुसेड़ देगा। पाकिस्तानके 'आजाद काश्मीर सरकार' के कांसुलेटिक सर्वे विभागके भूतपूर्व डाइरेक्टर श्री जी० के० रेड्डीने आज हमारे सामने पाकिस्तानकी सारी पोल खोल दी है। श्री जी० के० रेड्डीका रहस्योद्घाटन पाकिस्तान की भीषण क्रूरता उसकी पैशाचिक हृदयहीनता और उसकी पहुंची हुई कूटनीतिज्ञताका परिचय देता है। श्री रेड्डीने जो रहस्योद्घाटन किया है उसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है:—

आजाद काश्मीर षड़यन्त्रसे मेरा क्या सम्बन्ध है। मैं उन्हीं बातोंको लोगों की जानकारीके लिये रखना चाहता हूं जो मेरी आखोंके सामने घटी है। भारतका नागरिक होकर भी पाकिस्तानके इस क्रूर षड़यंत्र और योजनामें कैसे फंस गया इसपर भी कुछ प्रकाश देना जरूरी है ४-५वर्ष पहलेकी बात है। मैं काश्मीर टाइम्स का संपादक था और साथ ही एसोसियेटेड प्रेसका काश्मीरके लिये प्रतिनिधि भी था। हमारी नीति पहले काश्मीरके नेशनल कानफरेंसके पक्षमें थी, पर मेरे और शेख अब्दुल्लाके बीच कुछ बातोंको लेकर मनमुटाव हो गया और फिर मैं उसका कट्टर विरोधी हो गया। स्वभावतः मैंने शेख अब्दुल्लाके दोनों विरोधियों काक और मुस्लिम कानफरेंसकी मदद की। इसके बाद काश्मीरके राजनीतिने करवट बदली और काकका पतन हो गया। काकके पतनके साथ ही मेरा भाग्य भी मुझे धोखा दे गया, मुझे पाकिस्तानका समर्थक कह कर काश्मीर से निकाल दिया गया। मैं पाकिस्तानका कदापि समर्थक न था और पाकिस्तानका प्रचार करनेभी मेरा काम नहीं था। मुझे यदि किसीसे कुछ आपत्ति थी, तो शेख अब्दुल्लाके नेशनल कानफरेंससे जिसकी मैंने कई सैद्धांतिक वजहोंके कारण कड़ी आलोचना की। पर शेख अब्दुल्लाकी आलोचनासे मेरा मतलब जिन्नाकी साम्प्रदायिक नीतिकी सराहना करना नहीं था। पाकिस्तान अथवा हिन्दुस्तान में काश्मीर के शामिल होनेका जो प्रश्न था उसके लिये मेरा विचार यह था कि इस प्रश्नका निर्णय काश्मीरी जनता ही के हाथों हो। पर दुर्भाग्यवश मैं जैसा चाहता था वैसा नहीं हुआ। ए सोसियेटेड प्रेसके लाहौर दफ्तरसे प्रतिदिन काश्मीरके प्रश्नको लेकर सनसनी खेज खबरें चारों ओर प्रसारित की जाने लगीं और मुझे उसकी कोई सूचना तक न मिलती। इसका कारण यह था कि लाहौर दफ्तरका अधिकारी एक मुसलमान था। सनसनीपूर्ण खबरोंके प्रसारके कारण काश्मीर सरकार मुझसे और भी रुष्ट हो गयी। मैंने काश्मीरके प्रधान मन्त्रीके पास अपने निर्दोष होनेके प्रमाणस्वरूप एक पत्र भेजा और उनसे यह प्रार्थना की कि वे अपने तार आफिससे यह जाननेका प्रयत्न करें कि काश्मीर सम्बन्धी सनसनीपूर्ण खबरों का भेजनेवाला मैं हूं अथवा कोई दूसरा व्यक्ति। पर चूंकि यथावत संधिके अनुसार काश्मीरका डाक व तार विभाग पाकिस्तान सरकारके हाथ था इसलिये मेरी प्रार्थना का कोई नतीजा नहीं निकला। मुझे गत दिसम्बरके बीच ही में काश्मीरसे निकाल दिया गया। यहांसे निकलनेके बाद मैं अमृतसर आया। अमृतसर आनेके बाद मैंने लाहौरके ए० प्रेस कार्यालय से फोन पर बात की। इसका कारण यह था कि मेरा कुछ बकाया इस कार्यालयमें रह गया था। यह फोनसे बात करना ही मेरे जीवन का एक बड़ा महत्वपूर्ण अंश सिद्ध हुआ।

लाहौर में भक्तिके साथ पहुंचाया गया और पाकिस्तानके उच्च कर्मचारियोंने मेरी आवभगत की और तब उन्होंने अपने कुत्सित विचारोंका रहस्योद्घाटन किया। मुझे इन लोगोंसे मालूम हुआ कि पाकिस्तान २२ अक्तूबरको काश्मीर पर धावा बोलनेवाला है। इसके साथ ही मुझे काश्मीर में आजाद सरकारके निर्माण होनेकी सूचना दी गयी और मुझे निमंत्रण दिया गया कि मैं अल्पमतोंके प्रतिनिधिके हैसियतसे आजाद सरकारके मंत्रि मण्डलमें शामिल हो जाऊं। मुझे सूचना देनेके बाद ही युद्धकी सारी तैयारी लगभग पूरी हो चली और कोहला और रामकोट से काश्मीर पर धावा बोला जाने लगा। भारत सरकारने काश्मीरको बचानेके लिये भी फौज भेजनेका इसी समय निर्णय कर लिया। २७ अक्तूबरको पाकिस्तानियोंको जब यह खबर लगी कि हिन्दुस्तानसे हवाई फौज मुकाबलेके लिये आ रही है तो क्षण भरके लिये लोगोंके दिल दहल उठे। तुरन्त ही यह निर्णय हुआ कि बरमुला हवाई क्षेत्र पर कब्जा कर लिया जाय। मेरा मन पिंजड़े के भीतर बन्द पक्षीकी तरह छटपटा कर रह गया। भारत भागनेका प्रयत्न करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खुद मौतको निमंत्रण देना था। २९ अक्तूबरको खां अब्दुल कयूम खां जिन्ना और लियाकत अलीके द्वारा बुलाये गये जानेके कारण लाहौर जा रहे थे। बीचमें वे रावल पिंडी ठहरे। मैंने उनसे मुलाकात कर पेशावर ले चलनेकी विनती की। मेरी विनती उन्होंने सुन ली और मुझे उनके घर पेशावर भेज दिया गया। जब वे लाहौरसे लौट कर पेशावर आये तो उन्होंने भी मुझसे 'आजाद काश्मीर'के प्रचार विभाग में काम करनेके लिये अनुरोध किया और मुझे फिर रावलपिंडी लौट जाना पड़ा। मैं यहां 'आजाद काश्मीर'सरकारके सार्वजनिक संपर्क विभागमें डाइरेक्टरकी हसियतसे काम करने लगा। कुछ ही दिन बाद कुछ विदेशी संवाददाताओंके विश्वासघातके कारण पाकिस्तान सरकार को यह पता चल गया कि मैं भारत भागने का प्रयत्न कर रहा हूं। मुझे निकाल दिया गया और ख्वाजा अब्दुर रहीम (रावलपिंडी डिवीजनके कमिश्नर) ने मेरी हत्या ही करवा देनी चाही। मेरी हत्याका निर्णय ऐसे हुआ कि कुछ कबाइलियोंने मुझ पर यह संदेह किया कि मैं हिंदू हूं और नेहरूका एजेंट हूं। मैंने खान अब्दुल कयूम खांसे यह शिकायत की कि पाकिस्तानको ऐसा कृतघ्न नहीं होना चाहिये। उन्होंने मुझे यह कह कर सांत्वना दी कि जब तक काश्मीर की राजनीतिक उलझन सुलझ नहीं पाती मुझे पेशावर में ही वास करना चाहिये। उन्होंने कहा कि यह संभव है कि शायद काश्मीर झगड़ेके निबटनेके पूर्व ही मैं भारत भाग जाऊं और संयुक्त राष्ट्र संघके सामने पाकिस्तानकी सारी पोल खुल जाय। पर मैं पेशावरमें अधिक दिनों तक नहीं रह सका, मुझे फिर काम करनेके लिये बुलाया गया। मैंने ऐसा सुनहला मौका छोड़ना पसन्द नहीं किया और तुरत सरदार इब्राहिम से, जो मुझे पुनः काम करनेके लिये निमंत्रण देने आये थे, मुझे कराची अल्ताफ हुसेन और जवाद साहबसे परामर्शके लिये कराची भेज देनेका अनुरोध किया। मेरी शर्त मान ली गयी और मुझे कराची भेज दिया गया। कराची पहुंचते ही मैं हिंदुस्तान हवाई सर्विस का कार्यालय पहुंचा और वहांसे जामनगरके लिये टिकट खरीदा। वायुयान पर मुझे जगह मिल गयी और मेरे पहुंचनेके दो ही घंटे बाद विमान चल पड़ा। इस तरह पाकिस्तानसे मेरा निस्तार हुआ। कराची हवाई अड्डे पर पुलिसकी जांच पड़तालसे बचनेके लिये मैंने अपना नाम भी बदल लिया। पाकिस्तानमें ७ महीनेकी अवधि काट। मैं २० मईको बम्बई पहुंच गया

## रियासतोंका प्रश्न और श्री जिन्ना

पहले पहल जिन्नाने काश्मीरके महाराजा और भारत संघके बीच फूट की बीज इसलिये बोनी चाही कि काश्मीर भारत संघमेंशामिलनहोसके। आपने मुस्लिम फरेंसको यह आदेश दियाकि वे रियासती स्वतन्त्रताका जोर-शोरसे प्रचार करें ताकि काश्मीर भारत संघमें शामिल न हो। इसके साथ ही आपने भोपालके नवाब द्वारा काक (काश्मीरके भतपूर्व प्रधान मन्त्री) से कहला भिजवाया कि पाकिस्तान काश्मीर की स्वतन्त्रताका सदा स्वागत करेगा और भारतके हस्तक्षेप करने पर उसे भारत के खिलाफ मदद भी देगा।

जिसमें भारतको एक दूसरे मोर्चेका भी मुकाबला करना पड़े मि० जिन्नाने रियासतोंको पाकिस्तानसे संधि कर लेने का प्रोत्साहन दिया। हैदराबादकी रक्षा भी इसी योजना से संभव थी। पर जिन्नाके मंसूबों पर पानी फिर गया। अधिकांश रियासतोंने भारतका साथ दिया, हैदराबादकी स्थिति डांवाडोल हो गयी, काकको काश्मीरसे निकाल दियागया और शेख अब्दुल्लाकी जेलसे मुक्ति हो गयी। तब अन्त में जिन्नाने काश्मीरके मुस्लिम कानफरेंस को लिख भेजा कि वह अपनी नीति बदल दे और इस बातका प्रचार करें कि काश्मीरको पाकिस्तानमें शामिल हो जाना चाहिये। बहुतसे लीगी भी इस कार्यके लिए एवं मुस्लिम कानफरेंसको मदद देने काश्मीर भेजे गये। इधर सीमान्त प्रदेश से साम्प्रदायिक झगड़ेका सूत्रपात करनेके लिये सरकारी और गैर सरकारी दोनों प्रकारके व्यक्ति काश्मीर भेजे गये। दनादन श्रीनगर शस्त्र और फौज आदि भेजी जाने लगीं। अबोटाबाद में मुस्लिम युवकोंको काश्मीर युद्धमें भाग लेनेके लिये सनिक शिक्षा दी जाने लगी। इसके अतिरिक्त पठानों और पंजाबियोंको बडी संख्या में काश्मीर भेजा जाने लगा। सियालकोट के रास्ते जम्मूमें भी अस्त्र शस्त्र भेजे जाने लगे।

## शेख अब्दुल्लाको फंसानेका जाल

काश्मीरियोंके भय से पाकिस्तानने दूसरी नीति जो अपनायी वह है काश्मीरको आर्थिक संकटमें डाल देना। आवश्यक वस्तुओंका आयात काश्मीरमें बन्द कर दिया गया। इधर शेख अब्दुल्लाको लोभके जालमें फंसानेके लिये रावलपिंडीसे शेख अनवारुल हक और डा० एम० डी० तासेको श्रीनगर भेजा गया। पर लोगों पर यह बात प्रकट नहीं की गयी, लोगोंने तो जाना कि रावलपिंडीसे उपर्युक्त दोनों व्यक्तियोंके जानेका उद्देश्य काश्मीरमें आवश्यक चीजों की आयात सम्बन्धी समझौता करना था। शेख अब्दुल्लाको इतना तक लोभ दिया गया कि सुरक्षा, यातायात और वैदेशिक मामलोंको छोड़ काश्मीर को पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी जायगी यदि वह पाकिस्तानमें शामिल हो जाय। स्वयं पाकिस्तानके प्रधान मन्त्री श्री लियाकत अली खांने यह सलाह शेख अब्दुल्लाको भेजी। शेख अब्दुल्लाको यह लिख भेजा गया कि यदि वे पाकिस्तानकी शर्त मान लें तो उन्हें साम्प्रदायिक और भौगोलिक आधार पर महाराजासे काश्मीरको पाकिस्तानमें शामिल कर देनेका अनुरोध करना चाहिये। महाराजाके नहीं मानने पर उन्हें अपने नेतृत्वमें काश्मीरके लिये एक अस्थायी सरकार बनानी चाहिये। सलाह तो भेजी गयी पर उम्मीद न थी कि सलाह मान ली जाय। जिन्नाको पूरा यकीन था कि शेख अब्दुल्ला उनके जालमें फंसनेवाला नहीं। अतः उनकी वास्तविक इच्छा तो यह थी कि काश्मीरमें युद्ध छिड़ने के दो रोज पूर्व शेख अब्दुल्लाको उनसे भेंट करनेके लिये लाहौर बुलाया जाय और उनका शानदार स्वागत किया जाय। यदि इस ढंगसे वह वशमें आ गये तब तो ठीक ही है वरन् उन्हें कैद कर एक गुप्त स्थानमें रख दिया जाय और इधर आजाद काश्मीर सरकारकी स्थापना कर कहा जाय कि उसका नेता शेख अब्दुल्ला है। पर यहां भी पाकिस्तानियोंको शिकस्त खानी पड़ी। पण्डित नेहरूसे भेंट करनेकी इच्छा जब शेख अब्दुल्लाने जाहिर की तो पाकिस्तानियोंको पूर्ण विश्वास हो गया कि शेख अब्दुल्ला किसी दूसरी धातुका बना है।

काश्मीरमें युद्ध छेड़नेका कारण ढूंढ लिया गया, १५ अगस्तको श्रीनगर में साम्प्रदायिक झगड़ा मचानेका निश्चय किया गया। कारण यह बता दिया गया कि पाकिस्तानी झंडेका लोगोंने उतार कर अपमान किया है। जम्मूमें झगड़ेके सूत्रपातके लिये मुस्लिम कानफरेंसके अध्यक्ष श्री चौधरी हमीदुल्ला खां को कायदेनीज के नेता श्री महमूद अहमदने काफी तादादमें अस्त्रशस्त्र भेजे। पर यह योजना भी ठीक नहीं जंची। अन्तमें काश्मीरमें एक बड़े पैमाने पर युद्ध छेड़नेका निश्चय किया गया। मुरीमें श्री लियाकत अलीने एक गुप्त बैठक की जिसमें अन्य व्यक्तियोंके अतिरिक्त मामदोत, खां अब्दुल कयूम खां शौकत हयात खां, ख्वाजा अब्दुर रहीम, कर्नल अकबर खां, कर्नल शेर खां, शहीद हमीद, एक आजाद हिन्द फौजका आदमी आदि भी मौजद थे। इस बैठकमें युद्धकी तैयारीके लिये सारे प्रबन्ध ठीक किये गये। पूंच स्थित द्वितीय युद्धसे लौटे हुए ८०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



...हजार सिपाहियोंका उपयोग का... युद्धमें करनेका विचार किया गया। ...गत सितंबरके अन्तमें सीमांत प्रदेश ...एक दूसरी घटना घटी। ब्रिटिश फौजोंके ...जाने और यातायातके साधनोंकी कमी ...जानेके कारण कबाइलियोंकी आर्थिक ...बिगड़ चली। पाठानिस्तानकी स्था... ...का प्रश्न भी मुंहबाय खड़ा था। खां... ...चुप तो थे, पर यह चुप्पी प्रभंजनके ...की सूचना देती थी। सीमांत प्रदेश ...गवर्नर श्री कनिंघमने सच्ची स्थितिका ...लगा लिया। अफगानियोंके प्रभावसे ...इलियोंको बचाना जरूरी था। अन्त ...रावलपिंडीमें बड़े बड़े अधिकारियोंकी ...हुई जिसमें यह निश्चय किया गया ...कबाइलियोंको काश्मीर-युद्धके लिये ...में भर्ती किया जाय। कनिंघमकी ...की चल गयी। अज्ञान कबाइलियोंको ...बढ़ कर अच्छा मौका क्या लग सकता ...। रुपयेका रुपया और खाना अलग, ...अपने सम्प्रदायवालोंकी रक्षाके लिये ...मीरके विरुद्ध जेहादभी। सांप्रदा... ...कलह उत्पन्न करनेके लिये पाकिस्तान ...मुल्ला काश्मीर भेजे जाने लगे। तरह ...की भ्रमात्मक कहानियां गढ़ी गयीं, ...ओंको अत्याचारी नीच और मुस्लिम ...का शत्रु बतलाया गया। इसके अति... ...पठानोंके कान इस सूचनासे भर ...गये कि काश्मीर वैभवशाली स्थान ...एवं काश्मीरके राजमहलमें करोड़ों ...के खजाने पड़े हैं। पठानोंके मुंहसे ...टपक पड़ी। कनिंघमने जुट कर कबाइ... ...का युद्धके लिये संग्रह करना शुरु ...।

### युद्धकी शुरूआत

काश्मीरकी सीमा पठानियोंसे भर ...गयी। सभी तरहकी सुविधाओंका ...हो गया। २१ अक्तूबरको सीमांत ...२५० लारियां आयीं और पश्चिमी ...ने ५०००कबाइलियोंको धरी हबि... ...और कोहाला पहुंचाया। युद्धका ...नृत्य काश्मीरके रंगमंच पर एक ...अपनी पूर्ण पैशाचिकता और जघ... ...घनघना उठा। पर हुआ वही जो ...था। कबाइलियोंकी लाखों चेष्टाय ...पाकिस्तानकी सारी राजनीतिक दूर... ...श्री नगर पर अधिकार नहीं ही ...सकीं। अन्तमें जब पाकिस्तानने ...दाल गलती नदेखी तो रावलपिंडी ...की तैयारी और भी जोरोंसे चलनी ...हुई। ऊरी, पूंच, मीरपुर, गुजरात, ...सियालकोटमें अलग अलग फौजकी ...तैयार हुईं। काश्मीर युद्धकी ...में रावलपिंडीके कमिश्नरने ...मदद की है। सिविल सप्लाई और आक्रमणकारियोंके खिलानेके प्रबन्ध में उसने कमाल कर दिखाया है। उसने अपने बंगले में काफी सामान जमा कर और सरकार द्वारा लूटे हुए सामान भी उसीके बंगलेमें रखे गये। संप्रदायका भूत इसके सर पर भी सवार था; अजीबंग शिविर (झेलमके समीप) में तो इसने अपने हाथों कई एक गैर-मुसलमानोंका खून किया। इसके काले कारनामे खनमें उबाल ला देते हैं। काश्मीर-युद्धमें विजय प्राप्त करनेके लिये पाकिस्तानने सब कुछ किया। बेतारका तार आदि सभी तरहकी मशीनें भेजीं। युद्ध चलानेके लिये उसने नागरिकोंके खाद्य पदार्थ भेजने आदि काभी काम अपनी फौजके सप्लाई कार्पस को सौंप दिया।

काश्मीर युद्धमें आज एक बात अवश्य देखी जा रही है और वह है कबाइलियों की दृढ़तामें ढिलाई। कबाइली आज अपने खानेके प्रबन्धसे असंतुष्ट हैं और उन्हें अधिक लड़ाई अच्छी नहीं लगती। इसके अतिरिक्त पश्चिमी पंजाबके लोग भी कबाइलियोंसे क्षुब्ध हैं। कबाइली आज शहरोंमें जाने भी नहीं दिये जाते। इसका कारण यह है कि वे मुस्लिम घरोंको भी लूट लेते हैं और जनतामें आतंक पैदा कर देते हैं।

कबाइली आज निस्संदेह बहुत असंतुष्ट हैं; उन लोगोंकी शिकायत है कि पाकिस्तानके लड़नेवाले आप तो पीछे रहजाते हैं और उन्हें टैंक और विमानोंसे मोर्चा लेने आगे भेज देते हैं।

### विदेशियों द्वारा पाकिस्तानको प्रोत्साहन

आश्चर्यकी बात है कि उरी युद्ध क्षेत्र पर जानेके पूर्व मुसलमानोंको शिक्षा देने वाला एक अंग्रेज व्यक्ति है। नाम है इसका इगल जो पाकिस्तान सरकारके अधीन एक कर्नल है। इस कर्नलने युद्धके सिपाहियोंको इस्लामकी शिक्षा की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया। इसके अतिरिक्त आजाद काश्मीर की फौजको अंग्रेज बंदूकधारी और सिगनलवाले भी मदद करते हैं। हाल ही की बात है कि मुझे अबोटाबादमें यह पता लगा कि जनरल ग्रेसी सुरक्षाके निमित्त पाकिस्तानकी सीमा पर स्थित फौजोंका निरीक्षण करते हैं। इसमें अब कोई संदेह नहीं रहा कि पाकिस्तानको विदेशियोंका सहयोग प्राप्त है। अंग्रेज और अमरीकन पूरी तत्परताके साथ पाकिस्तानको काश्मीर युद्धमें सहायता कर रहे हैं।

रसल हाइट का नाम आज भारत के लोग भी जान गये हैं। यह रसल हाइट सड़क बनानेवाला एक अमरीकन इंजिनियर था। अमरीकनोंने जब यह सुना कि कबाइलियोंकी मदद रूसीतथाअन्य औजारों से की जा रही है तो वाशिंगटनसे रसल हाइटको यह आदेश भेजा गया कि वह रावलपिंडी जाकर जरूरी जांच-पड़ताल करें। रसल हाइट तो चालाक था ही। रावलपिंडी पहुंचते ही उसने कमिश्नरके सामने यह घोषित किया कि वह आजाद काश्मीरकके लोगोंकी ओरसे युद्धमें भाग लेना चाहता है। रसल हाइट का पाकिस्तनने स्वागत किया। पहले तो रसल यह पता लगानकी भरपूर चेष्टा की कि पाकिस्तान को रूसी शस्त्र प्राप्त है अथवा नहीं। उसने मुझसे कहा कि मुझे पाकिस्तान पर इस तरहका कोई संदेह नहीं होता। रसल हाइटके कारनामोंकी भनक भारत सरकार के कानोंमें पड़ी और रसल हाइट कुछ दिन बाद ही वाशिंगटन लौट गया। उसने मुझे विश्वास दिलाया था कि वह पाकिस्तानके जुल्मका भण्डाफोड़ करेगा, पर वह तो ऐसा विश्वास घाती निकला कि वाशिंगटन पहुंचने पर मुझे ही रूसी कम्यूनिस्ट सिद्ध करने लगा। पर इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं। रसल कुछ मेरी बात पर तो चाल नहीं सकता। उसे तो अमरीकन सरकारकी ही बात माननी पड़ेगी। अमरीकनों ने पाकिस्तानियोंको काश्मीर युद्धमें जो सहयोग दिया उसके अनेक उदाहरण हमारे पास हैं। स्वयं पाकिस्तान स्थित अमरीकन राजदूत श्री लीविस को ही ले लें और देखें कि उसने किस प्रकार पाकिस्तानको भारत के विरुद्ध उभाड़ा और सहायता की है। श्री लिविसने तो यहां तक किया कि स्वयं कबाइलियोंकी जमातमें भाषण किया और काश्मीर युद्धमें उनके द्वारा दिखलायी गयी वीरताके लिये उन्हें धन्यवाद दिया। एक कबाइलीने जब उनसे पूछा कि संयुक्त राष्ट्र संघमें अमरीका भारतके पक्षमें रहेगा, अथवा पाकिस्तानके तो आपने एक विचित्र मुस्कानके साथ कबाइलियोंको बतलाया कि संयुक्त राज्य अमेरिका सदा पाकिस्तानके पक्षमें रहा है और रहेगा आपने कहा कि अमरीकनोंको इसके लिये दुःख है कि पाकिस्तान जैसा शक्तिशाली देश घरेलू मामलोंमें बुरी तरह फंसा है। आए दिन उसके यहां हड़तालें होती हैं।

CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हिन्दी बनाम उर्दू

## श्री नरेश मोहन कुमार

हिन्दी और उर्दू दोनों आज एक-दूसरेकी छातीका निशाना बना भाला और तलवार ताने आमने-सामने खड़ी हैं। कुछ लोग दोनोंको मिलानेके प्रयत्न भी कर रहे हैं। सिर्फ भाई-भाईकी लड़ाई बन्द करनेके लिये कोई तो दोनोंके बीच एक नयी भाषाका ही अस्तित्व मान बैठे हैं, और कोई-कोई अंगरेजी भाषा और लिपिको ही अपनानेके लिये तैयार हैं। अपनी यह दुर्दशा देखकर स्वीकार करना पड़ता है कि अंगरेजोंने हमपर बहुत दूरतक सांस्कृतिक विजय भी पायी थी।

राजनीतिक क्षेत्रमें अंगरेजोंने जिस तरह हिन्दू और मुसलमानोंको लड़ाकर अपना मतलब साधा, उसी तरह सांस्कृतिक क्षेत्रमें हिन्दी और उर्दूको लड़ाकर भी किसी एक भाषाकी सर्वमान्यताको भी चौपट कर दिया। राजभाषाके प्रश्नपर आज के गतिरोधकी यही संक्षिप्त भूमिका है। संवत् १८६० में कलकत्तामें स्थापित फोर्ट विलियम कालेज अंगरेजोंके सांस्कृतिक षड्यंत्रोंका अड्डा था। एक ओर वे यहां ईसाई-धर्मका प्रचार-साहित्य रचा करते थे और दूसरी ओर हिन्दी और उर्दूके बीचकी खाई चौड़ी कर रहे थे। उनके षड्यन्त्रोंके कारण ही आरम्भमें ही मुंशी ईंशा अल्लाखां जैसे उर्दूके शायरके हिन्दी-गद्यमें आगमनके बावजूद भी लल्लू-लालकी रचनाओंमें 'विदेशी' (उर्दू और फारसी) शब्दोंके न आने देनेकी प्रतिज्ञा लक्षित होती है। पर जैसा कि स्व० रामचन्द्र शुक्लने लिखा है, उस समय "बहुतेरे अरबी- फारसीके शब्द बोल-चालकी भाषामें ऐसे घुल-मिल गये थे कि उन्हें केवल संस्कृत-हिन्दी जाननेवालोंके लिये पहचानना भी कठिन था।" हल्दीघाटीकी लड़ाईमें सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ योद्धा बदौनीको जो कठिनाई शाही काफिरों और बगावती काफिरों ( राजपूतों) को पहिचाननेमें हुई थी, कुछ वैसी ही कठिनाई हिन्दी और फारसी शब्दोंको पहिचाननेमें लल्लूलालजी और उनके साथियोंको हुई। अतः लल्लू लालके उर्दू और फारसीके विरुद्ध भयंकर जिहादके बावजूद भी 'प्रेमसागर'में शिवजीने एक भक्त बाणासुरको देकर कहा– 'इस बैरखको ले जाय। स्पष्ट है, उस समय 'बैरख' जैसे मुसलमानी शब्द भी हिंदुओंमें इस तरह घुल मिल गये थे कि लल्लूलालजी जैसे कट्टर स्वदेशीके शिकारी भी [illegible] यह बोलनेमें जरा न हिचके। यदि देशमें अंगरेजोंके षड यंत्र न होते रहते तो अवश्य आज हिन्दी और उर्दूके बीच यह खाई न रहती।

और, खूबी तो यह है कि जहां एक ओर ईसाइयोंकी धर्म-पुस्तकोंके अनुवादकी भाषा 'सदा सुखलाल और लल्लूलालके ही नमूने पर चली है' वहीं दूसरी ओर गर्सा-द-तासी (फरांसीसी विद्वान्) ने कहा है– "हिन्दोमें हिन्दू-धर्मका आभास है– वह हिन्द धर्म, जिसके मूलमें बुतपरस्ती और आनुषंगिक विधान हैं। इसके विपरीत उर्दूमें इस्लामी संस्कृति और आचार-व्यवहारका संचय है। इस्लाममें एकेश्वरवाद मूल सिद्धान्त है, इसलिये इस्लामी तहजीबमें ईसाई या मसीही तहजीबकी विशेषताएं पायी जाती हैं।" और इससे भी खुलकर 'उर्दू भाषा और मुसलमानोंके साथ मेरा जो लगाव है, वह कोई छिपी हुई बात नहीं है। मैं समझता हूं कि मुसलमान लोग कुरान को तो आसमानी किताब मानते ही हैं, इंजीलकी शिक्षा भी अस्वीकार नहीं करते; पर हिन्दूलोग मूर्तिपूजक होनेके कारण इंजीलकी शिक्षा नहीं मानते।"

हिन्दुओं और हिन्दी-प्रेमी जनताका क्रोध मुसलमानोंके विरुद्ध भड़कानेके लिये अंगरेजी सरकारने अदालतकी लिपि नागरी बना दी, पर कुछ ही महीने बाद उर्दूको दफ्तरी भाषा बना दी और इसका कारण लोगोंको मुसलमानोंका नागरी–विरोध बताया गया। १८९३ वि० सं०में संयुक्त प्रदेश बोर्डकी तरफसे यह 'इश्तहारनामा' हिन्दीमें निकला था – "पच्छांहके सदर बोर्डके साहबोंने यह ध्यान किया है, कचहरीके सब काम फारसी जबानमें लिखापढ़ी होनेसे सब लोगोंको बहुत हर्ज पड़ता है और इसलिये हुक्म दिया गया है कि सन १८४४ की कुवार बदी प्रथमसे जिसका जो मामला सदर बोर्डमें हो तो अपना सवाल अपनी हिन्दी बोलीमें और फारसीके नागरी अच्छरनमें दाखिल करे... और सवाल जौन अच्छरनमें लिखा हो तौने अच्छरनमें और हिन्दी बोलीमें उसपर हुक्म लिखा जायगा।"

कहना न पड़ेगा कि इस इश्तहारसे लोगोंको बड़ी खुशी हुई और सबने इसका हार्दिक स्वागत किया और सन १८३५ [illegible] हो जब इसको मुसलमानोंका विरोध कारण बताकर रद्द किया गया तो लोगोंके क्रोधका वारापार न रहा। मुसलमान-विरोधी और उर्दूविरोधी भावनाने उग्र रूप धारण कर लिया। फिर अंगरेजोंका ध्यान देशी भाषाओंकी शिक्षाकी ओर गया और निष्पक्ष भावसे गौरांग प्रभु हिन्दी और उर्दू दोनोंकी व्यवस्था करनेकी सोच भी रहे थे (?)पर मुसलमानोंके विरोधके कारण सं० १९०५ में उन्हें यह सूचना निकालनी पड़ी–"ऐसी भाषाका जानना, सब विद्यार्थियोंके लिये आवश्यक ठहराना, जो मुल्ककी सरकारी और दफ्तरी जबान नहीं है, हमारी रायमें ठीक नहीं है। इसके सिवाय मुसलमान विद्यार्थी, जिनकी संख्या देहली कालिजमें बड़ी है, इसे अच्छी नजरसे नहीं देखेंगे।" इस तरह विवश होकर (!) गौरांग महाप्रभुओंको जो सूचनाएं निकालनी पड़ी थीं, उनसे हिन्दी और उर्दूमें साम्प्रदायिक रंग चढ़ रहा था और हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीचकी खाई दिन दूनी रात चौगुनी चौड़ी हो रही थी। सर सैयद अहमद खांके नेतृत्वमें मुसलमान और राजा शिवप्रसादके नेतृत्वमें हिन्दू अंगरेजोंको खुश करनेके लिये सदा प्रयत्नशील रहते थे। उर्दू विरोधी भावना हिन्दीप्रेमियोंमें ऐसी उग्र हो गयी कि जब राजा शिवप्रसादने उर्दू मिश्रित शैली अपनायी तो लोगोंने उन्हें भी कोसना शुरू किया।

फिर, ईसाई मतके प्रचारको रोकनेके लिये राजा राममोहनरायके ब्रह्म समाज आन्दोलन, और स्वामी दयानन्द सरस्वतीके आर्य समाज आन्दोलनने भी नागरीका पक्ष लिया और उर्दू के प्रति रही-सही सहृदयशीलता भी जाती रही।

बहरहाल, हमें अपनी राष्ट्रभाषा चुननी ही है और चुननी ही है अपनी राष्ट्रलिपि भी। साम्प्रदायिकताके जहरने हिन्दी और उर्दूको एक दूसरेका विरोधी बना दिया है। पर, हिन्दी-उर्दूके बीच अब भी खाई पट सकती है। उर्दूका जन्म भी हमारे देशमें ही हुआ है, अन्यत्र नहीं। वह भी हमारी संस्कृतिमें ही घुले मिलेगी। आज तक उर्दू हिन्दीसे बिलकुल भिन्न न समझी इसका एकमात्र कारण उर्दूका विदेशी लिपिमें लिखा जाना है। उर्दू यदि नागरी लिपिमें लिखी जाने लगे तो वह आप ही हिन्दीमें मिल जायेगी और विश्वकी कोई शक्ति उसे हमसे अलग न कर सकेगी। हिन्दू और मुसलमानके धर्म भिन्न-भिन्न, पर संस्कृति धर्मसे बड़ी है, विशाल है। एक ही संस्कृतिमें विभिन्न धर्मोंका समन्वय हो जाता है। हिन्दुओं और मुसलमानोंकी संस्कृति एक है, उनकी भाषा भी एक होनी चाहिये और होगी भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


एक मनोरंजक लेख—

# मैं पाकिस्तान गया था

## —श्री चिराग मीनापुरी

जबसे पाकिस्तान कायम हुआ है, चिरागका दिल उसे देखनेके लिये बुरी तरह मचल रहा है। कायदे आजमका वह 'बहिश्त' कैसा होगा! वहां इस्लामके बन्दे अब किस तरह चैनकी बंसी बजाते होंगे! उस दिन शामको इन्हीं सारी बातों पर मन ही मन विचार कर रहा था कि अचानक मेरी नजर एक अखबारकी ओर गयी, जिसमें एक विचित्र खबर छपी हुई थी। उसे एक बार पढ़ जाने पर ऐसा लगा, मानों आंखें धोखा दे रही हों; इसलिये दुबारा और तिबारा पढ़ा, तब जाकर इतमीनान हुआ। वह अजीबो गरीब खबर यों है:—

"हालमें लाहौरमें एक मौलवीको पाकेटमारीके जुर्ममें डेढ़ सौ रुपये जुर्माने या बदलेमें ६ मास सख्त कैदकी सजा मिली है। कहते हैं कि जब खुदाके बन्दे आंखे मंद कर नमाज पढ़ रहे थे तो उसी बीच मौलवी ने उनमेंसे एकके पाकेटमे धीरेसे रुपयोंकी थैली निकाल ली, जिसमें २००) थे। मौलवीको तुरत पकड़ लिया गया।"

आखिर इस खबरको पढ़ कर किसको ताज्जुब न होगा! कायदे आजमके पाकिस्तान में इस तरहका नापाक काम! और वह भी नमाजके समय एक मौलवी द्वारा! तोबा! तोबा!

हां, तो जिस दिन मैंने यह खबर पढ़ी, उस दिनसे कभी लाहौर, कभी कराची पेशावर और कभी ढाका की याद अक्सर आ जाया करती है। और मेरा शायराना दिमाग इन 'पाक' स्थानोंके सम्बन्धमें तरह तरहकी बातें सोचा करता है।

उस दिन रातको अचानक मैं लाहौर जा पहुंचा। देखा, एक पार्कमें बड़ा भारी मजमा लगा हुआ है। शेरवानी और अरबी टोपियों का बोलबाला था और एक मौलवी साहब सदरकी कुर्सीसे गला फाड़ फाड़ कर चिल्ला रहे थे:

"हमने पाकिस्तानके लिए खून बहाया और हमें यह यकीन दिलाया गया था कि पाकिस्तानकी हुकूमत शरियतके नियमोंके मुताबिक होगी। फिर कायदे आजम ऐसा करनेमें क्यों देर कर रहे हैं! जो लोग शरियतकी हुकूमतके खिलाफ हैं, उन्हें बेशक हम काफिर समझते हैं। मुसलमान हरगिज हिन्दुओंके सामने सर न झुकायेंगे और अपने इस्लामी राजकी रक्षाके लिये अपना सब कुछ कुर्बान करनेके लिये तैयार रहेंगे।"

यह सभा खत्म होनेके बाद उसी जगह एक दूसरी सभा शुरू हुई। मालूम हुआ कि भारतके विभिन्न भागोंसे, खास कर पूर्वी पंजाब और दिल्लीसे, आये हुए मुस्लिम शरणार्थियोंकी यह सभा है। सभामें शामिल होनेवालों में ९० फी सदी बिलकुल कंगाल नजर आ रहे थे। सूखे मुंह, पिचके गाल और धंसी आंखे! सभा—मंचसे तीन-चार आदमियोंकी गरमागरम स्पीचें यानी तकरीरें हुईं। प्रायः सबने पाकिस्तानी सरकारको बुरी तरह कोसा:

"पाकिस्तान सरकार हमारे रहने और गुजर-बसर करने के लिये कोई ठीक ठीक इन्तजाम नहीं कर रही है। हम पाकिस्तान का जो सरसब्ज बाग दिखाया गया था, उसे आज हम अपने लिये बिलकुल रेगिस्तान पा रहे हैं। हम देखते हैं कि पाकिस्तानी अधिकारी हुकूमतके नशेमें खुद तो गुलछर्रे उड़ाते हैं और जिन लोगोंने पाकिस्तानके लिये अपना सब कुछ लुटा दिया, उनकी कुछ भी परवाह नहीं करते।"

दूसरी सभा खत्म होते ही डुगडुगी पिटवा कर यह ऐलान किया गया कि इसी जगह भारतीय ईसाइयोंकी एक सभा होगी जिसके सदर या अध्यक्ष मि० गिब्बन होंगे।, मुझे कुछ विशेष दिलचस्पी हुई इस सभासे; योंकि पाकिस्तान बनने पर गिब्बन महाशय इस नये इस्लामी राज्यकी तारीफ करते फूले नहीं अघा रहे थे। इसलिये यह जाननेकी इच्छा हुई कि इन हजरतके दिमाग पर पाकिस्तानने कहां तक असर डाला है। सभा शुरू हुई और सबसे पहले गिब्बनने कहना शुरू किया:

"यहांके ईसाइयोंको ऐसी मसीबत पहले कभी नहीं झेलनी पडी थी। इसलिये हमारी मांग है कि पाकिस्तानी विधान परिषदमें ईसाइयोंका अलग प्रतिनिधित्व हो और केन्द्रीय सरकारमें ईसाई मिनिस्टर भी रखे जायं।"

बस तुरत समझ गया कि हजरतको आटे-दालका भाव अब मालूम हो रहा है।

दूसरे दिन पेशावर पहुंचा। वहांका रंग ढंग देख कर दंग रह गया। बेचारे हिन्दुओं और सिखोंका कहीं नामोनिशान न था। चाय पीनेके लिये १० मिनट एक होटलमें बैठा तो सुना, कि खां अब्दुल गफ्फार खांका 'पठानिस्तानका आंदोलन बड़ी तेजीसे जोर पकड़ रहा है। इससे पाकिस्तानी अधिकारी बहुत डर रहे हैं। यह भी मालूम हुआ है कि अफगानिस्तान और वजीरिस्तानके पठान इस आंदोलनमें बहुत मदद कर रहे हैं। सरहदी सरकारको खौफ है कि ईपीके फकीरकी मददसे खां अब्दुल गफ्फार खां का लाल-कुर्ती-दल कहीं सरहदी सरकारको उलट न दे। एक आदमीने यह भी बताया कि सरहदी सरकार बादशाह खां यानी अब्दुल गफ्फार खांको जेलमें नजरबन्द करना चाहती है।।

कहीं कहीं काश्मीरकी लड़ाईकी भी चर्चा सुनी। कोई आक्रमणकारियोंका साथ देनेवाले पठानों की निंदा कर रहा था और कोई काश्मीरके सम्बन्धमें तरह तरहकी अफवाहें सुना रहा था। मैंने यह नतीजा निकाला कि काश्मीर की लड़ाईके सम्बन्धमे पठानों को काफी गलतफहमी मे रखा गया है।

पेशावरमें दो एक दिन और रह कर वहांका हाल अच्छी तरह जानना चाहता था और यह पता लगाना चाहता था कि पाकिस्तानी हुकूमत कायम हो जानेसे खां- बन्धुओंकी लोकप्रियता पर कहां तक असर पडा है। लेकिन खाने पीनेकी बेहद तकलीफकी वजहसे मैंने तुरत पेशावरसे टिकट कटा लिया। फिर भी राह चलते और इधर उधर जितने लोगोंसे मेरी बातचीत हुई, मैंने यह समझा कि खां-बन्धुओंकी लीडरी पर तनिक भी धक्का नहीं लगा है। हां पाकिस्तानी नेता हुकूमतके बलसे डरा धमका कर लोगोंको अपनी ओर खींच रहे हैं। लेकिन लगा कि किसी दिन भी यह दीवाल टूट सकती है, क्योंकि पठान जनता आजाद पठानिस्तानके लिये कमर कसे हुए है। वह नहीं चाहती कि मुट्ठी भर जमींदारों और ताल्लुकेदारोंकी टोली उन पर राज करती रहे।

अब मैं कराची पहुंच गया था। पाकिस्तानके उस सदर मुकामका हाल किस तरह लिख कर बताऊं! भूले भटके एकाध हिन्दू सिख कहीं कहीं नजर तो आये, लेकिन उनके मुंह पर हवाइयां उड़ रही थीं। खादी की पोशाक और गांधी-टोपीके तो कहीं दर्शन न हुए। मन ही मन सोचा- खैर, पाकिस्तानकी राजधानीको खूब मजेमें देखना है। एक दैनिक अखबारमें पढ़ा कि पाकिस्तानके वजीरे आजम मियां लियाकत अली खांने स्वदेशीका आंदोलन चलाया है, और इसी सिलसिलेमें एक सभामें उनका भाषण है। ठीक समय पर उस सभामें दाखिल हो गया। सभामें कायदे आजम भी अपने सभी लेफ्टिनेंटोंके साथ हाजिर थे। कायदे आजम, लियाकत अली और दूसरे कई पाकिस्तानी नेताओंने चर्खा चलाने और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


खादी पहने पर जोर दिया और कहा कि पाकिस्तानकी माली हालत इसीसे अच्छी होगी।

इन पाकिस्तानी नेताओंकी 'कथनी और करनी' पर मुझे ताज्जुब हो रहा था। ये हजरत जनताको चर्खा चलाने और खादी पहननेका उपदेश दे रहे थे। लेकिन उनमेंसे किसीकी पोशाक खादीकी नहीं थी। और, मेरा खयाल है कि उनमेंसे कई शायद चर्खा चलाना भी नहीं जानता। फिर दूसरों को उपदेश देनेका उन्हें क्या हक! मुझे यह भी याद आया कि यही पाकिस्तानी नेता स्वराज्य मिलने अथवा पाकिस्तान कायम होने के पहले देशके स्वदेशी आंदोलनके समय बगले झाकते थे और आज उन्हें उसकी असलियत मालूम हो रही है।

दूसरे दिन सिन्ध तबलीग कानफरेंस थी। सुना कि उसमें भाग लेनेके लिये सिन्ध भरके प्रतिनिधि आये हुए है। गया वहांका तमाशा देखने। कोई पीर साहब सदारत कर रहे थे। सभामें कई गरमागर स्पीचें हुईं और एक प्रस्ताव पास कर पाकिस्तान सरकारसे जोरदार मांग की गयी कि शरियत और कुरानके मुताबिक पाकिस्तान की हुकूमत हो, वरना मुसलमानों की कुर्बानियोंका कोई मतलब नहीं होगा।

कुछ जानकार लोगोंसे बातचीत करने पर यह भी मालूम हुआ कि कायदे आजम और उनके चेले इन दिनों बड़ी परेशानीमें हैं कि इस नये इस्लामी राजको किस तरह विभिन्न खतरोंसे बचाया जाय। भारतसे आये हुए शरणार्थियोंको बसाने और उनके रोजी रोजगारका सवाल, सरकारी कर्मचारियोंकी वेतन वृद्धिका सवाल जूनागढ़ हैदराबाद और काश्मीरका सवाल, पठानिस्तानका सवाल, पूर्वी पाकिस्तान द्वारा पेश बंगला भाषाको एक राष्ट्रभाषा माननेका सवाल, और इन सबके ऊपर पश्चिम पंजाब और सिंध के मंत्रिमण्डलोंके भीतरी झगड़ोंका सवाल, यानी सवाल–सवाल के मारे नाकों दम।

और, उसी जगह पूर्वी पाकिस्तानके सम्बन्धमें भी कुछ खास बातें मालूम हुईं। सुना, पूर्वी पाकिस्तानके वजीरे आजम नाजीमुद्दीन साहब इन दिनों मि० सुहरावर्दी साहबसे बुरी तरह भड़क रहे है। उन्हें खौफ है कि सुहरावर्दी साहब पूर्वी और पश्चिमी बंगालको फिरसे एकमें मिलाने का षड यन्त्र कर रहे है। मतलबयह कि पूर्वमें मि० सुहरावर्दी और पश्चिममें खां–बन्ध पाकिस्तानी अधिकारियोंकी आंखोंकी अकड़ी हो रहे है।

लेकिन पाकिस्तानकी यह राजनीतिक रिपोर्ट पेश करनेके साथ साथ दो शब्द वहांकी सामाजिक दुरवस्था पर भी लिख देना जरूरी है। पाकिस्तानके उक्त तीनों ही मुकामों पर,लाहौर, पेशावर व कराचीमें,मैंने अक्सर यह शिकायत सुनी कि पाकिस्तानमें "भ्रष्टाचार' बहुत बढ़ता जा रहा है। कुछ पाकिस्तानी अखबारोंने इस पर टीका टिप्पणी भी की थी। अखबारोंमे चोरी–बदमाशी,लूट–खसोट आदि की खबरें ज्यादा मिलती हैं। तो इससे जाहिर होता है कि कायदे आजमका पाकिस्तानी 'बहिश्त' बड़े दलदलमें फसा हुआ है। यही कारण है कि भारतसे भागे हुए मुसलमान फिर धीरे धीरे लौट आना चाहते है। उधर जो सरकारी नौकर भारत सरकारका काम छोड़ कर गये है, वे अपनी मिट्टी किस्मत पर रो रहे है। भारतकी अपेक्षा तनख्वाहें कम मिल रही हैं और साथ ही खाने पीने की दिक्कतें ऊपरसे।

**लगभग८-१० दिनों तक कायदे आजमके 'बहिश्त' में चक्कर लगनेके बाद मैं भारत की सरहदमें वापस आ गया। सोचा,कलकत्ता लौटनेके पहले लखनऊके अपने पुराने दोस्तोंसे भेंट मुलाकात करता चलूं। लखनऊ पहुंचने पर स्टेशन पर ही**

मेरे पुराने दोस्त और उर्दके उड़न बाज शायर हैरत लखनवी मिल गये। उन्होंने बताया कि आज रातमें कैसरबागमें एक मुशायरा होनेवाला है। मैं इस मौकेसे लाभ उठाना भला क्यों न चाहता। सोचा कि एक ही जगह बहुतसे दोस्त मिल जायेंगे। मुशायरा शामके ७ बजे था। लेकिन मैं जान बूझ कर ८ बजे पहुंचा, ताकि जमी जमायी महफिलकी नजर अपनी खींचूं। और, वही हुआ। मुझे देखते ही लोगोंने बड़ी इज्जत के साथ बठाया और मैं लगा मुशायरे कामजालेने। यों तोतरहत रहकी नज्में सुनायी गयीं, जो काफी पसन्द की गयीं, लेकिन चिरागको हैरत साहबकी यह नज्म सबसे अधिक पसन्द आयी :—

पाके पाकिस्तान जिन्ना,
खुद तो खुश हैं बेहिसाब
हो रहा दोजखनुमा पर
आज उनका वह 'बहिश्त'

मुझसे भी कुछ सुनानेको कहा गया। अपनी नज्म सुनानेके लिये तैयार होकर ज्यों ही मैंने मुंह बाया, मेरी नींद खुल गयी। तब मुझे बेहद आश्चर्य हुआ अपने इस सपने पर और सपनेकी इस पाकिस्तान सैर पर। सोचता हूं, कब मौका मिले और पाकिस्तानकी सैर करूं।


अत्यधिक सस्ती कीमतों में

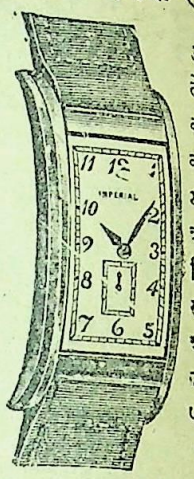

ऊंचे दर्जे की गैरंटी देने वाली,आधुनिक ढंग की घड़ियां। प्रत्येक की गारण्टी २ साल। गोल या चौकोर आकार में क्रोमियम केस १८), रोल्ड गोल्ड रियर २०), बेटरी सेंटर सेकंड २४) रोल्ड गोल्ड क्रोमियम केस ४०), जूबेल ६०) रोल्ड गोल्ड ५५), १५ जूएलकी ८० डाकखर्च माफ।

प्रेमशङ्कर एण्ड कं०
(V.C.) एशबाग, लखनऊ।

FIGURE WITHOUT LIFE

प्रशंसनीय रक्त परिष्कारक वृषि रक्तसे उत्पन्न होनेवाली सभी बीमारियोंको अचूक दवा तथा टानिक। सूजन, बात, गठिया चर्मरोग, दुर्बलता घाव,फोड़ा फुंसी, गांठोंकी सूजन जो रक्तकी कमी या दूषित रक्तसे उत्पन्न होता है

AMRITABALLI KASAYA
restores vitality & strength
KAVIRAJ N.N. SEN & Co. LTD CALCUTTA


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हैदराबाद बनाम भारत

श्री राघवेन्द्र

"अगर भारतीय सेनाने हैदराबाद पर आक्रमण किया, तो वह यहांके हिंदुओं की सिर्फ राख ही बटोरेगी।" यह बर्बरता – पूर्ण धमकी कासिम रिजवीने दी है, जो इत्तहादुल मुसलमीन का अध्यक्ष है इसका मतलब यह हुआ कि अगर भारत अपने शरीरका कोढ़ हैदराबादका निरंकुश शासन मिटानेके के लिये सशस्त्र कदम उठाता है तो सबसे पहले रियासतके निर्दोष हिन्दुओंको भारीसे भारी मूल्य चुकाना होगा। लेकिन यदि इस भयसे भारत सरकार तत्काल उचित कार्रवाई करनेमें विलम्ब करेगी, तो हैदराबादकी जनताके कष्टोंमें उत्तरोत्तर वृद्धि ही होगी। आज सभी यह स्वीकार करते ह कि यथा पूर्व समझौता करके भारत सरकारने हैदराबादको अपनी ताकत बढ़ानेका ही मौका दिया है। २९ नवम्बर १९४७ को यह समझौता हुआ। तबसे इन ६-७ महीनोंमें निजाम सरकारने युद्धकालीन ढंगसे अपनी तयारियां की हैं। रियासतमें कई नयी नयी सड़के बनायी गयी हैं। तार और टेलीफोनकी नयी लाइनें बैठायी गयी हैं जगह जगह फौजी अड्डे कायम किये गये हैं। नियमित सेनाकी संख्यामें भी सुनते हैं, बहुत अधिक वृद्धि की गयीहै। इसके अलावा रजाकार दलका जबर्दस्त संगठन किया गया है। इस प्रकार आवश्यकता पड़ने पर भारतीय फौजोंका सामना करने क लिए निजाम सरकार भलीभांति तयार है?

इस स्थल पर यह बता देना भी आवश्यक है कि संयुक्त राष्ट्र संघकी सुरक्षा परिषदमें काश्मीरका मामला पेश किये जाने पर विभिन्न राष्ट्रोंने जो रुख दिखाया, उससे भी निजाम और उसके समर्थकोंको बहुत बल मिला है। वे जान गये हैं कि यूरोपके साम्राज्यवादी राष्ट्र हृदयसे भारत का साथ नहीं दे सकते, बल्कि उल्टे हैदराबादकी ही मदद करेंगे, भले ही वह मदद भीतर ही भीतर हो। खास कर जहां तक ब्रिटेनका ताल्लुक है, यह बात छिपी नहीं है कि ब्रिटिश अधिकारी निजामसे बहुत सहानुभूति रखते हैं। निजामकी फौजोंका प्रधान सेनापति अंग्रेज है। निजामका वैधानिक सलाहकार सर वाल्टर मौंकटन अंग्रेज है, जो बार-बार लन्दन जाकर वैदेशिक आफिसके अधिकारियोंसे सलाह-मशविरा किया करता है। भारत सरकार और हैदराबादके बीच जबसे यह संघर्ष छिड़ा है, अर्थात् १५ अगस्त १९४७ के बादसे, मांकटन न मालूम कितनी बार लन्दन जा चुका---एक न एक बहाना बता कर।

### भारत सरकारका रुख

भारत सरकार इन बातोंसे अपरिचित नहीं है, फिर भी वह देर क्यों कर रही है? इसलिये कि व्यर्थकी खून खराबी न हो और हैदराबादका प्रश्न शांतिपूर्वक सुलझ जाय। इसीसे 'यथा पूर्व समझौते' के अनुसार गत फरवरीमें बोलारमसे भारतीय फौज हटा ली गयीं। लेकिन अब मालूम होता है कि ऐसा करके भारत सरकारने सरासर गलती की। क्योंकि हम देखते हैं कि भारतीय फौजोंके हटनेके बाद वहांकी हिन्दू जनता पर रजाकारों और निजामकी पुलिस फौजके अत्याचार उत्तरोत्तर बढ़ते ही गये हैं। एक सभ्य सरकार कोई भी समझौता करनेके बाद उसकी शर्तोंका पालन करने के लिये बाध्य है। लेकिन शर्तोंका पालन करनेकी जिम्मदारी दोनों ही पक्षों पर रहती है न कि सिर्फ एक पर ही। पिछले चन्द महीनोंकी घटनाओंकी जांच करने पर तुरत पता चल जायेगा कि निजाम सरकारकी ओरसे समझौतेकी शर्तोंकी सर्वथा उपेक्षा की गयी है। ऐसी हालतमें अगर भारत सरकार उक्त समझौतेको रद्द कर कोई कार्रवाई करती है तो निस्संदेह उसे समस्त देशका हार्दिक समर्थन प्राप्त होगा।

हालमें प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने कहा है कि हैदराबादके सम्बन्धमें भारत सरकार जिस नीतिसे काम ले रही है, उसकी कटु आलोचनाएं की जाती हैं। क्यों न की जाय। जिस रियासत की आबादीमें लगभग ८५ प्रतिशत हिन्दू हों,, वहां मुट्ठी भर मुसलमान उन पर मनमाना अत्याचार करते रहें! आखिर हैदराबादके हिन्दुओंको भारतकी स्वाधीनतासे अभी तक क्या लाभ मिला है? वे बड़ी व्यग्रतासे भारत सरकारके अगले कदमकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिये भारत सरकारको समझौतेकी चर्चामें और समय गंवानेकी गलती न करनी चाहिये। हैदराबादके मुस्लिम नेताओंने लायक-रिजवी कम्पनीने, समझौतेके प्रति जो रुख अब तक दिखाया है, उससे किसी को भी इस बातकी आशा नहीं रह गयी है कि हैदराबादकी समस्या शांतिपूर्वक सुलझ सकेगी। इसलिये भारतीय नेताओं को कोरे आदर्शवादसे काम न लेकर वास्तविकतासेकाम लेना चाहिये।

### रिजवीकी धमकी

अगर रिजवी हैदराबादके हिन्दुओंके कत्ले आमकी धमकी देता है, तो बेशक हम इसे कोरी 'गीदड़ भभकी' ही समझते हैं, क्योंकि रिजवी यह अच्छी तरह जानता है कि अगर हैदराबादके निर्दोष हिन्दुओंका रक्त बहाया गया, तो भारतके साढ़े चार करोड़ मुसलमानोंके हकमें यह बात अच्छी न होगी। संभव है, वह यह भी सोचता हो कि हैदराबादके इस भावी संघर्षकी आशंकासे भारतक मुसलमानोंमें भगदड़ मच जायेगी और इससे भारत सरकारक अधिकारी अस्तव्यस्ततामें पड़ जायेंगे। कुछ हद तक यह बात सही हो सकती है लेकिन अगर वैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी, तो इससे भारतकी अपक्षा पाकिस्तान और हैदराबादके अधिकारियोंको ही अधिक परशानी होगी। भारतसे भागे हुए मुसलमानोंको आश्रय देना उनके लिये कठिन हो जायगा। हम जानते हैं कि हैदराबादके खिलाफ सशस्त्र कार्रवाई करनके पूर्व भारत सरकार इस बातकी पूरी कोशिश करगी कि देशके अन्य भागों में मजहबी एकता कायम रहे। लेकिन अगर सत्यको प्रकट कर देना अपराध नहीं है तो यह भविष्यवाणी करत तनिक भी कोच नहीं हो सकता कि अगर भारत ररकारकी फौजी कार्रवाइयोंका, यदि वे कीगयीं बदला वहांके निर्दोष हिन्दुओंके क्तसे चुकाया जाने लगा, तो इसकी प्रतिक्रिया बड़ी भयंकर हो सकती है। नोआखाली काण्डके बाद बिहारमें जो कुछ हुआ, वह सर्व विदित है। इसलिये हमें आशा करनी चाहिये क हैदराबादका छोटा हिटलर रिजवी अतीतके इतिहाससे सबक लेकर ऐसी कोई कार्रवाई न करेगा, जिससे उन लोगोंको जिनका हित चिन्तन करनेका वह दावा करता है, पश्चात्ताप करना पड़े।

### काश्मीरका मोर्चा

कुछ लोगोंका खयाल है कि यदि भारतीय फौजें हैदराबाद पर आक्रमण कर देंगी, तो पाकस्तानी फौजें उधर काश्मीर के मोर्चे पर आक्रमणकारियोंको विशेष मदद देने लगेंगी। निस्संदेह फौजी दृष्टिकोणसे यह दलील असंगत नहीं है। लेकिन हमारा विश्वास है कि काश्मीरकी लड़ाई में अब प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होनेकी गुंजाइश नहीं है। इस बीच सारे काश्मीरके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेतृत्वमें काश्मीरी जनताने अपना संगठन इतना मजबूत बना लिया है कि आक्रमणकारियोंके हौसले पस्त होकर ही रहेंगे। फिर भी इतना तो निश्चित है कि हैदराबाद के मोर्चे पर भारतीय सेनाकी स्थिति कमजोर बनानेके लिये पाकिस्तान सरकार काश्मीरके मोर्चे पर अपने डैने फड़फड़ानेसे बाज न आयेगी, चाहे परिणाम जो भी हो।

निस्संदेह भारत सरकारके फौजी अधिकारी इन सारी परिस्थितियों पर गंभीरता पूर्वक विचार कर रहे हैं। क्योंकि सिद्धांतानुसार छोटेसे छोटे दुश्मनकी ताकत भी कम न समझनी चाहिये। लेकिन जो हो, भारत सरकार हैदराबाद के सम्बन्धमें अब बहुत कुछ निर्णयात्मक स्थिति पर पहुंच गयी है। सरहदी इलाकोंमें रजाकारों और निजामी पुलिस या फौजीके हमले होतों हैं, उनका जवाब देनेके लिये भारतीय पुलिस और फौजको आदेश देदिया गया है कि आक्रमणकारियोंका पीछा करनेके लिये यदि रियासतमें घुसना पड़े, तो वैसा भी किया जा सकता है। इस तरह भारत और हैदराबादके बीच युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी है। समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायणने सरहदी इलाकोंका निरीक्षण करनेके बाद एक वक्तव्यमें कहा है कि अब समय आ गया है कि भारत सरकार अपनी फौजी कार्रवाई शुरू करदे। उन्होंने यह भी कहा है कि हैदराबादके जो इलाके अपनेको भारतमें सम्मिलित करनेकी स्थिति में हैं उन्हें तुरत इसकी घोषणा करनी चाहिये और भारत सरकारको उन्हें स्वीकार करते जाना चाहिये। लेकिन हम नहीं समझते कि इस तरह तीतर बटेरकी लड़ाईका क्या अर्थ होगा। जब भारत सरकारको यह विश्वास हो गया कि निजाम सरकार शांतिपूर्वक भारतमें सम्मिलित होना स्वीकार न करेगी तो अब अधिक प्रतीक्षा और ढीली नीति खतरनाक साबित होगी। संतोषकी बात है कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने बड़ी दृढ़ता के साथ कहा है कि "हैदराबाद सिर्फ तभी स्वतन्त्र रह सकता है जब कि भारत खत्म हो जाय। इसके पहले नहीं।" लेकिन दूसरी ओर कासिम रिजवी दिल्लीके लाल किले पर निजामका आसफजाही झंडा फहरानेका स्वप्न देख रहा है। इसी कशम कशमें हैदराबादका प्रश्न पड़ा हुआ है। लेकिन अब भारत सरकारकी सहिष्णुता अपनी चरम सीमा पार कर गयी है। इसलिये यदि निजामने तुरत भारत सरकारके सामने घटने न टेक दिये तो हैदराबादको कठिन अग्निपरीक्षासे गुजरना होगा।

# जय संदेश

— श्री विराज

राजपूतलोग हल्दीघाटीकी लड़ाई हार चुके थे यद्यपि वह हार विजयसे भी अधिक शानदार थी, परन्तु उसके बाद राजपूत सैनिक बलोंका आश्रय लेनेको बाधित हो गये मुगलसेनाओंने सारे मेवाड़ की नाकाबन्दी कर रखी थी, परन्तु अरावलीकी पहाड़ियोंमें राणाप्रताप और उनकी सेनाएं गुरिल्ला युद्धमें संलग्न थीं शाही सेना लाख यत्न करके भी उनके साहसको नहीं तोड़ सकी थी। मौका मिलते ही वे लोग शाही चौकियोंपर हमला करके उन्हें लूट लेते थे और फिर अपने-अपने प्राणोंकी रक्षाके लिये पहाड़ियोंमें निकल जाते थे। शाही सेना खोजकर नाकाबन्दीको और कड़ा कर देती थी।

राजपूतोंकी कठिनाइयां दिनोंदिन बढ़ने लगी। जंगलोंमें उनका रसद पहुंचना असंभव हो गया। उनकी सैनिक टुकड़ियां छिन्न-भिन्न होने लगीं। कभी उदास न होनेवाले महाराणा प्रतापका मुखमंडल भी उदास हो चला। बनबिड़ाल द्वारा राजकुमारीके हाथसे घासकी रोटी छीन लिये जानेके बाद उसके क्षुधा-व्याकुल करुणको सुनकर उनका अरावलीकी शिलाओंके समान कठोर और विशाल हृदय भी तड़क चला था।

एक सरदारने कहा "महाराणा, ऐसे कितने दिन और बीतेंगे? लड़नेके लिये वे सिपाही भी शेष नहीं रहे। जो भी जाते हैं, वे वापस नहीं लौटते।"

दूसरेने कहा "अपना कष्ट तो जैसे-तैसे सह भी लें, पर असमर्थ और अबोध शिशुओंकी वेदना नहीं सही जाती।"

पर राणा प्रतापके पास अकबरी दरबारके पृथ्वीसिंहकी भेजी हुई चिट्ठी विद्यमान थी "जबसब राजपूतोंने सिर नवाकर और अपनी ललनाएं बादशाहको सौंपकर अपनी रजपूतीको कलंकित कर दिया है। अगर तू भी झुक गया तो राजपूती कीर्त्ती कहां आश्रय लेगी? क्या वह भी अकबरके चरणोंमें नहीं लोटने लगेगी?"

यह चिट्ठी ही महाराणा प्रतापको हर बार आत्म समर्पण करने से रोक देती थी। वह अपने कुछ विश्वस्त सहचरोंके साथ आज यहां, कल वहां भागते हुए अपनी नहीं, राजपूती शानकी रक्षा कर रहे थे जिसकी रक्षा पहलेसे भी सिसौदिया जौहरके द्वारा करते आये थे।

चित्तौड़की प्रजामें उस समय देशद्रोही नहीं थे, अन्यथा क्या राणा प्रताप अकबरकी तीन लाख सेनाके चंगुलसे तीन दिन भी बच पाता।

ज्यों-ज्यों स्थिति विषम होती जाती थी, त्यों-त्यों सरदारोंको राजपूती शानका मोह कम होता जा रहा था। वे राणाको समझाते "महाराणा, अगर किसी दिन विजयकी आशा हो तो यह सब कष्ट सहना उचित है। अब हम इने-गिने चार-छः आदमी अकबरकी विशाल सेनाको हरा सकेंगे, यह सोचना पागलपन है। फिर व्यर्थ ही इन स्त्री बच्चोंको भूखा मारनेका पाप क्या हमें न लगेगा? देशके लिए, विजयके लिये, स्त्री-बच्चों और अपना बलिदान करते हमें संकोच नहीं, पर सुनिश्चित पराजयके लिये, केवल मर जानेके लिये इन्हें भूखो मारना कहांतक उचित है महाराणा

महाराणा चुप रहते। परन्तु परिस्थिति और बारम्बारकी यह निराश मंत्रणा उन पर प्रभाव डालती जा रहीं थी।

उस दिन भी झोंपड़ियोंके पास पहाड़ी शिलाओंपर पेड़ोंकी छायामें प्रताप उनके सरदार बैठे थे। बरसात प्रारम्भ हो चुकी थी। सरदारोंकी मंत्रणासे प्रतापका मन शिथिल हो गया। अनिच्छाके साथ उन्होंने अकबरके पास संदेश भेजनेके लिये दूतको बुलावा भेजा। दूतसे सब बात समझाकर कह दी गयी। आत्मसमर्पणका संदेश था। शर्तें मांगी गयी थीं। अकबर युद्धसे इतना थक चुका था कि वह किसी भी शर्तपर राणाप्रतापके आत्म-समर्पणको स्वीकार कर लेता।

दूत उदास मुख और धीमी चालसे चल पड़ा।

राणाप्रताप और बाकी सरदार भी उठ खड़े हुए। सरदारोंके मुखपर एक संतोषका भाव था., पर महाराणाका मुख विषादसे काला पड़ रहा था।

खड़े होते-न-होते पुराने पहाड़ी जाते पहिननेसे पहले राणा चौंक उठे। सरदारोंने भी विस्मय और कौतूहलसे उनकी ओर देखा। जिस विशाल शिलापर प्रताप बैठते थे, उसके नीचेसे निकलकर एक किनारेपर खजूरका एक नवांकुर उभर आया था, जिसने राणाके पैरसे चुभकर उन्हें चौंका दिया था।

अगर और कोई समय होता तो इस चुभने पर महाराणाका ध्यान भी न जाता, पर इस समय उन्हें यह बहुत अधिक चुभा। इस शिलाके इतने पास यहां खजूरका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अंकुर कैसे ? अंकुर शिलाके नीचेसे ही आता दिखा पड़ता था।

राणाको क्या सूझी ? उन्होंने शिलाको हटानेका आदेश दिया। शिला बहुत भारी थी। महाराणा स्वयं भी जुट गये महाराणाके वे दिन वैसे ही थे– और कुछ परिश्रमके बाद वह शिला उलट दी गयी। आश्चर्य ! उस विशाल शिला के नीचे सीली जमीनमें उगकर उस खजूरके अंकुरने अपनी कोमल देहसे एक बहुत बड़ा जाल सा गुच्छा बना रखा था और अंतमें बड़ा लम्बा पथ लांघकर किनारे पर पहुंच कर ऊपर खुली हवामें निकल आया था।

राणा क्षणभर उसे अवाक् देखते रह गये। इतना छोटासा अंकुर ; इतनी विशाल शिला ! महाराणाकी श्रान्त आत्माने बल पाया। उनके मुखपर विस्मय और उल्लासकी रेखाएं उभर आयीं और उनकी आंखोंमें एक अद्भुत चमक भर आयी। राणाप्रतापका विरत्व मानों दिला पांकर उत्तेजित हो उठी। तभी सहसा बरसातकी ठंडी हवाके एक झोंकेने आकर सारे बनको झकझोरसा दिया।

दूतको लौटाओ, हम सन्धि न करेंगे ! राणाप्रतापके स्वरमें वैद्युतिक आवेश था 'पर महाराणा.....'

महाराणाकी आत्मा जाग उठी थी। अंगारोंपरसे राख उड़ चुकी थी। उनका स्वर तेजस्वी हो उठा "मेवाड़की वीरप्रसू भूमि हमें बार-बार संदेश दे रही है। देखते नहीं हो, यह कितना छोटासा अंकुर कितनी विशाल शिलाकी उपेक्षा करके ऊपर निकल आया है ? एक दिन यही विशाल खजूर बनकर इस शिलाको ठेलकर एक ओर कर देगा। चित्तौड़के किलेकी दीवारें आज हमपर हंस रही हैं। पृथ्वी मानों हमारी तुलना इस खजूरके तुच्छ अंकुरसे कर रही है। और यह भी अपने विजय-दर्पसे मत्त हमारा उपहास कर रहा। मेरे वीर सरदारो, क्या अकबर इस शिलासे भीतिक्षय है ? और क्या हम इस अंकुरसे भी तुच्छ हैं। दूतको लौटाओ"

"परन्तु महाराणा ऐसे कितना दिन..."

"क्या ये रा...तोंकी सी बातें हैं।" महाराणाके मुखसे मानो प्रचंड तेजधारा बहने लगी "ऐसे अब एक दिन भी नहीं बीतेगा। हम जो भी हैं, जितने भी हैं, आज ही युद्ध प्रारम्भ करेंगे। रितुहमारे अनुकूल आ गयी है।"

महाराणाकी वाणीसे उत्साह फूटा पड़ रहा था, जो निराशोंमें आशा और शत्रुओंमें वज्रका संचार करनेवाला था।

# भारतकी समस्याओंपर एक दृष्टि

श्री लुई फिशर

सुप्रसिद्ध अमेरिकन पत्रकार श्री लुई फिशरने अपनी पुस्तक– एक महान चुनौतीमें– भारतके सम्बन्धमें जो विचार प्रकट किये हैं, उसके कुछ महत्वपूर्ण अंश ये हैं :

वास्तवमें दोष शताब्दियोंकी दीर्घायु का है। शताब्दियां बीत जाती हैं किन्तु उनकी विचार-धाराएं, उनके राजनीतिक, और आर्थिक रूप तथा उनके नैतिक मान बादमें भी हमें परेशान करते रहते हैं। विज्ञानके द्वारा हमें इक्कीसवीं शताब्दीका भी पूर्वाभास हो गया है। विज्ञानके बाहुल्य और स्वास्थ्यका मार्ग प्रशस्त कर दिया है। इसीके द्वारा मानवको पृथ्वी की आकर्षण शक्ति और शून्यके बन्धनोंसे मुक्त होनेकी आशा है। किन्तु राजनीति अब भी उसी दकियानूसी कालमें फंसी है, जब न भापके इंजन थे न बिजली थी और न हवाई जहाज थे। राजनीति मध्य युगके पंकमें उलझी हुई है और उसने मानवके भय और अभावकी रस्सीमें जकड़ रखा है। राजनीतिज्ञ अब भी भौगोलिक राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और साम्राज्यन्तर्गत आधिपत्यके आधार पर शांति-संधियां करते हैं।

या तो राजनीति विज्ञानको ले बैठेगी या विज्ञान, जिसकी शक्तियों पर संगठित मानवका नियंत्रण है, भूमंडलकी धज्जियां उड़ा देगा।

जीवनके भारतीयोंको जो कुछ मिल सकता है और जो वास्तवमें मिल रहा है उन दोनोंके बीच इतना अखरनेवाला और उन्मादप्रेरक अन्तर है कि इसीसे भारतके नैराश्य, असन्तोष और क्षोभका पता चल जाता है। भारत भूमंडलका पंचमांश है। गत ५० वर्षोंमें एशियाकी जन-संख्या दुगुनी हो गयी है। आज एशिया जाग्रत अवस्थामें है। उसे स्वाधीनता, सुरक्षा, समृद्धि और गौरवकी चाह है। आर्थिक या राजनीतिक दृष्टिसे यह संसार उस समय तक निश्क्लेश नहीं हो सकता, जब तक एशिया और दूसरे भूखंडोंके खरबों जीव उस सुख सुविधामें हिस्सा नहीं लेते, जो उन्हें मनुष्य द्वारा खड़ी की गई पुरानी ढंगकी बाधाओंके हटते ही प्राप्त हो सकती है।

भारत की सभी समस्याएं ––राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक––भारत की करुण दरिद्रता और अवरुद्ध आर्थिक गतिकी काली पृष्ठभूमिमें ही समझी जा सकती हैं। उदाहरणार्थ, हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर भारतके व्यावसायिक पिछड़पनका विचित्र, किन्तु गहरा प्रभाव है।

भारतीय शहरोंमें रोजगार बहुत ही सीमित है जिसके फलस्वरूप सरकारी नौकरियां ही भारतीयोंका मुख्य व्यवसाय बन गया है।

भारतमें जिस किसीसे मैं मिला––इनमें भारतके वाइसराय, सर आर्चिबाल्ड केवल, अनेक सर्वोच्च अंग्रेज अधिकारी, जिन्ना, गांधी, कांग्रेसके मुसलमान राष्ट्रपति आजाद भी सम्मिलित हैं––सभीने इस बातकी पुष्टि की कि देहातमें हिंदुओं और मुसलमानोंके बीचमें संघर्ष नहीं के बराबर है, और भारतका ९० प्रतिशत भाग देहातोंमें है––हिन्दू-मुस्लिम समस्या मनुष्य द्वारा बनाई गयी एक शहरी समस्या है। इससे केवल यही पता लगता है कि शहरोंमें रोजगारकी कमी है।

जिन्नाने मुझे बताया कि भारतके ७५ प्रतिशत मुसलमान पहले हिन्दू थे, जिन्हें सैकड़ों साल हुए मुगल विजेताओंने मुसलमान बना लिया था। नेहरूने ऐसे मुसलमानोंकी संख्या ९५ प्रतिशत बतायी थी। कुछ भी हो, अधिकांश हिन्दुओं और मुसलमानोंका जातीय स्रोत एक ही है। रंग-रूप और भाषाकी दृष्टिसे एक बंगाली मुसलमान और बंगाली हिन्दूमें कोई अन्तर नहीं। जाति-शास्त्र की दृष्टिसे सोवियत् रूस, स्वीजरलैण्ड और संभवतः अमेरिकाकी अपेक्षा भी भारत कहीं अधिक एकजातीय है।

भारतीय जीवनमें धर्मको महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यद्यपि हिन्दू गायकी पूजा करते हैं और मुसलमान इसे खाते हैं, फिर भी देहातोंमें साम्प्रदायिक वैमनस्य नगण्य सा ही है। इसकी प्रधानता तो शहरोंमें ही दिखाई देती है। शहरोंमें हिन्दुओंके खान पान सम्बन्धी प्रतिबन्धोंके कारण और विवाहसे पहले और बादके रीति-रिवाजोंके फलस्वरूप उत्पन्न होनेवाला भेद-भाव आर्थिक प्रतिद्वंद्विताके कारण और भी बढ़ जाता है। यदि जीवनमें प्रवेश करनेवाले नवयुवकोंके सामने औद्योगिक नौकरियों वैकल्पिक सूची उपस्थित हो तो राजनीतिक स्थानोंके लिये प्रतियोगिता इतनी तीव्र न रह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# मानव-हृदय और कविता

श्री विन्देश्वरी प्रसाद श्रीवास्तव बी० ए० बी एल

प्रातःकालीन समीरने थपकियां दे देकर ब्रह्माको जगाया। विश्वपितान उठ कर देखा, एक बालिका खड़ी है।

'पिता'—बालिका बोल उठी।

ब्रह्माने सिर उठाया।

'मेरा स्थान पिता'—मीठी आवाज थी।

ब्रह्माने सिर उठाया और पूरबकी ओर देखा। बालिकाने भी ऊंचे-ऊंचे पहाड़ पास ही छोटीसी नदी, नदीमें कमल हिमाच्छादित शिखरों पर सूर्यकी किरणें। बालिका खिल उठी, परन्तु उसका प्रश्न अब भी जारी था। ब्रह्माने फूलोंकी ओर इशारा किया।

"फूल !" बालिका चौंक उठी, "मेरे सौन्दौर्यक कारण फूलोंकी श्री मन्द पड़ जायेगी पिता ! यह पाप मैं नहीं कर सकती।"

ब्रह्माने भी देखा, बात ठीक ही है। फिर उन्होंने सरिताकी ओर इशारा किया। बालिकाने उत्तर दिया – "छोटी नदी तो आप ही व्याकुल है पिता। व्याकुलताके मारे अपने आपको स्थिर नहीं रख सकती। मेरे जांनेसे तो वह और भी अस्थिर हो जायेगी।"

ब्रह्माने हंस कर हिमालयकी ओर देखा। बालिका भी मुस्करा पड़ी। उसने कहा—"जीवनकी छोटी सी अनुभूतिको भी तो यह अपने अन्दर नहीं रख सका। देखते नहा गंगाके पिता, यह नगराज के हृदयकी भावनाएं ही तो गल गल कर वह रही हैं।"

ब्रह्मा मौन थे। समय बीतता गाया। आदिम युगकी उस बालिकाको स्थान नहीं मिला। फिर भी प्रश्न जारी था। इस बार ब्रह्माने साहस कर कहा —"और वह हिमराशि ?"

"हां" सहम कर बालिका बोली, मैं कठोर भी तो हूं पिता। मेरी कठोरतासे तो यह और भी निष्ठुर बन जायेगा।"

"क्या ये किरणें भी नहीं ?" हताश होकर ब्रह्माने कहा।

"मेरी सुकुमारता नष्ट हो जायेगी। पिता !" बालिकाने स्थिर भावसे उत्तर दिया।

ब्रह्मा चुप थे। बालिका शांत थी। प्रश्न जारी था।। युग बीत गये। वाल्मीकि अपने आश्रममें सूर्यकोअर्घ्य दे रहे थे। पास ही क्रौंच मरा पड़ा था। शिकारी प्रसन्न था और मादा विलाप कर रही थी।

ब्रह्माके हृदयमें नई आशा उत्पन्न हुई।"उन्होंने बालिकाको सम्बोधन कर कहा–"वहां देख बेटी, एक मानवका हृदय उस फूलसे भी सुन्दर है, सरितासे भी चंचल, किरणों भी सुकुमार, पत्थरसे भी कठोर। हृदयकी अनुभूतियों फो छिपा भी सकता है और उसे प्रकट भी कर सकता है। वहां जा।""

ब्रह्माने नीचे देखा। बालिका चली गयी थी। इसी समय आदि कविने गाया– "मानिषाद.....मोहितम्।""

और युग युगसे आदिकविकी वही वाणी सुनाई पड़ रही है। कालिदासकी शकुन्तलाकी आवाज उसी मादा क्रौंचकी आवाज है, दान्त की 'ब्रिटिश' भी उसी प्रकार रोती है, होमरकी 'हेलेन' के हृदयमें भी वही व्याकुलता है, शेक्सपियरकी 'जुलियट' भी उसी वियोग दुखसे दुखी है, टाल्सटाय की 'अन्ना' भी उसी दुखसे बचनेके लियें दर दर की ठोकरें खाती है और कवि प्रसादजीकी आदिमानवी ( सतरूपा ) भी उसी दुखसे दुखी है।

इन सब कवियोंके हृदयमें अनुभूतियों का स्रोत उमड़ रहा था। प्रकृति के वाह्य आचरणको उन्होंने देखा। उसकी प्रतिक्रिया हुई और वह स्रोतके रूपमें फूट पड़ा। हृदयमें जो चीज सोई पड़ी थी, संसारिक आचरणने उसे जगा दिया। महाकविके हृदयमें क्या क्या छिपा रहता है, उसकी संगीतमयता कहां तक ध्वनित होती है और कहां तक मूकवेदना मात्र रहती है, यह हमें ज्ञात नहीं होता। उसके विचार वृक्षकी जड़ें हैं, जो शेषनागके सिर तक चली गयी है। उसकी वाचालता उच्च होती है और निस्तब्धता उससे भी अधिक गंभीर और उच्चतर। उसके हृदय-वीणाके तार से यही झंकृत होता है कि प्रकृतिमें अनक प्रकारके सौन्दर्य विद्यमान हैं और सहस्रों प्रकारके दिव्य भाव दिखायी देते हैं, उसकी महत्ताका विचार सहसा यह धारणा उत्पन्न करता है कि संसारको 'अकबर' की उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी 'तुलसी'की, हमें राजनीतिक मुक्ति नहीं चाहिये, स्वराज्य नहीं चाहिये। हमें तो एक 'तुलसी' चाहिये, जो हमें जीवनमुक्त बना सके।

कविताके लिये हमारी अनुभूतियां ही प्रधान हैं। एक ही फूल देखनेसे भिन्न भिन्न व्यक्तियोंके मनमें विभिन्न धारणाएंहोती है और वे भिन्न भिन्न प्रकारसे उसे प्रकट करते हैं। अतः हम देखते हैं कि कविताका यथार्थ कारण फूल न होकर हृदय है। फूल एक कोमल अंगुलीकी भांति है, जो हृदय वीणाके तारोंको झंकृत कर देता है और उससे स्वर फूट पड़ते हैं, जिस पर सांसारिक घटनाओंके घात प्रतिघात अपना अलग ही स्वर छेड़ते हैं। परन्तु हां, मानव और वादन-यन्त्रमें एक भेद भी है –पहला चेतन है और दूसरा जड़। एक बालक अथवा एक अशिक्षित मनुष्य बाजेके स्वर तालको न जानते हुए भी जब कोई बाजा बजको सुनता है तो दूर ही खड़ा-खड़ा अपने पांवकल एड़ीसे भूमि पर ताल देने लगता है। इसकी कारण उस स्वरमें सिद्धांतके प्रति, जो मनुष्ययें निहित है, अनुकूलता ह, जो मनुष्यको सहृदय बनाती है।

कविताका क्षेत्र व्यक्ति विशेष तक ही सीमित नहीं है और न उसे प्रकट करने का कौशल पद्य एवं ललित गद्य द्वारा ही सीमित ही सकता है। प्रत्येक व्यक्ति जो सुख अथवा दुख अनुभव करता है, कवि है। अपनी भावनाओंको वह शब्दोंका रूप भले ही न दे सका हो, परन्तु उसके हृदयमें जो अनुभूतियां आती हैं, वही उसे कवि बनानेके लिये काफी है। क्या एक भिखारी, जो अपने आंसुओं द्वारा पृथ्वीके वक्ष पर युग युगान्तरसे वेदना पूर्ण कविताएं लिख रहा है, कवि नहीं है ? उसमें और 'पन्त'में तो इतना ही अन्तर है कि 'पन्त' की वेदना हमारी वेदना हो गयी, उनकी अनुभूतियां हमारी अनुभूतियां बन गयीं और उस निरीहकी वेदना उसकी अनुभूति दुनियासे छिपी रहीं। दुनियांक लोग माने य न माने, परन्तु गलीकी गीली जमीन इस बातको जानती है कि वहां अंधकारमें कितनी ऐसी कविताए लिखी गयी हैं, जिनके प्रकाशमें आने पर 'ग्रे'की 'एलेजी' का भी महत्व कम हो जायेगा।

आखिर, यह प्रकृति भी तो किसी महामानवके हृदयकी छाया है। एक नन्हा-सा नादान बालक जब हंस देता है, उस समय सृष्टिका सारा सौन्दर्य उस बालक के नन्हेमें मुंहमे समा जाता है। नन्दजीने भी शायद श्रीकृष्णके मुंहमें सृष्टिकी वही झांकी देखी थी। आलोचकोंके हृदयमें उस हंसीका मोल चाहे कुछ भी हो, परन्तु कवितासे आनन्द उठानेवाले व्यक्तिके लिए वह 'टैगोर' की उर्वशीसे भी बहुमूल्य है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# 'हिन्दुस्तानी' की घोषणा

श्री भदन्त आनंद कौसल्यायन

जब तक हमारी मातृभूमिने १५ अगस्त सन् ४७ का दर्शन नहीं किया था, जब तक इस महान भूखण्डमें स्वतन्त्रताका सूर्य उदय नहीं हुआ था। तब तक हम यही समझते थे कि हमारे शासकोंकी भाषा तभी तक लदी है और लदी रह सकती है जब तक कि हमारी स्वतन्त्रताकी घोषणा नहीं हुई है। जिस दिन हम 'स्वतन्त्र' होंगे उस दिन हमारे ऊपर पड़ी हुई अनेक बेड़ियां के साथ विदेशी भाषाकी बेड़ी भी कट जायगी किन्तु स्वतन्त्रताकी घोषणाको हुए पूरा एक वर्ष होने को आया है और हम अपनी सरस्वतीको अभी तक स्वतन्त्र भारतके सिंहासन पर नहीं बिठा सके हैं।

यह सत्य है कि इधर आठ नौ महीनोंमें भाषाके प्रश्नको लेकर जब और जहां सीधे सादे वैज्ञानिक ढंग पर विचार हुआ है, तो देशके लगभग सभी विचारक इस एक ही परिणाम पर पहुंचे हैं कि देशकी राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरी यथा शीघ्र घोषित हो जानी चाहिये।

कांग्रेस-पार्टीकी बैठकमें इस प्रश्न पर विचार हुआ तो अधिकांश सदस्यों का यही मत था कि हिन्दी ही इस देशकी राष्ट्रभाषा है और देवनागरी ही राष्ट्रलिपि। युक्तप्रान्तीय सरकारने भी जब साम्प्रदायिक दृष्टिसे विचार न कर एकमात्र राष्ट्रीय दृष्टिसे विचार किया तो उसे यह स्पष्ट घोषणा कर देनी पड़ी कि युक्तप्रान्तकी राजभाषा हिन्दी है। युक्तप्रान्तके बाद बिहारके लिये तो हिन्दीका राजभाषा होना एक इतनी साफ और निश्चित बात थी कि वहांके प्रधान मन्त्रीके आश्वासन और स्वीकृतिके कारण बिहारकी व्यवस्थापिका सभाने इसकी घोषणा करना भी व्यर्थ समझा।

देशकी अनेक रियासतोंकी राजभाषा हिन्दी है ही, जहां नहीं थी वहां इधर निकट अतीतमें इसकी घोषणा हो गयी है और वे घोषणायें कार्यरूपमें भी परिणत हो रही हैं।

अलीगढ़ यूनिवर्सिटीमें भी हिन्दीकी अनिवार्य पढ़ाई आरम्भ हो गयी है।

विधान निर्माण परिषद्के सदस्य पण्डित बालकृष्ण शर्मा और सेठ गोविन्द दासजीसे ज्ञात हुआ है कि विधान परिषद्के २९४ सदस्योंमेंसे १५३ (७—ले०) सदस्योंने एक स्मृति पत्र पर हस्ताक्षर करके भारत सरकारसे अनुरोध किया है कि हिन्दीको देशकी राष्ट्रभाषा घोषित किया जाय। आपका कहना है कि, नेहरूजी तथा मौलना आजाद भी इस "मांगके औचित्य" को स्वीकार कर चुके हैं। इन और ऐसी ही दूसरी सभी बातोंसे यह प्रायः निश्चित ही लगता है कि निकट भविष्यमें —आगामी जुलाईमें—विधान परिषद्की जो बैठक होगी उसमें उसे हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने और देवनागरीके राष्ट्रलिपि होनेकी घोषणा कर ही देनी पड़ेगी।

किन्तु तस्वीरका दूसरा पहलू भी है और महत्वपूर्ण है। हम हिन्दीको राष्ट्रभाषा माननेवाले उसकी ओरसे उदासीन नहीं रह सकते।

हम सब इस बातको जानते हैं और मानते हैं कि उर्दू हिन्दीकी ही एक शैली है और हिन्दुस्तानी तो 'खराब उर्दू' का ही दूसरा नाम है। जहां तक अंग्रेजीको पदच्युत करनेका प्रश्न है हिन्दी, उर्दू हिन्दुस्तानी सभी एक साथ हैं और साथ रहना चाहिये। अखिल भारतीय पत्रकार संघकी काररवाई 'हिन्दुस्तानीमें लिखनेका प्रस्ताव पेश हुआ था तो हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानीवाले एक ओर थे और सभी अंग्रेजीवाले एक ओर। आखिर यह भाषाका प्रश्न केवल भाषाका ही प्रश्न नहीं है, अनेक लोगोंके सुरक्षित स्वार्थोंका प्रश्न है और बहुतसे लोगोंकी जीविकाका भी।

लेकिन इस समय विदेशी शासनके ध्वंसावशेषोंके रहते अंग्रेजीवाले जहां अपने लिये चिन्तित हैं वहां कुछ आश्वस्त भी हैं। उनकी नीति है जहां हिन्दी हिन्दुस्तानी का विवाद है वहां हिन्दीका साधन दे, हिन्दुस्तानीका साथ देना और जहां हिन्दुस्तानी और अंग्रेजीका विवाद हो वहां हिन्दुस्तानीका साथ न दे अंग्रेजीका साथ देना।

दुर्भाग्य है कि इधर मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे देशमान्य नेता उर्दूवालेसे हिन्दुस्तानीवाले और हिन्दुस्तानीवालेसे अब अंग्रेजीवाले हो चले हैं।

यह सही है कि जिस प्रकार कुछ हिन्दुस्तानी वाले अंग्रेजीकी ओटमें राष्ट्रभाषा हिन्दीकी जड़ काटने पर तुले हुए हैं उसी प्रकार कुछ अंग्रेजीवाले भी हिन्दुस्तानीकी ओटसे हिन्दी पर तीर चला रहे हैं, लेकिन तो भी कुछ ईमानदार हिन्दुस्तानीवाले भी हैं, जो सचमुच न हिन्दीको राष्ट्रभाषा मानते हैं, न उर्दूको राष्ट्रभाषा मानते हैं, किन्तु हिन्दुस्तानीको ही राष्ट्रभाषा मानते हैं।

इन महानुभावोंके साथ कठिनाई यह है कि इनका कुछ भी तय नहीं है और इसलिये यह किसी भी पकड़में आसानीसे नहीं आ सकते।

भाषाके बारेमें 'सर्वोदय' समाजका प्रस्ताव है कि उसकी भाषा हिन्दुस्तानी है किन्तु 'हिन्दुस्तानी' के ही दो आचार्य पं० सुन्दरलाल और काका कालेलकरका 'सर्वोदय' शब्दके ही हिन्दुस्तानी होने न होनेमें मतभेद है।

वर्धामें अनेक आचार्योंकी हिन्दुस्तानी आज भी सीधी-सादी हिन्दी है। हिन्दुस्तानी कहकर उसे बेकार हिन्दीवालोंके मनमें बदगुमानी पैदा की जाती है। गांधी सेवासंघ—जो सर्वोदय समाजका एक अंग है—का एक निमंत्रण इस प्रकार है—

"संघद्वारा आयोजित रचनात्मक कार्यकर्त्ता सम्मेलन शनिवार ता० १३ मार्च १९४८ से सोमवार ता० १५ मार्च १९४८ तक तीन दिन खादी विद्यालयसेवाग्राममें होगा। आप अवश्य आनेकी कृपा करें। सम्मेलनका प्रारंभ ता० १३ को दिनमें ठीक ढाई बजे होगा।"

कोई इन हिन्दुस्तानीवालोंसे पूछे कि इसमें क्या हिन्दुस्तानी है जो आप इसे हिन्दी न कहकर हिन्दुस्तानी कहते हैं। और कोई इन हिन्दीवालोंसे भी पूछे कि इस हिन्दुस्तानीमें खाक हिन्दुस्तानी है जो आप खामख्वाह इससे चिढ़ते हैं।

हमारा खयाल है कि हिन्दी उर्दूसे पृथक हिन्दुस्तानी शैली बनाने तथा चलानेका प्रयत्न सम्पूर्ण रूपसे विफल सिद्ध हुआ है। उत्तर भारतकी भाषा 'हिन्दुस्तानी' कही जाती थी, वहांकी लगभग सभी सरकारोंने —पूर्वी पंजाब, युक्तप्रान्त तथा बिहार तथा अनेक राज्योंने हिन्दीको राज्य-भाषा घोषित कर दिया है। दक्षिण भारतका "दक्खिनी हिन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भी कुछ दिन तक हिन्दुस्तानीमें निकलकर फिर हिन्दीमें निकलने लगा है। किन्तु 'दक्खिनी हिन्द' की हिन्दीका नाम हिन्दुस्तानी ही है। प्रश्न उठता है कि 'हिन्दुस्तानी' शब्दके साथ इतना मोह क्यों? मानव शास्त्रका एक मात्र उत्तर यही है कि हारनेसे हार मानना कठिन है।

भाषाके स्वरूपकी अपेक्षा दो लिपियोंकी अनिवार्यताका दुराग्रह अधिक स्पष्ट और कड़ा रहा, किन्तु इधर ज्यों-ज्यों देवनागरी का आग्रह बढ़ा है; त्यों-त्यों उधर हिन्दुस्तानीवालोंने भी अब अपने उभय लिपिवादकी व्याख्या आरम्भ कर दी है। काका कालेलकरका इधर जो वक्तव्य निकला है, उसमें उन्होंने देवनागरीको देशकीप्रधान लिपि स्वीकार किया है और उर्दूको दूसरे नंबरकी लिपि। हमारा निवेदन और आग्रह भी तो यही है कि देशकी प्रधान लिपि ही देशकी राष्ट्रलिपि है और वह सबको सीखनी चाहिये उसके अतिरिक्त फारसी आदि को जो चाहे सो सीखे। मद्रास हिन्दुस्तानी प्रचार सभाका मद्रास सरकारपर एकमात्र अधिकार है। उसकी रीति-नीतिसे असंतुष्ट हिन्दी-प्रेमियोंकी दक्षिणमें कमी नहीं। किन्तु वे असंगठित हैं। मद्रास हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके प्रयत्नसे मद्रास सरकारने स्कूलोंमें हिन्दुस्तानी सिखानेकी व्यवस्था की है। विज्ञप्तिमें लिखा है कि "उर्दू" और देवनागरी लिपियां सिखानेकी व्यवस्था रहेगी। विद्यार्थी इनमेंसे जो लिपि सीखना चाहेंगे सीख लेंगे।"

हमारा अनुमान है कि हिन्दुस्तानीवालोंने यदि आरम्भमें ही अधिक उत्साहसे काम न लिया होता और हर राष्ट्र-भाषा शिक्षार्थीके लिये दोनों लिपियोंके अनिवार्य ज्ञानकी आवश्यकतापर अनावश्यक जोर न दिया होता तो उन्हें न तो भारतव्यापी विरोधका सामना करना पड़ता और न यह भलाचंगा 'हिन्दुस्तानी' शब्द इतनी उपेक्षा और घृणाका पात्र बनता। नेहरूजी की 'हिन्दुस्तानी' शब्दसे घृणा तो पुरानी घृणा है।

जनताकी अनुकूलता-प्रतिकूलताकी दृष्टिसे हिन्दुस्तानीकी स्थिति बड़ी दयनीय है। जहां कोई हिन्दी-उर्दूका जानकार न हो वहीं इस समय 'हिन्दुस्तानी' के लिये कुछ गुंजाइश रह गई है। शेष सब जगहसे उसे अपना दामन समेटना पड़ रहा है।

इसलिये अब उसने पीछेके दरवाजेसे घुसनेके प्रयत्न आरम्भ किये हैं। और उन्हींकी ओरसे सावधान रहना हिन्दीवालोंका परम कर्तव्य ही नहीं हिन्दी और हिन्दीवालोंके जीवन-मरणका प्रश्न है।

हम जानना चाहते हैं कि विधान परिषद की कांग्रेस पार्टीने जब बहुमतसे यह निर्णय कर दिया कि हिन्दी तथा देवनागरी ही राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र लिपि है तो फिर अन्य सभी प्रश्नोंकी तरह कांग्रेसके सभी सदस्योंके लिये विधान परिषद्में अपना उक्त मत ही देना क्यों अनिवार्य नहीं ठहराया गया? मान लीजिये कि पार्टीके कुछ सदस्य अन्य पार्टियोंके सदस्योंके साथ मिलकर अपनी ही पार्टीके बहुमतके निर्णयोंको परास्त करनेमें सफल हो जाते हैं, तो इससे पार्टीके विनय (डिसिप्लिन) पर क्या प्रभाव पड़ेगा? ऐसी पार्टीको समझ लेना चाहिये कि वह अपनी जड़ें अपने आप खोद रही है।

कांग्रेसकी कार्यसमितिने अपनी कार्यवाहीके लिये 'हिन्दुस्तानी' को अपनाया है हम जानना चाहते हैं कि क्या हमारी कांग्रेस की कार्य समितिकी कारवाई अभी भी अंग्रेजीमें ही होती रहेगी और यदि वह अंग्रेजीमें होती रहेगी तो क्या वह अंग्रजी में ही लिखी भी जाती रहेगी। यदि वह हिन्दुस्तानीमें लिखी जायगी तो कार्यसमिति राष्ट्रलिपिके प्रश्नपर चुप्पी साधे रहकर अधिक दिनोंतक समस्त देशको उल्लू नहीं बनाये रख सकती। उसे आज या कल भारतकी राष्ट्रलिपि देवनागरी अपनानी होगी और उसकी घोषणा भी करनी ही होगी।

हमारी अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीने भी अपने बम्बईके अधिवेशनमें राष्ट्रभाषाके प्रश्नको स्थगित रखना ही उचित समझा। अनेक दूसरे प्रश्नोंपर कांग्रेस कमेटीके इस अधिवेशनने विचार किया है केवल राष्ट्र-भाषाके प्रश्नको स्थगित रखना ही उचित समझा। अनेक दूसरे प्रश्नोंपर कांग्रेस कमेटीके इस अधिवेशनने विचार किया है, केवल राष्ट्रभाषाके प्रश्न पर ही चुप्पी क्यों। उत्तर स्पष्ट है, जिस प्रकार हमारी कांग्रेसके कार्य समितिके सदस्योंने बिना अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीकी राय लिए पाकिस्तानके प्रश्नपर अपना निर्णय दे दिया था और उसके बाद अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीको उस दबावकी परिस्थितिमें निर्णय पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगानी पड़ी थी वही स्थिति भाषाके प्रश्नको लेकर फिर पैदा हो जा सकती थी। किसी देशकी राष्ट्रभाषाका प्रश्न 'पाकिस्तान' और इंडिया डोमिनियनके बंटवारेके प्रश्नसे कम महत्वका न हीं है।

हम पूछते हैं राष्ट्रभाषाके प्रश्नको लेकर यह धांधली कबतक, यह खिलवाड़ कबतक? क्या विधान परिषद् भी इस विषयमें कुछ निर्णय न करेगी?

देशकी परिस्थिति ऐसी ही है कि यदि हिन्दीवाले सोते ही रह गये तो विधान परिषद् कुछ ऐसी बड़ी गलती भी कर सकती है कि सारे राष्ट्रको न जाने कबतक पछताते रहना पड़े और हमारी भावी पीढ़ियां हमारा नाम कभी भी आदरके साथ न ले सकें।


१६॥) में ज्वेल वाली रिस्ट वाच

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारन्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
रेक्टेंगुलर कर्व या टोनो शेप क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पेस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।

एच० बेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक मनोरंजक लेख

# रईसोंके चोंचले

—श्री मधुसूदनप्रसाद मिश्र 'मधुर'

वैभवशालियोंके वैभवकी अपेक्षा उनके चोंचले अधिक आकर्षक होते हैं। जब हम मित्रोंकी मण्डलीमें बैठकर कभी किसी कमलावाहनकी कथा सुननेका अवसर पाते हैं, तो पूरा मनोविनोद हो जाता है। ऐसे प्रसंगसे केवल मनोविनोद ही होता हो, यह बात नहीं। स्वादके अतिरिक्त शिक्षा भी अच्छी प्राप्त हो जाती है। पाठकोंमें जो सज्जन वैभवशाली हों, वे बुरा न मानें। इस विश्वासके साथ कि वे इन चोंचलोंसे मुक्त होंगे, मैं कुछ लिखनेका साहस करता हूं।

वैभवकी मदिरामें ये चोंचले मस्तीका काम करते हैं। नशेके झोंकमें बड़बड़ानेवालेको देखकर जिस प्रकार हंसी आ ही जाती है उसी प्रकार इन चोंचलेबाजोंकी एक-एक बात बरबस हंसा देती है।

बात बिहार प्रान्तकी है। एक बाबू साहबकी आंखमें आंधीके कारण किरकिरी पड़ गयी। आंधी कम होने पर बड़ी कठिनतासे किसी प्रकार किरकिरी निकाली गयी। पर धन्यवाद देनेके बदले आप उलटे अपने उन सेवकों पर ही फट पड़े—"सब मूर्ख हैं, केवल थाली पर जुटनेवाले! आंधी आ रही है, इसकी किसीने सूचना तक न दी। क्या कहा जाय इन गधोंको, जिनकी मोटी बुद्धिमें इतनी-सी बात भी नहीं आयी कि आंधी आ पहुंची है, इसलिये स्वामीको हम सावधान तो कर दें! आखिर तुम इतने मेरे साथ-साथ रहते किसलिये हो? अबसे कभी आंधी आयी और सावधान नहीं किया तो स्मरण रहे, तुम्हारा कुशल नहीं।"

तबसे सबको बराबर आकाशकी गतिविधि पर नजर रखनी पड़ती। तनिक भी आशंकाके लक्षण रहने पर बाबू साहब झटके तहखानेमें बन्द! ऐसे समय कभी-कभी अनोखी बातें भी बाबू साहबके निकट तक पहुंचतीं। उनके सच्चे कहे जानेवाले सेवकोंकी ओरसे बड़ी गम्भीरताके साथ यह भी सूचित किया जाता कि इस बार आंधीने बखारके छप्परको उड़ाकर बहुतसा अन्न भी उड़ा दिया है। अपनी इस बातकी पुष्टिके लिये वे छप्परको जमीन पर उलट देते और कुछ अन्नके दानोंको भी इधर उधर बिखरा देते थे। किन्तु वास्तवमें न आंधी आती और न छप्पर ही सड़ता। जरा तेज हवाके बहने पर ही यह एक 'तैयार किया हुआ नाटक था', जो बड़ी आसानीसे खेल दिया जाता था, जिसका परिणाम उन सच्चे कहे जानेवाले सेवकोंके घरोंमें बखारके संचित अन्नोंका पहुंच जाना होता। लेकिन बाबू साहब अपने सेवकोंकी उनकी इस तत्परताके लिये हृदयसे माना करते थे।

एक अन्य सज्जन, जो अब इस संसारसे विदा ले चुके हैं, एक दूसरी ही विशेषताके कारण प्रसिद्ध थे। उनके खजांजी, दीवान आदि कर्मचारी परस्पर सांट-गांठ करके जब उनके निकट यह प्रस्ताव लेकर पहुंचते कि खजानेके रुपये पड़े-पड़े सड़ रहे हैं, उन्हें सुखाने, साफ करने और छांटनेकी आवश्यकता है, तो सबसे पहले उनकी हितैषिता और तत्परता पर बाबू साहब अपनी कृतज्ञता प्रकट करते। प्रस्ताव तुरन्त स्वीकृत किया जाता। इस सम्बन्धकी कुल तैयारियां झट पूरी की जातीं। दरबारमें इस गुरुकार्यकी ही प्रायः आलोचना चला करती। खजानेके कुछ काले-काले सिक्के दिखला दिये जाते, जिन्हें साफ करना होता। पांच-सात दिनोंके बाद पुनः यह सूचित किया जाता कि इतने लाख मे इतने सौ या हजार रुपये सुखाने, साफ करने एवं छांटनेमें कम हो गये। बाबू साहब कुछ ऐसा भाव प्रकट करते, "अनाज या साग-सब्जीको भी तो कीड़े पड़कर दूषित कर डालते हैं! यदि इतने रुपयेमें कुछ नष्ट ही हुए तो क्या हुआ! शेष तो बचे रह जायेंगे। सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः। जो कुछ हुआ, स्वाभाविक ही हुआ। तुम्हें आश्चर्य या चिन्ता नहीं करनी चाहिये।"

पर रुपयोंकी सुखाई करनेवाले उन सेवकों पर, इस रहस्यसे स्वामीके परिचित रहनेकी बात, कहीं तब जाकर खुली, जब कि वे संसारसे विदा ले रहे थे। मरते समय आपने अपने सभी कर्मचारियोंको बुलाकर यह समझा दिया था कि "लड़कोंके आगे सावधानीसे काम करना होगा। वे कालेजों में रहकर और अंग्रेजोंसे मिल जुल कर ढीठ बन गये हैं। शहरोंकी हवाने इन्हें नास्तिक भी बना दिया है। इसलिये रुपयों की सुखाईमें कमी पड़ने पर सारे पुराने सम्बन्धोंको भुलाकर जेल तक भिजवा देनेमें कभी न चूकेंगे। मेरी बात कुछ और थी। लड़के नयी रोशनीमें पले हैं।" सम्भवतः अपने जीवनकालमें उन्हें इस प्रकार की चोंचलेबाजीमें एक अनिर्वचनीय इसका अनुभव होता हो।

काशीका 'बुढ़वा मंगल' कितना प्रसिद्ध था कहनेकी आवश्यकता नहीं। एक बार इसी अवसर पर बेतियाके बूढ़े महाराज (अन्तिम महाराजके स्वर्गीय पिता) को मजाकमें नीचा दिखानेकी दृष्टि से तत्कालीन काशी नरेशने काशीके दूकानदारोंको मनाकर दिया कि बेतिया महाराजके आदमियोंको अबीर न मिलने पाये। काशीके चतुर अबीरविक्रेता अपने कौशल द्वारा तुरत पता लगा लेते कि यह अबीर बेतियाके महाराजके लिये चाहिये। पता लगते ही अस्वीकार कर देते। बेतियावाले हैरान थे कि बात क्या है। समय थोड़ा था। बेतिया-नरेश दूसरे स्थान से भी नहीं मंगा सकते थे। निर्धारित समय आ गया। दोनों नरेशोंके बजड़ों पर अबीरकी आंधीसी आनेवाली थी, किन्तु ठीक समय के कुछ पूर्व तक जब अबीर नहीं मिल सका सो बेतियाके महाराज ने अपने आदमियोंको यह आदेश दिया कि अपनी ओरसे अबीर उड़ानेके बदले रुपये ही लुटाये जायं। आदेश का पालन होने लगा। काशी-नरेशने यह देख कर शीघ्र ही अपने बजड़ेके उनके बजड़ेके पास ले जाने की आज्ञा दी। मिलने पर कुछ मीठी मीठी चटकी लेने के बाद उनके इस झटको दूर कराने में समर्थ हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चम्पारनके एक व्यक्तिको मैं जानता हूं, जिन्हें भोजनके समय नित्य दो सेर चावल का भात परोसा जाता। ऊपरसे अलग अलग कटोरियोंमें विविध व्यंजन! देखने वाला यही अनुभव करता कि अन्नकूटकी तैयारी है या इसी तरहकी और कोई बात है। जिन चावलोंसे वह भात तयार होता उन्हें लोग थालीका चावल कहते। वह वह चावल केवल उस सज्जनके लिये ही बनता। भोजन करते समय आप कठिनतासे ३से ४ छटांक तकका भात खाते थे। जो बचा रह जाता उसे सेवक उठा ले जाते। जब तक आप जीतते रहे यह नियम अबाध गतिसे चलता रहा। ऋणकी खाईमें चोटी तक डूबे रहने पर भी कभी आपने इस नियममें शिथिलता नहीं आने दी।

बस्ती जिलेके एक ठाकुर साहबके पास एक कुत्ता था, जिसे वे बहुत प्यार करते थे। सुना है, अपने निकटतम व्यक्तियों को (यहां तक कि) अपने कुटम्बके लोगों तकको समय आने पर वे छोड़ सकते थे, किन्तु उस कुत्तेको नहीं। वह उनका स्नेही हितैषी, सखा, सुत, एक साथ ही सब कुछ था। ठाकुर साहबसे जिसे कुछ काम निकालना होता, उस कुत्ते की प्रशंसामें कुछ कोमल कान्त पदावलियोंका प्रयोग करके ही अपना मतलब पूरा कर लेता। जीवनमें उसे सब वस्तुएं सुलभ थीं, जिन्हें किसी रईसका लड़का बेटा पा सकता है। ठाकुरसाहब उस कुत्तेके निकट रहते हुए आत्मविस्मृत हो जाते।

दुर्भाग्यवश एक दिन अचानक उस कुत्तेकी मृत्यु हो गयी। ठाकुर साहबका तो यह हाल था जैसे उनका सगा बेटा ही मर गया हो। लोग उनकी इस कुक्कुरप्रियता अथवा दुर्बलतासे परिचित थे, अतः बनावटी समवेदना प्रकट करनेके लिये आने लगे। ठाकुर साहब रो-रोकरसब हाल सुनाते। अन्त्येष्ठि स्वयं ही की थी। जम कर ठाट बाटसे श्राद्ध करनेकी तैयारी होने लगी। दसवें ग्यारहवें और बारहवें दिन ठाकुर साहब ने रोते रोते पिण्डदान दिया। ब्राह्मण खिलाये गये। आस-पासके लोग बड़े प्रायः सब निमन्त्रित थे। लोग भोज भी खाते जाते और ठाकुर साहबकी इस मूर्खता का आनन्द भी लेते जाते थे।


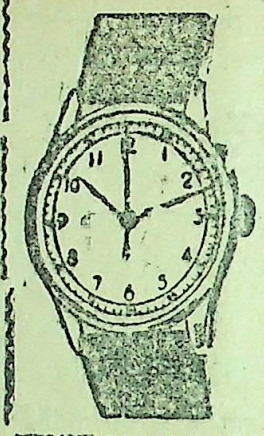

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage As. 12. Free to 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

# प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थ स्त्री हूं। विवाहके एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं सिलकोरिया, (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्मके दुष्ट रोगोंमें फंस गई थी। मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्दके साथ, जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिकजानेकेकारण मैंप्रतिदिनकमजोर होती जा रही थी, चेहरेका रंग पीला पड़ गया था, घर के काम काम से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेवने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराई, परन्तु किसी से रत्तीभर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य सेएकसन्यासीमहाराजहमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है जो इस आयुमें ही चेहरेका रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पतिको अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिनके सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगोंका नाश हो गया। ईश्वर की कृपासे अब मैं कई बच्चोंकी मां हूं। मैंने इस नुस्खेसे अपनी सैकड़ों बहनोंको अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधिको अपनी दुःखी बहनोंकी भलाईके लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वरने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहनके लिये १५ दिनकीऔषधि तैयार करने पर २।।।=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोगमें फंस गई होतो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथसे औषधि बना कर बी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यहमेराप्रण है कि मैं किसी बहन से दवा की कीमत अपनी असल लागतसे एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों को इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है इस लिये कोई बहन मुझे किसी और रोगकी दवाईके लिये न लिखें।

प्रेम-प्यारी अग्रवाल नं० ५१ बुडलाडा जि० हिसार, पंजाब।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# खादी और कला

## आचार्य मश्रूवाला

नीचेका सवाल पूछा गया है—

"क्या एक पूरा-पूरा खादी पहननेवाला तरुण अपने कालेजके नाटक और नाचके जलसेमें हिस्सा लेनेके वास्ते मिलके कपड़ोंका उपयोग नहीं कर सकता ?

वह बरसातके दिनोंमें रेनकोट (बरसाती कोट) का इस्तेमाल करता ही है। मिलकी मसहरी तो बहुत-से खादीधारी लगाते ही हैं। छाता आदि भी मिलके कपड़ेके ही बने हुए होते हैं। तब कलाके उठावके लिये प्रसंग के अनुकूल मिलमें बने हुए कपड़े पहनने तथा रंग-भूमिकी शोभा बढ़ानेमें क्या हर्ज है।

खादीका आग्रह क्यों है और उसका भारतके जीवनमें क्या स्थान है, इस विषयमें हमारे विचार साफ हो गये हों तो ऐसे सवालोंका उत्तर मनुष्य आप ही आप पा सकता है। जब बर्तावके किसी नियमका हम उसके प्रयोजन को न समझकर सिर्फ स्थूल रूपमें गुरुआज्ञा या कुल-परंपरागत रूढ़िके रूपमें पालन करते हैं तब हमारे दिलका झुकाव इस तरहका हो जाता है कि उस नियमका जितना कमसे-कम पालन करनेसे चलाया जा सके, उतना ही करें। उसे सदा ढीला बनानेकी कोशिश की जाती है।

किसी गुरुने अपने शिष्योंको आदेश दिया कि एकादशीके दिन उपवास रखो। अपनी ग्यारहों इंद्रियोंको अपनी-अपनी खुराक छोड़कर उस दिन भगवानके ध्यानमें लगा दो। अगरचे यह सत्य है कि पन्द्रह दिनोंमें एक रोज इस तरह करनेसे विषयोंका रस तो छूट नहीं जाता; वह तो भगवानके ज्ञानसे ही छूटता है फिर भी साधकके लिये अच्छा है कि हर पन्द्रह दिन एक बार इस तरहका श्रद्धापूर्वक प्रयत्न करें।

शिष्योंने गुरुकी आज्ञाके पीछे बताई हुई विचार-धारा तो छोड़ दी, इतना ही पकड़े लिया कि गुरुकी आज्ञा है कि एकादशीका व्रत रखा जाय, उस दिन उपवास किया जाय। इन्द्रियोंको भगवानमें लगाना, यह तो जो सके, करे। गुरुने कहा है कि इस एक दिनके उपवाससे विषयका रस छूट ही जायगा, ऐसी बात तो नहीं। और भगमें मन और इन्द्रियोंको लगाना उसका रस मालूम हुए बिना होनेवाली चीज नहीं। तब उपवास रखना इतना ही व्रत ही जाता है। जब व्रतका अर्थ इतना घटा दिया गया तब सवाल खड़े हुए। उपवासको कितनी हदतक रखना जरूरी माना जाय ? क्या छोटे बच्चे भी रखें ? बूढ़े, बीमार, गर्भवती स्त्रियां, छोटे बच्चेवाली मां भी पूरा उपवास करें ? और जो दिलसे ऐसे कमजोर हैं कि बिलकुल भूखे रहनेसे बेचैन हो जाते हैं, वे किस तरह व्रतका पालन करें। तब गुरुके बड़े-बड़े शिष्य रास्ते निकालने लगे। उन्होंने सुझाया, धर्मव्रतकी सब आज्ञाओंके पीछे एक शब्द हमेशा अध्याहार रहा मान लेना चाहिये। वह है 'यथाशक्ति' जो सोलह आने व्रत नहीं कर सकता, वह अपनी शक्तिभर करे। यानी जो अन्न और जल दोनों नहीं छोड़ सकता, वह सिर्फ अन्न छोड़े। जो पूरा खाना छोड़ नहीं सकता, वह दूध खाय, फलाहार करे, या कंद-मूल खाय, चावल खानेवाला एक दिन चावलकी जगह गेहूं खाय, गेहूं खानेवाला मूंगफली, साबूदाना आदि चीजें खाये, वगैरा, वगैरा, लेकिन व्रत जरूर करें। अब क्या कहना था ? धीरे-धीरे उपवासमें बीसों चीजें खानेयोग्य बन गईं। पूड़ी, साबूदानेकी खीर, लौकीका हलुवा, कंद-मूलोंकी तरह-तरहकी चीजें, दूधकी तरह-तरहकी मिठाईका 'फलाहार' खाकर 'उपवास' रखनेका रास्ता खुला हो गया।

गुजरातके कई वैश्य परिवारोंमें ऐसा नियम है कि उनकी स्त्रियां विवाहके दिन पहनी हुई हाथी-दांतकी चूड़ियोंके अलावा फिर कभी दांतकी चूड़ियां बनवाकर नहीं पहनतीं। किसी गुरुने हाथीदांतमेंरही हिंसाको नजर रखकर ऐसी रोक लगाई होगी। लेकिन अपनी ही जातिकी दूसरी स्त्रियां हाथीदांतकी सुन्दर-सुन्दर चूड़ियां पहनें और ये बेचारी न पहन सकें, यह तो बड़ी आफत मालूम हुई। तब ऐसे घरानेमें लड़की देनेवाले मां-बापने रास्ता निकाला कि, विवाहके दिन कन्याके के हाथोंमें हाथीदांतकी इतनी चूड़ियां पहनाई जायें कि वे जन्मभर उसके काम आवें।

इस तरह व्रतके रूपमें लिये हुए नियमोंको मजाक हो जाता है। अगर हम खादीका इस तरह गांधीसम्प्रदाय या अपने कुल-धर्मके चिह्नके रूपमें ही समझ कर स्वीकार करेंगे, तो उसका भी यही हाल हो सकता है।

तब हम समझ लें कि खादीका आग्रह किसी सम्प्रदाय, धर्म या कुलकी रूढ़िके तौरपर नहीं, वह हमारे देशकी आर्थिक समस्याके एक हलके रूपमें सोचा गया है। लेकिन आर्थिक पहलूके साथ ही इसका एक नतिक बाजू भी है, जिसकी वजहसे यह हल कुछ गैरमामूली और अटपटा मालूम होता है। और मानों एक साम्प्रदायिक आग्रह सा दीख पड़ता है।

यह तो एक प्रसिद्धि बात है कि दुनियामें अर्थशास्त्रियोंमें दो तरहके लोग हैं। एक वे हैं, जो आर्थिक प्रश्नोंको सोचते समय उन्हें राजकीय, सामाजिक व नतिक बाजुओंसे अलग करके सिर्फ आर्थिक दृष्टिसे ही सोचते हैं। और उसी दृष्टिसे हल बताते हैं। वे कहते हैं कि दूसरे पहलुओं को उस विषय के जानकार सोचें और जो करना चाहें सो करें। हमारा कार्य केवल आर्थिक लाभ बढ़ानेका है, अच्छे-से-अच्छे तरीके बनानेके हैं।

दूसरे वे हैं जो उसके राजकीय, सामाजिक व नैतिक पहलुओंको नजरके सामने रखकर ही आर्थिक प्रश्नोंका हल खोजते हैं। खादीवादी अर्थशास्त्रियोंको इस शाखामें रखा जा सकता है। राजकीय सामाजिक, नतिक आदि पहलुओंके साथ देशकी आर्थिक बातोंका विचार करते हुए वे नीचे लिखे नतीजेपर पहुंचे हैं।

हिन्दुस्तानके जैसा एक देश, जो बहुत बड़ा है, जिसकी आबादी बहुत ही ज्यादा है और जिसमें तरह-तरहकी श्रेणीके लोग रहते हैं, ऐसे देशकी राज नैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने और स्थायी रखनेके लिये और उस आजादीका फायदा कोने-कोनेतक पहुंचानेके लिये और उसकी सामाजिक तथा आर्थिक दशा सुधारने तथा उसके सब लोगोंमें ज्यादासे ज्यादा समानता लानेके लिये और जिन कारणोंसे देश-देश और जाति-जातिके बीच लड़ाई-झगड़े पैदा होते हैं उन्हें जितना हो दूर कर सकें उतना दूर करनेके लिये यह जरूरी है कि (१) कम-से-कम खुराक, पानी और कपड़ा इन तीन बातोंमें देशका छोटेसे छोटा स्वाभाविक क्षेत्र बल्कि यथासंभव हर एक बड़ा कबीला भी स्वयं पूर्ण बने; यानी अपनी जरूरतें अपने आप पूरा करनेवाला बने और (२) जहांतक हो सके। उद्योग धंधेके कारखाने और कारोबार छोटे पैमानेके हों और देश भर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



फैले हुए हों, न कि कुछ स्थानों में जमे हुए, बहुत बड़े धंधे और कारखाने कमसे कम हों, और वे इसी तरह चलाये जायं, जिससे कि उसी प्रकारके छोटे उद्योग धंधों को वे गिरानेवाले साबित न हों।

अब सोचने की बात यह है कि या तो इन खादीवादी अर्थशास्त्रियोंके विचार ठीक हैं, अथवा वह गलत हैं अथवा कुछ ठीक हैं, कुछ गलत भी।

अगर वह ठीक है तो साफ है कि लोगों की कपड़े की जरूरत खादी से ही पूरी की जानी चाहिये, और इस क्षेत्रमें मिलोंका चलाया जाना बंद हो जाना चाहिये।

लेकिन क्योंकि मिलें तो हैं, और दूसरे विचारके अर्थशास्त्री और लोगों का भी बहुत बड़ा हिस्सा उनका होना ठीक समझता है इसलिये आज हमारी नजरके सामने खादी भी आती है और मिलके कपड़े भी आते हैं, और फिर जैसी ऊपर बताई हुई स्त्रियों के आगे दांत की चड़ियों की लालच खड़ी होती है, वैसी हमारे जवानोंके सामने मिल के आकर्षक कपड़ोंकी लालच खड़ी होती है। बहुत अन्दरका मन कहता है कि अरे भाई रोज नहीं तो नहीं सही वहीं कभी कभी दो घंटेके नाटक-नाचके लिये तो वह बढ़िया वस्त्र पहन ले। उसमें कला कितनी अच्छी खुल उठती है! खादीमें तो वह सारी बेढ़ंगी हो जाती है!" उसकी बात सुन कर दिमाग सोचता है कि खादी-धारी भी कहला सके और मन की मांग पूरी करने का कोई रास्ता भी निकाला जा सके तो अच्छा, ठीक उसी तरह, जो एकादशी का व्रत छोड़ना भी नहीं चाहता और भूखका अनुभव और खाने पीनेका परहेज भी नहीं करना चाहता।

हमें ठीक सोच लेना चाहिये कि किस क्षेत्रमें और परिस्थितियोंमें हम मिलके कपड़ेका उपयोग कर सकते हैं।

एकादशीके व्रतमें दिलाई करनेकी कितनी गुंजाइश है, यह प्रश्न जिसने निकाला, उसने तंदुरुस्त आदमीके लिये वह बात नहीं निकाली। बच्चे, बीमार, बूढ़, गर्भवती स्त्रियां, दूध पिलानेवाली माताएं आदि अस्वस्थ लोगोंके नाम से निकाली और उसमें कुछ चीजोंके लिये परवाना पा लिया फिर देखा कि उन चीजोंके जरिये खाद्य-शास्त्र की तरह तरहकी चीजें बनाई जा सकती हैं और पाककला दिखाई जा सकती है, तब तंदुरुस्ती-नातुरुस्ती का भेद हट गया और सबके लिये मार्ग खुला और वहां पर भी पाकशास्त्रकी कलाकी तरक्की आ गयी

क्योंकि आज मिल का कपड़ा मिल सकता है, इसलिये आपत्तिके समय मिलके कपड़का उपयोग कोई खादीधारी कर ले तो उस पर दोष लगाया नहीं जा सकता। उदाहरणार्थ, जो लाखों लोग अपना घर बार छोड़ और असबाब खोकर दूसरे प्रान्तों में गये हैं, उनमें अगर कोई खादीधारी भी हो और उसे मिलका कपड़ा पहनना या बगैर कपड़ेके रहना—इसीके बीच पसंदगी करने की हो तो उसका मिलका कपड़ा पहनना गैर न होगा। शौक करने या शोभा बढ़ानेके लिये वह मिलका कपड़ा पसंद नहीं कर रहा है। लेकिन, जितनी ही जल्दी हो सके वह खादी पानेकी कोशिश करेगा।

फिर, बरसाती कोट, छाता, मसहरी आदि की बात सोचें। ये चीजें शौकके लिये नहीं; रोजमर्राके उपयोग की चीजें हैं, आज के जीवन में जहां उनका उपयोग जरूरी होता है, वहां पर भी बहुत कम लोग उनका उपयोग कर सकते हैं। बल्कि, जरूरी होते हुए भी हमारे देशमें इन चीजोंका उपयोग कुछ अरसे से ही बढ़ा है; कुछ इसलिये, और कुछ इस वजहसे भी कि हाथ सूत और हाथ बुनाई द्वारा इनके योग्य कपड़ा बनाने की कला अब तक ठीक ठीक बढ़ी नहीं है, मिलोंमें बनी इन चीजोंका इस्तेमाल जरूरी होता है। दूसरे शब्दों में यह कहिए कि ये चीजें उस क्षेत्रमें आती हैं, जिन्हें बनानेके लिये मिलों को खादीवादी अर्थशास्त्रमें आज्ञा दी जा सकती है। ऐसी दूसरी चीजें भी बताई जा सकेंगी। एक बहुत जरूरी चीज मशीनका धागा है। हाथ-सूतसे वैसा धागा बनानेका अभी तक कोई व्यवसाय पैदा नहीं हुआ, इसलिये खादीके कपड़ोंमें मिलका धागा ही बर्तना पड़ता है। यह कभी हटाने योग्य होते हुए भी मिल का धागा तो फिलहाल रखना ही होगा।

लेकिन नाटक-नृत्यके लिये मिलका कपड़ा चढ़ानेकी ख्वाहिश तकलीफ हटाने या जरूरत पूरी करनेके लिये नहीं, एक शौक और शोभाके लिये है। कला को समझनेका मैं दावा तो कर नहीं सकता। फिर भी मुझे इतना तो जरूर लगता है कि आज कल जो कपड़ों, रंग और रंगीन करणों के द्वारा रंगभूमि और पात्रोंको सजानेकी आदत चल पड़ी है, उसमें मुझे कलाकी अपेक्षा उसकी खामी ही दीखती है। सच्ची अभिनय कला पोशाक, पर्दे और रोशनियों पर अवलंबित नहीं हो सकती, बल्कि अभिनयकलामें रही हुई कमी परसे प्रेक्षकों का ध्यान दूसरी तरफ खींचनेके लिये उनका उपयोग हो सकता है। पुराने जमानेमें जब सती होने की प्रथा थी, कुछ स्त्रियां जबरदस्ती सती की जाती थीं या जोश में एक बार चिता पर चढ़ तो जाती थीं, पर सबमें इतना बल कहांसे हो कि शांति से अग्निकी ज्वालाको सह सके? उनका चिल्लाना रोना स्वाभाविक था। लेकिन सती हो और चिल्ला उठे यह दोनों कैसे साथ हो सकता है? इसलिये चिताको आग देनेके साथ ही ढोल, नगाड़ा शहनाई आदि बाजोंका और जयनादका इतना बड़ा कोलाहल मचाया जाता था कि जिसमें उस स्त्रीकी चीख डूब जाय। इसी प्रकार नटके अभिनय, ताल स्वरमें होती हुई गलतियों और मुंहपर लगाये पावडर आदिसे बनी हुई कुरूपताको ढकनेके लिये तरह तरहकी पोशाक और रंग रंग की रोशनियां और पर्दे वगैरह युक्तियां होती हैं। कम समझी से हम नट और प्रेक्षक दोनों उन्हें कला बढ़ानेवाले और उसके निहायत जरूरी साधन समझ बैठे हैं। यह कौन नहीं जानता कि सच्चा कलाकार बगैर किसी सजावटके भी अपनी कलाको बहुत अच्छी तरह दिखा सकता है। हम जाते हैं नट की कला देखने के लिये और फंस जाते हैं पोशाकके फैसन, रंगोंकी चमक पर्दों पर के चित्र, रंग भूमिकी सजावट आदि में। पाठक सोचें कि जो मैं कहता हूं वह ठीक है या नहीं।

यदि खादीवादी अर्थशास्त्र गलत है सिद्धान्त है तो उसको पकड़ रखनेकी हम पर कोई बांध नहीं। अगर वह ठीक है तो हमारे वर्तावि और प्रचारसे हमें अपने विचार लोगोंको समझाते रहना चाहिये और उसके अनुकूल लोकमत तैयार करना चाहिये, उसके लिये हमें खादीके विषयमें ज्यादा कड़ापन रखना होगा, ढीलापन नहीं।

———


फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा का दुनियां का असल रहस्य जाननेके लिय 'फिल्मी दुनिया' पुस्तक आज ही मुफ्त मंगाइये।

पता—मधुर मन्दिर हाथरस यू० पी०

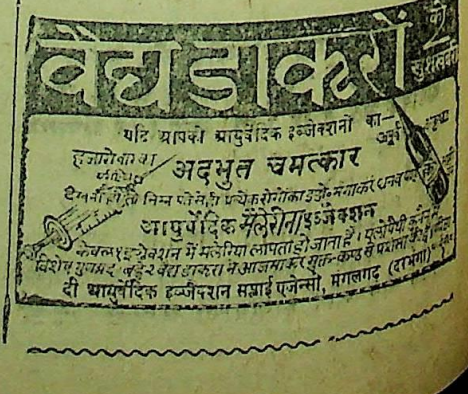



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक भाव-चित्र

# विजयकी बुनियाद

श्री पीताम्बर झा

जब कोई देश पिंजड़ेमें होता है, और निरन्तर की दासता से उस पर ऐसी लाचारी छा जाती है, कि घरों पर फूस नहीं दीखती, मकानोंमें दीये नहीं जलते; पेटको इच्छा भर अन्न और बदनको यथेष्ट कपड़े नहीं मिलते--ऊपर से कानूनके कोड़े बरसा कर जबान ऐंठ दी जाती है, मुंहमें ताले जड़े रहते हैं; तब वहां,--उस देशकी मिट्टी पर, सर से कफन लपेटकर जीनेवाली जवानियां, महानाशके बीजसे अंकुरित होती हैं, जैसे अबला, अपाश्रिता, उन्मग्न द्रौपदीके चीर की आहुति से दुःशासनकी मौत अंकुरित हुई थी। इनका प्रभाव प्रचलित धर्म, साहित्य, राजनीति, दर्शन आदि जिन्दगीके हरेक सहकसेतक व्यापक होने लगता है। लोग आपसमें मिलकर एक बननेकी सोचते हैं, और मानसिक उत्पादन-द्वारा नये सिरे से शक्ति-संचयकर इनके सामूहिक बलका सहारा लिये, अपनी दासतासे लड़ बैठते हैं। सृष्टिके संघर्ष की यही मेखला है, राष्ट्रके जागरण का यही इतिहास है। कोई एक चाहे कि, अपनी मर्जी से इसे बना लेगा, तो नहीं होने का; कोई एक चाहे कि अपनी मर्जीसे इसे बिगाड़ देगा, तो यह भी नहीं होनेका। बनेगा तब जब संभल कर मौके से लाभ उठाया जायगा; बिगड़ेगा तब, जब लापरवाही में, मौकेसे चूक जाया जायगा। परिस्थितियां ईजाद कर सकना इन्सानका हक नहीं, परिस्थितियोंमें बनना-बिगड़ना ही उसकी हद है।

इसी तरह, हालमें जब अपना यह देश,--भारतवर्ष, गुलामीकी आखिरी मंजिल तय कर रहा था, तब अन्य-अन्य देश-प्राण महानुभावोंके बीच, यहां एक कवि पैदा हुआ। समर्थ होकर उसने देखा, कि गांधी नामक एक ऐसा सत्पुरुष यहां आया हुआ है, जिसने अपने तपोबलके प्रभावसे अहिंसात्मक माहात्म्य प्रचारित कर, बच्चे-बच्चे को उसके भरोसे जीनेका ढंग देना चाहा है, और बहुत अंशोंमें सफल हो, लहर को रोककर गिरदाव पर आसन जमाये मुस्करा रहा है। इसमें कोई शक नहीं, कि अगर दुनियाके तमाम लोग अहिंसाके नाम पर जीना शुरू कर दें, तो जीवन प्रेम और सेवाका महान क्षेत्र बननेसे बाकी न बचे; पर यदि इसका प्रसार संसारके एक कोने तक ही सीमित रह गया तब जरूरी तौर पर, यह एक दिन उसे भलाई के बदले बुराई दे जायगी। भगवान बुद्ध ने भी अहिंसाकी महिमा गा-गाकर, लोगों को राह दिखाई थी, चूंकि उस समय धर्माचरणके लौकिक संस्कारोंमें, हिंसा इतने ज्वलंत और उत्कट रूपमें समावेशित थी, कि मालूम पड़े साक्षात मरण त्यौहार मना रहा हो। किन्तु आज वैसी बात नहीं है; आज हमारी बलि न तो देवी-देवताओं को खुश करने के लिये दी जाती है, न उतने संकुचित दायरे तक हमारा कारोबार रह गया है; बल्कि पेटकी ज्वालाके आगे, एक दूसरेको मार-काट कर अपनी-अपनी भूख मिटानेको हम समूची दुनियामें फैल चुके है। और इसलिये, जबतक पेटमें ज्वाला है, मस्तिष्कमें चिनगारियां हैं, हाथमें नाखून और शरीरमें बल है, तबतक हर कोई पेट के खातिर परमार्थ को भूलकर अहिंसा के नकाबमें तड़प-तड़प कर मरने से इन्कार ही करता रहेगा।

सो, इन सब कारणवश, कविके सिद्धान्तों का मेल-जोल गांधीजीके अहिंसात्मक प्रयोगों से नहीं हुआ। प्रत्यक्षतः यह बात उसके ध्यानमें आयी कि यदि इसे रोका न जा सका, तो गांधीजीकी अहिंसा नीति, देशको एक दिन बुजदिल बनाकर ही दम लेगी। जो मरणासन्न है, वास्तवमें उसे तो केवल जीनेकी चिंता है, जहरका घूंट भी दवामें डाल कर हलकसे नीचे उतारनेकी कहो--बेहिचक उतार लेगा; किन्तु जिन्हें जिलाने की फिक्र है, उनके लिये यह बहुत जरूरी होना चाहिये कि दवामें कोई ऐसा पौष्टिक पेय भी घोलें, जो चंगा करनेके साथ-साथ रोगीको अपनी पुरानी तन्दुरुस्ती हासिल कराता जाय।

फिर भी, इस नयी दिशामें कदम उठानेसे पहले, कविने बार-बार इस समस्या पर गौर किया, कि ऐसा करते हुए वह समय दशाके विपरीत कोई गलती तो नहीं दुहरायेगा, और बार-बार ही उसकी प्रेरणा उसे विश्वास दिलाती रही कि, जबतक प्राणों की रक्षामें शरीरस्थ इन्द्रियां, अपने कर्मराय व्यवहारों से मस्तिष्क के ज्ञान को उलझाये रखेंगी, तबतक जीवनके बीचसे संघर्ष नामक वस्तु उठने की नहीं, तबतक जीवमात्र हिंसा से पल्ला नहीं छुड़ा पायेगा।

यों कहने को कोई कुछ भले ही कहा जाय, परन्तु अगर यह सच है, कि मनुष्य की स्थिति कर्मसे कर्मकी इन्द्रियोंसे और इन्द्रियों के ज्ञान से रक्षित है, तो बेशक इसे भी सच होना होगा, कि ज्ञानके मूलकी स्थिति साहित्यसे, साहित्यकी रस से, रसकी काव्य से और काव्य की कवि से रक्षित है। हमारी चेतनाको संस्कृतिको अंकृत कर, कवि अपनी सीधी-सादी दो पंक्तियोंमें हमें इतना कुछ दे जाता है, जो बड़े-बड़े साहित्यिक महारथी, अपनी बृहतकाय पुस्तकोंके जरिये नहीं दे सकते। इसका राग प्रकृतिके राग की नाईं मूक और अमोघ है; इसकी ध्वनि आगकी प्रसिति की नाईं विद्युत और प्रोज्वल है--नसों में घुसी, कि शरीर में व्याप्त।

अतः उक्त कवि देशोद्धार की प्रणम्य विधियां सोचने में तत्पर और संलग्न हुआ। प्रत्यक्ष जगतसे भागकर उसकी साधना अदृष्ट लोकको पहुंची, और उत्तालंभ-भरे शब्दोंमें कल्पनाके आगे विनीत भावसे आग्रही हुई--

व्योम-कुंजों की परी अयि कल्पने,ह
भूमिको निज स्वर्ग पर ललचा न,हीं
रुक न सकती मृत्तिका आकाशमें
शक्ति है, तो, आ, बसा, अलका यहीं

कविके मंत्रोच्चार से, कल्पनाको उसके मानस-पट पर आविर्भूत होना पड़ा। तत्क्षण वह आई, मुस्कराते-मुस्कराते कवि के आशयको जानना चाहा, बोली--मैं प्रस्तुत हूं कवि, कहो क्या आज्ञा है?

आज्ञा नहीं, अनुरोध समझो देवि! अपनी दीनता पर, रोनेको, तुम्हें आमंत्रित किया है। यदि तुम्हारा पंथ और तुम्हारे कार्य-क्षेत्र स्वर्ग, अपवर्ग और व्योमादिके सुनहले, अज्ञेय लोकों तक ही सीमित रहते, तब आज हम न तुम्हें जानते, न अपनी सहायता को ही पुकार सकते; किन्तु मर्त्यपर तुम्हें आसन्न पाकर जब हम देखते हैं कि अन्यत्र भू-खंडोंके व्यवहारोंमें अवतरित हो, तुमने उन्हें सुख-समृद्धि प्रदान की है, तब जी दुःखता है कि हमारे भाग्य पर आंखें मूंदे क्यों बैठी हो? युग बीते कि तुमने इस भारतको परित्यागा और हम रोते-बिलपते अपनी विवशतामें मारे-मारे फिरते रहे हैं। क्या वे दिन अबतक नहीं आये, कि तुम हमारे अपराध क्षमा कर, हमें गले लगा लो, जो पूर्ण है, शाश्वत है, उसकी उदारता इस भांति एकांगी और अनित्य संलिप्तिसे, मर्त्योंका निपटारा करे, यह बात समझ में नहीं आती।

वास्तवमें यह तुम्हारा भ्रम और मेरे प्रति अन्याय होगा कवि, यदि तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मुझे इतनी क्षुद्र संज्ञासे संबोधित करोगे। शरीरके अन्दर प्राणोंके नाम से जो असंदिग्ध उज्जियाला है, व्यक्ति-व्यक्ति के अन्दर, उसकी मानस-लहरीमें, मैं उसी उजालेकी तरह मर्यादित हूं, जसे एक ही ज्योति-खंडसे जलाये जाने पर, भिन्न-भिन्न आस्था और अस्तित्वके प्रदीप एक-सम प्रकाश नहीं दे सकते, उसी भांति मेर एक भावसे सबोंमें प्रविष्ठ होने पर भी, उनके ज्ञान-मंडल की न्यूनाधिक समृद्ध राशियां, एक समान फल नहीं ला सकतीं। जिनकी मेधा जितनी ही अधिक सम्पन्न और तेजस्वी है, उन्होंने उतनी ही, दृढ़तासे मुझे पकड़ा है और उतने ही प्रस्फुट तथा बुलंद तरीके से जिन्दगी को शक्ल देनेमें समथ हुए हैं। मेरी जो क्षमता थी, मैंने तुम्हें बतलाया। कहो, इसके विपरीत मुझे दोष दे सकोगे?

दोष, मैं देता नहीं, न कदापि दे सकूंगा। अगर ऐसे भाव मेरी भाषा से लक्षित हुए, तो क्षमा करना--आरत कारहन करींह कुकर्नू। हां, आह्वान किया था, कि अपने लोकमें जाने देकर मुझे अपनी समस्या का समुचित संधान अन्वेषित करनेकी आज्ञा प्रदान करो।

आज्ञा? आज्ञा काहेकी कवि? मैं तो बस तुम लोगोंकी ही हूं। हमेशा द्वार खुले ह। चलो, आओगे मेर साथ? और कवि भावनाके पंख लगाकर, ज्ञान-मार्गसे कल्पना-लोक में उड़ा। उड़ते-उड़ते जब मिट्टीकेसारे दृश्य उसकी आंखों से ओझल हो गये, पर मनस्तापों को सुलझाव देनेवाला उसे कोई तत्वन मिला, तब निराशा में उसने और ऊपर की राह ली। सोचा-सीधे स्वर्गमें जाकर योगेश्वर भगवान कृष्ण के चरणोंसे लिपटेगा। उनसे प्रार्थी होगा, कि भगवन, जिस गो-लोक पर तुम बांसुरी बजा आये हो, गौएं चरा आये हो, द्रौपदीको चीर और अर्जूनको गीता दे आये हो, उस पुण्य भूम आर्यावतपर आज कलीवों का समूह इकट्ठा हो गया है, दानवोंने वहां बेहद उत्पात मचा रखा है, प्रभो, एतदर्थ, शरणागत हूं---पाहिमाम।

कवि अपनने संकल्प में सोचता-विचारता आगे बढ़ा जा रहा था। ऊपर निस्सीम व्योम, मध्य में वह, चिन्ताकुल उसकी विचार-धारा और विरहाकुल दो आंखें, जैसे पद-पद पर कुछ ढूंढ रही हो, कुछ खो रही हों। खोन-पानका यह संसृष्ट विनियोग, कितना प्रियदर्शी और आत्मभू है---शरीरको प्राणों में बांधकर लालसाके वृत्त खींचता है, कर्मका केन्द्र और आसक्ति की तृष्णा बनाता है; मानों मनुष्यको लेकर उसके जीवनका मार्ग परिष्कार करनवाला कोई अज्ञरूप सूत्रधार हो।

कवि ज्यादा दूर नहीं गया होगा कि उसकी दृष्टि अपनी बराबरी में ऊपर तक उठी हुई, अमल-धवल, श्वेतकाय, एक दीर्घवस्तु से टकराकर चकाचौंध हो गयी। सूयदेवकी अरुणाभ, बाल-रश्मियां उससे खेल रही थी, जिनके प्रतिपन्न प्राणों की स्वच्छन्द रंगरलियां, वहां विद्युन्मय विम्ब-प्रतिविम्बोंमें विलसित और प्रकीर्ण थी, कि विस्मय और उल्लासके आत्मानन्दमें वह अपनी मनोव्यथा खो बैठा। भीतर-बाहरसे ओत-प्रोत होता हुआ पलभर वह रुका और कल्पनासे जिज्ञासा की---शून्य में अवस्थित, यह श्वेतांग, उतुंगकाय कौन, कल्पने?

---पहिचाना नहीं, कवि? तुम्हारे भारतके शीश-मुकुट, गिरिराज हिमालय यही हैं, न?

---गिरिराज हिमालय! हमारी संस्कृतिके परम-पिता, धरतीके अखंड गौरव,---विश्व-वन्दय हिमालय! उफ! मैं कहा भटका जा रहा था! रुको, मुड़ो, कल्पने! अब और आगे नहीं जाना है ले चलकर मुझे इनके चरणों पर पटक दो। इनकी समाधि लगाऊंगा। अपनी विपदा सुनाऊंगा, इन्हें।

कल्पना रुकी, मुड़ी और कविको गिरिराज की सेवामें उपस्थित किया।

क्षणभरमें उमड़ा-उमड़ा कवि, ध्यानावस्थित हो, समाधि लगा बैठा। उसका कारुणिक आत्म-निवेदन शल-तटीमें गूंज-गूंज कर गिरिराज के समक्ष प्रतिध्वनित होने लगा ---

मेरे नगपति, मेरे विशाल!
साकार दिव्य गौरव विराट,
पौरुषके पूंजीभूत ज्वाल!
---देख तो बटी, कौन टेर सुनाने आया है?

गिरिजा दौड़ी-दौड़ी आयी और देख कर फिर दौड़ी-दौड़ी वापिस जा पितासे बोली---भारत भू का कोई तपस्वी कवि तुम्हारा ध्यान कर रहा है, पिता!

भारत भू का तपस्वी! इस घोर कलियुग में वहां कौन तपस्वी रह गया है, जो आयेगा? चल तो, देखूं।

आकर उन्होंने देखा, अपनी समाधि में लीन कवि उनसे कहता जा रहा था---हे मौन तपस्यालीन यती, पल भरको दृगोन्मेष करते ही प्रत्यक्ष देखोगे कि जिस पुण्य-भूमि पर गंगा-यमुनादि के अमिय स्रोतों के रूपमें तुम्हारी करुणा की अजश्र रस-धारा फूट बही है, उस पर सम्प्रति कैसा कराल संकट आ पड़ा है। निरंतर दासता के बंधनमें जकड़ी वह आज मुर्दों की एक घनी बस्ती बन गई है। वहां, अवधमें न कोई राम दीखता है; वृन्दावनमें, न कोई घनश्याम---कपिलवस्तुमें न कोई बुद्ध दीखता है; मगधमें, न कोई अशोक---वैशालीमें न लिच्छिवियोंकी शान दीखती है; मिथिलामें, न कवि विद्यापतिके गान। इस भांति प्रत्यह हम संकीर्ण और अपहृत होते चले जा रहे हैं। अतएव हे महिमामय शैलराट! मेरी प्रार्थना है कि तुम मौन त्यागकर, ऐसा हुंकार भरो, कि कुहासा फट जाय, प्रमाद भागे और जड़ता से हम उन्निद्र हों। अपने लिये आज हम धर्मराज युधिष्ठिर की कामना नहीं करते, उनका सत्य-बल हमारे कलेव्यको उत्तरोत्तर उत्साहित करेगा, उन्हें स्वर्ग जाने देने से न रोक कर गदा और गाण्डीव-धारी भीम-अर्जुनके अजेय बल-विक्रमका सहारा प्रेषित करने की हम पर दया करो। तुम्हारा यश किरीट श्वेत-पुंज कैलाशधाम, देवादिदेव महादेव का पुनीत आवास है। कृपया उनसे हमारी विनती ज्ञात कराओ कि आज हम उनके ताण्डव के उपासक हैं। हर-हर बम-बमके महोच्चारके बिना हमारा परित्राण नहीं।

विधिवत प्रार्थना समाप्त कर, कवि आत्म-ज्ञानके प्राप्त्यर्थ समाधिमें लीन रहा।

इस बीच गिरिराजका संदेश लिये, मरुत आकाशवाणीमें मुखरित हुआ---तुम्हारे साथ मेरी पूर्ण सहानभूति है कवि इस दुःखसे मेरी चिन्ताका भी अन्त नहीं है। यथार्थतः ईश्वरने मुझसे श्रेष्ठ गौरव सृष्टिके किसी अन्य भू-खंडको प्रदान नहीं किया, किन्तु नियतके मैं भी उतना ही समीप हूं जितना एक क्षुद्र कीट है। अतः यदि यह जानकर कि मेरे समान शक्त-पुंज धरती पर दूसरा नहीं है---मेरी असमर्थताके कारण, मुझे उपालंभ देने आये हो, तो यह जानकर, कि मेरे समान कठिनाइयां भी दूसरोंकी नहीं हो सकतीं---तुम्हें संतोष धारण करना होगा। जड़ चेतनमें जो जितना ही समर्थशील और पूर्ण है, उसका दुर्भाग्य भी उतना ही निशात और निर्मम है। शेष नागकी अंगड़ाई, चरणों के सहज आघातसे नाशवान दूर्वा-दलको क्षति नहीं पहुंचाती, गगनचुम्बी प्रासादों को धराशायी करती है। ऐसी दशामें धीमन्त व्यवहित और मुमुर्षु नहीं होते। जीवनके साथ प्रतिदिन हम मृत्युके लिये आगे बढ़ते हैं, उसी भांति सुखके साथ हमें दुःखके लिये तैयर होना होगा। यदि किसी दिन तुम्हारे बीच राम, कृष्ण, बुद्ध---आदि महापुरुष अवतरित थे और आज नहीं नहीं है, तो जो आज हैं, वे कल किस विधि रह पायेंगे। स्मरण रखो, एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा, जब स्थिति बदलेगी। कर्मके मार्गसे तुमने उन्हें पाया था, कर्मके

(शेष २७ वें पृष्ठ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कविवर 'बिस्मिल' की हाजिरजवाबी

श्री भगवतीप्रसाद सिन्हा, एम०ए०, प्रयाग

हैरतमें है कोई तो कोई पढ़ के दंग है

'बिस्मिल की शायरी में भी 'अकबरकारंग है।

कवियों और शायरोंकी हाजिरजवाबी के किस्से लोग बड़े उत्साह और चावसे सुनते-सुनाते हैं। संसारकी जितनी भाषाएं हैं, उनके कवियोंने मौकेकी ऐसी बातें कही हैं, और हाजिरजवाबीके ऐसे उदाहरण पेश किये हैं कि लोग सुनकर चकित रह जाते हैं। ईरानी शायरोंने तो इसी हाजिर-जवाबीकी वजहसे वह यश कमाया कि सदैवके लिये अमर हो गये। बादशाहोंके दरबारोंमें पहुंच वे मौकेकी बातें ऐसे रोचक ढंगसे आमने-सामने कह देते, कि बादशाह प्रसन्न होकर कभी तो उन्हें चांदी-सोनेसे तुलवा देते, और कभी जवाहरात और जागीरें देकर उनका सम्मान करते।

भारतवर्षमें भी उर्दू शायरोंने दिल्ली और लखनऊके दरबारोंमें हाजिर-जवाबीके वह जौहर दिखाये हैं, कि उर्दू-साहित्यका वह एक विशेष अंग बन गया है। लेकिन अब तो जमाना बदल गया। बादशाहों या नवाबोंके खुश करनेसे कोई शायर नाम नहीं पैदा कर सकता, अब तो जनताकी खुशीसे ही शायर सर्व-प्रिय हो सकता है। उर्दू शायरोंमें 'अकबर इलाहाबादी ने अपनी शायरीमें वह चुटकियां ली हैं, कि सुननेवाला गुदगुदीके साथ-साथ दिल-ही दिलमें अपनी त्रुटियोंसे भी परिचित हो जाता है। यही हाल कविवर'बिस्मिल इलाहाबादी की व्यंगात्मक शायरीका भी है। उनकी कविता पढ़नेसे अकबर इलाहाबादी का ही धोखा होता है। अगर नाम न बताया जाय तो यह समझना कठिन हो जाय कि 'अकबर' बोल रहे हैं या 'बिस्मिल'।

'बिस्मिल साहबकी व्यंगात्मक कविताके कुछ नमूने देखिये।

'राशनिंग स्कीम' की विपदाका रोना सब लोगोंको है। कभी गेहूं नहीं मिलता, तो कभी चावल। कभी जौ पर ही संतोष करना पड़ता है, तो कभी चनोंके लिये नाकों चने चबाना पड़ता है। कभी सड़े आटेकी चपातियां मयस्सर होती हैं, तो कभी चावलपर ही गुजारा करना पड़ता है। एक दिन मित्रमंडलीमें कुछ लोग बैठे थे और राशनकी हाय-हाय कर रहे थे। किसीने कुछ शिकायत की तो किसीने कुछ रोना रोया। बिस्मिल साहब भी वहां उपस्थित थे। उनसे भी न रहा गया। कह उठे—

हजरते दिल आप हैं नादान, हम समझायें क्या
गमहीजबमिलताहै खानेकोतोखानाखायेंक्या

सभी फड़क उठे और बात गईगुजरीहुई।

'राशनिंग स्कीम' का आरम्भकाल था। दिनभरकी रेल-पेलके बाद गहेके दाने दर्शनको नसीब होते थे। मगर हमारे साहब बहादुरोंको कोई मुसीबत न थी। वह अपने देशको अव्वल दर्जेका अनाज पार्सल बना कर भेजते थे। इसी मसलेपर एक जमघटमें बड़ी गर्म-गर्म बातें हो रही थीं, बातका बतंगड़ होता जाता था। इसी समय 'बिस्मिल' ने वह नपी-तुली बात कह दी कि सब लाजवाब हो गये—

उनके खातिर केक, बिस्कुट, चाय कटलिसडीम है।
हम गरीबोंके लिये बस राशनिंग स्कीम है।

इस महंगी और लड़ाईके जमानेमें अगर एक चीजका रोना होता तो कोई बात न थी, मगर यहां तो आये दिन कोई न कोई चीज गृहस्थीकी घटी हुईही नजर आती है। उन्हीं दिनों मिट्टीतेलकी कमी ऐसी प्रतीत हुई कि जिसे देखिये, दो पैसे, चार पैसेके तेलके लिए डिब्बी-डिब्बा, गिलास-बोतल, कटोरा लिये मिट्टीतेलकी गाड़ीकी राह देख रहा है। ऐसे ही मजमेके सामने एक दिन बिस्मिल साहब भी आ निकले। यह मालूम करके कि मिट्टीका तेल बंट रहा है, उसी समय कहा—

बोतल है सबके हाथमें क्या रेल-पेल है
अमृतसे बढ़कर इन दिनों मिट्टीका तेल है

मुसीबतें जब आती हैं तो अकेले नहीं आतीं। कभी किसीका दुखड़ा है, तो कभी किसीका रोना। इसी महंगाईमें एक बेचारेकी जोरूको मौतने आघेरा। वह दुखिया बाजार गया कि कफन लाय। दूकानदारोंने जो 'नहीं' का सिलसिला शुरू किया तो 'हां' का नामतक न लिया। आठ-दस दूकानोंके देखनेके बाद एक दूकानपर वह बैठकर रोने लगा। सामनेके दूकानदारने पूछा— भाई, क्यों रोते हो? उसने सारी कहानी सुनायी। दूकानदारको तरस आ गया। उसने बड़ी मेहनत और दौड़-धूपके बाद उसके लिये कफनका कपड़ा ला दिया। भला इन सब बातोंका असर एक कविपर क्यों न हो। इस बातको सुनकर बिस्मिल साहबने कहा—

क्या हाल कहें आप से हम अपने वतनका
बाजारमें मिलता नहीं कपड़ा भी कफन का

राशनकी तकलीफें अभीतक दूर नहीं हुई। भगवान जाने, कहांका कूड़ा-करकट अनाजके साथ मिलकर बिकता है कि उसका बिनना-बनाना और साफ करना एक दर्दसर और है। मगर खैरातें खड़े दाने तो बुने और साफ किये जा सकें! हैं लेकिन आटेकी खराबी तो किसी तरह दूर नहीं की जा सकती। न उसको धोय जा सकता है, न बुनकर साफ किया जा सकता है। उसकी बदबू तो किसी तरह दूर ही नहीं की जा सकती। एक दफा अटा ऐसा रद्दी मिला कि बड़े-बड़े पत्थर हजम करनेवाले हाजमाकी शिकायत करने लगे उस समय उसकी खराबी दूर करनेके लिये कमेटियां हुईं, सभाएं कीगयीं, जिनमें बड़े बड़े व्याख्यान हुए, मगर अमृतबाजारपत्रिका में निकला हुआ निम्नलिखित 'शेर' का असर सबसे ज्यादा हुआ—

समझे थे कहां हम ऐ बिस्मिल
ऐसा भी जमाना आयगा
पायेंगे वह आटा खाने को
जो आटा हम को खायेगा

किलनर होटलमें लोग जमे हुए थे। खान-पानकी धूम थी। बिस्मिल साहब भी एक साहबकी बगलमें बैठे थे। थोड़ी देरमें एक हिन्दुस्तानी साहब आये और खुदा जाने क्या बेहरेसे कहा। वह बेचारा कुछ प्लेट और चिम्मच लेकर आया देखकर, जिन्हें देखकर वे ऐसे बिगड़े जैसे चूनेपर पानी छिड़क दियाजाय। डांटकर बोले—अबे, कांटा-छुरी ला, तुझ को कोई तमीज नहीं है। 'बिस्मिल साहबने उनके तेवर बोल-चाल और रंग-ढंग देखकर कहा—

वह आदी हो गये कांटा छुरीके,
यहां खानेमें भी कांटा छुरी है।

दोस्तोंने जैसे ही यह शेर सुना, ऐसा जी खोलकर कहकहा लगाया कि सारा हाल गूंज उठा और साहब बहादुर कुछ झेंपसे गये।

माघका महीना था। माघके प्रयागका क्या कहना। कड़ाकेका जाड़ा पड़ रहा था। यात्री झुंड-के-झुंड चले आते थे। बाजारमें उनका एक मेला-सा लगा था। इसी महीनेमें बिस्मिल साहब एक दूकानपर बैठे थे। कपड़ोंपर यात्री लोग टूट पड़ते थे। इसी भीड़में एक साहब कोट-पतलून और हट पहने हुए दूकानपर आये। उनके माथेपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कवि

श्री रमेशचन्द्र झा

कवि वह, जिसके चरण-चिन्ह पर, निर्भय समय चला करता है
कवि वह, जिसके बाहु-पाश में ही इतिहास पला करता है
कवि का सबसे बड़ा हाथ है, दुनिया के उत्थान पतन में
कवि का सबसे बड़ा हाथ है, दुनिया के संहार सृजन में

वह दुनिया का गौरव है ही, युग-युगका वरदान वही है
और साथ ही साथ हमारे नवयुगका दिनमान वही है
मुंदे नयन तो रात हो गयी, और खुले तो हुआ सबेरा
घेर न सका उसे घेरे में, सीमाओं का सीमित घेरा

उसके अधरोंकी डाली पर, नित नवीन पल्लव उगते हैं
उसके नयन हरी दूबों पर शबनम के मोती चुगते हैं
यह सारा संसार उसीका, ये सारे निर्माण उसी के
विश्व-विहग के कंठ-कंठ से, फूट रहे हैं गान उसी के

आज भले कोई कुछ कह दे, पर, अगला मैदान उसीका
और कभी भी झुक न सकेगा, अभिमानी अभिमान उसीका
कवि की एक अलग सत्ता है, देश-कालका नेता कवि है
कविकी वाणी जगकी वाणी, विजयी काल विजेता कवि है

लाख शहीदों के लोहू से भी अमूल्य है उसकी स्याही
जब जी करता रच लेता है, अपनी विभा- सृष्टि मनचाही
उसकी कविता ही मानव को, एक नया जीवन देती है
उसकी कविता ही जीवनको, नित्य नया यौवन देती है

वही शांतिका मूल मंत्र है, और प्रलय तूफान वही है
कितनी जटिल समस्याओं का, एक अमोघ निदान वही है
कहीं फूलसे भी कोमल है, और कहीं पाषाण वही है
सरिताकी लहरें, सागरका उठता हुआ उफान वही है

वही मुहम्मद है, गौतम है, ईसा का अवतार वही है
और हमारे देश धर्म के, हाथोंकी तलवार वही है
उसका जीवन अजर अमर है, उसका यौवन अजर अमर है
उसकी वाणी जगकी वाणी, उसका स्वर ईश्वरका स्वर है

---

चन्दनका टीका लगा हुआ थापतलून और हटके जोशमें हजरतने दूकानके किसी नौकरको बुलाकर कुछ मंगाया। वह बेचारा काममें इतना निमग्न था कि उनकी आवाज न सुन सका। दूसरी बार उन्होंने डांटते हुए कुछ मांगा। इसपर लालाजीने कहा बाबूजी आप इसी कुर्सीपर बैठ जायें। वह फुरसत पा जाय तो आपकी सुने। उन्होंने बिगड़ते हुए कहा, मैं बैठ चुका जल्दी कीजिये नहीं तो मैं जाता हूं। लालाजीकी बुजुर्गी और बाबूजीकी गर्म बातोंने बिस्मिल साहबके दिलको बड़ा दखाया। वह बाबूजी की तरफदेखकर बोले—

कोट पतलून और टीका है।
इससे फैशन का रंग रंग फीका है।

आजकल मार-धाड़के जमानेमें भी बिस्मिल साहब वह मौकेकी बातें अपनी कवितामें कह जाते हैं कि उनको बगैर याद किये जी नहीं मानता। एक रोज मित्रोंने बिस्मिल साहबसे अनुरोध किया कि आप आजकलके साम्प्रदायिक दंगोंके बारेमें अपने विचार कवितामें प्रकट कीजिये। तबीयतमें आ गयी, कह उठे :—

हिन्दू भी मुसलमान भी रस्तेसे भटक कर
मैदाने तरक्की की सड़क कूट रहे हैं
आपसकी लड़ाईसे हुआ यह नफा बिस्मिल,
रिश्ते जो मुहब्बत के थे वह टूट रहे हैं

और सुनिये—

नाम दैरो हरम का है लेकिन,
शेख वह है न वह बरहमन है।
वह जमाना अब आ गया 'बिस्मिल',
आदमी आदमी का दुश्मन है।

महात्माजीके विचारको क्या ही अच्छा रूप दिया है —

खयाल आता है दिलमें कब हमारा,
सुनें क्यों हमसे वह मतलब हमारा।
हमें है उनस हर मजहब से बिस्मिल,
नहीं है कोई भी मजहब हमारा।

'चांद'के पुराने संपादकने जब साप्ताहिक 'भविष्य' निकालनेकी तैयारी की तो बिस्मिल साहबसे कहा कि कोई शेर ऐसा लिखकर हमको दीजिये, जिसको हम 'भविष्य'के शुरूमें बराबर छापा करें। उन्होंने उसी समय उनको लिख दिया:—

क्या कीजियेगा हालेदिले जार देखकर।
तलब निकाल लीजिये अखबार देखकर।

कभी-कभी कविताकी दो एक पंक्तिसे वह काम निकल आता है जो बड़े-बड़े प्रार्थना-पत्रोंसे भी नहीं निकलता। एक साल जेठकी गरमी अपना रंग जमाये हुए थी। इलाहाबाद आगकी भट्टी बना हुआ था। उस जमानेमें बिस्मिल साहब रायबहादुर पं० बृजमोहन व्यास (एक्जिक्यूटिव अफसर) की पेशीमें थे। उनके कमरेमें पंखा न था। वे काम करते-करते गर्मीसे परेशान हो जाते। एक दिन व्यासजीने पूंछा, कहिये बिस्मिल साहब, क्या हाल है। बिस्मिल साहबने कहा—

जेठ की दोपहर में तपता है,
फिर भी साहब का नाम जपता है,
यह तखल्लुस का है असर बिस्मिल,
दिन हो या रात तड़पता है।

दो शेरोंकी बदौलत दो ही दिनोंमें बिजलीका पंखा उनके कमरेमें लग गया और खसकी टट्टीपर छिड़काव होने लगा।

बिस्मिल साहबके घरके बाहरी बरामदे में एक तख्ता पड़ा हुआ था। उनसे मिलनेवाले उसपर आकर बैठते-उठते और बातचीतका मजा लूटते थे। बिस्मिल साहबसे एक दिन उनके एक मिलनेवालेने कहा कि जनाब, आपने कुर्सियां क्यों नहीं रखीं। बिस्मिल साहबने तुरत जवाब दिया

इससे जाहिर है कि, थे 'बिस्मिल
कभी हम बादशाह,
आज तक रक्खा हुआ है,
तख्त घरके सामने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# गांधी स्मारक फण्ड::एक पुण्य आयोजन

प्रो० जे० सी० कुमारप्पा

हम सब समाजके सदस्य हैं—गुट बना कर रहते हैं। जैसे एक बड़े परिवारमें कोई सदस्य थोड़े दिन रहकर फिर मर-कर चला जाता है, पर परिवार हमेशा कायम रहता है, वैसा ही हाल समाजका है। व्यक्तियोंके आने-जानेकी पर्वाह किये बिना खानदानकी हस्ती बनी ही रहती है। इसलिये जो काम हम पूरे खानदानकी भलाईके लिये करते हैं वे एक जिंदा व्यक्ति के लिये किये गये काम की अपेक्षा अधिक टिकाऊ होते हैं।

गांधीजी पिछली ३० जनवरीको चल बसे। उनकी देह हमसे छिन गई पर उनके जीवन और कामोंका शाश्वत भाग हम हमेशा जिन्दा रखना चाहते हैं। गांधी नेशनल मेमोरियल फंड इसीके लिये खड़ा किया गया है। इस फंडका काम सिर्फ ऐसे कामोंके लिये धन । कत्र करना ह जो गांधीजीके जीवनके आदर्श रहे थे।

गांधीजीने जो काम किया वह सिर्फ हिन्दुस्तानके गरीबोंके लिये ही नहीं, बल्कि सारी दुनियाके दलितोंकी भलाईके लिये किया। इसलिये जो भी थोड़ा-बहुत काम हम अपने कोनमें बैठे करते हों, हमें यह याद रखना चाहिये कि, वह सारी दुनियामें चलनेवाले एक बड़े कामका अंग है। ऐसा होनेसे लोग सिर्फ अपने काममें ही दिल-चस्पी नहीं लेंगे पर वे साथ-ही-साथ दूसरोंके कामोंसे भी संबंध जोड़नेकी कोशिश करेंगे।

ऐसा करनका एक तरीका यह है कि एक मिली-जुली संस्थाके जरिये हम अपनी सेवाएं विचार और धनके द्वारा देकर उसमें हिस्सा बंटायें।

गांधी मेमोरियल फंडका मकसद यह है कि बहुतसे लोग मिलकर एक ऐसा समाज बनानेमें मदद दे सकें, जो ऐसे मानव-परिवारोंसे बना हो, जसे कि गांधीजीकी कल्पनामें थे। इस कामको पूरा करनेके तीन तरीके हो सकते हैं।

अव्वल तरीका तो यह हो सकता है कि हम अपना पूरा ध्यान और समय ऐसे कामोंमें लगा दें, जो गांधीजीके आदर्शोंके अनुकूल थे और अपनी रोजमर्राकी जिंदगीमें उनपर अमल करके उनके फैलावमें लगे रहें।

दूसरे दर्जमें हम अपनी जिंदगी अपने ही ढंगसे बिताते हैं और अपने काम-काजमें जितना कुछ कर सकते हैं, उतना कायदेसे और धार्मिकतासे करते हैं। कभी गांधीजीके आदर्शोंके खिलाफ नहीं जाते।

तीसरी श्रेणीमें हम अपने आप खुद बहुत-कुछ नहीं कर पाते, पर उनके लिये जरूरत पड़नेपर धन या सामग्रीके रूपमें मदद देते हैं, जिससे कि दूसरे उस कामको पूरा कर सकें।

इन तीनों तरीकोंपर अधिक रोशनी डालना जरूरी है और उनका मतलब साफ होनेपर हम निश्चित कर सकते हैं कि इनमें से एक या सब मेंसे कौन-सा हमें चुनना है।

वह एक चीज जिसके लिये गांधीजीने जिंदगी भर काम किया, सत्य-अहिंसाका प्रचार है। यह चीज हमारे दैनिक व्यवहार और आपसके बर्तावमें हमेशा आती है। मसलन ग्राम-उद्योग-संघमें हमारा काम मुख्यतः यह देखना है कि आर्थिक जीवनमें सत्य, अहिंसाका राज्य आ जाय। उदाहरणार्थ अगर आप जाकर ताड़ी पीते हैं तो आप अपने परिवारपर घोर विपत्ति लाते हैं। इसलिये ताड़ी पीना इस सिद्धान्तके खिलाफ है। यह आसानीसे समझ लिया जाता है कि एक नशेबाज अपने परिवारके खिलाफ हिंसा करता है। लेकिन लोगोंकी समझमें यह नहीं आता कि जब हम आटे या चावल की मिलोंकी मदद लेते हैं तो भी उसी किस्मकी हिंसा होती है। प्रकृति माताकी देनके रूपमें धानमें बहुतसे ताकतवर तत्व रहते हैं। लेकिन जब वह मिलमें जाता है और पालिश किया जाता है तो उसका सारा पौष्टिक अंश निकल जाता है और रह जाता है उसका निकम्मा भाग। इसलिये पालिश किया हुआ चावल खाकर हम अपने बच्चोंका स्वास्थ्य बिगाड़ते हैं। इसी तरह मिलमें पिसा आटा खिलाकर भी हम अपने बच्चोंको पौष्टिक खानेसे वंचित रखते हैं और उनके खिलाफ उसी शराबीकी तरह हिंसा करते हैं। इसी तरह गन्नेका रस बड़ा फायदेमन्द है पर उसकी चीनी बनाकर हम उसका सब खाद्य अंश नष्ट करके सिर्फ गर्मी देने-वाला हिस्सा खाते हैं।

यही वजह है कि मेरा जबसे हमारे उद्योग-भवनमें गुड़ बनाने, धान कूटने और आटा पीसनको पहली जगह दी गयी है, क्योंकि हमारी जिंदगीके आर्थिक क्षेत्रमें सत्य और अहिंसा लानमें उनका महत्व सर्वाधिक है।

अब आपकी समझमें आ जायगा कि कैसे उस शराबीकी तरह, जो परिवारके सारे साधन एक ऐसी चीजके लिये बहा देता है जो थोड़ी देरके लिये उसके दिमागको बेकाबू बना दे, हम ऐसी चीजके लिये, जो हमारी स्वादेन्द्रिय या बेसमझीकी पसंदगीको संतुष्ट कर सके, अपने परिवारको सारे पौष्टिक तत्वोंसे वंचित रखते हैं।

इसी तरह जब हम स्वावलम्बनके लिये प्रचार करते हैं तब हमारा संघ अहिंसाके लिये ही काम कर रहा है। वह गांधीजीके अहिंसाके आदर्शोंका ही प्रचार होता है।

फिर हमारा यह भी कहना है कि हमें मिलोंकी बनी या विदेशकी बनी वस्तुओंका इस्तेमाल नहीं करना चाहिये। मिल गरीबोंसे रुपया छिनकर पूंजीपतियोंको अमीर बनाती है। तभी तो हम खादी पहनेपर जोर देते हैं। जब हम अपने आप सूत कातकर खादी बनवाते हैं तो हमारे साधन हमारे पास रहते हैं। पर मिल कपड़ेमें अपने वह साधन हम मिलवालेको दे डालते हैं— उसी तरह जसे शराबी अपने साधन दे डालता है। तो देखिये, कितनी तरहसे हम हिंसाको सहारा देते हैं। तो अगर हम अहिंसा बरतना चाहते हैं तो हमें मिलकी बनी चीजें या विदेशी माल नहीं खरीदना चाहिये। यही राह है जिससे हम अपनी जिंदगी गांधीजीके सिद्धान्तोंपर बसर कर सकते हैं। हरेक आदमी अपने-अपने रोजाना के जीवनमें गांधीजीके सत्य और अहिंसाके आदर्शोंको पालनेकी कोशिश कर सकता है।

ये अध्यात्मकी बातें नहीं हैं जिनपर केवल विचार और मन नभर किया जा सके। वे तो रोजाना सामने आनवाली सच्चाइयां हैं।

पहले तरीकेमें हममेंसे जो लोग अपनी सारी जिंदगी, जीवनके इस तरीकेका पालनके लिये दे रहे हैं, वे अपनी सारी ताकत बुद्धि और दूसरे साधन गांधीजीकी यादगार कायम करनमें लगा रहे हैं।

हममेंसे कुछ अपनी सारी जिंदगी और विचार इसी काममें लगानके काबिल नहीं होंगे, लेकिन वे थोड़ी हदतक यह कर सकते हैं। हम अपने खुदके जीवनमें वैसा कर सकते हैं। कम-से-कम घरपर हम इन सिद्धान्तोंका पालन कर सकते हैं। जिस हदतक हम ऐसा करते हैं, उस हदतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हम सत्य और अहिंसाको कायम करनेमें मदद देते हैं।

जब हम यह कह रहे होंगे, तब भी हम पहले दर्जके काममें कुछ हिस्सा बंटा रहे होंगे। इन लोगोंका काम चलानेके लिये हमें अपनी कमाई का कुछ हिस्सा देना होगा। यही काम है, जिसके लिये गांधी नेशनल मेमोरियल फंड कायम किया गया है।

ऐसा सुझाया गया है कि लोग अपनी कम-से-कम दस दिन की आमदनी इस फंडके लिये दें। जो लोग इससे ज्यादा हिस्सा बंटाना चाहें वे जरूर ऐसा करें वे, पर यह कम-से-कम है।

मामूली तरहसे जब कोई बड़ा आदमी मरता है तो उसके लिये आम तौरपर कोई भौतिक यादगार बना दी जाती है।

गांधीजीके लिये हम ऐसी यादगार खड़ी करना चाहते हैं जो उनके सिद्धान्तोंका —जिनके लिये वे जिये और मरे— प्रसार करें।

इस फंडमें मदद देकर हम कोई दान नहीं, देते बल्कि सत्य और अहिंसाका संसार बनानेमें मदद करते हैं। इसी महान कार्यमें हमारा रुपया काममें लगाया जायगा।

हम उम्मीद करते हैं कि हमारे पाठक इसमें उतने ही जोश और दिलसे हिस्सा लेना चाहेंगे जैसा कि वे एक परिवारसे शराबखोरीकी लत दूर करनेमें करते और केवल हिन्दुस्तानके लिये ही नहीं बल्कि सारे संसारके लिये कुछ पुण्यकर्म करेंगे।

पर हममेंसे कुछ की आमदनी पैसे मदद देने लायक नहीं होगी तो हम अपना हाथ कता सूत दे सकते हैं। इस कामके लिये ७९ गंडियोंकी एक ईकाई दी जा सकती है। ऐसे सूतको चर्खासंघ पैसोंमें बदल सकेगा।

ये तीन तरीके इस मेमोरियलमें हिस्सा बटानेके हैं। और सबसे जरूरी तो यह है कि हम बापूके बताये महान् सिद्धान्तोंको अपनी जिंदगीमें उतारें और अपने पास पड़ोसके लिये एक उदाहरण बनें। ऐसा करनेसे हम एक ऐसा समाज बनानेमें मदद करेंगे जो सत्य और अहिंसाकी बुनियादपर होगा। यह पुण्यका काम हमारी पूरी ताकत लगानेके योग्य है।

—

# नये समाजकी रचना

बैरीसालमें पूर्व पाकिस्तानद सोश— लिस्ट पार्टीके अध्यक्ष पुराने क्रांतिकारी और तपस्वी नेता श्री त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती (महाराज) ने ये विचार प्रकट किया।

हमारी समस्याओंका समाधान साम्प्रदायिकतासे नहीं होगा। यह मार्ग हमें विध्वंस की ओर ले जायगा। पाकिस्तानके हिन्दू यदि ऐसा महसूस करेंगे कि वे भिन्न भिन्न सम्प्रदायके राज्यमें वास करते हैं तो वह देश अथवा जनता किसीके लिये भी मंगलकारी नहीं होगा। ऐसे मनोभावके परिणामस्वरूप अशांति जारी रहेगी, शिल्प-वाणिज्यका प्रसार संभव नहीं होगा। इसकी वजहसे दुर्भिक्ष और वस्त्र संकट जारी रहेगा तथा देशकी जनताकी और भी दुरवस्था हो जायगी।

एक तरफ देखा जा रहा है कि लाख लाख कोटि कोटि मनुष्य आर्थिक दुरवस्थामें पड़े हुए हैं, उनको रोटी नहीं मिलती, कपड़ा नहीं मिलता, चिकित्सा नहीं मिलती, हमेशा अभावमें ही जीवन बीत रहा है। दूसरी तरफ कतिपय आदमी विलासितामें डूबे हुए है, उनको किसी बातका अभाव नहीं है। ऐसी अवस्था क्यों है?। यह वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्थाका परिणाम है। देशमें जब तक यह व्यवस्था रहेगी तब तक गरीब और गरीब होगा, धनी और अधिक धनी होगा। जिस समाज व्यवस्थाके फलस्वरूप मनुष्य गरीब होता है उसे बदलना होगा। यह समस्या पाकिस्तान, व भारतीय संघकी समस्या है, यह समस्त संसारकी समस्या है। धनतांत्रिक उत्पादन प्रणालीके प्रति दृष्टि डालनेसे मालूम होता है कि जो लोग उत्पादन प्रणालीमें सक्रिय भाग लेते हैं वे अपने द्वारा उत्पन्न सम्पतिसे स्वयं ही वंचित रहते हैं। किन्तु जो अल्पसंख्यक व्यक्ति लताकी भांति समाज वृक्ष के सहारे समाजका सम्पूर्ण रस खींचे ले रहे हैं आज उन्हींका पूर्ण प्रभुत्व है। समाज मे यह जो विषमता है उसे मिटानेके लिये प्राचीन कालसे आज तक कितने ही मनीषियोंने कितने ही मार्गोंका अवलम्बन किया। किन्तु समाजके जीवनके मूलमें जो असमानता है उसके न हटनेसे आज तक कोई समाधान सफल नहीं हुआ। इस विषमता को मिटानेके लिये ही समाज तंत्रका आविर्भाव हुआ है। पुराने समाज भित्तिकी जगह नवीन रूपसे समानताके आधार पर नयी समाज प्रथाका निर्माण करना ही समाजवादका उद्देश्य है। समाजके भीतर विप्लवकारी परिवर्तन लानेके लिये समाजवादी दल कृत संकल्प है। समाज क्रांति सुन्दर और शांतिके साथ सम्पन्न हो, इसलिये समाजवादी शासन व्यवस्थाकी प्रतिष्ठा आवश्यक है। हम जिस समाजवादी राष्ट्र की स्थापना की परिकल्पना कर रहे हैं वह धर्मके मामलेमें निरपेक्ष राष्ट्र होगा— इस राष्ट्रमें प्रत्येक नागरिकके, वह किसी सम्प्रदाय या धर्मका क्यों न हो, अधिकार अक्षुण्ण रहेंगे। इस जगह एक बात स्मरण रखने योग्य है। किसी सम्प्रदाय या किसी धर्मके आधार पर किसी राष्ट्रकी प्रतिष्ठा का परिणाम होगा फासिस्टवादकी उत्पत्ति। इतिहासके इस संकेतको पाकिस्तान और भारतीय संघके नेताओंको स्मरण रख कर सावधानीसे काम करना चाहिये।

समाजवादी राष्ट्र लोकतंत्रीय आधार पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। वस्तुतः किसान और मजूरोंके प्रतिनिधि ही समाजवादी राष्ट्रके कर्णधार होंगे। अब तक जो समाज द्वारा शोषित और पीड़ित हो रहे हैं वे नयी समाज व्यवस्थामें सब प्रकारके शोषण और अत्याचारसे मुक्त होंगे। वर्तमान राज व्यवस्थामें किसान, मजूर और निम्न मध्य वित्त जनसाधारण अपनी स्वतन्त्र सत्ताका अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। किन्तु समाजवादी व्यवस्थामें अपना भविष्य वे स्वयं निर्माण करेंगे। ऐसी समाजवादी व्यवस्था लाना ही हमारा काम है। इसीसे हम एक संगठित और अनुशासित समाजवादी दल चाहते हैं। पाकिस्तानके साथ पाकिस्तानसोशलिस्ट पार्टीका कोई विरोध नहीं है। पाकिस्तान सरकार जनहित कामना से यदि कोई कार्यक्रम उपस्थित करेगी तो सोशलिस्ट पार्टीका उसे पूरा सहयोग मिलेगा। जनहितके किसी दल व्यक्ति या सरकारके कामको सोशलिस्ट पार्टीका समर्थन और सहयोग प्राप्त होगा। किन्तु यह बात भी साफ साफ बता देना आवश्यक है कि कोई दल कोई शक्ति या सरकार भी यदि कोई जनहित विरोधी काय करेगी तो पाकिस्तान सोशलिस्ट पार्टी शरीरमें एक बूंद रक्त रहते उसका विरोध करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# बन्धनोंमें बंधी मुक्तिकी कल्पना

श्री शीतलसहाय श्रीवास्तव

बन्धनोंमें बंधी मुक्तिकी कल्पना !

प्यासमें है भरी तृप्तिकी गागरी वेदनामें छिपी प्रीतिकी माधुरी
कालिमा यह निशा की छिपाये उषा,नाच उठती जिसकी किरण बावरी
साध में ही सधी सिद्धि की साधना, बन्धनोंमें बंधी मुक्तिकी कल्पना

अश्रु के नीर में प्रीतिका हास है, नग्न पतझारमें सान्द्र मधुमास है
गोदमें घन तिमिरकी सितारे खिले दूर का यह गगन पास ही पास है
नींद में ही घुली स्वप्न की कामना, बन्धनोंमें बंधी मुक्तिकी कल्पना

बादलोंमें लुकी द्युतिमयी चंचला, ढील देती कि जो हासकी शृंखला,
शूलकी सेज पर सो रही है कली, मुग्ध जिस पर मधुप उड़ चला मनचला
है रुदन-गानमें प्राणकी वंदना, बन्धनोंमें बंधी मुक्तिकी कल्पना।

(२२ वें पृष्ठका शेषांश)

मार्ग से ही पुनः पाओगे। और कवि विद्यापति के अभावमें अवश होना तुम्हें शोभा नहीं देता। वे स्वतंत्र-युग की चरित्र-वाणी थे, किन्तु तुम पराधीनों की निरवद्य चेतना हो। 'स्वर में अग्नि-खंड भर-भर' कर ज्वाला फैलाये जाओ, कलमष मिटता जायगा। अपनी प्रभुता और सामर्थ्यके अनुकूल पूर्वमें जो कुछ देता आया हूं, अब भी दे रहा हूं और जबतक शक्ति रहेगी, भविष्य में भी देता रहूंगा। हां, कलियुगके प्रभाव से अदृष्टकी अपेक्षा दृष्टमें रूढ़ और प्रतिष्ठित होकर तुमने आत्म-बल खो दिया है। कहते हो, युधिष्ठिरके सत्यकी तुम्हें उपेक्षा है, गदा-गाण्डीव-धारी भीम और अर्जुन चाहिये। पर प्राणों के बिना कहीं शरीर को पलते देखा है ? युधिष्ठिर इसी प्राणके पीछे पागल था। तुम भी उसे न भुलाओ। समझो कि अगर तुम में से कोई एक आज उस सत्यके अनुष्ठान में व्याकुल है, तो उसकी तत्परता शरीरको चिन्मय-तत्वों से परिवेष्टित कर उसे अविनाशी बना देना चाहती है। खग की उपासना जीवन की प्रसूत रागिणी नहीं, आत्मम्भरि एक कदर्य उन्माद है। युद्दोत्तर कालमें, सब इसकी चितापर रोते-विलखते आये हैं, तथापि विकल्प से यह तब प्रयोजनीय हो जाती है, जब विष विषकी औषधि माना गया है। अनुमानतः इसी भावमें तुम यहां आये हो और इसी भावमें भगवान शंकर के प्रलय-नृत्यको, सिद्धिकी समष्टि जानकर, मुझसे कहा है, कि मैं उनसे इसका आग्रही बनूं। किन्तु मेरी अपेक्षा तुम्हारा स्वकीय निवेदन अधिक सार्थक और फलप्रद होगा। प्रार्थनाएं ऐसी ही की जानी चाहिये। गिरिज मेरी आत्मजा है, मैं उससे कहता हूं, तुम्हारा यथेष्ट सहायक होगी।

मानो शून्य से आकर बादल धरती को अभिषिक्त कर गये हों वैसे ही इन अमृत-वचनों से कविके अन्तर-पटका अभिषेक हुआ। चैतन्य अश्वमेधमें उसने पलकें खोली। समाधि को त्याग शैलविराट के प्रति कृतकृत्य होता हुआ नतमस्तक प्रणतिसे विदा मांगी और कल्पना--संगिनी की बांह गहे पुनीत कैलाश धाम को प्रस्थान किया।

मान सरोवर-तट पर उतरते न उतरते वह प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा पर बरबस मुग्ध हो गया। आकाशके विस्तृत नील चंदोवे-तले सर्वत्र अंचलमें जीवन की जड़तासे रक्त-मुक्त तुषार-मंडित स्फटिक-श्वेत शिलायें शिशिर की अक्षत प्रभुताका चिरंतन पूर्ण साम्राज्य; मिट्टी के सौरभ से अनजान अनमिल वन्य लता-पादपों कि अनियारी मादकता; मानस की लहरों पर आत्म-मग्न कूजित कलहंसों की जल-क्रीड़ा; प्रचुरतासे विकसित अनुपमेय नील कमल; एक किनारे उपासना को निर्मित आशुतोषका हेम-मन्दिर।

प्रफुल्ल-चित्त कवि आकांक्षा और उल्लासमें डूब गया। शीघ्रातिशीघ्र पूजा की तैयारीमें सरोवर-स्नान से निमज्जित हो उसने पुष्प-चयन किया और मंदिरमें प्रवेश कर उन्हें ज्योतलिंग पर बिखेरता उंड़ेलता समाधिमें गूंज उठा।—

नाचो हे नाचो नटवर !
चन्द्र-चूड़ त्रिनयन गंगाधर
आदि-प्रलय अवढर शंकर ! !

भगवान त्रिलोकी नाथ की एकाग्रता टूटी। आह्वान की प्रेरणा पर विस्मित हो वांमांगी गिरिजा से बोले—आज तो निराला उपासक आया हुआ है योग-माया ! सुनती हो, क्या वर मांग रहा है ?

पतिके आर्जव सारल्य पर गिरिजा मुस्करायी और अपनी अभीष्टि को भावोंमें ईषत उत्प्रेक्षित कर उत्तर दिया—हां सुन रही हूं स्वामी, बेचारेका जीवन सर्वांशतः विच्छिन्न हो गया जान पड़ता है। कहीं से कोई आशा-किरण न मिली तब तुम्हें इतने संबोधनोंसे पुकार रहा है। कहता है चन्द्र-चूड़, कि अमृत चाहिये—त्रिनयन, कि ओज; गंगाधर, कि गति चाहिये—आदि प्रलय, कि प्रचंड शक्ति। और जबतक तुम नृत्य नहीं करते ये सबके सब एक संग वह कैसे पायेगा।

—किन्तु मैं तो महानाश का देवता हूं गौरी ! मेरे ताण्डवके त्रास से सुरलोक सम्पित है। मर्त्यका यह प्राणी उसमें क्या सुख पायेगा ?

—वही तो। सुरलोकमें समस्त सुख-सम्पदाएं हैं विभो, जिस कारण नाश से वे भयभीत हैं, किन्तु जो घुट-घुटकर यंत्रणायें भोग रहा है—उसे महानाशके सिवा, मुक्ति और देगा कौन ?

—सचमुच मर्त्यके जीवनका व्यापार बड़ा अनोखा होता जा रहा है। दृष्ट और अदृष्ट के चाप से विमूढ़ इसका ज्ञान, नित्यके घर्षण-संघर्षणके समक्ष जीवनको कर्मका सम्यक मार्ग ग्रहण करने नहीं देता। सुख में सब कुछ विसार कर यह केवल दृष्ट को ही प्रामाणित जानता है और दुःखमें निरुपाय हो, हमारे पास रोने-धोनेको पहुंच जाता है।

इसमें अनुचित क्या करता है, वह ? जो कर्म अपने-आप सम्पादित कर सकता है, कर लेता है; जो नहीं कर सकता, उसकी प्रभुतासे बाहर,—प्रारब्ध का होता है, उसके लिये अपने विधातामें लौ लगाता है। तुमने उसे इतना दृढ़ संकल्प भी तो नहीं दिय कि किसी एक ठौर पर निश्चल रहे।

नहीं नहीं—ऐसी बात नहीं है, गौरी। कर्म करते-करते वह हममें लौ नहीं लगाता, बल्कि तृष्णा और आलस्यके वशीभूत, कर्मसे च्युत होकर जब उसका विकृतमन क्रमशः कलुषित होते-होते उसे घोर दुःख और निराशाके पासमें बांध देता है, तब व्याधके अभिमुख, अपने आर्तनादसे वह हमारी करुण को विगलित करनेका प्रयत्न करता है। शुद्ध मन से, शुद्ध क्रिया करनेकी प्रवृत्ति, जिस क्षण उसके अन्तर से विलीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हो जाती है, उसी क्षण, शरीर--यात्रामें उसकी इन्द्रियां प्रकाश और सद्ज्ञानके मलको तजकर, मोह और अज्ञानताके लोकमें भूलने भरमने लगती है। और अन्ततः वह अधोगति को प्राप्त होता है। किन्तु ऐसा क्यों होगा, स्वामी ? सृष्टि के नाते जब तुम उसके विधि-विधायक हो, एक रुप से जन्म देकर, दूसरे से संस्कार और तीसरे से संहार देते हो, तब तुमसे बाहरकी चेतना और अपकर्ष, उसके इन्द्रियागोचर कैसे होता है ? दुष्कर्म की प्रेरणा वह कहां से पाता है ?

--लालसा के पीछे शक्तिके अनव्यय से शिवे। भौतिक पंचमहाभूत उसकी अन्तर्मुख तृष्णके पूरक और शरीरके पोषक हैं, किन्तु कर्ममें इनकीविलोभ अभ्यस्ति असमय ही महाप्रलय संघटित करनेकी क्षमतासे भी वंचित नहीं है। इसीके द्वारा दुर्दान्त और बर्बर मानव दीन-हीनोंका स्वत्व अपहरण कर जीना चाहता है। सृष्टि पर दानव उद्भूत होते हैं। इधर जगके माता-पिता प्रस्तुत चिन्तामें व्यस्त थे, उधर कवि अपनी मनोव्यथा को स्तुतिमें घोल घोल कर सुनाये जा रहा था --

प्रभु तव पावन नील गगन-तल
विदलित अमित निरीह-निबल-दल
मिटे राष्ट्र उजड़े दरिद्र--जन
आह सभ्यता आज कर रही,
असहायों का शोणित-शोषण
पूछो साक्ष्य भरेगें, निश्चय,
नभके ये नक्षत्र-निकर।

--यही संकट इस उपासक को भी जान पड़ता है, प्रभो। अभ्यर्थनामें भय-त्रास मिश्रित अपनी दुर्दशा व्यक्त कर रहा है। क्लेश-मुक्त कर इसके जीवनका निवारण करो।

--तुम इतनी व्यथाभिव्यंजित और आर्द्र मत होओ, भुवनेश्वरी। निर्णीत अवधि के अन्तर्गत युग-परिवर्तनका कार्यारंभ निषिद्ध है। सुना नहीं तुमने, वह चाहता है, कि संसार पूर्णत्व को प्राप्त करे, मनुष्य, मनुष्यमें कोई विभेद न समझे। जबतक मेंकी ग्लानि चरम सीमा तक नहीं पहुंच जाती, दानवोंके उत्पातसे शेषशायी भगवान विष्णुका सिंहासन नहीं डोल उठता, तब तक सृष्टि की शृंखलामें गतिरोध उत्पन्न करना, मेरी क्षमता से परे है।

--तब क्या इसे निराश लौट जाना पड़ेगा ?

मर्त्यका जीवन ही एक निराशा है प्रिये। कर्मके बिना इसे सिद्धि नहीं मिलती। इसीलिये अनासक्त भावमें इससे कर्म करने को कहा गया है कि आशा-निराशा से यह बंधन--मुक्त हो।

--यह सीख तुम किसी योगी-यती को सुनाना स्वामी,--जिसने परमार्थ को मोक्ष जाना हो; किन्तु जो संसारी है, जीवनमें आशा, आकांक्षा और उन्माद लिये जमा है, वह फलाशक्तिको त्यागकर कर्म क्यों करेगा ? जीवन कैसे पालेगा ?

--अनासक्ति का तात्पर्य परिणामके संबंधमें अनवधानित रहना नहीं है, संगिनी ! --वह तो बुद्धिगम्य है ही, बल्कि भावनायें उसके किसी विश्वासी रूपको मूर्त होने देनेका लोभ-संवरण करना है। इस दशा को प्राप्त कर जो साधनमें तन्मय रहता है, उसे अधीरता नहीं घेरती और जगके कल्याणमें वह सद्व्यवस्थाका कर्ता बनता है। सो, इस उपासक की साधनामें, यदि ऐसे तत्व सन्निहित होंगे, तब संशय-विमुक्त होकर तुम मुझमें विश्वास करो, कि अपने उद्धारके उपाय यह आप सोच लेगा।

--आप क्या सोचेगा। सोच सकता, तो फिर यहां आनेका प्रयोजन ? रावण, हिरण्यकश्यपु-समान दैत्यों को, अपने कुकृत्यसे सृष्टिका संहार करनेके लिये वर देनेमें तुम प्रसन्न हुए थे, किन्तु इस पद-दलित प्राणीकी व्यथा, तुम्हारी करुणाको पर्श नहीं कर पाती--यह भी इसका सौभाग्य है।

--रुष्टन होओ, जगदम्बे। जानता हूं माताका हृदय अपनी सन्तानके लिये कितना दयामय और पिंजरबद्ध होता है। मुझसे अधिक इस उपासकने तुम्हारे मातृत्व को जीता है। अतः मैं इसे वरदान देता हूं कि अपने ध्येयमें यह सफल हो; किन्तु ताण्डव की स्तुति तो सम्प्रति स्वीकार करनेमें मैं असमर्थ हूं। सर्वत्र त्राहि--त्राहि मच जायेगी।

भगवान शंकरका भवानीसे इतना कहना था कि ज्योतिर्लिंग पर समर्पित पुष्पोंकी निर्माल्य कविकी अंजलिमें भर आये और हर्षोन्मत्त होवह जयकार करउठा --हर, हर, महादेव !

मनवांछित धन फलप्राप्त कर कवि फूलान समाया। मानो चारों तरफसे सिद्धियां उसे घेर रही हों, वैसे ही पुलकित मन, लकित स्वर और पुलकित गतिसे वह प्रचालित था। भगवान शूलपाणिके मन्दिर की रिक्रमा करता हुआ, उसने पूजा समाप्त की, और स्वदेश लौटने की इच्छासे, अनीत स्वरम कल्पनाके आगे बोला--धन्य कल्पने, तुम्हारी महिमा, आज मुझे क्रान्ति के मूक आह्वानसे प्रेरित कर गई, उसमें मैंने देवता दर्शन पाया। जीवन भर इस अनन्त उपकारका ऋणी बना रहूंगा। अच्छा, अब विश्राम करो, मैं वतनको लौटूं। इसी तरह शरणमें रखे रहना, कि छटपटा कर आहें टूटने न पायें।

धन्य मैं नहीं, तुम हो कवि, कि अपने कर्तव्यके ज्ञानसे इतना आदरपूर्वक मुझे हृदयम नियोजित कर सके। मैं तो सरोवर का जल ठहरी-पुजारी, अपने लिये ग्रहण करता है, भिश्ती अपने लिये।--मुस्करा कर कल्पनाने उत्तर दिया और कविके मानससे अन्तर्ध्वन हो गई। तत्क्षण कवि अपने देश, अपने भेषमें था।

अब वह निर्भय और निश्शंक हो, अपने लहूसे कविताएं लिख-लिख कर अंगारे बरसाने लगा, कि कब्रतक की दीवार टूट और मुर्दा अपनी हस्तीमें जगमगा उठे। कालान्तरमें उसने देखा, देशमें नयी स्फूर्ति और नया ओज लहराने लगा,--कहीं जवाहरके रूपमें, कहीं सुभाषके रूपमें, कहीं जयप्रकाशके रूपमें और कहीं जिसके तिसके रूपमें प्रकट हो, बीर-प्रसविनी हिंसा छिट-फुट कौंधने लगी है। पलक मारते ही इसका एक समारोह गांधी की अहिंसा पर चोट कर बैठा। क्रान्ति आई और खून का दरिया बहा कर दे गई।

इधर यह सब अपने घरमें हो रहा था, उधर दूर पश्चिममें--दानवोंके बीच महानाशका एक प्रचंड ज्वालामुखी भभका लपटें इतनी बेकाबू होकर ऊपर तक फैलीं कि देखते ही देखते सबके सब भस्मीभूत हो गये।

कविने, अपनी उपासनामें, उस दिन भगवान शंकरसे निवेदन किया था--

नचो तीव्रगति भूमि कल पर,
अट्टहास कर उठें धराधर
उपटे अनल, फटे ज्वालामुख,
गरजे उथल-पुथलकर सागर
गिरे दुर्गजड़ता का,
ऐसा प्रलय बुला दो प्रलयंकर।

आज उसकी यह प्रार्थना स्वीकृत हुई। आज हम स्वतंत्र हैं। इस स्वतंत्रताके लिये जिन्होंने जितनी कुर्बानियां कीं, सब सार्थक और गिनने लायक बनीं।

इस मौके पर, संभवतः गांधी बाबा सोच रहे हों, कि उनके अहिंसात्मक प्रयोगोंकी सिद्धि मिली है और हमारा यह कवि सोचता हो कि उसकी हिंसात्मक उपासना ने काया को प्राण दिया है; मगर हम-आपसरीखे सामान्य व्यक्ति तो केवल इतना ही सोच सकते हैं, कि लड़ाईके मैदानमें जहां अनगिनत योद्धा प्राणान्तक शस्त्रास्त्र लिये, जिन्दगी को दाव पर चढ़ाये लड़े हैं--वहां यह कहना कठिन है, कि किसके धनुषके तीरसे विजयकी बुनियाद पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



संस्मरण——

# अवगुण्ठन

सुश्री चन्द्रप्रभा द्विवेदी--

उत्तप्त ज्येष्ठकी दोपहरी और प्राचीन वह पर्व। दोनोंमेंसे किसीकी भी उपेक्षा भारतीय महिलाओंके लिये मान्य नहीं, फिर मैं! मेरे लिये तो यह पर्व और भी विशेषता रखता है। मेरा परिणय भी तो इसी दिन सम्पन्न हुआ है, जिसकी स्मृति ही इतनी मनोहर होती है कि तरुण अविवाहितों और वृद्ध विवाहितों तकको भी अपनी गुदगुदीसे एक बार अवश्य चंचल कर देती है, फिर तो मैं इन दोनों के बीच की अवस्थामें हूं, क्यों न मुझे उसका प्रभात ही पुलक-भारसे भर दे।

मैं हाथोंमें पुष्पांजलि लेकर सौभाग्य देवी गौरीके ध्यानमें मग्न हो जाना चाहती थी; पर न जाने क्यों, कुछ स्मृतियां अपनी अटल चेतनासे जमी थीं और उसके हरे-भरे कोमलतम नवीन पत्रों पर बाल-मुकुन्दकी भांति अंकित हो रही थीं। एक साथ ही अनेक अंजलियां, उल्लासकी हल्दी पीतिमासे रंजित हाथोंमें बेले- गुलाब के श्वेत-रतनार पुष्पोंसे भर कर समर्पित हो रही थीं और मैदानके उस ऊष्ण पवन को सुरभित शीतल करती उस बट-छाया को वासन्ती बना रही थीं। मेरा सुरभि-सिक्त मानस अपने अगर-धूप, घृत-दीपके दिव्यदानसे दीप्त हो रहा था कि बगलसे एक व्यंगने मुझे चौंका दिया——

"ओ हो, मेम साहब भी पूजन करने लगीं?"

"पहचाना इन्हें! यह...की बहू है?" दूसरे स्वरने कहा।

"तब क्या बिना पहचाने ही मैंने मेम साहब कहा है!" पहले स्वरने उत्तर दिया।

मैंने मुड़ कर पीछे देखा—मेरी स्व-र्गीया सासजीकी कई समवयस्काएं थीं। मैंने उन्हें शर्माते हुए प्रणाम किया। सच-मुच, मैं तमाम अवगुंठनवती बहनोंके बीचमें उत्तरीय एवं अवगुंठनहीन ही खड़ी थी; जैसे मैंने कोई बड़ा अपराध कर डाला हो; मेरा सिर ऊपर नहीं उठ रहा था। वे बहनें मुझसे कहीं अधिक उम्रकी थीं, फिर भी वह उसी प्रकार सामन्तयुगीन परदेमें थीं, जिसमें किसी दिन मैं भी अपने जीवनके दिन बिता चुकी हूं। मेरा दुर्बल मन मुझे झकझोरने-सा लगा——"मैं क्यों 'उनकी' बातें मानती हूं? वह तो बड़े हो हठीले प्रकृतिके हैं। उनका विचार चट्टान की भांति अटल क्यों है? क्या वह अपने समाजके उन युवकोंकी भांति नहीं हो सकते, जो प्रोफेसर, बैरिस्टर डाक्टर और चोटीके नेता, पत्रकार तथा कवि एवं कला-कार होने पर भी घरके भीतर केवल प्राचीन प्रथाके समर्थक हैं। आज भी यह मान-नीया बहनें केवल कपड़ेकी गठरीके सिवा और कुछ भी नहीं हैं, यद्यपि इनके पति योग्यता में मेरे पतिसे कहीं अधिक ही हैं।" वे बहनें स्नेह एवं आश्चर्यसे मेरी ओर अपने रेशमी घूंघटोंको उठा-उठाकर देख रहीं थीं, जिनके भीतर स्वर्ण-रत्न-ज्योतित पीत मुख अपनी असमर्थता पर मानों हंसे रहे थे।

मेरे नेत्रोंमें अचानक ही देवी-देवता के स्थान पर वही चिर परिचित, जीवन सहचरी मूर्ति आ विराजी, जो आते समय एक परिहासपूर्ण अवसर पर झलक उठी थी। मेरा अन्तर पुनः वही पद दोहराने लगा। सचमुच, जब अपने धर्म पर अचल विश्वास हो जाता है, तब प्रत्येक कार्य तीर्थराज प्रयागसे उत्तम हो जाते हैं। तो क्या यह मेरी समस्त चर्या, जो केवल उसी मूर्तिको केन्द्रित कर सम्पन्न होती रहती है, वास्तवमें प्रयाग-सी पवित्र है! फिर यह अपवित्र आक्षेप सुनकर मेरा मन अभी-अभी संकुचित क्यों हो उठा था? यही 'मेम साहब' घरेलू कार्य सम्पन्न करने वाले अन्य कर्मचारी भी तो कह देते हैं, पर उससे मुझे हंसी आ जाती है और मैं उनसे 'बहूजी' ही बनाये रखनेको कहकर मुक्त हो जाती हूं; फिर वही शब्द यहां इतना तीखा क्यों हो उठा!"

इसीलिये कि मैं उस सीमासे बाहर लायी गयी हूं, जिसमें यह आजीवन बद्ध रही हैं।

"मैंने सुना है कि कभी आप भी बहुत परदेमें रहती थीं?"

मेरे पासकी एक अवगुंठनवती नव-वधने पूछा, जिसका मुख अपनी सीमासे असंतोष प्रकट कर रहा था। वह बड़ी ही जिज्ञासासे मेरी ओर देख रही थी।

"मैं न तो परदा ही करती थी और न अब परदेसे बाहर ही हूं। मेरी माताजी जब जीवित थीं या जबमें उनपर पूर्णरूपवे निर्भर थी, तब उनके आज्ञानुसार थीं; जब निर्भरताकी सीमा बढ़ी,तब आज्ञाएं भी नहीं मिलीं। उसीके अनुसार मैं आज हूं, इससे न तो मेरी अनुरक्ति थी और न विरक्ति।" मैंने कहा।

"आप तो कहानियां और कविताएं भी लिखती हैं?"

"कहां?"मैंने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा।

"यह तो मैं जानती हूं बहुत अच्छी तरह, आप आश्चर्य न दिखायें, मेरे खघरमें आपकी पुस्तक भी है—नगरके पथपर।"

"तब तो तुम ठीक जानती हो।"

वह उत्साहित होकर बोली—

"तो फिर मैं कैसे इस बोरेबंदीसे त्राण पा सकती हूं। क्या आप कुछ उपाय नहीं करेंगी?"

उसकी बड़ी-बड़ी आंखें दीनतासे मेरी ओर देख रही थीं, मेरा मन कसक उठा, उसकी इस पीड़ासे। मुगल साम्राज्यका नाश हो चुका, उसके बाद अंग्रेजी भी चले गये, पर उनकी पाशविकताएं अभी हमारे जीवनमें घर बनाये बैठी हैं। मैंने प्यारसे उसकी ओर देखा, वह असमर्थता-पूर्वक ही बोली—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


"आपको बताना ही होगा। मैंने भी परीक्षाएं दी हैं, हाईस्कूल पास करनेके बाद मेरा विवाह हुआ। यही तो उनकी शर्त थी।"

"तो उन्हींकी शर्तसे तुम स्वतंत्र भी होगी।"

"वह अब कुछ नहीं कर सकते, इसके लिये या तो मैं अलग हो जाऊं या उसीमें सड़ती रहूं, क्योंकि वह लड़ाई नहीं लेना चाहते मां से।"

यह लड़ाई भी लेना कितना भयानक होआ ह। अभी मैं भी तो विचलित हो उठी थी, इसी प्रतिवाद न करनेकी भावनासे पहले मैं घरपर ही बरगदकी डालियोंके दर्शन कर पुष्पाञ्जलि देकर व्रत समाप्त करती थी, पर आज मेरा मन साकार-वटवृक्षके दर्शनके लिये लालायित हो उठा। सवेरेसे ही, पूजनके सामान और पकवान बानाती तथा जुटाती रही। आते समय घर आ पहुंचे बच्चोंके पिताजी और सबोंको कहीं जानेको तैयार देखकर पूछा–

"इतनी दोपहरीमें कहां चढ़ाई करोगे, तुम सब ?"

"पासकी ही अमराईमें जो बट-वृक्ष है।"

"अच्छा, बटपूजा या वर-पूजा ?"

वह चटपट अपने कमरेमें आये और बोले–"इतनी धूपमें मैं भूखा-प्यासा घर आया हूं, तब सबसे अच्छी पूजा तो यही होगी कि भोजनालयमें चलकर स्वादिष्ट भोजन करें और ठंढी हवाके साथ ठंडा जल पीयें। यही तो इसका मुख्य उद्देश्य भी है, पर आप तो यह थाल लिये बस, भूख बढ़ाती.....।"

"तो मैं थाली परस देती हूं।"

"न, न!" वह कानपर हाथ रखते हुए बोले।

अरे, इस युगकी एक सावित्री मैं भी तो हूं। बिना सत्यवानजीको.....।"

'तब तो सावित्रीजीको अभी प्रतीक्षा ही करनी होगी।"

मैं बिना कोई उत्तर दिये उस बाल-टोलीमें जा मिली, जो अपनी आतुरता, टहल-टहलकर प्रकट कर रही थी।

"क्या आप कुछ उत्तर नहीं देंगी?" उसनें फिर पूछा।

"मेरा उत्तर ? शायद वह भी कुछ ऐसा ही हो, क्योंकि परिवारमें शान्ति बनाये रखना भी तो एक कर्तव्य है। यद्यपि यह प्रश्न व्यक्तिगत तुम्हारा ही नहीं, पूरे समाजका है, किन्तु यहांपर केवल तुम्हारा ही अंतर इसका आकांक्षी है, अतएव कुछ कहना, मेरे लिये अनधिकार चेष्टा होगी।"

उसने नैराश्यपूर्ण विरक्तिसे अपना वह मनोहर मुख फिर घूंघटमें ढंक लिया। मुझे लगा– यह अमाके परदेमें ढंका पूर्ण-चन्द्र क्या राहुग्रस्त न हो जायगा ? समाज-में अभी हाईस्कूल पास भी कितनी युवतियां हैं। मैंने उसे सांत्वना देते हुए कहा– सारे कार्य धीरे-धीरे ही होते हैं, यदि उन्हें अविराम गतिसे सम्पादित किया जाय। तुमने अच्छी शिक्षा प्राप्त की ह इसलिये तुम्हारा कर्तव्य साधारण बहनोंसे अधिक दायित्वका है, अतएव एकदमसे यदि परदेसे बाहर आ जाओगी तो शिक्षाके प्रति और भी अनादर बढ़ जायेगा और ये माताएं कभी अपने नक्कू होनेके लिये अपनी पुत्रियोंकी शिक्षा आगे बढ़ने न देंगी। इससे तुम उन्हींके कथनानुसार धैर्यपूर्वक उसकी प्रतीक्षा करो।

"आपने भी वही बात कही, जो 'वह' कहते हैं।"

"यह इसीलिये तो कि औचित्यकी भी एक विशेषता है। सीमामें ही असीम सिन्धु लहराता है और असीम होकर एक स्रोतास्विनी तुच्छ और अनुपादेय हो जाती है। यही जगतका विधोन है।"

अब वह फिरसे घूंघट उठाकर मुस्कराने लगी। प्रसन्नतासे चमकता उसका मुख बड़ा ही प्यारा लग रहा था, अतएव मैंने कह ही दिया –

"भला यह मुख पटमें छिपा ही रहने के लिये है ? नहीं जी ऐसा सहन करना, अपने मन-प्राण के ही साथ नहीं, ईश्वरकी अनन्त कलामयी चेतना और असीम अनुकम्पाके प्रति भी अन्याय होगा। भला उनके संयमको तो सोचो, जो एक शर्त रख कर विवाह कर सके हैं।"

उसके कपोलों पर वृत्ताकार लालिमा दौड़ गयी, जिसे मैं देखती ही रहना चाहती थी, पर मुझको वह सुयोग कहां तक मिलता! मुझे अपने ऐसे ही दिन फिर याद आये, जो अब बड़े ही मृदु प्रतीत होते हैं। मैं अपनी कोठरीके अंधेरेमें इसी प्रकार घूंघटमें बन्द चुपचाप बैठी सुना करती, जो मेरी माताजी अपनी इन्हीं बहनोंकी सभामें कहा करतीं–

"मेरा बेटा ऐसा मनचला या शोहदा नहीं है, जो बीबीको सिर पर चढ़ाये और नचाता फिरे। यही तो बात है, जो मेरी बहू अभी भीगी बिल्ली बनी रहती है, नहीं तो वह भी शेर हो जाय। मैं तो दस फटकारके बाद दो बातें करती हूं। अगर न सहे, तो मेरा बेटा एक दिनमें उसे ठीक कर दे।"

फिर वे चाचीजी, पड़ोसवाली मौसी और बुआजीकी ओर देखतीं, जो प्रत्येक क्षण अपने कान मेरी दीवारोंसे लगाये रहतीं। वे माताजीके जलते वाक्योंमें घृतका पुट देकर आहुतिकी पूर्ति किया करती थीं––

"हां, भई, बेटा तो इनका, जो कुछ पूछता तक नहीं कि घरमें क्या तुम करती हो क्या नहीं, क्यों तुम बिगड़ती हो क्यों नहीं। एक हमारा भाग है।"

फिर वे अपने दुर्भाग्यका रोना रोती हुई अपने सुनहले नीड़ोंको शाप और दुर्व-चनोंकी झड़ीसे नर्क बनाया करतीं। उधर मैं प्रातःसे रात तक यह सब कुछ सुनती हुई भी सर्वथा मौन रहती थी। मेरे मनमें भीषण तूफान उठता। बहुतेरे षड्यन्त्र उठते, रोते-रोते सिर दुखने लगता, पर प्रत्यक्ष कुछ कह सकना असम्भव था। आखिर किससे कुछ कहती ? उस उग्र मूर्ति मांजीसे या शान्त एवं निर्दोष, दिन भरके थके मांदे उनके हिमा-यतीसे, जो इससे सर्वथा अपरिचित ही रहते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कुछ दिन बाद यह सब एक अभ्यस्तताम-परिणत हो गया। मेरे निकट उत्तमोत्तम पुस्तकोंसे भरी उनकी आलमारियां थीं, अच्छी पत्र-पत्रिकाएं थीं, जिनसे परे कुछ सुनने समझनेका न तो अवकाश ही था, न रुचि।

इसी समय प्रकृतिने मेरे साथ असहयोग आरम्भ किया। शशवसे मैं पूर्ण स्वस्थ और पुष्ट शरीरके लिये अपनी बहनों में माननीया और माता-पिताके शब्दोंमें सुखी थी, किन्तु मेरा मन उसे सौभाग्य या सुख न मान कर अपना दुर्भाग्य ही समझता था, क्योंकि आये दिन उनकी बीमारियोंमें मांका विशेष प्यार, पिताजीका सतर्क उपचार मेरे स्वस्थ जीवनके लिये सर्वथा अलभ्य था। वही अलभ्यता मुझे यहांके उन ५ वर्षोंके बाद सुलभ होने लगी, जब कि अपने पुत्र चि० मयंक प्रतापकी मां बनी। पर वह सुलभता उतनी मधुर नहीं प्रमाणित हुई, जिसके लिये मैं आकांक्षी थी।

कारण मांजीकी धारणा थी कि मां बननेके कारण मुझमें जो 'उनका' आकर्षण अधिक हो गया है, वही इस बीमारी का मूल है। इसी भावसे वह अपने उस प्यारे खिलौनेको अभागा तक कहनेमें कोई संकोच न करती थीं। यद्यपि उन्हींके कथनानुसार वह उनकी भगवद्भक्तिका प्रतीक और साकार चांद खिलौना ही रहा, और जिसे एक क्षणके लिये भी मेरे पास नहीं छोड़ती थीं कि कहीं मैं उसे गोदसे गिरा न दूं, रुला न दूं और अपने अस्वस्थ शरीरसे रोगी न बना दूं।

बाहरसे आनेके उपरान्त जब उसके पिताजी बेखटके, बेशर्मीके साथ मेरे अस्वस्थ शरीरके बारेमें अपनी मांसे पूछने लगते, तब मांजी मुंह बनाकर यह कहनेसे कभी न चूकतीं :

"अगर मुझमें भी ऐसे चोंचले होते तो मैं भी तेरे जन्मके पश्चात् खाटकी पाटियां चटकाया करती।' अथवा "सात पूत की मां गली गली रोवे। एक पूतकी मां पलंग चढ़ी सोवे।" कह कर फिर कुछ और कहतीं।

मैं ऐसी घूंट पी पी कर नीरोग हो चली। घरमें कामके नामसे मेरी कोई भी आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि दासी थी, उससे जो बनता था, वह मांजी स्वयं कर लेती थीं। मुझे कुछ करनेकी न तो अनुमति ही थी और न आवश्यकता। बच्चेकी सेवा भी दूर थी, कुछ घरलू कार्य न होनेसे मेरी पूर्व परिचित चर्या—कुछ पढ़ना और कुछ लिखना— ही चलती रही। जो उसे लाख आंखें चुराने पर भी छिपी न रहती थी। पर इस अस्वस्थताने मुझे अपने उस आनन्दसे भी वंचित कर दिया। मेरी लेखनी, पुस्तकें, कापियां, सब कुछ ज्यों-की-त्यों बिखरी पड़ी थीं। उस समय सिर्फ कविताएं मैं लिखा करती थीं। न जाने क्यों, जीवनकी प्रथम-प्रथम उल्लसित चेतनाएं कविताकी पंक्तियों पर ही उतरना चाहती हैं। कहानियां भी लिखती पर उन्हें लिखनेके पश्चात् फाड़कर जला ही देती। हां, कविताएं गुनगुना भी लेती और कापियों पर उतार कर चुपचाप रख देती, जिस पर किसीकी लाल पेंसिल अपनी रेखाएं खींच देती और कहीं-कहीं प्रश्न चिन्ह बना देती।

मुझे उसमें उत्साह मिलता और मैं फिर आगे लिखती। यदि कभी वह दूसरा पृष्ठ रीता ही पड़ा रह जाता तो उस पर अनेक प्रश्न-चिन्ह बने मिलते और सबके नीचे दो नेत्र-चित्र खिंचे रहते और वह भी निमीलित।

अपनी खाट पर पड़ी-पड़ी मैं ऐसी सरस स्वस्थताका आनन्द ले रही थी। मेरी आंखोंसे एक परदा दूर हो चुका था और मैं अपने परदेवाले नेत्रोंसे उसे देख रही थी। अब मेरा पड़ा रहना मांजीके हृदयको न छिपा सका। वह अपनी उन प्रतिवेषिणी बहनोंसे चिन्तित होकर उपचार पूछतीं और वे जो कुछ बतातीं, चुपचाप उसी प्रकार सम्पन्न करतीं। कभी-कभी चिन्तित मुद्रामें मेरी खाट पर आ बैठतीं और मेरा सिर प्यारसे सहलाने लगतीं। स्नानके पश्चात् भगवान सूर्यसे हाथ जोड़कर मेरी स्वस्थताके लिये दीनतापूर्वक याचना करतीं।

मुझे उनकी इस दयनीयता पर बड़ी हंसी आती। मैं अपने ऊपर चादर तानकर जी भर कर मन ही मन हंसती।

कभी चौराहेके लिये सुन्दर फूलोंकी डालियां मालिन लाती, तो कभी बढ़िया धूप जलायी जाती। पर इन साधनोंसे 'वह' सर्वथा अपरिचित रहते। उनकी लायी औषधियां फेंक दी जातीं। क्यों? औषधियां डाक्टरी होती थीं, जो हमारे धर्मको नष्ट करनेवाली थीं! हां, चम्पा मालिनकी डाली और नाइन बुआकी धूनी अवश्य ब्रह्मत्वकी संरक्षिणी थी। कौन जाने, वह मुझे किस महत्ताके शिखर पर चढ़ातीं, यदि अचानक 'वह' छुट्टी लेकर समयसे बहुत पहले ही घर न आ पहुंचते। उस समय मालिन खड़ी किसी विचित्र देवीका नाम और पूजा बता रही थी।

भला उनकी यह बात नये फैशनेबुल को क्यों पसन्द आती? वह सीधे कमरेमें आ पहुंचे। दिन दहाड़े तमाम बड़ी-बूढ़ियों के खड़े रहते भी, मेरे ऊपरकी चादर उतारा फेंकी और छालोंसे भरा, मेरा शरीर देखा। चेहरेसे आश्चर्य और भय क्रोधकी विलगारियोंसे प्रकट हो रहा था। मालिन तो पहले ही भाग गयी थी, उन मौसी औरबुआ-चाचियोंसे भला यह अनाचार क्यों कर देखा जा सकता था? वे भी बाहर निकल गयी थीं। पर वह फैशनेबुल महाशय चीखते हुए मांके पास गये और बोले—

"इतनी भयानक बीमारी और यह मालिन! अब उसकी सूरत मेरे घरमें दिखाई देगी, तो तोड़ दूंगा पैर। मैं अभी डाक्टरको बुलाने जाता हूं।"

मांने सिर पर हाथ पटकते हुए कहा—"क्रिस्तान हो गये हो, बेटा! भला महारानीमें डाक्टर बुलाओगे? झौंस दूंगी उसका मुंह, जो आया तो।"

विचित्र परिस्थिति थी। बेटा भयानक बीमारी कह कर मालिनको लंगड़ा करने को तैयार, तो मां 'महारानी' बताकर बेचारे डाक्टरका मुंह झौंसनेको कटिबद्ध। मैं इस चीख-पुकारसे बाहर निकल आयी और बोली—

"न तो डाक्टर आयेंगे और न मालिन ही, मुझे पिताजीको बुलाकर दिखाइये। वह स्वयं एक अच्छे वैद्य हैं। मेरा उपचार कुछ-न-कुछ बताकर अपने घर ले जायेंगे, मैं वहां ठीक हो जाऊंगी।"

मांजीका मुख प्रसन्नतासे भर उठा, पर साथ ही एक धड़की भी सुनाई दी, जो मांजीको नहीं थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"हा, शर्म नहीं आती ऐसा कहते। मैं मर गया हूं, जो उपचार करानेको वहां जानेको तैयार हो ?"

"तब !"

"मैं तपालकी लाता हूं, चलो डाक्टरके यहां।"

"पालकी ? जिसपर मैं विवाहके भी अवसर पर नहीं बैठी।"

"तो इस महाजनी टोलेकी बनारसी, भूल-भुलैयासी चक्करदार गलीमें कौन सवारी आ सकेगी ?"

"मैं पैदल भी चल सकती हूं।"

मांझीने घूरकर देखा। मेरी साहसिकता हिरन हो गयी और मैं सिरसे पैर तक ढकी फिर ज्योंकी त्यों थी।

उसी दिन से वह बंधन शिथिल पड़ गया। उनका आदेश, डाक्टरके आदेशमें मिलकर, मेरी अस्वस्थताके प्रमाण-पत्रपर भला कबतक भाग सकता था? हां, मेरी दृष्टि उस धुंधले कमरेसे बाहर होने पर भी साफ नहीं रह सकी, सामनेकी वस्तुएं धुंधली दिखाई देने लगीं, सिरमें भयानक पीड़ा ने डेरा जमाया और फिर डाक्टर साहबने रंगीन किरणोंका खेल दिखाकर मोटे-मोटे शीशेका एक चश्मा मेरी आंखों पर चढ़ा दिया। अवगुंठनके इन पुरस्कारोंको पाकर भी, उसके विरोधमें मुंह खोलनेके लिये मैं अपनेको, अपनी इन बहनोंको, कुछ न कहनेके लिये ही अच्छा समझती हूं, यह मेरी कायरता नहीं तो क्या है ? किन्तु इस कायरताको दूर करनेवाले, क्यारीसे प्रगतिशील क्रान्तिकी आग मांगनेवाले कवि, साम्यवादी और स्वतंत्रताके प्रेमी नेता तथा स्वास्थ्यके ठेकेदार डाक्टर कुछ ऐसा उपाय न कर सकेंगे कि मेरी ये माताएं अपना व्यंग्य और प्रहार न बरसा कर अनुराग प्रदान करें। तब मेरे मनमें कोई कह सा उठा—

उनमें इतना साहस, इतना नैतिक बल कहां है, जो ऐसा उन्हें करनेको प्रोत्साहित करे।" मैंने देखा, उस उत्तप्त दोपहरीमें उन्हींकी मंगल-कामना लिये वह अवगुंठनवती बहनोंकी एक टोली चली जा रही है, जो मोड़के पत्थरसे टकराती, हाथ मलती अदृश्य ही होती जाती है।"

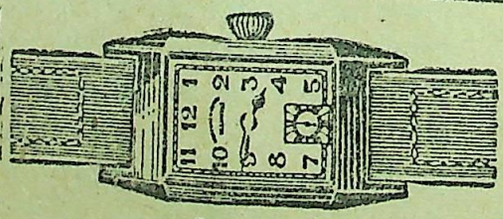

सेकण्डस
न्यू केलिवर रेक्टेंगुलर
९ कं० सालिड गोल्ड, प्लेन डायल--१४५

प्रत्यक 'वेष्ट-एण्ड' घड़ीके पीछे भारतके लिये उत्कृष्ट घड़ियोंके निर्माता के रूपमें हमारा ७५ वर्षोंका अनुभव है।

व्यवसाय में समयका महत्व

दफ्तरमें कारखानोंमें, मिलमें वस्तुतः सभी व्यापारिक, औद्योगिक और कर्म जीवनमें समयका सर्वाधिक महत्व है। पहुंचनेका समय, किसी कामके लिये जानेका समय और माल पहुंचानेका समय-सारा काम निश्चित समयानुसार होना चाहिये और प्रत्येक व्यक्तिके लिये, चाहे वह मालक हो या कर्मचारी, घड़ी आवश्यक है। निर्भरताको प्रथम स्थान देने वालोंके लिये 'वेष्ट एण्ड' सर्वोत्तम घड़ी है। हमलोग हर व्यक्तिकी पसन्द और सामर्थ्यके उपयुक्त नयी घड़ियां प्रदान करनेका शीघ्र आशा रखते हैं।

वेष्ट एण्ड वाच कं०
बम्बई व कलकत्ता

WEST END WATCH Co.
BOMBAY CALCUTTA


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वमित्र

सम्पादक—
प्रदीप

३१-२४ ७ जुलाई १९४८ JULY 7, 1948. मूल्य =) वार्षिक ६)


## वह मेरा इतिहास नहीं है!

श्री 'नीरज'

काल-बादलों से धुल जाये, वह मेरा इतिहास नहीं है!
गायक जग में कौन गीत जो मुझ-सा गाये
मैंने तो केवल हैं ऐसे गीत बनाये
कंठ नहीं, गाती हैं जिनको पलकें गीली
स्वर-सम जिनका अश्रु मोतिया, हास नहीं है
काल-बादलों से धुल जाये, वह मेरा इतिहास नहीं है!

मुझसे ज्यादा मस्त जगत में मस्ती किसकी
और अधिक आजाद अछूती हस्ती किसकी
मेरी बुलबुल चहका करती उस बगिया में
जहां सदा पतझर, आता मधुमास नहीं है।
काल- बादलों से धुल जाये, वह मेरा इतिहास नहीं है!

किसमें इतनी शक्ति साथ जो पांव धर सके
गति न पवन की भी जो मुझसे होड़ कर सके
मैं ऐसे अनंत पथ का पंथी हूं जिसको--
मंजिल पर भी रुकने का अवकाश नहीं है
काल-बादलों से धुल जाये, वह मेरा इतिहास नहीं है!

कौन विश्व में है जिसका मुझसे सिर ऊंचा
अभ्रंकष यह तुंग हिमालय भी तो नींचा
मेरे लोचन खुले पले हैं उस दुनियां में
जहां धरा तो है लेकिन आकाश नहीं है
काल-बादलों से धुल जाये, वह मेरा इतिहास नहीं है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# तूफानका सौन्दर्य

श्री शिवकुमार

---

लोल ये लहरें इन्हें तू कह रहा तूफान साथी !
भीत जिससे हो रहा है वह मृदुल मधु गान साथी !

उठ रही हैं लोल लहरें आज अम्बर चूमती-सी
कांपता तू वे किसीके प्रेम रसमें झूमती-सी
नील तनमें प्रति लहरके देखते घनश्याम चंचल
कह रहा जिसको प्रलय तू वह उदधिका स्नेह अंचल

ध्वंस का अभिशाप मत कह यह सृजन वरदान साथी !

मानता हूं है न दिखता है कहां साथी किनारा
श्याम चल जल भित्तियोंसे बन गयी है एक कारा
उठ रही हैं प्रबल लहरें चांदनी-सा भाग लेकर
आ रहे झोंके प्रबलतर एक कर्कश राग लेकर

किन्तु कर्कशकी मधुरताको तनिक पहिचान साथी !

आ रहा बांहें उठाये लहरियों मिस सिन्धु व्याकुल
बांह में भर ले हमें यह साध उसकी मृदुल मंजुल
तो भला भय कौन साथी प्यारको स्वीकार कर ले
छोड़ दे पतवार औ भय इस प्रलयको अंक भर ले

आज आतुर प्यार करनेको उदधि को प्राण साथी !

लहरियोंके वेगसे है आज अपनी नाव डगमग
और आतंकित हुआ तू मुंद गये हैं भीत हो दृग
पर भयानक है यहां क्या ? —भीत जिससे प्राण तेरे
घेरते हैं बस हमें तो बीचियोंके मंजु घेरे

हर लहर करती हमारा प्रेम से आह्वान साथी !

कह रहा जिसको प्रलय तू वह उदधिका प्यार जागा
आज मादकता लिये कुछ सुप्त पारावार जागा
नाचतीं उन्मत्त लहरें सिन्धुका तारुण्य जागा
देख तो माधुर्य साथी उदधिका लावण्य जागा

कह भले तूफान पर यह है बहुत छविमान साथी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर इन बस जिनके मनमाहीं ।
तिन कहुं जग दुर्लभ वछ नाहीं ।

# विश्वामित्र

## कांग्रेसी सरकारों का कार्य

"प्रान्तोंमें कांग्रेसके मन्त्री डेढ़ सालसे अधिकसे शासन कर रहे हैं । लेकिन अभी तक आम जनता---यानी किसान मजदूर वर्ग---के लाभकी एक भी योजनाको वे कार्यान्वित नहीं कर पाये हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि कांग्रेसपर आज पूंजीपतियोंका प्रभाव अधिक हो गया है । इसीसे समाजवादी दलने कांग्रेससे अलग हो जानेका निश्चय किया ।" ये विचार समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण पिछले दिनों अपने कई भाषणों और वक्तव्योंमें दुहरा चुके हैं। वे इस बात पर जोर देते हुए कहते हैं कि जनहितकी कोई भी योजना तब तक भलीभांति कार्यान्वित नहीं की जा सकती, जबतक समाजकी वर्त्तमान व्यवस्थामें सुधार न किया जाय । समाज-व्यवस्थामें सुधार या परिवर्तन किये जानेकी आवाज एक लम्बे अर्सेसे हम सुन रहे हैं, लेकिन सिर्फ आवाज बुलन्द करनेसे यह परिवर्तन या सुधार सम्भव नहीं । यह तो तभी सम्भव है जब कि सरकार इस दिशामें निर्भीकतापूर्वक कदम उठाये । लेकिन यह निर्भीकता तबतक नहीं दिखायी जा सकती, जबतक सरकार पर पूंजीवादी वर्गका प्रभाव बना रहेगा जबतक देशको स्वराज्य नहीं मिला था तबतक कांग्रेसको विदेशी सरकारके खिलाफ संयुक्त मोर्चा बनानेके लिए देशके सभी वर्गोंको मिलाकर चलना पड़ता था, लेकिन अब स्वराज्य मिल जानेपर उस नीतिमें परिवर्तन करना होगा, वरना देशके शोषित वर्गोंकी हालत सुधारनेमें सिर्फ विलम्ब ही नहीं होगा, बल्कि शासन सूत्र भी कांग्रेसके हाथोंसे निकल जानेका खतरा रहेगा ।

देशकी कोटि-कोटि जनतामें अन्न वस्त्र आदिके अभावको लेकर जो असन्तोष बहुत पहलेसे चला आ रहा है, वह स्वराज्य मिलनेके बाद और अधिक उग्र हो उठा है । कांग्रेसी सरकारोंकी कटु आलोचनाएं की जाती हैं । पहले तो कम्यूनिस्ट आदि कुछ वामपन्थी संस्थाएं ही कांग्रेसकी आलोचना करती थीं, किन्तु कलतक कांग्रेसमें रहे हुए समाजवादी भी अब कांग्रेसको कोसने और उसका छिद्रान्वेषण करनेमें तनिक भी कसर नहीं रखते । हालमें यू० पी० असेम्बलीके उपनिर्वाचनोंके सिलसिलेमें समाजवादी नेताओं और कार्यकर्त्ताओं ने जैसा प्रचार किया और जो रुख दिखाया उससे साफ जाहिर होता है कि यदि प्रांतों की कांग्रेसी सरकारें अपने तौर तरीकों और कार्य प्रणालीमें तुरन्त परिवर्तन न करेंगी, तो वे कांग्रेसकी प्रतिष्ठाको बहुत ही क्षति पहुंचायेंगी । शासन संचालनको लेकर मन्त्रियों और कांग्रेस संगठनोंके बीच तनातनी चलनेकी खबरें हम आये दिन समाचारपत्रोंमें पढ़ा करते हैं। एक ओर कांग्रेसी मन्त्री, अधिकार ग्रहण कर लेने पर, कांग्रेसके हस्तक्षेपसे अपनेको मुक्त समझने लगता है और वह यह पसन्द नहीं करता कि कांग्रेस एवं कांग्रेस जन उसके कार्योंमें दखल देते रहें। दूसरी ओर कांग्रेसजन अपने मन्त्रीको 'निरंकुश' रखना नहीं चाहते। और, यही तनातनी का कारण होता है । लेकिन यह स्थिति वांछनीय नहीं है । अब शीघ्र ही देशमें नया विधान जारी होगा और उसके लिए आम निर्वाचन होंगे, जिनमें बालिगोंको मता धिकार प्राप्त रहेगा । ऐसी हालतमें यदि कांग्रेसी सरकारें अपनी त्रुटियोंको सुधारनेकी चेष्टा न करेंगी, तो वे इससे कांग्रेस संगठनका प्रभाव घटे बिना न रहेगा भले ही उसके कुछ चोटीके नेता कितने ही त्यागी और देशभक्त क्यों न हों ।

सन्तोषकी बात है कि [illegible] ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है [illegible] भा० कांग्रेस कमेटीके जनरल सेक्रेटरी श्री शंकरराव देवने समस्त प्रान्तीय मन्त्रियोंसे अनुरोध किया है कि वे अपने कार्योंकी सारी रिपोर्ट उनके पास भेजें ताकि यह मालूम हो सके कि किस क्षेत्रमें उन्होंने कितना काम किया है । श्री देवने यह भी बताया है कि इससे केन्द्रीय पार्लमेण्टरी बोर्ड विभिन्न प्रान्तीय सरकारों के कार्योंमें सामंजस्य स्थापित कर सकेगा निस्सन्देह केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों की गतिविधि पर ध्यान रखना पार्लमेण्टरी बोर्डका परम कर्त्तव्य है, क्योंकि मन्त्रियोंके कार्योंके लिए जनताके सामने वही अन्तिम रूपमें जिम्मेदार है ।

## अपराध और अपराधी

"अगर मैं मजिस्ट्रेट होता तो किसी अपराधी बच्चेको, उसके कान ऐंठ कर, छोड़ देता । छोटे बच्चोंको जेल भेजना अवांछनीय है । उन्हें तो औद्योगिक गृहोंमें भेजना चाहिए और गतिविधिकी पूरी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए ।" ये उद्गार पश्चिम बंगालके गवर्नर डा० कैलाशनाथ काटजूने आल इंडियो कलकत्ता स्टेशनसे उस दिन अपने भाषणके सिलसिलेमें प्रकट किये । उनके भाषणका विषय था-अपराध और अपराधी । वस्तुतः अपराधीको न्यायालय द्वारा दण्ड दिये जाने का एकमात्र उद्देश्य यही होता है कि वह सुधर कर अच्छा नागरिक बन जाय। लेकिन जेलोंका रेकार्ड देखने पर पता चलेगा कि अबतककी व्यवस्थाएं इस उद्देश्यको पूरा करनेमें सर्वथा असफल रही हैं, जिसका मुख्य कारण यही है कि इस संबंधमें विदेशी सरकारका दृष्टिकोण भिन्न था। लेकिन अब उन पुराने तौर-तरीकोंमें आमूल परिवर्तन करना होगा । यदि कोई अपराधी जेलसे छूटनेके बाद दुबारा अपराध करता है, तो इसके लिए जेल-विभाग भी कम जिम्मेदार नहीं कहा जा सकता । इस अवधिमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपराधीके विचारोंमें ऐसा परिवर्तन आ जाना चाहिए, जिससे कि वह उस अपराधसे, जिसके कारण वह दण्डित हुआ है, घृणा करने लग। लेकिन अगर अपराधी बच्चा है तब तो उसे दण्ड देनेमें और भी अधिक सतर्कता रखी जानी चाहिए। स्पष्ट है कि बच्चोंके लिए जेलका वातावरण सर्वथा अनुपयुक्त है। इसलिए डा० काटजूने जेल-सुधारके संबंधमें जितनी बातें कही हैं, उन पर गम्भीरतापूर्वक गौर किया जाना चाहिए और न सिर्फ पश्चिम बंगाल, प्रत्युत भारतके सभी प्रांतोंकी सरकारोंको जेलकी वर्तमान व्यवस्थामें शीघ्र सुधार करना चाहिए।

## निजामपर चाप

भारत सरकारने हैदराबादके खिलाफ अभी तक युद्ध-घोषणा तो नहीं की है, लेकिन निजामको राहे रास्ते पर ले आने के लिए कुछ कड़ी कार्रवाइयां अवश्य की हैं। इधर यह तेज अफवाह थी कि निजाम सरकार विदेशोंसे शस्त्रास्त्र खरीद रही है और ये शस्त्रास्त्र वायुयानों द्वारा हैदराबाद पहुंच रहे हैं। अतएव भारत सरकारने निजामके भारत स्थित धन पर रोक लगा दी है और एक आर्डिनेंस जारी कर दिया है कि रिजर्व बैंक निजाम सरकारको कुछ भी न दे। साथ ही सोना, जवाहरात, करेंसी नोट आदिके हैदराबाद भेजने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। और, हैदराबादसे होकर वायुयानोंका जाना भी रोक दिया गया है। इतना ही नहीं, हैदराबादकी डेक्कान एयरवेज कंपनीका लाइसेंस भी रद्द कर दिया गया है। इधर थल मार्गों पर पहलेसे ही चारों ओरसे नाकेबन्दी जारी है। इस तरह बाहरी दुनियासे हैदराबाद का सम्बन्ध विच्छेद हो गया है। लेकिन इतने पर भी निजाम सरकारका दम ढीला होता अभी दिखायी नहीं दे रहा है। आखिर उसे कहांसे शक्ति मिल रही है? अतः भारत सरकारको अपनी शक्ति का प्रयोग इस हद तक पहुंचा देना चाहिए, जिससे कि निजामकी हेकड़ी तुरन्त बन्द हो जाय और वह घुटने टेक दे। न सिर्फ सारा देश, प्रत्युत विदेशी राष्ट्र भी बड़ी उत्सुकतापूर्वक देख रहे हैं कि हैदराबाद का सवाल कैसे और किस रूपमें हल होता है।

## श्री, जनाब और मिस्टर

आदर-बोधके लिए भारतीय नामोंके पहले 'मिस्टर' का प्रयोग गुलामीके दिनोंमें भले ही न खटकता हो, लेकिन अब स्वतंत्रता के वातावरणमें तो निस्सन्देह बहुत अखरता है। केन्द्र और प्रांतोंकी कांग्रेसी सरकारोंने इस संबंधमें कुछ नियम भी बनाये हैं। साधारणतः हिन्दुओंके लिए 'श्री' और मुसलमानोंके लिए 'जनाब' का प्रयोग किया जाने लगा है। लेकिन यह प्रयोग अभी तक अधिकतर सरकारी कागजात तक ही सीमित रहते हैं। अंग्रेजी और देशी भाषाओंके पत्र इसका विशेष ध्यान नहीं रखते। लेकिन इस तरहके मामलोंमें कोई भी प्रयोग तबतक भलीभांति प्रचलित नहीं हो सकता, जबतक पत्र-पत्रिकाएं साथ न दें। इस प्रयोग के संबंधमें पत्र-पत्रिकाओंमें एकरूपता सर्वथा वांछनीय है। लेकिन अभीतक होता क्या है? समाचार-एजेन्सियां आम तौर पर भारतीय नामोंके लिए भी अभी 'मिस्टर' का ही प्रयोग करती हैं, जिसके परिणाम स्वरूप अधिकांश अंग्रेजी पत्र उसीका अनुसरण करते हैं और देशी भाषाओंके पत्र भी, कुछको छोड़ कर, इस संबंधमें अपने लिए कोई पाबन्दी नहीं समझते। जहां तक भारतीय नामोंका संबंध है, हम तो सबके लिए एक 'श्री' का ही प्रयोग ठीक समझते हैं। लेकिन अगर मजहबी भावनाका खयाल रखते हुए मुसलमानोंके लिए 'जनाब' का प्रयोग उचित समझा जाता है, तो इसमें किसीको एतराज नहीं हो सकता। लेकिन 'मिस्टर' का प्रयोग तो अब सर्वथा अवांछनीय है। क्या ही अच्छा हो, यदि अंग्रेजी और देशी भाषाओंके पत्र इन प्रयोगोंके संबंध में एकरूपता कायम करें!

## गांवोंमें रेडियो

दूर देहातोंकी अशिक्षित और अर्धशिक्षित जनता देशकी राजनीतिक हलचलोंकी बहुत कम जानकारी रखती है। दैनिक पत्र भी वहां नहींके बराबर ही पहुंचते हैं। इसलिए केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारोंको देहातोंमें रेडियोके विस्तारकी योजना बनानी चाहिए। सरकारकी ओरसे प्रचारके नाम पर जो बहुत बड़ी रकम खर्च की जाती है, उसका कुछ हिस्सा यदि देहातोंके रेडियो-विस्तारमें खर्च किया जाय, तो इससे बहुत लाभ होगा। भावी भारतको गांवोंमें ही अपना महत्वपूर्ण पार्ट अदा करना है। जब तक गांवोंमें जागृति नहीं होगी, तब तक मुट्ठी भर शहरोंकी हलचल से वास्तविक लाभ नहीं हो सकता।

## ब्रिगेडियर उस्मानकी वीरगति

काश्मीरमें लड़नेवाली भारतीय फौजके कमाण्डर ब्रिगेडियर उस्मानने लड़ते मोर्चे पर वीर गति प्राप्त कर ली। काश्मीर की स्वतंत्रताके लिए इस वीर योद्धाका बलिदान सदैव सम्मानपूर्वक याद किया जायेगा। काश्मीरके मोर्चे पर अबतक भारतीय सेनाको जितनी सफलताएं मिली हैं, उसका श्रेय ब्रिगेडियर उस्मानके युद्ध-कौशल को ही है। वर्तमान स्थिति में अपने इस बहादुर सेना नायकको खोकर भारत अत्यंत दुःखी है। स्वर्गीय आत्माके प्रति हम अपना हार्दिक सम्मान प्रकट करते हैं हमें विश्वास है कि यह बलिदान भारत सरकारको प्रेरित करेगा कि काश्मीरके मोर्चे पर शीघ्र इतनी ताकत बढ़ा दी जाय कि जिससे आक्रमणकारियोंको भगा कर लड़ाई का शीघ्र अंत किया जा सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# काश्मीर-युद्ध और भारत

श्री प्रभुदयाल अग्निहोत्री

भारतीय इतिहासके प्रारम्भमें काश्मीर भारतका अविच्छेद्य अंग रहा है। 'काश्मीर' शब्दके उच्चारणसे ही प्रत्येक भारतीयके मस्तिष्कमें कविता, कला और सौन्दर्यकी कल्पना अनायास जाग्रत हो उठती है। 'राजतरंगिनी' जैसे ग्रन्थोंकी निर्माण-भूमि, कश्यप और मरीचि जैसे ऋषियोंका तपःक्षेत्र काश्मीर सुदीर्घकालसे प्रत्येक कलाविद् और विचारकके लिए आदरास्पद रहा है। प्रति वर्ष बड़ी संख्यामें लोग इस भूस्वर्गका दर्शन करने जाते हैं। संस्कृत और प्राकृतमें ही नहीं, प्रायः सभी आधुनिक भारतीय भाषाओंमें काश्मीर-पुष्पमापर सुन्दर कविताएं लिखी गयी हैं।

काश्मीरको साम्प्रदायिक घृणा और वैमनस्यसे मुक्त रखने—नहीं, मुक्त करनेका श्रेय एकमात्र शेख अब्दुल्लाको दिया जाना चाहिये। १९३५ में उन्होंने मुसलिम कानफरेंसको नेशनल कांग्रेसके ढांचे में ढालना प्रारम्भ किया और मार्गमें आनेवाली सभी विघ्न-बाधाओंका सामना करनेकी घोषणा की। सन् १९३६ में कानफरेंसने पूर्ण उत्तरदायी शासनको अपना लक्ष्य घोषित किया और बड़ी संख्यामें मुस्लिम, गैर मुस्लिम किसान मजदूर कानफरेंसके झण्डेतले संगठित होने लगे। २८ जून १९३८ को कानफरेंसकी कार्यसमितिने ५२ घण्टेकी बहसके बाद एक प्रस्ताव पास किया, जिसमें कहा जाति-पांति और धर्मका भेद रखे बिना कानफरेंसकी सदस्यताका द्वार प्रत्येक काश्मीरीके लिए उन्मुक्त कर देनेकी सिफारिश जनरल कौंसिलसे की गयी। फलस्वरूप: ११ जून १९३९ को मुस्लिम कानफरेंस तोड़ दी गयी और उसके स्थानपर जम्मू काश्मीर नेशनल कानफरेंसकी सृष्टि हुई, जिसके प्रथम अध्यक्ष चुने गये ख्वाजा गुलाम सादिक।

कानफरेंसके १९४५के अधिवेशनमें मौलाना आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खां और पण्डित नेहरू भी उपस्थित थे। उनके भाषणोंने जहां काश्मीरके स्वतंत्रता आन्दोलनमें प्राण फूंके वहां भारत और काश्मीरके सम्बन्धको भी दृढ़तर बना दिया। इसी बीच देशी राज्य प्रजा परिषदका अधिवेशन हुआ। पंडित नेहरू इसके अध्यक्ष थे। परिषदने काश्मीरके सम्बन्धमें भी एक प्रस्ताव पास किया जिसे तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० काकने 'थोथा और गम्भीरतारहित' बतलाया। और उन दिनों जबकि कानफरेंस गरीबी और दासतासे पीड़ित काश्मीरियोंकी सेवा करना चाहती थी, पं० काकने मि० वेगके विभागीय कार्योंमें यहां तक हस्तक्षेप करना प्रारंभ किया कि विवश होकर उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। पं० नेहरूने इस अन्यायकी कड़े शब्दोंमें निन्दा की।

नेशनल कानफरेंसने मंत्रिमिशनके सम्मुख भी एक मेमोरंडम उपस्थित किया, जिसमें उसने कहा—"आज काश्मीरी जनता की राष्ट्रीय मांग केवल उत्तरदायी शासन की स्थापना ही नहीं है, अपितु वह डोगरा हाउस के एकतंत्रीय शासनसे सर्वथा मुक्ति की मांग करती है।" यह मांग अंग्रेजों और डोगरा शासकके बीच हुई अमृतसरकी सन १८४६की उस सन्धिके विरुद्ध थी जिस के अनुसार काश्मीरको ५० लाख रुपयों में बेचा गया था। आगे चलकर इसी मांगने "काश्मीर छोड़ो" नारेका रूप पकड़ा।

"काश्मीर छोड़ो" आन्दोलनके सम्बन्धमें शेख अब्दुल्ला पण्डित जवाहर लाल नेहरूसे परामर्श करने दिल्ली आ रहे थे कि वे रास्ते में श्रीनगरसे १०० मीलकी दूरीपर २० मई १९४६ को गिरफ्तार कर लिये गये और सम्पूर्ण काश्मीर घाटी फौजके अधिकारमें दे दी गई। बख्शी गुलाम मुहम्मद और एम० ए० सादिक राज्यसे बाहर निकल भागे और बाहरसे आन्दोलन चलाने लगे। २१ मईके बाद काश्मीरमें लाठी, गोली और अश्रुगैस का साम्राज्य कायम हो गया। लोगोंको 'महाराजा बहादुरकी जय' का नारा लगाते हुए लगड़ोंकी तरह उछल उछल कर एक टांग चलनेको विवश किया गया। बूढ़े और प्रतिष्ठित नागरिकोंको राइफल के बलपर रेंग रेंग कर चलनेको बाध्य किया गया। वकीलों, प्रोफेसरों और कहीं कहीं सरकारी नौकरों तक से सड़कें झड़वायी गयीं। इस प्रकार ये अत्याचार पंजाब हत्याकाण्डकी समकक्षताको पहुंच गये। स्त्रियों तकको गोलियोंसे भून दिया गया।

शेख अब्दुल्लाकी गिरफ्तारीके बाद पं० नेहरूकी काश्मीर-यात्रा उनकी गिरफ्तारी और किया गया कुंदे का वार अभी तक जनताको अच्छी तरह याद है। अकेले काश्मीरमें इस सिलसिलेमें ७०० गिरफ्तारियां हुईं, किन्तु ४ बच्चोंकी मां बेगम अब्दुल्ला और शेख मुहीउद्दीनन आन्दोलनको जीवित रखा। शेख अब्दुल्ला को ९ वर्षकी सजा हो जाने पर भी आन्दोलनमें शिथिलता नहीं आयी। मुस्लिम लीगियों और प्रधानमंत्री पण्डित रामचन्द्र काकका सम्मिलित षड्यंत्र भी, जिसमें आन्दोलन को साम्प्रदायिक रूप देने और भारतीय हिंदुओंको उभाड़नेमें कोई कोरकसर न रखी गयी, इस आन्दोलनको समाप्त न कर सका।

अगस्त १९४७में महात्मा गांधी प्रथम बार काश्मीर गये। पण्डित काकने सब कुछ प्रयत्न किया कि गांधीजी महाराजासे न मिल सकें, किंतु वे इसमें सफल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



न हो सके। इस भेंटके उपरान्त ही शेख अब्दुल्लाको मुक्त कर दिया गया और पं० काकको अपने स्थानसे हटना पड़ा। नेशनल कानफरेंसकी यह बड़ी भारी विजय थी। कानफरेंसके स्वयंसेवक और स्वतंत्रताकी प्यासी जनताहजारोंकी संख्यामें सफेद दलके चिन्हवाला लाल झंडा लिये सड़कों पर 'शेरे काश्मीर जिन्दाबाद' के नारे लगाती घूमने लगी। काश्मीरसे लौटते हुए स्वयं महात्मा गांधीने कहा था:—

"काश्मीरमें मुसलमानोंका बहुमत है। शेख अब्दुल्लाने उनमें काश्मीरके प्रति राष्ट्रीय भावना भर दी है। काश्मीरियों की एक ही भाषा और एक ही संस्कृति है और जहां तक मैं समझ सका हूं, वे एक ही कौम हैं। मैं काश्मीरी हिंदू और मुसलमानको शीघ्र पहचान भी नहीं सका। बड़ी सभा में भी मेरे लिए यह पता लगा सकना कठिन था कि उसमें हिंदू अधिक हैं या मुसलमान। मुझे यह कहते तनिक भी हिचकिचाहट नहीं कि काश्मीर और जम्मूमें जनताकी इच्छा ही सबसे बड़ा कानून है।

अमृतसरकी संधि तो एक बिक्री-नामा है। कानूनी पेचीदगियोंमें उतरे बिना मुझे लगता है कि साधारण बुद्धिका तकाजा है कि काश्मीरी जनताकी इच्छा ही काश्मीर और जम्मूका भाग्य निर्माण करे।"

फिर भी साम्प्रदायिकताकी आगने भारतके अनेक विचारकोंको इस ओर निष्पक्ष दृष्टिसे न देखने दिया। पंजाबके हिंदू महासभावादियोंने तो सक्रिय रूपसे कानफरेंसका विरोध किया। पं० रामचन्द्र काककी चाल बहुत कुछ कारगार भी हुई और हिंदू राजाकी रक्षाके लिए शेख साहब पर सम्प्रदायवादिताके गन्दे लांछन तक लगाये गये। लेकिन जेलसे मुक्त होनेके बाद शेख साहबने अपने प्रथम भाषणमें ही दो राष्ट्रोंके सिद्धांतकी निन्दा की। उन्होंने उत्तरदायी सरकार बनाने पर जोर दिया और कांग्रेसमें आस्था प्रकट की। इस समय तक देशका विभाजन हो चुका था और राज्यकी ओरसे पाकिस्तान के साथ 'यथा पूर्व समझौता' हो चुका था।

काश्मीर पर आक्रमणके कुछ दिन पूर्व ही पं० रामचन्द्र काकके स्थानपर श्री मेहरचन्द महाजनकी नियुक्ति हुई थी, पर उन्हें काश्मीरकी वस्तु स्थितिका ज्ञान नहीं था। नियुक्तिके तुरंत बाद आपने एक वक्तव्य द्वारा काश्मीरमें उत्तरदायी सरकार स्थापित करनेका विरोध किया और कहा कि अभी काश्मीरकी जनता में इतनी दृढ़ता और परिपक्वता नहीं आयी है कि वह शासनका उत्तरदायित्व सम्हाल सके।

आक्रमणका जोर बढ़ता गया। एक ओर बिग्रेडियर राजेन्द्र सिंह शत्रुओंका वीरतापूर्वक मुकाबिला कर रहे थे, दूसरी ओर श्रीनगरमें नागरिक शासन समाप्त हो चला था। मुस्लिम कानफरेंसके कार्यकर्ताओंने काश्मीरको धोखा देकर आततायी आक्रमणकारियोंका साथ दिया। ऐसे समय नेशनल कानफरेन्सके स्वयंसेवकोंने काश्मीरकी रक्षाका उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लिया। तबसे आज तककी घटनाएं इतनी ताजा है कि उनकी आवृतिकी आवश्यकता नहीं।

आज हमारे सम्मुख प्रश्न है कि हम क्या करें? क्या काश्मीरके सम्बन्धमें हमारा कोई कर्तव्य है? क्या इस सम्बन्धमें हमें केवल सरकार पर निर्भर रहना चाहिए?

इसके लिए आवश्यक है कि पहले इस बातका उत्तर दिया जाय कि काश्मीरके युद्धमें भारतका उत्तरदायित्व क्या है और क्यों? हम सब जानते हैं कि काश्मीर में भारतीय सिपाहियोंकी बलि बराबर कई महीनोंसे चढ़ रही है और भारतका पैसा पानीकी तरह बह रहा है। उसके पास युद्धका बोझ वहन करनेकी सामर्थ्य नहीं है।

काश्मीरके युद्धमें तीन पार्टियां स्पष्ट ही सम्मिलित हैं और तीनोंके अलग अलग स्वार्थ हैं। पहले काश्मीरकी जनताको लीजिये। उसके लिए यह जीवन-मरणका प्रश्न है। यदि काश्मीरकी उपत्यका पर कबाइलियोंका प्रभुत्व स्थापित हो गया तो काश्मीरी किसानका भाग्य सदाको सो जायगा। काश्मीरका प्रदेश सभी दृष्टियोंसे सुन्दर और उपयोगी है, दूसरी ओर कबाइली प्रदेश बीरान और निरुपयोगी, जहां घासकी एक पत्ती तक नहीं उगती। काश्मीरी जनता भली भांति जानती है कि कबाइलियोंके अधिकार के बाद उसकी भूमि, पशु और-चर सम्पत्ति का क्या होनेवाला है। बारामूलामें उसने इसे प्रत्यक्ष देख लिया है। कबाइली पठानको यह कह कर भेजा ही गया है कि यदि उसने काश्मीरमें विजय प्राप्त कर ली तो वह मनचाही भूमिका मालिक बन जायेगा और उसका भाग्य चमक उठेगा। इसलिए काश्मीरी जनता को इस युद्धमें उसका कर्तव्य बतलानेकी आवश्यकता नहीं।

दूसरी पार्टी जो इस युद्धमें सम्मिलित है, वह है पाकिस्तान। पाकिस्तानका प्रत्येक निवासी जानता है कि इस युद्धमें उसका क्या स्वार्थ है। पाकिस्तान रेडियोने इस कार्यमें बड़ी सहायता की है। पाकिस्तानी अपना पहला कर्तव्य समझता है ३० लाख मुसलमानोंको डोगरा-शासनसे मुक्ति दिलाना। पाकिस्तान रेडियो दिल्ली और पूर्वी पंजाबकी घटनाओं को दोहरा दोहरा कर काश्मीरमें मुसलमानोंकी आसन्न विपत्तिकी घोषणा करते नहीं थकता। वह सुरक्षा तथा आर्थिक दृष्टिसे काश्मीर के महत्वपर जोर देता है। पश्चिमी पंजाब का मुसलमान यह भी समझता है कि उसकी भूमि का उपजाऊपन चिनाब और झेलमके पानी पर निर्भर करता है, जो काश्मीरसे गुजरती है। यदि काश्मीर अपने कारण उनका मार्ग बदल दिया तो एक वर्षमें ही सारा पश्चिम पंजाब ऊसर हो

(शेष ३० पृष्ठ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भारतीय पार्लमेण्टकी सार्वभौम सत्ता

श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

प्रस्तावित भारतीय विधानका मसविदा देखनेसे यह यह सूचित नहीं होता कि इस विधानके निर्माता वस्तुतः भारतीय यूनियनकी गवर्नमेंटका रूप संघात्मक या फेडरल रखना चाहते हैं। इसकी रचनासे मालूम होता है कि वे वस्तुतः हृदयसे संयुक्त राज्य यूनिटरी गवर्नमेंट चाहते हैं। पर पिछले तीस सालोंमें ब्रिटिश प्रचार और अकेन्द्रीकरण तथा विघटनात्मक प्रवृत्तियोंके कारण संविधानमें जो कुछ मिला है, उसके कारण वे भारतीय राज्यको संघराज्य बनानेको बाध्य हैं। पर उनका यत्न इसी बात के लिए है कि भारतीय पार्लमेंट की सत्ता सर्वोच्च और अबाधित रहे।

सातवें परिशिष्टकी नयी सूचीमें वर्णित विषयोंको छोड़कर भारतीय पार्लमेंटको शेष सब विषयोंमें कानून बनानेका नियामक अधिकार प्राप्त है। भारतीय पार्लमेंटका यह अधिकार अप्रतिहत और निरंकुश है। स्टेटों—नये विधानमें प्रान्तोंको जो नाम दिया गया है और इसी संज्ञासे जिनको अभिहित किया गया है—को कानून बनानेका सीमित क्षेत्रमें जो नियामक अधिकार दिया गया है वह गम्भीर आपत्ति के समय राष्ट्रीय हित जब इसकी अपेक्षा करे, तब ये अधिकार भी स्टेट भारतीय पार्लमेंटकी सर्वोच्च और सार्वभौम सत्ताको मानने के लिए बाध्य हैं।

प्रथम भागके प्रथम परिशिष्टमें स्टेटके नियामक क्षेत्रके अन्तर्गत आनेवाले विषयोंकी सूची दी गयी है और इस प्रकार स्टेटके नियामक क्षेत्रकी सीमा निर्धारित कर दी गयी है। भारतीय पार्लमेंटने स्टेटोंको आत्मशासन देनेके उद्देश्यसे अपनी इच्छासे इस सीमातक प्रतिबन्ध लगाया है। सच्चे अर्थोंमें प्रस्तावित विधान का रूप संघ-राज्यका नहीं है, जहां कि दो या दोसे अधिक घटकोंने स्वेच्छा से अपने अधिकारोंका परित्याग करके यूनियन या संघका निर्माण किया है।

### प्रभुत्व शक्ति

भारतीय पार्लमेंटमें प्रभुत्व शक्ति निहित है। इसको कोई भी कानून बनानेका अधिकार है। स्टेटोंके लिए जो क्षेत्र निश्चित किया गया है, वह भारतीय पार्लमेंटने स्वेच्छासे अपने उपर प्रतिबन्ध लगाया है और आत्मसंयमका परिचय दिया है। पर प्रदत्त विषयोंपर भी भारतीय पार्लमेंटका नियंत्रण है और यही बात सूचित करती है कि कानून बनानेकी सर्वोच्च सत्ता भारतीय पार्लमेंटमें है। यह बात भारतीय पार्लमेंट स्टेटों की धारा सभाओंकी पारस्परिक समानताको नष्ट कर देती है। राज्य परिषद अनार्थिक बिल छः मास तक और आर्थिक बिल ३० दिन तक रोके रख सकती है। इसके सिवाय कानून बनाने और नियामक अधिकारोंपर उसका कोई प्रभाव नहीं है। इसका एकमात्र महत्व यही मालूम होता है कि इसको अतिरिक्त क्रियामक और कानून बनानेका अधिकार है। यह उपस्थित सदस्योंके दो-तिहाई सदस्योंके वोटों द्वारा पास किये गये प्रस्ताव द्वारा कह सकती है कि स्टेट -सूचीमें दिये गये विषयोंपर राष्ट्रीय हितको दृष्टिमें रखते हुए भारतीय पार्लमेंट द्वारा कानून बनाना उचित है। पर एक बार यह प्रस्ताव पास कर देनेके बाद उसके पास इसके नियंत्रण या नियमनका कोई अधिकार नहीं है और यदि लोक-सभा उसके स्वीकृत प्रस्तावके अनुसार कार्य न करे तो उसके अनुसार कार्य करानेकी उसके पास कोई सभा नहीं है। राष्ट्रपति और स्टेटके गवर्नरोंपर अभियोग लगानेका अधिकार राजपरिषद्को दिया गया है। इस न्यायदानका अधिकार मिल जानेसे इसका गौरव बढ़ गया है।

### राष्ट्रपतिको वीटोका अधिकार

इंडिया एक्ट १९३५ में जिस प्रकार गवर्नर जनरलको 'वीटो' का अधिकार प्राप्त था और उनके इस अधिकारका अतिक्रमण करनेके लिए कोई मैशीनरी नहीं थी, उसी प्रकार नये प्रस्तावित विधानमें भी राष्ट्रपतिको 'वीटो' का अधिकार दिया गया है और उनका यह अधिकार अप्रतिहत है, सत्ता अबाधित है। राष्ट्रपतिके "वीटो" अधिकारको अतिक्रमण करनेवाली कोई सत्ता नहीं है, कोई मशीनरी नहीं है। स्टेटका गवर्नर स्टेट धारा सभा द्वारा —जहां एक ही धारा सभा है— दो बार पास किये गये बिलपर स्वीकृति देना नहीं रोक सकता। यदि धारा सभा कोई बिल या प्रस्ताव पास करती है और गवर्नरके पास वह विधि अनुसार स्वीकृतिके लिये जाता है और वह उसको पुनर्विचारके लिए धारासभाके पास भेज देता है और वह पुनः उसको पास कर देती है तो गवर्नर उसपर अपनी स्वीकृति देनेसे इन्कार नहीं कर सकता। पर जहां स्टेटमें दो धारा-सभाएं हैं वहां ऐसी स्थितिमें क्या करे यह विधानके मसविदेसे स्पष्ट नहीं होता। गवर्नर एक ही अवस्थामें बिलपर स्वीकृति देनेसे इन्कार कर सकता है, यदि वह इस बिलको राष्ट्रपतिकी स्वीकृतिके लिए रोक ले। इस अवस्थामें राष्ट्रपतिपर यह निर्भर है कि वह उसपर अपनी सहमति दे या नहीं दे। इन सबका परिणाम एक ही है कि राष्ट्रपतिका वीटो अन्तिम 'फाइनल' है। यह स्थिति असन्तोषजनक और उद्वेकजनक है। एक व्यक्तिको — चाहे वह जितना ही भला महान् और असाधारण गुणोंका क्यों न हो, धारा सभा द्वारा लम्बे विचारके बाद स्वीकृत बिलको नामंजूर करनेका अधिकार देना जनतन्त्रके सिद्धान्तोंके प्रतिकूल है, जिसकी स्थापनाकी विधानकी भूमिकामें घोषणा की गयी है।

### उच्च नियुक्तियां

अत्यन्त गम्भीर राष्ट्रीय संकटके समय राष्ट्रपति निरंकुश शासक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



डिक्टेटर बना दिया गया है। यद्यपि इसका काल सीमित होगा, पर अल्प अवधिके लिए राष्ट्रपतिको यह अधिकार देना कि वह नागरिकके मूलभूत नागरिक अधिकारोंकी रक्षाकी गारण्टी पानेका अधिकार स्थापित कर दे, सुप्रीम कोर्ट और अन्य अदालतोंको 'रिट' जारी करनेके अधिकार से वंचित कर दे, उसको एक निरंकुश शासक बना देता है।

राज्यके उच्च अधिकारियोंकी नियुक्ति का राष्ट्रपतिको व्यापक अधिकार दिया गया है। अत्यन्त व्यापक क्षेत्र है, जहां वह अपनी इच्छासे नियुक्तियां कर सकता है। उसके इस अधिकार पर कोई वैधानिक प्रतिबन्ध नहीं है। बस इतना ही प्रतिबन्ध और नियन्त्रण है कि वह इन नियुक्तियोंको करते हुए अपने मन्त्रिमण्डलकी सलाह और सहायता लेगा। पर इसकी प्रकृति और इसके प्रभावका भी स्पष्ट रूपसे उल्लेख नहीं है।

विधानकी जनसत्तात्मक प्रवृत्तिकी रक्षाके लिए राष्ट्रपतिके व्यापक और असीम अधिकारोंकी मर्यादा बचानेके लिए एक सुरक्षा कमेटी (सेफ्टी क्लब) की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीकाका प्रेसिडेण्ट उच्च अधिकारियोंकी नियुक्ति सीनेटकी सलाह और सहमतिसे करता है। अमरीकी प्रेसिडेण्टकी 'वीटो' करनेकी शक्ति पर सीनेटके दो-तिहाई सदस्योंकी सहमति अतिक्रमण कर सकती है। अमरीकाके समान भारतीय विधानमें भी राज्य परिषदको राष्ट्रपतिके 'वीटो' अधिकारका अतिक्रमण करने और उच्च अधिकारियोंकी नियुक्तिके लिए 'पैनल' सुझाने का अधिकार दिया जा सकता। राज्य परिषदके सदस्योंके अनुभव, उनकी बुद्धिमत्ता और उनकी राजनीतिज्ञता पर बहुत भरोसा किया गया है। इसी कारणसे उन्हें राष्ट्रपति और स्टेट गवर्नरों को अभियोग सुननेका अधिकार दिया गया है। इसलिए उनको यह और दो अधिकार देना अयुक्ति युक्त न होगा।

अनावश्यक

स्टेटकी वारिष्ठ-सभाके सदस्योंकी संख्या निम्न धारा-सभाके सदस्योंकी कुल संख्याके एक या चौथाईसे अधिक नहीं हो सकती। फलतः स्टेटके नियामक क्षेत्र पर इसका कोई प्रभाव न होगा। आर्थिक और अनार्थिक बिलोंके सम्बन्धमें इसके अधिकार अत्यन्त सीमित हैं। राज्य परिषदको जो अधिकार प्राप्त हैं, वे अधिकार भी इसको प्राप्त नहीं हैं। इसलिए किसी स्टेटका वरिष्ठ सभा रखना न केवल व्यर्थकी चीज है, पर विलासिता है।

स्टेटकी असेम्बलीका कोई भी ऐसा व्यक्ति सदस्य नहीं हो सकता, जो २५ साल की उम्र का न हो और ३५ सालकी आयुसे कमकी कोई भी व्यक्ति वरिष्ठ सभाका सदस्य नहीं हो सकता। भारतीय पार्लमेण्ट की लोक सभा और राज्य परिषदके सदस्योंके लिए भी कोई आयुका प्रतिबन्ध है, ऐसा नहीं मालूम होगा। यह कुछ अद्भुत बात मालूम होती है कि भारतीय पार्लमेंटका सदस्य होनेका अधिकारी व्यक्ति स्टेटकी धारा सभाका सदस्य न हो सके। इसका परिणाम यह होगा कि पिट सदृश २२-२३ सालका क्षमतावान् और प्रतिभाशाली युवक भारतका प्रधान मन्त्री हो सकेगा, पर स्टेट धारा सभाका सदस्य न हो सकेगा। विधानकी इस विसंगतिका अन्त होना चाहिए।

विधानमें कहा गया है कि मन्त्रियों को गवर्नर नियुक्त करेगा और वे उसकी प्रसन्नता और इच्छा तक अपने पद पर रहेंगे। यहां तक शासन समितिकी स्थिति स्टेट और यूनियन गवर्नमेंटमें एक समान है। पर धारा ६२ (३) के अनुसार यूनियन गवर्नमेंटके मंत्रिगण पार्लमेंटके प्रति उत्तरदायी हैं। वैधानिक काननकी परिभाषामें यह पार्लमेंटरी एक्जीक्यूटिव है। पर स्टेट के मन्त्रियोंके लिए कोई व्यवस्था नहीं और स्टेट एक्जीक्यूटिव नन पार्लमेंटरी है।

स्पष्ट नहीं

विधानके सातवें परिशिष्ट में स्टेट के विषयोंकी सूचि दी गयी है। प्रश्न यह है, क्या इस सूचिमें वर्णित और निहित विषयोंके बिल को गवर्नर राष्ट्रपतिकी स्वीकृतिके लिए रोक सकता है। यदि इसका उत्तर हां में हो तो स्टेटकी सार्वभौमत्व शक्ति पर यह एक और आक्रमण है और यूनियन गवर्मेण्टके अधिकार और नियन्त्रण क्षेत्रका विस्तार है। राष्ट्रीय संकटके समय और राज्य परिषद के उपस्थित दो-तिहाई सदस्योंके प्रस्ताव और सहमतिसे स्टेटको प्रदत्त विषय में कानून बनानेका अधिकार होनेसे यूनियन गवर्मेण्टको पहले ही स्टेट के नियामक क्षेत्र पर नियन्त्रण प्राप्त है।

विधानकी धारा तीनके अन्तर्गत विषयोंपर हाईकोर्टके निर्णयके विरुद्ध सुप्रीम कोर्टमें उस समय तक अपील नहीं की जा सकती जबतक कि हाईकोर्टसे सार्टिफिकेट न प्राप्त हो जाय। प्रीवी कौंसिलको न्याय क्षेत्रमें जो अधिकार प्राप्त था उससे कम सुप्रीम कोर्ट को देना उचित नहीं कहा जा सकता। देश के सर्वोच्च न्यायालय पर इस प्रकार कीलगा और इस प्रकारका प्रतिबन्ध लगाना जनताके मनमें न्यायके प्रति विद्यमान श्रद्धाको घटाना है।

अदालतोंकी कार्यविधि और व्यवहार के विषयमें कानून बनानेका कार्य धारा सभा के लिए छोड़ कर उचित ही किया गया है। पर विधानके मसविदेमें कुछ बातोंके सम्बन्धमें शासनादेशात्मक बातें कहीं नहीं हैं! यथा-फौजदारी काननका पहलेकी बातों पर प्रभाव, एकही अपराधके लिए एक व्यक्तिको दुबारा दण्ड नहीं दिया जायगा, अभियुक्त को अपने विरुद्ध गवाही देनेके लिए बाध्य न किया जायगा इस सूचिमें यह भी सम्मिलित किया जाना चाहिए था कि जरी द्वारा मुकदमा सुना जायेगा और ऐसे कार्यके लिए, जिसमें दो या दो से अधिक अपराध हों, एकही मकदमा चलाया जायेगा। जरी द्वारा अभियोग की सुनवाई होनेकी बात कमसेकम विधानके अन्दर शासनादेशात्मक बातोंमें अवश्य सम्मिलित कर देनी चाहिये।

अदालतोंभाषाका रिकार्ड किस भाषा में रखा जायगा, इस विषय में विधान मूक है और उसने कोई निर्देश नहीं दिया है। देशकी विभिन्न अदालतों और विभिन्न प्रांतों हाईकोर्टोंकी एक भाषा होना आवश्यक है। इससे जहां देशकी एकता दृढ़ होगी वहां सारे देशमें एकही न्यायप्रणाली बनाये रखने में मदद मिलेगी। सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्टका निर्णय एक ही भाषा में सुलभ जाना और दरज हो जाना चाहिए। इससे एक ही तरहके मकदमे और अभियोगों में विभिन्न निर्णय दिये जानेकी सम्भावना अन्त हो जायगा और एक ही काननका विभिन्न प्रांतोंमें विभिन्न अर्थ और विभिन्न व्याख्या न की जा सकेगी। इसलिए देशकी उच्च अदालतोंकी एक भाषाका होना आवश्यक है। यह भाषा कौन सी हो, यह विवादका विषय नहीं है। हिन्दीके अतिरिक्त और दूसरी भाषा इसके लिए उपयुक्त नहीं हो सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारा राष्ट्र किस ओर ?

श्री सतराम बी० ए०

प्रत्येक गति प्रगति ही नहीं होती, वह पश्चाद्-गति भी हो सकती है। मनुष्य गति करके आगेकी ओर बढ़ता है, पर वह गतिमान होकर पीछे भी गिर सकता है। इसीलिए महात्मा टालस्टायने कहा है कि आप कितना मार्ग चल चुके हैं, यह बात उतने महत्वकी नहीं, जितनी कि यह बात कि आप किस दिशामें चल रहे हैं। आप दिल्ली से जाना चाहते हैं कलकत्ता, पर दौड़ रहे हैं कराचीकी दिशामें। इससे आपकी यह गति प्रगति न होकर पश्चाद्गति ही होगी। पश्चिमकी दिशामें सौ मील प्रति दिन चलते हुए भी हम पूर्वमें अपने गन्तव्य स्थान पर न पहुंच सकेंगे। इसके विपरीत ठीक दिशामें दस मील रोज चलकर भी एक दिन कलकत्ता जा पहुंचेगा। हमारा जिसका स्वराज्य और स्वतन्त्रता प्रगति नहीं, पश्चाद्गति ही सिद्ध हो रही है। किसी विद्वानका कथन है कि आप सब लोगोंको कुछ समयके लिए धोखेमें रख सकते हैं; आप कुछ मनुष्योंको सदा धोखेमें रख सकते हैं, पर आप सब मनुष्योंको सदाके लिए धोखेमें नहीं रख सकते।

वर्तमान स्वराज्यको आप अपने प्रोपेगेण्डा के बलसे कुछ लोगोंको या सब लोगोंको कुछ कालके लिए पीतलको चाहे सोना बता सकें, पर सदाके लिए सब लोगोंको धोखेमें रखना सम्भव नहीं जो मंत्री और प्रधान मन्त्री बन गये हैं या जो बड़े-बड़े पदों पर राजदूत बनकर विदेशोंमें आने जाने लगे हैं, उनके सिवा भारतीय जनतामें कितने लोग हैं, जो अनुभव करते हैं कि वे अंगरेजी शासनकालकी अपेक्षा अधिक स्वतन्त्र एवं अधिक सुखी हैं, जिनके प्राण और सम्पत्ति पहलेसे अधिक सुरक्षित हैं ? अंगरेजी शासन कालमें एक स्त्री भी सोना उछालती हुई अकेली यात्रा कर सकती थी, पर पूर्व पंजाबमें दिन दहाड़े आज डाके पड़ रहे हैं, अकेले-दुकेले पुरुषके लिए भी यात्रा करना कठिन हो गया है। घूस खाना इतना बढ़ गया है कि न घूस लेनेवाला अधिकारी दीपक लेकर ढूंढनेसे भी नहीं मिलता। भ्रष्टता और घूस खाना रोकनेके लिए सरकारकी ओरसे जो प्रदर्शन और प्रभात-फेरियां की जाती हैं उन्हें देखकर जनता हंसती है। वह कहती है कि कैसा विचित्र व्यापार है, जो घूस खाते हैं वही जनता की आंखोंमें धूल झोंकनेके लिए घूस न खानेका नाटक दिखा रहे हैं।

स्मरण रहे कि स्वराज्य यदि सुराज्य न हो तो वह बहुत दिन तक टिक नहीं सकता। मराठोंके समयमें, सिखोंके समयमें और सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य युद्ध में भी भारतको स्वराज्य मिला था। पर सुराज्य न होनेसे वह शीघ्र ही लुप्त हो गया।

इस सारी दुरवस्थाका मूल कारण यह है कि हमारे नेताओंने सारा समय अंगरेजोंको कोसने और बदनाम करनेमें ही नष्ट किया है उन्होंने राष्ट्रके दुर्गुणोंको दूर करके उसे स्वतंत्रताका सच्चा अधिकारी बनानेपर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। यदि राष्ट्र अपनी योग्यतासे, अपने बाहुबलसे स्वतंत्रता प्राप्त करता तो उसकी आज यह दुर्दशा बिलकुल न होती, वह इस स्वतंत्रतारूपी अमृतको पचानेमें समर्थ होता। पर यह कथित स्वतंत्रता तो अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियोंके कारण आकाशसे अमृत-फलकी भांति टपक पड़ी है। इसलिए हम इसे संभाल नेमें अपनेको असमर्थ पाते हैं। मिट्टी यदि खराब हो, तो उससे जो भी बर्तन बनाया जायगा, वह खराब होगा। उसी प्रकार हीन-चरित्र राष्ट्रके लोगोंमें से जो भी मंत्री, गवर्नर पुलिसमैन, डाकबाबू, राजदूत, पुरोहित या अध्यापक बनेंगे, वे सब घटिया दर्जके होंगे। अंगरेज आदि पश्चिमी जातियोंका व्यक्तिगत और सामाजिक चरित्र क्योंकि बहुत ऊंचा है, इसलिए उन राष्ट्रोंके व्यापारी किसान, मंत्री, राजदूत, पादरी सब अपेक्षाकृत हमसे बहुत बढ़िया हैं। हमलोगोंने उत्पादनको अच्छा बनानेका न पहले यत्न किया और न अब कर रहे हैं। अंगरेजोंके राजत्वकालमें हमें बहुत अच्छा अवसर मिला था कि हम अपनी जाति-पांतिकी बुराईको दूर करके एक सुसंगठित राष्ट्र बन जाते। ब्राह्मण और शूद्रका, अछूत और सवर्णका, सिख और मुसलमानका भेद-भाव मिटाकर समता और बन्धुताके सुदृढ़ सूत्रमें पिरोये जाते। संप्रदाय और धर्मको एक व्यक्तिगत चीज बनाकर सामाजिक रूपसे एक हो जाते, आपसमें खुल्लम-खुल्ला रोटी-बेटी-व्यवहार करते पर उस समय तो हमारे कांग्रेसी नेता तक अग्रवाल और कायस्थ-सभाओंके प्रधान बनते रहे, जाट स्कूल और ब्राह्मण होटल खोलते रहे, मुसलमानोंको पचाना तो दूर, दूसरे हिन्दुओंको भी नीच और शूद्र कहकर बाहर निकालते रहे। जहाजमें यदि छेद हो जाय तो सूखे डाकयार्ड में तो उसकी मरम्मत हो सकती है, पर मुक्तसागरकी उद्दाम तरंगोंके तूफानी थपेड़ोंसे डूबते उतराते जहाजके छेदको बन्द करना कठिन हो जाता है। हमारे नेताओंने टूटे-फूटे और छेदोंसे भरे भारत राष्ट्र रूपी जहाजको तूफानी समुद्रमें डाल दिया है। एक विपत्ति दूर नहीं होती कि दूसरी आ दबोचती है। अब तो भला मुसलमानोंकी संख्या भारत और पाकिस्तानमें दस करोड़के लगभग है। जब यहां सब हिन्दू बसते थे, एक भी मुसलमान न था, उत्तर-पश्चिमसे कुछ सहस्र मुसलमान आते थे और बहुसंख्यक हिन्दुओंको हराकर अपना राज्य स्थापित कर लेते थे। धन लूटते थे, बहूबेटियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उठा ले जाते थे और हमारे बांके राजपूत और वेदपाठी पण्डित टुकर-टुकर देखते रह जाते थे। सोमनाथ और विश्वनाथ भी मुसलमानोंके भयसे कुएंमें डूब मरे थे। ९वीं शताब्दीमें काबुलमें हिन्दू राजे राज्य करते थे, पर आज अमृतसरसे आगे भी हिन्दूका बच्चा देखनेको नहीं मिलता। इसका क्या कारण ? जिन कारणोंसे हम पहले हारते रहे हैं, क्या हमारे नेताओंने अब उन कारणोंको दूर कर दिया है ? यदि वे कारण अभी तक पूर्ववत् वर्तमान हैं, तो इस बातकी क्या गारंटी है कि हमारी स्वतंत्रता अक्षुण्ण बनी रहेगी ! वह बाहरके किसी भयंकर तूफानके पहले ही झोंकेमें छिन्न-भिन्न नहो जायगी ?

स्मरण रहना चाहिए कि किसी राष्ट्र की रक्षाके लिए उसके पास गोला-बारूद मशीनगन वरन् परमाणु बम भी उतने आवश्यक नहीं, जितना कि उसका भीतरी संगठन। चीनके पास किसी चीजकी कमी है? पर गत चालीस वर्षोंसे उसका गृह-युद्ध समाप्त होनेमें नहीं आ रहा। घरमें फूट हो तो परमाणु बम भी धरा ही रह जाता है, वरन् अपने ही विनाशका कारण बन जाता है। पाकिस्तानकी दुर्दशाको देख कर हमें प्रसन्न होनेकी आवश्यकता नहीं। हमें आवश्यकता है ब्रिटेन, अमेरिका और रूस आदि उन्नत देशोंकी तुलना अपने साथ करनेकी। पाकिस्तानी लोग तो हमारी ही थैलीके चट्टे-बट्टे हैं, हमारी ही बोटी लकड़ीके बने खिलौने हैं। यदि हमारे नेताओंने जाति भेद की मिटा दिया होता तो मुसलमान यदि धर्म-गत दृष्टिसे नहीं, तो सामाजिक और सांस्कृतिक रूपसे तो अवश्य हममें पच गये होते, वे कभी पाकिस्तानकी मांग न करते। पर उन्होंने इस ओर न पहले ध्यान दिया और न अब ही ध्यान देनेको तैयार हैं। परिणाम यह है कि एक आपदा दूर नहीं होती कि दूसरी आ खड़ी होती है। पहले कहा जाता रहा कि हिन्दू-मुस्लिम उपद्रवोंका कारण अंग्रेज हैं, (मानो अंग्रेजी शासनके पूर्व ये दोनों घी-शक्कर होकर रहते हों,) इनके निकलते ही साम्प्रदायिक एकता हो जायगी। पर वह एकता ऐसी हुई कि रक्तकी नदियां बह गयीं. हिन्दू मुसलमान एक दूसरेसे सदाके लिए जुदा हो गये। पहले आशा दिलायी जाती थी कि पाकिस्तान दो दिन न चल सकेगा, वह दिवालिया हो जायगा। पर आज मिलानेकी चर्चा करनेवाले को भी अपराधी समझा जाता है। देशके विभाजनके बाद होनेवाली मार-काट अभी संभाली न जा सकी थी कि शरणार्थियोंकी विकट समस्या आ गयी। वह अभी हल ही न हो सकी थी कि काश्मीर का युद्ध आरम्भ हो गया। वह अभी समाप्त नहीं हुआ कि हैदराबादमें रणचण्डीका अट्टहास सुनाई पड़ने लगा है। उसको रोकने का कोई प्रबंध तो न मालूम कब होगा कि पूर्वी पंजाब में सिख जाट पुलिस और सेना में चुपके चुपके अपनी भरती बढ़ाकर कृपाण दिखा कर हिन्दुओं को भयभीत कर अपना जाटस्थान बनानेका मंसूबा तैयार कर रहे हैं। अंग्रेजी शासनमें कोई छात्र उर्दू, हिन्दी और गुरुमुखी (पंजाबी) चाहे जो पढ़ सकता था। पर आज ये सिख-जाट हिन्दी को बलात् पंजाब से बाहर निकाल कर गुरुमुखी सबके सिर पर लादने की चेष्टा कर रहे हैं। पूछो तो उत्तर मिलता है कि जब बनिया जज अपने अधीनस्थ सभी अधिकारी बनिया भरती करता है और ब्राह्मण ब्राह्मणोंको घुसेड़ता है, तो हमें अवसर मिले तो हम क्यों न जाटस्थान बनानेका यत्न करें ?-जाति भेदका यह दुष्ट चक्र न जाने कब बंद होगा ! भीतरकी फूटके कारण भारत पहले विदेशियों द्वारा पदाक्रान्त होता रहा है और वही जाति-भेद अब इनको आपस में लड़ा कर नष्ट कर रहा है। पर खेद है, हमारी राष्ट्रीय कहलानेवाली सरकार रोगके मूल कारणको दूर करने पर ध्यान न देकर विदेशोंमें राजदूत भेज कर ही अपने को सबल एवं सुरक्षित समझ रही है। विदेशमें लाखों रुपयेके वार्षिक व्यय पर भेजे हुए हमारे राजदूत भारतका कितना हित कर सके हैं, यह लेक-सक्सेस में सुरक्षा समितिके सदस्योंके काश्मीर के झगड़ेके विषयमें मनोभावसे ही स्पष्ट हो जाता है। ११ सदस्योंमेंसे ९ सदस्य भारत के विरुद्ध हैं।

इस सारा शासनका जो ढांचा है वह अंग्रेजोंका तैयार किया हुआ है। जिस प्रकार अमेरिका की बनी घड़ी चाहे नीग्रो की क्यों न डाल दो उसी प्रकार चलती रहती है, पर बिगड़ जाने पर नीग्रो उसे ठीक नहीं कर सकता उसी प्रकार हमारे शासनका यह ढांचा जब एक बार टूट गया तो फिर इसे चलाना हमारे हीनचरित्र राष्ट्रके लिए कठिन हो जायगा।

गांधीजी शस्त्रास्त्रसे सज्जित सेना रखने और टेक्स्टाईल मिलें खोलनेके विरुद्ध थे। वे अहिंसा सेना और चरखेके प्रचारक थे। पर अब उनकी वह सारी शिक्षा तो छोड़ दी गई है, केवल उनकी मूर्तियां बना कर और उनकी भस्म दशों दिशाओंमें बखेर कर आत्माके धिक्कारसे बचनेका यत्न हो रहा है। भाषाके आधार पर विभिन्न प्रांतोंके देशका विभाजन बादको भी हो सकता था उस झगड़ेको अभी उठानेकी कोई आवश्यकता न थी। जो लोग सात समुद्र पारकी अंगरेजी भाषामें धुआंधार भाषण करते हैं वही आज भाषाके आधार पर नये प्रांत बनाकर मंत्री और गवर्नर बननेके मंसूबे पेश कर रहे हैं। हिन्दी सीखना उन्हें मौत मालूम होता है। इस प्रकार भारतकी अखण्डताका कोलाहल करते हुए भी वे भारतको खण्ड-खंड कर रहे हैं।

जाति-पांतका पुराना रोग इस देशको घुनकी भांति भीतर खोखला कर रहा है। ऊपर में नारंगीकी भांति एक तना हुए भी हमारा राष्ट्र भीतर से अलग अलग फांकें हैं। जितना रुपया विदेशोंमें राजदूतों पर व्यय किया जाता है यदि उसका तीसरा भाग भी इस रोगको मिटाने पर खर्च किया जाय तो हमारा राष्ट्र सबल बन सकता है। पर इस ओर संगठन की आवश्यकता का अनुभव हमारे नेता करें तब न। मैं ने अपने जीवनके सर्वोत्तम छब्बीस वर्ष जाति भेद और उससे होनेवाली हानियोंके अध्ययन में लगाये हैं। अपने उस अध्ययनको निचोड़ में ने "हमारा समाज" नामक एक पुस्तकके रूपमें लिख दिया है जिससे देश-बंधु उससे लाभ उठायें। मैं चाहता था कि भारत सरकार उस पुस्तककी बहुत सी प्रतियां लेकर देशके कोने कोनेमें पहुंचा दे, जिससे देशमें एकता और बंधुता बढ़े क्योंकि देशवासियोंकी यह एकता, बंधुता और समता ही राष्ट्रका सबसे सुदृढ़ दुर्ग हो सकता है। पर खेद है, सरकार इस ओर समुचित ध्यान देनेको तैयार नहीं। वे अच्छे नहीं कहे जा सकते ! प्रभुसे प्रार्थना है कि हमारे राष्ट्रका कल्याण हो, हमारे देश-बंधुओंमें वह सद्बुद्धि आवे, जिससे हम अपना हिताहित पहचान सकें !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# आज नहीं, कल...

श्री चिराग मीनापुरी

अरे आजका कल पर छोड़ो,
कलका छोड़ो परसों
जल्दी-जल्दी क्यों करते हो,
अभी जिओगे बरसों

चिरागके किसी दोस्तका यह उपदेश निराशावादियोंको भले ही नापसंद हो, लेकिन खुद चिराग तो इसपर पूरा अमल करते हैं। 'पलमें परलय...' की आशंका करनेवालोंको मैं बिलकुल नफरतकी निगाह देखता हूं। मैं वह आशावादी हूं कि गांधीजी की तरह सवा सौ बरस जीनेका विश्वास रखता हूं, इसलिए किसी भी काममें जल्द-बाजी करना गुनाह समझता हूं। कहते भी हैं, कि जल्दीका काम शैतानका होता है। फिर, शैतानोंमें कौन काम लिखाय! इसलिए सुबह खूब तान कर सोता रहता हूं—तबतक, जबतक आंखें बन्द रहनेसे इन्कार न कर दें। लेकिन 'शैतानियत' से बचने और अपनी 'इन्सानियत' निभानेमें बड़ी परेशानियोंका मुकाबला करना पड़ता है। सुबह उठने पर, चायकी चुस्कियां लिये बिना, मैं जमीन पर कदम भी नहीं रखता। लेकिन इसका नतीजा यह होता है कि नहाने-धोनेका नम्बर आते-आते नलका पानी बन्द हो चुका रहता है और तब किसी तरह कौआ-स्नान कर कुछ पेटमें डाल दफ्तरकी राह लेता हूं क्योंकि कम्बख्त घड़ीका इन्सानियत से कोई नाता नहीं है—वह हैवान या शैतान की तरह अपना काम तेजीसे जारी रखती है। कभी कभी तो वह मेरी प्यारी नींदमें भी काफी खलल डालती है। सच मानिये, उस वक्त इच्छा होती है कि उसे चूर-चूर कर दूं, लेकिन उसकी बेबसी पर तरस आ जाता है।

हां, तो अपनी इस आदत या इन्सानियत के लिए मैं मित्र-मंडलीमें काफी मशहूर हूं। और, जो लोग मुझसे खत-किताबत करनेका सौभाग्य पाते हैं, उनकी मत पूछिये! शायद मेरी 'इन्सानियत' उन्हें बहुत अखरती है। इसकी वजह यह होती है कि किसी भी खतका जवाब देनेकी लिए मैं मुहूरत सोचने लगता हूं। बात यह है कि मेरे दोस्त अधिकतर साहित्यिक हैं, जो खत लिखनेमें बड़े होशियार होते हैं। दिलकी तस्वीर कलमकी कूचीसे कागज पर खींचनेमें वे कमाल करते हैं। नतीजा यह होता है कि खत मिलने पर मैं बड़े मजेके साथ इतमीनानसे उन्हें कई बार पढ़ा करता हूं और सोच-समझ कर वैसे ही जवाब देनेके लिए उन्हें रख देता हूं। सोचता हूं आज झमेला है, कल मजेमें लिखूंगा। लेकिन यह 'कल' खत भेजनेवालोंको बुरी तरह विकल करने लगता है।

आप यह न समझें कि साहित्यिक हो जानेके बाद मैंने यह 'इन्सानियत' सीखी है। दरअसल जब मैं स्कूल में पढ़ता था, तभी इसकी बू मुझमें बखूबी समा गयी थी। स्कूल में जो 'होमटास्क' मिलता, उसे पूरा करने में मैं कभी जल्दबाजीसे काम नहीं लेता था। बस, परीक्षाके दिन गिनकर मन-ही-मन तय करता—"अभी कौन-सी जल्दी है। दिसम्बर को अभी आठ महीने हैं।" लेकिन कक्षामें बेंत लगने पर कभी-कभी विचलित हो जाता और कलसे ठीक ठीक पढ़नेका प्रोग्राम बनाता। लेकिन 'कल' 'आज' होकर मुझे जल्दबाजी न करनेका उपदेश देता। इस तरह 'आज नहीं, कल..'की मेरी आदत छात्र-जीवनमें ही पक्की हो गयी थी, और अब मेरी साहित्यिकताने उस पर मुलम्मा लगा दिया है।

लेकिन यह इन्सानियत एक मानेमें मुझे खुद भी बहुत अखरती है। इसकी बदौलत हर महीनेमें मेरा बजट इस तरह बिगड़ा रहता है कि पूछिये मत। पूरे महीने के पाकेट-खर्चके लिए जो रकम रखता हूं, वह १० तारीख तक ही अथवा अधिकसे अधिक १५ तारीख तक खत्म हो जाती है और तब शेष महीना कैसे बिताता हूं, यह मैं ही जानता हूं। इस परेशानीके कई कारण हैं, और उन सबके लिए मेरी 'इन्सानियत' जिम्मेदार है। महीनेमें दस बारह दिन तो बिना भोजन किये ही दफ्तरके लिए भागना पड़ता है, क्योंकि नहाने-धोनेमें ही नौ-साढ़े नौ बज जाते हैं और तब समय पर दफ्तर पहुंचनेके लिए सिवा इसके और कोई उपाय नहीं रह जाता कि भोजनसे परहेज कर लूं। लेकिन इसका फल यह होता है कि दिन भर चाय और टोस्टका तांता लगा रहता है; बस चार आनेकी जगह चौदह आने आसानीसे खर्च हो जाते हैं। और, ऊपरसे मित्रोंकी भीड़ भी पाकेट हल्का करनेमें कम मदद नहीं करती! सुबह घरसे चलते समय तो पाकेट काफी वजनदार मालूम होता है। कभी-कभी तो उसकी झनझनाहट आस-पासके राहगीरों का ध्यान बरबस अपनी ओर खींच लेती है। लेकिन शामको घर लौटते समय जैसे मैं थककर शिथिल हो जाता हूं, वैसे ही मेरा पाकेट भी ठण्ढा पड़ जाता है। अक्सर शामको अपने पाकेटकी मायूसी पर मैं रहम करने लगता हूं और मन ही मन सोचता हूं कि "अच्छा कलसे सावधानीसे काम लूंगा और इस बातका पूरा ध्यान रखूंगा कि बेचारे पाकेटकी दुर्दशा न होने पाये।" पर न 'कल' आता है और न 'आज' से पिण्ड छूट पाता है।

लेकिन खुशी इस बातकी है कि मैं अपनी तरह अकेला नहीं हूं। आस-पास बहुत-से दोस्त नजर आते हैं। खास मेरे मकानमें ही एक हजरत रहते हैं, जो इस 'आज और कल' के भंवरमें पड़कर प्रायः रोज अपनी बीबीकी फटकारें सुनते रहते हैं। ये महाशय स्वयं कुछ काम-काज नहीं करते। जहां तक सोनेका ताल्लुक है, मुझसे दस-बीस कदम नहीं, हजार कदम आगे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रातभर तो सोते ही हैं, दिनमें भी जब देखो, खाट तोड़ते रहते हैं। वह तो कहिए कि बेचारी बीबी भलेमानस है कि कुछ मिहनत मजदूरी करके अपना भी पेट पालती है और उन्हें भी खिलाती है। लेकिन कभी कभी जब पैसेकी ज्यादा तंगी आ जाती है, तो वह पति-देवपर झिझक उठती है —"दिनभर पड़े-पड़े देहमें दीमक लग जायेगी, कुछ भी तो काम-काज करो, वरना..."

"अच्छा कलसे कुछ जरूर करूंगा। और नहीं, तो खोंमचा ही लगाऊंगा।" —कहते हुए हजरत भीगी बिल्ली बन जाते हैं। लेकिन कल आनेपर फिर वही रफ्तार!

एक और मजेदार किस्सा सुनिये। मैं एक मुंशीजीको जानता हूं, जो एक अपर प्राइमरी स्कूलमें अध्यापक हैं। शकल देखकर ही आप कह देंगे कि ये मुंशीजी हैं। बिलकुल दुबले-पतले। पिचके गाल कटोरी बन गये हैं। धंसी हुई आंखें ऐसी लगती हैं, मानों अपनेको छिपा लेना चाहती हों। इस हुलियासे ही आप समझ गये होंगे कि तन्दुरुस्ती कितनी अच्छी होगी। बेचारे रात-दिन पेटकी शिकायत किया करते हैं। हर रोज सबेरे एक दातव्य औषधालयसे दवा ले आते हैं। लेकिन खाने-पीनेके मामलेमें बड़े चटोर हैं। चाटकी कोई दुकान दिखी नहीं कि बस लार टपकने लगती है। सुबह तो हाजमेकी दवा खाते हैं और शामको पुचके व पकौड़ियोंसे पेट भर लेते हैं। और, जब पेटमें दर्द होने लगता है, तो कहते हैं—"अब कलसे बाजार की चटपटी चीजें खाना बिलकुल बन्द कर दूंगा।" लेकिन जहां बाहर निकले और चाटकी दुकान नजर आयी कि बस सब कुछ भूल जाता है और मन-ही-मन कहते हैं—चलो, आजभर खा लूं, कलसे परहेज करूंगा।

मतलब यह कि 'आज नहीं, कल....' का चक्कर बहुतोंको चक्करमें डाले रहता है और आदमी इच्छा रखते हुए भी इससे छुटकारा नहीं पाता। फिर चिराग जैसे मस्त मौलेके लिए तो और भी कठिन है। दरअसल बात यह है कि अच्छी हो या बुरी, जो आदत पड़ जाती है, उसको छोड़ना कठिन ही नहीं, असम्भवसा-हो जाता है। महाकवि अकबरने भी तो कहा है—

आदत जो पड़ी है हमेशा की,
वह दूर भला कब होती है।
पाकेटमें पड़ी चुनौटी है,
पतलूनके नीचे धोती है।

---

एक शब्दचित्र —

# बहारका दिन

श्री 'भृङ्ग' तुपकरी

बहारका वह दिन अक्सर मेरे विचारों के वृक्षसे लिपटी भावनाओंकी नाजुक-सी बेलको झकझोर देता है। अक्सर मेरी करुण भावनाओंके प्राणोंमें विचारका कांटा चुभ कर एक टीस पैदा कर देता है और उनके प्राण स्पन्दित हो उठते हैं।

संभवतः बहारका वह दिन तुम्हें भी अपनी यादकी ठंढी अंगुलियोंसे कांपता हुआ स्पर्श कर जाता हो और कदाचित् तुम भी स्पन्दित हो उठो! हां, तो क्या तुम्हें याद है वह दिन, जब बहारकी मस्ती में डूबी, मदमाती गंधसे लदी चमेलीकी झुकी पड़ती हुई बेलकी एक नाजुक-सी टहनी पर एक नन्ही-सी नीली चिड़िया अपनी पतली पीली चोंच खोल कर चहचहाती हुई अपनी मीठी स्वर-लहरीमें अज्ञात, किन्तु आकर्षक, अटपटी किन्तु सुरीली तानसे कुछ गाती हुई आ बैठी थी और अपनी सम्पूर्ण भोली चपलताको बहारकी मस्तीमें भिगो कर बार बार फुदक उठती थी? कितना कोमल था उस चिड़ियाका कण्ठस्वर! कितनी मादक थी उसकी आवाज! कितनी चपल और कितनी नन्ही-सी थी उसकी जान! उस दम मैं और तुम, दोनों ही उसकी आवाज पर झूम उठे थे।

किन्तु उसके बाद .....क्या तुम्हें याद है कि उस छोटी नन्हीं, बेफिक्र और सतर्क चिड़ियाको देरसे ताकते हुए एक कौएने सबेरे-सबेरे ही मौका पाकर आ दबोचा था? उसके कोमल, नन्हें, भोले प्राणोंको अपनी काली, कठोर, कुरूप चोंच की चोटोंसे आहत कर डाला था?

उस चिड़ियाका फुदकता यौवन बचपनके सायेसे चिपका हुआ; मानों बहार की बेदर्द जवानीको कोस कर, संगीतको आश्चर्यचकित कर देनेवाले स्वरोंमें अनायास ही चीख उठा था।

आह! उसकी उस चीखका, उसके उस रोदनका संगीत आज भी प्राणोंको झकझोर देता है।

.....और फिर वह घायल चिड़िया बेहोश होकर जमीनके दामन पर गिरनेको ही थी कि उस कौएके खूनी पंजोंने उसे नीचे न गिरने देनेके लिए उसकी गर्दनको कितने भयानक रूपसे एकदम जकड़ लिया था; मानो वे निर्दयतापूर्वक इस बातका इजहार कर रहे हों कि वे उस चिड़ियाको उसके स्थानसे नीचे नहीं गिरने देना चाहते!

फिर वह उसके भोले प्राणोंको लेकर उड़ गया था; दूर....किसी ऊंचे, बड़े पेड़ की ऊंची, मोटी और बड़ी डाली पर आराम से उस नन्हीं, भोली मधुर स्वरोंवाली बेचारी चिड़ियाके कोमल मांसको कठोरता से नोच-नोच कर खानेके लिए।

ओह! बहारके दिनोंकी उस मादक कटुताको क्या कभी तुमने अनुभव करनेकी चेष्टा की है? बहारके दिन कितने मादक, कितने कोमल, कितने सुन्दर, किन्तु अक्सर कितने कटु, कितने कठोर और कितने वीभत्स होते हैं—क्या कभी तुमने सोचनेका प्रयत्न किया है?

क्या तुम्हें बहारका वह दिन याद है, जब लघुताकी कोमलता, सरसता और सुन्दरताके प्राणों पर बड़प्पनकी खूंखार प्यास कठोरतासे अत्याचार करनेको मानो आजादी प्राप्त करके पागलकी तरह भयंकर और पिशाची हंसीमें खिलखिला उठी थी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कम्यूनिज्म

## सिंगापुर, मलाया, बर्मा आदिमें विद्रोह हत्या, लूटपाट और अग्निकांड

इन दिनों दक्षिण-पूर्वी एशियामें सिंगापुर, मलाया, बर्मा, श्याम आदिमें कम्यूनिज्मकी आग बड़ी तेजीसे अधिकाधिक उग्र रूप धारण करती जा रही है। विभिन्न सूत्रोंसे अनेक सनसनीखेज खबरें मिल रही हैं, जिनसे पता चलता है कि खासकर सिंगापुर और मलायाकी परिस्थिति तो बड़ी ही संगीन हो गयी है। बहुतसे गुप्त आतंकवादी दल कम्यूनिस्टोंकी मदद कर रहे हैं। पुलिस और फौजोंके लोगोंपर खुलेआम सशस्त्र हमले किये जाते हैं, जिससे साफ जाहिर होता है कि कम्यूनिस्टोंने अपना संगठन कितना जबर्दस्त बना लिया है। इस सम्बन्धमें रायटरके सिंगापुर स्थित प्रतिनिधिका कथन यहां उद्धृत कर देना उचित होगा—"मैंने कागजी सबूत देखा है कि मलायाके कम्यूनिस्टोंने क्रान्ति द्वारा देशके शासन पर अधिकार जमानेकी योजना बना रखी है। इसके लिए वे हत्या-लूट और अग्निकाण्डका आश्रय लेकर देशकी अर्थ-व्यवस्थाको छिन्न भिन्न कर देना चाहते हैं।"

यह भी मालूम हुआ है कि इन समस्त दक्षिण-पूर्वी देशोंमें कम्यूनिस्टोंका यह आंदोलन अत्यन्त सुसंगठित रूपमें संचालित किया जा रहा है। कहते हैं कि श्यामकी राजधानी बैंकाकमें 'साउथ ईस्ट एशिया लीग' (दक्षिण-पूर्वी एशिया संघ) के नाम से गठित एक संस्थाके तत्त्वावधानमें यह आंदोलन चल रहा है। इस संघमें भारत, बर्मा, हिन्देशिया, सिंगापुर, मलाया और लंकाके प्रतिनिधि बताये जाते हैं। चीन और अस्ट्रेलियाके कम्यूनिस्टोंसे भी सम्पर्क रखा जाता है। इस स्थल पर पश्चिम बंगालके गृहमंत्री श्री किरणशंकर रायके उस वक्तव्यका उल्लेख अप्रासंगिक न होगा, जिसमें उन्होंने कहा था कि "सरकारके पास इस बातका सबूत है कि कम्यूनिस्ट सशस्त्र क्रांति द्वारा शासन पर कब्जा करनेकी चेष्टा कर रहे थे; और इस बातका भी सबूत है कि उनका आंदोलन दक्षिण पूर्वके दूसरे देशोंसे सम्बन्ध रखता है। इसीसे प्रांतीय सरकारने कम्यूनिस्ट पार्टीको गैरकानूनी करार कर देना उचित समझा।"

जो भी हो, पर इतना तो स्पष्ट है कि आज दक्षिण पूर्वी देशोंमें हत्या और लूटपाटकी जो घटनएं होती हैं, उनमें परस्पर बहुत कुछ साम्य दिखायी देता है। प्रायः सर्वत्र कम्यूनिस्टों और आतंकवादियोंकी कार्रवाइयां एक-सी ही होती है। अधिकांशतः कम्यूनिस्ट लूकछिपकी लड़ाइयां लड़ते हैं। अधिकारियोंको बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ रहा है। इस जगह यह बता देना भी उचित होगा कि दूसरा युद्ध खत्म होनेके बाद सिंगापुर और मलाया आदिमें ब्रिटिश फौजें नहीं के बराबर रह गयी हैं। इससे अधिकारी बहुत चिन्तित हो रहे हैं। सिंगापुरसेतोऔर भीभय कर खबरें मिल रही हैं। कहते हैं कि वहां चीनियोंने एक गुप्त आतंकवादी दलका संगठन किया है जिसकी भयंकर कारवाइयों का अन्दाज निम्नलिखित विवरणसे, जो एक ब्रिटिश अफसरने दिया है, आसानीसे लगाया जा सकता है—

"इस गुप्त दलका संगठन बड़ा ही मजबूत है। जो लोग इसके सदस्य बनाये जाते हैं, उन्हें पहले कठिन अग्नि-परीक्षाएं देनी पड़ती हैं। जब यह विश्वास हो जाता है कि उम्मीदवार दलके प्रति पूर्ण विश्वास पात्र होकर काम करेगा, तब वह सदस्य बनाया जाता है। सर्वप्रथम दलके तीन अधिकारी आगे आते हाथमें तलवार लेकर खड़े होते हैं और उन तलवारोंके त्रिभुजाकार घेरेके बीचमें उम्मीदवार खड़ा होकर दलके प्रति अपनी वफादारी की प्रतिज्ञा करता है। बादमें उसकी छाती पर एक तलवार रखी जाती है, जिसका अर्थ यह बताया जाता है कि सच्ची और वफादार छाती तलवारसे अधिक मजबूत होती है। अन्तमें वह उम्मीदवार अपने हाथसे एक सफेद मुर्गेका गला काट कर उसका बलिदान करते हुए यह प्रतिज्ञा करता है "यदि मैं अपने दलसे विश्वासघात करूं तो मेरी भी गर्दन ऐसे ही काटी जाय।'

हां, तो इन आतंकवादी दलोंने आज उपर्युक्त देशोंमें, खासकर सिंगापुर और मलायामें, बिलकुल अराजकता फैला दी है। सरकारने अमन चैन कायम करनेके लिए कड़ेसे कड़े नियम जारी किये हैं, लेकिन तो भी आंदोलन अभी दबता दिखायी नहीं दे रहा है। कहते हैं कि मलायाके जंगलोंमें करीब ४-५ हजार गुरिल्ला जमा हैं और पुलिस व फौजोंको बुरी तरह परेशान कर रहे हैं।

बर्मामें कम्यूनिस्टोंका खतरा कुछ दिनों पूर्व तो यहां तक बढ़ गयाथाकि आशंका होने लगी थी कि सरकार पर उनका कब्जा हो जायेगा। लेकिन वह संकट अभी टल सा गया है। तो भी इतना तो स्पष्टहै ही कि बर्मा सरकारको कम्यूनिस्टोंकी कार्रवाइयोंके कारण बड़ी दिक्कतोंका सामना करना पड़ रहा है। प्रधान मन्त्री थाकिन नू ने तो घोषित कर रखा है कि २० जुलाईको त्यागपत्र दे देंगे, लेकिन सब कुछ बर्मी पार्लमेंटके फैसले पर निर्भर करता है। पार्लमेंटका अधिवेशन १६ जुलाईको होगा। बर्माके वामपंथियोंकी एकता बनाये रखने और कम्यूनिस्टोंके खतरेसे बचनेके लिए थाकिन नू का का प्रधान मन्त्री बना रहना आवश्यक समझा जाता है।

लंकामें सेनानायककी सरकारको भी कम्यूनिस्टोंके बढ़ते हुए प्रभावके कारण काफी सतर्कता रखनी पड़ रही है। इस तरह स्पष्ट है कि समस्त दक्षिण-पूर्वी एशियामें आज कम्यूनिज्मकी आग भड़क उठी है तो क्या इन आंदोलनोंसे रूसका कुछ प्रत्यक्ष सम्बन्ध है? अभी तक तो इसका कोई सबूत नहीं मिल सका है। लेकिन आगे चल कर सम्बन्ध हो सकता है। इसीसे ब्रिटिश और अमेरिकन अधिकारी अत्यन्त चिन्तित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नयी संस्कृति की रूप-रेखा

श्रीहरदेव शास्त्री, साहित्यालंकार

पिछली आधी शताब्दीका भारतीय इतिहास मूलरूपमें संघर्षात्मक रहा है। अवधिमें देशके सार्वजनिक जीवनमें सर्वग्राही परिवर्तन हुए हैं। जीवनके सभी क्षेत्रों में नयी आशा नयी चेतना और नवीन प्राणवेगके संचारसे आज हमारी मानसिक स्थिति बदल गयी है। नैतिकताके क्षेत्रमें हमने नये मानकी सृष्टि की है। सार्वजनिक जीवनमें राष्ट्रीय भावोंको प्रतिष्ठापित कर व्यष्टि जीवनके सुख-दुखोंके धरातलको किंचित व्यापक बनानेका प्रयत्न किया गया है। युगकी नयी आवश्यकताके अनुरूप कलाके क्षेत्रको विस्तृत करनेका जो कुछ प्रयत्न इस अरसेमें किया गया है वह भी कम श्लाघ्य नहीं है।

परन्तु इन प्रयत्नोंके बावजूद भी स्वतन्त्रता-प्राप्तिके अनन्तर जो कतिपय समस्याएं अविलंब समाधान के लिए देशके सामने प्रस्तुत हैं, उनमें सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का प्रश्न भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। सच तो यह है कि इस प्रश्नके वस्तुस्पर्शी समाधान मेंहमारी कतिपय अन्य अनुपेक्षणीय समस्याओं का समाधान-सूत्र निहित है।

इसलिए यह आवश्यक है कि दूसरी दशाओंमें निर्माणकी गति तीव्र करनेके लिए जिस प्रकार हम नयी नयी योजनाओं को कार्यान्वित करने जा रहे है, उसी प्रकार इस सांस्कृतिक पुनर्निर्माणके कार्य को भी अग्रसर करनेके लिए कुछ संघटित प्रयत्न किया जाय।

अबतक जो कुछ भी प्रयत्न इस दिशा में किया गया है, वह मूलतः प्रयोगात्मक ही रहा है। ठोस रचनाकी ओर हमने कभी ध्यान ही नहीं दिया। अगर ध्यान दिया भी गया तो शुद्ध सांस्कृतिक दृष्टिसे नहीं प्रत्युत राजनीतिक दृष्टिसे, जिसका स्वाभाविक परिणाम रचनात्मकके बजाय ध्वंसात्मक ही अधिक रहा। यह हमारी भूल थी कि हमने सांस्कृतिक निर्माणका नेतृत्व राजनीति के क्रूर हाथोंमें दे रखा था। अतः आज यह भी हमारेलिये यह आवश्यक हो गया है कि अतीत की असफलताओंके प्रकाशमें हम अपने भावी पथ का निर्धारण करें।

हमारी प्राचीन संस्कृतिकी प्रवृत्ति मूलतः समन्वयात्मक रही है, और यदि इस युग में हम समन्वयके प्रयत्नमें असफल रहे तो इसका एकमात्र कारण हमारी वह दूषित अंतर्दृष्टि है, जिसके अनुसार संस्कृति और राजनीतिके मौलिक पार्थक्यको हम नहीं समझ पा रहे थे।

राजनीति राजनीति है और संस्कृति एककी उद्भावना यदि यदि मनुष्यके हृदयसे होती है, तो दूसरी की उसके निगृ मस्तिष्क से एकको यदि हम चित्रकारकी तूलिका कहें,तो दूसरीको लोहारका हथौड़ा कहना अधिक उपयुक्त होगा।दोनों ही मनुष्यके जीवनके लिए उसकी प्रगति और साधनाओंकी सम्यक परिणति के लिए समभावसे आवश्यक एवं उपादेय ह। दोनोंकी ही अपने अपने क्षेत्रमें महत्ता और उपयोगिता है, परन्तु दोनों एक नहीं हैं। एककी प्रयोजनीयता यदि मनुष्यके भौतिक अस्तित्वको अक्षुण्ण रखनेमें है तो दूसरीका उसके समग्र मनुष्यत्वको जीवन्त रखने में।

हमारे जीवनका अन्तर और बाह्य कृत्रिमता तथा पाखण्डसे इस प्रकार आक्रान्त हो गया है कि सरलता और वास्तविकता नामकी कोई क्रिया ही उसमें शेष नहीं रह गयी है। सिद्धान्त-जगतमें हम आदर्श और नैतिकताकी लम्बी बातें किया करते हैं, परन्तु व्यावहारिक जीवनमें उसके शतांश का भी निर्वाह नहीं कर पाते। फलस्वरूप हमारे आदर्शवाद और नैतिकताके खोखलेपनको इस प्रकार प्रकट कर देता है, जिससे देखकर किसी भी सभ्यताभिमानीका सिर लज्जावनत हो जाय।

इसी प्रकार हमारी चिरसाधित राष्ट्रीयता, जिसका हमें आवश्यकता से अधिक अभिमान है, साम्प्रदायिकता की एक ही फूंकमें असमयके बादलके समान किस प्रकार उड़ जा सकती है, यह भी विगत साम्प्रदायिक दंगोंके दौरानमें भली भांति देखा जा चुका है।

सारांश यह कि नैतिकता, राष्ट्रीयता या कोई भी उच्चसे उच्च सिद्धान्त क्यों न हो, आदर्शवाद अबतक हमारे मन-प्राणमें शब्दार्थकी तरह सम्पक्त नहीं हो सका है, हमारी वृत्तियोंका अविभाज्य अंग नहीं बन पाया है। ऐसीदशामें केवल शब्दगत आदर्शवादिताके बलपर मनुष्यताका दावा करना घृणित प्रवंचकता है। इस प्रवंचकताकी भावनाने हमारे सिद्धान्त और कार्यके बीचकी सानुरूपताको इस प्रकार नष्ट कर दिया है——दोनोंके बीच इस प्रकार का अन्तर प्रस्तुत कर दिया है कि आज हमारे लिए यह भी सोचना असम्भव है कि इन दोनोंके बीच किसी प्रकारका भी सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है या नहीं।

सिद्धान्त-जगतमें एक ओर जहां हम नये-नये आदर्शोंकी सृष्टि करते जा रहे हैं, वहां हमारा व्यावहारिक जीवन दिन-दिन कलुषित क्षुद्र और समष्टि-विरोधी बनता जा रहा है। अतः समाजकी इस अवांछनीय स्थितिका-मनुष्यके इस चिन्तनीय पतनका ——यदि हम अन्त करना चाहते हैं तो उसके सांस्कृतिक पक्षको पुनर्जीवित करके ही यह कार्य किया जा सकता है। परन्तु अब तक जिस संस्कृतिका निर्माण हमारे देशमें होता रहा है, वह अपने वर्तमान रूपमें जन-मनको नयी प्रेरणा और नयी दिशा देनेमें सर्वथा असमर्थ है। इसलिए आज इसे अपेक्षाकृत नये और विस्तृत आधार प्रदान करनेकी आवश्यकता है।

हमें इस नयी संस्कृतिकी सफलताका मानदण्ड स्थिर करते समय यह भी ध्यानमें रखना आवश्यक होगा कि इसके द्वारा परिवर्तित जीवन-मूल्योंकी पूर्ति और उसके नवोदित आदर्शोंकी अभिव्यक्ति वांछित मात्रामें होती है या नहीं। इसलिए आज हमें ऐसी संस्कृतिकी आवश्यकता है जो अपनी असीम अन्तः शक्तियोंके कारण न केवल देशके विभिन्न जातीय इकाइयों के जागरण स्वप्नोंको आत्मसात् कर चले, प्रत्युत जिसकी वाङ्मय रूप-रेखा शत प्रतिशत ग्राम्य सरलताका अभिव्यक्त कर सके।

आज हमारे देशके अनेक भागोंमें जो विविध जातियां, अपने मौलिक संस्कार स्वतन्त्र रीति-रिवाज और विविध धर्म-विश्वासोंके कारण बिखरी हुई हैं, उनका एकीकरण भी हमारे सांस्कृतिक प्रयत्नों का प्रधान लक्ष्य होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# खुदाके दरपेश देखा कातिले इन्सान...!

श्री विद्यानन्द सिंह रघुवंशी

(नाराज हों या खुश। साचको आंच क्या! जो कुछ देखा वही, कह रहा हूं। सृष्टि-कर्ताकी कचहरी, पेशकार, अरदली और कठघरा, यानी सब कुछ था। दरपेश थे साहबी लिबासमें मि० जिन्ना। आश्चर्य हुआ, जब वहां कोई वकील या कानूनदां नजर न आया। जिरह भी न हुई।)

मि० जिन्ना--(शेकहैंडकी कोशिशमें हाथ बढ़ाते हुए) हल्लो, सृष्टिकर्त्ता, गुड मौर्निंग!

एक अरदली--क्या बोलते हो? जो कुछ पूछा जाय, उसका ढंगसे जवाब दो। यहां की अदालती भाषा हिन्दी है, हिन्दीमें बोलो।

मि० जिन्नाकी आंखोंसे चिनगारियां निकल गयीं और वे हैरत में पड़ गये।

सृष्टिकर्ता--जिन्ना, तुमने मानवता पर घोर अत्याचार किया। वर्षों भारतके मुसलमानोंमें हिन्दुओंके प्रति घृणा फैलानेके लिए तुमने कुछ भी उठा नहीं रखा, दंगा कराया, लूट-पाट मचवायी और लाखोंके लहूसे धरतीको गीली कर दिया। इतनेसे भी तुम्हारी छाती नहीं जुड़ी तो काश्मीर और हैदराबादकी प्रजाको तबाह कराकर छोड़ा। गांधी-जैसे महामानवकी हत्याके लिए तुम्हीं जिम्मेदार कहे जा सकते हो। (कुछ देर चुप रह कर) कुछ कहना है? कह सकते हो!

जिन्ना, इधर उधर देखकर कुछ बुद-बुदाये और चुप रह गये।

सृष्टिकर्ता--आज तुम्हारा मामला बन्द होता है, फिर कल खुलेगा।

जिन्ना वापस हवालात पहुंचाये गये। मियां लियाकत अली वहां पहलेसे ही मौजूद थे।

मि० जिन्ना--(लियाकतसे) अमां लियाकत, तुम रहे नहीं। आज तो हिन्दुओंके सृष्टि-कर्त्ताकी बदतमीजी देखकर तबीयत हैरान हो गयी!

लियाकत--क्यों, कायदे आजम, क्या हुआ

मि० जिन्ना--अरे भाई, सिर्फ गुडमौर्निंग किया और ज्यों ही हाथ मिलाने बढ़ा, सृष्टिकर्त्ताके अरदलीने बड़ी बेरुखीसे डांट लगा दी। कहने लगा--"हिन्दीमें बोलो, यहांकी अदालती भाषा हिन्दी है।"

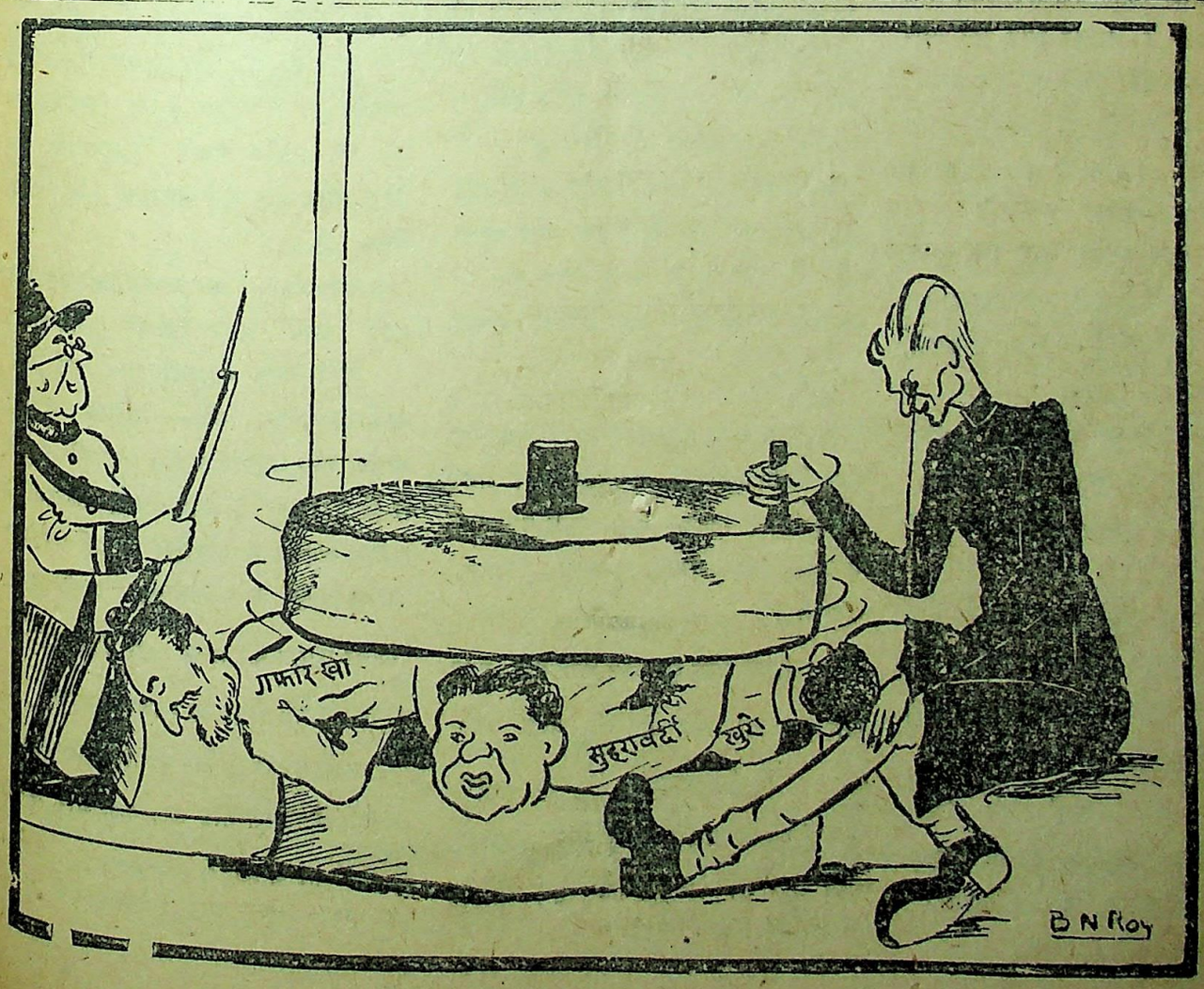


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा सुनो, परसों तुम भी मेरे साथ रहना और जो-कुछ मैं कहूं, उसका तर्जुमा हिन्दीमें करके बता देना।

लियाकत---शायद आप भूल गये, कायदे आजम, कि हमलोग कराचीके सरकारी दफ्तरमें नहीं हैं। वह भगवानकी अदालत थी। वहां तो हमारे आपके लिए कोई स्थान नहीं। सुना है, गांधीजी भी वहीं भगवान की बगलमें बैठे रहते हैं।

मि० जिन्ना---अरे यार, यह तो बताना तुम्हें भूल ही गया था। उसकी बड़ी इज्जत है वहां। लियाकत, तुम जानते नहीं, ये सबके सब हिन्दू हैं। अच्छा आज ही अपने मामलेको अल्लाकी अदालतमें 'ट्रांसफर' करानेके लिए दरखास्त दे दो, लिख दो कि हिन्दुओंके सृष्टिकर्त्ता की अदालतमें मुसलमानों पर अन्याय होता है। इस लिए हमारा इन्साफ अल्लाकी अदाल्तमें हो।

(तीसरे दिन फिर वही अदालत, वही अरदली, वही पेशकार और वैसी ही शान-शौकत। अन्तर सिर्फ यह नजर आया कि हाकिमकी दाढ़ी पर नूर था।)

मि० जिन्ना---(पेश होते ही) हल्लो, अल्ला गुड मौर्निंग! (साथ ही हाथ मिलानेके, लिए आगे बढ़े।)

अरदली---(फिर डांटते हुए) तमीज से खड़े रहो। यहां अरबी, फारसी, या उर्दू चलती है। इन्हींमेंसे कोई जबान बोलो, अंग्रेजी नहीं।

अल्लाने वही जुर्म सुनाये, जो सृष्टि-कर्त्ताकी अदालतमें सुनाये जा चुके थे। और अल्लाने भी पूछा---कुछ कहना है? कह सकते हो!

मि० जिन्ना इधर उधर देखकर कुछ बुदबुदाये और चुप रह गये।

अल्ला---आज मुकदमा बन्द होताहै। फिर कल खुलेगा।

हाजतमें लाय जाने पर मि० जिन्ना लियाकत अलीसे बिगड़ते हुए कहने लगे---"तुम आज भी नहीं आये! मालूम होता है, यह बदतमीजोंका ही मुल्क है। आज फिर इन लोगोंने भी मेरी बेइज्जती की। गांधी वहां भी खुदाकी बगलमें ही बैठा था। समझ नहीं पाता कि बात क्या है। अच्छा एक काम करो। चर्चिल के यहांसे एक सिफारिशी चिट्ठी 'आलमाइटी' (सर्वशक्तिमान) के नाम मंगा लो। इस अल्ला-वल्ला पर मेरा भरोसा नहीं है। 'आलमाइटी' की अदालतमें मामला ले चलनेकी अर्जी पेश कर दो।

लियाकत---कायदे, आजम, दरखास्त तो दी जा सकती है, पर मि० चर्चिलकी चिट्ठी कहांसे आयेगी? वे तो अभी उसी दुनियां में हैं।

मि० जिन्ना---तो क्या हुआ! दुनियां भर के बेहरे यहां पड़े हैं। इनमें से किसीको कुछ रिश्वत देनेका वादा कर लो जैसे काश्मीर पर हमला करानेके लिए कबीले वालोंसे किया था।

लियाकत---यहां रिश्वत चलनी मुश्किल है।

जिन्ना---(कुछ गर्म होकर) मैं कलसे ही तुम्हें देख रहा हूं। तुम भी कंघी काट रहे हो। अच्छा दरखास्त तो लिख डालो। तबतक मैं किसीको पटा लेता हूं।

मि० जिन्ना---(एक संतरीको पटाते हुए) तुम चर्चिलके यहां मेरी एक खबर पहुंचा दो। मैं तुम्हें खुश कर दूंगा। काश्मीरसे भगाई हुई अनेक परियां मंगा दूंगा।

इतना सुनते ही संतरी बिगड़ उठा और मि० जिन्ना बुदबुदी कर रह गये। अबकी मैंने समझा कि बारबार अपनी बुदबुदीमें वे कहते थे---अच्छा, अच्छा, चलना कराची!

(तीसरे दिन मुकदमा फिर पेश हुआ वही अदालत, वही अरदली, वही सब-कुछ, सिर्फ हाकिम अबकी पूरे 'फादर' की लिबासमें थे। लेकिन महात्मा गांधी यहां भी वैसे ही बैठे हुए थे।)

मि० जिन्ना---(आते ही मुस्कराते हुए) ओ 'आलमाइटी' गुड मौर्निंग, गुड मौर्निंग! (और हाथ मिलानेके लिए आगे बढ़े।)

अरदली---(फिर जोरोंसे डांटते हुए) चुप रहं। यह आलमाइटी की अदालत है, कराची का सरकारी भवन नहीं। तमीजसे रहो।

आलमाइटी भी कुछ कहने ही वाले थे कि जिन्ना उबल पड़े।

मि० जिन्ना---माई लार्ड, मैं भी तो पाकिस्तान का खुदा हूं। मैं यह बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकता। यह मेरी शानके खिलाफ है।

आलमाइटी---आर्डर।

जिन्नाको महसूस हुआ, जैसे फिर पाकिस्तान हिन्दुस्तानमें मिला।

फिर आलमाइटीने जिन्ना पर वही दोष लगाया, जो पहले दोनों अदालतोंमें लग चुका था।

जिन्ना कुछ कहना चाहते थे, तबतक आलमाइटी ने तुरत रोक दिया---आर्डर।

आलमाइटी---(महात्मा गांधीकी ओर देखते हुए) जिन्नाको क्या सजा दी जाय?

सुनते ही मि० जिन्ना उबल पड़े---"मुझे आपत्ति है। मैं चाहता हूं कि मेरा मामला यू० एन० ओ० यानी राष्ट्रसंघमें भेज दिया जाय और वहां जफरुल्ले। मेरा प्रतिनिधि रहे।

आलमाइटी---(फिर गांधीजीकी ओर देखते हुए) आप अपना विचार प्रकट करें।

शांति-चित्त महात्मा गांधी उठे और गम्भीरतापूर्वक बोले---"कायदे आजम साहब, आप घबड़ायें नहीं। गलती मनुष्य से ही होती है। आप अपनी गलतियोंको महसूस करें। आप हमारे मित्र हैं। (फिर 'आलमाइटी' से सिफारिश करते हुए) "जिन्ना साहब को माफ कर दिया जाय। भविष्य साक्षी होगा कि जिन्ना साहब...."

अभी इतना ही देख पाया था कि खटमलोंके काटनेसे नींद खुल गयी और 'आलमाइटी' का फैसला न सुन सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हैदर बादकी तैयारियां

हैदराबाद शहरमें आजकल ऐसा मालूम हो रहा है कि किसी भावी युद्ध की तेजीसे तैयारी की जा रही है। इस समय केवल शहरमें निजाम साहबके महल, किंग-कोठी, एलेक्ट्रिक पावर हाउस, बज्जहिल गोलकुण्डुकिया और फलक नुमा शाही महल पर विमान गिरानेकी तोपें लगाई गयी हैं। बेगमपेट और बिदरके हवाई अड्डेको विस्तृत किया जा रहा है। शहरमें जनता तथा साधारण अधिकारियोंकी मोटरें पूर्णतः बन्द हो गयी हैं। यहां तक कि शहरके कोतवाल भी घोड़ोंकी गाड़ीमें निकल रहे हैं। केवल बड़े अधिकारी, पुलिस मिलिटरी और रजाकारों की मोटरें सड़कों पर दौड़ाती हुई दीख रही हैं। शहरमें घूमनेवाली सरकारी बसें बन्द हो गयी हैं और उनकी जगह कमर्शियल कारपोरेशनकी माल मोटरों पर छत लगा कर तथा अन्दर बेंच लगाकर सवारीके काममें लाया जा रहा है। इनका किराया भी पहले की अपेक्षा तीन गुना हो गया है। इनमें भी प्रायः मुसलमानोंको ही बैठनेका अवसर दिया जाता है। यह सब प्रबन्ध पेट्रोल बचाने की योजनाके अनुसार किया जा रहा है।

### अनिवार्य सैनिक शिक्षा

शहरके प्रायः सभी सरकारी दफ्तरों के मुसलमान कर्मचारियोंको दफ्तरके पूर्व या बाद, जैसी सुविधा हो कुछ देर अनिवार्य सैनिक-शिक्षा दी जा रही है। इस प्रकारके लोगोंको शिक्षा देने और बौद्धिक ज्ञानके लिये कभी कभी ऐंग्लो इण्डियन और अंग्रेज शिक्षक भी आते हैं।

### ए० आर० पी० का कार्य

हवाई आक्रमणसे बचावके महकमे को पुनः जीवित किया गया है। इसकी ट्रेनिंग प्राप्त किये हुए लोगोंको पुनः इस कार्य पर लगाया जा रहा है। ब्लैक आउट का दृश्य पुनः हो गया है सड़कके बिजली बत्तियोंपर पुनः ढक्कन लगाये गये हैं और सरकारी लाइट पहलेकी अपेक्षा एक तिहाई रह गयी हैं। इस युद्धमें जहां जहां हवाई आक्रमण से बचनेके लिये शेल्टर बनाये गये थे वे पुनः बनाये जा रहेहैं।

### आर्थिक नाकेबन्दीका प्रभाव

भारतकी आर्थिक नाके बन्दी का प्रभाव वहांकी बढ़ती हुई कीमतोंके रूपमें प्रकट हो रहा है। जो वस्तुएं बाहर से आती हैं, उन सबका दाम तीन और चार गुना बढ़ गया है। साधारण जीवनोपयोगी वस्तुएं भीमहंगी होती जा रही हैं। मिट्टीका

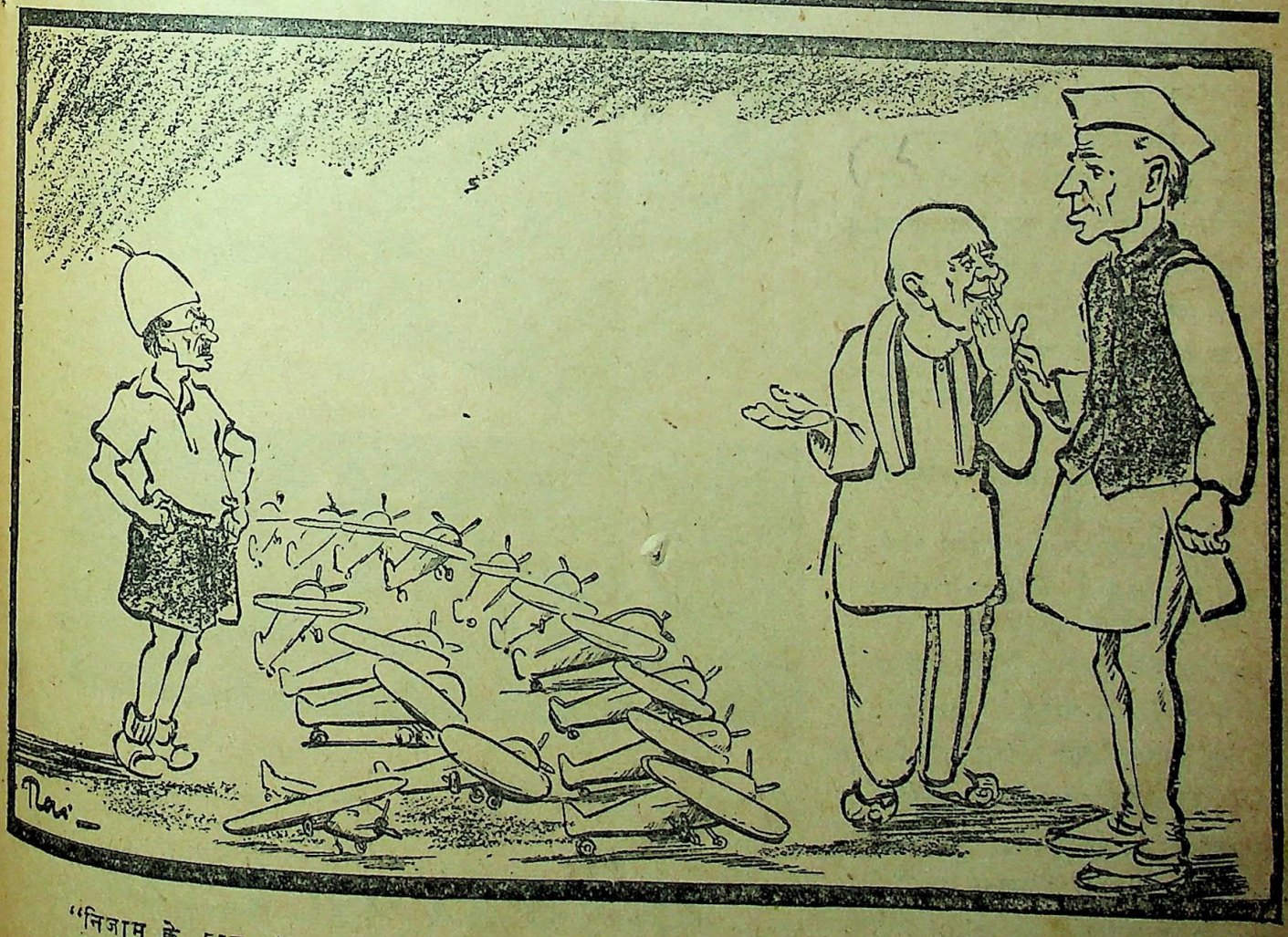

"निजाम के पास ४० बम वर्षक हैं।" — ये खिलौनोंकी दुकानवाले तो नहीं हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल रहा है । ३-४ आनेमें मिलने वाला कपड़ा धोनेका साबुन १२।१४ आनेमें मिल रहा है । । दियासलाई और सीगरेट का मूल्य ढाई गुना बढ़ गया है । बहुतसे सिगरेटोंका मूल्य ढाई गुना बढ़ गया है । बहुतसे सिग पीनेवाले देहाती बीड़ियां पीने लग गयरे हैं । लवंग सुपारी और गरम मसालोंका मूल्य चार व पांच गुना महंगा हो गया है । खाकी कपड़ा तो किसीको दिया नहीं जाता । रजाकारोंके लिए पूरा कपड़ा बल पूर्वक ले लिया जाता है ।

### रजाकारोंकी हलचल

शहर हैदराबादमें रजाकारोंकी हलचल को बढ़ानेका निरन्तर यत्न किया जा रहा रहा है । अब युवकोंकी भर्तीकठिन हो रही है इसलिए वृद्ध और पेन्शनरोंको रजाकार बनाया जा रहा है । स्कूल व कालेजकी मुस्लिम लड़कियों और छोटे छोटे बच्चोंकी बाल-सेनाकी तैयारकी जा रही है । दैनिक परेड में अब रजाकारोंकी संख्या निरन्तर घटती जा रही है तथा स्टेटसे बाहरके रजाकारोंकी ही उपस्थिति बढ़ रही है । गांवोंमें रजाकारों की टोलियां अब भी घूमती फिरती हैं । उनका उत्तेजक गाने गाना बन्दूकोंकी फायरिंग करते घूमना रातमें सड़कों पर हिन्दुओ देख मार पीट करना या पुलिस चौकीमें बन्द कर देना पूर्ववत चल रहा है । निजाम स्टेटकी रेलोंमें प्रायः हर डिब्बेमें एक-दो रायफलधारी रजाकार बैठ रहते हैं । स्टेशनों पर भी एक दो रजाकार प्रायः दीखते हैं ।

### रेलवे वर्कशापसे हिन्दुओंको निकालनेका उपाय

रेलवे वर्कशाप लालगुण्डामें काम करनेवाले प्रायः हिन्दू ही हैं । किन्तु जबसे मजलिस इत्तहादुल मुसलमीनके सदस्य मि० उबदुर्रहमान मिनिस्टर बने हैं वहांसे हिन्दू कारीगर और मजदूर निकाले जा रहे हैं । इसके लिये एक नया उपाय ढूंढकर निकाला गया है । वह यह कि मासमें एकाध बार साम्प्रदायिक दंगा करवाया जाता है और उस हीलेमें पचासों हिन्दू मजदूरोंको निकाल कर उनके स्थान पर बाहरसे आये हुए मुसलमानोंको भरती किया जाता है । अबतक ऐसी चार घटनाए हो चुकी हैं ।


आप इससे अच्छी बैटरी नहीं खरीद सकते ?

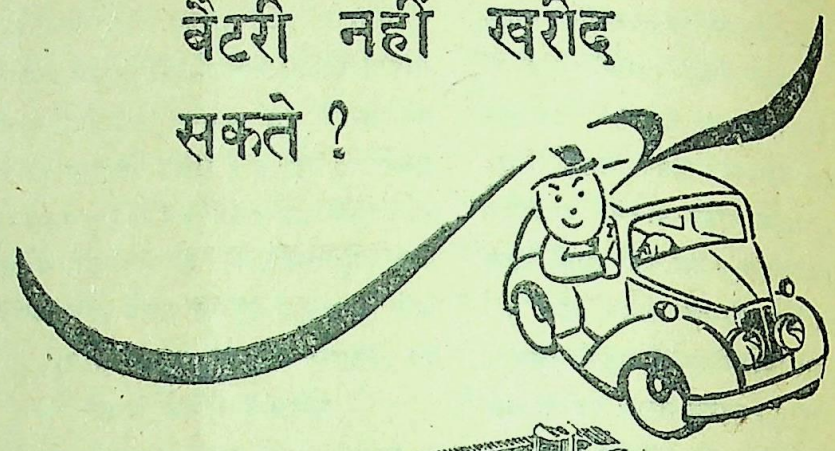

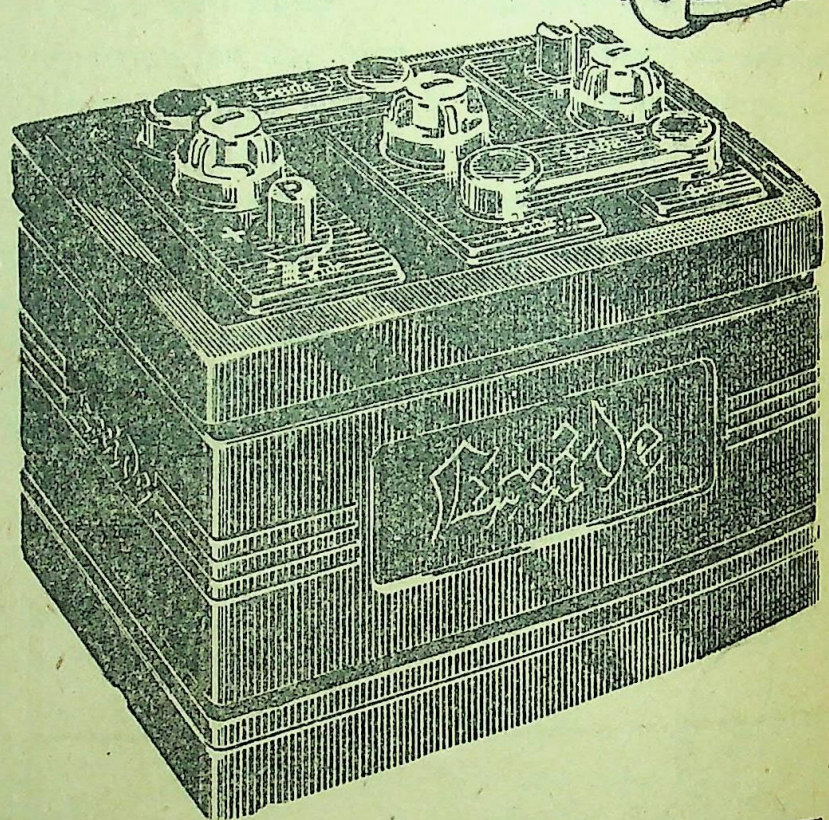

Exide
BATTERIES

कार, ट्रक और बसों के लिये

Local Agents : Messrs. F. & C. OSLER LTD.
12, Old Court House Street. CALCUTTA.

Ex 766A


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आ रहा हूं

श्री देवेन्द्रकुमार श्रीवास्तव

आज अन्तर में मचलता स्वर अनोखा पा रहा हूं, आ रहा हूं
एक आभा, भूमि से नभ तक निराली छा रही है
एक आभा, दिग दिगों से मचलती-सी आ रही है
गीत तब, बीते सुखों के बीनपर दुहरा रहा हूं
आ रहा हूं

भर चुका है, प्राप्ति का आकंठ यह अ-तप्त प्याला
छलकती जाती पलोंपल, मन्द मन्दर मदिर हाला
दृष्टि के सम्मुख समझता ध्रुव-सितारा पा रहा हूं
आ रहा हूं

धड़कनों की एक माला युग-युगों से गंथता था
आंसुओं के तार, तारों-में पिरोता जा रहा था
श्वास-माला आज तुमको यह पिन्हाने आ रहा हूं
आ रहा हूं

आ रहा हूं, रग-रगों में ध्वनि अतंद्रित आ रही है
आ रहा हूं, नस-नसों में रागिनी उठ छा रही है
आ रहा हूं, कण-कणों में गूंजता है—आ रहा हूं
आ रहा हूं

---

जनताको उल्लू बनानेवाली चाल चली, तथा जनताको यह धोखाभरा मनोवैज्ञानिक आश्वासन दिया कि देखो भाई भारत और पाकिस्तानमें बहुत बड़ा अंतर है। वह यह है कि भारत अंग्रेजोंका शत्रु है, इसी कारण भारतमें खादीका प्रचार हुआ! और यह पाकिस्तान, पवित्र देश, तो प्रेमसे धुला देश है, अतः यहां खादीके लिए हमारा सात्विक प्रेम उदित हुआ है। अतः स्पष्ट है कि लियाकत अलीकी इस घृणित मनोवृत्तियोंके पीछे दुहरी चोट करनेवाली बात थी— एक ओर भारतको बदनाम करनेकी चाल, दूसरी ओर पाकिस्तानी जनताको बेवकूफ बनाये रखनेकी चाल किन धोखेकी टट्टी कबतक खड़ी रह सकती है?

खादी भारतकी स्वतंत्रताका, सामाजिक क्रांतिका, गरीब किसानोंकी दरिद्रताका उन्मूलन करनेवाला प्रतीक है। चरखा भारत है और चरखेसे प्रेम करना भारतसे प्रेम करनेके तुल्य है। चरखा मनुष्यको स्वावलंबन तथा स्वदेशी वस्तु ग्रहण करनेका पाठ पढ़ाता है। लियाकत अली महोदय भारत और पाकिस्तानमें खादीके प्रयोगके बारेमें चाहे जो कुछ कहें, किन्तु दुनिया भारतके खादी-प्रेमके महत्वको जानती है। हम भारतीय फिर भी लियाकत अलीको पाकिस्तानमें खादीके प्रचारके लिए कोटिशः धन्यवाद देते हैं।


हमेशा मनमुग्धकारी सण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

काफू (रजि०)

हैजे

का रामबाण दवा है

डाबर लिमिटेड, कल.


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विचारों और उत्साहको जातिवालोंमें फैला कर उनसे सुधार करवानेका रास्ता निकाल रहे हैं। ये लोग ज्यादातर अपने आपको और अपने मित्रोंको धोखा ही देते हैं।

इन लोगोंका यह आश्वासन बेकार ही नहीं, बल्कि निश्चित रूपसे भुलावेमें डालनेवाला होता है। जातपांतकी जड़ें इस तरह उंगलीसे खोदनेसे नहीं उखड़ेंगी। उनके नाशका एकमात्र उपाय यह है कि हमारे हर बरतावमें हर तरहसे उसका बहिष्कार किया जाय और बचावकी नीति अख्तियार न करते हुए जैसे महात्मा गांधी ने छूतछातके सामने जिहाद शुरू की, उसी तरह जगह-जगह उसका विरोध करके उसे फटकार बतायी जाय। इस तरह गान्धी जीने यह नारा बुलन्द करके जनताको जगाया कि 'छूआछूत बनी रही तो हिन्दू धर्मका नाश होगा' उसी तरह हर एक विचारवान हिन्दूको यह मन्त्र अपना लेना होगा कि "किसी भी रूपमें जातपांतको बर्दाश्त करनेमें हिन्दुओंका नाश होकर रहेगा।"

अमेरिकामें रंग द्वेषकी बुनियाद पर चलनेवाली गोराशाहीसे दुखी होनेवाले और उससे नफरत करनेवाले मानवता प्रेमी अमेरिकन लोग अपने गोरे कुल-गोत्र से शरमिन्दा होकर मरजीसे उसे छोड़ने लगे हैं। हब्शी और रंगीन जातियोंके साथ अमेरिकन गोरे जैसा बुरा और हैवानियत भरा बरताव करते हैं, वह उनके मानव-प्रेमी अन्तआत्माको भय डालता है। इसलिये जिस तरह गांधीजीने अपनी मरजीसे अपने लिये हरिजन और भंगीका दरजा मंजूर किया और भंगी कहलानेमें ही अपनी इज्जत समझी, उसी तरह ये थोड़े से अमेरिकन गोरे कहलानेमें अपनी बेइज्जती समझते हैं, सरकारी रजिस्ट्रारकी कचहरीमें जाकर गोरी जातिमें पैदा होनेसे इन्कार करते हैं और सच्चे या माने हुए पुराने पेश करके आग्रहके साथ अपनेको रंगीन जातिके मनुष्य लिखानेमें इज्जत समझने लगे हैं।

इसी तरह हिन्दुओंके लिये, खास तौर पर सवर्ण कहेजानवाले स्त्री पुरुषोंके लिये, हिन्दू जातिमें फैले हुए जातपांतके तमाम भेदोंको इन्कार करके सिर्फ हिन्दू या हिन्दुस्तानी कहलाने और ऐसा ही बरताव रखने रखवाने पर जोर देनेका समय अब आ गया है।

इस बारेमें थोड़े अमली सुझाव ये हैं।

(१) जात-पांतके भेद माननेसे इन्कार करनेवाला प्रतिज्ञापत्र सम्बन्धित लोगों, सरकारी अधिकारियों और अपनी अपनी जातिके पंचके पास भेजा जाय।

(२) छुआछूत, खानपान और रोजाके तमाम व्यवहारोंमें ऊंचनीच, हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, हरिजन, आदिवासी, देशी, परदेशीका कोई भेद न माना जाय। सबके साथ खुलेआम एकसा भाईचारेका बरताव रखा जाय और दूसरोंको समझाया जाय कि ऐसा करना सही और जरूरी है।

खुलेआम और बिना संकोचके किया हुआ ऐसा बरताव सरपंचों या सम्बन्धित लोगोंके ध्यानमें लानेके लिये खास मौकों पर उन्हें पत्र लिखकर इस तरहके बरताव की जानकारी करायी जाय। और जब, कभी दूसरी जातिवालोंके साथ मिलकर खाना बनाया हो और खाया पिया हो, तब सम्भव हो तो फोटो लेकर या अखबारों में छपवाकर पूरे पतेके साथ जातिके पंचों नेताओं या सगे-सम्बन्धियोंके पास भेजे जायं।

(३) जातपांतकी मान्यताको बतानेवाली कोई भी भेंट, टैक्स, चन्दा, वगैरह दिया, लिया या माना न जाय। जातिके सरपंच, पुरोहित वगैरह जातिके नामपर कुछ लेने, देने या कहने आवें, तो नरमीसे लेकिन मजबूतीसे उन्हें 'नहीं' कह दिया जाय।

(४) मौत, शादी ब्याह, सहभोज वगैरहके समय जातिके दायरेको ही अपना घेरा न माना जाय; और हर जरूरी काम या विधिमें जाति या समुदायके भेदभावको छोड़कर अपने तमाम मित्रों या पड़ोसियों का सहयोग लिया जाय और उन्हें दिया जाय और पुराने लोकव्यवहारको छोड़कर खुदको ठीक मालूम होनेवाली धार्मिक विधि और धार्मिक क्रियाएं किसी भी जाति या सम्प्रदायके जानकार द्वारा, और जरूरत पड़े तो किताबोंकी मददसे भी, बिना संकोचकी और कराई जाय।

(५) मौत हो जानेपर अर्थीको उठानेमें या मृतदेहका अन्तिम संस्कार करनेमें भी जातपांतका कोई भेद न रखा जाय। सब लोगोंको आम तौरपर मुर्दे ले जानेके लिए हलकी हाथगाड़ीका उपयोग करना चाहिये।

(६) लग्नसम्बन्ध सिर्फ वर और कन्याके समान गुण, शील, रहनसहन और कल्याणकी दृष्टिसे पूरी आजादी करनेकी आदत डालनी चाहिये और जब तक समाजमें ऐसा बरताव बिलकुल स्वाभाविक न बन जाय, तब तक जैसे पुराने लोगोंमें यह बात मान ली गयी है कि सगोत्र विवाह नहीं हो सकता, उसी तरह आजकल ऐसा आग्रह रखना और रखवाना चाहिये, कि वर और कन्याकी पसन्दगी अपनी कही जानेवाली जातिमें तो हो ही नहीं सकती।

(७) ऊंचे कहे जानेवाले वर्गके खुशहाल ब्राह्मण, वैष्णव, भाटिया, लुहाणा, जैन वगैरह लोगोंको यह वहम छोड़ देना चाहिये कि घरमें रसोइयेके नाते ब्राह्मण को ही रखा जा सकता है। और, उन्हें निर्व्यसनी तथा अच्छी आदतोंवाले हरिजनोंको या दूसरी नीची मानी जानेवाली जातियोंके अच्छे आदमियोंको ही रसोइया बनानेका आग्रह रखना चाहिये।

(८) सरकारी दफ्तरों, कोर्टों और तमाम सार्वजनिक व्यवहारोंमें 'हिन्दू' या 'हिन्दुस्तानी' के सिवा किसी तरहकी जातपांत लिखानेसे इन्कार करना चाहिये, और सरकारी दफ्तरों और कागजोंमें जातपांत बताने वाले जो खाने रखे जाते हैं, उन्हें मजबूतीसे विचार करके जल्दी ही निकलवा देना चाहिये।

(९) जातपांत या सम्प्रदायके नाम पर चलनेवाले दान, संस्थाएं स्कालरशिप, अखबार, इनाम इकराम, वोट या ओहदा लेने और देनेसे इन्कार करना चाहिये और उस नाते मिलनेवाले सारे फायदोंको छोड़ देना चाहिये। ऐसी संस्थाओं के साथ किसी तरहका सम्मान या तनख्वाह का सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये।

(१०) जातपांतके आधार पर किसी भी तरहका राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक या आर्थिक संगठन न तो करना चाहिये, न कराना चाहिये, और न सहन करना चाहिये। 'हरिजन सेवक'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# गीति-काव्यकी परम्परा

श्रीगजानन वर्मा, विशारद

काव्यका जब कोई स्वरूप नहीं रहा होगा, उस समय गीत और कहानी ही साहित्यमें होगी। जब सृष्टि न रहेगी, तब भी कहानी रहेगी। उसी प्रकार गीति-काव्य भी चिरन्तन है, शाश्वत है। जबसे मानव मानव है, तबसे है। मानव मानव कब नहीं था? डारविन की बात दूसरी है। प्रकृतिके सम्बन्धमें आकर भोला मानव आदिम प्रकृतिके साथ नाच-नाच उठता होगा। उसके मुंहसे जो निकल गया होगा, वही गीति-काव्य है। परन्तु भाषाके पण्डित इस बातको नहीं खोज पाये हैं। जब शरीर का ही पता नहीं तो आत्मा कहां मिलेगी? अतः उस समयका गीति-काव्य चिरन्तन और शाश्वत होकर आकाश पर छा गया होगा। हमारा प्रत्येक शब्द आकाशमें जाकर रक्षित हो जाता है।

गीतों पर हम वैदिक कालसे विचार करते हैं। ऋग्वेद सबसे प्राचीन लिखित ग्रन्थ है। ऋग, यजु और साम ये तीन वेद आर्योंको अत्यन्त प्रिय रहे हैं। सामवेद यद्यपि संगीतसे सम्बद्ध कहा जाता है परन्तु भाषाके छन्दबद्ध हो जाने पर उसमें गीति काव्य स्वभावतः ही प्रवेश कर गया है, अतः प्राचीनतम रूप ऋग यजु और सामवेद हैं। सामवेदसे संगीतकी सभी प्रकृतियोंका उद्भाव हुआ है--परन्तु दोनोंका चोली दामनका साथ है यदि--ऋग्वेद नहीं तो सामवेद नहीं--बिना गीति-काव्यके संगीत हो ही नहीं सकता।

संगीतने स्वतन्त्र रूपसे विकास किया है पर प्राचीनोंमें संगीत और गीतोंमें सम्बन्ध बना रहा है। उनकी स्थितिमें किसी विभेद नहीं पड़ा। ब्राह्मण-ग्रन्थ; आरण्यक, उपनिषद और दर्शन ये भी गीति काव्यका स्वरूप लेनेमें असमर्थ रहे। इनके अतिरिक्त इस कालमें कोई विशेष सामग्री गीति-काव्यका स्वरूप प्रस्तुत करनेके निमित्त उपलब्ध नहीं होती। आगे चलकर एक ओर संस्कृतके उत्तर कालमें और दूसरी ओर बौद्ध और जैनों के कारण पाली और प्राकृतमें गीतकी परम्परा परिलक्षित होती है। बौद्ध और जैन-मन्दिरोंमें संगीत और गीत, दोनोंको ही विशेष प्रोत्साहन मिला--जैन-धर्म से प्रभावित ब्राह्मण-धर्म जब मूर्तिपूजा की ओर झुका तो उसमें भी गीतोंकी सृष्टि आरम्भ हो गयी--परन्तु एक बात ध्यान देनेकी है कि ये गीत भावों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति नहीं थे। इनमें प्रकृतिके भोलेपन को स्थान नहीं था। इनमें व्यक्तिगत अभिव्यक्तिको भी स्थान प्राप्त नहीं हो सका। यों तो इष्ट देवोंकी प्रशंसा और उनकी लीलाओंको लेकर ये प्रस्तुत किये गये थे और भक्त और भगवानके बीचके मनोभावोंको उनमें व्यक्त किया गया था। इस कारण इनमें दूसरे प्रकारकी सरसता आयी। संस्कृत-कालीन यह प्रगति हिन्दीके मध्यकालीन गीतोंकी पृष्ठभूमि है। हिन्दी गीति-काव्य दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है (१) ग्राम्य गीत (२) प्रगीत!

(१) ग्राम्य गीतः--ये परम्पराजन्य-प्रवाह को लेकर अपने अस्तित्वको बनाते संवारते चले आए हैं और नित्य विकसन शील लोकभाषाका अंचल पकड़े रहे हैं। इनमें स्वाभाविक सरलता और सरसता है। आत्माभिव्यक्ति का पता लगावे कौन? न जाने कब किसने इन गीतोंकी सृष्टि की है और न जाने कब कितना विकास इनमें होता चला गया है। पर आज भी वे कवि की नहीं तो गायकोंकी आत्माभिव्यक्ति करते रहते हैं।

हिन्दीके आदि कालमें हमें मुक्तक गीत के दर्शन नहीं मिलते; वरन् ऐसे प्रबन्ध-काव्यके दर्शन होते हैं, जिस पर संगीत का प्रभाव था। हम चाहें तो उन्हें प्रबन्धात्मक गीति काव्य कह सकते हैं पर प्रबन्धात्मक गीतिकाव्य कहना भारी व्याघात है। कारण यह कि गीति काव्यको मुक्तक होना चाहिए और और मुक्तक वह तभी हो सकता है जब कथा-वस्तु से तटस्थ हो। गीति काव्य के अन्य लक्षण तो वहां उपलब्ध ही क्या हो सकते हैं? प्राच्य ग्रन्थों में सर्वप्रथम ग्रन्थ "विसलदेव रासो" है और वह प्रबन्धात्मक प्रगीत है। सधे हुए छन्दों में न बांध कर नरपतिने उसे प्रवाहात्मक छन्दों मे लिखा है। नरपति स्वयं उसे गांव गांव गाता फिरता था और पश्चात भी आलखट के समान यह गाया जाता रहा। वैसाही प्रबन्धात्मक प्रगीत आलखट रहा होगा, जिसका मूलरूप प्राप्य नहीं है। और अब जितने मुंह हैं उतने ही आलखट हैं। मध्य कालमें हमें उक्त परम्पराके विकसित रूपमें दर्शन होते हैं। साथ ही मुक्तक गीत भी प्रस्तुत होता है। पूर्व परम्परा हमें जायसी आदिके प्रेमाख्यानक काव्यों तथा मानसमें परिलक्षित होती है, पर जैसा कि कहा गया है इन्हें गीतिका भी मानना असंगत और असमीचीन है। मुक्तक प्रगीत हमें सर्वप्रथम विद्यापतिमें दीख पड़ते हैं। विद्यपतिसे पूर्व संस्कृतके गीतगोविन्दने रस प्रवाहित किया था और जैसे कि प्रेम और भक्ति की सरिता उमड़ चली थी। वहीं से प्रभावित होकर हिन्दीमें विद्यापति ने और बंगलामें चण्डी ठाकुरने कृष्णभक्ति के पदोंकी रचना की। विद्यापतिका यह गीति-काव्य हिन्दीका आदिम गीति-काव्य है। इसको गीत-गोविन्दके समान ही सम्मान प्राप्त हुआ और इसने विद्यापतिको 'मैथिल कोकिल'की पदवी से विभूषित कराया।

विद्यापतिके पदोंमें वाह्य सौन्दर्य के अतिरिक्त भावात्मक सौन्दर्यके भी दर्शन होते हैं, फिर भी उनमें चक्षु-सौन्दर्य ही अधिक है। विद्यापतिका यह रस प्रवाह भावी कृष्ण-गीति-काव्यके निमित्त मूल बन गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध और जैन कालके पश्चात उनके प्रभाववश गीति काव्यको एक विशेष रुचि बन गयी थी। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि जहां कवियों ने लोकभाषा को अपनाने की प्रेरणा प्राप्त की वहां उन्हींके अनुरूप वाह्यात्मक छंदों में लिखना भी उन्होंने आवश्यक समझा। धार्मिक क्षेत्रमें यही प्रभाव दूसरे रूपमें पहुंचा और श्रीमद्भागवतमें नवधा भक्तिके अन्तर्गत प्रभुके गुणोंका श्रवण और गान आवश्यक स्वीकार किया गया। अतः धार्मिकों तथा लौकिकों दोनोंमें ही गीति काव्यके प्रति अभिरुचि हुई थी। एकके परिणामस्वरूप विद्यापति, सूर और तुलसीने और दूसरेके परिणाम स्वरूप कबीर और मीरा आदि ने गीत रचे।

इस मध्यकालीन गीति-काव्य पर विचार किया जाय तो हम इसे दो भागोंमें विभक्त कर सकते हैं (१) निर्गुण (२) सगुण। निर्गुण सम्प्रदायी भक्त कवियोंमें हम गीतोंके कई प्रकार देखते हैं—जैसे उपदेशक, आत्म-निवेदक और रहस्यात्मक। उपदेशात्मक गीत निश्चय ही गीति-काव्य की कोटिमें नहीं आते। आत्म निवेदात्मक गीतोंमें भक्त कवियोंने प्रभुके निकट अपने को क्षुद्र और हीन रूपसे व्यक्त किया है। इन पदोंमें आत्माभिव्यंजन माना जा सकता है पर हमारे विचारसे यह आत्माभिव्यंजन अतिरंजित और अतिशयोक्तिपूर्ण है। दूसरे यह कि भक्त कवियोंने अपने ऊपर ढाल कर जनसाधारणकी आत्माका विश्लेषण किया है। इसका परिणाम यह हुआ कि कविका आत्माभिव्यंजन ठीक ठीक हुआ तो अथवा न हुआ हो, श्रोता और पाठक अपनी आत्माका यथातथ्य विश्लेषण वहां अवश्य पाते हैं, अतः उनमें पूर्ण रूपेण रम जाते हैं, तीसरी बात यह कि इस प्रकारके आत्माभिव्यंजनमें आत्माकी सम्पूर्ण बातका अभिव्यंजन नहीं होता। हमारा मन सदा गर्तमें गिरा सड़ता नहीं रहता। कभी गौरव-श्रेणी पर भी चढ़ता है। इस प्रकारके काव्यों में जीवनके स्वरूपकी उपेक्षा होती है। चौथे यह कि इन गीतोंमें प्रभु और भक्त के बीचके सम्बन्ध तो व्यक्त किये जाते हैं परन्तु मानव-मानवके बीच जो सम्पर्क, संकर्ष और विकर्ष होते हैं उनको जैसे इनमें स्थान प्राप्त नहीं है। अन्तर्मुखी होनेके कारण इन गीतोंकी आध्यात्मिकता प्राकृतिक प्रभावसे भी मुख मोड़ लेती है।

तीसरे प्रकारके गीत रहस्यात्मक पाये जाते हैं। रहस्यात्मक गीत जहां कहीं भी रूपकका सहारा लेकर व्यक्त हुए हैं, वहांसे जीवनके निकट आकर आत्माभिव्यंजन करते प्रतीत होते हैं। जैसे कबीरमें "राम मेरा पिऊ" में पिऊ बहुरिया आदि गीतोंमें दाम्पत्य रूपक मिलेगा। आत्माभिव्यंजनके साथ प्रेमकी माधुरी उन गीतों को सरस बना देती है। पर जहां उलटबांसियां कही गयी हैं; गूढ़ व्यंजनसे काम लिया गया है, वहां बड़े बड़े पण्डितोंके सिर चकरा जाते हैं। ऐसे पदोंमें आत्माभिव्यंजन तो दूर, रस तक का दर्शन नहीं होता। अतः हम देखते हैं कि संत कवियोंकी वाणीमें संगीतके नियमोंसे अनुमोदित कितने ही उच्च कोटिके गीत लिखे गये हों, पर उनमेंसे बहुत कम गीति-काव्यकी कोटिमें आते हैं।

साकार (सगुणमार्गी) भक्तोंके गीतोंको भी इसी प्रकार श्रेणीवद्ध किया जा सकता है। उनके यहां भी उपदेशात्मक गीत मिलेंगे। भक्तिसे परिपूर्ण आत्म-निवेदनके पद मिलेंगे और तीसरी कोटिमें भगवानकी लीलासे सम्बन्धित पद मिलेंगे। उपदेशात्मक और आत्मनिवेदात्मक पदोंकी वही स्थिति है जो संत कवियोंके गीतोंके विषयमें कही गयी है। लीला सम्बन्धी पदों को यदि लें तो एक बात पर ध्यान जाता है कि लीला का सम्बन्ध कथा वस्तुसे होने के कारण वह गीति-काव्यका विषय नहीं ठहरता। इतना अवश्य होता है कि कोई इष्टभाव के जीवनके किन्हीं क्षणोंसे प्रभावित होकर अपने भावावेशको गतिवद्ध कर दे, पर वहां आत्माभिव्यंजनका अभाव रहेगा।

इन कसौटियों पर यदि हम सूर और तुलसीको कसें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जहां तक आत्मनिवेदात्मक पदोंका सम्बन्ध है तुलसी सूरसे आगे हैं। पर लीला सम्बन्धी पदोंमें सूर तुलसीसे आगे है। तुलसीने रामके समग्ररूपके साथ अपने को अन्तर्ध्वनित किया है अतः उनका झुकाव प्रबन्धकी ओर ही हो सकता है। प्रबन्धकी वृत्ति गीति काव्यमें पूर्णरूपेण सफल नहीं हो सकती। सूरकी दृष्टि सौंदर्य और प्रेम की ओर है अतः कृष्ण जीवनके उन स्थलों में वे रम गये हैं और सखा भावके कारण वे उन लीलाओंके इतने निकट पहुंच गये हैं कि जो कुछ भी लिखा गया है वह आत्माभिव्यंजन जैसा ही है। तुलसीकी मर्यादा और दास्यभावकी भक्ति रामके महलमें पर्देके पीछे ढांकनेसे रोकती है। स्वामी और स्वामिनीके व्यक्तिगत जीवनसे उन्हें क्या सम्बन्ध? पर सूरदास? वे तो एक रंगरेलीमें शामिल हैं। इसीलिये जो कुछ भी वह कहते हैं उसमें जैसे कि वे स्वयं रमे और रंगे हैं। इस प्रकार भावावेश और आत्माभिव्यंजन इन दोनों कसौटियों पर कसने पर सूर तुलसीसे आगे हैं। पर इस क्षेत्रमें प्रेमकी सचाई और सचाईकी प्रखरता की दृष्टिसे मीराने सूरको मात दी है। तुलसी और सूरके बीच भक्ति के दृष्टिकोणने जो अन्तर डाला है। वैसा ही अन्तर सूर और मीरा के दृष्टिकोणके कारण भी पड़ गया है। कृष्णकी भक्तिके लिये पुरुष भक्तोंको दाम्पत्यरूपक सार्थककरने के निमित्त नारी रूप धारण करना पड़ता है जो एक प्रकारसे अस्वाभाविक है; पर मीराकी भक्ति दाम्पत्य भावकी है। उसे रूप धारण करनेका अपेक्षा नहीं, इस कारण उसके भक्तिके उद्गार सच्चे और चोखे हैं। रूपकका आवरण उतर जाने पर सूरके भाव कुत्सित भावनाओंमें बदल सकते हैं। पर मीरा के निमित्त यह संभव नहीं। अतः आत्माभिव्यंजन और भावावेशकी दृष्टिसे मध्यकालमें मीरा सर्वोपरि है।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कहानी—

# आहुति

—श्री रत्नाकर शर्मा

दो सालके फरारी-जीवनने रुद्रकी हुलिया ही तब्दील कर दी थी। सारे अंजर-पंजर ढीले हो गये थे। कभी भागना पड़ता तो तब तक वह भागता रहता, जबतक कि थक कर गिर न पड़ता और उसका दूसरा बलिष्ठ साथी उसे कंधे पर न ले भागता। कहीं छिपना पड़ता तो मांद ही में पड़े-पड़े वह सूर्यकी किरणोंका सामनेके वृक्ष पर नाचना और चांदका बादलोंमें आंख-मिचौनी करते देखता रहता। कभी कभी वह जीवनसे ऊब भी जाता और जब उसकी बेकरार निगाहें शून्यमें थक कर हुताशे एक लम्बी श्वांस उलीच कर बाहर निकालतीं तो उस समय उसके कंधे पर एक बलिष्ठ हाथको थपथपाहट और ओठोंके अस्फुट शब्द-"संघर्ष से ऊब उठे? हिम्मत न हार! ऊब जाने-वालोंका नाम इतिहासमें नहीं आता साथी!" उसकी सारी बेचैनीको थोड़ी देरके लिए दूर कर उसके हृदयमें जोश हिम्मत और नवीन उत्साहकी सृष्टि कर देता।

रुद्र फुसफुसाता—"साथी! मौतसे कबतक लड़ा जायगा?....और एक मुस्करा-राहटभरा उत्तर मिलता—" जबतक श्वास का चलना जारी है, तबतक ....मौतसे लड़ते रहनेका ही नाम जिन्दगी है और थक कर बैठ जानेका नाम मौत...

रुद्र चुप हो जाता। उसे इन शब्दोंसे प्रेरणा मिलती। ये शब्द उसे अगाध, असीम नीली जलराशिके बीच खड़े हुए 'प्रकाश स्तम्भ' की तरह लगते, जिसकी रोशनी में जहाज अपना पथ देख कर मंजिल की ओर बढ़ते हैं।

रुद्र देखता, दो साल पहले जो आग जली थी, उसको राख ने ढक तो लिया है, लेकिन फिर भी उस राखके नीचे उसे कुछ गर्माहट-सी महसूस होती, जिसे वह हृदय का स्नेह देकर अपने जीवनकी सलाखसे कुरेद-कुरेद कर सजग कर रहा था। कभी-कभी वह सोचता कि भला यूं कब तक ... इतनी बड़ी नौकरशाहीसे मुकाबला करता रहूंगा। कुछ साथी सींकचोंके अन्दर हैं... कुछ जंगलोंकी खाक छान रहे हैं....और कुछ धरती से ऊपर उठ कर चांद और सितारों के बीच हैं, जहां न शोषण है, न अन्याय और न उत्पीड़न, जहां दूसरोंकी मेहनत पर गुलछर्रे उड़ा कर मूंछों पर घी लगाने-वाले नहीं हैं....और वह उसी भावुकताके प्रवाहमें आसमानकी ओर टकटकी लगाये अपने आपमें ही डूबता उतराता रहता।

एक दिन यों ही उसका मस्तिष्क अशांत और उद्विग्न था। उसका साथी इतमीनानसे किसी गानेकी कड़ी 'मरघट आज जगा दूं यारो' गुनगुना रहा था—जैसे उसे किसी बातकी फिक्र ही नहीं। रुद्र मैदानमें आकर दस-पांच कदमके घेरे में ही टहलने लगा। रह-रह कर मुट्ठियोंको खोलने और बांधने तथा छाती फुला कर खींची हुई श्वासों को देख कर साथी बोल बैठा—"क्या सोच रहे हो रुद्र?"

"कुछ नहीं!....सोच रहा था कि आखिर हम यूं छिपे तौर पर कब तक मुकाबला करते रहेंगे?"

"मुकाबला"—उस निर्जन अंधकारमें साथीके कंठ स्वरका वीभत्स अट्टहास हवाकी लहरों पर नाच कर सामने की पहाड़ी से टकरा कर, गुंजायमान होते हुए शून्यमें विलीन हो गया। वृक्षके पक्षी पंख फड़फड़ा उठे। साथी बोल उठा—"हां...मुकाबला....दुनियामें पहली श्वास लेनेके बाद ही इन्सानको कदम-कदम पर मुकाबला करना पड़ता है। सम्भव है, उन मुकाबलोंकी शक्ल दूसरी हो, पर मुकाबला किसी-न-किसी रूपमें चलता ही रहता है...और आज जब हम जीनेके अधिकार की लड़ाई लड़ने जा रहे हैं, तब एक तगड़ा मुकाबला सामने देखकर, समुद्रकी गहराई और चौड़ाई देखकर ऊब उठे मेरे दोस्त!" कंधा थपथपाते हुए साथी बोला

मुस्कराकर रुद्रने जवाब दिया—"हां पर मुझे क्या डर जब साथी...जामवन्त सरीखा मेरे पास है।"

दोनों हंस पड़े। रुद्र बोला—"दादा, हमलोग अकेले ही तो हैं...."

तड़पकर बीचही में साथी बोल उठा—"कौन कहता है, हम अकेले हैं? हमारे पीछे हैं बेबस, बेकस, खाली पेट भूख और मौतसे लड़नेवाले मजलूमोंका हुजूम, जिनकी आहों में तासीर है और सीनेमें आग। काम हमें सिर्फ यही करना है कि उस आगको कायदे से संजो कर इस हालतमें कर दें, जो दुश्मन का घर खाक कर दे और उसकी समाधि पर 'नूतन समाज' की बुनियाद रख सके।"

"हां....लेकिन..." रुद्रकी आवाज में दीनता थी और शब्दोंमें एक लड़खड़ाहट, जैसे वह अपने अकेलेपनसे ऊब उठा हो।

पत्थरका सिरहाना लगाते हुए आंखें बन्द कर लेटते हुए साथी बोला—"विश्व कविने एक जगह लिखा है कि 'यदि तोर डाक सुने ऐसे ना कोय, तबे एकला चलरे एकला चल—"यदि तुम्हारी आवाज सुन कर कोई नहीं आता तब अकेले ही पथ पर चलो, अकेले ही...."

सुनते ही रुद्रको लगा जैसे इन वाक्यों ने इंजेक्शनकी तरह उसकी धमनियोंमें बहनेवाले उष्ण रक्तको वेग दिया हो और आंखोंको एक इशारा। उसकी मुट्ठी तन गयी। उसे लगा, जैसे उसका मस्तक ऊंचा उठ कर आसमानकी ऊंचाईको चुनौती दे रहा हो,

दूसरे दिन।

गंगाका किनारा। रात्रिका दूसरा प्रहर। लहरों पर चांदकी किरणोंकी अठ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेलियोंके बीच धम-धमकी मधुर ध्वनि-करती हुई नाव किनारे पर लगी। कूद कर रुद्र और उसके तीन चार साथी किनारे पर उतरे। न कोई शब्द 'न कोई बात-जैसे अपनी धुनकी मस्ती में कुछ दीवाने मरघट में मंत्रसिद्धिको आये हों।

आसमानमें खिलखिलाता हुआ चांद कल-कल कर बहती हुई गंगा और रात्रिकी प्रगाढ़ निस्तब्धता ही गवाह थी इन नव-युवकोंकी कार्यशैली का, जो दुनियांसे दूर एक नयी दुनियाके निर्माणमें लगे थे, जिसमें "हर व्यक्ति को उसकी जरूरतोंके मुताबिक और हर व्यक्तिसे उसकी शक्ति के अनुसार राष्ट्रको काम लेनेका हक रहेगा और जहां ऊंचा तबका खत्म हो जानेके बाद हर पुरुष राजा होगा और हर स्त्री रानी।"

* * *

अचानक ही एक कर्णकटु तीखी सीटी की आवाज आसपासके वातावरणको बोझिल बना गयी। साथी बड़बड़ाया–"धोखा..भागो..

एक साथ ही कई सीटियां बज उठीं। टार्चका प्रकाश अगल–बगल, दाहिने–बायें चारों ओर ढूंढ़ रहा था। एक मोटी भारी आवाज आयी–हाल्ट। रुक जाओ...गोली मार दूंगा।"

रुद्र और उसके साथी के हाथ ऊपर उठ गये, फिर भी उस धमा-चौकड़ी में उनके दो साथी बेदाग निकल गये थे।

साथी सोच रहा था ––"प्रलोभन ने किसी साथी को मुखबिर बना दिया... पर...जीवनका अन्त जब मृत्यु है, तब क्या डर? हां...घरके गुलगुले गद्दे पर नहीं मरूंगा –सन्तोष है।"

रुद्र सोच रहा था–"बेकारकी आंधीमें बह गया..."उसकी आंखोंके आगे रस्सीका एक मोटा रुखरा फन्दा था। उसकी आंखों में एक चिन्ता थी। वह परेशान था। साथी बेताब था। रुद्र परेशान था फंदेकी कठोरता से, पर सभी बेताब था–उसकी मधुरताको चूमनेके लिए ...गले में पहन कर वरमालाका आनन्द लूटनेके लिए।

पुलिस इन्सपेक्टरकी बांछें खिल थीं। वह बेकरार था। सोच रहा था–– ४ अंकोंका दो मोहर इनाम.....सिर्फ दो जंगली जन्तुओंको पकड़नेके लिए।

मोटर जा रही थी. दो विचारवाले कुछ मनुष्योंको लिये हुए जो अपने कर्तव्यका फल पानेके लिए परेशान, बेताब और बेक-रार थे।

* * *

कैम्प जेल। लालटेन .....जंगला .....ताला.....सब ठीक।

साथी कुछ सोच रहा था। रुद्र बगलमें बैठा था। इतनेमें एक लम्बा-चौड़ा सजीला जवान, जो जेल-वार्डर था, घूमते-घूमते बगलसे आ निकला।

साथी चौंका–'भुवन।'

"जयन्त.....तुम? ओ, जेलमें चर्चा थी कि दो सुराजी आये हुए हैं.....पर..." भुवनकी आवाज में नमी थी, जैसे वह उन्हें यहां नहीं देखना चाहता हो।

जयन्त मुस्कराकर बोला–'हां, भुवन ....दो विचारधाराएं दो विपरीत दिशाओं से आकर एक ही स्थानपर मिल गयीं.. खैर!....बहुत दिन बाद मिले....तीन सालका लम्बा अरसा.....दिल बहल जायेगा।"

भुवन गर्दन नीची कर बोला–"हां, भैया! जिन्दगी तो तुम्हारी है–तुम तो सिर्फ घसीट रहे हैं....और दो विचारधाराएं ...क्यों लज्जित करते हो?"

"कैसे?" जयन्त मुस्करा उठा।

भुवन बोला–मुस्कराओ भैया। एक ओर तुम हो–निर्मल स्वच्छ जलधारा। दूसरी ओर मैं हूं–गन्दे पानीका दूषित पनाला...और तुम कहते हो कि दोनों धाराएं एक स्थानपर आकर मिल गयी हैं। छिः भुवनके शब्दोंमें आत्मग्लानिकी कसक थी।

जयन्त मुस्कराकर बोला–"दिल न छोटाकर भुवन! धारा यूं ही बढ़ती जायगी...और अगर तुम्हें पनाला ही मान लूं, फिर भी तो तुम जानते हो कि एक वृहत् धारामें मिलकर पनाला भी उसमें लीन हो जाता है और धाराको एक वेग प्रदानकर कूड़ा-करकट एक किनारे फेंक देता है....और....तुम? हटो! क्यों बनते हो....भुवन जयन्तका मुंहलगा था। बोल बैठा –"हां जी! तुम बड़े स्वार्थी हो ....अकेले ही अकेले राज भोगना चाहते हो?"

"कैसे"–जयन्त उत्सुकतापूर्वक पूछ बैठा।

"अरे वाह! इतनी जल्दी भूल गये? नौकरीका जब मैंने फार्म भरा और तुमसे कहा–कि 'नहीं पसन्द मुझे यह नौकरी'.. तो तुम बोले...नहीं! कामपर जाओ... तुम वहांसे भी कुछ कर सकोगे– और आज बिलकुल मुकर रहे हो। नाकपर मक्खी ही नहीं बैठने देते?"

'मैंने उस दिन गलत नहीं कहा था।' जयन्त आत्मविश्वासके स्वरमें बोला।

भारी बूटोंकी आवाज सुनायी दी। भुवन बोला–"हवलदार आ रहा है।" भुवनके जानेके बाद थोड़ी देर खामोशी रही, जैसे बाहरकी सारी हलचल और कोलाहल दीवालके घरमें सिमटकर खामोश होकर प्राणकी सिर्फ लहर ही बाकर रह गयी हो। रुद्र हताश हो रहा था। जयन्त सोच रहा था कि–"ऐसे ही कदम-कदमपर रुद्रको वह कबतक संभालकर ले जा सकेगा?

रातभर भुवनके हृदयमें उथल-पुथल थी। वह अपने भविष्यके बारमें मस्तिष्क की कूचीसे हृदय-पटके रुखड़े कागजपर एक नये चित्रकारकी तरह मोटी रूप-रेखा बना और बिगाड़ रहा था। शेरदिल जवान था, पर रोटी-दालके चक्करमें, कोल्हूके बैलकी तरह, अपनी आंखोंपर पट्टी बांध वह जो जिन्दगी व्यतीत कर रहा था, उससे उसे रात्रिके घनीभूत अन्धकारके नैराश्यपूर्ण एकान्त क्षणोंमें घृणा उत्पन्न हो गयी। वह घृणा किसी-न- किसी अंशमें विद्यमान तो थी, पर आज जैसे तीव्रतम हो उठी। अचानक ही जयन्तकी बात याद आयी–'तुम इस जगहसे भी काम कर सकते हो।" पर कैसे? एक प्रश्नवाचक चिन्हके घरमें ये दो शब्द उसका दिमाग झक-झोरने लगे। बड़ी देरके बाद उसकी आंखें प्रसन्नतासे नाच उठीं। उसकी आंखोंमें वही आत्मसंतोष था, जो कि भंवरमें पड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# देहातन

श्री अनिलकुमार

सांवल अंगों में मृदु उभार, उसपर यौवन का मृदुल भार
जा रही मेड़ पर द्रुतगति वह, निज क्रमित डगर लख बार बार
जा रही दूर उस टीले पर, जिसपर सूखी लकड़ी का घर
घर के आगे कुछ दूरी पर, उसका धानों का खेत अमर

गर्मी के दिन में घास छोड़, नीचे जाती वह बार मोड़
बनिये के घर में उसे बेचकर जाते हैं छै पैसे मिल
उसका घरवाला 'अमरबान', वन में जाता लेकर कमान
उसकी सुधि करके कभी-कभी, सूखे जाते इसके परान

उठ बड़ी भोर लकड़ी लेकर, वह अपनी लकड़ी का गट्ठर
नीचे के गांवों में आकर, बेचकर लौट रही है घर
कंगाल देश की देहाती, श्रमसिक्त कठिन इसका पल छिन
कष्टों के आतप में तपकर, जल जाते हैं सुख दुख के दिन

हुई नाव को सफलतापूर्वक किनारेपर ले जानेमें मल्लाहको होता है। भुवनकी आत्मा ने चीखकर जैसे उसके कानोंमें कहा—'तुम सब कुछ कर सकते हो ?'

रुद्र और जयन्त, दोनों अलग-अलग 'सेल' में थे। दोनोंकी अलग-अलग 'कवज-परेड' और 'पूजा-अर्चना' हुई तथा वे दोनों दोपहरको 'सेल' के सामने मैदानमें डाल दिये गये, जैसे धोबीने कपड़े साफकर सूखने दिये हों। दोनोंके शरीर लोहू-लुहान थे।

मुस्कराकर जयन्त बोला—'क्यों साथी ...क्या हाल है ?'

कराहते हुए रुद्र बोला—"शामत आ गयी साथी ! दुश्मनोंने जोड़-जोड़ फोड़ डाला है। उफ् ! हाय रे तकदीर....घर दुआर..... ।

आश्चर्यसे फटी हुई जयन्तकी आंखोंने देखा कि रुद्रकी आंखें जैसे डबडबा आयी हों। जयन्त चुप रहा।

रुद्र पूछ बैठा—"तुम्हारी हालत कैसी है ?"

चेहरेपर अरुणोदय की लालिमा बटोरकर जयन्त मुस्कराया—"पहली बेंतमें तो चोट लगती है, पर दूसरी बेंतमें बड़ा मजा आता है और आत्माको बल भी मिलता है।"

रुद्र चुप रहा। साथीको लगा कि रुद्र जैसे एक तिनकेकी तरह बवंडरमें उड़ रहा है और अब इतना ऊपर उठकर हवामें बिना किसी अवलम्बके अधर लटक रहा है, जहांसे वह निचाई देखकर सहमकर सिहर उठा है तथा चाहता है कि कहीं न कहीं किसी आधारपर टिक जाय।

सम्हलते हुए साथी बोला—"अगर हमलोग यहांसे किसी तरह निकल जायें .....तो.....तो.....।"

बीचमें ही रुद्र बोल बैठा—"तो... इस तकलीफसे राहत मिल जाय। जान बचे...." रुद्र रुक-रुककर बोला। जयन्तको महसूस हुआ जैसे उसके इन शब्दोंमें लड़-खड़ाहट और पश्चात्तापकी है।

तमककर जयन्त बोला—"तकलीफसे राहत....? अग्निपथपर चलते हुए चांदनीकी शीतलता पानेकी कल्पना करते हो ? जिन्दगीसे जूझकर जिन्दगीसे दूर भागना चाहते हो। हिश्"

रुद्र फुसफुसाया—"आखिर घर भी कोई चीज है....तुम जिन्दगीसे खिलवाड़ करने को कहते हो ?"

'हां' अधिकारपूर्ण शब्दोंमें साथी बोला घरकी आड़ लेकर अपने बुजदिलपनको छिपानेकी फिजूल कोशिश न करो।'... कसम खाते समय क्यों न सोचा कि निबाह न सकूंगा ?" हंसकर जयन्त बोलता गया—और जिन्दगी.....इसको तो हमेशा मैंने खेल समझा है।"

रुद्र तड़फड़ाकर बोला—"साथी ! मैंने भी जिन्दगीको दावपर लगाया था, पर.....पर....मैं जीना चाहता हूं। जीना !

साथी मुस्कराकर बोला—"हां, रुद्र साथी भी इतना ओछा नहीं। वह जिन्दगीके आखिरी दमतक साथीको जिन्दा रखना चाहेगा ....जिन्दा ..... शानदार....चाहे कितनी ही बड़ी कुर्बानी क्यों न करनी पड़े, पर तुम्हें वह ध्रुव नक्षत्रकी तरह चमकता हुआ शानदार रखेगा।"

भुवन आ रहा था। आज उसके हृदय में द्वन्द्व नहीं था—बल्कि था उसका निश्चय। रुद्रको सिपाही ले गये। जयन्तने मुस्करा कर पूछा—"रुद्र को कहां पहुंचाया गया है ?"

"नरकके पानीमें छोड़नेके लिए .....घबड़ाओ नहीं ! तुम्हारा भी नम्बर आयेगा।" भुवन एक फीकी मुस्कराहटके साथ बोला।

"नम्बर....हां.....पर मेरे जख्मों पर तो मलहमका काम करेगा। रुद्रकी बात दूसरी है.....।"—जयन्त बोला।

भुवनने अपना मुंह जयन्तके करीब लाकर बिना किसी भूमिकाके और अपने चेहरे पर बिना किसी भावका चढ़ाव उतार लाये बोल बैठा—"जयन्त ! चलो ! जेलसे निकल चलनेका तिकड़म भिड़ावें।"

चौंक कर जयन्त बोला—"भंग पीकर आये हो ?"

"नहीं !" निश्चयात्मक स्वरमें भुवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बोला--"मैं होशमें हूं..... तुम 'हां' भर कह दो।

"पर बादमें.....कहीं...." जयन्त के शब्दोंमें भुवनके भविष्यके लिए चिन्ता थी।

हंसकर भुवन बोला--"जयन्त ! तुम ? तुम्हारे ऐसे आदमी भी "फिर.... बाद" .....और कहीं' ऐसे निरर्थक शब्दों को सोचा करते हैं ? चलना है--चल पड़ो। बस ! मेरे बारेमें मत सोचो.....मैं तुम्हारा कोई उपकार नहीं कर रहा हूं।" एक क्षण ठहर कर छाती पर मुक्का मारते हुए वह बोला--"रात भर भुवनने अपनी आत्मा के कोड़ें और फटकारें सही हैं .....।"

भुवनके दोनों कन्धोंको अपने हाथसे झकझोरते हुए जयन्त बोला--"भुवन ! मेरे अच्छे साथी.....तुमसे यही उम्मीद थी.....पर....रुद्र.....वह डगमगा रहा है --उसकी हिम्मत टूट गयी है और ऊबकर वह जीवनकी वास्तविकता--जीवनके कटु सत्यसे दूर भागना चाहता है। भला ऐसे लड़खड़ाते हुए आदमीको कहां तक साथ ले जा सकूंगा ?" दीवालकी ऊंचाई पर टकटकी लगाये परेशान-सा जयन्त बोला।

"तो...उसको भी साथ ले चलो .....देखो !"

बीचमें ही जयन्त फट पड़ा--"नहीं भुवन....वह एक तारकी तरह है, जो अपने मूल स्थानसे टूट चुका है और अब उसका वहां पर लगना मुश्किल है। वह एक नाव है, जो वायुके थपेड़ोंसे क्षतिग्रस्त हो गयी है और किसी भी समय धोखा दे सकती है। मैं यहां रहकर कम-से-कम उसे सम्भाल तो सकूंगा....."

"तो.....कमसे कम तुम चलो....जहां तुम वहां मैं....." भुवन बोला।

गाल पर हल्की-सी मीठी चपत लगा कर जयन्त बोला--"बड़े भोले हो..... मेरी अनुपस्थितिमें अगर उसका दिमाग ठीक नहीं रहा.....और कहीं मुखबिर...तो क्या तुमने परिणाम की कल्पना की है भुवन ? नहीं....रुद्रको छोड़ कर जाऊंगा तो दुनिया कहेगी कि साथीको छोड़ आया। आखिरी वक्तमें सफेदीमें स्याही नहीं लगाऊंगा.....साथी जो है।"

आश्चर्यचकित होकर भुवन बोला--"कमजोरी न लाओ, जयन्त ! तुम दूसरी धातुके बन हुए हो, जहां प्रेम, स्नेह, मोह, ममता किसीका भी स्थान नहीं। सिर्फ एक कठोर कर्त्तव्य.....तुम्हारी जिन्दगी कीमती है.....बाहर एक चिराग जल रहा है--तुम्हारी जरूरत वहां है।"

हंसकर जयन्त बोला--"हां.. वह चिराग तो जलता ही रहेगा.....चाहे हम और तुम रहें या न रहें। यह चिराग आंधी और तूफानके सायेमें पला है और संगीनोंकी छायामें खिलखिलाता रहा है .....वह नहीं बुझनेका साथी...वह नहीं बुझने का .....।"

एक क्षण रुककर भुवनने जयन्तके हृदयकी गहराईमें गोता लगानेके उद्देश्यसे उसके मर्मस्थलको छूनेकी कोशिश करते हुए कहा--"तुम्हारी मां, बीबी....बच्चा .....उफ वे कितने खुश होंगे तुमको पाकर, सोचो !"

हंसकर जयन्त बोला--"मेरे एक मां, एक बीबी और एक बच्चा है न ?

"हां" जल्दीसे सिर हिलाकर भुवन बोला, जैसे तीर निशाने पर लग गया हो।

"तो तुम चाहते हो कि एक मां, एक बीबी और एक बच्चेको खुश करनेके लिए मैं यहांसे निकलूं और अपनी खुशी की वेदी पर अपने सारे साथियोंकी मां, बीबी-बच्चोंकी खुशी और उनकी अभिलाषाओंकी गर्दन मरोड़ कर तड़पने दूं ? सोचो !"

"लेकिन.....रुद्र एक समस्या है। तुम जो कहो। मैं तुम्हारे शब्दोंका इन्तजार कर रहा हूं। मैं तो सिपाही हूं।"--भुवन बोला।

दाहिना हाथका घूसा ऊपर उठाकर जयन्त बोला--"चूमने दो....रुद्रको फांसी का तख्ता चूमने दो। इस ज्वालामें एक आहुति और पड़ने दो....अग्नि प्रज्वलित हो उठेगी।

"साथी"

"हां भुवन ! वह एक मशाल होगी --जो पथप्रदर्शक होगी और जिसमें मंजिलकी ओर इशारा होगा। यह शहीद का लाल खून होगा--जो स्वतन्त्रताकी देवीके मस्तककी सुहाग-बिन्दिया बनेगा .....अपूर्व शृंगार !"

"पर साथी....तुम....तुम....।" भुवन बोला।

नीले आसमान पर दृष्टि जमाये जयन्त बोला--"मेरी फिक्र मत करो। मैं फैसला कर चुका हूं--सिर्फ इन्तजार कर रहा हूं। दीपक जलता रहेगा--उसकी लौ और ऊंची उठेगी। संघर्ष व्यर्थ नहीं जायेगा--कुर्बानी व्यर्थ नहीं जायेगी।"

"साथी !" भरीये हुए कण्ठसे भुवन बोला।

कन्धे पर हाथ धरते हुए जय सन्तोषकी श्वांस लेकर बोला--"रुद्र जिन्दा रहेगा ..... शानदार.... ध्रुवतारे की तरह अमर। साथी सबसे बड़ी आहुति देकर रुद्रको जिन्दा रखेगा .....जिन्दा !"

१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस- २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस- ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड- ७५)
रेल्वे गुड्स कभी यो टोनो शेप
क्रोमियम केस-४२), सुपिरियर-४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०)
अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।
एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साहित्यके सम्बन्धमें—

# प्रेमचन्दके विचार

—श्री श्याम परमार

अंग्रेजीके प्रसिद्ध आलोचक मेथ्यू अर्नाल्डने कविताकी व्याख्यामें सम्पूर्ण जीवनको समेट लेनेका प्रयत्न किया है। उनका कहना है कि कविता जीवनकी आलोचना है; किन्तु प्रेमचन्दने 'जीवनकी आलोचना' कविताको न मानते हुए साहित्यको माना है। साहित्यकी सर्वोत्तम परिभाषा यही है कि वह जीवनकी आलोचना'के रूपमें प्रस्तुत होता है। दोनों विद्वानोंकी दृष्टिमें इतना ही अन्तर है कि एक यदि कविताको इतना व्यापक मानता है तो दूसरा साहित्यमात्र को, जिसमें स्वयं कविता समाई हुई है। इस अन्तरका कारण सम्भवतः दोनोंकी अपनी अपनी परिस्थिति और समय रहा है।

भाषा जीवनके अनुभवों और विचारों को व्यक्त करनेका साधन है। अपूर्ण भाषा या विकृत बोली भावोंकी अभिव्यक्तिमें पूर्ण रूपसे कभी सफल नहीं मानी जा सकती। हिन्दी या उर्दू की प्रारम्भिक रचनाएं उस समयकी भाषा-स्थितिकी कमजोरियों को तो प्रगट करती ही है, किन्तु उस समय का निर्माण—कार्य भाषाको धीरे-धीरे समृद्ध और मजबूत बना रहा था, इसमें शक नहीं। आज कौन कह सकता है कि हिन्दी या उर्दू अपूर्ण भाषाएं हैं? प्रेमचन्दने अपने समयमें प्राप्तभाषाके पूर्व 'पायनियरों' के एहसान को माना है। साथ ही हिन्दुस्तानीका जो विवाद आजकल चल रहा है, उसके लिए उन्होंने स्पष्ट ही अपने समयकी सादी बोली को हिन्दुस्तानी मान लिया था। और जो हिन्दी उन्होंने लिखी है, क्या वह सबके लायक भाषा नहीं? उन्होंने भाषाके लिए लिखा है— "भाषा साधन है, साध्य नहीं। अब हमारी भाषाने वह रूप प्राप्त कर लिया है कि हम भाषासे आगे बढ़कर भावकी ओर ध्यान दें।

प्रेमचन्दने अपने पूर्वकी साहित्यिक गतिविधि और उस युगकी विचारधारा का अध्ययन किया था। वे स्वयं उस समयके विचारोंमें व्यक्तिवाद और जीवनसे दूर कल्पनाके महलोंको साहित्यकी थोथी वस्तु मानते थे। जो रुचि उस समय प्रचलित थी, उसके जिम्मेदार केवल साहित्यके कलाकार ही नहीं, उसका पोषकवर्ग भी था। इस बातको लक्ष्यमें रखकर हम प्रेमचन्दके शब्दोंमें पायेंगे कि, "जब साहित्य पर संसारकी नश्वरताका रंग चढ़ा हो, और उसका एक-एक शब्द नैराश्यमें डूबा समयकी प्रतिकूलतासे भरा और शृंगारिक भावोंका प्रतिविम्ब बना हो, तो समझ लीजिये कि वह जाति जड़ता और ह्रासके पंजेमें फंस चुकी है।"

आजसे करीब २० वर्ष पूर्व प्रेमचन्दने जाना कि साहित्यमें बड़ी तेजीसे परिवर्तन हो रहे हैं। उस समय वे स्वयं जो साहित्य दे रहे थे, वह उस समयकी परम्परासे बिलकुल भिन्न थी। उनकी कृतियां साहित्य के उद्देश्यसे अनुकूल जीवनसे सम्बन्धित जीवनकी सच्ची आलोचना की प्रतिनिधि स्वरूपा थीं, तो दूसरी ओर उनके समकालीन साहित्यिक विदेशी भाषाओंके अनुवाद "चन्द्रकान्ता सन्तति' के ढंगका सृजन करनेमें मशगूल थे। अतः उस समय प्रेमचन्दका आना एक परिवर्तन था। हम देखते हैं कि उनके साहित्यमें सच और झूठ आपसमें टकराते हैं, क्योंकि परिवर्तन के किनारे उसका निर्माण हुआ है। किसी विशेष सत्य (जो कि होना चाहिए) की खोज उसमें बराबर मिलती है। यथार्थ के ऊपर आदर्शका आवरण उसी सत्यको खोजनेका प्रयास मात्र है। शान्तिप्रिय के शब्दोंमें "प्रेमचन्द जिस युगमें उत्पन्न हुए, उसी युगके पीड़ित कलाकार हो गये।"

अन्य वस्तुओंकी तरह कलाकी महत्ता प्रेमचन्दके लिए उसकी उपयोगितामें थी। क्योंकि समाजके आर्थिक और धार्मिक पहलुओंके प्रति उनका विद्रोह कलाको जीवनसे अलग माननेको तैयार नहीं हो सकता था। वे यह भी मानते थे कि कलाका उद्देश्य सौन्दर्य-वृत्तिको पुष्ट करना है, किन्तु उस पुष्टि-कार्यमें उपयोगिताकी स्थिति अनिवार्य है। प्रकृति जीवनको पुष्ट और विकसित करती है। उसमें आनन्दकी प्राप्ति परोक्षमें जीवन-विकासकी उपयोगिताका कारण है। इसलिए प्रकृतिका सौन्दर्य पूजनीय है। तभी कलाकार अपनी कलासे सौंदर्यकी सृष्टि कर परिस्थितिको विकासके उपयोगी बनाता है।"

प्रेमचन्दके पूर्व सौन्दर्यको परखनेका दृष्टिकोण बड़ा संकुचित और विशेष वर्ग तक सीमित था। कलाकारों और साहित्यकारोंका अमीरोंकी कद्रदानीमें घुटते-घुटते जो उत्थान हुआ था, वह संकुचित सौंदर्य और वासनामें तीव्रता ही पैदा कर सकता था, जीवन-विकासका आवेग नहीं। हां, जो इस चंगुलसे अलग थे, उन्होंने निस्संदेह उच्च कोटिका साहित्य दिया। प्रेमचन्दने इस प्रकारके सीमित सौंदर्य और कसौटीका विरोध किया और इस ओर विशेष रूपसे जोर दिया कि हमें अपनी दृष्टि व्यापक बनानी चाहिये। सौंदर्य तो चारों ओर है, उसे 'पिक अप' करना कलाकारका कार्य है। अमीरोंके बगीचे सुन्दर हैं, पर गांवके खेतका गन्दा हिस्सा भी बिखरे सौन्दर्यसे कम नहीं। साहित्यकारका कार्य किसी विशेष वर्गके लिए सौंदर्यकी सृष्टि करना नहीं, बल्कि सार्वजनिक कल्याणकी भावना-को समान रूपसे उत्थान देना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पाकिस्तानमें खादी

श्री कृष्णाचार्य

"अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसने खादीका प्रचार घृणाके आधारपर किया" यह वाक्य किस सत्यके अन्वेषकको अच्छा लगेगा ? और यह कौन व्यक्ति कह सकता है ? हिन्दुस्तानके किसी भी कार्यके विरुद्ध पाकिस्तानका कोई अदना व्यक्ति भी चाहे जो कुछ कहनेके लिए स्वतंत्र है । किन्तु उपर्युक्त वाक्य पाकिस्तानका कोई अत्यन्त जिम्मेदार व्यक्ति कहे तो कितने आश्चर्यकी बात होगी ! मि० जिन्नाके उपरान्त पाकिस्तानके द्वितीय प्रभावशाली व्यक्ति भी श्री लियाकत अलीने ये शब्द अपने राष्ट्रके बुनकरोंके समक्ष विगत २२ मईके भाषणमें उद्घोषित किये थे । आश्चर्य हुआ लियाकत अलीकी इस लियाकत पर ये शब्द एक व्यक्तिके प्रश्नके उत्तरमें थे, जिसने यह पूछा था कि हम खादीके मामलेमें भारतकी नकल क्यों करें ? मुझे मानव प्रकृतिका यह रहस्य समझकर और भी अधिक आश्चर्य हुआ कि कुछ मनुष्य ऐसे भी होते हैं, जो किसी अच्छे काम की भी नकल करनेमें संकोचका अनुभव करते हैं । लेकिन लियाकत अलीने उसके इस प्रश्नका उत्तर देकर कमाल तो किया ही, साथ ही अपनी चालबाजीका भी परिचय दिया !

हिन्दुस्तानका प्रत्येक बालक – उस हिन्दुस्तानका जिसमें १५ अगस्त १९४६ से पहलेका पाकिस्तानी हिस्सा भी सम्मिलित था– जानता है कि स्वदेशी आन्दोलनका श्रीगणेश विश्ववन्द्य बापूने किया था । स्वदेशी वस्तुओंमें भी चरखा, करघा या यह कहिये कि हाथके बने कपड़ेका आन्दोलन चलानेका श्रेय बापूको ही है । जब यह बात निर्विवाद है तो यह भी निर्विवाद है कि बापूका कोई कार्य घृणापर आधारित नहीं था । बापूका तो बड़प्पन ही इसीमें था कि शत्रु भी उनकी ईमानदारी , सचाई और प्रेमकी सराहना करते थे । लियाकत अली भी भली भांति जानते हैं कि खादीका यह महान प्रचार गांधीजीके कारण हुआ !

यह सच है कि भारतमें आन्दोलनके दौरानमें विदेशी कपड़ोंकी होली हुई , विदेशी व्यापारको भीषण धक्का लगा , मैंचेस्टर तथा लंकाशायरकी मिलें बन्द हो गयीं, किन्तु इसका कारण ब्रिटेनके प्रति भारतकी घृणा नहीं है, वरन् भारतकी स्वतंत्र होनेकी भावना है । स्वयं गांधीजीने अपनी जीवनीके 'खादीका जन्म' अध्यायमें लिखा है कि "हमने देखा कि जबतक हाथसे सूत न कातेंगे, तबतक हमारी पराधीनता बनी रहेगी ।" गांधीजीका आन्दोलन इसी उत्तरसे समाप्त नहीं हो जाता । वह तो प्रारंभमें देशी मिलोंके कपड़े भी पहनना पसंद नहीं करते थे ! उन्हें कपड़ेके संबंध में देशी-विदेशीका विचार नहीं था, उन्हें तो हाथके बने कपड़ेका आग्रह था– फिर वह चाहे देशी मिलका हो या विदेशी, उनसे गांधीजी छुटकारा चाहते थे । गांधीजीने जब १९१५ के लगभग सबसे पहले अपने आश्रममें चरखा लाकर रखा तो उन्हें मिलोंसे, देशी मिलोंसे पूनियां लेकर कातनेमें संकोच मालूम हुआ । अपने जीवन-चरितमें बापूनें विस्तारसे बतलाया है कि किस तरह उन्हें खादीके संबंधमें कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा और किस तरह उन्होंने आदिसे अंतका उसका पूरा अध्ययन किया तथा उसमें सफलता प्राप्त की ।

लियाकत अली साहबको खादीके प्रति झुकाव घृणाके स्थानपर प्रेमके कारण हुआ ! तो देखना है कि वह किस तरह अपने आपको इस कलाका प्रवीण उस्ताद बनाते हैं । खादी-प्रेमका परिचय केवल व्याख्यान देनेसे या भारतको बदनाम करनेसे अथवा खादी पहिननेसे भी नहीं मिलता । खादीका सच्चा भक्त उसके जन्मदाता गांधीजीके अर्थोंमें तो वह है जो स्वयं अपने हाथका बना कपड़ा पहने , जो उसका प्रचार करे और उसको वर्तमान आवश्यकताकी पूर्तिका साधन मात्र न मानकर जीवनके मुख्य धर्मकी तरह ग्रहण करे । लियाकत अली साहब इतने भोले नहीं हैं, जो इन सब बातोंको नहीं जानते हैं ? क्या भारत भारतीय मिलोंके मालिकों भी घृणा करता है ? सच्चा स्वदेशी प्रेमी हाथ की बनी चीज़ोंसे प्रेम करता है विशेषकर लीगने अंग्रेजी राज्यमें स्वदेशी आन्दोलन को कभी महत्व नहीं दिया । उनका काम तो उस समय कांग्रेसको बदनाम करना और पाकिस्तानकी स्थापनाके लिए गौरांग महाप्रभुओंकी खुशामद करना था । किन्तु जब सिर पर आकर पड़ी, जब अपना प्रबन्ध करना पड़ा, जब कपड़ेका अभाव हुआ और अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए दूसरोंकी दासता स्वीकार करनेकी बात सामने आयी तब खादीके महत्वनें पाकिस्तानी भाइयोंकी आंखें खोल दीं ।

पाकिस्तानके नेताओंकी आंखें तो खुलने लगी हैं, किन्तु धीरे-धीरे ! इसके साथ वह यह कैसे स्वीकार कर सकते हैं कि भारत जो कुछ करता है, या भारतीय कांग्रेस जो कुछ करती है, वह अच्छा ही करती है । अतः भूत सिरपर चढ़ कर बोला तो ! किन्तु उसकी नीयत फिर भी साफ न थी ! पाकिस्तानकी अधिकांश अपढ़ जनता पर खादी जैसे उपयोगी प्रोग्रामकी भयंकर प्रतिक्रिया होनेकी आशा थी । पाकिस्तानकी जनता यह सोच सकती थी और सोचने लगी कि अब बात-बातमें भारतका अनुकरण क्यों हो रहा है– अगर भारत बुरा है, तो ! इस प्रतिक्रियाको रोकनेके लिए पाकिस्तानी नेताने यह मिथ्या और अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# जात-पांत कैसे मिटे ?

स्वामी आनन्द

जन्मके आधार पर बनी हुई जातियोंने शोरबे वगैरहका काफी सेवन किया जाता है। ऊंच नीचकी भावनाने हिन्दुओंमें खाना-पान, रोटीबेटी व्यवहार और आपसमें मिलने-जुलने वगैरहके बारेमें जो दीवालें, रुकावटें और पाबन्दियां खड़ी कर दी हैं, उन्होंने हिन्दुओंके सामाजिक जीवनका पूरी तरह गला घोट दिया है। ऊंच नीच की उस भावनाके पापसे सारे हिन्दुओंमें और खासकर सवर्ण कहे जानेवाले हिंदुओं में, आदमी जसे आदमीके लिये भी जो नफरत और अपमानके संस्कार घर कर गये हैं, वे ही आजकी हमारी बहुतसी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक बुराइयोंकी जड़ हैं। इसके भयानक सबूत पिछले दस बीस वर्षोंमें और खास कर पिछले एक दो वर्षोंमें मिल चुके हैं।

सेवाग्राममें हालमें ही रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंका जो सम्मेलन हुआ था, उसने सब लोगोंसे यह अपील की है कि वे इस देशमें जातपांत और शोषणरहित समाज कायम करनेके गांधीजीके सपनेको सच्चा कर दिखानेके लिये अपनी सारी ताकत लगा दें।

वसे तो हम अपने रोजानाके बरतावों में हर तरहसे जातपांत के बन्धनोंको तोड़ता ही हैं। शहरों या सफरमें, सुभीतेके खातिर मेलों या उत्सवोंके समय मान-मर्यादाके खातिर और बीमारीके समय जीनेके खातिर हम हर रोज हर तरहसे जातपांत की सीमाओंको लांघते हैं। इस तरह किसी भी जातिवालेके साथ बैठकर खाने-पीने में मांस जसी न खाने लायक चीजें खानेमें भी बहुतसे लोगोंको अब कोई संकोच नहीं, रहा। तबीयत सुधारनेके खयालसे तो कर सनातनी वैष्णवों और जनोंमें भी अंडों मांस-मदिरा, लीवर एक्स टैक्ट, मुर्गीके लेकिन यह जाहिर है कि इस तरह सुभीते मानमर्यादा, या मौजके बदनके लिये जातपांतके जो बन्धन तोड़े जाते हैं, उनकी नतिक कीमत भी कुछ नहीं होती।

जैसा कि श्री किशोरलाल भाई अपनी नयी किताब 'समूली क्रांति' में कहते हैं, जातपांतका संस्कार हजारों बरससे हमारे खूनमें मिला हुआ है। आज अच्छे अच्छे सुधारकों और राष्ट्रवादियोंके बरतावों की बारीकीसे जांच की जाय, तो उनमें बहुत बार यह जातपांतका मानस हर तरह के काम करता हुआ दिखायी पड़ेगा। अच्छे विचारशील पढ़े लिखे लोगोंको भी इस बात का भान नहीं होता कि जातपांतकी भावना कितन ही छोटे और अच्छे मालूम होनवाले रूपमें क्यों न हो, वह राष्ट्रभावना और राष्ट्रीय संगठन या एकताके बिलकुल खिलाफ है और उसका नाश करनवाली है। लेकिन आज तो बदकिस्मतीसे हमार सामाजिक रीत रिवाज, हमार शादी ब्याह, हमारे दानधर्म, और तो और, हमार चुनावोंके पीछे भी यही जातपांत, दलबन्दी और फिरकापरस्तीकी ओछी भावना दिखायी देगी। अच्छे-अच्छे पढ़े लिखे और हमेशा सुधारकी बात करनेवाले लोग भी लड़के लड़कियोंके लेनदेनकी बात आते ही लाचार बनकर अपने मां-बाप, पत्नी या कुटुम्बियों की तरफसे किये जानेवाले विरोधकी आड़ देकर अपनी सन्तानको जातपांतके गन्दे पानीसे भरे गड्ढोंमें डुबो देना पसन्द करते हैं।

दानधर्मके क्षेत्रमें भी यही बात दिखायी देगी। हमारे धनी लोगोंके दानसे चलनेवाली ९० फी सदी संस्थाएं जातपांत या सम्प्रदायके रूप रंगवाली होती हैं। वे सम्प्रदाय जाति या उपजातिके नाम पर ही चलती है। और एसी संस्थाओंके मुकाबले राष्ट्रीय रूपरंगवाली और साम्प्रदायिकताकी भावना न रखनेवाली संस्थाएं बहुत थोड़ी और मामूलीसी दिखायी देंगी। हमार प्रान्त या जिलेके केन्द्र जैसे शहरोंमें चलनेवाले विद्यार्थी गृह, छात्रालय, शिक्षण संस्थाएं और दूसरी चलनेवाली संस्थाएं आप देखें तो पता चलेगा कि वे अलग-अलग जातियों या उपजातियोंके नामसे ही चलती है। लेकिन यह तो साफ है कि यह चीज राष्ट्रभावनाका पूरी तरह नाश करनेवाली है। फिर भी हमारे यहांके राष्ट्रवादी कहे जानवाले अखबार भी ऐसे छात्रालय वगैरह खोलनेवालों और ऐसे दान देनेवालोंकी निन्दा और अपमान करनेके बदले उन्हें लगनके साथ जनताकी सेवा करनेवाले दानशूर नेताओंके रूपमें प्रजाके सामने रखते हैं, और उनके फोटो तथा रेखाचित्र छापते हैं। इससे प्रजाको कैसी शिक्षा मिलेगी ?

सोलहो आने राष्ट्रीय भावना रखने का दावा करनेवालोंका बरताव भी इससे बहुत अलग नहीं होता। अपनेको राष्ट्रवादी, कांग्रेसवादी या समाजवादी कहलवानेवाले लोग भी सत्ता और चुनावोंके आन्दोलनोंमें किसी जाति, उपजाति या सम्प्रदायके एक साथ वोट पानेके खातिर जातिकी रिश्तेदारी या प्रतिष्ठाको सामने रखकर उस जातिके मुखिया लोगोंकी मदद मांगना अनुचित नहीं मानते। शुद्ध राष्ट्रीय आधारपर खड़े रह कर सार्वजनिक जीवन और काम काजमें अपना स्थान बनानेमें निराश होनेवाले कुछ सुशिक्षित कार्यकर्त्ता कौमी दायरेमें अपनी ताकत और कोशिशें लगाते हैं और उस छोटे दायरेमें आसानीसे मिलनेवाली नेतागिरीकी इज्जतसे सन्तोष मानते देखे जाते हैं। ऐसे लोग आम तौर पर यह सफाई देते हैं कि हम पूरे राष्ट्रवादी हैं, लेकिन जातपांतके बाड़ेमें रहकर अपने प्रगतिशील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(६ पृष्ठका शेषांश)

जायगा । यदि काश्मीरपर हिन्दुओंका शासन स्थापित हो गया तो भी पाकिस्तान नष्ट हो जायगा । इसलि पश्चिम पाकिस्तानका प्रत्येक निवासी काश्मीरके युद्ध को अपना ही युद्ध समझता है ।

पर भारत किस लिए लड़ रहा है ? क्या काश्मीर अनादि कालसे भारतका अंग रहा है, इसलि हम उसे नहीं छोड़ सकते ? यह तो कोई पुष्ट तर्क नहीं । आखिर भारतका बहुत बड़ा भाग जो इतिहासके प्रारंभसे ही उसका अंश रहा है, हमने छोड़ ही दिया है । तब क्या हम भारत की सुरक्षाके लिए लड़ रहे हैं ? सुरक्षाकी चिन्ता तो हमें खैबर घाटी देते समय करनी चाहिये थी , जिसके द्वारा हमपर अनेक आक्रमण अतीत कालमें हुए हैं । खैबर , बोलन और और सिंध होकर अनेक विजेता इस देशमें अबतक आये, पर काश्मीरके मार्गसे अबतक कोई आक्रमण नहीं हुआ । तब क्या हम शेख अब्दुल्लाको दिये वचनोंकी पूर्तिके लिए लड़ रहे हैं ? निश्चय ही वचन का पालन एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है, फिर भी भारत और शेख अब्दुल्लामें कैसी ही मैत्री क्यों न हो, किसी एक व्यक्तिके लिए राष्ट्रका इतना रक्त और धन नहीं बहाया जा सकता । कमसेकम कोई सैनिक इसलिये अपना जीवन दान करना स्वीकार नहीं कर सकता ।

तब हम काश्मीरमें किसलिए लड़ रहे हैं ? ११नवम्बर १९४७ को पं०जवाहर लाल नेहरूने श्रीनगरकी एक बड़ी स्वागत सभामें भाषण देते हुए कहा था "श्रीनगर की जनताने सम्पूर्ण भारतके समक्ष एक आदर्श उपस्थित किया है । शेख काश्मीर भारतको ही नहीं, समग्र विश्वको बता दिया है कि साम्प्रदायिक एकता और स्वतंत्रता किस प्रकार प्राप्त की जाती है ।" प्रधान मंत्रीके इन शब्दोंमें सारे प्रश्नका उत्तर निहित है । काश्मीरमें 'दो राष्ट्रों' के सिद्धांतका अंतिम निर्णय हो रहा है । मि० जिन्नाके दूषित आदर्शकी प्रगति कुछ समयके लिए काश्मीरमें रोक दी गयी है ।

वास्तवमें काश्मीरके युद्धपर भारतीय मुसलमानोंका भी भाग्य अवलम्बित है । भारत असम्प्रदायवादी राष्ट्र रहेगा या नहीं, इसका उत्तर काश्मीरकी भूमिमें ही मिल सकेगा । गांधी-नेहरूके आदर्शोंकी सफलताकी कसौटी काश्मीर है और इसी दृष्टिसे हम इस युद्धको देखना चाहिये ।


होमियोपैथिक दवाइयां प्रति डाम =) =)॥ आनाकी। हरएक बीमारियोंकी दवाइयां बम सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ५), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी
८८ नम्बर लोअर चीत. नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

MONSOON
SETS IN
Anopheles breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मलेरिया बुखारके लिये रामबाण है। अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियास कष्ट हो तो इसका स्मरण करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
Kasaya

KAVIRAJ N.N.SEN & CO. LD.
CALCUTTA

रियायती दामोंपर
उच्चतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां।

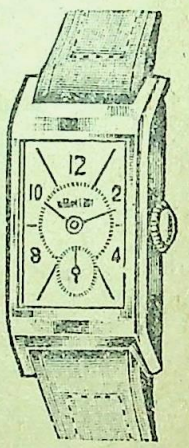

अत्यधिक सस्ती कीमतोंपर स्विट्जरलैण्डकी बनी हुई, नई डिजाइनकी निहायत सुन्दर ठीक समय देनेवाली हर घड़ीकी गारन्टी पांच, तीन साल। कीमियम केस का गोल्ड प्लेटेड चौकोर १) सुपीरियर ५ रूबी डायलकी १८) स्टील सेन्टर लंक ४ जूवलकी गोल २०) रक्त गुलाबी आकारकी चित्र जड़ी घड़ियां उज्वल कीमियम केसकी, ५ जूवल३७) गोल्ड प्लेटेड ५ जूवल की ५०) बेस्ट कीमियम केस ४२) गोल्ड प्लेटेड ५३)। कीमियम केस १५ जूवल ६)। रिस्ट बैण्ड ४०) गोल्ड प्लेटेड ६०) बेस्ट ग्रेनियम १ पकी ७८)पांचका पार्सल माफ। हर घड़ीके साथ एक फाता फ्री डिजाइन का दिया जाता है।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V.C.)
ऐशबाग गेट लखनऊ

वैद्यराज के सुशवरा
यदि आपको आयुर्वेदिक इन्जेक्शनों का— आयुर्वेदिक इन्जेक्शन
अद्भुत चमत्कार
आयुर्वेदिक मैलेरिया इन्जेक्शन
कवल १इन्जेक्शन में मलेरिया लापता हो जाता है। पूरे पैसे वापस
दी आयुर्वेदिक इन्जेक्शन सप्लाई एजेन्सी, मंगलगढ (दरभंगा)

फिल्मी दुनिया मुफ्त
सिनेमा की दुनियां का अनूठा रहस्य जाननेके लिये 'फिल्मी दुनिया' पुस्तक आज ही मुफ्त मंगाइये।
पता—मधुर मन्दिर हाथरस वी० पी०


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



--अहमदाबाद । जिला मजिस्ट्रेटने यहां के ११ होटलोंके लाइसेंस रद्द कर दिये हैं, क्योंकि उनमें हरिजनोंका प्रवेश निषेध था।

--कलकत्ता । हत्याके अभियोगमें कलकत्ता पुलिसके एक ए० एस० आई० गोपाल सिंहको फांसीकी सजा मिली है ।

--लखनऊ । यू० पी० में हैजेसे अब तक १० हजार आदमी मर चुके हैं ।

--बम्बई । बम्बईके मेहतरोंने हड़ताल कर रखी थी, जो अब ख़त्म हो गयी ।

--नयी दिल्ली । आसामके अन्तर्गत मनीपुर, कछार और त्रिपुरा राज्योंकी ओरसे मांग की जा रही है कि उनका एक अलग पूर्वांचल प्रदेश बना दिया जाय ।

--काहिरा । अरबोंने राष्ट्र संघकी सुरक्षा परिषदके फिलस्तीन सम्बन्धी प्रस्तावोंको अस्वीकार कर दिया ।

--बर्लिन । रूसियोंने बर्लिनकी चतुर्शक्ति शासन परिषदको भंग कर दिया ।

--लन्दन । चीन, आयर्लैण्ड और इटलीने मार्शल सहायतता पैक्ट पर हस्ताक्षर कर दिये ।

--काहिरा । मालूम हुआ है कि इजराइल की सरकारने भी सुरक्षा परिषदके फिलस्तीन सम्बन्धी प्रस्तावोंको अस्वीकार कर देनेका निश्चय किया है ।

--पेशावर । सीमा प्रांतके भूतपूर्व मंत्री और खुदाई खिदमतगार असेम्बली पार्टीके डिप्टी लीडर काजी अताउल्ला २९ जूनको गिरफ्तार कर लिये गये । खां अब्दुल गफ्फार खां पहले ही गिरफ्तार किये जा चुके हैं ।

--स्थानीय कमक स्ट्रीटमें सरायकेला के कुमार साहबके घरकी तलाशी ६ घंटे तक ली गयी ।

--गौहाटी । नौगांव जिलेमें बाढ़के कारण लगभग २५७ गांव क्षतिग्रस्त हुए हैं ।

--पूना । आगा खां पैलेस, जहां कस्तूरबा गांधी और महादेव देसाईकी समाधि है, बम्बई सरकार द्वारा फौजी उद्देश्यसे ले लिया गया है ।

--लखनऊ । यू० पी० असेम्बलीके उप-निर्वाचनमें समाजवादी उम्मीदवार आचार्य नरेंद्र देव पराजित हो गये और और कांग्रेसी उम्मीदवार बाबा राघवदास विजयी हुए ।

--राची । बिहारमें जमींदारी उन्मूलन योजना बहुत जल्द कार्यान्वित हो जायगी । संभवतः १५ सितम्बर तक सरकार सभी जमींदारियां ले लेगी ।

--दिल्ली । लन्दनमें अफवाह है कि

## सप्ताह

निजाम राजगद्दी छोड़ कर चले जायेंगे और उनके पुत्र उत्तराधिकारी होंगे ।

--दिल्ली । कांग्रेस कार्यकारिणी समितिने निश्चय किया है कि कांग्रेसका आगामी अधिवेशन दिसम्बरके मध्यमें जयपुरमें हो ।

--दिल्ली । भारतीय विधान परिषदका आगामी अधिवेशन अक्तूबरमें होगा ।

--दिल्ली । भारतीय सेनाके सैनिकोंको वीरता प्रदर्शनके पुरस्कारस्वरूप दिये जानेवाले 'विक्टोरिया क्रासका' नाम बदल कर अब 'परम वीर चक्र' कर दिया जायेगा । डी० एस० ओ० का नाम बदल कर 'महावीर चक्र' और एस० सी० की जगह 'वीर चक्र' किया जायेगा ।

--दिल्ली । श्री पी० एन० ड्राइवर भारतके पुर्तगाली प्रदेशोंके लिये कंसल नियुक्त किये गये हैं ।

--हेग । हिन्देशियाके प्रजातंत्रने अमेरिकाके साथ एक व्यापारिक संधि की है ।

--इलाहाबाद । एटा, बनारस, बरेली, देवरिया, गोरखपुर, गाजीपुर और मेरठके ६१ नजरबन्दोंको छोड़ देनेका हुक्म दिया है ।

--कलकत्ता । महम्मद हबीब नामक एक व्यक्तिको बिना लाइसेंस का एक पिस्तौल रखनेके अभियोगमें ७ साल सख्त कैदकी सजा मिली है ।

--कराची । भूतपूर्व प्रधान मंत्री खुरोके बंगले पर पाकिस्तान सरकारने कब्जा कर लिया है ।

--दिल्ली । नये कांग्रेस अध्यक्षका निर्वाचन नवम्बरमें होगा ।

--कलकत्ता । ८ वर्षों तक जापानमें रहनेके बाद श्री सत्येंद्र सेन कलकत्ता लौट आये ।

--हैदराबाद । निजाम सरकार हवाई हमलेसे नागरिकोंकी रक्षाके लिये आवश्यक तैयारियां कर रही है ।

--नागपुर । श्री रुइकरने मध्य प्रांतीय कांग्रेस असेम्बली पार्टीसे इस्तीफा दे दिया ।

--नयी दिल्ली । श्री सादिक अलीने अ० भा० कांग्रेस कमेटीके स्थायी कार्यालय मंत्री पदसे इस्तीफा दे दिया ।

--गया । पटना-गया लाइन पर चाकन स्टेशनके असिस्टेंट स्टेशन मास्टरको कुछ लोगोंने आक्रमण करके गोलीसे मार डाला ।

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage as. 12. Free for 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



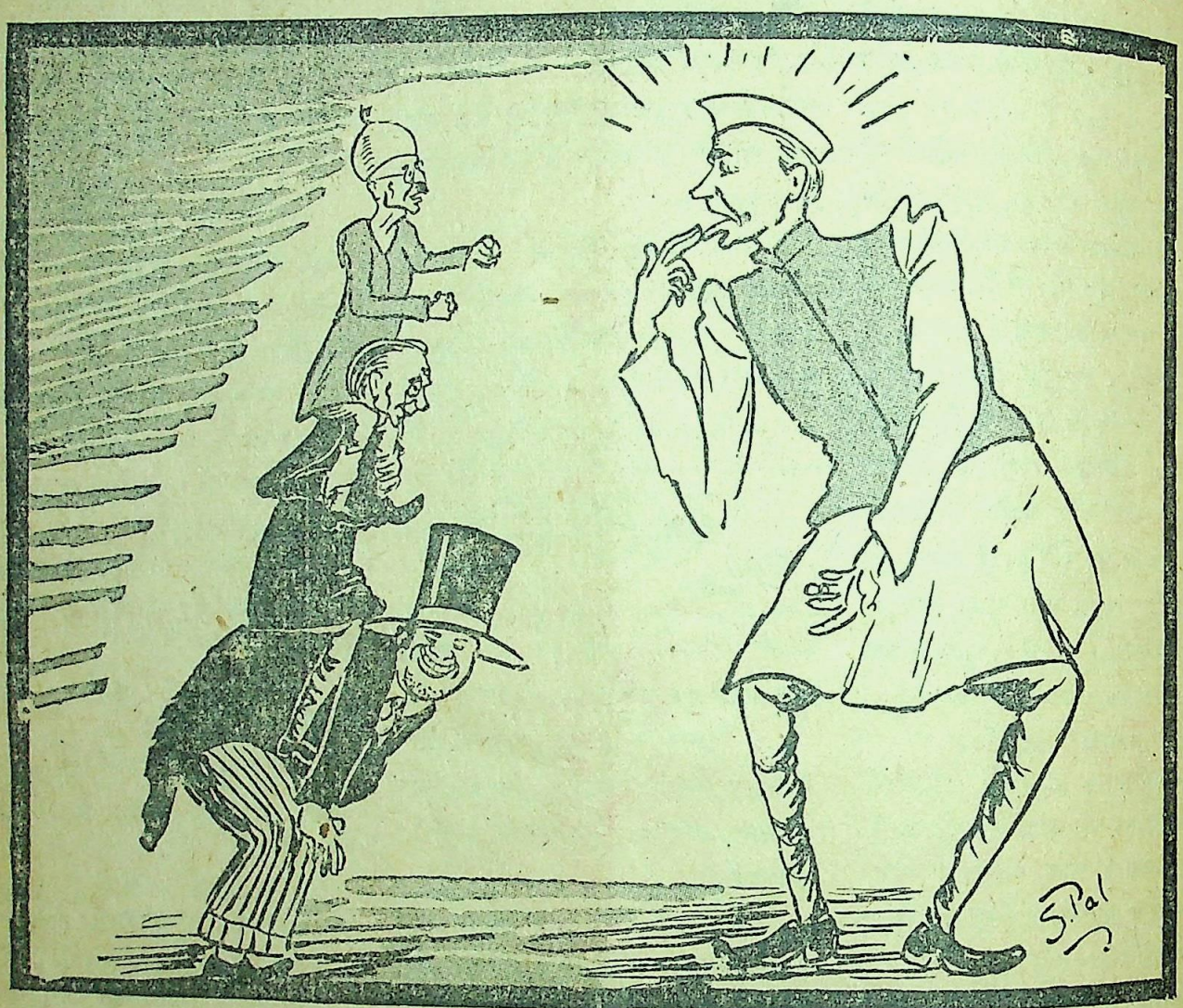

इक तेरा सहारा.....

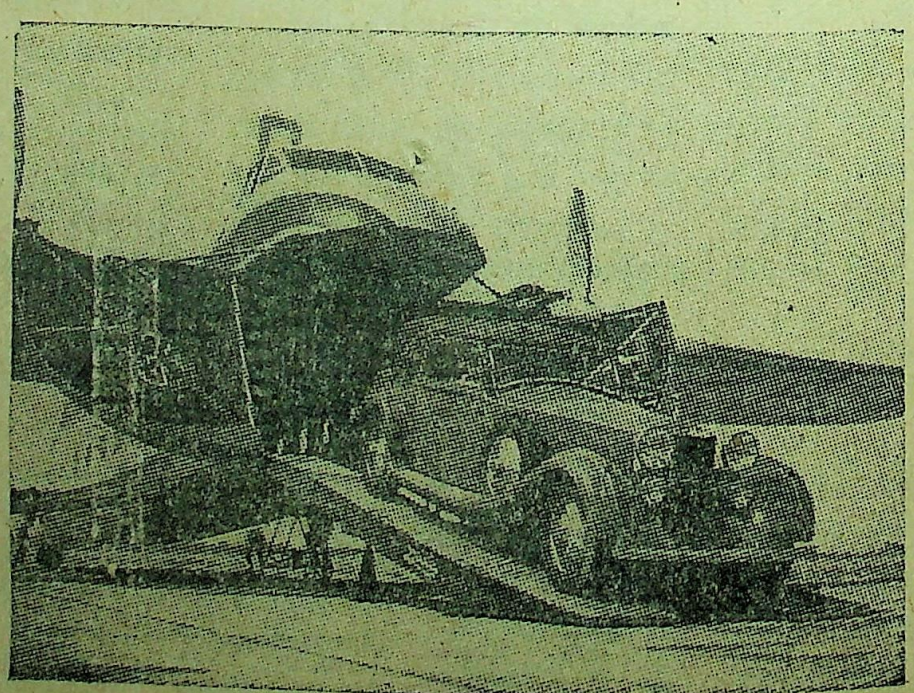

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वामित्र

सम्पादक—

प्रदीप

३१—२६ CALCUTTA, AUGUST 1, 1948. कलकत्ता, १ अगस्त १९४८ मूल्य =)


राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपिकी घोषणा नहीं कर पाये। दूसरे शब्दोंमें यह कि हमारी राजनीतिक गुलामी तो मिट गयी, लेकिन संस्कृति और भाषा-सम्बन्धी गुलामी अभी ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। इसका कारण क्या है? 'हिन्दी' और 'हिन्दुस्तानी' के नाम-पर व्यर्थका विवाद और थोड़े-से लोगोंकी मानसिक कमजोरी। जहांतक भाषाका सम्बन्ध है, प्रायः सभी एक स्वरसे यह स्वीकार करते हैं कि समस्त भारतीय भाषाओंमें एकमात्र हिन्दी ही सर्वाधिक व्यापक और लोकप्रिय भाषा है, अतः वही 'राष्ट्रभाषा' का पद प्राप्त करने और अंग्रेजीकी उत्तराधिकारिणी होनेकी क्षमता रखती है। जहांतक प्रान्तोंका सम्बन्ध है, प्रान्तीय भाषाओंके अधिकारमें हिन्दीको कहीं भी हस्तक्षेप नहीं करना है, लेकिन राष्ट्रमें तो उसका एकाधिपत्य सर्वथा आवश्यक और आवश्यक है। जो लोग हिन्दीके नामपर तथाकथित 'हिन्दुस्तानी' की दलील उपस्थित करते हैं, उन्हें कोरी भावुकतासे काम न लेकर वास्तविकता और यथार्थतापर ध्यान देना होगा। दैनिक बोलचालमें जिस भाषाका प्रयोग किया जाता है, उसीका प्रयोग विशिष्ट विषयोंमें भी किया जाना कदापि सम्भव नहीं रह सकता है। भावुकताके आवेशमें जो लोग अरबी और फारसीके कुछ शब्दोंको हिन्दीमें ठूंसनेकी कोशिश करते हैं, वे लोग राष्ट्र और राष्ट्रीयताके प्रति घोर अन्याय करते हैं, क्योंकि अरबी-फारसीके कुछ साधारण शब्दोंको हम बोलचालकी भाषामें स्वीकार भी कर लें, तो विशिष्ट विषयोंके प्रयोगमें उन्हें खपाना कठिन ही नहीं, सर्वथा असम्भव हो जायेगा। यही कारण है कि मध्यप्रान्तीय असेम्बलीके अध्यक्ष श्री घनश्याम सिंह गुप्तके सभापतित्वमें भारतीय विधान-परिषदने जो भाषा-समिति नियुक्त की है, वह संस्कृत-निष्ठ हिन्दीका ही समर्थन करती है। और, इस समितिके तत्वावधानमें, विभिन्न विशिष्ट विषयोंमें व्यवहृत किये जानेके लिए हिन्दीके पारिभाषिक शब्दोंका जो कोष तैयार किया जा रहा है, उसके कुछ अंशोंपर दृष्टि डालनेसे स्वतः यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृतका आश्रय लेकर हिन्दी राष्ट्रभाषाकी हैसियतसे अपनी विविध आवश्यकताओंकी पूर्त्ति कर सकती है। इसके प्रतिकूल, अरबी-फारसीसे सहायता लेनेपर सर्वथा विशृंखलता पैदा हो जायेगी। इसका एक खास कारण यह है कि प्रत्येक शब्दका, खासकर विशिष्ट विषयोंमें

आसामी,
सभी प्रान्त
संस्कृत ही है,
हिन्दीके शब्द
समान बोधगम्य
विरोधी लोगमुख
से अरबी-फारसी
र्थन करते हैं। ले
कि बंगालके मु
मुसलमान उड़ि
गुजराती और
मुसलमान अपने
जानते और पस
स्तानका उर्दू-वि
ज्वलन्त प्रमाण है
दिल्ली, मेरठ और
भर मुसलमानों
हिन्दुस्तानी और
करना कहांकी
अब समय आ
धिकारी अपनी
विवेकसे काम
हिन्दीको राष्ट्र
लिपि घोषित
कुल दढ़
जब भारतके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पावस

श्री बजनाथ गुप्त

कौन सुन्दरी नील व्योम से करती है मधु-वर्षण
उठीं हिलोरें मृदु मानस में श्वासोंमें भरकंपन
जागी सुप्त वेदना मन की लख पावसकी अलकें,
धीरे-धीरे आंगन में रस-भरी गगरियां छलकें

धुली वनस्पति रंग- बिरंगा निखरा भू-का यौवन
किसी नायिकाकी पग-ध्वनिसे मुखरित नभका प्रांगण
सौरभबोझिल चला समीरण झूमी मृदुल लतायें
किसके यौवन पर मुग्धायें रह-रह कटि लचकायें

सरिताकी गति में प्रिय सिहरन आयी नयी रवानी
मचल उठी प्रिय से मिलनेको फिर मदहोश जवानी
प्रतिद्वन्दी अवरोधबने पर रुका न चंचल यौवन
मिलने चाहा जिसको पाया यह है सत्य चिरन्तन

वसुधाका नव हरितभाल बरसात सजाकर आई
दूर्वा दल बिछ [illegible]

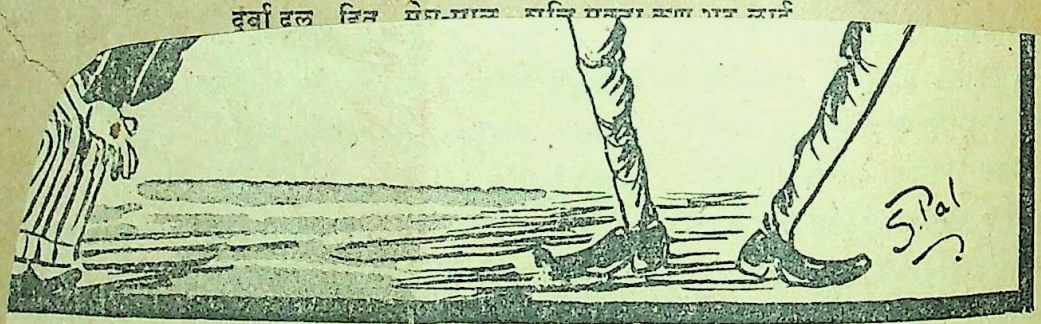


इक तेरा सहारा.....

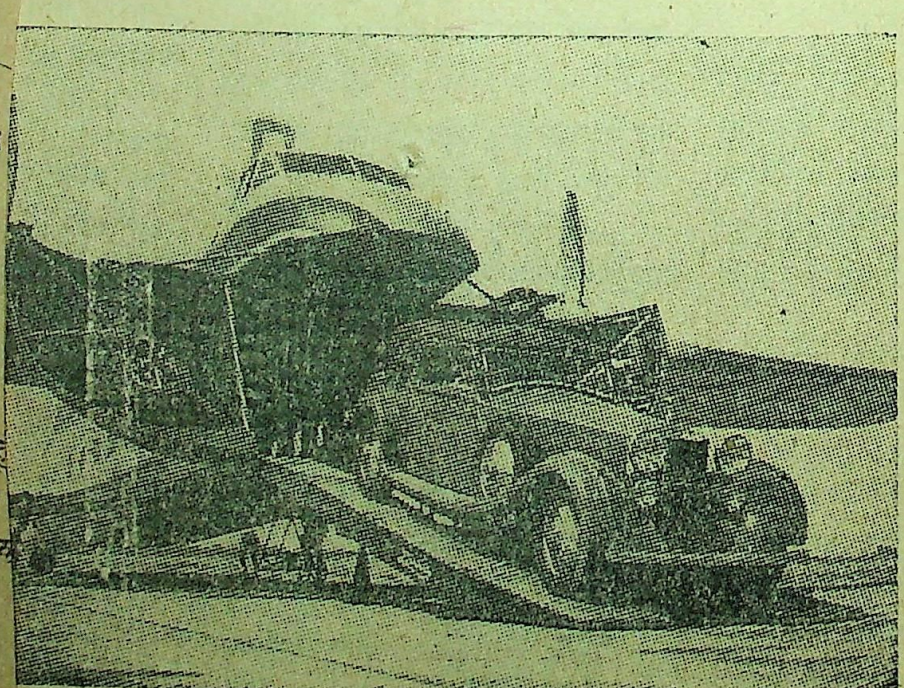

कौन
श्याम
मौन

और
कौनसे
है नि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



* श्री *

परहित बस जिनके मनमाहीं ।
तिन कई जग दुर्लभ कछु नाहीं ।।

विश्वमित्र

# राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि

हमारी नवार्जित स्वतन्त्रताका प्रथम वर्ष अब शीघ्र ही पूरा होने जा रहा है, लेकिन अभीतक हम नियमित रूपमें अपनी राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपिकी घोषणा नहीं कर पाये । दूसरे शब्दोंमें यह कि हमारी राजनीतिक गुलामी तो मिट गयी, लेकिन संस्कृति और भाषा-सम्बन्धी गुलामी अभी ज्यों-की-त्यों बनी हुई है । इसका कारण क्या है ? 'हिन्दी' और 'हिन्दुस्तानी' के नामपर व्यर्थका विवाद और थोड़े-से लोगोंकी मानसिक कमजोरी । जहांतक भाषाका सम्बन्ध है, प्रायः सभी एक स्वरसे यह स्वीकार करते हैं कि समस्त भारतीय भाषाओंमें एकमात्र हिन्दी ही सर्वाधिक व्यापक और लोकप्रिय भाषा है, अतः वही 'राष्ट्रभाषा' का पद प्राप्त करने और अंग्रेजीकी उत्तराधिकारिणी होनेकी क्षमता रखती है । जहांतक प्रान्तोंका सम्बन्ध है, प्रान्तीय भाषाओंके अधिकारमें हिन्दीको कुछ भी हस्तक्षेप नहीं करना है, लेकिन केन्द्रमें तो उसका एकाधिपत्य सर्वथा स्वाभाविक और आवश्यक है । जो लोग एकताके नामपर तथाकथित 'हिन्दुस्तानी' की दलील उपस्थित करते हैं, उन्हें कोरी भावुकतासे काम न लेकर वास्तविकता और यथार्थतापर ध्यान देना होगा । सरकारी बोलचालमें जिस भाषाका प्रयोग किया जाता है, उसीका प्रयोग विशिष्ट विषयोंमें भी किया जाना कदापि सम्भव नहीं है । यह सिद्धान्त सिर्फ हिन्दीके लिए ही नहीं, प्रत्युत संसारकी सभी भाषाओंके लिए एक समान है । उदाहरणार्थ अंग्रेजीको लीजिये । बोलचालकी अंग्रेजी तथा इंजिनियरिंग, चिकित्सा-विज्ञान, शासन-कार्य आदिमें व्यवहृत की जानेवाली अंग्रेजीमें जमीन-आसमानका अन्त होता है । इसी तरह बोलचालकी हिन्दी सरल होते हुए भी, विशिष्ट विषयोंमें प्रयुक्त होनेपर उसमें क्लिष्टता स्वाभाविक ही है ।

लेकिन इस क्लिष्टताके नामपर जो लोग हिन्दीका विरोध और 'हिन्दुस्तानी' का समर्थन करते हैं, उन्हें यह अच्छी तरह ज्ञात हो जाना चाहिये कि 'हिन्दुस्तानी' में भारतकी राष्ट्रभाषा होनेकी क्षमता बिलकुल ही नहीं है; साधारण बोलचाल तक ही उसका व्यवहार सीमित रह सकता है । भावुकताके आवेशमें जो लोग अरबी और फारसीके कुछ शब्दोंको हिन्दीमें ठूंसनेकी कोशिश करते हैं, वे लोग राष्ट्र और राष्ट्रीयताके प्रति घोर अन्याय करते हैं, क्योंकि अरबी-फारसीके कुछ साधारण शब्दोंको हम बोलचालकी भाषामें स्वीकार भी कर लें, तो विशिष्ट विषयोंके प्रयोगमें उन्हें खपाना कठिन ही नहीं, सर्वथा असम्भव हो जायेगा । यही कारण है कि मध्यप्रान्तीय असेम्बलीके अध्यक्ष श्री घनश्याम सिंह गुप्तके सभापतित्वमें भारतीय विधान-परिषदने जो भाषा-समिति नियुक्त की है, वह संस्कृत-निष्ठ हिन्दीका ही समर्थन करती है । और, इस समितिके तत्वावधानमें, विभिन्न विशिष्ट विषयोंमें व्यवहृत किये जानेके लिए हिन्दीके पारिभाषिक शब्दोंका जो कोष तैयार किया जा रहा है, उसके कुछ अंशोंपर दृष्टि डालनेसे स्वतः यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृतका आश्रय लेकर हिन्दी राष्ट्रभाषाकी हैसियतसे अपनी विविध आवश्यकताओंकी पूर्ति कर सकती है । इसके प्रतिकूल, अरबी-फारसीसे सहायता लेनेपर सर्वथा विशृंखलता पैदा हो जायेगी । इसका एक खास कारण यह है कि प्रत्येक शब्दका, खासकर विशिष्ट विषयोंमें व्यवहृत होनेवाले प्रत्येक पारिभाषिक शब्दका एक 'परिवार' होता है—'परिवार' का मतलब है एक शब्दसे बननेवाले अनेक शब्दोंका समूह । ऐसी हालतमें यदि हम अरबी-फारसीके किसी शब्दको हिन्दीमें लेनेकी कोशिश करते हैं, तो बोलचालकी भाषातक ही उसका प्रयोग सीमित रखना होगा, क्योंकि पारिभाषिक शब्दोंकी श्रेणीमें शामिल करनेपर, उस एक शब्दसे बननेवाले पूरे शब्द-समूहको लेनेके लिये हमें बाध्य हो जाना पड़ेगा, जो सर्वथा अव्यावहारिक है ।

इस स्थलपर यह बता देना भी उचित होगा कि संस्कृतनिष्ठ हिन्दीकी क्लिष्टता अरबी-फारसी अथवा अंग्रेजी शब्दोंकी क्लिष्टताकी तुलनामें हमारे लिए अधिक सुविधाजनक है । चूंकि गुजराती, मराठी, बंगला, आसामी, उड़िया, तामिल, तेलगू आदि सभी प्रान्तीय भाषाओंका उद्गम-स्रोत संस्कृत ही है, इसलिए स्वभावतः संस्कृतनिष्ठ हिन्दीके शब्द सभी प्रान्तोंके लिए एक समान बोधगम्य होंगे । संस्कृतनिष्ठ हिन्दीके विरोधी लोग मुसलमानोंको खुश करनेके उद्देश्यसे अरबी-फारसी-मिश्रित हिन्दीका समर्थन करते हैं । लेकिन यह कौन नहीं जानता कि बंगालके मुसलमान बंगला, उड़ीसाके मुसलमान उड़िया, गुजरातके मुसलमान गुजराती और इसी तरह अन्य प्रान्तोंके मुसलमान अपने अपने प्रान्तकी भाषाको ही जानते और पसन्द करते हैं । पूर्वी पाकिस्तानका उर्दू-विरोधी आन्दोलन इसका ज्वलन्त प्रमाण है । तो फिर ऐसी हालतमें दिल्ली, मेरठ और लखनऊके कुछ मुट्ठी भर मुसलमानोंके लिये समस्त देशपर हिन्दुस्तानी और उर्दूको लादनेकी वकालत करना कहांकी बुद्धिमानी है ? इसलिए अब समय आ गया है कि हमारे राष्ट्राधिकारी अपनी कोरी भावुकता त्यागकर विवेकसे काम लें और यथासम्भव शीघ्र हिन्दीको राष्ट्रभाषा और देवनागरीको राष्ट्रलिपि घोषित कर दें ।

कुल दो-दो सौ वर्षोंके संसर्गमें ही, जब भारतके लोगोंने अंग्रेजीमें पांडित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्राप्त करनेमें अपनी असाधारण क्षमता दिखायी तो संस्कृतनिष्ठ हिन्दीके प्रति हिचक अथवा अरुचिका कोई कारण नहीं दीखता, जब कि संस्कृत हमारे जीवनसे निकटतम सम्बन्ध रखती है। अतः हमारा तो पूर्ण विश्वास है कि, हिन्दीके 'राष्ट्रभाषा' और देवनागरीके 'राष्ट्रलिपि' घोषित हो जानेपर विरोधियोंका विरोध स्वतः प्रेममें परिवर्तित हो जायेगा।

## यह हिमाकत !—

निजाम सरकारकी शक्ति पर अभिमान करते हुए एक पाकिस्तानी लेखकने कुछ दिनों पूर्व 'डान' में लिखा था—"जो भारतीय सेना काश्मीरमें कुल २० हजार आक्रमणकारियोंके खिलाफ लड़नेमें आज महीनोंसे जूझ रही है, वह हैदराबादमें क्या कर लेगी, जहां निजामके पास ५० हजार से अधिक सशस्त्र अरब और ५ लाखसे अधिक इत्तहादी स्वयंसेवक हैं।" निस्सन्देह, यह चुनौती सुन कर प्रत्येक देशभक्त भारतीयका खून उबलने लगता है। लेकिन विचार करने पर मालूम होगा कि काश्मीर और हैदराबाद की स्थितिमें बहुत अन्तर है। काश्मीर पश्चिमी पाकिस्तानसे सटा हुआ है और पाकिस्तान प्रत्यक्षतः आक्रमणकारियोंका साथ दे रहा है। दूसरी ओर भारत सरकार की नीति अभी तक पाकिस्तानसे प्रत्यक्ष संघर्ष छेड़नेकी न थी और न है। यही कारण है कि काश्मीरके आक्रमणकारियोंका दमन करनेमें उसे अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है। लेकिन हैदराबादके मामले में यह दिक्कत नहीं है। हैदराबादके चारों ओर भारतीय प्रदेश हैं, इसलिए जिस दिन हैदराबादके खिलाफ फौजी कार्रवाई करनेका निश्चय किया जायेगा, उस दिन निजामकी सेना और पुलिसको अच्छी तरह मालूम हो जायेगा कि वह कितने पानीमें है।

## प्रांतीयताका जहर—

विभिन्न सूत्रोंसे जो संवाद प्राप्त हो रहे हैं, उनसे पता चलता है कि बिहारके बंगलाभाषी भागोंमें, सिंहभूम और मानभूम जिलों में, इन दिनों कुछ लोग प्रांतीयताके जहरका प्रचार इस तरह कर रहे हैं कि यदि तुरत नियंत्रण न किया गया, तो इसका दुष्परिणाम बड़ा ही भयंकर होगा। बंगालके अधिकांश पत्र उक्त भागोंको पश्चिमबंगालमेंमिलानेका और बिहारके पत्र उन्हें बिहारमें ही बने देने रहनेका जोरदार प्रचार करते हैं। प्रायः हर रोज एकसे-एक जहरीले वक्तव्य और लेख प्रकाशित होते रहते हैं, जिनका असर आम जनता पर पड़ना स्वाभाविक है। हम देखते हैं कि दोनों ही प्रांतोंकी सरकारें इस दिशामें अपने कर्तव्योंका पालन उचित रूपमें नहीं कर पा रही हैं। करें भी कैसे, जबकि स्वयं प्रांतीय अधिकारियोंके दिमाग ही इस प्रश्न पर दूषित हो चुके हों। निस्संदेह देशकी वर्तमान राजनीतिक दशामें यह स्थिति अत्यंत शोचनीय है। एक ओर देशके दुश्मन हमारी नव अर्जित स्वतंत्रताको खतरेमें डालनेकी कोशिश कर रहे हैं और दूसरी ओर हम स्वयं भी आपसमें लड़ें झगड़ें, तो यह कितनी हास्यास्पद बात है! कुछ दिनों पूर्व डा० राजेन्द्रप्रसाद स्पष्ट कह चुके हैं कि इस विवादग्रस्त प्रश्नका फैसला मत-गणनाके आधार पर किया जाना चाहिए। हमतो समझते हैं कि दोनों ही पक्षोंको ऐसे निर्णयके लिए उपयुक्त समयकी अपेक्षा करनी चाहिए और तबतक दोनों पक्षोंको ऐसी कोई कार्रवाई न करनी चाहिए जो किसी भी तरह शांतिके लिए खतरनाक साबित हो।

## सिडनी काटनका लायसेंस—

ब्रिटिश सरकारने आस्ट्रेलियन चालक सिडनी काटनका लायसेंस अस्थायी रूपमें रद्द कर दिया है। सिडनी काटनने भारत सरकारकी आज्ञाकी अवहेलना कर गत १९ जुलाईको कराचीसे हैदराबादकी हवाईयात्रा की, जिसका प्रतिवाद ब्रिटिश सरकार के समक्ष किया गया था और उसी प्रतिवादके कारण उसका लायसेंस रद्द किया गया है। सिडनी काटनका जन्म आस्ट्रेलियामें हुआ है, लेकिन है वह लंदनका व्यापारी। ऐसी हालतमें उसकी गतिविधिपर उचित नियंत्रणकी जिम्मेदारी ब्रिटिश सरकार पर है। स्वयं सिडनी काटन और निजाम सरकारकी ओरसे तो बताया गया कि डेढ़ टन दवा-दारूके सामान लेकर वह कराचीसे हैदराबाद पहुंचा, लेकिन कुछ विश्वस्त क्षेत्रोंका कथन है कि निजामके शाही महलकी रक्षाके लिए, वह विमान-वेधी तोपोंके कुछ पुर्जे लेकर हैदराबाद गया था। जो भी हो, पर भारत सरकारकी आज्ञाका उल्लंघन करनेका अपराध तो उसने किया ही, जिसके लिए उसे न्यायालयके सामने उपस्थित करना और उचित दण्ड देना चाहिए। हैदराबादका मामला भारतका घरेलू मामला है। ऐसी हालतमें यदि कोई विदेशी हैदराबादकी छिपी या खुली मदद करता है, तो भारत भला इसे कैसे बर्दाश्त करेगा। इसलिए भारत और ब्रिटेनके पारस्परिक संबंधोंका ध्यान रखते हुए यह नितांत आवश्यक है कि अदालती कार्रवाई कर सिडनी काटनको उचित दण्ड दिया जाय। हमें आशा है कि भारत सरकार इसके लिए ब्रिटिश सरकारपर उचित दबाव डालेगी।

## निजामी गुप्तचरोंका जाल

यों तो देशके विभिन्न भागोंसे निजामी गुप्तचरोंके काले कारनामोंकी खबरें मिलती ही रहती हैं, लेकिन खासकर बम्बईमें उनका जाल विशेष मजबूत दिखायी देता है। खुफिया पुलिसने इस सम्बन्धमें अनेक सनसनीखेज बातोंका पता लगाया है। कहते हैं कि कुछ बहुत बड़े बोहरा व्यापारी हैदराबादको शस्त्रास्त्र एवं अन्यान्य सामग्रियां गुप्तरूपसे भेजते रहे हैं। पुलिसने ऐसे बहुत से व्यापारियोंको गिरफ्तार किया है। पिछले महीनों इन लोगोंने बहुत सी मोटरें, लारियां एवं ट्रक आदि हैदराबाद भेजे हैं। कहते हैं कि ऐसी गाड़ियां बम्बई और हैदराबादके सभी इलाकोंमें रखी गयी थीं, ताकि रजाकारों को सूचित कर दिया जाय और वे लूट ले जायं। पंच मांगियों पर दृष्टि आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



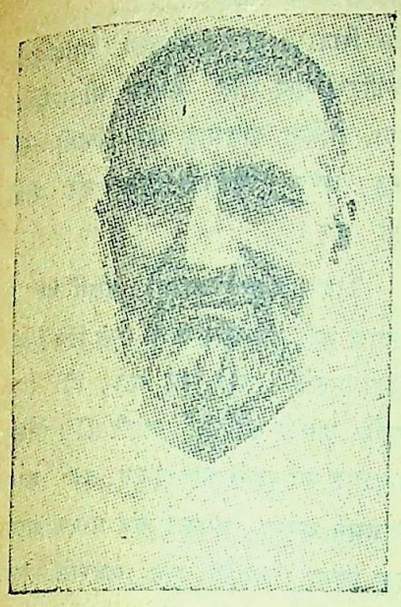

खां अब्दुल गफ्फार खां

वजीरिस्तान और सीमाप्रांत--

# पाकिस्तान की परेशानी

—एक पत्रकार

वजीरिस्तान और पश्चिमोत्तर सीमा-प्रांतकी असली हालत जानना आज बाहरी दुनियाके लिए अत्यन्त कठिन हो रहा है। अखबारोंको वहांकी सही-सही रिपोर्ट मिल नहीं पाती; लेकिन जो भी थोड़े छिटफुट संवाद मिल जाते हैं, उनसे यह साफ जाहिर होता है कि पाकिस्तान सरकार को इन दिनों उन दोनों प्रदेशोंमें बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ रहा है। वजीरिस्तान की स्थिति के सम्बन्धमें, २३ जुलाई को पाकिस्तान के वैदेशिक विभाग की ओर से एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है :-

"ब्रिटिश सरकारके शत्रु, इपीके फकीरने अब पाकिस्तानसे विद्रोह कर दिया है और अपने एक छोटे-से दलको लेकर शहउत्तरी वजीरिस्तानकी उन चौकियों पर आक्रमण करने लगा है, जिन्हें पाकिस्तानी फौजें पहले ही छोड़ चुकी थीं। इस विद्रोहके कारण थोड़ी फौजी कार्रवाइयां करनी पड़ी हैं, लेकिन कबीलों के खिलाफ पाकिस्तानी वायु-सेनाका प्रयोग नहीं किया गया।"

विज्ञप्तिमें आगे यह दिखानेकी भी चेष्टा की गयी है कि इपीका फकीर और खां अब्दुल गफ्फार खां आपसमें मिलकर वजीरिस्तान और सीमाप्रांतमें पाकिस्तान के खिलाफ विद्रोहकी आग भड़काना चाहते थे, लेकिन खां अब्दुल गफ्फार खांकी गिरफ्तारीसे वह षड्यंत्र सफल न हो सका।

इस स्थलपर यह ध्यान देनेकी बात है कि गत १५ जूनको खां अब्दुल गफ्फार खां गिरफ्तार किये गये और उसी दिन उत्तरी वजीरिस्तानकी चौकियों पर कबीलों का आक्रमण शुरू हुआ। और, उस आक्रमण की भयंकरता और व्यापकता का अन्दाज इसीसे लगाया जा सकता है कि इपीके फकीरके पहाड़ी सदर मकाम पर चारों ओरसे घेरा डालकर फकीरके बीसों साथियोंको गिरफ्तार किया गया। लेकिन ये गिरफ्तारियां आसानी से नहीं हुईं। दोनों ओरसे खब जमकर गोलियां चलायी गयीं और जैसा कि अखबारोंमें प्रकाशित हुआ था, बमवर्षा भी की गयी। आज पाकिस्तान सरकार की ओरसे बमवर्षाकी रिपोर्ट का खंडन किया जाता है, लेकिन सच बात तो यह है कि सीमाप्रांतके पाकिस्तानी प्रीमियर खां अब्दुल कयम खां जैसा एक जिम्मेदार अधिकारी एक प्रेस-कानफरेंस में यह स्वीकार कर चुका है कि इपीके फकीरके खिलाफ हवाई कार्रवाइयां की गयी हैं। तो फिर पाकिस्तानी अधिकारियोंकी इन परस्पर-विरोधी बातोंसे क्या प्रकट होता है? यही कि वजीरिस्तान और सीमाप्रांतके मामलोंको लेकर पाकिस्तानी नेता बड़े चक्करमें पड़े हुए हैं। स्वतंत्र पठानिस्तान की आवाज प्रबलसे प्रबलतर होती जा रही है।

पाकिस्तानकी स्थापना हो जाने पर, कायदे आजमने इस बातकी बहुत कोशिश की कि खां अब्दुल गफ्फार खां को मुस्लिम लीगमें शामिलकर 'पठानिस्तान'के आन्दोलन को कूटनीतिसे दबा दिया जाय। लेकिन इस प्रयत्नमें वे सफल न हो सके। फलतः अन्तमें मुस्लिम बन्धुत्वका दम भरनेवाली पाकिस्तान सरकार को खुदाई खिदमतगारोंके नेता और मुसलमानोंके सच्चे शुभचिन्तकोंको जेलके सींखचोंमें बन्द करनेका निश्चय करना पड़ा। केंद्रीय पाकिस्तान असेम्बलीके अधिवेशनमें, नवगठित 'पीपुल्स पार्टी' के नेताकी हैसियतसे खां अब्दुल गफ्फार खां जब कराची गये थे, तब कायदे आजम से उन्होंने खरी खरी बातें की थीं। एक प्रेस-प्रतिनिधियोंने उस बातचीतपर विस्तृत रूपसे प्रकाश डाला है। , जिसे अत्यन्त महत्वपूर्ण समझकर नीचे उद्धृत किया जाता है:—

"खां अब्दुल गफ्फार खां जब कराची, पहुंचे, तो सारे शहरमें—खासकर राजनीतिक क्षेत्रोंमें—उन्हींकी चर्चा छिड़ गयी। लोग उनके दर्शनोंके लिए उमड़ पड़े। पाकिस्तान असेम्बलीमें जिस दिन पहले पहल वे उपस्थित हुए, खासी बजमार मा लग गया था उन्हें देखने के लिए। दर्शकोंकी गैलरी में जितने लोग थे, प्रायः

इपीका फकीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सभी बड़ी उत्सुकतापूर्वक उनकी ओर देख रहे थे। साथ में उनके लड़के खां अब्दुल गनी खां भी थे। ये पिता-पुत्र समस्त असेम्बलीका ध्यान बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे।

खां अब्दुल गफ्फार खां अपने कराची-प्रवास में ठहरे थे एक छोटे से होटलमें जो कराची के भीड़-भाड़ वाले इलाकोंसे बहुत दूर है। साधारणतः इस होटलके आस पासका वातावरण अत्यन्त शांत रहा करता है, लेकिन पठान 'बादशाह' के आ जाने से उस वातावरण में एक जीवन-सा आ गया था। भेंट करने अथवा मिलनेवालों का तांता लग गया था। साथ ही समस्त शहर में यह खबर बिजली की तरह फैल गयी कि लाल-कुर्त्ती-दल का नेता कराची आया है; फिर तो दर्शनार्थियों की भारी भीड़ उस होटलके इर्द-गिर्द लगने लगी।

उन दिनों कायदे आजम कलात एवं अन्यान्य स्थानोंके मामलोंमें बुरी तरह उलझे हुए थे, इसलिए चाहते थे कि खां अब्दुल गफ्फार खांको किसी भी तरह अपने दलमें मिला लें। इसी उद्देश्यसे कायदे आजमने उन्हें भोजके लिये आमन्त्रित किया। खां अब्दुल गफ्फार खां ने शिष्टतावश निमंत्रण स्वीकार कर लिया और कराचीके सरकारी भवनमें वे दोनों परस्पर-विरोधी विचार-वाले नेता उस दिन मिले—एक बिलकुल सजी-सजाई पोशाकमें और दूसरे लम्बे पठानी कुरते और पाजामे। बादशाह खां उस कमरेमें फर्श पर बठना शायद ज्यादा पसन्द करते, लेकिन कायदे आजम तो वहांपर वे एक सोफे पर बैठे। आस-पास और कोई नहीं था।

कायदे आजमने अपने पुराने गम्भीर तरीकेसे बातचीत शुरू की। प्रारम्भिक शिष्टाचारके बाद कायदे आजम बनने-जिन्ना पाकिस्तानकी उन्नतिके लिए बादशाहके सामने मैत्री और सहयोगके लिये हाथ पसारा और खुल्लमखुल्ला यह अनुरोध किया कि बादशाह खां मुस्लिम लीगमें शामिल हो जायं। बातचीतमें काश्मीरका प्रश्न मुख्य था। काश्मीरका नाम सुनते ही बादशाह खांकी आंखें चमक उठीं—"काश्मीरके झगड़ेमें मैंने एक बार हस्तक्षेप करना चाहा था, लेकिन आपने मेरी बातों पर बिलकुल ही ध्यान न दिया। अब तो आक्रमणकारी बेलगाम हो गये हैं। वे सिर्फ हिन्दुओंको ही परशान नहीं करते, बल्कि मुस्लिम महिलाओं को भी भगा ले जाते हैं, जिन्हें पेशावरकी सड़कों पर खुले आम बेचा जाता है।" क्या आप सोचते ह कि मुसलमान इसके लिये क्षमा करदेंगे--- बादशाह खांने बड़े तेज स्वरसे पुछा।

भारत और पाकिस्तानके बीच समझौता करानेके लिए, बादशाह खांने मध्यस्थ होनेमें भी अपनी असमर्थता प्रकट की। उन्होंने कहा— बापूके जीवन-कालमें तो मने ऐसा कर लिया होता, लेकिन उस वक्त आपने क्या किया? आपने तो मुझे इतना भी इजाजत नहीं दी कि म दिल्ली जाकर बापूके शवके भी दर्शन कर सकूं।"

इतना कहते-कहते बादशाहखांके स्वर में कुछ तीखापन आ गया और उन्होंने गम्भीरतापूर्वक कहा—"मैं पाकिस्तान के प्रति वफादार हूं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मुस्लिम लीगमें शामिल हो जाऊंगा। मुझमें और लीगमें मौलिक मतभेद है, इसलिये मैं कभी लीगमें शामिल नहीं हो सकता। और, आज यदि मैं शान्ति-दूत बनूं, तो लोग मुझे 'प्रोपेगेंडिस्ट' या 'प्रचारक' ही समझेंगे। बहुतसे लोग तो कहन भी लगे हैं कि मैं मुस्लिमके प्रति आकृष्ट हो रहा हूं, लेकिन आप जानते हैं कि कि यह बात सच नहीं है।..."

इस तरह बातचीत जारी रही। और कायदे आजमने बादशाहखांको अपने दलमें ले जा क आनेके लिए अपने सभी राजनीतिक और कटनीतिक हथकंडोंसे काम लिया। शायद केन्द्रीय पाकिस्तान सरकारमें एक सीट देनेका भी प्रलोभन दिया, लेकिन बादशाह खां किसी भी तरह अपन सिद्धान्त त्यागन को राजी नहीं हुए।

लेकिन कायदे आजम इतने पर भी निराश नहीं हुए और जब कुछ दिनों बाद सीमाप्रान्तके दौरे पर गये, तो फिर उन्होंने अपनी कोशिशें जारी कीं। लेकिन बादशाह खां टससे मस न हुए, तब कायदे आजमने अपना भयंकर रूप धारण करना शुरू किया। उन्होंने एक जहरीले भाषण में बादशाह खां और उनके दल पर आरोप लगाते हुए कहा कि ये लोग भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेससे मिलकर पाकिस्तानके खिलाफ षडयंत्र कर रहे हैं।

बस यहींसे शुरुआत हुई और दो महीनेके अन्दर खां अब्दुल गफ्फार खां और उनके हजारों समर्थक जलमें बन्द कर दिये।"

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, बादशाह खांकी गिरफ्तारीके बाद सीमा प्रांतका आन्दोलन पठानिस्तानका आन्दोलन अधिकाधिक उग्र रूप धारण करता जा रहा है। बजीरिस्तानके कबीले इस आन्दोलनसे पूरी सहानुभूति रखते हैं और इसलिए इपीके फकीरके नेतृत्वमें उन्होंने पाकिस्तानके खिलाफ अपनी कारर्वाइयां आरम्भ कर दी हैं। वस्तुतः पठानिस्तानका आसीमा प्रांतका ही नहीं, बल्कि बजीरिस्तानका भी है। बजीरी अच्छी तरह जानते हैं कि पाकिस्तान सरकार उनकी आर्थिक स्थिति सुधारनेमें सर्वथा असमर्थ है। लेकिन इसके प्रतिकूल स्वतंत्र पठानिस्तानकी स्थापना हो जाने पर, वे अपना भविष्य उज्ज्वल देखते हैं। साथ ही पड़ोसी अफगानिस्तान भी पठानिस्तान का निर्णय अपने अपन हितोंकी दृष्टिसे आवश्यक समझता है। बजीरिस्तानके वर्तमान विद्रोहमें अफगानिस्तानका छिपा हाथ हो सकता है, पाकिस्तानके अधिकारी भी यह आरोप करते हैं। इससे उन्होंने बजीरिस्तान और सीमाप्रान्तमें घोर दमन आरम्भ कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# विपत्तिग्रस्त मलाया

श्रीकृष्णाचार्य

भारतमें मलायाके संबंधमें पर्याप्त अंधकार है। किन्तु यह अज्ञान एशिया-वासियोंके लिए लाभप्रद नहीं है। आजकल नित्य ही वहांसे गुरिल्ला-कम्युनिस्टोंकी विध्वंसकारिणी नीतिकी खबरें आ रही हैं। यह भी सत्य है कि इस गड़बड़ीमें अंग्रेजी फौजें अपना मजबूत संगठन कर रही हैं, ताकि वह सिंगापुर जैसे सामरिक महत्वके केन्द्रका उपयोग कर सकें। एशियाकी रक्षाकी दृष्टिसे मलायाका भारी महत्व है, इसलिए आज प्रत्येक राजनीतिके विद्यार्थीको वहांकी समस्या पर गौर करना चाहिए। समाचार छपा है कि वहां गोरखा फौजें लड़ रही हैं और अंतिम समाचार यह है कि मलाया-स्थित "भारतीय प्रतिनिधि मि० जोन थीवी १२ जुलाईको कलकत्ता पहुंचकर बोले कि" भारतीय मजदूर मलायाके वर्तमान उपद्रवोंमें कोई भाग नहीं लेते हैं। हां, मलायाके मजदूर संघमें भारतीय मजदूर भी स्वभावतः सम्मिलित हैं, इसलिए कुछ भारतीय भी सुरक्षाकी दृष्टिसे अवश्य पकड़ लिये गये हैं।" इस प्रकार हमने देखा कि एक ओर भारत और एशियाकी दृष्टिसे मलायामें-कम्युनिस्टोंका उपद्रव महत्वपूर्ण है, दूसरी ओर अंग्रेजोंकी शक्ति बढ़ानेकी चालसे भी सावधान रहनेकी भारी आवश्यकता है। मलायाके वर्तमान उपद्रवको ठीकसे समझनेके लिए यह आवश्यक है कि हम पहले उस देशका संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लें!

### भूगोल और निवासी

मलाया इंगलैंडके बराबर (वेल्सको छोड़कर) घना टापू है। आजसे ८० वर्ष पूर्व वहां सड़कों तथा रेल, तार-डाक आदि का पूर्णरूपसे अभाव था। लेकिन जब वहां रबड़की खेतीका विस्तार हुआ, तबसे अब तक मलाया संसारके प्रमुख धनी देशों में गिना जाता है। इससे भी बहुत पहले वहां आठवीं शताब्दीमें शैलेन्द्र वंशने (भारतीय राजा) उस देशकी भारी उन्नति की। उस समयके अरबी व्यापारियोंने भी वहांकी समृद्धि और राज्य वैभवकी आकंठ प्रशंसा की थी। कालांतरमें मलायामें इस्लाम धर्म फैला और भारतके मुसलमानी शासकोंके कारण भी वहां यह धर्म मजबूत हो गया। आज समस्त मलायामें मुसलमान धर्म ही प्रमुख है। वैसे वहां रबड़की खेती के विस्तारके साथ विभिन्न जातियोंके निवासियोंकी संख्या भी बहुत बढ़ गयी है, जिसका विवरण इस प्रकार है:-

| | |
|---|---|
| मलायाके मूल निवासी | २,२७८,५८८ |
| चीनी (इनके हाथमें व्यापार है) | २,३७९,२११ |
| भारतीय (मजदूर) | १९,००० |
| यूरेशियन | ३०००० |
| और यूरोपियन | २९००० |

इसी प्रकार मलायाका राजनीतिक विभाजन भी बहुत विचित्र है। मलायाके दक्षिण छोरपर सिंगापुर का प्रसिद्ध बंदरगाह है, उत्तरी छोरपर स्याम देश है, पश्चिम में सुमात्राका टापू और पूरबमें बोर्नियोका टापू। शासनकी दृष्टिसे मलाया दो भागों में विभाजित था-ब्रिटिश मलाया और सुल्तानी मलाया। सुल्तानी मलायामें ९ रियासतें हैं और उनमें मुसलमान शासक राज्य करते हैं। इन ९ में से ४ रियासतोंने सन १८९५ में अपना अलग संघ बनाया, शेष ५ रियासतें अंग्रेजोंके संरक्षणमें स्वतंत्र रहीं! चार संघ रियासतोंके नाम हैं—पेरक, सेलंगोर, नेग्री-संबीलन और पहंग तथा ५ अलग अलग रियासतोंके नाम हैं: परलिस, केदाह, केलांगतन, त्रेंगन और जोहोर। केदाहके पासका टापू पेनांग, तथा उसका एक भाग वेलेजली प्रांत, मलाका तथा सिंगापुर पूर्ण रूपसे अंग्रेजोंके शासनमें हैं। केलांतेगुन, केदाह और परलिस १९०९ तक स्यामके प्रभावमें थे! किन्तु उसके उपरांत स्यामने ये प्रांत अंग्रेजोंको सौंप दिये। लड़ाईके समय जापानियोंने ये रियासतें स्यामको सौंप दीं, तब ये थाईलैंडके नामसे प्रसिद्ध थे। अब फिर वही स्थिति है।

मलायाने प्रथम महायुद्धसे लेकर द्वितीय महायुद्धतक आश्चर्यजनक उन्नति की है। वहांके मुख्य व्यापारी चीनी और अंग्रेज हैं। मलायाकी समृद्धिका अन्दाज इसी एक बातसे लगाया जा सकता है कि संसार में खपनेवाले रबड़में से आधा रबड़ मलायाकी देन है तथा संसारकी एक-तिहाई टीनकी उपज भी मलाया ही पूरी करता है।

### द्वितीय महायुद्धके उपरांत

द्वितीय महायुद्धने संसारमें भारी परिवर्तन कर दिया! परिणामस्वरूप मलाया भी जापानियों और स्याम निवासियोंके हाथ में जाकर पुनः अंग्रेज प्रभुओंके हाथमें आ गया। किन्तु स्वतंत्रताकी लहर तो भारत, बर्मा और लंकाके अतिरिक्त हिंदचीन, हिन्देशिया तथा मलायामें भी फैल गयी! परिणाम यह हुआ कि अंग्रेज मलायासे भी अपने असीमित अधिकारोंको हटानेके लिए लाचार हुए! किन्तु जहां अंग्रेज कमजोर पड़े, वहां कम्युनिस्टोंने अपनी भूमि तैयार की। बर्मामें कम्युनिस्टोंका प्रभाव बढ़ रहा है! स्याममें कम्युनिस्ट प्रभाव पुराना है। फिर भला मलायामें यह प्रभाव क्यों न बढ़ता! हम यह भी बतला चुके हैं कि सिंगापुर अत्यन्त महत्वपूर्ण चौराहा है! बंगालकी खाड़ीमें घुसनेका एकमात्र फाटक यही है।

### मलाया संघ

मलाया संघकी स्थापना हो गयी है। इसमें सब रियासतें तथा ब्रिटिश तथा ब्रिटिश उपनिवेश सम्मिलित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हो गये हैं। ५५ वर्षीय सर एडवर्ड जेम्स इस संघके प्रथम हाई कमिश्नर नियुक्त हो गये हैं। पहले वह मलायाके गवर्नर तथा कमांडर इन चीफ थे।

मलाया संघकी स्थापनाके उपरांत कम्युनिस्टोंकी कार्यवाही विशेषरूपसे बढ़ी। सर्वत्र, विश्वभरमें, अब पूंजीवाद और कम्युनिज्म में मुठभेड़ है। यह संघर्ष तीन रूपोंमें देख पड़ता है! पहला रूप तो यू० एन० ओ में देख पड़ता है, किन्तु इसका असर मौखिक प्रभावके रूपमें ही है! राजनीतिके इस अखाड़ेमें सब समस्याएं अधूरी ही हैं। दक्षिणी अफ्रिका, फिलस्तीन, काश्मीर, हिंद-चीन आदि की समस्याएं अपूर्ण ही पड़ी हैं। इस प्रकारकी अपूर्ण पंचायतके लिए यही संघर्ष जिम्मेदार है। संघर्षका दूसरा रूप चुनावोंमें दीख पड़ता है। जेकोस्लाविया, फिनलैंड, इटली आदिमें रूसी अपनी वृद्धि कर रहे हैं तो ईरान तथा अरब प्रदेशों में पूंजीवादी राष्ट्र अपनी स्थिति मजबूत कर रहे हैं।

तीसरा रूप खुले आम युद्ध है। मलाया में यह युद्ध गुरिल्लोंके रूपमें चल रहा है! कम्युनिस्टोंने आधुनिक शस्त्र प्राप्त कर लिये हैं तथा उन्होंने वहांके चीनी और अंग्रेज व्यापारियोंको मारना प्रारंभ कर दिया है। कम्युनिस्टोंका हौसला इसलिए और अत्यधिक बढ़ रहा है कि वह मलाया-निवासियोंकी भावनाके अनुरूप चीनियों तथा विदेशी व्यापारियोंको चोट पहुंचा रहे हैं। स्वभावतः वहांका मजदूर संघ, अन्य सब राष्ट्रोंके मजदूर संघोंकी तरह, भी इन उपद्रवकरनेवालोंका साथ दे रहा है! मजदूरोंमें सब जातियोंके लोग सम्मिलित हैं। मलायावासी मजदूर वर्ग ही हैं। उनके उपरांत भारतीय मजदूरोंपर ही इस संघर्षका असर पड़ेगा। यों तो हमारे प्रतिनिधिने कहा है कि भारतीय उपद्रवमें सम्मिलित नहीं हैं, किन्तु विचारणीय विषय यह है कि भारतीय प्रजा मलायामें निरपेक्ष कैसे रह सकती है? इस प्रश्नपर भारत सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि दर्दके हदसे बाहर हो जानेपर उपचार करना व्यर्थ ही सिद्ध होगा।

मलायासे भारतका एक हजार वर्ष तक सांस्कृतिक संबंध रहा है। शैलेन्द्र वंशके सहारे यहां किसी समय सैंकड़ो बौद्ध और हिन्दू मंदिर बने, वहांकी ब्राम्ही-लिपि तथा संस्कृत भाषाने मलायापर प्रभाव डाला। यही कारण है कि मलायाके मुसलमानोंने बौद्धोंकी करुणा तथा हिन्दुओं की शालीनताको आजतक अपना रखा है; उनमें अरबी मुसलमानोंकी-सी धार्मिक कट्टरता तथा लड़ने भिड़नेकी प्रवृत्ति नहीं पायी जाती! भारत और मलाया, हिंदचीन, ब्रम्हा आदिकी समस्याओंको सुलझानेके लिए हमें एशियाका नक्शा सामने रख तुरंत कोई हल या नीति निर्धारित करनी पड़ेगी, अन्यथा भविष्यमें होनेवाले महायुद्धसे समस्त एशिया बिखर कर नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा।

मलायामें स्थिति बेकाबू-सी है। संघकी कौंसिल ने एक बिल पास किया है, उसके अनुसार जो अखबार गलत समाचार छापेंग उन्हें पुनः शुद्ध समाचार बिना कीमतके छाप कर बांटने पड़ेंगे! इतना ही नहीं, जिन लोगोंके पास टाइपराइटर तथा डप्ली केट मशीन हैं, उनको कड़ी आज्ञा है कि आतंककारी उनका उपयोग न कर सकें। दक्षिण पूर्वी एशियाके कमिशनर जेनरल श्री मालकम मेकडानलने ७ जुलाईको सिंगापुर में रेडियो पर कहा कि कम्युनिस्ट हिंसा पूर्ण कार्यवाही से मलाया सरकारको हस्तगत करना चाहते हैं। आगे चल कर उन्होंने बड़े जोरदार शब्दोंमें कहा है कि यह "तथ्य पूर्ण गम्भीर सत्य है।" ९ जुलाई का समाचार है कि संघकी राजधानी कौलालंपुर के आसपास, जनरल बचरके शब्दों में, ये कम्युनिस्ट बाकायदा युद्ध लड़ रहे हैं। जो होरकी अवस्था अधिक नाजक बताई गई है। वहां कभी कि देशियासे कम्युनिस्टोंको सहायता मिलनेका समाचार मिलता है तो कभी यह प्रवाद फैलता है कि श्यामसे उत्तरी मलाया में ५००० उतरते हैं। १० जुलाईको और भी अधिक स्पष्ट समाचार मिला कि कौलालंपरसे आठ मील दूरी पर ८०० कम्युनिस्टोंकी सेना बढ़ रही है।

इंग्लैण्डके पत्रोंमें तथा पार्लामेंटमें भी इस संबंधमें विशेष सरगर्मी देख पड़ी है। एक ओर 'टाइम्स' कड़ी फौजी कार्यवाही करनेकी अपील कर रहा है तो दूसरी ओर 'डली वर्कर' ने मि० मालकम भी गहरी आलोचना की है। उसने लिखा है कि मालकम "अंग्रेजी मजदूर आंदोलनके इतिहासमें खराबसे खराब धोखेबाजका पुत्र है।" पुनः मालकमके ७ जुलाईके भाषणकी की आलोचना करते हुए लिखा है। कि "न्यायालयमें शीघ्रतासेअंतकवादियों पर विचार कर लटका देनेकी धमकी किस प्रजातंत्री सिद्धांतके अनुकूल है।" पत्रने आगे कहा है कि मलायामें शांतिका एकमात्र उपाय यही है कि मलायासे "मालकम च जैसे मृगीके रोगीको हटा कर वहांके मनुष्यों को आत्मनिर्णयका अधिकार तथा डेमोक्रेसी दे दी जाय।"

ऐसी गंभीर स्थितिमें यह प्रसन्नताकी बात है कि भारतीय प्रतिनिधि मि० जान थीवी पण्डित नेहरूसे वार्तालाप करने आ गये हैं। आप मालकम तथा वहांके कमिश्नर सर जैन्टसे भी इस संबंधमें परामर्श कर चुके हैं। अब देखना है कि इस उपनिवेशके संघर्षमें भारत अपना क्या कर्त्तव्य पालन करता है। भारतीय सरकारका प्रथम कर्तव्य तो यही है कि वह मलाया स्थित भारतीय मजदूरोंको सन्मार्ग दिखा कर उन्हें यथा संभव वहांके झगड़ेमें न पड़ने दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मेरे अग्रज

## श्री देवदास गांधी

मृत्युके करोंने एक अशांत आत्माको निर्मुक्ति दे दी है। मेरे ज्येष्ठ भ्राता श्री हरिलालको जिन्हें भूलसे हीरालाल कहा जाता है, जीवन भर कभी मानसिक अथवा शारीरिक शांति पानेका सौभाग्य नहीं मिला। मैंने उन्हें अन्तिम बार बापूकी हत्या के बार दिनोंबाद दिल्लीमें मकान पर देखा था। उस समय पश्चात्ताप भरी मुद्रामें वे कहीं से आकर हमलोगोंके शोकमें सम्मिलित हो गये थे। वे बीमार थे, और उन्हें काफी सेवा सुश्रूषाकी आवश्यकता थी। उनकी मुखकृति उदास और श्रीहीन थी और जैसा कि मेरी श्रीमतीने उस समय कहा और मेरे गोपूने अपने व्यवहारसे व्यक्त किया, उनका मुंह बापूके मुंहसे बहुत कुछ मिलता था। जब वे कुछ अच्छे हुए, तब हमारे घरसे चले गये, क्योंकि वे हमलोगोंको आशीर्वाद देने आये थे, हमारे काममें व्याघात डालने नहीं। वे उन समारोहोंमें भा नहीं लेना चाहते थे, जिनमें सम्पूर्ण दिल्ली व्यस्त था। जब वे बम्बई जानेके लिये ट्रेन पर चढ़े तो बड़बड़ाये "मेरी किस्मतमें चक्कर ही लिखा है"! जिस ढंगसे इस बार उन्होंने यह बात कही, पहले कभी न बोले थे। पृथ्वी पर यही उनकी अन्तिम लम्बी यात्रा थी। उनकी मृत्युकी खबर हमलोगोंको लन्दनमें मिली, जब हमलोग यूरोपकी यात्रासे वापसी वहां आये।

यद्यपि उन्होंने परिवारसे अपना नाता तोड़ लिया था—और परिवारने भी अपना नाता उनसे नहीं रखा था—और बड़े ही आत्मिक कष्टमें देशकी एक छोरसे दूसरी छोर तक घूमते चलते थे, फिर भी परिवारके दुख-कष्टोंके समय वे पहुंचना न भूलते थे। आगाखां महलकी कारामें जब मारी, तो उस समय भी वे पहुंचे थे, बापूने जबजब विपज्जनक अनशन किये तब भी वे आनसे न चूके और उस समय भी वे आये थे जब उनका पुत्र रसिक मेरी ही गोदमें सन् १९२८ में जामिया मिलिया दिल्लीमें में मरा। उस समय उन्होंने बड़ा विलाप किया था पर उसकी मृत्युके कारण किसी पर उन्होंने अपवाद नहीं लगाया। चाहते तो लगा सकते थे, इसका हेतु था। वह बालक मेरे ही साथ रह कर मेरी देखरेख में लिख पढ़ रहा था। उसी समय उसे टाइफाइड ज्वर हुआ। १७ सालकी अवस्था वाले बालक के लिये यह रोग बड़ा भयानक होता है। यह बालक उस समय जामियामें सूत कातनेकी शिक्षा देता था और स्वयं भी अच्छे से अच्छा कात लेता था। वह अपने हिस्सेसे अधिक कातलिया करता था। उसे जब ज्वर हुआ तब भी उसने अपना काम जारी रखा।

मैं यह सोच कर बड़ा दुखी होता हूं कि बालकके रोगको मैंने उस समय साधारण समझा। मुझे इससे भारी शिक्षा भी मिली है। जब बालकने खाट पकड़ ली तब उसने यह इच्छा प्रकट की कि उसे साबरमती आश्रम पहुंचा दिया जाय। उसने कहा, मैं वहां जाते ही अच्छा हो जाऊंगा"। इस तरह की अन्तर्भावनायें प्रकृति-परिचालित होती हैं। बात बीत जाने पर बुद्धिमानी दिखाने लगना तो व्यर्थ है, पर मेरा अन्तर कहता है कि यदि उसकी इच्छा पूरी कर दी जाती तो वह बच सकता था। अपने दक्षिण आफ्रिका प्रवासके दिनों से ही बापू अद्भुद प्रकारोंसे रोग निवारण करते रहे हैं। वह रोगियोंकी स्वयं जितनी परिचर्या कर लेते थे उतना तो कोई क्या करेगा। उनकी उपस्थिति ही रोगियोंमें निरापदता और भरोसाका भाव भर देती थी। स्वस्थ लोगोंमें भी यही बात थी। रोगियोंकी सुश्रुषा करने वाले चाहे कितने भी आदमी क्यों न रहे बापू सुबह शाम रोगियोंको देखने जरूर जाते और जरूरत होने पर दिनमें भी देखते। उनकी चिकित्सा में, खास कर साधारण साधारण ज्वरोंमें प्राकृतिक चिकित्साका प्रधान स्थान था। वे प्रकृतिको अपना काम करने देते। उनकी प्रणालीमें खुली हवा, पानीमें भींगी हुई पट्टियां, लुई कुनेके स्नान, सूर्य-ताप, तथा निरंतर चौकसी थे। पथ्य में वे फलोंका रस देते थे। दवाओंका प्रयोग प्रायः न के बराबर करते थे। वे सुश्रुषा करना भी बहुत अच्छा जानते थे और उनके दिये हुए स्पंज-स्नानसे कैसा भी कट्टर आदमी संतुष्ट हो जाता था। वे सबसे ऊपर जिस बातको रखते थे वह था, स्वास्थ्यके नियमों का शत प्रतिशत पालन।

डा० अन्सारीने, जो जामियाके कुल पति थे, रसिकके लिये दिन रात एक कर दिय किन्तु ज्वर-विष बड़ा तीव्र था और ठीक उसी समय बच्चेके हृदय की गति रुक गयी जबकि वह स्वास्थ्य की ओर मुड़ने वाला था। दिल्लीके दिसम्बर महीनेकी सर्दी भी हमलोगों के प्रतिकूल थी। रसिककी बीमारी की खबर बड़े भाई साहबको मुश्किलसे खोज ढूंढ़ कर पहुंचायी गयी थी और वे जब पहुंचे तो रसिक की आंखें पथरा चली थीं। वे भाइयोंसे बराबर लड़ा करते थे पर इस समय कुछ न कहा। उन्होंने अपना कपार ठोंका अपनी ही लानत मलामतकी, हमलोगोंके साथ कृपा पूर्वक पेश आये, डाक्टर को धन्यवाद दिया, अपने मित्रोंका एहसान माना और फिर जहांसे आये थे वहीं चले गये। बा वहीं थीं। उनको इसका बड़ा धक्का लगा। मेरा अभिमान भी चूर-चूर हो गया। बापूने जब रसिक की मृत्युकी खबर सुनी तो उन्होंने तार भेज कर मझे सान्त्वना ही। उन्होंने यह भी लिखा कि अगर उसे साबरमती भेज देते तो शायद वह नहीं मरता, मगर इतना लिखने ही भर-इससे अधिक इस विषय पर उन्होंने और कुछ नहीं लिखा।

अपने बचपनमें देखे हुए एक दृश्य की मुझे बखूबी याद है जिसमें भाई साहब अपने कंधे पर एक चमड़ेका थैला लिये हुए, बापू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के साथ कुछ बात चीत करते जा रहे थे। दक्षिण अफ्रिकाके फिनिक्स रेलवे स्टेशनसे घर आते समय का यह जिक्र है। मैं पीछे चल रहा था। मेरे लिये तो यह उन अनेकों भ्रमणोंके समान ही उस समय था जिनमें मैं बापूके साथ ही रहता था। बातचीत मैं ठीकसे समझ नहीं सकता था। मेरे भाई उस समय बापूके 'प्रयोगों' से ऊब कर विद्रोह कर चुके थे और अपने कुछ निजी सामानोंके साथ घर छोड़ कर चले गये थे। उनके गायब हो जानेसे घरमें हलचल तो मच गयी थी मगर बहुत अधिक बेचैनी होनेके पहले ही, जिसमें खासकर मां पड़ गयी थीं, भाई-साहबके एक मित्रने बापूको बताया कि वे भारत जा रहे हैं। बापूने उसी समय भाई साहबको बन्दरगाहके ठिकाने पर एक तार देकर वापस बुलाया कि तुम लौट आवो, मुझसे सारी बातें समझलो फिर जो जीमें आये करना। वही वे लौट कर आये हुए थे।

भाई साहब की इच्छा यूरोप जाकर बेरिस्टरी पढ़ आनेकी थी। दक्षिण अफ्रिका में अपनी घर-गृहस्थी त्यागनेके पहले भी बापूके पास अधिक रुपया नहीं रहता था और जो रुपया आता था भी, उसको उन्होंने अपने परिवार पर खर्च न कर समाज पर खर्च करनेका निश्चय कर लिया था। जब पारसी समाजके सोराबजी अदाजानियाको उच्च शिक्षा प्राप्तिके लिये लंदन भेजनेकी बात तय हुई, और भाई साहब रह गयेतो भाई साहबका हानि-बोध भरपूर हो चुका। इस सोराबजीने शिक्षा प्राप्तिके बाद अपने जीवनको दक्षिण अफ्रिका के भारतीयों की भलाई में उत्सर्ग करनेकी प्रज्ञितिज्ञा की थी। मगर भाई साहब को इससे क्या? उनको तो बाप की ओरसे कोई सहारा नहीं मिला। पीछे मुझे पता लगा कि बापू के साथ उस दिन की बात चीत का भी कोई परिणाम नहीं निकला। भाई साहब अपनी इच्छा पूर्तिपर जोर देते और बापू अपनी लाचारी बताते रहे। यह घटना १९१० के आस पास की है। इसके बाद वास्तविक अर्थों में वे फिर बापू के पास नहीं आये। जीवन भर वे उनसे पृथक रहे और जब वे चले गये तब ये भी उनके पीछे पीछे गये हैं।

अपनी जवानी में भाई साहब भी बापू के जवांमर्द सहायकोंमें से थे। दक्षिण अफ्रिका के सत्याग्रहमें उन्होंने बड़ी लगन से काम किया था। वे बड़ी खुशी से जेल गये थे और सत्याग्रह में सबसे अगली पंक्ति में रहते थे। उस समय अफ्रिका का जेल जीवन कई गुणे कठिन और कष्टमय था। आज भारत के जेल यात्री जिस कृष्ण भवनसे परिचित हैं उसके एक अंश में भी वह समान नहीं था। वहां की दो हफ्ते की सजा भारत की तीन महीनेकी बराबरी करती थी। एक महीनेकी सजाको वहां कड़ा दंड माना जाता था, अपराधियों के सरदारों और अभ्यासी अपराधियों को तीन महीने की सजा दी जाती थी' ६ महीने तो उनके लिये सुरक्षित थी जो चुने हुए अपराधी होते थे। इसीको वहां नृशंस कहा जाता था। जेल के भीतर की व्यवस्था बड़ी भयानक थी और बढ़िया से बढ़िया स्वास्थ्यवाला हट्टा कट्टा भी जमहीनेकी सजामें पानी पानी होजाता था। जेलके भीतर दया का तो नाम ही नहीं था और वह सुविधाजनक वातावरण भी वहां नहीं था जो हमलोगोंको भारतमें प्राप्त था॥ यह शायद उसी कोटि का था जैसाकि शुरु शुरुमें क्रांतिकारी कैदियों को यहां भी भुगतना पड़ता था।

बा जो तीन महीने जेल काटकर आयी तो वह वही बा, वहीं रही जिसे हमलोगों ने देखा था। पहले वह फुर्तीली थी और बापू से कम उम्र की दिखती थी। किन्तु दक्षिण अफ्रिका के जेलके तीन ही महीनों ने बा को क्या से क्या बना दिया था। कहानी प्रसिद्ध है कि एक सुप्रसिद्ध व्यक्तिने जिसने बा को पहले भी देखा था, एक दिन जेलसे छुटकर आनेके बाद जब उन्हें देखा तो पहचान न सका। उसने बापू से पूछा, "मि० गांधी आप अच्छे तो हैं? आपके साथ ये कौन हैं? क्या आपके माता जी आई हैं?" बड़े भाई अफ्रिका का यही जेल जीवन ६ महीनोंके लिये दो बार काटकर आये थे। मैं यद्यपि बालक था, पर मेरे लिये यह काल बड़ा कष्टकर था। छोटे छोटे बच्चोंको भी यह ज्ञात था कि जेलों में कैसी कैसी तकलीफें थीं। मेरी और बड़े भाई साहब की बड़ी लड़की की उम्र करीब करीब समान थी और हमलोग एक ही खेलौने से खेलते थे। दक्षिण अफ्रिका के उन साहस और वीरता के दिनोंकी याद हमें है जबकि फिनिक्सके स्टेशन पर जेल जाते हुए, उनकी विदाई करने हम लोग गये थे। वे बड़े सुन्दर नौजवान थे और अपने बालोंको बीचसे फाड़कर वे उनमें सुन्दर लहरियां बना लेते थे। जब वे जाने लगे तो उन्होंने हाथके इशारेसे मुझे जाने का इशारा करते हुए कहा, "देवदास, मैं दरबन से तुम्हारे लिये लट्टू भेज दूंगा"। लट्टू विषयके तो सारी बातें विस्मृत हो गयी हैं पर इतना याद है कि दो तीन दिनों बाद मुझे और मेरी भतीजी, दोनोंको मिठाई खानेके लिये देकर, मेरी भाभी एक चिट्ठी लिये उसे पढती और रोती जाती थीं।

इसके वर्षों बाद जब भारतमें मेरी उनसे मुलाकात हुई तब वे एक दमही बदल गये थे। बापूसे उन्होंने बिल्कुलही सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था—मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकारसे। बापूका कहना टाल कर भारत चले आनेके बाद उन्होंने बापूको एक लम्बा खुला पत्र लिखा था। इस पत्रको छपवा देना चाहते थे मगर ऐसा नहीं किया। तौ भी इस पत्रको उन्होंने अपने परिचितोंमें खूब बंटवा दिया था और बापूको भी उसकी एक प्रति मिली थी। यह चिट्ठी एक प्रकारसे बापूकी भर्त्सना थी जो इस लिये की गयी थी कि वे अपन सम्बन्धियों और मित्रोंके लड़कोंको तो देखते हैं पर अपने बाल बच्चोंकी उपेक्षा करते हैं।

चिट्ठीमें बापू पर जब आक्षेप किया गया था मैं जानता हूं कि वसी बातें सभी न थीं। उन्होंन कुछ चढ़ा बढ़ा कर बातें कही थीं और मेरा अनुमान है कि इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जलन

श्री कृष्णदेवप्रसाद वर्मा 'कृष्ण'

आंखें, उछालो न सागर हृदयके, किसीकी निशानी बही जा रही है
लगा किनारे बिना ही किसीकी ये नेया बेचारी डुबी जा रही है
सहारा जो ढूंढ़ा, किनारे का जल
अगम कूप आंसू दिखाया किसीने
सितार सभी झलमलाते दिखाये
जमीं असुओं से भिगोया किसीने
दिखी ना कहीं चांदनीकी झलक, मौन रजनी अकेली चली जा रही है
आंखें, उछालो न सागर हृदयके, किसीकी निशानी बही जा रही है
सिसक कर फुहारे गगनसे ये कहते
हृदय बादलों के फट जा रहे हैं
छिली जा रही ह पहाड़ीकी छाती
बिना दोष बेबस लुटे जा रहे हैं
जहां मृत्यु की है बुलाहट नहीं, पर दिवानी किसीकी चली जा रही है
आंखें! उछालो न सागर हृदयके, किसीकी निशानी बही जा रही है
लुटा दूं! कहो, आंसुओंका खजाना
नहीं, य हैं मोती हमारे जिगरके
गिरी बिजलियां बीच मगमें किसीके
हुए साफ कांटे किसीकी डगर के
जलन उर लिये मौन जननी खड़ी' विश्व बापू की अर्थी चली जा रही है
आंखें, उछालो न सागर हृदयके, किसीकी निशानी बही जा रही है

---

रोधके कारण शायद उन्होंने वह चिट्ठी पत्रोंमें नहीं प्रकाशित कराया थी। मगर यह उनके जीवनका एक दुष्ट योग था और इसी सम्बन्धमें मेरे परिवारके लिये भी यह ऐसा ही सिद्ध हुआ है।

भाईसाहब अपने विचारोंके बड़े पक्के थे और उन्हें बड़ी कट्टरतासे पकड़े रहते थे। वे बापूकी इज्जत करते थे और बाहरमें वे तो उनके पक्षमें जोरदार बहस करते थे किन्तु भीतर भीतर वे सदा उनके विरोधी ही रहे। हमलोगोंको जो बापूके साथ रहते और अनके अनुसार चलते थे, वे मक्कार कहा करते थे और कहते थे कि तुम तोलोग दिलसे बापूका तोअनुसरण नहीं करते पर बने रहते हो। जब १९२० में उनकी पत्नी इन्फ्लुएंजासे मर गयीं तब तो वे एकदम निर्बन्ध हो गये। इसके बादसे उन्होंने बिलकुल खाना बदोशी का जीवन बिताया। उनकी शराबकी लत अब तो और पक्की हो गयी। कई बार बापूने जब उनको सुधारनेकी चेष्टा की तो उसमें वे चावसे सहमत हुए और उनके कहे अनुसार थोड़े दिनों तक चलते रहे। पर अधिक चल न सके। प्रयत्नोंका कोई नतीजा नहीं निकला। दूसरोंकी कोशिश तो उनपर लगती ही नहीं। वे बड़े दृढ़ मस्तिष्क वाले पुरुष थे और जो उनके सामने धर्म और ईमानकी बात करता उस पर तो कभी विश्वास ही नहीं करते थे। वे साधनाकी प्रत्येक भावनाको दुत्कार देते थे और दूसरोंके स्वार्थ-शून्य कार्योंमें भी उसकी व्यक्तिगत लाभेच्छाका गन्ध उन्हें मिलता था। यह तो बिलकुल ही सम्भव नहीं था कि मैं उन्हें समझा सकता किन्तु केवल वाके कहनेसे मैंने एकाध बार इसकी कोशिश की और बुरी तरह दुत्कारा गया। इस सम्बन्धमें बदकिस्मती यह थी कि मैं उनका छोटा भाई था इसलिये वे स्वाभाविक रूपसे बड़े थे और सचमुच उन्होंने हम लोगोंको कुछ दिनों तक पाला पोसा था। एक बार उन्होंने मेरी चोरी पकड़ी थी। बापू हम लोगोंको मुगफली खानेको देते थे। एक दिन सूने घरमें घुसकर बोरेमेंसे निकाल निकाल कर मैं अपनी जेबें, चुराकर, भर रहा था कि खड़-खड़की आवाज सुन कर उन्हें शक हो गया और किवांड़ जरा-सा खोलकर जो झांका तो मुझे रंगे हाथों पकड़ लिया। इसलिये २५ वर्षोंके बाद वही पुराना मुगफलि-चोर जब उन्हें जोलाकी 'मद्यपान'. नामक पुस्तक पढ़नेके लिये देने गया तो घृणासे उन्होंने कहा, "बस बस, महाराज। मुझे नसीहत देनेकी कोशिश न करना। ऐसी किताबें मैं खुद लिख सकता हूं।"

मगर इसी तरह दूसरे भी उन्हें कुछ बना न सके, वे भी असफल रहे। भाई साहबका सबसे जबर्दस्त तीर यह था, "मैं अपना कामदेखता हूं, आप अपना काम देखिय, मेरा देखनेकी चेष्टा आप न कीजिय।"

उनके जीवनके पिछले २० वर्ष तो बहुत ही खराब बीते। अत्यधिक शराब खोरीने उनकी बुद्धि ही मार दी थी। उनकी मेधा तौ भी प्रखर थी और इसी कारण वे अपने भाई बाप तथा मांको धक्के पर धक्के लगाते जाते थे। उनके प्रसिद्ध झकोंमें एक धर्म-परिवर्तनभी था। इसमेंवे एकचाल चले थे। धर्म परिवर्तनसे उन्होंने लोगोंका ध्यान अपनी तरफ खींचना चाहा था पर यह भी अपने साथ स्वतः सिद्ध गुत्थियां लाया। इसने उन लोगोंका सिर भी थोड़े ही दिन बाद नीचा करके रख दिया जिन्होंने इस पर खूब बगलें बजायी थीं और इसको बड़ा तूल देते थे। उनके मुसलमान जीवनकी कहानियां भी सुनाई पड़ने लगीं। मा के लिये इन सब घटनाक्रमोंका भार और तज्जिनित दुख बड़ा असह्य हो चला। उसने अपने दिलके भावोंको एक दिन मेरे सामने ऐसे करुणा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण ढंगसे व्यक्त किया कि मैंने उनको लिपि व कर लिया। इसीका नतीजा वह खुली चिट्ठी थी जो पत्रोंमें "पुत्रके नाम मांका पत्र" शीर्षक से छपी थी। आकुल अन्तरकी यह एक करुण पुकार थी। उन मुट्ठी भर मुसलमानों के लिये जो भाई साहब के धर्म परिवर्तनको शिर पर उठाये हुए थे इस चिट्ठीसे एक नयी ही झलक मिली, जिसमें उनका अपना पाप उन्हें दिखने लगा। उन्हें यह भी दिखने लगा कि इस कृत्यसे उन्होंने अपने इस्लामको को भी लांछित किया है। मेरे भाई साहब ने इसके बाद तुरत ही अपना पैर पीछे खींच लिया।

भाई साहबमें जबर्दस्त यह बात थी कि वे अपने विश्वासों और कामोंके लिये किसी भी दर्जेके कष्ट सहनसे पीछे नहीं हटते थे। अपने सिद्धांतोंको वे स्वाधीन विचार कहा करते थे। बहुत कम आदमी ऐसे निकलेंगे जो उनकी तरह अभावग्रस्त और बेपनाह जीवन व्यतीत करनेको थोड़े काल के लिये भी तैयार हो जायें जिसे उन्होंने अपनी खुशीसे जीवन भर बिताया। वे कभी कभी कई कई दिनोंतक बिना पैसेके और चिथड़े लगाये हुए भिखारीकी तरह सड़कों पर फिरते रहते थे। और यद्यपि यह सच है कि उनकी इस अवस्थामें बुरे लोगोंने उन्हें ढूंढ़ निकाला तथा उनसे अपना काम बनाया और उन्हें बुरे लोगोंका सा हो गया, किन्तु अवारा अवस्थामें उन्हें समाजके निम्नस्तरके लोगोंमें ही कुछ ऐसे आदमी भी मिले जो मनुष्यताके सर्वश्रेष्ठ नमूने थे। इन्होंने ही उनको समय समय पर बचाया और उन्हें आराम दिया। कभी कभी वे अपने सम्बन्धियों और मित्रों के साथ आकर भी कुछ दिनोंके लिये रहते थे पर फिर तुरत ही भाग खड़े होते और अपनी उसी दुनियामें जा पड़ते थे। उनका सुपुत्र क्रांति, जो आज डाक्टर है और जिसमें बापूके तेजका एक अंश अवश्य है, बराबर ऐसा अवसर ढूंढ़ता रहता था कि अपने पिता को पाये और उन्हें घर लाकर कुछ सेवा करे। औरोंसे कुछ अधिक वही इस काम में सफल हुआ। गत वर्ष उसने कई महीने तक उन्हें अपने साथ साथ रखा था और एक सच्चे पुत्रकी तरह पति-पत्नी दोनोंने मिल कर उनकी सेवा की थी। वह बड़ा समझदार लड़का है और उसने अपना दुख सदा भीतर ही भीतर सहकर अपना संसार चलाया है, कभी जबान नहीं खोली।

भाई साहब पढ़ते लिखते तो कुछ नहीं थे पर कुछ पढ़ते तो पाठ्य विषयका बड़ी गंभीरतासे चुनाव करते थे। जिस एक पुस्तककी वे दिल खोल कर प्रशंसा किया करते वह लोकमान्य तिलकका "गीता रहस्य" है। वे इसकी एक प्रति सदा साथ रखते थे, यहां तक कि जब वे नंगे शरीर होते तौ भी उनके हाथमें यह किताब रहती ही थी। अगर "गीता रहस्य" की वह पोथी जो उनके हाथमें थी, मिले तो मैं उसे अपने अमूल्य वस्तुओंके संग्रहमें अवश्य रखूंगा।

काफू (रजि०)
हैजे
की रामबाण दवा है
डाबर लिमिटेड, कल.

खार ष्टास्प
मुलायम खार का मोहर ल्वक
चापरास बनाना है
सूचीपत्र लिखें
V. D. AGENCY
8 B. PEARY DAS LANE, CALCUTTA

होमियोपैथिक दवाइयां प्रति ड्राम =), =)॥ आना है।
हरएक बीमारियों की दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी
९८ नम्बर क्लाइव स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

मनुष्यके पास समृद्ध बनाने के लिये अनेकों सुख सामग्री और अगाध सम्पत्ति भले ही हो परन्तु सुन्दर स्वास्थ्य और सम्पूर्ण शक्ति के बिना उसका जीवन दुखमय और कठिन हो जाता है। जीन सीन गोल्ड टानिक पिल्स पुरुष जातिको निर्बलता से बचाकर शुद्ध वीर्य का विकास कर उसमें नवीन शक्तिका संचार कर उन्हें पुष्ट बनाती है। आठ दिन के लिये ४८ गोली की एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग। परहेजकी आवश्यकता नहीं होती और प्रत्येक मौसम में सेवन किया जा सकता है।
चाईनीज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०
हेड आफिस—२८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बंबई
शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, हौसी रुक्वायर कलकत्ता, नया बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# युवकसे: विवाहके अवसर पर

(श्रीभंवरमलजी सिंघी)

विवाह की मंगल-वेलामें
आनन्द और उछाहकी सरस घड़ियोंमें
जीवनके नये प्रभातकी ओर बढ़नेके वक्त
आजीवन साथ रहनवाले साथीसे स्नेहका संबंध
स्थापित करने मुहूर्तमें
तुमने उस साथी के हृदयको भी समझनेकी
कोशिश की है जिसका समर्पण तुम लेने जा रहे हो !

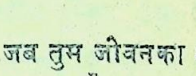

✲ ✲ ✲

कल जब तुम जीवनका नया प्रभात पाकर उठोगे,
नयी कल्पनाएँ,
नये स्वप्न
नयी आकांक्षाएं
तुम्हारे दिलमें भरी होंगी,
उस वक्त क्या तुम अपने चिरजीवनके साथी की
मक वेदना भी देखोगे,
और उसके जीवनपर पड़ी हुई शृंखलाओंको
समझोगे ?

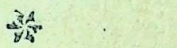

✲ ✲ ✲

आज जो स्वतंत्र है,
कलका प्रभात उसे परतंत्र बना देगा,
और, उसकी परतंत्रता तुम्हारे कारण होगी !
तुम उसे बन्दिनी बना रहे हो ।
समाज की परम्पराके नामपर
तुम उसे पर्दामें बांध रहे हो ;
रूढ़ि के आवरण में ढक रहे हो,
साथीके प्रति अविश्वासके साथ तुम जीवन की
यात्रा शुरू कर रहे हो !
जीवन-संगिनी को परम्परा की शृंख लाओं में बांध,
जीवनका मुक्त गान,
युक्त हास्य
करने जा रहे हो ?
कैसी बिडम्बना

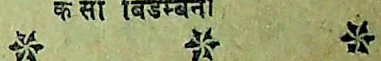

✲ ✲ ✲

तुम सुन रहे हो,
युग तुमसे कुछ कह रहा है ;
समाज कुछ आशा कर रहा है
सदियों से पीड़ित, शोषित नारी जाति
इस अपमान, अविश्वास, अविचार और अन्यायको
बन्द करने के लिये कह रही है ।
इसके विपरीत तुम कबतक चल पाओगे ?
क्या जीवन की नयी क्रांति की ध्वनि
तुम्हारे कानों में नहीं आती,
क्या विस्फोटके बिना तुम न जागोगे ?

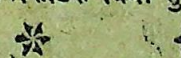

✲ ✲ ✲

इसे ही तुम विवाह - अनुष्ठान कहते हो !
यही है तुम्हारी जीवन-यात्राका मंगल-प्रभात ।
जिसे साथ लेकर तुम बढ़ना चाहते हो ,
उसीके विकास में बाधक बन रहे हो !
युवको, तोड़ो इस बन्धन को,
युवतियो, फाड़ फेंको इस आवरण को !
जीवन का नया प्रभात तुम्हें बुला रहा है ! ! !

—:०००:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारे घर

श्री जयदेव पाण्डेय

हवादार एवं प्रकाशपूर्ण घर, मनुष्य के स्वास्थ्य निर्माणमें ही नहीं, किन्तु उसके मनः प्रवृत्तियोंके निर्माणमें भी विशेष प्रभाव डालता है। मनुष्य स्वभावतः ऐसे घरमें रहना पसंद करता है, जिसमें बड़ी बड़ी खिड़कियों द्वारा स्वच्छ वायु एवं रोशनी सदैव आती रहती है गर्म हवा एवं लू से बचनेके लिए खिड़कियोंको बन्दकर, अन्धकारपूर्ण ठंढे कमरे में रहना प्रिय मालूम होता है; तौभी तीसरे पहर पांच बजे खिड़कियोंको खोल देना अच्छा होता है। इससे बाहरकी खुली हवा घरके दूषित वायुमंडलको दूर कर देती है।

हमारे यहां प्रायः बहुत-से घरोंके दरवाजे एवं खिड़कियां संध्या काल काफी देरतक बन्द पायी जाती हैं। खिड़कियों पर लगे हुए परदे एवं चिक उठाये नहीं जाते; अतः इस अकर्मण्यता एवं भूलका परिणाम यह होता है कि बन्द घरका दूषित-कुपित वायुमंडल स्वास्थ्यमें विषमता उत्पन्न कर देता है। प्रत्येक गृहिणीका यह कर्तव्य है कि सायंकाल वह खिड़कियों को खोल दे, फर्श साफ करे, घरकी वस्तुओंको यथास्थान रखे।

प्राचीन कालमें हमारे यहां यह प्रथा प्रचलित थी, कि आर्य ललनाएं अत्यन्त तड़के उठती थीं, स्नानादिसे निवृत हो स्वच्छ वस्त्र धारण कर एवं सरके बालोंको सुगन्धित फूलोंसे सजाकर, पतिदेवको जगाने जाती थीं और उनका अभिनन्दन करती थीं। पुरुषोंके लिए भी बिस्तर त्यागनेके समय पत्नी-दर्शन मंगलदायक माना जाता था। मगर उन स्त्रियोंकी यह स्वच्छता अपने शरीरतक ही सीमित नहीं थी, उनके शयनगृह भी अत्यन्त स्वच्छ पाये जाते थे।

प्रायः ऐसा सुना जाता है कि 'बड़ी एवं अच्छी प्रकारकी खिड़कियां आधुनिक गृहनिर्माण कलाकी प्रतीक हैं। कथनमें अंशतः सचाई भी है। प्राचीन ढंगके बने मकानोंमें खिड़कियोंका सर्वथा अभाव ही पाया जाता है। वहां तो केवल एक विशाल काय दरवाजा मात्र ही है। वह भी रात्रिके वक्त चोरोंके डरसे बन्द कर देना पड़ता है। इस प्रकार वह कमरा कालकोठरी सा प्रतीत होने लगता है किन्तु आधुनिक ढंगके बने मकानोंकी यह एक विशेषता है कि वे बड़े हों या छोटे, रोशन दान एवं खिड़कियोंसे परिपूर्ण होते हैं। घरकी गर्म तथा दूषित हवा ऊपरके जालीदार रोशनदानोंसे निकल जाती है तथा खिड़कियोंसे बाहर की शुद्ध हवा प्रवेश करती है। इस प्रकार घरकी हवामें एक प्रकारकी गति पैदा हो जाती है, जो स्वास्थ्य एवं सौन्दर्यपर गहरा असर डालती है।

हमारे यहां जहां पर्दाप्रथा प्रचलित है, प्राचीन ढंगके घरोंमें रहनेवाली पर्दानशीन स्त्रियां प्रायः कुरूप, सुस्त एवं अस्वस्थ रहा करती हैं केवल स्त्रियोंका ही नहीं, पुरुषोंका स्वास्थ्य भी गिरा हुआ रहता है। अस्वस्थ शरीरमें अस्वस्थ मस्तिष्कका होना स्वाभाविक है। अतः शारीरिक विकासके साथ साथ मानसिक विकासके लिए खिड़कियोंका होना अत्यन्त ही आवश्यक है।

घरकी खिड़कियां घरके बाह्य एवं आभ्यान्तरिक वातावरणमें समन्वय करनेके साधन हैं। घर के बाहर नृत्य करती हुई प्रकृति नटीको वे घरमें खींच लाती हैं लाती हैं——शुद्धवायु एवं रोशप्रवेश मेघाच्छन्न चन्द्रमाकी मन्द पीयूष वर्षा, सावनकी प्रचंड कालीघटाओंका अवलोकन कराकर )प्तमानवहृदयमें कवित्व भाव पैदाकार देती हैं।

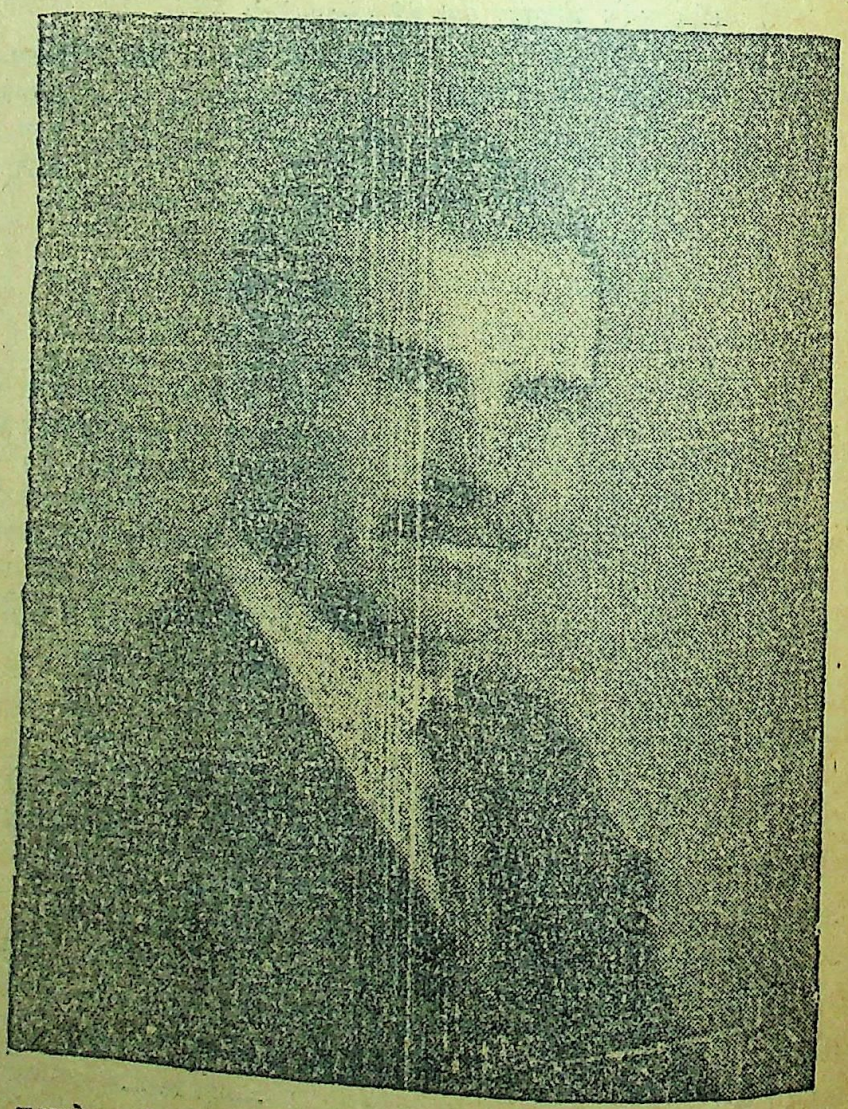

मद्रासके गवर्नर सि० आर्चिबाल्ड नाई, जो भारतमें ब्रिटेनके हाईकमिश्नर मनोनीत किये गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# वह देहाती पंडित

श्री उमाशंकर शुक्ल

हिन्दुस्तानमें इस समय अखबारोंकी संख्या भले ही चाहे हनुमानजीकी पूंछ के समान बढ़ रही हो और शहरोंमें खूब पढ़े जाते हों, पर अब भी देहातोंमें अखबारके नामसे लोग उसी तरह चौंकते हैं, जिस तरह लाल कपड़ेको देखकर सांड़। उनसे अगर कहो कि अखबारमें अच्छी बातें होती हैं तो वे कहेंगे कि इससे हमें क्या करना है, अखबार पढ़नेसे हमारा नुकसान होता है, जितनी देर अखबार पढ़ेंगे, उतनी देर में बैलों व भैंसोंको चारा-पानी करदेंगे। अगर उन्हें मुफ्तमें भी अखबार दिया जाय, तो वे उसे पढ़ना नहीं पसंद करेंगे। अखबारमें पैसा खर्च करना उनको बहुत ही अखरता है। भले ही फिर चाहे सैकड़ों रुपया मुकदमेबाजीमें बिगाड़ दें। रुपया चाहे चला जाय, पर मुकदमा जरूर लड़ेंगे। चार पैसे रोज कौन कहे, चार पैसे हफ्ते भी खर्च करना देहातियोंके लिए भार मालूम होता है। पता नहीं, ऐसा कबतक चलेगा। पंडित कोचई भी उन्हीं ग्रामीणोंमेंसे एक हैं।

पंडित कोचईका नाम यों तो दूसरा है, पर गांववाले उन्हें इसी नामसे संबोधित करते हैं। इस नामके पीछे एक इतिहास है। कहते हैं कि पंडित सूरजदीनके घरमें पुरोहिती तीन पीढ़ियोंसे चली आ रही थी। एक बार सूरजदीन एक जगह सत्यनारायण बाबाकी कथा बांचने गये। वहां उन्होंने देखा कि भगवानपर चढ़ानेके लिए 'कोचइया' (छोटी छोटी पूड़ियां) आयी हैं। उनकी जीभमें पानी छूटा। उन्होंने इधर उधर नजर घुमायी, देखा तो लोग इधर उधर देख रहे थे, बस उन्होंने झटसे दो 'कोचइया' लोगोंकी नजर बचाकर मुंहमें रख लीं। एक लड़केने आखिर देख ही तो लिया। फिर क्या था, उसने कहना शुरु कियाकि "पंडितजी कोचइया', 'पंडितजी कोचइया'। उसी दिनसे पंडित सूरजदीनको कोचई पंडित कहा जाने लगा।

हां तो कोचई पंडितकी उम्र अभी तीस वर्षकी है, किन्तु उनकी वेशभूषा देखकर ऐसा ज्ञात होता है कि वे किसी नाटकके पचास सालके विदूषक हैं। पूरी बुजुर्गी आ गयी है। पंद्रह-पंद्रह दिनतक दाढ़ी के बाल नहीं बनवाते, चमरौधा पनही पहनते, घुटनोंतक मोटी धोती पहनते और उन्हें तबतक न छोड़ते, जबतक कि वे चिंधी चिंधी न हो जायं। एक धोती जोड़ा तीन सालसे कम क्या चलता है। कुरता इतना मैला पहनते कि अगर कुत्ता धोकेसे खा जाय तो बेचारा मर जाय। कोचई पंडितकी सूरत-शक्ल बंदरसे मिलती-जुलती है। बात बहुत कम करते हैं। अपने कामसे काम—न ऊधोका लेना, न माधो का देना।

कोचई पंडितकी शिक्षा गांवके मदरसे में तीसरी कक्षातक हुई है। मार-पीटकर किसी तरह अक्षरज्ञान हुआ है। इतना बहुत है—स्कूलमें तीसरी कक्षाकी पुस्तक भले ही चाहे अटक अटककर पढ़ते रहे हों, पर दुर्गासप्तशतीका पाठ पौन घंटेमें समाप्त कर देते हैं। आनन-फानन कथा बांचते हैं। जब वे सत्यनारायणकी कथाके श्लोक पढ़ते हैं तो ऐसा मालूम होता है जैसे वेदव्यासका कलियुगी संस्करण श्लोकोंका नये सिरेसे निर्माण कर रहा हो। गंवई-गांवमें सब चलता है। और, इसलिए ही कथा सुननेके बाद पांच पैसा, दस पैसा, और अधिक उदारता दिखायी गयी तो पांच आने कथामें चढ़ाये जाते हैं। पर कोचई पंडितको इसकी परवाह नहीं। कोई कुछ भी न चढ़ाये, तो इससे क्या? कथाके बाद पूड़ियां खिलावेगा ही। बस, सारी कसर उसीमें निकल जायगी। अगर कोचई पंडितके इतने ज्यादा यजमान न होते तो अबतक कोचईके बारह बज गये होते जाते। पर ईश्वरकी कृपा उनपर जो है और इसीलिए वे जी रहे हैं। जब भोजन करने बैठते हैं तो बात नहीं करते। एकाग्रचित होकर भोजन करते हैं। सारा ध्यान भोजनमें ही रहता है। शहरातियोंकी तरह अन्य बातोंकी ओर ध्यान उलझा नहीं रहता। और, इसलिए पूरे दो सेर आटेकी पूड़ियां वे चमक जाते हैं, तब कहीं डकार लेते हैं।

कोचई पंडित पढ़े-लिखे कितना हैं, यह ऊपर बताया गया है, इसलिए भले आदमियोंके यहां वे विवाह करानेमें भय खाते हैं। एक बार एक जगहसे उन्हें कान पकड़कर हटा दिया गया था। बच गये, जो पीटे नहीं गये, नहीं तो खोपड़ी लाल कर दी जाती। बात यह थी कि शास्त्रोच्चार की जगह वे बरात-नेवताईकी 'बिनती' पढ़ने लगे थे। दूसरी तरफके पंडितने उन्हें खूब डांटा और उनसे पोथी-पत्रा छीन लिया गया था। तबसे अहीरों, लोधों व गड़रियोंके यहां तो विवाह कराने जाते और 'ओमदोम स्वाहा' करके गठरी बांध कर चले आते हैं।

जिस समय वे पचांग बगलमें दाबकर गांवकी गलियोंमेंसे निकलते हैं, अपनेको ऐसा समझते हैं कि सारे संसारकी विद्वत्ता उनके मस्तिष्कमें ही घुस गयी है, पर जब वे किसी पंडितके सामने जा बैठते हैं तो उनकी विद्वता उनका साथ छोड़कर उन्हें धोखा दे देती है। उस समय कोचई पंडितकी हालत ठीक उस तरह होती है, जिस तरह कि पानीसे निकाली गयी मछली।

खुशीकी बात है कि कोचई पंडित स्वावलंबी हैं। अपने ही हाथोंसे वे खेती का सारा काम करते हैं। मजाल है कि कोई मजदूर उनसे पैसा ले जाय। पैसा तो वे दांतोंसे पकड़कर रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोचईको संसारमें होनेवाली घटनाओंसे कोई सरोकार नहीं है। उनका कहना है कि संसार असार है, आदमी पानीका बुलबुला है; आज है, कल नहीं। तो क्यों फालतू कष्ट किया जाय। वे "पढ़तव्यं तो मरतव्यं" न पढ़तव्यं तो मरतव्यं —फिर दांत कटाकट कि कर्तव्यं" वाले सिद्धांतके आदमी हैं। एक बार वे एक जगह कथा बांचने गये थे। गांववालोंने उनसे पूछा—पंडितजी महाराज, महात्मा गांधीके कितने लड़के हैं? कोचई पंडित ने उत्तर दिया—"सात, सबसे बड़े लड़केका नाम है पं० जवाहर लाल नेहरू और सबसे छोटेका नाम है महादेव देसाई। गांववाले भी बेचारे चुप —वे कोचई काकाकी बात मान गये। बादमें जब गांववालोंको पता चला कि गांधीजीके चार लड़के हैं और सबसे बड़ेका नाम है मणिलाल गांधी, तब कोचईकी पोल खुली।

कुछ लोग उन्हें कोचई पंडित न कहकर 'कोचई काका' कहने लगे हैं। भगवानकी सिन्नी मानते मानते तो उनका विवाह हुआ था, पर उनकी सहधर्मिणी असमयमें ही उनका साथ छोड़कर भगवानके घर चली गयीं। वह भगवानके घर न जातीं, पर कोचई काका चूंकि ईसोंको दांतसे पकड़ते हैं, इसलिए डाक्टरों व वैद्योंको वे एक भी पैसा नहीं दे सके और आम, जामुन व बबूलकी पत्तियोंका काढ़ा घरमें ही बनाकर देते थे। इसलिए उनकी महाराजिन उनसे दूर हो गयीं। बादमें पांच सौ रुपया किसी दलालको देकर उन्होंने अपना दूसरा विवाह रचवाया। आंखोंमें काजल, कानोंमें बाली तथा मूंड़े पर मौर रखकर जब वे पालकी पर निकले तो ऐसे मालूम होते थे कि हनुमानजीके वंशजकी बारात निकली है।

कोचई पंडितका जीवन बहुत ही रहस्यमय है। आइये, उनके भोजनका भी हाल आपलोगोंको कुछ बता दें। उनकी भूख उसी समय शांत होती है, जब वे किसी के यहां खाने जाते हैं। घरमें तो उनका पेट कभी नहीं भरता। गर्मीके दिनोंमें कच्ची अमिया उबालकर नमक-मिर्च लगाकर खाते हैं और दोपहरको बागोंसे पके आम चुराकर ले आते हैं। उससे अपना पेट भरते हैं। बर्राकी रोटी और दाल कभी कभी खाते हैं। घी तो शायद ही उन्होंने कभी खाया हो, क्योंकि उसे सूंघनेसे ही उनकी दिव्यात्मा संतुष्ट हो जाती है।

रेलगाड़ीमें बैठनेका मौका उन्हें कभी नहीं आया—मोटरमें बैठनेका भाग्य कहां? साइकिल चलाना आता नहीं, इसलिए कोचई पंडितने एक घोड़ी खरीदी है, जिसकी ऊंचाई मुश्किलसे तीन फीट होगी। जब घोड़ीपर बैठकर कोचई पंडित निकलते हैं, ऐसी इच्छा होती है कि, उनका 'स्नैप' लेकर 'टाइम्स आफ इंडिया' के साप्ताहिक संस्करणमें प्रकाशनार्थ भेजा जाय। मेरा विश्वास है कि कंपीटीशनमें फर्स्ट प्राइज तो अवश्य ही प्राप्त होगा। कोचई पंडित जब बीमार पड़ते हैं तो उनका सारा ध्यान इस बातपर लगा रहता है कि कलानी और चोटिहा गांवोंके उनके असामी कर्जेका पैसा कब देंगे। इसी सोचमें वे आजकल धीरे धीरे घुल रहे हैं।


२॥)में ज्वेल वाला रिष्ट वाच

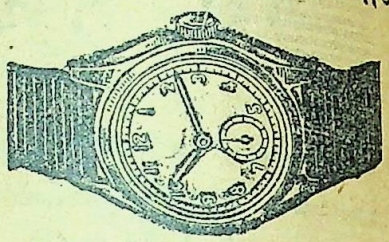

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप २०॥) सुपिरियर२२॥) प्लाट शेप क्रोमियम केस— २५) प्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५) प्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस—३८) प्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)

रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो शेप

क्रोमियम केस—४२) सुपिरियर —४५) रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्डगोल्ड१५ ज्वेल युक्त ९०, अलार्म टाइम पीस १८) २२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग। कोई दो घड़ी लेने माफ।

एच० डेभीड एण्ड कं० (V.)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता।

मुफ्त सांप, बिच्छू कुत्ता, चूहा' संखिया पारा, अफीम आदि विषोंकी सरल चिकित्सा, सिर्फ ३ माहतक दो आनेकी डाक टिकट आने पर मुफ्त,

हिमालिया केमिकल वर्कस
पो० ब० नं० ११४०५ कलकत्ता।

Exide

अधिक टिकाऊ
बैटरी
कार, ट्रक और लारी के लिये

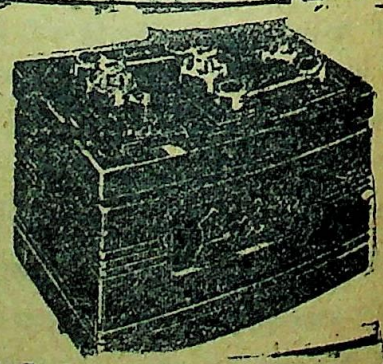

Local Agents Messrs. F. & C. OSLER Ltd
12 Old Court House Street Calcutta


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज

अन्तर्राष्ट्रीय आकाश भी उसी तरह अशांतिके बादलोंसे घिरा हुआ है जैसा कि राष्ट्रीय। अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर इधर फिलस्तीन और जर्मनीमें बिजली कौंधी है, एकाध बार वज्राघात भी हुआ है पर उसके बाद वातावरण संभल गया है। इस बीच कभी कभी तो ऐसा लगता था कि तीसरा महायुद्ध छिड़ जानेमें कुछ ही घंटों की देर है पर अभी तक वह नहीं छिड़ा। इससे ज्ञात होता है कि अभी वह न होगा क्योंकि कोई राष्ट्र अभी आगे बढ़ कर धक्का देनेकी स्थितिमें नहीं है यद्यपि तैयारी सभी कर रहे हैं। अमेरिका और रूस आधुनिक युगमें दोनों परस्पर धींगामस्ती करनेको तैयार दिखते हैं, दोनों अपने अपने पैंतरे लगा रहे हैं। कोई कह नहीं सकता कि कहां जाकर किस दिन दोनोंका भिड़ान हो जायगा। पर यह भिड़ान होगा अवश्य यह लोग समझ रहे हैं क्योंकि दोनों के दिलोंके गुबार निकले बिना तो रह न सकेंगे। बरसातकी ऊमस जब कठिनसे कठिनतर होती जाती है, जब शरीरसे मानों हड्डियां गलगल कर पसीनेका रूप ले निकलती हैं, तब सभी समझते हैं कि वर्षाकी झरी अवश्य होगी। ऊमससे भरे हुए अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज से भी आग और बारूदकी वर्षा होगी यह बात तय है।

फिलस्तीन—

गत ९ जुलाईको फिलस्तीनकी अरब यहूदियोंकी विराम संधि समाप्त हो गयी। उसके बाद ही दोनों फिर लड़ पड़े। विराम संधि को आगे बढ़ानेके संयुक्त राष्ट्र मंडल द्वारा नियुक्त पंच काउन्ट बार्नाडोटके प्रस्ताव को अरब राष्ट्रोंने ही नहीं माना। उन्होंने ९ जुलाईकी आधी रातको ही लड़ाईका बिगुल बजा दिया। विराम संधिकी अवधिमें ज्ञात होता है यहूदियोंने पहलेसे अच्छी तैयारी कर ली थी, इसलिये लड़ाई जो फिर छिड़ी तो यहूदी प्रबल पड़ने लगे। मिश्रके विमानोंने एक दिन तेल अवीव पर बम गिराये। दूसरे ही दिन यहूदियोंकी ओरसे काहिरा पर बम गिरा कर उसका जवाब दिया गया। अरबों में मिश्र और ट्रान्सजोर्डन की सेना अधिक तैयार थी। ये जिधर बढ़े यहूदियोंने उधर उधर आत्मरक्षाकी लड़ाई की पर अन्य अरब राष्ट्र जिधर थे उधर यहूदी ही करारे पड़ने लगे। अरबोंने समझा यहूदियोंको मार कर भगा देनेकी उनकी योजना शायद उतनी आसान सिद्ध न होगी जितनी उन्होंने समझ रखी थी।

इधर विराम संधिकी अवधि बढ़ानेकी बातको काउन्ट बार्नाडोटने संयुक्त राष्ट्रमंडलमें पेश कर दिया। मंडलकी बैठक हुई। अरब उसमें जोर मार कर रह गये और एकके विरुद्ध ९ वोटोंसे मंडलकी सुरक्षा समितिमें यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया कि तीन दिनों के भीतर फिलस्तीन—युद्ध बन्द हो जाय और स्थायी साझौतकी बातचीत शुरू हो। अरबों और यहूदियोंको यह आदेश बाजाप्ता ढंग पर गत १८ जुलाईको सुना दिया गया। यहूदी तो युद्ध-विराम चाहते ही थे, आदेश पाकर ट्रान्सजोर्डन और मिश्रने सबसे पहले अपनी सेनाओंको बन्दूकें उतार लेनेका आदेश दे दिया। सीरिया और इराक पहले अकड़े रहे इस कारण कुछ लड़ाई चलती रही। वह सीरिया ही अकेले था जिसने सुरक्षा परिषदमें दुबारे विराम संधिका विरोध किया था! मगर वह भी अधिक दिन तक अड़ा न रह सका। गत २२ जुलाईसे लड़ाई एकदम बन्द है। काउन्ट बार्नाडोटके पास अमेरिकन बेल्जियन और फ्रांसीसी पर्यवेक्षक आये हैं जो समूचे फिलस्तीनमें मौके मौके पर भेज दिये गये हैं। ये देखेंगे कि कोई पक्ष विराम-संधिकी शर्तों का उल्लंघन न करे। यहूदी-अरबोंमें संधि करानेके लिये काउन्ट बार्नाडोट रोड्स द्वीपके अपने प्रधान कार्यालयमें चले गये हैं और दोनों दलोंके प्रतिनिधियोंको बुलाकर समझौतेकी बातचीत शुरू कराने वाले हैं। ज्ञात होता है अरबों के शिर पर जबर्दस्ती फिलस्तीनका विभाजन लदेगा और उनके आसू पोंछनेके लिये यहूदी अधिकृत कुछ भूभाग उन्हें दिया जायगा। होगा यह सब दबावसे, मगर दुनियाको बताया जायगा कि स्वेच्छासे हुआ है, जैसा कि भारत पाकिस्तान के संबंधमें हुआ था।

अरब—यहुदी झगड़ेमें रूस आश्चर्य जनक ढंगसे चुप है। अमेरिका ब्रिटेन संयुक्त राष्ट्रमंडलकी आड़में अपने इरादे पूरे कि जा रहे हैं। तो रूस क्या कुछ नहीं कर रहा रहा है? रूसकी चुप्पी ही अपना काम कर रही है। रूसकी चुप्पीके कारण ही अरबों का यह युद्ध धार्मिक युद्धका सा प्रसार नहीं पा रहा है। हर लड़ाईमें इस्लाम इस्लाम का शोर मचाने वाले पाकिस्तानी पागल तो इस देशसे अरबोंकी मददको स्वयं सेवक भेजना मजहबी फर्ज समझते हैं मगर संसार का प्रधान मुस्लिम देश तुर्की ही चुप है। पाकिस्तानियोंकी तरह उसके हाथ नहीं खुजला रहे। और टर्की चुप ह इस कारण है कि रूस चुप है। एककी चुप्पी दूसरेको रोके हुए है क्योंकि तुर्की और रूसमें पुराना बैर है और तुर्की नहीं चाहता कि वह रुसको बैर निकालनेका कोई बहाना दे। तुर्की अगर फिलस्तीन युद्धमें उतर जाय तो रूस का तटस्थ रहना असम्भव हो जायगा। मगर प्रधान मुस्लिम देशके न पड़नेके वजह से अरब-यहूदी झगड़ा व्यापक धार्मिक जेहाद का रूप न ले सका है। अफगानिस्तान, ईरान आदि मुस्लिम देश कोई दिलचस्पी इस युद्धसे नहीं दिखा रहे हैं, केवल अरब देशके राष्ट्र ही इसमें उलझ कर रह गये हैं। जो हो, अनेक प्रकारकी अंतर्राष्ट्रीय गुत्थियोंके कारण यह आग बढ़ने नहीं पायी है, फिलस्तीन तक ही सीमित रह गयी है। वह संसारके लिये अच्छा है।

जर्मनी

अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर दूसरा नाटक जर्मनीमें हो रहा है। जर्मनीके चार भाग करके अमेरिका ब्रिटेन, रूस और फ्रांसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक एक भाग दिया गया था और चारोंके शासनके लिये एक संयुक्त कौंसिलकी स्थापना की गयी थी। जर्मनीको पराजित करने तक तो सबका उद्देश्य एक था पर इसके बाद ही विजेता राष्ट्रोंके उद्देश्योंमें टक्कर की संभावना शुरू हुई। अमेरिका किसी बहाने यूरोपमें जमना चाहता है। रूस यूरोपको अपने विस्तारका क्षेत्र समझ रहा है। इस कारण अमेरिका रूससे ठन गया है। दो अलग अलग उद्देश्य होनेके कारण नियोजित संयुक्त शासन कौंसिलमें एक साथ मिल कर काम करना असंभव हो गया तो सबने अपना अलगअलग शासन-संगठन किया। थोड़े दिनों तक सब कुछ चुप चाप चला। इसी बीच ब्रिटेन और अमेरिकाको क्या झक सवार हुई कि उसने अपने अपने अंचलोंमें पुराने जर्मन सिक्केको हटा कर नया सिक्का जारी करनेका सोचा। रूस इस सुधारके पक्षमें न था पर मित्र-द्वयने उसकी कुछ परवाह न की और अपने इलाकों में नवीन मुद्राका प्रचलन कर दिया और पुरानी मुद्रा बन्द कर दी। इधर की बंदीके कारण पुरानी मुद्रा रूसी जर्मनीके अंचलमें तेजीसे इकट्ठी होने लगी। रुसकी ओरसे झटपट उस अंचलमें आवागमन पर रोक लगा दी गयी और सीमा पार करने वाले सैकड़ों लोग पकड़े गये। तनातनी बढ़ने लगी। रूस तो चाहता ही था कि पश्चिमीय जर्मनी और बर्लिनके पश्चिमीय भागमें, जो रूसके आधिपत्यमें हैं, ब्रिटिश और अमेरिकन न रहने पावें। उसने रेलोंका आवागमन भी रोक दिया। अब शेष बर्लिनमें विपत्तिका पहाड़ टूटा। रेलोंके बन्द हो जानेसे और बिजलीकी रोकसे वहां खाद्य पदार्थोंका अभाव उपस्थित हुआ। बीस लाख बर्लिनवासी कठिनायीमें पड़े। अब तो यह सवाल उपस्थित हुआ कि या तो अमरीका ब्रिटेन बर्लिनसे चले जायें अथवा बर्लिन वालोंको भूखों मारें। अमेरिका ब्रिटेनने इसका जवाब विमानों द्वारा खाद्य और आवश्यक सामान पहुंचा कर दिया। अमेरिकाने सैकड़ों विमान दिये और ब्रिटेनके भी सैकड़ों विमान पहुंचे। फ्रांसके रास्ते ये विमान रोटी, तेल, कोयला, दूध, दवाइयां तथा अन्य सामान बर्लिन ढो ढोकर ले जाने लगे। प्रति ४ मिनट पर एक विमान कोई न कोईसामान लेकर पहुंचने लगा। कोयला तक विमानों पर ढो ढोकर लाया जाने लगा। तत्कालके लिये ब्रिटेन अमेरिकाने स्थिति संभाल ली।

रूसकी ओरसे अब यह स्पष्ट घोषित कर दिया गया है कि ब्रिटिश अमेरिकनोंको बर्लिनमें रहने नहीं दिया जायगा। बर्लिनके रूसी अधिनायक सोवोलोवस्कीने स्पष्टतः कह दिया कि दो महीनोंके अन्दर उन्हें बर्लिन से निकाल दिया जायगा। रूसकी ओरसे यह कहा गया कि, बर्लिनको जीता रूसने इसलिये उस पर उसीका अधिकार होना चाहिये पर रूसने पोस्तदामके समझौतेके अनुसार अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांसको बर्लिनमें रहने दिया था। मगर उस समझौते की अन्य शर्तोंका पालन जब ये लोग नहीं कर रहे हैं तब बर्लिनमें बने रहनेका उनको कोई अधिकार नहीं है। लक्षणोंसे ज्ञात होता है कि ये लोग जर्मनीको टुकड़े टुकड़े करना चाहते हैं, किन्तु पोस्तदाममें ऐसा नहीं सोचा गया था। वहां तो यह नीति निश्चित हुई थी कि उसे संयुक्त रखा जायगा और उसके चारों अंचलों पर संयुक्त नीतिसे शासन होगा। इस नीतिके विरुद्ध होनेके बजहसे रूस अब अपनी विजित वस्तु पर अधिकार कर लेना चाहे तो कुछ बेजान नहीं है।"

जर्मनीमें इसी नीति पर चालें चली जा रही हैं। अब रूस हवाई मार्ग भी बन्द करने वाला है। वह विमान द्वारा सामग्री ले जाने न देगा और उसने घोषणाकी है कि सम्पूर्ण बर्लिन वासियोंको वह स्वयं भोजन देगा। उधर अमेरिकाके ६० सुपरफोर्ट्रेस विमान बर्लिनके आकाश पर उड़े थे तो तुरत रूसने भी उनसे उच्च कोटिके सुपरफार्ट्रेस बर्लिन पर उड़ा दिये। उस दिन अमेरिका-ब्रिटेन और फ्रांसकी ओरसे रूसी नाकेबन्दीके विरुद्ध मास्को प्रातवाद पत्र भेजा गया था। हफ्तों और जवाब आया भी तो ऊपर लिखा हुआ। अभी परिस्थिति यह है। रूसकी नाकेबन्दी ज्योंकी त्योंहै। उसकी नाकेबन्दी का जवाब इधरसे भी मालगाड़ीपर रोक लगा कर तथा अन्य कई तरह से देनेकी कोशिश हो रही है पर ज्ञात होता है कि इस संबंधमें रूसका पल्ला भारी पड़ता है। रूस धीरे-धीरे कठिनाइयां बढ़ाता जा रहा है जिसके कारण मित्र-त्रयको बर्लिन और फलतः जर्मनीसे भागना पड़े। इधर ये लोग दैनिक सम्मेलन कर रहे हैं, विचार विमर्श हो रहे रहे हैं। जर्मनीके ब्रिटिश अधिनायक उस दिन लंदन आये थे और यहांसे बातचीत कर गये हैं तु रूसने सम्मेलनोंमें भाग लेनेसे इनकार कर दिया है।

बर्लिनके अमरिकी कमांडर जनरल लुइसक्ले इसी प्रश्न पर विचार करनेके लिये अमेरिका गये थे। प्रेसिडेन्ट ट्रूमानसे मिल कर बर्लिन लौटनेके बाद आपने घोषणा की है कि अमेरिका अपने अंचलमें मुद्रा नीति में कुछ सुधार करनेको तैयार है अगर रूसकी ओरसे नाकेबन्दी उठा दी जाय। देखें आगे क्या होता है। रूसने १ लाख टन खाद्यान्न तुरत भेजनेकी घोषणा की है।

यही जर्मनीकी अवस्था है। परिस्थिति बड़ी नाजुक है। युद्धके लिये इससे अधिक उपयुक्त और दूसरी परिस्थिति क्या हो सकती है? अभीतक जो शस्त्रोंकी झंकार सुनायी नहीं पड़ रही है इसे गनीमत ही समझना चाहिये।

ओलिम्पिक खेल-कूद

२९ जुलाईकोइंग्लडके वेम्बली नगरमें संसारका सुप्रसिद्ध ओलिम्पिक खेल प्रारम्भ हो जायगा जिसका संगठन अन्तर्राष्ट्रीय आधार पर किया गया है। इस खेलमें हर देशोंके खेलाड़ी भाग लेने गये हैं जिनमें अपना देश और पाकिस्तान भी है। संसारके प्रसिद्ध देशोंमेंसेएकरूसने इसकाबहिस्कारकिया है। वेम्बलीमें जो अखाड़ा बनाया गया है उसमें एक लाख दर्शकोंके देखनके लिये स्थान है और उसे बनानेमें ही ९९ लाख रुपया लगे हैं। आजसे आठ दिन पहले यूनानके अलिम्पस नगरके अखाड़ेसे, जहां इस खेलका

(शेष ३२ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कहानी---

# चुगलखोर

श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

दफ्तर पहुंचनमें उस दिन काफी देर हो गयी। घरसे ही देर हो जानेका ऐसा कुछ सिलसिला बंधा कि दफ्तरके दरवाजे तक एक-न-एक बात ऐसी होती गयी कि लाख कोशिशें करने पर भी आध घंट की देर हो ही गयी। और, सन्ध्या समय भी कहीं सात बजे लौट सका उस दिन।

ठण्डके दिनोंमें यों ही सात बजे से पहले बिस्तर नहीं छोड़ा जाता। चाय पीते-पीते आठ बज जाते हैं, फिर दो घंटेमें हो भी क्या-क्या? कहीं बच्चोंका चीखना-चिल्लाना, तो कहीं अपने रामका झंझलाहटके साथ नहाना धोना और पूजन करना। उधर श्रीमतीजीका दौड़ते-भागते घरके काम-धन्धे करना और बीच-बीचमें चूल्हा देखना। गरज यह कि पौन दस बजे तक घरमें किसी-को एक दूसरेकी परवा करनेका जैसे एक मिनट का समय नहीं रहता।

उस दिन ठीक सवा नौ बजे जब मैं पूजन करके उठा, तो देखता क्या हूं कि सहन में मुरली बाबू खड़े मुस्करा रहे हैं। मुझ अपनी ओर देखते ही बोले---"बहुत दिनोंसे आपके पास आनेकी लालसा थी; लेकिन आज आ सका हूं भाई साहब!"

"अच्छे आये भाई!" मैंने ओठों पर कृत्रिम मुस्कान लाते हुए कहा---"सामान सामान कहां है?"

"वह रहा बाहरी चबूतरे पर!" और वह फौरन चला गया सामान उठान।

कहनेको तो मैंने मुरली बाबूके आने पर अपनी प्रसन्नता ही प्रकट की; लेकिन मेरा मन कुछ और ही कहता था। अरे इस भले आदमीको भी आज ही आना था-घरमें दिन। किसी छुट्टीके दिन आया होता, तो आरामसे गपशप होती, खाना-पीना होता और प्रसन्नता भी होती। लेकिन दुनियामें रहकर अन्तस्तल की आवाज सदा सच्चे रूपमें प्रकट नहीं की जाती। मानव ऐसा कर नहीं सकता। यदि करे भी, तो दुनिया उसकी सचाईको विकृत रूपमें ही में ही देखेगी और उसकी आत्मा को अप्रत्याशित रूपसे पीड़ित करनेकी कोशिश करेगी।

गनीमत यही थी कि मुरली बाबू ऐसे अपरिचित नहीं थे कि मेरी श्रीमतीजी उन्हें जानती न हों अथवा उनसे बातचीत न करती हों। अर्सा गुजरा, हम लोग जबलपुर में एक दूसरेके पड़ोसी रह चुके हैं। एक दूसरेके सुख-दुखमें जीवन की कितनी ही घड़ियां हम लोग एक साथ बिता चुके हैं।

मैंने रसोई-घरके दरवाजे पर पहुंचकर कहा-"अरे, सुनती हो? मुरली बाबू आये हैं।"

"खुशीकी बात है। उन्हें बैठक खाने में बैठा दीजिए और आजके अखबारोंमें उलझा दीजिए। इस बीच खाना खाकर दफ्तर जानेकी तैयारी कीजिए आप, नहीं तो देर हो जायगी।"

"तरकीब तो ठीक है, लेकिन.....।"

अब तक मुरली बाबू अपना 'होल्ड-आल' लिये हुए आ पहुंचे थे। मेरी बात भी उन्होंने बखूबी सुन ली थी। कदाचित् इसी लिए बीचमें ही बोल उठे---"लेकिन क्या, भाई साहब?"

मैंने घूमकर मुरली बाबूकी तरफ देखा और मुस्कराते हुए कहा---"आपकी भाभी कह रही हैं कि मेरे दफ्तरका समय हो गया है, अतः आपको आजके अखबारोंमें उलझा दिया जाय और म....."

"हां, हां, आप शौकसे भोजन कीजिये।" मुरलीने ने परिस्थितिको समझते हुए कहा---"मेरे कारण दफ्तरके लिए देर न कीजिये। फिर, भाभी अपरिचित तो हैं नहीं कि मुझे भोजन न मिल सकेगा।"

इस बीच रसोई-घरसे श्रीमतीजी भी बाहर निकल आयीं। मुरली बाबूका अभिवादन करते हुए उन्होंने कहा---"शीला बहिन प्रसन्न हैं?"

"खूब मजेमें हैं।" मुरलीने कहा

"साथ नहीं लाये?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"फिर बातें करेंगे भाभीजी! भाई साहब को देर जो हो रही है। इन्हें भोजन कराइए और"

"विश कीजिए।" मैंने बीचमें रोक कर मुरलीकी बात पूरी कर दी।

एक कहकहा लगा और सहनका वातावरण गूंज उठा।

झटपट खाकर मैंने मुरली बाबूसे कहा---"अब आप नहा-धोकर खाना खाइए और आराम कीजिए। शामको हम लोग इतमीनानसे बातें करेंगे।" और दफ्तर की तरफ मैंने कदम बढ़ा दिये।

लेकिन अभी दो सौ गज ही मुश्किल से गया था कि दीनानाथ बाबू मेरे सामने आ खड़े हुए और नमस्कार करनेके बाद बोले---"चौबेजी, बड़ा जरूरी काम है। पांच मिनटका समय चाहता हूं। पान खा लीजिए।"

"लेकिन दफ्तरके लिए देर हो रही है दीनानाथजी। शामको लौटते समय पान खा लूंगा।"

"शाम तक यहां प्रलय हो जाने की आशंका है।" और मेरा एक हाथ अपने दोनों हाथों में थामते हुए कहा---"आइए तो सही!"

विवश होकर मुझे दीनानाथ बाबूके घर जाना पड़ा। तख्तपर बैठते हुए कहा मैंने---"भई, पांच मिनट ही दे सकूंगा। इससे अधिक एक सेकण्ड नहीं। आप तो जानते ही हैं, हिन्दुस्तानी फर्ममें काम करता हूं। यहां कर्मचारियोंके साथ एक मिनटकी भी रियायत नहीं की जाती। फिर, हमारे यहां दो-एक ऐसे चुगलखोर हैं, जिनका यही पेशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है कि मालिकको इस बातकी खबर नित्य देते रहते हैं कि कौन कब आया कब गया, अथवा दिनमें किसने कितने आदमियोंसे बातचीत की और कौन कितनी देर तक अखबार पढ़ता रहा।"

"कुछ-कुछ मैंने भी सुना है यह सब।" दीनानाथजी बोले—"और सबसे बड़ा चुगलखोर शायद वह चश्मदीन लंगड़ा है!"

"वल्लाह! खूब पता रखते हैं आप!"

"अर, आपकी फर्मके कई लोग मेरे पड़ोसमें रहते हैं न। आपकी फर्मकी बहुत-सी बातें सुनता रहता हूं।" फिर एक मिनट रुककर दीनानाथने अपनी जेबसे एक पुर्जा निकालकर मेरे सामने रखते हुए कहा—"आपका अधिक समय नहीं लूंगा। जरा, यह तो बतलाइये कि इस पुर्जेकी लिखावट किसकी है? मुझे उसी लंगड़े पर शक है।"

पुर्जा देखते ही मेरी आंखोंमें खून उतर आया। उसी लंगड़ेकी लिखावट थी। दीनानाथ का शक सवा सोलह आने सच था। कहा मैंने—"आपका शक गलत नहीं है।"

"अच्छा, अब आप दफ्तर जाइये। लौटते समय या रातमें आपसे फिर बातें करूंगा।"

"यह आदमी बड़ा पतित है।" मैंने कहा और दफ्तरकी तरफ बढ़ गया। पहुंचते-पहुंचते साढ़े दस बज गये। हाजिरी रजिस्टर मेज परसे उठा लिया गया था। मैं उसमें दस्तखत नहीं कर सका। प्रबंधक ने मेरे पहुंचते ही घड़ी पर नजर फेंकी और रजिस्टर पर लाल स्याहीसे मेरा समय भर दिया। लाल स्याही से भरा गया यह समय, महीनेके अन्तमें वेतन मिलते समय मानो खूनका काम किया करता। इस महंगीके जमानेमें मिनट और घंटे जोड़ कर देरसे आनेका पैसा काट लिया जाता। लेकिन विवशताके आगे मानवको झुकना ही पड़ता है। खूनका घूंट पीकर रह जाना पड़ता और काम बराबर करना पड़ता। आज तो रह-रहकर मेरी आंखोंके सामने उस लंगड़ेका वही पुर्जा नाच रहा था, दीनानाथ ने अभी-अभी मुझे दिखलाया था। पुर्जा दीनानाथकी बड़ी लड़की श्यामाको लिखा गया था। पड़ोसके एक लड़केके हाथ वह पुर्जा श्यामाके पास पहुंचाया गया था। लंगड़ेने अपनी समयमें काफी होशियारी से पुर्जा लिखा था, अर्थात् उसमें न तो किसी भेजनेवालेका नाम था, न वह किसीको संबोधित ही किया गया था। इसीलिए तो दीनानाथ जी ने पुर्जेकी लिखावटकी शिनाख्त मुझसे करा लेनेका प्रयत्न किया था और संक्षेपमें सारी घटना भी सुना दी थी।

पुर्जेमें यों स्पष्ट रूपसे कोई ऐसी बात नहीं लिखी गयी थी, जिसमें अनुचित प्रस्ताव हो, परन्तु बुढ़ापेके 'रोमांस' की ध्वनितो उसमें थी ही। लंगड़ेने लिखा था—"सुन है, तुम उपन्यास पढ़नेकी बहुत शौकीन हो। यदिमैं यह जान सकूं कि तुम किसतरह उपन्यास पढ़ना चाहती हो, तो मैं तुम्हारे रुचिके अनुकूल ढेरों उपन्यास दे सकतीहूं।"

पुर्जा लिखते समय लंगड़ेने यह कल्पना भी न की होगी कि यह पुर्जा श्यामा अपने पिता दीनानाथजीको थमा देगी। सोचा होगा कि जो लड़की तरुणाईकी रंगीनियों पर तिर रही है और कालेजमें तितलियों की तरह खुल कर लड़कोंसे मिलती-जुलती है, वह इस पुर्जेको पढ़कर कोई अप्रत्याशित काण्ड थोड़े ही खड़ा कर देगी। लेकिन पड़ोसी होनेके नाते, अपने घरमें इस लंगड़े की चरित्रहीनता पर चलनेवाली चर्चा से श्यामा अनाबगत नहीं थी। भारतीय संस्कृति और आदर्शोंके बीच पली हुई श्यामाने इसीलिए यह पुर्जा अपनी मां को न दिया और तत्काल दीनानाथजीके हाथों में जा पहुंचा।

पड़ोसी होनेके नाते लंगड़ा जब-तब दीनानाथजीके घर आता रहता था। इसी सिलसिलेमें आंखों पर सुनहर फ्रेमका चश्मा लगाय, कलाई पर सुनहरी घड़ी बांध और नागिन-सी लहराती वेणीको पीठ पर लटकाये इधर-उधर स्वच्छन्द विचरती श्यामासे भी वह कभी-कभी दो-चार बातें कर लेता था। लंगड़ेकी बुजुर्गीको देखते हुए श्यामा भी मुस्कराते हुए उसकी बातों का उत्तर दे दिया करती थी।

श्यामाके इस प्रकार मुस्कराने और बात करनेका लंगड़ेने, पता नहीं, क्या अर्थ लगाया कि यह पुर्जा लिखनेकी हिमाकत कर बैठा। मुझे लगा कि आखिर वह लंगड़ा भी क्या करे। तरुणाईमें ही अपनी पत्नीको खो बैठा। युग-पर-युग बीत गये, उसे अपने हाथों रोटी पकानी पड़ती है। लड़क-बच्चे हैं नहीं। सर्वथा एकाकी है। ऐसी दशामें यदि वह किसीके स्नेह अथवा प्रेमकी कामना भी करता है, तो शायद अस्वाभाविक नहीं। यह बात दूसरी है कि उसके अपने दुर्गुणोंके कारण दुनियावाले उसके स्नेह को भी विकृत समझ बैठते हैं।

यों हजारों रुपये बैंकोंमें जमा कर रखे हैं उसने। चाहे तो रोटी बनानेवाली अवाध बनानेवालेको सहज ही वह नौकरी पर रख सकता है। लेकिन स्वभावतः ऐसा कंजूस है कि बरतन तक अपने हाथों मलता है। घरमें झाड़ भी स्वयं देता है। भोजन भी चौबीस घंटेमें सिर्फ एक बार बना लेता है—सुबहके सुबह। फिर उसे दिन-भर न तो नाश्तेकी जरूरत, न चाय की आवश्यकता। बहुत हुआ तो शकरकन्द, खरबूज अथवा दो एक अण्डे ले लेता है और दफ्तर में ही खा लेता है। ऐसा कंजूस भला किसीको नौकरी पर रखेगा!

दफ्तरमें लोग कहा करते हैं कि हजारों रुपये जो इसने जमा कर रखे हैं, आखिर किसके काम आयेंगे? लेकिन ऐसा कहने-वाले स्वयं यह कहकर अपने प्रश्नका उत्तर दे देते हैं कि कंजूस का धन किसीके काम नहीं आता। ऐसा कंजूस मरने पर सांप बन कर अपने धन के ऊपर फन फैलाये बैठता है, और जिसने उसका धन छूनेका प्रयत्न किया, उसे तत्काल डस लेता है। तभी कोई बाबू कह बैठता कि यह तो तब होता जब धन जमीनमें गाड़कर रखा जाता। इसका धन तो बैंकोंमें जमा है भाई!

(शेष ३१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# लेखकों और कवियोंके पत्र

[पत्र-पत्रिकाओंके सम्पादकोंके पास लेखकों और कवियोंके बड़े ही अजीबो-गरीब पत्र आया करते हैं, जिनसे उनकी विभिन्न प्रवृत्तियों, परिस्थितियों एवं उनकी मनः स्थितिपर सुन्दर प्रकाश पड़ता है। सिर्फ मनोवैज्ञानिक विवेचन और मनोरंजनके लिए ऐसे कुछ पत्र, पूर्णतः या अंशतः, नीचे उद्धृत किये जाते हैं। चूंकि इन्हें प्रकाशित करनेके लिए हमने पत्र-प्रेषकोंकी अनुमति नहीं ली है, इसलिए उनके नाम प्रकट करना उचित नहीं है। संपादक]

सबसे पहले हम एक ऐसा पत्र पेश करता हूं, जैसा सम्पादकोंके पास बड़े 'सौभाग्य' से ही आता है। बेचारे सरस्वतीके उपासकोंपर लक्ष्मीकी तो टेढ़ी नजर रहती ही है, इसलिए लेखक साधारणतः अपने पत्रोंमें बकाया पारिश्रमिकका तकाजा किया करते हैं। लेकिन फीरोजपुर से आया हुआ जरा यह पत्र पढ़िये :-

"प्रिय.....

आपका भेजा हुआ कृपा मनीआर्डर (८ रु०का) मिल गया था। मैंने उसे लौटा भेजा है। कारण यह है कि अपनी रचनाओंको मैं आर्थिक लाभके लिए नहीं लिखता और इसलिए उनके पैसे स्वीकार नहीं करता। आपकी बड़ी कृपा है कि आपने पैसे भेजे। आप इन्हें पत्रिकाकी उन्नतिके लिए किसी उचित प्रकार प्रयोगमें ले आयें।"

—ऐसे निस्पृह लेखकोंका पत्र-संचालक तो स्वागत करेंगे, लेकिन पेशेवर लेखकोंका क्या होगा?

* * * *

अब एक बनारसी लेखकके पत्रपर नजर दौड़ाइये—

"प्रिय महाशय,

अबतक.....शीर्षक कहानीका पुरस्कार नहीं आया। कहानी फरवरीमें छपी थी। कृपया यथाशीघ्र भेजनेका कष्ट करें।"

* * * *

एक अत्यन्त भावुक लेखककी आत्मी-यताका आनन्द लीजिये—

"पद्येय.....

जीत आपकी है, जो मुझे भूल सके हैं। हार मेरी है कि मैं भूल न सका आपको। लेकिन संतोष इस बातका है कि अपनी इस हारको भी मैं जीत ही मानता हूं। अच्छा मेरा '....' का क्या हुआ? कविता छपी कि नहीं, पता नहीं चला।"

—पता नहीं निठुर संपादक ऐसे प्रेमी लेखकोंको कैसे निराश कर देते हैं।

* * * *

एक निराश लेखकके उद्गार देखिये—

"भाई.....

मुझे विस्मय है पत्रका उत्तर न पाकर। कृपया मेरी कहानीका पुरस्कार लौटती डाकसे भेजें।"

* * * *

एक सुविख्यात लेखककी परेशानी पढ़िये—

"पूज्य.....

आपका कृपापत्र मिला। मैं दो लड़कियोंकी शादीके इन्तजाममें बहुत परेशान हूं। लड़कोंकी तलाशमें दौड़-धूप करते-करते थक गया और ईश्वरकी दयासे ठीक हो जानेपर अब रुपये-पैसेके इन्तजाममें लगा हूं। इन्हीं प्रपंचोंमें पत्रोत्तर समयपर न जा सका। क्षमा कीजिये। '....'(एक मासिक पत्रका नाम) मुझे छोड़ देना पड़ा।... कृपया कोई दूसरा भाव न समझें। अब तो लेखादि लिखना ही सहारा रह गया, झमेलेसे छुट्टी पाते ही शुरू करूंगा। मगर मईभर बेचैनी रहेगी।

क्या करूं, इतने अधिक मुफ्तके काम मेरे जिम्म पड़ जाते हैं कि अपना कुछ काम कर ही नहीं पाता। बहुत-सी बातें मनकी मन हीमें रह जाती हैं। ईश्वरेच्छा बलीयसी। समय पाते ही सेवा करूंगा।"

—कितना मर्मस्पर्शी है यह पत्र। पता नहीं, हिन्दीके साहित्यकारोंकी इस दुरवस्थाका कबतक अन्त होगा।

* * * *

एक कवि महाशय कुछ क्षुब्ध होकर लिखते हैं—

"श्रीमान्, एक कविता आपकी सेवामें भेजी थी। पर्याप्त पोस्टेज भेजनेपर भी अभी तक आपने कोई उत्तर नहीं दिया। क्या कारण है? शीघ्रातिशीघ्र प्रश्नोत्तर देनेका कष्ट ग्रहण कीजियेगा।"

—सवाल यह है कि 'पर्याप्त पोस्टेज' भेजनेपर भी सम्पादक पत्रोत्तर देनेका 'कष्ट' क्यों नहीं 'ग्रहण' करता। लेकिन इसका सही-सही जवाब देना निस्संदेह बड़ा ही कष्टकारक है।

एक आशावादी लेखक लिखता है—

श्रद्धास्पद.....

मेरा लेख रजिस्ट्री द्वारा अवश्य मिल गया होगा। लेकिन आजतक उसका प्रकाशन नहीं हुआ, अतः खेद है। मैं आशा करता हूं कि इस लेखको आप सावधानी से नहीं पढ़ सके हैं, जिससे कुछ निर्णय नहीं कर सके हैं। कृपया उस लेखको सम्पूर्ण पढ़कर स्थान देनेका प्रयास करेंगे। मुझे आशा ही नहीं, प्रत्युत विश्वास भी है कि मेरे प्रयासको सार्थक करनेके लिए उस लेखको स्थान अवश्य दे सकेंगे। पत्रोत्तर देनेका प्रयास करेंगे।"

—पाठक सोचते होंगे कि आखिर सम्पादक लोग लेखकोंके प्रयासको सफल बनाने के लिए उनकी रचनाएं छापते हैं अथवा अपने पत्रको सफल बनानेके लिए।

एक जबर्दस्त लिक्खाड़की बातें सुनिये—

"आदरणीय.....

मैंने..... शीर्षक लेख भेजा। पता नहीं, अभीतक प्रकाशित भी हुआ या नहीं। प्रकाशित तो अवश्य होना ही चाहिए। साथ ही प्रकाशित अंक भी अवश्य आना चाहिए।"

—लेकिन सम्पादकीय डाकमें ऐसे 'आदेशात्मक' पत्र बहुत ही कम आते हैं।

एक मंजे-मंजाये लेखककी मंजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखनीका नमूना लीजिये——

"बन्धुवर.....

फरवरीमें प्रकाशित रचनाओंका पारिश्रमिक तो मिल गया। लेकिन मार्चकी रचनाओंका पारिश्रमिक भी शीघ्र ही भिजवानेकी कृपा करें। इन दिनों आर्थिक तंगीमें हूं, वरना तकाजा न करता। हां, पत्रोत्तरके साथ ही मनीआर्डरकी भी प्रतीक्षा कर रहा हूं।"

—पत्रोत्तर के साथ ही मनीआर्डर की प्रतीक्षा है, तब सम्पादककी मनःस्थिति का अन्दाज पाठक आसानी से लगा सकते हैं।

अच्छा, अब कुछ नये लेखकों-लेखिकाओंका मुलाहजा कीजिये। एक 'उदीयमान कविजी' लिखते हैं——

"श्रद्धेय.....

मैं बहुत दिनोंसे हिन्दी भाषामें एक काव्यग्रंथ लिखनेको लालायित था। आज सायंकाल मेरी बालसाधना पूरी हुई। मैं अपनी एक कविता भेज रहा हूं। आशा है, इस कंटकाकीर्ण मार्गमें आप मुझे सहायता देंगे। यह चिर सत्य है कि प्रथम प्रयासमें मेरी कविता उत्कृष्ट नहीं होगी, फिर भी मातृभाषाकी सेवा करनेका अधिकार लघुमति बाल-समाजको भी है, जिसका अरण्यरोदन, जिसकी आंतरिक लालसा सर्वदा सत्यके अनुसंधानमें संलग्न है। नितांत साधारण पुरुष भी यथेष्ट संबल पाकर जीवनमें कठिन कर्मवादके भीषण पथपर चल सकता है।"

——कहिये, इन महाशयको, 'इस कंटकाकीर्ण मार्गमें' कहांतक सहायता दी जानी चाहिए?

एक नवोदिता लेखिकाकी बात सुनिये—

"छोटे मुंह बड़ी बात करके कुछ झेंपती सी हूं, पर हम जैसे मनुष्योंमें झेंपना एक विचित्र रुख पकड़ कर रहा है। अपनी योग्यता के अनुसार एक नाचीज लड़की क्या सुना सकती है, यह तो आप ही अन्दाज लगा सकते हैं। मैं आशान्वित रहूंगा (?) कि आप मेरे टूटे-फूटे भावोंको अपने साप्ताहिक पत्रमें स्थान दे मुझे कृतार्थ करेंगे। आप लोगों का प्रोत्साहन ही हम जैसोंका उत्थान करा सकता है। अतः आपसे नम्र निवेदन करता हूं कि हमारी कविताको छाप देंगे।

—लगता है कि लेखिकाके रूपमें कोई लेखक बोल रहा है। यह भी संभव है कि लेखिकाने किसी लेखककी मार्फत अपना प्रतिनिधित्व कराया हो।

० ० ०

अब एक निहायत मजेदार पत्र पढ़िये। एक 'भावी' लेखक और कवि लिखते हैं——

"आदरणीय.....

मेरे पास अपनी लिखी हुई बहुत सी कवितायें, कहानियां और लेख हैं। मैं उन्हें आपके साप्ताहिक पत्रमें छपाना चाहता हूं। लेकिन यह नहीं मालूम कि किस रेटसे आप छापते हैं। इसलिये कृपा करके शीघ्र लिखें कि आपका नियम क्या है। एक कविता या लेखकी छपाई क्या लेंगी? आशा है, आप मेरे सहायक होंगे।"

—नये पत्रोंको, जो घाटे पर चलते हों, ऐसे 'लेखकों' और कवियोंका' का पता लगाना चाहिए।

० ० ०

एक नये लेखककी विनम्रता देखिये——

"प्रिय.....

सोचता हूं, आप प्रसन्न होंगे। मैंने अपनी कविता आपके पास भेज दी थी; वह मिल गयी होगी। लेकिन अभीतक कोई उत्तर नहीं मिल सका। शायद इधर आप कुछ कार्यव्यस्त हों। एक बार फिर आपसे प्रार्थना करता हूं और मुझे विश्वास है कि आप मुझ पर दया करेंगे।

—सम्पादकके दया और प्रोत्साहन के भंडार पर ऐसे आक्रमण अक्सर होते रहते हैं, फलतः वह भंडार हमेशा खाली ही दिखता है।

० ० ०

एक उदीयमान कवि कृतज्ञता प्रकट करते हुए लिखते हैं:—मेरी प्रकाशित कविताका पारिश्रमिक मिला, धन्यवाद। आपने मेरी..... शीर्षक कविता मुखपृष्ठ पर प्रकाशित करनेकी कृपा की, यह मुझ पर आपके प्रेमका सूचक है।

—भावुक हृदय कवियोंके द्वारा यह कृतज्ञता इतना स्वाभाविक ही है।

० ० ०

एक और भावुक हृदय कविके उद्गार सुनिये——

"सम्पादकजी,

मेरी एक कविता आपके पास अवश्य पहुंच गयी होगी; इस बार 'गुरुदेव' (रवीन्द्र ठाकुर) के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनेकी इच्छासे मैंने एक लम्बी कविताकी रचना की है। किन्तु अभाग्यवश इस बार हमारे शहरमें सामूहिक रूपसे "रवीन्द्र सप्ताह' नहीं मनाया जा रहा है। यही कारण है कि जनताके समक्ष अपनी कविता पाठ मैं नहीं कर सका। अतः कविताके कुछ अंशोंको आपके पास प्रकाशनार्थ भेज रहा हूं। आशा करता हूं कि इसे स्थान देंगे।

—बेशक शहरवालोंने 'रवीन्द्र सप्ताह' न मना कर कविके साथ घोर अन्याय किया। अच्छा, अगले साल सही। परिश्रम व्यर्थ नहीं जायेगा।

० ० ०

हां, तो ऐसे ही अनेक तरहके पत्र प्रायः हर रोज सम्पादकीय डाकमें आते रहते हैं, जिन्हें पढ़ पढ़ कर सम्पादक अपने थके दिमागको सहलाता रहता है। वह चाहता है कि अपने पत्र प्रेषकोंको उचित जवाब दे देकर संतुष्ट करे, लेकिन लाचारी रहती है। हर रोज आने वाले पत्रोंकीसंख्या इतनी अधिक होती है कि इच्छा रखते हुए भी सबका उत्तर देना कठिन ही नहीं, असंभव हो जाता है। यही कारण है कि प्रायः हर रोज सम्पादकसे पत्रोत्तर न देनेकी शिकायत की जाती है। हमारा खयाल है कि यदि नवोदित लेखक और कवि अपनी रचनाओंको सीधे सम्पादकके पास भेजनेके पहले अपने आसपासके किसी विद्वानसे उनका परिमार्जन करा लें, तो सम्पादक के प्रति उनकी बहुत सी शिकायतें अपने आप दूर हो जायेंगी। रही पुराने लेखकों कवियोंकी बात, तो सम्पादक और लेखक कविके बीचका यह वृत्तान्त शायद अनादि कालसे चला आता है और अनादिकाल तक जारी रहेगा।

अगर इन पत्रोंके प्रकाशनसे हमारे किन्हीं लेखकों कवियोंके कोमल हृदय पर आघात पहुंचा हो तो हम उनसे क्षमा याचना करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# कुणाल

श्रीमती कमलिनी मेहता

दूर दूरसे अदृश्य धुंधले बादल उठकर सांध्य गगनका अंक भरते जा रहे थे--- महारानी तिष्यरक्षिता भी विचारोंमें लीन कुछ खोयी सी उनके साथ आने भविष्य जीवनका एक अदृष्ट चित्र रंग रही थी--- अचानक किसीकी पदध्वनिसे उसकी तन्द्रा टूटी। उसने घूमकर देखा युवराज कुणाल कक्षमें प्रवेश कर रहे थे, नेत्र प्रसन्नतासे चमक उठे।

'आओ कुणाल कबसे तुम्हारी राह देख रही थी ?'

'आज्ञा दीजिये मां।'

एक क्षण महारानी---तृषित नेत्रोंसे उन सुन्दर विशाल नेत्रोंको देखती रहीं जो अपनेमें एक अपूर्व ज्योति---एक अपूर्व आकर्षण लिये हुए खुले चमक रहे थे।

'क्या सोच रही हो मां ?'

'मां ? तुम मुझे मां न कहा करो कुणाल।'

आश्चर्य विस्फारित हो उठे नेत्र---

'यह आप क्या कह रहीं हैं ? मैं समझ नहीं पा रहा हूं।'

'कितने भोले हो तुम'---तिष्यरक्षिता मुस्कुराथी--'बीस वर्षकी युवती और उसका पचीस वर्षका युवक पुत्र। कैसी अद्भुत बात है।'

'अद्भुत बात कैसी ? आप मेरे पिता जी की.....',

'विवाहिता पत्नी हूं, अवश्य विवाहिता हूं, पर यदि विवाहिता न कह कर यह कहो कि मैं तुम्हारे वृद्ध पिताकी अतृप्त वासना बुझानेका साधन अवश्य हूं तो अत्यधिक उचित होगा।' व्यंग तथा घृणासे मचल उठे नेत्र।

कुणालका सिर झुक गया---उसके पास इस व्यंगका कोई उत्तर न था।

'चुप क्यों हो गये, बोलो ? क्या यह मेरे साथ अन्याय नहीं है ?'

'है अवश्य, पर अब इसका कोई उपाय भी तो नहीं है।'

'है कुणाल, और तुम्हारे पास'---आतुर शब्दोंमें तिष्य रक्षिता बोल गयी।

'तो आज्ञा दो मां, मैं उसे भर सक पूर्ण करनेका प्रयत्न करूंगा।

'फिर मां कहा---क्या तुम्हारे पास हृदय नहीं है कुणाल ? क्या तुम मुझे समझ नहीं पा रहे हो ?'

प्रश्न सूचक नेत्र महारानी तिष्यरक्षिता के नेत्रोंसे जा मिले पर तत्क्षण ही उनमें एक तीव्र वासनाकी ज्वाला धधकती देख कांप उठा कुणालका हृदय, और उसी क्षण पकड़ लिये तिष्यरक्षिताने उसके दोनों हाथ---।'

'कुणाल, एकबार मेरी ओर देखो मेरे दप यौवनसे भरे रूपको देखो।'

झटक दिये युवराजने उसके हाथ--- तिलमिला उठी तिष्यरक्षिता---किन्तु अभी सहारा था अन्तिम अस्त्रका---घुटनों के बल आंचल पसार कर बोली-'कुणाल ! मैं तुमसे प्रेम करती हूं, मुझे ठुकराओ मत। मुझ पर दया करो। एकबार मुझे अपने हृदयसे लगाकर इसे शीतल कर दो।' और आंसू गिर कर कुणालके पैरोंको भिगोने लगे।

'क्यों मुझे पापका भागी बना रही हो मां !' और घूम गये उसके पैर हाथोंने ढंक लिये उसके नेत्र।

बड़ी कड़ी थी चोट। सहन न कर सकी तिष्यरक्षिता। चीख उठी---'ठहरो हे निर्दयी ! तुम इस प्रकार मुझे तिरस्कृत करके नहीं जा सकते। तुम यह न भूलो कि इस समय तुम एक नागिनसे खेल रहे रहे हो---उसका विष तुम्हें भस्म कर डालेगा, तुम्हें जला देगा। तुम जानते हो कि तुम्हारे पिता सम्राट अशोक मेरी मुट्ठियोंमें हैं। मेरा केवल संकेतमात्र ही तुम्हारे इस अभिमानको कुचलनेके लिये पर्याप्त है, सोच लो। एक बार सोच लो।' और आशा तृषित तथा दग्ध नेत्र कुणालके मुख पर आ अटके।

'आपका कोई भी भय मुझे अपने पथ से नहीं डिगा सकता मां।'

'यह घमण्ड ! अच्छा तो सुनते जाओ। मैं तुम्हारे ये दोनों सुन्दर विषैले नेत्र निकलवा कर तुम्हारा मुख विरुप करवा डालूंगी।'

'ऐसे नेत्रोंका न रहना ही उचित है मां, जो अपनी मांके हृदयमें वासना उत्पन्न करनेकी ढिठाई करते हैं।'

'ओह निष्ठुर---और भूमि पर फैल कर विलख उठी महारानी तिष्यरक्षिता।

'ओह'---घबड़ा कर कुणालने आंखें खोल दीं।

'क्या हुआ ?' पास ही बैठी कांचनने पूछा।

'बड़ा ही भयंकर स्वप्न था प्रिये और कुणालने अपने दोनों हाथोंसे मुह ढंक लिया। अधीर हो उठा कांचनका हृदय ---'स्वामी' एक क्षण कुणाल एक टक कांचन की आंखोंमें कुछ देखता रहा। कांचनके नेत्रोंमें अश्रु छलक उठे---और प्यारसे उसके मस्तक पर हाथ फेरते हुए कुणाल बोला---'कांचन ! अधीर न होओ प्रिये। तुम्हें स्मरण होगा जब हम दक्षिण विजय करनेके लिये प्रस्थान करनेवाले थे तब उसके एक दिन पूर्व माता तिष्यरक्षितासे जो मुझ से बातचीत हुई थी---वही बातें आज फिर स्वप्नमें साकार हो उठीं। संभवतः मांका कुचक्र वेग पकड़ रहा है, क्योंकि आजकल पिताजी अस्वस्थ हैं, शासनकी बागडोर उनके हाथोंमें है।'

'स्वामी यदि आपका कोई अनिष्ट हुआ तो मैं प्राण दे दूंगी।'

प्रिये, सत्यकी सदैव विजय होती है।'

कांचनने कोई उत्तर न दिया, केवल एक बार अपने स्वामीकी ओर देख कर सिर नीचा कर लिया।

'कांचन हम लोग कल प्रातःकाल ही काश्मीरके लिये प्रस्थान करेंगे। पिताजीकी अनुमति मिल गयी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'कांचनके नेत्र उल्लासते तथा मुख प्रसन्नतासे खिल उठे।

युवराज कुणाल तथा देवी कांचनमाला भारतके चिर सुषमामय काश्मीरके प्राकृतिक सौन्दर्यका जब उपभोग कर रहे थे तब, एक दिन —

'कुमार'—और इतना कहते कहते सेनापति, कुमारके चरणों पर गिरकर बच्चोंकी तरह रो पड़े। एक क्षण तो कुमार हतबुद्धिसे खड़े रहे किन्तु दूसरे ही क्षण 'पिताजी तो स्वस्थ है ?'

हां कुमार, पर मैं बड़ा ही अधम हूं, मुझे क्षमा कीजिये।' और वे फिर मुंह ढक कर रो पड़े।

"कुछ तो मुखसे कहो, क्या बात है ?' अधीर वाणीमें बोल उठे कुमार।

'यह आज्ञा पत्र पढ़िये युवराज।' कांपते हुए हाथोंने बढ़ा दिया पत्र आगे। कुणालने पढ़ा—एक क्षणके लिये हृदय कांप उठा, पर तत्क्षण हृदयकी इस दुर्बलता पर अधरोंकी मुसकान विजय श्री लेकर नाच उठी और मुख मंडल एक दृढ़ भावना तथा विचित्र तेजसे प्रदीप्त हो उठा—

'आपको राजाज्ञा पालन करनी चाहिये।'

'पर यह राजाज्ञा नहीं महरानी, तिष्यरक्षिताकी आज्ञा है। मैं इसका पालन कभी

"भले ही महारानी तिष्यरक्षिताके शब्द हों—पर इस पर राजमुद्रा अंकित है। तुम अपने कर्त्तव्यका पालन करो। मुझे तनिक भी दुःख नहीं है।"

"पर युवराज ! वह मायावी महारानी केवल इतनेसे ही तो तुष्ट नहीं है—उसकी यह भी आज्ञा है कि आपकी आंखें निकालनेके पूर्व समस्त नगर भरमें ढिंढोरा पीट कर यह घोषणा कर दी जाय कि युवराज कुणालने अपनी विमाता महारानी तिष्यरक्षिता पर कुदृष्टि डाली थी उसीके दण्ड-स्वरूप उनकी आंख निकाली जा रही है।"

"भाई ! तुम इतने विचलित क्यों हो रहे हो। मुझे भय नहीं है। सत्य पर कभी कोई आंच नहीं आ सकती। तुम अपना कर्तव्य पालन करो !"

युवराज कुणालके नेत्र महारानी तिष्यरक्षिताकी क्रूर तथा कुटिल इच्छाके अनुसार निकाल तो डाले गये—पर वह उन निकले हुए नेत्रोंको देखकर प्रसन्न न हो सकी—उसका हृदय अपना यह बीभत्स तथा भयानक कृत्य देखकर कांप उठा, विद्रोह कर उठा। यह उसकी सबसे बड़ी पराजय थी।

सात वर्ष बाद—

भदन्त कुणाल देवी कांचनमालाके साथ अपने पिताकी राजधानीमें पधारे हैं। उनके शान्ति तथा प्रेमके सन्देशसे पाटलिपुत्रका कोना-कोना गूंज उठा है। वे राजधानीके बाहर एक उद्यानमें ठहरे हैं। जनताकी भीड़ उनके दर्शनार्थ टूटी पड़ रही है। पुत्रके नामकी जय-जयकार महाराज तथा महारानीके कानोंमें भी पड़ी। महाराजका पितृ हृदय पुत्रको देखनेके लिये व्याकुल हो उठा और उधर महारानीकी सोयी काम वह्निमें फिर आहुति पड़ गयी।

एक दिन—

जब सूर्य अस्त हो रहा था—समस्त आकाश रक्ताभ हो उठा था, चारों ओर संध्याकी नीरवता छा गयी थी—महारानी तिष्यरक्षिताने उद्यानमें प्रवेश किया। सौम्यमूर्ति कुणाल एक वृक्षके नीचे आसनगत थे। कांचन आज राजधानीमें अपनी किसी प्रिय सहचरीके स्नेहानुरोधकी रक्षा करने के निमित्त आतिथ्य ग्रहण करने चली गयी थी। वह शान्त तथा सौम्यमूर्ति गयी थी। वह शान्त तथा सौम्यमूर्ति देखकर एक क्षणके लिये महारानी तिष्यरक्षिताके नेत्र झपक गये उसका पापी मन एक बार कांप उठा। पैर जड हो गये, किन्तु साहसने साथ दिया और उसके कांपते अधरोंने पुकारा—

"कुणाल!"

"कौन ? मां ? स्वागत करता हूं।" और पैर छूनेके लिये उसके दोनों हाथ भूमि टटोलने लगे।

"कुणाल, मैं बहुत ही दुखी हूं, मैंने सोचा था कि तुम्हारी आंखें निकलवा कर मैं तुम्हारा सुन्दर मुखड़ा विरूप कर डालूंगी, तुम पर झूठा दोषारोपण कर तुम्हें सबके सम्मुख लांछित करूंगी—किन्तु मैं देखती हूं, यह मेरी भूल थी, मैं आज तुम्हारे सम्मुख पराजिता हूं।"

कुणाल मुस्काया—"मां, बीते दिनों की बात भूल जाइये। जो होनी सो हो गयी। अब उसे भूल जाइये।

"भूल जाऊं, पर कैसे—तुम्हारा नेत्र विहीन मुख अब और अधिक सुन्दर हो उठा है, उसका यह अलौकिक तेज—ओह, मैं इसे सहन नहीं कर पा रही हूं, कुणाल तुम मुझे क्षमा कर दो और अब मुझे स्वीकार कर लो।

"हां, मां ! मैं आपको स्वीकार करलूंगा। गुरु के रूपों पहले आप केवल मां थीं अब गुरु भी हैं, आपने मुझे इस सत्पथ पर लगाया, मैं आपका कृतज्ञ हूं, मुझे चरणरज दो मां।"

"यह क्या कह रहे हो कुणाल ! देखो मेरी ओर, यह रूप, यह यौवन ! क्या मेरे पास हृदय नामकी वस्तु नहीं है, क्या उसमें किसीको अपना बनानेकी अथवा किसीसे प्रेम करनेकी इच्छा न होगी ? बोलो, क्या वह मेरा रूप और यौवन एक साठ वर्षके वृद्धकी इच्छापूर्ति पर ही लुटनेके लिये है ?

"मां। आप आर्य नारी हैं, आपके मुखसे ऐसे शब्द केवल मेरी परीक्षाके लिये निकल रहे हैं। आप मेरी मां हैं, मेरी गुरु हैं, आप पर मैं गर्व करता हूं। मां, धैर्य तथा संयम आपके प्रबल शस्त्र हैं, यह रूप और यह नश्वर यौवन, आपको प्रभावित नहीं कर सकेंगे।"

"ओह निष्ठुर ! तुम भी हो तो उसी पिताके पुत्र न, जिसने मेरा जीवन तप्त कर डाला है।"—और फूट-फूट कर रो पड़ी तिष्यरक्षिता।

"मां ! मांका हृदय बड़ा महान होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# सजल गीत

श्री श्यामनन्दन प्रसाद सिंह 'किशोर'

तुम चले, तुम्हारा प्यार रहा जाता है
यह दो तिनकोंका हरा-भरा इठलाता
लो, उजड़ा-सा संसार रहा जाता है
तुम चले बसाने गैरों की दुनियां को
तुम चले सजाने औरोंकी बगिया को
पर मेरे जीवन के कानन में सुन्दर
यह तो शाश्वत पतझार रहा जाता है
गीले स्वर, रूखे कंठ, गान क्या गाऊं
आंसू से कैसे दिलकी आग बुझाऊं
जब मनमें मरु इन जलते अरमानोंका
आंखोंमें पारावार रहा जाता है
हंसना यदि कि न अपार, सरल कब रोना
यदि मिलन क्षणिकतो अनित रहा कब खोना
क्या दिलकी सारी मौनभरी भाषा को
वाणीसे बेफल कभी कहा जाता है

है, उसे सम्भालो मां, अपने पुत्रकी प्रार्थना स्वीकार करो मां !"

"ठीक है स्वाभिमानी ! तुम बन्द करो अपने उपदेश, मैं कुछ नहीं सुनना चाहती—पर जाते जाते यह भी कहे जाती हूं कि कल यह झूठी शान्ति तथा प्रेम। सन्देश देनेवाली जिह्वा भी तुम्हारे मुखमें नहीं रहेगी।"

"किसकी जिह्वा मुखमें न रहेगी ?" चौंक पड़ी तिष्यरक्षिता—घूमकर देखा, क्रोधसे कांपते हुए सम्राट अशोक पीछे खड़े हैं।

"सम्राट",—चरणों पर गिर पड़ी रोती हुई तिष्यरक्षिता—"मुझे क्षमा कीजिये।"

ठुकरा दिया सम्राट्ने उसका सिर—"इन्हीं बना लो अभी इस दुष्टाको। कल समस्त तक्षशिलाकी जनताके सम्मुख इस कुलटाकी पाप कथा सुनायी जायगी और तब इसे जीवित अग्निम डाल दिया जायगा।"

"पिताजी !"

"बेटा कुणाल"

—और पुत्रको हृदयसे लगाकर वृद्ध सम्राट बच्चोंके समान रो पड़े।

"पिताजी, मेरा एक अनुरोध है स्वीकार कीजियेगा।"

"कहो पुत्र, मुझ अभागेमें इतनी क्षमता भी कहां रही कि तुम्हारा अनुरोध रख सकूं।"

"पिताजी मां पर दया कीजिये।"

"ओह कुणाल, तुम क्या कह रहे हो ? वह दयाके योग्य नहीं है, मैं इसे क्षमा नहीं कर सकता, इसने तक्षशिला को अत्याचार....."

बीचमें ही रोक दिया कुणालने—"पिताजी, ये मेरी मां हैं, मेरी गुरु हैं, मैं उनके लिये याचना करता हूं।" और कुणाल अपने पिताका उत्तरीय पकड़कर नीचे बैठ गया, उसकी अन्धी आंखें पानी भरकर ऊपर उठ गयीं।

"पर मुझे शान्ति नहीं मिलेगी।"

"तथागतके चरणोंमें पूर्ण शान्ति ही शान्ति है, महाराज।"

"तो मुझे भी ले चलो इनके साथ।"

"चलिये पिताजी।"

एक अपूर्व ज्योति फट पड़ी कुणालके मुखपर और रोती हुई महारानी तिष्यरक्षिता गिर पड़ी उसके चरणों पर।

"पुत्र कुणाल ! क्षमा करते जाओ मुझ पातकको भी और मेरा भी मार्ग मुझे दिखाते जाओ। जहां मैं इस कलुषित हृदयका पाप धो सकूं।"

कांचनने आकर देखा कि तिष्यरक्षिता आंखोंमें आंसू भर कर दीनता और प्रायश्चित्तकी मुद्रामें हाथ पसारे पड़ी है, कुणाल अपने पिताजीका हाथ पकड़े खड़ा है, वह आगे बढ़कर अशोकके आगे झुककर खड़ी हो गयी—"मैं आपकी पुत्रवधू प्रणाम करती हूं।"

और वह अपने श्वसुर और पतिका हाथ पकड़ कर चल दी और पीछे मूर्छित होकर गिर पड़ी तिष्यरक्षिता।

MONSOON
SETS IN
Anopheles breeds..

यह आश्चर्यजनक ओषधि मले रिया बुखारके लिये रामबाण है। अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियास कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एक बम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
Kasaya

KAVIRAJ N.N.SEN & CO. LD.
CALCUTTA


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# T.B. टी बी "तपेदिक" चाहे फेफड़ोंका हो या अंतड़ियोंका भयंकर रोग है

| (१) पहला स्टेज | (२) दूसरा स्टेज | (३) तीसरा स्टेज | (४) चौथा स्टेज | अन्तिम स्टेज |
|---|---|---|---|---|
| आमली ज्वर, खांसी | ज्वर खांसीकी अधिकता | शरीर सूखना, ज्वर-खांसी की भयंकरता | सबही बातोंकी भयंकरता शरीरपर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना | रोगकी मौत और भयंकर जर्मोंका इधर-उधर फैलना |

जबरी — ( JABRI ) — (जबरी) — (JABRI)

## टी बी T.B. "तपेदिक" और पुराने ज्वरके हताश रोगियो ! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नड़ुगाबां, पो० डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनोंसे ज्वर खांसीसे बीमार था। बलगम आदिकी परीक्षा पर "तपेदिक" (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोगका नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया। इसी बीच परमात्माकी कृपासे आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरत आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवाका विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अमृतरूपी गुणोंने मुझे आश्चर्यमें डाल दिया। थोड़े ही दिनोंमें शरीरका रंग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थमें आपकी औषधि इस दुष्ट रोगके लिये अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा० ठाकुर सिंह नेपाली मू० कटैया पो०हरलखी जिला दरभंगासे लिखते हैं। "आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत ही लाभदायक प्रतीत हुई, कृपया लौटती डाकसे पूरा कोर्स भेज दें।" इसी प्रकारके पहले भी दसों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमोंमें देख चुके हैं, भारतके कोने कोनेमें लोगोंने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोगसे रोगीकी जान बचाने वाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। 'जबरी' के नाममें ही भारतके पूज्य ऋषियोंके आत्मिक बलका कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिनसे ही इस दुष्ट रोगके जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि —आप इस तरफसे हताश हो चुके हों तो भी परमात्माका नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिनका नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताए क्या होता है—जब चिड़िया चुग गयी खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियोंपर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तारका पता केवल "जबरी" जगाधरी काफी है। तारमें अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ानेके लिये मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन ६) रु०, महसूल अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्रका हवाला जरूर दें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (६०) "जगाधरी" (पूर्व पंजाब) ई० पी०।

# कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जनपद साहित्य-

# देहाती 'बारहमासा'

—श्री विलास गयासपुरी साहित्यरत्न

ग्राम-गीतोंमें न कल्पना बे पर की उड़ती है, न अलंकार अपनी बोझिल झनझना-हटसे उद्यान पैदा करते हैं। उनमें न कृत्रिमता की शुष्क नीरसता रहती है, न रस की अतिशयता आर्द्र दलदल का निर्माण करती है, न उनमें भावोंकी उलझनदार वक्रगति रहती है और न भावोंका एक दम कंकाल रहता है। रहता है उनमें इन सबका एक हल्का समन्वय, रहती है उनमें पायलकी-सी रुनझुन। रहता है उनमें सूधे दिलोंका स्वाभाविक उद्गार। यही वजह है कि वे निसर्ग सुन्दर, सरल और अपाततः मनोहर होते हैं। यही वजह है कि कोई भी सहृदय उनको सुनते ही स्पन्दित हो उठता है।

उनके गीतकार प्रकृतिके कवि होते हैं, वसन्तकी कोयल होते हैं। मधुमास अपना वैभव बिखेरता है, अपने सौरभ का प्रसार करता है और अमराईमें उसकी गायिका कोकिला उसके गीत गाने लगती है। उसी प्रकार प्रकृति अपनी सुन्दरता की मनोमोहिनी काया पसारती है और उसके गायक ग्राम-कवि गा उठते हैं, नाच उठते हैं। प्रकृति पट-परिवर्तन करती है, उसका कवि अपना स्वर बदल देता है। प्रकृति का चेहरा उदास होता है, उसके कविकी आंखोंसे मोती टपकने लगते हैं। प्रकृतिके ओठोंपर मुसकान खेलने लगती है, उसका कवि कमल सा खिल उठता है।

जैसे जैसे ऋतुओंका पट परिवर्तन होता है, ग्राम-गीतोंका गायन बदलता रहता है। तु तु में गाये जानेवाले गीतोंका अपना अलग परिवार होता है, उनके अलग अपने तर्ज और तरीके होते हैं। फागुनका गीत और चैतका गीत दोनों दो तरहके होते हैं। फागुनके गीतोंको 'फगुआ' और चैतमें गाये जानेवाले गीतोंको 'चैता' कहते हैं। फगुआ और चैतार दोनोंकी आत्मा भिन्न भिन्न है, दोनोंका स्वर भिन्न भिन्न है, दोनोंका माधुर्य आदि एक दूसरे से जुदा जुदा है। कोई भी उन गीतोंके श्रवणमात्र से बता सकता है कि अमुक 'फगुआ' है और अमुक चैता। फागुन भर बच्चेसे बूढ़े तक सभी फागके रंगमें मस्त रहते हैं। चैत आते ही उनका स्वर बदलकर आकाश मंडलमें तरंगित होने लगता है; यानी ऋतुओंके अनुसार ग्राम गीत ढलते रहते हैं।

ग्रीष्मका ताप लोगोंके तनपन को झुलसाकर चला गया. धरतीकी हरी हरी घास जलकर खाक हो चली; धरती के घर आग लगी थी और उसका घर जलकर अपना समस्त सौंदर्य लुटा चुका था कि उसके सौभाग्यसे आषाढ़ की घटा उमड़ घमड़ कर चल पड़ी। जली धरती हरीभरी हो गयी। उसका हरित और सरस सौन्दर्य निखरकर मानव मन मयूर को नाचने लगा। ग्राम कवियोंके सूखे प्राण हरे हो गये और उनके भावावेग गीतोंमें विस्तार पाने लगे। 'प्रथम मास आसाढ़ हे सखि साजि चल ले धार है' से गांवों का वातावरण आलोड़ित हो उठा। हरे हरे पेड़ोंकी डाल में झूले लटक गये। गांवोंकी जवानी पैंग पर पैंग देने लगी, 'बारहमासे' और अन्य किस्म के पावस-गीत लहराने लगे। देखने वालोंके दिल लोटन कबूतर हो गये।

ग्राम गीतोंका अधिकांश, पावस गीतोंके रूपमें अत्यधिक श्रेष्ठ है। बात यह है कि प्रकृतिके वक्षस्थलपर इन्हें जो सरस वातावरण मिला है, वह अन्य ऋतओंमें गेय गीतोंको सुलभ ही नहीं। पावस गीत विरहप्रधान होते हैं, जो उनकी रमणीयता का कारण है। किसी अंगरेज कवि का यह कथन कितना सही प्रतीत होता है—"दर्दीके गीत अपेक्षाकृत सुन्दर होते हैं।"

इन गीतोंके बहुत से भेद उपभेद होते हैं, किन्तु उनमें मुख्य हैं बारहमासा, बरसाती, सोहर आदि। यद्यपि 'बरसाती' का अर्थ पावस गीतसे अन्यथा नहीं है, फिर भी पावसमें गाये जानेवाले खास तरह के गीतोंकी ही यह संज्ञा है, जो 'बारहमासे' से सर्वथा भिन्न होते हैं। 'बरसाती' के भी अनेक उपभेद प्रचलित हैं, जिनके ब्योरेवार वर्णनके लिए यहां स्थान नहीं।

पावस गीतोंमें 'बारहमासा' सर्वप्रधान है। पावस के प्रारंभमें लोग इसे ही गाते हैं। इसमें वर्षके बारह महीनोंके प्राकृतिक सौन्दर्य का संक्षिप्त चित्रण रहता है, जिसकी पृष्ठभूमिमें एक विरहिन का सौम्य अन्तः क्रन्दन स्पन्दित पाया जाता है। हिन्दी के कवियोंमें पद्मावत-कार जायसी का 'बारहमासा' विख्यात है। ग्रामगीतोंके बारहमासाओंके रसास्वादनके पहले यदि उसका अवलोकन कर लिया जाय, तो विशेष अच्छा हो।

नीचे हम एक 'बारहमासा' दे रहे हैं, जिस पर मेरी ओरसे कोई टीका टिप्पणी आवश्यक नहीं। हां, प्रत्येक कड़ी का अर्थ दे दिया जा रहा है। गीतकी भाषा 'बिहारी' है। समूचा गीत एक विरहिन के मीठे दर्दसे गीला है।

प्रथम मास असाढ़ हे सखि,
साजि चल ले जलधार है।

(हे सखी, पावसका प्रथम महीना आसाढ़ आ गया और जलधार से सजकर चला।)

आहे केहि कारण सेतु बान्हल,
सिया उदेशे सीरी राम हे।

(हे सखी, किस कारण श्री रामचन्द्र सेतु बन्धनकर पावस में सीता की खोज कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रहे हैं। )

सावन हे सखि रैनिभे आवन,
रिमझिम बरसले बूंद हे।

( हे सखी, सावन की रात भयावनी लग रही है, रिमझिम रिमझिम बूंदें पड़ रही हैं। )

आहे प्रीति कारन सेतु बान्हल,
सिया उदेशे सीरी राम हे।

( हे सखी, प्रीतिके वशीभूत हो सेतु-बन्धनकर श्री रामजी सीताकी खोजकर रहे हैं। )

भादव हे सखि रैनि भयावन,
दोसरे अन्हरियाके रात हे।

( हे सखी ; एक तो भादोकी रात भयावनी होती है, दूसरे वह अन्धकारसे भरी रहती है )

आहे लोका जे लौके रामा, बिजुली जले गरजले
सेहु देखि जिया घबराय हे।

(हे सखी, बिजली चमकती है गरजती है जिसे देख सुनकर मेरा दिल घबरा जाता है। )

आसिन हे सखि आस लगावले,
आसो न पूरले हमार हे।

( हे सखि, आसिनमें मुझे आशा हुई कि प्रीतम के प्रदर्शन होंगे किन्तु मेरी आस न पूरी हुई। )

आहे इहो आस पूरे रामा, कुबरी सौतिनियाके,
जेहि कन्त राखे विलमाय हे।

(हे सखी, मिलन की आस कुब्जा सी सौतकी पूरी हुई जिसने मेरे कन्तको पावस में रोक रखा है। )

कातिक हे सखि निरमल महीना,
सब सखी चलले असनान हे।

( हे सखि, कातिक का महीना निर्मल होता है। उसमें सब सखियां गंगा स्नानके लिए चलीं। )

सब सखी पेन्हे रामा पाट पटम्बर,
हम धनी लुगरी पुरान हे।

( हे सखी, सब सखियां रेशमी वस्त्र पहनती और मैं विरहिन फटी चिटी लुगरी पहनती हूं। (जब प्रीतम ही नहीं तब पाटम्बर कौन पहनावे ? )

अगहन हे सखि सगरो सुहावन,
चारो दिशा उपजले धान हे।

(हे सखी, अगहन का महीना सब ओर सुन्दर लग रहा है। चारों ओर धान उपजे हुए हैं। )

आहे चकवा चकइया रामा केलि करतु हैं,
जेहि देखि जिया हुलसाय हे।

(हे सखी, चकवा चकई केलि क्रीड़ा करते हैं जिसे देखकर दिल खुश हो जाता है। )

पूस हे सखि ओस पड़िए गेल,
भींजले लासी लामी केश हे।

(हे सखी, पूसके महीने में ओस पड़ने लगा जिससे मेरे लम्बे लम्बे बाल भींग जाते हैं।)

चारु ओर उपजले जौ गोहुवा,
देखिदेखि जिया लहराय हे।

(हे सखी, चारों ओर जौ गेहूंके खेत दिख रहे हैं जिन्हें देखकर हृदयमें हिलोर उठ जाती है। )

माघ हे सखि आयल वसतु रितु,
आइ गेल छोट छोट दिन हे।

( हे सखी, माघमें वसन्त ऋतु चली आई और दिन छोटे छोटे हो गये। )

फागुन हे सखि फाग धमकि गेल,
सब सखी खेलले अबीर हे।

( हे सखी, फागुनके मासमें होली चली आई और सभी सखियां अबीर उड़ाने लगीं। )

सब सखी खेले रामा अपना बलम् संग,
हमरो बलम् परदेश हे।

( हे सखी, सब सखियां अपने बालम के साथ होली खेल रही हैं लेकिन मेरा बालम परदेश में है। (मैं किससे होली खेलूं। )

चइत हे सखि बेली फूलिए गेल,
फुलवा जे फुलले गुलाब हे।

( हे सखी, चैतमें बेलि और गुलाबके फल खिल गये। )

सब सखी तोड़े रामा अपना बलम् लागी,
हमरो बलम् परदेश हे।

( हे सखी, सभी सखियां अपने बालमके लिए फूल चुनती हैं लेकिन मेरा बालम तो प्रवासी है। (मैं किसके लिए चुनूं ? )

बैसाख हे सखी पीया न आयल,
विरही कुंहुके सारी रात हे।

( हे सखी बैसाख चला आया लेकिन पिया न आये। इसीलिए विरहिन सारी रात कुंहुकती रहती है। )

दिनवा जो काटे रामा रोअइत कलपइत,
कुहुकि कुहुकि सारी रात हे।

हे सखी, दिन रात रो और कलपकर काटती हूं और सारी रात कुहुक कुहुक कर। )

जेठ हे सखि अवधि पूरिए गेल,
पूरले मन कर आस हे।

( हे सखी, जेठके मासमें प्रवासीकी अवधि पूरी हो गयी, एक वर्ष पूरा हो गया अतः मेरे मनकी आस पूरी हो गयी। (आगे आसाढ़ कैसे कटेगा, इसी डरके कारण प्रीतम प्रवासी घर को चले आये। )

ऊपर एक एक पंक्तिके बाद अर्थ दिया हुआ है। पाठक उसके सहारे आसानी से इस 'बारहमासे'का माधुर्यंप रखकर सकते हैं।

अत्यधिक सस्ती कीमतों में

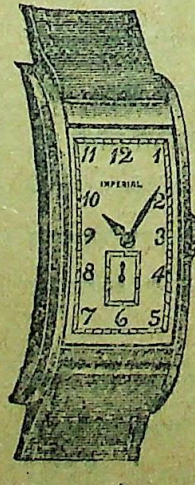

ऊंचे बर्ज की ठीक समय देने वाली, आधुनिक आकार की घड़ियां। प्रत्येक घड़ी की गारण्टी २ साल। गोल या चौकोर आकार की क्रोमियम केस १८), सुपीरियर २०), बेस्ट २२), सेंटर सेकंड २४) रेक्टेंगुलर क्रोमियम केस ४०), १५ जूएलकी ५५), १५ जूएलकी ८०)। डाकखर्च माफ।

प्रेमशङ्कर एण्ड कं०
(V.C.) एशबाग, लखनऊ।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# गांधी हत्याकांड कामला

## मुखबिर दिगम्बर बाडगेकी गवाही जारी : जज को धमकीका पत्र

महात्मा गांधी हत्याकांडके मुकदमे में मुखबिर बने हुए गवाह रामचन्द्र बाडगे आगे बताया कि 'दूसरे दिन १५ जनवरीको आप्टे और गोड्से हिन्दू महासभा कार्यालयमें आये इस समय मदनलाल भी वहां था। वहांसे हमलोग अग्रणी नामक समाचार पत्र, कार्यालयमें गये। वहां श्री जोशीसे बातें हुई। वहांसे आप्टे हमलोगोंको फिर वापस ले आया और मदनलालको भूलेश्वरमें दीक्षित जी के मकानसे एक दिन पहलेका रखा हुआ सामान लानेको भेजा। पीछे हमलोग भी वहां गये। सारे सामान और अस्त्रशस्त्र भी, हमने ही संभाल कर बांधे। आप्टेने उसे करकरे और मदनलालके हवाले कर उन्हें फ्रांटियर मेलसे दिल्लीके लिये प्रस्थान करनेका आदेश दिया। दीक्षितजीने एक रिवाल्वर देनेका वादा किया। पूनासे भी एक पिस्तौल लानेकी व्यवस्था की गयी। १७ जनवरीको करकरकारे और आप्टे फ्रांटियर मेल न पकड़ सके। मैं स्वयं पूना गया और नाथूरामने वहां मुझे एक पिस्तौल दी। पिस्तौल लेकर मैं बम्बई आया। आप्टे और गोड्सेने यहां कुछ रुपया का प्रबन्ध कर लेना चाहा। हमलोग सावरकरके यहां गये। उन्होंने हमलोगोंको सफल होनेका आशीर्वाद दिया। यहां एक सज्जनने १००) सहायता के लिये दिये।"

बुधवार ता० २१ जुलाईको भी दिगम्बर बाडगेका इजहार जारी रहा। उसने अपने बयानमें आज बताया कि महात्माजीकी हत्याके लिये कैसी योजना बनायी गयी थी। उसने कहा, "हमलोग बम्बईसे दिल्ली चले आये। यहां यह योजना बनायी गयी कि महात्मा जी को उनके कमरेमें ही बम से उड़ा दिया जाय। उस समय सुहरावर्दी भी वहां रहे थे। हमलोगोंने दिल्ली पहुंच कर बिड़ला भवन का अच्छी तरह निरीक्षण किया। वह दरीची भी देखी जिस होकर बम फेंकनेकी बात थी। पर सभी कुछ देख सुन लेनेके बाद प्रार्थना सभा में ही बम फेंकना उपयुक्त जंचा। तय हुआ कि सभा जब प्रारंभ हो जायगी उसी समय आप्टे संकेत करेगा और मदनलाल प्रार्थना सभाकी चारदीवारीसे सटाकर रखे हुए बमोंमें आग लगा कर विस्फोट करायेगा। पीछे पिस्तौलसे निशाना लगा कर महात्मा गांधीकी हत्या कर दी जायगी। हमलोग दिल्लीसे बिड़ला भवनसे २० तारीख के सवेरे हिन्दू महासभा कार्यालयमें आये। इस भवनसे पीछेकी ओर घना जंगल है। हमलोगोंने इसी जंगलमें जाकर एक वृक्ष की डाल पर निशाना लगा कर पिस्तौलकी परीक्षा ली। वहां जंगलके रक्षकोंने हमलोगों को देखा भी पर हम क्या करने गये थे इसका पता उन्हें न लग सका। वहांसे आकर हमलोग मेरीना होटलमें उठ आये। हमलोगोंने कमरा बन्द कर पिस्तौलको साफ किया। गोड्सेने कहा कि "होशियारीसे काम करो जिसमें दाव खाली न जाये।" शामको अपने कपड़े लगा कर हमलोग प्रार्थना सभामें गये। आप्टेने हमलोगोंको बम और पिस्तौल दिये

भीड़ महात्मा गांधी उठे नहीं, बैठे रहे और लोगोंको भी बैठे का इशारा किया। कोई नहीं उठा। सभाके किनारेके लोग दौड़ कर धड़ाकाकी तरफ जाने लगे। मैंने गोली नहीं चलायी और न शंकरने। इतनेमें मदनलालको पकड़ कर लोग आते हुए दीख पड़े। मुझे डर हुआ कि शायद मुझे पकड़ने आ रहे हैं। सभा समाप्त हो चुकी थी, लोग जा रहे थे। और शंकर भी धीरेसे निकल गया एक डांगाकर हिन्दू सभा भवन चला आया। यहां शंकरने भवनके पिछवाड़े अपना बमगोला फेंक दिया। इसी समय नाथूराम गोडसे और आप्टे वहां आये। उन्हें हम लोगोंने खूब डांटा। उसके बाद हम लोग दिल्लीमें नहीं ठहरे। उसी दिन रातको, बम्बईके लिए रवाना हो गये।

बाडगेके इजहार शेष होनेपर साबूत पक्षके वकील श्री दफ्तरीने और भी बहुतसे सवाल पूछे जिनसे बहुतसे अस्पष्ट विषयोंपर प्रकाश पड़ा। इसके बाद उससे जिरह करनेके लिये श्री सावरकरकी तरफसे उनके वकील श्री भोपटकर उठे। उनके बाद अन्य अभियुक्तोंके वकीलोंने भी बाडगेसे जिरह की। जिरहके दरम्यानमें बाडगेने उन सभी बातोंको प्रश्नोत्तरके रूपमें कहा जो ऊपर दी गयी है। इस सिलसिलेमें उसने यह बताया कि वह पूनामें सस्त्रास्त्रोंकी दूकान जो करता था उसमें नाजायज हथियार भी वह बेचता था और ऐसे शस्त्र वह किरकीके सरकारी शस्त्र कारखानेसे चोरीसे मंगवाया करता था। उसने बताया कि कैसे वह पकड़ा गया और फिर कैसे उसके मनमें आया कि सत्य बातोंको खोल देना ठीक है। इसके लिए उस पर कोई जोर दबाव नहीं डाला गया था और स्वेच्छासे यह बात उसके मनमें उत्पन्न हुई थी। बाडगेने जिरहमें यह भी कहा कि बस विस्फोटके बाद जो उसने बम नहीं चलाये उसका कारण यह था कि पूर्व निश्चित योजनाके अनुसार, जिसमें यह था कि आप्टे और करकरे भी पिस्तौल चलायेंगे, उसने बम विस्फोटके बाद किसीको वैसा करते न देखा। जिरहके सिलसिलेमें जब गवाह यह बता रहा था कि बम खिड़कीके घेरोंके बीचसे होकर फेंक देनेकी बात पहले तय हुई थी, अभियुक्त करकारे के वकीलने यह जानना चाहा कि हथगोला उस अवस्थामें कैसे फेंका जा जा सकता है? अदालतकी आज्ञासे गवाहने एक पलीता निकाला हुआ हथगोला लेकर बाहर जाकर बताया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ऐसे। और जब वह बाहर था उसी समय अभियुक्त आप्टे अपने मनसे उठ खड़ा हुआ और बम फेकनेकी प्रक्रिया बताने लगा।

इस सप्ताह मुकदमेकी कारवाईमें दोनों पक्षोंके वकीलोंके बीच दो एक बार झड़प भी हो गयी। जिरहके कई सवाल अदालतने पूछे जानेकी इजाजत नहीं दी और इस पर आपत्ति करते हुए सफाईके वकीलने इस सम्बन्धमें लिखित आवेदन पत्र दिये। गोडसेके वकील श्री बनर्जीने एक आपत्ति यह की कि अदालतमें आनेकी इच्छा रखने वाले हर आदमी की तलाशी ली जानेका जो नियम है, वह वकीलोंके सम्बन्धमें उठा दिया जाय। अदालतने हुक्म दिया कि उसे उठाया नहीं जा सकता, ढीला कर दिया जा सकता है, अगर वकील लोग अपने साथ कोई बैग न लावें। बैग लाने पर उसे खोल कर देखना आवश्यक हो जाता है। इसी सिलसिलेमें जज श्री आत्माचरणने यह भी बताया कि उनके पास धमकीके कई पत्र आये हैं जिनमें लिखा गया है कि उनकी हत्या कर दी जायगी। सबूत पक्षके वकील श्री दफ्तरी भी ऐसे पत्र पाने की बात कही।

वाडगेकी जिरह अभी चल रही है। वकीलोंको एक माइक्रोफोन दिया गया है जिसके सहारे वे अपनी अपनी जगहों पर से ही वाडगेसे सवाल पूछेंगे।

वृहस्पतिवार २२ जुलाईको भी वाडगेका इजहार जारी रहा। उसने कहा, शामको हम लोग सभामें पहुंचे और नौकरोंके फाटक पर गये। हम लोग अलग अलग टैक्सियोंमें गये थे। हमारे पहुंचने पर करकारे आया और उसने कहा कि आनेमें देर हो गयी। करकारेने यह भी बताया कि मैंने एक नौकरसे यह ठीक किया है कि वह हम लोगोंको प्रार्थना सभाके पीछेकी कोठरीमें जाने देगा। उसने महात्मा जीके फोटो लेनेका बहाना किया था। उसकी राय थी कि इसी कोठरीकी खिड़की होकर कारवाई की जाय। पर कोठरी मेंसे गोली चलानेमें मुझे भय मालूम हुआ। मैंने सोचा कि कोठरीमें रहने पर तो मैं आसानी से पकड़ा जाऊंगा। मैंने यह बात करकारेसे कही और शंकरके साथ प्रार्थना सभामें चला गया। इसके थोड़ीही देर बाद धड़ाका हुआ और धड़ाका होने प


इसको रखने के लिए लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं, हर घर में होना चाहिये

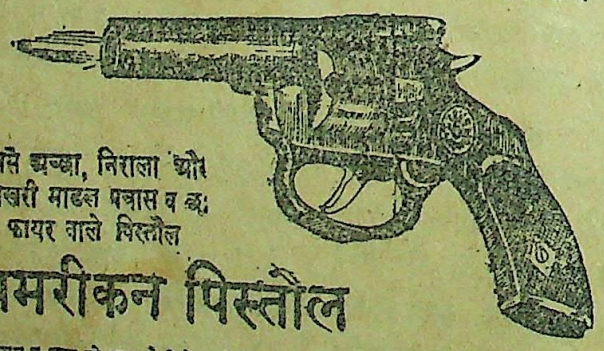

सबसे अच्छा, निराला और आखरी माडल पचास व ७ फायर वाले पिस्तौल

अमरीकन पिस्तौल

जान व माल की रक्षा के लिये इससे अच्छी कोई चीज नहीं। यह माले असली की मानिंद अब पहली बार आया है। मूल्य ६ फायर वाले शाट के साथ माडल बी. नं० २, ४॥≈) स्पेशल माडल ए. नं० २, ७॥≈), मूल्य ५० फायर वाले शाट के साथ नया माडल सी. नं० १, ३॥≈), स्पेशल माडल डी. नं० २, १०॥≈) फालतू शाट १) दर्जन पिस्तौल का तेल ॥) पैकेट की पेटी पांच रुपये डाक खर्च अलग। तीन एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ।

अलाईड ट्रेडर्स लिमिटेड, (वि म) दिल्ली।
ALLIED TRADERS Ltd., (V.M) DELHI

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है। शौकिया काम लेने वाले तथा व्यवसायी दोनों ही काम इससे ले सकते हैं, यह कीमती मनोरंजक कैमरा में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और अपना बनावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा तमाम फिल्म-कार्ड, डेवेलपर, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ४॥≈), बेस्ट क्वालिटी नं० ५४५ कीमत ६॥), डी लक्स एक्स्ट्रा, स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥), पैकिंग व डाक व्यय १≈)

नोट—एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस।

वेस्ट इण्डिया ट्रेडर्स, पोस्ट बक्स नं० १९९ वि म) दिल्ली।
West India Traders P. B. 199, (V.M.) Delhi.


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तो लावारिसकी संपत्ति है और सरकारके खजानेमें ही थोड़ी-बहुत वृद्धि करेगा।

जो कुछ भी हो, लंगड़ेकी कंजूसीके कारण कभी किसी बाबूको पानके दो बीड़े भी नसीब नहीं होते। सभी लोग उससे मन-ही-मन कटते रहते। फिर एक कंजूसी ही इस लंगड़ेमें होती, तो कोई बात नहीं। लेकिन इसके साथ-साथ चुगलखोरीकी आदत उसमें इतनी अधिक है कि वह किसीको नहीं छोड़ता। छोटेसे लेकर बड़े-बड़े कर्मचारियों तकको वह मालिकोंकी दृष्टिमें नीचा गिरानेका भरसक प्रयत्न किया करता है। सभीके खिलाफ वह जहर उगला करता। शायद वह समझता होगा कि उसकी चुगलखोरी का पता सिवा मालिकके दूसरों को नहीं होगा। लेकिन ऐसी बातें लाख कोशिश करने पर भी छिपाई नहीं जा सकती। जिसकी आदत ही दूसरोंका अहित करने और पीठ-पीछे निन्दा करनेकी हो, वह आखिर कबतक छिपी रहेगी? इसका परिणाम यह हुआ कि दफ्तरमें शायद ही कोई कर्मचारी ऐसा हो, जो इस लंगड़ेसे प्रसन्न हो अथवा इसकी खैर मनाता हो। किसीकी सहानुभूति इस चुगलखोरको प्राप्त नहीं

ऐसी परिस्थितियोंमें मुझे लगा कि दीनानाथजीकी लड़कीको भेजा गया यह पुर्जा लंगड़ेको बड़ा महंगा पड़ेगा। दीनानाथ जी की मुद्रासे स्पष्ट भासित होता था कि वह इस मामलेमें कोई गम्भीर कार्रवाई करके ही दम लेंगे। कदाचित इसीलिए जब मैंने यह कहा था कि शामको लौटते समय पान खा लूंगा, तब उन्होंने कहा था था कि शाम तक प्रलय हो जाने की आशंका है।

मन-ही-मन मुझे प्रसन्नता हुई। ऐसे चुगलखोरको उसकी करनीका फल मिलना ही चाहिए। मेरे खिलाफ इस चुगलखोरने क्या-क्या नहीं किया। वह तो गनीमत है कि मालिक इसकी चुगलखोरीकी आदत से बखूबी परिचित्त हैं, नहीं तो इसने मेरी नौकरी छुड़ा देनेमें कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी! एक सदस्य अदम्यउत्सुकता से दफ्तरका समय पूरा होनेकी बाट मैं जोहने लगा। दफ्तरके दो-चार मित्रोंको मैं ने लंगड़ेके उस पुर्जाका और दीनानाथजी के रुखका हाल सुनाया।

एक बाबूने कहा—"बुढ़ापेका 'रोमांस' है भई! जो न करे, थोड़ा है।"

"लेकिन जवान लड़की के नाम ऐसा पुर्जा देखकर दीनानाथजी भी जो न कर गुजरें, थोड़ा समझिये।" बाबूने कहा।

"अच्छा तो है।" मैंने कहा—"चुगलखोरको नसीहत मिल जायगी। आज शाम को खासा शगल रहेगा।"

"बच्चूको छठीका दूध याद आ जायगा।" तीसर बाबून कहा—"और इस चुगलखोर का पक्ष भी कोई न लेगा।"

"इसमें क्या शक!" मैंने कहा—चुगलखोरी कर करके इसने सभीकी सहानुभूति जो खो रखी है।"

इसी तरह उस दिन दफ्तरका समय पूरा हुआ। पांच बजे मैं अपने मित्रोंके साथ दफ्तर से बाहर आया, तो देखा कि फाटक से थोड़ी ही दूरी पर एक पेड़के नीचे दीनानाथ जी तीन-चार पड़ोसियोंके साथ खड़े हैं। मैंने अपने दोस्तोंको इशारेसे यह बतलाया तो सबके चेहरे चमक उठे।

दीनानाथजीके निकट पहुंच मैंने कहा—"कहिए, दीनानाथजी, किसकी प्रतीक्षा में हैं?"

"उसी लंगड़ चुगलखोरकी।" उन्होंने मुस्कराते हुए कहा।

इतनेमें लंगड़ा बाहर निकलता दिखायी पड़ा और हम सब लोग गंभीर बन गये।

नजदीक पहुंचने पर दीनानाथ जी को देखकर उसने कहा—"कहिये, यहां कैसे?"

"आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था।" दीनानाथजीने भीतरके क्षोभको दबाते हुए कहा। "श्यामाकी इच्छा है कि आज आप लोग हमारे घर चाय पियें।"

लंगड़ाकी आंखें चमक उठीं। लेकिन तुरत ही उसे बगलमें खड़े हम लोगोंका ध्यान आया, इसलिए उसने कन्नी काट कर निकल जाना चाहा यह कहते हुए—"मैं तो चाय नहीं पीता, अन्यथा..."

"आप भी गजब करते हैं।" दीनानाथजीने कहा— गोयामें आपकी आदत जानता ही नहीं। अरे आपके लिये दूध का प्रबंध हो चुका है।"

"ठण्डा या गरमागरम?" मैंने बीचमें मजाक कर दिया।

"गरमागरम साहब!" दीनानाथजीने कहा।

और, मैं समझ गया कि बात यद्यपि मजाकमें कही गयी है, लेकिन है सच। यदि लंगड़ पर दो चार हाथ भी छोड़ दिये गये, तो निश्चय ही गरमागरम दूध पिलाना पड़ेगा।

लंगड़को आखिर दीनानाथका अनुरोध मानना ही पड़ा। दीनानाथजीके बैठक खानेमें सब लोग पहुंचे और सचमुच चाय पिलाई गयी सबको नाश्ता भी कराय गया। लंगड़को गायका दूध दिया गया दो-तीन अंड भी उसके सामने रख दिये गये।

लंगड़ अभी गरम दूध पूरा पी भी नहीं पाया था कि दीनानाथजीने अपनी जेबसे वह पुर्जा निकाल, उसके सामने मेजपर रखते हुए पूछा—"यह पुर्जा आपने ही लिखा है न"

लंगड़ समझ गया। काटो तो खून नहीं। कांपने लगा। दूधका प्याला मेजपर रखते हुए किसी तरह कहा—('जी....ो...हां....ं; लेकिन....।" स्वीकार करनेके सिवा उसके सामने अन्य मार्ग नहीं था।

"लेकिन-वेकिन क्या!" दीनानाथजीने उसकी लम्बी चोटीको बायें हाथसे झझोंड़ते हुए कहा और दाहिने हाथसे उसके एक गालपर तड़ाकसे एक चाटा रसीद करते हुए कहा—"हरामखोर कहींका! बुजुर्ग बना है। इस लम्बी चोंटीमें शैतान छिपा रखा है।" और दो तीन चाटे लगाकर जड़ दिये।

"हरामखोर ही नहीं, यह चुगलखोर भी है साहब!" मेरे एक साथीने कहा।

"देखो, अब कभी ऐसी हिमाकत न करना। दीनानाथजीने गला पकड़कर उसे एक धक्का देते हुए बैठखानेसेबाहर धकेल दिया और सड़कपर धकेलते हुए फिर दो-तीन चाटे लगाते हुए कहा—"बुढ़ापेमें 'रोमान्स' सझ रहा है शैतानको।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जब आदमी दोषी होता है, तो प्रत्युत्तर देनेका साहस उसमें रह नहीं जाता। वह लंगड़ नीचा सिर किये चुपचाप चला गया। मैंने दीनानाथजीका हाथ पकड़कर घरकी तरफ उन्हें खींचते हुए कहा—"सड़क पर कुछ न कहें। हमें तमाशा नहीं बतलाना है। किसीको। आखिर हमें अपनी मर्यादाका भी खयाल रखना होगा न!"

दीनानाथजी मेरी बात फौरन् समझ गये। बैठकखानेमें आकर कहा—"आप ठीक कहते हैं। हमें अपनी श्यामाका खयाल रखना ही होगा न! लेकिन इस हरामखोर,-को अभी और प्रसाद देना होगा"

"इससे अधिककी जरूरत नहीं।" मैंने कहा—"हम लोगोंकेसामने इतने चाटे पड़ जाना ही पर्याप्त है।"

इसके बाद बहुत देरतक उसी चुगलखोरकी बातें होती रहीं और लगभग सात बजे हमलोग दीनानाथजीके घरसे निकल सके।

दोस्तोंसे विदा लेकर जब मैं घर पहुंचा, तो मुरली बाबूने कहा—"आज तो भाई साहब गजब करदिया आपने? सात बजेके बाद लौट रहे हैं दफ्तरसे! चौक चलकर मुझे बहुत सी चीजें खरीदनी हैं। मायाका विवाह हो रहा है। मैंने सोच, आपको यहींनिमंत्रण भी दे आऊं और विवाहके लिये आवश्यक सामान भी यहींसे खरीदकर ले जाऊं। जबलपुरमें कुछ तो सस्ता मिल ही जायगा। लेकिन आपकी राह देखते-देखते थक गया। कि यदि यह पता होता कि आप सात बजे बाद लौटेंगे, तो मैं अकेला ही चौक चला जाता।"

"और क्या!" श्रीमतीजीने कहा—"वैसे सवा पांच बजे लौट आते हैं। लेकिन जब कोई मेहमान घरपर हैं, तब सात बजे लौट रहे हैं।"

"अरे भई, तुम लोग क्या जानो कि मैं कहां उलझ गया और क्यों?" और जब मैंने लंगड़ चुगलखोरके ढोंगका 'रोमान्स' सुनाया, तो श्रीमतीजी और मुरली बाबू हंसीके मारे लोट-पोट हो गये।

(१८ वें पृष्ठ का शेषांश)

रक्षाका भार उसी पर नहीं है। उसके लिये भी दूसरोंको ही आगे बढ़ना पड़ता रहा है और शायद आगे भी रहेगा। इसी कलकत्ते की रक्षा अगर गैर बंगालियोंने न की होती तो पश्चिम बंगालके धन धान्य के रहत भी, शायद कलकत्ता उनके हाथसे निकल चुका होता। उस जमानेमें भी जबकि गैर बंगाली कलकत्तेकी रक्षाका भार अपने कंधों पर लिये हुए अपना भजा फड़वा रहे थे। कलकत्तेके बंगाली बाबू हावड़ा जाकर सुरक्षा स्थानोंके लिये टिकट कटाते देखे जाते थे।

पश्चिम बंगालको प्रांतीयता छोड़ कर अपनेमें सन्तुष्ट हो विकासके लिये कोशिश करनी चाहिए। प्रादेशिक सीमाओंको बहुत दृढ़ता पूर्वक पकड़ना संभाल नहीं

---

हंसी शान्त होने पर मुरली बाबूने कहा—"मानवमें अनेक प्रकारकी कमजोरियां होती हैं। लेकिन इन कमजोरियोंके कारण जब कभी वह गलत मार्गपर कदम बढ़ा देता है, परिचितोंकी सहानुभूति बड़ा काम दे जाती है। वह लंगड़ा यदि चुगलखोर न होता और आप लोगोंकी सहानुभूति यदि उसे प्राप्त होती, तो शायद यह काण्ड होता ही नहीं। उस पुर्जेका जो अर्थ लगाया गया है, वह सहज इसलिए कि लंगड़ेके प्रति किसीकी सहानुभूति नहीं। यदि वह चुगलखोर न होता, तो ताज्जुब नहीं कि यही पुर्जा उसकी बुजुर्गी और सशक्तताका द्योतक समझ लिया जाता। लेकिन जो पीठ-पीछे सभीकी निन्दा करता है—चुगलखोर होता है और कंजूस भी है, उसका प्रत्येक कार्य सन्देह की दृष्टिसे देखा जाता है न! अच्छा, अब आपको मेरे साथ चौक चलना होगा भाई साहब!"

"जरूर चलूंगा!" मैंने कहा—"माया बेटीका विवाह हो और मैं चौक तक तक न चलूं—यह कैसे हो सकता है?"

और कपड़े बदल कर मैंने फौरन हाथ मुंह धोये। फिर, मुरली बाबूके साथ नाश्ता करके चौक चला गया।

है। इसीके कारण देशको गुलामीके दुर्दिन देखने पड़े थे और विदेशियोंके अशुभ चरणोंने भारतकी छाती रौंदी थी। अब भी क्या वह अनुभव अपूर्ण है? पड़ोसीको हानि पहुंचा कर अपने मोटे होने की लिप्सा का त्याग करना ही आज श्रेष्ठ राजनीतिज्ञता है। भाव-प्रवण बंगाली नौजवानोंके जोशको उभाड़ कर उन्हें प्रांतीयता के बहावमें बहा देना तो आसान है पर इस विष-धाराको रोकना कठिन हो जायगा अगर एक बार वह बह निकला।

एक बार उपयोग करने पर

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

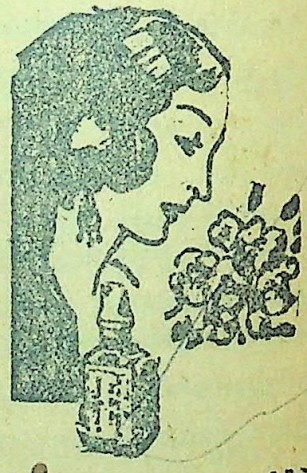

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशियां।

सोल एजेण्ट्स:

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचित्र

# शिक्षामित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# मधु-संचय

### संगीत-शिकारी

केलिफोर्नियाके संगीत विश्वविद्यालयकी एक सदस्या श्री बाउल्टन अफ्रिका में लगभग १२ हजार मीलका भ्रमण कर अभी हालमें ही लौटी हैं। वहां उन्होंने आवाज भरनेवाले अपने यन्त्रकी सहायतासे वजन भर जंगली जातियोंकी कोई ५०० से ऊपर विभिन्न प्रकारकी आवाजें भरी हैं। पिछले १८ वर्षोंमें श्रीमतीजीका यह १५ वां भ्रमण थो। इस वर्षके अन्त तक वे प्रशांत द्वीप समूहका भ्रमण करनेका इरादा कर रही हैं।

### जुड़वोंमें ६ दिनका अन्तर

सिडनीके एक प्राइवेट अस्पतालमें एक लड़कीका जन्म अपने जुड़वे भाईके जन्मसे ६ दिनोंके बाद हुआ। यह घटना, अपूर्व बतायी जाती है। भाईका वजन ७ पौंड था और बहनका ६ पौंड।

### सभी भाषाओंके टाइपराइटर

हालमें लन्दनमें एक ब्रिटिश औद्योगिक प्रदर्शनी हुई थी, जिसमें प्लेनेटाइप नामक एक यन्त्र के जरिये एक लड़कीने विचित्र कार्य कर दिखाया। लड़कीने सामने खड़े हुए लोगोंमेंसे दो व्यक्तियोंसे दो काव्य, एक बंगला कविता और एक चीनी गद्य गीत। सुने और फिर तुरत वैसे ही सुनाकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। इतना ही नहीं किसी भी भाषाका संवाद सुनकर वह लड़की उसे तुरत दोहरा देती थी। कई देशोंके प्रतिनिधि वहां उपस्थित थे। इस नये यन्त्रके आविष्कारसे व्यापारमें भी बड़ी सुविधा हो जायगी।

### फोटोग्राफीके जरिये पैराशूट-शिक्षण

पैराशूटके जरिये हवाई जहाजसे कूदनेका चित्रको हाई स्पीड कमरेसे लेकर उसे रंगरूटोंको दिखाकर पैराशूटसे उतरनेकी शिक्षा दी जाती है। इस तरह अबतक शिक्षण कार्यमें जो दुर्घटनायें हो जाया को बिना किसी दुर्घटनाके शिक्षा दी गयी है।

### अपराधों पर चन्द्रमाका प्रभाव

लन्दनके पुलिस अधिकारियोंने इस बातको निश्चित रूपमें स्वीकार किया है कि मनुष्य के जीवन तथा आचरण पर चन्द्रमाका प्रभाव पड़ता है। हालकी शिशु-हत्याओंके दिन और समयकी जांच करने पर अधिकारी इस निष्कर्ष पहुंचे हैं। उन्होंने बताया है कि किस स्थितिमें कैसे अपराधोंमें वृद्धि होती है। जूनके प्रथम सप्ताहको 'खूनी सप्ताह' घोषित किया गया। कुछ न्यायाधीशोंका विचार है कि जिन अपराधोंके पीछे कोई मतलब नहीं छिपा होता, वे केवल चन्द्रमाके प्रभावके ही कारण बताये जाते हैं। वैज्ञानिक इसके प्रतिकारका उपाय सोच रहे हैं।

### कलियुगी कुम्भकर्ण

एक ऐसे वृद्ध दम्पतिका पता चला है है, जो नवम्बरमें सोता और अप्रलमें जागता था। उनके एक लड़की थी, जो समय पर उन्हें भोजन-पानी दे जाया करती थी। पिताका नाम मि० आर्थर था, वे एक सराय के मालिक थे। सरायका काम ६ महीने पति और ६ महीने पत्नीके जिम्मे रहता था। कहते हैं कि सन् १९३६ में जब पत्नी की मृत्यु हो गयी, तो बेचारे पतिको निश्चित अवधिसे २ महीना पूर्व ही उठना पड़ता था।

### कुंवारा बाप बना?

समस्तीपुर एक कोर्टमें एक विचित्र मामला दायर किया गया है। गंगौली ग्राम का एक व्यक्ति अपनेको एक ऐसे आदमीका पुत्र बताता है, जिसकी जनश्रुति के अनुसार कभी शादी ही न हुई थी। उस तथाकथित पिताकी मृत्यु १५-२० वर्ष पहले हो चुकी है। उसकी जमीन जायदाद पर उसको दो भतीजियोंका अधिकार है। लेकिन अब यह व्यक्ति अपनेको उसका पुत्र बताकर जायदाद पर हक जमाना चाहता है। देखें, फैसला क्या होता है।

काफू (रजि०)
हैजे
का रामबाण दवा है
डाबर लिमिटेड, कल.

[illegible] छह लाभ और अनेक सम्बन्धित रोगों
परन्तु उनमें स्वास्थ्य और सम्पूर्ण शक्ति के
बिना उसका जीवन दुखमय और कठिन हो
जाता है। जीन सीन गोल्ड टानिक पिलस
पुरुष जातिको निर्बलता से बचाकर उसे
शौर्य का विकास कर उसमें नवीन शक्तिका
संचार कर उन्हें पुष्ट बनाती है। आठ दिन
के लिये ४८ गोली की एक शीशीका मूल्य
५) वी० पी० खर्च अलग। परहेजकी आवश्यकता नहीं होती और प्रत्येक मौसम में
सेवन किया जा सकता है।
चाईनीज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०
शाखायें—चांदनी चौक, अहमदाबाद [illegible]
ZEN SEN

CC-0. Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# विश्वामित्र

सम्पादक--

अदीप

वर्ष—३१ —२२ २३ जन १९४८ June 23 1948 मूल्य =) वार्षिक ६)


## बापू

कविवर 'अंचल'

रक्त-रंजित युग खड़ा निस्पन्द तुमको सोचता !
दीप आंधीमे जला पर शांत नभ में बढ़ गया
दासता में साथ था जो मुक्तिमें क्यों कढ़ गया
मूर्ति सूनी- देवता बलि-वेदिका पर चढ़ गया

रक्त-रंजित युग खड़ा निस्पन्द तुमको सोचता !
रो रहा खो सिन्धु जिसको विन्दु वह कितना सजल
तप अनोखा —तपस्वी बन स्वयं जाए अनल
है चकित--देखी उसकी साधना ऐसी विमल

रक्त-रंजित युग खड़ा निस्पन्द तुमको सोचता !
है अचल विश्वास कितना है अडिग कितना हृदय
है अनश्वर जीव कितना है जयी कितना अभय
भव्य है कितना मरण—संकल्प है कितना अजय

रक्त-रंजित युग खड़ा निस्पन्द तुमको सोचता !
है निरामय देह कितनी प्राण कितने ज्योतिधर
है समर्पण सत्य कितना--मौन कितना है मुखर
है शिखा यह उच्च कितनी रश्मि कितनी है अमर

रक्त-रंजित युग खड़ा निस्पन्द तुमको सोचता !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहरा गर्त भयंकर है यह, आगे तनिक न डोल ।
खुद डूबेगा, ले डूबेगा, आंखें अब भी खोल ।

आंखें अब भी खोल, नहीं तो पछतायेगा ।
होगा सरबस नाश और तब घबरायेगा ।

सुन चिराग की बात, अरे मत बन जा बहरा ।
होगा सत्यानाश, लगेगा ऐसा गहरा ।

* * * * *

देख तुम्हारी अकल पर ऐसा परदा आज ।
सारा जग है हंस रहा, तुम्हें न आती लाज ।
तुम्हें न आती लाज, बात बढ़ बढ़ के बोले ।
अरे मौत की राह जा रहा, विष क्यों घोले ।
अपनी गरदन आप काटने की तैयारी ।
हंसता आज जहान, मूर्खता देख तुम्हारी ।

——चिरा०

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर हित बस जिनके मनमाहीं।
तिन कह जग दुर्लभ वछ नाहीं।

# विश्वमित्र

## विनय न मानत

हैदराबादके सवालने आज समस्त देशका वातावरण गम्भीर बना दिया है और जनता यह जाननेके लिये अत्यन्त व्यग्र हो रही है कि भारत सरकारका अगला कदम अब क्या होगा। साधारणतः यह आशा की जा रही थी कि निजाम सरकारको अन्तमें सुबुद्धि आ जायेगी और मामला शान्तिपूर्वक सुलझ जायेगा। लेकिन नादान दोस्तोंने गलत सलाह दी और भारत सरकारके प्रस्ताव अस्वीकार कर दिये गये।

इस अस्वीकृतिके कारणोंको यद्यपि पूर्णतया स्पष्ट नहीं किया गया है, तथापि इतना तो प्रकट होता ही है कि जिम्मेदार सरकारकी स्थापना और रजाकार दलको भंग कर देनेकी शर्तें माननेमें हिचकिचाहट हो रही है। लेकिन ये दोनों ही शर्तें ऐसी हैं, जिनमें तनिक भी किसी तरहकी रियायत करनेकी गुंजाइश नहीं है। जहां तक जिम्मेदारकी स्थापनाका सवाल है, कोई भी सभ्य और गणतन्त्री सरकार इसकी उपेक्षा कैसे कर सकती है। हैदराबादकी आबादीमें मुसलमानोंकी संख्या १५ प्रतिशतसे भी कम ही है। फिर यह कैसे बर्दाश्त किया जा सकता है कि इसी १५ प्रतिशत जनताकी सहानुभूति और उसके सहयोगसे निजाम अपना निरंकुश शासन कायम रखें। इस स्थल पर यह प्रश्न उठ सकता है कि तब भारत सरकार क्यों नहीं मत-गणनाका प्रस्ताव स्वीकार कर लेती, जिसे निजाम सरकारने स्वयं ही पेश किया है। वस्तुतः मत-गणनाके सम्बन्धमें स्थिति यह है कि एक ओर विगत १०-१२ महीनोंमें लाखों हिन्दू निवासी रजाकारों और निजामी पुलिसके उपद्रवोंसे आतंकित होकर रियासत छोड़कर अन्यत्र चले गये हैं और दूसरी ओर भारतके विभिन्न स्थानोंसे लाखों मुसलमान शरणार्थी हैदराबाद पहुंच गये हैं, जिन्हें मत-गणनामें भाग लेनेका कोई अधिकार नहीं है। अतएव यह आशंका सर्वथा स्वाभाविक है कि ऐसी स्थितिमें प्रभावित मत-गणना नहीं हो सकती। और, जहांतक रजाकार दलका सम्बन्ध है, यह सर्वविदित है कि इस फासिस्ट दलने इधर अपनी शक्ति बहुत अधिक बढ़ा ली है, जो सार्वजनिक शान्ति और गणतन्त्री व्यवस्थाके लिये सर्वथा खतरनाक है। इस बढ़ी हुई शक्तिका अन्दाज तो इसीसे लगाया जा सकता है कि रजाकारोंका नेता कासिम रिजवी आये दिन एक-से-एक उत्तेजक वक्तव्य देता रहता है। कभी वह दिल्लीके लाल-किले पर निजामका आसफजाही झण्डा फहरानेका स्वप्न देखता है और कभी हैदराबाद पर भारतीय फौजोंका आक्रमण होने पर वहांके हिन्दुओंका कत्ले-आम करा देनेकी धमकी देता है। यही कारण है कि समझौतेके प्रस्तावोंमें उपर्युक्त दोनों शर्तें रखी गयी हैं।

तो अब भारत-सरकार पर निजाम सरकारके इस रुखकी क्या प्रतिक्रिया हुई है? एक प्रेस-कानफरेंसमें प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने इस पर प्रकाश डालते हुए बड़े ही स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि समझौतेके प्रस्तावोंमें अब तनिक भी हेर-फेर नहीं किया जा सकता, लेकिन साथ ही समझौतेका दरवाजा खुला रखा गया है—निजाम सरकार चाहे तो अब भी स्वीकार कर संघर्षका अन्त कर सकती है। भारत सरकारने अभी तक अपने अगले कदमकी घोषणा नहीं की है। लेकिन सहिष्णुताकी यह चरम सीमा है। यह ठीक है कि हैदराबादके खिलाफ फौजी काररवाई का निर्णय करना देशके लिये अहितकर ही होगा, लेकिन साथ ही यह भी ठीक है कि उसमें विलम्ब करना और अधिक अहितकर हो सकता है, क्योंकि निजाम सरकार बड़ी तेजीसे अपनी फौजी तैयारियां कर रही है। स्वयं पं० नेहरूने ही अपने वक्तव्यमें कहा है—"हैदराबादकी सरकार दुनियाके कोने-कोनेसे युद्ध सामग्रियां प्राप्त करने और अपनी सेनाकी शक्ति अधिक-से-अधिक बढ़ानेकी कोशिशें कर रही थी, लेकिन वह पूर्ण सफल नहीं हुई—इसलिए नहीं कि उसके प्रयासमें कमी थी, बल्कि दूसरे कारणोंसे।" पं० नेहरूने यह भी बताया कि शस्त्रास्त्र एवं अन्य युद्ध-सामग्रियोंका हैदराबाद जाना रोक दिया गया है। इससे प्रकट होता है कि सतर्कतामूलक काररवाइयां करते हुए भी भारत सरकार अभी आक्रमणात्मक रुख अख्तियार करना नहीं चाहती। लेकिन हम तो देखते हैं कि हैदराबादके अधिकारियों पर भारत सरकारकी इस नरम नीतिका प्रतिकूल ही असर पड़ता है। निजामके प्रधान मन्त्री मि० लायक अलीने जनता तथा पुलिस और फौजसे किसी भी स्थितिका मुकाबला करनेके लिये तैयार रहनेकी अपील की है। साथ ही उन्होंने नागरिकोंको यह भी धमकी दी है कि जो लोग निजाम सरकारके हितोंके खिलाफ आचरण करेंगे, उन्हें 'दुश्मन' समझा जायेगा। मि० लायक अलीके वक्तव्यसे प्रकट होता है कि निजाम सरकारको सही रास्ते पर लानेके लिए भारत सरकारको अपनी यह नरमी छोड़नी होगी, क्योंकि यह कथन सर्वथा सत्य है कि "विनय न मानत जलद जड़....."

## विदा और स्वागत

अन्तिम वायसराय और स्वतंत्र भारतके प्रथम गवर्नर-जनरल लार्ड लुई माउण्ट बैटनको विदा करते हुए, भारतीय जनता अवश्य ही उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती है। निस्सन्देह स्वतन्त्र भारतके इतिहासमें लार्ड माउण्ट बैटनका नाम अमर रहेगा। भारतको शासनाधिकार सौंपने और देश-विभाजनके गुरुतर कार्यों को सम्पन्न करनेमें उन्होंने जिस राजनीतिज्ञता और दूरदर्शिताका परिचय दिया, वह सर्वथा प्रशंसनीय है। और, सबसे खास बात तो यह रही कि लार्ड माउण्ट बैटन भारत और पाकिस्तान, दोनोंके ही विश्वास-पात्र बने रहे। विगत महायुद्धमें दक्षिण पूर्वी एशियाके सुप्रीम कमाण्डरकी हैसियत से भी वे पूर्णतया सफल रहे। ऐसे सैनिक और राजनीतिक नेताको पाकर किसी भी देशको गर्व हो सकता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि ब्रिटनकी भावी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें लार्ड माउण्ट बैटनका महत्वपूर्ण भाग होगा। भारत उनके प्रति अपनी हार्दिक शुभकामना प्रकट करता है। और, चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्यको उनका जो उत्तराधिकारी चुना गया है, उस सम्बन्धमें इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि इससे बढ़कर और कोई चुनाव नहीं हो सकता था। राजाजी अपनी राजनीतिज्ञताके लिए न सिर्फ देशमें, प्रत्युत विदेशोंमें भी भलीभांति सुविख्यात हैं। देशकी वर्तमान राजनीतिक परिस्थितिमें हमें ऐसे ही सूत्रधारकी आवश्यकता थी। इस नये पद पर राजाजीका स्वागत करते हुए, हम ईश्वरसे उनके दीर्घजीवनकी कामना करते हैं, जिससे कि वे जननी जन्मभूमिकी अधिकाधिक सेवा कर सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि

राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपिके सवाल को यदि भारत सरकार और अधिक दिनों तक लटका रखेगी, तो इसकी प्रतिक्रिया अच्छी नहीं होगी। भारतीय जनता चाहती है कि इसका निर्णय अब जल्दसे जल्द कर दिया जाय। जहांतक राष्ट्रभाषा का सम्बन्ध है, उसे 'हिन्दी' या 'हिन्दुस्तानी' कुछ भी कहकर आसानीसे स्वीकार किया जा सकता है; क्योंकि दोनोंमें कोई खास अन्तर नहीं है। हां, यदि हिन्दीके हिमायती उसमें संस्कृतिके शब्द अथवा उर्दूके हिमायती अरबीके शब्द जबर्दस्ती घुसेड़नेकी चेष्टा करेंगे, तो उस तरहकी भाषा 'हिन्दी' या 'हिन्दुस्तानी'के नामसे नहीं पुकारी जा सकती और वैसी भाषा लोकभाषा नहीं हो सकती। कहना नहीं होगा कि हिन्दीमें संस्कृतके कठिन शब्दोंको ला उसे दुरूह बनानेकी प्रवृत्ति यदि कुछ हिन्दी-लेखकोंमें पैदा हुई तो इसकी मुख्य जिम्मेदारी उन उर्दू लेखकों पर ही है, जिन्होंने पहले उर्दूमें अरबी-फारसीके कठिन शब्दोंको ला-लाकर अंग्रेजी हुकूमतकी मददसे उसे जनता पर लादना चाहा। लेकिन यदि उर्दूकी लिपि 'अरबी' न होकर 'नागरी' ही रही होती, तो अरबी-फारसीके शब्दोंका अत्यधिक सन्निवेश सम्भव न होता और तब हिन्दी और हिन्दुस्तानी का झगड़ा ही न खड़ा होता! तात्पर्य यह कि उर्दूका 'अरबी' लिपिमें लिखा जाना हमारी राष्ट्रीय एकताके लिए सर्वथा अवांछनीय है। इसलिए सरकारको हिन्दी या हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषा और नागरी को राष्ट्रलिपि घोषित करनेमें अब तनिक भी संकोच न करना चाहिए।

## हमारा राष्ट्रीय झण्डा

"स्वतन्त्रता-आन्दोलनके समय तो सभी अवसरों पर राष्ट्रीय झण्डेका उपयोग करना उचित था, लेकिन अब स्वतन्त्रता प्राप्त हो गयी है, इसलिए दूसरे देशोंकी तरह हमारे देशमें भी अब राष्ट्रीय झंडेके व्यवहारके लिए सुनिश्चित नियम बना दिये जाने चाहिये।" ये विचार भारत सरकारकी एक विज्ञप्तिमें प्रकट करते हुए बताया गया है कि राष्ट्रीय समारोह के निम्नलिखित अवसरों पर झंडेके व्यवहार पर नियंत्रण नहीं रहेगा,—स्वतन्त्रता दिवस राष्ट्रीय सप्ताह, २६ जनवरी, महात्मा गांधीका जन्म दिवस तथा राष्ट्रीय समारोहके कुछ अन्य दिवस। मोटरों पर राष्ट्रीय झंडा फहराने अधिकारी सिर्फ केन्द्र और प्रांतोंके मिनिस्टर, स्पीकर तथा देशी नरेश (रूलिंग चीफ) और राज प्रमुख ही होंगे। किन किन सरकारी भवनों पर झंडा फहराया जा सकेगा, इसकी भी एक सूची विज्ञप्तिमें दी गयी है। निश्चय ही जनता द्वारा इस आदेशका भलीभांति पालन किया जायेगा। लेकिन सरकारी विज्ञप्तिमें राष्ट्रीय समारोहोंकी पूरी सूची नहीं दी गयी है, जिससे गड़बड़ी हो सकती है, अतएव सरकारको सभी राष्ट्रीय समारोहोंकी एक पूरी सूची घोषित कर देनी चाहिये। स्वराज्य-प्राप्तिके बाद राष्ट्रीय झंडेका उपयोग पहले कई गुना बढ़ गया था। स्वातंत्र्य-संग्रामके समय जो लोग देशके प्रति विश्वासघात कर रहे थे, वे भी अब बड़ी शानसे अपने मकानों और मोटरों पर झण्डा फहरा कर सस्ती 'देशभक्ति' लूट रहे थे। निश्चय ही, ऐसे लोग इस आदेशसे निराश होंगे।

## गुलामी मनोवृत्तिकी विदाई

अभी तक सरकारी आदेश पत्रोंमें आदेशकर्ता अपने नामके पहले लिखता था—"मैं हूं आपका अत्यन्त आज्ञाकारी सेवक।" लेकिन स्वतन्त्र भारतकी सरकारने यह प्रणाली उठा देनेका निश्चय किया है। अब आदेश कर्ता अपने नामके पहले लिखेगा "मैं हूं आपका विश्वस्त।" सरकारका यह निर्णय अत्यन्त प्रशंसनीय है। स्वराज्यसे पूर्व, सत्ताकी ताकत ऊपरसे नीचे आती थी; लेकिन अब सत्ताकी असली ताकत नीचेसे अर्थात् जनतासे प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में यह कि पराधीनताके दिनों जनता भले ही 'सेवक' रही हो, पर अब स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने पर तो वही 'मालिक' है और सरकार 'सेवक' है। ऐसी हालतमें उपर्युक्त प्रणाली का हटाया जाना सर्वथा उचित और आवश्यक था। पर हम जानते हैं कि गुलामीकी मनोवृत्ति हममें इतनी गहराई तक पहुंच गयी है कि अपने दूषित अभ्यासों को हम आसानीसे नहीं बदल सकते। इस लिए संभव है कि उस प्रणालीको छोड़ने में भी हम विलम्ब करें। इसलिए सरकारको यह हिदायत जारी कर देनी चाहिए कि कि जिन आवेदन पत्रों पर 'मैं हूं आपका अत्यन्त आज्ञाकारी सेवक, लिखा रहेगा, उन पर कोई विचार नहीं किया जायगा।

## पाकिस्तानमें असन्तोष

अखबारोंमें प्रकाशित रिपोर्टोंसे पता चलता है कि इन दिनों पाकिस्तान सरकार को जनतामें तेजीसे फैलते हुए राजनीतिक और आर्थिक असन्तोषका सामना करना पड़ रहा है। सीमान्तके गांधी खां अब्दुल गफ्फार खांको गिरफ्तारी और तुरंत उन्हें ३ साल कैदकी सजासे साफ प्रकट होता है कि राजनीतिक विरोध किस तरह अधिकाधिक बल प्राप्त करता जा रहा है। नवगठित अखिल पाकिस्तान जन संघके मन्त्री श्री जी० एम० सैयद भी नजरबन्द कर दिये गये हैं। यह भी पता चलता है कि इन दिनों पश्चिमोत्तर सीमा-प्रान्तमें 'पठानिस्तान' का आन्दोलन तेजी से बढ़ रहा है। यह तो हुई राजनीतिक असन्तोषकी बात, अब आर्थिक असन्तोष देखिये। एसोसियेटेड प्रेसकी रिपोर्ट है कि कराचीमें एकाउण्टेण्ट जनरलके दफ्तर के लगभग ७०० नान-गजेटेड कर्मचारियोंने त्याग-पत्र दे दिये हैं। इस स्थल पर यह बता देना आवश्यक है कि वेतन-वृद्धिके प्रश्न पर पाकिस्तानके समस्त सरकारी कर्मचारियोंमें घोर असन्तोष फैल रहा है। इसकी खास वजह यह है कि देशके विभाजन के पूर्व केन्द्रीय वेतन कमीशनने सरकारी कर्मचारियोंके वेतन बढ़ानेके सम्बन्ध में जो सिफारिशें की थीं, उन पर पाकिस्तान सरकारने कुछ भी ध्यान नहीं दिया, जब कि भारतमें उन सिफारिशोंके अनुसार वेतन बढ़ाये गये। ऐसी हालतमें भारतसे गये हुए सरकारी कर्मचारियों पर इसकी प्रतिक्रिया स्वाभाविक ही है। सुननेमें तो यहां तक आया है कि बहुतेरे पाकिस्तानी कर्मचारियोंने अपनी सरकारको यह चेतावनी दी है कि यदि उनके वेतनोंमें उचित वृद्धि न की गयी, तो वे पाकिस्तान छोड़ कर भारत चले जायेंगे। जो हो, पाकिस्तानका यह आर्थिक असन्तोष तबतक दूर नहीं हो सकता, जबतक वह अपने पड़ोसी विशाल भारतीय राष्ट्रसे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित न करेगा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पाकिस्तानका षड्यंत्र

श्री जी० डी० पाकिस्तान द्वारा स्थापित तथाकथित आजाद काश्मीर सरकार में ऊंचे ओहदेपर रहचुके हैं। पाकिस्तानी चंगुलोंसे उन्होंने किस प्रकार छुटकारा पाया तथा काश्मीर के युद्धमें पाकिस्तानने कैसे खुल आम मदद दी इसका बड़ा ही रोमांचकारी वर्णन आपने इस लेखमें किया है जो बम्बई के अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र 'ब्लिज' ने एक विशेषांकमें प्रकाशित किया है। हम पाठकोंकी जानकारीके लिये उसे प्रकाशित कर रहे हैं। सं०

यह तो किसीसे छिपा नहीं है कि काश्मीर युद्धके पीछे एक भीषण षड्यन्त्र है। इस षड्यन्त्रका रहस्योद्घाटन अभी तक पूरा पूरा नहीं हो पाया है। भारत सरकारका श्वेत पत्र और विदेशी समाचार पत्रोंकी टिप्पणियोंसे हम इतना ही जान सके कि काश्मीर युद्धम हिंद संघका प्रतिद्वन्दी पाकिस्तान यद्यपि खुल्लमखुल्ला न था तथापि कबाइलियोंको युद्धम देने तरहकी सहायता और सुविधा दे वह काश्मीर युद्धके षड्यन्त्रमें शामिल अवश्य है। आज जैसा प्रकट हो रहा है उससे तो अब संदेहकी कोई गुंजाइश ही न रही कि काश्मीरका युद्ध एक सफल राजनैतिक योजना पर आधारित था और इस योजना के सूत्रधार पाकस्तानके जन्मदाता मि० महम्मद अली जिन्ना थे। अमरीकन और अन्य विदेशियोंकी सहायतासे मि० जिन्ना ने काश्मीरमें एक आजाद काश्मीर सरकार कायम कर दी। भारत सबके अधिकारियों ने पाकस्तानको इतना शैतान और दयाहीन न समझा कि जब तक पंजाब के आंचल पर लगा हुआ खून सूखने भी न पायगा कि पाकस्तान विश्वासघातका दूसरा छुरा भी उसकी पीठमें घुसेड़ देगा। पाकस्तानके 'आजाद काश्मीर सरकार' के कानूनी और संवैधानिक सलाहकार विभागके भूतपूर्व डाइरेक्टर श्री जी० के० रेड्डीने आज हमारे सामने पाकस्तानकी सारी पोल खोल दी है। श्री जी० के० रेड्डीका रहस्योद्घाटन पाकिस्तान की भीषण क्रूरता उसकी नैतिक हृदयहीनता और उसकी पहुंची हुई कूटनीतज्ञताका परिचय देता है। श्री रेड्डीने जो रहस्योद्घाटन किया है उसका विस्तृत विवरण नीचे दिया जाता है:—

आजाद काश्मीर षड्यन्त्रसे मेरा क्या सम्बन्ध है। मैं उन्हीं बातोंको लोगों की जानकारीके लिये रखना चाहता हूं जो मेरी आखोंके सामने घटी है। भारतका नागरिक होकर भी पाकिस्तानके इस क्रूर षड्यंत्र और योजनामें कैसे फंस गया इसपर भी कुछ प्रकाश देना जरूरी है। ४-५ वर्ष पहलेकी बात है। मैं काश्मीर टाइम्स का संपादक था और साथ ही एसोसियेटेड प्रेसका काश्मीरके लिये प्रतिनिधि भी था। हमारी नीति पहले काश्मीरके नेशनल कानफरेंसके पक्षमें थी, पर मेरे और शेख अब्दुल्लाके बीच कुछ बातोंको लेकर मनमुटाव हो गया और फिर मैं उसका कट्टर विरोधी हो गया। स्वभावतः मैंने शेख अब्दुल्लाके दोनों विरोधियों काक और मुस्लिम कानफरेंसकी मदद की। इसके बाद काश्मीरके राजनीतिने करवट बदली और काकका पतन हो गया। काकके पतनके साथ ही मेरा भाग्य भी मुझे धोखा दे गया, मुझे पाकिस्तानका समर्थक कह कर काश्मीर से निकाल दिया गया। मैं पाकिस्तानका कदापि समर्थक न था और पाकिस्तानका प्रचार करना भी मेरा काम नहीं था। मुझे यदि किसीसे कुछ आपत्ति थी, तो शेख अब्दुल्लाके नेशनल कानफरेंससे जिसकी मैंने कई सैद्धांतिक वजहोंके कारण कड़ी आलोचना की। पर शेख अब्दुल्लाकी आलोचनासे मेरा मतलब जिन्नाकी साम्प्रदायिक नीतिकी सराहना करना नहीं था। पाकिस्तान अथवा हिन्दुस्तान में काश्मीर के शामिल होनेका जो प्रश्न था उसके लिये मेरा विचार यह था कि इस प्रश्नका निर्णय काश्मीरी जनता ही के हाथों हो। पर दुर्भाग्यवश मैं जैसा चाहता था वैसा नहीं हुआ। एसोसियेटेड प्रेसके लाहौर दफ्तरसे प्रतिदिन काश्मीरके प्रश्नको लेकर सनसनी खेज खबरें चारों ओर प्रसारित की जाने लगीं और मुझे उसकी कोई सूचना तक न मिलती। इसका कारण यह था कि लाहौर दफ्तरका अधिकारी एक मुसलमान था। सनसनीपूर्ण खबरोंके प्रसारके कारण काश्मीर सरकार मुझसे और भी रुष्ट हो गयी। मैंने काश्मीरके प्रधान मन्त्रीके पास अपने निर्दोष होनेके प्रमाणस्वरूप एक पत्र भेजा और उनसे यह प्रार्थना की कि वे अपने तार आफिससे यह जाननेका प्रयत्न करें कि काश्मीर सम्बन्धी सनसनीपूर्ण खबरों का भेजनेवाला मैं हूं अथवा कोई दूसरा व्यक्ति। पर चूंकि यथावत संधिके अनुसार काश्मीरका डाक व तार विभाग पाकिस्तान सरकारके हाथ था इसलिये मेरी प्रार्थना का कोई नतीजा नहीं निकला। मुझे गत दिसम्बरके बीच ही में काश्मीरसे निकाल दिया गया। यहांसे निकलनेके बाद मैं अमृतसर आया। अमृतसर आनेके बाद मैंने लाहौरके ए० प्रेस कार्यालय से फोन पर बात की। इसका कारण यह था कि मेरा कुछ बकाया इस कार्यालयमें रह गया था। यह फोनसे बात करना ही मेरे जीवन का एक बड़ा महत्वपूर्ण अंश सिद्ध हुआ।

लाहौर में भक्तिके साथ पहुंचाया गया और पाकिस्तानके उच्च कर्मचारियोंने मेरी आवभगत की और तब उन्होंने अपने कुत्सित विचारोंका रहस्योद्घाटन किया। मुझे इन लोगोंसे मालूम हुआ कि पाकिस्तान २२ अक्तूबरको काश्मीर पर धावा बोलनेवाला है। इसके साथ ही मुझे काश्मीर में आजाद सरकारके निर्माण होनेकी सूचना दी गयी और मुझे निमंत्रण दिया गया कि मैं अल्पमतोंके प्रतिनिधिके हैसियतसे आजाद सरकारके मंत्रि मण्डलमें शामिल हो जाऊं। मुझे सूचना देनेके बाद ही युद्धकी सारी तैयारी लगभग पूरी हो चली और कोहला और रामकोट से काश्मीर पर धावा बोला जाने लगा। भारत सरकारने काश्मीरको बचानेके लिये भी फौज भेजनेका इसी समय निर्णय कर लिया। २७ अक्तूबरको पाकिस्तानियोंको जब यह खबर लगी कि हिन्दुस्तानसे हवाई फौज मुकाबलेके लिये आ रही है तो क्षण भरके लिये लोगोंके दिल दहल उठे। तुरन्त ही यह निर्णय हुआ कि बरमूला हवाई क्षेत्र पर कब्जा कर लिया जाय। मेरा मन पिंजड़े के भीतर बन्द पक्षीकी तरह छटपटा कर रह गया। भारत भागनेका प्रयत्न करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खुद मौतको निमंत्रण देना था। २९ अक्तूबरको खां अब्दुल कयूम खां जिन्ना और लियाकत अलीके द्वारा बुलाये गये जानेके कारण लाहौर जा रहे थे। बीचमें वे रावलपिंडी ठहरे। मैंने उनसे मुलाकात कर पेशावर ले चलनेकी विनती की। मेरी विनती उन्होंने सुन ली और मुझे उनके घर पेशावर भेज दिया गया। जब वे लाहौरसे लौट कर पेशावर आये तो उन्होंने भी मुझसे 'आजाद काश्मीर'के प्रचार विभाग में काम करनेके लिये अनुरोध किया और मुझे फिर रावलपिंडी लौट जाना पड़ा। मैं यहां 'आजाद काश्मीर'सरकारके सार्वजनिक संपर्क विभागमें डाइरेक्टरकी हसियतसे काम करने लगा। कुछ ही दिन बाद कुछ विदेशी संवाददाताओंके विश्वासघातके कारण पाकिस्तान सरकार को यह पता चल गया कि मैं भारत भागने का प्रयत्न कर रहा हूं। मुझे निकाल दिया गया और ख्वाजा अब्दुर रहीम (रावलपिंडी डिवीजनके कमिश्नर) ने मेरी हत्या ही करवा देनी चाही। मेरी हत्याका निर्णय ऐसे हुआ कि कुछ कबाइलियोंने मुझ पर यह संदेह किया कि मैं हिंदू हूं और नेहरूका एजेंट हूं। मैंने खान अब्दुल कयूम खांसे यह शिकायत की कि पाकिस्तानको ऐसा कृतघ्न नहीं होना चाहिये। उन्होंने मुझे यह कह कर सांत्वना दी कि जब तक काश्मीर की राजनीतिक उलझन सुलझ नहीं पाती मुझे पेशावर में ही वास करना चाहिये। उन्होंने कहा कि यह संभव है कि शायद काश्मीर झगड़ेके निबटनेके पूर्व ही मैं भारत भाग जाऊं और संयुक्त राष्ट्र संघके सामने पाकिस्तानकी सारी पोल खुल जाय। पर मैं पेशावरमें अधिक दिनों तक नहीं रह सका, मुझे फिर काम करनेके लिये बुलाया गया। मैंने ऐसा सुनहला मौका छोड़ना पसन्द नहीं किया और तुरत सरदार इब्राहिम से, जो मुझे पुनः काम करनेके लिये निमंत्रण देने आये थे, मुझे कराची अल्ताफ हुसेन और जवाद साहबसे परामर्शके लिये कराची भेज देनेका अनुरोध किया। मेरी शर्त मान ली गयी और मुझे कराची भेज दिया गया। कराची पहुंचते ही मैं हिजके इवाई सर्विस का कार्यालय पहुंचा और वहांसे जामनगरके लिये टिकट खरीदा। वायुयान पर मुझे जगह मिल गयी और मेरे पहुंचनेके दो ही घंटे बाद विमान चल पड़ा। इस तरह पाकिस्तानसे मेरा निस्तार हुआ। कराची हवाई अड्डे पर पुलिसकी जांच पड़तालसे बचनेके लिये मैंने अपना नाम भी बदल लिया। पाकिस्तानमें ७ महीनेकी अवधि काट। मैं २८ मईको बम्बई पहुंच गया

## रियासतोंका प्रश्न और श्री जिन्ना

पहले पहल जिन्नाने काश्मीरके महाराजा और भारत संघके बीच फूट की बीज इसलिये बोनी चाही कि काश्मीर भारत संघमें शामिल न होसके। आपने मुस्लिम कांफरेंसको यह आदेश दिया कि वे रियासती स्वतन्त्रताका जोर-शोरसे प्रचार करें ताकि काश्मीर भारत संघमें शामिल न हो। इसके साथ ही आपने भोपालके नवाब द्वारा काक (काश्मीरके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री) से कहला भिजवाया कि पाकिस्तान काश्मीर की स्वतन्त्रताका सदा स्वागत करेगा और भारतके हस्तक्षेप करने पर उसे भारत के खिलाफ मदद भी देगा।

जिसमें भारतको एक दूसरे मोर्चेका भी मुकाबला करना पड़े मि० जिन्नाने रियासतोंको पाकिस्तानसे संधि कर लेने का प्रोत्साहन दिया। हैदराबादकी रक्षा भी इसी योजना से संभव थी। पर जिन्नाके मंसूबों पर पानी फिर गया। अधिकांश रियासतोंने भारतका साथ दिया, हैदराबादकी स्थिति डांवाडोल हो गयी, काकको काश्मीरसे निकाल दियागया और शेख अब्दुल्लाकी जेलसे मुक्ति हो गयी। तब अन्त में जिन्नाने काश्मीरके मुस्लिम कानफरेंस को लिख भेजा कि वह अपनी नीति बदल दे और इस बातका प्रचार करें कि काश्मीरको पाकिस्तानमें शामिल हो जाना चाहिये। बहुतसे लीगी भी इस कार्यके लिए एवं मुस्लिम कानफरेंसको मदद देने काश्मीर भेजे गये। इधर सीमान्त प्रदेश से साम्प्रदायिक झगड़का सूत्रपात करनेके लिये सरकारी और गैर सरकारी दोनों प्रकारके व्यक्ति काश्मीर भेजे गये। दनादन श्रीनगर शस्त्र और फौज आदि भेजी जाने लगीं। अबोटाबाद में मुस्लिम युवकोंको काश्मीर युद्धमें भाग लेनेके लिये सनिक शिक्षा दी जाने लगी। इसके अतिरिक्त पठानों और पंजाबियोंको बड़ी संख्या में काश्मीर भेजा जाने लगा। सियालकोट के रास्ते जम्मूमें भी अस्त्र शस्त्र भेजे जाने लगे।

## शेख अब्दुल्लाको फंसानेका जाल

काश्मीरियोंके भय से पाकिस्तानने दूसरी नीति जो अपनायी वह है काश्मीरको आर्थिक संकटमें डाल देना। आवश्यक वस्तुओंका आयात काश्मीरमें बन्द कर दिया गया। इधर शेख अब्दुल्लाको लोभके जालमें फंसानेके लिये रावलपिंडीसे शेख अनवारूल हक और डा० एम० डी० तासेको श्रीनगर भेजा गया। पर लोगों पर यह बात प्रकट नहीं की गयी, लोगोंने तो जाना कि रावलपिंडीसे उपर्युक्त दोनों व्यक्तियोंके आनेका उद्देश्य काश्मीरमें आवश्यक चीजों की आयात सम्बन्धी समझौता करना था। शेख अब्दुल्लाको इतना तक लोभ दिया गया कि सुरक्षा, यातायात और वैदेशिक मामलोंको छोड़ काश्मीर को पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी जायगी यदि वह पाकिस्तानमें शामिल हो जाय। स्वयं पाकिस्तानके प्रधान मन्त्री श्री लियाकत अली खांने यह सलाह शेख अब्दुल्लाको भेजी। शेख अब्दुल्लाको यह लिख भेजा गया कि यदि वे पाकिस्तानकी शर्त मान लें तो उन्हें साम्प्रदायिक और भौगोलिक आधार पर महाराजासे काश्मीरको पाकिस्तानमें शामिल कर देनेका अनुरोध करना चाहिये। महाराजाके नहीं मानने पर उन्हें अपने नेतृत्वमें काश्मीरके लिये एक अस्थायी सरकार बनानी चाहिये। सलाह तो भेजी गयी पर उम्मीद न थी कि सलाह मान ली जाय। जिन्नाको पूरा यकीन था कि शेख अब्दुल्ला उनके जालमें फंसनेवाला नहीं। अतः उनकी वास्तविक इच्छा तो यह थी कि काश्मीरमें युद्ध छिड़ने के दो रोज पूर्व शेख अब्दुल्लाको उनसे भेंट करनेके लिये लाहौर बुलाया जाय और उनका शानदार स्वागत किया जाय। यदि इस ढंगसे वह वशमें आ गये तब तो ठीक ही है वरन् उन्हें कैद कर एक गुप्त स्थानमें रख दिया जाय और इधर आजाद काश्मीर सरकारकी स्थापना कर कहा जाय कि उसका नेता शेख अब्दुल्ला है। पर यहां भी पाकिस्तानियोंको शिकस्त खानी पड़ी। पण्डित नेहरूसे भेंट करनेकी इच्छा जब शेख अब्दुल्लाने जाहिर की तो पाकिस्तानियोंको पूर्ण विश्वास हो गया कि शेख अब्दुल्ला किसी दूसरी धातुका बना है।

काश्मीरमें युद्ध छेड़नेका कारण इस लिया गया, १५ अगस्तको श्रीनगर में साम्प्रदायिक झगड़ा मचानेका निश्चय किया गया। कारण यह बता दिया गया कि पाकिस्तानी झंडेका लोगोंने उतार कर अपमान किया है। जम्मूमें झगड़ेके सूत्रपातके लिये मुस्लिम कानफरेंसके अध्यक्ष श्री चौधरी हमीदुल्ला खां को कार्यदर्शीय के नेता श्री महमूद अहमदने काफी ताकीदें अस्त्रशस्त्र भेजे। पर यह योजना भी ठीक नहीं जंची। अन्तमें काश्मीरमें एक बड़े पैमाने पर युद्ध छेड़नेका निश्चय किया गया। मुरीमें श्री लियाकत अलीने एक गुप्त बैठक की जिसमें अन्य व्यक्तियोंके अतिरिक्त मामदोत, खां अब्दुल कयूम खां शौकत हयात खां, ख्वाजा अब्दुर रहीम, कर्नल अकबर खां, कर्नल शेर खां, शहीद हमीद, एक आजाद हिन्द फौजका आदमी आदि भी मौजद थे। इस बैठकमें युद्धकी तैयारीके लिये सारे प्रबन्ध ठीक किये गये। पूंच स्थित द्वितीय युद्धसे लौटे हुए ६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हजार सिपाहियोंका उपयोग करने का युद्धमें करनेका विचार किया गया। गत सितंबरके अन्तमें सीमांत प्रदेश दूसरी घटना घटी। ब्रिटिश फौजोंके जाने और यातायातके साधनोंकी कमी जानेके कारण कबाइलियोंकी आर्थिक बिगड़ चली। पाठानिस्तानकी स्थाप्रश्न भी मुंहबाये खड़ा था। खांचुप तो थे, पर यह चुप्पी प्रभंजनके की सूचना देती थी। सीमांत प्रदेश गवर श्री कनिंघमने सच्ची स्थितिका लगा लिया। अफगानियोंके प्रभावसे लियोंको बचाना जरूरी था। अन्त रावलपिंडीमें बड़े बड़े अधिकारियोंकी हुई जिसमें यह निश्चय किया गया कबाइलियोंको काश्मीर-युद्धके लिये में भर्ती किया जाय। कनिंघमकी की चल गयी। अज्ञान कबाइलियोंको बढ़ कर अच्छा मौका क्या लग सकता रुपयेका रुपया और खाना अलग, अपने सम्प्रदायवालोंकी रक्षाके लिये रके विरुद्ध जेहादभी। सांप्रदाकलह उत्पन्न करनेके लिये पाकिस्तान काश्मीर भेजे जाने लगे। तरह भयात्मक कहानियां गढ़ी गयीं, की अत्याचारी नीच और मुस्लिम त्र बतलाया गया। इसके अतिपठानोंके कान इस सूचनासे भर गये कि काश्मीर वैभवशाली स्थान काश्मीरके राजमहलमें करोड़ों खजाने पड़े हैं। पठानोंके मुंहसे टपक पड़ी। कनिंघमने जुट कर कबाइयुद्धके लिये संग्रह करना शुरु

युद्धकी शुरूआत

काश्मीरकी सीमा पठानियोंसे भर गयी। सभी तरहकी सुविधाओंका हो गया। २१ अक्तूबरको सीमांत २५० लारियां आयीं और पश्चिमी ५००० कबाइलियोंको धरी हबिऔर कोहाला पहुंचाया। युद्धका मुख्य काश्मीरके रंगमंच पर एक अपनी पूर्ण पैशाचिकता और जघन्यता उठा। पर हुआ वही जो कबाइलियोंकी लाखों चेष्टायें पाकिस्तानकी सारी राजनीतिक दूरश्रीनगर पर अधिकार नहीं हो सका। अन्तमें जब पाकिस्तानने गलती नदेखी तो रावलपिंडी तैयारी और भी जोरोंसे चलनी लगी। ऊरी, पूंच, मीरपुर, गुजरात, कोटमें अलग अलग फौजकी तैयार हुई। काश्मीर युद्धकी में रावलपिंडीके कमिश्नरन

और आक्रमणकारियोंके खिलाफ प्रबन्ध में उसने कमाल कर दिखाया है। उसने अपने बंगले में काफी सामान जमा कर और सरकार द्वारा लूटे हुए सामान भी उसीके बंगलेमें रखे गये। सांप्रदायका भूत इसके सर पर भी सवार था; अजीबेग शिविर (झेलमके समीप) में तो इसने अपने हाथों कई एक गैर-मुसलमानोंका खून किया। इसके काले कारनामे खनमें उबाल ला देते हैं। काश्मीर-युद्धमें विजय प्राप्त करनेके लिये पाकिस्तानने सब कुछ किया। वेतारका तार आदि सभी तरहकी मशीनें भेजीं। युद्ध चलाने के लिये उसने नागरिकोंके खाद्य पदार्थ भेजने आदि काभी काम अपनी फौजके सप्लाई कॉर्पस को सौंप दिया।

काश्मीर युद्धमें आज एक बात अवश्य देखी जा रही है और वह है कबाइलियों की दृढ़तामें ढिलाई। कबाइली आज अपने खानेके प्रबन्धसे असंतुष्ट हैं और उन्हें अधिक लड़ाई अच्छी नहीं लगती। इसके अतिरिक्त पश्चिमी पंजाबके लोग भी कबाइलियोंसे क्षुब्ध हैं। कबाइली आज शहरोंमें जाने भी नहीं दिये जाते। इसका कारण यह है कि वे मुस्लिम घरोंको भी लूट लेते हैं और जनतामें आतंक पैदा कर देते हैं।

कबाइली आज निस्संदेह बहुत असंतुष्ट हैं; उन लोगोंकी शिकायत है कि पाकिस्तानके लड़नेवाले आप तो पीछे रहजाते हैं और उन्हें टैंक और विमानोंसे मोर्चा लेने आगे भेज देते हैं।

विदेशियों द्वारा पाकिस्तानको प्रोत्साहन

आश्चर्यकी बात है कि उरी युद्ध क्षेत्र पर जानेके पूर्व मुसलमानोंको शिक्षा देने वाला एक अंग्रेज व्यक्ति है। नाम है इसका इगल जो पाकिस्तान सरकारके अधीन एक कर्नल है। इस कर्नलने युद्धके सिपाहियोंको इस्लामकी शिक्षा की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया। इसके अतिरिक्त आजाद काश्मीर की फौजको अंग्रेज बंदूकधारी और सिगनलवाले भी मदद करते हैं। हाल ही की बात है कि मुझे अबोटाबादमें यह पता लगा कि जनरल ग्रेसी सुरक्षाके निमित्त पाकिस्तानकी सीमा पर स्थित फौजोंका निरीक्षण करते हैं। इससे अब कोई संदेह नहीं रहा कि पाकिस्तानको विदेशियोंका सहयोग प्राप्त है। अंग्रेज और अमरीकन पूरी तत्परताके साथ पाकिस्तानको काश्मीर में हमें सहायता कर

रसल हाइट का नाम आज भारत के लोग भी जान गये हैं। यह रसल हाइट सड़क बनानेवाला एक अमरीकन इंजिनियर था। अमरीकनोंने जब यह सुना कि कबाइलियोंकी मदद रूसीतथाअन्य औजारों से की जा रही है तो वाशिंगटनसे रसल हाइटको यह आदेश भेजा गया कि वह रावलपिंडी जाकर जरूरी जांच-पड़ताल करें। रसल हाइट तो चालाक था ही। रावलपिंडी पहुंचते ही उसने कमिश्नरके सामने यह घोषित किया कि वह आजाद काश्मीरके लोगोंकी ओरसे युद्धमें भाग लेना चाहता है। रसल हाइट का पाकिस्तानने स्वागत किया। पहले तो रसल यह पता लगानेकी भरपूर चेष्टा की कि पाकिस्तान को रूसी शस्त्र प्राप्त है अथवा नहीं। उसने मुझसे कहा कि मुझे पाकिस्तान पर इस तरहका कोई संदेह नहीं होता। रसल हाइटके कारनामोंकी भनक भारत सरकार के कानोंमें पड़ी और रसल हाइट कुछ दिन बाद ही वाशिंगटन लौट गया। उसने मुझे विश्वास दिलाया था कि वह पाकिस्तानके जुल्मका भण्डाफोड़ करेगा, पर वह तो ऐसा विश्वास घाती निकला कि वाशिंगटन पहुंचने पर मुझे ही रूसी कम्यूनिस्ट सिद्ध करने लगा। पर इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं। रसल कुछ मेरी बात पर तो चाल नहीं सकता। उसे तो अमरीकन सरकारकी ही बात माननी पड़ेगी। अमरीकनों ने पाकिस्तानियोंको काश्मीर युद्धमें जो सहयोग दिया उसके अनेक उदाहरण हमारे पास हैं। स्वयं पाकिस्तान स्थित अमरीकन राजदूत श्री लीविस को ही लें और देखें कि उसने किस प्रकार पाकिस्तानको भारत के विरुद्ध उभाड़ा और सहायता की है।

श्री लिविसने तो यहां तक किया कि स्वयं कबाइलियोंकी जमातमें भाषण किया और काश्मीर युद्धमें उनके द्वारा दिखलायी गयी वीरताके लिये उन्हें धन्यवाद दिया। एक कबाइलीने जब उनसे पूछा कि संयुक्त राष्ट्र संघमें अमरीका भारतके पक्षमें रहेगा; अथवा पाकिस्तानके तो आपने एक विचित्र मुस्कानके साथ कबाइलियोंको बतलाया कि संयुक्तराज्य अमेरिका सदा पाकिस्तानके पक्षमें रहा है और रहेगा आपने कहा कि अमरीकनोंको इसके लिये दुःख है कि पाकिस्तान जैसा शक्तिशाली देश घरेलू मामलोंमें बुरी तरह फंसा है। आए दिन उसके यहां हड़तालें होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हिन्दी बनाम उर्दू

## श्री नरेश मोहन कुमार

हिन्दी और उर्दू दोनों आज एक-दूसरेकी छातीका निशाना बना भाला और तलवार ताने आमने-सामने खड़ी हैं। कुछ लोग दोनोंको मिलानेके प्रयत्न भी कर रहे हैं। सिर्फ भाई-भाईकी लड़ाई बन्द करनेके लिये कोई तो दोनोंके बीच एक नयी भाषाका ही अस्तित्व मान बैठे हैं, और कोई-कोई अंगरेजी भाषा और लिपिको ही अपनानेके लिये तैयार हैं। अपनी यह दुर्दशा देखकर स्वीकार करना पड़ता है कि अंगरेजोंने हमपर बहुत दूरतक सांस्कृतिक विजय भी पायी थी।

राजनीतिक क्षेत्रमें अंगरेजोंने जिस तरह हिन्दू और मुसलमानोंको लड़ाकर अपना मतलब साधा, उसी तरह सांस्कृतिक क्षेत्रमें हिन्दी और उर्दूको लड़ाकर भी किसी एक भाषाकी सर्वमान्यताको भी चौपट कर दिया। राजभाषाके प्रश्नपर आज के गतिरोधकी यही संक्षिप्त भूमिका है। संवत् १८६० में कलकत्तामें स्थापित फोर्ड विलियम कालेज अंगरेजोंके सांस्कृतिक षड्यंत्रोंका अड्डा था। एक ओर वे यहां ईसाई-धर्मका प्रचार-साहित्य रचा करते थे और दूसरी ओर हिन्दी और उर्दूके बीचकी खाई चौड़ी कर रहे थे। उनके षड्यन्त्रोंके कारण ही आरम्भमें ही मुंशी ईंशा अल्लाखां जैसे उर्दूके शायरके हिन्दी-गद्यमें आगमनके बावजूद भी लल्लू-लालकी रचनाओंमें 'विदेशी' (उर्दू और फारसी) शब्दोंके न आने देनेकी प्रतिज्ञा लक्षित होती है। पर जैसा कि स्व० रामचन्द्र शुक्लने लिखा है, उस समय "बहुतेरे अरबी- फारसीके शब्द बोल-चालकी भाषामें ऐसे घुल-मिल गये थे कि उन्हें केवल संस्कृत-हिन्दी जाननेवालोंके लिये पहचानना भी कठिन था।" हल्दीघाटीकी लड़ाईमें सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ योद्धा बदौनीको जो कठिनाई शाही काफिरों और बगावती काफिरों ( राजपूतों) को पहिचाननेमें हुई थी, कुछ वैसी ही कठिनाई हिन्दी और फारसी शब्दोंको पहिचाननेमें लल्लूलालजी और उनके साथियोंको हुई। अतः लल्लू लालके उर्दू और फारसीके विरुद्ध भयंकर जिहादके बावजूद भी 'प्रेमसागर'में शिवजीने एक ध्वजा बाणासुरको देकर कहा– 'इस बैरखको ले जाय। स्पष्ट है, उस समय 'बैरख' जैसे मुसलमानी शब्द भी हिंदुओंमें इस तरह घुल मिल गये थे कि लल्लूलालजी यह बोलनेमें जरा न हिचके। यदि देशमें अंगरेजोंके षड्यंत्र न होते रहते तो अवश्य आज हिन्दी और उर्दूके बीच यह खाई न रहती।

और, खूबी तो यह है कि जहां एक ओर ईसाइयोंकी धर्म-पुस्तकोंके अनुवादकी भाषा 'सदा सुखलाल और लल्लू लालके ही नमूने पर चली है' वहीं दूसरी ओर गर्सा-द-तासी (फरांसीसी विद्वान्) ने कहा है– "हिन्दीमें हिन्दू-धर्मका आभास है– वह हिन्द धर्म, जिसके मूलमें बुतपरस्ती और आनुषंगिक विधान हैं। इसके विपरीत उर्दूमें इस्लामी संस्कृति और आचार-व्यवहारका संचय है। इस्लाममें एकेश्वरवाद मूल सिद्धान्त है, इसलिये इस्लामी तहजीबमें ईसाई या मसीही तहजीबकी विशेषताएं पायी जाती हैं।" "और इससे भी खुलकर 'उर्दू भाषा और मुसलमानोंके साथ मेरा जो लगाव है, वह कोई छिपी हुई बात नहीं है। मैं समझता हूं कि मुसलमान लोग कुरान को तो आसमानी किताब मानते ही हैं, इंजीलकी शिक्षा भी अस्वीकार नहीं करते; पर हिन्दूलोग मूर्त्तिपूजक होनेके कारण इंजीलकी शिक्षा नहीं मानते।"

हिन्दुओं और हिन्दी-प्रेमी जनताका क्रोध मुसलमानोंके विरुद्ध भड़कानेके लिये अंगरेजी सरकारने अदालतकी लिपि नागरी बना दी, पर कुछ ही महीने बाद उर्दूको दफ्तरी भाषा बना दी और इसका कारण लोगोंको मुसलमानोंका नागरी–विरोध बताया गया। १८९३ वि० सं०में संयुक्त प्रदेश बोर्डकी तरफसे यह 'इश्तहारनाम हिन्दीमें निकला था – "पच्छांहके सदर बोर्डके साहबोंने यह ध्यान किया है, कचहरीके सब काम फारसी जबानमें लिखा-पढ़ी होनेसे सब लोगोंको बहुत हर्ज पड़ता है और इसलिये हुक्म दिया गया है कि सन १८४४ की कुवार बदी प्रथमसे जिसका जो मामला सदर बोर्डमें हो तो अपना सवाल अपनी हिन्दी बोलीमें और फारसीके नागरी अच्छरनमें दाखिल करे... और सवाल जौन अच्छरनमें लिखा हो तौने अच्छरनमें और हिन्दी बोलीमें उसपर हुक्म लिखा जायगा।"

कहना न पड़ेगा कि इस इश्तहारसे लोगोंको बड़ी खुशी हुई और सबने इसका हार्दिक स्वागत किया, और साम्प्र-

कारण बताकर रद्द किया गया तो लोगोंके पास दारापार न रहा। मुसलमान-विरोधी और उर्दूविरोधी भावनाने उग्र रूप धारण कर लिया। फिर अंगरेजोंका ध्यान देशी भाषाओंकी शिक्षाकी ओर गया और निष्पक्ष भावसे गौरांग प्रभु हिन्दी और उर्दू दोनोंकी व्यवस्था करनेकी सोच भी रहे थे (?)पर मुसलमानोंके विरोधके कारण सं० १९०५ में उन्हें यह सूचना निकालनी पड़ी–"ऐसी भाषाका जानना, सब विद्यार्थियोंके लिये आवश्यक ठहराना, जो मुल्ककी सरकारी और दफ्तरी जबान नहीं है, हमारी रायमें ठीक नहीं है। इसके सिवाय मुसलमान विद्यार्थी, जिनकी संख्या देहली कालिजमें बड़ी है, इसे अच्छी नजरसे नहीं देखेंगे।" इस तरह विवश होकर (!) गौरांग महाप्रभुओंको जो सूचनाएं निकालनी पड़ी थीं, उनसे हिन्दी और उर्दूका साम्प्रदायिक रंग चढ़ रहा था और हिन्दू और मुसलमानोंके बीचकी खाई दिन दूनी रात चौगुनी चौड़ी हो रही थी। सर सैयद अहमद खांके नेतृत्वमें मुसलमान और राजा शिवप्रसादके नेतृत्वमें हिन्दू अंगरेजोंको खुश करनेके लिये सदा प्रयत्नशील रहते थे। उर्दू विरोधी भावना हिन्दीप्रेमियोंमें इतनी उग्र हो गयी कि जब राजा शिवप्रसादने उर्दू मिश्रित शैली अपनायी तो लोगोंने उन्हें भी कोसना शुरू किया।

फिर, ईसाई मतके प्रचारको रोकनेके लिये राजा राममोहनरायके ब्रह्म समाज आन्दोलन, और स्वामी दयानन्द सरस्वतीके आर्य समाज आन्दोलनने भी नागरीका पक्ष लिया और उर्दू के प्रति रही-सही सहिष्णुशीलता भी जाती रही।

बहरहाल, हमें अपनी राष्ट्रभाषा चुननी ही है और चुननी ही है अपनी राष्ट्र लिपि भी। साम्प्रदायिकताके जहरने हिन्दी और उर्दूको एक दूसरेका विरोधी बना दिया है। पर, हिन्दी-उर्दूके बीच अब खाई पट सकती है। उर्दूका जन्म भी हिन्दुस्तान देशमें ही हुआ है, अन्यत्र नहीं। अतः हमारी संस्कृतिमें ही घुले मिलेगी। आज तक उर्दू हिन्दीसे बिलकुल मिल न सकी। इसका एकमात्र कारण उर्दूका विदेशी लिपिमें लिखा जाना है। उर्दू यदि नागरी लिपिमें लिखी जाने लगे तो वह आज ही हिन्दीमें मिल जायेगी और विश्वकी कोई शक्ति उसे हमसे अलग न कर सकेगी। हिन्दू और मुसलमानके धर्म भिन्न-भिन्न हैं, पर संस्कृति धर्मसे बड़ी है, विशाल है। एक ही संस्कृतिमें विभिन्न धर्मोंका समन्वय हो जाता है। हिन्दुओं और मुसलमानोंकी संस्कृति एक है उनकी भाषा भी एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक मनोरंजक लेख—

# मैं पाकिस्तान गया था

## —श्री चिराग मीनापुरी

जबसे पाकिस्तान कायम हुआ है, चिरागका दिल उसे देखनेके लिये बुरी तरह मचल रहा है। कायदे आजमका वह 'बहिश्त' कैसा होगा! वहां इस्लामके बन्दे अब किस तरह चैनकी बंसी बजाते होंगे! उस दिन शामको इन्हीं सारी बातों पर मन ही मन विचार कर रहा था कि अचानक मेरी नजर एक अखबारकी ओर गयी, जिसमें एक विचित्र खबर छपी हुई थी। उसे एक बार पढ़ जाने पर ऐसा लगा, मानों आंखें धोखा दे रही हों; इसलिये दुबारा और तिबारा पढ़ा, तब जाकर इतमीनान हुआ। वह अजीबो गरीब खबर यों है:—

"हालमें लाहौरमें एक मौलवीको पाकेटमारीके जुर्ममें डेढ़ सौ रुपये जुर्माने या बदलेमें ६ मास सख्त कैदकी सजा मिली है। कहते हैं कि जब खुदाके बन्दे आंखें मंद कर नमाज पढ़ रहे थे तो उसी बीच मौलवी ने उनमेंसे एकके पाकेटसे धीरेसे रुपयोंकी थैली निकाल ली, जिसमें २००) थे। मौलवीको तुरत पकड़ लिया गया।"

आखिर इस खबरको पढ़ कर किसको ताज्जुब न होगा! कायदे आजमके पाकिस्तान में इस तरहका नापाक काम! और वह भी नमाजके समय एक मौलवी द्वारा! तोबा! तोबा!

हां, तो जिस दिन मैंने यह खबर पढ़ी, उस दिनसे कभी लाहौर, कभी कराची पेशावर और कभी ढाका की याद अक्सर आ जाया करती है। और मेरा शायराना दिल गहन 'पाक' स्थानोंकेसम्बन्धमें तरह तरहकी बातें सोचा करता है।

उस दिन रातको अचानक मैं लाहौर जा पहुंचा। देखा, एक पार्कमें बड़ा भारी मजमा लगा हुआ है। शेरवानी और अरबी टोपियों का बोलबाला था और एक मौलवी साहब मिंबरकी कुर्सीसे गला फाड़ फाड़ कर चिल्ला रहे थे:

"हमने पाकिस्तानके लिये खून बहाया और हमें यह यकीन दिलाया गया था कि पाकिस्तानकी हुकूमत शरियतके नियमोंके मुताबिक होगी। फिर कायदे आजम ऐसा करनेमें क्यों देर कर रहे हैं! जो लोग शरियतकी हुकूमतके खिलाफ है, उन्हें बेशक हम काफिर समझते हैं। मुसलमान हरगिज हिन्दुओंके सामने सर न झुकायेंगे और अपने इस्लामी राजकी रक्षाके लिये अपना सब कुछ कुर्बान करनेके लिये तैयार रहेंगे।"

यह सभा खत्म होनेके बाद उसी जगह एक दूसरी सभा शुरू हुई। मालूम हुआ कि भारतके विभिन्न भागोंसे, खास कर पूर्वी पंजाब और दिल्लीसे, आये हुए मुस्लिम शरणार्थियोंकी यह सभा है। सभामें शामिल होनेवालों में ९० फी सदी बिलकुल कंगाल नजर आ रहे थे। सूखे मुंह, पिचके गाल और धंसी आंखें! सभा—मंचसे तीन-चार आदमियोंकी गरमागरम स्पीच यानी तकरीरें हुईं। प्रायः सबने पाकिस्तानी सरकारको बुरी तरह कोसा:

"पाकिस्तान सरकार हमारे रहने और गुजर-बसर करनेके लिये कोई ठीक ठीक इन्तजाम नहीं कर रही है। हम पाकिस्तान का जो सरसब्ज बाग दिखाया गया था, उसे आज हम अपने लिये बिलकुल रेगिस्तान पा रहे हैं। हम देखते हैं कि पाकिस्तानी अधिकारी हुकूमतके नशेमें खुद तो गुलछर्रे उड़ाते हैं और जिन लोगोंने पाकिस्तानके लिये अपना सब कुछ लुटा दिया, उनकी कुछ भी परवाह नहीं करते।"

दूसरी सभा खत्म होते ही डुगडुगी पिटवा कर यह ऐलान किया गया कि इसी जगह भारतीय ईसाइयोंकी एक सभा होगी जिसके सदर या अध्यक्ष मि० गिब्बन होंगे।, मुझे कुछ विशेष दिलचस्पी हुई इस सभासे; योंकि पाकिस्तान बनने पर गिब्बन महाशय इस नये इस्लामी राज्यकी तारीफ करते फूले नहीं अघा रहे थे। इसलिये यह जाननेकी इच्छा हुई कि इन हजरतके दिमाग पर पाकिस्तानने कहां तक असर डाला है। सभा शुरू हुई और सबसे पहले गिब्बनने कहना शुरू किया:

"यहांके ईसाइयोंको ऐसी मसीबत पहले कभी नहीं झेलनी पड़ी थी। इसलिये हमारी मांग है कि पाकिस्तानी विधान परिषदमें ईसाइयोंका अलग प्रतिनिधित्व हो और केन्द्रीय सरकारमें ईसाई मिनिस्टर भी रखे जायं।"

बस तुरत समझ गया कि हजरतको आटे-दालका भाव अब मालूम हो रहा है।

दूसरे दिन पेशावर पहुंचा। वहांका रंग ढंग देख कर दंग रह गया। बेचारे हिन्दुओं और सिखोंका कहीं नामोनिशान न था। चाय पीनेके लिये १० मिनट एक होटलमें बैठा तो सुना, कि खां अब्दुल गफ्फार खांका 'पठानिस्तानका आंदोलन बड़ी तेजीसे जोर पकड़ रहा है। इससे पाकिस्तानी अधिकारी बहुत डर रहे है। यह भी मालूम हुआ है कि अफगानिस्तान और वजीरिस्तानके पठान इस आंदोलनमें बहुत मदद कर रहे हैं। सरहदी सरकारको खौफ है कि ईपीके फकीरकी मददसे खां अब्दुल गफ्फार खां का लाल-कुर्ती-दल कहीं सरहदी सरकारको उलट न दे। एक आदमीने यह भी बताया कि सरहदी सरकार बादशाह खां यानी अब्दुल गफ्फार खांको जेलमें नजरबन्द कर देना चाहती है।।

कहीं कहीं काश्मीरकी लड़ाईकी भी चर्चा सुनी। कोई आक्रमणकारियोंका साथ देनेवाले पठानों की निंदा कर रहा था और कोई काश्मीरके सम्बन्धमें तरह तरहकी अफवाहें सुना रहा था। मैंने यह नतीजा निकाला कि काश्मीर की लड़ाईके सम्बन्धमें पठानों को काफी गलतफहमी में रखा गया है।

पेशावरमें दो एक दिन और रह कर वहांका हाल अच्छी तरह जानना चाहता था और यह पता लगाना चाहता था कि पाकिस्तानी हुकूमत कायम हो जानेसे खां- बन्धुओंकी लोकप्रियता पर कहां तक असर पड़ा है। लेकिन खाने पीनेकी बेहद तकलीफकी वजहसे मैंने तुरत पेशावरसे टिकट कटा लिया। फिर भी राह चलते और इधर उधर जितने लोगोंसे मेरी बातचीत हुई, मैंने यह समझा कि खां-बन्धुओंकी लीडरी पर तनिक भी धक्का नहीं लगा है। हां पाकिस्तानी नेता हुकूमतके बलसे डरा धमका कर लोगोंको अपनी ओर खींच रहे हैं। लेकिन लगा कि किसी दिन भी यह दीवाल टूट सकती है, क्योंकि पठान जनता आजाद पठानिस्तानके लिये कमर कसे हुए है। वह नहीं चाहती कि मुट्ठी भर जमींदारों और ताल्लुकेदारोंकी टोली उन पर राज करती रहे।

अब मैं कराची पहुंच गया था। पाकिस्तानके उस सदर मुकामका हाल किस तरह लिख कर बताऊं! भूले भटके एकाध हिन्दू सिख कहीं कहीं नजर तो आये, लेकिन उनके मुंह पर हवाइयां उड़ रही थीं। खादी की पोशाक और गांधी-टोपीके तो कहीं दर्शन न हुए। मन ही मन सोचा- खैर, पाकिस्तानकी राजधानीको खूब मजेमें देखना है। एक दैनिक अखबारमें पढ़ा कि पाकिस्तानके वजीरे आजम मियां लियाकत अली खांने स्वदेशीका आंदोलन चलाया है, और इसी सिलसिलेमें एक सभामें उनका भाषण है। ठीक समय पर उस सभामें दाखिल हो गया। सभामें कायदे आजम भी अपने सभी लेफ्टिनेंटोंके साथ हाजिर थे। कायदे आजम, लियाकत अली और दूसरे कई पाकिस्तानी नेताओंने चर्खा चलाने और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खादी पहनने पर जोर दिया और कहा कि पाकिस्तानकी माली हालत इसीसे अच्छी होगी।

इन पाकिस्तानी नेताओंकी 'कथनी और करनी' पर मुझे ताज्जुब हो रहा था। ये हजरत जनताको चर्खा चलाने और खादी पहननेका उपदेश दे रहे थे। लेकिन उनमेंसे किसीकी पोशाक खादीकी नहीं थी। और, मेरा खयाल है कि उनमेंसे कई शायद चर्खा चलाना भी नहीं जानता। फिर दूसरों को उपदेश देनेका उन्हें क्या हक! मुझे यह भी याद आया कि यही पाकिस्तानी नेता स्वराज्य मिलने अथवा पाकिस्तान कायम होनेके पहले देशके स्वदेशी आंदोलनके समय बगले झाकते थे और आज उन्हें उसकी अहमियत मालूम हो रही है।

दूसरे दिन सिन्ध तबलीग कानफरेंस थी। सुना कि उसमें भाग लेनेके लिये सिन्ध भरके प्रतिनिधि आये हुए हैं। गया वहांका तमाशा देखने। कोई पीर साहब सदारत कर रहे थे। सभामें कई गरमागर स्पीचें हुईं और एक प्रस्ताव पास कर पाकिस्तान सरकारसे जोरदार मांग की गयी कि शरियत और कुरानके मुताबिक पाकिस्तान की हुकूमत हो, वरना मुसलमानों की कुर्बानियोंका कोई मतलब नहीं होगा।

कुछ जानकार लोगोंसे बातचीत करने पर यह भी मालूम हुआ कि कायदे आजम और उनके चेले इन दिनों बड़ी परेशानीमें हैं कि इसनये इस्लामी राजको किस तरह विभिन्न खतरोंसे बचाया जाय। भारतसे आये हुए शरणार्थियोंको बसाने और उनके रोजी रोजगारका सवाल, सरकारी कर्मचारियोंकी वेतन वृद्धिका सवाल जूनागढ़ हैदराबाद और काश्मीरका सवाल, पठानिस्तानका सवाल, पूर्वी पाकिस्तान द्वारा पेश बंगला भाषाको एक राष्ट्रभाषा माननेका सवाल, और इन सबके ऊपर पश्चिम पंजाब और सिंध के मंत्रिमण्डलोंके भीतरी झगड़ोंका सवाल, यानी सवाल-सवाल के मारे नाकों दम।

और, उसी जगह पूर्वी पाकिस्तानके सम्बन्धमें भी कुछ खास बातें मालूम हुईं। सुना, पूर्वी पाकिस्तानके वजीरे आजम नाजीमुद्दीन साहब इन दिनों मि० सुहरावर्दी साहबसे बुरी तरह भड़क रहे हैं। उन्हें खौफ है कि सुहरावर्दी साहब पूर्वी और पश्चिमी बंगालको फिरसे एकमें मिलाने का षड यन्त्र कर रहे हैं। मतलबयह कि पूर्वमें मि० सुहरावर्दी और पश्चिममें खां-बन्धु पाकिस्तानी अधिकारियोंकी आंखोंकी अकड़ी हो रहे हैं।

लेकिन पाकिस्तानकी यह राजनीतिक रिपोर्ट पेश करनेके साथ साथ दो शब्द वहांकी सामाजिक दुरवस्था पर भी लिख देना जरूरी है। पाकिस्तानके वक्त तीनों ही मुकामों पर,लाहौर, पेशावर व करांचीमें,मैंने अक्सर यह शिकायत सुनी कि पाकिस्तानमें "भ्रष्टाचार' बहुत बढ़ता जा रहा है। कुछ पाकिस्तानी अखबारोंने इस पर टीका टिप्पणी भी की थी। अखबारोंमें चोरी-बदमाशी,लूट-खसोट आदि की खबरें ज्यादा मिलती हैं। तो इससे जाहिर होता है कि कायदे आजमका पाकिस्तानी 'बहिश्त बड़े दलदलमें फसा हुआ है। यही कारण है कि भारतसे भागे हुए मुसलमान फिर धीरे धीरे लौट आना चाहते हैं। उधर जो सरकारी नौकर भारत सरकारका काम छोड़ कर गये हैं, वे अपनी मोटी किस्मत पर रो रहे हैं। भारतकी अपेक्षा तनख्वाहें कम मिल रही हैं और साथ ही खाने पीने की दिक्कतें ऊपरसे।

**लगभग८-१० दिनों तक कायदे आजमके 'बहिश्त' में चक्कर लगनेके बाद मैं भारत की सरहदमें वापस आ गया। सोचा,कलकत्ता लौटनेके पहले लखनऊके अपने पुराने दोस्तोंसे भेंट मुलाकात करता चलूं। लखनऊ पहुंचने पर स्टेशन पर ही** मेरे पुराने दोस्त और उर्दके उड़न बाज शायर हैरत लखनवी मिल गये। उन्होंने बताया कि आज रातमें कैसरबागमें एक मुशायरा होनेवाला है। मैं इस मौकेसे लाभ उठाना भला क्यों न चाहता। सोचा कि एक ही जगह बहुतसे दोस्त मिल जायेंगे। मुशायरा शामके ७ बजे था। लेकिन मैं जान बूझ कर ८ बजे पहुंचा, ताकि जमी जमायी महफिलकी नजर अपनी खींचूं। और, वही हुआ। मुझे देखते ही लोगोंने बड़ी इज्जत के साथ बठाया और मैं लगातार शायरे कामजालेने। यों तोतरहत रहकी नज्में सुनायी गयीं, जो काफी पसन्द की गयीं, लेकिन चिरागको हैरत साहबकी यह नज्म सबसे अधिक पसन्द आयी :—

पाके पाकिस्तान जिन्ना,
खुद तो खुश है बेहिसाब
हो रहा दोजखनुमा पर
आज उनका वह 'बहिश्त'

मुझसे भी कुछ सुनानेको कहा गया अपनी नज्म सुनानेके लिये तैयार होकर ज्यों ही मैंने मुंह बाया, मेरी नींद खुल गयी। तब मुझे बेहद आश्चर्य हुआ अपने इस सपने पर और सपनेकी इस पाकिस्तान सैर पर। सोचता हूं, कब मौका मिले और पाकिस्तानकी सैर करूं।


अत्यधिक सस्ती कीमतों में

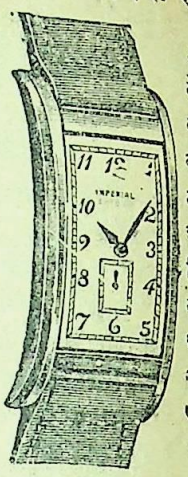

ऊंचे दर्जे की ठीक समय देने वाली,आधुनिक आकार की घड़ियां। प्रत्येक की गारण्टी २ साल। गोल या चौकोर आकार क्रोमियम केस १८), रियर २०), सेंटर सेकंड २४) रोल्ड क्रोमियम केस ४०), ज्वेल ६०) रोल्ड ५५), १५ जूएलकी डाकखर्च माफ।

प्रेमशङ्कर एण्ड कं०
(V.C.) एशबाग, लखनऊ।

प्रशंसनीय रक्त परिष्कारक दृष्टि, रक्तसे उत्पन्न होनेवाली सभी बीमारियोंको अचूक दवा तथा टानिक। सूजन, बात, गांठया चर्मरोग, दुर्बलता घाव,फोड़ा पुंसी, गांठोंकी सूजन जो रक्तकी कमी या दूषित रक्तसे उत्पन्न होता है

AMRITABALLI KASAYA
restores vitality & strength
KAVIRAJ N.N. SEN & Co. LTD CALCUTTA


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हैदराबाद बनाम भारत

श्री राघवेन्द्र

"अगर भारतीय सेनाने हैदराबाद पर आक्रमण किया, तो वह यहांके हिंदुओं की सिर्फ राख ही बटोरेगी।" यह बर्बरता – पूर्ण धमकी कासिम रिजवीने दी है, जो इत्तहादुल मुसलमीन का अध्यक्ष है इसका मतलब यह हुआ कि अगर भारत अपने शरीरका कोढ़ हदराबादका निरंकुश शासन मिटानेके के लिये सशस्त्र कदम उठाता है तो सबसे पहले रियासतके निर्दोष हिन्दुओंको भारीसे भारी मूल्य चुकाना होगा। लेकिन यदि इस भयसे भारत सरकार तत्काल उचित कार्रवाई करनेमें विलम्ब करेगी, तो हैदराबादकी जनताके कष्टोंमें उत्तरोत्तर वृद्धि ही होगी। आज सभी यह स्वीकार करते ह कि यथा पूर्व समझौता करके भारत सरकारने हैदराबादको अपनी ताकत बढ़ानेका ही मौका दिया है। २९ नवम्बर १९४७ को यह समझौता हुआ। तबसे इन ६-७ महीनोंमें निजाम सरकारने युद्धकालीन ढंगसे अपनी तयारियां की हैं। रियासतमें कई नयी नयी सड़के बनायी गयी हैं। तार और टेलीफोनकी नयी लाइनें बैठायी गयी हैं जगह जगह फौजी अड्डे कायम किये गयेहैं। नियमित सेनाकी संख्यामें भी सुनते हैं, बहुत अधिक वृद्धि की गयीहैं। इसके अलावा रजाकार दलका जबर्दस्त संगठन किया गया है। इस प्रकार आवश्यकता पड़ने पर भारतीय फौजोंका सामना करने क लिए निजाम सरकार भलीभांति तयार है?

इस स्थल पर यह बता देना भी आवश्यक है कि संयुक्त राष्ट्र संघकी सुरक्षा परिषदमें काश्मीरका मामला पेश किये जाने पर विभिन्न राष्ट्रोंने जो रुख दिखाया, उससे भी निजाम और उसके समर्थकोंको बहुत बल मिला है। वे जान गये हैं कि यूरोपके साम्राज्यवादी राष्ट्र हृदयसे भारत का साथ नहीं दे सकते, बल्कि उल्टे हैदराबादकी ही मदद करेंगे, भले ही वह मदद भीतर ही भीतर हो। खास कर जहां तक ब्रिटेनका ताल्लुक है, यह बात छिपी नहीं है कि ब्रिटिश अधिकारी निजामसे बहुत सहानुभूति रखते हैं। निजामकी फौजोंका प्रधान सेनापति अंग्रेज है। निजामका वैधानिक सलाहकार सर वाल्टर मौंकटन अंग्रेज है, जो बार-बार लन्दन जाकर वैदेशिक आफिसके अधिकारियोंसे सलाह-मशविरा किया करता है। भारत सरकार और हदराबादके बीच जबसे यह संघर्ष छिड़ा ह, अर्थात् १५ अगस्त १९४७ के बादसे, मांकटन न मालूम कितनी बार लन्दन जा चुका—एक न एक बहाना बता कर।

### भारत सरकारका रुख

भारत सरकार इन बातोंसे अपरिचित नहीं है, फिर भी वह देर क्यों कर रही है? इसलिये कि व्यर्थकी खून खराबी न हो और हदराबादका प्रश्न शांतिपूर्वक सुलझ जाय। इसीसे 'यथा पूर्व समझौते' के अनुसार गत फरवरीमें बोलारमसे भारतीय फौज हटा ली गयीं। लेकिन अब मालूम होता है कि ऐसा करके भारत सरकारने सरासर गलती की। क्योंकि हम देखते हैं कि भारतीय फौजोंके हटनेके बाद वहांकी हिन्दू जनता पर रजाकारों और निजामकी पुलिस फौजके अत्याचार उत्तरोत्तर बढ़ते ही गये हैं। एक सभ्य सरकार कोई भी समझौता करनेके बाद उसकी शर्तोंका पालन करने के लिये बाध्य है। लेकिन शर्तोंका पालन करनेकी जिम्मेदारी दोनों ही पक्षों पर रहती है न कि सिर्फ एक पर ही। पिछले चन्द महीनोंकी घटनाओंकी जांच करने पर तुरत पता चल जायेगा कि निजाम सरकारकी ओरसे समझौतेकी शर्तोंकी सर्वथा उपेक्षा की गयी है। ऐसी हालतमें अगर भारत सरकार उक्त समझौतेको रद्द कर कोई कार्रवाई करती है तो निस्संदेह उसे समस्त देशका हार्दिक समर्थन प्राप्त होगा।

हालमें प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने कहा है कि हदराबादके सम्बन्धमें भारत सरकार जिस नीतिसे काम ले रही है, उसकी कटु आलोचनाएं की जाती हैं। क्यों न की जाय। जिस रियासत की आबादीमें लगभग ८५ प्रतिशत हिन्दू हों,, वहां मुट्ठी भर मुसलमान उन पर मनमाना अत्याचार करते रहें! आखिर हैदराबादके हिन्दुओंको भारतकी स्वाधीनतासे अभी तक क्या लाभ मिला है? वे बड़ी व्यग्रतासे भारत सरकारके अगले कदमकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिये भारत सरकारको समझौतेकी चर्चामें और समय गंवानेकी गलती न करनी चाहिये। हैदराबादके मुस्लिम नेताओंने लायक-रिजवी कम्पनीने, समझौतेके प्रति जो रुख अब तक दिखाया है, उससे किसी को भी इस बातकी आशा नहीं रह गयी है कि हदराबादकी समस्या शांतिपूर्वक सुलझ सकेगी। इसलिये भारतीय नेताओं को कोरे आदर्शवादसे काम न लेकर वास्तविकतासेकाम लेना चाहिये।

### रिजवीकी धमकी

अगर रिजवी हैदराबादके हिन्दुओंके कत्ले आमकी धमकी देता है, तो बेशक हम इसे कोरी 'गीदड़ भभकी' ही समझते हैं, क्योंकि रिजवी यह अच्छी तरह जानता है कि अगर हैदराबादके निर्दोष हिन्दुओंका रक्त बहाया गया, तो भारतके साढ़े चार करोड़ मसलमानोंके हकमें यह बात अच्छी न होगी। संभव है, वह यह भी सोचता हो कि हैदराबादके इस भावी संघर्षकी आशंकासे भारतक मुसलमानोंमें भगदड़ मच जायेगी और इससे भारत सरकारक अधिकारी अस्तव्यस्ततामें पड़ जायेंगे। कुछ हद तक यह बात सही हो सकती है लेकिन अगर वैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी, तो इससे भारतकी अपक्षा पाकिस्तान और हैदराबादके अधिकारियोंको ही अधिक परशानी होगी। भारतसे भागे हुए मुसलमानोंको आश्रय देना उनके लिये कठिन हो जायगा। हम जानते हैं कि हैदराबादके खिलाफ सशस्त्र कार्रवाई करनके पूर्व भारत सरकार इस बातकी पूरी कोशिश करगी कि देशके अन्य भागों में मजहबी एकता कायम रहे। लेकिन अगर सत्यको प्रकट कर देना अपराध नहीं है तो यह भविष्यवाणी करत तनिक भी कोच नहीं हो सकता कि अगर भारत ररकारकी फौजी कार्रवाइयोंका, यदि वे कीगयीं बदला वहांके निर्दोष हिन्दुओंके क्तसे चुकाया जाने लगा, तो इसकी प्रतिक्रिया बड़ी भयंकर हो सकती है। नोआखाली काण्डके बाद बिहारमें जो कुछ हुआ, वह सब विदित है। इसलिये हमें आशा करनी चाहिये कि हैदराबादका छोटा हिटलर रिजवी अतीतके इतिहाससे सबक लेकर ऐसी कोई कार्रवाई न करेगा, जिससे उन लोगोंको जिनका हित चिन्तन करनेका वह दावा करता है, पश्चात्ताप करना पड़े।

### काश्मीरका मोर्चा

कुछ लोगोंका खयाल है कि यदि भारतीय फौजें हैदराबाद पर आक्रमण कर देंगी, तो पाकस्तानी फौजें उधर काश्मीर के मोर्चे पर आक्रमणकारियोंको विशेष मदद देने लगेंगी। निस्संदेह फौजी दृष्टकोणसे यह दलील असंगत नहीं है। लेकिन हमारा विश्वास है कि काश्मीरकी लड़ाई में अब प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होनेकी गंजाइश नहीं है। इस बीच सारे काश्मीरके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेतृत्वमें काश्मीरी जनताने अपना संगठन इतना मगबूत बना लिया है कि आक्रमणकारियोंके हौसले पस्त होकर ही रहेंगे। फिर भी इतना तो निश्चित है कि हैदराबद के मोर्चे पर भारतीय सेनाकी स्थिति कमजोर बनानेके लिये पाकिस्तान सरकार काश्मीरके मोर्चे पर अपने डैने फड़फड़ानेसे बाज न आयेगी, चाहे परिणाम जो भी हो।

निस्संदेह भारत सरकारके फौजी अधिकारी इन सारी परिस्थितियों पर गंभीरता पूर्वक विचार कर रहे हैं। क्योंकि सिद्धांतानुसार छोटेसे छोटे दुश्मनकी ताकत भी कम न समझनी चाहिये। लेकिन जो हो, भारत सरकार हैदराबाद के सम्बन्धमें अब बहुत कुछ निर्णयात्मक स्थिति पर पहुंच गयी है। सरहदी इलाकोंमें रजाकारों और निजामी पुलिस या फौजीके हमले होतों हैं, उनका जवाब देनेके लिये भारतीय पुलिस और फौजको आदेश देदिया गया है कि आक्रमणकारियोंका पीछा करनेके लिये यदि रियासतमें घुसना पड़े, तो वैसा भी किया जा सकता है। इस तरह भारत और हैदराबादके बीच युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी है। समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायणने सरहदी इलाकोंका निरीक्षण करनेके बाद एक वक्तव्यमें कहा है कि अब समय आ गया है कि भारत सरकार अपनी फौजी कार्रवाई शुरू करदे। उन्होंने यह भी कहा है कि हैदराबादके जो इलाके अपनेको भारतमें सम्मिलित करनेकी स्थिति में हैं उन्हें तुरत इसकी घोषणा करनी चाहिये और भारत सरकारको उन्हें स्वीकार करते जाना चाहिये। लेकिन हम नहीं समझते कि इस तरह तीतर बटेरकी लड़ाईका क्या अर्थ होगा। जब भारत सरकारको यह विश्वास हो गया कि निजाम सरकार शांतिपूर्वक भारतमें सम्मिलित होना स्वीकार न करेगी तो अब अधिक प्रतीक्षा और ढीली नीति खतरनाक साबित होगी। संतोषकी बात है कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने बड़ी दृढ़ता के साथ कहा है कि "हैदराबाद सिर्फ तभी स्वतन्त्र रह सकता है जब कि भारत खत्म हो जाय। इसके पहले नहीं।" लेकिन दूसरी ओर कासिम रिज़वी दिल्लीके लाल किले पर निजामका आसफजाही झंडा फहरानेका स्वप्न देख रहा है। इसी कशम कशमें हैदराबादका प्रश्न पड़ा हुआ है। लेकिन अब भारत सरकारकी सहिष्णुता अपनी चरम सीमा पार कर गयी है। इसलिये यदि निजामने तुरत भारत सरकारके सामने घुटने न टेक दिये तो हैदराबादको कठिन अग्निपरीक्षासे गुजरना होगा।

# जय संदेश

– श्री विराज

राजपूतलोग हल्दीघाटीकी लड़ाई हार चुके थे यद्यपि वह हार विजयसे भी अधिक शानदार थी, परन्तु उसके बाद राजपूत सैनिक बनोंका आश्रय लेनेको बाधित हो गये मुगलसेनाओंने सारे मेवाड़ की नाकाबन्दी कर रखी थी, परन्तु अरावलीकी पहाड़ियोंमें राणाप्रताप और उनकी सेनाएं गुरिल्ला युद्धमें संलग्न थीं शाही सेना लाख यत्न करके भी उनके साहसको नहीं तोड़ सकी थी। मौका मिलते ही वे लोग शाही चौकियोंपर हमला करके उन्हें लूट लेते थे और फिर अपने-अपने प्राणोंकी रक्षाके लिये पहाड़ियोंमें निकल जाते थे। शाही सेना खोजकर नाकाबन्दीको और कड़ा कर देती थी।

राजपूतोंकी कठिनाइयां दिनोंदिन बढ़ने लगी। जंगलोंमें उनका रसद पहुंचना असंभव हो गया। उनकी सैनिक टुकड़ियां छिन्न-भिन्न होने लगीं। कभी उदास न होनेवाले महाराणा प्रतापका मुखमंडल भी उदास हो चला। बनबिड़ाल द्वारा राजकुमारीके हाथसे घासकी रोटी छीन लिये जानेके बाद उसके क्षुधा-व्याकुल क्रन्दनको सुनकर उनका अरावलीकी शिलाओंके समान कठोर और विशाल हृदय भी तड़क चला था।

एक सरदारने कहा "महाराणा, ऐसे कितने दिन और बीतेंगे? लड़नेके लिये वे सिपाही भी शेष नहीं रहे। जो भी जाते हैं, वे वापस नहीं लौटते।"

दूसरेने कहा "अपना कष्ट तो जैसे-तैसे सह भी लें, पर असमर्थ और अबोध शिशुओंकी वेदना नहीं सही जाती।"

पर राणा प्रतापके पास अकबरी दरबारके पृथ्वीसिंहकी भेजी हुई चिट्ठी विद्यमान थी "जबसब राजपूतोंने सिर नवाकर और अपनी ललनाएं बादशाहको सौंपकर अपनी रजपूतीको कलंकित कर दिया है। अगर तू भी झुक गया तोराजपूती कीर्त्ती कहां आश्रय लेगी? क्या वह भी अकबरके चरणोंमें नहीं लोटने लगेगी?"

यह चिट्ठी ही महाराणा प्रतापको हर बार आत्म समर्पण करने से रोक देती थी। वह अपने कुछ विश्वस्त सहचरोंके साथ आज यहां, कल वहां भागते हुए अपनी नहीं, राजपूती शानकी रक्षा कर रहे थे जिसकी रक्षा पहलेसे भी सिसौदिया जौहरके द्वारा करते आये थे।

चित्तौड़की प्रजामें उस समय देशद्रोही नहीं थे, अन्यथा क्या राणा प्रताप अकबरकी तीन लाख सेनाके चंगुलसे तीन दिन भी बच पाता।

ज्यों-ज्यों स्थिति विषम होती जाती थी, त्यों-त्यों सरदारोंको राजपूती शानका मोह कम होता जा रहा था। वे राणाको समझाते "महाराणा, अगर किसी दिन विजयकी आशा हो तो यह सब कष्ट सहना उचित है। अब हम इने-गिने चार-छः आदमी अकबरकी विशाल सेनाको हरा सकेंगे, यह सोचना पागलपन है। फिर व्यर्थ ही इन स्त्री बच्चोंको भूखा मारनेका पाप क्या हमें न लगेगा? देशके लिए, विजयके लिये, स्त्री-बच्चों और अपना बलिदान करते हमें संकोच नहीं, पर सुनिश्चित पराजयके लिये, केवल मर जानेके लिये इन्हें भूखो मारना कहांतक उचित है महाराणा

महाराणा चुप रहते। परन्तु परिस्थिति और बारम्बारकी यह निराश मंत्रणा उन पर प्रभाव डालती जा रहीं थी।

उस दिन भी झोंपड़ियोंके पास पहाड़ी शिलाओंपर पेड़ोंकी छायामें प्रताप उसके सरदार बैठे थे। बरसात प्रारम्भ हो चुकी थी। सरदारोंकी मंत्रणासे प्रतापका गात शिथिल हो गया। अनिच्छाके साथ उन्होंने अकबरके पास संदेश भेजनेके लिये दूतको बुलावा भेजा। दूतसे सब बात समझाकर कह दी गयी। आत्मसमर्पणका संदेश था। शर्तें मांगी गयी थीं। अकबर युद्धसे इतना थक चुका था कि वह किसी भी शर्तपर राणाप्रतापके आत्म-समर्पणको स्वीकार कर लेता।

दूत उदास मुख और धीमी चालसे चल पड़ा।

राणाप्रताप और बाकी सरदार भी उठ खड़े हुए। सरदारोंके मुखपर एक संतोषका भाव था, पर महाराणाका मुख विषादसे काला पड़ रहा था।

खड़े होते-न-होते पुराने पहाड़ी चूहे पहिननेसे पहले राणा चौंक उठे। सरदारों भी विस्मय और कौतूहलसे उनकी ओर देखा। जिस विशाल शिलापर प्रताप बैठते थे, उसके नीचेसे निकलकर एक किनारेपर खजूरका एक नवांकुर उग आया था, जिसने राणाके पैरमें चुभकर उन्हें चौंका दिया था।

अगर और कोई समय होता तो इस चुभनेपर महाराणाका ध्यान भी न जाता, पर इस समय उन्हें यह बहुत अधिक चुभा। इस शिलाके इतने पास यहां खजूरका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अंकुर कैसे ? अंकुर शिलाके नीचेसे ही आता दिखा पड़ता था।

राणाको क्या सूझी ? उन्होंने शिलाको हटानेका आदेश दिया। शिला बहुत भारी थी। महाराणा स्वयं भी जुट गये महाराणाके वे दिन वैसे ही थे– और कुछ परिश्रमके बाद वह शिला उलट दी गयी। आश्चर्य ! उस विशाल शिला के नीचे सीली जमीनमें उगकर उस खजूरके अंकुरने अपनी कोमल देहसे एक बहुत बड़ा जाल सा गुच्छा बना रखा था और अंतमें बड़ा लम्बा पथ लांघकर किनारे पर पहुंच कर ऊपर खुली हवामें निकल आया था।

राणा क्षणभर उसे अवाक् देखते रह गये। इतना छोटासा अंकुर ; इतनी विशाल शिला ! महाराणाकी श्रान्त आत्माने बल पाया। उनके मुखपर विस्मय और उल्लासकी रेखाएं उभर आयीं और उनकी आंखोंमें एक अद्भुत चमक भर आयी। राणाप्रतापका विरत्व मानों हिलोरा मारकर उत्तेजित हो उठी। तभी सहसा बरसातकी ठंडी हवाके एक झोंकेने आकर सारे बनको झकझोरसा दिया।

दूतको लौटाओ, हम सन्धि न करेंगे ! राणाप्रतापके स्वरमें वैद्युतिक आवेश था 'पर महाराणा.....'

महाराणाकी आत्मा जाग उठी थी। अंगारोंपरसे राख उड़ चुकी थी। उनका स्वर तेजस्वी हो उठा "मेवाड़की वीरप्रसू भूमि हमें बार-बार संदेश दे रही है। देखते नहीं हो, यह कितना छोटासा अंकुर कितनी विशाल शिलाकी उपेक्षा करके ऊपर निकल आया है ? एक दिन यही विशाल खजूर बनकर इस शिलाको ठेलकर एक ओर कर देगा। चित्तौड़के किलेकी दीवारें आज हमपर हंस रही हैं। पृथ्वी मानों हमारी तुलना इस खजूरके तुच्छ अंकुरसे कर रही है। और यह भी अपने विजय-दर्पसे मत्त हमारा उपवाससा कर रहा। मेरे वीर सरदारो, क्या अकबर इस शिलासे भीतक्षय है ? और क्या हम इस अंकुरसे भी तुच्छ हैं। दूतको लौटाओ"

"परन्तु महाराणा ऐसे कितना दिन..."

"क्या ये राजदूतोंकी सी बातें हैं।" महाराणाके मुखसे मानो प्रचंड तेजधारा बहने लगी " ऐसे अब एक दिन भी नहीं बीतेगा। हम जो भी हैं, जितने भी हैं, आज ही युद्ध प्रारम्भ करेंगे। ऋतुहमारे अनुकूल आ गयी है।"

महाराणाकी वाणीसे उत्साह फूटा पड़ रहा था, जो निराशोंमें आशा और बेलोंमें बलका संचार करनेवाला था।

# भारतकी समस्याओंपर एक दृष्टि

श्री लुई फिशर

सुप्रसिद्ध अमेरिकन पत्रकार श्री लुई फिशरने अपनी पुस्तक– एक महान चुनौतीमें– भारतके सम्बन्धमें जो विचार प्रकट किये हैं, उसके कुछ महत्वपूर्ण अंश ये हैं :

वास्तवमें दोष शताब्दियोंकी दीर्घायु का है। शताब्दियां बीत जाती हैं किन्तु उनकी विचार-धाराएं, उनके राजनीतिक, और आर्थिक रूप तथा उनके नैतिक मान बादमें भी हमें परेशान करते रहते हैं। विज्ञानके द्वारा हमें इक्कीसवीं शताब्दीका भी पूर्वाभास हो गया है। विज्ञानके बाहुल्य और स्वास्थ्यका मार्ग प्रशस्त कर दिया है। इसीके द्वारा मानवको पृथ्वी की आकर्षण शक्ति और शून्यके बन्धनोंसे मुक्त होनेकी आशा है। किन्तु राजनीति अब भी उसी दकियानूसी कालमें फंसी है, जब न भापके इंजन थे न बिजली थी और न हवाई जहाज थे। राजनीति मध्य युगके पंकमें उलझी हुई है और उसने मानवको भय और अभावकी रस्सीमें जकड़ रखा है। राजनीतिज्ञ अब भी भौगोलिक राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और साम्राज्यन्तर्गत आधिपत्यके आधार पर शांति-संधियां करते हैं।

या तो राजनीति विज्ञानको ले बैठेगी या विज्ञान, जिसकी शक्तियों पर संगठित मानवका नियंत्रण है, भूमंडलकी धज्जियां उड़ा देगा।

जीवनसे भारतीयोंको जो कुछ मिल सकता है और जो वास्तवमें मिल रहा है उन दोनोंके बीच इतना अखरनेवाला और उन्मादप्रेरक अन्तर है कि इसीसे भारतके नैराश्य, असन्तोष और क्षोभका पता चल जाता है। भारत भूमंडलका पंचमांश है। गत५०वर्षोंमेंएशियाकी जन-संख्या दुगुनी हो गयी है। आज एशिया जाग्रत अवस्थामें है। उसे स्वाधीनता, सुरक्षा, समृद्धि और गौरवकी चाह है। आर्थिक या राजनीतिक दृष्टिसे यह संसार उस समय तक निष्कलंक नहीं हो सकता, जब तक एशिया और दूसरे भूखंडोंके खरबों जीव उस सुख सुविधामें हिस्सा नहीं लेते, जो उन्हें मनुष्य द्वारा खड़ी की गई पुरानी ढंगकी बाधाओंके हटते ही प्राप्त हो सकती है।

भारत की सभी समस्याएं ––राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक––भारत की करुण दरिद्रता और अवरुद्ध आर्थिक गतिकी काली पृष्ठभूमिमें ही समझी जा सकती हैं। उदाहरणार्थ, हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर भारतके व्यावसायिक पिछड़पनका विचित्र, किन्तु गहरा प्रभाव है।

भारतीय शहरोंमें रोजगार बहुत ही सीमित है जिसके फलस्वरूप सरकारी नौकरियां ही भारतीयोंका मुख्य व्यवसाय बन गया है।

भारतमें जिस किसीसे मैं मिला–– इनमें भारतके वाइसराय, सर आर्चिबाल्ड वेवल, अनेक सर्वोच्च अंग्रेज अधिकारी, जिन्ना, गांधी, कांग्रेसके मुसलमान राष्ट्रपति आजाद भी सम्मिलित हैं––सभीने इस बातकी पुष्टि की कि देहातमें हिंदुओं और मुसलमानोंके बीचमें संघर्ष नहीं के बराबर है, और भारतका ९० प्रतिशत भाग देहातोंमें है––हिन्दू-मुस्लिम समस्या मनुष्य द्वारा बनाई गयी एक शहरी समस्या है। इससे केवल यही पता लगता है कि शहरोंमें रोजगारकी कमी है।

जिन्नाने मुझे बताया कि भारतके ७५ प्रतिशत मुसलमान पहले हिन्दू थे, जिन्हें सैकड़ों साल हुए मुगल विजेताओंने मुसलमान बना लिया था। नेहरूने ऐसे मुसलमानोंकी संख्या ९५ प्रतिशत बतायी थी। कुछ भी हो, अधिकांश हिन्दुओं और मुसलमानोंका जातीय स्रोत एक ही है। रंग-रूप और भाषाकी दृष्टिसे एक बंगाली मुसलमान और बंगाली हिन्दूमें कोई अन्तर नहीं। जाति-शास्त्र की दृष्टिसे सोवियत् रूस, स्वीजरलैण्ड और संभवतः अमेरिकाकी अपेक्षा भी भारत कहीं अधिक एकजातीय है।

भारतीय जीवनमें धर्मको महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यद्यपि हिन्दू गायकी पूजा करते हैं और मुसलमान इसे खाते हैं, फिर भी देहातोंमें साम्प्रदायिक वैमनस्य नगण्य सा ही है। इसकी प्रधानता तो शहरोंमें ही-दिखाई देती है। शहरोंमें हिन्दुओंके खान पान सम्बन्धी प्रतिबन्धोंके कारण और विवाहसे पहले और बादके रीति-रिवाजोंके फलस्वरूप उत्पन्न होनेवाला भेद-भाव आर्थिक प्रतिद्वंद्विताके कारण और भी बढ़ जाता है। यदि जीवनमें प्रवेश करनेवाले नवयुवकोंके सामने औद्योगिक नौकरियोंकी वैकल्पिक सूची उपस्थित हो तो राजनीतिक स्थानोंके लिये प्रतियोगिता इतनी तीव्र न रह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# मानव-हृदय और कविता

श्री बिन्देश्वरी प्रसाद श्रीवास्तव बी० ए० बी एल

प्रातःकालीन समीरने थपकियां दे देकर ब्रह्माको जगाया। विश्वपिताने उठ कर देखा, एक बालिका खड़ी है।

'पिता'—बालिका बोल उठी।

ब्रह्माने सिर उठाया।

'मेरा स्थान पिता'—मीठी आवाज थी।

ब्रह्माने सिर उठाया और पूरबकी ओर देखा। बालिकाने भी ऊंचे-ऊंचे पहाड़ पास ही छोटीसी नदी, नदीमें कमल हिमाच्छादित शिखरों पर सूर्यकी किरणें। बालिका खिल उठी, परन्तु उसका प्रश्न अब भी जारी था। ब्रह्माने फूलोंकी ओर इशारा किया।

"फूल!" बालिका चौंक उठी, "मेरे सौन्दौर्यके कारण फूलोंकी श्री मन्द पड़ जायेगी पिता! यह पाप मैं नहीं कर सकती।"

ब्रह्माने भी देखा, बात ठीक ही है। फिर उन्होंने सरिताकी ओर इशारा किया। बालिकाने उत्तर दिया – "छोटी नदी तो आप ही व्याकुल है पिता। व्याकुलताके मारे अपने आपको स्थिर नहीं रख सकती। मेरे जानेसे तो वह और भी अस्थिर हो जायेगी।"

ब्रह्माने हंस कर हिमालयकी ओर देखा। बालिका भी मुस्करा पड़ी। उसने कहा—"जीवनकी छोटी सी अनुभूतिको भी तो यह अपने अन्दर नहीं रख सका। देखते नहीं गंगाके पिता, यह नगराज के हृदयकी भावनाएं ही तो गल गल कर बह रही हैं।"

ब्रह्मा मौन थे। समय बीतता गया। आदिम युगकी उस बालिकाको स्थान नहीं मिला। फिर भी प्रश्न जारी था। इस बार ब्रह्माने साहस कर कहा —"और वह हिमराशि?"

"हां' सहम कर बालिका बोली, मैं कठोर भी तो हूं पिता। मेरी कठोरतासे तो यह और भी निष्ठुर बन जायेगा।"

"क्या ये किरणें भी नहीं?" हताश होकर ब्रह्माने कहा।

"मेरी सुकुमारता नष्ट हो जायेगी। पिता!" बालिकाने स्थिर भावसे उत्तर दिया।

ब्रह्मा चुप थे। बालिका शांत थी। प्रश्न जारी था।। युग बीत गये। वाल्मीकि अपने आश्रममें सूर्यकोअर्घ्य दे रहे थे। पास ही क्रौंच मरा पड़ा था। शिकारी प्रसन्न था और मादा विलाप कर रही थी।

ब्रह्माके हृदयमें नई आशा उत्पन्न हुई।"उन्होंने बालिकाको सम्बोधन कर कहा–"वहां देख बेटी, एक मानवका हृदय उस फूलसे भी सुन्दर है, सरितासे भी चंचल, किरणों भी सुकुमार, पत्थरसे भी कठोर। हृदयकी अनुभूतियों फो छिपा भी सकता है और उसे प्रकट भी कर सकता है। वहां जा।'"

ब्रह्माने नीचे देखा। बालिका चली गयी थी। इसी समय आदि कविने गाया– "मानिषाद.....मोहितम्।'"

और युग युगसे आदिकविकी वही वाणी सुनाई पड़ रही है। कालिदासकी शकुन्तलाकी आवाज उसी मादा क्रौंचकी आवाज है, दान्त की 'ब्रिटिश' भी उसी प्रकार रोती है, होमरकी 'हेलेन' के हृदयमें भी वही व्याकुलता है, शेक्सपियरकी 'जुलियट' भी उसी वियोग दुखसे दुखी है, टाल्सटाय की 'अन्ना' भी उसी दुखसे बचनेके लियें दर दर की ठोकरें खाती है और कवि प्रसादजीकी आदिमानवी (सतरूपा) भी उसी दुखसे दुखी है।

इन सब कवियोंके हृदयमें अनुभूतियों का स्रोत उमड़ रहा था। प्रकृति के वाह्य आचरणको उन्होंने देखा। उसकी प्रतिक्रिया हुई और वह स्रोतके रूपमें फूट पड़ा। हृदयमें जो चीज सोई पड़ी थी, संसारिक आचरणने उसे जगा दिया। महाकविके हृदयमें क्या क्या छिपा रहता है, उसकी संगीतमयता कहां तक ध्वनित होती है और कहां तक मूकवेदना मात्र रहती है, यह हमें ज्ञात नहीं होता। उसके विचार वृक्षकी जड़ें हैं, जो शेषनागके सिर तक चली गयी है। उसकी वाचालता उच्च होती है और निस्तब्धता उससे भी अधिक गंभीर और उच्चतर। उसके हृदय-वीणाके तार से यही झंकृत होता है कि प्रकृतिमें अनक प्रकारके सौन्दर्य विद्यमान हैं और सहस्त्रों प्रकारके दिव्य भाव दिखायी देते हैं, उसकी महत्ताका विचार सहसा यह धारणा उत्पन्न करता है कि संसारको 'अकबर' की उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी 'तुलसी'की, हमें राजनीतिक मुक्ति नहीं चाहिये, स्वराज्य नहीं चाहिये। हमें तो एक 'तुलसी' चाहिये, जो हमें जीवनमुक्त बना सके।

कविताके लिये हमारी अनुभूतियां ही प्रधान हैं। एक ही फूल देखनेसे भिन्न भिन्न व्यक्तियोंके मनमें विभिन्न धारणाएंहोती है और वे भिन्न भिन्न प्रकारसे उसे प्रकट करते हैं। अतः हम देखते हैं कि कविताका यथार्थ कारण फूल न होकर हृदय है। फूल एक कोमल अंगुलीकी भांति है, जो हृदय वीणाके तारोंको झंकृत कर देता है और उससे स्वर फूट पड़ते हैं, जिस पर सांसारिक घटनाओंके घात प्रतिघात अपना अलग ही स्वर छेड़ते हैं। परन्तु हां, मानव और वादन-यन्त्रमें एक भेद भी है –पहला चेतन है और दूसरा जड़। एक बालक अथवा एक अशिक्षित मनुष्य बाजेके स्वर तालको न जानते हुए भी जब कोई बाजा बजको सुनता है तो दूर ही खड़ा-खड़ा अपने पांवकल एड़ीसे भूमि पर ताल देने लगता है। इसकी कारण उस स्वरमें सिद्धांतके प्रति, जो मनुष्ययें निहित है, अनुकूलता है, जो मनुष्यको सहृदय बनाती है।

कविताका क्षेत्र व्यक्ति विशेष तक ही सीमित नहीं है और न उसे प्रकट करने का कौशल पद्य एवं ललित गद्य द्वारा ही सीमित ही सकता है। प्रत्येक व्यक्ति जो सुख अथवा दुख अनुभव करता है, कवि है। अपनी भावनाओंको वह शब्दोंका रूप भले ही न दे सका हो, परन्तु उसके हृदयमें जो अनुभूतियां आती हैं, वही उसे कवि बनानेके लिये काफी है। क्या एक भिखारी, जो अपने आंसुओं द्वारा पृथ्वीके वक्ष पर युग युगान्तरसे वेदना पूर्ण कविताएं लिख रहा है, कवि नहीं है? उसमें और 'पन्त'में तो इतना ही अन्तर है कि 'पन्त' की वेदना हमारी वेदना हो गयी, उनकी अनुभूतियां हमारी अनुभूतियां बन गयीं और उस निरीहकी वेदना उसकी अनुभूति दुनियासे छिपी रहीं। दुनियाके लोग माने य न माने, परन्तु गलीकी गीली जमीन इस बातको जानती है कि वहां अंधकारमें कितनी ऐसी कविताए लिखी गयी हैं, जिनके प्रकाशमें आने पर 'ग्रे'की 'एलेजी' का भी महत्व कम हो जायेगा।

आखिर, यह प्रकृति भी तो किसी महामानवके हृदयकी छाया है। एक नन्हा-सा नादान बालक जब हंस देता है, उस समय सृष्टिका सारा सौन्दर्य उस बालक के नन्हेमें मुंहमे समा जाता है। नन्दजीने भी शायद श्रीकृष्णके मुंहमें सृष्टिकी वही झांकी देखी थी। आलोचकोंके हृदयमें उस हंसीका मोल चाहे कुछ भी हो, परन्तु कवितासे आनन्द उठानेवाले व्यक्तिके लिए वह 'टैगोर' की उर्वशीसे भी बहुमूल्य है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# 'हिन्दुस्तानी' की घोषणा

श्री भदन्त आनंद कौसल्यायन

जब तक हमारी मातृभूमिने १५ अगस्त सन् ४७ का दर्शन नहीं किया था, जब तक इस महान भूखण्डमें स्वतन्त्रताका सूर्य उदय नहीं हुआ था। तब तक हम यही समझते थे कि हमारे शासकोंकी भाषा तभी तक लदी है और लदी रह सकती है जब तक कि हमारी स्वतन्त्रताकी घोषणा नहीं हुई है। जिस दिन हम 'स्वतन्त्र' होंगे उस दिन हमारे ऊपर पड़ी हुई अनेक बेड़ियां के साथ विदेशी भाषाकी बेड़ी भी कट जायगी किन्तु स्वतन्त्रताकी घोषणाको हुए पूरा एक वर्ष होने को आया है और हम अपनी सरस्वतीको अभी तक स्वतन्त्र भारतके सिंहासन पर नहीं बिठा सके हैं।

यह सत्य है कि इधर आठ नौ महीनोंमें भाषाके प्रश्नको लेकर जब और जहां सीधे सादे वैज्ञानिक ढंग पर विचार हुआ है, तो देशके लगभग सभी विचारक इस एक ही परिणाम पर पहुंचे हैं कि देशकी राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरी यथा शीघ्र घोषित हो जानी चाहिये।

कांग्रेस-पार्टीकी बैठकमें इस प्रश्न पर विचार हुआ तो अधिकांश सदस्यों का यही मत था कि हिन्दी ही इस देशकी राष्ट्रभाषा है और देवनागरी ही राष्ट्रलिपि। युक्तप्रान्तीय सरकारने भी जब साम्प्रदायिक दृष्टिसे विचार न कर एकमात्र राष्ट्रीय दृष्टिसे विचार किया तो उसे यह स्पष्ट घोषणा कर देनी पड़ी कि युक्तप्रान्तकी राजभाषा हिन्दी है। युक्तप्रान्तके बाद बिहारके लिये तो हिन्दीका राजभाषा होना एक इतनी साफ और निश्चित बात थी कि वहांके प्रधान मन्त्रीके आश्वासन और स्वीकृतिके कारण बिहारकी व्यवस्थापिका सभाने इसकी घोषणा करना भी व्यर्थ समझा।

देशकी अनेक रियासतोंकी राजभाषा हिन्दी है ही, जहां नहीं थी वहां इधर निकट अतीतमें इसकी घोषणा हो गयी है और वे घोषणायें कार्यरूपमें भी परिणत हो रही हैं।

अलीगढ़ यूनिवर्सिटीमें भी हिन्दीकी अनिवार्य पढ़ाई आरम्भ हो गयी है।

विधान निर्माण परिषद्के सदस्य पंण्डित बालकृष्ण शर्मा और सेठ गोविन्द दासजीसे ज्ञात हुआ है कि विधान परिषद्के २९४ सदस्योंमेंसे १५३ (७–ले०) सदस्योंने एक स्मृति पत्र पर हस्ताक्षर करके भारत सरकारसे अनुरोध किया है कि हिन्दीको देशकी राष्ट्रभाषा घोषित किया जाय। आपका कहना है कि, नेहरूजी तथा मौलना आजाद भी इस "मांगके औचित्य" को स्वीकार कर चुके हैं। इन और ऐसी ही दूसरी सभी बातोंसे यह प्रायः निश्चित ही लगता है कि निकट भविष्यमें —आगामी जुलाईमें—विधान परिषद्की जो बैठक होगी उसमें उसे हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने और देवनागरीके राष्ट्रलिपि होनेकी घोषणा कर ही देनी पड़ेगी।

किन्तु तस्वीरका दूसरा पहलू भी है और महत्वपूर्ण है। हम हिन्दीको राष्ट्रभाषा माननेवाले उसकी ओरसे उदासीन नहीं रह सकते।

हम सब इस बातको जानते हैं और मानते हैं कि उर्दू हिन्दीकी ही एक शैली है और हिन्दुस्तानी तो 'खराब उर्दू' का ही दूसरा नाम है। जहां तक अंग्रेजीको पदच्युत करनेका प्रश्न है हिन्दी, उर्दू हिन्दुस्तानी सभी एक साथ हैं और साथ रहना चाहिये। अखिल भारतीय पत्रकार संघकी काररवाई 'हिन्दुस्तानीमें लिखनेका प्रस्ताव पेश हुआ था तो हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानीवाले एक ओर थे और सभी अंग्रेजीवाले एक ओर। आखिर यह भाषाका प्रश्न केवल भाषाका ही प्रश्न नहीं है, अनेक लोगोंके सुरक्षित स्वार्थोंका प्रश्न है और बहुतसे लोगोंकी जीविकाका भी।

लेकिन इस समय विदेशी शासनके ध्वंसावशेषोंके रहते अंग्रेजीवाले जहां अपने लिये चिन्तित हैं वहां कुछ आश्वस्त भी हैं। उनकी नीति है जहां हिन्दी हिन्दुस्तानी का विवाद है वहां हिन्दीका साधन दे, हिन्दुस्तानीका साथ देना और जहां हिन्दुस्तानी और अंग्रेजीका विवाद हो वहां हिन्दुस्तानीका साथ न दे अंग्रेजीका साथ देना।

दुर्भाग्य है कि इधर मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे देशमान्य नेता उर्दूवालेसे हिन्दुस्तानीवाले और हिन्दुस्तानीवालेसे अब अंग्रेजीवाले हो चले हैं।

यह सही है कि जिस प्रकार कुछ हिन्दुस्तानी वाले अंग्रेजीकी ओटमें राष्ट्रभाषा हिन्दीकी जड़ काटने पर तुले हुए हैं उसी प्रकार कुछ अंग्रेजीवाले भी हिन्दुस्तानीकी ओटसे हिन्दी पर तीर चला रहे हैं, लेकिन तो भी कुछ ईमानदार हिन्दुस्तानीवाले भी हैं, जो सचमुच न हिन्दीको राष्ट्रभाषा मानते हैं, न उर्दूको राष्ट्रभाषा मानते हैं, किन्तु हिन्दुस्तानीको ही राष्ट्रभाषा मानते हैं।

इन महानुभावोंके साथ कठिनाई यह है कि इनका कुछ भी तय नहीं है और इसलिये यह किसी भी पकड़में आसानीसे नहीं आ सकते।

भाषाके बारेमें 'सर्वोदय' समाजका प्रस्ताव है कि उसकी भाषा हिन्दुस्तानी है किन्तु 'हिन्दुस्तानी' के ही दो आचार्य पं० सुन्दरलाल और काका कालेलकरका 'सर्वोदय' शब्दके ही हिन्दुस्तानी होने न होनेमें मतभेद है।

वर्धामें अनेक आचार्योंकी हिन्दुस्तानी आज भी सीधी-सादी हिन्दी है। हिन्दुस्तानी कहकर उसे बेकार हिन्दीवालोंके मनमें बदगुमानी पैदा की जाती है। गांधी सेवासंघ–जो सर्वोदय समाजका एक अंग है–का एक निमंत्रण इस प्रकार है–

"संघद्वारा आयोजित रचनात्मक कार्यकर्त्ता सम्मेलन शनिवार ता० १३ मार्च १९४८ से सोमवार ता० १५ मार्च १९४८ तक तीन दिन खादी विद्यालयसेवाग्राममें होगा। आप अवश्य आनेकी कृपा करें। सम्मेलनका प्रारंभ ता० १३ को दिनमें ठीक ढाई बजे होगा।"

कोई इन हिन्दुस्तानीवालोंसे पूछे कि इसमें क्या हिन्दुस्तानी है जो आप इसे हिन्दी न कहकर हिन्दुस्तानी कहते हैं। और कोई इन हिन्दीवालोंसे भी पूछे कि इस हिन्दुस्तानीमें खाक हिन्दुस्तानी है जो आप खामख्वाह इससे चिढ़ते हैं।

हमारा खयाल है कि हिन्दी उर्दूसे पृथक हिन्दुस्तानी शैली बनाने तथा चलानेका प्रयत्न सम्पूर्ण रूपसे विफल सिद्ध हुआ है। उत्तर भारतकी भाषा 'हिन्दुस्तानी' कही जाती थी, वहांकी लगभग सभी सरकारोंने –पूर्वी पंजाब, युक्तप्रान्त तथा बिहार तथा अनेक राज्योंने हिन्दीको राज्य-भाषा घोषित कर दिया है। दक्षिण भारतका "दक्खिनी हिन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी कुछ दिन तक हिन्दुस्तानीमें निकलकर फिर हिन्दीमें निकलने लगा है। किन्तु 'दक्खिनी हिन्द' की हिन्दीका नाम हिन्दुस्तानी ही है। प्रश्न उठता है कि 'हिन्दुस्तानी' शब्दके साथ इतना मोह क्यों? मानव शास्त्रका एक मात्र उत्तर यही है कि हारनेसे हार मानना कठिन है।

भाषाके स्वरूपकी अपेक्षा दो लिपियोंकी अनिवार्यताका दुराग्रह अधिक स्पष्ट और कड़ा रहा, किन्तु इधर ज्यों-ज्यों देवनागरी का आग्रह बढ़ा है; त्यों-त्यों उधर हिन्दुस्तानीवालोंने भी अब अपने उभय लिपिवादकी व्याख्या आरम्भ कर दी है। काका कालेलकरका इधर जो वक्तव्य निकला है, उसमें उन्होंने देवनागरीको देशकीप्रधान लिपि स्वीकार किया है और उर्दूको दूसरे नंबरकी लिपि। हमारा निवेदन और आग्रह भी तो यही है कि देशकी प्रधान लिपि ही देशकी राष्ट्रलिपि है और वह सबको सीखनी चाहिये उसके अतिरिक्त फारसी आदि को जो चाहे सो सीखे। मद्रास हिन्दुस्तानी प्रचार सभाका मद्रास सरकारपर एकमात्र अधिकार है। उसकी रीति-नीतिसे असंतुष्ट हिन्दी-प्रेमियोंकी दक्षिणमें कमी नहीं। किन्तु वे असंगठित हैं। मद्रास हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके प्रयत्नसे मद्रास सरकारने स्कूलोंमें हिन्दुस्तानी सिखानेकी व्यवस्था की है। विज्ञप्तिमें लिखा है कि "उर्दू" और देवनागरी लिपियां सिखानेकी व्यवस्था रहेगी। विद्यार्थी इनमेंसे जो लिपि सीखना चाहेंगे सीख लेंगे।"

हमारा अनुमान है कि हिन्दुस्तानीवालोंने यदि आरम्भमें ही अधिक उत्साहसे काम न लिया होता और हर राष्ट्र-भाषा शिक्षार्थीके लिये दोनों लिपियोंके अनिवार्य ज्ञानकी आवश्यकतापर अनावश्यक जोर न दिया होता तो उन्हें न तो भारतव्यापी विरोधका सामना करना पड़ता और न यह भलाचंगा 'हिन्दुस्तानी' शब्द इतनी उपेक्षा और घृणाका पात्र बनता। नेहरूजी की 'हिन्दुस्तानी' शब्दसे घृणा तो पुरानी घृणा है।

जनताकी अनकलता-प्रतिकलताकी दृष्टिसे हिन्दुस्तानीकी स्थति बड़ी दयनीय है। जहां कोई हिन्दी-उर्दूका जानकार न हो वहीं इस समय 'हिन्दुस्तानी' के लिये कुछ गुंजाइश रह गई है। शेष सब जगहसे उसे अपना दामन समेटना पड़ रहा है।

इसलिये अब उसने पीछेके दरवाजेसे घुसनेके प्रयत्न आरम्भ किये हैं। और उन्हींकी ओरसे सावधान रहना हिन्दीवालोंका परम कर्तव्य ही नहीं हिन्दी और हिन्दीवालोंके जीवन-मरणका प्रश्न है।

हम जानना चाहते हैं कि विधान परिषद की कांग्रेस पार्टीने जब बहुमतसे यह निर्णय कर दिया कि हिन्दी तथा देवनागरी ही राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र लिपि है तो फिर अन्य सभी प्रश्नोंकी तरह कांग्रेसके सभी सदस्योंके लिये विधान परिषद्में अपना उक्त मत ही देना क्यों अनिवार्य नहीं ठहराया गया? मान लीजिये कि पार्टीके कुछ सदस्य अन्य पार्टियोंके सदस्योंके साथ मिलकर अपनी ही पार्टीके बहुमतके निर्णयोंको परास्त करनेमें सफल हो जाते हैं, तो इससे पार्टीके विनय (डिसिप्लिन) पर क्या प्रभाव पड़ेगा? ऐसी पार्टीको समझ लेना चाहिये कि वह अपनी जड़ें अपने आप खोद रही है।

कांग्रेसकी कार्यसमितिने अपनी कार्यवाहीके लिये 'हिन्दुस्तानी' को अपनाया है हम जानना चाहते हैं कि क्या हमारी कांग्रेस की कार्य समितिकी कारवाई अभी भी अंग्रेजीमें ही होती रहेगी और यदि वह अंग्रेजीमें होती रहेगी तो क्या वह अंग्रजी में ही लिखी भी जाती रहेगी। यदि वह हिन्दुस्तानीमें लिखी जायगी तो कार्यसमिति राष्ट्रलिपिके प्रश्नपर चुप्पी साधे रहकर अधिक दिनोंतक समस्त देशको उल्लू नहीं बनाये रख सकती। उसे आज या कल भारतकी राष्ट्रलिपि देवनागरी अपनानी होगी और उसकी घोषणा भी करनी ही होगी।

हमारी अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीने भी अपने बंम्बईके अधिवेशनमें राष्ट्रभाषाके प्रश्नको स्थगित रखना ही उचित समझा। अनेक दूसर प्रश्नोंपर कांग्रेस कमेटीके इस अधिवेशनने विचार किया है केवल राष्ट्र-भाषाके प्रश्नको स्थगित रखना ही उचित समझा। अनेक दूसरे प्रश्नोंपर कांग्रेस कमेटीके इस अधिवेशनने विचार किया है, केवल राष्ट्रभाषाके प्रश्न पर ही चुप्पी क्यों। उत्तर स्पष्ट है, जिस प्रकार हमारी कांग्रेसके कार्य समितिके सदस्योंने बिना अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीकी राय लिए पाकिस्तानके प्रश्नपर अपना निर्णय दे दिया था और उसके बाद अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीको उस दबावकी परिस्थितिमें निर्णय पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगानी पड़ी थी वही स्थिति भाषाके प्रश्नको लेकर फिर पैदा हो जा सकती थी। किसी देशकी राष्ट्रभाषाका प्रश्न 'पाकिस्तान' और इंडिया डोनिमियनके बंटवारेके प्रश्नसे कम महत्वका नहीं है।

हम पूछते हैं राष्ट्रभाषाके प्रश्नको लेकर यह धांधली कबतक, यह खिलवाड़ कबतक? क्या विधान परिषद् भी इस विषयमें कुछ निर्णय न करेगी?

देशकी परिस्थिति ऐसी ही है कि यदि हिन्दीवाले सोते ही रह गये तो विधान परिषद् कुछ ऐसी बड़ी गलती भी कर सकती है कि सारे राष्ट्रको न जाने कबतक पछताते रहना पड़े और हमारी भावी पीढ़ियां हमारा नाम कभी भी आदरके साथ न ले सकें।


१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

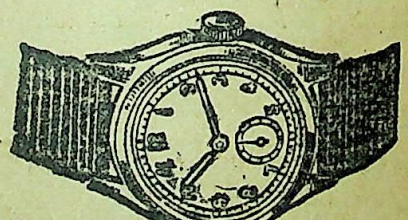

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)

रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो शेप

क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।

एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक मनोरंजक लेख

# रईसोंके चोंचले

—श्री मधुसूदनप्रसाद मिश्र 'मधुर'

वैभवशालियोंके वैभवकी अपेक्षा उनके चोंचले अधिक आकर्षक होते हैं। जब हम मित्रोंकी मण्डलीमें बैठकर कभी किसी कमलावाहनकी कथा सुननेका अवसर पाते हैं, तो पूरा मनोविनोद हो जाता है। ऐसे प्रसंगसे केवल मनोविनोद ही होता हो, यह बात नहीं। स्वादके अतिरिक्त शिक्षा भी अच्छी प्राप्त हो जाती है। पाठकोंमें जो सज्जन वैभवशाली हों, वे बुरा न मानें। इस विश्वासके साथ कि वे इन चोंचलोंसे मुक्त होंगे, मैं कुछ लिखनेका साहस करता हूं।

वैभवकी मदिरामें ये चोंचले मस्तीका काम करते हैं। नशेके झोंकमें बड़बड़ानेवालेको देखकर जिस प्रकार हंसी आ ही जाती है उसी प्रकार इन चोंचलेबाजोंकी एक-एक बात बरबस हंसा देती है।

बात बिहार प्रान्तकी है। एक बाबू साहबकी आंखमें आंधीके कारण किरकिरी पड़ गयी। आंधी कम होने पर बड़ी कठिनतासे किसी प्रकार किरकिरी निकाली गयी। पर धन्यवाद देनेके बदले आप उलटे अपने उन सेवकों पर ही फट पड़े—"सब मूर्ख हैं, केवल थाली पर जुटनेवाले! आंधी आ रही है, इसकी किसीने सूचना तक न दी। क्या कहा जाय इन गधोंको, जिनकी मोटी बुद्धिमें इतनी-सी बात भी नहीं आयी कि आंधी आ पहुंची है, इसलिये स्वामीको हम सावधान तो कर दें! आखिर तुम इतने मेरे साथ-साथ रहते किसलिये हो? अबसे कभी आंधी आयी और सावधान नहीं किया तो स्मरण रहे, तुम्हारा कुशल नहीं।"

तबसे सबको बराबर आकाशकी गतिविधि पर नजर रखनी पड़ती। तनिक भी आशंकाके लक्षण रहने पर बाबू साहब तहखानेमें बन्द! ऐसे समय कभी-कभी अनोखी बातें भी बाबू साहबके निकट तक पहुंचतीं। उनके सच्चे कहे जानेवाले सेवकोंकी ओरसे बड़ी गम्भीरताके साथ यह भी सूचित किया जाता कि इस बार आंधीने बखारके छप्परको उड़ाकर बहुत-सा अन्न भी उड़ा दिया है। अपनी इस बातकी पुष्टिके लिये वे छप्परको जमीन पर उलट देते और कुछ अन्नके दानोंको भी इधर उधर बिखरा देते थे। किन्तु वास्तवमें न आंधी आती और न छप्पर ही सड़ता। जरा तेज हवाके बहने पर ही यह एक 'तैयार किया हुआ नाटक था', जो बड़ी आसानीसे खेल दिया जाता था, जिसका परिणाम उन सच्चे कहे जानेवाले सेवकोंके घरोंमें बखारके संचित अन्नोंका पहुंच जाना होता। लेकिन बाबू साहब अपने सेवकोंको उनकी इस तत्परताके लिये हृदयसे माना करते थे।

एक अन्य सज्जन, जो अब इस संसारसे विदा ले चुके हैं, एक दूसरी ही विशेषताके कारण प्रसिद्ध थे। उनके खजांजी, दीवान आदि कर्मचारी परस्पर सांट-गांठ करके जब उनके निकट यह प्रस्ताव लेकर पहुंचते कि खजानेके रुपये पड़े-पड़े सड़ रहे हैं, उन्हें सुखाने, साफ करने और छांटनेकी आवश्यकता है, तो सबसे पहले उनकी हितैषिता और तत्परता पर बाबू साहब अपनी कृतज्ञता प्रकट करते। प्रस्ताव तुरन्त स्वीकृत किया जाता। इस सम्बन्धकी कुल तैयारियां झट पूरी की जातीं। दरबारमें इस गुरुकार्यकी ही प्रायः आलोचना चला करती। खजानेके कुछ काले-काले सिक्के दिखला दिये जाते, जिन्हें साफ करना होता। पांच-सात दिनोंके बाद पुनः यह सूचित किया जाता कि इतने लाख मे इतने सौ या हजार रुपये सुखाने, साफ करने एवं छांटनेमें कम हो गये। बाबू साहब कुछ ऐसा भाव प्रकट करते, "अनाज या साग-सब्जीको भी तो कीड़े पड़कर दूषित कर डालते हैं! यदि इतने रुपयेमें कुछ नष्ट ही हुए तो क्या हुआ! शेष तो बचे रह जायेंगे। सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः। जो कुछ हुआ, स्वाभाविक ही हुआ। तुम्हें आश्चर्य या चिन्ता नहीं करनी चाहिये।"

पर रुपयोंकी सुखाई करनेवाले उन सेवकों पर, इस रहस्यसे स्वामीके परिचित रहनेकी बात, कहीं तब जाकर खुली, जब कि वे संसारसे विदा ले रहे थे। मरते समय आपने अपने सभी कर्मचारियोंको बुलाकर यह समझा दिया था कि "लड़कोंके आगे सावधानीसे काम करना होगा। वे कालेजों में रहकर और अंग्रेजोंसे मिल जुल कर ढीठ बन गये हैं। शहरोंकी हवाने इन्हें नास्तिक भी बना दिया है। इसलिये रुपयों की सुखाईमें कमी पड़ने पर सारे पुराने सम्बन्धोंको भुलाकर जेल तक भिजवा देनेमें कभी न चूकेंगे। मेरी बात कुछ और थी। लड़के नयी रोशनीमें पले हैं।" सम्भवतः अपने जीवनकालमें उन्हें इस प्रकार की चोंचलेबाजीमें एक अनिर्वचनीय इसका अनुभव होता हो।

काशीका 'बुढ़वा मंगल' कितना प्रसिद्ध था कहनेकी आवश्यकता नहीं। एक बार इसी अवसर पर बेतियाके बूढ़े महाराज (अन्तिम महाराजके स्वर्गीय पिता) को मजाकमें नीचा दिखानेकी दृष्टि से तत्कालीन काशी नरेशने काशीके दुकानदारोंको मनाकर दिया कि बेतिया महाराजके आदमियोंको अबीर न मिलने पाये। काशीके चतुर अबीरविक्रेता अपने कौशल द्वारा तुरत पता लगा लेते कि यह अबीर बेतियाके महाराजके लिये चाहिये। पता लगते ही अस्वीकार कर देते। बेतियावाले हैरान थे कि बात क्या है। समय थोड़ा था। बेतिया-नरेश दूसरे स्थान से भी नहीं मंगा सकते थे। निर्धारित समय आ गया। दोनों नरेशोंके बजड़ों पर अबीरकी आंधीसी आनेवाली थी, किन्तु ठीक समय के कुछ पूर्व तक जब अबीर नहीं मिल सका तो बेतियाके महाराज ने अपने आदमियोंको यह आदेश दिया कि अपनी ओरसे अबीर उड़ानेके बदले रुपये ही लुटाये जायं। आदेश का पालन होने लगा। काशी-नरेशने यह देख कर शीघ्र ही अपने बजड़ेके उनके बजड़ेके पास ले जाने की आज्ञा दी। मिलने पर कुछ मीठी मीठी चुटकी लेने के बाद उनके इस झटको दूर करानेमें समर्थ हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चम्पारनके एक व्यक्तिको मैं जानता हूं, जिन्हें भोजनके समय नित्य दो सेर चावल का भात परोसा जाता। ऊपरसे अलग अलग कटोरियोंमें विविध व्यंजन! देखने वाला यही अनुभव करता कि अन्नकूटकी तैयारी है या इसी तरहकी और कोई बात है। जिन चावलोंसे वह भात तयार होता उन्हें लोग थालीका चावल कहते। वह वह चावल केवल उस सज्जनके लिये ही बनता। भोजन करते समय आप कठिनतासे ३से ४ छटांक तकका भात खाते थे। जो बचा रह जाता उसे सेवक उठा ले जाते। जब तक आप जीतते रहे यह नियम अबाध गतिसे चलता रहा। ऋणकी खाईमें चोटी तक डूबे रहने पर भी कभी आपने इस नियममें शिथिलता नहीं आने दी।

बस्ती जिलेके एक ठाकुर साहबके पास एक कुत्ता था, जिसे वे बहुत प्यार करते थे। सुना है, अपने निकटतम व्यक्तियों को (यहां तक कि) अपने कुटम्बके लोगों तकको समय आने पर वे छोड़ सकते थे, किन्तु उस कुत्तेको नहीं। वह उनका स्नेही सहचर, सखा, सुत, एक साथ ही सब कुछ था। ठाकुर साहबसे जिसे कुछ काम निकालना होता, उस कुत्ते की प्रशंसामें कुछ कोमल कान्त पदावलियोंका प्रयोग करके ही अपना मतलब पूरा कर लेता। जीवनमें उसे सब वस्तुएं सुलभ थीं, जिन्हें किसी रईसका लड़का बेटा पा सकता है। ठाकुरसाहब उस कुत्तेके निकट रहते हुए आत्मविस्मृत हो जाते।

दुर्भाग्यवश एक दिन अचानक उस कुत्तेकी मृत्यु हो गयी। ठाकुर साहबका तो यह हाल था जैसे उनका सगा बेटाही मर गया हो। लोग उनकी इस कुकुरप्रियता अथवा दुर्बलतासे परिचित थे, अतः बनावटी समवेदना प्रकट करनेके लिये आने लगे। ठाकुर साहब रो-रोकरसब हाल सुनाते। अन्त्येष्टि स्वयं ही की थी। जब कर ठाट बाटसे श्राद्ध करनेकी तैयारी होने लगी। दसवें ग्यारहवें और बारहवें दिन ठाकुर साहब ने रोते रोते पिण्डदान दिया। ब्राह्मण खिलाये गये। आस-पासके लोग बड़े प्रायः सब निमन्त्रित थे। लोग भोज भी खाते जाते और ठाकुर साहबकी इस मूर्खता का आनन्द भी लेते जाते थे।


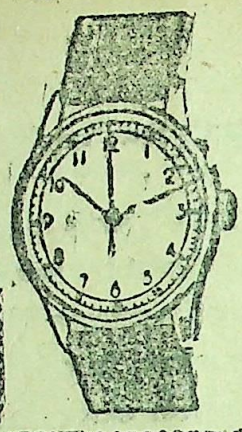

A NOVELTY WATCH
CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage as. 12. Free to 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM



# प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थ स्त्री हूं। विवाहके एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं सिलकोरिया, (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्मके दुष्ट रोगोंमें फंस गई थी। मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्दके साथ, जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिकजानेकेकारण मैंप्रतिदिनकमजोर होती जा रही थी, चेहरेका रंग पीला पड़ गया था, घर के काम काम से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेवने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराई, परन्तु किसी से रत्तीभर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य सेएकसन्यासीमहाराजहमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है जो इस आयुमें ही चेहरेका रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पतिको अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिनके सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगोंका नाश हो गया। ईश्वर की कृपासे अब मैं कई बच्चोंकी मां हूं। मैंने इस नुस्खेसे अपनी सैकड़ों बहनोंको अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधिको अपनी दुःखी बहनोंकी भलाईके लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वरने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहनके लिये १५ दिनकीऔषधि तैयार करने पर २।।।=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोगमें फंस गई होतो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथसे औषधि बना कर बी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यहमेराप्रण है कि मैं किसी बहन से दवा की कीमत अपनी असल लागतसे एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों को इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है इस लिये कोई बहन मुझे किसी और रोगकी दवाईके लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल नं० ५१ बुडलाडा जि० हिसार, पंजाब।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# खादी और कला

## आचार्य मश्रूवाला

नीचेका सवाल पूछा गया है—

"क्या एक पूरा-पूरा खादी पहननेवाला तरुण अपने कालेजके नाटक और नाचके जलसेमें हिस्सा लेनेके वास्ते मिलके कपड़ोंका उपयोग नहीं कर सकता ?

वह बरसातके दिनोंमें रेनकोट (बरसाती कोट) का इस्तेमाल करता ही है। मिलकी मसहरी तो बहुत-से खादीधारी लगाते ही हैं। छाता आदि भी मिलके कपड़ेके ही बने हुए होते हैं। तब कलाके उठावके लिये प्रसंग के अनुकूल मिलमें बने हुए कपड़े पहनने तथा रंग-भूमिकी शोभा बढ़ानेमें क्या हर्ज है।

खादीका आग्रह क्यों है और उसका भारतके जीवनमें क्या स्थान है, इस विषयमें हमारे विचार साफ हो गये हों तो ऐसे सवालोंका उत्तर मनुष्य आप ही आप पा सकता है। जब बर्तावके किसी नियमका हम उसके प्रयोजन को न समझकर सिर्फ स्थूल रूपमें गुरुआज्ञा या कुल-परंपरागत रूढ़िके रूपमें पालन करते हैं तब हमारे दिलका झुकाव इस तरहका हो जाता है कि उस नियमका जितना कमसे-कम पालन करनेसे चलाया जा सके, उतना ही करें। उसे सदा ढीला बनानेकी कोशिश की जाती है।

किसी गुरुने अपने शिष्योंको आदेश दिया कि एकादशीके दिन उपवास रखो। अपनी ग्यारहों इंद्रियोंको अपनी-अपनी खुराक छोड़कर उस दिन भगवानके ध्यानमें लगा दो। अगरचे यह सत्य है कि पन्द्रह दिनोंमें एक रोज इस तरह करनेसे विषयोंका रस तो छूट नहीं जाता; वह तो भगवानके ज्ञानसे ही छूटता है फिर भी साधकके लिये अच्छा है कि हर पन्द्रह दिन एक बार इस तरहका श्रद्धापूर्वक प्रयत्न करें।

शिष्योंने गुरुकी आज्ञाके पीछे बताई हुई विचार-धारा तो छोड़ दी, इतना ही पकड़ लिया कि गुरुकी आज्ञा है कि एकादशीका व्रत रखा जाय, उस दिन उपवास किया जाय। इन्द्रियोंको भगवानमें लगाना, यह तो जो सके, करे। गुरुने कहा है कि इस एक दिनके उपवाससे विषयका रस छूट ही जायगा, ऐसी बात तो नहीं। और भगमें मन और इन्द्रियोंको लगाना उसका रस मालूम हुए बिना होनेवाली चीज नहीं। तब उपवास रखना इतना ही व्रत ही जाता है। जब व्रतका अर्थ इतना घटा दिया गया तब सवाल खड़े हुए। उपवासको कितनी हदतक रखना जरूरी माना जाय ? क्या छोटे बच्चे भी रखें ? बूढ़े, बीमार, गर्भवती स्त्रियां, छोटे बच्चेवाली मां भी पूरा उपवास करें ? और जो दिलसे ऐसे कमजोर हैं कि बिलकुल भूखे रहनेसे बेचैन हो जाते हैं, वे किस तरह व्रतका पालन करें। तब गुरुके बड़े-बड़े शिष्य रास्ते निकालने लगे। उन्होंने सुझाया, धर्मव्रतकी सब आज्ञाओंके पीछे एक शब्द हमेशा अध्याहार रहा मान लेना चाहिये। वह है 'यथाशक्ति' जो सोलह आने व्रत नहीं कर सकता, वह अपनी शक्तिभर करे। यानी जो अन्न और जल दोनों नहीं छोड़ सकता, वह सिर्फ अन्न छोड़े। जो पूरा खाना छोड़ नहीं सकता, वह दूध खाय, फलाहार करे, या कंद-मूल खाय, चावल खानेवाला एक दिन चावलकी जगह गेहूं खाय, गेहूं खानेवाला मूंगफली, साबूदाना आदि चीजें खाये, वगैरा, वगैरा, लेकिन व्रत जरूर करें। अब क्या कहना था ? धीरे-धीरे उपवासमें बीसों चीजें खानेयोग्य बन गईं। पूड़ी, साबूदानेकी खीर, लौकीका हलुवा, कंद-मूलोंकी तरह-तरहकी चीजें, दूधकी तरह-तरहकी मिठाईका 'फलाहार' खाकर 'उपवास' रखनेका रास्ता खुला हो गया।

गुजरातके कई वैश्य परिवारोंमें ऐसा नियम है कि उनकी स्त्रियां विवाहके दिन पहनी हुई हाथी-दांतकी चूड़ियोंके अलावा फिर कभी दांतकी चूड़ियां बनवाकर नहीं पहनतीं। किसी गुरुने हाथीदांतमेंरही हिंसाको नजर रखकर ऐसी रोक लगाई होगी। लेकिन अपनी ही जातिकी दूसरी स्त्रियां हाथीदांतकी सुन्दर-सुन्दर चूड़ियां पहनें और ये बेचारी न पहन सकें, यह तो बड़ी आफत मालूम हुई। तब ऐसे घरानेमें लड़की देनेवाले मां-बापने रास्ता निकाला कि विवाहके दिन कन्याके के हाथोंमें हाथीदांतकी इतनी चूड़ियां पहनाई जायें कि वे जन्मभर उसके काम आवें।

इस तरह व्रतके रूपमें लिये हुए नियमोंको मजाक हो जाता है। अगर हम खादीका इस तरह गांधीसम्प्रदाय या अपने कुल-धर्मके चिह्नके रूपमें ही समझ कर स्वीकार करेंगे, तो उसका भी यही हाल हो सकता है।

तब हम समझ लें कि खादीका आग्रह किसी सम्प्रदाय, धर्म या कुलकी रूढ़िके तौरपर नहीं, वह हमारे देशकी आर्थिक समस्याके एक हलके रूपमें सोचा गया है। लेकिन आर्थिक पहलूके साथ ही इसका एक नतिक बाजू भी है, जिसकी वजहसे यह हल कुछ गैरमामूली और अटपटा मालूम होता है। और मानों एक साम्प्रदायिक आग्रह सा दीख पड़ता है।

यह तो एक प्रसिद्धि बात है कि दुनियामें अर्थशास्त्रियोंमें दो तरहके लोग हैं। एक वे हैं, जो आर्थिक प्रश्नोंको सोचते समय उन्हें राजकीय, सामजिक व नतिक बाजुओंसे अलग करके सिर्फ आर्थिक दृष्टिसे ही सोचते हैं। और उसी दृष्टिसे हल बताते हैं। वे कहते हैं कि दूसरे पहलुओं को उस विषय के जानकार सोचें और जो करना चाहें सो करें। हमारा कार्य केवल आर्थिक लाभ बढ़ानेका है, अच्छे-से-अच्छे तरीके बनानेके है।

दूसरे वे हैं जो उसके राजकीय, सामाजिक व नैतिक पहलुओंको नजरके सामने रखकर ही आर्थिक प्रश्नोंका हल खोजते हैं। खादीवादी अर्थशास्त्रियोंको इस शाखामें रखा जा सकता है। राजकीय-सामाजिक, नतिक आदि पहलुओंके साथ देशकी आर्थिक बातोंका विचार करते हुए वे नीचे लिखे नतीजपर पहुंचे हैं।

हिन्दुस्तानके जैसा एक देश, जो बहुत बड़ा है, जिसकी आबादी बहुत ही ज्यादा है और जिसमें तरह-तरहकी श्रेणीके लोग रहते हैं, ऐसे देशकी राज नैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने और स्थायी रखनेके लिये और उस आजादीका फायदा कोने-कोनेतक पहुंचानेके लिये और उसकी सामाजिक तथा आर्थिक दशा सुधारने तथा उसके सब लोगोंमें ज्यादासे ज्यादा समानता लानेके लिय और जिन कारणोंसे देश-देश और जाति-जातिके बीच लड़ाई-झगड़े पैदा होते हैं उन्हें जितना ही दूर कर सकें उतना दूर करनेके लिये यह जरूरी है कि (१) कम-से-कम खुराक, पानी और कपड़ा इन तीन बातोंमें देशका छोटेसे छोटा स्वाभाविक क्षेत्र बल्कि यथासंभव हर एक बड़ा कबीला भी स्वयं पूर्ण बने, यानी अपनी जरूरतें अपने आप पूरा करनेवाला बने और (२) जहांतक हो सके। उद्योग धंधेके कारखाने और कारोबार छोटे पैमानेके हों और देश भर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



फैले हुए हों, न कि कुछ स्थानों में जमे हुए, बहुत बड़े धंधे और कारखाने कमसे कम हों, और वे इसी तरह चलाये जायं, जिससे कि उसी प्रकारके छोटे उद्योग धंधों को वे गिरानेवाले साबित न हों।

अब सोचने की बात यह है कि या तो इन खादीवादी अर्थशास्त्रियोंके विचार ठीक हैं, अथवा वह गलत हैं अथवा कुछ ठीक हैं, कुछ गलत भी।

अगर वह ठीक है तो साफ है कि लोगों की कपड़े की जरूरत खादी से ही पूरी की जानी चाहिये, और इस क्षेत्रमें मिलोंका चलाया जाना बंद हो जाना चाहिये।

लेकिन क्योंकि मिलें तो हैं, और दूसरे विचारके अर्थशास्त्री और लोगों का भी बहुत बड़ा हिस्सा उनका होना ठीक समझता है इसलिये आज हमारी नजरके सामने खादी भी आती है और मिलके कपड़े भी आते हैं, और फिर जैसी ऊपर बताई हुई स्त्रियों के आगे दांत की चड़ियों की लालच खड़ी होती है, वैसी हमारे जबानोंके सामने मिल के आकर्षक कपड़ोंकी लालच खड़ी होती है। बहुत अन्दरका मन कहता है कि अरे भाई रोज नहीं तो नहीं सही वहीं कभी कभी दो घंटेके नाटक-नाचके लिये तो वह बढ़िया वस्त्र पहन ले। उसमें कला कितनी अच्छी खुल उठती है! खादीमें तो वह सारी बेढंगी हो जाती है!" उसकी बात सुन कर दिमाग सोचता है कि खादी-धारी भी कहला सके और मन की मांग पूरी करने का कोई रास्ता भी निकाला जा सके तो अच्छा, ठीक उसी तरह, जो एकादशी का व्रत छोड़ना भी नहीं चाहता और भूखका अनुभव और खाने पीनेका परहेज भी नहीं करना चाहता।

हमें ठीक सोच लेना चाहिये कि किस क्षेत्रमें और परिस्थितियोंमें हम मिलके कपड़ेका उपयोग कर सकते हैं।

एकादशीके व्रतमें ढिलाई करनेकी कितनी गुंजाइश है, यह प्रश्न जिसने निकाला, उसने तंदुरुस्त आदमीके लिये वह बात नहीं निकाली। बच्चे, बीमार, बूढ़, गर्भवती स्त्रियां, दूध पिलानेवाली माताएं आदि अस्वस्थ लोगोंके नाम से निकाली और उसमें कुछ चीजोंके लिये परवाना पा लिया फिर देखा कि उन चीजोंके जरिये खाद्य-शास्त्र की तरह तरहकी चीजें बनाई जा सकती हैं और पाककला दिखाई जा सकती है, तब तंदुरुस्ती-नादुरुस्ती का भेद हट गया और सबके लिये मार्ग खुला और वहां पर भी पाकशास्त्रकी कलाकी तरक्की आ गयी

क्योंकि आज मिल का कपड़ा मिल सकता है, इसलिये आपत्तिके समय मिलके कपड़का उपयोग कोई खादीधारी कर ले तो उस पर दोष लगाया नहीं जा सकता। उदाहरणार्थ, जो लाखों लोग अपना घर बार छोड़ और असबाब खोकर दूसरे प्रान्तों में गये हैं, उनमें अगर कोई खादीधारी भी हो और उसे मिलका कपड़ा पहनना या बगैर कपड़ेके रहना—इसीके बीच पसंदगी करने की हो तो उसका मिलका कपड़ा पहनना गैर न होगा। शौक करने या शोभा बढ़ानेके लिये वह मिलका कपड़ा पसंद नहीं कर रहा है। लेकिन, जितनी ही जल्दी हो सके वह खादी पानेकी कोशिश करेगा।

फिर, बरसाती कोट, छाता, मसहरी आदि की बात सोचें। ये चीजें शौकके लिये नहीं; रोजमर्राके उपयोग की चीजें नहीं हैं, आज के जीवन में जहां उनका उपयोग जरूरी होता है, वहां पर भी बहुत कम लोग उनका उपयोग कर सकते हैं। बल्कि, जरूरी होते हुए भी हमारे देशमें इन चीजोंका उपयोग कुछ अरसे से ही बढ़ा है; कुछ इसलिये, और कुछ इस वजहसे भी कि हाथ सूत और हाथ बुनाई द्वारा इनके योग्य कपड़ा बनाने की कला अब तक ठीक ठीक बढ़ी नहीं है, मिलोंमें बनी इन चीजोंका इस्तेमाल जरूरी होता है। दूसरे शब्दों में यह कहिए कि ये चीजें उस क्षेत्रमें आती हैं, जिन्हें बनानेके लिये मिलों को खादीवादी अर्थशास्त्रमें आज्ञा दी जा सकती है। ऐसी दूसरी चीजें भी बताई जा सकेंगी। एक बहुत जरूरी चीज मशीनका धागा है। हाथ-सूतसे वैसा धागा बनानेका अभी तक कोई व्यवसाय पैदा नहीं हुआ, इसलिये खादीके कपड़ोंमें मिलका धागा ही बर्तना पड़ता है। यह कभी हटाने योग्य होते हुए भी मिल का धागा तो फिलहाल रखना ही होगा।

लेकिन नाटक—नृत्यके लिये मिलका कपड़ा चढ़ानेकी ख्वाहिश तकलीफ हटाने या जरूरत पूरी करनेके लिये नहीं, एक शौक और शोभाके लिये है। कला को समझनेका मैं दावा तो कर नहीं सकता। फिर भी मुझे इतना तो जरूर लगता है कि आज कल जो कपड़ों, रंग और रंगीन किरणों के द्वारा रंगभूमि और पात्रोंको सजानेकी आदत चल पड़ी है, उसमें मुझे कलाकी अपेक्षा उसकी खामी ही दीखती है। सच्ची अभिनय कला पोशाक, पर्दे और रोशनियों पर अवलंबित नहीं हो सकती, बल्कि अभिनयकलामें रही हुई कमी परसे प्रेक्षकों का ध्यान दूसरी तरफ खींचनेके लिये उनका उपयोग हो सकता है। पुराने जमानेमें जब सती होने की प्रथा थी, कुछ स्त्रियां जबरदस्ती सती की जाती थीं या जोश में एक बार चिता पर चढ़ तो जाती थीं, पर सबमें इतना बल कहांसे हो कि शांति से अग्निकी ज्वालाको सह सके? उनका चिल्लाना रोना स्वाभाविक था। लेकिन सती हो और चिल्ला उठे यह दोनों कैसे साथ हो सकता है? इसलिये चिताको आग देनेके साथ ही ढोल, नगाड़ा शहनाई आदि बाजोंका और जयनादका इतना बड़ा कोलाहल मचाया जाता था कि जिसमें उस स्त्रीकी चीख डूब जाय। इसी प्रकार नटके अभिनय, ताल स्वरमें होती हुई गलतियों और मुंहपर लगाये पावडर आदिसे बनी हुई कुरूपताको ढकनेके लिये तरह तरहकी पोशाक और रंग रंग की रोशनियां और पर्दे वगैरह युक्तियां होती है। कम समझी से हम नट और प्रेक्षक दोनों उन्हें कला बढ़ानेवाले और उसके निहायत जरूरी साधन समझ बैठे हैं। यह कौन नहीं जानता कि सच्चा कलाकार बगैर किसी सजावटके भी अपनी कलाको बहुत अच्छी तरह दिखा सकता है। हम जाते हैं नट की कला देखने के लिये और फंस जाते हैं पोशाकके फैसन, रंगोंकी चमक पर्दों पर के चित्र, रंग भूमिकी सजावट आदि में। पाठक सोचें कि जो मैं कहता हूं वह ठीक है या नहीं।

यदि खादीवादी अर्थशास्त्र गलत है निकलता है तो उसको पकड़ रखनेकी हम पर कोई बांध नहीं। अगर वह ठीक है तो हमारे वर्ताव और प्रचारसे हमें अपने विचार लोगोंको समझाते रहना चाहिये और उसके अनुकूल लोकमत तैयार करना चाहिये, उसके लिये हमें खादीके विषयमें ज्यादा कड़ापन रखना होगा, ढीलापन नहीं।

---

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा का दुनियां का असल रहस्य जाननेके लिय 'फिल्मी दुनिया' पुस्तक आज ही मुफ्त मंगाइये।

पता—मधुर मन्दिर हाथरस यू० पी०

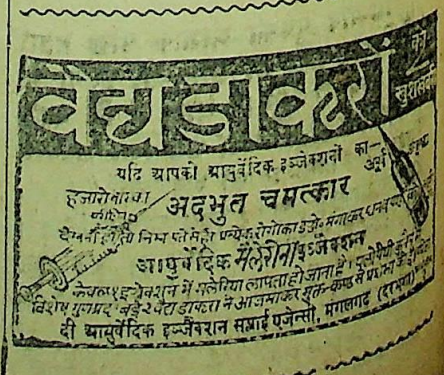


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक भाव-चित्र

# विजयकी बुनियाद

श्री पीताम्बर झा

जब कोई देश पिंजड़ेमें होता है, और निरन्तर की दासता से उस पर ऐसी लाचारी छा जाती है, कि घरों पर फूस नहीं दीखती, मकानोंमें दीये नहीं जलते; पेटको इच्छा भर अन्न और बदनको यथेष्ट कपड़े नहीं मिलते—ऊपर से कानूनके कोड़े बरसा कर जबान ऐंठ दी जाती है, मुंहमें ताले जड़े रहते हैं; तब वहां,—उस देशकी मिट्टी पर, सर से कफन लपेटकर जीनेवाली जवानियां, महानाशके बीजसे अंकुरित होती हैं, जैसे अबला, अपाश्रिता, उन्मग्न द्रौपदीके चीर की आहुति से दुःशासनकी मौत अंकुरित हुई थी। इनका प्रभाव प्रचलित धर्म, साहित्य, राजनीति, दर्शन आदि जिन्दगीके हरेक महकमेतक व्यापक होने लगता है। लोग आपसमें मिलकर एक बननेकी सोचते हैं, और मानसिक उत्पादन-द्वारा नये सिरे से शक्ति-संचयकर इनके सामूहिक बलका सहारा लिये, अपनी दासताले लड़ बैठते हैं। सृष्टिके संघर्ष की यही सेखला है, राष्ट्रके जागरण का यही इतिहास है। कोई एक चाहे कि, अपनी मर्जी से इसे बना लेगा, तो नहीं होने का; कोई एक चाहे कि अपनी मर्जीसे इसे बिगाड़ देगा, तो यह भी नहीं होनेका। बनेगा तब जब संभल कर मौके से लाभ उठाया जायगा; बिगड़ेगा तब, जब लापरवाही में, मौकेसे चूक जाया जायगा। परिस्थितियां ईजाद कर सकना इन्सानका हक नहीं, परिस्थितियोंमें बनना-बिगड़ना ही उसकी हद है।

इसी तरह, हालमें जब अपना यह देश,—भारतवर्ष, गुलामीकी आखिरी मंजिल तय कर रहा था, तब अन्य-अन्य देश-प्राण महानुभावोंके बीच, यहां एक कवि पैदा हुआ। समर्थ होकर उसने देखा, कि गांधी नामक एक ऐसा सत्पुरुष यहां आया हुआ है, जिसने अपने तपोबलके प्रभावसे अहिंसात्मक माहात्म्य प्रचारित कर, बच्चे-बच्चे को उसके भरोसे जीनेका ढंग देना चाहा है, और बहुत अंशोंमें सफल हो, लहर को रोककर गिरदाब पर आसन जमाये मुस्करा रहा है। इसमें कोई शक नहीं, कि अगर दुनियाके तमाम लोग अहिंसाके नाम पर जीना शुरू कर दें, तो जीवन प्रेम और सेवाका महान क्षेत्र बननेसे बाकी न बचे; पर यदि इसका प्रसार संसारके एक कोने तक ही सीमित रह गया तब जरूरी तौर पर, यह एक दिन उसे भलाई के बदले बुराई दे जायगी। भगवान बुद्ध ने भी अहिंसाकी महिमा गा-गाकर, लोगों को राह दिखाई थी, चूंकि उस समय धर्माचरणके लौकिक संस्कारोंमें, हिंसा इतने ज्वलंत और उत्कट रूपमें समावेशित थी, कि मालूम पड़े साक्षात मरण त्यौहार मना रहा हो। किन्तु आज वैसी बात नहीं है; आज हमारी बलि न तो देवी-देवताओं को खुश करने के लिये दी जाती है, न उतने संकुचित दायरे तक हमारा कारोबार रह गया है; बल्कि पेटकी ज्वालाके आगे, एक दूसरेको मार-काट कर अपनी-अपनी भूख मिटानेको हम समूची दुनियामें फैल चुके हैं। और इसलिये, जबतक पेटमें ज्वाला है, मस्तिष्कमें चिनगारियां हैं, हाथमें नाखून और शरीरमें बल है, तबतक हर कोई पेट के खातिर परमार्थ को भूलकर अहिंसा के नकाबमें तड़प-तड़प कर मरने से इन्कार ही करता रहेगा।

सो, इन सब कारणवश, कविके सिद्धान्तों का मेल-जोल गांधीजीके अहिंसात्मक प्रयोगों से नहीं हुआ। प्रत्यक्षतः यह बात उसके ध्यानमें आयी कि यदि इसे रोका न जा सका, तो गांधीजीकी अहिंसा नीति, देशको एक दिन बुजदिल बनाकर ही दम लेगी। जो मरणासन्न है, वास्तवमें उसे तो केवल जीनेकी चिंता है, जहरका घूंट भी दवामें डाल कर हलकसे नीचे उतारनेकी कहो—बेहिचक उतार लेगा; किन्तु जिन्हें जिलाने की फिक्र है, उनके लिये यह बहुत जरूरी होना चाहिये कि दवामें कोई ऐसा पौष्टिक पेय भी घोलें, जो चंगा करनेके साथ-साथ रोगीको अपनी पुरानी तन्दुरुस्ती हासिल कराता जाय।

फिर भी, इस नयी दिशामें कदम उठानेसे पहले, कविने बार-बार इस समस्या पर गौर किया, कि ऐसा करते हुए वह समय दशाके विपरीत कोई गलती तो नहीं दुहरायेगा, और बार-बार ही उसकी प्रेरणा उसे विश्वास दिलाती रही कि, जबतक प्राणों की रक्षामें शरीरस्थ इन्द्रियां, अपने कर्मराय व्यवहारों से मस्तिष्क के ज्ञान को उलझाये रखेंगी, तबतक जीवनके बीचसे संघर्ष नामक वस्तु उठने की नहीं, तबतक जीवमात्र हिंसा से पल्ला नहीं छुड़ा पायेगा।

यों कहने को कोई कुछ भले ही कहा-जाय, परन्तु अगर यह सच है, कि मनुष्य की स्थिति कर्मसे कर्मकी इन्द्रियोंसे और इन्द्रियों के ज्ञान से रक्षित है, तो बेशक इसे भी सच होना होगा, कि ज्ञानके मूलकी स्थिति साहित्यसे, साहित्यकी रस से, रसकी काव्य से और काव्य की कवि से रक्षित है। हमारी चेतनाकी संसृतिको झंकृत कर, कवि अपनी सीधी-सादी दो पंक्तियोंमें हमें इतना कुछ दे जाता है, जो बड़े-बड़े साहित्यिक अहारथी, अपनी बृहतकाय पुस्तकोंके जरिये नहीं दे सकते। इसका राग प्रकृतिके राग की नाईं मधुर और अमोघ है; इसकी ध्वनि आगकी प्रसिति की नाईं विद्युत और प्रोज्वल है—नसों में घुसी, कि शरीर में व्याप्त।

अतः उक्त कवि देशोद्धार की प्रणम्य विधियां सोचनें में तत्पर और संलग्न हुआ। प्रत्यक्ष जगतसे भागकर उसकी साधना अदृष्ट लोकको पहुंची, और उत्तालंभ-भरे शब्दोंमें कल्पनाके आगे विनीत भावसे आग्रही हुई—

व्योम-कुंजों की परी अपि कल्पने, हे
भूमिको निज स्वर्ग पर ललचा न, हैं
रुक न सकती मृत्तिका आकाशमें
शक्ति है, तो, आ, बसा, अलका यहीं

कविके मंत्रोच्चार से, कल्पनाको उसके मानस-पट पर आविर्भूत होना पड़ा। तत्क्षण वह आई, मुस्कराते-मुस्कराते कवि के आशयको जानना चाहा, बोली—मैं प्रस्तुत हूं कवि, कहो क्या आज्ञा है?

आज्ञा नहीं, अनुरोध समझो देवि! अपनी दीनता पर, रोनेको, तुम्हें आमंत्रित किया है। यदि तुम्हारा पंथ और तुम्हारे कार्य-क्षेत्र स्वर्ग, अपवर्ग और व्योमादिके सुनहले, अज्ञेय लोकों तक ही सीमित रहते, तब आज हम न तुम्हें जानते, न अपनी सहायता को ही पुकार सकते; किन्तु मर्त्यपर तुम्हें आसन्न पाकर जब हम देखते हैं कि अन्यत्र भू-खंडोंके व्यवहारोंमें अवतरित हो, तुमने उन्हें सुख-समृद्धि प्रदान की है, तब जी दुःखता है कि हमारे भाग्य पर आंखें मूंदे क्यों बैठी हो? युग बीते कि तुमने इस भारतको परित्यागा और हम रोते-बिलपते अपनी विवशतामें मारे-मारे फिरते रहे हैं। क्या वे दिन अबतक नहीं आये, कि तुम हमारे अपराध क्षमा कर, हमें गले लगा लो, जो पूर्ण है, शाश्वत है, उसकी उदारता इस भांति एकांगी और अनित्य संलिप्तिसे, मर्त्योंका निपटारा करे, यह बात समझ में नहीं आती।

वास्तवमें यह तुम्हारा भ्रम और मेरे प्रति अन्याय होगा कवि, यदि तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मुझे इतनी क्षुद्र संज्ञासे संबोधित करोगे। शरीरके अन्दर प्राणोंके नाम से जो असंख्य उजियाला है, व्यक्ति-व्यक्ति के अन्दर, उसकी मानस-लहरीमें, मैं उसी उजालेकी तरह मर्यादित हूं, जसे एक ही ज्योति-खंडसे जलाये जाने पर, भिन्न-भिन्न आस्था और अस्तित्वके प्रदीप एक-सम प्रकाश नहीं दे सकते, उसी भांति मेरे एक भावसे सबोंमें प्रविष्ठ होने पर भी, उनके ज्ञान-मंडल की न्यूनाधिक समृद्ध राशियां, एक समान फल नहीं ला सकतीं। जिनकी मेधा जितनी ही अधिक सम्पन्न और तेजस्वी है, उन्होंने उतनी ही, दृढ़तासे मुझे पकड़ा है और उतने ही प्रस्फुट तथा बुलंद तरीके से जिन्दगी को शक्ल देनेमें समथ हुए हैं। मेरी जो क्षमता थी, मैंने तुम्हें बतलाया। कहो, इसके विपरीत मुझे दोष दे सकोगे?

दोष, मैं देता नहीं, न कदापि दे सकूंगा। अगर ऐसे भाव मेरी भाषा से लक्षित हुए, तो क्षमा करना--आरत कारहिं कुकर्म। हां, आह्वान किया था, कि अपने लोकमें जाने देकर मुझे अपनी समस्या का समुचित संधान अन्वेषित करनेकी आज्ञा प्रदान करो।

आज्ञा? आज्ञा काहेकी कवि? मैं तो बस तुम लोगोंकी ही हूं। हमेशा द्वार खुले हैं। चलो, आओगे मेरे साथ? और कवि भावनाके पंख लगाकर, ज्ञान-मार्गसे कल्पना-लोक में उड़ा। उड़ते-उड़ते जब मिट्टीकेसारे दृश्य उसकी आंखों से ओझल हो गये, पर मनस्तापों को सुलझाव देनेवाला उसे कोई तत्वन मिला, तब निराशा में उसने और ऊपर की राह ली। सीधा-सीधे स्वर्गमें जाकर योगेश्वर भगवान कृष्ण के चरणोंसे लिपटेगा। उनसे प्रार्थी होगा, कि भगवन, जिस गो-लोक पर तुम बांसुरी बजा आये हो, गौएं चरा आये हो, द्रौपदीको चीर और अर्जुनको गीता दे आये हो, उस पुण्य भूम आर्यावतपर आज कलीवों का समूह इकट्ठा हो गया है, दानवोंने वहां बेहद उत्पात मचा रखा है, प्रभो, एतदर्थ, शरणागत हूं--पाहिमाम।

कवि अपनने संकल्प में सोचता-विचारता आगे बढ़ा जा रहा था। ऊपर निस्सीम व्योम, मध्य में वह, चिन्ताकुल उसकी विचार-धारा और विरहाकुल दो आंखें, जैसे पद-पद पर कुछ ढूंढ रही हों, कुछ खो रही हों। खोने-पानका यह संसृष्ट विनियोग, कितना प्रियदर्शी और आत्मभू है--शरीरको प्राणों में बांधकर लालसाके वृत्त खींचता है, कर्मका केन्द्र और आसक्ति की तृज्या बनाता है; मानों मनुष्यको लेकर उसके जीवनका मार्ग परिष्कार करनवाला कोई अज्ञरूप सूत्रधार हो।

कवि ज्यादा दूर नहीं गया होगा कि उसकी दृष्टि अपनी बराबरी में ऊपर तक उठी हुई, अमल-धवल, श्वेतकाय, एक दीर्घवस्तु से टकराकर चकाचौंध हो गयी। सूयदेवकी अरुणाभ, बाल-रश्मियां उससे खेल रही थी, जिनके प्रतिपन्न प्राणों की स्वच्छन्द रंगरलियां, वहां विद्युन्मय विम्ब-प्रतिबिम्बोंमें विलसित और प्रकीर्ण थीं, कि विस्मय और उल्लासके आत्मानन्दमें वह अपनी मनोव्यथा खो बैठा। भीतर-बाहरसे ओत-प्रोत होता हुआ पलभर वह रुका और कल्पनासे जिज्ञासा की--शून्य में अवस्थित, यह श्वेतांग, उतुंगकाय कौन, कल्पने?

--पहिचाना नहीं, कवि? तुम्हारे भारतके शीश-मुकुट, गिरिराज हिमालय यही हैं, न?

--गिरिराज हिमालय! हमारी संस्कृतिके परम-पिता, धरतीके अखंड गौरव,--विश्व-वन्द य हिमालय! उफ! मैं कहा भटका जा रहा था! रुको, मुड़ो, कल्पने! अब और आगे नहीं जाना है ले चलकर मुझे इनके चरणों पर पटक दो। इनकी समाधि लगाऊंगा। अपनी विपदा सुनाऊंगा, इन्हें।

कल्पना रुकी, मुड़ी और कविको गिरिराज की सेवामें उपस्थित किया।

क्षणभरमें उमड़ा-उमड़ा कवि, ध्यानावस्थित हो, समाधि लगा बैठा। उसका कारुणिक आत्म-निवेदन शल-तटीमें गूंज-गूंज कर गिरिराज के समक्ष प्रतिध्वनित होने लगा --

मेरे नगपति, मेरे विशाल!
साकार दिव्य गौरव विराट,
पौरुषके पूंजीभूत ज्वाल!
--देख तो बटी, कौन टेर सुनाने आया है?

गिरिजा दौड़ी-दौड़ी आयी और देख कर फिर दौड़ी-दौड़ी वापिस जा पितासे बोली--भारत भू का कोई तपस्वी कवि तुम्हारा ध्यान कर रहा है, पिता!

भारत भू का तपस्वी! इस घोर कलियुग में वहां कौन तपस्वी रह गया है, जो आयेगा? चल तो, देखूं।

आकर उन्होंने देखा, अपनी समाधि में लीन कवि उनसे कहता जा रहा था--हे मौन तपस्यालीन यती, पल भरको दृगोन्मेष करते ही प्रत्यक्ष देखोगे कि जिस पुण्य-भूमि पर गंगा-यमुनादि के अमिय स्रोतों के रूपमें तुम्हारी करुणा की अजश्र रस-धारा फूट बही हैं, उस पर सम्प्रति कैसा कराल संकट आ पड़ा है। निरंतर दासता के बंधनमें जकड़ी वह आज मुर्दों की एक घनी बस्ती बन गई है। वहां, अवधमें न कोई राम दीखता है; वृन्दाबनमें, न कोई घनश्याम--कपिलवस्तुमें न कोई बुद्ध दीखता है; मगधमें, न कोई अशोक--वैशालीमें न लिच्छिवियोंकी शान दीखती है; मिथिलामें, न कवि विद्यापतिके गान। इस भांति प्रत्यह हम संकीर्ण और अपहृत होते चले जा रहे हैं। अतएव हे महिमामय शैलराट! मेरी प्रार्थना है कि तुम मौन त्यागकर, ऐसा हुंकार भरो, कि कुहासा फट जाय, प्रमाद भागे और जड़ता से हम उन्निद्र हों। अपने लिये आज हम धर्मराज युधिष्ठिर की कामना नहीं करते, उनका सत्य-बल हमारे कलैव्यको उत्तरोत्तर उत्साहित करेगा, उन्हें स्वर्ग जाने देने से न रोक कर गदा और गाण्डीव-धारी भीम-अर्जुनके अजेय बल-विक्रमका सहारा प्रेषित करने की हम पर दया करो। तुम्हारा यश किरीट श्वेत-पुंज कैलाशधाम, देवादिदेव महादेव का पुनीत आवास है। कृपया उनसे हमारी विनती ज्ञात कराओ कि आज हम उनके ताण्डव के उपासक हैं। हर-हर बम-बमके महोच्चारके बिना हमारा परित्राण नहीं।

विधिवत प्रार्थना समाप्त कर, कवि आत्म-ज्ञानके प्राप्त्यर्थ समाधिमें लीन रहा

इस बीच गिरिराजका संदेश लिये, मरुत आकाशवाणीमें मुखरित हुआ--तुम्हारे साथ मेरी पूर्ण सहानभूत है कवि इस दुःखसे मेरी चिन्ताका भी अन्त नहीं है। यथार्थतः ईश्वरने मुझसे श्रेष्ठ गौरव सृष्टिके किसी अन्य भू-खंडको प्रदान नहीं किया, किन्तु नियंतके मैं भी उतना ही समीप हूं जितना एक क्षुद्र कीट है। अतः यदि यह जानकर कि मेरे समान शक्त-पुंज धरती पर दूसरा नहीं है--मेरी असमर्थताके कारण, मुझे उपालंभ देने आये हो, तो यह जानकर, कि मेरे समान कठिनाइयां भी दूसरोंकी नहीं हो सकतीं--तुम्हें संतोष धारण करना होगा। जड़ चेतनमें जो जितना ही समर्थशील और पूर्ण है, उसका दुर्भाग्य भी उतना ही निशात है और निर्मम है। शेष नागकी अंगड़ाई, चरणों के सहज आघातसे नाशवान दूर्वा-दलको क्षति नहीं पहुंचाती, गगनचुम्बी प्रासादों को धराशायी करती है। ऐसी दशामें धीमन्त व्यवहित और मुमुर्ष नहीं होते। जीवनके साथ प्रतिदिन हम मृत्युके लिये आगे बढ़ते हैं, उसी भांति सुखके साथ हमें दुःखके लिये तैयर होना होगा। यदि किसी दिन तुम्हारे बीच राम, कृष्ण, बुद्ध--आदि महापुरुष अवतरित थे और आज नहीं है, तो जो आज हैं, वे कल किस विधि रह पायेंगे। स्मरण रखो, एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा, जब स्थिति बदलेगी। कर्मके मार्गसे तुमने उन्हें पाया था, कर्मके

(शेष २७ वें पृष्ठ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कविवर 'बिस्मिल' की हाजिरजवाबी

श्री भगवतीप्रसाद सिन्हा, एम० ए०, प्रयाग

हैरतमें है कोई तो कोई पढ़ के दंग है

'बिस्मिल की शायरी में भी 'अकबरकारंग है।

कवियों और शायरोंकी हाजिरजवाबी के किस्से लोग बड़े उत्साह और चावसे सुनते-सुनाते हैं। संसारकी जितनी भाषाएं हैं, उनके कवियोंने मौकेकी ऐसी बातें कही हैं, और हाजिरजवाबीके ऐसे उदाहरण पेश किये हैं कि लोग सुनकर चकित रह जाते हैं। ईरानी शायरोंने तो इसी हाजिर-जवाबीकी वजहसे वह यश कमाया कि सदैवके लिये अमर हो गये। बादशाहोंके दरबारोंमें पहुंच वे मौकेकी बातें ऐसे रोचक ढंगसे आमने-सामने कह देते, कि बादशाह प्रसन्न होकर कभी तो उन्हें चांदी-सोनेसे तुलवा देते, और कभी जवाहरात और जागीरें देकर उनका सम्मान करते।

भारतवर्षमें भी उर्दू शायरोंने दिल्ली और लखनऊके दरबारोंमें हाजिर-जवाबीके वह जौहर दिखाये हैं, कि उर्दू-साहित्यका वह एक विशेष अंग बन गया है। लेकिन अब तो जमाना बदल गया। बादशाहों या नवाबोंके खुश करनेसे कोई शायर नाम नहीं पैदा कर सकता, अब तो जनताकी खुशीसे ही शायर सर्व-प्रिय हो सकता है। उर्दू शायरोंमें 'अकबर इलाहाबादी ने अपनी शायरीमें वह चुटकियां ली हैं, कि सुननेवाला गुदगुदीके साथ-साथ दिल-ही दिलमें अपनी त्रुटियोंसे भी परिचित हो जाता है। यही हाल कविवर 'बिस्मिल' इलाहाबादी की व्यंगात्मक शायरीका भी है। उनकी कविता पढ़नेसे अकबर इलाहाबादी का ही धोखा होता है। अगर नाम न बताया जाय तो यह समझना कठिन हो जाय कि 'अकबर' बोल रहे हैं या 'बिस्मिल'।

'बिस्मिल साहबकी व्यंगात्मक कविताके कुछ नमूने देखिये।

'राशनिंग स्कीम' की विपदाका रोना सब लोगोंको है। कभी गेहूं नहीं मिलता, तो कभी चावल। कभी जौ पर ही संतोष करना पड़ता है, तो कभी चनोंके लिये नाकों चने चबाना पड़ता है। कभी सड़े आटेकी चपातियां मयस्सर होती हैं, तो कभी चावलपर ही गुजारा करना पड़ता है। एक दिन मित्रमंडलीमें कुछ लोग बैठे थे और राशनकी हाय-हाय कर रहे थे। किसीने कुछ शिकायत की तो किसीने कुछ रोना रोया। बिस्मिल साहब भी वहां उपस्थित थे। उनसे भी न रहा गया। कह उठे—

हजरते दिल आप हैं नादान, हम समझायें क्या
गमहीजबमिलताहै खानेकोतोखानाखायेंक्या

सभी फड़क उठे और बात गईगुजरीहुई।

'राशनिंग स्कीम' का आरम्भकाल था। दिनभरकी रेल-पेलके बाद गहेके दाने दर्शनको नसीब होते थे। मगर हमारे साहब बहादुरोंको कोई मुसीबत न थी। वह अपने देशको अव्वल दर्जका अनाज पार्सल बना कर भेजते थे। इसी मसलेपर एक जमघटमें बड़ी गर्म-गर्म बातें हो रही थीं, बातका बतंगड़ होता जाता था। इसी समय 'बिस्मिल' ने वह नपी-तुली बात कह दी कि सब लाजवाब हो गये—

उनके खातिर केक, बिस्कुट, चाय कटलिसडीम है।
हम गरीबोंके लिये बस राशनिंग स्कीम है।

इस महंगी और लड़ाईके जमानेमें अगर एक चीजका रोना होता तो कोई बात न थी, मगर यहां तो आये दिन कोई न कोई चीज गृहस्थीकी घटी हुई ही नजर आती है। उन्हीं दिनों मिट्टीतेलकी कमी ऐसी प्रतीत हुई कि जिसे देखिये, दो पैसे, चार पैसेके तेलके लिए डिब्बी-डिब्बा, गिलास-बोतल, कटोरा लिये मिट्टीतेलकी गाड़ीकी राह देख रहा है। ऐसे ही मजमेके सामने एक दिन बिस्मिल साहब भी आ निकले। यह मालूम करके कि मिट्टीका तेल बंट रहा है, उसी समय कहा—

बोतल है सबके हाथमें क्या रेल-पेल है
अमृतसे बढ़कर इन दिनों मिट्टीका तेल है

मुसीबतें जब आती हैं तो अकेले नहीं आतीं। कभी किसीका दुखड़ा है, तो कभी किसीका रोना। इसी महंगाईमें एक बेचारेकी जोरूको मौतने आ घेरा। वह दुखिया बाजार गया कि कफन लाय। दूकानदारोंने जो 'नहीं' का सिलसिला शुरू किया तो 'हां' का नामतक न लिया। आठ-दस दूकानोंके देखनेके बाद एक दूकानपर वह बैठकर रोने लगा। सामनेके दूकानदारने पूछा— भाई, क्यों रोते हो? उसने सारी कहानी सुनायी। दूकानदारको तरस आ गया। उसने बड़ी मेहनत और दौड़-धूपके बाद उसके लिये कफनका कपड़ा ला दिया। भला इन सब बातोंका असर एक कविपर क्यों न हो। इस बातको सुनकर बिस्मिल साहबने कहा—

क्या हाल कहें आप से हम अपने वतनका
बाजारमें मिलता नहीं कपड़ा भी कफन का

राशनकी तकलीफें अभीतक दूर नहीं हुईं। भगवान जाने, कहांका कूड़ा-करकट अनाजके साथ मिलकर बिकता है कि उसका बिनना-बनाना और साफ करना एक दर्दसर और है। मगर खैराते खड़े दाने तो बुने और साफ किये जा सकें हैं लेकिन आटेकी खराबी तो किसी तरह दूर नहीं की जा सकती। न उसको धोया जा सकता है, न बुनकर साफ किया जा सकता है। उसकी बदबू तो किसी तरह दूर ही नहीं की जा सकती। एक दफा अटा ऐसा रद्दी मिला कि बड़े-बड़े पत्थर हजम करनेवाले हाजमाकी शिकायत करने लगे उस समय उसकी खराबी दूर करनेके लिये कमेटियां हुईं, सभाएं कीगयीं, जिनमें बड़े बड़े व्याख्यान हुए, मगर अमृतबाजारपत्रिका में निकला हुआ निम्नलिखित 'शेर' का असर सबसे ज्यादा हुआ—

समझे थे कहां हम ऐ बिस्मिल
ऐसा भी जमान आयगा
पायेंगे वह आटा खाने को
जो आटा हम को खायेगा

किलनर होटलमें लोग जमे हुए थे। खान-पानकी धूम थी। बिस्मिल साहब भी एक साहबकी बगलमें बैठे थे। थोड़ी देरमें एक हिन्दुस्तानी साहब आये और खुदा जाने क्या बेहरेसे कहा। वह बेचारा कुछ प्लेट और चिम्मच लेकर आया देखकर, जिन्हें देखकर वे ऐसे बिगड़े जैसे चूनेपर पानी छिड़क दियाजाय। डांटकर बोले—अबे, कांटा-छुरी ला, तुझ को कोई तमीज नहीं है। 'बिस्मिल साहबने उनके तेवर बोल-चाल और रंग-ढंग देखकर कहा—

वह आदी हो गये कांटा छुरीके,
यहां खानेमें भी कांटा छुरी है।

दोस्तोंने जैसे ही यह शेर सुना, ऐसा जी खोलकर कहकहा लगाया कि सारा हाल गूंज उठा और साहब बहादुर कुछ झेंपसे गये।

माघका महीना था। माघके प्रयागका क्या कहना। कड़ाकेका जाड़ा पड़ रहा था। यात्री झुंड-के-झुंड चले आते थे। बाजारमें उनका एक मेला-सा लगा था। इसी महीनेमें बिस्मिल साहब एक दूकानपर बैठे थे। कपड़ोंपर यात्री लोग टूट पड़ते थे। इसी भीड़में एक साहब कोट-पतलून और हट पहने हुए दूकानपर आये। उनके माथेपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कवि

श्री रमेशचन्द्र झा

कवि वह, जिसके चरण-चिन्ह पर, निर्भय समय चला करता है
कवि वह, जिसके बाहु-पाश में ही इतिहास पला करता है
कवि का सबसे बड़ा हाथ है, दुनिया के उत्थान पतन में
कवि का सबसे बड़ा हाथ है, दुनिया के संहार सृजन में

वह दुनिया का गौरव है ही, युग-युगका वरदान वही है
और साथ ही साथ हमारे नवयुगका दिनमान वही है
मुंदे नयन तो रात हो गयी, और खुले तो हुआ सबेरा
घेर न सका उसे घेरे में, सीमाओं का सीमित घेरा

उसके अधरोंकी डाली पर, नित नवीन पल्लव उगते हैं
उसके नयन हरी दूबों पर शबनम के मोती चुगते हैं
यह सारा संसार उसीका, ये सारे निर्माण उसी के
विश्व-विहग के कंठ-कंठ से, फूट रहे हैं गान उसी के

आज भले कोई कुछ कह दे, पर, अगला मैदान उसीका
और कभी भी झुक न सकेगा, अभिमानी अभिमान उसीका
कवि की एक अलग सत्ता है, देश-कालका नेता कवि है
कविकी वाणी जगकी वाणी, विजयी काल विजेता कवि है

लाख शहीदों के लोहू से भी अमूल्य है उसकी स्याही
जब जी करता रच लेता है, अपनी विभा- सृष्टि मनचाही
उसकी कविता ही मानव को, एक नया जीवन देती है
उसकी कविता ही जीवनको, नित्य नया यौवन देती है

वही शांतिका मूल मंत्र है, और प्रलय तूफान वही है
कितनी जटिल समस्याओं का, एक अमोघ निदान वही है
कहीं फूलसे भी कोमल है, और कहीं पाषाण वही है
सरिताकी लहरें, सागरका उठता हुआ उफान वही है

वही मुहम्मद है, गौतम है, ईसा का अवतार वही है
और हमारे देश धर्म- के, हाथोंकी तलवार वही है
उसका जीवन अजर अमर है, उसका यौवन अजर अमर है
उसकी वाणी जगकी वाणी, उसका स्वर ईश्वरका स्वर है

---

चन्दनका टीका लगा हुआ थापतलून और हटके जोशमें हजरतने दूकानके किसी नौकरको बुलाकर कुछ मंगाया। वह बेचारा काममें इतना निमग्न था कि उनकी आवाज न सुन सका। दूसरी बार उन्होंने डांटते हुए कुछ मांगा। इसपर लालाजीने कहा बाबूजी आप इसी कुर्सीपर बैठ जायें। वह फुरसत पा जाय तो आपकी सुने। उन्होंने बिगड़ते हुए कहा, मैं बैठ चुका जल्दी कीजिये नहीं तो मैं जाता हूं। लालाजीकी बुजुर्गी और बाबूजीकी गर्म बातोंने बिस्मिल साहबके दिलको बड़ा दखाया। वह बाबूजी की तरफदेखकर बोले—

कोट पतलून और टीका है।
इससे फैशन का रंग रंग फीका है।

आजकल मार-धाड़के जमानेमें भी बिस्मिल साहब वह मौकेकी बातें अपनी कवितामें कह जाते हैं कि उनको बगैर याद किये जी नहीं मानता। एक रोज मित्रोंने बिस्मिल साहबसे अनुरोध किया कि आप आजकलके साम्प्रदायिक दंगोंके बारेमें अपने विचार कवितामें प्रकट कीजिये। तबीयतमें आ गयी. कह उठे:—

हिन्दू भी मुसलमान भी रस्तेसे भटक कर
मैदाने तरक्की की सड़क कूट रहे हैं
आपसकी लड़ाईसे हुआ यह नफा बिस्मिल,
रिश्ते जो मुहब्बत के थे वह टूट रहे हैं

और सुनिये—

नाम दैरो हरम का है लेकिन,
शेख वह है न वह बरहमन है।
वह जमाना अब आ गया 'बिस्मिल',
आदमी आदमी का दुश्मन है।

महात्माजीके विचारको क्या ही अच्छा रूप दिया है —

खयाल आता है दिलमें कब हमारा,
सुनें क्यों हमसे वह मतलब हमारा।
हमें है उन्स हर मजहब से बिस्मिल,
नहीं है कोई भी मजहब हमारा।

'चांद'के पुराने संपादकने जब साप्ताहिक 'भविष्य' निकालनेकी तैयारी की तो बिस्मिल साहबसे कहा कि कोई शेर ऐसा लिखकर हमको दीजिये, जिसको हम 'भविष्य'के शुरूमें बराबर छापा करें। उन्होंने उसी समय उनको लिख दिया:—

क्या कीजियेगा हालेदिले जार देखकर।
तलब निकाल लीजिये अखबार देखकर।

कभी-कभी कविताकी दो एक पंक्तिसे वह काम निकल आता है जो बड़े-बड़े प्रार्थना-पत्रोंसे भी नहीं निकलता। एक साल जेठकी गरमी अपना रंग जमाये हुए थी। इलाहाबाद आगकी भट्टी बना हुआ था। उस जमानेमें बिस्मिल साहब रायबहादुर पं० बृजमोहन व्यास (एक्जिक्यूटिव अफसर) की पेशीमें थे। उनके कमरेमें पंखा न था। वे काम करते-करते गर्मीसे परेशान हो जाते। एक दिन व्यासजीने पूछा, कहिये बिस्मिल साहब, क्या हाल है। बिस्मिल साहबने कहा—

जेठ की दोपहर में तपता हूं,
फिर भी साहब का नाम जपता हूं,
यह तखल्लुस का है असर बिस्मिल,
दिन हो या रात तड़पता हूं।

दो शेरोंकी बदौलत दो ही दिनोंमें बिजलीका पंखा उनके कमरेमें लग गया और खसकी टट्टीपर छिड़काव होने लगा।

बिस्मिल साहबके घरके बाहरी बरामदे में एक तख्ता पड़ा हुआ था। उनसे मिलनेवाले उसपर आकर बैठते-उठते और बातचीतका मजा लूटते थे। बिस्मिल साहबसे एक दिन उनके एक मिलनेवालेने कहा कि जनाब, आपने कुर्सियां क्यों नहीं रखीं। बिस्मिल साहबने तुरत जवाब दिया

इससे जाहिर है कि थे 'बिस्मिल'
कभी हम बादशाह,
आज तक रक्खा हुआ है,
तख्त घरके सामने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# गांधी स्मारक फण्ड::एक पुण्य आयोजन

प्रो० जे० सी० कुमारप्पा

हम सब समाजके सदस्य हैं—गुट बना कर रहते हैं। जैसे एक बड़े परिवारमें कोई सदस्य थोड़े दिन रहकर फिर मर-कर चला जाता है, पर परिवार हमेशा कायम रहता है, वैसा ही हाल समाजका है। व्यक्तियोंके आने-जानेकी पर्वाह किये बिना खानदानकी हस्ती बनी ही रहती है। इसलिये जो काम हम पूरे खानदानकी भलाईके लिये करते हैं वे एक जिंदा व्यक्ति के लिये किये गये काम की अपेक्षा अधिक टिकाऊ होते हैं।

गांधीजी पिछली ३० जनवरीको चल बसे। उनकी देह हमसे छिन गई पर उनके जीवन और कामोंका शाश्वत भाग हम हमेशा जिन्दा रखना चाहते हैं। गांधी नेशनल मेमोरियल फंड इसीके लिये खड़ा किया गया है। इस फंडका काम सिर्फ ऐसे कामोंके लिये धन। कत्र करना है जो गांधीजीके जीवनके आदर्श रहे थे।

गांधीजीने जो काम किया वह सिर्फ हिन्दुस्तानके गरीबोंके लिये ही नहीं, बल्कि सारी दुनियाके दलितोंकी भलाईके लिये किया। इसलिये जो भी थोड़ा बहुत काम हम अपने कोनेमें बैठे करते हों, हमें यह याद रखना चाहिये कि, वह सारी दुनियामें चलनेवाले एक बड़े कामका अंग है। ऐसा होनेसे लोग सिर्फ अपने काममें ही दिल-चस्पी नहीं लेंगे पर वे साथ-ही-साथ दूसरोंके कामोंसे भी संबंध जोड़नेकी कोशिश करेंगे।

ऐसा करनेका एक तरीका यह है कि एक मिली-जुली संस्थाके जरिये हम अपनी सेवाएं विचार और धनके द्वारा देकर उसमें हिस्सा बंटायें।

गांधी मेमोरियल फंडका मकसद यह है कि बहुतसे लोग मिलकर एक ऐसा समाज बनानेमें मदद दे सकें, जो ऐसे मानव-परिवारोंसे बना हो, जसे कि गांधीजीकी कल्पनामें थे। इस कामको पूरा करनेके तीन तरीके हो सकते हैं।

अव्वल तरीका तो यह हो सकता है कि हम अपना पूरा ध्यान और समय ऐसे कामोंमें लगा दें, जो गांधीजीके आदर्शोंके अनुकूल थे और अपनी रोजमर्राकी जिंदगीमें उनपर अमल करके उनके फैलावमें लगे रहें।

इसके दर्जेमें हम अपनी जिंदगी ही ढंगसे बिताते हैं और अपने काम-काजमें जितना कुछ कर सकते हैं, उतना कायदेसे और धार्मिकतासे करते हैं। कभी गांधीजीके आदर्शोंके खिलाफ नहीं जाते।

तीसरी श्रेणीमें हम अपने आप खुद बहुत-कुछ नहीं कर पाते, पर उनके लिये जरूरत पड़नेपर धन या सामग्रीके रूपमें मदद देते हैं, जिससे कि दूसरे उस कामको पूरा कर सकें।

इन तीनों तरीकोंपर अधिक रोशनी डालना जरूरी है और उनका मतलब साफ होनेपर हम निश्चित कर सकते हैं कि इनमें से एक या सब मेंसे कौन-सा हमें चुनना है।

वह एक चीज जिसके लिये गांधीजीने जिंदगी भर काम किया, सत्य-अहिंसाका प्रचार है। यह चीज हमारे दैनिक व्यवहार और आपसके बर्तावमें हमेशा आती है। मसलन ग्राम-उद्योग-संघमें हमारा काम मुख्यतः यह देखना है कि आर्थिक जीवनमें सत्य, अहिंसाका राज्य आ जाय। उदा-हरणार्थ अगर आप जाकर ताड़ी पीते हैं तो आप अपने परिवारपर घोर विपत्ति लाते हैं। इसलिये ताड़ी पीना इस सिद्धान्तके खिलाफ है। यह आसानीसे समझ लिया जाता है कि एक नशेबाज अपने परिवारके खिलाफ हिंसा करता है। लेकिन लोगोंकी समझमें यह नहीं आता कि जब हम आटे या चावल की मिलोंकी मदद लेते हैं तो भी उसी किस्मकी हिंसा होती है। प्रकृति माताकी देनके रूपमें धानमें बहुतसे ताकतवर तत्व रहते हैं। लेकिन जब वह मिलमें जाता है और पालिश किया जाता है तो उसका सारा पौष्टिक अंश निकल जाता है और रह जाता है उसका निकम्मा भाग। इसलिये पालिश किया हुआ चावल खाकर हम अपने बच्चोंका स्वास्थ्य बिगाड़ते हैं। इसी तरह मिलमें पिसा आटा खिलाकर भी हम अपने बच्चोंको पौष्टिक खानेसे वंचित रखते हैं और उनके खिलाफ उसी शराबीकी तरह हिंसा करते हैं। इसी तरह गन्नेका रस बड़ा फायदेमन्द है पर उसकी चीनी बनाकर हम उसका सब खाद्य अंश नष्ट करके सिर्फ गर्मी देने-वाला हिस्सा खाते हैं।

उद्योग-भवनमें गुड़ बनाने, धान कूटने और आटा पीसनको पहली जगह दी गयी है, क्योंकि हमारी जिंदगीके आर्थिक क्षेत्रमें सत्य और अहिंसा लानेमें उनका महत्व सर्वाधिक है।

अब आपकी समझमें आ जायगा कि कैसे उस शराबीकी तरह, जो परिवारके सारे साधन एक ऐसी चीजके लिये बहा देता है जो थोड़ी देरके लिये उसके दिमागको बेकाबू बना दे, हम एसी चीजके लिये, जो हमारी स्वादेन्द्रिय या बेसमझीकी पसंदगीको संतुष्ट कर सके, अपने परिवारको सारे पौष्टिक तत्वोंसे बंचित रखते हैं।

इसी तरह जब हम स्वावलम्बनके लिये प्रचार करते हैं, तब हमारा संघ अहिंसाके लिये ही काम कर रहा है। वह गांधीजीके अहिंसाके आदर्शोंका ही प्रचार होता है।

फिर हमारा यह भी कहना है कि हमें मिलोंकी बनी या विदेशकी बनी वस्तुओंका इस्तेमाल नहीं करना चाहिये। मिल गरीबोंसे रुपया छिनकर पूंजीपतियोंको अमीर बनाती है। तभी तो हम खादी पह-ननेपर जोर देते हैं। जब हम अपने आप सूत कातकर खादी बनवाते हैं तो हमारे साधन हमारे पास रहते हैं। पर मिल कपड़ेमें अपने वह साधन हम मिलवालेको दे डालते हैं— उसी तरह जसे शराबी अपने साधन दे डालता है। तो देखिये, कितनी तरहसे हम हिंसाको सहारा देते हैं। तो अगर हम अहिंसा बरतना चाहते हैं तो हमें मिलकी बनी चीजें या विदेशी माल नहीं खरीदना चाहिये। यही राह है जिससे हम अपनी जिंदगी गांधीजीके सिद्धान्तोंपर बसर कर सकते हैं। हरेक आदमी अपने-अपने रोजाना के जीवनमें गांधीजीके सत्य और अहिंसाके आदर्शोंको पालनेकी कोशिश कर सकता है।

ये अध्यात्मकी बातें नहीं हैं जिनपर केवल विचार और मन नभर किया जा सके। वे तो रोजाना सामने आनवाली सच्चाइयां हैं।

पहले तरीकेमें हममेंसे जो लोग अपनी सारी जिंदगी, जीवनके इस तरीकेका पालनके लिये दे रहे हैं, वे अपनी सारी ताकत बुद्धि और दूसरे साधन गांधीजीकी याद-गार कायम करनमें लगा रहे हैं।

हममेंसे कुछ अपनी सारी जिंदगी और विचार इसी काममें लगानके काबिल नहीं होंगे, लेकिन वे थोड़ी हदतक यह कर सकते हैं। हम अपने खुदके जीवनमें वैसा कर सकते हैं। कम-से-कम घरपर हम इन सिद्धान्तोंका पालन कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हम सत्य और अहिंसाको कायम करनेमें मदद देते हैं।

जब हम यह कह रहे होंगे, तब भी हम पहले दर्जके काममें कुछ हिस्सा बंटा रहे होंगे। इन लोगोंका काम चलानेके लिये हमें अपनी कमाई का कुछ हिस्सा देना होगा। यही काम है, जिसके लिये गांधी नेशनल मेमोरियल फंड कायम किया गया है।

ऐसा सुझाया गया है कि लोग अपनी कम-से-कम दस दिन की आमदनी इस फंडके लिये दें। जो लोग इससे ज्यादा हिस्सा बंटाना चाहें वे जरूर ऐसा करें वे, पर यह कम-से-कम है।

मामूली तरहसे जब कोई बड़ा आदमी मरता है तो उसके लिये आम तौरपर कोई भौतिक यादगार बना दी जाती है।

गांधीजीके लिये हम ऐसी यादगार खड़ी करना चाहते हैं जो उनके सिद्धान्तोंका —जिनके लिये वे जिये और मरे— प्रसार करे।

इस फंडमें मदद देकर हम कोई दान नहीं, देते बल्कि सत्य और अहिंसाका संसार बनानेमें मदद करते हैं। इसी महान कार्यमें हमारा रुपया काममें लगाया जायगा। हम उम्मीद करते हैं कि हमारे पाठक इसमें उतने ही जोश और दिलसे हिस्सा लेना चाहेंगे जैसा कि वे एक परिवारसे शराबखोरीकी लत दूर करनेमें करते और केवल हिन्दुस्तानके लिये ही नहीं बल्कि सारे संसारके लिये कुछ पुण्यकर्म करेंगे।

पर हममेंसे कुछ की आमदनी पैसे मदद देने लायक नहीं होगी तो हम अपना हाथ कता सूत दे सकते हैं। इस कामके लिये ७९ गंडियोंकी एक ईकाई दी जा सकती है। ऐसे सूतको चर्खासंघ पैसोंमें बदल सकेगा।

ये तीन तरीके इस मेमोरियलमें हिस्सा बटानेके हैं। और सबसे जरूरी तो यह है कि हम बापूके बताये महान् सिद्धान्तोंको अपनी जिंदगीमें उतारें और अपने पास पड़ोसके लिये एक उदाहरण बनें। ऐसा करनेसे हम एक ऐसा समाज बनानेमें मदद करेंगे जो सत्य और अहिंसाकी बनियादपर होगा। यह पुण्यका काम हमारी पूरी ताकत लगानेके योग्य है।

# नये समाजकी रचना

बैरीसालमें पूर्व पाकिस्तानद सोश– लिस्ट पार्टीके अध्यक्ष पुराने क्रांतिकारी और तपस्वी नेता श्री त्रलोक्य नाथ चक्रवर्ती (महाराज) ने ये विचार प्रकट किया।

हमारी समस्याओंका समाधान साम्प्रदायिकतासे नहीं होगा। यह मार्ग हमें विध्वंस की ओर ले जायगा। पाकिस्तानके हिन्दू यदि ऐसा महसूस करेंगे कि वे भिन्न भिन्न सम्प्रदायके राज्यमें वास करते हैं तो वह देश अथवा जनता किसीके लिये भी मंगलकारी नहीं होगा। ऐसे मनोभावके परिणामस्वरूप अशांति जारी रहेगी, शिल्प-वाणिज्यका प्रसार संभव नहीं होगा। इसकी वजहसे दुर्भिक्ष और वस्त्र संकट जारी रहेगा तथा देशकी जनताकी और भी दुरवस्था हो जायगी।

एक तरफ देखा जा रहा है कि लाख लाख कोटि कोटि मनुष्य आर्थिक दुरवस्था में पड़े हुए हैं, उनको रोटी नहीं मिलती, कपड़ा नहीं मिलता, चिकित्सा नहीं मिलती, हमेशा अभावमें ही जीवन बीत रहा है। दूसरी तरफ कतिपय आदमी विलासितामें डूबे हुए हैं, उनको किसी बातका अभाव नहीं है। ऐसी अवस्था क्यों है ?। यह वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्थाका परिणाम है। देशमें जब तक यह व्यवस्था रहेगी तब तक गरीब और गरीब होगा, धनी और अधिक धनी होगा। जिस समाज व्यवस्थाके फलस्वरूप मनुष्य गरीब होता है उसे बदलना होगा। यह समस्या पाकिस्तान, व भारतीय संघकी समस्या है, यह समस्त संसारकी समस्या है। धनतांत्रिक उत्पादन प्रणालीके प्रति दृष्टि डालनेसे मालूम होता है कि जो लोग उत्पादन प्रणालीमें सक्रिय भाग लेते हैं वे अपने द्वारा उत्पन्न सम्पत्तिसे स्वयं ही वंचित रहते हैं। किन्तु जो अल्पसंख्यक व्यक्ति लताकी भांति समाज वृक्ष के सहारे समाजका सम्पूर्ण रस खींचे ले रहे हैं आज उन्हींका पूर्ण प्रभुत्व है। समाज में यह जो विषमता है उसे मिटानेके लिये प्राचीन कालसे आज तक कितने ही मनीषियोंने कितने ही मार्गोंका अवलम्बन किया। किन्तु समाजके जीवनके मूलमें जो असमानता है उसके न हटनेसे आज तक कोई समाधान सफल नहीं हुआ। इस विषमता को मिटानेके लिये ही समाज तंत्रका आविर्भाव हुआ है। पुराने समाज भित्तिकी जगह नवीन रूपसे समानताके आधार पर नयी वादका उद्देश्य है। समाजके भीतर विप्लवकारी परिवर्तन लानेके लिये समाजवादी दल कृत संकल्प है। समाज क्रांति सुन्दर और शांतिके साथ सम्पन्न हो, इसलिये समाजवादी शासन व्यवस्थाकी प्रतिष्ठा आवश्यक है। हम जिस समाजवादी राष्ट्र की स्थापना की परिकल्पना कर रहे हैं वह धर्मके मामलेमें निरपेक्ष राष्ट्र होगा— इस राष्ट्रमें प्रत्येक नागरिकके, वह किसी सम्प्रदाय या धर्मका क्यों न हो, अधिकार अक्षुण्ण रहेंगे। इस जगह एक बात स्मरण रखने योग्य है। किसी सम्प्रदाय या किसी धर्मके आधार पर किसी राष्ट्रकी प्रतिष्ठा का परिणाम होगा फासिस्टवादकी उत्पत्ति इतिहासके इस संकेतको पाकिस्तान और भारतीय संघके नेताओंको स्मरण रख कर सावधानीसे काम करना चाहिये।

समाजवादी राष्ट्र लोकतंत्रीय आधार पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। वस्तुतः किसान और मजूरोंके प्रतिनिधिही समाजवादी राष्ट्रके कर्णधार होंगे। अब तक जो समाज द्वारा शोषित और पीड़ित हो रहे हैं वे नयी समाज व्यवस्थामें सब प्रकारके शोषण और अत्याचारसे मुक्त होंगे। वर्तमान राज व्यवस्थामें किसान, मजूर और निम्न मध्य वित्त जनसाधारण अपनी स्वतन्त्र सत्ताका अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। किन्तु समाजवादी व्यवस्थामें अपना भविष्य वे स्वयं निर्माण करेंगे। ऐसी समाजवादी व्यवस्था लाना ही हमारा काम है। इसीसे हम एक संगठित और अनुशासित समाजवादी दल चाहते हैं। पाकिस्तानके साथ पाकिस्तानसोशलिस्ट पार्टीका कोई विरोध नहीं है। पाकिस्तान सरकार जनहित कामना से यदि कोई कार्यक्रम उपस्थित करेगी तो सोशलिस्ट पार्टीका उसे पूरा सहयोग मिलेगा। जनहितके किसी दल व्यक्ति या सरकारके कामको सोशलिस्ट पार्टीका समर्थन और सहयोग प्राप्त होगा। किन्तु यह बात भी साफ साफ बता देना आवश्यक है कि कोई दल कोई शक्ति या सरकार भी यदि कोई जनहित विरोधी काय करेगी तो पाकिस्तान सोशलिस्ट पार्टी शरीरमें एक बूंद रक्त रहते उसका

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# बन्धनोंमें बंधी मुक्तिकी कल्पना

श्री शीतलसहाय श्रीवास्तव

बन्धनोंमें बंधी मुक्तिकी कल्पना !

प्यासमें है भरी तृप्तिकी गागरी वेदनामें छिपी प्रीतिकी माधुरी
कालिमा यह निशा की छिपाये उषा,नाच उठती जिसकी किरण बावरी
साध में ही सधी सिद्धि की साधना, बन्धनोंमें बंधी मुक्तिकी कल्पना
अश्रु के नीर में प्रीतिका हास है, नग्न पतझारमें सान्द्र मधुमास है
गोदमें घन तिमिरकी सितारे खिले दूर का यह गगन पास ही पास है
नींद में ही धुली स्वप्न की कामना, बन्धनोंमें बंधी मुक्तिकी कल्पना
बादलोंमें लुकी द्युतिमयी चंचला, ढील देती कि जो हासकी शृंखला,
शूलकी सेज पर सो रही है कली, मुग्ध जिस पर मधुप उड़ चला मनचला
है रुदन-गानमें प्राणकी वंदना, बन्धनोंमें बंधी मुक्तिकी कल्पना।

(२२ वें पृष्ठका शेषांश)

मार्ग से ही पुनः पाओगे। और कवि विद्यापति के अभावमें अवश होना तुम्हें शोभा नहीं देता। वे स्वतंत्र-युग की चरित्र-वाणी थे, किन्तु तुम पराधीनों की निरवद्य चेतना हो। 'स्वर में अग्नि-खंड भर-भर' कर ज्वाला फैलाये जाओ, कल्मष मिटता जायगा। अपनी प्रभुता और सामर्थ्यके अनुकूल पूर्वमें जो कुछ देता आया हूं, अब भी दे रहा हूं और जबतक शक्ति रहेगी, भविष्य में भी देता रहूंगा। हां, कलियुगके प्रभाव से अदृष्टकी अपेक्षा दृष्टमें रूढ़ और प्रतिष्ठित होकर तुमने आत्म-बल खो दिया है। कहते हो, युधिष्ठिरके सत्यकी तुम्हें उपेक्षा है, गदा-गाण्डीव-धारी भीम और अर्जुन चाहिये। पर प्राणों के बिना कहीं शरीर को पलते देखा है ? युधिष्ठिर इसी प्राणके पीछे पागल था। तुम भी उसे न भुलाओ। समझो कि अगर तुम में से कोई एक आज उस सत्यके अनुष्ठान में व्याकुल है, तो उसकी तत्परता शरीरको चिन्मय-तत्वों से परिवेष्टित कर उसे अविनाशी बना देना चाहती है। खंग की उपासना जीवन की प्रसूत रागिणी नहीं, आत्मम्भरि एक कदर्प उन्माद है। युद्दोत्तर कालमें, सब इसकी चितापर रोते-विलखते आये है, तथापि विकल्प से यह तब प्रयोजनीय हो जाती है, जब विष विषकी औषधि माना गया है। अनुमानतः इसी भावमें तुम यहां आये हो और इसी भावमें भगवान शंकर के प्रलय-नृत्यको, सिद्धिकी समष्टि जानकर, मुझसे कहा है, कि मैं उनसे इसका आग्रही बनूं। किन्तु मेरी अपेक्षा तुम्हारा स्वकीय निवेदन अधिक सार्थक और फलप्रद होगा। प्रार्थनाएं ऐसी ही की जानी चाहिये। गिरिज मेरी आत्मजा है, मैं उससे कहता हूं, तुम्हारा यथेष्ट सहायक होगी।

मानो शून्य से आकर बादल धरती को अभिषिक्त कर गये हों वैसे ही इन अमृत-वचनों से कविके अन्तर-पटका अभिषेक हुआ। चैतन्य अश्वभिधामें उसने पलकें खोली। समाधि को त्याग शैलविराट के प्रति कृतकृत्य होता हुआ नतमस्तक प्रणतिसे विदा मांगी और कल्पना--संगिनी की बांह गहे पुनीत कैलाश धाम को प्रस्थान किया।

मान सरोवर-तट पर उतरते न उतरते वह प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा पर बरबस मुग्ध हो गया। आकाशके विस्तृत नील चंदोवे-तले सर्वत्र अंचलमें जीवन को जड़ताते रक्त-मुक्त तुषार-मंडित स्फटिक-श्वेत शिलायें शिशिर की अक्षत प्रभुताका चिरंतन पूर्ण साम्राज्य; मिट्टी के सौरभ से अनजान अनमिल वन्य लैंता-पादपों कि अनियारी मादकता; मानस की लहरों पर आत्म-मग्न कूजित कलहंसों की जल-क्रीड़ा; प्रचुरतासे विकसित अनुपमेय नील कमल; एक किनारे उपासना को निर्मित आशुतोषका हेम-मन्दिर।

प्रफुल्ल-चित्त कवि आकांक्षा और उल्लासमें डूब गया। शीघ्रातिशीघ्र पूजा की तैयारीमें सरोवर-स्नान से निमज्जित हो उसने पुष्प-चयन किया और मंदिरमें प्रवेश कर उन्हें ज्योतिर्लिंग पर बिखेरता उंड़ेलता समाधिमें गूंज उठा।—

नाचो हे नाचो नटवर !
चन्द्र-चूड़ त्रिनयन गंगाधर
आदि-प्रलय अवढर शंकर ! !

भगवान त्रिलोकी नाथ की एकाग्रता टूटी। आह्वान की प्रेरणा पर विस्मित हो वामांगी गिरिजा से बोले—आज तो निराला उपासक आया हुआ है योगमाया ! सुनती हो, क्या वर मांग रहा है ?

पतिके आर्जव सारल्य पर गिरिजा मुस्करायी और अपनी अभीष्टि को भावोंमें ईषत उत्प्रेक्षित कर उत्तर दिया—हां सुन रही हूं स्वामी, बेचारेका जीवन सर्वांशतः विच्छिन्न हो गया जान पड़ता है। कहीं से कोई आशा-किरण न मिली तब तुम्हें इतने संबोधनोंसे पुकार रहा है। कहता है चन्द्र-चूड़, कि अमृत चाहिये—त्रिनयन, कि ओज; गंगाधर, कि गति चाहिये—आदि प्रलय कि प्रचंड शक्ति। और जबतक तुम नृत्य नहीं करते ये सबके सब एक संग वह कैसे पायेगा।

—किन्तु मैं तो महानाश का देवता हूं गौरी ! मेरे ताण्डवके त्रास से सुरलोक सम्पित है। मर्त्यका यह प्राणी उसमें क्या सुख पायेगा ?

—वही तो। सुरलोकमें समस्त सुख-सम्पदाएं हैं विभो, जिस कारण नाश से वे भयभीत हैं, किन्तु जो घुट-घुटकर यंत्रणायें भोग रहा है—उसे महानाशके सिवा, मुक्ति और देगा कौन ?

—सचमुच मर्त्यके जीवनका व्यापार बड़ा अनोखा होता जा रहा है। दृष्ट और अदृष्ट के चाप से विमूढ़ इसका ज्ञान, नित्यके घर्षण-संघर्षणके समक्ष जीवनको कर्मका सम्यक मार्ग ग्रहण करने नहीं देता। सुख में सब कुछ विसार कर यह केवल दृष्ट को ही प्रामाणित जानता है और दुःखमें निरुपाय हो, हमारे पास रोने-धोनेको पहुंच जाता है।

इसमें अनुचित क्या करता है, वह ? जो कर्म अपने-आप सम्पादित कर सकता है, कर लेता है; जो नहीं कर सकता, उसकी प्रभुतासे बाहर,--प्रारब्ध का होता है, उसके लिये अपने विधातामें लौ लगाता है। तुमने उसे इतना दृढ़ संकल्प भी तो नहीं दिय कि किसी एक ठौर पर निश्चल रहे।

नहीं नहीं—ऐसी बात नहीं है, गौरी। कर्म करते-करते वह हममें लौ नहीं लगाता, बल्कि तृष्णा और आलस्यके वशीभूत, कर्मसे च्युत होकर जब उसका विकृतमन क्रमशः कलुषित होते-होते उसे घोर दुःख और निराशाके पासमें बांध देता है, तब व्याधके अभिमुख, अपने आर्तनादसे वह हमारी करुण को विगलित करनेका प्रयत्न करता है। शुद्ध मन से, शुद्ध क्रिया करनेकी प्रवृत्ति, जिस क्षण उसके अन्तर से विलीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हो जाती है, उसी क्षण, शरीर--यात्रामें उसकी इन्द्रियां प्रकाश और सद्ज्ञानके मलको तजकर, मोह और अज्ञानताके लोकमें भूलने भरमने लगती है। और अन्ततः वह अधोगति को प्राप्त होता है। किन्तु ऐसा क्यों होगा, स्वामी ? सृष्टि के नाते जब तुम उसके विधि-विधायक हो, एक रूप से जन्म देकर, दूसरे से संस्कार और तीसरे से संहार देते हो, तब तुमसे बाहरकी चेतना और अपकर्ष, उसके इन्द्रियागोचर कैसे होता है ? दुष्कर्म की प्रेरणा वह कहां से पाता है ?

--लालसा के पीछे शक्तिके अपव्यय से शिवे। भौतिक पंचमहाभूत उसकी अन्तर्मुख तृष्णके पूरक और शरीरके पोषक हैं, किन्तु कर्ममें इनकीविलोभ अभ्यस्ति अतमय ही महाप्रलय संघटित करनेकी क्षमतासे भी वंचित नहीं है। इसीके द्वारा दुर्दान्त और बर्बर मानव दीन-हीनोंका स्वत्व अपहरण कर जीना चाहता है। सृष्टि पर दानव उद्भूत होते हैं। इधर जगके माता-पिता प्रस्तुत चिन्तामें व्यस्त थे, उधर कवि अपनी मनोव्यथा को स्तुतिमें घोल घोल कर सुनाये जा रहा था --

प्रभु तव पावन नील गगन-तल
विदलित अमित निरीह-निबल-दल
मिटे राष्ट्र उजड़े दरिद्र--जन
आह सभ्यता आज कर ही,
असहायों का शोणित-शोषण
पूछो साक्ष्य भरेगें, निश्चय,
सभके थे नक्षत्र-निकर।

--यही संकट इस उपासक को भी जान पड़ता है, प्रभो। अभ्यर्थनामय आंसू मिश्रित अपनी दुर्दशा व्यक्त कर रहा है। क्लेश-मुक्त कर इसके जीवनका निवारण करो।

--तुम इतनी व्यथाभिव्यंजित और आर्द्र मत होओ, भुवनेश्वरी। निर्णीत अवधि के अन्तर्गत युग-परिवर्तनका कार्यारंभ निषिद्ध है। सुना नहीं तुमने, वह चाहता है, कि संसार पूर्णत्व को प्राप्त करे, मनुष्य, मनुष्यमें कोई विभेद न समझे। जबतक मर्मकी ग्लानि चरम सीमा तक नहीं पहुंच जाती, दानवोंके उत्पातसे शेषशायी भगवान विष्णुका सिंहासन नहीं डोल उठता, तब तक सृष्टि की शृंखलामें गतिरोध उत्पन्न करना, मेरी क्षमता से परे है।

--तब क्या इसे निराश लौट जाना पड़ेगा ?

मर्त्यका जीवन ही एक निराशा है प्रिये। कर्मके बिना इसे सिद्धि नहीं मिलती। इसीलिये अनासक्त भावमें इससे कर्म करने को कहा गया है कि आशा-निराशा से यह बंधन-मुक्त हो।

--यह सीख तुम किसी योगी-यती को सुनाना स्वामी,--जिसने परमार्थ को सुनाना हो; किन्तु जो संसारी है, जीवनमें आशा, आकांक्षा और उन्माद लिये जमा है, वह फलाशक्तिको त्यागकर कर्म क्यों करेगा ? जीवन कैसे पालेगा ?

--अनासक्ति का तात्पर्य परिणामके संबंधमें अनवधानित रहना नहीं है, संगिनी ! --वह तो बुद्धिगम्य है ही, बल्कि भावनायें उसके किसी विश्वासी रूपको मूर्त होने देनेका लोभ-संवरण करना है। इस दशा को प्राप्त कर जो साधनमें तन्मय रहता है, उसे अधीरता नहीं घेरती और जगके कल्याणमें वह सद्व्यवस्थाका कर्ता बनता है। सो, इस उपासक की साधनामें, यदि ऐसे तत्व सन्निहित होंगे, तब संशय-विमुक्त होकर तुम मुझमें विश्वास करो, कि अपने उद्धारके उपाय यह आप सोच लेगा।

--आप क्या सोचेगा। सोच सकता, तो फिर यहां आनेका प्रयोजन ? रावण, हिरण्यकशिपु-समान दैत्यों को, अपने कुकृत्यसे सृष्टिका संहार करनेके लिये वर देनेमें तुम प्रसन्न हुए थे, किन्तु इस पद-दलित प्राणीकी व्यथा, तुम्हारी करुणाको पर्श नहीं कर पाती--यह भी इसका सौभाग्य है।

--रुष्टन होओ, जगदम्बे। जानती हो माताका हृदय अपनी सन्तानके लिये कितना दयामय और पिंजरबद्ध होता है। मुझसे अधिक इस उपासकने तुम्हारे मातृत्व को जीता है। अतः मैं इसे वरदान देता हूं कि अपने ध्येयमें यह सफल हो; किन्तु ताण्डव की स्तुति तो सम्प्रति स्वीकार करनेमें असमर्थ हूं। सर्वत्र त्राहि--त्राहि मच जायेगी।

भगवान शंकरका भवानीसे इतना कहना था कि ज्योतिर्लिंग पर समर्पित पुष्पोंकी निर्माल्य कविकी अंजलिमें भर आये और हर्षोन्मत्त होवह जयकार करउठा --हर, हर, महादेव !

मनवांछित धन फलप्राप्त कर कवि फूलान समाया। मानो चारो तरफसे सिद्धियां उसे घेर रही हों, वैसे ही पुलकित मन, लकित स्वर और पुलकित गतिसे वह पुचालित था। भगवान शूलपाणिके मन्दिर सी रिक्रमा करता हुआ, उसने पूजा समाप्त की, और स्वदेश लौटने की इच्छासे, अनीत स्वरूप कल्पनाके आगे बोला--धन्य कल्पने, तुम्हारी महिमा, आज मुझे क्रान्ति के मूक आह्वानसे प्रेरित कर गई, उसमें मैंने देवता दर्शन पाया। जीवन भर इस अनन्त उपकारका ऋणी बना रहूंगा। अच्छा, अब विश्राम करो, मैं वतनको लौटूं। इसी तरह शरणमें रखे रहना, कि छटपटा कर आहें टूटने न पायें।

धन्य मैं नहीं, तुम हो कवि, कि अपने कर्तव्यके ज्ञानसे इतना आदरपूर्वक मुझे हृदयम नियोजित कर सके। मैं तो सरोवर का जल ठहरी-पुजारी, अपने लिये ग्रहण करता है, भिश्ती अपने लिये।--मुस्करा कर कल्पनाने उत्तर दिया और कविके मानसते अन्तर्ध्वन हो गई। तत्क्षण कवि अपने देश, अपने भेषमें था।

अब वह निर्भय और निश्शंक हो, अपने लहूसे कविताएं लिख-लिख कर अंगारे बरसाने लगा, कि कब्रतक की दीवार टूट और मुर्दा अपनी हस्तीमें जगमगा उठे। कालान्तरम उसने देखा, देशमें नयी स्फूर्ति और नया ओज लहराने लगा,--कहीं जवाहरके रूपमें, कहीं सुभाषके रूपमें, कहीं जयप्रकाशके रूपमें और कहीं जिसके तिसके रूपमें प्रकट हो, वीर-प्रसविनी हिंसा छिट-फुट कौंधने लगी है। पलक मारते ही इसका एक समारोह गांधी की अहिंसा पर चोट कर बैठा। क्रान्ति आई और खून का दरिया बहा कर दे गई।

इधर यह सब अपने घरमें हो रहा था, उधर दूर पश्चिममें--दानवोंके बीच महानाशका एक प्रचंड ज्वालामुखी भभका लपटें इतनी बेकाबू होकर ऊपर तक फैलीं कि देखते ही देखते सबके सब भस्मीभूत हो गये।

कविने, अपनी उपासनामें, उस दिन भगवान शंकरसे निवेदन किया था--

नचो तीव्रगति भूमि कल पर,
अट्टहास कर उठें धराधर
उपटे अनल, फटे ज्वालामुख,
गरजे उथल-पुथलकर सागर
गिरे दुर्गजड़ता का,
ऐसा प्रलय बुला दो प्रलयंकर !

आज उसकी यह प्रार्थना स्वीकृत हुई। आज हम स्वतंत्र हैं। इस स्वतंत्रताके लिये जिन्होंने जितनी कुर्बानियां कीं, सब सार्थक और गिनने लायक बनीं।

इस मौके पर, संभवतः गांधी बादी सोच रहे हों, कि उनके अहिंसात्मक प्रयोगोंको सिद्धि मिली है और हमारा यह कवि सोचता हो कि उसकी हिंसात्मक उपासना ने काया को प्राण दिया है; मगर हम-आपसरीखे सामान्य व्यक्ति तो केवल इतना ही सोच सकते हैं, कि लड़ाईके मैदानमें जहां अनगिनत योद्धा प्राणान्तक शस्त्रास्त्र लिये, जिन्दगी को दाव पर चढ़ाये लड़े हैं--वहां यह कहना कठिन है, कि किसकी धन्वाके तीरसे विजयकी बुनियाद पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



संस्मरण——

# अवगुण्ठन

सुश्री चन्द्रप्रभा त्रिवेदी--

उत्तप्त ज्येष्ठकी दोपहरी और प्राचीन वह पर्व। दोनोंमेंसे किसीकी भी उपेक्षा भारतीय महिलाओंके लिये मान्य नहीं, फिर मैं! मेरे लिये तो यह पर्व और भी विशेषता रखता है। मेरा परिणय भी तो इसी दिन सम्पन्न हुआ है, जिसकी स्मृति ही इतनी मनोहर होती है कि तरुण अविवाहितों और वृद्ध विवाहितों तकको भी अपनी गुदगुदीसे एक बार अवश्य चंचल कर देती है, फिर तो मैं इन दोनों के बीच की अवस्थामें हूं, क्यों न मुझे उसका प्रभात ही पुलक-भारसे भर दे।

मैं हाथोंमें पुष्पांजलि लेकर सौभाग्य देवी गौरीके ध्यानमें मग्न हो जाना चाहती थी; पर न जाने क्यों, कुछ स्मृतियां अपनी अटल चेतनासे जमी थीं और उसके हरे-भरे कोमलतम नवीन पत्रों पर बाल-मुकन्दकी भांति अंकित हो रही थीं। एक साथ ही अनेक अंजलियां, उल्लासकी हल्दी पीतिमासे रंजित हाथोंमें बेले- गुलाब के श्वेत-रतनार पुष्पोंसे भर कर समर्पित हो रही थीं और मंदानके उस ऊष्ण पवन को सुरभित शीतल करती उस बट-छाया को वासन्ती बना रही थीं। मेरा सुरभि-सिक्त मानस अगर-धूप, घृत-दीपके दिव्यदानसे दीप्त हो रहा था कि बगलसे एक व्यंगने मुझे चौंका दिया——

"ओ हो, मेम साहब भी पूजन करने लगीं?"

"पहचाना इन्हें! यह...की बहू हैं?" दूसरे स्वरने कहा।

"तब क्या बिना पहचाने ही मैंने मेम साहब कहा है!" पहले स्वरने उत्तर दिया।

मैंने मुड़ कर पीछे देखा—मेरी स्वर्गीया सासजीकी कई समवयस्काएं थीं। मैंने उन्हें शर्माते हुए प्रणाम किया। सचमुच, मैं तमाम अवगुंठनवती बहनोंके बीचमें उत्तरीय एवं अवगुंठनहीन ही खड़ी थी; जैसे मैंने कोई बड़ा अपराध कर डाला हो; मेरा सिर ऊपर नहीं उठ रहा था। वे बहनें मुझसे कहीं अधिक उम्रकी थीं, फिर भी वह उसी प्रकार सामन्तयुगीन परदेमें थीं, जिसमें किसी दिन मैं भी अपने जीवनके दिन बिता चुकी हूं। मेरा दुर्बल मन मुझे झकझोरने-सा लगा——"मैं क्यों 'उनकी' बातें मानती हूं? वह तो बड़े हठीले प्रकृतिके हैं। उनका विचार चट्टान की भांति अटल क्यों है? क्या वह अपने समाजके उन युवकोंकी भांति नहीं हो सकते, जो प्रोफेसर, बैरिस्टर डाक्टर और चोटीके नेता, पत्रकार तथा कवि एवं कलाकार होने पर भी घरके भीतर केवल प्राचीन प्रथाके समर्थक हैं। आज भी यह मानिनीया बहनें केवल कपड़ेकी गठरीके सिवा और कुछ भी नहीं हैं, यद्यपि इनके पति योग्यता में मेरे पतिसे कहीं अधिक ही हैं।" वे बहनें स्नेह एवं आश्चर्यसे मेरी ओर अपने रेशमी घूंघटोंको उठा-उठाकर देख रहीं थीं, जिनके भीतर स्वर्ण-रत्न-ज्योतित पीत मुख अपनी असमर्थता पर मानों हंसे रहे थे।

मेरे नेत्रोंमें अचानक ही देवी-देवता के स्थान पर वही चिर परिचित, जीवन सहचरी मूर्ति आ विराजी, जो आते समय एक परिहासपूर्ण अवसर पर झलक उठी थी। मेरा अन्तर पुनः वही पद दोहराने लगा। सचमुच, जब अपने धर्म पर अचल विश्वास हो जाता है, तब प्रत्येक कार्य तीर्थराज प्रयागसे उत्तम हो जाते हैं। तो क्या यह मेरी समस्त चर्या, जो केवल उसी मूर्तिको केन्द्रित कर सम्पन्न होती रहती है, वास्तवमें प्रयाग-सी पवित्र है! फिर यह अपवित्र आक्षेप सुनकर मेरा मन अभी-अभी संकुचित क्यों हो उठा था? यही 'मेम साहब' घरेलू कार्य सम्पन्न करने वाले अन्य कर्मचारी भी तो व. देते हैं, पर उससे मुझे हंसी आ जाती है और मैं उनसे 'बहूजी' ही बनाये रखनेको कहकर मुक्त हो जाती हूं; फिर यही शब्द यहां इतना तीखा क्यों हो उठा!"

इसीलिये कि मैं उस सीमासे बाहर लायी गयी हूं, जिसमें यह आजीवन बद्ध रही हैं।

"मैंने सुना है कि कभी आप भी बहुत परदेमें रहती थीं?"

मेरे पासकी एक अवगुंठनवती नव-वधूने पूछा, जिसका मुख अपनी सीमासे असंतोष प्रकट कर रहा था। वह बड़ी ही जिज्ञासासे मेरी ओर देख रही थी।

"मैं न तो परदा ही करती थी और न अब परदेसे बाहर ही हूं। मेरी माताजी जब जीवित थीं या जबमें उनपर पूर्णरूपसे निर्भर थी, तब उनके आज्ञानुसार थीं; जब निर्भरताकी सीमा बढ़ी,तब आज्ञाएं भी नहीं मिलीं। उसीके अनुसार मैं आज हूं, इससे न तो मेरी अनुरक्ति थी और न विरक्ति।" मैंने कहा।

"आप तो कहानियां और कविताएं भी लिखती हैं?"

"कहां?" मैंने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा।

"यह तो मैं जानती हूं बहुत अच्छी तरह, आप आश्चर्य न दिखायें, मेरे खघरमें आपकी पुस्तक भी है—नगरके पथपर।"

"तब तो तुम ठीक जानती हो।"

वह उत्साहित होकर बोली—

"तो फिर मैं कैसे इस बोरेबंदीसे त्राण पा सकती हूं। क्या आप कुछ उपाय नहीं करेंगी?"

उसकी बड़ी-बड़ी आंखें दीनतासे मेरी ओर देख रही थीं, मेरा मन कसक उठा, उसकी इस पीड़ासे। मुगल साम्राज्यका नाश हो चुका, उसके बाद अंग्रेजी भी चले गये, पर उनकी पाशविकताएं अभी हमारे जीवनमें घर बनाये बैठी हैं। मैंने प्यारसे उसकी ओर देखा, वह असमर्थता-पूर्वक ही बोली—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"आपको बताना ही होगा। मैंने भी परीक्षाएं दी हैं, हाईस्कूल पास करनेके बाद मेरा विवाह हुआ। यही तो उनकी शर्त थी।"

"तो उन्हींकी शर्तसे तुम स्वतंत्र भी होगी।"

"वह अब कुछ नहीं कर सकते, इसके लिये या तो मैं अलग हो जाऊं या उसीमें सड़ती रहूं, क्योंकि वह लड़ाई नहीं लेना चाहते मां से।"

यह लड़ाई भी लेना कितना भयानक होआ ह। अभी मैं भी तो विचलित हो उठी थी, इसी प्रतिवाद न करनेकी भावनासे पहले मैं घरपर ही बरगदकी डालियोंके दर्शन कर पुष्पाञ्जलि देकर व्रत समाप्त करती थी, पर आज मेरा मन साकार-वटवृक्षके दर्शनके लिये लालायित हो उठा। सवेरेसे ही, पूजनके सामान और पक्वान बानाती तथा जुटाती रही। आते समय घर आ पहुंचे बच्चोंके पिताजी और सबोंको कहीं जानेको तैयार देखकर पूछा—

"इतनी दोपहरीमें कहां चढ़ाई करोगे, तुम सब ?"

"पासकी ही अमराईमें जो बट-वृक्ष है।"'

"अच्छा, वटपूजा या वर-पूजा ?".

वह चटपट अपने कमरेमें आये और बोले—"इतनी धूपमें मैं भूखा-प्यासा घर आया हूं, तब सबसे अच्छी पूजा तो यही होगी कि भोजनालयमें चलकर स्वादिष्ट भोजन करें और ठंडी हवाके साथ ठंडा जल पीयें। यही तो इसका मुख्य उद्देश्य भी है, पर आप तो यह थाल लिये बस, भूख बढ़ाती.....।"

"तो मैं थाली परस देती हूं।"

"न, न!" वह कानपर हाथ रखते हुए बोले। अरे, इस युगकी एक सावित्री मैं भी तो हूं। बिना सत्यवानजीको.....।"

'तब तो सावित्रीजीको अभी प्रतीक्षा ही करनी होगी।"

मैं बिना कोई उत्तर दिये उस बाल-टोलीमें जा मिली, जो अपनी आतुरता, टहल-टहलकर प्रकट कर रही थी।

"क्या आप कुछ उत्तर नहीं देंगी?" उसनें फिर पूछा।

"मेरा उत्तर ? शायद वह भी कुछ ऐसा ही हो, क्योंकि परिवारमें शान्ति बनाये रखना भी तो एक कर्तव्य है। यद्यपि यह प्रश्न व्यक्तिगत तुम्हारा ही नहीं, पूरे समाजका है, किन्तु यहांपर केवल तुम्हारा ही अंतर इसका आकांक्षी है, अतएव कुछ कहना, मेरे लिये अनधिकार चेष्टा होगी।"

उसने नैराश्यपूर्ण विरक्तिसे अपना वह मनोहर मुख फिर घूंघटमें ढंक लिया। मुझे लगा— यह अमाके परदेमें ढंका पूर्ण-चन्द्र क्या राहुग्रस्त न हो जायगा ? समाज-में अभी हाईस्कूल पास भी कितनी युवतियां हैं। मैंने उसे सांत्वना देते हुए कहा— सारे कार्य धीरे-धीरे ही होते हैं, यदि उन्हें अविराम गतिसे सम्पादित किया जाय। तुमने अच्छी शिक्षा प्राप्त की ह इसलिये तुम्हारा कर्तव्य साधारण बहनोंसे अधिक दायित्वका है, अतएव एकदमसे यदि परदेसे बाहर आ जाओगी तो शिक्षाके प्रति और भी अनादर बढ़ जायेगा और ये माताएं कभी अपने नक्कू होनेके लिये अपनी पुत्रियोंकी शिक्षा आगे बढ़ने न देंगी। इससे तुम उन्हींके कथनानुसार धैर्यपूर्वक उसकी प्रतीक्षा करो।

"आपने भी वही बात कही, जो 'वह' कहते हैं।"

"यह इसीलिये तो कि औचित्यकी भी एक विशेषता है। सीमामें ही असीम सिन्धु लहराता है और असीम होकर एक स्रोतास्विनी तुच्छ और अनुपादेय हो जाती है। यही जगतका विधोन है।"

अब वह फिरसे घूंघट उठाकर मुस्कराने लगी। प्रसन्नतासे चमकता उसका मुख बड़ा ही प्यारा लग रहा था, अतएव मैंने कह ही दिया —

"भला यह मुख पटमें छिपा ही रहने के लिये है ? नहीं जो ऐसा सहन करना, अपने मन-प्राण के ही सार नहीं, ईश्वरकी अनन्त कलामयी चेतना और असीम अनुकम्पाके प्रति भी अन्याय होगा। भला उनके संयमको तो सोचो, जो एक शर्त रख कर विवाह कर सके हैं।"

उसके कपोलों पर वृत्ताकार लालिमा दौड़ गयी, जिसे मैं देखती ही रहना चाहती थी, पर मुझको वह सुयोग कहां तक मिलता! मुझे अपने ऐसे ही दिन फिर याद आये, जो अब बड़े ही मृदु प्रतीत होते हैं। मैं अपनी कोठरीके अंधेरेमें इसी प्रकार घूंघटमें बन्द चुपचाप बैठी सुना करती, जो मेरी माताजी अपनी इन्हीं बहनोंकी सभामें कहा करतीं—

"मेरा बेटा ऐसा मनचला या शोहदा नहीं है, जो बीबीको सिर पर चढ़ाये और नचाता फिरे। यही तो बात है, जो मेरी बहू अभी भीगी बिल्ली बनी रहती है, नहीं तो वह भी शेर हो जाय। मैं तो दस फटकारके बाद दो बातें करती हूं। अगर न सहे, तो मेरा बेटा एक दिनमें उसे ठीक कर दे।"

फिर वे चाचीजी, पड़ोसवाली मौसी और बुआजीकी ओर देखतीं, जो प्रत्येक क्षण अपने कान मेरी दीवारोंसे लगाये रहतीं। वे माताजीके जलते वाक्योंमें घृतका पुट देकर आहुतिकी पूर्ति किया करती थीं—

"हां, भई, बेटा तो इनका, जो कुछ पूछता तक नहीं कि घरमें क्या तुम करती हो क्या नहीं, क्यों तुम बिगड़ती हो क्यों नहीं। एक हमारा भाग है।"

फिर वे अपने दुर्भाग्यका रोना रोती हुई अपने सुनहले नीड़ोंको शाप और दुर्व-चनोंकी झड़ीसे नर्क बनाया करतीं। उधर मैं प्रातःसे रात तक यह सब कुछ सुनती हुई भी सर्वथा मौन रहती थी। मेरे मनमें भीषण तूफान उठता। बहुतेरे षड्यन्त्र उठते, रोते-रोते सिर दुखने लगता, पर प्रत्यक्ष कुछ कह सकना असम्भव था। आखिर किससे कुछ कहती ? उस उग्र मूर्ति मांजीसे या शान्त एवं निर्दोष, दिनं भरके थके मांदे उनके हिमा-यतीसे, जो इससे सर्वथा अपरिचित ही रहते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कुछ दिन बाद यह सब एक अभ्यस्ततामें परिणत हो गया। मेरे निकट उत्तमोत्तम पुस्तकोंसे भरी उनकी आलमारियां थीं, अच्छी पत्र-पत्रिकाएं थीं, जिनसे परे कुछ सुनने समझनेका न तो अवकाश ही था, न रुचि।

इसी समय प्रकृतिने मेरे साथ असहयोग आरम्भ किया। शैशवसे मैं पूर्ण स्वस्थ और पुष्ट शरीरके लिये अपनी बहनों में माननीया और माता-पिताके शब्दोंमें सुखी थी, किन्तु मेरा मन उसे सौभाग्य या सुख न मान कर अपना दुर्भाग्य ही समझता था, क्योंकि आये दिन उनकी बीमारियोंमें मांका विशेष प्यार, पिताजीका सतर्क उपचार मेरे स्वस्थ जीवनके लिये सर्वथा अलभ्य था। वही अलभ्यता मुझे यहांके उन ५ वर्षोंके बाद सुलभ होने लगी, जब कि अपने पुत्र चि० मयंक प्रतापकी मां बनी। पर वह सुलभता उतनी मधुर नहीं प्रमाणित हुई, जिसके लिये मैं आकांक्षी थी।

कारण मांजीकी धारणा थी कि मां बननेके कारण मुझमें जो 'उनका' आकर्षण अधिक हो गया है, वही इस बीमारी का मूल है। इसी भावसे वह अपने उस प्यारे खिलौनेको अभागा तक कहनेमें कोई संकोच न करती थीं। यद्यपि उन्हींके कथनानुसार वह उनकी भगवद्भक्तिका प्रतीक और साकार चांद खिलौना ही रहा, और जिसे एक क्षणके लिये भी मेरे पास नहीं छोड़ती थीं कि कहीं मैं उसे गोदसे गिरा न दूं, रुला न दूं और अपने अस्वस्थ शरीरसे रोगी न बना दूं।

बाहरसे आनेके उपरान्त जब उसके पिताजी बेखटके, बेशर्मीके साथ मेरे अस्वस्थ शरीरके बारेमें अपनी मांसे पूछने लगते, तब मांजी मुंह बनाकर यह कहनेसे कभी न चूकतीं :

"अगर मुझमें भी ऐसे चोंचले होते तो मैं भी तेरे जन्मके पश्चात् खाटकी पाटियां चटकाया करती।' अथवा "सात पूत की मां गली गली रोवे। एक पूतकी मां पलंग चढ़ी सोवे।" कह कर फिर कुछ बातें कहतीं।

मैं ऐसी घूंट पी पी कर नीरोग हो चली। घरमें कामके नामसे मेरी कोई भी आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि दासी थी, उससे जो बचता था, वह मांजी स्वयं कर लेती थीं। मुझे कुछ करनेकी न तो अनुमति ही थी और न आवश्यकता। बच्चेकी सेवा भी दूर थी, कुछ घरलू कार्य न होनेसे मेरी पूर्व परिचित चर्या—कुछ पढ़ना और कुछ लिखना— ही चलती रही। जो उनसे लाख आंखें चुराने पर भी छिपी न रहती थी। पर इस अस्वस्थताने मुझे अपने उस आनन्दसे भी वंचित कर दिया। मेरी लेखनी, पुस्तकें, कापियां, सब कुछ ज्यों-की-त्यों बिखरी पड़ी थीं। उस समय सिर्फ कविताएं मैं लिखा करती थीं। न जाने क्यों, जीवनकी प्रथम-प्रथम उल्लसित चेतनाएं कविताकी पंक्तियों पर ही उतरना चाहती हैं। कहानियां भी लिखती पर उन्हें लिखनेके पश्चात् फाड़कर जला ही देती। हां, कविताएं गुनगुना भी लेती और कापियों पर उतार कर चुपचाप रख देती, जिस पर किसीकी लाल पेंसिल अपनी रेखाएं खींच देती और कहीं-कहीं प्रश्न चिन्ह बना देती।

मुझे उसमें उत्साह मिलता और मैं फिर आगे लिखती। यदि कभी वह दूसरा पृष्ठ रीता ही पड़ा रह जाता तो उस पर अनेक प्रश्न-चिन्ह बने मिलते और सबके नीचे दो नेत्र-चित्र खिंचे रहते और वह भी निमीलित।

अपनी खाट पर पड़ी-पड़ी मैं ऐसी सरस स्वस्थताका आनन्द ले रही थी। मेरी आंखोंसे एक परदा दूर हो चुका था और मैं अपने परदेवाले नेत्रोंसे उसे देख रही थी। अब मेरा पड़ा रहना मांजीके हृदयको न छिपा सका। वह अपनी उन प्रतिवेषिणी बहनोंसे चिन्तित होकर उपचार पूछतीं और वे जो कुछ बतातीं, चुपचाप उसी प्रकार सम्पन्न करतीं। कभी-कभी चिन्तित मुद्रामें मेरी खाट पर आ बैठतीं और मेरा सिर प्यारसे सहलाने लगतीं। स्नानके पश्चात् भगवान सूर्यसे हाथ जोड़कर मेरी स्वस्थताके लिये दीनतापूर्वक याचना करतीं।

मुझे उनकी इस दयनीयता पर बड़ी हंसी आती। मैं अपने ऊपर चादर तानकर जी भर कर मन ही मन हंसती।

कभी चौराहेके लिये सुन्दर फूलोंकी डालियां मालिन लाती, तो कभी बढ़िया धूप जलायी जाती। पर इन साधनोंसे 'वह' सर्वथा अपरिचित रहते। उनकी लायी औषधियां फेंक दी जातीं। क्यों? औषधियां डाक्टरी होती थीं, जो हमारे धर्मको नष्ट करनेवाली थीं! हां, चम्पा मालिनकी डाली और नाइन बुआकी धूनी अवश्य ब्रह्मत्वकी संरक्षिणी थी। कौन जाने, वह मुझे किस महत्ताके शिखर पर चढ़ातीं, यदि अचानक 'वह' छुट्टी लेकर समयसे बहुत पहले ही घर न आ पहुंचते। उस समय मालिन खड़ी किसी विचित्र देवीका नाम और पूजा बता रही थी।

भला उसकी यह बात नये फैशनेबुल को क्यों पसन्द आती? वह सीधे कमरेमें आ पहुंचे। दिन दहाड़े तमाम बड़ी-बूढ़ियों के खड़े रहते भी, मेरे ऊपरकी चादर उतारा फेंकी और छालोंसे भरा, मेरा शरीर देखा। चेहरेसे आश्चर्य और भय क्रोधकी चिनगारियोंसे प्रकट हो रहा था। मालिन तो पहले ही भाग गयी थी, उन मौसी और बुआ-चाचियोंसे भला यह अनाचार क्यों कर देखा जा सकता था? वे भी बाहर निकल गयी थीं। पर वह फैशनेबुल महाशय चीखते हुए मांके पास गये और बोले—

"इतनी भयानक बीमारी और यह मालिन! अब उसकी सूरत मेरे घरमें दिखाई देगी, तो तोड़ दूंगा पैर। मैं अभी डाक्टरको बुलाने जाता हूं।"

मांने सिर पर हाथ पटकते हुए कहा—"क्रिस्तान हो गये हो, बेटा! भला महारानीमें डाक्टर बुलाओगे? झौंस दूंगी उसका मुंह, जो आया तो।"

विचित्र परिस्थिति थी। बेटा भयानक बीमारी कह कर मालिनको लंगड़ा करने को तैयार, तो मां 'महारानी' बताकर बेचारे डाक्टरका मुंह झौंसनेको कटिबद्ध। मैं इस चीख-पुकारसे बाहर निकल आयी और बोली—

"न तो डाक्टर आयेंगे और न मालिन ही, मुझे पिताजीको बुलाकर दिखाइये। वह स्वयं एक अच्छे वैद्य हैं। मेरा उपचार कुछ-न-कुछ यबताकर अपने घर ले जायेंगे, मैं वहां ठीक हो जाऊंगी।"

मांजीका मुख प्रसन्नतासे भर उठा, पर साथ ही एक धड़की भी सुनाई दी, जो मांजीकी नहीं थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"हा, शर्म नहीं आती ऐसा कहते। मैं मर गया हूँ, जो उपचार करानेको वहां जानेको तैयार हो ?"

"तब !"

"मैं तपालकी लाता हूं, चलो डाक्टरके यहां।"

"पालकी ? जिन्दगीमें विवाहके भी अवसर पर नहीं बैठी।"

"तो इस महाजनी टोलेकी बनारसी, भूल-भुलैयासी चक्करदार गलीमें कौन सवारी आ सकेगी ?"

"मैं पैदल भी चल सकती हूं।"

मांजीने घूरकर देखा। मेरी साहसिकता हिरन हो गयी और मैं सिरसे पैर तक ढकी फिर ज्योंकी त्यों थी।

उसी दिन से वह बंधन शिथिल पड़ गया। उनका आदेश, डाक्टरके आदेशमें मिलकर, मेरी अस्वस्थताके प्रमाण-पत्रपर भला कबतक भाग सकता था? हां, मेरी दृष्टि उस धुंधले कमरेसे बाहर होने पर भी साफ नहीं रह सकी, सामनेकी वस्तुएं धुंधली दिखाई देने लगीं, सिरमें भयानक पीड़ा ने डेरा जमाया और फिर डाक्टर साहबने रंगीन किरणोंका खेल दिखाकर मोटे-मोटे शीशेका एक चश्मा मेरी आंखों पर चढ़ा दिया। अवगुंठनके इन पुरस्कारोंको पाकर भी, उसके विरोधमें मुंह खोलनेके लिये मैं अपनेको, अपनी इन बहनोंको, कुछ न कहनेके लिये ही अच्छा समझती हूं, यह मेरी कायरता नहीं तो क्या है ? किन्तु इस कायरताको दूर करनेवाले, क्या-सारीसे प्रगतिशील क्रान्तिकी आग मांगनेवाले कवि, साम्यवादी और स्वतंत्रताके प्रेमी नेता तथा स्वास्थ्यके ठेकेदार डाक्टर कुछ ऐसा उपाय न कर सकेंगे कि मेरी ये माताएं अपना व्यंग्य और प्रहार न बरसा कर अनुराग प्रदान करें। तब मेरे मनमें कोई कह सा उठा—

"उनमें इतना साहस, इतना नैतिक बल कहां है, जो ऐसा उन्हें करनेको प्रोत्साहित करे।" मैंने देखा, उस उत्तप्त दोपहरीमें उन्हींकी मंगल-कामना लिये वह अवगुंठनवती बहनोंकी एक टोली चली जा रही है, जो मोड़के पत्थरसे टकराती, हाथ मलती अदृश्य ही होती जाती है।"

— the time factor

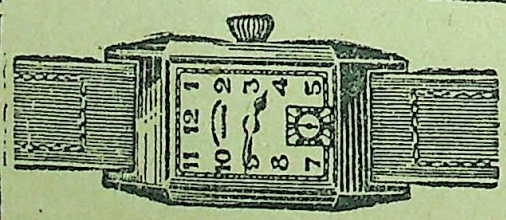

सेकण्डस

न्यू केलिवर रेक्टेंगुलर

९ कें० सालिड गोल्ड, प्लेन डायल—१४५

प्रत्येक 'वेष्ट-एण्ड' घड़ीके पीछे भारतके लिये उत्कृष्ट घड़ियोंके निर्माता के रूपमें हमारा ७५ वर्षोंका अनुभव है।

व्यवसाय में समयका महत्व

दफ्तरमें कारखानेमें, मिलमें वस्तुतः सभी व्यापारिक, औद्योगिक और कर्म जीवनमें समयका सर्वाधिक महत्व है। पहुंचनेका समय, किसी कामके लिये जाने का समय और माल पहुंचानेका समय-सारा काम निश्चित समयानुसार होना चाहिये और प्रत्येक व्यक्तिके लिये, चाहे वह मालिक हो या कर्मचारी, घड़ी आवश्यक है। निर्भरताको प्रथम स्थान देने वालोंके लिये 'वेष्ट एण्ड' सर्वोत्तम घड़ी है। हमलोग हर व्यक्तिकी आवश्यकता और सामर्थ्यके उपयुक्त नयी घड़ियां प्रदान करनेको शीघ्र आशा रखते हैं।

वेष्ट एण्ड वाच कं०

बम्बई व कलकत्ता

WEST END WATCH Co.

BOMBAY CALCUTTA


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

## ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय

आरोंदा

१८६६

नीलगिरि वेल

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

## धन का अपव्यय

● अनेक व्यक्ति ऐसे दिखते हैं यद्यपि वे प्रति सप्ताह नाई को ६ आने तक दे देते हैं। इस मूल्य में उनकी तीन हजामतें बनती हैं, इस प्रकार सात दिनों में से चार दिन उनकी दाढ़ी खुरदरी रहती है।

## धन का सदुपयोग

यदि आप स्वयं ही प्रतिदिन "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड से हजामत बनावें तो आप इस प्रकार सुव्यवस्थित ही नहीं दिखेंगे, किंतु धन की भी बचत करेंगे क्योंकि एक पैकेट हफ्तों चलता है।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड सर्वोत्तम इस्पात से तीन स्तरों में बनाये जाते हैं। बाजार में वे सबसे तेज एवं विश्वसनीय ब्लेड हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

## 7 o'clock

SLOTTED BLADES

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस्

ब्लेड जो ज्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं

१२ आने

प्रत्येक १० के पैकेट का मूल्य


७४ धमतला स्ट्रीट स्थित इलेक्ट्रेड इंडिया प्रेसमें गोविन्द चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGD NO C 2229 विश्वामित्र


## WHY BUY A PEN WORTH RS. 85/- or 100/-

When you can get a most similar **U. S. A. DELUXE** Fountain Pen of world-wide reputation at thrilling low price **RS. 10/-** by V. P. P. at your door with a **PARKER** ink bottle and an extra 14 ct. nib, Not more than one or out of Hindusthan orders will be accepted. Very limited stock. Order today to avoid disappointment,

**DELUXE** 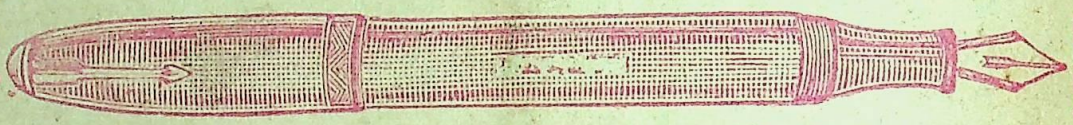 **Rs. 10/- Post free**

- Shape very attractive
- Colour black or other
- Pocket Clip Rolled Gold

**Rs. 10**

- Writes very smoothly & freely
- Dries as Writes
- Nib semi gold life guarantee
- Self ink filling very easy takes 15 seconds.

*Apply* :**ORIENTTRADERS**, V.W. BALDEO BUILDINGS, JHANSI, UP.

## टी.बी. T.B. "तपेदिक" चाहे फेफड़ोंका हो या अंतड़ियोंका भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज — मामूली ज्वर, खांसी

(२) दूसरा स्टेज — ज्वर, खांसीकी अधिकता

(३) तीसरा स्टेज — शरीर सूखना, ज्वर-खांसी की भयंकरता

(४) चौथा स्टेज — सबही बातोंकी भयंकरता शरीरपर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना

अन्तिम स्टेज — रोगकी मौत और भयंकर जर्मोका इधर-उधर फैलना

जबरी ——— (JABRI) ——— (जबरी) ——— (JABRI)

## टी.बी. T.B. "तपेदिक" और पुराने ज्वरके हताश रोगियो ! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नड़गावां, पो० डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनोंसे ज्वर खांसीसे बीमार था। बलगम आदिकी परीक्षा पर "तपेदिक" (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोगका नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया। इसी बीच परमात्माकी कृपासे आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरत आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवाका विधिपूर्वक सेवन किया। इसके अमृतरूपी गुणोंने मुझे आश्चर्यमें डाल दिया। थोड़े ही दिनोंमें शरीरका रंग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थमें आपकी औषधि इस दुष्ट रोगके लिये अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा० ठाकुर सिंह नेपाली मु० कटैया पो०हरलखी जिला दरभंगासे लिखते हैं। "आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत ही लाभदायक प्रतीत हुई, कृपया लौटती डाकसे पूरा कोर्स भेज दें।" इसी प्रकारके पहले भी दसों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमोंमें देख चुके हैं, भारतके कोने कोनेमें लोगोंने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोगसे रोगीकी जान बचाने वाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। 'जबरी' के नाममें ही भारतके पूज्य ऋषियोंके आत्मिक बलका कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिनसे ही इस दुष्ट रोगके जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि —आप इस तरफसे हताश हो चुके हों तो भी परमात्माका नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिनका नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताए क्या होता है—जब चिड़िया चुग गयी खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियोंपर व्यवहार करके साथ पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तारका पता केवल "जबरी" जगाधरी काफी है। तारमें अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ानेके लिये मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन १) रु०, महसूल अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्रका हवाला जरूर दें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड केमिस्ट (६०) "जगाधरी" (पूर्व पंजाब) ई० पी०


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

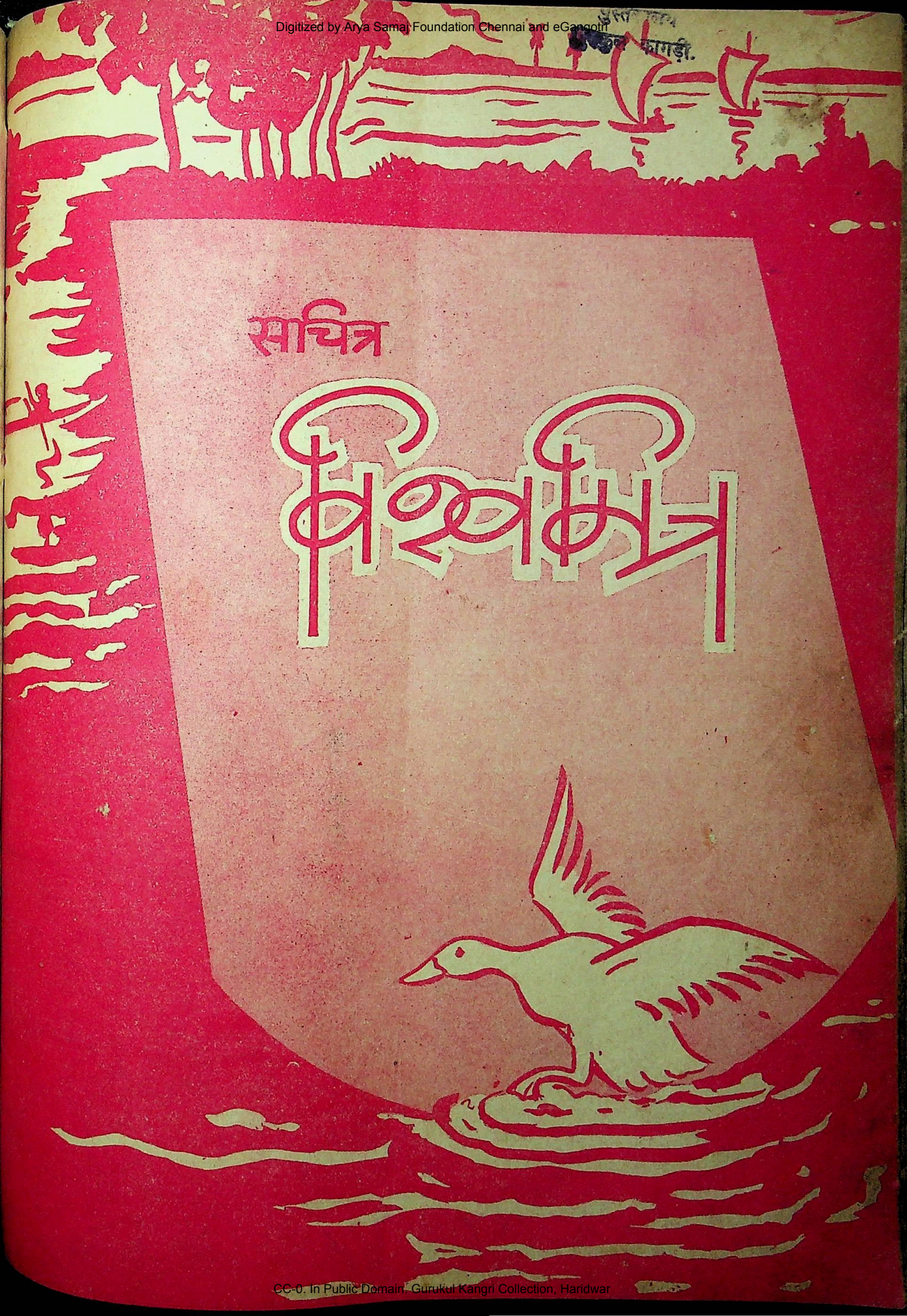


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचोंके लिय खाना पकानेका स्वास्थ्यकर तरीका। अन्तर्राष्ट्रीय शिः खाद्य समितिके तत्वावधानमें बाहरसे आए हुए छात्रोंको भोजन बनानेकी प्रणालीसे अवगत कराया जाता है।

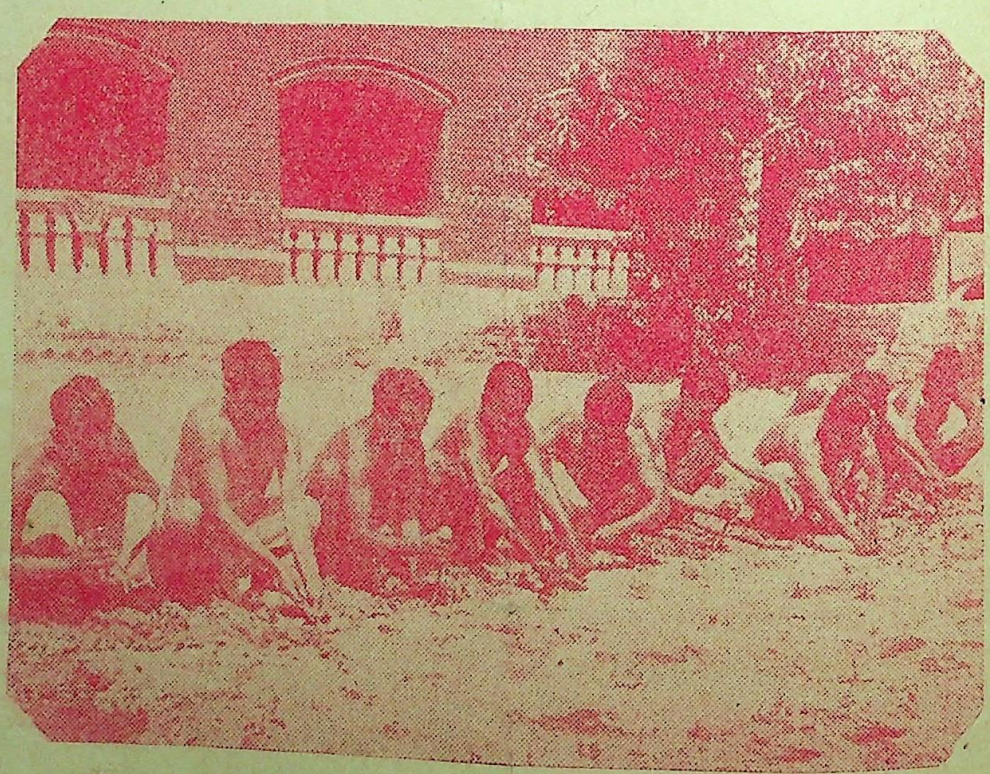

प० बंगाल सरकार भिक्षुकोंकी अवस्था सुधारनेका प्रयत्न कर रही है। सरकार ने अपनी योजनाके अन्तर्गत एक "भिक्षुक गृह"का निर्माण किया है। इसमें इनकी शिक्षा-दीक्षाका प्रबन्ध होता है। दिनमें भिक्षुक बागबानी कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक-

प्रदीप

३१--२६ २५ जलाई १९४८ CALCUTTA, JULY 25, 1948. मूल्य =) वार्षिक ६

# उद्गार

श्री बद्रीप्रसाद गुप्त 'आर्य'

नये प्रातकी तुम नयी रश्मि छू लो !
तिमिर - मय निशाकी निशानी नहीं अब
दुखद-सी दिशाकी कहानी नहीं अब
कि थी क्लांति जिसमें जवानी नहीं अब
उठो ! नींद के भ्रान्ति-मय स्वप्न भूलो
नये प्रात की तुम नयी रश्मि छू लो
उषाने लिया हेम- घट रश्मिसे भर
धराके सुमन खिल पड़े रश्मि छू कर
जगतने नये प्राण पाये नये स्वर
भरो जागरण, शीर्ण-शिवके त्रिशूलो !
नये प्रात की तुम नयी रश्मि छू लो !

उदधि की लहरने नया ज्वार पाया
सिहरती सरितन किरण-हार पाया
सकल चर-अचरन मधुर प्यार पाया
मिटे पाप, संताप ले हर्ष फूलो !
नये प्रात की तुम नयी रश्मि छू लो !

विकल कोकिलाने नये गान गाये
भ्रमरके स्वरोंमें नये राग छाये
प्रकृतिने छटा-रूप निर्झर बहाये
नयी सांस भर मोदसे मस्त झूलो !
प्रथम प्रात की तुम प्रथम रश्मि छू लो !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# व्यंग यह निष्ठुर समयका !

श्री 'नारज'

व्यंग यह निष्ठुर समयका !
आंसुओंके स्नेहमें जिसको जला कर
प्राण अंचल-छांहमें जिसको छिपा कर
काल-निशिकी चिर गहन बीहड़ डगरको
पार कर पाता पथिक जिसकी दया पर
पर बुझा देता वही दीपक बटोही
जब समय आता निकट दिनके उदयका !
व्यंग यह निष्ठर समय का !

राहमें जिसकी बिछा कुसमित पलक-दल
भाल-तल पर झांक जिसके चरण चंचल
सुरभिकी सुरभित सुरा सरिसे जिसे छू
हर लिया था ताप जिसकी देहका कल
आज फूलोंकी उसी मृदु चांदनी को
नोंचता बनकाल वह झोंका मलय का ।
व्यंग यह निष्ठुर समय का !

देख कर जिसकी अबाधित वेग हरहर
राह दे देते सहमक्कर शल मूधर
तृण-सदृश बहते सघन बन साथ जिसके
घाटियां जिसमें पिघल जातीं मचल कर
बूंद-सा लेकिन वही गतिमान निर्झर
खोजता आश्रय उदधिमें अन्त लयका
व्यंग यह निष्ठुर समयका !

कह रहे किस भांति फिर तुम सत्य जीवन
लक्ष्य उसका एक जब बस नाशका क्षण
सत्य तो वह है, समय हो दास जिसका
नाश जिसके सामने कर दे समर्पण
ल पर अंकित न जीवन-चिन्ह कोई
न्तु जीवन पर अमिट है लेख वयका
व्यंग यह निष्ठुर समय का !

कुछ नहीं जीवन अरे बस देहका ऋण
जो चुकाना ही हमें पड़ता किसी क्षण
कर रहा व्यापार पर इस ब्याज से जो
वह समय ही, काल ही, शाश्वत चिरन्तन
फूल का है मूल्य उपवनमें न कोई
सत्य मधु ऋतु ही सदा सिरजन लयका !
व्यंग यह निष्ठुर समय का !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



* श्री *

परहित बस जिनके मनमाहीं ।
तिन कई जग दुर्लभ कछु नाहीं ।।

# विश्वमित्र

## अब न चूक चौहान

काश्मीरके मोर्चे पर आक्रमणकारी जैसे आधुनिक शस्त्रास्त्रोंका उपयोग कर रहे हैं उसे देखते हुए बड़ा ही आश्चर्य हो रहा है। उस दिन भारतीय फौजोंके कमाण्डर उस्मानकी मृत्यु एक २५ पौंडवाले गोले से हुई। आखिर ऐसे घातक शस्त्रास्त्र आक्रमणकारियोंको कहांसे मिलते हैं ? यह ठीक है कि पाकिस्तानकी नियमित फौजें आक्रमणकारियोंकी ओरसे लड़ रही हैं लेकिन सवाल तो यह है कि स्वयं पाकिस्तानके पास भी ऐसे शस्त्रास्त्र कैसे और कहांसे मिले ? भारतके फौजी अधिकारियोंका कहना है कि पाकिस्तान को अविभाजित भारतके जिन शस्त्रास्त्रोंमें हिस्सा मिला है, उनमें ऐसी सामग्रियां नहीं थीं। इस स्थल पर प्रमुख पाकिस्तानी पत्र 'डान'में प्रकाशित एक संवादका उल्लेख कर देना उचित होगा। कमाण्डर उस्मानके लगभग एक सप्ताह पूर्व 'डान'में उसके पश्चिमी पंजाब स्थित सम्वाददाता की एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी, जिसमें कहा गया था कि— आजाद काश्मीर फौजें अब विभिन्न तरहके विशाल आधुनिक शस्त्रास्त्रोंका उपयोग कर सकेंगी, क्योंकि विश्वस्त सूत्रसे मालूम हुआ है कि कुछ विदेशी मित्र, आजाद काश्मीर सरकारको बड़े बड़े शस्त्रास्त्र देने की स्थिति में हैं।

तो ये 'विदेशी मित्र'कौन हैं ? इसका उत्तर देनेके पहले एक ताजा घटनाका उल्लेख कर देना अत्यंत आवश्यक है, जो गत २९ जुलाईको घटी है। इस दिन एक आस्ट्रे- बाद करांचीसे रवाना हुआ और दूसरे दिन सबेरे लगभग ७ बजे, हैदराबाद पहुंच गया। भारत सरकारके आदेशा- नुसार किसी भी विदेशी वायुयान को, भारतीय प्रदेशपर उतरे बिना, सीधे हैदराबाद नहीं जाना चाहिये। लेकिन इस आदेशका उल्लंघन कर और भारत सरकारकी हवाई नाकेबन्दी तोड़ कर एरोटिकल एण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च कम्पनीके मेनेजिंग डाइरेक्टर और उस वायुयानके चालक फ्रेडरिक सिडनी काटनने भारत सरकारको चुनौती दी है। यों तो सिडनी काटन और निजाम सरकारके अधिकारियोंकी ओरसे कहा गया है कि उस वायुयानमें सिर्फ दवा- दारूके सामान थे। लेकिन यदि यह सच है तो सिडनी काटनने बंबईके हवाई अड्डे पर उतरने की भद्रता क्यों नही दिखायी ? इस संबंधमें नयी दिल्लीके अधि- कारियोंका कथन है कि विगत एक महीनेके भीतर ६ लंकास्टर वायुयानोंने, जिनमें सिडनी काटनका वायुयान भी शामिल है, बहुतसी युद्ध सामग्रियां करांचीसे हैदराबाद पहुंचायी हैं। यह भी मालुम हुआ है कि उनमेंसे दो वायुयानों पर कनाडियन चिन्ह देखे गये। और कहते हैं कि इसके लिये जब कनाडाकी सरकारके सामने प्रतिवाद किया गया तो जवाब मिला कि वे वायुयान उपयुक्त एरोनाटिकल एण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च कम्पनीके हाथ बेच दिये गये है, अतः अब उन्हें कनाडियन चिन्हके व्यवहार करनेका कोई अधिकार नहीं है।

जोहो, पर इतना स्पष्ट है कि काश्मीर और हैदराबादके मामलेमें न सिर्फ पकिस्तान बल्कि कुछ बिदेशी सरकारें भी पूरी दिल चस्पी लेती हुई आक्रमणकारियोंकी सहायता कर रही हैं। एक ओर राष्ट्र संघकी सुरक्षा परिषदने काश्मीर के मामलेकी जांचके लिये अपना एक कमीशन भेज रखा है और दूसरी ओर स्थिति यह दिखाई देती है कि काश्मीरके साथ ही हैदराबादका मामला जारहा है। निजाम सरकारकी ओरसे उस दिन घोषित किया गया कि समझौतेके लिए वह एक निष्पक्ष पंचायतको माननेके लिये तैयार है। इसका मतलब यह समझना चाहिये कि निजाम सरकार हैदराबादके मामलेको भी काश्मीर की तरहही अन्तराष्ट्रीय बना देना चाहती है; और विदेशी शक्तियोंकी ओरसे भीतरही भीतर हैदराबादकी जिस तरह मदद की जा रही है, उसे देखते हुए भय होरहा है कि अगर भारत सरकार शिघ्रा तिशीघ्र उचित कार्रवाइयां करनेमें किसी तरहकी हिचकिचाहट दिखायेगीतो हैदराबादका मसल भी काश्मीरकी तरह ही बेकाबू हो जायगा। हालमें सरदार बल्लभ भाई पटेलने बड़े ही स्पस्ट शब्दोंमें कहा है कि. यदि निजाम सरकार समय रहते न चेत गयी तो हैदराबादकी हालत वही होगी जो जूनागढ़की हो चुकी है,अत अब हररोज बड़ी व्यग्रता पूर्वक इस बातकी प्रतीक्षा की जारही है कि हैदराबादके खिलाफ कब निर्णायक कदम उठाया जाय।

सरदारने कहा है कि जिस तरह डाक्टर किसी घावका नश्तर करनेके पहले चहता है कि वह अच्छी तरह पक जाय, उसी तरह भारत सरकार भी निर्णायक कदम उठानेके लिए उचित समयकी प्रतीक्षा कर रही है, जिससे कि कमसे कम क्षतिसे समस्या हल हो जाय। लेकिन यह भूल न जाना चाहिए कि नश्तरके लिए आवश्य- कता से अधिक प्रतीक्षा करनेका फल अच्छा नहीं होता, क्योंकि भीतरका मवाद जहरीला बन जाता है। हम जानते हैं कि काश्मीरकी कठिनाइयोंसे ही निजाम सर- कारको कुछ ढील दी जा रही है। लेकिन पिछले दो सप्ताहकी घटनाएं चिल्ला चिल्ला कर कह रही हैं.... अब न चूक चौहान! ।

### लेखक। ओर कावय। से

स्वतंत्रता दिवसके अवसरपर आगामी १५ अगस्त को 'विश्वमित्र'का एक विशे- षांक प्रकाशित होगा। लेखक और कवि अपनी उपयुक्त रचनाएं शीघ्र भेजनेकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## एक गंभीर शिकायत

आस्ट्रेलियन चालक सिडनी काटनने भारत सरकारकी आज्ञाकी अवहेलना कर कराचीसे हैदराबादकी जो हवाई यात्रा की, वह हमारे देशके राजनीतिक क्षेत्रोंमें चर्चाका एक मुख्य विषय बन गयी है। आस्ट्रेलियन सरकारके समक्ष इसका प्रतिवाद किया गया है और कराची-स्थित भारतीय हाई कमिश्नर श्री श्रीप्रकाश ने पाकिस्तान सरकारके सामने तत्काल इस बातकी जांच की जानेकी मांग पेश की है कि कराची हवाई अड्डेके अधिकारियों ने मि० सिडनी काटनको सीधे हैदराबाद उड़नेकी इजाजत कैसे दे दी। सिडनी काटनकी यह यात्रा अचानक नहीं हुई, बल्कि प्रस्थानके कई दिन पहलेसे ही उसने खुले शब्दोंमें हवाई नाकेबन्दी तोड़कर सीधे हैदराबाद जानेकी घोषणा कर रखी थी। तो स्वभावतः जनता यह जानना चाहती है कि सिडनी काटनको हैदराबाद पहुंचनेसे रोकनेके लिए, भारत सरकारके हवाई विभागके अधिकारियोंने कितनी सतर्कता दिखायी थी और वे क्यों नहीं इसमें सफल हुए ? आखिर नाकेबन्दी जारी करनेका अर्थ ही क्या है, यदि उसके पालन करानेकी शक्तिमें आवश्यकतासे अधिक ढिलाई हो ? क्या सिडनी काटनकी यह यात्रा भारतीय राष्ट्रकी प्रतिष्ठा पर आघात नहीं पहुंचाती ? और, ताज्जुब की बात तो यह है कि सिडनी काटनके हैदराबाद पहुंचनेकी खबर पहले हैदराबाद से ही मिली, नयी दिल्लीसे नहीं। शायद भारत सरकारके अधिकारियोंको तबतक इसका कुछ भी पता नहीं था, जबतक हैदराबादसे संवाद मिल न गया। अगर यही बात हो, तो निस्सन्देह इससे हमारे हवाई विभागकी कमजोरी प्रकट होती है। क्या सरकारकी ओरसे इसका कुछ स्पष्टीकरण किया जायेगा ?

## बंगाल–बिहार विवाद

पश्चिम बंगाल बिहारके बंगलाभाषी [illegible] सम्बन्धमें राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद और कलकत्ता हाईकोर्टके एक बैरिस्टर श्री कुमुदबन्धु बागचीके बीच पत्र-व्यवहार हुआ था। इस सिलसिलेमें राष्ट्रपतिने बड़े ही स्पष्ट विचार प्रकट किये हैं। उन्होंने कहा है कि "विवादग्रस्त इलाके बिहारमें ही बने रहें या पश्चिम बंगालमें मिला दिये जायं, इस प्रश्नका निपटारा मतगणना द्वारा वहांकी जनता द्वारा ही किया जाना चाहिये।" निस्सन्देह इस स्पष्टोक्तिके बाद विवादकी तनिक भी गुंजाइश नहीं रह जाती। इस स्थल पर यह बता देना आवश्यक है कि हालमें ही मानभूम जिला कांग्रेस कमेटीकी बैठकमें, जिसमें बंगालियोंका बहुमत है, एक प्रस्ताव पेश किया गया था कि मानभूमको पश्चिम बंगालमें मिला दिया जाय। लेकिन यह प्रस्ताव गिर गया। इससे तो यही प्रकट होता है कि कुछ थोड़े-से राजनीतिक कुचक्री ही यह आन्दोलन चलाते हैं।

## सिखोंकी 'गृहभूमि'

गत १५ जुलाईको पटियाला और पूर्वी पंजाबकी रियासतोंका जो संघ स्थापित हुआ है, उससे सिखोंके इतिहासमें एक नया अध्याय आरम्भ हुआ है। पाकिस्तानकी स्थापनाके कारण सिख सर्वाधिक क्षतिग्रस्त हुए, क्योंकि पंजाबके विभाजनसे वे दो भागोंमें बंट गये और पश्चिम पंजाब के सिखोंका एक तरहसे सर्वनाश हो गया। लेकिन इस नये संघकी स्थापनासे उनकी कमी अब बहुत कुछ पूरी हो जायेगी, क्योंकि इस संघमें सिखोंका ही बहुमत है। धन्यवाद है पटियाला नरेशको, जिनकी राजनीतिक दूरदर्शितासे सिखोंकी यह 'गृह भूमि' कायम हो सकी है। पटियाला नरेश भी अपने राज्यकी विशालताके आधार पर अपना अलग अस्तित्व रखनेकी अकड़ दिखा सकते थे, लेकिन अपने सम्प्रदायके हितोंका ध्यान रखते हुए उन्होंने ऐसा उचित नहीं समझा। लेकिन इस सत्यको अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि इस 'गृह भूमि' को स्थापनामें [illegible] वहांके रियासती प्रजामण्डलोंका था। ये प्रजामण्डल जिम्मेदार सरकार कायम करनेकी जो आवाज बुलन्द कर रहे थे, उसका विरोध करना जिन्द, फरीदकोट अथवा पटियालाके लिए भी अत्यन्त कठिन था। खैर, जो भी हो, यह संघ बन जानेसे सभी समस्याएं एक साथ हल हो गयीं। इस संघका क्षेत्रफल लगभग १० हजार वर्गमील है।

## वजीरिस्तान और सीमाप्रान्त

वजीरिस्तान और पश्चिमोत्तर सीमा प्रांतकी परिस्थिति ठीक ठीक नहीं मालूम हो रही है। कराचीसे प्रकाशित केन्द्रीय पाकिस्तान सरकारकी एक विज्ञप्तिमें बताया गया है कि "इपीके फकीरने, जो ब्रिटिश सरकारका शत्रु रहा है, अब पाकिस्तानके खिलाफ विद्रोह आरम्भ कर दिया है और वजीरिस्तानमें चौकियों पर उसके दलवालोंने गत १५ जून से आक्रमण आरम्भ कर दिया है। पाकिस्तान सरकार इन आक्रमणकारियोंके खिलाफ कारवाइयां कर रही है, लेकिन इपीके फकीरके खिलाफ हवाई कारवाई नहीं की गयी है।" लेकिन कुछ ही दिनों पूर्व सीमाप्रांतके लीगी प्रधान मन्त्री खां अब्दुल कयूम खां ने एक प्रेस कानफरेंसमें यह स्वीकार किया था कि इपीके फकीरके खिलाफ हवाई कारवाई की गयी है। तो यह परस्पर विरोधी बातें क्यों ? इससे तो प्रकट होता है कि वहांकी वास्तविक स्थितिपर पर्दा डालनेकी कोशिश की जा रही है। इस स्थल पर यह बता देना आवश्यक है कि गत १५ जूनको खां अब्दुल गफ्फार खां जब गिरफ्तार किये गये, तभीसे वजीरिस्तानमें यह गड़बड़ी शुरू हुई है। बात यह है कि जिस 'पठानिस्तान' का आंदोलनके चलानेके नाम पर खां अब्दुल गफ्फार खां और उनके हजारों समर्थक गिरफ्तार किये गये हैं। उस आंदोलनसे कबीले पूरी सहानुभूति रखते हैं। वे इस बातको अच्छी तरह जानते हैं कि पाकिस्तान सरकार जो खुद ही आर्थिक संकटोंमें पड़ी हुई है, उनकी हालत सुधारने और किसी तरहकी मदद करनेमें सर्वथा असमर्थ है। इसके प्रतिकूल 'पठानिस्तान' से वे अपनी आर्थिक मुक्तिकी आशा रखते हैं। इसीसे इपीके फकीरके नेतृत्वमें उन्होंने पाकिस्तानके खिलाफ खुला विद्रोह कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



व्यक्ति और व्यक्तित्व——

# स्वामी रामानन्द तीर्थ

——श्री राघवेन्द्र

आज हैदराबादकी जनता निजाम-शाहीकी निरंकुश हुकूमत उलट देने और अपनी आजादी हासिल करनेके लिए जो अटूट साहस और उत्साह दिखा रही है, उसका मुख्य श्रेय एक वीतराग संन्यासीको है। यही संन्यासी——स्वामी रामानन्द तीर्थ——हैदराबाद रियासती कांग्रेसके अध्यक्ष हैं। अधेड़ उम्र, कद लम्बा और खादीकी गेरुआ पोशाकमें स्वामीजीका व्यक्तित्व जनताके लिए एक महान आकर्षण है। उनके आचरणकी महानता अपनी एक खास छाप रखती है। साम्प्रदायिकता और सामंतशाहीकी चक्कीमें पिसती हुई हैदराबादी जनताके लिए स्वामीजी एक आशा-केन्द्र हैं। आज स्वामीजी स्वयं जेलमें बन्द हैं, लेकिन आजादीके लिए मर-मिटनेका उनका संदेश वहां के बच्चे-बच्चेके कानोंमें गूंजता है। निजाम-शाहीके घोर जुल्मोंका सामना करते हुए जनता आज अपनी मंजिलके जितना निकट पहुंच गयी है, उसे देखते हुए साफ जाहिर होता है कि स्वामीजीकी तपस्या अब शीघ्र फलवती होनेवाली है।

स्वामीका जन्म अक्तूबर, १९०३ में गुलबर्गा (हैदराबाद) जिलेके अन्तर्गत चिनमल्ली जहांगीर नामक स्थानमें हुआ और उनकी प्रारंभिक शिक्षा गंगापुरके एक प्राइवेट स्कूलमें हुई। पश्चात् कल्याण में प्रारंभिक शिक्षा और शोलापुर में हाई स्कूल शिक्षा पानेके बाद, सन १९२१ के असहयोग आन्दोलन में उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और अमलनेरके नेशनल कालेजमें भर्ती हो गये। तिलक विद्यापीठ से उन्होंने बी०ए० पास किया। स्वामीजी अपने छात्र-जीवनसे ही अत्यन्त प्रतिभा-वान मालूम होते थे। बी०ए० की परीक्षा में वे विश्वविद्यालय भरमें सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुए। बी० ए० के बाद, राजनीति लेकर उन्होंने एम० ए० किया। इस तरह पूर्ण शिक्षित होकर स्वामीजी सार्वजनिक सेवा के क्षेत्रमें उतरे।

सार्वजनिक सेवा——दलितों और पीड़ितोंकी सेवा—— करनेकी ओर स्वामीजीका झुकाव बचपन से ही था। इसीसे मौका मिलते ही उन्होंने मजदूर-आन्दोलनमें भाग लेना शुरू किया और बम्बई में कपड़ा मिल मजदूर यूनियन के संगठनमें उन्होंने पूरी मदद की। इण्डियन ट्रेड यूनियन एक्टका मसविदा बनानेमें भी उन्होंने योग दिया था। थोड़े ही दिनों में मजदूर-क्षेत्रमें स्वामीजी काफी लोकप्रिय हो गये और शोलापुरके सूती मिल मजदूरों की हड़ताल के सम्बन्ध में उन्हें सजा हो गयी।

इस स्थलपर यह बता देना आवश्यक है कि उन दिनों वे 'स्वामीजी' नहीं हुए थे, लेकिन उनके आचरण और बर्ताव-व्यवहारमें सभी साधु सुलभ गुण विद्यमान थे, बल्कि यों कहिये कि छात्र-जीवन से ही उनका झुकाव संन्यासकी ओर था। जब वे नेशनल कालेजमें भर्ती हुए तो कालेज के प्रिन्सिपल स्वामी कैवल्यानन्दके संपर्क में आनेके कारण सन्यास और अध्यात्मवादकी ओर उनकी रुचि और प्रबल हो गयी।

स्वामीजी कुछ दिनों तक, उस्मानाबाद जिलेके अन्तर्गत हिपर्गा के नेशनल स्कूलमें प्रधानाध्यापक के पद पर रहे——सर्वथा अवैतनिक। स्वामीजी जानते थे कि पीड़ित मानवताकी सेवा करनेके लिए बड़े त्यागकी जरूरत है। इसीलिए संसारकी मोह-मायासे अलग रहना उन्होंने अत्यन्त आवश्यक समझा। अध्यापकके जीवनमें, वे भिक्षा द्वारा अपना काम चलाते थे। इस तरह हम देखते हैं कि संन्यासाश्रममें प्रवेश करनेके पहले ही स्वामीजी सच्चे संन्यासी हो चुके थे। नियमित रूपमें उन्होंने सन १९३१ में संन्यास लिया।

स्वामीजीका वास्तविक राजनीतिक जीवन सन १९३७ में आरंभ हुआ, जब कि उन्होंने महाराष्ट्र कानफरेंसके लातुर-अधिवेशनका मंत्रित्व स्वीकार किया और उसी साल रियासती कांग्रेसने जो सत्याग्रह चलाया, उसमें स्वामीजीका मुख्य हाथ था। वे गिरफ्तार कर लिये गये। सन १९३९ में वे मनमादमें रियासती कांग्रेसके मंत्री निर्वाचित हुए और तबसे कांग्रेसके साथ उनका निकटतम संबंध स्थापित हो गया। सन १९४० में वे महात्मा गांधीकी अनुमतिसे 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' में भाग लेकर गिरफ्तार हुए थे और १५ महीनोंके बाद रिहा किये गये। ८ वर्षों तक, जबकि निजामकी सरकारने रियासती कांग्रेसपर प्रतिबंध लगा रखा था, स्वामीजी ने ही कांग्रेसका झंडा निरन्तर ऊंचा रखा। सन् १९४२ के अगस्त-आन्दोलनमें स्वामीजी ने महत्वपूर्ण भाग लिया। १६ महीने तक वे नजरबन्द रहे। पश्चात अ० भा० देशी राज्य प्रजा परिषदकी स्थायी समितिने ११ जून, १९४६ को एक प्रस्ताव पास कर उन्हें हैदराबाद रियासती कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया। ३ जुलाई १९४६ को रियासती कांग्रेसके ऊपरसे जब प्रतिबंध उठा लिया गया, तो १६ अगस्तको स्वामीजी स्टेण्डिंग कौंसिल द्वारा अध्यक्ष मनोनीत किये गये।

हैदराबादके राजनीतिक क्षेत्रोंके प्रायः सभी दलों और विचारोंके लोग समान भावसे स्वामीजी का आदर करते हैं और निस्स्वार्थ कार्यकर्त्ताओं का एक मजबूत दल सदैव उनके इशारे पर अपना सर्वस्व निछावर करनेके लिए तैयार रहता है।

भारतके राजनीतिक जीवनमें साधु-संन्यासियोंका बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी वजह यह है कि किसी भी तरह का भेद-भाव न रखनेवाले ये साधु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



संन्यासी सर्वदर्शी होकर सबकी समान सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। महात्मा गांधीसे पहले भी बहुत-से संन्यासियोंने राजनीतिमें क्रियात्मक भाग लेकर राजनीतिज्ञोंका पथ प्रदर्शन किया है। भारतीय इतिहासमें ऐसे बहुत-से प्रमाण मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि देशकी राजनीति पर साधु-संन्यासियोंका सदैव प्रभाव रहा। यूनानी लेखकोंने बताया है कि जब सिकन्दरने भारतपर आक्रमण किया था, तो उसे भारतीय संन्यासियोंके विद्रोहका जबर्दस्त मुकाबला करना पड़ा था।

स्वामी रामानन्द तीर्थके जीवनका सूक्ष्म अध्ययन करनेसे पता चलेगा कि उन्होंने भारतीय संन्यासियोंकी उस परम्परा को कायम रखनेमें आदर्शवादिताका जो स्तर कायम किया है, वह सर्वथा स्तुत्य है। हैदराबादकी सरकारने गणतंत्रके खिलाफ जब कोई कदम उठाया, स्वामीजीने अत्यन्त निर्भीकतापूर्वक उसका विरोध किया। भारतसे अंग्रेजी हुकूमतके हटनेके समय जब निजामने १५ अगस्त, १९४७से अपने को 'पूर्ण स्वतंत्र' होनेका ऐलान किया, तो स्वामीजी ने तुरत रियासती कांग्रेसके प्रथम अधिवेशनमें इस चुनौतीको स्वीकार किया और यह निश्चय किया गया कि निजाम का यह स्वप्न हरगिज पूरा न होने दिया जायेगा। अधिवेशनमें निजामके सामने २ मांगें पेश की गयीं—(१) हैदराबाद भारतीय संघमें शामिल हो जाय और राज्य में शीघ्र 'जिम्मेदार सरकार' कायम की जाय।

और, इन उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए स्वामीजी सत्याग्रह आन्दोलनका डंका बजा दिया। ७ अगस्त १९४७ को 'भारतीय संघ में शामिल होओ' और १५ अगस्त १९४७ को 'भारतीय स्वतंत्रता' के दिवस धूमधाम से मनाये गये। लेकिन निजाम सरकार सरकार भला चुपचाप यह सब कैसे देखती रहती! उसने एक आर्डिनेंस जारी कर भारतक राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराने पर रोक लगा दी। लेकिन हैदराबादकी जनता तो अपने को भारतका एक अविभाज्य अंग समझती और भारतके राष्ट्रीय झंडेको अपना झंडा मानती है। फिर निजामके इस अपमान जनक आदेशको वह कैसे मानती! स्वामी रामानन्दने भी इस राष्ट्रविरोधी आज्ञाका उल्लंघन करनेका आह्वान किया। फिर तो वह तूफान उठा कि निजामका तख्त हिल उठा।

सैकड़ों हजारों व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये लिय गय। एक ओर शेष भारत स्वराज्यका आनन्द मनाने जा रहा था और दूसरी ओर हैदराबादकी जनता पर भयंकर जुल्म हो रहा था। १५ अगस्त १९४७ के 'स्वतन्त्रता दिवस' ने पहले ही स्वामीजी अपने साथियों समेत गिरफ्तार कर लिय गये और समस्त हैदराबादमें आतंकका राज्य छा गया था। लेकिन जब २९ नवम्बर, १९४७ को भारत और हैदराबाद के बीच 'यथापूर्व समझौता' हो गया, तो स्वामीजी दूसरे दिन छोड़ दिये गये। लेकिन बाहर आने पर जब उन्होंन रियासतकी राजनीतिक परिस्थितिका अध्ययन किया, तो निजाम सरकारके रुखम उन्होंने तनिक भी परिवर्तन नहीं पाया। लेकिन चूंकि स्वामीजी सदासे ही शान्तिपूर्ण समझौतेके पक्षमें थे, इसलिए उन्होंने २१ जनवरी, १९४८ को निजामके नाम एक पत्र लिखकर अपील की:—

"मैं निजाम, उनके वंश और समस्त हैदराबादके शुभचिन्तककी हसियतसे यह पत्र लिख रहा हूं। मैं अनुरोध करता करता हूं कि निजाम यह घोषणा कर दें कि जिम्मेदार सरकारके द्वारा और गणतन्त्री भारतके अंगके रूपमें जनताको अपने भविष्यके निर्णयका पूरा अधिकार है।"

लेकिन इस अपील पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया गया और परिस्थिति ज्यों-की-त्यों गम्भीर बनी रह गयी। पश्चात स्वामीजीने रजाकारों और उनके नेताओंके साथ भी समझौता करनेकी चेष्टाएं कीं, लेकिन उन्होंने भी कुछ ध्यान नहीं दिया। तब स्वामीजीने भारतीय नेताओंको गम्भीर चेतावनी देना शुरू किया। और, एक राजनीतिक भविष्यवक्ताकी तरह उन्होंने जो कुछ कहा, उसे हम आज आंखों देख रहे हैं। स्वामी जीने कहा था:—

"भारतीय स्वतन्त्रता अधूरी रहेगी, जब तक हैदराबादकी जनता स्वतन्त्र न हो जाय। हैदराबाद की समस्याको आगे चलकर 'अन्तर्राष्ट्रीय समस्या' बनाने की कोशिश की जायेगी, अगर समस्याके समाधानमें अब अधिक विलम्ब किया गया। भारतीय स्वतन्त्रताकी अन्तिम लड़ाई हैदराबादमें ही लड़नी होगी, अतः इसके लिए तैयार रहना चाहिए।"

इसी आधार पर स्वामीजी आन्दोलनका संचालन कर रहे थे। जब निजाम सरकारने देखा कि आन्दोलन बड़ी तेजी से अधिकाधिक उग्र होता जा रहा है, तो उसने २६ जनवरी १९४८ को स्वामीजी को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन स्वामीजी की गिरफ्तारीसे आन्दोलनमें किसी तरहकी शिथिलता नहीं आयी है, बल्कि और प्रेरणा मिली है। आज समस्त किसान, मजदूर, छात्र, पटेल और पटवारी बड़ी दृढ़ताके साथ अपनी आजादीकी लड़ाई लड़ रहे हैं। और, आज भारत सरकारकी भी आंखें खुल गयी हैं। वह देख रही कि लगभग ९–१० महीने पूर्व स्वामीजीने जो भविष्यवाणी की थी, वह आज बिलकुल सामने आ गयी है।

लेकिन जो हो, हैदराबादकी लड़ाई अब अपनी आखिरी स्थितिमें पहुंच गयी है। उस दिन पटियाला राज्य मण्डल का उद्घाटन करते हुए सरदार पटेलने बड़ी दृढ़ताके साथ कहा कि अगर निजाम सरकारने तुरत समय न पहचाना, तो हैदराबादकी भी वही हालत होगी, जो कुछ दिन पूर्व जूनागढ़की हो चुकी है। निस्सन्देह सरकारकी इस वाणीमें समस्त भारतकी आवाज बोलती है। इसलिए वह दिन दूर नहीं, जब कि हैदराबादकी जनता भी शेष भारतकी तरह स्वतन्त्रता के वातावरणमें सांस लेने लगेगी और उसके नेता स्वामी रामानन्द तीर्थ जेलके सींकचे तोड़कर राज्यके नव-निर्माणमें पथ-प्रदर्शन करेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पौण्ड-पावना समझौता

—श्री षण्मुखम चेट्टी, अर्थमन्त्री, भारत सरकार

(पौण्ड-पावनाके संबंधमें हालमें ब्रिटिश सरकारके साथ लंदनमे जो समझौता हुआ है, उस पर भारत सरकारके अर्थ मंत्री श्री षण्मुखम चेट्टीने विस्तृत रूपसे प्रकाश डाला है। इस समझौतेकी बातचीतमें भाग लेनेके लिए भारतका प्रतिनिधि-मण्डल अर्थ मंत्री के ही नेतृत्वमें गया था।)

भारत अपनी प्रचलित मुद्राके सुरक्षित कोष के रूपमें ब्रिटेनमें हमेशासे स्टर्लिंग जमा रखता रहा है। हमारे व्यापारकी प्रणाली और अपना देना चुकता करनेमें हमारी स्थिति ऐसी रही है कि हमें अपनी कुछ पूंजी स्टर्लिंगके रूपमें जमा रखनी पड़ती रही है। रिजर्व बैंकके विधानके अनुसार बैंकके कुल पावनेका कमसे कम २-५ वां भाग सोने, चांदी या स्टर्लिंग सिक्योरिटियोंके रूपमें रहना चाहिये। इस नियमके अनुसार युद्धसे पहले भी रिजर्व बैंक हमेशा कुछ-न-कुछ पावना स्टर्लिंगके रूपमें रखता था। युद्ध से पहले इस प्रकार जमा धनका मूल्य ४८० लाख पौंड अर्थात् ६४ करोड़ रुपये था। लन्दनमें हमारी बातचीत प्रारम्भ होनेसे पहले भारत के पौंड पावनेकी रकम १ अरब १६ करोड़ पौंड आर्थात् १५ अरब ४७ करोड़ रुपये थी। विभिन्न प्रकारके आर्थिक और व्यापारिक लेन-लेन के कारण युद्ध-कालमें पौंड पावना बड़े पैमाने पर जमा हो गया। इसके जमा होनका मुख्य स्रोत यह था कि ब्रिटिश सरकार भारत में विविध प्रकारकी जो युद्ध-सामग्री खरीदती थी, और भारत ब्रिटेन तथा अन्य संयुक्त राष्ट्रोंकी ओरसे युद्ध के लिए जो-कुछ खर्च करता था, उस सबके बदले ब्रिटेन भारतके पावने खातेमें स्टर्लिंगकी

इस बातचीतके फलस्वरूप ब्रिटेन ३० जून १९५१ को समाप्त होनेवाले पांच तीन वर्षोंमें ८ करोड़ पौंड १०७ करोड़ रुपये भारतको देना स्वीकार कर लिया है। १ जुलाई १९४८ को हमारे १ नम्बर खाते में जो रकम थी, वह इस रकम सहित १६ करोड़ पौंड २१३ करोड़ हो जायेगी। रुपय अर्थात् इस रकमसे हम विदेशोंसे सामान खरीद सकेंगे।

मैं इस स्थल पर यह भी बता देना चाहता हूं कि रक्षा-व्यय योजनाके अन्तर्गत हमें, ब्रिटेनकी सरकारसे जो रकमें प्राप्त करनी हैं, उनके संबंधमें भी निर्णय हो गया है और इससे हमें पूर्ण संतोष है। इसमें वे दावे भी शामिल कर लिये गये हैं, जिन्हें भारतको पूरा करना था। इसलिए अब अन्तिम स्थिति यह है कि एक ओर भारत और पाकिस्तान तथा दूसरी ओर ब्रिटेनके बीच युद्ध संबंधी समस्त लेन-देनके प्रश्नों का ब्रिटेन के रक्षा-सामानके भुगतानका प्रश्न सहित अन्तिम निबटारा हो गया है। भारत और पाकिस्तानके बीच संबंधित के बाद भारतके हिस्सेमें लगभग ८० करोड़ पौंड या १,०६७ करोड़ रुपया आयेगा। इसमेंसे लगभग २० करोड़ पौंड या २६७ करोड़ रुपयेकी रकमको साधारण मुद्रा कोष समझ लेना चाहिए। इस प्रकार उपयोग के लिए शेष सुलभ रकम, रिजर्व बैंकके १ नम्बर खाते में जमा सहित ५० करोड़ बैंकके १ नम्बर खाते में जमा सहित ६० करोड़ पौंड या ८०० करोड़ रुपये रह जाती है।

रकम जमा करता जाता था। रिजर्व बैंक-विधानके कुछ नियमोंके अनुसार बैंकको यह अनिवार्य जिम्मेदारी है कि वह असीमित परिणाममें स्टर्लिंग खरीदे। इन नियमों का प्रयोग करके भारतसे ब्रिटेनने जो माल खरीदा, उसके बदले रिजर्व बैंकने स्टर्लिंग खरीद लिया। वास्तवमें बैंकके ये नियम इस प्रकार काममें लाय जानेके लिये नहीं बने थे। ब्रिटिश सरकारने युद्ध-खर्चकेअपने हिस्सेका मूल्य चुकानके लिए भारतको जो स्टर्लिंग अर्थात ब्रिटिश मुद्रा दिय, उन्हें भारतने रुपयोंके बदले रिजर्व बैंकको बेच दिया।

पौंड पावना युद्ध ऋण नहीं है

इस प्रकार ये स्टर्लिंग रिजर्व बैंककी सम्पत्ति होते गये और इंगलैण्डमें जमा होते रहे। इस प्रकार हमारा पौंड पावना किसी भी अर्थमें दो सरकारोंके बीच युद्ध-ऋण नहीं है बल्कि युद्ध संचालनके लिए आर्थिक तथा अन्य स्वीकृत व्यवस्थाओंके अनुसार विविध प्रकारसे क्रय-विक्रय और लेन देनको भुगतानोंके फलस्वरूप जमा हुई हमारी प्राप्तव्य रकम है। यह उल्लेखनीय है कि भारतने ब्रिटेन तथा अन्य संयुक्त राष्ट्रोंकी ओरसे युद्ध कालमें उन देशोंसे प्राप्तव्य जो खर्च किया है उसके अतिरिक्त अपनी ओरसे भी बहुत खर्च किया है।

इस पौंड पावनेका कुछ भाग तो रिजर्व बैंकने अपनी मुद्रा प्रचलन शाखामें प्रचलित मुद्राके बदले सुरक्षित कोषके रूपमें रखा है और कुछ भाग बैंकिंग विभागमें अपने देनेकेबदले पूंजीके रूपमें रखा है। यह स्पष्ट है कि नैतिक या व्यावहारिक किसी भी दृष्टिसे पौंड पावनेको घटानेका प्रश्न नहीं उठाया जा सकता। चूंकि व्यापार और व्यवसायके द्वारा पैदा होनेवाले आर्थिक लेन-देनके भुगतानका अन्त राष्ट्रीय केन्द्र लंदन रहा है, इस लिये यह कोई अनोखी बात नहीं थी कि भारत तथा अन्य देशोंने अपना पावना ब्रिटेनमें जमा रखा। पौंड पावनेके व्यवस्थित भुगतानकी व्यवस्था करनेके लिएही १९४७ में ब्रिटिश सरकार तथा पौंड क्षेत्रके विभिन्न देशोंमें बातचीत हुई थी। जनवरी और फरवरी १९४७ में नयी दिल्लीमें भारत और ब्रिटेनकी सरकारोंके प्रतिनिधियोंके बीच जो बातचीत हुई थी, वह समाप्त न हुई थी, परन्तु एक अन्तः कालीन समझौता अगस्त १९४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में ६ मास तक भारतके लिये आवश्यक विदेशी विनिमयके लिये हुआ था।

ब्रिटेनके साथ फिर बातचीत

चूंकि जनवरीका समझौता केवल ६ मासके लिये था और जून १९४८ में समाप्त हो गया, इसलिये हम फिर बातचीत करनेका निश्चय किया और इसके लिये एक प्रतिनिधि मंडल लंदन भेजा गया। किसी खास अवधिमें पौंड-पावनेके मुक्त किये जानेके अतिरिक्त और भी कई प्रश्न थे, जिन्हें हम सुलझाना चाहते थे। यह बातचीत निम्न उद्देश्योंसे प्रारम्भ की गयी थी।

(१)–ब्रिटेनके जिस साज सामान को अविभाजित भारतने अप्रेल १९४७ में ले लिया था, उनके भुगतानका प्रश्न तय करना।

(२) वार्षिक वृत्तिको खरीदनके आधार पर पेंशनोंका एक मुश्त मुल्य निर्धारित करनेकी योजना बनाना और

(३) प्रारम्भमें तीन वर्षोंके लिए पौंड-पावनेको मुक्त करानेकी व्यवस्था करना, जिसमें कम-से कम मुक्त किये गये पौंड-पावनेके कुछ भागको विविध मुद्राओं में परिवर्तित करनेकी व्यवस्था भी सम्मिलित है।

स्टोर्स तथा अन्य सामग्रियोंका क्रय

अप्रैल १९४७ में अविभक्त भारत सरकारने ब्रिटिश सरकारसे उसके सब स्टोर्स तथा अन्य सामग्री ले ली थी, जो ब्रिटिश सरकारने युद्धकी समाप्ति पर भारतमें छोड़ी थी। इन स्टोर्स तथा सामानका मूल्य निश्चित करनेका प्रश्न बादके लिए छोड़ दिया गया था। पाकिस्तानके लिए पृथक मुद्रा स्थापित हो जाने तथा दोनों उपनिवेशोंके पौंड पावनाके अन्तिम रूपसे पृथक हो जानेकी आवश्यकताके कारण उपर्युक्त स्टोर्स तथा सामानके मूल्यको निर्धारित करनेका प्रश्न महत्वपूर्ण एवं आवश्यक हो गया। रिजर्व बैंक आफ इंडियाकी संपत्ति होनेके कारण पौंड-पावनाका एक भाग पाकिस्तानके लिए पृथक मुद्रा स्थापित हो जाने और भारतीय नोटोंके रिजर्व बैंकको वापस कर दिये जाने पर पाकिस्तान सरकारको देना पड़ेगा। पाकिस्तान मनीटरी सिस्टम रिजर्व बैंक आर्डर, १९४७, और इस आर्डरके विभिन्न संशोधनोंमें यह बताया गया है कि किस प्रकार रिजर्व बैंक की स्टर्लिंग सम्पत्ति भारत तथा पाकिस्तान के बीच विभक्त की जानी चाहिए। इस प्रश्न से संबंधित कागजपत्र पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं। स्टोर्स और सामानका मूल्य निश्चित करनेकी बातचीत हमने पाकिस्तान के साथ की थी। हमने जो स्टोर्स और सामान लिया था उसका खातेमें दर्ज मूल्य, अर्थ सचिवालयने निर्धारित किया। यह मूल्य ५०० करोड़ रुपये हैं।

पेंशनोंका मूलधनमें परिवर्तन

विभाजन व्यवस्थाओंके अधीन अविभक्त भारत सरकार द्वारा सब पेंशनें देनेका प्रारंभिक उत्तरदायित्व हमने ले लिया था। विभाजनके कारण अवकाश प्राप्त करनेवाले अफसरोंको दी जानेवाली पेंशनोंके सहित प्रति वर्ष दी जाने वाली विभाजनपूर्व केंद्रीय पेंशनें लगभग ८ करोड़ रुपयकी हैं। निस्सन्देह यह दायित्व प्रति वर्ष घटता जायेगा और कुछ समय बाद समाप्त हो जायगा। इस दायित्वको पूरा करनेके लिए हमने ब्रिटिश सरकारसे धीरधीरे घटने वाली वार्षिक आर्थिक सहायता लेनेका निश्चय किया। यह एक सुविधाजनक उपाय समझा गया जिससे पैंड पावनेके अंकोंमें भी कमी हो जायगी। कन्द्रीय सरकार द्वारा लिये गये इस दायित्व के अतिरिक्त उन पेंशनोंका दायित्व भी है जो भारतके प्रांतोंके खातोंमें पड़नेवाली हैं। इन्हें देनेके लिये भी हमने वार्षिक सहायता लेनेका निश्चय किया। हमारी बातचीत का संतोषजनक परिणाम निकला और इस वार्षिक आर्थिक सहायता को खरीदनेके लिए केन्द्रीय पेंशनोंके लिए १९७ करोड़ रुपये और भारतको प्रांतीय पेंशनोंके लिए २७ करोड़ रुपये लगे।

स्टर्लिंग का भुगतान

६ महीनेके लिए स्टर्लिंग प्राप्त करनेकी वर्तमान प्रणाली असंतोषप्रद रही है, क्योंकि इससे हमारी विदेशी मुद्रा विनिमय-स्थिति में अनिश्चितता उत्पन्न हो गयी और सन्तुलित आयात नीतिमें भारी अड़चन पैदा हो गयी। आर्थिक उन्नतिकी योजनाकी दृष्टिसे यह आवश्यक है कि भविष्यका कुछ अनुमान पहले ही लगा लिया जाय। साथ ही ब्रिटेनमें संक्रमण कालकी आर्थिक कठिनाइयों और अनिश्चितताओंको ध्यानमें रखते हुए दीर्घकालीन प्रबन्ध के लिए जोर भी भी नहीं डाला जा सकता था। इसलिए बातचीत इस आधार पर की गयी कि प्रारम्भमें पहले तीन वर्षोंके लिए, भारतको पर्याप्त स्टर्लिंग मुद्रा दे दी जाय। यह बातचीत बहुत देर तक चली और बीचमें कुछ कठिनाइयां भी उत्पन्न हुईं। ब्रिटेन की आर्थिक उन्नतिकी गतिकी अनिश्चितताके कारण ब्रिटेनकी सरकारने इस बात पर जोर दिया कि त्रैवार्षिक भुगतानकी अपेक्षा वार्षिक भुगतान अधिक संतोषप्रद होगा। अन्तमें ब्रिटेनके अर्थमंत्री ने हमारी कठिनाइयोंका अनुभव किया और उन्होंने त्रैवार्षिक भुगतान के आधारपर बातचीत करना स्वीकार कर लिया। हमारे देशमें ब्रिटेनकी वस्तुओंको खपानेकी कितनी क्षमता है और ब्रिटेन के पास भारतको भंजनेके लिए कितना सामान है, इन दोनों बातोंको ध्यानमें रख कर हमें अपनी आवश्यकताओंका संतुलन करना पड़ा।

साप्ताहिक विश्वमित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ब्रिटेनमें महान जन—हित योजना

## जन्मसे मृत्यु तक सबका समान सरकारी सहायता

ब्रिटनके राष्ट्रीय स्वास्थ्य और जीवन बीमा क्षत्रमें एक नया अध्याय गत ५ जुलाईसे शुरू हुआ है, जिस दिन ब्रिटेनके प्रायः सभी, तीनों हजार अस्पताल सरकारी देख रेखमें आ गय और उनमें लगे हुए १८ हजार डाक्टर राष्ट्रीय सेवक बन। इस दिनसे देश भरके बाल, युवा, वृद्ध स्त्री-पुरुषके स्वास्थ्यका भार सरकार पर पड़ा। सरकार कुछ थोड़ासा स्वास्थ्य प्रीमियम लेकर देशके हर नर नारीके स्वास्थ्यकी रक्षाका कार्य देखेगी। अभी-अभी ब्रिटनमें चार इसी प्रकारकी सार्वजनिक हित योजनाएं चालू की गयी हैं। वे हैं राष्ट्रीय जीवन बीमा, राष्ट्रीय सहायता योजना, राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति योजना और राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना। इनमेंसे दोकी चर्चा की जाती है।

पहले इंगलैण्डमें, जैसा कि इस देशमें है, स्वास्थ्य और चिकित्साका प्रबन्ध खानगी विषय था। बड़े बड़े अस्पताल थे जिनमें अच्छीसे अच्छी चिकित्सा होती थी पर वे सम्पूर्ण जनसंख्याको सहायता नहीं पहुंचा सकते थे। बड़े-बड़े डाक्टर थे और उनके बड़े-बड़े खानगी चिकित्सा संस्थान भी थे पर वे पैसेवालोंके लिय थे। गरीबको उनसे कोई मदद नहीं मिलती थी। ५ जुलाईके पहले लोग अपनी चिकित्साके स्वयं जिम्मेदार थे। मरते हों तो मरिये-उबरते हों तो उबरिये। ५ जुलाईके, जिस दिन यह नयी योजना लागू हुई ह, बादसे अब लोगोंको चिकित्साके अभावमें महंगीसे-महंगी दवाई के अभावमें, पत्थ्यके अभावमें मरना न होगा। अब सरकारको उसे देखना होगा। संसार भरसे पहले ब्रिटनमें यह चीज होने जा रही है। इसके साथ राष्ट्रीय बीमा योजना और भी कमाल करने वाली है। इससे समाजकी काया पलट होने वाली है। ब्रिटेनने यह चीज बिना अधिक शोरगुल मचाये शुरू कर दी है। यह अभिनव आयोजन है। इस योजनासे जो लाभ होंगे वे ये हैं।

बीमारीका लाभ, मातृत्वकी सहायता, मातृत्वका भत्ता, धाईका भत्ता, विधवाको भत्ता, गर्भिणी विधवाको भत्ता, विधवाको पेंशन, बेकारीका भत्ता, अभिभावकका भत्ता, कामसे अवसर पानेके बादका भत्ता, मृत्यु ग्रांट, आहत सहायता, हाथ पांव कट जाने पर सहायता, कमाने वालेके मारे जाने पर परिवारको भत्ता।

ऊपर लिखे गये जितने लाभ हैं वे सब उन लोगोंको मिलेंगे जिनका बीमा हो जायगा। इसके लिये जो कुछ लिया जायगा वह अपेक्षाकृत नगण्य है। यह तो बीमा योजनाके लाभ हुए। चिकित्सा योजनाके लाभ ये हैं —

डाक्टरी परामर्श और इलाज दवायें और सभी प्रकारकी अस्पताली सहायता, दांतके रोगका इलाज, अस्पताल-चिकित्सा और विशेषज्ञों द्वारा इलाज, आंखोंके रोगका इलाज, कानके रोगों और वधिरताका इलाज, वधिरोंके लिय श्रवण-यन्त्र, गर्भावस्थामें एवं प्रसवावस्थामें डाक्टरी, और औषधि सहायता। स्वास्थ्य निरीक्षकोंकी सहायता, घर पर नर्सोंकी सहायता, पाछ और संक्रामक रोगोंसे बचनेके उपाय, अलावे।

इस योजनाको क्रियान्वित करनेका भार उठाने वाले सरकारी विभाग महीनों इस सोच विचारमें दिन-दिन भर रात-रात भर गवां चुके हैं कि कसे इस योजनाका संगठन किया जाय और क्या-क्या व्यवस्था हो। अन्तमें सबकी सम्मिलित रायसे एक आदर्श व्यवस्था बनाकर योजनाको क्रियान्वित करनकी घोषणा की गयी है। जन साधारणको मानो यहयो खाना बरदानके रूपमें मिलेगी। वह इसके लिय उद्ग्रीव थी। ५ जुलाईके बाद आवेदन पत्र आने आरम्भ हुए और अब तक २ करोड़ ७५ लाख दरखास्तें आ चुकी हैं कि इस योजनाओंके अन्तर्गत हम लोगोंको ले लिया जाय।

### राष्ट्रीय बीमा योजना

सीधे-सीधे, समझ लेनेके लिये, यह जानना चाहिये कि इस योजनाके अनुसार एक निश्चित-सी फीस हर व्यक्ति सरकार को देगा। यह कहा गया ह कि हर कारखानेके मजदूरको यह सुभीता मिलना चाहिये और इन योजनाओंके अनुसार हर बीमा किया हुआ आदमी टैक्टसे ४ शि० २ पेंस देकर अपना बीमा करा सकता है। बीमेकी बाकी फीसके ४ शिलिंग २ पेंस उस कारखानेको देना होगा जिसमें वह काम करता हो। पहले भी जो एकाध तरहकी आंशिक बीमा प्रणाली प्रचलित थी उसमें इससे कहीं, अधिक देना पड़ता था पर आज इस घटी हुई रकममें अपेक्षाकृत दस गुना अधिक लाभ है। बीमाकी अवस्थामें बीमाकृत मजदूरको पहले १० शिलिंग प्रति सप्ताह प्रति पुरुष और ७।। शिलिंग प्रति स्त्र मिलता था। यह भत्ता भी केवल अधिक से अधिक २६ सप्ताह तक चल सकता था। अगर मजदूर इसके बाद भी अस्वस्थ रहा तो इसका आधा ही उसे मिलता था।

अब बीमारीकी दशामें काम करनेमें अयोग्यताका सर्टिफिकेट पा लेने पर स्त्री पुरुष दोनोंको २६ शिलिंग प्रति सप्ताह अच्छे होने तक मिलते रहेंगे। अगर बीमार पर बाल बच्चोंका भार हो तो उसे प्रति किशोर १६ शिलिंग और प्रति बालक शिलिंग और अतिरिक्त मिलेगा। इससे छोटे बच्चोंके लिये अलग भत्तेका प्रबन्ध किया गया है कि जो बीमारीके भत्तेसे सरोकार नहीं रखता। पहले मातृत्वका भत्ता ३० शि० था, अब वह ४ पौण्ड किया गया ह और यह बच्चेके लि ह, उसकी मांको ३६ शि० हर हफ्ते इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अलावे १३ हफ्तों तक मिलता रहेगा।

इनके अलावे कुछ नये-नये सुभीते भी दिये गये हैं। अभिभावकका भत्ता १२ शि० प्रति हफ्ता, मृत्यु ग्रांट २० पौण्ड और कारखानेमें काम करनेमें अगर चोट आ जाये तो उसके लिये ४५ शि० भत्ता। चोट आनेके लिये ४५ शि० प्रति हफ्ता; काम करनेके अयोग्य हो जाने पर ४५ शि० तक प्रति हफ्ता और मृत्यु हो जाने पर मजदूरके आश्रितोंको ३० शि० प्रति हफ्ता, अलगसे मिलता रहेगा।

यह नयी बीमा—योजना केवल मजदूरोंके ही लिये नहीं है। सभी इससे लाभ उठा सकते हैं। उन्हें ४ शि० ११ पें० प्रति सप्ताह देना होगा। इस योजनासे जो आय होगी, वह सब एक ही कोषमें जमा होगी और उसीसे सभीको भत्ते आदि मिलेंगे। इस तरहकी खानगी जो कम्पनियां थीं उनका सम्बन्ध अब सरकारसे कुछ न रहेगा।

इस योजनाका सबसे महत्वपूर्ण सुफल यह होनेवाला है कि निराश्रयता और निर्जीविका ब्रिटेनसे विदा हो जायगी। दूसरे शब्दोंमें सरकार अब वास्तविक रूपमें सरकार होगी जब कि वह मां बापकी तरह सबके कमसे कम आवश्यक व्ययका एक तखमीना निकाल कर, सबको खर्च देनेका प्रबन्ध करेगी—ऐसे आदमियों को जो अपनेसे अपना प्रबन्ध नहीं कर सकते। यह एक ऐसी योजना है जिससे मानव-कष्ट बहुतसे कुछ कम हो जायगा जिससे कोई भूखों न मर सकेगा।

पश्चिमीय देशोंमें पहलेसे ही इस तरहके बहुत सुभीते मजदूरोंको प्राप्त हैं जिन्हें हमारे देशमें सोचा भी नहीं जा सकता। इस तरह बीमारी, आकस्मिक घटनाएं, बेकारी आदिके लिये बीमा करनेका व्यवसाय खानगी कम्पनियां सरकारके सहयोगसे करती थीं। पर उनमें उद्देश्य होता था पूंजी लगाने वालोंका आर्थिक लाभ। अब इन्हीं विभिन्न प्रकार की योजनाओंको एकमें मिलाकर उनमें जहां तक हो सके वहां तक गुंजायश करकेइसे केवल मात्र जन-हिताय बना दिया गया है। पहलेकी योजनाओंमें कोई सम्मिलित होता था, कोई नहीं। वह एक प्रकारके शौककी बात थी। अब इन योजनाओंको ऐसा लाभकारी और हलकी फुलकी बनाया गया है कि सबके सब उसमें सम्मिलित होनेको उत्सुक होंगे और बहुत अवस्थामें उन्हें बाध्य किया जायगा कि हों।

### राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना

स्वास्थ्य सम्बन्धी जो योजना होने जा रही है वह इस योजनासे भी अच्छी है। इस योजनाके अनुसार कोई मजदूर हो या साधारण नागरिक, अस्पतालमें भर्ती, दवादारू, डाक्टरी सहायता, ये तीन चीजें सबको मिलेंगी। सबको यानी ब्रिटेनकी सम्पूर्ण आबादीके हर आदमीको। अस्पताल में रख लिया जायगा जिसकी चिकित्सा घर पर होनी सम्भव न हो। डाक्टर इसकेलिये पत्र देंगे। जैसा कि जैसा ऊपर लिखा गया है इस योजनामें हर प्रीमियम देने वाले आदमीको डाक्टर मुफ्त जाकर देखगा, उसे बिना पैसेके अच्छी से अच्छी दवा मिल जायगी, आवश्यक होगा तो बिना खर्चके वह अस्पतालकी गाड़ी पर अस्पताल पहुंचाया जायगा, वहां उसकी चिकित्सा होगी और उसे भोजन पथ्य मिलेगा। अच्छीसे-अच्छी दवा उसे मिलेगी, अच्छेसे-अच्छ इलाजकी व्यवस्था होगी। न केवल साधारण रोग बल्कि विशेष रोगों, जैसे दांतके रोग, आंख-कानके रोग आदिके लिये भी उसे खर्च करना न होगा। आवश्यक होनेसे आंखोंके लिय चश्मा और बहरोंके लिये सुननेके यन्त्र भी उसे मुफ्त मिलेंगे। डाक्टरोंके साथ इस विषयकी व्यवस्था होगी। उन्हें फीस आदि सरकारसे मिलेंगी। जनता केवल निश्चित रकम चिकित्सा प्रीमियमकी तरह देकर छुट्टी पा जायेगी।

इस योजनाके विषयमें यह प्रश्न उठाया गया है कि इसका विशाल खर्च क्या सरकारके चलाये चल जायगा? सबकी चिकित्साका भार क्या सरकार उठा सकेगी? गत १९२४ सालमें भी इस प्रकारके एक स्कीमकी बात चली थी। पर उस समय इस पर विचार करनेको जो कमीशन बैठी थी उसने २५ हजार आदमियोंकी गवाही लेकर यह रिपोर्ट दी कि यह योजना बहुत अधिक खर्चीली है। सबकी दवा दारू का भार स्टेट नहीं सम्भाल सकता। मगर प्रधान मंत्री एटली साहबने इसका उत्तर हां में दिया है।

मगर युद्धके बादकी आर्थिक परिस्थिति, दवाओंकी महंगाई एवं इलाजकी वर्धमान बहुव्ययशीलताको देखते हुए अब यह अनुभव किया गया है कि देशभरकी चिकित्साका भार सरकारको उठाना चाहिये इस हिसाबसे ब्रिटेनका जो आगामी बजट होगा उसमें सेना-व्ययसे भी भारी मद चिकित्सा सम्बन्धी होगा। सामाजिक सुरक्षाकी यह योजना संसार भरसे अनोखी है। संसार भरसे यह विशाल भी है। मेडिकल एसोसियेशनके अध्यक्ष सर लियोनेल हवाइटवीने इसी सम्बन्धमें बोलते हुए कहा है कि, "आज चिकित्सा इतनी महंगी हो गयी है कि साधारण तबकेके आदमीको बीमार पड़नेकी औकात नहीं है।"

ऐसी दशामें चिकित्साका भार व्यक्ति पर छोड़ा नहीं जा सकता था। सरकारको वह उठाना होगा। इसके लिये प्रीमियम लगाये जायेंगे। इन प्रीमियमोंकी आयके अतिरिक्त सरकार भी इसका खर्च अन्य मदोंसे देगी। ब्रिटेनमें आर्थिक संकट, डाक्टरों की कमी, दवाओंके अभाव, महंगा जीवन व्यय आदिके बीच यह चीज क्या चल सकेगी? हम इसमें अपना सर्वोत्तम साधन लगायेंगे और इसे सफल करके समाजवादी आदर्श के बहुत निकट पहुंच जायेंगे। चिकित्साके मार्गमें जो धनाभावकी दीवार है यह उसको तोड़ देगा। डाक्टरोंकी ओरसे इस योजनाका भयानक विरोध प्रारम्भ हुआ था। पर धीरे-धीरे वह प्रतिरोध ठण्डा हो गया है। अब उन लोगोंने भी

शेष छबीसवें पृष्ठ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कहानी--

# आंख का तिनका

पं० श्री रामशर्मा, 'राम'

पुराणोंकी कथाएं सुनकर तो समाज थक गया। अब उनके प्रति अविश्वासी भी बन गया। और प्रमदाने उन कथाओंके प्रति कभी भी आत्म-भाव नहीं रखा। उस दिन जब सखी सुलोचनाने आकर बताया कि चार हजार वर्ष पहले एक नहीं अनेक ऐसी कथाओंका जन्म हुआ कि जब असुन्दर पतियोंका चुनाव स्वयं लड़कियोंने किया, तो प्रमदाने उपेक्षाका भाव लेकर कहा-"वह युग ही मूर्खोंका था। अन्ध-विश्वास उस समयके समाजमें कूट-कूट कर भरा हुआ था।"

लेकिन सुलोचनाने गर्व-युक्त भावमें कहा--"मैं नहीं मानती, मैं ऐसा नहीं समझती, प्रमदा!"

सुनकर, एकाएक प्रमदाने अपना मत नहीं दिया। परन्तु उसके मनमें जो विलोड़न हो रहा था, उससे प्रभावित होकर एक क्षणके लिए भी ऐसा आभास नहीं मिला कि वह पुराणोंका युग यथेष्ट था, अपने आपमें पूर्ण। अतएव, उसने प्रस्तुत प्रकरणको अधिक महत्व नहीं दिया। बात बदल कर बोली--"तू सुना अपनी बात! आया कहां गयी, कैसे आ गयी, इस भरी दोपहरीमें! बड़ी लूएं चल रही हैं। बाहर आग जल रही है।"

सुलोचनाने कहा--"घरसे निकली, तो यहां चली आई। बच्चे न सोने देते हैं, न पढ़ने देते हैं। घर सिर पर उठाये रखते हैं।"

प्रमदाने कहा--"तू डांट नहीं देती! दिखता है, तेरा कहा नहीं मानते!"

सुनकर, मानो सुलोचनाने अपना दोष स्वीकार कर लिया। लेकिन तभी उसने कौच पर सीधी बैठकर कहा--"घरसे निकली तो वह सामने आ गया। याद है न, जिसे तूने फटकार दिया.... कह दिया, जानवर, गधा!"

चकित भावमें कमलाने कहा--"अच्छा, वह!"--तब बोली--"अरी, वह गधा तो था ही, जाहिल भी था।"

सुलोचनाने कहा--"दोष तेरा था।"

"नहीं, उसका था।"--तपाकसे प्रमदाने कहा--"तुझे दीखा नहीं, घूर-घूर कर देख रहा था,--अशिष्ट।"

इतना सुनकर सुलोचना हंसी और मौन रह गयी।

लेकिन अपनी बातकहते हुए प्रमदा लाल हो गयी। उसी अवस्थामें फिर बोली--"बरबस ही इस पुरुषन नारीको हीन माना है--अपन दिलका खिलौना!"

"और तुम तभी पुरुषसे झगड़ती हो और हीन मानती हो!" सुलोचनाने अपनी आंखोंसे मुसकराते हुए कहा।

बात सुनकर प्रमदाने हाथमें ली हुई किताबको टेबुल पर पटक दिया। सुलोचनान जैसे उसके मर्म पर आघात किया, इसलिए वह इतनी विचलित हो गयी कि उससे न कुछ कहते बना, न उत्साह रहा। और उसी समय सुलोचनाके मनमें था कि पाप दोनोंका है। पुरुष हीन है, तो नारीने भी अपनेको ऊंचा नहीं उठाया है। नारीमें अभिमान है,--अपने प्रति दम्भ। उसने प्रमदाके प्रति पाया कि धनिक परिवारकी लड़की है यह, रूपगर्विता, इसलिए अपनी अजेयताके आगे भला किसको ऊंचा मानती है,--इस पुरुषको ही क्यों! तभी उसने देखा कि वह पुरुष जो अभी रास्तेमें मिला, उस दिन इसी दोष पर तो उसे फटकार दिया, इस प्रमदाने कि मोटर-बसमें बैठे हुए उसे धक्का लग गया उसने क्षमा मांगी, तो इस प्रमदाने जो मुंह में आया कहा.....जलील ही बना दिया, बेचारा! .....आज मिला तो कितना सीधा था कि सामने देखता हुआ निकल गया। मेरी ओर उसने एक बार भी नहीं देखा। वह .....

तभी प्रमदाने टंकोर कर सांस भरते हुए कहा--'आज कुछ पढ़ा? लिखा कुछ?

सुलोचनाके विचारोंका तारतम्य टूट गया। बरबस ही उसने कहा--'आज कुछ नहीं किया।'

'मैंने भी कुछ नहीं किया। गर्मी इतनी है कि कुछ किया नहीं जाता।'

उसी समय, प्रमदाका भाई राकेश हाथ पर बुलबुल रखे हुए यहां आया। देखते ही सुलोचनाने कहा--अजी राकेश बाबू, तुम अब भी बलबुलसे खेलते हो। इतने बड़े होकर भी!

राकेश उस कमरेको पार कर के कहीं जा रहा था। आज उसे अपने बुलबुलकी अखाड़ेमें उतारना था। शहरके एक नवाब साहबकी बुलबुलसे लड़नेका दिन था। सौ-सौ रुपयेकी बाजी। सुलोचनाकी बात सुन कर वह रुक गया। किस बेमौके उसे टोक दिया, इसका भी उसे ध्यान हो आया। परन्तु उसकी बहिन प्रमदा की सखियोंमें एक सुलोचना ही ऐसी थी कि जो उससे न अधिक बोलती, न मिल कर बैठना पसन्द करती। जैसे उसे राकेशसे चिढ़ थी। क्योंकि राकेशके कबूतर बुलबुल, मैना, तोता, आदि जो पले हुए जानवर थे, प्रमदा की सखियां उन्हें देख कर तो खुश होती हीं, साथ ही, वे प्रायः प्रमदाके मकानकी ऊंची छत पर चढ़ कर राकेशकी पतंगबाजीको देखना भी पसन्द करतीं। इसका सबको पता था कि राकेश ही इकलौता बेटा है उस परिवारका इसलिये, बचपनसे ही, उस पर सबका लाड़-प्यार था। प्रमदाकी दृष्टिमें भी उसका भैया सोनेमें सुहागा दीखता था। फलस्वरूप जब सुलोचना ने राकेशको टोक दिया, तो वह रुक कर खड़ा हो गया। फिर कुछ पैर पीछे लौट कर उन दोनोंके पास आया और हार कीउंगलीपरहई बलबल की गर्दन रखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर उंगली फेरता हुआ बोला—'जी हां, मैं अब भी खेलता हूं बुलबुलसे !'

सुलोचनाने कहा—यह बुरा है ।

राकेश बोला—बुरे-भलेकी पहचान करना भी कठिन है । उसने फिर बुलबुल की चोंचसे अपनी उंगली डुलायी और बोला—'आज युद्ध करना है, मेरी बुलबुलको ।

युद्ध ! कैसा ! —चौंकते हुए और आंखोंसे मुस्करा कर सुलोचनाने पूछा ।

राकेशने कहा—'आज शहरके नवाब साहबके लड़केकी बुलबुलसे कुश्ती है । उसे एक पटखनी दी और सौ रुपयेकी जीत ।

अच्छा ! तो तुम्हारी बुलबुल लड़ती है,—वाह राकेशबाबू ! सुलोचनाने मानो व्यंग करते हुए कहा ।

प्रमदा बोली—तो भैया, इतनी गर्मी में क्यों जा रहे हो ।.....

तीन बज रहे हैं—चार बजे दंगल है । राकेश बोला—देर कर दी, तो कहेंगे, डर गया । मुंह छिपा कर रह गया ।' कहते हुए उसने सुलोचनाकी ओर देखा, मुस्कराया और लम्बे पैर रख कर चल दिया ।

पीछेसे प्रमदाने कहा—'जीत होगी, तो लड्डू खिलाना ।'

सीढ़ियों पर जाते हुए जोरसे राकेश ने कहा—'जीजी जरूर ! वह चला गया ।

तभी सुलोचनाने कहा—'बुलबुल भी लड़ती है ।'

प्रमदाने कहा—'सब जानवर लड़ते हैं ।'

सुलोचना बोली—'लेकिन यह काम अच्छा नहीं, गुंडोंका है ।'

प्रमदाने बात पर बल देकर कहा—'तबीयतकी बात है । अपना अपना शौक ।'

इतना सुन कर सुलोचनाने चाहा कि कहे —पैसा है, तो शौक दीखता है रोटियोंके लाले पड़ें, तो दिनमें तारे दिखायी दें । परन्तु उसने यह नहीं कहा । मुंह आती हुई बातको रोक लिया ।

प्रमदाने फिर कहा—भैयाको जानवरोंका शौक है । उनसे प्रेम भी है । क्या मजाल कि जानवरोंको समय पर चारा-दाना न मिले । खर्च भी पूरा होता है ।'

सुलोचनाने बात सुनी और रूखे होठों से मुस्करा दिया ।

विचारोंका मतभेद और परिस्थितिका अन्तर इतना बड़ा था कि सुलोचना ने धीरे धीरे प्रमदासे अपना सम्बन्ध तोड़ लिया । स्कूलमें दोनोंकी भेंट होती, तो प्रमदा कहती—'कल रविवार था, आखिर आई तू न ।'

सुन कर सुलोचना बातको टाल देती और किसी अवश्यकीय कार्यका बहाना बना देती । कदाचित् इस बातका खेद सुलोचना को भी था कि वह अनायास ही प्रमदाको हीन समझ बैठी है । विशेष कारण भी नहीं । बस, इतनी सी बात है कि प्रमदा सम्पन्न घरकी लाड़ली बेटी है । नयी युगकी और नये अरमानोंकी दासी भी बन गयी है जो पुराना है, बीत गया है, वह उसे पसन्द नहीं । ऋषि मुनि, धर्म और सांस्कृतिक भावनाओंके प्रति भी उसमें आस्था नहीं । वह सीता सावित्रीका इतिहास भी पसन्द नहीं करती । और सुलोचना है कि सभी कुछ मानती है । वह मन्दिरके देवता को नमस्कार करती ही है, परन्तु अपना धर्म, जाति, वेद, पुराण, गीता और भागवत् सभी में तो आस्था रखती है, सुलोचना । इसलिये उसने सोचा, प्रमदा और है, वह और । वह मेम नहीं बनेगी । घरकी दासी बनगी वह । एक व्यक्तिकी पत्नी —उसके घरकी स्वामिनी । और उसने देखा कि प्रमदा ही, पुरुषसे जलती है, क्षुद्र मानती है वह ! भैया राकेश है, अवारा और छिछोरे पर समझती है कि बड़ा नेक है, उसका भैया । बड़ा समझदार और शीलवन्त । निदान, वह कहती, ऊंह, बात भी है यह कुछ । निरी संकीर्णता ! इसलिये उसने यही ठीक समझा कि उस घर कम जाये, कम मिले, राकेश से ! क्योंकि उसने कई बार समझा कि राकेश उसे देखता है, तो जाने क्या कहना चाहता है । मोनो कोई सौदा करना चाहता है, वह कदाचित् इसीको लक्ष कर उसने जब प्रमदासे कहा कि राकेश नीयत का साफ नहीं, तो प्रमदाने तुरन्त कह दिया न, न, भैयामें ऐसी कोई आदत नहीं । वह तो हंसता है और बोलता है । मनमें मैल नहीं रखता है ।

बात सुनी और सुलोचनाने अपने मन के नीचे उतार ली । यही कारण था कि वह उस घर जानेसे रुक गयी । वह इतना समझ गयी कि प्रमदा अपने भाईको भला समझती है, दूसरोंको नहीं । शायद उसी प्रकार अपनेको ।

परन्तु उस दिन, जब अनायास राहमें ही, प्रमदाने अपनी अन्य साथिनोंके साथ सुलोचनाको भी घूमनेके लिये पकड़ लिया, तो उसने आपत्ति नहीं की और साथ चल पड़ी । जो अन्य लड़कियां थी, वे अलग हो गयीं । प्रमदा और सुलोचना नगरके सुन्दर पार्कमें जा बैठीं । देरसे संध्या आ गयी थी । धीरे धीरे अन्धेरेकी चादर भी फैल रही थी । पार्कमें जब पूर्ण अंधेरा हो गया, जन समाज भी आधेसे अधिक चला गया, तो खड़े होकर सुलोचनाने कहा—'अब चल । चल न ।'

सुन कर प्रमदा खड़ी हो गयी और बोली—यहां मन लगता है ।

'अब अंधेरा है ।'

तब प्रमदाने अंगड़ाई लेकर कहा—और मेरे जीवनमें अन्धेरा कि तभी प्रमदा चौंकी । वह हतप्रभ और सहमी हुई भी बन गयी । उसने कुछ फासले पर ही देखा, और सुना कि दो तीन जवान लड़कोंने आवाज कसी, उनकी ही ही करके हंसने की आवाज भी आई ।

तभी प्रमदाने सुलोचनाका हाथ पकड़ कर कहा—'चल, चल ।

और उन लड़कोंकी आवाज तेज हुई । अश्लील वाक्योंकी ध्वनि भी उन दोनोंके कानोंमें आयी । उनमें से कोई कह रहा था—अब जा पायोगी क्या.....नहीं ।

इतना सुनना था कि प्रमदा चीख पड़ी । वह भागी । कुछ ही आगे बढ़ी कि एक पथरीली शिलासे टकरा गयी । गि

(शेष पृष्ठ २७ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक व्यंगात्मक शब्द-चित्र

# कामरेड

श्री 'प्रदीप'

नाम तो उनका कुछ और है, लेकिन लोग उन्हें 'कामरेड' कहा करते हैं। नयी रोशनीमें पले हुए जवान हैं। ठाट-बाटसे लगता है कि कम-से-कम एम०ए० पास जरूर होंगे, लेकिन हैं बी०ए० फेल। सुनते हैं, लगातार चार साल तक यूनिवर्सिटीका दरवाजा खटखटाते रहे, पर बी०ए० का पुछल्ला न लगा सके। अब अगर उनकी योग्यताके संबन्धमें कोई पूछता है, तो बड़ी शान दिखाते हुए कहते हैं—"भई, क्या कहूं, आज मैं भी डी० लिट० नहीं तो कम-से-कम एस०ए० तो होता ही; लेकिन बधाई है गांधी बाबा को, जिनके असहयोग-आन्दोलनके चक्करमें पड़कर बी०ए० पास न कर सका।" और इतना कहते कहते वे बातचीतका सिलसिला ऐसा बदल देते हैं, मानों बी०ए० पास न करन पर भी वे बहुतेरे ए० ए० पास लोगोंसे भी बहुत ज्यादा काबिल हैं। बात यह है कि मार्क्सवाद, लेनिनवाद और स्टालिनवादकी लम्बी-चौड़ी बातें तथा गांधीवादके खिलाफ बे-सिर-पैर की दलीलें पश करते हुए कुछ ऐसे हाव-भाव दिखाते हैं कि एक साधारण व्यक्ति उनके शब्दाडम्बरोंसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। बात-बात में सोवियट रूसका हवाला इस जोर के साथ देते हैं, मानों मास्कोका मुआयना कर आये हों। लेकिन सचाई यह है कि पढ़नेके सिलसिलेमें इलाहाबाद और नौकरीके सिलसिलेमें कलकत्ता, इन दो शहरोंको छोड़कर शायद दूसरे किसी शहरमें जाने या रहने का मौका ही नहीं मिला है। हां, उनकी तारीफमें एक बात कहना मैं भूल ही गया। बातचीत जब करने लगते हैं, तो घण्टोंकी खबर लेते हैं। अपना भी नुकसान करते हैं; और जो सामने मिल जाता है, उसकी भी शामत आ जाती है। बातचीतमें वे काफी नाज-नखरे भी दिखाते हैं। बीच-बीचमें कभी चश्मा निकालकर उसे रुमालसे साफ करने लगते हैं; कभी सिगरेटका कश खींचते और धुंआ आसमानकी ओर फेंकते हुए ऐसी भंगिमा दिखाते हैं, मानों विद्वतापूर्ण बातें करनेमें उनके दिमागको काफी कसरत करनी पड़ती है।

यह तो हुआ उनका ऊपरी परिचय। अब जरा भीतरी परिचय भी सुनिये।

नौकरी करते हैं एक जीवन-बीमा कम्पनीमें। आफिसका काम नहीं है, फील्डवर्कर हैं, यानी कनवासिंग करते हैं, इसलिए बाहर घूमने-फिरनेकी आजादी रहती है और सुफ्तकी लीडरी करने का मौका मिल जाता है। कलकत्ते-जैसे शहरमें मजदूर-नेता बनना बिलकुलआसान है, क्योंकि यहां मजदूरोंकी भरमार है। चाहे जिनकी एक यूनियन बना लीजिये और फिर लेक्चर झाड़ते फिरिये। अखबारोंमें नाम भी छपेगा और कांग्रेसी सरकारके मिनिस्टरोंसे हाथ मिलाने में भी सहूलियत रहेगी। मालूम नहीं, हमारे कामरेडने कोई यूनियन बनायी है या नहीं, लेकिन इतना जानता हूं कि प्रायः हर शाम किसी न किसी मीटिंगमें भाषण दे आते हैं और सुबह उठते ही अखबारोंमें अपना नाम ढूंढ़ने लगते हैं। विश्वास कीजिये, असली मजदूर-सेवक ऐसे नाम-छपाऊ और बात-बनाऊ 'मजदूर नेताओं'को मजदूर-आन्दोलनके लिए कलंक समझते हैं, लेकिन बेचारे कर क्या! ऐसे कामरेडोंकी ही तादाद आजकल ज्यादा है।

हां, तो अपने कामरेडका हाल बता रहा था। मजदूरोंकी 'नतागिरी' से उनकी पांचों घी में रहती है। बात यह है कि बीमा कम्पनीके लिए 'शिकार' खोजनेमें भी उन्हें दिक्कत नहीं होती। मजदूर उन्हें अपना शुभचिन्तक समझते हैं, इस लिए आसानीसे बात मान लेते हैं, भले ही दो-चार किश्त चुकानेके बाद प्रीमियम देना बन्द ही क्यों न कर दें। कामरेड अच्छी तरह जानते हैं कि ये गरीब मजदूर जो कुछ पाते हैं, उससे अपना और अपने परिवारका भरण-पोषण ही नहीं कर पाते, फिर बीमाके लिए हर महीने कुछ बचाना उनके लिए कठिन ही नहीं, असम्भव-सा है। लेकिन प्रीमियम बन्द हो जाय, तो उनकी बला से। जो दो-चार किश्त देंगे, उसमें तो कामरेडको कमीशन मिल ही जायेगा। और, फिर कलकत्तामें ऐसे 'शिकारों' की कोई कमी तो है नहीं। हर महीने ऐसे दस-बीसको फंसा लेना कामरेड जैसे व्यक्तिके लिए बांये हाथका खेल है। फिर आप आसानीसे अन्दाज लगा सकते हैं कि तीन-चारसौ रुपये मासिक बना लेना कामरेडके लिए कितना सुगम होगा।

जबतक मुझे यह भीतरी हाल मालूम नहीं था, मैं बड़ हैरतमें रहता था सोचता था, इस भले आदमीका यह शाही खर्च कैसे चलता है। ५०) महीनेका एक बड़ा शानदार कमरा ले रखा है। ठाट-बाटका हाल यह है कि हर रोज नयी नयी पोशाक बदलता है। कभी धप-धप खादीका पाजामा और पंजाबी तथा ऊपरसे जाकेट और कभी खादीका ही साहबी लिबास। दो एक रुपये तो हर-रोज चाय-सिगरेटमें खर्च हो जाते हैं। लेकिन एक बात मार्केकी है। यह सारी खर्चीली आदत सिर्फ अपने लिए ही है। अगर कोई दोस्त-मित्र आ जाय, तो दो-एक खिल्ली पान मंगा कर ही अपना कर्तव्य पूरा समझते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालांकि कामरेड मेरे पड़ोसी हैं, मेरे कमरेकी बगलमें ही उनका भी कमरा है और हर रोज 'नमस्ते' भी हो जाया करता है, तो भी उनकी स्पीच सुननेका मौका कभी नहीं मिला था। मिलता भी कैसे। वे ठहरे सभा-समितियोंमें जानेवाले और मुझे सभा-समितियोंसे चिढ़? लेकिन उस दिन विद्यार्थियोंकी एक सभामें महापंडित राहुलजीका भाषण होनेवाला था और इस लोभको छोड़ना मेरे लिये मुमकिन नहीं था। ठीक समय पर सभा स्थल पर पहुंच गया, तो देखता हूं कि कामरेड पहलेसे ही मौजूद हैं। राहुलजी के भाषणके पहले, कामरेडने ही अपने छोटे-से भाषण में छात्रोंको राहुलजीका परिचय दिया। राहुलजी के पाण्डित्यकी जो कुछ तारीफ उन्होंने की, सो तो की, साथही छात्रोंके कर्त्तव्य पर भी श्रीमानजीने एक स्पीच झाड़ दी। लोग उकता रहे थे राहुलजीका भाषण सुननेके लिए, लेकिन कामरेडका मुंह बन्द नहीं हो रहा था। वे मजदूरोंकी तरह छात्रों पर भी अपना रोब गालिब करना चाहते थे। लेकिन इतनेमें एक मुंहफट छात्र बोल उठा "बैठ जाइये, जनाब, हमलोग राहुलजीका भाषण सुननेके लिए आये हैं।" फिर तो छात्रोंने तालियोंकी तड़तड़ाहट से कामरेड को मुंह बन्द कर देनेके लिए मजबूर कर दिया। मैं मन-ही-मन कह रहा था—इन बाचालोंको आखिर ऐसी बोलनेकी बीमारी क्यों है? बोलनेवाले को कम-से-कम इतना तो सोचना ही चाहिए कि उनकी बातें कोई सुनना चाहता है या नहीं।"

सभा समाप्त होने पर, कामरेड मेरे साथ हो लिये—एक ही जगह जाना जो था। काफी देर हो गयी थी। रातके १० बज रहे थे। ट्राम तो अभी चलती थी, लेकिन कामरेडने अपनी आदतके अनुसार एक रिक्शावालेको बुलाया। रिक्शावाला ८ आनेसे कम पर राजी नहीं होता था और कामरेड ६ आनेसे आगे नहीं बढ़ते थे। कहते थे—"किराया तय है। जो ८ आने मांग रहा है, तो ६ आने दे रहा हूं.....।"

बीचमें ही हस्तक्षेप करते हुए मैंने कहा—"जनाब, वह जमाना कभीका बीत चुका है। माहेश्वरी-भवनसे बहूबाजार और चित्तरंजन एवेन्यूके मोड़ पर कोई रिक्शा-वाला ६ आनेमें नहीं जा सकता। उसने सिर्फ ८ आनेही मांगे हैं, शायद नया है इसलिए, वरना कोई जानकार होता तो १२ आनेसे कम न मांगता।"

कामरेड शर्मिन्दा हो गये। अब उन्हें ध्यान आया अपने मजदूर-नेता होनेका "खैर, आप कहते हैं तो इतना ही सही"—कहते हुए कामरेड रिक्शा पर कूद पड़े और अपनी झेंप मिटाते हुए मुझसे राहुल-जीके भाषण और उनकी विद्वत्ताके संबंधमें चर्चा करने लगे। इतनेमें उनकी नजर अपनी कलाईकी घड़ीकी ओर गयी। "ओह, १० बज कर २० मिनट हो गये। कमला क्या कहती होगी। भोजन ठंढा हो चुका होगा।"

ठीक १० बजकर ३० मिनट पर रिक्शा हमारे मकानके फाटक पर पहुंच गया। ऊपर पहुंचने पर कामरेडने अपना कमरा बन्द पाया। पूछने पर मेरे घरवालों ने बताया कि उनकी श्रीमतीजी संध्या के ५ बजे ही बाहर गयीं, तबसे नहीं लौटीं। खैर, कुछ झींकते हुए-से कामरेडने दरवाजा खोला और चारपाई पर बैठ कर शायद यह सोचने लगे कि अब पेट-पूजाका जुगाड़ क्या किया जाय।

इतनेमें श्रीमती कमला देवीकी चप्पलकी आवाज सीढ़ियों पर सुनायी पड़ी और पलक मारते ही उन्होंने कमरेमें प्रवेश किया और पतिदेवकी ओर मुखातिब होकर अपनी परेशानी दिखती हुई बोलीं—"उफ, आज बहुत देर हो गयी। पार्टीकी महिला-सदस्याओंकी एक मीटिंग थी। सवाल था कि पश्चिम बंगालकी सरकारने कम्यूनिस्ट पार्टीपर जो कोप-दृष्टिकी है, उसका किस तरह माकूल जवाब दिया जाय।"


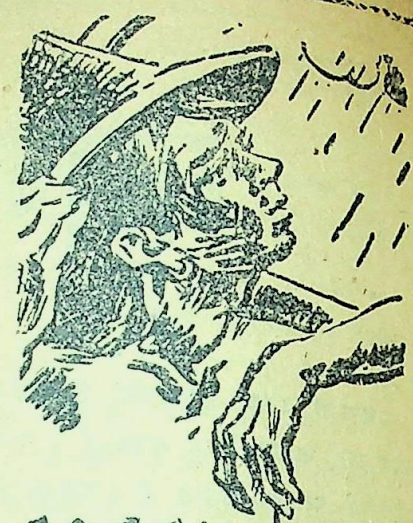

MONSOON
SETS IN
Anopheles breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मले रिया बुखारके लिये रामवाण है। अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियासे कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
kasaya

KAVIRAJ N.N.SEN & CO.LP.
CALCUTTA

अत्यधिक सस्ती कीमतों में

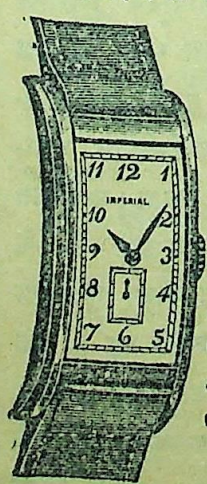

ऊंचे दर्जे की ठीक समय देने वाली, आधुनिक आकार की घड़ियां। प्रत्येक घड़ी की गारण्टी २ साल। गोल या चौकोर आकार की क्रोमियम केस १८), सुपी-रियर २०), बेस्ट २२), मॅटर सेकंड २४) रेक्टेंगुलर क्रोमियम केस ४०), १५ जूवेल ६०) रोल्ड गोल्ड ५५), १५ जूएलकी ८०)। डाकखर्च माफ।

प्रेमचन्द्र एण्ड कं
(V.C.) एशबाग. लखनऊ।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रूस की शिक्षा-प्रगति

श्री गंगाप्रसाद श्रीवास्तव

आजसे तीस पैंतीस वर्ष पूर्व रूस और भारतमें कदाचित् कुछ अन्तर न था। जीवन और राजनीतिकी जिन कुव्यवस्थाओंसे ग्रस्त हमारा भारत आर्तनाद कर उठा था वैसे ही अव्यवस्थित परिस्थितियोंमें तबका रूस भी कराह उठा था तभी क्रांति हुई और उसी क्रांतिके गर्भसे उस देशका जन्म हुआ जिसे हम आधुनिक रूस कहते हैं। उन मौलिक प्रवृत्तियोंका उन्नयन हुआ जिनके कारण वह आज सर्व श्रेष्ठ तथा महान राष्ट्र बना।

उन अव्यवस्थाओंमें शिक्षा थी। इस क्षेत्रमें वह बहुत ही पिछड़ा हुआ था। वहांकी लगभग एक चौथाई जनता शिक्षित थी और शेष सब निरक्षर। परन्तु उस समय भी रूसमें राज्य द्वारा संचालित कुछ विश्वविद्यालय थे, जिनसे बड़े बड़े विद्वान निकलते थे तथा जिनकी प्रसिद्धि संसार भरमें थी, परन्तु नगरोंके बाहर स्कूल बहुत ही कम थे। कृषक और श्रमिक जन लिखना पढ़ना तक न जानते थे। क्रांति के समय देशमें केवल इतने स्कूल थे कि ८०००००० लड़के लड़कियां शिक्षा पा सकें।

### प्रयत्न

क्रांतिके पश्चात् जब देशकी व्यवस्थायें बदलीं, तो वहांकी सरकारने अपनी नीति में शिक्षा-प्रसारको बड़ा महत्व दिया और सर्व प्रथम प्रयत्न जो किया वह यह कि शिक्षा सार्वजनिक तथा निःशुल्क कर दी। गृह युद्धके समय में इस ओर कुछ भी न हो सका था, परन्तु गृह युद्धके पश्चात् ही बड़े बड़े प्रयत्न किये गये। नगरों तथा गांवोंमें बहुतसे स्कूल बनवाये गये। प्रौढ़ शिक्षाका भी प्रबन्ध हुआ, उनके पढ़ानेके लिये कक्षायें बनीं।

कृषकों तथा श्रमिकोंको उच्च शिक्षा दिलानेका प्रयत्न किया गया। इस प्रकारके अवनत राष्ट्रमें भारतोंकी तो कम योग्य शिक्षकों तथा अध्यापकोंकी बड़ी ही कमी रहती है। इस अभावकी पूर्तिके लिये बहुत से अध्यापकोंको ट्रेनिंग दी गयी, बहुत-सी पुस्तकें लिखीगयीं, जिनसे प्राथमिकश्रेणीके महान छात्र अथवा पढ़नेवाले लाभ उठा सकें। शिक्षाके क्षेत्रमें बहुतसे प्रयोग नये नये किये गये और उन्हीं प्रयोगोंके आधार पर फिर नये नये प्रयत्न हुए। और उसके परिणाम हम लोगोंके समक्ष हैं।

### शिक्षा-प्रणाली

एक स्थानके निवासीको उसी स्थानके स्कूलमें शिक्षाके लिये जाना अनिवार्य है और प्रारंभिक किंडर आर्टनसे लेकर उच्च से उच्च विश्वविद्यालय तक की शिक्षा नहीं होती है। वहां सह-शिक्षा है लड़के और लड़कियां साथ साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं।

आज कलकी शिक्षाके विकासकी कई क्रमिक सीढ़ियां हैं:—(१) पूर्व प्रारंभिक शिक्षा, (२) सप्त वर्षीय स्कूल, (३) छ वर्षीय स्कूल, (४) विश्वविद्यालय शिक्षा

पूर्व प्रारंभिक शिक्षा:—शहरों या कस्बोंमें लोग अपनी अपनी भाषायें बोलते हैं। ये प्रजातंत्रकी भाषायें नहीं हैं। वहां के लोगोंको अपनी अपनी भाषायें पढ़नेका तथा अपने स्कूल स्थापित करनेका अधिकार है। वहांके माता-पिताको अधिकार है चाहे वह इस अधिकार का प्रयोग करें या न करें, इसीमें क्रीच और किंडर आ गार्टन की शिक्षा भी सम्मिलित है। कभी कभी किसी फैक्टरीके द्वारा वहांके कार्यकर्त्ताओं के बच्चोंको यही प्रारंभिक शिक्षा दी जाती है। यह प्रायः उन स्थानोंमें होता है जहां स्त्रियां काम करती हैं। उन स्कूलोंमें यह भी प्रबन्ध रहता है। माताये काम करते समय अपने बच्चोंको वहीं छोड़ सकती हैं।

यह शिक्षा बच्चोंको सात या आठ वर्षकी अवस्थामें तक ही दी जा सकती है।

सप्त वर्षीय स्कूल:—यह आठ वर्षसे लेकर पन्द्रह वर्ष तकके लड़के और लड़कियों को अनिवार्य रूपसे दी जाती है। सात या आठ वर्षकी अवस्थामें जब बच्चे यहां प्रवेश पाते हैं, तो यह समझा जाता है कि वह लिखना पढ़ना अवश्य जानते होंगे। यह चाहे उन्होंने घरमें सीखा हो या किसी किंडर गार्टनमें इस बातका कुछ प्रभाव नहीं पड़ता।

सप्त वर्षीय शिक्षा दो भागोंमें बंटी हुई है। प्रथम प्रारंभिक अवस्था आठसे लेकर बारह वर्ष तक तथा इसी प्रकारबारहसे लेकर पन्द्रह वर्ष तक। लगभग पंद्रह वर्षोंसे यह सप्त वर्षीय शिक्षा रूस तथा यूक्रेनके सब उद्योगी तथा शिक्षण केंद्रों और नगरोंमें सब लड़कोंके लिये अनिवार्य है।

इसके अतिरिक्त प्रारंभिक शिक्षाके चार वर्ष हैं प्रत्येक मनुष्यके लिये चाहे वह देहातका हो चाहे कस्बेका हो चाहे नगरका आवश्यक रूपसे अनिवार्य है।

दस वर्षीय शिक्षा:—इस सप्त वर्षीय शिक्षाके अतिरिक्त दस वर्षीय शिक्षाभी प्रचलित है, जो लड़कोंको सात या आठ वर्षकी उमसे लेकर सत्रह या अठारह वर्षकी स्था तक होती है। इस शिक्षाका प्रचार हो रहा है और इसे देश-व्यापक बनानेका प्रयत्न हो रहा है पर इस समय यूक्रेन और लेनिन ग्राडमें ही यह अनिवार्य रूपमेंदी जाती है।

इस समय केवल वही विद्यार्थी जो सप्त वर्षीय शिक्षामें अच्छे रहे हैं इस शिक्षाके अधिकारी हो पाते हैं। उनको तीन सालकी सेकेण्ड्री शिक्षा यहीं दी जाती है। लेकिन मास्को आदि शहरोंमें आधेसे अधिक लड़के इस बातका प्रयत्न करते हैं कि वे सीधे इसी दस वर्षीय स्कूलमें प्रवेश पालें। इनकी संख्या हमारे भारत और इंगलैण्डसे भी अधिक रहती है।

विश्वविद्यालय शिक्षा:—अंतिम शिक्षा है। जिसने दस वर्षीय शिक्षा समाप्त कर ली है और अच्छी प्रकार उत्तीर्ण हुआ था प्रवेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अपना संसार

श्रीनिवास सक्सेना 'नीरस'

आगे एक अलग बस्ती है ! जहां नहीं कंचनके कण पर मानवकी काया बिकती है !
निहित वक्षमें एक मर्म है, उसी हेतु, सब प्रणित कर्म है,
हैं अपूर्ण, अप्राप्य तभी तो, अलग बसे हैं, बड़ी शर्म है।
चिथड़ोंके भीतरसे फिर भी, सदा एक आशा हंसती है, अपनी एक अलग बस्ती है !

मन्दिर, मस्जिद नहीं पूजता कोई उस दुनिया के भीतर,
वीर समाधों की प्रतिमा है, अरे पूजता हरदम मरघट
सदा मृत्युसे लिपट-लिपट कर, खेल खेलती वह हस्ती है, अपनी एक अलग बस्ती है !

दानवतासे दूर भाग कर, हिंसा का व्यापार त्याग कर,
मानवता का पता लगाने, कूद पड़े हैं सभी आगपर।
सत्य,शिवं, सुन्दरके प्रति जीवन-बाजी भी सस्ती है। अपनी एक अलग बस्ती है।

राही हैं हम, क्यों रुकना है सत्य सुलक्ष्य नहीं सपना है,
ऐसा देश बसाना हमको, जहां नहीं अपना अपना है।
कर्म्मयोगियोंके सम्मुख तो, किसी शक्ति की क्या हस्ती है ? अपनी एक अलग बस्ती है !

बच्चा बच्चा है मतवाला, पिये हुए है नूतन हाला,
है विचित्र ऐसी मधुशाला, जहां न साकी, जहां न प्याला।
नहीं उतरनेवाली सब पर, चढ़ी हुई फिर भी मस्ती है, अपनी एक अलग बस्ती है !

---

प्रतियोगितामें भी अच्छा स्थान प्राप्त कर सका है, वही विश्वविद्यालयोंमें स्थान पा सकता है। इसके विरुद्ध हमारे भारत वर्ष में उसके घरमें पैसा हो तो कुछ भी दुर्लभ नहीं। न जाने कितने प्रतिभाशील विद्यार्थी इसी आर्थिक समस्याके कारण नष्ट होते जा रहे हैं और यदि हमारी सरकार ध्यान दे तो देशकी सेवाके हेतु अच्छे तथा सुयोग्य व्यक्ति अच्छी संख्यामें प्राप्त हो सकते हैं।

तब भी वहां युद्धके पहले विश्वविद्यालयोंमें तीस वर्ष पहलेकी अपेक्षा छः गुनेसे भी अधिक विद्यार्थी थे। वास्तवमें एक कुशाग्रबुद्धि छात्रके लिये चाहे वह कितना ही निर्धन तथा निम्न क्यों न हो, रूसमें शिक्षा प्राप्त करनेके अच्छे-से-अच्छे साधन हैं।

रूसमें विज्ञानके अध्ययनकी ओर विशेष ध्यान दिया जाता है, साथ ही आर्थिक शास्त्र, नागरिक शास्त्र, राजनीति आदि की ओर भी बड़ा ध्यान दिया जाता है। रूसी साहित्य गठित तथा अन्य विदेशी भाषाओं जैसे इंगलिश, जर्मन, आदिका भी शिक्षण चतुर्थ वर्ष से ही प्रारम्भ हो जाता है। दश वर्षीय स्कूलमें इतिहास, उच्च गणित भौतिक विज्ञान शिक्षा औद्योगिक शिक्षा भी पढ़ाये जाते हैं।

रूसमें शिक्षाका साल अड़तीस या चालीस सप्ताहका होता है। सितम्बरसे प्रारंभिक जून तक रहता है। दिसम्बर और मार्चमें छुट्टियां होती हैं और हमारे देशकी तरह जून जुलाई अगस्तमें गर्मीकी छुट्टियां रहती हैं।

औद्योगिक शिक्षा:—रूसमें केवल पुस्तकीय शिक्षा ही नहीं दी जाती औद्योगिक शिक्षाका बड़ा प्रसार है। लड़के और लड़कियां सप्त वर्षीय शिक्षा प्राप्त कर चुकने के पश्चात् किसी औद्योगिक स्कूलमें बड़ी संख्यामें चले जाते हैं। इन स्कूलोंमें या फैक्टरियोंमें तीन या चार साल काम सिखाया जाता है। प्रैक्टिकल कार्य बहुत होता है। इंजीनियरिंगके लिये गणित पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

सबसे बड़ी बात तो जो है वह यही है कि प्रारंभिक शिक्षाके पश्चात् वहांके लड़केको उसकी बुद्धि, योग्यता तथा क्षमता के ही अनुसार भिन्न भिन्न औद्योगिक केन्द्रों में भेज दिया जाता है या उच्च शिक्षा ही दी जाती है पर सब जगह सैनिक शिक्षा अनिवार्य रूपसे दी जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि सारे देशके नवयुवक अच्छे सैनिक बन जाते हैं और देशकी शक्ति दिन प्रति दिन दुगनी चौगुनी बढ़ती जाती है। आजके युगमें सैनिक शिक्षाकी ओर ध्यान तो प्रायः सभी राष्ट्रोंका है पर विशेषता यह है कि रूसकी शिक्षामें प्रैक्टिकल कार्यकी अधिकताके कारण वहांके विद्यार्थी अधिक योग्य तथा सक्षम निकलते हैं।

विस्मयकी बात है कि जो राष्ट्र आजसे पच्चीस या तीस वर्ष पहले भारत सा ही अशिक्षित तथा पिछड़ा हुआ रहा हो वह इतने कम समयमें इस योग्य बन गया कि आज वह संसारके बड़ेसे बड़े राष्ट्रसे बढ़ चढ़ कर हो गया है इसका बहुत कुछ श्रेय वहांके क्रांतियोंको ही तथा निर्माता लेनिनको है और आज यद्यपि स्टालिन अंग्रेजी आदि किसी भी अन्य विदेशी भाषासे अपरिचित है तो भी उसने इतना प्रयत्न किया है कि वहांका आधुनिक लेनिन है। वास्तवमें भारत को भी वैसे ही लेनिनकी आवश्यकता है।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मनोवैज्ञानिक विवेचन—

# शर्मीले बच्चे

—श्री पुरुषोत्तम बी० ए०

"मेरी बच्ची क्यों शर्माती है ? जब भी घरमें कोई अतिथि आता है, कोनेमें जाकर पलक गिराये बैठी रहती है या बाहर चली जाती है। उसको यह कोई मानसिक रोग तो नहीं हो गया है ? या उसके मनोभावों के विकासमें कोई गड़बड़ी तो नहीं है ? शायद यह वंशपरम्परागत हो।"

मध्यमवर्गकी प्रत्यक विचारशील माता अपने शर्मीले-बच्चे बच्चियोंके संबंध में आये दिन ऐसे प्रश्न किया करती है। यदि दूसरोंसे नहीं, तो अपने से ही। शर्माना से हालां कि कुछ बिगड़ता नहीं, परतु यह बच्चेके स्वभावकी कमजोरी प्रकट करता है। बच्चे प्रत्येक माताके गौरव होते हैं। सभी माताएं यह चाहती हैं कि लोग उनके बच्चेकी प्रशंसा करें। अतः शर्माने वाले बच्चे सभ्य माताओंके लिये एक समस्या ही बन जाते हैं। शर्मीले बच्चोंको असामयिक समझा जाता है। माताएं मन ही मन कुढ़ती हैं और ऐसे बच्चोंको डांटती फटकारती हैं, पर इससे कोई उचित परिणाम नहीं निकलता।

बहुधा शर्मानेका कारण कोई मानसिक रोग भी हो सकता है, जब कि बच्चे का स्वभाव कुछ विशेष परिस्थितियोंके दबावके कारण अन्तर्मुख हो जाता है। कमल, मेरे मित्रका छोटा भाई, बहुत ही शर्माता है। स्कूलमें, घर पर हर जगह वह अपने समवयस्क बच्चोंसे भी अलग रहता है और हमेशा लोगोंसे मिलने-जुलनेमें शर्माता है। उसके मास्टरको भी उसके समझानेमें बड़ी दिक्कत पड़ती है। उसके साथ परेशानी क्या है ? उसके माता पिता का कुछ ऐसा स्वभाव है कि वे बातका बतंगड़ बना बैठते हैं जिससे उसके मनमें ही कामसे आगे बढ़नेके पहले ऐसी जबर्दस्त झिझक होती है जो शर्ममें परिवर्तित हो जाती है। यही नहीं, उसके माता-पिता उसके नैसर्गिक स्वभावक विपरीत दूसरी ही ओर मोड़ना चाहत हैं, जिसस उसका आत्मविश्वास सदा शंकाके पालनेमें झूला करता है, और उसकी हिचकका उतार उसकी नन्हीं कोमल पलकों पर उतर कर उसके फूल-से मुंहको ढक लेता है।

उसके माता-पिताकी इच्छा है कि उनका कमल सुन्दर, स्वस्थ, आत्मविश्वास से पूर्ण एवं आत्मसंतुष्ट बालक हो, पर वह उनकी इच्छाओंसे हलका उतरता है। इसलिये वे उसे उसकी भीरुताके लिये तंग किया करते हैं और दूसर लोगोंके सामन उसको उपस्थितिमें ही उसक इन सब अभावोंकी चर्चा करत हैं। परिणाम यह हुआ है कि उसका मागस सदा अपने अभावोंमें डूबा रहता है और शर्माना उसका स्वभाव ही बन गया है। यदि उसक मातापिता न उसे चुपचाप छोड़ दिया होता और जसा था, वैसा ही रहने देते तो उसकी शर्मके दूर हटनेकी बहुत संभावना थी।

### मनोभावों संबंधी गड़बड़ी

जब बच्चे मनोभावों संबंधी किसी गड़बड़ीके कारण शर्माते हैं तो साधारणतः इसकी बजह यह होती है कि वह अपने कुटुम्ब या परिवारमें हीनताका अनुभव करते हैं। ईर्ष्या, बच्चोंके मनोभावके विकासमें बड़ा विघ्न उपस्थित करता है। आत्मविश्वासी बालक भी ईर्ष्याके कारण उदास अतः कुपित, खिन्न हृदय और बदमिजाज हो जाते हैं। ईर्ष्यासे बच्चोंके स्वभावकी सरलता, सुकुमारता और पवित्रता खो जाती है, साथ ही ईर्ष्या बच्चोंके जीवनका एक बहुत बड़ा-प्रश्न, चिन्ह बन जाती है। बच्चोंमें ज्यादातर इस तरहकी लज्जाशीलता कुटुम्बमें किसी नवशिशुके उत्पन्न होनेके कारण आ जाती है। क्योंकि एक साथ ही सारे कुटुम्ब का ध्यान उस नवशिशुकी ओर आकर्षित हो जाता है और वह बालक हीनता का अनुभव कर चिड़चिड़ा हो जाता है और मन ही मन कुढ़ता भी है।

शर्मका संबंध अधिकतर स्नायुओंसे भी होता है। जहां स्नायुओंमें अस्थिरता उत्पन्न हुई, मुखपर लाली आ जाती है,


रियायती दामोंपर

उच्चतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

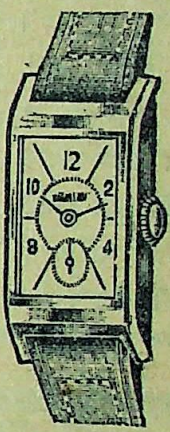

अत्यधिक सस्ती कीमतों पर स्विट्जरलैण्डकी बनी हुई, नई डिजाइन की निहायत सुन्दर ठीक समय देनेवाली। हर घड़ी की गारंटी साढ़े तीन साल। क्रोमियम केस की गोल या चौकोर १८) सुपीरियर फैन्सी डायलकी २०) बेस्ट सेन्टर सेकन्ड गोल २४)। रेक्टेंगुलर और टोनियो आकार की चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केसकी, ५ ज्वेल ३७) रोल्ड गोल्ड ५ ज्वेल की ५०) बेस्ट क्रोमियम केस ४२ रोल्ड गोल्ड ५०) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६५)। फ्लैट शेप ४०) रोल्ड गोल्ड ६०) बेस्ट टोनियो शेपकी ७८) पैकिंग पोस्टेज माफ। हर घड़ीके साथ एक फीता फैन्सी डिजाइन का दिया जाता है।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी ( V. C. )
ऐशबाग रोड लखनऊ



**धवल या श्वेत कुष्ठ**—जिनका ऐसा विश्वास हो कि यह रोग चंगा नहीं होता, यदि मेरे पास आयें तो उनके एक छोटे दागको मैं चंगा कर दूंगा, कोई खर्च नहीं देना पड़ेगा। बातरक्त, एकजिमा, श्वेत कुष्ठ, पित्त और रक्तदोष जनित विविध चर्म रोगके दूर करने के लिए २० वर्षोंके अनुभवी **चर्मरोग चिकित्सक पण्डित एस० शर्मा** की व्यवस्था और औषधि ग्रहण कर। (समय ३-८) २६-८ हजरतगंज रोड, लखनऊ


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पलकें झुक जाती हैं। कभी कभी ओठों पर हलकी-सी मुस्कराहट भी रहती है, अधिकतर चेहरा बड़ा परेशान दीखता है। वे अधीर और विफल होते हैं और दूसरोंसे बचने की प्रवृत्तिका उनमें विकास-सा होने लगता ह। ऐसे बच्चे अपनी इस दुर्बलतासे खुद ही इतने परेशान रहते हैं कि उनके माता पिता की चिन्ता और बढ़ जाती ह। इसका सबसे अच्छा उपाय तो यह ह कि उनके स्नायु मंडलको सशक्त एवं सतज बनायें। बच्चा पूरी नींद सोता ह या नहीं, उसे समुचित भोजन मिलता ह या नहीं, दूसरे बच्चोंके साथ बाहर मैदान खेलने जाता है या नहीं और कुछ हलकी कसरत, दौड़ना, कूदना आदि करता ह या नहीं ? क्योंकि एकाकी बातावरणमें स्वभाव अन्तर्मुख हो जाता है, जिससे बड़ी कठिनाई उपस्थित होती है।

### वंशगत लज्जा

वंशगत लज्जा शायद सबसे साधारण है। यदि बच्चेका जन्म ही किसी स्वाभाव गत शर्मीले बातावरणमें हुआ तो बड़ी मुश्किल हो जाती है। ऐसे बच्चेकी कोई मदद कर सकना बड़ा कठिन हो जाता ह। ज्यों ज्यों वह जीवनमें प्रवेश करता जाता है, लोगोंके साथ उसका परिचय बढ़ता जाता है। उसकी शर्मनिकी आदत कम होती जाती है और पहले-सी परेशानी नहीं रहती। पर माता-पिताको बहुत ही सतर्कता रखन की जरूरत होती है।

बच्चोंका शर्माना कभी कभी बड़ा भला भी लगता हे। थोड़ा बहुत शर्माना तो अच्छा भी ह। लेकिन जब यही शर्माना उनके विकास -मार्गका कांटा हो जाता है तब बड़ी मश्किल हो जाती है। वे अपने बचपन जितने दिन रहिए, उतने ही पाते। हम यही कर सकते हैं कि उन्हें अपने शर्मानका आभास ही न होने दें कि वे उस तरफ जरा भी सोचें या विचार करें। उन्हें प्रसन्न रखें और किसी दिलचस्प काममें लगाये रखें। कभी भूल कर भी उन्हें उनके शर्मीले स्वभावकी याद न दिलायें और न उनके साथ जबर्दस्ती ही करें। हम उन्हें समवयस्क बच्चे-बच्चियोंसे मिलन-जुलने का पूरा अवसर दें। इस तरह उनका शर्माना खतम हो जायगा। बातका बतंगड़ बनाने से फिर तो बतंगड़ ही रह जायगा, बात तो लौटाना कठिन हो जायगा।

होमियोपैथिक दवाइयां प्रति ड्राम =), =)॥ आनाहै।
हरएक बीमारियों की दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी
६८ नम्बर लाइव स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

खार घाम्प
मुलमे खार का मोहर लगाके
V D AGENCY
4 B. PEARY DAS LANE. CALCUTTA


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक समस्या—

# अपहृता महिलाएं

—सुश्री मृदुला साराभाई

"क्या आप अपने कार्यके औचित्यके विषयमें निःशंसय हैं। इन अपहृता नारियों को उनकी इच्छाके विपरीत भी वर्तमान स्थितिसे निकाल कर ले जाना और उन्हें फिरसे निराश्रय कर देना क्या निर्दय कार्य नहीं ? उनके मौलिक मानव अधिकारों और उनके मानसिक भावोंका ध्यान रखना क्या उचित नहीं ? क्या आप भी उन्हें खिलौनेकी तरह ही नहीं समझ रही हैं कि उन्हें किसी भी अवस्थामें अपने नये घरोंसे निकाल कर शिविरोंमें अवश्य रख दिया जाय जब तक उनके घर वाले उन्हें न ले जायें ? इन्हें आप कब तक रखे रहेंगी ? उन्हें ६ सप्ताह तक रखिये और इस बीचमें भी अगर उनकी व्यवस्था न हो सके, तो उनहें छोड़ दीजिये और कह दीजिये कि उनकी जसी इच्छा हो वैसा करें।" ये शब्द एक सहयोगिनी कार्यकत्रीके हैं जो दिन-दिनके झमेलेसे तंग आ गयी हैं।

एक दूसरे शिविरका संरक्षक लिखता है, "मैं अब क्या करूं। वे इस बातकी जिद कर रही हैं कि उन्हें जहांसे लाया गया है फिर वहीं पहुंचा दिया जाय। कभी-कभी तो उनके भगान वाले पीछे लगे-लगे चले आते हैं और बहुत दिन तक शिविरमें आते रहते हैं। महिलायें शोर-गुल मचाती हैं। आप इतनी सख्त क्यों हो गयी हैं ? उन्हें छोड़ देनेका हुक्म क्यों नहीं दे देतीं ?"

भारत और पाकिस्तान दोनोंजगहों में अपहृता नारियोंके सम्बन्धमें य ही समस्याएं हैं। इनके कारण हम चक्करमें पड़ जाती हैं। मैं स्त्रियों पर जोर जुल्म होनेके सदा खिलाफ रही हूं। अब मननें उठन लगता है कि मैं स्वयं ही तो बल महिलाको निकाल लाना क्या उचित हरीका है ? मनमें उठता है कि कहीं यह भी तो बल प्रयोगके समान नहीं हुआ ?

स्त्रियोंके उद्धार, उनके साथ व्यवहार और उन्हें तब तक रोक कर रखनेमें जब तक उनके छूटे हुए परिवारके लोग उन्हें नहीं मिल जाते हैं, कुछ न कुछ दबाव डालना पड़ता है, इसे स्वीकार करना होगा। मगर इसे बल प्रयोग नहीं कहेंगे। तो भी प्रश्न यह है कि क्या किसीकी इच्छा के विरुद्ध उसे इस प्रकार घेर कर रखना ही व्यक्तिगत स्वाधीनताके अधिकारकी हत्या है अथवा यह उस डाक्टरी चीर फाड़के समान है जिसमें रोगको मिटानेके लिये कुछ अतिरिक्त पीड़ा रोगीको देना डाक्टरके लिये आवश्यक हो जाता है ? मैं, जो कभी इस सिद्धान्तको मानती थी कि "स्त्रीको अधिकार है कि वह अपने साथ जो करे-चाहे मर जाय, अपनको बरबाद कर ले या जो करे, किसीको इसमें बोलनेका कोई हक नहीं है। आज वही मैं स्त्रियोंकी स्वाधीनताको रोक रही हूं। क्यों, क्यों मैं ऐसा विपरीत कार्य करने लगी हूं ? मुझे आश्चर्य है कि नारी स्वाधीनताका विरोध मैं स्वयं अपने कामोंसे कैसे करने लग गयी ?

स्त्रियोंके निकालनेका काम जब मन्द गतिसे चल रहा था—एकाध स्त्रियां रोज आया करती थीं। उस समय अपने कैम्पमें लायी गयी मुसलमान स्त्रियोंसे बात करने और उनको निकटसे समझनेका मौका मुझे मिला है। ये महिलाएं जब आतीं तब कहतीं, "मैं तो सिख हूं। मुझे पाकिस्तान न भेजिये—मैं खुश हूं यहीं। मुझपर दया कीजिये।" एक जवान मुसलमान यवतीने एक दिन ऐसी ही अपील प्रयोग नहीं कर रही हूं ? क्या मेरी समझ ठीक काम कर रही है ? हर अपहृता। झसे की। उस समय उसके साथ बहस करना फजूल था। उसे रखा गया, समझने सोचनेका मौका दिया गया। दिन भरमें दो तीन बार उसके साथ मेरी बातें होतीं और मैं उसे समझाती। इसके बाद दूसरी दौर चली। उसने पूछना शुरू किया कि आखिर उसे सिख परिवारसे क्यों हटा दिया गया ? फिर पूछती कि पाकिस्तान का क्या हाल है ? वहां जाने वाली औरतों के साथ क्या सलूक होता है ? फिर उसने अपने पूर्व सम्बन्धियोंकी जिज्ञासा की, यह पूछा कि क्या वे हमें वापस लेना चाहते हैं, क्या किसीने मेरी खोज की है आदि ? इसके बाद ही तीसरी दौर ! शाम होते-होते वह अपने पुराने सम्बन्धियोंके यहां जानेको व्यग्र हो उठी। अब वह एक मिनट भी और ठहरनेको राजी न थी मगर कहती थी कि आप चलकर वहां मुझे रख आइये। ऐसी दशा बहुतोंकी देखी गयी। जो महिलाएं लायी जातीं उन्हें यह विश्वास होता कि वे अपने-अपने पूर्व स्थानोंको भेज दी जायेंगी। एक बार कैम्पमें आकर एक मुसलमान स्त्रीका रुख परिवर्तित हो गया। मगर हमलोगोंने जब उसे समझाया तब वह स्थिर हुई।

जैसे-जसे दिन बीतन लगे, उन लोगों की कार्य विधि भी बदलन लगी जिनके घरोंमें भगायी गयी स्त्रियां थीं ! उन्होंने समझा कि जोर जबर्दस्तीसे उन्हें रोका नहीं जा सकता। तब उन्होंने महिला सुलभ भावनाओंको उभाड़ कर उन्हें रखनेका प्रयोग शुरू किया। वे उनके साथ नम्रताका वर्ताव करने लगे और उन्हें यह समझाना प्रारम्भ किया कि अब वे अपने पूर्व परिवारोंमें नहीं रखी जा सकतीं। जैसे दासत्वकी समाप्ति पर अमेरिकाके गुलाम चकित रह गये थे उसी तरह अब इन स्त्रियोंने उद्धारके कार्यक्रमके विरुद्ध आचरण करना शुरू किया। पहले कुछ दिनों तक तो ये समझती थीं कि हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्धार होगा, पर जब कोई भी चेष्टा नहीं देखी गयी तो इन लोगोंने अपने भाग्यसे समझौता कर लिया और निश्चिन्त हो गयीं। उसके बाद हमलोग पहुंचे। अब उनके मनमें सन्देह, कि सचमुच हम लोगों का उद्धार हो रहा है कि पुनः निष्कासन उद्धार हो भी रहा हो तो हमारे परिवार-वाले हमें अब लेंगे कि नहीं इस बातकी महान आशंका। इसलिये पुनः खतरेमें कौन पड़ने जाय ? ऐसी विचारधारा होते ही उद्धारकार्यका विरोध अब वे ही करने लगीं। इसके बाद हमलोगोंके सामने ये दलीलें आईं कि "क्यों उन्हें हटाया जा रहा है। उन्हें रहने दिया जाय, जहां वे रह गयी हैं।"

कार्य और सिद्धान्तका विभेद जितना इस क्षत्रमें देखनेमें आया, कहीं उतना होगा। आदर्शके अनुरूप कार्य किया जाय कि अनुभवके आधार पर जो कुछ ज्ञात हुआ है उस पर अमल किया जाय, यह सवाल है। सवालका जवाब यह है। प्रायः सभी केसोंमें ऐसी स्त्रियोंके जो बयान होते हैं वे असत्य होते हैं। हरएक यथास्थितिको चाहने वाली स्त्री झूठा झूठा बयान देती है।

एक उद्धृता हिन्दू लड़कीका बयान लिया जाने लगा तो उसने कहा कि वह दंगाके पहले ही एक मुसलमानके साथ निकल गयी थी जिसके साथ उसने निकाह कर ली है। उसने मार्च १९४७ में हुई निकाहका सर्टिफिकेट दिखाया। हमलोग उस स्त्रीको उसके मुस्लिम पतिके हवाले करने वाले ही थे कि अचानक उसका हिन्दू पति आ निकला। दोनोंने एक दूसरेको देखा। अब उस स्त्रीका बयान बदल गया उसने स्वीकार किया कि दुर्दशाके डरसे और अपने लोगोंका पता न ज्ञात होनेके कारण उसने मुसलमानके साथ रहनेका निश्चय करके झूठ कहा था। उसे ऐसा ही कहके वापस आ जानेको सिखाया गया था। एक मुसलमान महिलाने आर्य-समाज हो जानेका सर्टिफिकेट अप्रल १९४७ का ही दिखाया। पीछे उसने भी स्वीकार किया कि उसका बयान झूठा था और सर्टिफिकेट भी जाली है। एक तीसरी घटना सुनिये। एक जाट बनी हुई मुसलमान स्त्रीसे पूछा गया कि वह कहां जाना चाहती है। उसने झटसे उत्तर दिया "अपने जाट पतिके साथ"। यह स्त्री दो महीने तक कैम्पमें रह चुकी थी और पाकिस्तानमें इसके सम्बन्धियोंका पता लगाया जा रहा था। उसके बाद हमलोगोंने उसके मुसलमान पतिको बुला लिया जो उसी समय लाहौरसे आया था। उसे देखते ही वह लड़की चिल्लाई और दौड़कर उससे लिपट गयी। अब उससे पूछा गया तो उसने अपने मुसलमान पतिको बताया। यह महिला गर्भवती थी फिर भी यह अपने पुराने आत्मीयोंके साथ जानेको उद्यत हो गयी।

एक बार एक हिन्दू नवयुवतीसे मेरी बातचीत हुई जिसने अदालतमें यह बयान दे दिया था कि, मैं अपने वर्तमान (मुसलमान) पतिके साथ रहना चाहती हूं। उसके बाद मुझसे उसकी भेंट हुई। उसका चेहरा उतरा हुआ था, आंखें निस्तेज थीं और उसके दिलमें डर समाया हुआ था। सौभाग्यसे मुझे देखकर उसे कुछ आश्वासन हुआ। उसने पचासों सवाल किये। अन्तमें उसकी आपत्ति यह रही कि उसे उसके पुराने परिवारके लोगोंने खोजा ही कहां है कि वह उनके यहां जानेको चाहे। मैंने इसका जवाब यह दिया कि अगर वे लोग न खोजते तो तुम्हारा उद्धार ही कैसे कर सकते हम लोग। यह बात उसके मनमें समा गयी। मगर तौ भी उसका सवाल हुआ कि अब हमारी गयी हुई पत कसे लौटेगी। मैंने उसे समझाया कि उसकी पत बनी हुई है, क्योंकि उसकी लूटमें वह तो शामिल नहीं थी। उसके साथ तो जबर्दस्ती हुई थी ? इस पर भी वह आश्वस्त नहीं हुई। तब उसने तीसरी बात निकाली। उसने कहा कि "मेरी माता और दो भतीजोंको भी लोग ले गये थे। वे भी उसी परिवारमें हैं। उन्हें दूसरी जगह हटा दिया गया है। वहां रहूंगी तो बलासे मुसलमान ही सही, उनसे भेंट तो होती रहेगी। अगर आप उन्हें भी मंगवा सकें तो मैं जा सकती हूं।" मैंने उसे समझाया और कोशिश करनेका आश्वासन दिया तब जाकर वह राजी हुई और इसके बाद तो उसने हमलोगोंके साथ ही अन्य महिलाओंके उद्धारका कार्य करना स्वीकार कर लिया। पर काम करते रहे पर भी वह जानेके दिन डर गयी। उसने कह दिया कि प्रकाश्यमें यह नहीं कह सकती कि चली जाऊंगी।

एक मुसलमान महिलाने भी इसी तरह पाकिस्तान जानेसे इन्कार कर दिया। उसने कहा कि मेरी बहिन रुकी हुई है। जब तक वह नहीं आ जाती मैं लाहौर न जाऊंगी। वह तो शिविरमें भी रहनेको तैयार न हुई और अपने सिख पतिके पास लौटनेकी अनुमति के लिये हठ करने लगी। अब ऐसे केसोंमें क्या करना चाहिये यह सवाल है। क्या ऐसी महिलाओं पर कुछ दबाव देना अनुचित है ? कहा जा सकता है कि जो स्त्रियां रहना नहीं चाहती हैं उन्हें कैम्पोंमें रखना अनुचित है। अब इन स्त्रियोंके चाहने न चाहनेको अधिक महत्व देना अच्छा है कि उन्हें कुछ दबा कर उनकी सहज गतिको लौटाने की चेष्टा करना अच्छा है। इसके लिये तो, उनकी इच्छाके विरुद्ध भी उन्हें कैम्पोंमें रखना ही होगा। यद्यपि यह उनकी इच्छा के विरुद्ध हुआ, पर ऐसी अवस्थाओंमें असली इच्छा किसे कहा जायगा ? डरके कारण अपनी स्वाभाविक इच्छाको दबाकर जो बात कही जाय उसे हम असली इच्छा कहेंगे कि उसे, जो उस समय व्यक्त की जाय जब डर न हो यह भी सवाल है कि ऐसा कौन सा उपाय किया जाय जिससे उनका डर मिटे।

इस प्रकारकी भिन्न-भिन्न समस्यायें इन महिलाओंके सम्बन्धमें कम ही हैं। मईके अन्त तक कुल १३०२१ महिलाओं का दोनों उपनिवेशोंसे उद्धार हुआ है। इनमें ५० भी ऐसे उदाहरण नहीं हैं। बाकी महिलाएं तो जहां शिविरमें आयीं वहीं अपने पूर्व-गृहोंको जानेके लिये व्यग्र हो उठती हैं। उन पर दबाव देनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। जिन पर दबाव डालनेकी जरूरत पड़ती है उनका कुछ विशेष कारण होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय-

# कुछ समस्याएं

—श्री शिवदेव उपाध्याय 'सतीश' बी० ए० बी० एल०

फिलस्तीन और जर्मनी, काश्मीर और हैदराबाद — कुछ समस्याएं हैं, जिन्होंने, धन्यवाद है कूटनीतिक कुचक्रों को, अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप पकड़ लिया है। बर्लिनका घेरा उठना नहीं चाहता, तेल अबीब और यरूसलममें शांति स्थापित नहीं होना चाहती, काश्मीरमें मौत बरपा हो रही है और आसफजाहीके एजेंट मृत्युके व्यवसायके लिए यूरोपकी राज-धनियोंका चक्कर काट रहे हैं। चार घटनाएं हैं, गिनके चार स्वरूप हैं किन्तु इनकी समीक्षा स्पष्ट करती है कि चारों एक ही प्रेरणाके परिणाम हैं और यह प्रेरणा आज इतनी स्पष्ट और इतने नग्न रूपमें हमारे सामने है कि इनके पीछे कूटनीतिक कुचक्रोंके संचालकोंके हाथ भी स्पष्ट दिखायी पड़ रहे हैं।

और तब इन समस्याओंका समाधान इतनी सुगमता और इतनी शीघ्रतासे हो जायगा, इसकी आशाके लिए नैतिकताके प्रति अत्यधिक आशावान होनेकी आवश्यकता है। बर्लिन जिस प्रकार यूरोपमें शक्तिका प्रतीक हो रहा है और प्रत्येक राष्ट्र उस प्रतीकसे अधिकाधिक सम्पर्क बनाये रखना चाहता है, उसी प्रकार फिलस्तीन मध्यपूर्व पर प्रभुत्व एवं प्रभाव बनाये रखनेका वह साधन है जिसे कोई भी महत्वाकांक्षी राष्ट्र अपने पंजेसे बाहर नहीं जाने देना चाहता। इधर काश्मीर है जिसकी सीमाओंपर कई राष्ट्रोंका मिलन है और ये सीमाएं किस प्रकार आगकी चिनगारियोंको ठंढी राखके नीचे गरम बारूद रखनेवाली हैं, यह दोस्तिख न सितम्बर १९३९ में प्रमाणित कर दिखाया है। उन्नीसवीं शताब्दीके अन्तिम वर्षोंमें ही काश्मीरके गिलगिटको भी प्रमाणित किया गया है और ब्रिटिश राजनीति के जंगलके शेर विन्स्टन चर्चिल ने हैदराबाद की समस्यामें अभी उस दिन जो कुछ कहा है, वह भी क्या इसी दिशा और इसी स्वरूपकी ओर संकेत नहीं करता? और जब गोआ पर पुर्तगालका शासन बना रह सकता है तब सम्राटका शासानुदास निजाम अपने सुनहरे सपनोंकी स्वतंत्र दुनिया क्यों न बसाना चाहे?

फिलस्तीन और जर्मनी की समस्याओं से पृथक काश्मीर और हैदराबादकी समस्याएं हैं, किन्तु विश्व-शांतिके तथोक्त शुभचिन्तकोंने बाद की दोनों समस्यायोंको भी अधिकाधिक व्यापक बनानेकी चेष्टा की है और इसमें वे सफल भी होने जा रहे हैं। दरख्वास्तों और अप्राप्य शहादतों पर जोर दे देकर जिस प्रकार मुकदमोंको बढ़ाया जाता है, उसी प्रकार काश्मीर और हैदराबाद के मामलोंको तूल दिया जा रहा है और जिस प्रकार कुशल वकील न्यायकी दुहाई देकर वह सब कुछ करता है, उसी प्रकार शांति एवं सुरक्षा के नाम पर हमारे शुभचिन्तकोंने काश्मीर और हैदराबादको अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का अंग बना डाला है। समाधान की है कठिनाइयां हैं जो आज उपस्थित हैं और संभवतः अगले दिनोंमें ये कठिनाइयां और भी स्पष्ट किन्तु और भी जटिल रूप में उपस्थित होंगी।

अगर ऐसा न होता तो, और अगर संयुक्त राष्ट्रमंडल वस्तुतः शांतिकी भावनाओंसे प्रेरित होता तो, इण्डोनेशियामें चलनेवाले दीर्घकालीन संघर्षके लिये क्या उसे अबतक कुछ नहीं करना चाहिये था। दक्षिण अफ्रीकामें रंगीन जातियोंके विरुद्ध श्वेत सभ्यताके अनाचारोंके प्रतिकारके लिए अपने निर्णयोंकी मान्यता से वह स्वयं भी क्या अपनेको इतना तटस्थ पा सकता था? अमेरिकाके लक्ष-लक्ष और कोटि-कोटि हबशियोंके करुण आर्तनादसे भी अधिक आकर्षण क्या अशर्स्टनको काश्मीर की निरीह जनताको ध्वस्तकरने वाले कवाइलियोंमें दिखायी पड़ता? संयुक्त राष्ट्र मंडल यदि वस्तुतः शांतिकी भावनासे प्रेरित होता तो क्या समस्त भूमंडल में रंगीन जातियोंके भविष्यको प्रतिहत करनेवाले षड्यंत्रके विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता और विवेकका अवलम्बन एवं उनके निराकरण की चेष्टा न करता? और यह जानते हुए भी इसके लिए वह सचेष्ट न होता कि रंगीन जातियोंका यह विश्वव्यापी उत्पीड़न एक सांघातिक महायुद्धकी भूमिका तैयार करनेके लिए काफी है?

किन्तु प्रश्न अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता एवं विवेकका नहीं है, प्रश्न विश्व की सुरक्षा एवं विश्वशांतिका भी नहीं है। प्रश्न तो वस्तुतः है अपने राष्ट्रीय प्रभुत्वों की स्थापना और अपने राष्ट्रीय प्रभाव-क्षेत्रके निर्माणका। अमेरिका, ब्रिटेन और रूस द्वारा राजनीतिक साम्राज्यवाद के चिताभस्मों पर आज आर्थिक साम्राज्यवादकी प्रतिष्ठाका जो कुचक्र चल हरा है, उसने उक्त देशोंको अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीतिके मल्लयुद्धोंका अखाड़ा बना डाला है और जब सीरिया जसे निकृष्ट देश और नोएल बेकर जैसे निकृष्ट श्रेणी के राजनीतिज्ञ, संयुक्त राष्ट्र मंडलके सदस्य एवं प्रतिनिधि हों, तब जिन्नाका पदानुसरण करनेवाला निजाम हैदराबादको भी कब वैसा ही अखाड़ा बना डाले, कौन कह सकता है?

यह एक आशंका है जिसे घटनाएं उत्तरोत्तर स्पष्ट करती जा रही हैं। बात कटु किंतु तथ्य की है कि कब कासिम-रिजवी निजामके संकेत पर 'हैदराबाद स्वाधीनता दिवस' की तैयारी उसी प्रकार कर डाले जिस प्रकार शहीद सुहरावर्दीन जिन्नाके संकेत पर 'प्रत्यक्ष' संघर्ष की घोषणा कर दी थी। भगवान न करें कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



१६ अगस्तकासा दिन अपनी पुनरावृति कर, किन्तु तथ्य साक्षी है कि अगस्त हमारे देशके लिए एक अद्भुत महीना होता आया है। 'भारत छोड़ो' का नारा अगस्त १९-४२ में कांग्रेसने लगाया, तो अगस्त १९-४६ में लीगने लड़के लेंगे पाकिस्तान का भयानक एवं वीभत्स दृश्य उपस्थित कर दिया और तब आया १९४७ का अगस्त जिसने हमें राजनीतिक स्वाधीनता भी दी और इसके साथ ही स्वाधीनता दी, साम्प्रदायिक उपद्रवोंकी, बलात्कारों की, और अनक अनाचारों एवं अत्याचारोंकी।

और अब अगस्त १९४८ बिल्कुल सन्निकट है। हम ज्योतिषी नहीं हैं और राजनीतिक भविष्यवाणी मूर्खतापूर्ण बतायी है, एक प्रख्यात विचारक ने। किन्तु वर्तमान अगर भविष्यका निर्देशक है तो घटनाएं जो स्वरूप पकड़ती जा रही हैं, उनकी संभावनाएं दुखद एवं अवीछनीय है। तो यह बात चाहे जितने भी परितापकी हो, आश्चर्य की नहीं होगी। जब काश्मीर कमीशनका स्वागत बम्बई और जूनागढ़के साम्प्रदायिक उपद्रवों द्वारा किया जाय, जब गजनफर अली की भांति कासिम रिजवी दिल्ली पर आसफ जाहीके विजयाभिमान की डींग मारता हो और जब भावी संकटकालकी कल्पनासे पाकिस्तानका गवर्नर जेनरल गवर्नरोंको विशषाधिकारकी की घोषणा कर रहा हो, तब संभावनाएं मनोनुकूल ही होंगी और भविष्य निरापद ही रहेगा, इसकी आशा के लिए अत्यधिक आशावादी होना अनिवार्य है। अगस्त १९४८ संभवतः घटनाओं का निर्देश करे और देशके सामने आज जो आशंका है उसका स्वरूप स्पष्ट एवं निश्चित हो।

हमें आशंका है कि मनोवैज्ञानिक-दृष्टिकोणसे हम अत्यधिक कल्पनाशील हो चले हैं, आदर्शके प्रति उत्साहमें हम यथार्थको हृदयंगम नहीं करना चाहते। सद्भावना की सराहना करते करते हम उस नेवाइल चेम्बरलेन की स्थितिमें आ रहे हैं, जिसने म्यूनिख पैक्ट पर हस्ताक्षर किये थे। काश्मीर हमारा पहला म्यूनिख पैक्ट था और हैदराबाद दूसरा हो सकता था, यदि पटियाला राज्य मंडलमें दी गयी सरदार पटेल की वक्तता हमारे सामने न होती। लार्ड माउण्टबैटेन द्वारा परिचालित भारत-हैदराबाद संधि-वार्ता को लेकर जिस असंतोषकी सृष्टि हुई थी और उसके विफल होने पर असंतोषन जिस क्षोभको उत्पन्न किया था, उसका भी निराकरण सरदारजी के उक्त भाषण से हो जाता है और करोड़ों नागरिकोंने उसका स्वागत किया है।

विषय यहीं छोड़ देने का नहीं है। परिस्थिति की कुछ आवश्यकताएं हैं जो अनिवार्य हैं और जिनका उल्लेख आवश्यक है। हम चाहे जितने भी आदर्शवादी और शांतिप्रिय हों, किन्तु यथार्थ तथ्य यह है कि भारत एवं पाकिस्तानका सम्बन्ध उत्तरोत्तर बिगड़ता ही जा रहा है। भारतीय नीतिका कटु आलोचक भी भारत सरकार पर यह अभियोग, विवेक खोये बिना, नहीं लगा सकता कि वह पाकिस्तान विरोधी है। हमने तो भारत—पाकिस्तान के पुनर्मिलन की चर्चा तकको समझौता करके निषिद्ध ठहरा दिया है। दिवंगत महामानव बापूको स्पर्श कर देने वालोंके कलंकित एवं लांच्छित कुकृत्योंको भी हमने भुला दिया है। इस बीसवीं शताब्दीके मध्ययुगमें हम निरीह नारियों एवं मासूम बच्चों पर होनवाले अत्याचारोंका भी सिंहावलोकन नहीं करना चाहते। किन्तु अतीतकी घटनाएं और वर्तमानकी आशंकाएं जब भविष्य की संभावनाओंके रूपमें आती हैं, तब सद्भावनाकी कोरी दुहाई हमारी राजनीतिक अपूर्णताओंका निराकरण नहीं कर सकती, ऐसा हमारा विश्वास है। परिस्थितिकी सबसे बड़ी आवश्यकता सतर्कता है और देशमें होनेवाली नन्हीं नन्हीं घटनाएं जिस दिशा की ओर संकेत करती है, उसे निरापद रहनके लिए जो कुछ आवश्यक है, उसकी ओर भी हमारी दृष्टि जानी चाहिए। ऐसा न हो कि हम उस नागपाश में अपनेको परिवेष्टित पायें, जिसे कूटनीतिक कौशल द्वारा तयार किया जा रहा है। जिन्नाने जब पाकिस्तानकी स्थापनाके पूर्व अपनेको अखंडित भारतके दस करोड़ मुसलमानोंका भाग्य-विधायक घोषित किया था, तब उसके परिणामोंसे अवगत होते हुए हम रिजवीके उस दावेको कोरा उन्मत्त प्रलाप कह कर उपेक्षा नहीं कर सकते जिसमें उसने बार बार भारतके साढ़े चार करोड़ मुसलमानों का अपनेको मसीहा बताया है। देशके कोने कोनेमें अनधिकृत शस्त्रास्त्रोंकी खोज रह रह कर होनेवाले आकस्मिक साम्प्रदायिक उपद्रव और अपनी नाक कटाकर भी दूसरेका शकुन बिगाड़नेकी पाकिस्तानी नीति, यह सब ऐसी बातें हैं जो अभीष्ट शांति का संकेत नहीं करती हैं।

ये सब कारण हैं जो संभवतः कल और भी प्रबल हों और तब हम और भी स्पष्टतासे देख सकें कि देशके सामने कुछ समस्याएं हैं, जिनका अनुरोध है कि देश भीतरके बहुत से मोर्चे बन्दकिय जायं, औ देश का एक संयुक्त मोर्चा हो। यही कारण है कि भारत सरकारकी वर्तमान आर्थिक नीतिको बहुत आर्थिक संतोषजनक न मानते हुएभी हमउसके विरुद्धमोर्चा बनाना फिलहाल अवांछनीय मानते हैं। हमारे सामने फिलहाल प्रश्न किसान मजदूर राज्य स्थापित करनेका नहीं है। यह प्रश्न तो हमारा है, इसके लिए हम बचनबद्ध हैं, यह हमारा चरम लक्ष्य है और इसकी पूर्ति हमें करनी है। लेकिन फिलहाल हमारे सामने सवाल यह नहीं है। हमारे सामने राजनीतिक समस्याएं अभी इतनी हैं और उनका समाधान अभी इतना कठिन है कि उसको लेकर ही अभी हमारी शक्तियों की, साधनोंकी और बद्धिमत्ता की परीक्षा है। और यह साधारण नहीं, असाधारण—अग्नि—परीक्षा है। मजहबी जोशको हम बुरा मानते हैं, क्योंकि हम मजहब को ही मानते, लेकिन आजका मजहबी जोश ही हमारी राष्ट्रीयता हमारे राष्ट्र की शांति एवं सुरक्षाका सबसे कुटिल और सबसे प्रबल विरोधी मोर्चा है। इसलिए इस मजहबी जोशको, चाहे वह जिस सम्प्रदायमें हो, अच्छी तरह हमें नियंत्रण करना होगा। हम इस 'नियंत्रण' शब्दका प्रयोग उदारता पूर्वक कर रहे हैं, अन्यथा आवश्यकता इससे कठोर शब्द की ही है। बर्लिनको छोड़कर फिलस्तीनमें, काश्मीरमें और हैदराबाद में यह मजहबी जोश ही तो है जो मौत के सौदागरोंको अच्छे खासे डिविडेन्ड दे रहा है। और भारतको इस मौतके सौदागरोंसे ही सर्वाधिक सतर्क, सावधान एवं जागरूक रहनेकी आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# विश्वविद्यालयोंकी शिक्षा

श्री कर्मशील

उस दिन हमारी दशा सचमुच दयनीय हो गयी जिस दिन छोटे भाईने आई० एस- सी० पास करनेके बाद सवाल किया कि, "भैया अब क्या करें ?" विगत दो साल तक इस प्रश्नके दर्शन नहीं हुए थे। दो साल पहले यह एक बार और आया था जब भाईने मैट्रिककी परीक्षा पास कर ली थी। उस समय प्रश्न इतना विकट न था क्योंकि उस समय स्वाधीनताकी लड़ाईका समावर्तन नहीं हुआ था और हरएक मन कुछ सन्देह, कुछ द्विधा कुछ विश्वासमें पड़ा हुआ दिन काट रहा था। एक बात स्पष्ट थी। यदि तुरत ही स्वाधीनता नहीं मिलती और ये अंगरेज कभी जिन्ना, कभी देशी राजवाड़े कभी जमीन्दार और कभी पूंजीपतियोंके राजनीतिक मोहरों द्वारा जिच पर जिच अगर दिये ही चले गये, तो शायद अंग्रेजीकी साहिबी अभी रहेगी। इसलिये अंग्रेजी पढ़ना चाहिये। सो, उस समय भाईको झटपट राय दे दी, "कालेजमें नाम लिखवा लो।" मगर कालेजमें नाम लिखाया जाय तो विषय कौन-कौन लिये जायें यह प्रश्न जब उपस्थित हुआ तब फिर थोड़ी देरके लिये मन ऊहापोहमें पड़ गया। पर इस ऊहापोहसे भी छुटकारा पानेका उपाय था। अरे अभी पढ़ना जब है तब पढ़ेगा। दो सालकी मंजिल काट लेनेके बाद तब फिर देखा जायगा।

मैट्रिक कर लेनेके बाद कालेजोंमें दो श्रेणीकी पढ़ाई ही रहती है ---कला या विज्ञान की। कहीं-कहीं व्यवसायके कुछ विषय भी पढ़ा दिये जाते और शिक्षार्थियोंके चार साल हलाल करके उन्हें कुछ छिछले, किताबी, व्यवसायिक विषयोंके विदेशी ज्ञान–वह भी सिद्धान्त ही मात्र---देकर उनसे चार सालकी फीस और तरह-तरहके चार्ज ले–बी० कोम० की डिगरी दे कान पकड़कर निकाल दिया जाता है। कालेजों के ये स्नातक अब मांगें खायें। हिसाब किताब का नक्शा भर वे देखे हुए होते हैं, एका-उण्टेन्सीके बैलेन्शन शीटका नाम भर वे जानते हैं, कभी देखा नहीं। व्यवसायिक भूगोल ढेर-सी पढ़ लेते हैं और जानते हैं कि लीड्समें क्या-क्या चीजें तैयार की जाती हैं। मगर वे यही नहीं जानते कि हिन्दुस्तानका व्यापार कहां किस वस्तुका चलता और चल सकता है। वे यह जानते हैं कि हवाई जहाज पर उड़ेंगे तो कहां-कहां उतरते चढ़ते अपने ब्रिटिश व्यापारीके दफ्तर तक पहुंच जायेंगे पर यह नहीं जानते कि अगर हवाई मार्गमें खतरा हो गया और समुद्र पर लड़ाई, तो भारतसे कौनसा वह खुश्की रास्ता हो सकता है जिससे होकर हम अपना माल यूरोपके बाजारोंमें पाट देंगे। विचारे छात्र तो क्या छात्रोंके गुरु भी शायद यह चीज न जानते होंगे। मतलब यह कि कुछ उलटा सीधा, व्यर्थ अव्यर्थ, कागजी-दुनियाबी, बातें सिखाकर कालेज वाले अपनी धाक बनाये चले जा रहे हैं। उन्हें दोष ही क्या दें ! उनकी पूंजी ही क्या है।

विज्ञानकी भी वही बात। विज्ञान पढ़कर भी किसी बी० एस० सी० ने कोई नयी चीज बनानी तो दूर, बाजारमें आयी हुई हजारों पदार्थोंमें से, जिनके कारण हमारे देशका अरबों रुपया बाहर चला जाता है, एकके भी बनानेका उपाय नहीं सोचा। हमारे बी० एस० सी० और एम० एस० सी० भी कागजी वैज्ञानिक ही हैं। 'विज्ञान शिक्षित' की डिगरीकी इतनी ही महत्ता है कि वह ऐसे ही किसी सरकारी या गैर सरकारी विभागके लिये नौकरीका टिकट दे देती है, इया किसी कालेजमें अपनी तरह ही, विज्ञानके छात्रोंमें ठगुआ ज्ञान बांटने लिये विज्ञानके प्रोफेसर बनवा देती है। इससे अधिक विज्ञानके पाठ्यक्रमोंका कोई उपयोग देखनेमें नहीं आता। ज्ञात होता है, नहीं होगा। ज्ञात होता है, जैसे ढोर पहले चारा निगल जाता है क्योंकि उसे ढेर-सा चारा पेटमें डाल लेना आवश्यक होता है और पीछे पागुर कर उसे पचानेकी कोशिश करता है, उसी तरह कालेजोंके विज्ञानके क्लासोंमें भी किताबी ढेरके ढेर सिद्धांत रटा दिये जाते हैं। यह अच्छा है, मगर इसमें कभी यही है कि बेचारे छात्र जो निगलते हैं, फिर उसे पागुर करके पचानेका अवसर ही उन्हें नहीं मिलता। वे सब पेटमें अपच ही पड़े रह जाते हैं।

तो मैं कह रहा था अपने भाईकी बात जिसने मैट्रिक करके, किसीके यह कह देनेपर कि वायोलोजी लेकर साइंस पढ़ो जिससे आग मेडिकलमें नाम लिखानेमें सुविधा हो, य ही विषय लिये और पासकर गया। दो साल तक तो उसे 'फारसेप्स' और 'सीजर्स' लिय मेढ़कोंको पछाड़-पछाड़ पेट चीरते देखा, टेस्ट ट्यूबोंमें दवायें ले लेकर इसमेंसे उसमें करते देखा; जल, वायु, धरती, आकाश, अग्नि, गैस आदिकी बनावट काम, आदि पर लिखे गये प्रकरण, कभी रटते कभी पढ़ते कभी सोचते देखा। पासकर गया वह। बड़ी खुशी हुई उस दिन।

आज जब यह सवाल होता है कि "भैया अब क्या" तो देखते हैं खुशी गायब होना चाह रही है। मेडिकलमें नाम लिखाना कठिन है। दस सीट और दस शतक चाहने वाले---देवता एक पूजार्थी एक सौ। कैसे पढ़े वह मेडिकल ? अगर मेडिकल न पढ़े तो उसका बेंग-चीरना कैसे सार्थक हो ? मेडिकलमें न जाय तो दो सालकी पढ़ाई और खर्चका सदव्यय क्या हो ? यह सवाल है जो विभागको व्यस्त किये है। मेडिकलमें नाम उसका नहीं लिखा सका है।

इस प्रश्नकी मीमांसाको मुलतवी रखकर वह एक दिन फेडरल सर्विस कमीशन का एक विज्ञापन लिये हुए हमारे पास आया। विज्ञापन दिखाकर उसने पूछा "भैया यह एण्टोमोलोजिस्ट क्या होता है, और कहां इसकी पढ़ाई है ?" उसने विज्ञापन देखा था कि सरकारको एक एण्टोमोलोजिस्टकी आवश्यकता थी और उसके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



४ अंकोंका वेतन 'आफर किया गया था। भाई जानता है कि भैय्या सम्पादक हैं तो अवश्य ही सब जानते होंगे। मगर मुझे यह कहते शर्म नहीं है कि मैं उसे बता नहीं सका कि उसकी पढ़ाई कहां होती है। मैंने उसे कलकत्तेके सभी कालेजोंकी विवरण-पत्रिकायें इकट्ठी करनेको कहा। यह प्रश्न उस समय और भी विशाल रूपसे मेरे मनमें उठा। भाईको तो केवल एक ही विषय की जानकारीकी आवश्यकता थी। मुझे आवश्यकता थी उससे अधिक जानने की।

भारत सरकार और प्रांतीय सरकारों में इस समय बेशुमार कर्मचारियोंकी आवश्यकता है और सरकारी विज्ञापनोंमें तरह तरहके कामोंके लिये विज्ञापन निकलते हैं। शासन विभागके वतनसे इन टेकनिकल विभागोंका वेतन कहीं ऊंचा रहता है। मुझे जानना है कि इन टेकनिकल विभागोंके विषयोंकी पढ़ाई देशके किन किन प्रांतोंके किन किन कालेजोंमें होती है, या नहीं होती। मैंने कलकत्तेके कालेजोंकी विवरण पत्रिका देखी। सबमें विज्ञानके दो चार जैसे—बोटेनी, बायोलोजी, फिजिक्स, केमिस्ट्री, कला श्रेणीके दो चार जसे लाजिक, हिस्ट्री, संस्कृत, अरबी, दर्शन आदि और कुछ कामर्स के विषय छोड़ कर, कहीं भी कोई दूसरे विषय पढ़ाये जाते न मिले। 'एन्टोमोलोजिस्ट' जिस विद्याको पढ़ कर हुआ जा सकता है, ऐसी कोई भी पढ़ाई किसी कालेजमें नहीं होती। सबसे पुराना विश्वविद्यालय कलकत्ता। वहां ही जब यह विषय नहीं है तब और कहां होगा? अपन बिहारका तो जानते ही हैं—पढ़ो लाजिक और बनो वकील या पढ़ो साइंस और मेडिकल या इंजिनियरिंगके दरवाजा खटखटाओ। इसके अतिरिक्त बिहार या बंगालके कालेजों में अन्य किसी विषय की पढ़ाई ही नहीं है। तो सवाल है कि जितने लड़के पैदा होते हैं वे सभी क्या डाक्टर इंजिनियर या वकील ही बनेंगे? और कुछ बननेकी समाजको आवश्यकता है कि नहीं? सवाल यह भी है कि लाखों रुपया खर्च कर देशके विश्वविद्यालय और कालेज क्या पढ़ाते हैं कि विज्ञानके वे महत्वपूर्ण विषय छूट जाते हैं जिनको पढ़ कर छात्र नौकरी ही करना चाहे तो अच्छी नौकरी उसे मिले। इन विश्वविद्यालयों और कालेजोंका एक ही सा सांचा क्यों है और एकसे सांचेकी जरूरत ही क्या है? नाम बड़े और दर्शन थोड़े। बड़े आदमियों द्वारा स्थापित, बड़ा नाम पाये हुए, बड़े विद्वानों द्वारा संचालित, इन बड़ी बड़ी संस्थाओंके विषयमें इतनी बड़ी बात कहना मेरे जैसे छोटे आदमीके लिये बड़ी हिमाकत तो जरूरी है। पर बात हैखरी। मेरे भाईको दो वर्षों तक घेर कर, मेरा बहुतसा पैसा लेकर इन शिक्षा संस्थाओंने उसे यही दिया कि अब वह बेचारा परेशान है कि क्या करे।

ज्ञानके इतने सारे विषय हैं। सरकारी नौकरीके लिये भी अगणित प्रकारके विषय हैं। क्या कालेजके छात्र, कालेजोंसे निकल कर ये नौकरियां पा सकते हैं? अगर नहीं पा सकते तो येशा खर्च तमाशे क्यों खड़े किय गये हैं? और इन्हींके अनुकरण पर अन्धाधुन्ध नये नये कालेज और विश्वविद्यालय क्यों बनाये जा रहे हैं।

ऊपर हमने 'एन्टोमोलोजिस्ट' का एक उदाहरण दिया है। भारत सरकारके विज्ञापनोंमें इधर इस तरहके पदोंके लिये हजारों विज्ञापन निकले हैं। हमाराभाई पूछता है कि इन विषयोंकी पढ़ाई कहां होती है और कैसे ये पद प्राप्त किये जा सकत हैं? हम कोई जवाब नहीं दे पाते। वह बहुतसे आदमियोंसे ये सवाल कर चुका है पर शायद अभी तक उसे समाधान नहीं मिला। मैंने उसे एक राय दी। वह एग्रिकल्चर, कृषि विद्या पढ़े। उसने पूछा, "इसमें प्रास्पेक्ट्स क्या है? मैं कोई जवाब नहीं दे सका। कृषिकी डिग्री ले लेनेके बाद अगर किसी कृषि कालेजमें अपन पढ़ हुए को उगलनका मौका उसे न मिला तो उसकी डिगरी उसके कौन काम आयेगी।

यह हमारी मुसीबत है। यह अन्यों की मुसीबत भी होगी। शिक्षा-व्ययकी कठिनाईका इस सम्बन्धमें हम जिक्र नहीं कर रहे हैं। इस समय तो सीधा जिक्र है कि परीक्षामें पास कर लेने के बाद छात्रों को उचित रास्ता बतानवाला कोई नहीं मिलता और पास-शुदा छात्र कुछ सुन सुना कर उसीके आधार पर अपनी जीवन-नौका के कम्पासको किसी दिशा पर लगा देते हैं। संयोग ह, उनकी नाव किसी अनुकूल घाट पर लग जाय। नहीं तो आंधी और लहरोंके चपेटे खाती हुई वह उद्देश्यहीन भावसे कुछ दिन भटकती भटकती कहीं किनार लग ही जायगी, चाहे वह किसी शस्य श्यामला द्वीपका किनारा हो अथवा बंजर मरुभूमि का। वह नहीं जानता कहां जाना चलना है, चलता जाता है।

इसलिये आधुनिक विश्वविद्यालय और कुछ नहीं पो कमसे कम इतना तो करें कि वे एक विभाग खोलें जिसका नाम 'परामर्श विभाग' हो। जिन छात्रोंको वे भर्ती करते हों और जिन्हें डिग्रियां देकर बाहर भेजते हों, उनकी प्रवृत्ति, रुचि, महत्वाकांक्षा एवं परिस्थिति पर विचार कर उन्हें भर्तीके पहले और विसर्जन' के बाद यह सलाह दी जाय कि वह इसके बाद अब क्या करे। देशमें लाखों छात्रोंके सामने प्रति वर्ष यह प्रश्न आता है और लाखोंका जीवन किसी सुयोग्य परामर्शके बिना विपरीत दिशामें चल पड़ता है। विश्वविद्यालय डिग्रियां देनेके एंजेंट होनेके बजाय और कुछ अपनापनका कार्य करें तो कितना अच्छा हो! अगर वे अपने छात्रोंको यह भी बता सकें कि उसे क्या पढ़ना चाहिये तो बहुतसे छात्रोंका जीवन बन जाय और बरबाद होनेसे लाखों बच जायें। लाखों मैं इसलिये कह रहा हूं कि जानता हूं कि विश्वविद्यालयके छात्रोंमेंसे सैकड़े एकको भी उसके मनोनुकुल काम नहीं मिलता। ऐसा छात्र सदा अपनी जिन्दगीका छकरा घसीटता हुआ ही चलता है और यह अनुभव करने लगता है कि विश्वविद्यालयमें जाकर उसने समय और पैसा ही बरबाद किये कुछ पाया नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# दूर हो तुम

श्री प्रभुनाथ मिश्र

दूर हो तुम, विश्व मेरा दूर मुझसे हो रहा है
वेदना उर में छिपा, उच्छ्वास अंतर में दबाकर
मौन हूं, पर दर्द नयनोंसे निकलता छलछलाकर
दूर हो तुम, अश्रु पल पल पर पलक को धो रहा है
दूर हो तुम, विश्व मेरा दूर मुझसे हो रहा ह

मुदित रजनी हो रही है, झिलमिलाते हैं सितारे
उदित नभका इन्दु भी दुर्भाग्य पर हंसता हमार
दूर हो तुम, जग रहा मैं, प्यार बेसुध सो रहा है
दूर हो तुम, विश्व मेरा दूर मुझसे हो रहा है
जलन नस नस में भरी है, हो रही दो टूक छाती
स्मृति तुम्हारी बन व्यथा विद्युत कलेजा तड़तड़ाती
दूर हो तुम, विरह विषका बीज तन में बो रहा है
दूर हो तुम, विश्व मेरा दूर मुझसे हो रहा है

"बारह बरस दिल्ली रहे पर भाड़ ही सोंका किये।

विश्वविद्यालय एक काम और कर सकते। । वे अपने पाठ्यक्रममें दकियानूसी व्यर्थके विषय न भर कर उपयोगी, अर्थकरी विषय रखें तो अच्छा हो। पहले उद्देश्य था अंग्रजी सीखना सरकारी नौकरीका ध्यान रहते हुए भी अग्रजी सीखन की आवष्यकता तो छात्रोंको अब नहीं दीखती। इसलिये अब उन्हें विषयोंकी पढ़ाई दनी चाहिये। ज्ञान, विज्ञान, व्यवहार व्यापार आदिमें बहुतसे उपयोगी विषय हैं जिनकी पढ़ाई से वास्तविक लाभ हो सकता है। यही लीजिये भारतीय शासन विभाग (आइ० ए० एस०, और भारतीय, पुलिस (आइ० पी० एस०) की नौकरियां कल कारखानोंके संचालन और संगठनकी योग्यता, पदार्थ-निर्माण कलायें—बहुतसे विषयहैं। सरकारको अपने अफसरोंके सखानेके लिये अलग कालेज खोलने पड़ते हैं, ताताको अपने कारीगरोंको तालीम करनेके लिये प्रबन्ध करना पड़ता है। सिनेमाका व्यवसाय ही लीजिये। सिनेमा कलाकारकी पढ़ाई बम्बईमें ही अलग एकाध जगह ही रही है, सैनिक विद्यालय सरकारने अलग खोले हैं। इधर बैंक-विद्या, बीमा व्यवसाय तथा हजारों अन्य विषय हैं जिनकी ट्रेनिंग की आवश्यकता है। मगर यह क्या कि हमारे कालेज इन विषयोंको पढ़ानेकी ओर तो ध्यान नहीं और लाजिक हिस्ट्री,की लाजिकमें उलझा कर छात्र का जीवन व्यर्थ करते रहें। उन्हें विषय विभिन्नता की ओर ध्यान देना चाहिये, तभी उनकी विशाल अट्टालिकायें विद्या मंदिर सिद्ध होंगी। इन विश्वविद्यालयोंका केवल कागजी ज्ञान वितरणसे इति-कर्त्तव्य न हो जाना चाहिय। उन्हें कागजी ज्ञानके अलावे छात्रोंको कार्य-ज्ञान देनकी भी व्यवस्था करनी चाहिय जिसके लिये कालेजोंसे कारखानों, दूकानों, बैंकोंका सम्पर्क होना चाहिय। छात्र पढ़ें भी और सीखें भी उनका ग्रंथ-ज्ञान व्यवहारिक ज्ञानसे संपुष्ट हो, तभी शिक्षाकी सार्थकता होगी। सरकारको अलगसे कालेज खोलनेकी आवश्यकता क्यों हो? विश्वविद्यालय ही अपने यहां सरकारके सभी विभागोंके लिये कर्मचारी तैयार करदें? कालज संचालकोंको ऊपर लिखी गयी पंक्तियोंके प्रकाशमें अपने पाठ्यक्रम एवं व्यवस्थामें परिवर्तन लाना चाहिये, तभी विश्वविद्यालयशिक्षा उपयोगिनी होगी। वास्तवमें विश्वविद्यालयोंको विश्वकी विद्याओंका आलय होना ही चाहिये। उनके पास साधनहैं, उनका संगठन है। हम तो विश्वविद्यालयोंको ऐसा देखना चाहते हैं कि उसकी शिक्षा समाप्त करके आनेके बाद मनुष्यको अन्य किसी शिक्षाकी आवश्यकता जीवनमें प्रविष्ट होनेके लिये न पड़े। मानसिक शिक्षाके साथ साथ विश्वविद्यालय यदि कायिक शिक्षा भी दे सके तभी यह बात संभव हो सकती है।

जो कुछ हो, विश्वविद्यालयोंके सुधार और उन्नति सम्बन्धी बहुतसी बातें हैं, जिनका निर्णय तो समय पर होगा ही। इस समय आवश्यकता यह है कि देशके विश्वविद्यालय एक आदर्श परामर्श विभाग अपने यहां खोल कर छात्रोंको राह दिखलाने उचित सलाह देने का काम भी करें जिससे छात्र भटके नहीं और उनका समय नष्ट न हो। उस विश्वविद्यालयको सचमुच ही उसके छात्र गुरुकुलकी तरह मानेंगे जिसमें यह बात भी होगी।

काफू (रजि०)
हैजे
को रामबाण दवा है
डाबर लिमिटेड, कल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ब्रिटेनमें महान जन-हित योजना

१० वें पृष्ठका शेषांश

अपने स्वार्थोंका बलिदान करके योजना के भीतर काम करना स्वीकार कर लिया है। इस योजनासे मध्यवित्त एवं मजदूर श्रेणीके लोगोंको तो आशातीत लाभ होगा। अगर यह योजना सफलतापूर्वक चली तो इससे मजदूर दलका शासन ब्रिटेनमें अचल हो जायगा, उसे इतना यश मिलेगा।

ये दोनों योजनायें जब क्रियान्वित होंगी तब सचमुचमें ऐसा होगा कि इससे इस देशमें रहने वाले ४॥। करोड़ प्राणी सुरक्षा और निश्चिन्तताका जीवन बिता सब मिलाकर हर आदमीको करीब ४९॥ शिलिंग प्रति सप्ताह मिल जायगा जिसके साथ एक मर्द एक स्त्री और एक बच्चा होगा। एकसे अधिक बच्चे वालोंके लिये ५शिलिंग प्रतिबच्चा और मिलेगा। इस तरह बेकार होनेकी दशामें कोई निराधार न रह सकेगा। जबतक वह काम करने लायक है काम करेगा। काम करनेकी शक्ति जहां बीमारी, अंगच्छेद या बुढ़ापेके कारण जाती रही, उसे यह सरकारी सहायता मिलनी प्रारम्भ हो जायगी।

इस योजनामें सबसे भारी बात यह है कि किसीको भी अपने इलाजके लिये अब पैसा खर्च करनेकी आवश्यकता न होगी। प्रत्येक डाक्टर अपने इलाकेमें रहनेवाले ४ हजार आदमियोंकी देखभालका भार लेगा।

इस योजनाओंके सफल होनेके लिये तीन बातें आवश्यक हैं—(१) भरपूर काम हो (२) अधिक उत्पादन हो और (३) सामान वितरण हो। तीनों विषय एक दूसरेसे सम्बद्ध हैं। ब्रिटेन इसी ओर बढ़ रहा है। ब्रिटेनमें अभी भी कामकी मजदूरी यथेष्ट मिल रही है। इस मजदूरीमेंसे कमाने वाला मजदूर बीमा की निश्चित फीस, प्रीमियम, देकर भी इतना बचा लेता है कि वह आरामसे अपना गुजर बसर कर ले। मजदूरीकी यह दर कम होनेकी सम्भावना नहीं है। जीवनके अन्य आवश्यक आकस्मिक व्ययोंके लिये बीमा सम्बन्धी सुविधायें हो जा रही हैं। अब उसे और क्या चाहिये।


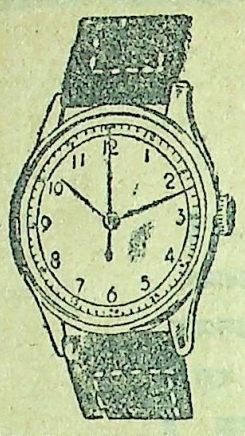

A NOVELTY WATCH
CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage As. 12. Free for 2 watches
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM



# प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थ स्त्री हूं। विवाहके एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं सिल-कोरिया, (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्मके दुष्ट रोगोंमें फंस गई थी। मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्दके साथ, जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिकजानेकेकारण मैंप्रतिदिनकमजोर होती जा रही थी, चेहरेका रंग पीला पड़ गया था, घर के काम काम से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेवने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराई, परन्तु किसी से रत्तीभर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य सेएकसन्यासीमहाराजहमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है जो इस आयुमें ही चेहरेका रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पतिको अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिनके सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगोंका नाश हो गया। ईश्वर की कृपासे अब मैं कई बच्चोंकी मां हूं। मैंने इस नुस्खेसे अपनी सैकड़ों बहनोंको अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधिको अपनी दुःखी बहनोंकी भलाईके लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वरने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहनके लिये १५ दिनकीऔषधि तैयार करने पर २॥।=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोगमें फंस गई होतो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथसे औषधि बना कर बी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यहमेराप्रण है कि मैं किसी बहन से दवा की कीमत अपनी असल लागतसे एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है इस लिये कोई बहन मुझे किसी और रोगकी दवाईके लिये न लिखें।

प्रेम प्यारी अग्रवाल नं० ५१ बुडलाडा जि० हिसार, पंजाब।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(पृष्ठ १२ का शेषांश)

पड़ी, चोट सिरमें लगी। माथा फट गयका खून बह गया। तभी सुलोचनाने देखा कि उन लड़कोंने जोरसे ठहाका मारा और कहा—ऐसे नहीं भागा करते! ठहरो, हम प्यार करेंगे..... पलंग सजा हुआ कमरा.....

उसी क्षण सुलोचनान परके पास पड़ी हुई ईंट उठाई और अतिशय क्रोधमें भर कर उन लड़कोंके ऊपर खेंच मारी। जिसके लगी वह चीख गया। सुलोचनाने देखा कि वह अपन साथियोंकी सहायता पाकर उस पार्कसे भी निकल गया।

दो-तीन मिनट हुई थी कि सुलोचना तांगमें डाल कर प्रमदाको घर लायी। उसकी दशा देख कर घर भरमें चिन्ता फल गयी। सुलोचनाने कहा, हुआ कुछ नहीं, गिर पड़ी।

परन्तु प्रमदा भीत थी, अतिशय अशांत। वह बार बार कमरेमें खड़ेहुए सभी व्यक्तियोंकी ओर देख कर कह उठती—वह गुंडा..... वह.....

कि तभी अपने साथियोंके साथ खूनमें भींगा हुआ राकश घरमें आया। सभीने देखा। परन्तु जब सुलोचनाने देखा तो एकाएक उसके मनने चीख कर कहा—मर नहीं गया, कम्बख्त।

और उसने डरी हुई तथा भीत हुई प्रमदाके कानके पस मुंह ले जाकर कहा—वह और कोई नहीं था, तरा ही भाई राकेश था!

चीख कर, एकाएक विह्वल, बन प्रमदाने कहा—राकेश। और जाने कितने जोरसे उसकी छाती पर घूंसा लगा कि वह तिलमिला गयी और मूछित भी हो गयी।

धीरे धीरे अपने पैर बढ़ा कर, जाने किस भावनासे दुखित हो, सुलोचना अपने घर चली गयी।

# पढ़िये, सोचिये, समझिये

## १५ अगस्तको क्या करेंगे

राष्ट्रीय महासभाके अध्यक्ष डा० राजेंद्र प्रसादने आगामी १५ अगस्तको स्वाधीनता दिवस समारोह मनानेका आह्वान करते हुए यह बताया है कि उस दिनके लिये साधारण सार्वजनिक कार्यक्रम क्या होना चाहिये। आपका कहना है कि इस दिनको हमलोग विगत युगके उन बलिदानों और तपस्याओंके चिन्तनमें बितावें जो स्वाधीनता यज्ञके उपलक्ष्यमें हमें करने पड़े हैं। साथ ही इस दिन हम अपनेको भविष्यतके कार्य क्रमके लिये उत्सर्गित करें। इस दिन हर आदमी कोई न कोई रचनात्मक कार्य अवश्य करे और प्रातः कालसे लेकर दोपहर तक यह चले। अपरान्हमें सब लोग एक जगह इकट्ठे हों और एक सार्वजनिक सभा करें। इस सभामें लोग यह प्रतिज्ञा करें कि देशकी सेवाके लिये हम स्वाधीनताको अक्षुण्ण रखनेमें अपना बलबूता लगा देंगे। इस दिन कांग्रेसजनोंको यह सोचना चाहिये कि विदेशी हाथोंसे अधिकार ले लेनेसे ही सब कुछ नहीं हो गया। देशकी जनताको सुखी और समृद्ध बनानेका भार तो अब हम पर आया है। इसके लिए रचनात्मक कार्य और ऊंचे तबके की सेवाभावना आवश्यक है। हमको गरीबी मिटानी है, हमें ऐसा समाज स्थापित करना है, जिसमें सबको सामान सुख और पर्याप्त अवकाश हो। आजादीके बाद जो साम्प्रदायिक विद्वेष फैला उसे साल भर हो गया। तौ भी अभी तक वह पूरी तरह शमित न हो सका है। थोड़ा हुआ अवश्य है। इसे पूरा करना है। अपने घर बार छोड़ कर जो लाखों शरणार्थी आ पहुंचे हैं उनकी व्यवस्था करनी है। पड़ोसियोंके साथ मैत्री और साख पैदा करना अभी बाकी ही है।

एकको छोड़ कर बाकी सभी देशी राज्यों से हमारा विध बैठ गया है पर दुर्भाग्यवश उनमें जो सबसे बड़ा है, उससे ही कोई व्यवस्था नहीं बैठी। इसके लिये हम लोगोंको कम चन्ता नहीं है। इन सब प्रश्नों के समाधानके लिये हमलोगोंमें दृढ़ निश्चयता बलिदान-भावना, और उदारता आनी चाहिये युद्ध चलते रहने पर जितनी शीघ्रता और तत्परतासे हम लोगोंने उसके लिये काम किया था, आज उससे भी कहीं अधिक करना है।

इसलिये इस दिवसको बलिदानोंकी स्मृतिका दिवस माने और देशकी खातिर मर मिटानेकी प्रतिज्ञा लें। और कोई न कोई रचनात्मक काम अवश्य करके संध्या कालमें सार्वजनिक सभामें भाग लिया जाय।"

## हैदराबादको झुकना पड़ेगा

उस दिन पूर्वी पंजाबके देशी राज्यों के संघका उद्घाटन करते हुए सरदार पटेलने पटियालाकी एक बड़ी सभामें हैदराबाद के सम्बन्धमें भी कुछ जिक्र किया। इधर सरदार अस्वस्थ होकर देहरादूनमें स्वास्थ लाभ हित आराम कर रहे थे। तुरत ही वे अपने आरामसे लौटे थे। इस अवसर पर आपने जो कहा उससे देशके विशाल जनसाधारण की उद्विग्नता हैदराबादके सम्बन्धमें कुछ शांत होगी।

सरदार पटेल कहा, "जूनागढ़में कुछ दिन पहले मैंने कहा था कि अगर हैदराबाद नहीं ठीक हुआ तो उसकी भी दशा जूनागढ़, की होगी। मैं आज भी अपने उस कथन पर आरूढ़ हूं। हैदराबाद नहीं मान रहा है यह बात स्पष्ट है। उसके साथ निपटनेमें कुछ विलम्ब इस कारण लग गया है कि लार्ड माउंट बैटनने उसे राजी करनेका भार अपने ऊपर लिया था। मुझे संदेह तो उसी समय था कि उनसे यह काम न हो सकेगा पर मैंने उन्हें बाधा नहीं दी। वे अपने भरसक निजामको समझा कर थक गये, पर वह निजाम। "हिज मैजेस्टीज, फेथ फुलएली"—ब्रिटिश महाराजका विश्वासी साथी कह कह कर जिसका दिमाग खराब कर दिया गया था, माउंट बैटनकी क्यों सुनने लगा? लार्ड माउंट बैटनके कहनेसे हम लोगोंने निजामको ऐसी सुविधाऐं दे दी चाहीं जो उसे नहीं मिलनी चाहिये थीं। अच्छा हुआ निजामने ही उसे नहीं माना। अब वे शर्तें लार्ड माउंट बैटनके साथ गयीं। अब निजामके साथ वे ही शर्तें रहेंगी जो अन्य देशी राज्योंके साथ हैं। ब्रिटिश नरेश के इस बराबरके दोस्तको हम और कोई विशेष सुभीते न दे सकेंगे। वह बाहरी सहायताके भरोसे कूद रहा है। मैं उसे चेतावनी देना चाहता हूं कि वह उसके काम न आयेगी। उसे हमारे आगे झकना पड़ेगा।

CC-0 in Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विलम्ब लग गयाहै पर मैं समझता हूं कि यह विलम्ब डाक्टरका विलम्ब है जो छुरी प्रयुक्त करते समय थोड़ा एक कर यह सोचता है कि कहां काटा जाय और कैसे काटा जाय। तकलीफको दूर करना डाक्टर का उद्देश्य होता है। इसके लिये अगर रोगीको कुछ क्षणोंके लिये अधिक भी कष्ट ही तो वह उसे देता है। यही दशा हैदराबादकी है। आप लोग मुझ पर भरोसा रख सकते हैं। दुख आपकी तरह हमें भी है, इसलिये आप लोग सोचलें कि हम निश्चिन्त बैठे नहीं रहेंगे।"

## लार्डमाउण्ट बेटनका परामर्श

लन्दनमें भारतीय मजलिस नामक एक संस्था भारतीय छात्रोंकी है। गत ७ जुलाईको उसके वार्षिक भोजके अवसर पर कुछ विशिष्ट आदमी इकट्ठे हुए थे। लार्ड माउण्ट बैटन, सर पेथिक लारेंसर श्री पामदत्त भी उनमें थे। इस अवसर पर कुछ संभाषण भी हुए, भाषण भी और भाषणोंमें भारतकी विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला गया। लार्ड माउण्ट बैटन ने उस अवसर पर क्या कहा यह जानना हम लोगोंके लिये कुछ विचारोत्पादक हो सकता है क्योंकि आदर्श भिन्नता होते हुए भी लार्ड माउण्ट बैटन भारतके नियंत्रित और अनियंत्रित दोनों प्रकारके गवर्नर जनरल रह चुके हैं।

माउण्ट बैटन साहब ने इस अवसर पर अपने हस्ताक्षर मांगनेवालोंको महात्मा गांधीके जीवनकी एक मनोरंजक घटना सुनई। उन्होंने कहा कि, "हस्ताक्षर देनेकी महात्माजीने एक निराली प्रथा निकाली। वे अपने हस्ताक्षरके कुछ मूल्य रखे हुए थे। एक बार एक अमेरिकनने उनके हस्ताक्षर मांगे। उन्होंने रीतिवत उससे कहा, "निकालिये आपके पास जो कुछ हो।" उसके पास ३१९ रु० थे। उसने महात्माजीको ये रुपये दे दिये और उन्होंने अपना दस्तखत उसके नोट बुकमें कर दिया। पीछे यह पता लगने पर कि अमेरिकनके पास जानेको खर्च भी नहीं बचा था, उन्होंने उसके रुपये लौटा दिये।


जैय हिन्द

श्रीमान महाशय जी,

हमारे कारखानेमें सूती बन्यान, जो कि देखनेमें उमदा और मुलायम चलनेमें मजबूत है, तैयार होती है। हमारे मालको देखकर दूकानदार दो-दो तीन-तीन हजार रुपये का आर्डर दे रहे हैं। हम आपसे निवेदन करते हैं कि बतौर सेम्पल ४०,४५ रुपयेका आर्डर देकर एक दफा हमारा माल जरुर देख लें।

सूती बनयान सफेद साइज २४,२६ २८ रुपया ७-०-० पर दर्जन
" " " "३०, ३२, रुपया ९-०-० प्रति दर्जन

नोट—महाशय जी हमारा माल देखकर आप अपने शहरके दूकानदारोंको भी दिखा देना ताकि हर एक दूकानदार हमसे माल मंगवा सकें।

आपका शुभचिन्तक, सी० एल० अग्रवाल लूधियाना।

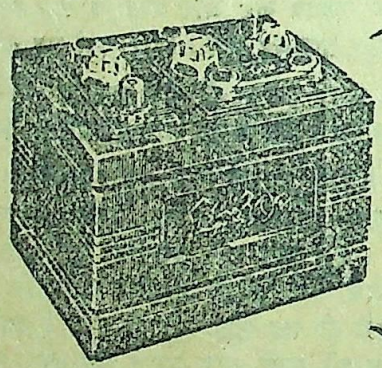

आप इससे अच्छी बैटरी खरीद नहीं सकते कार, टक और बसोंके लिये

एक्साइड बैटरी

Local Agents, Mess. F. & C. OSLER Ltd.
12, Old Court Houe Sreet, Calcutta.

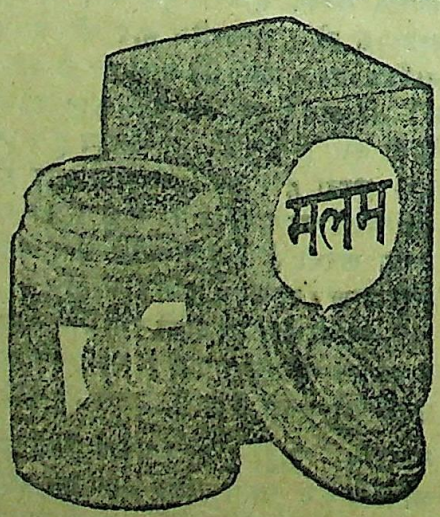


जिन पुरुषोंकी बचपनमें बुरे रास्ते पर और समझ आने पर भी विलास में आसक्ति रखनेसे नसोंमें निर्बलता आ गई हो जिनके लिये सर्वश्रेष्ठ औषधि खानेके लिये विचार में न हो। उनके लिये उत्तम से उत्तम दवा केवल मालिस द्वारा प्रयोगिता यह मलहम है। कारण कि इसके एकमात्र प्रयोग करने से नसें मजबूत व सख्त अवश्य हो जाती हैं। युवक, अधेड़ और वृद्ध सबकी ही इससे फायदा पहुंचता है। एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग।

चाइनीज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०

हेड आफिस-२८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, डलहौसी स्क्वायर कलकत्ता, नया बाजार, दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# गांधी-हत्याकाण्ड

## मामलेकी सनसनी खेज वारदातें

गांधी-हत्याकांण्डका मुकदमा दिल्लीके लाल किलेमें, सरकारकी विशेष आज्ञासे संगठित एक विशष अदालतमें, श्री आत्माचरण जजके इजलासमें गत २२ जूनसे शुरू हुआ। सरकारकी ओरसे बम्बईके प्रमुख फौजदारी वकील श्री दफ्तरी काम कर रहे हैं। इनके अन्य सहायक भी हैं। अभियुक्तोंकी ओरसे श्री भोपटकर, श्री ओक श्री डांगे, श्री बनर्जी, श्री इनाम दार आदि मुख्य वकील हैं। सभी अभियुक्तोंने अलग अलग वकील रखे हैं। अभियुक्तोंको कठघरेमें बठनको बेंच दिये गये हैं।

पहलेतो-कार्य बिधिकी अवश्यक बातें तय हुई। यह निश्चय हुआ कि मुकदमेकी कार्रवाई अंग्रजीमें हो। गवाहोंकी गवाहियोंका तुर्जमा करके कहनेके लिये दुभाषिये भी रखे गये हैं।

मुकदमेमें आठ अभियुक्त हैं, जिनके नाम ये हैं। नाथूराम बिनायक गोडसे, मदन लाल, बिनायक दामोदर सावरकर, नारायण डी० आप्टे, बिष्णू आर करके शंकर किस्तया, गोपाल बी० गोडसे और दत्तामेय परचुरे। इन पर हत्या करने हत्याका लिये षणयंत्र करने, नाजायज शस्त्रास्त्र रखनेके अभियोग हैं। चार अभियुक्त फरार हैं उनके नाम ये हैं। दिगम्बर आर० बाडगे, गंगा धर एस० दान बड़े, गंगाधर यादव, और सूर्यदेव शर्मा सभी अभियुक्त जेलमें हैं। जमानत किसीकी नही हुई। अभियुक्तोंमें एक डा० परचूरे ग्वालियरका रहने वाला है। इसकी ओरसे यह आपत्ति उठाई गयी थी कि यह देशी राज्यका रहनेवाला होनेके कारण इस अदालतके दायरेसे बाहर है। पर उसकी आपत्ति अस्वीकृत हुई। अब तक इस मुकदमेमें साबूत पक्षमें २७५ गवाह हैं जिनमेंसे कई गवाहोंकी गवाहियां गुजर चुकी हैं। मुख्य मुख्य गवाहोंमें उस होटलके कर्म चारी हैं जहां हत्यारे ठहरे थे, सुशीला बाई नामकी स्त्री और भूरा सिंह नामका बिड़ला भवनका वह चौकीदार है जिसने बम फूटनेके समय मदन लालको पकड़ा था, फिर वे लोग हैं जिन्होंने हत्याकारी गोडसेको पकड़ा था। इसके बाद डा० परचुरे है, ग्वालियरके जगदीश प्रसाद गोपाल है जिसकी रिवाल्वरसे हत्या की गयी थी और वह बाडगे नामक शस्त्र बिक्रेता है जिससे इन लोगोंने बम आदि खरीदे थे।

### अभियोग उपस्थित

मुकदमा खोलते हुए सबूत पक्षके वकील श्री दफ्तरीने अभियुक्तों पर ३०२ के अभियोग लगाये हैं। अभियुक्तोंने अपने को निर्दोष कहा और सफाई देनेकी अभिलाषा प्रकटकी। डा० परचूरेने हाजतमेंही एक मजिस्ट्रेटके सामने अपना अपराध स्वीकार करते हुए एक बयान दिया था। वह बयान उसकी गवहीके समय फाइलमें ले लिया गया। पीछे उसने दरखास्त दी कि उसने अपराध स्वीकार पुलिसके डरसे किया था। अभियोग उपस्थित करते हुए कहागया कि सभी अभियुक्त हिंदू महा सभा की भावना वाले हैं। ये समझते थे कि हिन्दुत्वकी रक्षा तभी होसकती है जब मुसलमानोंका उच्छेद होजाय। महात्मा गांधीके सदभावना-प्रचारको येलोग नापसन्द करते थे। इन लोगोने उनके सिद्धान्तोंकी आलोचना करनेके लिये अखबार भी निकाले थे। जब गांधी जीने दिल्लीमें हिंदू मुसलमानोंमें मेल करानेकी कोशिस की तो इन लोगोंका मस्तिक बिगड़ा। ये लोग कांग्रेसके भी बिरुद्ध थे और कांग्रेस सरकारके भी। जब महात्मा गांधीके प्रभावसे कांग्रेस सरकार भी हिन्दुओंके लिये किसी खास रियायत न करनेकी नीति अख्तियार की तो इन लोगोंने उनके समाप्तही करदेनेका बिचार किया और इसके लिये षडयंत्र तैयार किया गया। सभी अभियुक्त एक या दूसरे रूपमें अपराधमें सहायक रहे हैं। श्री सावरकर भी इससे बचे नही हैं। असलमें सावरकरके सहयोग और सहमतिसेही सारा प्लाट तैयार हुआ था। उनका घरही इसका अड्डा था। आपे गोडसे इनसे बराबर मिलते थे। पहले २० जनवरीकोही हत्या करनेका निश्चय हुआ था। उस दिन बम भी फेका गया पर उससे महात्मा जी नहीं मरे। तब ये लोग दिल्लीसे फिर बंबई गये। वहांसे एक बढियां रिवाल्वर लाकर इन लोगोंने गोडसेके द्वारा महात्मा जीकी हत्या कराई।

श्री दफ्तरीने प्रत्येक अभियुक्तका संक्षिप्त परिचय दिया और इनका पारस्परिक परिचय कैसे हुआ यह भी बताया दुर्घटना और षडयंत्रमें किसका कितना भाग रहा यह भी वे बताते गये।

### गवाहोंके इजहार

इसके बाद गवाहोंके इजहार शुरू हुए। होटलके गवाहोंन अपनी गवाहीमें बताया कि गोडसे और उसका भाई गोपाल आदि उसके होटल में कमरान० ४० में थे। उन्होंने बतलाया कि इन लोगोंन अपने नाम बदल लिये थे। कोई देश पांडे बना था तो कोई ब्यास। ये लोग २० जनवरीके पहले भी ठहरे थे और उसके बाद ३० जनवरीके पहले भी जिस दिन गांधी जीकी हत्या की गई थी। सुशीला नाम्नी स्त्री और चौकी दार भूरा सिंह ने बताया कि कि गांधीजीकी प्रार्थना सभामें बम फूटतेही हमलोगोंने मदन लाल को पकड़ा। उस स्त्रीने मदनको किसी चीजमें दिया सलाई लगाते देखा था और उसपरही धड़ाका हुआ था। चौकी दारके आन पर उसनही बताया था कि मदन लालन बम फका है। यह भी बताया गया कि तलाशी लेने पर उसके पास एक और जीवित बम निकला था।

बाडगेके नौकरा शंकरने वह जगह दिखलाई जहां २० तारीखकी घटनाके

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गाड़े थे। यह स्थान दिल्ली स्थित हिंदू महा सभाके दफ्तरके पीछे है। इसे बुर्का ओढ़ा कर वहां लेजाया गया था। डा० पराचुरेने बताया कि उससे अपनी रिवाल्वर देनेको गोडसे और अप्टेन कहा था और उनकी रिवाल्वरके बदल उन्हें तब तकके लिये एक देशी पिस्तौल लाकर दी गयी थी। गवाहोंने यह भी बताया कि किसतरह रिवाल्वर एक पेड़की डाल पर चला कर यह देखा गया था कि वह ठीक काम करता है कि नहीं। गवाहोंने बताया कि पहली योजना महात्माजीको बम द्वारा खतम करनेकी थी। पीछे इस योजनामें यह सुधार किया गया कि बम प्रार्थना सभा से कुछ हट कर छोड़ा जाय क्यों कि महात्मा गांधीऔरसुहरावर्दीकेअतिरिक्त अन्यकिसीको वहांमारनेका बिचार न था।यह सोचा गया था कि बम फूटनसे जो गड़बड़ी होगी उससे लोग भागेंगे उसी समय मौका देखकर महात्मा जी पर रिवाल्वर चला दिया जायगा। मगर बम फटने पर भी महात्मा जीके बैठे रहजाने और अन्य लोगोंके न उठने के कारण पहली योजना विफल हुई थी।

मुकदमेके दौरानमें जजने, सभी वकीलोंको साथ लिये हुए और मदन लाल अभियुक्तकी उपस्थितिमें घटना स्थलोंका निरीक्षण भी किया। शंकरन वह जगह दिखाई जहां शस्त्र छिपाये गये थे। वहां उसे बुकमें पहुंचाया गया। था। गवाहोंमें बंबई और दिल्ली के टेलीफोन अपरेटरोंकी गवाही भी हुई, जिन्होंने बताया कि दिल्लीको ट्रंक काल के लिये सावरकरके घरसे २८ तारीखको काल आया था। दिल्लीमें हिंदू सभाका पता दिया गया था। राम सिंह डाइवरने बताया कि अभियुक्त ३० जनवरीको उसकी टैक्सी पर चढ़ कर प्रार्थना सभामें गये थे। एक गवाहने बताया कि डा० परचुरने तीस तारीखको कहा था कि बहुत जल्दीही तुम लोग एक आसाधारण समाचार सुनोगे। परचुरेके घर गयातो उसे वहां पर मिठाई बांटते हुए पाया। गवाहोंने यह भी बताया कि अभियुक्त विमान द्वारा दिल्ली आये थे और होटलके बयराने कहा कि इन्होंने होटलमें शराब भी पी थी। जगदीश प्रसाद गोयलने बताया कि उसकी पिस्तौल ५००) में खरीदी गयी थी।

अन्य गवाह आंशिक थे और आंशिक बिषयों पर गवाही दी। बम फटनके बाद आप्टे और गोडसे पराचुरेसे रिवाल्वर लानेको ग्वालियर गये थे। ये लोग स्टेशन से जिस तांगे पर सवार होकर उसके यहां १२ बजे रातमें पहुचे थे वह तांगे वाला भी गवाहीके लिये लाया गया था। इसने अन्य बातोंके सिलसिलेमें यह भी कहा कि महात्मा जीकी हत्याकी खबर आने बादही ग्वालियरमें इस बातका हल्ला हुआ थाकिउन्हीं दोनों आदमियोंने हत्या की ह जोउस दिन के तांगे पर परचुरे डाक्टरके घर रातमें आये थे। अन्य गवाहियोंसे यह मालुम हुआ कि इन लोगोंन पिस्तौल पानकी चेष्टा कीथी क्योंकि रिवाल्वर चलाना इन्हें नहीं आता था। दानबाड़ेके घरमें रिवाल्वरका अभ्यासह भी कराया गया था जिसकी गोलीका निशान भी उसके घरकी दिवालमें मौजूद था और एक खाली गोलीका आवरण भी

इस मुकदमेमें सबसे प्रमुख गवाह मुखविर रामचन्द्र बाडगे शस्त्र बिक्रता। जिसन सार षडयंत्रका भंडा फोड़ किया ह। गत २० तारीखसे उसका इजहार चल रहा ह। उसका बयान कुछ बिस्तृत रूपसे दना ठीक होगा इस लिये आग दिया जा रहा ह। ता० २२ तक उसका बयान समाप्त नहीं हुआ ह।

मुखविर बाडग की गवाही

ता० २० जुलाईको महात्मा गांधीकी हत्याके मुकदमेमें दिगम्बर रामचन्द्र बाडगे नामके गवाहके गवाही हुई। यह व्यक्ति भी अभियुक्तो में था किंतु पकड़ जानके कुछ दिनों बाद इसने सरकारी गवाह बन प्रकट कीथी। फलतः क्षमादानके अधीसन र वह मुखविर बनालिया गया और आज गवाही देनेके लिये लाया गया।

बाडगे पूनामें शस्त्रोंकी दूकान करता है और इसीने अभियुक्तोंको वे बम दियेथे जिनमेंसे एक मदन लालने २० जनवरीके प्रार्थना सभामें फका था। फिर उसीने उस रिवाल्वरका प्रबन्ध कर दिया था जिससे गोडसेने महात्मा जीकी हत्या की। बाडगेने अपनी गवाहीमें साफ-साफ कहा कि उसनेही १४ जनवरीको एक थैलेमें बम कारतूस आदि लेकर शंकरके साथ उन्हें बंबई पहुचाया था। यह सामान उसने गोडसे और आप्ट के कहनेसे इकट्ठे किये थे और सामान लेकर वह हिंदू महा सभाके दादर आफिसमें गोडसे और आप्टसे मिला था। यहांसे थैला लिये हुए ये लोग सावरकरके मकान पर गये। बाडगेको बठा कर आप्टे भीतर गया और दस मिनटोंके बाद आकर फिर चलनेका उद्यत हुआ। वहांसे वे दीक्षित महाराज नामक एक व्यक्तिके मकान पर गये और थैला वहीं रख दिया गया।

बाडगेने यह भी बताया कि दीक्षित महाराजके मकानमेंही आप्टेन मुझसे भी दिल्ली चलनेको कहा। मेरे यह पूछने पर कि वहां क्या काम है, आप्टेने कहा कि तात्या राव (सावर कर) की इच्छा है कि कि महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, और सोहरा वर्दी को समाप्त कर दिया जाय। हम लोगों पर इस कामका भार रखा गया ह, इस लिये हमलोगोंने यह सब सामान तुमसे मंगाया ह और इसे लिये हुए दिल्ली जा रहे हैं। बाडगेने यह कहा कि सावरकरके मकानसे निकलते हुए उसन स्वयं सावरकरको यह कहते हुए सुना, काम समाप्त करके मेरे पास आओ। रास्तेमें टेक्सी पर भी आप्टेने कहा कि महात्मा जीकी आयु शेष होगई है और अब उन्हें मरना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# आंसूमें हंसी:बादलमें बिजली

काश्मीर हमलेमें इन कबाइलियोंकी बेरहमीने जहां बड़ा उत्पीड़न मचाया, वहीं इनकी बेवकूफीने अच्छे मजाककी सूरत भी खड़ी की। ऐसी ही कुछ घटनायें काश्मीर के शरणार्थियोंने सुनायी है जो कुछ नीचे दी जाती हैं।

हिन्दवारा तहसील पर एक दिन हमला हुआ। गांवके लोग लूटे और मारे जाने लगे। एक सुनार था। उसने झटपट अपने घरके पीतल गला कर उनके कुछ गहने बना लिये लिये और उन पर पानी चढ़ा कर उन्हें चमका दिया। अन्तमें हमलावर उसके घर पर आये। उसने उन सभी जेवरों को उनके हवाले कर हाथ बांध कर अपने परिवारकी जान बख्श देनेकी अपील की। हमलावर उसके व्यवहारसे बड़े खुश हो गये। उन्होंने शाबश काफिर "शाबश काफिर" कहते हुए उसका घर छोड़ दिया और चले गये। बेवकूफ कबाइली सोना और पीतलकी तमीज क्या कर सकते थे ?

हमलावरोंने एक दिन एक मकान लूटा लूटका माल आंगनमें बांटे जानेको इकट्ठा किया गया। सब कुछ तो ठीक ठीक बंट गया पर एक जेब घड़ी पर आकर बंटवारका काम रुक गया। घड़ी के लिये सब आपसमें लड़ने लगे। जब किसी तरह मामला न निपटा और खून खराबीकी नौबत आ गयी तब उनमेंसे एक बूढ़े कबाइलीने एक दूसरी ही बात निकाली। उसने सभी को लूटकी सारी चीजोंमें से एक भी लेनेसे मना किया। कहा उसने कि "काफिरका धन बहुत बुरा होता है। इसको लेनेसे नेक मुसलमानोंमें भी बुराई आ जाती है। घड़ीने हमसबको लड़ा दिया। इसे फेंक दो"। सारा धन छोड़ कर सबके सब चल दिये।

बरमूलामें कुछ हिन्दू वेश बदल कर भाग रहे थे। उधरसे कुछ कबाइली पहुंच गये। हिन्दुओंको देखकर इन्होंने उन्हें घेर लिया। पूछा "तुमलोग काफिर हैं" ? वे बोले "हमलोग शेख हैं"। "तुम लोग यहां क्यों आये ? ?" साहब हमलोग सिखोंका पीछा कर रहे हैं जो इसी जंगलमें घुस गये हैं।" सिखोंका नाम इन कबाइलियोंके लियेवैसे ही भड़काने वाला होता है जैसे सांढ़को दियासलाई। 'सिख सिख' करते कबाइली जंगलोंकी ओर भागे और हिन्दुओं का यह दल निकल गया।

बरमूलामें जब हमलावर घुसे तो इन्होंने दूकानोंको लूटा। एक दूकान जूतोंकी थी। इन्होंने दूकानके जूते जब देखे तो आंधीकी तरह टूट पड़े। अपने घासकी सैंडल फेंक फेंक इन्होंने जूते ले लेकर उसे पहनना शुरू किया। अब तो बड़ा तमाशा हुआ। जूते पहन पहन जब ये निकले तो किसी के एक पैरमें लाल तो दूसरेमें काला। किसी के दहिने पांवमें अंग्रेजी तो बायेंमें पम्प चढ़ा हुआ था। किसीने बायेंका जूता दाहिनेमें और दाहिनेका जूता बायें पैरमें डाललिया था और किसीके एक पैरमें कसा हुआ और दूसरेमें हाथ भरका बड़ा जूता पड़ा हुआ था। जूतेने पांव जो काटे तो लौट कर कईने उसे दूकानमें फेंक अपना घासका सैंडल पहना।

एक हिंदू वेश बदल कर पुल पार कर रहा था कि इतनेमें हमलावरोंने उसे पकड़ा। "तुम काफिर हो" उससे पूछा गया। वह बोला," 'खान साहब काफिर तो था मैं, पर अब दीनदार बन गया हूं।" एक पठान बोला "तो कलमा पढ़ो"। हिन्दू मुश्किलमें पड़ा। तुरत अपनेको सम्हाल कर बोला, खान साहब नया याद किया है, शुरूके हरूफ भूल रहा हूं जरा याद कराइये"। हमलावर एक दूसरेका मुंह देखने लगे। हिंदू समझ गया। उसने जोर दिया, "खान साहब यही बिस्मिल्ला....और क्या है याद नहीं पड़ता। जरा बताइये न खान साहब, आगेका एक भी हर्फ"। उसने अपना माथा ठोंका। हमालवर रास्तेसे हट गये "अच्छा ठीक है। जाओ। हमको कलमा तो खुद ही याद नहीं है"। वह जान बचा कर भागा।

पठानोंकी वीरता और बहादुरी बज़ मूढ़ता की बहादुरी है। यह जाति है पठान वह तबतक ही बहादुर है जब तक उसके हाथमें राइफल है। राइफल न रहे तो वह बड़ा कायर और डरपोक हो जाता है। कुछ पठान अपने खेमेंसे कुछ दूर हट कर एक चट्टान एक चट्टान पर बैठे बातें कर रहे थे। उनके पास रैफलें न थीं। इसी समय कुछ हिन्दू उधर से निकले। रैफलें न देख कर इन्होंने पठानोंको लाठियोंसे पीटना शुरू कर दिया। पठानोंके पास छुरे भी थे पर वे डर कर ऐसे भागे कि पिटते जाते थे और भागते जाते थे। पीटपाट कर हिन्दू भाग निकले।

पठानोंने कुछ हिन्दुओंको बेगारके लिये पकड़ा। एक हिन्दूसे उनमें से एक ने अपनी देह दबानेको कहा। हिन्दू की सेवासे उसे जो आराम मालूम हुआ तो वह खुश हो गया। शाम का वक्त था। बड़े जोरकी ठंढ थी। वह आदमी ठंढकसे कांप रहा था। एक ही कम्बल था जिसे पठान लपेटे था। उसने उस आदमीको कांपते देखा तो कहा कि ठहरो। वह रैफल उठा कर बाहर निकला एक राह चलते आदमी पर उसने रैफल उठा कर धायं धायं गोलियां चला दीं जो कम्बल ओढ़े जा रहा था—कुछ न पूछा न बोला। उसको मार कर उसकी कम्बल छीन कर लाया और हिन्दूको लपेटने के लिये दे दिया। फिर वह इतमीनानसे सो गया। मानों कुछ हुआ ही न हो।

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशियां।

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## २॥)में ज्वेल वाला रिष्ट वाच

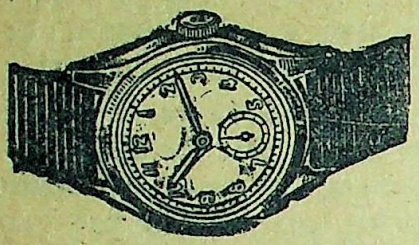

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप २०॥) सुपिरियर २२॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस—३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)

**रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो शेप**

क्रोमियम केस—४२) सुपिरियर —४५)
रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्डगोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०)
अलार्म टाइम पीस १८) २२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग। कोई दो घड़ी लेने माफ।

एच० डेभीड एण्ड कं० (V.)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता



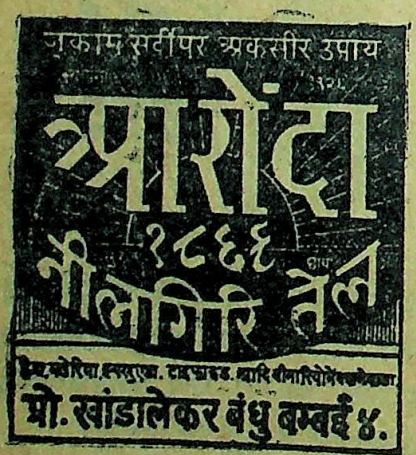




## बेजोखम घरेलू उद्योग से
## धन कमाइये

केवल तीन सौ रुपया की पूंजीसे तीन सौ रुपया मासिक कमानेके लिए पूरा विवरण मुफ्त मंगाइये।

**इन्द्रप्रस्थ मशीनरी कारपोरेशन**
चावड़ी बाजार, देहली



# आपकी हजामत में कितना खर्च होता है?

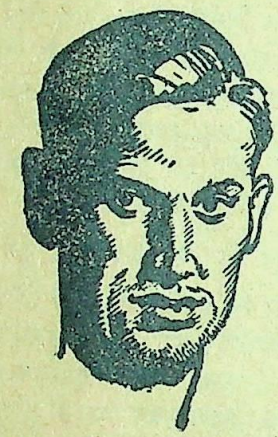

**बहुत—**

इस व्यक्ति की भांति?

• यह प्रति सप्ताह तीन हजामतों में ६ आना तक खर्च कर देता है। इसलिये वह सात दिनों में से चार दिन इसप्रकार दिखता है— खुरदरी दाढ़ी और अव्यवस्थित। और हजामत पर ही प्रति सप्ताह ६ आने तक खर्च कर देना काफ़ी ज़्यादा खर्च है!

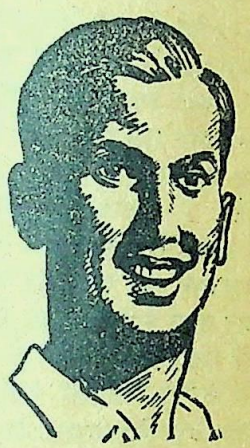

**कम—**

इस व्यक्ति की भांति?

• वह स्वयं प्रतिदिन "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड से हजामत बनाता हैं। ५ के पैकेट का मूल्य ६ आने है, लेकिन प्रत्येक ब्लेड कई दिनों तक चलता है; अतः दूसरे व्यक्ति की अपेक्षा वह उतने ही मूल्य में काफी ज्यादा हजामतें बना लेता है। और स्वयं ही हजामत बनाना अधिक स्वच्छ ही नहीं, सस्ता भी है!

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

# 7 o'clock
SLOTTED BLADES
"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड्स्

ब्लेड जो ज्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं

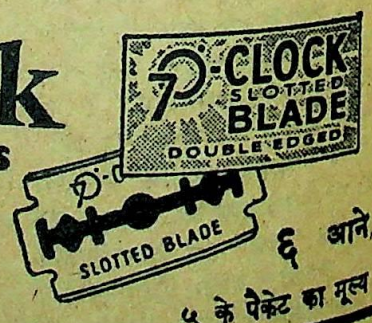


६ आने,
५ के पैकेट का मूल्य


७४ धर्मतल्लाला स्ट्रीट स्थित इंडेस्टेड इंडिया प्रेसमें गोविन्द बल्लाल जोशी द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिचर्ड "शेरे दिल" राजाकी यह मूर्ति विलायतके हाउस आफ पार्लियामेण्टकी दालानमें अवस्थित हैं। गत अक्तूबर १९४० की बमबाजीमें इसकी तलवार टेढ़ी हो गयी थी। अब उसे पुनः इसमें लगाया जा रहा है।

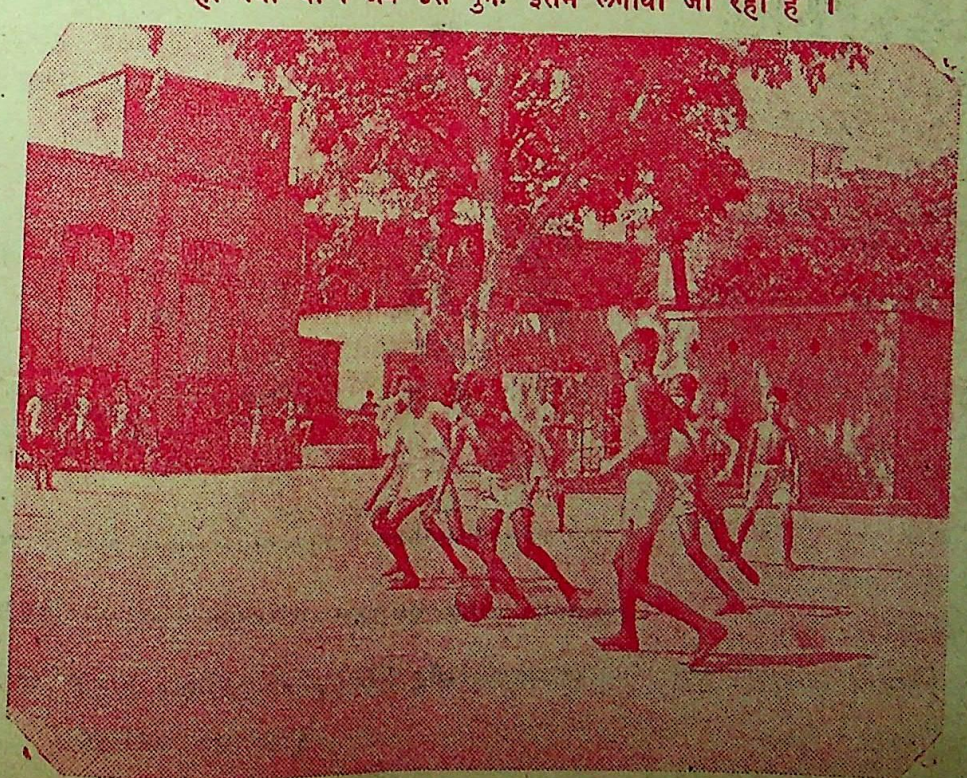

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd. No. C 2229.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## चटपटी, मजेदार, सस्ती और सुन्दर पुस्तकें—

**सिलाई कटाई विज्ञान**- हर प्रकारके कपड़े काटना और सीना सिखाया गया है। मूल्य १॥।=)।

**फिल्मी जलतरंग**— नये एवं पुराने फिल्मोंके चुने हुए गानों का संग्रह मूल्य १।=)

**फिल्मी अप्सरायें**—५० फिल्मी अभिनेत्रियोंके मनोहर चित्र एवं जीवनी। मूल्य २।=)

**धरतीके देवता**—एक ग्रामवालाके रोमान्सकी कथा सजिल्द पुस्तकका मूल्य २।=)

**चित्रमय रजतपट**— ३६ प्रमुख अभिनेत्रियों के तिरंगे चित्रों का एलबम मूल्य ३॥)

**प्रगति और प्यार** — सर्वश्रेष्ठ कहानियोंका संग्रह मूल्य २।=)

**कोमिनी की चिट्ठियां**— एक नव-विवाहिता ने अपनी सुहाग रात की कहानी लिखी है। मूल्य १)

**पाक विज्ञान**— स्वादिष्ट भोजन बनाने की सरल तरकीब दी गयी हैं। मूल्य ३॥)

**मांका हृदय**— माता के दुलार की मुह बोलती कहानी। मूल्य २)

**अभिगिन**— प्रगतिशील कहानियों का संग्रह। मूल्य १)

**वियोगी का वीणा**— सुन्दर कविताओं का एक संग्रह। मूल्य १)

पता— अनिल कम्पनी [ ४ ] फुलट्टी, आगरा



## १९५) में ज्वेल वाली रिस्ट वाच

स्क्रीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
रेकर्ड गुना कम या टोनो शेप क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पेस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।

एच० बेनीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता



## T.B. "तपेदिक" चाहे फेफड़ोंका हो या अंतड़ियोंका भयंकर रोग है

टी बी

| (१) पहला स्टेज | (२) दूसरा स्टेज | (३) तीसरा स्टेज | (४) चौथा स्टेज | अन्तिम स्टेज |
|---|---|---|---|---|
| मामूली ज्वर, खांसी | ज्वर, खांसीकी अधिकता | शरीर सूखना, ज्वर-खांसी की भयंकरता | सबही बातोंकी भयंकरता शरीरपर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना | रोगकी मौत और भयंकर नर्मोका इधर-उधर फैलना |

जबरी——(JABRI)——(जबरी)——(JABRI)

टी बी
T.B. "तपेदिक" और पुराने ज्वरके हताश रोगियो! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नड़गावां, पो० डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनोंसे ज्वर खांसीसे बीमार था। बलगम आदिकी परीक्षा पर "तपेदिक" (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोगका नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया। इसी बीच परमात्माकी कृपासे आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवाका विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अमृतरूपी गुणोंने मुझे आश्चर्यमें डाल दिया। थोड़े ही दिनोंमें शरीरका रंग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थमें आपकी औषधि इस दुष्ट रोगके लिये अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा० ठाकुर सिंह नेपाली मू० कटैया पो०हरलखी जिला दरभंगासे लिखते हैं। "आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत ही लाभदायक प्रतीत हुई, कृपया कैटली डाकसे पूरा कोर्स भेज दें।" इसी प्रकारके पहले भी दर्सों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमोंमें देख चुके हैं, भारतके कौने कौनेमें लोगोंने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोगसे रोगीकी जान बचाने वाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। 'जबरी' के नाममें ही भारतके पूज्य ऋषियोंके आत्मिक बलका कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिनसे ही इस दुष्ट रोगके जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि —आप इस तरफसे हताश हो चुके हों तो भी परमात्माका नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिनका नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताए क्या होता है—जब चिड़िया चुग गयी खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियोंपर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तारका पता केवल "जबरी" जगाधरी काफी है। तारमें अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ानेके लिये मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) ह०, नमूना १० दिन २०) ह०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) ह०, नमूना १० दिन ६) ह०, महसूल अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्रका हवाला जरूर दें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (६०) "जगाधरी" (पूर्व पंजाब) ई० पी०


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

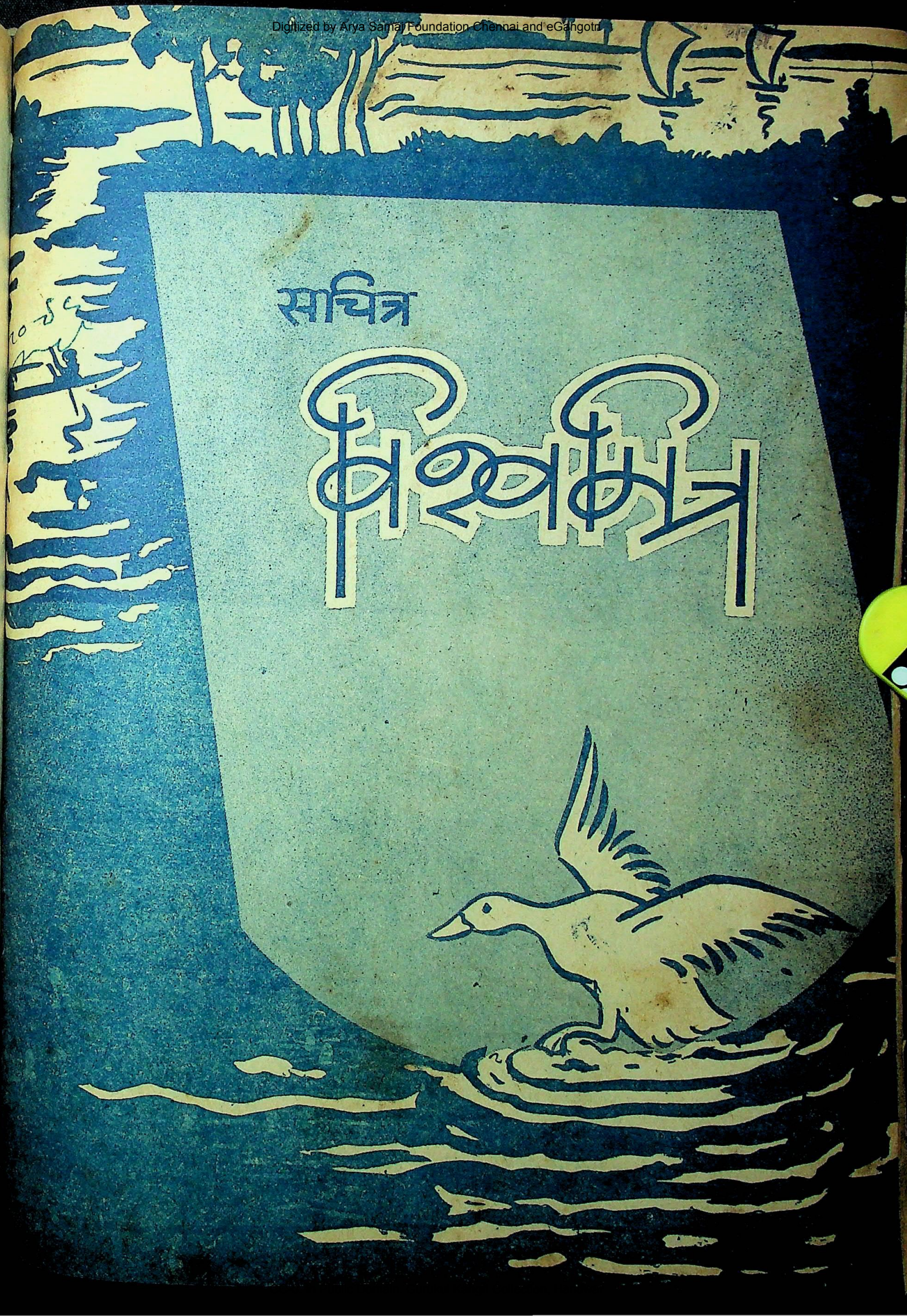

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्री पंडितनेहरू नये गवर्नर जैनरल राजाजीके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# निशामित्र

सम्पादक—
प्रदीप

३१—२३ ३० जून १९४८ June 30 1948 मूल्य =) वार्षिक ६)


## तुम न आये.....

कविवर अंचल

तुम न आये बीतते जाते चले ये मधु - दिवस भी !
सिद्ध न पाती बन न पाती अधमिटी मैं अधबनी मैं
हूं प्रतीक्षाकुल शिशिर के मेघ जैसी अनमनी मैं
कौन नूतन गीत गा मलयज समीरण को रिझाये
कौन चम्पक की सुनहली प्यालियों में रस पिलाये
बोलती श्यामा अंधेरे में विरह की पीर भरती
तुम न आये गन्धविह्वल फाल्गुनी रजनी सिहरती
यह अनिद्रित चांदनी कब तक निहारे पथ तुम्हारा
कुल कुसुमित बनलताओंने तुम्हें कितना पुकारा
तुम न आये बीतते जाते चले ये मधु - दिवस भी !

लाज रक्तिम गात पीली ओढ़नी में कसमसाता
जाफरानी प्यार मनके रेशमी पर्दे उठाता
है रही जाती बनी झनकार नूपुर कंकणों की
है रही जाती रुकी मनुहार छवि के बन्धनों की
कर रहा है मन न जाने आज कैसा गूंजता- सा
है भरी आती व्यथा - जलसिक्त आंखोंमें निराशा
उल्लसित पुलकित बकुल का कुंज सुधियों से जड़ा सा
शून्यता के मन्द मर्मरमें शिथिल लिपटा पड़ा सा
तुम न आये बीतते जाते चले ये मधु - दिवस भी !

है धुला जाता पवन की पीर में मन लुब्ध मेरा
डूब जाता है कुहासे में लजे तन का बसेरा
झोंक लेता है खनक कर चूड़ियोंसे स्वर प्रणति का
बढ़ रही जी की थकन ज्यों धुन्ध डूबी छांह लतिका
तुम न आये तो सुरभि की सांस में मर्मर न जागा
मुग्ध केसर के कपोलों ने अरुण चुम्बन न मांगा
स्वर्ग से भूपर न उड़ता रागिनी यौवन - वरण की
है न छाई बनपथोंपर स्वर्णरज स्वप्नाभरण की
तुम न आये बीतते जाते चले ये मधु- दिवस भी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अन्यायका प्रतिकार तुरन्त आवश्यक

## श्री लीलाधर जोशीसे अनुरोध

### 'विश्वमित्र'—संचालककी कलम से

लश्करसे श्रीमती शम्भूनाथ सक्सेनाने एक लेख साप्ताहिक 'विश्वमित्र'में प्रकाशनार्थ भेजा था जिसका शीर्षक था,—चिन्तन कण। वह लेख जब कई सप्ताहतक 'विश्वमित्रमें प्रकाशित न हुआ, तो उन्होंने 'जयाजी प्रताप'में प्रकाशित किरा लिया। वह २४ जनवरीको प्रकाशित हुआ। 'विश्वमित्र' संपादकने भी उसे २८ फरवरीको प्रकाशित कर दिया। भूलसे लेखकका नाम श्री शम्भूनाथ सक्सेना प्रकाशित हो गया। इसपर श्री शम्भूनाथजीके विरुद्ध यह कार्यवाही हुई बतायी जाती है कि वे 'जयाजी प्रताप' के सहकारी सम्पादक पदसे हटा दिये गये। किसी समाचार—पत्रकी भूलके लिये इतना कठोर दण्ड देना असह्य मालूम होता है। ग्वालियरके पत्रकारोंको इस दिशामें आगे बढ़कर एक पत्रकारके मान और जीविकाकी रक्षा करनी चाहिये। माननीय प्रधान मंत्री श्री लीलाधर जोशी एक गरीब पत्रकार और उसकी धर्मपत्नीके साथ न्याय और दया करें। यह मेरी सानुरोध प्रार्थना है। पत्नीके नामसे लेख देकर स्वयं पारिश्रमिक वसूल करनेका अभियोग इस स्पष्टीकरणके बाद टिकता नहीं। फिर मनुष्यताका प्रश्न सर्वोपरि है। श्री शम्भूनाथ ग्वालियरके एक उदीमान् पत्रकार हैं। उनकी रक्षा राज्यका धर्म है। आशा है मेरी प्रार्थना श्री 'मिलिन्दजी' द्वारा जोशीजी तक पहुंचायी जायेगी और एक पत्रकारके साथ दयापूर्ण न्याय होगा। विनीत— मूलचन्द अग्रवाल संचालक 'विश्वमित्र'।

---

# प्रतीक्षा

श्री 'शलभ'

स्वप्नों की स्वर्णिम रेखा को इस जगती पर ढूंढ़ न पाया!
खुली पलक पंखुरी मलयज छू, खिल खिल करके वे मुसकायीं
तुम्हें देखनेको लोचनकी जलन नहीं अब तक मिट पायी
पी ऊषा की स्नेहसुराही; वह तो केवल तेरी छाया!
चंचल चल किरणों की रेखा अंध-हृदय के पट पर खींचे
अंतर की अकुलाहट से पर रह न सका मैं आंखें मीचे।
मुझे भोर के पहिले ही गा किसी विहग ने गीत सुनाया!
कितना मधुर आह कुछ पलतक सुनता रहा हृदय बस मेरा
और अधिक जी भर न सुन सका खिले फूल हो गया सबेरा
तभी तुम्हें पा नहीं पलक में मेरा आकुल जी भर आया
वह स्वप्नों की मधु से भींगी श्याम-निशा मिट गई; यहां पर
बनी दुपहरी किरणोंवाली आयेगी फिर रजनी सुंदर
इसी आश को उर में धारे एक बार फिर से मस्काया!

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर हित बस जिनके मनमाहीं। तिन कह जग दुर्लभ कछु नाहीं।

# विश्वमित्र

## काश्मीर

काश्मीरकी समस्या अभी कब तक सुलझेगी ? प्रत्येक भारतीय देशभक्त बड़ी व्यग्रतापूर्वक इस प्रश्नका निश्चित उत्तर जानना चाहता है और चाहता है कि किसी भी तरह काश्मीर भारतसे निकलने न पाये। क्योंकि काश्मीरके निकल जानेका मतलब यह होगा कि एशियाके अपने पश्चिमी पड़ोसियोंसे भारतका बिलकुल सम्बन्ध विच्छेद हो जायगे, फलतः यह ठीक-ठीक मालूम नहीं हो पायगा कि भारतके प्रति उन देशोंका वास्तविक रुख क्या है। और सबसे खतरनाक बात यह है कि यदि पाकिस्तान, जो एक मुस्लिम राष्ट्र है, काश्मीरको लेनेमें सफल हो जायगा, तो हमारी पश्चिमी सरहदकी सुरक्षा सदाके लिए खतरमें पड़ जायगी। पाकिस्तानने साम्प्रदायिक घृणा और विद्वेष फैलाकर ही अपना अस्तित्व पाया है और निस्सन्देह इसी उपायसे वह आगे भी अपनी शक्ति बढ़ानेकी आशा रखता है। ऐसी हालतमें यदि काश्मीरको लेकर वह पश्चिमके मुस्लिम राष्ट्रोंसे अपना मजबूत गठबन्धन कर लेगा तो भारतका भविष्य सदा-सर्वदा दूसरोंके इशारों पर नाचता रहेगा; और जब राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के बाद भी हम ब्रिटेन और अमेरिकाके कठपुतले बन रहेंगे क्योंकि उस हालतमें ये दोनों ही साम्राज्यवादी राष्ट्र हमारी कमजोरीका अनुचित लाभ उठाते रहेंगे। इसलिए काश्मीरकी समस्या भारतके जीवन-मरणकी समस्या है। पर अब देखना है कि यह समस्या कैसे सुलझती है— संयुक्त राष्ट्र संघकी सुरक्षा परिषदमें या लड़ाईके मोर्चे पर ?

जहां तक सुरक्षा परिषदका सम्बन्ध है, यह भली भांति स्पष्ट है कि वह भारतके साथ न्याय नहीं कर सकती, क्योंकि उसके सदस्य इस प्रश्नको अन्तर्राष्ट्रीय हितकी दृष्टिसे नहीं, बल्कि अपने-अपने हितोंके ध्यानसे देखते हैं। यही कारण है कि भारत सरकार अब सुरक्षा परिषदसे निराश हो रही है। लेकिन, जो हो सुरक्षा परिषद अपनी काररवाइयां आगे बढ़ाती जा रही है। उसके द्वारा नियुक्त काश्मीर-कमीशन ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। यह कमीशन अभी जेनेवामें है, लेकिन उम्मीद की जाती है कि जुलाईके प्रथम सप्ताहके अन्ततक यह काश्मीर पहुंच जायेगा। सुरक्षा-परिषदके प्रस्तावानुसार, इस कमीशनका कार्य सिर्फ काश्मीर तक ही सीमित नहीं रहेगा, बल्कि जूनागढ़, सामूहिक मूलोच्छेदन और भारत-पाकिस्तान- समझौतेकी कुछ शर्तोंकी अमान्यता सम्बन्धी पाकिस्तान सरकारके आरोपोंकी भी जांच पड़ताल करने का उसे अधिकार होगा। लेकिन भारत सरकार इस व्यवस्था को सर्वथा अवांछनीय समझती है, क्योंकि इससे काश्मीरका मुख्य प्रश्न सुलझनेके बदले और उलझ ही जायेगा। इसीसे प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने कुछ दिनों पूर्व इस व्यवस्थाका विरोध करते हुए संयुक्त राष्ट्र-संघसे यह जानना चाहा कि कमीशन काश्मीर आकर क्या करना चाहता है। हमें मालूम हुआ है कि कमीशनने भारत और पाकिस्तानकी सरकारोंसे अनुरोध किया है कि सम्पर्क कायम करनेके लिए वे अपना एक-एक प्रतिनिधि जेनेवा भेजें। निस्सन्देह, श्री गोपालस्वामी आयंगरके शब्दोंमें, भारत सरकार कमीशनके साथ सहर्ष विचार-विनिमय करेगी; लेकिन उसके कार्योंमें वास्तविक योगदान तो तभी सम्भव है, जब स्पष्ट रूपसे यह बता दिया जाय कि कमीशनके इस मामलेमें क्या करना चाहता है। लेकिन हम देखते हैं कि कमीशन स्पष्ट दृष्टिकोण अख्तियार करनेमें सर्वथा असमर्थ है। ऐसी हालतमें हमें कमीशनसे समस्याके समाधानकी कुछ भी आशा नहीं है। इसलिए वास्तविक हल हमें लड़ाई के मोर्चे पर ही दिखायी देता है।

लेकिन लड़ाईके मोर्चेका क्या हाल है ? भारतीय सेनाने जब अपना ग्रीष्मकालीन अभियान आरम्भ किया तो, तो स्वभावतः हमें आशा हुई कि ग्रीष्म खत्म होते-होते आक्रमणकारियोंका सफाया हो जायेगा। इसमें सन्देह नहीं कि इस बीच भारतीय सेनाको सराहनीय सफलता मिली है। आक्रमणकारी इतना आगे बढ़ गये थे कि काश्मीरकी राजधानी श्रीनगर पर खतरा उपस्थित हो गया था। लेकिन आज वे श्रीनगरसे बहुत दूर भगा दिये गये हैं। फिर भी मीरपुर, पूंच और मुजफ्फराबाद —ये तीन जिले अभी तक आक्रमणकारियों के ही कब्जेमें हैं और इन क्षेत्रोंमें आक्रमणकारियोंकी शक्ति काफी मजबूत है, क्योंकि वहांसे पाकिस्तानी सरहद बहुत नजदीक होने के कारण उन्हें पर्याप्त सहायता आसानीसे प्राप्त हो जाती है। इसलिए भारतीय सेना को आगे बढ़ने एवं शत्रुओंका सफाया करने के लिए और अधिक शक्ति लगानी होगी। अब बरसात शुरू हो रही है, इसलिए यदि भारतीय सेना अपनी पूरी ताकतसे काम न लेगी, तो कठिनाइयां और अधिक ही होती जायेंगी। जैसा कि पं० नेहरूने हालमें एक वक्तव्यमें कहा भी है, हम जानते हैं कि कुछ काश्मीरी भी आक्रमणकारियोंका साथ दे रहे हैं लेकिन यह सर्वविदित है कि जबसे शेख अब्दुल्लाकी सरकार कायम हुई है, बहुसंख्यक जनता आक्रमणकारियोंको मार भगानेमें भारतीय सेनाका साथ दे रही है। इसलिए भारत सरकारको सभा-समितियों और कानफरेंसोंके चक्करमें विशेष न पड़कर लड़ाईके मोर्चेका ही ध्यान रखना होगा क्योंकि वास्तविक फैसला वहीं सम्भव है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## हैदराबाद

"संभव है हैदराबादका सवाल हल करनेके लिए मुझे अपनी फौजें भेजनी पड़ें, लेकिन यह कदम उठानेके पहले हमें और भी बहुत-सी बातें देखनी हैं। फिर भी अन्तमें यदि यही करना होगा तो फौजोंका उपयोग करनेमें मुझे तनिक भी भय नहीं होगा।" ये शब्द पं० जवाहरलाल नेहरूके हैं। जाहिर है इससे है कि हैदराबादका गतिरोध किस हदतक पहुंच चुका है। गवर्नर-जनरलके पदपर श्री राजगोपालाचार्यके आसीन होनेके बाद कुछ क्षेत्रोंमें यह सुना गया कि हैदराबादके प्रतिनिधियोंके साथ समझौतेकी बातचीत शायद फिर शुरू हो। लेकिन प्रधान मंत्री पण्डित नेहरूने इस प्रचारका खण्डन करते हुए साफ शब्दोंमें कह दिया है कि 'हैदराबादके प्रतिनिधियोंके साथ अब आगे किसी तरहकी बातचीत नहीं चलायी जा सकती।' हम देखते हैं कि हैदराबादके पीछे ब्रिटिश साम्राज्यवादियोंका हाथ अब अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा है। उस दिन ब्रिटिश पार्लमेंटमें मि० चर्चिलने भारत और हैदराबादके बीच मध्यस्थता करने के लिए ब्रिटिश सरकारसे जो अनुरोध किया, उससे पता चलता है कि निजाम की लगाम किन लोगोंके हाथोंमें है। लेकिन संतोषकी बात है कि ब्रिटिश सरकार की ओरसे मि० नोएल बेकरने मि० चर्चिलको यह कोरा जवाब दे दिया। निस्सन्देह हैदराबाद और काश्मीरके सवालोंको ब्रिटिश सरकार ही पैदा करके हटी है, लेकिन अब भी वह अपनेको तटस्थ कर ले, तो भारत अपने इन घरेलू मामलोंको आसानी से हल कर लेगा। लेकिन इसके प्रतिकूल यदि हैदराबादके सवालको भी राष्ट्र-संघके सामने ले जानेमें पाकिस्तानको सहारा दिया गया, तो यही समझा जायगा कि पश्चिमके साम्राज्यवादी राष्ट्र विशाल भारतीय राष्ट्रको शान्तिपूर्वक अपनी शक्ति और समृद्धि बढ़नेका मौका देना नहीं चाहते। अगले सप्ताह दिल्लीमें हैदराबादके सवालपर विचार होनेवाला है। हमें आशा करनी चाहिये कि वर्तमान अनिश्चितताका अन्त कर भारत सरकार कुछ साफ कदम उठायेगी, जिससे कि हैदराबादकी समस्या जल्द-से-जल्द हल हो।

## चर्चिलका रोना

भारतके स्वतन्त्र हो जानेके बाद, ब्रिटेनके राजा छठे जार्ज अब 'भारतके सम्राट' नहीं रहे, इसलिए गत २२ जूनको लन्दन-गजटमें अधिकारी तौरपर इस उपाधिको त्यागनेकी घोषणा की गयी। इसका परिणाम यह होगा कि अब ब्रिटिश सिक्कों और स्टाम्पोंमें भी सुधार करना होगा, क्योंकि अब तक उन पर छठे जार्ज के नामके साथ 'भारतके सम्राट' की उपाधि भी रहती थी। निस्सन्देह यह उपाधि-त्याग भारत और भारतीयोंके लिए जहां एक गौरवपूर्ण ऐतिहासिक घटना है, वहीं भारतीय स्वतन्त्रताके दुश्मनोंके लिए एक बेहद दर्दीली बात है। और, यह सर्वविदित है कि भारतके ऐसे दुश्मनोंमें ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री मि० चर्चिल 'नम्बर एक' हैं। ऐसी हालतमें इस उपाधि-त्यागसे उनका रुदन सर्वथा स्वाभाविक है। उस दिन ब्रिटिश अनुदार दलकी एक सभामें इस पर अफसोस प्रकट करते हुए मि० चर्चिलने बहुत-सी अनर्गल बातें कहीं, जिससे साफ प्रकट होता है कि अपनी आंखोंके सामने ही ब्रिटिश साम्राज्यवादकी विशाल इमारत ढहती हुई देखकर उनकी मनःस्थिति अत्यन्त चंचल हो रही है, पर साथ ही वे अपनी बेबसीका भी अनुभव करते हैं। मि० चर्चिलने नेहरू-सरकार पर कीचड़ उछालते हुए ब्रिटेनकी मजदूर सरकारको इस बातके लिए कोसा है कि "उसने भारतका शासनाधिकार ऐसे लोगों के सौंप दिया, जो भारतकी कोटि-कोटि जनताकी भावना और जरूरतोंका प्रतिनिधित्व नहीं करते।" लेकिन आज चर्चिलके इस रुदनका कोई अर्थ नहीं है। सारा संसार इस बातको अच्छी तरह जानता है कि ब्रिटेनने खुशी-खुशी भारत को अधिकार नहीं सौंपा, बल्कि सौंप देनेके लिए वह विवश हो गया। हां, इस बातके लिए ब्रिटेनकी मजदूर-सरकारको हम अवश्य धन्यवाद देंगे कि जब उसने भारत पर शासन करनेमें अपनेको असमर्थ पाया, तो राजनीतिक दूरदर्शिता दिखाकर उसने तुरत अधिकार त्याग देनेका निश्चय किया जिसका परिणाम यह होगा कि ब्रिटेन और भारतके भावी सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण बन रह सकते हैं, बशर्ते कि ब्रिटिश अधिकारी आगे चलकर भारतके हितोंके प्रतिकूल कोई आचरण न करें। लेकिन मजदूर सरकारकी जगह आज यदि मि० चर्चिलकी अनुदार सरकार मौजूद होती तो वह अटली-सरकारकी तरह दूरदर्शिता दिखानेके लिए कदापि तैयार नहीं होती। और तब इसका परिणाम क्या होता, इसका उल्लेख भी यहां असामयिक और अप्रिय मालूम होगा। इसलिए अधिक कुछ न कहकर सिर्फ इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि यदि ब्रिटिश साम्राज्यवादी अपना पुराना रवैया बदलनेको तैयार न होंगे और प्रतिक्रियाशील शक्तियोंको भारतके खिलाफ उकसानेकी चेष्टा करेंगे, तो इससे वे भारतसे अधिक ब्रिटेनका ही अपकार करेंगे।

## गांवोंकी सुधि लें

उस दिन रोटरी क्लब द्वारा आयोजित हवड़ाकी सभामें बंगालके नये गवर्नर डा० कैलाशनाथ काटजूने देहातोंकी दुरवस्था की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए इस बात पर जोर दिया कि गांवोंके गरीब किसान मजदूरोंकी वर्तमान स्थितिका शीघ्रातिशीघ्र अन्त किया जाना चाहिए। देशकी सारी सम्पत्तियोंके उत्पादक किसान मजदूर ही हैं, लेकिन वे स्वयं अन्न और वस्त्रके अभाव में तड़प रहे हैं। निस्सन्देह, इसकी जिम्मेदारी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था पर है, जो सर्वथा त्रुटिपूर्ण है। जबतक इस व्यवस्थामें आमूल परिवर्तन नहीं होगा, तबतक गरीबोंकी गरीबीका अन्त नहीं हो सकता। जबसे स्वराज्य मिला है, गांवोंके ये गरीब बड़ी आशा भरी दृष्टिसे अपनी सरकार या सरकारोंकी ओर देख रहे हैं। और कहना नहीं होगा कि असली भारत थोड़े से शहरोंमें नहीं, बल्कि लाख-लाख गांवोंमें है। अतः जबतक गांवोंकी हालत नहीं सुधरेगी, वहां सुख-समृद्धिकी स्थापना नहीं होगी, तबतक भारत सुखी नहीं हो सकता। इसलिये हमारे राष्ट्र-निर्माताओंका ध्यान उधर जाना सर्वथा स्वाभाविक है। दूसरी बात यह कि नये विधानमें बालिग मताधिकार हो जाने पर कोई भी सरकार – चाहे वह नेहरूकी हो या जयप्रकाशकी--सिर्फ तभी टिक सकती है, जब वह आम जनता की गरीबी और बेकारी दूर करनेमें सफल हो। पर यह गरीबी-बेकारी सिर्फ तथाकथित योजनाओंसे दूर नहीं हो सकती। इसके लिए ठोस कदम उठानेकी जरूरत होगी। अभी तक हमारे नेताओंका कार्य क्षेत्र मुख्यतः शहरों तक ही सीमित रहा है, लेकिन अब उन्हें देहातोंको अपना कार्यक्षेत्र बनाना होगा। निस्सन्देह इस दिशामें कांग्रेसकी प्रगति काफी शोचनीय है, और समाजवादियोंके अलग होनेका यह भी एक मुख्य कारण है। अगर अधिकार-ग्रहण की होड़में भी गांवोंकी ओर ध्यान आकृष्ट हो, तो यह सौभाग्यकी ही बात होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति और व्यक्तित्व—

# श्री राजगोपालाचार्य

श्री प्रदीप

वह घटना जिन्दगी भर नहीं भूल सकता। इसी कलकत्ताकी बात है, लगभग १० महीने पहलेकी। श्री राजगोपालाचार्य ने पश्चिम बंगाल के गवर्नर के हैसियत से पत्रकारोंको गवर्नमेण्ट हाउस में चाय-पान के लिए आमंत्रित किया था। यों तो पत्रकारके नाते पहले भी, अंग्रेजी शासन के जमाने में भी, कई बार मैं गवर्नमेण्ट हाउस में चाय की चुस्कियां ले चुका था, लेकिन इस बारके निमंत्रण में एक विशेष आकर्षण था। मन ही मन सोचा, गवर्नरकी उस शानदार कुर्सी पर आज मैं अपने दुबले पतले राजाजीको देखूंगा। कल्पना मात्र से ही हृदय प्रफुल्लित हो उठा।

ठीक समय पर मैं गवर्नमेण्ट हाउस पहुंच गया। भीतर प्रवेश करते ही आश्चर्यजनक परिवर्तन नजर आया। पहले सरकारी कर्मचारियों की एक बड़ी जमात रहा करती थी, लेकिन इस बार उनकी संख्या बहुत थोड़ी दिखाई पड़ी, और दूसरा परिवर्तन यह था कि पहले साधारणतः एक विशाल सजे-सजाये कमरे में ऐसी बैठकें या कानफरेंसें हुआ करती थीं, लेकिन इस बार यह आयोजन एक बरामदे में किया गया था, जैसे कोई भद्र पुरुष अपने मित्रों या सम्बन्धियों को आमंत्रित किये हुए हो। मतलब यह कि सरकारी रोब-दाबका कहीं नामोनिशान भी नहीं था। लेकिन इन सभी बातों से बढ़कर और सबसे अधिक महत्वपूर्ण एक दूसरी चीज थी, जिसकी ओर तुरत मेरा ध्यान आकृष्ट हुआ। गवर्नर महोदय के बैठने के लिए कोई कुर्सी नहीं देखी। तीन तीन, चार चार आदमियों के बैठने लायक कुल तीन सोफे रखे हुए थे, जिन पर बैठे हुए हम दस-बारह पत्रकार राजाजीकी प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं मन ही मन सोच रहा था, आखिर हमारा गवर्नर कहां बैठेगा! इतनेमें सामनेके कमरेसे राजाजी हाथ में छड़ी और कंधे पर चादर लिये अपने बडीगार्ड के साथ हमारी ओर आते दिखाई पड़े। हमलोग कुछ गम्भीर-से होकर सम्मान प्रदर्शन के लिए खड़े हो गये और राजाजी अपनी स्वाभाविक मुस्कराहट के साथ हाथ जोड़े हुए आकर मेरी बगल में बैठ गये। संयोग से उस सोफे पर हम तीन पत्रकार बैठे हुए थे – सब के सब दुबले पतले। संभवतः राजाजीकी तेज आंखों ने तुरत यह पता लगा लिया कि बैठना कहां सुविधाजनक होगा। कहां वह गवर्नरी शान और कहां यह आत्मीयता! स्वतंत्र भारत के सुनहले भविष्यकी सुखद कल्पनाने एक क्षण के लिये आत्मविभोर-सा कर दिया। राजाजी ने हम सबका परिचय अंग्रेजी में पूछना शुरू किया। मैं जानता था कि राजाजी हिंदी या बंगला नहीं जानते, फिर भी मैंने हंसते हुए कह दिया –आज अंग्रेजी में तो यह बातचीत अच्छी मालूम नहीं होती। आप टूटी फूटी हिंदी में ही क्यों नहीं बोलते क्योंकि हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा होगी?

"और क्यों न मैं बंगला में बोलूं?। क्यों न बंगला ही राष्ट्रभाषा हो, क्योंकि हिंदी के किसी भी एक रूपके बोलनेवालोंकी जितनी संख्या है उससे अधिक संख्या बंगला-भाषियों की है?" कहते हुए राजाजीने तर्क करना शुरू कर दिया। फिर तो राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर बातचीत का वह सिलसिला बंधा कि करीब आध घण्टे तक जारी रहा। राजाजी हिंदीको राष्ट्रभाषा बनानेके विपक्ष में दलीलें पेश कर रहे थे। मैं अवाक् था कि आखिर बात क्या है। इतने में मेरे एक दूसरे मित्र ने पूछ दिया - "तो मद्रास में जब आपकी सरकार थी, तो हाई स्कूलों में आपने हिंदी को अनिवार्य रूप में क्यों जारी किया था?

"भई, मैं तो आपसे अपने विरोधियों की बातें कह रहा हूं। राजाजीके शब्दोंने हमें ठठा कर हंसनेके लिए बाध्य कर दिया।

इतनेमें सामनेके एक टेबुल पर चाय और पकौड़ियां नजर आनेलगीं। वे ठंढी न हो जायं, इसलिये हम लोग सोफेसे उठकर वहां पहुंच गये। हर टेबुल के चारों ओर तीन चार कुर्सियां रखी हुई थीं। जिस जगह राजाजी बैठे संयोगवश वहीं मैं भी था। चाय-पानके समय एक बड़ी मजेदार घटना हुई, जो ऊपरकी सारी बातोंसे अधिक मनोरंजक मालूम होगी। टेबुलके बीचमें फूलोंका एक गमला रखा हुआ था। राजाजी ठीक मेरे सामने थे। पकौड़ियां खाते और चाय-पान करते हुए हम कुछ बातचीत कर रहे थे। बगलमें बैठे एक बंगाली मित्र मद्रासी ढंगकी बनी पकौड़ियोंकी तारीफ कर रहे थे, राजाजीकी तश्तरीकी पकौड़ियां अब खत्म हो गयीं थीं। बस, उन्होंने मेरी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा– इज देयर एनी मोर? (क्या उसमें और है?) कुल दो पकौड़ियां रह गयी थीं., जिनमेंसे एक निकाल कर वे खाने लगे और मैं आश्चर्य करने लगा यह देख कर। पश्चात दूसरे टेबुलों पर भी जा–जा कर उन्होंने पत्रकारों से विभिन्न विषयों पर थोड़ी देर तक बातचीत की।

राजाजीको निकटसे देखने और उनसे बातचीत करनेका मेरे लिए यह पहला मौका था।

आज वही राजाजी हमारे गवर्नर जनरल हैं— स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल। निस्सन्देह इससे बढ़कर और कोई चुनाव नहीं हो सकता था। देशकी राजनीति में राजाजीका अग्रगण्य स्थान है। सच बात तो यह है कि भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की राजनीति में महात्मा गांधी के पहले से ही राजाजी सार्वजनिक जीवन में उतर चुके थे और अपने सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भमें ही उन्होंने अछूतोद्धार और मद्यनिषेध की योजनाओंको कार्यान्वित करना प्रारम्भ किया था।

राजाजी का जन्म सलेम जिलेमें होसुर तालुकेके अन्तर्गत एक गांवमें हुआ। बंगलोर के सेंट्रल कालेज में शिक्षा प्राप्त करने के बाद प्रेसीडेंसी कालेज, मद्रास से उन्होंने ला की डिग्री ली और सलेम में वकालत करने लगे। कुछ ही दिनोंमें एक लोकप्रिय नेता हो जानेके कारण वे सलेम म्यूनिसिपिल कौन्सिलके चैयरमैन निर्वाचित कर लिये गये और चेयरमैन होते ही अछूतोद्धार एवं मद्यनिषेधकी योजनाओंको कार्यान्वित करनेके लिए उन्होंने मजबूत कदम उठाया। परीक्षणके लिए ताड़ीकी दुकान शहर के बाहर हटा दी गयी और ब्राह्मण-बस्ती में जलकी व्यवस्थाका देख-भाल करने के लिए एक हरिजन नियुक्त कर दिया गया। इस हरिजनकी नियुक्तिका ब्राह्मण की ओर से काफी विरोध किया गया, लेकिन राजाजी अपने निश्चय पर दृढ़ रहे।

राजाजीने लोकमान्य तिलकके विचारोंके समर्थक के रूप में अपना राजनीतिक जीवन प्रारम्भ किया। सन १९१९ में रौलट कानून पास होने के बाद श्रीमती एनी बेसेण्टने जो होमरूल अन्दोलन चलाया था, उसमें राजाजीने बहुत सहयोग दिया था। पश्चात गांधी जीके असहयोग अन्दोलन में वे पूर्ण रूप से शामिल हुए और कई बार जेल गए।

सन १९३५ का नया शासन विधान तैयार हुआ तो राजाजी ने राय दी कि कांग्रेसको व्यवस्थापिका-सभाओं में जाकर सत्ता पर कब्जा करना चाहिए। उनकी राय स्वीकार की गयी और मद्रास में प्रथम कांग्रेसी मंत्रिमंडल उन्हींके नेतृत्व में गठित हुआ। अपने प्रधान मंत्रित्वके अल्प काल में ही उन्होंने मद्य-निषेध और मदुरा में मन्दिर-प्रवेशके महत्वपूर्ण कार्य कर दिखाये। युद्ध छिड़ने पर कांग्रेसने जब अधिकार छोड़ने का निश्चय किया तो राजाजी ने सबसे पहले त्यागपत्र दिया था।

लेकिन आगे चलकर राजाजीने बहुत कोशिश की कि भारत और ब्रिटेनके बीचका गतिरोध मिट जाय, पर उन्हें सफलता नहीं मिली। अन्तमें उन्होंने देशके विभाजनके संबंधमें मुस्लिम लीगकी मांग कुछ अंशोंतक मान लेनेका सुझाव दिया और इस संबंधमें कांग्रेस और मुस्लिम लीगके सामने एक योजना भी पेश की। लेकिन उसका परिणाम क्या हुआ? मुस्लिम लीगने उसे स्वीकार नहीं किया और इधर अधिकांश कांग्रेसी भी उनसे सख्त नाराज हो गये। लेकिन इस बीच कांग्रेस और सरकारके बीच जब जब समझौतेके प्रयत्न हुए राजाजीने उनमें अग्रगण्य भाग लिया; पर कोई सफल परिणाम नहीं निकला।

मुस्लिम लीगकी विभाजन संबंधी मांगके बारेमें अधिकांश कांग्रेसजनोंसे मतभेद रखनेके कारण राजाजीने कांग्रेस कार्यकारिणी समितिसे त्यागपत्र दे दिया और सन १९४२ में जब भी अवज्ञा आन्दोलन छेड़नेका निश्चय हुआ, तो राजाजीने उसका समर्थन नहीं किया। वे नहीं चाहते थे कि युद्धके समय ब्रिटिश सरकारको परेशानीमें डाला जाय। इतना ही नहीं, सन् १९४२ के आन्दोलनमें कुछ कांग्रेजसजनोंके कार्योंकी राजाजीने कड़ी आलोचना की। इसका परिणानम यह हुआ कि मद्रासमें राजाजीके विरोधियोंकी शक्ति बढ़ गयी। लेकिन समय आनेपर देशको राजाजीके विचारोंकी वास्तविकता भलीभांति मालूम हो गयी।

जब वायसराय लार्ड वावेलने पं० नेहरूके नेतृत्वमें अन्तरिम सरकारका गठन किया तो उसके एक सदस्य राजाजी भी रखे गये। पश्चात् जब कांग्रेसने पाकिस्तानकी मांग स्वीकार कर ली और १५ अगस्त १९४७ को देशको स्वराज्य मिलनास्त निश्चित हो गया तो राजाजी पश्चिम बंगालके गवर्नर बनाये गये। इस नये पदपर उन्होंने शासन-संचालन और साम्प्रदायिक एकता कायम रखनेमें जिस राजनीतिज्ञताका परिचय दिया, वह सर्वथा प्रशंसनीय है। अब लार्ड माउण्टबैटनके चले जानेपर, राजाजी गत २१ जूनसे भारतके गवर्नर-जनरलके पदपर आसीन हुए हैं। ईश्वर जननी-जन्मभूमिकी सेवाके लिए उन्हें दीर्घ जीवन प्रदान करे।


## रियायती दामोंपर

उच्चतम क्वालिटी की लीवर घड़ियां।

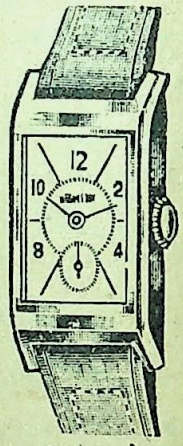

अत्यधिक सस्ती कीमतोंपर स्विट्जरलैन्डकी बनी हुई, नई डिजाइनकी निहायत सुन्दर ठीक समय देनेवाली हर घड़ीकी गारन्टी साढ़े तीन साल। क्रोमियम केस का गोल या चौकोर १) सुपारियर फैन्सी डायलकी १८) बेस्ट सेन्टर सेकन्ड ४ ज्वलका गोल २०)। रेक्टेंगुलर और टोनियो आकारकी चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केसकी, ५ ज्वल ३७) रोल्ड गोल्ड ५ ज्वल का ५०) बेस्ट क्रोमियम केस ४२) रोल्ड गोल्ड ५३)। क्रोमियम केस १५ ज्वल ६)। रेलट शेप २०) रोल्ड गोल्ड ६०) बेस्ट टोनियो शेपकी ७८) पैकिंग पोस्टेज माफ। हर घड़ीके साथ एक फीता फैन्सी डिजाइन का दिया जाता है।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V. C.)
ऐशबाग गेट लखनऊ

## फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा की दुनिया का अनेक रहस्य जाननेके लिये 'फिल्मी दुनिया' पुस्तक आज ही मुफ्त मंगाइये।

पता—मधुर मन्दिर हाथरस यू० पी०


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भारतकी वैदेशिक नीति

श्रीबालकृष्ण गुप्त

परतंत्र भारतकी अपनी कोई निजी वैदेशिक नीति नहीं थी। लन्दनस्थित ब्रिटिश सदकार अपनी आवश्यकता एवं इच्छानुसार इस कृषिप्रधान देशके विदेशी मामलोंका संचालन करती थी। जब मध्य अटलांटिकमें स्थित चीनी, कोको, और केला पैदा करनेवाले टापुओं जमैका, ट्रीनीडाड आदिसे गुलामीकी प्रथा उठी और आजाद पुराने हब्शी गुलामोंने अंग्रेजी कम्पनियोंके बगीचों, खेतों व कारखानोंमें काम करनेसे इन्कार कर दिया, तब कुलियों की जरूरत पूरी करनेके लिये गरीब, तबाह और भूले-भटके हिन्दुस्तानियोंका अपहरण कर उन्हें कैदी जहाजोंमें—भर-भर कर यहांसे १५ हजार मील दूर भेज दिया गया। मारिशस और फिजी जैसे सुदूर द्वीपोंमें भी अंग्रेज व्यापारियोंके लिये धन पैदा करनेको हिन्दुस्तानी कुली ले गये। बादमें जब किम्बरलेमें हीरेको और जोहान्सबर्गके इर्द-गिर्द सोनेकी खानें निकलीं और केपटाउन व डरबनके बन्दरगाहोंसे वहांतक जंगली पशुओंसे घिरे इलाकोंमें रेल बनानेके लिए मजदूरोंकी जरूरत हुई, तो हिन्दुस्तानी मजदूरोंसे भरे जहाजोंका मुंह दक्षिणी अफ्रिकाकी तरफ मोड़ दिया गया। वहां काम पूरा हुआ तो मध्य पूर्वी अफ्रिकामें मोम्बासासे नैरोबीवाली रेलका काम शुरू हुआ, और पशुओंकी तरह हिन्दुस्तानी लोगोंको अपने घरसे दूर खदेड़ कर हिंस्र शेरों और गुरिलोंके बीचमें ला डाला। यह क्रम मलायाके रबड़के बगीचों, धातुकी खानों, बर्माके चावल व चीनीके खेतों और लेके कुंओंतक जारी रहा। अर्वाचीन भारतका विदेशोंसे परिचय कुलीके रूपमें हुआ और विदेशोंमें भारतीय कुली जहां कहीं गया, अपनी गन्दगी, अशिक्षा एवं अन्धविश्वासके लिये वहीं मशहूर हो गया—पर कड़ी मिहनत कर रुपया इकट्ठाकर इन कुलियोंकी दूसरी-तीसरी पीढ़ी जब शासकोंकी सी शिक्षा प्राप्त कर व्यापारिक एवं सांस्कृतिक प्रतिद्वन्द्विता करनेको खड़ी हुई तब राजनीतिक पराधीनताकी दीवार उनके मार्गमें आ खड़ी हुई और उन प्रवासी भारतीयोंको अग्रसर होनेसे रोक दिया। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी कि प्रवासी भारतीयोंके आर्थिक एवं मानरक्षाके आन्दोलनके नेता गान्धीजी ने भारतमें आकर आजादीकी मांगको जनताके आन्दोलनमें तब्दील कर दिया और उसकी बागडोर अपने हाथमें ली। उसी दक्षिण अफ्रिकासे स्वदेश वापस लौटनेवाले बापूके नेतृत्वमें भारतको आजादी हासिल हुई, एशिया ही नहीं, तमाम दुनियामें ३५ करोड़की सबसे बड़ी आबादीवाले संगठित राष्ट्रका जन्म हुआ। पर आज जनसंख्याके लिहाजसे दुनियामें सबसे बड़ा राष्ट्र भी अपनी इस आजादीकी रक्षाके प्रश्नको आजादी प्राप्त करने जैसा आसान काम नहीं पाता।

अक्टूबर १९१७ की लाल-क्रान्तिसे कुछ सप्ताह पहले कम्युनिस्ट नेताओंकी एक बैठकमें लेनिनने अपनी एक स्पीचमें कहा था-"सत्ता निश्चय ही हमारे हाथोंमें आयेगी, पर यह कठिन सवाल ही नहीं, हमारी परीक्षाका प्रश्न होगा कि हम अपनी सरकारको कायम रख सकेंगे या नहीं। हमें हाथमें आई हुई सत्ता काबूमें रखनेके लिये अभीसे तैयारियां करनी चाहिये और ऐसी नीति अख्तियार करनी चाहिये और उस नीतिको सफल करनेके साधन व उपायोंका संगठन करना चाहिये कि पूंजीवादी दुश्मन सरकारोंसे घिरे हुए भी हम जीवित रह सकें"। भारतकी आजादी आसानीसे मिली हुई सी प्रतीत होती है, पर भारत की स्वतंत्रताको कायम रखनेका कार्य और भी कठिन है। हमारे देशमें विदेशी शोषकोंने किसी ऐसे उद्योग-धंधोंकऔर विज्ञानका विकास नहीं होने दिया कि उसके सहारे हम विदेशी साम्राज्यवादियोंसे अपनी रक्षा अपनेही बलपर कर सकें।

हमारे राष्ट्रकी पैदाइश ही ऐसे बेढंगे तरीके हुई है कि मुसलमानोंके एक अलग राष्ट्र पाकिस्तानका जन्म उन कट्टरपन्थियोंके कब्जेमें हुआ है, जो हमेशासे भारतकी स्वतंत्रताके शत्रु रहे हैं। अब तककी पाकिस्तानी राजनीतिक हरकतोंने भी उस शत्रुताका स्पष्ट आभास ही नहीं दिया है, बल्कि काश्मीरमें खुली लड़ाई तकका निमंत्रण दिया है। संयुक्त राष्ट्र-संघमें दक्षिण अफ्रिकन गोराशाही सरकारके वर्ण विभेदने भी वह निर्लज्ज रूप ग्रहण नहीं किया, जो पाकिस्तानी इस्लामियोंने और जफरुल्लाके जहरको भड़कानेवालोंके रूपमें दो सफेद सूरतें साफ नजर आ रही थीं—डालर द्वारा ही खरीदे जानेवाले दुनियाके सबसे बड़े मालका जखीरा अमेरिकाका संयुक्त राष्ट्र और संगठन व होशियारी के द्वारा स्टरलिंगकी साख चलानेवाले हमारे कलतकके शासक अंग्रेज—इस्लामी मुल्कोंने भी संयुक्त राष्ट्र संघमें पाकिस्तानके मजहबी प्रचारको ही ज्यादा महत्व दिया और हमारे साम्राज्यविरोधी प्रचारक प्रधान मंत्रीके प्रभावकी अवहेलना की। एशियाई सम्मेलन कर, रूसके स्टालिनवाद और अमेरिका व अंग्रेजोंके साम्राज्यवादसे अलग एशियाके स्वतंत्र राष्ट्रोंका एक अलग शान्तिप्रिय संगठन बनानेकी जो योजना पं० जवाहरलालजीने पेश की थी वह कल्पना मात्र ही रह गयी। एशियाके दोनों पश्चिमी छोर वाला टर्की और पूर्वी किनारे वाला जापान अपनी स्वार्थसिद्धके लिए रूस विरोधी दलके अग्रमुखमें बनकर अमेरिकन प्रभावमें आ गये थे। अरब-यहूदी संग्रामने मध्य पश्चिमी एशियाके अरबी मुल्कोंको एक ऐसी राजनीतिक मुत्थीमें उलझा दिया कि रूस और अमेरिका दोनों एक दूसरेके कट्टर विरोधी होते हुए भी यहूदियोंके इजरायल राष्ट्रके प्रबल समर्थक नजर आये।

हिन्दुस्तानकी परराष्ट्र नीतिको न रूसकी तानाशाही वाले दलमें ही घुसना चाहिए और न अमेरिकाकी डालरशाही का ही स्वागत करना चाहिए। दुनियाके राजनीतिक नक्शे पर नजर डालनेसे कोई ऐसा सबल मित्र नजर नहीं आता, जो हिन्दुस्तानकी आर्थिक विकासकी योजनाओंमें उसकी कोई बड़ी मदद कर सके। महायुद्धने जर्मनी व जापानको ही नहीं, इटली और फ्रांसकी भी ताकतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


को निर्जीव-सा कर दिया है। हमारे पुराने मालिक ब्रिटेनमें खुद ऐसी आर्थिक कमजोरियां आ गयी हैं कि वह हिन्दुस्तानकी मदद देना तो अलग रहा, खुद मददका मुहताज है। ऐसी दुनियामें परराष्ट्र नीति व विदेशी व्यापार एक दूसरेसे घुलमिल गये हैं। देशकी अन्दरूनी आर्थिक अवस्थाके ऊपर ही हमारा आयात निर्यातका व्यापार अवस्थित है। लड़ाईकी तबाहीसे त्रस्त जनताके जीवनस्तरको बिना और नीचा किये, हम कौन-कौन-सी अपनी पैदावारकी चीजें कितनी तादादमें बाहर भेज सकते हैं, और कहां पर हमें उसका अच्छा दाम मिलेगा, बल्कि बदलेमें ज्यादा से ज्यादा और जल्दसे जल्द मशीनें मिल सकती हैं, जिनके द्वारा हम अपना औद्योगीकरण कर, एशिया और अफ्रिकाके त्रस्त जन समूहका नेतृत्व ग्रहण कर सकते हैं? अमेरिका जापानी उद्योगधन्धोंको पुनर्जीवन प्रदान कर, जापानी एजेण्टोंके जरिये, सुदूरपूर्व एवं हिन्द महासागरके इलाकोंमें अपना नेतृत्व स्थापित करनेके कामपर प्रयत्नशील है। उसे स्वतन्त्र भारत की आजाद नीति पसन्द नहीं, आदीमें आंच आये बिना अगर हमें अमेरिकाकी मदद मिल सके तो हमें उसकी पूरी चेष्टा करनी चाहिए। लेकिन इस मददके पीछे कोई गुप्त राजनीतिक शर्त नहीं होनी चाहिए और न रूस-विरोधी सामरिक संगठनमें ही हमें भाग लेना चाहिए। रूससे भी शायद हमें पेट्रोल और कृषिकी मशीनें मिल सकती हैं। एंग्लो-अमेरिकनोंका अड्डा पाकिस्तान भी बिना राजदूत भेजे ही जब रूससे व्यापारिक समझौता कर सकता है, तो हमारे दूतावास अब तक ऐसी निष्क्रियता क्यों दिखायी है? देशमें किरासन तेलकी बड़ी कमी है, कागजका अधिक दाम हमारे शिक्षा प्रचारको भी रोक रहा है। रूसमें इन दोनों चीजोंका बाहुल्य है। रूससे भारत सरकार आदान-प्रदानका एक समझौता कर सकती है। रूससे भारत सरकारको कृषि यंत्रादि भी मिल सकते हैं। भारतीय आर्थिक उन्नतिके लिए कृषिमें गम्भीर परिवर्तन की आवश्यकता हो गयी है। केवल जमींदारियोंको उठा डालनेसे ही कृषिका प्रश्न हल नहीं हो जायेगा—असली काम तो जमींदारवर्ग का देहातसे प्रभाव हटानेके बाद ही शुरू होगा। डेनमार्ककी सहयोगी समितियां अमेरिका व आस्ट्रेलियाके बड़े व्यक्तिगत फार्म और रूसके 'कलेक्टिव फार्म'—इन तीनों प्रणालियोंसे हमें बहुत कुछ सीखना है।

दुनियामें भारतीय विदेशी संवाददाता भी वैदेशिक प्रचार व देशमें विदेशोंके ज्ञानको सुलभ करनेमें बड़े मददगार हो सकते हैं, पर अभी तक तो हमारे अखबारोंने स्वदेशी शिक्षितोंको इस दिशामें अग्रसर होनेका कोई विशेष मौका नहीं दिया है।

हमारे दूतावास आज सुदूर दक्षिण अमेरिकाके ब्राजिलसे लेकर, चीन और जापान तकमें हो गये हैं। दुनियाके देश अपने वैदेशिक मामलोंको गुप्तरूप, रहस्यपूर्ण ढंगसे चलाते हैं, इसलिये परराष्ट्र नीति पर पार्लमेण्टमें अकसर सिद्धान्तों या खास गलतियोंको लेकर ही बहसें हुआ करती हैं। सिर्फ लेनिनने कुछ दिन तक इस गुप्त वातावरणको भेद कर वैदेशिक बातचीतके सारे कागजात छाप दिये थे। लेकिन हमारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, उदारमनके नेता पं० जवाहरलालजी में लेनिनका-सा वह बल नहीं है कि वे अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्रकारियोंके काले कारनामोंको दुनियाके जनसमूहके सामने रख सकें, और न हिन्दुस्तानकी सरकार की कोई ऐसी एक अलग बलवती विचारधारा ही है, जो रूस और अमेरिका दोनोंके नेतृत्वको चुनौती देती हुई, सारे देशोंके शान्तिप्रिय नागरिकोंकी रहनुमाई कर सके। गांधीजी उस नेतृत्वका भार ग्रहण कर सकते थे और दो गुटोंमें बटी दुनियाको तीसरा मध्य मार्ग दिखा सकते थे। आज हमारा मित्र और पड़ोसी बर्मा थाकिन नू के नेतृत्वमें अमेरिका और इगलण्डकी आर्थिक नीतिसे निराश हो रूसकी तरफ कदम बढ़ा रहा है। पं० जवाहरलाल ही आज उसको इस भयावनी खाईमें गिरनेसे रोक सकते थे, पर हिन्दुस्तानकी खुदकी आर्थिक अवस्था ऐसी नहीं कि वह बर्माकी जबर्दस्त मदद कर सके, और न हिन्दुस्तानकी सरकारमें उस पुरानी समाजवादी लोकराजकी भावना ही काम कर रही है, जिसने नेहरूजीको संसारव्यापी उदार विचारधाराकी आशा बना दिया था। धीरे-धीरे भारत सरकारकी ढकियानूसी नीतिका दुनियाको ज्ञान होता जा रहा है। देशमें पुरानी पद्धतिका समर्थक होकर रहने पर बाहरमें परिवर्तनवादी होना सम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। संयुक्त राष्ट्र संघमें भारत सरकारकी हारके पीछे सिर्फ एंग्लो-अमेरिकन दलकी स्वार्थी चालें ही नहीं छिपी हैं, बल्कि हमारे प्रधान पण्डित नेहरूके उस समाजवादी लोकोपकारी यशका ह्रास भी है, जो भारत सरकारकी आन्तरिक सुधार विरोधी नीतिकी वजहसे दुनियाके अखबारोंमें पहुंच गया है। गैरमजहबी राष्ट्र का नाम लेनेसे ही मजहबका जहर दूर नहीं हो सकता; न सुरक्षा कानून या दमन नीतिसे ही 'गैरमजहबी नीति' कायम ही सकती है। मजहबकी रस्सियोंसे भारतीय सामाजिक संगठन बंधा हुआ है। जब तक उन रस्सियोंको काटकर, समाजको मुक्त कर, नवीन आर्थिक प्रणाली पर उसका दूसरा संगठन करनेकी योजना जनसमूहके सामने पेश नहीं की जाती, तब तक धर्मका राज्य अखण्ड रहेगा, और नैतिक स्तरको ऊंचा करनेके लिये विनोबा भावे जैसे शुद्ध पवित्र पुरुषोंके उपदेशोंकी आवश्यकता महसूस होती रहेगी। मुसलिम राष्ट्रोंमें होशियार राष्ट्रीय मुसलमानोंको दूत बनाकर भी हम उनका प्रेम प्राप्त नहीं कर सके, न यहूदियोंका राष्ट्र अस्वीकार करके ही हम मुसलिम देशोंमें कोई राजनीतिक लाभ प्राप्त हुआ, उल्टा पाकिस्तानका यह प्रचार, कि भारतीय सरकार मुसलमानोंसे ही कर भारत सरकार यहूदी सरकारका सम्मान नहीं करती, ज्यादा सफल हुआ। हैदराबादके अन्दरूनी मामलोंमें भी भारतीय मुसलमान अपनी गैरमजहबी सरकारका जैसा बल समर्थन नहीं करते, जैसा उनको करना चाहिए था, यह मुसलमानोंका दोष नहीं, सरकारी नीति का है।

अब तक अंग्रेजोंने अपने स्वार्थोंकी रक्षाके लिये सामाजिक संगठनके ढांचेमें कोई मूल परिवर्तन नहीं होने दिया और हिन्दुस्तानकी आर्थिक अवस्थामें इसीलिये कोई विशेष प्रगति नहीं दिखलायी दी। आजाद भारतकी सरकार अंग्रेजोंके सैनिक प्रभावसे मुक्त हो गयी है, परन्तु पुराने पक्के प्राप्त समूहोंका स्थायित्व वैसा ही है। जन समूह और जनतन्त्र सिद्धांत रूपी लौकिक प्रचार मात्रके स्वरूप बनकर ही रह गये हैं। गणशक्ति और जनताके आन्दोलनोंसे सरकार डरने लगी है।

भारत सरकार बढ़े हुए देशोंमें उदार और समाजवादी दलोंका और पीछे हुए देशोंमें जनसमूहका नेतृत्व तभी कर सकती है जब वह दक्षिण पन्थी प्रतिक्रिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक मनोरंजक लेख—

# मेरी शादी हो गयी!

—श्री बिनायक नानेकर

"मेरी मानो तो एक बात बताऊं तुम्हें, नायक ! यदि जिन्दगीका मजा किरकिरा कराना चाहते हो तो तुम शादी करो। तुम्हें शायद नहीं मालूम कि शादी-शुदा आदमी व्यवहारमें नादान होता है।"

"परन्तु यह ज्ञान आपको पहले क्यों नहींसझा ? उल्टा, आपने तो जितनी मिले उतनी लडकियोंको अपनी बीबी बनाने का मानों बीडा उठाया है। एक गयी, दूसरी गयी, यह तीसरी है; और हो सका तो आप दस तक गिनती पूरी करनेमें भी नहीं चूकेंगे।"

"तुम्हारी बात भले सही हो, परन्तु क्या करूं ? जुएकी और शादीकी लत बडी बरी होती है। पदवी की तरह एक बार जो लगी तो आखिर दम तक पीछा नहीं छोड़ती। शादी आबादी है या बरबादी, यह मैं नहीं कह सकता, परन्तु शादी है दिल्लीके बड़ू की तरह खाये वह भी पछताये, न खाये वह भी पछताये। परन्तु यह तीसरी शादी तो मेरे माथे ऐसी पड़ी है कि सर गंजा होने की नौबत आ गयी है। अब तो जी चाहता है कि 'गौरीशंकर' पर जाकर आराम से रहूं। मर्दके डर से भागी हुई स्त्रियां तुमने बहुत देखी होंगी, मगर बीबीके डर से भागने-वाला मर्द मैं पहला ही हूं। यह बात अखबार-वालोंको बताने योग्य है। क्या खयाल है तुम्हारा, नायक ?"

"इतनी बुरी नहीं है वह, काका। काकी सुन्दर है, होशियार है, काम काज की है..।"

"परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी उसे देखते ही मेरा सर दुखने लगता है; क्योंकि वह मेरे साथ लग्नबंधनमें बंधी है। वह यदि किसी दूसरेकी स्त्री होती तो मैं तुम्हारी ही तरह उसकी प्रशंसा करता।"

केसो काकाका उत्तर सुनकर मैं तो दंग रह गया। तीन-तीन बीबियोंसे ब्याह करनेके बाद भी काकाकी लहर को ज्यों-की-त्यों पाकर मुझे आश्चर्य हो रहा था। मगर बढ़ा है भाग्यवान। जोरू बीमार पड़ी नहीं कि लड़कियोंके बाप चक्कर काटने लगते हैं, और यहां तो पहली ही शादी के लिए टांगें तोड़ने की पारी आ रही है। जिस तरह बसन्त ऋतुके साथ मच्छर आते हैं, उसी तरह बीबी लानेके बाद संतानोंका नम्बर लगता है। केसो काकाके सरदर्द का कारण बीबी नहीं, बल्कि प्लेगके चूहों की तरह पैदा होनेवाले बच्चे हैं।

इस वानर-सेनाकी चींपोंके कारण केसो काका शादीके नामसे कभी-कभी हिमालय पर चले जानेकी सोचते हैं, परन्तु मेरे सरीखे ब्रह्मचारी शादीको एक उपन्यासकी तरह अद्भुत समझते हैं। परन्तु कहावत है कि मरे बिना स्वर्ग नहीं दीखता, उसी तरह मैंने निश्चय किया है कि शादी करके ही उसका मजा देखना चाहिये।

* * *

एक गोरी चमरिया व कोमल उंगलियांवाली सड़कसे जा रही थी। उसने बैंगनी साड़ी पहनी थी, जिसका पल्ला तिरंगे झंडेकी तरह लहरा रहा था। एक नवयुवकको उस सुन्दरीकी ओर गौरसे देखते हुए मैंने देखा। एक विचार मनमें आय और मैंने पास जाकर उस नवयुवकसे पूछा "क्यों भाई, क्या परख हो रही है ? आप क्या पेण्टर हैं या सिनेमा डाइरेक्टर ?"

वह मानों गहरी नींदसे चौंक कर बोला, "मैं कोई 'टर' नहीं हूं, मैं एक 'आब्ज-र्वर' हूं। जरा कुदरतकी करामात देख रहा था।"

"तो मेरी तरफ भी गौर हो, क्योंकि मैं भी तो कुदरतका ही बनाया 'माडल' हूं।"

उसने कड़वा मुंह बना कर कहा— आप का 'माडल' सड़क पर रखने लायक है, नुमाइशके लायक नहीं।"

वह चला गया और मेरे मनमें विचार आया कि क्या जबरदस्त आकर्षण है स्त्री-का। कालेज, दफ्तर, सिनेमा वगैरह सभी आम जगहोंमें पाखानोंकी दीवालों पर लिखे गये उपदेशों या 'हिदायतों'से स्पष्ट होता है कि स्त्रियोंके प्रति लोगोंको कितना मान है। ये सब नमूने देख कर मनमें

---

सरकारोंके उच्चाधिकारियोंकी समर्थनी शोषण नीतिके विरोधमें बुलन्द आवाज उठाती। लेकिन यह आवाज तभी सम्भव थी, जब यहांकी जनताके कन्धेसे, कम-से-कम राजाओं, जागीरदारों जमींदारों, महन्तों, मठाधीशों और धर्म के नाम पर शोषण करनेवाली ब्राह्मण जाति और विदेशी पूंजीपतियोंका प्रभाव बिलकुल खतम किया जाता, और विदेशी उद्योग धन्धोंका राष्ट्रीयकरण कर दिया जाता। अगर सरकार इस नीतिमें सफल होती तो जनसमूहमें एक ऐसी उत्साहकी लहर उठती जो हमारे उत्पादनको साधनों की कमी होते हुए भी दूना कर डालती। ज्यादा बड़े बिना विदेशोंमें हमारा सम्मान नहीं हो सकता। अमेरिकन मजदूर २५ गुना और अंग्रेज १५ गुना ज्यादा हमारे मुकाबलेसे उत्पादन करता है। मजदूर को ऊपर उठानेके लिये उसके मनमें उत्पादनके प्रति प्रेम और उत्साह पैदा करनेके लिये यह आवश्यक है कि कारखानोंके संगठनमें आमूल परिवर्त्तन किये जायें, और मालिक हो चाहे मैनेजर, उसके जीवनको भोग विलास, ऐश आराम एवं शान शौकतसे वंचित किया जाये। महलों और भोजों, विशाल मोटरों और जेवर जवाहरातों, रेशमी कपड़ोंका अत्यधिक खर्च बन्द कर उसे देशके निर्माणमें लगाया जाय। आन्तरिक नीति हमारी विदेशी नीतिकी मां है। बाहर हम कितने ही होशियार राजदूत भेजें कितना ही सुन्दर प्रचार करें, हमारा प्रभाव हमारी भीतरी ताकतसे और हमारे जनमतके सन्तोष एवं सुखसे ही होगा। दुनियाके दूसरे राष्ट्रों की खुशामद या विनती करनेसे कोई सहायता सुलभ नहीं होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न उठता है कि क्या बिना स्त्रीके पुरुष का चल नहीं सकता।

जैसे ही मैंने जरूरी शिक्षण समाप्त किया, मुझे दो चीजें प्राप्त हुईं, जवानीका खिताब और नौकरी। इसका परिणाम यह हुआ कि लड़कियोंके बाप मेरी ओर आने लगे। परन्तु लड़कियां देख कर मुझे निराश होना पड़ा, क्यों कि उनका रंग इतना गाढ़ा था कि यदि उन्हें बंगालके उपसागरमें डुबा कर निकाला जाता तो रूस की तरह भारतके पास भी एक काला सागर का निर्माण हो जाता। उपन्यास पढ़ कर और सिनेमा देख कर मेरे विचार स्वर्गमें उड़रहे थे। मेरी उस 'ना ना' के कारण लड़कियोंके बापोंका माथा ठनका और उन्होंने प्रचार करना शुरू किया कि जब मैं शादीको राजी नहीं होता हूं तो मुझमें जरूर कुछ ऐब है। इ कारण लड़कियोंका आना बन्द हो गया। अबतक लड़की नहीं मिलती थी, इससे शादी नहीं हो रही थी। मगर अब शादी नहीं करता, इससे लड़कियोंका मिलना कठिन हो गया। केसो काका को मैंने जब यह मुसीबत सुनायी, तो वे कहने लगे—"नायक, शादीमें भी नौकरीकी तरह पूर्व अनुभवके प्रमाण-पत्रोंकी आवश्यकता होती है।"

शादीके बाजारका भाव इस तरह चढ़ता हुआ देख कर मैंने एक दूसरा दांव खेला। समाचार पत्रोंमें विज्ञापन देने शुरू किये कि बच्चोंको पढ़ानेके लिए एक अध्यापिकाकी जरूरत है—बीमारकी सेवाके लिए नर्सकी जरूरत है—एक प्रगतिशील मासिकके लिए सुशिक्षित सेक्रेटरीकी जरूरत है। मगर मेरी मोटी तकदीरके आगे ये सब चालें खोटी पड़ गयीं। मैंने मनमें कहा—"भारतकी स्त्रियां अभी जागृत नहीं हुई हैं, फिर देशमें जागृति कैसे उत्पन्न हो?"

जब यह भी दांव खाली गया तो एक दिन विधवा-आश्रमकी ओर चल पड़ा। दिल तो सेकेण्ड हेण्ड मालसे नफरत करता था, मगर मैंने दिलासा दिलाया कि खूबसूरत बाल-विधवा मिल गयी, तो क्या बुरा है? साथ-ही-साथ लोगोंके सामने समाज-सुधारक के लिहाजसे सर ऊंचा करनेका मौका भी हाथ लगेगा।

एक सुशिक्षित, सुन्दर विधवासे मैं मिला तो वह बोली—"यदि मेरे नामसे आप बैंकमें पांच हजार रुपये रखनेको तैयार हों तो मैं एक कदम पर आपसे शादी करनेको तैयार हूं।"

मैंने कहा—"भगवानका नाम लो। मेरे पास यदि पांच हजार रकम नगद होती, तो मैंने घर बैठे-बैठे जनानखाना खोला होता। फिर यहां क्यों झक मारता? जैसा हूं, वैसा कबूल करनेको तैयार हो तो ठीक। हां, इतना जरूर कर सकता हूं कि यदि मैं पहले मरने लगा, तो अपने मृत्युपत्रमें तुम्हें पुनर्विवाह करनेकी इजाजत दे दूंगा।"

वह निराश हो चली गयी और मैं हताश हो वापस लौटा। गया था बालूशाही लेने सो बादशाही साबुन हाथ लगा।

रास्तेमें जहां भी सुन्दर लड़की दिखायी पड़ती, दिल कह उठता, कि क्या ही अच्छा हो यदि मेरी बीबी भी ऐसी ही हो, परन्तु एक दूसरा विचार आता कि मेरी ऐसी तकदीर कहां? मुझे चाहनेवाली लड़कियों से तो मेरी धोबिन साफ और सुन्दर है। एक धोबी सुन्दर बीबी पानेकी तकदीर रखता है परन्तु मेरी तकदीरकी मुर्गी न जाने किस घरेके दाने बिन रही है।

शामका वक्त था। लोग सकुटुम्ब बाहर घूमने जा रहे थे। एक जोड़ा मेरे पास से निकला। क्या विरोध था दोनोंमें—पति कौएसे स्पर्धा कर रहा था तो पत्नी हंससे। दिल शिकायत करने लगा कि ऐसे फड़तूस लोग भी सुन्दर बीबियां पा लेते हैं। थू है मेरी जिन्दगीको।

अभी तक मैं सुन्दर स्त्रीके लिए ऐंठ रहा था, मगर बेटी के बापोंने मुझे ऐसी मीठ पिला दी थी कि मेरी सब आशाएं हजम हो गयीं। मेरी आशाओंका रेट मेरी बढ़ती उमरके साथ घटने लगा। अब मन इसीमें संतोष मानने लगा कि लड़की स्त्री हो—लंगड़ी लूली न हो। गोरी न सही सांवली भी चल जायेगी। रात दिन शादी का विचार मनमें कुरेदने लगा। रातको उस दिन जब सोया तो सपनेमें एक सुन्दर स्त्री दिखायी पड़ी। मनने इसे शकुन कहा; क्योंकि घरमें स्त्री नहीं आयी तो स्वप्नमें तो आयी। परन्तु गौर करने पर मालूम हुआ कि वह कोई और है। मैंने समझा, शायद देवी है। हाथ जोड़े वह बोली—"बेटा कोई वर मांग।" मैंने भड़क कर कहा—"मुझे वर नहीं चाहिए वधू चाहिए" और नींद टूट गयी!

* * *

चाय पीनेसे निवृत होकर केसो काका की ओर चल पड़ा। दरवाजे पर दस्तक रखा तो केसो काका और काकीमें जोर जोरसे चने फूट रहे थे। "रास्ते परसे जाते वक्त सुन्दर स्त्रियोंकी ओर न देखूं तो क्या म्युनिसिपैलिटीकी कचरेकी गाड़ी की तरफ देखूं या रोगी-भिखारियोंकी तरफ देखूं?" केसो काका कह रहे थे।

"मगर मैं कहूं कि दो दो शादियां करनेके बाद भी बुढ़ापेमें ये ढंग क्यों?" काकीने पूछा।

क्या मैं बूढ़ा हूं? तेरे साथ शादी की तबसे दिखने लगा हूं मैं दस साल ज्यादा बूढ़ा, वरना मैं दो शादियां और करनेका चेहरा रखता था।"

मैंने मनमें कहा—"यहां पहली शादी का अकाल पड़ा है और यह बूढ़ा और दो शादियां करनेकी छाती रखता है। बड़े भाग्यवान हैं। परन्तु एक दूसरा विचार यह आया कि जब तक ब्रह्मचारी नौजवान इन विधुरोंके विरुद्ध सत्याग्रह नहीं करेंगे तब तक उनकी शादीका प्रश्न हल नहीं हो सकता। समाजकी सारी सुन्दर जवान लड़कियां ये विधुर ही उठा लिये जाते हैं। हम लड़कीके बापोंसे दहेज मांगते हैं तो ये विधुर उल्टा दहेज देते हैं और नतीजा यह देखनेमें आता है कि सारी सुन्दर लड़कियां इन विधुरोंके हाथ लगती हैं।

काकाकी शादीकी हांव देख कर मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कामना

श्री कुमार बी० ए०

विरह में मिलन गीत गाता रहूंगा !
विरह गीत गाये न तुम प्राण आये, नयन अश्रु कोमल चरण धो न पाये
विरह बांसुरीसे मिलन गीत गा अब तुम्हें प्राणधन मैं रिझाता रहूंगा
कभी रथ स्वयंको इधर मोड़ लेना, मेरी वाटिकाके कुसुम तोड़ लेना
विरह वाटिका में खिला फूल यह यह वरण अर्घ्य हित लाता रहूंगा
न इसको कभी दृष्टि भर देख पाना, इसे हो उठाना इसे सह न जाना
तड़पता रहूंगा, हृदयमें भले किंतु ओठोंसे मैं मुस्कराता रहूंगा
विरह में मिलन गीत गाता रहूंगा !

---

पारा ऊपर चढ़ा, "दो-दो बीवियां खा चुके, फिर भी शादी करनेकी लालसा है ही ? भगवान जाने, अगले जन्ममें क्या होगा ?"

"तुझसे शादी करनेके बाद और कौन-सा बुरा जन्म बाकी रह गया है ?"

मामला बिगड़ता देख, मैंने आगे बढ़ कर कहा--"नाहक क्यों काकीको नीचा दिखाते हो काका ।"

"इसने कभी नीचा देखा हो, ऐसा मुझे स्मरण नहीं होता। शादीके वक्त लड़कियां शर्मसे नीचे देखती हैं, मगर यह तो मेरे मुंहकी तरफ आंखें फाड़ कर देख रही थी । खाना खाते वक्त लोग नीची गर्दन कर लेते हैं, मगर इसका ढंग कुछ निराला ही है। यह तो मुंह ऊपर करके खाती है । और यदि तुम्हारे कहनेके मुताबिक यह पतिव्रता होती तो मैं स्वर्गकी अप्सराओंसे प्रार्थना हूं कि इस महासाध्वी पर वे पुष्पवृष्टि करें।'"

"स्वर्गमें तैंतीस करोड़ देवता हैं, मगर इन्हें अप्सराएं ही दिखायी पड़ती हैं। नायक, तुम नहीं जानते इन्हें । यदि मैं नीचे देखने लगूं तो इन्हें अपनी नजर दौड़ानेकी आजादी मिल जायेगी । मैंने इनके साथ शादीकी इनकी बाहर देखनेकी आदत मजबूत होती जा रही है। शादी की,पर बीवीके हकसे मैं इस बातकी जबरदारी रखती हूं कि कहीं इन्हें बाहर की आदत न लग जाय ।"

"देखा, नायक, तुम एक तरफ शादीके लिए बेताब हो रहे हो और मुझे शादी शुद्ध क दखाना प्रतीत हो रही है'

"तीन तीन शादियां करके भी शादी कैदखाना ही है इनके लिए ।"

"मेरी पहली दो बीवियां बेचारी बड़ी अच्छी थीं । मुझे बिना किसी प्रकार का कष्ट दिये मुझे छोड़ गयीं, मगर यह तीसरी बड़ी कुछ अजीब सी है । यह तो जीवन भरके लिए मुझे कालापानीका स्वाद चखाकर दम तोड़ेगी ।"

मैंने कहा—"क्या काका आप रात दिन काकीसे झगड़ते ही रहते हैं। आप लोगोंका यह कोलाहल सुनकर लोग क्या कहते होंगे !"

"हम झगड़ेंगे और चाहे जो करेंगे । इससे लोगोंके पेटमें क्यों दुखते है ? झगड़नेके सिवा गृहस्थीमें मिठास नहीं ह —समझे ? हमारी अब आपसमें झगड़ने की उम्र नहीं, तो क्या तुम छोकरोंकी तरह गुलछर्रे उड़ाने की उम्र है ?"

"बेचारेकी शादी हुई ही नहीं,वह क्या गुलछर्रे उड़ायेगा ! क्यों, नायक, तुम्हारा कहीं लगा लगा ?" काकीने सहानुभूति दर्शायी ।

"काकी, यदि मेरा कहीं लगा लगा होता तो सुबह-सुबह यहां क्यों आता ? तुम लोगों-सरीखा ही में भी घरमें कुछ खटपटमें लगा रहता ।"

"तो देखो, नायक, मेरी मानो तो एक बात बताऊं । कुदरतने नियम ही ऐसे बनाया है कि इस बाबतमें कुछ-न-कुछ कमी बेशी जरूर रहती है । तुमने हम सरीखे कई दूसरे जोड़े देखे होंगे, जो किसी न किसी कारण घरमें या तो उदास रहते हैं या झगड़ते रहते हैं । किसीमें विचारोंका मतभेद होता है, तो किसी पर बीमारी की कृपा होती है, तो किसीको आर्थिक तंगी सताती है, तो कोई निःसन्तान होनेके कारण, तो कोई अधिक सन्तान होनेके कारण उदास रहते हैं" तात्पर्य यह कि कुछ-न-कुछ न्यूनता उनमें जरूर होती है । इससे मेरी सलाह है कि और झखेड़े छोड़कर तुम लड़की पानेका प्रयत्न करो ।,

गरजवन्त गधा भी चरानेको राजी होता है । मैंने काकीसे कहा "काकी मैं आपके शब्दोंके बाहर नहीं हूं, मगर मैं लड़की कहां ढूंढूं ? जिसके पास मैं जाता हूं, वह मुझे देखकर अपनी लड़की छिपाने लगता है ।"

"यदि तुम राजी हो तो एक लड़की है मेरे ध्यानमें । थोड़ी पढ़ी है और बहुत काम की है । बाप कोयलेका व्यापारी है । अच्छी शादी करेगा ।"

मैंने मनमें कहा—"बाप कोयलेका व्यापारी है, इसलिए लड़की कोयलेके समान काली होगी, ऐसा कोई नियम नहीं है ।" मैं राजी हो गया ।

मेरी शादी हो गयी । लड़की मेरी महत्वाकांक्षाओंसे नीचे दर्जेकी थी, मगर अब वह मेरी थी, इससे उसका पक्ष लेना ही बुद्धिमानी थी । शादी करनेके बाद लड़की में दोष ढूंढ़ना याने अपना दोष प्रगट करनेके बराबर है ।

मित्रोंने छेड़ना शुरू किया । एकने कहा, " नायक कहां गयी तुम्हारी प्रतिज्ञाएं ? दूसरेने कहा—"डायमण्ड नहीं सही 'ब्लेक डायमण्ड' तो हाथ लगा यही क्या कम है ?"

मैंने प्रत्युत्तर देते हुए कहा, " भार्या रूपवती शत्रु ! ' इसके कई उदाहरण आपको मिल सकते हैं । स्त्रीका पुरुषसे हर बातमें कम दर्जेका होना हितकर होता है, वरना वह तुम्हारी परवाह करनेकी जगह तुम्हें उसकी सम्हाल की ही चिन्ता अधिक सताती है ;"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# तीसरा महायुद्ध क्यों ?

महात्मा सत्यभक्त

पहले महायुद्धका संहार देखकर दुनिया थर्रा गयी थी । इसलिये दूसरे युध्द के आते आते एक पीढ़ी लग गयी थी। दूसरे महायुद्धका संहार तो पहले से भी बढ़कर था। इसलिये दुनिया के शैतानोंकी शैतानियतको चरितार्थ होने में काफी समय लगेगा, ऐसी आशा थी। पर कुछ दिनों पूर्व अमेरिका के प्रेसीडेंट ट्रूमैन ने जो भाषण दिया है, उसे भाषण न कह कर युद्धका बिगुल ही कहना चाहिये। अब परिस्थिति ऐसी है कि किसी भी दिन युद्धकी शुरुआत हो सकती है।

पाठक अचरज करेंगे कि महायुद्ध इस प्रकार तीव्र वेग से क्यों दौड़ा आरहा है। सचमुच भविष्यका नया संसार इसे मनुष्य की असाधारण मूर्खता ही कहेगा और आज के युग को आदमियों का युग न कह कर जंगली जानवरों का युग कहेगा। पर साधारण जनता की इच्छा न रहने पर इस युग पर जंगलीपनकी यह छाप क्यों लग रही है ?

बात यह है कि संसार के पूंजीवादी यह पसंद नहीं करते कि रूसकी व्यवस्था पनपे क्योंकि रूस की व्यवस्था का ज्यों ज्यों प्रसार होता जायगा, त्यों त्यों पूंजीवादियों के लिये शोषण का अभाव होता जायगा। दूसरे महायुद्ध की शुरुआत में ही अंग्रेजों की यह चाल थी कि नाजी जर्मनी को रूससे भिड़ा दिया जाय, रूस तब मिट जायगा और न मिट पायगा तो पस्त हुए रूस को हम मिटा देंगे। लेकिन अंग्रेजों की यह चाल सफल न हुई। महायुद्ध में सभी पस्त हुए और रूस अंग्रेजों से तगड़ा रहा। रह गया पूंजीवादियों का सिरमौर अमेरिका। वह शक्ति में भी अपने को संसार का सिरमौर मानता है, और मानता है कि संसार के सब राष्ट्र उसके असामी होने लायक हैं। उसने अपने अर्थ-जाल में सब को फंसाने की तैयारी ही नहीं की है किन्तु अधिकांश में फंसा भी लिया है। इसमें सबसे बड़ा बाधक है रूस। रूस में पूंजीवाद की गुंजाइश न होने से वह तो जालमें फंसा नहीं, साथ ही उसे देख कर दूसरे देश की जनता भी अमेरिका के जाल से पिंड छुड़ाना चाहती है। यही कारण है कि अमेरिका रूसका दुश्मन है।

दूसरे महायुद्ध के बाद अमेरिका ने रूस को कैद करने की पूरी कोशिश की है। संसार की सबसे अधिक महत्व पूर्ण सड़क भूमध्यसागर है। किसी भी द्वार से रूस भूमध्यसागर में न घुस जाय इसकी पूरी कोशिश अमेरिका और अमेरिका का पुछल्ला इंगलेण्ड कर रहा है।

टर्की को हाथ में करके काला सागर का द्वार रूसके लिये बंद होगया। उधर बलकानमें रूस का बढ़ता हुआ प्रभाव देख कर यूनानको अमेरिका ने फंसा लिया जिससे यूनान में खून बरसता ही रहता है। उधर ईरानमेंसे थोड़ा बहुत रास्ता रूस को मिल सकता था अरब समुद्र में आने के लिये, सो ईरान भी अमेरिका का शिकार बना लिया गया। अफगानिस्तान और काश्मीर के जंगली द्वार भी रूस के लिये खुले न रह जांय, इसलिये उसके द्वार पर पाकिस्तान बना कर खडा कर दिया गया है और काश्मीरकी समस्या को उलझा दिया गया है।

रूस भी इस मामले में गाफिल नहीं है। वह पैसे के बल पर नहीं बल्कि जन हितकारी कार्यक्रमके बल पर पड़ोसी राष्ट्रों की जनता को अपनी तरफ कर रहा है और आधा यूरोप उसके प्रभाव में आगया है। उधर अमेरिका ने मार्शल योजना के द्वारा यूरोपको अपना गुलाम बनाने का पक्का कार्यक्रम बना लिया है। पर अमेरिकाकी यह मार्शल योजना पूरी तरह कारगर नहीं होरही है, क्यों कि ऋण लेने वाले राष्ट्रों को इससे उ० १२ न होगा किन्तु वे चिरकाल के लिये अमेरिका के गुलाम बन जांयगे।

इस प्रकार अमेरिका द्वारा थैली लुटाने की बात कहने पर भी आधा यूरोप रूस के पक्ष में होगया है। जर्मनी का एक हिस्सा तो रूसके हाथमें है ही, लियुआनिया वगैरह बाल्टिक राष्ट्र पहले महायुद्ध के पहले रूस के ही थे, दूसरे महा युद्ध के बीच में वे रूस में मिलने को राजी थे आज वह पूरी तरह रूस के साथ हैं। इसके सिवा बलगेरिया रुमानिया हंगरी पोलेंड युगोस्लाविया भी रूस के साथी में बन गये हैं। इधर युगोस्लाविया समाजवादी सरकार बनते ही अमेरिका आंख फाड़ फाड़ कर देखने लगा है। वह रूस की अकल ठिकाने लाना चाहता है। तीसरे महा युद्ध की जड़ यही है

रूस युद्ध नहीं चाहता। उसकी तो आर्थिक व्यवस्था ही ऐसी है कि संसार के मजदूर और गरीब लुभा जाते हैं। इस प्रकार रूस बिना युद्ध के ही जीतता जाता है। अमेरिका नीतिसे उसका सामना नहीं कर सकता, इसलिये उसे पशुबलसे काम लेनेकी जरूरत मालूम होती है। यही तीसरे महा युद्ध की जड है। यह महायुद्ध संसार के लिये अभिशाप है। इससे सभी की मौत है। तीसरे महायुद्ध के अन्त में अमेरिका की जय होगी, यह नहीं कह सकते। किंतु अगर जय हुई भी तो पूंजीवाद बच नहीं सकता। अमेरिका की विजय पूंजीवादकी उर्ध्वश्वास का बुझते हुए दीपकका प्रकाश होगा। इस महायुद्ध को टाला जा सकता है, पर इसका एकमात्र उपाय यही है कि मनरो सिद्धांत के अनुसार अमेरिका बाहर पैर न पसारे। राजनीतिक सामाज्यकी दृष्टिसे अमेरिका के पास खूब धन है वह खूब मजे में खाये और चैन से रहे। यूरोप समाजवादी बने तो क्या या पूंजीवादी रहे तो क्या ? नीतिकी मर्यादामें रहकर सबको अपने अपने 'वाद'का प्रचार करनेका अधिकार है। तब अशांति का कोई कारण नहीं है।

तीसरे महायुद्ध की जड़ अमेरिका है। अमेरिका अपनी मदांधता पर अंकुश रख सके तो युद्ध रुक सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# जवाहर

—श्रीमती कृष्ण हठी सिंह

ग्यारह वर्षकी उम्र तक जवाहर अपने मां बापके इकलौते बच्चे थे और हमारे माता-पिताने, खासकर माताजीने, लाड़-चावसे उन्हें बहुत कुछ बिगाड़ दिया था। वे स्कूल नहीं जाते थे। घर पर ही मास्टर रखकर उनकी पढ़ाईका इन्तजाम किया गया था और कई साल तक उनके कोई भाई-बहन न होनेकी वजहसे उन्हें अकेले रहनेकी आदत पड़ गयी थी। हालांकि पिताजीने उन्हें बिगाड़ रखा था, फिर भी भाग्यवश पिताजी बड़े अनुशासन-प्रिय थे। इससे जवाहरमें अपने आपको बहुत बड़ा समझनेकी आदत न पैदा हो सकी।

बचपनमें भी जवाहरके मनमें पिताजी के लिये बड़ी इज्जत थी। वह पिताजीको तमाम अच्छी बातों और खूबियों, बहादुरी और हिम्मतकी मूर्ति समझते थे और उनकी सबसे बड़ी इच्छा यही थी कि खुद भी उन्हीं जैसे बनें। हालांकि वे पिताजीको बहुत पसन्द करते थे और उनसे उन्हें प्रेम भी था, तथापि वे उनसे डरते भी बहुत थे। पिताजीके गुस्सेसे जवाहर कांपते थे; क्योंकि एक बार वे इस गुस्सेके शिकार हुए थे और उस वक्तकी याद आसानीसे उनके दिलसे मिट नहीं सकती थी, पर हम सब यह जानते थे कि पिताजी हमें कभी नाइन्साफीसे सजा नहीं देंगे। फिर भी जैसे साल पर साल गुजरते गये, पिताजी अपने गुस्से पर काबू पाते गये और हालांकि उनका गुस्सा आखिर वक्त तक उनकी तबीयतमें मौजूद था, पर वह पूरी तरह उनके कब्जेमें रहा।

इस तरह जवाहर बड़े होते गये। वे शरमीले, तेज स्वभावके थे और अपनी उम्रके संगी-साथी न होनेके कारण अपनेसे बड़ी उम्रवालोंसे बहुत मिला करते थे। चौदह सालकी उम्रमें वे हैरो गये और अपनी शिक्षा कैम्ब्रिजमें खतम करके सन् १९१२ में हिन्दुस्तान वापस लौटे। तभी मैंने पहली बार उन्हें देखा, हालांकि १९०८ में भी वे मुझे देख चुके थे, जब कि वे छुट्टियोंमें घर आये हुए थे।

कई साल तक मेरे भाई मेरे लिए अजनबी शख्स बने रहे, एक ऐसे व्यक्ति, जिसे मैं कभी तो पसन्द करती थी और कभी नापसन्द। कुछ साल बाद जब सत्याग्रह आन्दोलन शुरू हुआ और जवाहर राजनीतिमें कूद पड़े तो मैंने उन्हें ज्यादा करीब से देखा और जैसे-जैसे मैं उन्हें ज्यादा जानने लगी, वे मुझे ज्यादा पसन्द आते गये और मेरा अपने इस भाईसे, जिसे मैं पहले गलतीसे घमण्डी समझती थी, प्रेम बढ़ता गया।

एक बड़े भाईकी हैसियतसे जवाहरमें कोई भी खामी नहीं। वह मेरी बहनसे और मुझसे उम्रमें बहुत बड़े हैं; पर उन्होंने कभी इसकी कोशिश नहीं की कि हमारे लिए नियम-कानून बना दें, जैसा अक्सर बड़े भाई अपने छोटोंके लिए किया करते हैं। अगरहमारीकोई बात उन्हें नापसन्द हुई है तो भी उन्होंने नर्मीसे हमें इस तरह समझाया है कि हमारी भूल खुद हमारी समझमें आ जाये। अगर किसी बारेमें हम उनसे सहमत न हों और इससे उन्हें कितनी भी तकलीफ क्यों न हो, फिर भी वे यह कोशिश करते हैं कि अपनी नाराजगी जाहिर न होने दें।

अपने विचार वे हम पर कभी भी नहीं लादते। स्वरूप और मेरे लिए वे बड़े अच्छे और स्नेहशील बड़े भाई ही नहीं हैं, वे हमारे बड़े भारी दोस्त और साथी भी हैं, जिसने अपने प्रेम और अपनी समझदारीसे अपने आपको हमारे लिए बड़ा कीमती मित्र बनाया है। हम जानते हैं कि जिस तरह पहले पिताजी थे, उसी तरह अब वे हमेशा हमारे साथ हैं—शक्तिका एक ऐसा स्तम्भ, जिसका हम जब चाहें सहारा ले सकते हैं और जिन्दगीके छोटे-छोटे सवाल जब हमें परेशान करें तो उनकी मदद लेकर उन्हें हल कर लें। वह कभी उपदेश नहीं देते, पर जब कभी जरूरत हो, मदद देने और रास्ता दिखानेके लिए तैयार रहते हैं। वह एक ऐसे विश्वसनीय मित्र हैं, जिन्हें इन्सान मजाक उड़ाये जाने या झिड़कियां खानेके डरके बिना अपने मन की गुप्त बात बता सकता है। खुद उनमें बहुत ज्यादा इन्सानियत होने की वजहसे वे हमेशा दूसरेकी कमजोरी समझनेमें कसर नहीं रखते।

पिताजीकी मृत्युके बाद जवाहरको सबसे ज्यादा फिक्र माताजीकी और मेरी थी। स्वरूपकी शादी हो चुकी थी और उसका अपना घर था। अब हमारे छोटेसे घरके मुखिया जवाहर थे, पर वे यह नहीं चाहते थे कि माताजी या मुझे यह खयाल हो कि हमारा भार जवाहर पर पड़ रहा है, जैसा कि हिन्दुस्तानी घरोंमें आम तौर पर होता है। हमें कभी इसका खयाल भी नहीं आया, पर जवाहरको जरूर आया। पिताजीने कोई वसीयतनामा नहीं छोड़ा, न हमें उनसे इसकी आशा थी कि वह ऐसा करेंगे, क्योंकि यह चीज उनकी तबीयतके खिलाफ थी। फिर भी कुछ चीजें थीं जो जवाहरको परेशान कर रही थीं। उन्होंने सोचा कि शायद मैं अपने आपको इतना आजाद न समझूं, जितना पिताजीकी जिन्दगीमें समझती थी और शायद यह भी पसन्द न करूं कि उनसे रुपया पैसा मांगूं। इसलिए उन्होंने मुझे एक खत लिखा, जिसमें लिखा था कि उनकी यह इच्छा है कि माताजी और मैं अपने आपको आनन्द-भवनका और पिताजीने जो कुछ छोड़ा है उस सबका असली मालिक समझें। वह खुद केवल एक ट्रस्टी हैं, जिसका काम हमारी और हमारे कामोंकी देख-भाल करना है और हम भी इसी दृष्टिसे उनकी ओर देखें। उन्होंने यह भी लिखा था कि खुद उन्हें और उनके खानदानवालोंको बहुत कम खर्चकी जरूरत होती है। इसलिए हम लोग बिना किसी झिझकके पहलेकी तरह रहें और उनका कुछ भी खयाल न करें। वे सिर्फ इसलिए हैं कि जब जरूरत हो हमें रास्ता दिखायें और हमारी मदद करें। मेरा खयाल है कि कोई और भाई यह न करता। यह जवाहर की ही खूबी है। वह जो बात कहते हैं, करते भी हैं और उनके कदम कभी डगमगाते नहीं।

* * *

पिताजीकी तरह जवाहरका गुस्सा भी बड़ा बुरा है। जब मैं चौदह साल की थी तो जवाहरने कहा कि मुझे हिसाब सिखायेंगे। यही वह विषय था, जो मुझे परेशान करता था। मैं इस बातसे खुश न थी; पर उन्हें टाल भी नहीं सकती थी।

उन दिनों मैं जवाहरसे कुछ घबराती भी थी, पर यह नहीं समझती थी कि वह मुझ पर भी खफा होंगे। शुरूके कुछ पाठ बड़े अच्छे रहे और जवाहरका पढ़ानेका तरीका मुझे खूब पसन्द आया। जिस विषयको मैं दिलसे नापसन्द करती थी, उसीमें मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा मजा आने लगा और मैं हर रोज उस घण्टेका इन्तजार करने लगी, जिसमें जवाहर मुझे पढ़ाया करते थे। पर जब मुझमें कुछ-कुछ विश्वास पैदा होने लगा और जवाहरका डर भी मेरे दिलसे कम हुआ तो इसी बीच एक रोज गड़बड़ हो गयी। एक दिन न मालूम क्या बात थी कि मैं सबक पर ध्यान नहीं दे पा रही थी और कोई बात मुझे याद नहीं रहती थी। इस चीजने जवाहरको खफा कर दिया (मैं उन्हें दोष नहीं देती) और उन्हें गुस्सा आना शुरू हुआ। उनके गुस्सेका नतीजा यह हुआ कि मेरा मन सबक परसे एकदम उठ गया और मैं बिलकुल ही खामोश हो गयी। वह मुझ पर बिगड़े और चिल्ला-चिल्लाकर कुछ वाक्य उन्होंने कहे, जिससे मैं और भी घबरा गयी। हैरान और परेशान होकर मैं उठ खड़ी हुई और जाने लगी। मैं सोच रही थी कि आखिर एक दिन सबक भूल जाना कोई ऐसा बड़ा गुनाह तो नहीं है, जिस पर भाई साहब इतने खफा हों। मुझे बहुत बुरा लगा और तकलीफ भी हुई और जब मैं अपनी किताबें उठा रही थी तो वह आंसू, जिन्हें दबानेकी मैं बहुत कोशिश कर रही थी, मेरी आंखों से झलक पड़े। जवाहरने मेरे आंसू देखे और उनका गुस्सा काफूर हो गया। अब जो कुछ हुआ उस पर उन्हें अफसोस होने लगा। वह भी उठ खड़े हुए और अपनी बाहें मेरे गलेमें डालकर उन्होंने मुझसे माफी मांगी। पर उन्होंने जो कुछ भी कहा या किया इसके बाद मेरा मन कभी जवाहरसे सबक लेनेके लिए तैयार न हुआ।

जो लोग जवाहरको अच्छी तरह नहीं जानते, उनका खयाल है कि उन्हें जिन्दगीमें राजनीति और लिखने-पढ़नेके सिवा कोई और दिलचस्पी नहीं है। इसमें शक नहीं कि इन कामोंमें उनका ज्यादा वक्त निकल जाता है, पर उन्हें और भी कई चीजोंसे बड़ी दिलचस्पी है और इन पर वह जितना वक्त खर्च करना चाहते, कर नहीं सकते। राजनीतिक काम के बाद जो भी वक्त बच रहता है, उसे जवाहर पढ़नेमें बिताते हैं। कभी-कभी लिखनेमें भी; पर लिखनेका काम वह अक्सर उस वक्त करते हैं जब वह जेलमें होते हैं।

उन्हें घोड़ेकी सवारी बहुत पसन्द है और वह बड़े अच्छे सवार हैं। तैरनेका भी बड़ा शौक है; पर उन्हें इसका मौका बहुत कम मिलता है। जब तक हम लोग उन्हें मजबूर न करें, वह सिनेमा या थिएटर नहीं जाते और अगर खेल सचमुच अच्छा हुआ तो उससे खूब लुत्फ उठाते हैं। जवाहरको बहुत ही खुश देखना हो तो उन्हें बच्चों के साथ देखना चाहिये। उन्हें बच्चोंसे बड़ी दिलचस्पी है और बच्चे भी उन्हें बहुत पसन्द करते हैं। चाहे वह कितने ही व्यस्त या थके हुए क्यों न हों, अगर कोई बच्चा उनके पास जाय और कोई सवाल करे तो जवाहर उसे कभी टालते नहीं, बल्कि अपना सब काम रोक कर उस बच्चेके सवालोंका जवाब देते हैं।

दिन भरकी थका देनेवाली मेहनतके बाद जवाहर अपने छोटे भानजों, भानजियों या दूसरे बच्चोंके साथ जब कुछ वक्त गुजारते हैं तो उन्हें इस हालतमें देखनेमें बड़ा मजा आता है। उस वक्त ऐसा मालूम होता है कि वे अपनी तमाम फिक्रों और परेशानियोंसे आजाद हो गये हैं और बच्चोंमें मिलकर खुद भी बच्चा बन गये हैं। वह बच्चोंके साथ दौड़ते हैं, खेलते हैं और खुद भी इन बातोंसे उतना लुत्फ उठाते हैं, जितना उनके साथ खेलनेमें बच्चे। हममेंसे ज्यादातर लोग ऐसा नहीं कर सकते; क्योंकि हमें अपने बड़प्पन का बहुत खयाल होता है और हम यह बात किसी तरह भूल नहीं सकते कि हम बड़ी उम्रके हैं। जवाहर ऐसा कर सकते हैं; क्योंकि उनमें बहुत सादगी और इन्सानियत है और यही सबब है कि छोटे बच्चों को भी उनके साथ खेलनेमें बड़ा मजा आता है।

जवाहरमें एक बड़ी भारी खूबी है जो उनका कभी साथ नहीं छोड़ती। चाहे वह जेलमें हों, बाहर हों, कितने ही काममें हों और हारे-थके हों, उन्हें जन्मदिन, वार्षिकोत्सव और इस तरहके दूसरे मौके बराबर याद रहते हैं। इन छोटी-छोटी बातोंका भी जितना खयाल रखते हैं, उसीकी वजहसे उनके जाननेवालोंको वे और भी ज्यादा पसन्द आते हैं और उनका प्रेम उन लोगोंके दिलमें दुगना हो जाता है। एक बार यह हुआ कि हिन्दुस्तानी तिथिके हिसाबसे मेरी सालगिरह १९ अक्तूबर १९३० को पड़ती थी। उसी दिन जवाहर गिरफ्तार हुए और गिरफ्तारीके कुछ देर बाद उन्हें यह बात याद आयी कुछ दिनोंके बाद उन्होंने मुझे लिखा, "अभी अभी मुझे यह बात याद आयी है कि ब्रिटिश सरकारने दफा १४४ का आर्डर निकाल कर और उसके बाद मुझे १९ अक्तूबरको गिरफ्तार करके एक बड़ी भारी बातका खयाल नहीं रखा, जो उसी तारीख तारीखको हुई थी। उस दिन मैं अपनी प्यारी बहनको उसकी सालगिरहका जो सुन्दर और कलापूर्ण तोहफा भेजता, वह न भेज सका। मेरी तरफसे यह गफलत बड़ी ही अफसोसकी बात थी और इस गलती को मैं अब ठीक करता हूं। इसलिए अब किताबोंकी किसी दुकान पर जाकर कुछ ऐसी किताबें खरीदो, जिनमें प्राचीन विद्वानों का ज्ञान, मध्यकालीन युगका, विश्वास वर्तमान युगका शंकावाद और भविष्य के गौरवकी झलक हो। ये किताबें तुम खरीद लो, उनकी कीमत अदा करो और उसे अपने गाफिल भाईकी तरफसे, जिसे अपनी छोटी बहन अक्सर याद आती रहती है, सालगिरहका देरमें पहुंचा हुआ तोहफा समझ लो। फिर इन किताबोंको पढ़ो और उन्हें पढ़कर एक जादूकी नगरी खड़ी करो जो सपनोंसे भरी हुई हो; जिसमें बड़े-बड़े महल और फूलोंसे खिले हुए बाग, और बहते हुए चश्मे हों, जिसमें जहां सुख ही सुखका राज हो और हमारी यह दुःखी दुनिया जिन खराबियोंका शिकार है उनका उस शहरमें प्रवेश भी बन्द हो। तब जिन्दगी इस जादूकी नगरीके बनाने और हमारे चारों ओरकी बदसूरत और दुःख-दर्द के हटानेके लिए एक लम्बी और सुख भरी कोशिश बन जायगी।

जवाहर जब इंग्लैण्डसे वापस आये तो वे बड़े ही शानदार और मनमोहक युवक थे, पर किसी कदर स्वाभिमानी और बिगड़े हुए भी, जैसे कि अक्सर अमीरोंके लड़के हुआ करते हैं। यहां आकर उन्होंने जो साल गुजारे, वे उनके लिए बड़े तजुरबे के, मगर साथ ही दुःख और मायूसीके थे। पर इन सब बातोंका उनकी तबीयत पर बड़ा अच्छा असर हुआ और अब वे पहलेसे भी कहीं ज्यादा प्रिय बन गये। उनकी पश्चिमी शिक्षाने उनपर काफी असर डाला है और लोग समझते हैं कि अपने दृष्टिकोणमें वे हिन्दुस्तानीसे ज्यादा यूरोपियन हैं। पर उस नैतिक और राजनैतिक उथल-पुथलने, जिसमेंसे दुनिया लड़ाईके और भुखमरीके पिछले बरसोंमें जरी है हममेंसे बहुत-तों को और खासकर जवाहरको हिन्दुस्तान और चीनके गहरे और ऊंचे खयालोंकी तरफ खींच लिया है। अब उनके व्यक्तित्व की जड़ें पुरानी जमीनमें गहरी जा रही हैं और हमारे गौरव पूर्ण अतीतसे उसे कीमती खुराक मिल रही है। अनेक निराशाओंके बावजूद भी उनकी मानसिक शान्ति बनी रहना और कटुता दूर हो जाना, ये ऐसी चीजें हैं जो विशुद्ध भारतीय हैं। उनमें पूर्व और पश्चिमका सम्मिश्रण है, पूर्व उन्हें जिन्दगीका रास्ता दिखाता है और वे उन शक्तियोंको ज्यादा अच्छी तरह समझ पाते हैं जो इन्सानोंकी किस्मत बनाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# देशका राजनीतिक मंच

गत सप्ताह भारत के राजनीतिक रंग-मंच पर अनेक महत्वपूर्ण घटनाएं हुईं। अंग्रेजी शासन के अंतिम चिन्ह लार्ड माउण्ट बैटन भारत से विदा ले कर लंदन चले गये और श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने उनका स्थान लिया। इस तरह दिल्ली में विदाई और स्वागत के दो विराट समारोह हुए। विदा समारोह का वह दृश्य बड़ा ही मर्मस्पर्शी था, जब कि लार्ड और लेडी माउण्टबैटन ने गवर्नमेण्ट हाउस के सभी कर्मचारियों से - प्रत्येक चपरासी और बेहरेसे -- हाथ मिला कर अंतिम विदा ली। और स्वागत समारोहका तो एक ऐतिहसिक महत्व था, विशाल भारतीय राष्ट्र का सूत्र एक भारतीय ने संभाला। गवर्नमेण्ट हाउस के दरबार हाल की रौनक और शान देखने लायक थी। इस अवसर पर राजभक्तिकी शपथ लेने के बाद राजा जी ने अपने भाषण में कहा –भारत में वंशानुगत शासनके दिन लद गये। साथ ही अब कोई भी सम्प्रदायिकता या धार्मिकताके नाम पर सुख समृद्धि और उन्नतिकी आशा नहीं कर सकता। इसलिए सभी सम्प्रदायोंको परस्पर मिलकर राष्ट्र की उन्नतिके कार्योंमें लगना चाहिये।

* * *

राजाजीके गवर्नर-जेनरल होनेसे पश्चिम बंगाल के गवर्नर-जनरलका जो पद रिक्त हुआ, उस पर उड़ीसाके गवर्नर डा० कैलाशनाथ काटजू नियुक्त हुए और उड़ीसाके गवर्नरका पद मिला श्रीआसफअलीको। डा० काटजूने पद ग्रहण के अवसर पर तथा बाद में हवड़ा इन्स्टीच्यूटकी सभामें बड़े ही सारगर्भित और मर्मस्पर्शी भाषण दिये। आपने बड़े ही प्रभावोत्पादक शब्दोंमें कहा–गांवोंमें बसनेवाले गरीब किसान मजदूर ही हमारे खूनके खून हैं, हमारी हड्डियों की हड्डी हैं और हैं देशकी सम्पत्तिके उत्पादक अतएव हमें सेवाके आदर्शोंको गांवोंमें ले जाकर उनकी दुरवस्था मिटानी चाहिये। तभी देश सुखी और समृद्धिशाली होगा।

* * *

काश्मीर और हैदराबादकी समस्याओं के हल होनेमें अभी देर दिखायी देती है। संयुक्त राष्ट्र संघका काश्मीर-कमीशन अभी जेनेवामें प्रारम्भिक कार्रवाइयोंमें व्यस्त है। लगभग ५ जुलाईको यह कमीशन वहां से कराची और दिल्लीके लिए प्रस्थान करेगा। कमीशन ने भारत और पाकिस्तान की सरकारोंसे सम्पर्क कायम करनेके लिये दोनों सरकारोंको सूचित किया है कि वे अपने प्रतिनिधि वहां भेज दें। कमीशनने दोनोंही सरकारोंको अपनी कार्य-पद्धति लिख भेजी है। इधर काश्मीरके मोर्चेकी हालत यह है कि आक्रमणकारी बहुत शिथिल पड़ गये हैं और काश्मीरी जनता शेख अब्दुल्लाकी सरकारमें पूर्ण विश्वास दिखा रही है। शेख अब्दुल्लाका कहना है कि यदि मत-गणना हुई, तो काश्मीरी जनता भारतमें रहनेका ही फैसला करेगी। पाकिस्तानी नेता भी अब इस स्थितिको भलीभांति महसूस करने लगे हैं।

* * *

हैदराबादके सवाल पर भारत सरकार ने अभीतक कोई निर्णयात्मक कदम नहीं उठाया, पर उधर पाकिस्तान सरकार इस मामले को अपने हाथमें लेती दिखायी देती है। चर्चा है कि पाकिस्तान इस प्रश्नको राष्ट्र संघमें पेश करनेकी कोशिश कर रहा है। कहते हैं कि निजामका वैधानिक सलाहकार सर वाल्टर मांकटन लन्दनमें मि० अटलरके साथ इसकी पृष्ठभूमि तैयार कर रहा है। लेकिन इधर दिल्लीमें भी घटनाओं की रफ्तार बड़ी गम्भीरतापूर्वक देखी जा रही है और जुलाईके प्रथम सप्ताहमें मंत्रिमंडलकी बैठकमें हैदराबादके प्रश्न पर विचार किया जायेगा और संभवतः उसी बैठकमें कोई निर्णयात्मक कदम भी उठानेका निश्चय किया जायेगा। तबतक सरदार पटेल भी दिल्ली पहुंच जायेंगे।

* * *

पश्चिमोत्तर सीमा प्रांतमें लालकुर्ती दलका आन्दोलन खा अब्दुल गफ्फार खां के जेलमें बन्द किये जानेसे और उग्र हो रहा है। उनके भाई डा० खां साहबने कहा है--मुझे और मेरे दलको सीमान्त सरकारकी धमकियोंका तनिक भी भय नहीं है अतएव हम जन-हितके अपने कार्य पूर्ववत उत्साहपूर्वक जारी रखेंगे।

१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

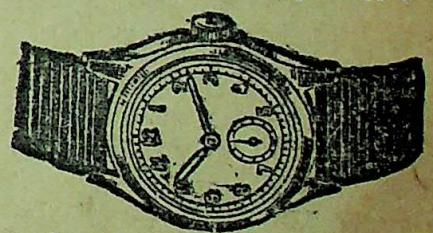

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस– २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस– ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड– ७५)

रेक्टेंगुलर कम या टोनो शेप
क्रोमियम केस–४२), सुपिरियर–४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पेस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।

एच० डेमीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

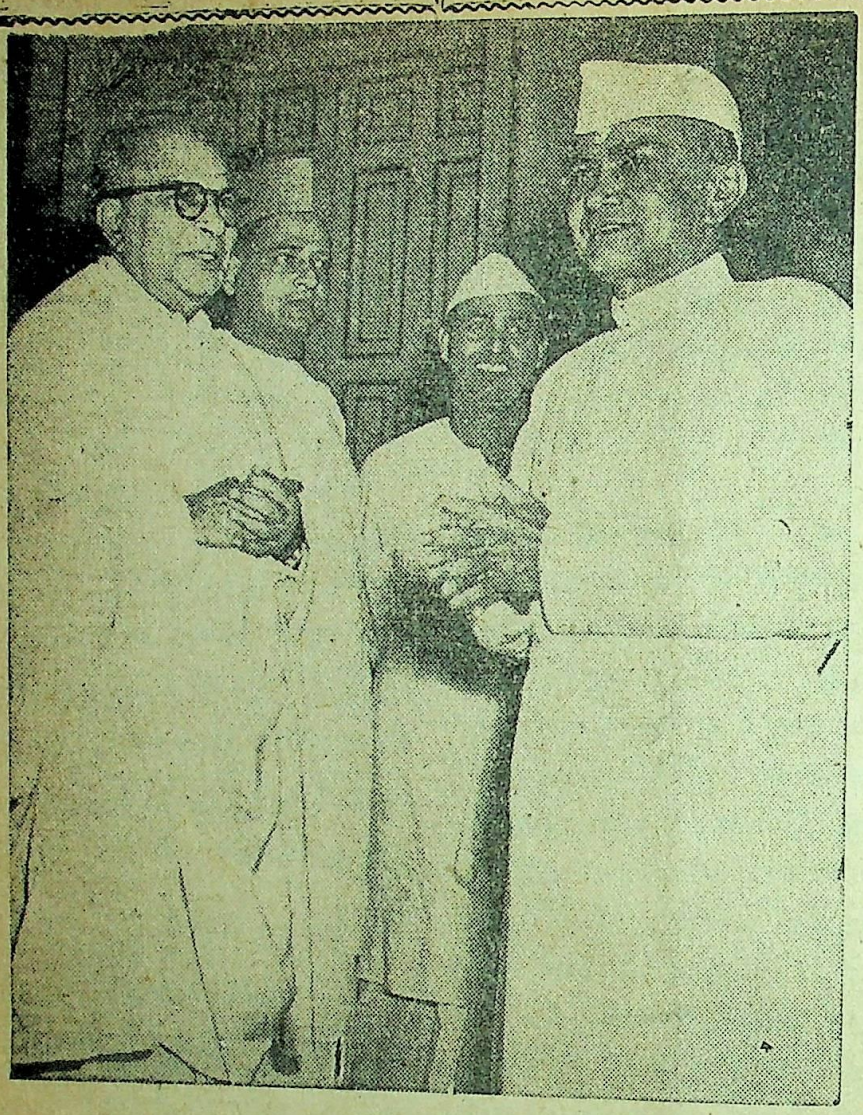

पश्चिमी बंगालके नये गवर्नर डा० कैलाशनाथ काटजू अर्थसचिव श्री नलिनी रंजन सरकार के साथ

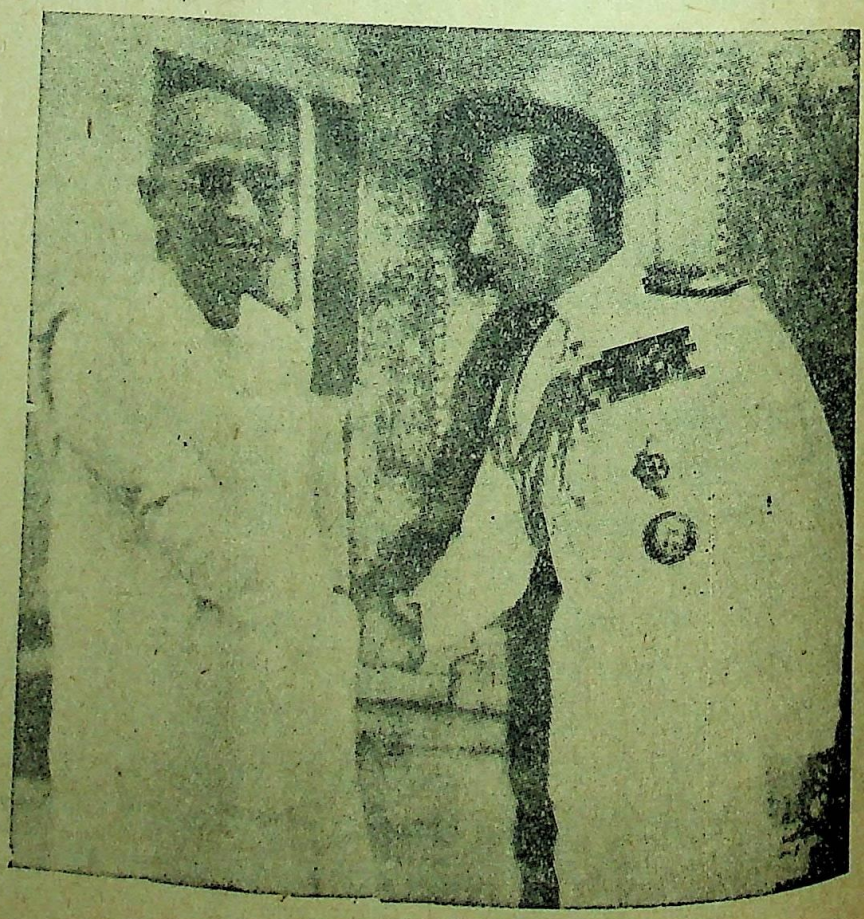

लार्ड माउण्टबैटन राजाजीसे विदा ले रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



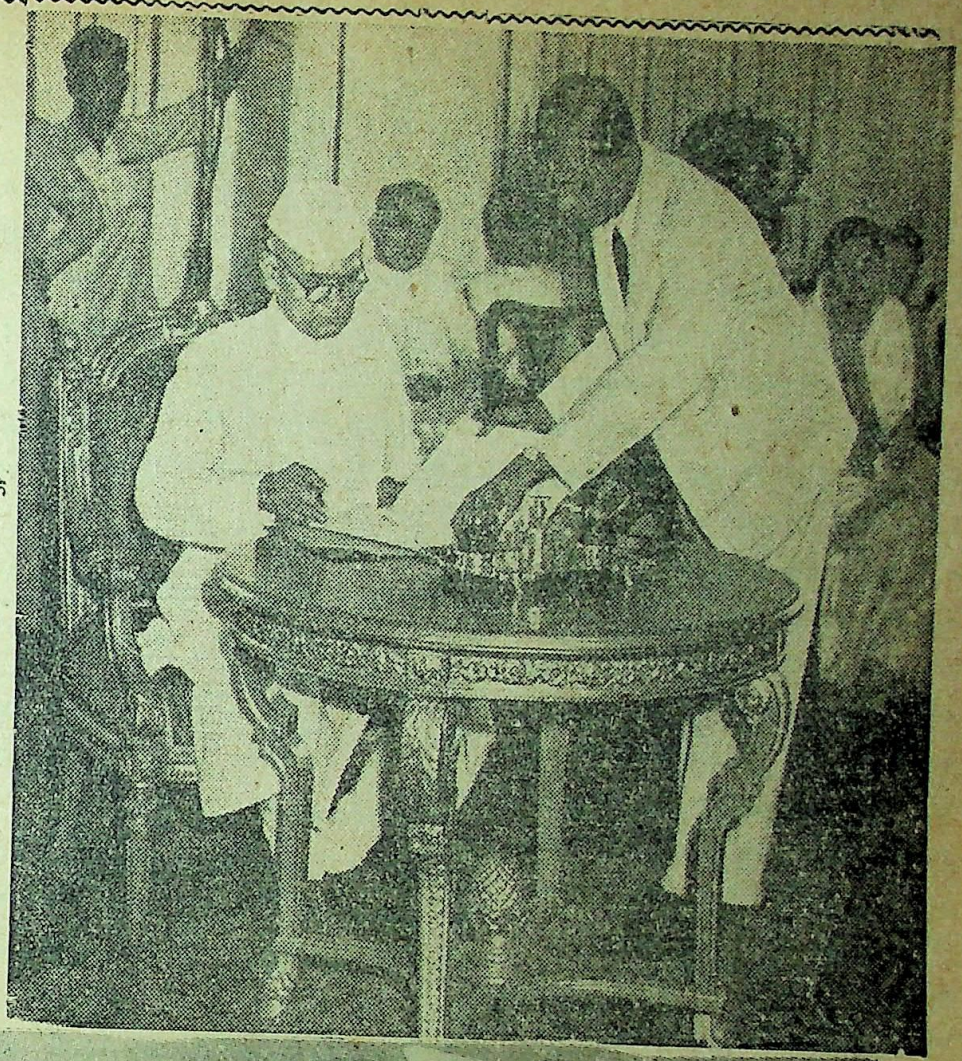

डा० कैलाशनाथ काटजू पश्चिमी बंगालके गवर्नरका पद ग्रहण करते समय

माननीय श्री राजगोपालाचार्यके दिल्ली पहुंचनेपर पंडित जवाहरलाल नेहरू केन्द्रीय मंत्रिमंडलके सदस्य तथा फौजी अधिकारियोंसे उनका परिचय करा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

# स्वार्थ और त्याग

श्री राम शर्मा 'राम'

"सर्वे गुणा कांचन मा श्रयन्ति" का अर्थ तो लाला सुजानचन्दने जीवनके प्रथम पहरमें ही समझनेका प्रयत्न किया। किन्तु जीवनकी प्रौढ़ता प्राप्त करने पर उन्होंने यह भी अनुभव किया कि वे समाज के निर्माता हैं, समाजके पथ-प्रदर्शक! इसका परिणाम यह हुआ कि स्वार्थके साथ दम्भ भी उनके मानसमें समाविष्ट हो गया। नगरके एकमात्र धनिक होनेके नाते जो प्रतिष्ठा उन्हें प्राप्त थी, वह समाजके विविध भावोंमें क्रियाशीलताके रूपमें परिणत हुई। अवस्था यहांतक पहुंची कि नगरका कोई भी काम हो, वह लाला सुजान चन्दको पूछे बगैर नहीं हो सकता। नगरको उनसे पैसेकी तो आवश्यकता थी ही, परन्तु विचार, बुद्धि और प्रेरणा की भी उन्हींसे आशा की जाती थी। निदान, बात उन्हींकी चलती थी। वह जो कह दें वह पत्थरकी लकीर थी।

उसी नगरमें एक ब्राह्मण परिवार था, —दरिद्र, अयाचित। लाला सुजानचन्दके पुरखोंसे उस घरको पुरोहिताई प्राप्त थी। अब लालाजी भले ही समाज-सुधारोंके कामोंमें लग गये, परन्तु जो घरकी परिपाटी थी—ब्राह्मणको पुरोहिताई देना, निमन्त्रण खिलाना आदि—वह पूर्ववत चली जाती थी। लालाजीकी भी उसमें रुचि थी।

एक दिन जब लाला सुजानचन्द संध्या के धूमिल प्रकाशमें आराम-कुर्सी पर पड़े हुए अपने बगीचेके फूलोंकी भीनी-भीनी गन्ध पा रहे थे, तो उसी समय उनकी पत्नी वहां आयी। वह स्थूलकाय थी, अधिक चलने-फिरनेमें कष्ट अनुभव करती थी। लेकिन वह अपने घर और पति पर अधिकार रखती थी। लाला सुजानचन्दके दाम्पत्य जीवनमें शायद ही कोई ऐसा अवसर आया हो कि जब उन्होंने पत्नीकी बात टाली हो। निदान उस समय भी जब पत्नी यहां आयी, तो सामने सोफे पर बठ कर बोली—कल ब्राह्मणोंको निमन्त्रण दिया गया है।

लाला सुजानचन्द कई दिनोंके बाद उसी दिन बाहरसे लौटे थे। इसलिए श्राद्ध-दिवस आ गये, इससे वह अनभिज्ञ थे बोले, मुझे पता नहीं था कि श्राद्ध लग गये। अच्छा किया, ब्राह्मणोंको निमन्त्रण दे दिया।'

"लेकिन अचरजकी बात है कि पुरोहितजीका लड़का कुमार निमन्त्रण नहीं खाता। बारह वर्ष काशी पढ़कर आया है। अभी लौटा है। मैंने सोचा, उसको बुलाना चाहिए, पर कहा उसने कि निमन्त्रण नहीं खाऊंगा। बापने जिन्दगी मांगने खानेमें बिता दी, और बेटा चला है पारस बनने—ऊंह!"

लाला सुजानचन्दने बात सुनी, पर कोई उत्तर नहीं दिया। शायद प्रस्तुत विषय उन्हें महत्वपूर्ण नहीं लगा।

पत्नी फिर बोली—"अगर लड़का नहीं आता, तो हमें दूसरा पुरोहित रखना पड़ेगा।"

सुनकर, लालाजीने कहा—"हां, हां और रख लिया जायेगा। पण्डित मदनलालको बुला लिया जायेगा। वे बड़े पढ़े लिखे हैं। शास्त्री हैं।"

उसी समय, लालाजीकी लड़की कमला वहां आयी। वह पिताके बराबर आकर बैठ गयी। पत्नीने कहा—"मैंने सोचा, लड़का काशीसे आया है, उसको निमन्त्रण देना अच्छा है, पर उसमें इतना गरूर—"

तभी लड़की कमलाने बीचमें रोक कर कहा —"मां, कौन? पुरोहितके लड़के कुमार?"

मांने कहा—"हां, वही।"

कमला बोली—"कुमार तो विद्वान और अच्छा विचारक है मां! कल हमारे स्कूलमें उसका भाषण था—भारतीय संस्कृति पर बहुत सुन्दर बोला। सभी ने पसन्द किया। कालेजके प्रिंसिपल, प्रोफेसर और सरकारी अधिकारी भी आये थे। उन्होंने भी मुक्त कण्ठसे कुमारका स्वागत किया।"

इतना सुनकर, लाला सुजानचन्द सीधे बैठ गये। माथेमें बल डाल कर बोले "कमलाकी मां, मैं भी कुमारको बुलाऊंगा। मैंने तुमसे कहा नहीं, मुझे भी लोगोंने बताया है कि पं० ज्ञानीराम का पुत्र कुमार उनके घरका दीपक है—समाजके लिए अनुपम देन! वह जबसे आया है, नगरमें कई भाषण दे चुका है। सुना तुमने, वह भंगी और चमारोंकी बस्तीमें भी जाता है।"

चौंक कर पत्नीने कहा—"वहां जाता है—हे राम!"

सुनकर कमलाने कहा—"मां तो क्या बुरा है।"

मांने चिढ़कर कहा—"ब्राह्मणके घरमें जन्म लिया, वेद-पुराणका पारायण किया और लगा म्लेच्छोंके घर जाने। राम जाने, खाता पीता भी होगा।"

कमलाने हंसकर कहा—"भंगी चमार भी हिन्दू हैं, मां! कर्म और है, जाति और!"

मांने झुंझलाकर कहा—"चुप रह!"

तभी लाला सुजानचन्द हंसे। वह पत्नी या पुत्रीके पक्ष-विपक्षमें कोई मत तो न दे सके, परन्तु उस समय वह प्रसन्न मुद्राके साथ ऊपरके धुंधले आसमानकी ओर देखते हुए बोले—"अजीब बात है। यह इन्सान भी एक समस्या है।"

लेकिन पत्नीने अपने मानसके अंदर की घूमती हुई बातको लेकर कहा—"मैं पण्डित ज्ञानीरामको भी नहीं बुलाऊंगी। कहला भेजूंगी, तुम पुरोहित नहीं रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़का शुद्रोंमें जाता है, तो हमें उसके बापको बुलाकर अपना धर्म भ्रष्ट नहीं करना।"

इतना सुनकर कमला जोरसे हंस पड़ी --"तुम्हारा धर्म बहुत छोटा है, मां! कुल्हैयामें आ सकता है।"

परन्तु इस बातको सुनकर तो लाला सुजानचन्दने भी अपने माथेमें बल डाले कहा--"तू नहीं जानती कमला, धर्म छोटी छोटी बातोंसे बनता और बिगड़ता है।'

कमलाने कहा--"यह मानती हूं। परन्तु, जिसमें वास्तविकता नहीं, संस्करों का अन्धापन है, उसे भला कैसे माना जा सकता है। मांका धर्म जुदा है, दृष्टि-लक्ष छोटा।

मांने कहा--"चल, चल! दो अक्षर पढ़ गयी तो धर्म बताने लगी।"

उस समय, लाला सुजानचन्द चुप थे, गम्भीर। उनके मनमें बात उठ रही थी कि समय आ गया है कि जब समाजके मुंह पर लगाम लगा देनी चाहिए। घोड़ा भाग रहा है। आज समाजमें जो आता है, वह अपना नया पंथ चलाता है।"

कमला बोली- पिताजी, विचार तो बदलते हैं। समय बदलता है। जो आजसे हजार वर्ष पहलेके विचार थे, वे सभी तो आज नहीं चलते। वे नहीं चलाये जा सकते!"

यह मानता हूं। परन्तु क्या यह ठीक नहीं कि जातिकी जो संस्कृति है, उसमें जो जातीयता है, वह तभीतक कायम रहती है कि जब पौराणिकता मान्य हो। बुजुर्गोंको नहीं भुलाया जा सकता। इतिहास भी नहीं छोड़ा जा सकता। हम आज जो कुछ हैं, उसीके प्रतीक हैं, बेटी!"

उसी समय कमलाकी मां उठ खड़ी हुई।

कमला बोली-"जाती हो, मां! मैं भी चलती हूं। भूखी हूं।"

मांने कहा-"तू आ जाना, पिताजीको भी ले आना।"

तब पिता-पुत्री खड़े हो गये। बगीचेसे निकलते हुए कमलाने कहा-"कुमार योग्य है। नव-चेता और विचारक।"

लाला सुजानचन्दने सुनकर कहा-"हूं।"

कमला बोली-"कल जब भाषण दे रहा था, तो लग रहा था कि जैसे नयी स्फूर्ति और नयी गतिका प्रतीक ही बना हुआ है, कुमार।

पिताने फिर कहा-"हूं!"

मैं उसे बुलाऊंगी। आप बात करेंगे, तो समझेंगे, पुरोहितजीने लड़का क्या पाया, हीरा पा लिया। घूरेमें माणिक पैदा हो गया, पिताजी!"

सुनकर लालाजी हंसे और भोजनके आसनपर जाकर बैठे।

* * *

पण्डित ज्ञानीरामके पुत्र कुमारको काशीसे लौटे हुए अभी एक मास भी पूरा नहीं हुआ था कि वह नगरमें बच्चे-बच्चेकी आंखोंके सामने आ गया। इसी बीचमें उसने अपने विचारोंका भी खूब प्रचार किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि नगरमें शोषकोंके विरुद्ध वातावरण पैदा हो गया। नगरमें जिन व्यक्तियोंका प्रभाव था, वह नष्ट हो चला। कुमार नगरकी जनताको बता रहा था कि जीवनके द्वार पर खड़ा हुआ व्यक्ति रोटी चाहता है और शरीरके लिए कपड़ा जिस धार्मिक भावनाके द्वारा मानवको ठगा गया है, उसका विकास पूंजीवादने ही किया; ऊंच-नीच, भेद-विभेद, ये ऐसे शस्त्र हैं जिन्होंने मनुष्यको नहीं उठने दिया। वह बता रहा था, हम त्रस्त हैं, दुःखी हैं। परन्तु जिन महलोंसे अट्टहास उठा है, उनमें ईर्ष्या है और जलन! उनको लगता है कि अभी हम में प्राण है.....सिसक रहा है, हमारा जीवन।

निस्सन्देह कुमारके रूपमें एक ऐसा मानव उस नगरके समाजमें आकर बोल रहा था, जिसके अन्तरमें आग थी, मानव की प्यास और भूख! वह बोलता, तो लोगोंको लगता कि कोई चेतना उनके सामने आ गयी है। वह सरल, सीधा युवक जिधर जाता, लोगोंकी दृष्टि उसपर उठती थी। दिखायी यह देता था कि पुरानी शृंखला टूट रही है, नयी प्रेरणा और अनुभूति जाग गयी है।

आश्चर्य था कि जिस कुमारके प्रति लाला सुजानचन्दके मनमें अच्छी भावना जागरित नहीं हुई, उनकी एकमात्र सन्तान कमला उसीके प्रति सजग और अन्तर्भूतिसे भर गयी थी। कुमार जहां भाषण देता, वह अवश्य जाती। कुमार भंगी-चमारोंमें गया है, तो वह वहां भी दिखायी देती थी। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि अपने तरकशके जिस तीरसे लाला सुजानचन्दने दूसरोंका बध किया, दीखा कि वही तीर उनकी छातीमें लग जाना चाहता है। यही कारण था कि कुमार उनकी दृष्टिका कांटा बन गया उन्होंने कई बार उसे आमंत्रित किया, परन्तु वह 'आयेगा' कहकर भी न आता था, न आता दीखत था।

शहरमें संघर्ष चल गया। पुरानी और नयी परम्पराओंका विरोध जाग गया। कुमार कोई जादूगर है, नव-चेता और नव-जागरणका संदेश लाया है, ऐसा लोगोंका विश्वास बन गया। इसका कारण यह था कि कुमार सीधी और सच्ची बातें ही जनताको बताता था। वह पाप, पुण्य, स्वर्ग और मृत्यु लोक, ईश्वर या अनिश्वर की चर्चामें लोगोंको नहीं भटकाता। वह तो कहता, आजके समाजमें जो गुंडा है, सचमुच वह आदमी है। उसे गलत दिशापर डाल दिया गया है। व्यभिचार, पाप और दुराचार, जिन बड़े-बड़े महलोंमें पैदा होते हैं, गुंडा भी वहीं निर्मित हुआ है .... इन महलोंकी जड़ोंको मानवके रक्त, मांस और मज्जासे पाटा गया है। विधवाओंकी आहें, कुमारियोंका सतीत्व इन पथरीली दीवारोंपर ही पटका गया है और खण्ड-खण्ड किया गया है... । वह कहता-"हमें धर्म और ईश्वर नहीं चाहिये। जाति नहीं चाहिये। जीवन चाहिये। मानवीय व्यवहार, रोटी और कपड़ा चाहिये।

इस कशमकशमें कमला परेशान थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वह भयभीत थी कि कुमार कहीं विपत्तिमें न आये। वह अपने पिताकी नीयत जानती थी। कुमारके कारण उनकी प्रतिष्ठा घट गयी थी, नेतागिरी छिप गयी थी। अब नगरमें वह जिधर जाते, उंगलियां उठतीं और हंसी की जाती थी। कभी तालियां भी बज उठती थीं। यही कारण था कि उन्होंने शहरमें निकलनेकी इच्छा दबा दी। समाज धनिकोंका है, या निर्धनों का, इसकी सचाई मानो साकार रूपसे उनके सामने आ चुकी थी।

लेकिन उस दिन जब उस सीनका ड्रामा करनेके निमित्त लाला सुजानचन्द के साथ अन्य धनिकोंने सरकारी अधिकारियोंकी जेब गरम की और कुमारको जेलमें बन्द कर देनेकी इच्छा प्रकाशित की, तो तब, उस नगर के समाज और लाला सुजानचन्दको यह देखकर चकित ही रह जाना पड़ा कि स्वयं उनकी पुत्री कमला उनके रास्तेका कांटा बन गयी। थानेका सिपाही कुमारको बुलाने गया था। बात फैल गयी, जनता एकत्र हो गयी। कमला भी वहां पहुंच गयी। लाला सुजानचन्दने सुना तो उनके पैरोंकी मिट्टी निकल गयी। बौड़े गये तो देखा सिपाही "कुमारको ले जा रहा था और कमला चिल्ला रही थी, ठहरो, मुझे आने दो कुमार! मुझे कुछ कहने दो। लाला सुजानचन्द चिल्ला रहे थे, वह कमला को घरसे निकाल देनेकी धमकी दे रहे थे, परन्तु वह नहीं सुन सकती थी। और जब वह कुमारके पैरोंमें जा गिरी, तो कुमारने उसे उठाया और कहा—भावनाका दूसरा नाम ही जीवन है। कमला देवी! तुम यही समझो! यही अपने पितासे कहो।" किन्तु कमला कह रही थी—"मेरे पिता नहीं सुनेंगे, नहीं समझेंगे, वह स्वार्थी हैं, पत्थर।"

"तो मुझे बढ़ने दो। मुझे अपने लक्ष पर जाने दो। मुझे मनुष्य जीवन पाने दो।"

और तब कुमार तेजीसे थानेकी ओर चल दिया था। सुजानचन्दने कमला के पास आकर कहा—"तुम उठो न, मैं कुमारको लाऊंगा। वह अपना काम करें, मैं अब यही चाहूंगा।" वह बोले, "जीवन उसीका है। उसीको जीनेका अधिकार है।"

उस समय कमलाने अपना मत नहीं दिया, कदाचित् उससे नहीं दिया गया। उसने अश्रुपूर्ण आंखोंसे पिताकी ओर देखा और अपना सिर झुका दिया।

# प्रकृतिसे युद्ध

श्री कर्मशील

मनुष्य और प्रकृतिमें लड़ाई चल रही है। प्रकृति-प्रदत्त भौतिक तापोंसे जूझने की आधुनिक मनुष्यने नयी-नयी क्षमताएं पैदा कर ली हैं—पहलेके मनुष्य तो उसके सामने उसे देव-देव कहकर नतमस्तक होते थे!

प्रकृति प्रदत्त कष्टोंमें अवर्षण एक ऐसा ही कष्ट है। ग्रीष्मके तपनेसे धरती जल रही है। खेत खलिहान जल रहे हैं। पानीकी आवश्यकता है, मगर वह बरसता नहीं। छोटे-छोटे बच्चों तक "बरसो हे बरसो इन्द्र देवता" कहकर इन्द्र भगवानकी चिरौरी करते फिरते हैं मगर इन्द्र महाराज हैं कि नहीं पसीजते, जबतक उनका अपना हिसाब पूरा नहीं हो जाता।

मनुष्यने इन्द्रमहाराजकी इस क्रूरताको देख, उन्हें परास्त करनेकी तरकीब ढूंढ़ निकाली। उसने ऐसे उपाय निकाल लिये कि जहां चाहे पानी बरसा ले और उससे धरती सींच ले। जिन-जिन देशोंमें विज्ञान की उन्नति हुई है वहां वहां इसकी कोशिश हुई है कि पानी बरसा लिया जाय। रूसमें इस सम्बन्धमें विशेष प्रगति सुनी गयी थी। सुना गया था ऐसे किसी यन्त्रका नाम जो हिम-वाष्प निक्षेप कर बादलोंको घनीभूत कर देता है और उन्हें बरसा लेता है। इस यन्त्रका कहां तक विकास हुआ, ज्ञात नहीं। रूसके समाचारोंको अछूत माना जाता है।

मगर ऐसी ही खबर इधर अमेरिकासे आयी है। गत वर्ष ४ अप्रैलको पोर्टलैण्ड ओरिगोनियनके ऋतु विभागके अध्यक्ष कर्नल एकली ऐलीसनने अपनी विधिसे लगभग एक हजार एकड़पर आध घण्टे तक लगातार जलवर्षा की। उसके बादसे तो और भी प्रगति हुई है और अब तो यह सम्भव प्रतीत होता है कि लाखों एकड़ों पर ही नहीं, सम्पूर्ण देश पर एक साथ वर्षा करायी जा सकती है।

कर्नल एलीसन महोदयकी प्रणाली यह है। कार्बन डी आक्साइड नामकी एक गैस होती है। यह पानीको जमा सकती है। इसी गैसको ठोस बनाकर उसकी गोलियां बनायी गयी हैं। इन गोलियोंको लेकर कर्नल एलीसन हवाई जहाजमें उड़े और उड़कर बादलके उस टुकड़ेके ऊपर निकल गये जो उनके शहरके ऊपरसे गुजर रहा था। बादल भाप ही होते हैं। ये भाप जब घनीभूत होते हैं तभी पानी बनकर बरसते हैं। एलीसन साहबने कार्बन डी आक्साइडकी गोलियां ऊपरसे इन्हीं बादलों के अंचलमें गिरानी शुरू कीं। भापके बादल घनीभूत होने लगे और भारी होकर बरसने लग गये। केवल ९ सेर ये गोलियां कर्नलने छोड़ीं। इनके प्रभावसे लाखों मन पानी बरसा। अब यह प्रयोग सफल सिद्ध हो चुका है और उसको नागरिक व्यवहार के योग्य बनानेकी योजना की जा रही है।

यह मेघ-नियन्त्रण एक विचित्र-सी वस्तु होगी। इससे कितना काम होगा, इसका ठिकाना नहीं। जलती हुई फसल इससे जिलायी जा सकेगी, अग्निकाण्डसे जलते हुए नगर बुझाये जा सकेंगे! अगर कहीं हिन्दुस्तानमें भी यह अविष्कार हुआ होता तो लाहौर और अमृतसर यों न जल जाने पाते! रावणको बादलों पर अधिकार था। रावण मरा तो वह कला अपने साथ ही लिये गया। हमलोग तो भूल गये, पर रावणके अन्य भाई-बहनोंने उसकी खोज जारी रखी और उसे निकाला।

मेघ बरसानेकी इस क्षमता पर ध्यान दीजिये। कल्पना कीजिये कि हमलोग मेघ बरसना उसी प्रकार जान जाते हैं जैसे बटन दबाकर रोशनी कर लेना या हवा पैदा कर लेना। इससे सुविधा कितनी बढ़ जायगी? मगर इससे उलझनें भी कितनी ही बढ़ेंगी। मेघों पर अधिकार जमानेके लिए परस्पर झगड़ा भी होने लगेगा और फिर उसकी खरीद बिक्री भी हो तो असम्भव नहीं। कवि बिचारे तो मारे जायेंगे, जो सावनकी झड़ीको देखकर फुलझड़ी बन जाते हैं। अब तो हर दिन सावन रहेगा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# त्रिपुरा राज्य और पाकिस्तान

श्री जीवन

लगभग एक वर्ष पहलेकी बात है, जब देशका अन्तिम रूपसे विभाजन भी नहीं आ था, त्रिपुरा राज्यने स्वेच्छासे भारतीय संघमें सम्मिलित होना स्वीकार किया था और भारतीय विधान परिषद्में अपनी तथा अपने पड़ोसी मणिपुर स्टेटकी ओरसे एक प्रतिनिधि भी भेज दिया था। विभाजन योजनाको मानते समय ही भारत और पाकिस्तान दोनों ही देशोंने यह बात स्वीकार कर ली थी कि कोई भी देशी राज्य स्वेच्छासे किसी भी देशमें शामिल हो सकता है। जिस समय त्रिपुरा राज्य भारतीय संघमें शामिल हुआ था, उस समय इस कार्यके विरुद्ध न तो पाकिस्तान सरकारने ही आवाज उठायी थी और न लीगी नेताओंने ही किसी प्रकारका विरोध प्रकट किया था। पर, बादमें पूर्वी पाकिस्तानके कुछ लीगियोंके दिमागमें यह बात घर कर गयी कि त्रिपुरा राज्यका भारतीय संघमें सम्मिलित होनेका कार्य अनुचित है और उसे, अपना पूर्व निर्णय परिवर्तित कर, पुनः पाकिस्तानमें शामिल हो जाना चाहिये।

और, अपनी इस उद्देश्य-पूर्त्तिके लिए लीगियोंने तैयारियां आरम्भ कर दीं। महीनोंसे त्रिपुरा राज्यपर आर्थिक घेरा डाला जाता रहा है। उसके आस-पासके इलाकोंमें 'प्रवासी' के नाम पर खूंखार मुसलमानोंको बसाया जाता रहा है, उन्हें सैनिक शिक्षा दी जाती रही है। राज्यके चारों ओर रहनेवाले मुसलमानोंको त्रिपुरा पर आक्रमण करनेके लिए उस-काया जाता रहा है। जगह-जगह सभाएं करके, वस्तुस्थिति पर पर्दा डालकर 'भोली-भाली' मुसलमान जनताको बरगलाया जाता रहा है। इस प्रकार त्रिपुरा राज्यको पाकिस्तानमें शामिल करनेके लिए सभी सम्भव उपाय काममें लाए जाते रहे हैं।

प्रायः छः महीने पहले, जूनागढ़में भाषण करते हुए भारतके देशी राज्य विभागके मन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेलने त्रिपुराके सम्बन्धमें लीगियोंकी ऐसी ही हरकतों की ओर संकेत करते हुए पाकिस्तानको चेतावनी दी थी कि भारत सरकार एक साथ सर्वत्र पैदा की गयी गड़बड़ीको दूर करनेमें समर्थ है। और, उसीके लगभग त्रिपुरा राज्यकी रानीकी प्रार्थना पर लीगियों की हरकतें-बेजाको रोकनेके लिए भारतीय सेना त्रिपुरा राज्यकी सहायताके लिए भेज दी गयी थी।

कुछ दिनों तक लीगी, उनके मुस्लिम नेशनल गार्डवाले तथा गुण्डे फिर शान्त रहे, मगर बादमें चलकर उनकी कारर-वाइयां पहले जैसी होने लगीं। त्रिपुरा राज्यके ऋषिमुख गांव पर पूर्वी पाकिस्तान की ओरसे आक्रमण भी किया गया, जिसके सम्बन्धमें गत ३१ मार्चको भारतीय पार्ल-मेण्टमें प्रश्न पूछे गये थे और उत्तरमें भारतके महामन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरूने कहा था कि उक्त आक्रमणसे कितनी क्षति हुई है, इसका ठीक-ठीक सरकारको पता नहीं है और आंकड़े प्राप्त हो जाने पर भारत सरकार उचित काररवाई करेगी।

इसके बाद पुनः लीगी कुछ दिनों तक प्रत्यक्ष रूपसे शान्त-से रहे, यद्यपि परोक्ष रूपसे उनकी काररवाई जारी रही। किन्तु अब फिर लीगियोंने ऊधम मचाना शुरू किया है। त्रिपुरा राज्यके दीवान श्री अवनीभूषण चटर्जीको जब यह खबर मिली कि बल्ली (पूर्वी पाकिस्तान) के मुस्लिम नेशनल गार्डोंने पिछले चार महीनों से त्रिपुरा राज्यके खोवाई तहसीलकी आर्थिक नाकेबन्दी कर रखी है, तो उन्होंने गत ९ जूनको उस क्षेत्रका दौरा किया। वहांके प्रमुख नागरिकों एवं कांग्रेस कमेटीके अधिकारियोंने दीवान साहबको वस्तु-स्थितिका ज्ञान कराया है। स्मरण रहे कि हाल हीमें जो अन्तर-उपनिवेश सम्मेलन के निर्णय हुए थे, उनके विरुद्ध यह नाके-बन्दी की गयी है और नेशनल गार्डवाले सुनिश्चित योजनाके सार अपने राज्यसे त्रिपुरा जानेवाली आवश्यक वस्तुओंको रोक रहे हैं। इस क्षेत्रकी जनताकी कठि-नाइयोंको दूर करनेके लिए त्रिपुराकी राजधानी अगरतल्लासे पिछले कुछ सप्ताहों से हाथियों पर मशीन, नमक, किरासिन तेल आदि वस्तुएं लादकर पहुंचाई जा रहीं हैं।

यद्यपि श्री चटर्जीने पूर्वी बंगालके प्रधान मन्त्री ख्वाजा नजीमुद्दीनको इस सम्बन्धमें सूचना दे दी है और इसी सिल-सिलेमें दो मामले भी दायर किये गये हैं, परन्तु इन कार्योंसे कुछ होने-जानेको नहीं है। सच तो यह है कि इन लीगियों, उनके गुंडों तथा मुस्लिम नेशनल गार्डवलोंके पीछे पाकिस्तान सरकारका भी, परोक्ष रूपसे हीं सही हाथ रहा है और वह भी चाहती है कि त्रिपुरा बाध्य होकर पाकि-स्तानमें शामिल हो जाये।

त्रिपुराके सम्बन्धमें ऐसा करनेके कई कारण हैं। एक तो भारतवर्षका 'मुसलमानी' राष्ट्र पाकिस्तान सिर्फ पाकि-स्तान पाकर ही सन्तुष्ट नहीं हुआ है, बल्कि उसकी मंशा सारे भारतवर्ष पर अधिकार करनेकी है। इतना ही नहीं, अन्य मुस्लिम राष्ट्र भी मिस्रसे लेकर हिन्देशिया तक 'मुस्लिम साम्राज्य' स्थापित करनेका सपना देख रहे हैं। फिलस्तीनके मामलेमें हमने अभी देखा है कि यद्यपि फिलस्तीनका प्रश्न वहांके अरबों और यहूदियोंका आन्त-रिक प्रश्न है—घरेलू सवाल है, फिर भी अड़ोस-पड़ोसके सभी अरब राष्ट्र सैनिक सहायता करने लगे और प्रायः सभी मुस्लिम राष्ट्रोंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपसे अरबोंके प्रति अपनी दिलचस्पी दिखायी एवं सहानुभूति प्रदर्शित की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्षमें पाकिस्तानकी स्थापना हो जानेके बाद पाकिस्तानियोंका नया नारा—'हंसके लिया पाकिस्तान; लड़के लेंगे हिन्दुस्तान'—बन गया है। और, हमने देखा है कि जूनागढ़के मामलेमें पाकिस्तानने अनेक बाधाएं उपस्थित करनेकी चेष्टा की; काश्मीर पर तथाकथित लुटेरोंको प्रोत्साहन एवं सहायता देकर आक्रमण करा दिया और अब, जब लूटेरोंकी हार-पर-हार होनेके कारण हिम्मत पस्त हो रही है, तो पाकिस्तानी फौजके कई बटालियन काश्मीरी मोर्चे पर लड़नेको भेज दिये गये हैं। पाकिस्तान द्वारा दक्षिणमें हैदराबादको स्वतन्त्र रहनेके लिए उकसाया जा रहा है, निजामकी-पीठ ठोकी जा रही है और उसकी समस्या अभीतक शान्तिपूर्ण ढगसे हल होती नजर नहीं आ रही है, यद्यपि भारत सरकारके पास इतनी शक्ति है कि वह (यदि चाहे) हैदराबाद की समस्याको युद्धके द्वारा वर्षों नहीं, महीनों नहीं, दिनों और सप्ताहों में सुलझा दे।

और, इधर पूर्वी पाकिस्तानवाले चाहते हैं कि आसामपर भी उनका कब्जा हो जाय। किन्तु उनकी इस इच्छा-पूर्त्तिके मार्गमें त्रिपुरा राज्य बाधक है,क्योंकि वह आसाम और और पूर्वी बंगालके बीच 'बाजू' की स्थिति प्रदानकर पूर्वी बंगालकी आसामपर वक्र-दृष्टि रखनेसे रोकता है। अतः वे त्रिपुराको पाकिस्तानमें सम्मिलित कराना आवश्यक समझते हैं।

इसके अतिरिक्त, यह तो प्रायः सभी को मालूम ही है कि आर्थिक दृष्टिसे पाकिस्तान एक कमजोर राष्ट्र है और फिर पूर्वी पाकिस्तान तो और भी कमजोर है। वहां कोयला, लोहा और तेलका अभाव है। अपने क्षेत्रके लोगोंकी खाद्य-समस्याको को भी वह खुद हल नहीं कर सकता। साथ ही, वह घनी आबादीवाला भाग है, जब कि त्रिपुरा घनी आबादीवाला क्षेत्र नहीं। त्रिपुरामें लोहा, कोयला और तेल पाया जाता है। साथ ही खाद्यान्नकी दृष्टिसे वह बचतवाला क्षेत्र है। त्रिपुराके जंगलोंमें जो चीजें पायी जाती हैं, उनसे भी पूर्वी पाकिस्तानको काफी लाभ होनेकी संभावना है।

उपर्युक्त बातोंको और स्पष्ट करनेके लिये त्रिपुराकी भौगोलिक एवं आर्थिक स्थितिपर थोड़ा प्रकाश डालना अच्छा होगा।

त्रिपुरा राज्यका क्षेत्रफल लगभग ४०४९ वर्ग मील है और उसकी आबादी ५१३०१० है। वहां २५ प्रति शतसे भी कम मुसलमान बसते हैं। उसके उत्तर और पूरबमें आसामका कछार तथा लुशाई पर्वतीय जिले हैं। दक्षिणमें चटगांव हिल ट्रैक्ट और पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिममें पूर्वी बंगालके सिलहट, टिपरा और नोआखाली जिले हैं। राज्यमें अधिकतर जंगली जातिके लोग बसते हैं। बंगाली जहां-तहां फले हैं।

वहां, धान, तेलहन तथा अन्य खेतीसे होनेवाली पैदावारें होती हैं। और वह इन वस्तुओंकी दृष्टिसे बचतवाला भू-भाग है। राज्यके जंगलोंमें टिंबर, बांस, बेल, अन्य प्रकारकी लकड़ियां और घास-फूस काफी मात्रामें पाये जाते हैं। वहांकी खनिज संपत्तिका न तो ठीकसे पता ही लगाया गया है और न उससे विशेष फायदा ही उठाया गया है। मगर, विशेषज्ञोंके मतानुसार राज्य खनिज संपत्तिका भंडार है। बर्मा आयल कंपनीने एक स्थानकी परीक्षाकर बताया है कि वहां पेट्रोलका सोता है और वह राज्यके अधिकारियोंसे तेलका ठीका लेनेके लिये बात कर रही है। त्रिपुरा घनी आबादीवाला क्षेत्र नहीं है।

फिर ऐसे राज्यपर पूर्वी पाकिस्तानकी दृष्टि क्यों न पड़े और उसके मुंहसे उसे हथियानेके लिये लार क्यों न टपके? यही कारण है कि लीगी इस राज्य को पूर्वी पाकिस्तानमें मिला लेनेके लिये जी-तोड़ कोशिशें करते आ रहे हैं, यद्यपि न तो वहांकी जनता और न शासक ही पाकिस्तानमें सम्मिलित होना चाहते हैं।

किन्तु, लीगियों और पूर्वी पाकिस्तानके अधिकारियोंको यह अवश्य याद रखना चाहिये कि भारत सरकार और पश्चिमी बंगाल एवं आसाम प्रान्तीय सरकारें उन की मंशा पूरी नहीं होने देंगी।


अत्यधिक सस्ता कीमतों में

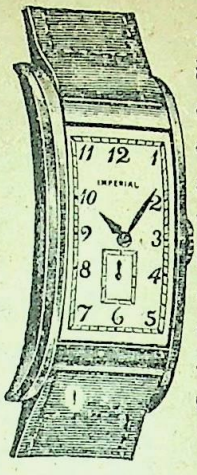

ऊंचे दर्जे की ठीक समय देने वाली, आधुनिक आकार की घड़ियां। प्रत्येक घड़ी की गारण्टी २ साल। गोल या चौकोर आकार की क्रोमियम केस १८), सुपीरियर २०), वेस्ट २२), मटर सेकंड २४) रेक्टंगुलर क्रोमियम केस ४०), १५ जवेल ६०) रोल्ड गोल्ड ५५), १५ जूएलकी ८०)। डाकखर्च माफ।

प्रेमशङ्कर एण्ड कं०
(V.C.) एशबाग, लखनऊ।

MONSOON
SETS IN
Anopheles breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मले रिया बुखारके लिये रामबाण है। अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियास कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद व कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
Kasaya

KAVIRAJ N.N.SEN & CO. LTD.
CALCUTTA


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कहानी---

# फ्री मैसन

श्री रावी

घटना ६ हजार वर्ष पहले की है।

शासन और सभ्यताके दृष्टिकोणसे मिस्र देशकी गणना उन दिनों संसारके समृद्ध देशोंमें होती थी। भूमध्य सागरके असीरा नामक छोटे-से द्वीपका शासन कुछ ही पहले मिस्रकी अधीनतामें आया था। असीराका शासक बड़ा अत्याचारी और पाशविक था; उसकी प्रजा आय दिन उसके विरुद्ध विद्रोह करती रहती थी। ऐसे ही एक जन-विद्रोहके फलस्वरूप असीरा पर मिस्रके शासकको आक्रमण करना पड़ा था और उसीमें अत्याचारी राजाकी मृत्यु हो गयी थी। मिस्रके शासनकी छत्र-छायामें असीराकी शान्ति और समृद्धिका आभास दीखने लगा था। इस कथाके लिए इतनी ही पृष्ठ-भूमिका य'

*

भव्य पिरैमिडोंके देश मिस्रमें---यह देश इस कथाके अनुसार उस समय भी पिरैमिडोंका देश था, यद्यपि आजके अधिकांश इतिहासकार मिस्रके पिरैमिड-भवनोंकी इतनी लम्बी आयु माननेके लिये तैयार नहीं हैं---नील नदीके किनारे बसा हुआ विशाल नगर पिरोसा था।

पिरोसा नगरके उस कोनेमें, जहां अपेक्षाकृत निर्धन और निम्नश्रेणीके लोग रहते थ, एक शाम एक नवयुवकने एक घरके द्वार पर थपकी दी।

घरके मालिक, एक अधेड़ आयुके पुरुषने द्वार खोला। उसने देखा, बाहर चिथड़े लपेटे एक थका-मांदा, लेकिन सुन्दर नवयुवक खडा है।

"रातका भोजन और विश्राम चाहता हूं। हो सके तो जीवन-निर्वाहके लिए कोई मजदूरी भी। आप दे सकेंगे?" नवयुवक ने याचना की।

"अवश्य मिलेगा। लेकिन तुम्हारा नाम, निवासस्थान, परिचय?"

"यह न पूछिये। जानने पर शायद आप मुझे एक रातका भोजन और विश्राम भी अपने घरमें न दे सकेंगे। इन्हीं प्रश्नोंका उत्तर न देनेसे मुझे किसीने स्थान नहीं दिया। क्या बिना ये बातें जाने आप भी भी मुझे एक रातका आश्रय नहीं दे सकेंगे?"

"दे सकूंगा" भद्र पुरुषने क्षणभर सोचनेके बाद कहा, "तुम चोर तो नहीं हो?"

"नहीं।"

"बन्दीगृहसे छूटकर भागे हुए अपराधी तो नहीं हो?"

"नहीं"

"किसीके खरीदे हुए दास तो नहीं हो?"

"नहीं"

"तब आओ। तुम मेरे सम्मानित अतिथि होगे। देखनेमें भी तुम मुझे सुन्दर सुसंस्कृत और आकर्षक जान पड़ते हो।"

नवयुवक निशोरस अपने आश्रयदाता साइलसके परिवारका एक प्रिय सदस्य बन गया। निशोरस असीराके अत्याचारी राजा नाइशोरसका पुत्र था। नाइशोरसके सपरिवार निधनके पश्चात् अपनी प्रजाके घातक निशानोंसे बच कर वह किसी प्रकार मिस्र देशमें भाग आया था।

साइलसने जब राजकुमार निशोरस का यह परिचय जाना तो बड़ी प्रसन्नता हुई और अपने आश्रयदानको उसने राज और समाजके नियमोंके सर्वथा अनुकूल और नैतिकतापूर्ण बताकर निशोरसको अभय कर दिया।

"इस परिचयमें तो कोई ऐसी बात नहीं है जिसके कारण मिस्र देशका कोई भी सदस्य तुम्हें आश्रय देनमें हिचक करता। असीराकी प्रजा या राज-परिवारके किसी भी व्यक्तिसे मिस्र-निवासीकी कोई शत्रुता नहीं है, बल्कि अब तो दोनों देशोंके बीच सहयोग और भ्रातृभावका बन्धन और भी दृढ़ हो गया है। अपने पिताके अत्याचारोंके लिए तुम तनिक भी उत्तरदायी नहीं हो। असीराके एक श्रेष्ठ नागरिकके रूपमें तुम मिस्रकी प्रजा और शासक वर्ग, दोनोंके लिए आदरणीय हो।" साइलसने अपना मत प्रकट किया।

विदेशियोंके लिए मिस्र देशका प्रमाणित नागरिक बननेके लिए उन दिनों यह आवश्यक था कि वे अपनी हैसियत, रुचि और योग्यताके अनसार किसी-न-किसी सामाजिक सभा संगठनके सदस्य बन जायें।

नियमानुसार साइलसने निशोरसको एक समाज विशेषका सदस्य बनानेके लिए प्रस्तुत किया।

"निशोरस!" निशोरसके कानमें उस समाजके सभा-मन्दिरमें पहली बार लाये जाने पर एक अपरिचित स्वर पड़ा।

"तुम हमारे समाज विशेषमें सम्मिलित होना चाहते हो, किस उद्देश्यसे?"

"मनुष्योंके एक आदरणीय समाजमें सम्मिलित होनेके उद्देश्यसे, मनुष्यकी सेवा करने और इसके लिए अपने भीतर योग्यता जगानेके उद्देश्यसे।" निशोरसका उत्तर था।

"उद्देश्य तुम्हारा आदरणीय है, लेकिन जिन मनुष्योंके समाज विशेषमें तुम सम्मिलित होना चाहते हो, क्या उन्हें देख भी रहे हो?"

"नहीं, क्योंकि मैं अंधकार में हूं।"

निशोरसके चारों ओर सभाके प्रथम प्रवेशके नियमानुसार, सचमुच अन्धकार का एक पर्दा था और वह सभाकी उपस्थिति और दृश्यको नहीं देख सकता था

"इस सभा-मन्दिरके बाहर भी, जहां से तुम अभी आये हो, क्या ऐसा प्रकाश नहीं था, जिसमें तुम मनुष्योंको देख सकते?"

"नहीं, इस मन्दिरके बाहर भी ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रकाश नहीं था, जिसमें मैं मनुष्योंको देख सकता। बाहरके प्रकाशमें मैं केवल मनुष्योंके ऊपरी शरीरको ही देख सकता था, मनुष्योंको नहीं।"

"तब तुम मनुष्योंको देखनेकी आशा किसके सहारे करते हो ?"

"प्रकाशके सहारे।"

"प्रकाशके सहारे यदि तुम मनुष्योंको देख सकोगे तो उनके साथ क्या करोगे ?"

"उनसे प्रेम और उनकी सेव।"

"उनसे प्रेम और उनकी सेवा के लिए क्या तुम सौ वर्ष जीवित रहनेकी प्रतिज्ञा करते हो ?"

"ऐसा करनेमें असमर्थ हूं।"

"पचास वर्ष ?"

"असमर्थ हूं।"

"पांच वर्ष ?"

"असमर्थ हूं।"

"पांच दिन ?"

"असमर्थ हूं।"

"पांच घण्टे ?"

"जीवित तो पांच पल भी रहनेकी कोई प्रतिज्ञा नहीं कर सकता। जीवन अनिश्चित है मृत्यु किसी भी क्षण आ सकती है।"

"तब तुम किस प्रकार उनसे प्रेम और उनकी सेवा करनेकी आशा रखते हो ?"

"मैं जीवनमें और इस जीवनके पश्चात् मृत्यमें उनसे प्रेम और उनकी सेवा करनेकी आशा रखता हूं।"

"तुम्हारी आशा प्रशंसनीय है; लेकिन क्या तुम्हें जीवनके पश्चात् मृत्य की दशाका अनुभव और उस दशामें प्रेम और सेवा करनेका अभ्यास है ?"

'नहीं है, लेकिन मैंने सुना है कि मित्र देशमें प्रत्येक ऐसे मनुष्यको, जो युवावस्था पर पहुंचकर, मनुष्योंके किसी आदरणीय समाजमें सम्मिलित होने आता है, इस प्रकारका अनुभव और अभ्यास कराया जाता है।"

"तुमने जो सुना, ठीक है। भौतिक जीवन और भौतिक मृत्यु मनुष्यके जीवन के ही दो, एक के बाद एक चलनेवाले, युग हैं। पहला उसके जीवनकी रात है, दूसरा दिन है। पहलेमें अपेक्षाकृत अन्धकार है, दूसरेमें अपेक्षाकृत प्रकाश। दिन रातकी भांति दोनोंका क्रम, मनुष्यके जीवनके महायुग की पूर्णता तकके लिये अटल है। सारी मानवता एक है, एकके अन्धकारमें सबका अन्धकार है और एकके प्रकाशमें सबका प्रकाश। कोई मनुष्य अकेले अपने लिए स्थायी प्रकाश या इस प्रकाश-अन्धकार-चक्रके बन्धनसे छुटकारा नहीं पा सकता और इसीलिए, मनुष्यके लिए, दूसरोंकी सेवामें ही अपनी सेवा और दूसरोंके कल्याण में ही अपना कल्याण है। मनुष्यके कल्याण के लिए विश्वकर्मा 'एमन-रा' (परमात्मा) का एक निश्चित विधान है। उस विधान का, निशोरस, क्या तुम साक्षात्कार करना चाहते हो ?"

"हां, चाहता हूं।"

"तुमने अपने किस उपकरणके सहारे देखनेका अभ्यास किया है ?"

"आंखोंके सहारे।"

"किस उपकरणके सहारे सुननेका अभ्यास किया है ?"

"कानोंके सहारे।"

"किन साधनोंके सहारे सजग और और गतिशील होनेका अभ्यास किया है ?"

"सूर्यताप, विद्युत शक्ति, माध्याकर्षण शक्ति आदि भौतिक शक्तियोंके सहारे।"

"तब इसी प्रकार तुम जीवनके अन्धकार-कालीन देखने-सुननेके उपकरणों और गतिशील होनेके साधनोंकी भांति मृत्युके प्रकाशकालीन देखने सुननेके-उपकरणोंसे देखो सुनोगे और गतिशील होनेके साधनोंसे गतिशील होगे। तुम्हारे जीवनके उस प्रकाशकालीन युगके लिए तुम्हारे ये उपकरण अधिक सूक्ष्म और तीव्र होंगे और उसके साधनोंके रूपमें सौर मण्डलकी सूक्ष्म और तीव्रतर शक्तियोंसे तुम काम लोगे, क्योंकि तुम्हारे इस भौतिक जीवनके उपकरण और साधन तुम्हारे व्यापक जीवनके उपकरणों और साधनों की ही छाया है। क्या तुम अपने उन उपकरणों और उन साधनोंका उपयोग सीखने के लिए आवश्यक परिश्रम करनेको तैयार हो ?"

"तैयार हूं।"

"वह परिश्रम तुम किस रूपमें करोगे

"अपनी बुद्धिके अनुसार प्रतिदिन यमित अध्ययन, चिन्तन और मनुष्योंकी सेवाके रूपमें, जब तक कि उसकी कोई विशेष विधि मुझे न मिल जाय।"

"तुम्हारा निश्चय सराहनीय है अपने नये उपकरणों और साधनोंका उपयोग सीख लेनेपर तुम मनुष्यमात्रसे और विशेषतया इस समाजके अपने बन्धुओंसे किस प्रकार मिलोगे ?"

"समताके धरातलपर।"

"किस प्रकार व्यवहार करोगे ?"

"सत्य और सिधाईके स्तम्भपर।"

"और किस प्रकार अलग रहोगे ?"

"सीधे, समकोणपर फटनेवाले मार्गोंपर।"

"तब तुम युवावस्था प्राप्त और स्वतंत्र मनुष्योंके इस समाजमें सम्मिलित होनेके योग्य हो। मानव-जगत् और मानव हृदयके कुछ गूढ़ रहस्य इस समाजकी सदस्यताके अलक्ष्यमें तुम्हें बताये जायेंगे। क्या तुम प्रतिज्ञा करते हो कि निष्प्राण जिज्ञासा और छिछले कुतूहलके आगे हमारे समाजके नियमोंके विरुद्ध किसीके सामने उन रहस्योंका उद्घाटन करके उन रहस्योंका अपमान और दुरुपयोग न करोगे ?"

"मैं प्रतिज्ञा करता हूं।"

"तब तुम्हें हमारे इस आदर-प्राप्त समाजके परम्परागत नियमानुसार आवश्यक शपथ लेनी होगी। वह शपथ तुम्हारे किसी भी सामाजिक, नैतिक, और धार्मिक कर्तव्यमें बाधक नहीं होगी। तुम इसके लिए तैयार हो ?"

"तैयार हूं।"

"तब तीन पग आगे बढ़ो" निशोरसको आदेश मिला, और उस तीन पगकी यात्राम वह अंधकारके उस घेरेसे निकलकर, जिसके बाहर उसकी दृष्टि भी नहीं जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पाती थी, अब प्रकाशमें आ गया।

सभा-मंदिरके प्रधान आसनपर दृष्टि पड़ते ही उसने देखा, उसका उदार आतिथ्यकार साइलस ही उस समय सभाके प्रधान पदपर आरूढ़ था और जो अधिकारी अबतक उसके साथ प्रश्नोत्तर कर रहा था। वह पिरोसा प्रान्तका प्रधान शासक राजप्रतिनिधि था। सभाकी भव्यता से उसकी आंखें चकाचौंध हो गयीं।

निशोरसको विधिवत् संस्कारके साथ उस सभाके सदस्योंमें सम्मिलित कर लिया गया।

* * *

निशोरसका नाम इस समाजकी देशव्यापी शाखाओंमें तेजीके साथ फैल गया। समाजकी क्रियाओंमें उसकी गति तीव्रतासे बढ़ चली। शीघ्र ही इस समाजकी राजधानी-शाखासे उसके लिए निमंत्रण आया, राजधानी-शाखाके प्रथम समारोहमें सम्मिलित होनेके लिए जाते समय सभा-द्वारके द्वारपालने निशोरसको रोक कर, समीपवर्ती दूसरे द्वारकी ओर संकेत करके कहा:—

"निशोरस, मिस्र-सम्राट्के साथ आजके सभा-भोजमें भोजन भोजन करने वालोंका मार्ग उस द्वारसे है और भोजन परोसनेवाले सेवकोंका मार्ग इस द्वारसे है। निश्चय ही आज मिस्र सम्राट् तुम्हारे प्रथम-मिलनकी प्रतीक्षामें हैं।"

"लेकिन मैं तो परोसनेवालोंकी पंक्तिमें सम्मिलित होना चाहता हूं, द्वारेश!" निशोरसने कहा और द्वारपालकी हटि हुई तलवारसे मार्ग पाकर उसी द्वारमें प्रविष्ट हो गया।

सभाकी कार्यवाही समाप्त होनेपर सभा-भोज प्रारम्भ हुआ। परोसनेवालोंमें ही द्वारपाल निशोरसका निकटतम सहकारी था। पहली पंगतमें भोजन करनेवाले प्रजावर्गके व्यक्ति थे और परोसनेवाले शासकवर्गके। दोनों वर्गोंका भोज समाप्त होनेपर जब सब सभा-भवनसे बाहर आये तब निशोरसको नियमित अभिवादनोंके साथ सबका परिचय भी मिला। वह द्वारपाल और कोई नहीं स्वयं मिस्र-सम्राट् पैरोव्ह ही थे!

मिस्र-सम्राटने निशोरसकी पात्रतासे संतुष्ट होकर अगले मास ही उसे असीराका प्रतिनिधि-शासक बनाकर असीराके राज्य पर बिठा दिया और प्रजाका सच्चा सेवक बनकर उसने अपने पिताको प्रजा-ऋणसे बहुत कुछ मुक्त कर लिया।

निशोरस और पैरोव्हके उस समाज-विशेषका मिस्र देशकी उन दिनोंकी भाषामें जो नाम था, उसे वर्तमान विश्वभाषामें 'फ्री मैसोनिक सोसाइटी' कहते हैं। और तबसे अबतक इस कल्पित कथाके अनुकूल ही यह सोसाइटी सारे मानव-संसारमें सजीव और सक्रिय चली आती है और उसके सदस्य 'फ्री मैसन' कहलाते हैं।

---

# डालरकी कमी और भारत

श्री रामलोचनप्रसाद सिंह बी० ए०

संसारके प्रत्येक कोनेसे आज यही सुननेमें आता है कि डालरका मिलना बड़ा ही कठिन हो गया है और संसारके सभी देशोंसे अमेरिका ही सबसे धनी है। उसके पास इतना धन है कि दूसरे देश इसके बिना बड़ी ही कठिनाइयां सह रहे हैं। यूरोप महाद्वीपके लगभग सभी देश इस कठिनाईके कारण अमेरिकाकी ओर आशाभरी दृष्टि से देख रहे हैं कि यदि अमेरिका उनको शीघ्र से शीघ्र सहायता करता है तब तो उनकी आर्थिक स्थिति निकट भविष्यमें सुधर सकती है, अन्यथा उन देशोंमें बेकारी तथा उसके परिणामस्वरूप अन्य भयंकर परिस्थितियां उत्पन्न हो जायंगी। एशिया के चीन और जापान जैसे देश भी अपनी आर्थिक अवस्था सुधारनेके लिए अमेरिका का ही मुंह देख रहे हैं। ऐसी विषम परिस्थितिमें सबसे पहले इस बातको जानने और समझनेकी आवश्यकता है कि 'डालर की कमी' का क्या अर्थ है। क्या डालर नामका सिक्का प्रचुर मात्रामें ही नहीं है? या यदि इसकी कमी है, तो उसकी अधिक संख्या क्यों नहीं तैयार करा ली जाती, जिससे यह विश्वव्यापी आधुनिक संकट दूर किया जा सके?

संसारका अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिक्कोंकी सहायतासे कम होता है। बल्कि एक देशको प्राय दूसरे देशका माल खरीदनेके लिए अपने देशकी बनी चीजोंको भेजना होता है और उसके बदलेमें वहांकी वस्तुएं खरीदी जा सकती हैं। परन्तु द्वितीय महासमरके दीर्घकालमें, जो १९३९ से १९४५ तक बराबर चलता रहा, इस व्यापारिक वातावरणको काफी हानि पहुंची है। यूरोप महाद्वीपके बहुतसे देश इस युद्धमें इस प्रकार नष्ट हो गये कि उनका उत्पादन बिल्कुल बन्दके बराबर ही रहा। युद्धके कारण उत्पादन-क्षेत्रोंका नाश भी हो गया। लोगोंका एक स्थानको छोड़ दूसरे स्थानों को अपनी जान बचानेके लिए भागना, शत्रुसे लड़ना और अपनी सम्पत्ति तथा मर्यादाकी रक्षा करना इत्यादि ऐसे विकट प्रश्न उठ खड़े हुए, जिनके सम्मुख सारा काम ही बन्द हो गया। जर्मनी फ्रांस, इंगलैण्ड रूस आदि सभी देशोंका यही हाल रहा।

इधर यूरोपके देशोंका यह हाल रहा। उधर अमेरिकाकी उत्पादन शक्ति युद्धके पहले तो अच्छी रही युद्धकालमें भी उत्पादन बराबर बढ़ता ही गया।

पर्ल हारबर बन्दरगाहकी घटनाके पूर्व अमेरिका यूरोपके देशोंसे डालर लेकर उन्हें सामान देता गया, किन्तु उसके पश्चात् उसने उधार-पट्टा पर ही सामान देना प्रारम्भ कर दिया, क्योंकि अब उसका उद्देश्य धुरी राष्ट्रोंको हराना ही हो गया। इस नवीन परिस्थितिमें अमेरिकाको अपनी उत्पादन शक्ति और बढ़ानी पड़ी। मिलों तथा कारखानोंमें पहलेसे अधिक घंटे काम होने लगे। खेतीमें भी विशेष उन्नति की गयी। इस प्रकार खेती तथा व्यवसायके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सभी सामान प्रचुर मात्रामें तैयार किये गये। यह उद्योग युद्धकालमें तथा उसके पश्चात् भी बराबर जारी रहा।

युद्ध समाप्त होने पर यूरोप तथा एशियाके सभी देशोंने अपनेको एक विचित्र परिस्थितिमें पाया। न तो उन के पास काफी सोना या चांदी ही शेष और न ऐसे सामान ही काफी तैयार हो सके, जिनकी आवश्यकता अमेरिकाको थी। इस युद्धमें अमेरिका जल स्थल तथा वायु युद्धमें हर प्रकारसे बचा रहा। उसके उत्पादन केन्द्र बराबर काम करते रहे। अपनी कठिनाईको दूर करनेके लिए इंगलैण्डने अमेरिकासे कर्जका एक समझौता किया जिसमें अमेरिकाने इंगलैण्डको कर्जके रूपमें सहायता देनेका वचन दिया। उस समझौते की एक शर्त यह थी कि पौंड डालरमें परिवर्तित किया जा सकेगा। इस समझौतेका परिणाम यह हो गया कि जिन जिन राष्ट्रों का इंगलैंड पर कर्ज था, उन्होंने चाहा कि अपने अपने पौंडको डालरमें बदल कर अमेरिका से आवश्यक सामग्री खरीद लें। समझौतेका समाचार पाकर सभी देश अमेरिकासे सामान लेने दौड़े। इंगलैण्ड ने देखा कि इस प्रकार उसका सारा कर्ज का डालर, जो उसने अपनी आर्थिक स्थिति सुधारनेके लिए लिया है, दूसरे देशोंका कर्ज चुकानेमें ही समाप्त हो जायेगा, इसलिए इंगलैण्डने समझौता होनेके एक ही सप्ताहके बाद पौंडको डालरमें बदलनेसे रोक दिया, जिससे और देश उस कर्जके पौंडसे डालर पाकर अमेरिकासे सामान न खरीद सकें। जब इंगलैण्डने ऐसा किया और अमेरिकाके व्यापारको धक्का पहुंचा तब अमेरिकाने इंगलैंडको बाकी कर्ज देना बन्द कर दिया।

ऐसी हालतमें इंगलैण्डने अपने महाजन देशोंसे यह अपील की कि वे जहां तक संभव हो, अमेरिकाका सामान खरीदनेकी कोशिश न करें। अंग्रेजोंने अब अपने निर्यातको बढ़ा कर अपनी आर्थिक हालत सुधारनेका निश्चय किया है, भले इसके लिए उन्हें कष्ट ही क्यों न हो।

इधर युद्धके पश्चात् भारत स्वतन्त्र हो गया। परन्तु स्वतन्त्रताके बाद यहां भयंकर उपद्रव हुए, जिससे यहांकी स्थिति और खराब हो गयी है। लाखोंकी संख्यामें लोगोंको अपना घर-बार छोड़ कर दूसरे दूसरे स्थानों पर जाना पड़ा है। यातायातके साधन बिल्कुल खराब कर दिये गये। जिन केन्द्रोंमें सामान तैयार होते थे, वे श्मशानके रूपमें बदल दिये गये। किसीका किसी पर विश्वास न रहा। एक तो भारत यों ही व्यापारकी दृष्टिसे अन्य देशोंकी अपेक्षा बहुत पिछड़ा है और दूसरे उसे अपनी आर्थिक अवस्था ठीक करनेके लिए बाहरके देशोंसे आवश्यक मशीनें तथा कुशल कारीगर लाने हैं।

देश-विभाजनकी दुर्घटनाके बुरे परिणाम भुगतने पड़े। इम्पायर डालर पूल और पौंड पावनासे कुछ ऐसे सामान खरीदे गये, जो उतने आवश्यक न थे, जितनी मशीनें आदि। इसलिए शीघ्र ही सुन्दर और मनको लुभानेवाली चीजोंका आयात बाहरसे बन्द कर दिया गया, ताकि उसका इस प्रकार अपव्यय न हो सके।

भारत भी अमेरिकासे मशीनें तथा उत्पादनके अन्य सामान खरीदना चाहता है। भोजनकी सामग्री भी अमेरिकासे लेनी है। इसके लिए डालरकी आवश्यकता है। भारतने इस युद्धकालमें ब्रिटेनको कुछ सामान दिये थे और इस प्रकार ब्रिटेन भारतका १७३३ करोड़ रुपयेका कर्जदार हो गया था। इधर कुछ सामान भारतने ब्रिटेन और अमेरिकासे लिये हैं और अब भारत का ब्रिटेन पर केवल १५२२ करोड़ रुपयेका कर्ज रह गया है। लेकिन वह अभी भारतको नहीं मिल रहा है। वह डालर में अभी नहीं बदला जा सकता। उसीके सम्बन्धमें कुछ दिनों पहले एक ब्रिटिश शिष्ट-मंडल दिल्लीमें जेरमी रेजमैनके नेतृत्वमें आया था और उसके फलस्वरूप ६ माहके लिए समझौता हुआ, जिसमें यह तय हुआ कि भारतको १८० लाख और शीघ्र मिलेगा। परन्तु इतना तो निश्चय ही है कि अभी निकट भविष्यमें वह शेष रकम भारतको नहीं मिल रही है। हमें अधिकतर अपने पैरों पर ही खड़ा होना है। इसके लिए केवल एक ही साधन है, वह है अपने देशमें खेती तथा व्यवसायके उत्पादनको शीघ्रसे शीघ्र बढ़ाना। हमारे अर्थमंत्रीने भी इसी बातकी जोरदार अपील की है।

अमेरिकन सरकारके अर्थमंत्री श्री मार्शल ने यूरोपकी सहायताके लिए एक योजना बनायी है, जो मार्शल योजनाके नामसे विख्यात है। उसका मुख्य उद्देश्य यह है कि यदि यूरोपीय देशोंकी सहायता न की जायेगी, तो उनकी स्थिति बड़ी भयंकर हो जायेगी, उनकी क्रय-शक्ति बिलकुल गिर जायगी, जिसका परिणाम यह होगा कि वे अमेरिकाका माल न खरीद सकेंगे। इस प्रकार अमेरिकाका अधिक सामान बेकार हो सकता है। इसलिए अपने व्यापारको बढ़ाने तथा यूरोपके देशोंको इस कठिन परिस्थितिसे बचाने के लिए मार्शलकी यह योजना अमेरिकाकी धारा-सभाओं (कांग्रेस) ने भी स्वीकार कर ली है। राष्ट्रपति ट्रूमैनने १२ जनवरी को कांग्रेसको बताया कि वे शीघ्र ही ७ अरब डालरकी सहायता दूसरे देशोंको दे रहे हैं, जिसमें चीनको ६ करोड़ डालर और यूरोपको ६८० करोड़ डालर मिलेगा। परन्तु भारतको कहींसे कोई सहायता नहीं मिल सकती। उसे अपने यहां अपने ही उपायोंसे उत्पादन बढ़ा कर अपनी आवश्यकताओंकी पूर्ति करनी है, क्योंकि डालर की कमीका वास्तविक अर्थ यह नहीं है कि डालर नामका सिक्का नहीं मिल रहा है, बल्कि उसका अर्थ यह है कि सभी देशोंमें उत्पादनकी कमी है। यह कमी केवल तभी दूर की जा सकती है, जब काफी मात्रामें जीवन तथा व्यवसायकी सभी चीजें पैदा की जायं। इसी कारण सरकारको उन्नतिशील योजनाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिये। संतोषका विषय है कि हमारी वर्तमान लोकप्रिय सरकार, देशके विभाजन से उत्पन्न अनेक कठिन प्रश्नोंको हल करनेमें व्यस्त रहते हुए भी इस दिशामें विशेष रूपसे प्रयत्नशील है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## अमीरी और गरीबी—

# मानवताका कलंक

— श्री देवीदयाल चतुर्वेदी

परतन्त्रताकी बेड़ियां काटकर हमारा देश अब स्वतन्त्र हो चुका है। स्वतन्त्र भारतकी बागडोर हमारे कर्मठ नेता पण्डित जवाहरलाल नेहरूके हाथमें है। नेहरूजी हमारे देशको संसारके उन्नत राष्ट्रोंकी सम्मानित श्रेणीमें प्रतिष्ठित करनेके लिए दिन रात चिन्तित और प्रयत्नशील रहते है। परन्तु उनके अकेले चिन्तन और प्रयत्न करनेसे ही हमारा देश सर्वांगीण उन्नति नहीं कर सकता। इसके लिए तो हमारे देशके सभी वर्गों का क्रियात्मक सहयोग अपेक्षित है। परन्तु हम देखते हैं कि देशके विभिन्न वर्ग अपने-अपने स्वार्थोंकी पूर्तिमें ही लगे हुए है।

अभी कुछ महीने पूर्व देशकी पूंजी का राष्ट्रीयकरण करनेका विचार जब नेहरूजीने व्यक्त किया, तो पूंजीवादी वर्गमें असन्तोष और चिन्ताका गम्भीर वातावरण उत्पन्न हो उठा था। इस असन्तोषका विस्फोट प्रकट रूपमें तो हम सबको ज्ञात नहीं हो सका; परन्तु पूंजीके राष्ट्रीयकरणकी दिशामें सरकारने कोई पग नहीं बढ़ाया। इसके चाहे जो कारण हों; परन्तु इतना स्पष्ट है कि हमारा देश अभी पूंजीके राष्ट्रीयकरणके लिए तैयार नहीं। लेकिन जब तक पूंजीका राष्ट्रीयकरण नहीं हो जाता, हमारे राष्ट्रका समुन्नत होना भी सम्भव नहीं। देशमें जबतक धनवानों और गरीबोंके दो विभिन्न वर्ग रहेंगे, तब तक राष्ट्रीय एकताका सर्वथा अभाव रहेगा।

गरीबी मानवताका सबसे बड़ा पाप है— कलंक है। अमीरों और गरीबोंके बीच दिनों दिन चौड़ी चकरी और गहरी खाई होती जा रही है। इस गहरी खाई को पाटनेके लिए पूंजीका राष्ट्रीयकरण तो अवश्य ही है; परन्तु इससे भी पहले जिस बातकी आवश्यकता है वह है विचार परिवर्तन। देशवासियोंको अपने विचारोंमें आमूल परिवर्तन करना ही होगा।

हम देखते है कि सभ्यताका विकास ज्यों-ज्यों होता जा रहा है, धनवानों और गरीबोंके बीचकी खाई उतनी ही चौड़ी चकरी और गहरी होती जा रही है। दूर जानेकी आवश्यकता नहीं, युद्धकालमें ही जिन सैद्धान्तिक आदर्शोंका डंका पीटा गया था, वे निरे सिद्धान्त ही रह गये उन्हें प्रयोगमें लानेका आज तक कोई प्रयत्न नहीं किया गया।

गरीबोंकी दयनीय स्थिति किसीसे छिपी नहीं है। गरीब ही क्या, मध्यम श्रेणीके लोगोंका जीवन निर्वाह भी आज इतना समस्यामूलक हो उठा है कि सर्वत्र दरिद्रता और पारिवारिक अशांति दीखने लगी है। युद्ध समाप्त होनेके बाद सारी दुनिया की तीन चौथाई आबादी भूखों मरने लगी है। भुखमरीके सभी कारणों पर विचार करनेके लिए स्वतन्त्र रूपसे बहुत अधिक लिखनेकी आवश्यकता है यहां इतना कहना पर्याप्त होगा कि एक ओर इस भुखमरीकी विभीषिका जन साधारणके सामने मुंह बाए खड़ी है और दूसरी ओर दुनियाका धन अत्यन्त विषम रूपमें वितरित हो चुका है। जिन लोगोंके पास यह धन राशि एकत्र है, वे बहुत थोड़े है और धनवानकी संज्ञा भी इन्हीं थोड़ेसे लोगोंके लिए सुरक्षित है। यही कारण है कि गरीबी और अमीरीका भेद— गरीब और अमीरके बीचकी खाई आज जितनी चौड़ी, चकरी और गहरी हो गयी है, उतनी पहले कभी नहीं थी। इस विस्तृत खाईको पाटने अथवा इस पर सेतु बांधने की आवश्यकतासे कोई भी विचारक इनकार नहीं कर सकता।

आम तौर पर धनिकवर्गमें धनकी अधिकताके कारण स्वयंको जनसाधारण की अपेक्षा श्रेष्ठ समझनेकी एक प्रबल भावना पायी जाती है। यही क्यों, कभी-कभी तो बुद्धिजीवियोंके प्रति भी इस धनिकवर्गमें एक स्पष्ट उपेक्षाकी प्रवृत्ति देखी जाती है। और गरीबोंसे तो मानो जन्मजात घृणा इन लोगोंमें घर किये रहती है।

यह बात नहीं कि इस तथ्यसे यह धनिकवर्ग अनभिज्ञ है कि जो धन उसकी तिजोरियोंमें भरा पड़ा है अथवा बैंकोंमें जो विपुल धन-राशि जमा है, वह इन गरीबोंके ही श्रमका परिणाम है और है बुद्धिजीवियोंके मस्तिष्ककी जादूगरीका सुफल।

जिन आलीशान कोठियोंमें ये धनवान रहते हैं, जिन सुख सुविधाओंके बीच अतुल ऐश्वर्यका अनुभव करते और जीवनकी रंगीनियोंका स्पर्श करते है, उनकी ओर गरीब बेचारे सदा तृषित नेत्रों और पेटकी पीठसे चिपकाए दूरसे ही टुकर-टुकर देखा करते हैं।

यदि इन भूखे प्यासे और अभावों के बीच रात दिन पिसनेवाले गरीबोंकी ओर हमारा धनिकवर्ग सहानुभूति और सहृदयतापूर्ण दृष्टिसे देखने लगे, और उन्हें सर्वथा नगण्य न समझ उसी हाड़-मांसका पुतला समझने लगे, जिससे स्वयं उसके अमीरी शरीरका निर्माण हुआ है, तो यह विषमता अपेक्षाकृत बहुत कम हो सकती है। लेकिन जिस सभ्यताके युगमें आज हम जीवित है, उसमें मशीनकी प्रधानता है। मानवकी अपेक्षा आज मशीनका मूल्य ही अधिक आंका जाता है। परन्तु मशीनको प्रधानता देनेवाले यह भूल जाते हैं कि मानवने ही मशीनका आविष्कार किया है और मानवके सहारे ही यह मशीन उपयोगी सिद्ध होती है। यह मानव न रहेगा, तो ये मशीनें किस काम आयगी, इनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोग क्या रह जायगा और इन्हें चलायेगा कौन ? इस दृष्टिसे मशीन-युगमें भी हमें यह कहनेमें कोई संकोच नहीं कि धनिक वर्ग हो या श्रमिक, सबको भरपेट अन्न देनेवाला और तनकी लाज ढकने-के लिये वस्त्र प्रदान करने वाला यदि कोई है तो मानव--गरीब मानव--जो खेतों में अपना रक्त पसीनेके रूपमें बहाता और कल कारखानोंमें भी मशीनोंके साथ यन्त्र-तांत्र मजदूरी करते करते सारा जीवन खपा देता है ।

बर्नार्ड शा का कथन है कि—"हमारा सबसे बड़ा पाप और भयंकर अभिशाप है गरीबी और हमारा प्रथम कर्तव्य है उसके प्रति अपनी समस्त सहानुभूति उड़ेलना । इससे हम गरीब नहीं हो जायेंगे।" लेकिन कितने धनिक इस ओर ध्यान देते हैं और गरीबोंके प्रति उनकी उपेक्षा तथा नृशंसतामें कोई परिवर्तन पाया जाता है ?

कहा जा सकता है कि गरीबोंपर ये धनवान आखिर कौन-सी नृशंसता करते हैं ? परन्तु गरीबोंकी दयनीय स्थितिसे जो परिचित हैं, वे इस प्रश्नका उत्तर सहज ही दे सकते हैं । वास्तवमें धनिकवर्ग कोई शस्त्र लेकर इन गरीबोंकी हत्या नहीं करता । परन्तु अनेक काम इस धनिकवर्ग-के ऐसे होते हैं, जो परोक्ष रूपमें गरीबोंके प्राण ले डालनेके लिए उत्तरदायी कहे जा सकते हैं । ऐसे कामोंमें गरीबोंको कम-से कम पारिश्रमिक देकर उनसे अधिक-से अधिक काम लेना और मानवोचित सुविधाओंसे उन्हें वंचित रखना तथा अपने ही ऐश-आरामके राद-दिन ताना-बाना बुनते रहना आदि कितनी ही बातें गिनाई जा सकती हैं ।

प्रसन्नताकी बात है कि हमारे देशमें अब भारतके सबसे बड़े व्यापारी सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला-जैसे पूंजीपतियोंका भी ध्यान गरीबोंकी स्थिति सुधारनेकी दिशामें आकृष्ट हो चुका है । उनकी पंचवर्षीय योजना यदि कार्यान्वित की गयी, तो श्रमिकवर्गका बड़ा उपकार होगा ।

आम तौरपर दुनियामें सभी गरीब और विशेषतः हमारे भारतवर्षके गरीब भाग्यवादोंके शिकार हो जाते हैं । उनके मनमें यह भावना बुरी तरह जड़ जमा लेती है कि 'हम कर ही क्या सकते हैं ! गरीब जो ठहरे !' यह विचारधारा उनकी क्रियात्मक शक्तिको सदाके लिए समाप्त कर बैठती और उन्हें निष्क्रिय बना देती है । उनकी सारी आकांक्षाएं मर चुकती हैं । उनमें आशाका कहीं कोई अंकुर पल्लवित नहीं हो पाता । जिस दयनीय स्थितिमें वे रहते हैं उसमें किसी सुधारकी कहीं कोई गुंजाइश नहीं रह जाती । यदि उन्हें कभी कोई सुविधाएं भी दी जायं तो वे उनसे समुचित लाभ नहीं उठा पाते । उनके अन्धविश्वास हरदम उनपर हामी रहते हैं । वे प्रति क्षण अपने आपको अभिशाप मानते हैं । कदाचित इन्हीं बातोंके आधारपर कोई धनिक यह भी कह उठता है—'गरीबोंसे दूर रहना ही भला है । उन गरीबोंके लिए हमारा कोई भी प्रयत्न व्यर्थ है, जो स्वयं अपनी भलाईसे अपरिचित हैं ।'

इन सारी बातोंका परिणाम हम देखते हैं कि अमीरों और गरीबोंके बीच की खाई उत्तरोत्तर चौड़ी और गहरी होती जा रही है । गरीबका शोषण किया जाता है और धनवान उसे उत्तरोत्तर उत्पीड़ित करता जाता है । धनवान सुखसे अपना जीवन बिताता और गरीब सदा मुसीबतोंसे टकराता रहता है ।

प्रश्न उठता है, ऐसा क्यों होता है ? क्या गरीब ऐसी ही उदासीनताका पात्र है—सर्वथा अवज्ञेय ! क्या यह उन्हीं गरीबोंका दोष है कि उनकी आकांक्षाएं मर चुकी हैं ? क्या यह सत्य नहीं है कि जीवनके प्रति ये गरीब जो इतने उदासीन नजर आते हैं और उनमें कहीं किसी आकांक्षा अथवा महत्वाकांक्षाका जो अस्तित्व नहीं है, वह सब इसलिए है कि उनके हितमें बुलन्द किये जानेवाले नारे, उनके जीवनके माननदंडको ऊंचा उठानेवाली योजनएं आदि सभी कुछ वर्तमान समाज व्यवस्था और सभ्यताकी विषय-भूमिपर कभी फलदायक सिद्ध नहीं हो सकीं ?

संसारमें गरीबोंको सर्वत्र यही अनुभव होता है कि उनके प्रति कहीं कोई दया-माया नहीं, स्नेह नहीं और सहानुभूति भी नहीं । गरीब अथवा श्रमिकवर्ग जहां कहीं अपनी समस्त शारीरिक शक्तियां लगा देता है, वहां उसे पारिश्रमिकके रूपमें मिलता क्या है ? इतना भी तो उसे प्राप्त नहीं होता कि वह और उसका परिवार बखूबी अपना भरण-पोषण कर सके ।

इन सब तथ्योंको क्या गरीब और क्या श्रमिक कदाचित भलीभांति समझ चुके हैं । इसीका परिणाम है यह वर्ग जीवनके प्रति अप्रत्याशित रूपसे उदासीन हो उठा है । यही नहीं, वह तो ऐसे प्रत्येक कार्यको संदेहकी दृष्टिसे देखने लगा है, जो धनिक-वर्गकी ओरसे उनके प्रति सहानुभूतिके रूप दिया जाता है । कहीं किसी दातव्य औषधालयकी स्थापना अथवा किसी उपहार-गृहकी व्यवस्था कर देना हो देशके समस्त श्रमिकवर्गके लिए संतोषजनक अथवा संकटमोजन नहीं हो जाता । ऐसे प्रयत्नोंसे सीमित दायरेके गरीबोंका ही हितचिन्तन सम्भव है ।

समस्त श्रमिकवर्ग अथवा गरीबोंका कल्याण तभी संभव है, जब पैसा कमानेवाले अर्जित धनको पुनः समान रूपसे इन श्रमिकोंमें विभाजित करनेकी दिशामें क्रियात्मक मदद उदारतापूर्वक बढ़ायें । यह तभी हो सकता है, जब धनिकोंमें श्रमिक मात्रके प्रति मानवोचित भावनाएं लहराती हों; छोटे बड़ेका भेदभाव उत्पन्न करनेवाली घृणास्पद बातें कोई अस्तित्व न रखती हों और विश्वबन्धुत्वकी स्तुत्य भावनाएं उनमें निरन्तर प्रतिबिम्बित हों ।

अपार धन एकत्र करने और बैंककी पूंजीको उत्तरोत्तर बढ़ानेकी चिन्तामें रात दिन लगे रहनेवाले धनवान एकाध सार्वजनिक इमारत बनवा कर ही गरीबों के प्रति यदि अपनी उदारताका परिचय देना पर्याप्त समझते हैं, तो यह उनकी बहुत बड़ी भूल है । ऐसे काम तो उनकी पूंजीवादी मनोवृत्तिका ही विज्ञापन अधिक करते हैं । इससे न तो उनके वैयक्तिक ऐब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनराशिका ही कोई बड़ा-सा भाग खर्च होता है। ऐसा करके वे अपने काल्पनिक आत्म-संतोषसे भले ही स्वयंको धोखा देते रहें; किन्तु दूसरोंको धोखा नहीं दे सकते।

जब तक प्रत्येक देशवासी यह न समझने लगे कि गरीबी एक असह्य रोग है—ऐसा रोग जिसे समूल नष्ट करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है और किसी व्यक्तिकी आय इतनी कम न हो कि शान शौकतके साथ वह अपना जीवन व्यतीत करनेमें असमर्थ रहे और सपरिवार भरण-पोषणकी समस्यासे अभिभूत न रहे, तब तक इस भयावह फंदेसे मानवता मुक्त नहीं कही जा सकती।

जिस देशमें धनवानोंको समस्त सुविधाएं महज इसलिए दी जाती हों कि पैसेके बल पर प्रतिष्ठा और वैभव खरीदा जा सकता है, वहां गरीबों और अमीरोंमें समानताकी आशा करना आकाश कुसुम ही है। ऐसे देशमें गरीब सदा उपेक्षित रहेगा—अपने जीवनसे उपेक्षित और अभिशप्त। और इस अन्यायका प्रतिकार भी ये गरीब न कर सकेंगे।

सभ्यताका प्राथमिक चिन्ह है कि गरीब और अमीर समान रूपमें जीवनकी सुविधाएं उपलब्ध कर सकें। एक ओर गगन-चुम्बी अट्टालिकाओं पर धनवानोंके बच्चे स्वादिष्ट व्यंजनोंको भी सीधी तरह न खाते हों और उनके कुत्ते सामने रखे दूधसे भरे कटोरेको पेट भरा होनेसे उलट देते हों; परन्तु दूसरी ओर विशाल सड़कों की पटरियों पर गरीबोंके बच्चे दाने-दानेके लिए मुंहताज रहते हों अथवा किसी दीन हीन किसानकी झोपड़ीमें रोटीके एक टुकड़े के लिए बच्चोंमें पारस्परिक छीना-झपटी देखी जाती हो, वहांकी सभ्यताको वास्तविक सभ्यता कहना मानवताका सबसे बड़ा उपहास है।

उद्योगपतियोंमें जब तक यह भावना नहीं आ जाती कि श्रमिकोंके श्रमसे होने वाली आयका श्रमिकोंमें ही समान वितरण किया जाये, तब तक गरीबी और अमीरीके बीच की चौड़ी खाई कभी संकरी नहीं हो सकती। आम तौर पर यही देखा जाता है कि उद्योगपतियोंको जो लाभ होता है, उसे वे अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति समझते हैं—ऐसी सम्पत्ति जिसमें हिस्सा बंटानेका श्रमिकोंको उनकी समझमें कोई अधिकार नहीं। वास्तवमें उद्योगपतियोंका यह लालच है। जिन श्रमिकोंकी खरी मजदूरीसे उनका धन बढ़ता है, उनके भरण-पोषण और रहनेकी सुविधाओंका पूरा पूरा प्रबन्ध उन्हें करना ही चाहिए।

प्रसन्नताकी बात है कि हमारी राष्ट्रीय सरकारने अब इस ओर अपना ध्यान दिया है और भारतके जन-साधारण के जीवनका मापदंड ऊंचा उठानेके लिए वह कृतसंकल्प है।

# प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थ स्त्री हूं। विवाहके एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं सिलकोरिया, (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्मके दुष्ट रोगोंमें फंस गई थी। मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्दके साथ, जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिकजानेकेकारण मेंप्रतिदिनकमजोर होती जा रही थी, चेहरेका रंग पीला पड़ गया था, घर के काम काम से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेवने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराई, परन्तु किसी से रत्तीभर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य सेएकसन्यासीमहाराजहमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है जो इस आयुमें ही चेहरेका रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पतिको अपने डेरे पर बुलाया और उसको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिनके सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगोंका नाश हो गया। ईश्वर की कृपासे अब मैं कई बच्चोंकी मां हूं। मैंने इस नुस्खेसे अपनी सैकड़ों बहनोंको अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधिको अपनी दुःखी बहनोंकी भलाईके लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वरने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहनके लिये १५ दिनकीऔषधि तैयार करने पर २।।।=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोगमें फंस गई होतो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथसे औषधि बना कर बी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यहमेराप्रण है कि मैं किसी बहन से दवा की कीमत अपनी असल लागतसे एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

**जरूरी सूचना**—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है इस लिये कोई बहन मुझे किसी और रोगकी दवाईके लिये न लिखें।

प्रेम-प्यारी अग्रवाल नं० ५१ बुडलाडा जि० हिसार, पंजाब।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# गांधी-हत्याकाण्ड

## —अदालतमें सनसनीखेज कहानी—

विगत २२ जूनको महात्मा गांधी हत्याकाण्डके मामलेकी पेशी दिल्लीके लाल-किलेमें आरम्भ होने पर, सरकारी वकीलने विस्तारपूर्वक बताया कि किस तरह हत्याका षड्यन्त्र किया गया। वह सनसनीखेज कहानी निचे दी जाती है:

महात्मा गांधीकी हत्या ३० जनवरीको हुई, किन्तु हत्याके लिए यह प्रथम प्रयास नहीं हुआ था। २० जनवरीको अर्थात उसके १० दिन पूर्व, डा० सावरकर और डा० परचुरेको छोड़कर बाकी सभी अभियुक्त दिल्लीमें एक साथ मौजूद थे। उस दिन मदनलालने, बिड़ला भवनमें उस स्थानके समीप, जहां महात्मा गांधी संध्या प्रार्थना करते थे, बम फेंका। उस समय डा० परचुरे और डा० सावरकरके सिवा अन्य सभी अभियुक्त प्रार्थना सभाके मैदानमें या उसके इर्द-गिर्द मौजूद थ। यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है। अगर सरकारी पक्ष यह प्रमाणित कर सका कि सभी अभियुक्त उस घटनाके २-३ दिन पूर्व दिल्ली पहुंच गये थे, वे एक साथ एकत्र हुए थे और बमविस्फोटके समय वहां पर उपस्थित थे, तो मैं यह दिखाऊंगा कि वे सभी हथगोलों और रिवाल्वरोंसे लैस थे और उससे उनका उद्देश्य प्रकट हो जायगा। वे महज इत्तिफाकसे वहां उपस्थित नहीं हुए थे। अवश्य ही उनका एक समान उद्देश्य रहा होगा। इतना ही नहीं, मैं यह भी साबित करूंगा कि आरम्भमें अभियुक्तों का इरादा उसी दिन महात्मा गांधीकी हत्या कर डालनेका था। मूल योजनाके अनुसार उनकी हत्या क्यों नहीं हो सकी, इस पर मैं अभी विस्तारपूर्वक कुछ नहीं कहूंगा। इस घटनाके फलस्वरूप मदन लाल गिरफ्तार कर लिया गया और अन्य भाग गये। बादमें उनकी हरकतोंका पता लगा। फिलहाल मैं केवल इसी बातका उल्लेख करूंगा कि अभियुक्त नं० १, २ और ३ तथा अन्य बादमें एकत्र हुए और ३० जनवरीको अभियुक्त नं० १, २ और ३ अर्थात् नाथूराम गोड़से, आप्टे और करकरे ३० जनवरीको फिर दिल्ली आये।

### अभियुक्त

(१) नाथूराम विनायक गोडसे
(२) नारायण डी० आप्टे
(३) विष्णु आर० करकरे
(४) मदन के० पहवा
(५) शंकर किस्तैया
(६) गोपाल विनायक गोडसे
(७) डा० विनायक दामोदर सावरकर
(८) डा० दत्तात्रय एस० परचुरे

* * *

पिछले कुछ समयसे अर्थात् १९४४के मध्यसे नाथूराम गोडसे पूनासे प्रकाशित मराठी दैनिक 'अग्रणी' का सम्पादक था और आप्टे एक प्रकारसे जनरल मैनजर।

अभियुक्त नं० १ और अभियुक्त नं० ३ एक दूसरेसे काफी समयसे परिचित थे।

चौथा अभियुक्त मदनलाल पंजाब का एक शरणार्थी है। वह स्वभावसे बिना सोचे विचारे कोई काम कर बैठनेवाला, और कोई भी जोखिमका काम करनेके लिए उद्यत रहनेवाला व्यक्ति है।

पांचवां अभियुक्त, शंकर बागदेका, जिसे क्षमा दान मिला है, नौकर था। बागदे पूनामें एक शस्त्रास्त्रकी दूकानका मालिक था। बागदेका अभियुक्त नं० १, २ और ३ से परिचय हुआ, क्योंकि वे शस्त्रास्त्र चाहते थे और वह उन लोगोंको शस्त्रास्त्र देनेकी स्थितिमें था। उसने अभियुक्त नं० १, २ और ३ को काफी परिमाण में हथियार तथा गोली-बारूद दिये। २० जनवरीके कुछ ही पूर्व उसे भी इस षड्यन्त्र में शामिल कर लिया गया।

छठा अभियुक्त गोपाल गोडसे पहले अभियुक्तका भाई है और वह किरकीमें एक सरकारी दफ्तरमें काम करता था। उसने कोई बहाना बताकर छुट्टी ली और अन्य लोगोंके साथ दिल्ली आया। ये लोग अपने साथ कांसा और विस्फोटक पदार्थ दिल्ली ले आये थे।

दूसरे अभियुक्त डा० परचुरेका दावा है कि वह ग्वालियरका रहने वाला है लेकिन सरकारी पक्षको यह दावा मंजूर नहीं है। २० और ३० जनवरीके बीच पहला और दूसरा दोनों अभियुक्त ग्वालियर गये थे। उस समय डा० परचुरेने जो पिस्तौल उपलब्ध की थी, वही अन्तमें गांधीजीकी हत्याके लिए उपयोगमें लायी गयी। पिस्तौल एक भीलसे ली गयी और पहले और दूसरे अभियुक्तने लौटकर ३० जनवरी को हत्या की। अन्तमें साधारणतया डा० सावरकरके बारेमें बताना चाहता हूं। उनका नाम सुविदित है। वह एक विशिष्ट विचारधाराके नेता हैं और बहुत समय तक हिन्दू महासभाके अध्यक्ष रहे हैं। यह भी विदित है कि वह अहिंसा और मुसलमानों के अनुकूल नीतिके प्रेमी नहीं हैं। वे दादर, बम्बईमें रहते हैं। पहला और दूसरा अभियुक्त उनके निकट सम्पर्कमें रहते आये हैं। यह कहनेमें कोई अतिशयोक्ति न होगी कि ये अभियुक्त डा० सावरकरको अपना पथप्रदर्शक मानते हैं। मैं तो 'गुरु' शब्दका प्रयोग करता हूं।

पहले और दूसरे अभियुक्तने 'अग्रणी' नामक जो पत्र निकालना शुरू किया, उसको डा० सावरकरका आशीर्वाद प्राप्त था। डा० सावरकर पत्रको आर्थिक सहायता भी देते थे। पहला और दूसरा अभियुक्त डा० सावरकरको बहुत मानते थे। यह बात इससे साफ हो जाती है कि पत्रके प्रत्येक अंकके पहले पृष्ठ पर सावरकरका चित्र रहता था।

डा० सावरकरके बम्बईके मकानमें छोटे बड़े राजनीतिज्ञ अक्सर जाया करते थे। पहला और दूसरा अभियुक्त भी उनके मकान पर जाते थे। इस बातका सबूत है कि पहले और दूसरे अभियुक्तका श्री सावरकरके साथ निरन्तर सम्पर्क स्थापित रहा। इस बातका भी प्रमाण है कि ये दोनों अभियुक्त २० जनवरीकी घटनाके पहले श्री सावरकरके पास गये थे। केवल श्री सावरकरको न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बातका ही ज्ञान था कि क्या होने जा रहा है बल्कि बिना उनकी साझेदारीके यह काम हो नहीं सकता था।

अब मैं प्रत्येक अभियुक्तकी २० और ३० जनवरीके पहलेकी कारस्वाइयोंके बारेमें संक्षेपमें बताऊंगा।

१९३८ में हैदराबाद-सत्याग्रह नामक एक आन्दोलन चला था, जिस में पहला अभियुक्त नं० १ जो गया था।

दूसरा अभियुक्त अहमदनगरमें एक शिक्षक था।

चौथा अभियुक्त मदनलाल १९४१में बम्बई आया। वहां प्रो० जैनसे मिलनेके बाद वह अहमदनगर गया।

७ वां अभियुक्त डाक्टर है। वह कुछ दिनों तक ग्वालियरमें रहता था। वह हिन्दू सभासे सम्बन्धित था। गोडसे उसको सार्वजनिक नेताके रूपमें जानता था। जब गोडसे और आप्टेने उसे शस्त्रके लिए कहा तो उसने शस्त्र दिये।

श्री सावरकर हिन्दू सभाके प्रेसिडेण्ट और राजनीतिक नेता रहे हैं।

४ जनवरीको प्रथम और द्वितीय अभियुक्त श्री सावरकरके घर गये थे। तीसरा और चौथा अभियुक्त ९ तारीख को पूना गये और चौथे अभियुक्तको प्रथम और द्वितीय अभियुक्तसे परिचय कराया गया। बाद तृतीय और चौथा अभियुक्त बागदेकी दूकान पर गये जहां बागदेके नौकर शंकरने कुछ हथगोलों का निरीक्षण किया। तीसरा और चौथा अभियुक्त १० जनवरीको बम्बईमें श्री सावरकरके घर पर गये।

१४ तारीखको प्रथम और द्वितीय अभियुक्तोंने श्री सावरकरसे मुलाकात की। उस समय बागदे और शंकर भी बम्बई में थे।

प्रथम और द्वितीय अभियुक्त बम्बईसे दिल्ली आये। बागदे और शंकर भी १९ ता० को दिल्ली आये। २० ता०को सवेरे बागदे और शंकर बिड़ला भवन गये थे। २० तारीखको विभिन्न लोगोंको शस्त्रास्त्र बांट गये थे। योजना यह थी कि एक धड़ाका किया जाय और फलस्वरूप जो गड़बड़ी हो, उसमें गांधीजी पर गोली चलाई जाय। योजनाके अनुसार धड़ाका किया गया लेकिन योजनाका दूसरा भाग उपस्थित न हो सका। मदनलालने यह धड़ाका किया और वह पकड़ लिया गया। तदन्तर प्रथम और द्वितीय अभियुक्त बम्बई गये। शंकर और बागदे भी गये। वहां गुप्त विचारविमर्श हुआ। २७ को प्रथम और द्वितीय अभियुक्त दिल्ली लौटे और यहांसे ग्वालियर जाकर डा० परचुरेसे मिले। डा० परचुरेसे एक पिस्तौल मिली, जो सन्तोषजनक थी। बाद वे दिल्ली लौटे इसके बाद गांधीजी को किसी प्रकार गोली मारी गयी, यह तो स्पष्ट ही है।


काफू (रजि०)

हैजे

को रामबाण दवा है

डाबर लिमिटेड, कल.

बेजोड़म घरेलू उद्योग से

धन कमाइये

केवल तीन सौ रुपया की पूंजीसे तीन सौ रुपया मासिक कमानेके लिए पूरा विवरण मुफ्त मंगाइये।

इन्द्रप्रस्थ मशीनरी कारपोरेशन

चावड़ी बाजार, देहली

A NOVELTY WATCH

'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage as. 12. Free for 2 watches.

ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

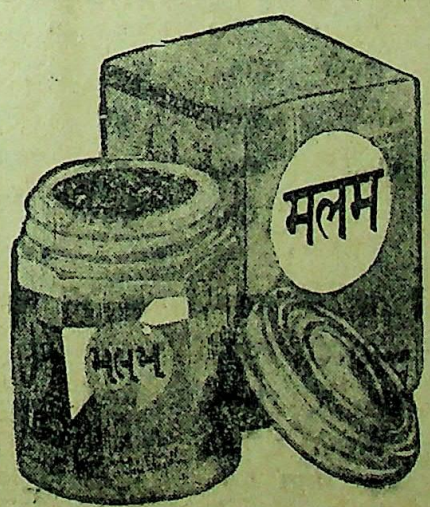


जिन पुरुषोंकी बचपनमें बुरे रास्ते पर और समझ आने पर भी विलास में आसक्ति रखनेसे नसोंमें निर्बलता आ गई हो जिनके लिये सर्वश्रेष्ठ औषधि खानेके लिये विचार में न हो। उनके लिये उत्तम से उत्तम दवा केवल मालिस द्वारा प्रयोगिता यह मलहम है। कारण कि इसके एकमात्र प्रयोग करने से नसें मजबूत व सख्त अवश्य हो जाती हैं। युवक, अधेड़ और वृद्ध सबको ही इससे फायदा पहुंचता है। एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग।

चाइनोज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०

शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, हेड आफिस—२८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई होसी स्क्वायर कलकत्ता, चांदनी चौक बाजार, दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

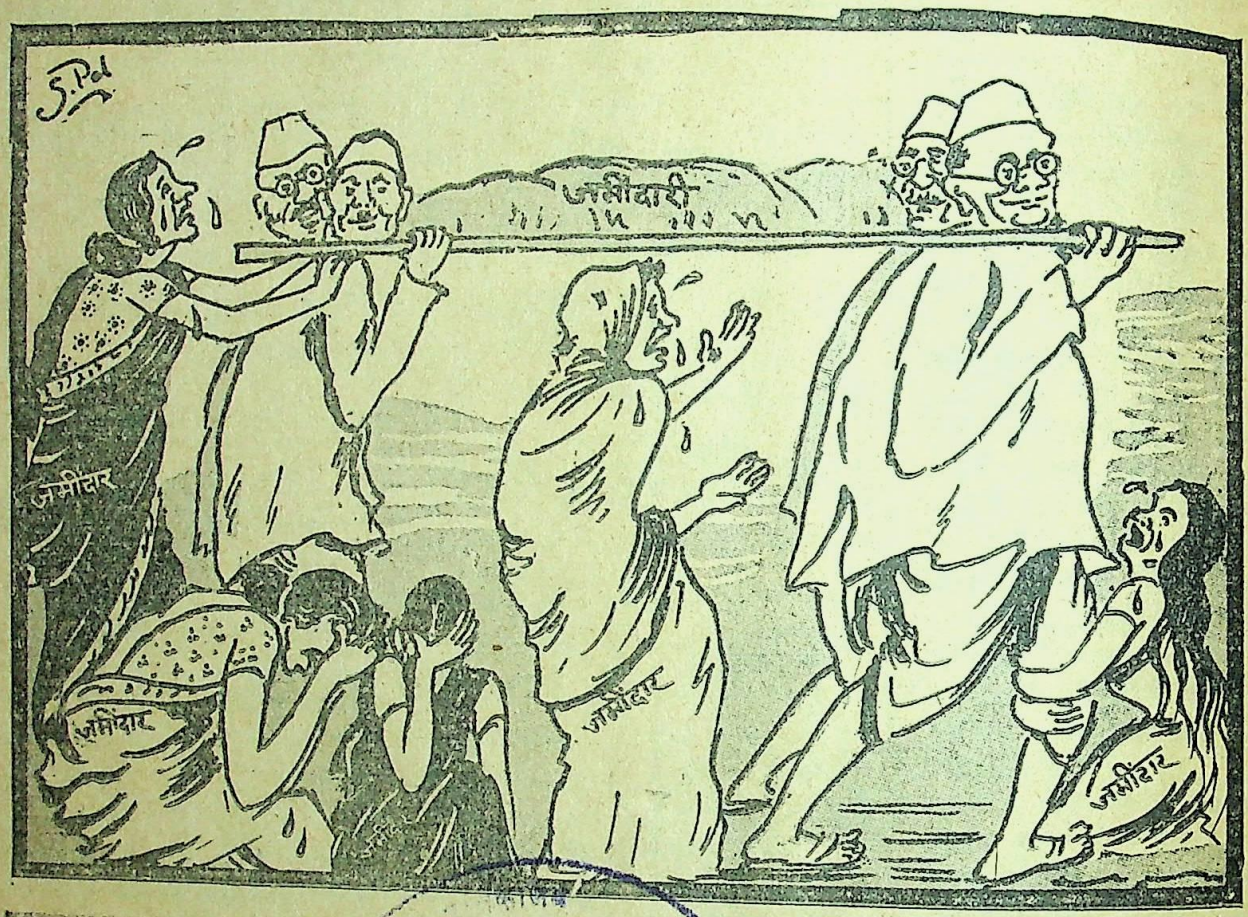


080261

फूटी किस्मत देखकर, जमींदार हैरान ।
खांव खांव चिल्ला रहे, अब न रहेगी शान ॥
अब न रहेगी शान, न पूछेगा अब कोई ।
खद्दर वाले आज, बने बैठे बहनोई ॥
सारी संपति आज, अरे इन्होंने लूटी ।
जमींदार हैरान, देखकर किस्मत फूटी ॥

* * *

कांग रे स के राजमें, ज मीं दा र बेहाल ।
सब कुछ स्वाहा हो रहा, चलती एक न चाल ॥
चलती एक न चाल, मिटेगी जमी जमाई ।
अब न मिलेगी मौज, रो रहे लोग लुगाई ॥
खुश हैं उधर किसान, और मजदूर देशके ।
जपते हैं वे नाम, आज कल कांगरेसके ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




हमेशा मनमुग्धकारी सेन्ट

## ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भोनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां है

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल

कम्पनी बम्बई २

## धन का अपव्यय

• अनेक व्यक्ति ऐसे दिखते हैं यद्यपि वे प्रति सप्ताह नाई को ६ आने तक दे देते हैं! इस मूल्य में उनकी तीन हजामतें बनती हैं, इस प्रकार सात दिनों में से चार दिन उनकी दाढ़ी खुरदरी रहती है।

## धन का सदुपयोग

यदि आप स्वयं ही प्रतिदिन "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड से हजामत बनावें तो आप इस प्रकार सुव्यवस्थित ही नहीं दिखेंगे, किंतु धन की भी बचत करेंगे क्योंकि एक पैकेट हफ्तों चलता है।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड सर्वोत्तम इस्पात से तीन स्तरों में बनाये जाते हैं। बाजार में वे सबसे तेज एवं विश्वसनीय ब्लेड हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

# 7 o'clock
SLOTTED BLADES

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस्

ब्लेड जो ज्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं

१२ आने

प्रत्येक १० के पैकेट का मूल्य


७४ धमतला स्ट्रीट स्थित इलेस्ट्रेड इंडिया प्रेसमें गोविन्द चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## WHY BUY A PEN WORTH Rs. 85/- or 100/-

When you can get a most similar **U. S. A. DELUXE** Fountain Pen of world-wide reputation at thrilling low price **Rs. 10/-** by V. P. P. at your door with a **PARKER** ink bottle and an extra 14 ct. nib. Not more than one or out of Hindusthan orders will be accepted. Very limited stock. Order today to avoid disappointment,

**DELUXE** 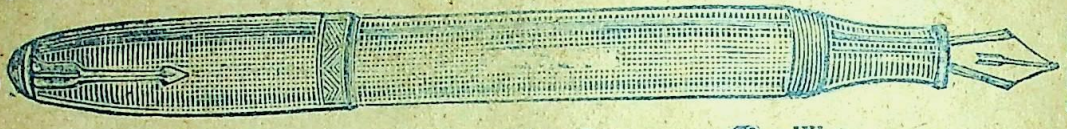 **Rs. 10/- Post free**

- Shape very attractive
- Colour black or other
- Pocket Clip Rolled Gold

**Rs. 10**

- Writes very smoothly & freely
- Dries as Writes
- Nib semi gold life guarantee
- Self ink filling very easy takes 15 seconds.

*Apply* :**ORIENTTRADERS**, V.W. BALDEO BUILDINGS, JHANSI, UP.



## टी.बी. T.B. "तपेदिक" चाहे फेफड़ोंका हो या अंतड़ियोंका भयंकर रोग है

| (१) पहिला स्टेज | (२) दूसरा स्टेज | (३) तीसरा स्टेज | (४) चौथा स्टेज | अन्तिम स्टेज |
|---|---|---|---|---|
| मामूली ज्वर, खांसी | ज्वर, खांसीकी अधिकता | शरीर सूखना, ज्वर-खांसी की भयंकरता | सबही बातोंकी भयंकरता शरीरपर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना | रोगकी मौत और भयंकर जर्मोंका इधर-उधर फैलना |

जबरी——(JABRI)——(जबरी)——(JABRI)

## टी.बी. T.B. "तपेदिक" और पुराने ज्वरके हताश रोगियो ! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नड़ुगावां, पो० डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनोंसे ज्वर खांसीसे बीमार था। बलगम आदिकी परीक्षा पर "तपेदिक" (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोगका नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया। इसी बीच परमात्माकी कृपासे आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरत आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवाका विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अमृतरूपी गुणोंने मुझे आश्चर्यमें डाल दिया। थोड़े ही दिनोंमें शरीरका रंग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थमें आपकी औषधि इस दुष्ट रोगके लिये अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा० ठाकुर सिंह नेपाली मू० कटैया पो०हरलखी जिला दरभंगासे लिखते हैं। "आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत ही लाभदायक प्रतीत हुई, कृपया लौटती डाकसे पूरा कोर्स भेज दें।" इसी प्रकारके पहले भी दसों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमोंमें देख चुके हैं, भारतके कोने कोनेमें लोगोंने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोगसे रोगीकी जान बचाने वाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। 'जबरी' के नाममें ही भारतके पूज्य ऋषियोंके आत्मिक बलका कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिनसे ही इस दुष्ट रोगके जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि —आप इस तरफसे हताश हो चुके हों तो भी परमात्माका नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिनका नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताए क्या होता है—जब चिड़िया चुग गयी खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियोंपर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तारका पता केवल "जबरी" जगाधरी काफी है। तारमें अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ानेके लिये मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्यवान, [illegible] पड़ती हैं। पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु० । [illegible] पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन ६) रु०, महसूल अलग है। आर्डर देते समय

(६०) "जगाधरी" (पूर्व पंजाब) ई० पी०


Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri